CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव-पुराण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

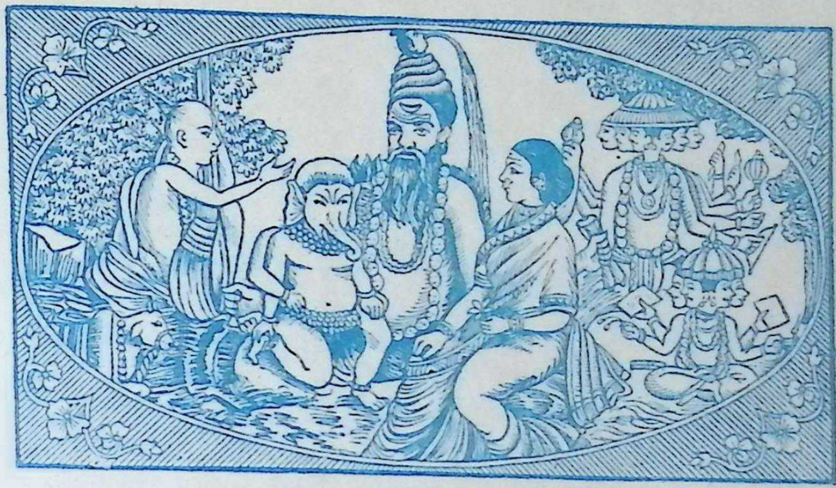

शिव पुराण भाषा

(ग्यारहों खण्ड)

अनुवादक

पं० प्यारे लाल रुग्गू

प्रकाशक

तेजकुमार बुकडिपो (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी

नवल किशोर बुकडिपो, लखनऊ–२२६००१

सर्वाधिकार सुरक्षित

इक्कीसवीं बार
३००० } सन् १९९६

Tej Kumar Book Depot (P.) Ltd.
REVISED
160/-
Price Rs.
LUCKNOW

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भूमिका

—:०:—

शिवं शिवार्धावयवं शिवंकरं
हरं महामोहहरं हरिप्रियम् ।
गौरं गुरुं गङ्गतरङ्गसङ्गमं
भवं भवाभावकरं भजाम्यहम् ॥ १ ॥
गणेशं श्रीहरिं दुर्गां रविं शम्भुं सरस्वतीम् ।
विधातारमहं वन्दे सुरेन्द्रप्रमुखान्सुरान् ॥ २ ॥

इस समय यह "शिवपुराण" जो कि सर्वपुराणों में अत्युत्तम गिना जाता है, पूरा कहीं मिलता नहीं है। जहाँ कहीं राजा महाराजा या महीसुर विद्वानों के मन्दिरों में मिलता है, वह अधूरा ही देख पड़ता है। यदि किसी महात्मा शिवभक्त के घर पूरा मिलता भी है तो उसमें क्रम नहीं है। यदि इतिहास का क्रम भी ठीक है, तो चौबीस हजार श्लोक पूरे नहीं हुए इसलिए अति दीन मतिहीन सूबे अवध उन्नामप्रदेशान्तर्गत काँथा ग्राम निवासी ताल्लुकदार परमोदार ठाकुर रणजीतसिंहसूनु शिवसिंह इन्सपेक्टर पुलिस जिला रायबरेली दश वर्ष से इस शिवपुराण की खोज में रहे कि कोई पुस्तक सम्पूर्ण मिल जावे तो उसका भाषानुवाद कर शिवभक्तों को, जो कि बान्धवों से कम नहीं हैं, समर्पण करूँ। इसी भाँति खोज करते-करते जहाँ-जहाँ उक्त पुराण की पुस्तकें मिलीं, इकट्ठा करके देखी गईं परन्तु कोई पुस्तक ऐसी न मिली कि जिसका अनुवाद किया जाता। सन् १८६६ ई० में बहुत से पण्डितों के कथनानुसार विदित हुआ कि जिला रायबरेली के अन्तर्गत बाजपेयीखेरे के रहनेवाले महामहोपाध्याय श्रीमान् पण्डित महानन्द बाजपेयीजी जो कि शिवाराधन करते हुये शिवभक्तों में अद्वितीय महानुभाव हो गये हैं, उन्होंने शिवपुराण को दक्षिण देश के अटन से इकट्ठा किया

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है। उसके समान इस देश में दूसरा शिवपुराण नहीं पाया जाता है। उसको उन्होंने मँगाया। उक्त पुस्तक के अवलोकन करने से पण्डितों का वर्णन ठीक पाया, उसका अनुवाद प्रथम उर्दू भाषा में किया। उसको लेकर श्रीमान् भार्गववंशीय "सी० आई० ई०" मुंशी नवलकिशोरजी ने निज व्यय से काश्मीरी पण्डित प्यारेलालशर्माजी से देश भाषा में अनुवाद कराकर निज यन्त्रालय में प्रकाशित किया। इसकी भाषा ऐसी हुई कि सर्व साधारण जनों के समझ में आ सकती है। आशा है कि सदाशिवभक्तगण इस पुस्तक को अवश्य स्वीकार करेंगे क्योंकि प्रायः उन शिवगणों का यह कथन रहता है कि :—

माता च पार्वती साक्षात्पिता देवो महेश्वरः।
बान्धवाः शिवभक्ताश्च स्वदेशो भुवनत्रयम्॥ १॥

पार्वती माता व महेश्वरदेव साक्षात् पितारूप हैं व शिवभक्त बान्धव हैं और तीनों भुवन अपना ही देश है। इस वचन से इस पुराण को सभी शिवभक्तों को अपने निकट रखना चाहिए वे प्रतिदिन समाज समेत शिवजी की कथा का कीर्तन करना परमावश्यक है।

इत्यलं बहुज्ञेष्विति शम्।

—:o:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवपुराण के ग्यारहों खण्ड की सूची।

(१) निर्गुण सगुणरूप का वर्णन (२) सतीचरित्र (३) गिरिजा चरित्र (४) स्कन्दखण्ड (५) युद्धखण्ड (६) काश्युपाख्यान (७) शतरुद्रखण्ड (८) लिङ्गखण्ड (९) रुद्राक्ष व भस्म व मन्त्र माहात्म्य (१०) व्रतखण्ड (११) भूगोल व खगोल।

उन बातों का बखान जो भूमिका में वर्णन की गई हैं और वे शिवपुराण में नहीं हैं—

संख्या	नाम	संख्या	नाम	संख्या	नाम
४	वेद	४	आश्रम	१४	परमभागवत
५२	उपनिषद्	१०	ब्राह्मण	१४	परमपाशुपत
१८	स्मृति	३६	क्षत्रिय		परमशाक्त
१८	पुराण	१८	वर्ण		परमगाणपत्य
१८	उपपुराण	१०	दिशा		सम्पूर्ण देवशास्त्र
६	शास्त्र	१०	विष्णु के अवतार	१४	सिद्धान्त
१६	सूत्र	१००	सदाशिवजी के	६४	तन्त्र
७	पदार्थ		अवतार	१४	विद्या
१४	गुण	१२	आदित्य	६४	कला
८	योग	११	रुद्र	७	द्वीप
१२	महायज्ञ	७	ऋषि	९	खण्ड
७	राग	३	अग्नि	७	समुद्र
३६	रागिनी	३	गुण	७	पुरी
४९	तान	८	वसु	४	वन
२१	मूर्च्छना	३३	देवता	५	वृक्ष
२२	सुरत	१०	दिग्गज		गंगाआदि सुर
१२	ताल	१०	दिक्पाल		नदी, प्रयाग
१०	अनहदशब्द	९	ग्रह		व पुष्करादि
४	युग	१४	इन्द्र		तीर्थ
४	वर्ण	३	देवता	१४	रत्न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संख्या नाम	संख्या नाम	संख्या नाम
८ सिद्धि	६ नाथ	८ लोकपाल
६ निधि	१७ वाहन	१३ विश्वेदेवा
४ फल	२४ गुरु	१४ मन्वन्तर
४ मोक्ष	६ काव्य	६ रस
७ धातु	१० अंगकाव्य	भावआदि
७ उपधातु	१० पुराण लक्षण	१८ व्यसन
७ धान	५ प्रकृति	६ अकर्म
१७ धान्य	८ शक्ति	५ जगउपचार
६ रस	५ वैश्य	६ नवधाभक्ति
३६ व्यञ्जन	७ शूद्र	१० इन्द्रिय
५ अमृत	७ व १००० छन्दैं	७ धातु
५ गव्य	१० महाविद्या	५ तत्त्व
१० शाक	६ दुर्गा	६ अङ्गवेद
८ मूर्ति	११ रुद्राणी	१४ भुवन
३ नाड़ी	५२ पीठ	८४ लक्षयोनि
३ दोष	५२ भैरव	४ राजनीति
१४ लोक	१०५ दक्षकन्या	४ दर्शन
७ स्वर	२८ नक्षत्र	२५ प्रकृति
३ ग्राम	६० संवत्सर	५ रत्न
ब्रह्मर्षि	१६ स्कन्दमाता	६ रत्न
राजर्षि	१६ मनुस्त्री	११ रत्न
पितृगण	५ कन्या	५ महाभूत
दैत्यादि	१६ शृङ्गार	१० वायु
६४ योगिनी	१२ आभूषण	तीर्थदानव्रत

अन्य आवश्यक वस्तुओं की सूची जिनको उलथक ने अन्य पुराणों में से छाँटकर संग्रह किया।

(१) गुरु की शुश्रूषा (२) दीक्षाविधि (३) माला व आसन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व जप (४) त्रिपुण्ड्र तिलक (५) षोडशोपचार (६) परोक्षना (७) बिल्वपत्र महिमा (८) पुष्प (६) धूप (१०) मुद्रा (११) व्रत (१२) तीर्थयात्रा (१३) दान।

अब मैं श्रीमत्परब्रह्म, परमेश्वर, निराकार, निरवयव, अच्युत, अनन्त, त्रिपुरारि, त्रिशूलधारि, त्रैलोक्यनाथ, परमकल्याणरूप, शिवजी महाराज के चरणकमलों का ध्यान रखकर और अलखनिरञ्जन भगवान् परमेष्ठी विधाता चक्रपाणि का स्मरण करके सूचीपत्र की लिखी हुई बातों का सविस्तार वर्णन करता हूँ।

वेद चार हैं—ऋग्, यजुः, साम, अथर्वण। पुराण १८ हैं—पद्म १, स्कन्द २, गरुड़ ३, मत्स्य ४, वायु ५, ब्रह्माण्ड ६, लिङ्ग ७, अग्नि ८, कूर्म ६, वामन १०, नारदीय ११, विष्णु १२, भविष्योत्तर १३, मार्कण्डेय १४, वाराह १५, भारत १६, ब्रह्मवैवर्त्तक १७, भागवत १८। उपपुराण भी अठारह हैं—काली १, साम्ब २, सनत्कुमार ३, वरुण ४, मारीच ५, नन्दी ६, शिव ७, दुर्वासा ८, मनु ६, नारदीय १०, कपिल ११, सौर १२, माहेश्वरी १३, शुक्र १४, भार्गव १५, नृसिंह १६, धर्म १७, पाराशर १८।

यथा श्लोक अष्टादशपुराणे।

पद्मस्कन्दविहंगमत्स्यपवनं ब्रह्माण्डलिङ्गाग्नयः
कूर्मो वामननारदीयसहितं विष्णुं भविष्योत्तरम्।
मार्कण्डेयवराहभारतयुतः श्रीब्रह्मवैवर्त्तकः
श्रीमद्भागवतं दिशन्तु परमं श्रेयः पुराणानि वै ॥ १ ॥

यथा अष्टादश उपपुराणे।

कालीसाम्बसनत्कुमारवरुणं मारीचनन्दीशिवं
दुर्वासं मनुनारदीयकपिलं सौरं च माहेश्वरम्।
शुक्रं भार्गवकं नृसिंहमपरं धर्मं च पाराशरं
कुर्वन्त्योपपुराणकानि सततं सौख्यानि त्वष्टादश ॥ २ ॥

और अठारह स्मृतियों ने यद्यपि वेद और पुराण का आशय लेकर बहुत कुछ पाप पुण्य कहा पर जब उन्होंने देखा कि गुणनिधि, गङ्गा,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गज, सौर मुनि समचित्त, व्याध, अजामिल आदि सीधे उस पद को पहुँचे जो बड़े-बड़े धर्मात्माओं को स्वप्न में भी नहीं मिल सकते तो वह भी आश्चर्य में गूंगे-बहरे होकर अपना क्षुद्रता और मूर्खता को मानने लगे। छः शास्त्रों का यह हाल है कि पूर्वमीमांसावाले स्वर्ग की प्राप्ति को मोक्ष कहते हैं। उस स्वर्ग का प्राप्त करना वेद की आज्ञा पर घटाते हैं और उसके विपरीत नरक मानते हैं। उत्तम कार्य और मन्त्र को देवता मानते हैं। न्याय और वैशेषिक इक्कीस क्लेशों से छूटने को मोक्ष कहते हैं। अपनी मुक्ति केवल सोलह या सात पदार्थों के ज्ञान को बतलाते हैं। कारण अर्थात् सूक्ष्मरूप को नित्य और कार्य अर्थात् स्थूलरूप को अनित्य कहकर आत्मा, आकाश, काल, दिशा और मन को सच्ची चीजें और ठीक प्रकट करते हैं। मन के सिवाय चारों को व्यापक जानकर केवल कर्म को बीजरूप समझते हैं और बीजरूप के सिवाय सम्पूर्ण वस्तुओं को जो उत्पन्न हुई हैं नाशवान् जानते हैं और कहते हैं कि चौदहों गुण संसार के कारण हैं। परमात्मा में आठ गुण हैं और सब काम समय पर होते हैं। न्याय इस बात को भी नहीं मानता है। आत्मा तीन प्रमाण से नाशवान् नहीं एक अणुप्राण दूसरा मध्यम तीसरा परममहत् और पातञ्जलि सांख्य प्रकृति व पुरुष की समाधि अवस्था में लय होने को 'मोक्ष' कहते हैं। अष्टांग योग से मन की शुद्धता और मन की शुद्धि से ज्ञान और ज्ञान से मुक्ति प्राप्त होना बताते हैं और कहते हैं कि प्रकृति नाश नहीं होती। वेदान्त अपने स्वरूप में लय होने को मुक्त और निष्कामता को उत्तम कर्म कहते हैं। 'तत्त्वमसि', 'एकोऽहम्भविष्यामि', 'एकमेव द्वितीयं नास्ति' आदि बारह यज्ञ वेदान्त में हैं, जिनका संक्षेप यह है कि सम्पूर्ण वस्तु जो उत्पन्न होती हैं, वह सब नाशवान् हैं और जो वस्तु तीनों समय में स्थिर रहे, वही सत्य पदार्थ है और जो वस्तु चैतन्य है, वह सदा आनन्दस्वरूप है। ब्रह्म और जीव में कुछ भेद नहीं जैसे कि नदी और लहर, मटुका और मट्टी, आग और चिनगारी वास्तव में एक हैं पर दो मालूम होते हैं। ब्रह्म में माया और माया में ब्रह्म रात-दिन की तरह एकरस व्यापक हैं और जगत् का कर्ता व अकर्ता ईश्वर है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माया को सच या झूठ कहना कठिन है। संसार संकल्पमात्र है और ब्रह्म ईश्वर जीव अविद्यासम्बन्ध अविद्या का चैतन्य है और अनादि वस्तु का भेद यह छः वस्तु अपने स्वरूप के साथ सनातन से हैं। दुःख और सुख केवल अन्तःकरण का धर्म हैं। अन्त में हर एक को कर्मों के अनुसार आशा होती है और परलोक भी कल्पनामात्र है।

स्मृतियाँ १८ हैं—मनु १, याज्ञवल्क्य २, मिताक्षरा ३, हारीत ४, पाराशर ५, भृगु ६, शातातप ७, कात्यायन ८, वशिष्ठ ९, भरद्वाज १०, कौशिक ११, बार्हस्पत्य १२, गौतम १३, कश्यप १४, आसुर १५, जमदग्नि १६, व्यास १७, यम १८। पर इस समय पाराशर स्मृति का अधिक प्रचार है। शास्त्र ६ हैं—मीमांसा १, पातञ्जलि २, सांख्य ३, न्याय ४, वैशेषिक ५, वेदान्त ६। सांख्य शास्त्र के उत्पन्न करनेवाले कपिलमुनि हैं, पातञ्जलि के शेष, वेदान्त और न्याय के वशिष्ठ, मीमांसा को जैमिनि और वैशेषिक को गौतमजी ने निर्माण किया हैं। छः इन्द्रियाँ हैं, अर्थात् नाक १, कान २, आँख ३, जिह्वा ४, त्वचा ५, मन ६। इन छः इन्द्रियों के छः विषय और छः ज्ञान और दुःख सुख और शरीर—सोलह पदार्थ प्रमाण १, प्रमेय २, संशय ३, प्रयोजन ४, दृष्टान्त ५, आदीब ६, सिद्धान्त ७, तर्क ८, निर्णय ९, बाद १०, जल्प ११, वेदनिन्दा १२, हेतआभास १३, निग्रह स्थान सात पदार्थ द्रव्य १, गुण २, कर्म ३, सामान्य ४, विशेष ५, समवाय ६, अभाव ७, चौदह गुण—बुद्धि १, सुख २, दुःख ३, इच्छा ४, द्वेष ५, यत्न ६, संख्या ७, प्रमाण ८, पृथक्त्व ९, संयोग १०, विभाग ११, भावना १२, धर्म १३, अधर्म १४, अष्टाङ्गयोग यम १, नियम २, आसन ३, प्राणायाम ४, प्रत्याहार ५, धारणा ६, ध्यान ७, समाधि ८ और यम पाँच प्रकार का है। किसी जीव को दुःख न देना १, सच्चाई २, चोरी न करना ३, ब्रह्मचर्य से रहना ४ और किसी से कुछ न मांगना ५ और नियम भी पाँच प्रकार का है तपस्या करना १, जप २, शौच ३, ईश्वर का पूजन ४ और आसन ५ और प्राणायाम श्वास रोकने को कहते हैं और प्रत्याहार इन्द्रियों के प्रियकर्म से बचने का नाम है। महायज्ञ तत्त्वामसि आदि है। अन्तःकरण चार प्रकार का है, मन १, चित्त २, बुद्धि ३, अहंकार ४। उपनिषद् ५२ माण-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हृक्य १, बृहदारण्य २, ईशावास्य ३, मयत्री ४, मुण्डक ५, सर्व ६, हंस ७, नारायण ८, प्रणव ६, अथर्व १०, सरहंस ११, अमृत १२, कोकनिक १३, शरत् १४, आसुर १५, वेद १६, महात्मा १७, प्रबोध १८, केवल १६, शतरुद्रय २०, योग २१, अथर्वशिखा योगतत्त्वानन्द २२, अथर्वशिखा २३, शिव संकल्प २४, आत्मा २५, ब्रह्मविद्या २६, अमृतवेद २७, तेजबन्धि २८, गवय २६, यामालि ३०, महानारायण ३१, माण्डूक ३२, शुक्ल ३३, क्षूरिका ३४, परमहंस ३५, अर्बुक ३६, केन ३७, केवली ३८, आनन्दवल्ली ३६, भृगुवल्ली ४०, भृगुसूक्त ४१, योगशिखा ४२, मृतलांगूल ४३, अमृतनाद ४४, झांकली ४५, मास्कल ४६, तारक ४७, अरुकनी ४८, त्रणव ४६, सुमक ५०, नृसिंह ५१, अमरमाध्वी ५२ ॥ ऊपर के लोक ॥ भूर्लोक १, भुवर्लोक २, स्वर्लोक ३, महर्लोक ४, जनलोक ५, तपलोक ६, सत्यलोक ७ ॥ नीचे के लोक ॥ अतल १, वितल २, सुतल ३, महातल ४, तलातल ५, रसातल ६, पाताल ७ ॥ वेद में काण्ड तीन हैं ॥ कर्मकाण्ड १, उपासनाकाण्ड २, ज्ञानकाण्ड ३ ॥ अनहद शब्द दश प्रकार का है। घण्टा १, शंख २, वीणा ३, ताल ४, बाँसुरी ५, मृदङ्ग ६, नफीरी ७, बादल के गरज के सदृश आदि ॥ ७ स्वर ॥ षडज १, ऋषभ २, गान्धार ३, मध्यम ४, पञ्चम ५, धैवत ६, निषाद ७ ॥ छः राग ॥ भैरव १, मालकौस २, हिण्डोल ३, दीपक ४, श्री ५, मेघ ६ ॥ ३६ ॥ रागिनी ॥ भैरव की रागिनी ॥ भैरवी १, रामकला २, गुर्जरी ३, टोड़ी ४, बैराटी ५ ॥ रागिनी मालकौस ॥ बागेश्वरी १, कुकुभा २, पर्णिका ३, सोहनी ४, खम्भावती ५ ॥ रागिनी हिण्डोल ॥ बसन्ती १, पञ्चमी २, विलावली ३, ललिता ४, देशाकुशनी ५ ॥ श्रीराग की रागिनी ॥ मालवी १, त्रिवन्नी २, गौरी ३, पूर्वी ४, जटनकुटा ५ ॥ मेघराग की रागिनी ॥ सोरठी १, मलारी २, शार्ङ्गी ३, हरिवंशा ४, मधुमाधवी ५ ॥ दीपक की रागिनी ॥ धनाश्री १, नट २, जैत ३, भीमपलाशी ४, कामोदा ५ और कई रागमालाओं में और तरह के नाम लिखे हैं। यदि विस्तार से इनकी भार्या और पुत्र लिखे जावें तो इस संक्षेप में समाई नहीं ॥ बाजा ॥ केवल साढ़े तीन हैं—अर्थात् खाल १, तार २, फूंक ३, पहिले में नगारा, ढोल, पखावज आदि गिने गये हैं और दूसरे में तम्बूर, सारङ्गी,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वीणा, सितार आदि और तीसरे में नफीरी, बाँसुरी, सहनाई आदि और आधे बाजा में मंजीरा, झाँझ आदि गिने गये हैं ॥ चार युग ॥ सतयुग १, त्रेता २, द्वापर ३, कलियुग ४ । इन चारों युगों की अवधि इस विस्तार से हैं—सतयुग १७ लाख २८ हजार वर्ष, त्रेतायुग १२ लाख ९६ हजार वर्ष, द्वापरयुग ८ लाख ६४ हजार वर्ष और कलियुग ४ लाख ३२ हजार वर्ष । सब ४३ लाख २० हजार वर्ष । बाकी कल्प और मन्वन्तरों का ब्योरा शिवपुराण में लिखा है ॥ ६ ऋतु ॥ हिम १, शिशिर २, वसन्त ३, ग्रीष्म ४, वर्षा ५, शरद् ६ ॥ छः प्रकार की ईति ॥ काल १, अवर्षण २, टिड्डी ३, मूष ४, ओला पड़ना ५, अधिक वर्षा ६ ॥ चारवर्ण ॥ ब्राह्मण १, क्षत्रिय २, वैश्य ३, शूद्र ४ । प्रकट हो कि ब्राह्मण दश प्रकार के, क्षत्रिय छः भाँति के, वैश्य पाँच तरह के और शूद्र सात प्रकार के उत्तम हैं। बाकी और जो हैं वह भी अच्छे हैं परन्तु वह लोग पुराणों में किसी वर्ण में गिने नहीं गये। उनको अधम और वर्णसंकर के नाम से लिखा है। इस जगह कुछ संक्षेप से ब्योरा लिखा जाता है। ब्राह्मण दश हैं। पञ्च गौड़ में ॥ सारस्वत १, कान्यकुब्ज २, गौड़ ३, मैथिल ४, उत्कल ५ ॥ पञ्चद्राविड़ में ॥ गुर्जर १, द्राविड़ २, महाराष्ट्र ३, कर्णाटक ४, तैलङ्ग ५ ॥ क्षत्रिय बारह हैं ॥ प्रथम सूर्यवंशी, जिसमें कछवाहा और राठौर आदि छः क्षत्रिय हैं। दूसरे सोमवंशी जिनमें यदुवंशी व चंदेल आदि छः क्षत्रिय हैं ॥ वैश्य ॥ जो बारह प्रकार के हैं और दश भाँति के भी हैं। इनमें सुनार आदि हैं। शूद्र में कायस्थ हैं जो बारह प्रकार के हैं और अहीर, नाई, कोरी, काछी आदि संयुक्त हैं। यद्यपि कायस्थों का हाल भविष्योत्तरपुराण में भी पाया जाता है पर पद्मपुराण में अधिक है ॥ चार आश्रम ॥ पहिला ब्रह्मचर्य अर्थात् सोलह वर्ष पर्यन्त विद्या सीखना ॥ दूसरा गृहस्थ अर्थात् ३२ वर्ष पर्यन्त गृहस्थी कार्य में प्रवृत्त रहना ॥ तीसरा ॥ वानप्रस्थ अर्थात् अड़तालीस वर्ष तक योग में स्थित रहे ॥ चौथा संन्यास अर्थात् चौसठ वर्ष तक दण्ड को लिये रहे ॥ फिर परमहंस का नाम पाता है। पर कलियुग में संन्यास और अश्वमेधयज्ञ व गोमेधयज्ञ और मांस के पिण्ड और देवर से पुत्रोत्पत्ति निषेध हैं। छन्द चाहे यह एक हजार तक हैं पर मैंने छः सौ तक देखे हैं और छन्द नाम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वेद का भी है सो वह सात छन्द हैं ॥ दशों दिशा ॥ पूर्व १, अग्नि २, दक्षिण ३, नैर्ऋत्य ४, पश्चिम ५, वायव्य ६, उत्तर ७, ईशान ८, स्वर्ग ६, भूमि १० जिनके अधिपति क्रम से इन्द्र १, अग्नि २, यम ३, कुबेर ४, वरुण ५, वायु ६, राजराज ७, हर ८, ब्रह्मा ६, विभत्स १० हैं ॥ अठारह वर्ण॥ चार वेद, चार वर्ण, चार युग, तीन लोक, तीन काल, सम्पूर्ण १८॥ श्रीविष्णुजी के दश अवतार॥ मत्स्य १, कूर्म २, वाराह ३, नृसिंह ४, वामन ५, परशुराम ६, राम ७, कृष्ण ८, बुद्ध ६, कल्की १० ॥ व श्रीशिवजी महाराज के सो अवतार ॥ वामदेव आदि ५, शर्वादि ८, महाकालादि १०, अहिर्बुध्न्यादि ११, जैगीषव्यादि २८, ज्योतिर्लिङ्ग॥ नन्दी भैरव, वीरभद्र, स्कन्ध कृतमुख, सर्वचक्षुदुर्वासा, ग्रहपति, वागीश, पिप्पलादि, अवधूत पति महेश, शार्दूल हनुमान्, वैश्यानाथ, जितना, द्विज द्विजेश, नरजरेश, भिक्षुकजटल, नर्तक, नटादि सम्पूर्ण १०० ॥ ग्यारह रुद्र शिवपुराण में लिखे हैं परन्तु कोषादि की पुस्तकों में ग्यारह रुद्र और बारह सूर्य के नाम अन्य रीति पर लिखे हैं जैसा कि लिखा जाता है ॥ ग्यारह रुद्र ॥ पशुपति १, भैरव २, रुद्र ३, विश्व ४, विशेष ५, अघोर ६, रूप ७, त्र्यम्बक ८, कपर्दि ६, शूल १०, ईशान ११ ॥ द्वादश सूर्य ॥ सूर्य १, वरुण २, वेदांग ३, रवि ४, भानु ५, गभस्ति ६, विष्णु ७, दिवाकर ८, मित्र ६, यम १०, रैति ११, आदित्य १२ ॥ सप्तऋषि ॥ कश्यप १, अत्रि २, भरद्वाज ३, वशिष्ठ ४, गौतम ५, विश्वामित्र ६, जमदग्नि ७, इस मन्वन्तर में सप्त ऋषि हैं ॥ सात प्रकार की राज श्री ॥ मन्त्री १, शस्त्र २, घोड़ा ३, हाथी ४, देश ५, कोष ६, गढ़ ७, यह सात राजश्री कहलाते हैं और राजों को यह सात वस्तु आवश्यक हैं ॥ चौदह परम भागवत ॥ प्रह्लाद १, नारद २, पराशर ३, अम्बरीष ४, व्यास ५, शुक्र ६, शौनक ७, भीष्म ८, रुक्म ६, अङ्गद १०, अर्जुन ११, पुण्डरीक १२, वशिष्ठ १३, विभीषण १४ आदि ॥ चौदह परम पशुपति ॥ दुर्वासा १, कौशिक २, ब्रह्मा ३, मार्कण्डेय ४, ऐन्द्र ५, बाणासुर ६, विष्णु ७, शक्ति ८, मरीचि ६, रामचन्द्र १०, गणादि ११, भार्गव १२, बृहस्पति १३, गोतमादि १४ ॥ हथियारों के नाम ॥ खट्वाङ्ग १, खड्ग २, चर्म ३, पास ४, अंकुश ५, डमरू ६, शूल ७, चाप ८, बाण ६, गदा १०, शक्ति ११, भिन्दिपाल

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१२, तोमर १३, मुशल १४, मुद्गर १५, पट्टिश १६, परिघ १७, भुशुण्डी १८, चक्र १६, आदि ॥ चौंसठि तन्त्र ॥ वीर १, सुतन्त्र २, फट्कारी ३, गलचूड़ामणि ४, कालीकल्प ५, कालिकाकुल ६, काली ७, तत्त्व ८, भैरव ६, कौमारी १०, कालक ११, कोलार्णव १२, ज्ञानार्णव १३, कालकुलार्णव १४, शारदातिलक १५, कालिकाश्रुति १६, कौमारीकल्प १७, बीज चूड़ामणि १८, उत्तर विजयाकल्प १६, रुद्रयामलि २०, सम्मोहन २१, नारायणी २२, सारस्वत २३, भावचूड़ामणि २४, श्रीकर्म २५, क्षीणतुण्ड २६, विमलेश्वरी २७, मुण्डमाला २८, संकर्षणगन्धर्व २६, दक्षिणामूर्ति ३०, सन्धित ३१, तारातन्त्र ३२, नीलतन्त्र ३३, मन्त्ररत्नावली ३४, कुब्जका ३५, कालिकाश्रुति ३६, सिद्धेश्वर ३७, कोलककुल ३८, नीलभद्र ३६, कुलप्रकाश ४०, सिद्धसारस्वत ४१, कुलसद्भाव ४२, वामकेश्वर ४३, तारार्णव ४४, कालिकाकल्प ४५, योगिनीतन्त्र ४६, वीरतन्त्र ४७, शुक्तियामलि ४८, लिङ्गागम ४६, ताराप्रदीप ५०, गोपतन्त्र ५१, कालिकामहोग्र ५२, ताराकल्प ५३, वाराहीसंहिता ५४, मत्स्यसूत ५५, उड्डीस ५६, मेरु ५७, तारास्वर ५८, चूड़ामणि ५६, गलुशंभार ६०, गलतन्त्र ६१, ब्रह्मयामलि ६२, आदि ॥ चौदह विद्या ॥ ब्रह्मज्ञान १, गायनविद्या २, रसायनविद्या ३, ज्योतिष ४, वैद्यक ५, शास्त्रविद्या ६, पैरने की विद्या ७, व्याकरण ८, छन्द ६, कोक १०, काव्य ११, घोड़े आदि की सवारी १२, नटविद्या १३, चातुरी १४ ॥ वेद के छः अङ्ग ॥ शिक्षा १, ज्योतिष २, कल्प ३, निरुक्ति ४, छन्द ५, व्याकरण ६ ॥ चौंसठिकला ॥ लिखना १, चोरी २, बजाना ३, नाचना ४, गाना ५, नटकर्तव्य ६, झूठ को सच दिखलाकर कहना ७, चित्र खैंचना ८, तीर से फूल और चावण आदि काटना ६, फूलों की सेज सजाना १०, दाँतों की सफाई ११, कपड़ों की सफाई १२, बालों की सफाई १३, रङ्गों की पहिचान १४, स्वांग करना १५, सोने की युक्ति १६, कुआँ-नाला आदि बनाना १७, दरिया या किश्ती में निशान मारना १८, मछली मारना १६, माला बनाना २०, जूड़ा बाँधना २१, मुकुट बाँधना २२, पोशाक की सजावट २३, फूलों का गहना बनाना २४, इत्र आदि बनाना २५, इंद्रजाल २६, प्रसूत में सुगमता की युक्ति २७, जल्दी खेलना २८, तरकारी के प्रकार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व चावल पकाना २९, कसार पकाने की युक्ति ३०, चूर्ण का बनाना ३१, मद्य और आसवादि का खींचना ३२, सीना ३३, बर्छीखेलना ३४, डमरू का बजाना ३५, छलियों को खेल में परास्त करना ३६, सम्पूर्ण पुस्तकों को तुरन्त पढ़ लेना ३७, नाटक ३८, सामयिक श्लोक कहना ३९, लट्ठबाजी ४०, तलवार की लड़ाई ४१, बाणयुद्ध ४२, हास्य ४३, गद्दी बनाना ४४, रत्नों का परखना ४५, रुपये का परखना ४६, सम्पूर्ण धातुओं की पहिचान ४७, रत्नों के रङ्ग की पहिचान ४८, बुरे अच्छे आदमी की पहिचान ४९, रस आदि बनाना ५०, चिकित्सा-ओषधि आदि तुरन्त करना ५१, मेढ़ा और पक्षियों आदि को लड़ाना ५२, तोता-मैना आदि का पढ़ाना ५३, बालों का गिराना ५४, बालों के धोने में नाना प्रकार की युक्ति ५५, मन और हाथ की चीज को जो गुप्त हो उसका बनाना ५६, बहुत देशों की भाषा जानना ५७, पुष्प और उद्यान की सजावट ५८, सम्पूर्ण अक्षर यन्त्र में लाना ५९, अपनी ओर से अक्षर रखना ६०, मन में श्लोक कहना ६१, काम करके छोड़ देना ६२, कपड़ों को चुरा लेना ६३, लड़कों को खिलाना ६४ ॥ आठ सिद्धियाँ ॥ अणिमा जिससे बहुत छोटा शरीर हो सकता है और दूसरा उसको देख नहीं सकता १, महिमा जिससे उड़ने की शक्ति प्राप्त होती है २, गरिमा जिससे उसको कोई उठा नहीं सकता ३, लघिमा सूक्ष्म से सूक्ष्म बनना ४, प्राप्ति ५, प्रकाम्य ६, ईशित्व ७, वशित्व ८, यह भी इसी प्रकार के हैं ॥ चार फल ॥ अर्थ १, धर्म २, काम ३, मोक्ष ४ ॥ चार प्रकार की मुक्ति ॥ सालोक्य अर्थात् परमात्मा के लोक में रहना १, सारूप्य अर्थात् परमात्मा के स्वरूप के अनुसार स्वरूप धारण करके वहाँ रहना २, सामीप्य अर्थात् परमात्मा के समीप रहना ३, सायुज्य अर्थात् परमात्मा में मिल जाना ४ ॥ पञ्चरत्न ॥ सोना १, चाँदी २, मोती ३, लाजवर्द ४, प्रवाल ५ ॥ नवरत्न ॥ माणिक्य १, मुक्ता २, पन्ना ३, पुखराज ४, हीरा ५, नीलम ६, लहसुनियाँ ७, वैडूर्य ८, गोमेदक ९ ॥ ग्यारह रत्न ॥ बिल्लौर १, वज्र २, पद्मराग ३, नीलम ४, सरिक्त ५ यह पाँच महारत्न कहलाते हैं और पुष्पराग १, वैडूर्य २, गोमेदक ३, स्फटिक ४, लहसुनियाँ ५, प्रवाल ६, यह सब मिलाकर यह सब ग्यारह होते हैं ॥ चौदह धातु ॥ पहिले सात

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धातु सोना १, चाँदी २, ताँबा ३, राँगा ४, जस्ता ५, सीसा ६, लोहा ७, दूसरे सात उपधातु सोनामाखी १, रूपरज २, तूतिया ३, काँसा ४, सिन्दूर ५, शिलाजीत ६ ॥ छः रस॥ मधुर १, कषाय २, खटाई ३, कटुक ४, तिक्त ५, लवणखार ६ ॥ छत्तीस व्यञ्जन ॥ मुख्य करके चार प्रकार के भोजन हैं उनकी ३६ साखा हैं। भक्ष्य १, भोज्य २, लेह्य ३, चोष्य ४ ॥ पञ्चामृत यथा शिवधर्मे ॥ पञ्चामृतं दधिक्षीरं सितामधुघृतं तथा ॥ छः चक्र ॥ मूलाधारचक्र १, स्वाधिष्ठानचक्र २, मणिपूरचक्र ३, अनाहदचक्र ४, विशुद्धचक्र ५, ब्रह्मरन्ध्रचक्र ६ ॥ तीन नाड़ी ॥ पिङ्गला १, इङ्गला २, सुषुम्णा ३, यह तीनों सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि से सम्बन्ध रखती हैं। पिङ्गला दाहिनी श्वास और इङ्गला बाईं श्वास और सुषुम्णा दोनों श्वास कहलाते हैं और कुम्भक १, रेचक २, पूरक ३, अर्थात् वायु का खींचना, वायु का छोड़ना, पवन का रुकना, इन्हीं तीन नाड़ियों से होता है॥ दश प्रकार की वायु ॥ प्राण १, अपान २, समान ३, व्यान ४, उदान ५, और इनका स्थान क्रम से चित्त १, गुदा २, नाभि ३, कण्ठ ४, और शरीर ५, है और नाग १, कूर्म २, कृकल ३, देवदत्त ४, धनञ्जय ५, यह पाँच मिलकर दश हुये ॥ महानाग ॥ वासुकी १, तक्षक २, कर्कोटक ३, शंख ४, कुलिक ५, पद्म ६, महापद्म ७, महानाग ८ ॥ नौनाथ ॥ परमानन्दनाथ १, प्रकाशनानन्द-नाथ २, काकुलेश्वरानन्दनाथ ३, कोलेश्वरानन्दनाथ ४, भुगानन्दनाथ ५, सहजानन्दनाथ ६, गङ्गतानन्दनाथ ७, विमलानन्द ८, नाथ ९ ॥ वाहन ॥ शिव के वाहन नन्दीश्वर बैल हैं ॥ विष्णु के गरुड़ ॥ ब्रह्मा के हंस ॥ सूर्य के घोड़ा ॥ गणेश के मूषक ॥ इन्द्र के हाथी ॥ अग्नि के तोता ॥ चन्द्रमा के हरिण ॥ स्कन्द के मोर ॥ देवी के सिंह ॥ यमराज के भैंसा ॥ लक्ष्मी के उलूक ॥ बुध के शशा ॥ जल के बादल ॥ मेघ के वायु ॥ राहु के कछुवा ॥ शुक्र के मेढक ॥ पञ्च उपासक ॥ शव १, वैष्णव २, शाक्त ३, सौरि ४, गाणपत्य ५, और बौद्ध व जैनमती इन पाँच से बाहर हैं ॥ दशकाव्यांग ॥ शब्द १, अर्थ २, छन्द ३, प्रसना ४, नायक ५, राति ६, गुण ७, अलङ्कार ८, रस ९, व्यंग १०, और शब्द तीन प्रकार का है ॥ देवता १, नाग २, मनुष्य ३, अर्थात् यह तीन भाषा हैं और इनका बहुत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़ा विस्तार है॥ पुराण के दश लक्षण॥ सर्ग १, विसर्ग २, स्थान ३, पोषण ४, ऊति ५, मन्वन्तर ६, ईशान ७, निरुद्ध ८, मुक्ति ९, अश्रेयी १०, इसका भी बहुत विस्तार है इससे नहीं लिखा॥ पाँच प्रकृति॥ दुर्गा १, राधा २, लक्ष्मी ३, वाणी ४, शाकम्भरी ५॥ आठ शक्ति॥ इन्द्राणी १, कौमारी २, ब्रह्माणी ३, वाराही ४, चामुण्डी ५, वैष्णवी ६, माहेश्वरी ७, विनायकी ८॥ दश महाविद्या॥ तारा १, काली २, भुवनेश्वरी ३, भैरवी ४, कमला ५, बगलामुखी ६, छिन्नमस्ता ७, धूमावती ८, मातङ्गी ९, महाविद्या १०॥शक्ति॥ वैष्णवी १, ब्रह्माणी २, रुद्राणी ३, माहेश्वरा ४, नारसिंही ५, वाराही ६, ऐन्द्राणी ७, कौमारी ८, सर्वमंगला ९॥

पीठि ५२ भैरवसमेत

छन्द

हिंगुला पीठि भीमलोचन हैं कोटरिपीठि दिगम्बर।
कहि करवीर पीठि में भैरव तहाँ त्रिनेत्र अडम्बर॥
सुगन्धा पीठ क्रोध है भैरव त्र्यम्बक पीठ सुनन्द।
काश्मीर में हैं त्रिनेत्तर कहि भैरव सानन्द॥
ज्वालामुखी पीठ में उन्नत जालन्धर में भीषण।
हृदपीठि में वैजनाथ नैपाल कपाली तीक्षण॥
मालव में अमरेश विराजें भैरवरूप विशाल।
उत्कलहू में जगन्नाथ कहि भैरवरूप कराल॥
पीठिमण्डकी चक्रपाणि कहि भैरवजन सुखदानि।
बहुलापीठि अभीरुभैरव उजयनि कपिल बखानि॥
पट्टनपीठि चन्द्रशेखर करि त्रिपुर पीठि नकुलेश।
तिस्रो पीठि उमानँद भैरव प्राग पीठि त्रलितेश॥
भुवनेश्वरी पीठि सर्वोत्तम देवि भागवत गावै।
वाराणसी कालभैरव हैं तन्त्र ग्रन्थ दरशावै॥
मणिकर्णिका पीठि में भैरव निमिष नाम अस गावै।
कालपीठि असितांग नर्मदा भैरव चण्ड बतावै॥
सावित्री में अश्वनाथ कहि गायत्री आनन्द।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काञ्चीपुरी रुद्र भैरव कहि श्रीशैल बिन छन्द ॥
वृन्दावन भूतेश कहावै पीठि सँहारक रुद्र ।
बाराही में महा भैरवे जाकी कीर्ति समुद्र ॥
करतोया में वामन भैरव श्रीगिरि सुन्दरानन्द ।
पीठि कपाली भीमरूप कहि भैरवरूप सनन्द ॥
प्रभास पीठि में भैरव राजैं चक्रतुण्ड तहँ छाजे ।
पीठिवन्तिकापुरी में भैरव लम्बकरण छबि छाजे ॥
चित्रपीठि कृत्यायू भैरव गोदावरि दशपानि ।
कीतुराख्य में वत्सनाभ कहि रत्नपीठि शिव जानि ॥
मिथिलापीठि जोमेश्वर भैरव कालिपीठि क्रोधेश ।
चक्रेश्वर में चक्रनाथ कहि भैरव पूजावेश ॥
पद्मपीठि में मञ्जुल राजैं कहिये भैरव चण्ड ।
अट्टहास में विश्वेश्वर कहि भैरव तेज अखण्ड ॥
हारीपीठि में नन्दकेशव कहि भैरव तेज बखानि ।
लङ्कापुरी में राक्षसेश्वर कहि भैरव व्रज वरदानि ॥
उड्यानपीठि में रुरुभैरव हैं मणि हेरम्ब संहार ।
वावनपीठि में बावन भैरव फलदायक संसार ॥

पञ्चकन्या । अहल्या १, द्रौपदी २, तारा ३, कुन्ती ४, मन्दोदरी ५ ।

षोडशश्रृंगार यथा ।

आदौ मज्जनचारुचीरतिलकं नेत्राञ्जनं कुण्डलं
नासामौक्तिककेशहारकुसुमं भङ्कारिणौ नूपुरौ ।
अङ्गेचन्दनचारुकञ्चुकिमणिं क्षुद्रावलीं घण्टिकां
ताम्बूलं करकङ्कणं चतुरता श्रृङ्गारकाः षोडश ॥१॥

द्वादशभूषण यथा ।

स०—शील औ लाज मिठाई बतानिमों, तैसी हठाई सो धर्ममयूषन । साधुता और पतिव्रत तोष, मिताई सबै सों न काहे को दूषन ॥ तैसी विनै औ अचार क्षमा, गुरुलोगन सेवें को कोषन भूषन । एई तियान को तीरथ से शुभ, कीरतिकारी हैं द्वादश भूषन ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शृंगार १, हास्य २, करुणा ३, रुद्र ४, वीर ५, भयानक ६, बीभत्स ७, अद्भुत ८, शान्त ९, और भाव अभाव आदि असंख्या हैं इसके कारण नहीं लिखे। अठारह व्यसन। शिकार १, दिन में सोना २, निरर्थ बकना ३, स्त्री के अधीन होना ४, मैथुन आदि की वार्ता करना ५, मद्यपान ६, जुवा खेलना ७, गाना ८, नाच देखना ९, बाजा बजाना १०, व्यभिचार ११, शत्रुता १२, ईर्षा १३, विपरीतवाक्य १४, कठोर वचन १५, शीघ्र मारना १६, गाली १७ और अपने स्वामी का अहित चाहना १८॥ षटकर्म॥ वेद पढ़ना १, वेद पढ़ाना २, दान देना ३, दान लेना ४, जप करना ५, जप कराना ६, मुख्य करके ब्राह्मण के दश कर्म हैं जैसे शान्ति, दान्ति आदि उपचार जो ३८, १६, १०, ५ हैं।

व्रतार्के यथा

अर्घ्यं च पाद्याचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम्। स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामं चोपवीतिकम्॥ पुनराचम्य भूषे च दर्शनालोकनात्ततः। गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः परम्॥ पानीयं तोयमाचामं हस्तवासस्ततः परम्। ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं पुनः पुनः॥ गीतवाद्यं तथा नृत्यं श्रुतं चैव प्रदक्षिणम्। पुष्पाञ्जलिनमस्कारा अष्टत्रिंशत्समीरिताः। इत्यष्टत्रिंशदुपचाराः॥

आसनं स्वगतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनीयकम्। मधुपर्कसमायुक्ता वसनाभरणानि च॥ सुगंधिसुमनो धूपदीपमन्नेन तर्पणम्। माल्यानुलेपनं चैव नमस्कारं विसर्जनम्॥ इति षोडशोपचाराः!

अर्घ्यं पाद्यं च वसनमधुपर्काचमान्यपि। गन्धादयो निवेद्यान्ता उपचारा दश क्रमात्॥ इति दशोपचाराः।

गन्धपुष्पौ धूपदीपौ नैवेद्यं पञ्चमं स्मृतम्॥ इति पञ्चोपचाराः।

नवधा भक्ति, सेवन १, स्मरण २, कीर्तन ३, अर्चन ४, श्रवण ५, दास्य ६, वन्दन ७, सख्य ८, समर्पण ९॥ दश इन्द्रिय॥ श्रवण १, त्वचा २, नेत्र ३, जिह्वा ४, नासिका ५, यह पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं और हाथ १, गरदन २, गुदा ३, लिङ्ग ४, पग ५, यह पाँच कर्म इन्द्रियाँ हैं॥ सात धातु॥ चर्म १, रुधिर २, मांस ३, मेद ४, अस्थि ५, मज्जा ६, वीर्य ७॥ ५ तत्त्व॥ पृथ्वी १, जल २, अग्नि ३, वायु ४, आकाश ५॥ २५ प्रकृति॥ काम १, क्रोध २, लोभ ३,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मोह ४, भय ५ यह पाँच आकाश के गुण हैं। दौड़ना १, लेटना २, काँपना ३, चलना ४, संकोच ५ यह वायु के गुण हैं। ज्योति १, पसीना २, रक्त ३, लार ४, मूत ५ यह जल के गुण हैं। त्वचा १, केश २, मांस ३, नाड़ियाँ ४, अस्थि ५ यह पाँच पृथ्वी के गुण हैं। प्यास १, भूख २, नींद ३, थकना ४, आलस्य ५ यह पाँच अग्नि के गुण हैं।

८४००००० योनियाँ ये हैं। वृक्ष २०००००० । जल से जो उत्पन्न हुये ६००००० । कृमि आदि ११००००० । पक्षी १०००००० । चतुष्पद ३०००००० । मनुष्य ४००००० । राजनीति–साम अर्थात् मीठे वचन कहना १, दाम अर्थात् द्रव्य और धन देना २, भेद अर्थात् शत्रु के मित्रों को अपनी ओर कर लेना ३, और दण्ड अर्थात् प्रकट अथवा गुप्त शत्रु को नाश करना ४ और सन्धि विग्रह आदि इन्हीं चार उपायों के विषय हैं।

चार अवस्थायें–जाग्रत १, स्वप्न २, सुषुप्ति ३, तुरीय ४। चार प्रकार के दर्शन–राजा १, यति जो सम्पूर्ण विद्यानिधान हो २, पतिव्रता स्त्री ३, ब्राह्मण बौना ४ इनके दर्शन से अति पुण्य होता है।

आवश्यक कामों का ब्योरा।

गुरु शिष्य का सम्बन्ध

उचित है कि गुरु बहुत जान बूझ के करे और गुरु को उचित है कि एक वर्ष तक शिष्य का आचरण अवलोकन करके चेला करे। यथा सारसंग्रहे–

सद्गुरुस्स्वाश्रितं शिष्यं वर्षमेकं परीक्षयेत्।

क्योंकि जिस तरह से मन्त्री और अन्य सभासदों के पापों का भागी राजा होता है उसी तरह से गुरु-शिष्य की दशा है। यथा रुद्रयामले–

राज्ञि चामात्यजो दोषः पत्नीपापं च भर्त्तरि।
यथा शिष्यार्जितं पापं गुरुं प्राप्नोति निश्चितम्।

और दिव्यागमन में लिखा है कि गुरु का वस्त्र, आसन, जटा, छाया, पानी जहाँ नहाया हो वहाँ नाँघना न चाहिये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गुरु * के निकट पूजन और गर्व के साथ कोई काम और शिष्यों को विद्या पढ़ाना और आज्ञा चलानी न चाहिये। जो मनुष्य गुरु को मनुष्य, मन्त्र को अक्षर और परमात्मा को पत्थर के सदृश जानते हैं, वह नारकीय हैं, जैसा कि ज्ञानार्णव में लिखा है। देवता की प्रसन्नता से अधिक गुरु की प्रसन्नता उचित है; जैसा कि तन्त्रराज में आज्ञा है। गुरु के न होने पर उनके भाई, स्त्री और लड़के की पूजा उचित है। जो मनुष्य मन्त्र को छोड़ देते हैं, वह मानो मृत्यु के मुख में पड़े होते हैं और जो मनुष्य गुरु का त्याग करते हैं, वह निर्धन रहते हैं। मनुष्य दोनों को त्यागने से घोर नरक पाता है। गुरु के हाथ कोई चीज बेचना या गुरु से कुछ लेना मना है। गुरु को आते हुए देखकर अगवानी करनी चाहिये। चलने के समय पीछे-पीछे चलना उचित है। गुरु का पद माता-पिता से भी बड़ा है, जैसा कि आगमकल्पद्रुम और चक्रसार में लिखा है। योगिनी तन्त्र में लिखा है कि बाप, नाना, छोटा भाई आदि गुरु होने के योग्य नहीं है। गणेशाघमर्षण में आज्ञा है कि यती, पिता, वनवासी जो वर्णाश्रम से रहित हो, इनका मन्त्र शुभ नहीं होता और स्त्री को अपने पति से मन्त्र लेना उचित नहीं। कुरुक्षेत्र में या किसी महातीर्थ में सूर्यग्रहण के समय मन्त्र लेना उचित है। मत्स्यसूक्त में पिता अपने पुत्र को शिष्य करने का अधिकारी है।

दूसरी दीक्षा।

चारों वर्ण दीक्षा लेने के अधिकारी हैं, क्योंकि दीक्षा बिना कोई कर्म फल नहीं देता, पूजा जप आदि फल नहीं देते; जैसे कि पत्थर से मोती नहीं उपजता। दीक्षा लेने से करोड़ों जन्म के पाप दूर हो जाते हैं और जो लोग दीक्षा लिये बिना मर जाते हैं, वे रौरवनरक में पड़ते हैं। जो मनुष्य कि आप पोथी में मन्त्र देखकर गुरु बिना मन्त्र जप करते हैं, वे करोड़ जन्म तक नरक में रहेंगे। कदाचित् अपने जन्मनक्षत्र राशि और नाम का ठीक चक्र मिले तो दूसरे चक्र में मन्त्र लेना आवश्यक नहीं। जो मन्त्र बीस अक्षर से अधिक रखता है, वह सिद्ध होने के योग्य

* "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकः अन्धकारनिरोधत्वाद्गुरुरित्यभिधीयते" ॥ १ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नहीं। सब महीनों से मन्त्र लेने के लिये चैत्र का महीना अति लाभदायक है। वैशाख में मन्त्र लेने से रत्न प्राप्त होते हैं। ज्येष्ठ में मन्त्र लेने से मृत्यु और आषाढ़ में मन्त्र लेने से भाई मरता है। श्रावण में मन्त्र लेनेवाले के सब मनोरथ पूर्ण होते हैं। भादों में मन्त्र लेने से लड़का मर जाता है। कुवार में मन्त्र लेना धन की प्राप्ति का कारण है। कार्तिक में मन्त्र लेने से मन्त्र सिद्ध होता है। अगहन में मन्त्र लेना किसी बड़े शत्रु के भय का कारण है। माघ व फाल्गुन में मन्त्र लेने से बुद्धि बढ़ती है। इसकी गणना संक्रान्ति से है; चन्द्रमा से नहीं। रविवार, बुध, बृहस्पति, शुक्र बहुत अच्छे दिन मन्त्र लेने के लिये हैं। द्वीज, तीज, पञ्चमी, छठ, सप्तमी, नवमी, द्वादशी, और पूर्णमासी तक उत्तम मन्त्र लेने के लिये हैं। सन्ध्या और बिजली के गिरने, भूकम्प और अन्य उपद्रवों के समय मन्त्र न लेना चाहिये। जो नीचे लिखे हुये महीनों में मन्त्र लें, उनको कुछ मास, तिथि, योग की आवश्यकता नहीं अर्थात् भाद्रपद षष्ठी, आश्विन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी, कार्तिक की नवमी, अगहन तीज, फाल्गुन नवमी, पौष नवमी, शुक्लपक्ष की माघ चतुर्थी, चैत्र चतुर्दशी, वैशाख तीज, ज्येष्ठ दशहरा पञ्चमी, सुदी आसाढ़ तीज, श्रावण शुक्ल पञ्चमी, पर सूर्यग्रहण सबसे उत्तमोत्तम हैं। कदाचित् मङ्गल के दिन चौथ पड़े या इतवार को सप्तमी हो अथवा सोमवार के दिन अमावस हो तो सूर्यग्रहण से सौ हिस्से अधिक फल मिलता है। इसके सिवाय जिस दिन गुरु कृपा करके मन्त्र दें, वह दिन सबसे उत्तम है।

तीसरे माला, आसन, जप, मन्त्र का संस्कार।

प्रकट हो कि माला तीन प्रकार की हैं एक कर माला, दूसरी मनमाला, तीसरी मणिमाला। करमाला यह है जैसा कि मालातन्त्र में श्लोक लिखा है।

मालातन्त्रे श्लोकः।

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु। तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता १ अंगुल्यग्रे च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलङ्घनात्। सर्वसन्धिषु यज्जप्तं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तत्सर्वं निष्फलं भवेत् २ संस्थाप्य हृदये हस्तं तिर्यक्कृत्वा करांगुलीः । आच्छाद्य हस्तं वस्त्रेण दक्षिणेन सदा जपेत् ॥ ३ ॥

अर्थात् बीच में दो पोर छोड़कर बाकी सब पोरों में जाप करे। कपड़े से हाथ बन्द करके हाथ को छाती में रखकर तिरछे हाथ से जाप करना चाहिये। पोरों की लकीरों में जप करने से वह जप व्यर्थ हो जाता है। सब मालाओं से रुद्राक्ष की माला श्रेष्ठतर है।

सौरसंहितायां यथा ।

रुद्राक्षशङ्खपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकैः । स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च स्वर्णैश्च विद्रुमैस्तथा १ राजितैः कुशमूलैश्च गृहस्थस्याहमालिकाः । अंगुलीगणनादेकं पर्वपर्यन्तमुच्यते २ पुत्रजीवैर्दशगुणं शतसंख्यैः सहस्रकम् । प्रवालैर्मणिरत्नैश्च दशसाहस्रकं फलम् ३ तदेव स्फाटिकैः प्रोक्तं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते। पद्माक्षैर्दशलक्षं स्यात् सौवर्णैः कोटिरुच्यते ४ कुशग्रन्थ्या कोटिशतं रुद्राक्षैस्स्यादनन्तकम् । सर्वैर्विरचिता माला नृणां मुक्तिफलप्रदा ॥ ५ ॥

जब माला न मिले तब उँगलियों पर जप करना चाहिये। पच्चीस दाने की माला मुक्ति देने वाली है। तीस दाने की माला धन, सत्ताईस दाने की सर्वकार्य और मनोरथ तथा पन्द्रह दाने की माला शत्रु को नष्ट करनेवाली है। चौवन दाने की माला से तमाम काम सिद्ध होते हैं। एकसौ आठ दाने की माला सबसे उत्तम है। (आसन) सकाम लोगों के वास्ते लाल आसन अच्छा है। काला आसन ज्ञान और मुक्ति के चाहनेवालों को उचित है। माया के चाहनेवालों को बाघम्बर का आसन योग्य है। मन्त्र केवल कुश आशन के ऊपर जप करने से सिद्ध होता है। आसन के ऊपर मन्त्र जप करने से दुःख होता है। काठ के ऊपर आसन लगाने से निर्धनता प्राप्त होती हैं। पत्थर का आसन रोग को उत्पन्न करता है। घास आदि का आसन यश और कीर्ति को नष्ट करनेवाला है। वृक्ष के पत्तों का आसन बुद्धि का कारण है। वस्त्र के आसन से जप और तप नष्ट हो जाता है। हाँ, यद्यपि कुछ और न मिले तो कुछ हानि नहीं और जो वस्त्र में रेशम या ऊन मिला हो तो अयोग्य नहीं। कोई गृहस्थ बिना दीक्षा के मृगचर्म या अन्य किसी प्रकार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के आसन पर बैठे नहीं। क्योंकि आसन केवल उद्यमी, ब्रह्मचारी और यती के लिये रक्खा गया है। भेड़, हाथी, शेर, ऊँट, रीछ और साँप की खाल पर केवल मोहन आदि मन्त्र जप करते समय बैठना योग्य है। गृहस्थ को चाहिये कि माला को विधि संयुक्त डोरे में पिरोकर मन्त्रों से ठीक करे और फिर उसको छिपा कर रक्खे नहीं तो जप नष्ट हो जाता है। जप चारों पदार्थ को देनेवाला है, जो विधि से किया जावे। यज्ञ से कम जप नहीं है। यह जप तीन प्रकार का है—प्रथम वाचक, द्वितीय उपांशु, तृतीय मानस। जब मन्त्र वचन के साथ पढ़ा जाता है तो यह वाचक जप कहा जाता है। जब कि केवल अपने कान तक कुछ सुनने में आता है तो यह उपांशु है। जब कि मन्त्र केवल मन ही मन में अक्षर और मात्राओं समेत जप किया जाता है तो यह मानस है। उचित है कि जप करने के समय मन्त्र के अर्थ समझता जावे। मन को दृढ़ करके दूसरी ओर न जाने दे। मानस जप अन्य दोनों प्रकार के जपों से दश हजार गुण बड़ा है। यदि कोई मनुष्य बहुत उतावली से मन्त्र का जप करता है तो रोगी होता है। जो बहुत धीरे-धीरे जप करता है तो उसके धन का अभाव होता है। इस कारण उचित है कि समानता को काममें लावे जैसे कि तागे में मोती पिरोया जाता है। जो मनुष्य मन्त्र को प्रकट, स्तोत्र को गुप्त और जप को ऊँचे पढ़ता है तो उसको फल नहीं प्राप्त होता है; जैसे कि पानी कच्चे कुल्हड़े से नहीं निकल सकता। जो मनुष्य मन्त्र को अर्थ, चैतन्यता, भग और मुद्रा के जानने बिना सवा लक्ष पर्यन्त भी जप करे तो भी सिद्ध नहीं हो सकता। मन्त्र के संस्कार दश प्रकार के हैं जैसा कि रुद्रयामल तन्त्र में लिखा है।

मन्त्राणां संस्काराः।

जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा। तथाभिषेको विमलीकरणाप्योषणं पुनः॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिरित्येता मन्त्रसंस्क्रियाः॥

सो जो मनुष्य बिना भूप, कलावती, भूषण, उपदेश, प्रयोग और पञ्च आदि के मालूम किये बिना कुछ जप या उपदेश करता है, वह निरर्थक है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौथे त्रिपुण्ड्र तिलक आदि।

शिवपुराण के नवें खण्ड में त्रिपुण्ड्र की विधि विस्तार से लिखी है। इस जगह पर कुछ संक्षेप में लिखा जाता है। दोनों भौहों के बीच भाल में अनामिका अर्थात् छुंगनी के पास की और मध्यमा अर्थात् बीच की अंगुली से दो लकीरें भस्म से सजाकर और तीसरी लकीर अंगुष्ठ से दोनों लकीरों के बीच सजावे और मृत्युञ्जय अथवा कालाग्नि मन्त्र से त्रिपुण्ड्र लगावे। द्वादश तिलक–शिर, माथा, गर्दन, छाती, पांजर, दोनों भुजा, नाभि, कमर, कण्ठ, हृदय अथवा छाती के ऊपर बारह जगह तिलक लगाने को द्वादश तिलक कहते हैं। ब्राह्मण को अछिद्र तिलक लगाना चाहिये, बाकी तीन वर्ण छिद्रसहित तिलक लगावें। जो चारों वर्ण में नहीं है, वह तिलक लगाने का अधिकारी नहीं है। शैव लोगों को त्रिपुण्ड्र लगाना उचित है। शाक्त लोगों को अर्द्धचन्द्र और सौर लोगों को गोल तथा गणेश के पूजकों को चौकोण लगाना उचित है। वैष्णव को दीपज्योति सदृश सीधा और कनेर व बाँस के पत्ते के सदृश छिद्र सहित द्वादश तिलक धारण करने योग्य हैं। यह भी योग्य है कि पूजन से पहिले भस्म को लगावे और पूजन के मध्य में मृत्तिका को काम में लावे। केशर व चन्दन आदि पूजन के पीछे धारण करे। भस्म होम आदि की राख से बनाई गई हो और मृत्तिका तीर्थ या किसी देवता के स्थान की या तुलसीवृक्ष के नीचे की हो। चन्दन लाल, सफेद, पीला जो देवता के पूजन के पीछे बाकी रह गया हो, धारण करना योग्य है। चन्दन बिना कपूर मिलाये देवता को चढ़ाना अयोग्य है। केवल अपने लिये चन्दन बनाना नहीं चाहिये। सूर्य को अञ्जलि दिये बिना किसी देवता का पूजन योग्य नहीं है।

पाँचवाँ षोडशोपचार।

उपचार सोलह प्रसिद्ध हैं। अर्थात् सोलह चीज के साथ पूजन करना कहा जाता है। परन्तु देवी आदि के पूजन विषे चौंसठ उपचार तक हैं। और १६, १५, २८, ५, ८, ६ और तीन तक उपचार हैं। इस कारण हर एक का विस्तार अच्छे प्रकार लिखते हैं। षोडशोपचार ये हैं–आवा-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हन १, आसन २, पाद्य ३, अर्घ्य ४, आचमन ५, स्नान ६, वस्त्र ७, यज्ञोपवीत ८, चन्दन सुगन्धदार ६, पुष्प १०, धूप ११, दीप १२, नैवेद्य १३, प्रणाम १४, प्रदक्षिणा १५, विसर्जन १६ जैसा कि लिङ्गपुराण में लिखा है।

लिङ्गपुराणे यथा।

आवाहनासनं पाद्यमर्ध्यमाचमनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धं पुष्पञ्च धूपकम् १ दीपमन्नन्नमस्कारम्प्रदक्षिणविसर्जने।

जो कोई मनुष्य यह प्रश्न करे कि शालग्राम और नर्मदेश्वर लिङ्ग के पूजन में आवाहन १, विसर्जन २ दो उपचार नहीं होते तो सोलह किस तरह से होंगे। तो कहना चाहिये कि उनके पूजन में आवाहन की जगह पर ध्यान और विसर्जन की जगह पर क्षमापन संयुक्त किये जाते हैं और स्कन्दपुराण में षोडशोपचार यह लिखे हैं।

स्कन्दपुराणे यथा।

ध्यान १, आसन २, पाद्य ३, अर्घ्य ४, आचमन ५, स्नान ६, वस्त्र ७, उपवीत ८, भूषण ६, गन्ध १०, पुष्प ११, धूप १२, दीप १३, नैवेद्य १४, प्रदक्षिणा १५, नमस्कार १६।

यह पूजन पाँच प्रकार का है। अर्थात् पूजा १, आराधन २, यजन ३, अर्हण ४, अर्चन ५। पाँच प्रकार की पूजा का विस्तार—उत्सव के अन्त तक पूजन है—दीपन तक आराधन है—आचमन तक यजन है—और हव्य तक अर्चन है—और ब्रह्मभोजन तक अर्हण है।

आठ उपचार।

अगर किसी मनुष्य को सोलह उपचार से पूजन में सामर्थ्य न हो तो वह केवल आठ उपचार से पूजन करे; जैसी शैवागम में आज्ञा है।

गन्धं पुष्पं च धूपं च दीपमन्ननिवेदनम्।
ताम्बूलञ्च नमस्कारम्प्रदक्षिणक्षमापने॥ १॥

जो आठ उपचार की भी शक्ति न हो तो केवल ६ उपचार से (जैसा कि स्कन्दपुराण की आज्ञा है) पूजन करे—स्नान १, गन्ध २,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फूल ३, धूप ४, दीप ५, नैवेद्य ६। जो इतनी भी सामर्थ्य न हो तो केवल तीन उपचार से पूजन करे; अर्थात् स्नान १, नैवेद्य २, चरणों पर गिर पड़े ३।

तदुक्तं सौरसंहितायाम्।

अभिषेकं च नैवेद्यं नमस्कारस्तथैव च।
एतावदेव कर्तव्यं शिवभक्तेन यत्नतः॥ १॥

जो इतना भी न हो सके तो केवल पुष्प चढ़ावे।

छठे प्रदक्षिण।

उचित है कि तीन प्रदक्षिणा दण्डवत् के साथ देवता की करे। क्योंकि प्रदक्षिणा करने से पूजन सम्पूर्ण दोषों से निवृत्त होता हैं।

तदुक्तं पाराशरस्मृतौ।

प्रदक्षिणात्रयं कुर्यात्प्रकृत्याणतिर्भुवि। शान्तिपूजातिकल्याणी सर्वदोषविवर्जिता १ अयत्नलभ्या सर्वेषां भक्तिमुक्तिफलप्रदा।

जो आदमी दण्डवत् करने से लाचार हो तो उसको चलते, फिरते, सोते, जागते में केवल स्मरण करने से पूजन का फल प्राप्त होता है।

सातवां बिल्वपत्र।

बिना बिल्वपत्र के शिवजी की पूजा, बिना तुलसी विष्णुजी की पूजा और बलिदान बिना देवी की पूजा उत्तम और रुचिकारक नहीं हैं। जो कोई मनुष्य दो या तीन बिल्वपत्र भी शुद्धतापूर्वक शिवजी के ऊपर चढ़ावे तो उसके मुक्त होने में कुछ भी सन्देह नहीं है। जो बिल्वपत्र कटी न हो तो जो ऐसी एक बिल्वपत्र भी शिव के ऊपर चढ़ावे तो शिवलोक में जा रहे। बिल्ववृक्ष के दर्शन व स्पर्शन व प्रणाम करने से रात-दिन के सम्पूर्ण पाप दूर हो जाते हैं। चौथ, अष्टमी, नवमी, चौदस, अमावस, संक्रान्ति और सोमवार के दिन बिल्वपत्र तोड़ना मना हैं।

तदुक्तं लिङ्गपुराणे।

अमां रिक्तां च संक्रान्तावष्टम्यां चन्द्रवासरे।
बिल्वपत्रं न चच्छिन्द्याच्छिन्द्याच्चेन्नरकंव्रजेत्॥ १॥

जो बिल्वपत्र किसी जगह पर न मिले तो बासी और सूखी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बिल्वपत्र लेकर पूजन करे क्योंकि तुलसी तीस दिन, बिल्वपत्र चालीस दिन, कमल तीन दिन और केतकी पाँच दिन तक के तोड़े हुये पवित्र और चढ़ाने के योग्य रहते हैं। जायफल, जावित्री, लौंग, केशर एक वर्ष पर्यन्त चढ़ाने के काम के हैं। अन्य और कोई फूल व पत्र बासी और दूसरे दिन के तोड़े हुये किसी देवता के चढ़ाने योग्य नहीं रहते। हाँ, माला और माली के घर के फूल में कुछ हानि नहीं। जहाँ कहीं हर दिन बिल्वपत्र न मिले वहाँ सात दिन तक बिल्वपत्र रोज चढ़ाने के पीछे धोकर रख लेवे और रोज सात दिन तक वही चढ़ाया करें; आठवें दिन न चाहिये। यदि संयोग से कहीं बिल्वपत्र न मिले तो नये और नर्म चावल को बिल्वपत्र के बदले चढ़ाना ठीक है। नारदीयपुराण में लिखा है कि बिल्वपत्र और तुलसी उलटी चढ़ाना चाहिये। बाकी और सब फूल-फल जिस तरह पैदा होते हैं, उसी तरह चढ़ाना चाहिये। पर स्कन्दपुराण व कई और पुराणों में आज्ञा है कि बिल्वपत्र फूल आदि औंधे कभी न चढ़ावें वरन् जिस तरह उपजते हैं, उसी तरह चढ़ाना चाहिये। शिवजी महाराज का श्रीमुख से वाक्य है कि हमको रत्न, मोती, मूँगा, हीरा आदि बिल्वपत्र बिना रोचक नहीं। बिल्वपत्र व कमल चढ़ाने की संख्या एक हजार तक की है, पर एक या दो या आठ हजार से अधिक हो जाने चाहिये जब कि बासी में कुछ हानि नहीं तो संख्या पूरी कर देनी चाहिये। जहाँ कहीं कि धूप, दीप और नैवेद्य आदि न हों वहाँ बिल्वपत्रों से पूजा पूर्ण कर देनी चाहिये। जो अपने पुत्र या शिष्य या नौकर के सिवाय किसी दूसरे मनुष्य की लाई हुई या शूद्र से मोल पर तुलाई हुई बिल्वपत्र कोई चढ़ावे तो बड़ा पाप होता है। जो अपने हाथ से कोई मनुष्य नर्म और साफ बिल्वपत्र लाकर चढ़ावे तो वह शिवलोक में पहुँचकर शिव के सदृश आप भी हो जावे। जो हर एक बिल्वपत्र भी अपनी लाई हुई कि वह कीड़े और मकड़ी आदि से साफ हो शिवजी महाराज के ऊपर चढ़ावे तो बहुत फल पाता है। जो शिवजी के पञ्चाक्षरी मन्त्र से निश्चयपूर्वक बिल्वपत्र शिव के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य शिव हो जावे।

—:o:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आठवें फूल ।

जो कोई मनुष्य फूलों के बिना शिव और विष्णु आदि की पूजा करे तो उसका कुल और धर्म नष्ट हो जावे। जो एक फूल से भी शिव और विष्णु आदि की पूजा करे तो कुल समेत प्रसन्न बना रहे। फूल चाहे नदी में उपजें अथवा फुलवाड़ी के हों पर सुगन्धित हों, ऐसे पुष्प चढ़ाने चाहिये। पत्र और पुष्प जो जंगल या पहाड़ में उपजे हों, सब शिवजी के ऊपर चढ़ सकते हैं। पर उनमें कीड़े और छिद्र न हों। बासी और रङ्ग से लाल भी न हों। कनेर और कमल के फूल लाल रङ्गवाले भी शिवजी पर चढ़ाने चाहिये। इन दोनों की मनाही नहीं है जैसा कि सौरपुराण में लिखा है।

यथा

रक्तोत्पलः कर्णिकारैर्यः करोति ममार्चनम् ।
स भाग्यवान्मनुष्येषु मम स्यात्प्रियकृत्तमः ॥ १ ॥

तर्जनी अंगुली और अंगूठे से मुद्रा करके फूल देवतों के ऊपर चढ़ावे। मदार व धतूरे के फूल विष्णुजी के ऊपर न चढ़ाने चाहिये, मना है। लाल कनेर या सफेद कनेर का एक फूल भी शिवजी व विष्णुजी के ऊपर चढ़ावे तो अवश्य मुक्ति पावे। कचरी १ कुन्द २ केतकी ३ गुड़हल ४ दोपहरिया ५ मालती ६ और जूही ७ यह सात प्रकार के फूल किसी अवस्था में शिवजी के ऊपर न चढ़ावे। इसी प्रकार से देवी के ऊपर दूब और मदार के फूल चढ़ाना अयोग्य है। मदार और अगस्त्य के पुष्प सूर्य के ऊपर चढ़ाना मना है। तुलसी किसी अवस्था में गणेश के ऊपर न चढ़ावे। ज्ञान-माला में यह आज्ञा है कि अक्षत विष्णुजी के ऊपर, तुलसी गणेश के ऊपर, दूब देवी के ऊपर, बिल्वपत्र सूर्य के ऊपर, धतूरा और मदार के पुष्प विष्णु के ऊपर किसी अवस्था में नहीं चढ़ावे। सफेद व पीले पुष्प विष्णुजी को, देवीजी, सूर्यजी व गणेशजी को लाल पुष्प अतिरोचक और प्रिय हैं। जो फूल कि कीड़ों आदि के साथ हों १ या बाल पुष्पों में सिरा हों २ या सुगन्धहीन हों ३ या सुगन्ध अतितीक्ष्ण हो ४ कली हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

५ वा मैले हों ६ या सूँघे हुये हों ७ या धरे हुये हों ८ या काले वस्त्र या बासन में बाँधे या रक्खे हों ९ या सूखे हों १० या बासी हों ११ या जमीन के गिरे हों अथवा स्नान के पीछे तोड़े गये हों १२ इस भाँति के पुष्प सब देवताओं पर चढ़ाना अयोग्य है। परन्तु चम्पा और कमल की कली इन दोनों को तोड़ना और चढ़ाना योग्य है, पर जो स्नान के पीछे तोड़े गये हों। इस कारण यह दोनों प्रकार के पुष्प स्नान के पीछे तोड़ना योग्य है। जिस प्रकार से कि माला और माली के घर के फूलों में कुछ बासी की हानि नहीं है, उसी प्रकार पुष्पाञ्जलि देने में सीधे उलटे का कुछ विचार नहीं है। तुलसी १ चम्पा २ कोकाबेलि ३ मौलसिरी ४ कुशा ५ दूब ६ पान ७ विल्व ८ देवनी ९ फरेसा १० मणिद्रुम ११ विष्णुक्रांता १२ आंवला १३ अपामार्ग (अर्थात् लटजीरा) १४ इन सबके पत्ते देवताओं के ऊपर चढ़ाना अति उत्तमोत्तम है।

नवें धूप आदि—पहिले सर्वगन्ध।

कस्तूरी दो भाग १ चन्दन चौथाई भाग २ कुंकुम तीसरा भाग ३ और कर्पूर ४ सबके बराबर मिलाकर देवता पर चढ़ावें तो यह धूप सब देवताओं को रोचक है, इसका नाम सर्वगन्ध है।

दूसरी यक्षकर्दम—कर्पूर १ अगुरु २ कस्तूरी ३ चन्दन ४ कङ्कोल ५ इन पाँचों चीजों से बनाना चाहिये।

तदुक्तं व्रतार्के।

कर्पूरमगुरुश्चैव कस्तूरी चन्दनं तथा।
कङ्कोलं च भवेदेभिः पञ्चभिर्यक्षकर्दमः॥ १॥

तीसरी–धूप–अगुरु १ चन्दन २ मुस्ता ३ सिह्लाद ४ कस्तूरी ५ बराबर लेकर धूप बनावे जैसा कि भविष्यपुराण में आज्ञा दी है।

हेमाद्रौ भविष्ये।

अगुरुं चन्दनं मुस्ता सिह्लादं वृषद तथा।
समभागं तु कर्तव्यं धूपोऽयममृताह्वयः॥ १॥

और धूप के दश अङ्ग हैं जैसा कि इस श्लोक में प्रसिद्ध होगा।

षड्भागकुष्ठं द्विगुणो गुडश्च लाक्षात्रयं पञ्च नरस्य भागः। हरीतकी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सर्जरसश्च मांसी भागैकमेकं त्रिलवं शिलाजम् १ घनस्य चत्वारि पुरस्य चैको धूपो दशाङ्गः कथितो मुनीन्द्रैः ।

दशवें मुद्रा–शिवलिङ्ग की मुद्रा ये हैं ।

स्कन्दपुराण ।

उच्छ्रिते दक्षिणाङ्गुष्ठे वामाङ्गुष्ठेन बन्धयेत् । वामाङ्गुलीर्दक्षिणाभिरङ्गुलीभिश्च वेष्टयेत् १ लिङ्गमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यकारिणी । श्रीकामः शीर्षिण कुर्वीत राज्यकामस्तु नेत्रयोः २ मुखे त्वन्नादिकामस्तु ग्रीवायां रोगशान्तिकृत् । हृदये सर्वकामश्च ज्ञानार्थं नाभिमण्डले ३ राज्य कामस्तु बाह्वोर्वै राष्ट्रकामस्तु पादयोः ।

विष्णुजी की सत्रह मुद्रा ये हैं—रामार्चनचन्द्रिकायामगस्त्यः ।

आवाहनी स्थापनी चसन्निधीकरणी तथा । सुसन्निरोधिनी मुद्रा सम्मुखीकरणी तथा संकलीकरणी चैव महामुद्रा तथव च । शङ्खचक्रगदापद्मधेनुकौस्तुभगारुडाः २ श्रीवत्सवनमाले च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

ग्यारहवें व्रत ।

जो मनुष्य कि अपने वर्ण और आश्रम में सन्तोष करता है, सत्यवादी है और जीवों के ऊपर दयालु होता है, ऐसे मनुष्य का व्रत नष्ट नहीं होता व शीघ्र ही फल देता है । कूर्मपुराण में यह आज्ञा है कि ब्राह्मण १ क्षत्रिय २ वैश्य ३ शूद्र ४ महादेवजी का पूजन, दान, यज्ञ और व्रत करने से शिवजी की सायुज्य और सामीप्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं ।

कूर्मपुराणे यथा ।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्राश्चव द्विजोत्तम । अर्चयन्ति महादेवं यज्ञदानसमाधिभिः १ व्रतोपवासनियमैर्होमस्वाध्यायतर्पणैः । तेषां वै रुद्रसायुज्यं सामीप्यं नापि दुर्लभम् २ ॥ देवलोऽपि ॥ व्रतोपवासनियमैः शरीरोत्तापनैस्तथा । वर्णाः सर्वेऽपि मुच्यन्ते पातकेभ्यो न संशयः ३ ॥ भारते ॥ मामुपाश्रित्य कौन्तेय येऽपि स्युः पापयोनयः । स्त्रियो वैश्याश्च शूद्राश्च तेऽपि यान्ति पराङ्गतिम् ४ ॥ देवीपुराणे ॥ स्नातैः समुदितैर्हृष्टैर्ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्नृपैः । वैश्यैः शूद्रर्भक्तियुक्तैर्म्लेच्छैरन्यैश्च मानवैः ५ स्त्रीभिश्च कुरुशार्दूल तद्विधानमिदं शृणु ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवल का वाक्य हैं कि सब वर्ण व्रत और संयम से अपने शरीर को जलाकर सर्व पापों से रहित हो सकते हैं। महाभारत में लिखा है कि व्रत करने से स्त्री, शूद्र और वैश्य भी परमपद को प्राप्त होते हैं। देवीपुराण में स्त्री और म्लेच्छ को भी व्रत करने की आज्ञा दी गई है परन्तु स्त्री को बिना आज्ञा अपने स्वामी के किसी अवस्था में व्रत रखने की आज्ञा नहीं है जैसा कि वर्णन होता है।

मार्कण्डेयपुराणे।

नारी नाल्पमनुज्ञाता भर्त्रा पित्रा सुतेन वा।
निष्फलं तु भवेत्तस्या यत्करोति व्रतादिकम् ॥ १ ॥

कात्यायनोक्ते यथा।

पत्यौ जीवति या नारी तूपवासं व्रतं चरेत्।
आयुष्यं हरते भर्त्तुः सा नारी नरकं व्रजेदिति ॥ १ ॥

विधवा स्त्री को अपने माता-पिता की आज्ञा लेने के उपरांत व्रत रखना उचित है। जब व्रत रक्खे तो पहिले ताम्रपात्र हाथ में रखकर संकल्प करे। प्रभात को स्नान करके नित्यकृत्य से निश्चिन्त हो जावे और हो सके तो उस दिन पृथ्वी पर लेटे। कुछ दिन भर न खावे, जप और होम करे, व्रत के अन्त में कुछ दान दे, चौबीस या बारह या पाँच या तीन ब्राह्मणों को भोजन खिलाकर दक्षिणा दे। व्रत के दिन चार बातें अवश्य करनी चाहिये—पहिले ब्रह्मचर्य रहे अर्थात् जूता आदि न पहिने, दूसरे सिवाय सच के झूठ बात अपने मुख से न निकाले, तीसरे किसी जीवधारी को न मारे, चौथे आमिष अर्थात् मांस न खावे। ब्रह्मचर्य शब्द के अर्थ स्त्रीप्रसंग के त्याग करने के भी हैं। कइयों का वचन है कि पर स्त्री के साथ मैथुन मना है परन्तु बहुत से महात्मा इस बात पर सम्मति रखते हैं कि उस दिन कोई स्त्री प्रसंग के योग्य नहीं है। आमिष शब्द से केवल मांस ही के अर्थ नहीं हैं वरन् और चीजें भी मांस के सदृश उसमें गिनी गई हैं। कोई व्रत रखकर उसका छोड़ना महापाप है।

मदनरत्ने छागलेययथा।

पूर्वं व्रतं गृहीत्वा यो नाऽचेरत्काममोहितः।
जीवनेऽपि च चाण्डालो मृते श्वानोऽभिजायते ॥ १ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रद्धा और व्रत के दिन दातून नहीं करनी चाहिये ।

वृद्धवशिष्ठः ।

उपवासे तथा श्राद्धे न कुर्याद्दन्तधावनम् । काष्ठं विनेति शेषः ॥

व्यासोक्तिः ।

अपो द्वादशगण्डूषैर्विदध्याद्दन्तधावनम् ॥

देवल ऋषि का वाक्य है कि खाने, पानी पीने, पान खाने, दिन के सोने और स्त्रीप्रसंग से व्रत भंग होता है, पर अशक्त मनुष्यों को मनाही नहीं है, वह पानी आदि पीवें ।

यथा देवलः ।

असकृज्जलपानाच्च सकृत्ताम्बूलचर्वणात् ।
उपवासः प्रणश्येत दिवास्वापाच्च मैथुनात् ॥ १ ॥

व्रत के एक दिन पहले और पारण के दिन मांस न खावे। अपने पति के रोगी होने पर स्त्री व्रत रखने की अधिकारिणी है कि अपने पति के बदले व्रत रक्खे और जो चीजें कि व्रत में खानी चाहिये और जिनकी मनाही हैं, वे नीचे लिखी जाती हैं। नियमित प्रण के उपरान्त व्रत का उद्यापन करना चाहिये ।

अथ व्रतहविष्याणि कात्यायनः ।

हविष्येषु यवा मुख्यास्तदनुव्रीहयः स्मृताः ।
माषकोद्रवगौरादीन् सर्वाभावेपि वर्जयेत् ॥ १ ॥

अग्निपुराणे ।

व्रीहिषष्टिकमुद्गाश्च कलायाः सलिलं पयः ।
श्यामाकाश्चैव नीवारा गोधूमाद्या व्रते हिताः ॥ २ ॥

कूष्माण्डालाबुवार्त्ताकपालकीज्योत्स्निकास्त्यजेत। चरुभैक्ष्यं सक्तुकणाः शाकं दधि घृतं मधु ३ श्यामाकाः शालिनीवारा यावकं मुद्गतण्डुलम् । हविष्यं व्रतनक्तादावग्निकार्यादिके हितम् ॥ ४ ॥ मधुमांसं विहायान्यद्व्रते च हितमीरितम् ॥ ५ ॥

भविष्ये यथा ।

हैमन्तिकं सितास्विन्नं धान्यं मुद्गयवास्तिलाः । कलायकंगुनी वारावास्तुकं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हिलमोचिका १ षष्टिकाकालशाकं च मूलकं केमुकेतरत् । कन्दः सैन्धवसामुद्रे गव्ये च दधिसार्षपी २ पयोनुघृतसारश्च यमसाम्रहरीतकी । पिप्पलीजीरकं चैव नागरङ्गकतिन्तिडी ३ कदली लवली धात्री फलानि गुडमैक्षवम् । अतैलपक्वं मुनयो हविष्याणि प्रचक्षते ॥ ४ ॥

बारहवें तीर्थयात्रा महाभारतपुराण के अनुसार ।

यद्यपि तीर्थयात्रा और सब तीर्थों के नाम भारत महापुराण वनपर्व के तेरहवें अध्याय के बीच में विस्तार से सब वर्णन किये गये हैं परन्तु विस्तार के भय से संक्षेप रीति पर केवल प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तीर्थों का वर्णन किया जाता है । प्रकट हो कि जिनके हाथ, पैर और मन अपने अधीन हैं, विद्या और तप में प्रसिद्ध हैं, दानादि नहीं लेते, अहंकार का त्याग किये हैं, कोई काम छल से नहीं करते, फलाहार करते हैं, पाप न करके क्रोध से अलग रह कर इन्द्रियों को जीतते हैं और सत्यता, शीलता और व्रतादि को अङ्गीकार करते हैं; उनको घर बैठे तीर्थ का फल मिलता है । यज्ञ से अधिक फल तीर्थयात्रा करने में मिलता है । जो मनुष्य तीर्थ में जाकर तीन दिन उपवास अर्थात् व्रत नहीं करते और सोना या गोदान नहीं देते वे दरिद्री का जन्म पाते हैं । (प्रथम पुष्करतीर्थ का वर्णन) यह तीर्थ इस सृष्टि में ऐसा है कि जहाँ तीनों सन्ध्या अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या में दश करोड़ हजार तीर्थ रोज जाया करते हैं । सूर्य, चन्द्रमा, मर्त्यगण, अप्सरा, गन्धर्व वे प्रति दिन प्राप्त हो जाते हैं । ब्रह्मा प्रति समय वहाँ स्थित रहते हैं । यह वही स्थान हैं कि जहाँ अगले समय में सम्पूर्ण देवता और ऋषि तप करके सिद्धि पाते रहे । जो कोई मनुष्य पुष्कर में स्नान करके देवता और पितरों का पूजन करता है, वह अश्वमेध यज्ञ से दश भाग अधिक फल पाता है; फिर उसको आवागमन का भय नहीं रहता । कार्त्तिकी पौर्णमासी में पुष्कर के नहाने से ब्रह्मलोक मिलता है, जो पुरुष कि प्रभात सन्ध्या में पुष्कर का स्मरण करता है, उसको सब तीर्थों के स्नान का फल मिल जाता है ।

रेवा अर्थात् नर्मदा, सरस्वती, चर्मण्वती, प्रभास द्वारिका, पिण्डारक सिन्धु, सागरसंगम, भद्रतुङ्गा, कुमारी, पञ्चनदतीर्थ, और सप्तचरुवंश आदि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तीर्थ सौ-सौ अश्वमेध के फल देनेवाले हैं। कुरुक्षेत्र के जाने से फिर कोई पाप बाकी नहीं रहता अर्थात् जो कुरुक्षेत्र की मिट्टी उड़कर किसी के ऊपर पड़ जावे तो वह भी परमगति पाता है। परशुराम ने वहाँ पुष्करतीर्थ को लाकर स्थापन किया है। कई कुण्ड वहाँ हैं जो परशुराम ने क्षत्रियों के रुधिर से भरे थे। उन्हीं पाँच कुण्डों में पितरों का तर्पण किया था। ब्रह्मावर्त, केदार, कपिल, श्यामकानन, ब्रह्मदुम्बर, अपागांदी और काशीसर तीर्थ की अति महिमा है। केदार जिसको कपिष्ठल तीर्थ कहते हैं, वहाँ कृष्ण चतुर्दशी में जाकर शिवजी की पूजा करे तो सर्व मनोरथ पाकर स्वर्ग में बास हो। केदार में तीन करोड़ तीर्थ स्थिर रहते (मिश्रित) हैं। यहाँ श्रीव्यासजी ने सब तीर्थों को स्थापित किया था। वहाँ जाने से हजार गौ के दान का फल प्राप्त होता है। नैमिष अर्थात् नैमिषारण्य की बड़ी महिमा है। जितने कि तीर्थ पृथ्वी भर में हैं, वे सब नैमिषारण्य में हैं और वहाँ जाने से दश पीढ़ी तक मुक्त हो जाती हैं। प्रथोदक स्वामि-कार्त्तिक का यह तीर्थ हैं। यहाँ स्नान करने से अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है। पञ्चवटी में महादेव का पूजन करने से सत्यलोक मिलता है। गङ्गाद्वार में स्नान करने से करोड़ों तीर्थ का फल होता है। कनखल में आकर तीन दिन व्रत करके स्नान करे तो अश्वमेध के यज्ञ के फल को पाकर स्वर्ग लोक को चला जावे। गोप्रतार अर्थात् गुप्तार जो सरयू में है, जहाँ से कि श्रीरामचन्द्रजी अपने सर्वकुटुम्ब और पुरवासी लोगों समेत सुरलोक को गये हैं, यदि कोई मनुष्य वहाँ स्नान करे तो उसे अवश्य स्वर्गलोक मिलेगा। वाराणसी में जाकर शिवजी की पूजा करे और कपिलाह्रद में स्नान करे तो राजसूय यज्ञ का फल मिलता है। मुक्ततीर्थ जिसको 'काशी' कहते हैं, वहाँ जाने से पापों के दूर होने का कुछ वर्णन नहीं वरन् ब्रह्महत्या भी दूर हो जाती है; वहाँ मरने से मोक्ष प्राप्त होता है। इसलिये संसार में और कोई तीर्थ काशीजी के बराबर नहीं है। गया के जाने से केवल अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। अक्षय-वट के नीचे पिण्ड देने से बड़ा फल है। गण्डकी और वसन्तिया नदी के नहाने से बड़ा फल होता है। गोकर्ण में जिसको ब्रह्मा आदि देवता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नमस्कार करते हैं, जो कोई मनुष्य जाकर शिवजी की पूजा करे और बारह दिन व्रत करके वहाँ स्थित रहे तो उसका कोई पाप नष्ट हुये बिना नहीं रहता और अश्वमेधयज्ञ का फल मिलता है। कालिर, चित्रकूट और सुरङ्गवीरपुर में जाने से वाजपेय, अश्वमेध आदि यज्ञों का फल होता है। प्रयाग जहाँ ब्रह्मा आदिक देवता लोकपालों और सब सप्तर्षि, सनत्कुमार आदि और नाग, सिद्ध, सूर्य आदि और ग्रह सम्पूर्ण नदी, समुद्र, अप्सरा, गन्धर्व, महादेव, विष्णु, प्रजापति आदि स्थित रहते हैं; वहाँ तीन कुण्ड अग्नि के हैं और सरस्वती, गङ्गा और यमुना से मिलकर तीनों लोक के पवित्र करने को बहती हैं; वहाँ वेद यज्ञशरीर धारण किये हुए दिखाई देते हैं। संसार में जितने पुण्यतीर्थ हैं, उन सबसे प्रयाग बड़ा है। वहाँ एक यज्ञ के देने से करोड़ का फल होता है। वहाँ साठ करोड़ और दशहजार तीर्थ स्थिर रहते हैं। कनखल और प्रयाग में गङ्गास्नान करने का सब जगह से अधिक फल है। जिस तरह कि आग लकड़ी को जलाती है, उसी तरह प्रयाग में गङ्गा सर्वपापों को जला देती हैं। सत्ययुग में सब तीर्थ बराबर थे पर त्रेता में पुष्कर का माहात्म्य था। द्वापरयुग में कुरुक्षेत्र बड़ा था और कलियुग में गङ्गा के बराबर दूसरा तीर्थ नहीं है। पुष्कर में जो मनुष्य कि तप करके बड़ा दान देते हैं, मलयाचल में जो मनुष्य जल जाते हैं और भृगुतुङ्ग में जो मनुष्य मर जाते हैं, वह फल केवल गङ्गा पुष्कर और कुरुक्षेत्र में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है। गङ्गा का नाम लेने से मनुष्य पवित्र हो जाता है। दर्शन करने से मुक्ति मिलती है और स्नान करने तथा जल पीने से सात पीढ़ियाँ तर जाती हैं। जब तक कि मनुष्य की हड्डियाँ गङ्गा में रहती हैं, तब तक उस मनुष्य को स्वर्ग में बास मिलता है।

श्रीमहाभारतवनपर्वणि यथा।

न गङ्गासदृशं तीर्थं न देवः केशवात्परः।
ब्राह्मणेभ्यः पर नास्ति एवमाह पितामहः॥ १॥

गङ्गा जिस देश में हैं, वह तपोवन है। सिद्धक्षेत्र श्रीगङ्गाजी का किनारा है। यह गुप्तभेद है और हर एक के कहने के योग्य नहीं। दूसरे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धूममुनि के वर्णन के अनुसार पहिले पूर्व दिशा के तीर्थ नैमिष जहाँ गोमती नदी है और जहाँ गई नाम पहाड़ है, वहाँ जाने से पिछली दश पीढ़ियाँ और आगे की दश पीढ़ियाँ मुक्त हो जाती हैं। फल्गूनदी, कौशिकी, कान्यकुब्ज, और गङ्गा-यमुना का संगम जिसको प्रयाग कहते हैं, अगस्त्याश्रम, तपसारण्य, भृगुआश्रम जो महेन्द्र के ऊपर है, केदार आश्रम, गरकण्ड और नद ये सब पूर्व के तीर्थ हैं। दूसरे दक्षिण के तीर्थ। गोदावरी, वेणी, चक्रपियूषिणी, वाराह पियषिणी, हरशेषर, माटरीन, कण्वआश्रमवेदी, सूर्यार्कचन्द्रातीर्थ, अशोकतीर्थ, व्रणतीर्थ, कुमारीतीर्थ, ये दोनों द्राविड़ देश में हैं और गोकर्ण और प्रभासवैदूर्य अलस्यछुव्बूभेदन, पुण्डारक, उज्जयिनी, शिखर, द्वारावती। और पश्चिम की ओर के तीर्थ। ऊनती, नर्मदानदी जो पश्चिम को बहती हैं और विश्वश्रत्राश्रम, गरवैदूर्य, शिखरहर्दनी नदी, पुण्यहद जो मैनाक के ऊपर है, असितगिरि जहाँ कच्छसेन मुनि का आश्रम है और च्यवनाश्रम और जम्बूमार्ग, केतुमाल, गङ्गाद्वार, सिन्दूरान, पुष्कर। चौथे उत्तर की ओर के तीर्थ। मालिनी तीर्थ, सरस्वती जो सिन्धु के मिलने पर हैं, प्लक्षावतन तीर्थ यमुना के ऊपर है। शरभङ्गाश्रम, दृषद्वती, न्यग्रोध जो पाञ्चालदेश में हैं। दालभ्याश्रम और पलाशवन, किरात और किन्नरगिरि, कनखल पुरग्र, भृगुतुङ्ग, बदर्याश्रम।

तेरहवें दान।

भारतपुराण के शान्तिपर्व के अनुसार जो कि दानरूपी अगाध समुद्र का पता नहीं है इसलिये विस्तार और संक्षेप दोनों से हाथ उठाया गया केवल इतना ही कहा जाता है कि गोदान १ भूमिदान २ अन्नदान ३ सुवर्णदान ४ सब दानों से श्रेष्ठ हैं। महाभारत के ❀ के शान्तिपर्व दानधर्म का अवलोकन करना चाहिये क्योंकि उसको देखे बिना ठीक हाल मालूम नहीं हो सकता।

॥ इति ॥

* यह पुस्तक महाभारत जिसमें शान्तिपर्व दानधर्म मोक्षधर्म आदि अठारहो पर्व संयुक्त हैं, इस छापेखाने में मौजूद है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीशिवमहिम्न स्तोत्रम् ।

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः ।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन् ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः ॥
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोरतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि ।
स कस्य स्तोतव्यः कतविधिगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः ॥
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथनबुद्धिर्व्यवसिता ॥
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु ।
अभव्यानामस्मिन्वरद रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः ॥
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनम् किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः ॥
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतामधिष्ठातरं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ॥
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव ॥
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रू प्रणिहितां न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ॥
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्तव ध्रुवमिदं परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन्पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवञ्जिह्वेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ॥
तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरञ्चिर्हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति ॥
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद्बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम् ॥
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात्कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्यापातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः ॥
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीमधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् रिवसितरि त्वच्चरणयोः न कस्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः ॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपाविधेस्याऽऽसीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव ज कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः ॥
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मरः स्मर्तव्यात्मा न हि वशिषु पथ्यः परिभवः ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मही पादाघाताद्व्रजति सहसा संशयपदम् पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुजपरिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता ।।
वियद्व्यापी तारागणगुणितफनोद्गमरुचिः, प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः ।।
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथाङ्गे चन्द्राकौं रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः ।।
हरिस्ते साहस्रं कमलवलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।
क्रतौ सुप्ते जाग्रात्वमसि फलयोगें क्रतुमताम् क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां वद्ध्वा कृतिपरिकरः कर्मसु जनः ।।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृताम् ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणा ।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानब्यसनिनो ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हिं मखाः ।।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुःपाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुम् त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगब्याधरभसः ।।
स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्लाय तृणवत् पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वापुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटनाद अवैति त्वामद्धा तव वरद मुग्धा युवतयः ।।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराश्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलम् तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ।।
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः ।
यदालोक्याह्लादं हृद इव निमज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान् ।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता विभ्रतिगिरम् न विद्मस्तत्तत्त्वंवयमिह तु यत्त्वं न भवसि ।।
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धारमणुभिः समस्तव्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम् ।।
भवः शर्वो रुद्र पशुपतिरथोग्रः सह महांस्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै ते धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते ।।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन दविष्ठाय च नमो नमः सर्वस्मैते तदिदमिति शर्वाय च नमः ।।
बहलरजसे विश्वोत्पत्तो भवाय नमो नमः प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः ।।
कृशपरिणतिचेतः क्लेशवश्यं क्व चेद क्व चं तव गुणसीमोल्लङ्घिनीशश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्यमां भक्तिराधाद्वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिंधुपात्र सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं तदपि तव गुणानांमीशपारं न याति ।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान्यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथाऽत्र प्रचुरतरधनायुः पुत्रमानकीर्तिमांश्च ।।

महेशान्नपरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः । अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वंगुरोः परम् ।
दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं योगादिकाः क्रियाः । महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् ।।

कुसुमदशनामा सर्वगन्धर्वराजः शशिधरंवरमौलैर्देवदेवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवनमिदमकार्षीद्दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।
सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठित यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः ।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममौघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।
श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण ।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः ।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्य गन्धर्वभाषितम् । अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम् ।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वरः । यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः । अर्पिता तेन देवेश प्रीयतां मे सदाशिवः ।।

।। शिवताण्डवस्तोत्रम् ।।

जटाकटाहसंभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनिम् । धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।। १ ।। जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्यलम्बितांभुजङ्गतुङ्गमालिकाम् । डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकारचण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।। २ ।। धराधरेन्द्रनंदिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसंततिप्रमोदमानमानसे । कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।। ३ ।। जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे । मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्त्तु भूतभर्तरि ।। ४ ।। ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् । सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ।। ५ ।। सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः । भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायताञ्चकोरबन्धुशेखरः ।। ६ ।। करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धग-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ज्वलद्धनञ्जयाधरीकृतप्रचण्डपञ्चसायके । धराधरेन्द्र नन्दिनीकुचाग्र चित्रपत्रकप्रकल्पनैक-शिल्पनि त्रिलोचने मतिर्मम ॥ ७ ॥ नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबन्धुकन्धरः । निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतुकृत्तिसुन्दरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्-धुरन्धरः ॥ ८ ॥ प्रफुल्लनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् । स्वरच्छिदंपुरच्छिदंभवच्छिदंमखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदंतमन्तकच्छिदंभजे ॥ ९ ॥ अगर्व-सर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् । स्मरान्तकं पुरान्तकंभवा-न्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकन्तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥ जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भु-जङ्गमस्फुरद्धगद्धगद्विनिर्गमत्करालभालहव्यवाट् । धिमिद्धिमिद्धमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल-ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥ दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठ-रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः । तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः । समं प्रवर्तयन्मनः कदासदा शिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥ कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरेवसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरस्यमञ्जलिं वहन् । विमुक्तलोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्च-रन्कदासुखीभवाम्यहम् ॥ १३ ॥ निलिम्पनाथनागरीकदम्बमौलिमल्लिका निगुम्फनिर्भर-क्षरन्मधूष्णिकामनोहरः । तनोतु नो मनोमुदं विनोदिनीमहर्निशं परश्रियःपरम्पदन्तदङ्ग-जत्विषाञ्चयः ॥ १४ ॥ प्रचण्डवाडवानल प्रभाशुभप्रचारिणी महाष्टसिद्धिकामिनीजनावहू-तजल्पना । विमुक्तवामलोचनाविवाहकालिकध्वनिः शिवेतिमन्त्रभूषणा जगज्जयायजाय-ताम् ॥ १५ ॥ पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनमिदं पठित प्रदोषे । तस्यस्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैवसुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥ १६ ॥

॥ अथ मृत्युञ्जयस्तोत्रम् ॥

कैलासस्योत्तरे शृंगे शुद्धस्फटिकसन्निभे । तमोगुणविहीने तु जरामृत्युविवर्जिते ॥ १ ॥
सर्वार्थ सम्पदाधारे सर्वज्ञान कृतालये । कृताञ्जलिपुटो ब्रह्मा ध्यानासीन सदा शिवम् ॥ २ ॥
पप्रच्छ प्रणतो भूत्वा जानुभ्यामवनिं गतः । सर्वार्थसम्पदाधारो ब्रह्मलोकपितामहः ॥ ३ ॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

केनोपायेन देवेश चिरायुर्लोमशोऽभवत् । तन्मे ब्रूहि महेशान लोकानां हितकाम्यया ॥ ४ ॥

॥ श्रीसदाशिव उवाच ॥

शृणु ब्रह्मन्प्रवक्ष्यामि चिरायुर्मुनिसत्तमः । सञ्जातः कर्मणायेनव्याधिमृत्युविवर्जितः ॥ ५ ॥
तस्मिन्नेकार्णवे घोरे सलिलौघपरिप्लुते । कृतान्तभयनाशाय स्तुतो मृत्युञ्जःशिव ॥ ६ ॥
तस्य सङ्कीर्तनान्नित्यं मुनिमृत्युविवर्जितः । तमेवं कीर्तयेब्रह्मन्मृत्युं जेतुं न संशयः ॥ ७ ॥

॥ श्रीलोमश उवाच ॥

ॐ देवाधिदेवदेवेश सर्वप्राणभृताम्बर । प्राणिनामपि नाथस्त्वं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ ८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देहिनांजीवभूतोऽसि जीवो जीवस्य कारणम्। जगतो रक्षकस्त्वं वैमृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। ९।।
हेपादिग् शिखराकारं सुधावीचि मनोहरम्। पुण्डरीक परं ज्योतिमृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। १०।।
ध्यानाधारं महाज्ञानं सर्वज्ञानैककारणम्। पवित्रासि च लोकानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। ११।।
निहता येन कालेन सदेवासुरमानुषाः। गन्धर्वाप्सरसश्चैव सिद्धविद्याधरास्तथा ।। १२ ।।
साध्याश्च वसवोरुद्रास्तथाश्विनिसुतावुभौ। मरुतश्चदिशानागाःस्थावराजङ्गमास्तथा।। १३।।
जिता सोऽपि त्वया ध्यायन्मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। १४ ।। ये ध्यायन्ति परां मूर्तिन्पूजयन्त्यमरादयः। न ते मृत्युवशं यान्ति मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। १५ ।। त्वमोङ्कारोऽसि देवानां च सदाशिवः। आधारशक्तिः शक्तिनां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। १६।। स्थावरेजङ्गमे वापि यावत्तिष्ठति देहगः। जीवत्यपत्लोकोऽयं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। १७।। सोमसूर्याग्निमध्यस्थव्योमव्यापिन्सदाशिवः। कालत्रयमहाकाल मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। १८ ।। प्रबुद्धे चाप्रबुद्धे चत्वयेव सृजसे जगत्। सृष्टिरूपेण देवेश मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। १९।। व्योम्नि त्वं व्योमरूपोऽसि तेजः सर्वत्र तेजसि। ज्ञानिनां ज्ञानरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २० ।। जगज्जीवो जगत्प्राणः स्रष्टा त्वं जगतः प्रभु। कारणं च सर्वतीर्थानां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २१ ।। नेता त्वमिन्द्रियाणा च सर्वज्ञानप्रबोधकः। सांख्ययोगश्च हंसश्च मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २२ ।। रूपातीतः सुरूपश्च पिण्डस्थपदमेव च। चतुर्योगकलाधारः मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २३ ।। रेचके वह्निरूपोऽसि सोमरूपोऽसि पूरके। कुम्भके शिवरूपोऽसि मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २४ ।। क्ष्यंकरोषि पापानां पुण्यनामपि वर्द्धनम्। हेतुस्त्वं श्रयसोनित्यं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २५ ।। सर्वमाया कलातीत सर्वेन्द्रिय परावर। सर्वेन्द्रियकलाधीश मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २६ ।। रूप गन्धो रसः स्पर्शं शब्दः संस्कार एव च। त्वत्तः प्रकाश ऐतेषां मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २७ ।। चतुर्विधानां सृष्टीनां हेतुस्त्वं कारणेश्वर। भावाभावपरिच्छन्न मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। २८ ।। त्वमेको निष्कलो लोके सकले भुवनत्रये। अतिसूक्ष्मातिरूपस्त्वं मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। २९।। त्वं प्रबोधस्त्वमाधारस्त्वद्बीजं भुवनत्रयम्। सत्त्वं रजस्तमस्त्वं हि मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। ३० ।। त्वं सोमस्त्वं दिनेशश्च त्वमात्मा प्रकृतेः परः। अष्टत्रिंशत्कलानाथ मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते।। ३१।।
सर्वेन्द्रियाणामाधारः सर्वभूत गुणाश्रय। सर्वज्ञानमयानन्त मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। ३२ ।।
त्वमात्मा सर्वभूतानां गुणानां त्वमधीश्वर। सर्वानन्दमयाधार मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। ३३।।
त्वं यज्ञः सर्वज्ञानां त्वं बुद्धिर्बोधलक्षण। शब्दब्रह्मत्वमोङ्कार मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ।। ३४ ।।

।। श्रीसदाशिव उवाच ।।

एवं सङ्कीर्त्तयेद्यस्तु शुचिस्तद्गतमानसः। भक्त्याश्रृणोतियोब्रह्मनसमृत्युवशो भवेत् ।। ३५ ।।
न च मृत्युभयं तस्य प्राप्तकालं च लंघयेत्। अपमृतत्युभयं तस्य प्रणश्यति न संशयः।। ३६।।
व्याधयो नोपपद्यन्ते नोपसर्गभयं भवेत्। प्रत्यासन्नयरे काले शतैकावर्तने कृते ।। ३७ ।।
मृत्युर्नं जायते तस्य रोगान्मुश्चति निश्चितम्। पाञ्चम्यां वा दशम्यां व पौर्णमास्यामथापि वा ।। ३८।। शतमावर्तयेद्यस्तु शतवर्षं स जीवति। तेजस्वी बलसम्पन्नो लभते श्रियमुत्तमाम् ।। ३९।।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

त्रिविधं नाशयेत्पापं मनोवाक्कायसंभवम् । अभिचाराणि कर्माणि कर्माण्यार्थवणानि च । क्षीयन्ते नात्र सन्देहो दुःस्वप्नश्च विनश्यति ॥ ४० ॥ इदं रहस्यं परमं देवदेवस्य शूलिनः । दुःस्वप्ननाशनं पुण्यं सर्वविघ्नविनाशनम् ॥ ४१ ॥

॥ ओं नमो भगवते मृत्युञ्जयाय ॥

तो विष्णर्वपितमना मार्कण्डेयो महामतिः । तुष्टाव प्रणतो भूत्वा देवदेवं जनार्दनम् ॥ १ ॥
विष्णुनैवोपदिष्टं तु स्त्रोत्रं कर्णे महामनाः । सम्भावितेन मनसा तेन तुष्टाव माधवम् ॥ २ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

नारायणं सहास्राक्षंपद्मनाभं पुरानतम् । प्रणतोऽस्मि हृषीकेशं किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ ३ ॥
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षमनन्तमजव्ययम् । केशं च प्रणतोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ ४ ॥
वाराहं वामनं विष्णु नरसिंह जनार्दनम् । माधवं च प्रपन्नोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ ५ ॥
पुरुषं पुष्करं पुण्यं क्षेमबीज जगत्पतिम् । लोकनाथं प्रणतोऽस्मि किं मे मृत्यु करिष्यति ॥ ६ ॥
भूतात्मानं महात्मानं जगद्योनिमयोनिजम् । विश्वरूपं प्रणतोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ॥७॥
सहस्र शिरसं देवं व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् । महायोगं प्रणतोऽस्मि किं मे मृत्युः करिष्यति ॥ ८ ॥
इत्युदीरितमाकर्ण्य स्त्रोत्रं तस्य महात्मनः । अपयातस्ततो मृत्युर्विष्णुदूतैश्च पीडितः ॥ ९ ॥
इति तेन जितो मृत्युर्मार्कण्डेयेन धीमता । प्रसन्ने पुण्डरीकाक्षे नृसिंहे नास्ति दुर्लभम् ॥ १० ॥
मार्कण्डेयहितार्थाय स्वयं विष्णुरुवाच ह ॥ ॥ य इदं पठते भक्त्या त्रिकालं नियतः शुचि । नाकाले तस्य मृत्युः स्यान्नस्याच्युतचेतसः ॥ १२ ॥ हृत्पद्ममध्ये पुरुषं पुराणं नारायणं शाश्वतमादिदेवम् । सञ्चिन्त्य सूर्यादपिरोचमानं मृत्युं स रोगी जितवांस्तदैव ॥ १३ ॥

॥ अथ द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्रम् ॥

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम् । भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥ श्रीशैलश्रृङ्गे बिबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम् । तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुम् ॥ २ ॥ अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् । अकालमृत्योः परिरणक्षार्थं बन्दे महाकालमहासुरेशम् ॥ ३ ॥ कावेरिकानर्मदयोः पवित्र समागमे सजनतारणाय । सदैव मान्धातृपुरे बसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ४ ॥ पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् । सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ ५ ॥ याम्ये सदङ्गनगरेऽतिरम्ये विभूषितांग विविधैश्च भोगैः । सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ६ ॥ महाद्रिपार्श्वेचतटेरमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ॥ सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ॥ ७ ॥ सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे । यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्रयम्बकमीशमीडे ॥ ८ ॥ सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्यसेतु विशिखैरसङ्ख्यैः । श्रीराम-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥ ९ ॥ यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च । सदैव भीमादिप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ॥ १० ॥ सानन्दमानन्दवने वसन्तन् आनंदकन्दं हतापापवृन्दम् । वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥ ११ ॥ इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन्समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् । वन्दे महोदारतरं स्वभावं घृणेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये ॥ १२ ॥ ज्योतिर्मयद्वादशलिंगकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण । स्तोत्रं पठित्व मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च ॥ १३ ॥

॥ शिवपंचाक्षरस्तोत्रम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय । नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ॥ १ ॥ मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय । मन्दारपुष्पबहु-पुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ॥ २ ॥ शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय । श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥ वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय । चन्द्राकवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥ यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय । दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥ पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । शिवलोकम् वाप्नोति शिवने सह मोदते ॥ ६ ॥

॥ अथ कल्किकृतशिवस्तोत्रम् ॥

गौरीनाथं विश्वनाथं शरण्यं, भूतावासं वासुकीकण्ठभूषणम् त्र्यक्षं पञ्चास्यादिदेवं पुराणं, वन्दे सान्द्रानन्दसन्दोहदक्षम् ॥ १ ॥ योगाधीशं कामनाशं करालं गङ्गासंगक्लिन्नमूर्धानमीशम् । जटाजूटटोपनिक्षिप्तभावं, महाकालं चन्द्रभालं नमामि ॥ २ ॥ श्मशानस्थं भूतवेतालसंगं, नानाशस्त्रैः खड्गशूलदिभिश्च । व्यग्रात्युग्रा बाहवो लोकनाशे, यस्य क्रोधोद्भूतलोकऽस्तमेति ॥ ३ ॥ यो भूतादिः पञ्चभूतैः सिसृक्षुस्तन्मात्रतमाकाल कर्म स्वभावैः । प्रहृत्येदं प्राप्य जीवत्वमीशो ब्रह्मानन्दे रमन्ते तं नमामि ॥ ४ ॥ स्थितौ विष्णुःसर्वजिष्णुः सुरात्मा लोकान् साधून्धन्धर्मसेतून्विभर्ति । ब्रह्माद्यंशैर्योभिमानो गुणात्मा, शब्दाद्यंगैस्तं परेशं नमामि ॥ ५ ॥ यस्याज्ञया वायवो वान्ति लोके, ज्वलत्यग्निः सविता याति तप्यन् । शीतांशुः खे तारकासंग्रहश्चप्रवर्तन्ते तं परेश प्रपद्यं ॥ ६ ॥ यस्य श्वासात्सर्वधात्रीर्धरित्री देवो वर्षत्यम्बु कालः प्रमाता । मेरुर्मध्ये भुवनानां च भर्ता तमीशानं विश्वरूप नमामि ॥ ७ ॥

अथ प्रदोषस्तोत्रम् ॥

जय देव जगन्नाथ जय शंकर शाश्वत । जय सर्वसुराध्यक्ष जय सर्वसुरार्चित ॥ १ ॥ जय सर्वगुणातीत जय सर्ववरप्रद । जय नित्यं निराधार जय विश्वम्भराव्यय ॥ २ ॥ जय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विश्वैकवन्द्येश जय नागेन्द्रभूषण। जय गौरपते शम्भो जय चन्द्रार्धशेखर ॥ ३ ॥ जय कोटयर्क संकाश जयानन्तरगुणाश्रय । जय भद्र विरूपाक्ष जयाचिन्त्यनिरंजन ॥ ४ ॥ जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभंजन । जय दुस्तरसंसारसागरोत्तारण प्रभो ॥ ५ ॥ प्रसीद मे महादेव संसारार्तस्य खिद्यतः । सर्वपापक्षयं कृत्वा रक्ष मां परमेश्वर ॥ ६ ॥ महादारिद्र्यमग्नस्य महापापहतस्य च । महाशोकनिविष्टस्य महारोगातुरस्य च ॥७॥ ऋणभारपरीतस्य दह्यमानस्य कर्मभिः । ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद मम शंकर ॥ ८ ॥ दरिद्रः प्रार्थयेद्देवं प्रदोषे गिरिजापतिम् । अर्थाढ्यो वाऽथ राजा वा प्रार्थयेद्देवमीश्वरम् ॥ ९ ॥ दीर्घमायुः सदारोग्यं कोषवृद्धिर्बलोन्नतिः। ममास्तु नित्यमानन्दः प्रसादात्तव शङ्करः ॥ १० ॥ शत्रवः संक्षयं यान्तु प्रसीदंतु मम प्रजाः । नायान्तु दस्यवो राष्ट्रे जनाः सन्तु निरापदः ॥ ११ ॥ दुर्भिक्षमारिसंतापाः शमं यांतु महीतले । सर्वसस्यसमृद्धिश्च भूयात्सुखमया दिशः ॥ १२ ॥ एवमाराधयेद्देवं पूजान्ते गिरिजा पतिम् । ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चद्दाक्षिणाभिश्च पूजयेत् ॥ १३ ॥ सर्वपापक्षयकरी सर्वरोगनिवारिणी । शिवपूजा मयाख्याता सर्वाभिष्टफलप्रदा ॥ १४ ॥

॥ अथ शिवरक्षा स्तोत्रम् ॥

अस्य श्रीशिवरक्षास्तोत्रमंत्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिवरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ॥

चरित्रं देव देवस्य महादेवस्य पावनम् । अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम् ॥ १ ॥
गौरीविनायकोपेतं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रकम् । शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः ॥ २ ॥
गंगाधरः शिरः पातु भालमर्धेन्दुशेखरः । नयने मदनध्वंसी कर्णौ सर्वविभूषणः ॥ ३ ॥
घ्राणं पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः। जिह्वां वागीश्वरःपातु कन्धरां शितिकन्धरः॥४॥
श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः भुजौ भूभारसंहर्ता करौ पातु पिनाकधृक् ॥ ५ ॥
हृदयं शंकरः पातुजठरं गिरजापतिः । नाभिं मृत्युञ्जयः पातु कटी व्याघ्राजिनाम्बरः ॥ ६ ॥
सक्थिनी पातु दीनार्तशरणागतवत्सलः । ऊरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः ॥ ७ ॥
जंघे पातु जगत्कर्त्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः । चरणौ करुणासिन्धुःसर्वाङ्गिन सदाशिवः ॥ ८ ॥
एतांशिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् । स भुक्त्वा सकलान्कामान् शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥९॥
ग्रहभूतपिशाचाद्यास्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये। दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभिरक्षणात् ॥ १० ॥
अभयङ्करनामेदं कवचं पार्वतीपतेः ॥ भक्त्या बिभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्त्रयम् ॥११॥
इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथाऽऽदिशत् ॥ प्रातरुत्थाय योगीन्द्रौ याज्ञवल्क्यस्तथाऽलिखत् ॥ १२ ॥

॥ अथ शिवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ॥

शिवो महेश्वरः शम्भुः पिनाकी शशिशेखरः ॥ वामदेवो विरूपाक्षः कपर्दी नीललोहितः ॥ १ ॥ शङ्करः शूलपाणिश्च खट्वाङ्गी विष्णुवल्लभः ॥ शिपिविष्टोऽम्बिकानाथः श्रीकण्ठो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भक्तवत्सलः ॥ २ ॥ भवः शर्वस्त्रिलोकेशः शितिकण्ठः शिवाप्रियः ॥ उग्रः कपाली कामारिरन्धकासुरसूदनः ॥ ३॥ गङ्गाधरो ललाटाक्षः कालकालः कृपानिधिः ॥ भीमः परशुहस्तश्च मृगपाणिर्जटाधरः ॥ ४ ॥ कैलासवासी कवची कठोरस्त्रिपुरान्तकः ॥ वृषाङ्को वृषभारुढो भस्मोद्धूलितविग्रहः ॥ ५ ॥ सामप्रियः स्वरमयस्त्रयीमूर्तिरनीश्वरः ॥ सर्वज्ञः परमात्मा च सोमसूर्याग्निलोचनः ॥ ६ ॥ हविर्यज्ञमयः सोमः पञ्चवक्त्रः सदाशिवः ॥ विश्वेश्वरो वीरभद्रो गणनाथः प्रजापतिः ॥ ७ ॥ हिरण्यरेता दुर्धर्षो गिरीशो गिरिशोऽनघः ॥ भुजङ्गभूषणो भर्गो गिरिधन्वा गिरिप्रियः ॥ ८ ॥ कृत्तिवासाः पुरारातिर्भगवान् प्रमथाधिपः ॥ मृत्युञ्जयः सूक्ष्मतनुर्जगद्व्यापी जगद्गुरुः ॥ ९ ॥ व्योमकेशो महासेनजनकश्चारुविक्रमः रुद्रो भूतपतिः स्थाणुरहिर्बुघ्न्यो दिगम्बरः ॥ १० ॥ अष्टमूर्तिरनेकाऽऽत्मा सात्त्विकः शुद्धविग्रहः ॥ शाश्वतः स्त्रण्डपरशू रजःपाशविमोचनः ॥ ११ ॥ मृडः पशुपतिर्देवो महादेवोऽव्ययो हरिः ॥ पूषदन्तभिदव्यग्रो दक्षाध्वरहरो हरः ॥ १२ ॥ भगनेत्रभिदव्यक्तः सहस्त्राक्षः सहस्रपात् ॥ अपवर्गप्रदोऽनन्तस्कारकः परमेश्वरः ॥ १३ ॥ एवमष्टोत्तरशतं नाम्नामाम्नायसम्मितम् ॥ शंकरस्य प्रिया गौरी जप्त्वा त्रैकाल्यमन्वहम् ॥ १४ ॥ प्रेरिता पद्मनाभेन वषमेकं प्रयत्नतः ॥ अवाप सा शरीरार्द्धं प्रसादाच्छूलपाणिनः ॥ १५ ॥ यस्त्रिसन्ध्यं पठेच्छम्भोर्नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ॥ शतरुद्रत्रयावृत्त्या चैकावृत्त्यापठेन्नरः ॥ १६ ॥

॥ अथ असितकृतशिवस्तोत्रम् ॥

जगद्गुरो नमस्तुभ्यं शिवाय शिवदाय च । योगीन्द्राणंयोगीन्द्र गुरूणा गुरवे नमः ॥ १ ॥
मृत्योर्मृत्युस्वरूपेण मृत्युसंसारखण्डन । मृत्योरीश मृत्युबीज मृत्युञ्जय नमोऽस्तुते ॥ २ ॥
कालरूपं कलयतां कालकालेश कारण । कालादतीत कालस्य कालकाल नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥
गुणातीत गुणाधार गुणबीज गुणात्मक । गुणेश गुणिनां बीज गुणिनां गुरवे नमः ॥ ४ ॥
ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मज्ञ ब्रह्मभावे च तत्परः । ब्रह्मजीवस्वरूपेण ब्रह्मबीज नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥
इति स्तुत्वा शिवं नत्वा पुरस्तथौ मुनीश्वरः । दीनवत्साश्रुनेत्रश्च पुलकाञ्चितविग्रहः ॥ ६ ॥
असितेन कृतं स्तोत्रं भक्तियुक्तश्च यः पठेत् । लभेद्वैष्णवं पुत्रं ज्ञानिनं चिरजीविनम् । भवेद्धनाढ्योऽदुःखी च मूको भवति पण्डितः ॥ ७ ॥ अभार्यो लभते भार्या सुशीलां च पतिव्रताम् । इह लोके सुखं भुक्त्वा यात्यन्ते शिवसन्निधिम् ॥ ८ ॥ इदं स्तोत्रं पुरा दत्तं ब्रह्मणा च प्रचेतसे । प्रचेतसा स्वपुत्रायायासिताय दंत्तमुत्तमम् ॥ ९ ॥

॥ अथ शिवापराधक्षमापन स्तोत्रम् ॥

आदौ कर्मप्रसङ्गात्कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथः यति नितरां जाठरो जातवेदाः । यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव शिव भोःश्रीमहादेव शम्भो ॥१॥ बाल्येदुःखातिरेकान्मललुलितवपुः

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्तन्यपाने पिपासा नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति। नानारोगादि-दुःखाद्रुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि क्षन्तव्यो० ॥ २ ॥ प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादुसौख्ये निषण्णः। शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं क्षन्तव्यो० ॥ ३ ॥ वार्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधि-दैवाधितापैः पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिषैदीनं च दीनम्। मिथ्यामोहाभिलाहैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं क्षन्तव्यो० ॥ ४ ॥ नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवाया-कुलाख्यं श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गेऽसुरारे। ज्ञातो धर्मो विचारैः श्रवण-मननयोः किं निदिध्यासितव्यं क्षन्तव्यो० ॥ ५ ॥ स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्पननविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात् खण्डबिल्वीदनानि। नानीता पद्ममाला सरसि विकसितागन्धपुष्पैस्त्वदर्थं क्षन्तव्यो० ॥ ६ ॥ दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं नं प्रसूनैः। धूपैःकर्पूरदीपै-र्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः क्षन्तव्यो० ॥ ७ ॥ ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः। नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः क्षन्तव्यो० ॥ ८ ॥ स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयरुणत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे शान्ते स्वान्ते प्रलोनेप्रकटितविभवे ज्योतिरुपे पराख्ये। लिंगज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकल-तनुगतं शङ्करं न स्मरामि क्षन्तव्यो० ॥ ९ ॥ नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमो-हान्धकारो नामाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्। उन्मन्याऽवस्थया त्वां विगतकलिमलं शङ्करं न स्मरामि क्षन्तव्यो० ॥ १० ॥ चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शङ्करे सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे मोक्षार्थं कुरुचित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः ॥ ११ ॥ किं वाऽनेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्। ज्ञात्वैतत्क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतःस्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम् ॥ १२ ॥ आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं प्रत्यायान्ति गता पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः। लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं तस्मान्मां शरणागतं शरणद त्वं रक्ष रक्षाऽधुना ॥ १३ ॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतम् क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ १४ ॥

॥ अथ दारिद्र्यदहनशिवस्तोत्रम् ॥

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय ॥ कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ १ ॥ गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्त-काय भुजगाधिपकङ्कणाय ॥ गङ्गाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ २ ॥ भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्गभवसागरतारणाय ॥ ज्योतिर्मयाय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गुणनामसुनृत्काय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ३ ॥ चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनया भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय ॥ मञ्जीरपादयुगलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय ॥ ४ ॥ पञ्चाननाय फणिराजविभूषणाय हेमांशुकाय भुमनत्रयमण्डिताय ॥ आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्य० ॥ ५ ॥ भानुप्रियाय भवसागरतारणाय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय ॥ नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय दारिद्र्य० ॥ ६ ॥ रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय ॥ पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्य० ॥७॥ मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय ॥ मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्य० ॥ ८ ॥ वशिष्ठेनकृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम् ॥ सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम् ॥ त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ ९ ॥

॥ अथ लिंगाष्टकस्तोत्रम् ॥

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभाषितशोभितलिङ्गम् । जन्मजदुःखविनाश कलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम् ॥ १ ॥ देहमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहं करुणाकरलिङ्गम् । रावणदर्पविनाशनलिङ्गंतत्प्रण० ॥ २ ॥ सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिंगम् । सिद्धसुरासुरवन्दितलिंगं तत्प्र० ॥ ३ ॥ कनकमहामणि भूषितलिंगं फणिपतिवेष्टिशोभितलिंगम् । दक्षसुयज्ञविनाशन लिंगं तत्प्र० ॥ ४ ॥ कुंकुमचन्दनलेपितलिंगं पङ्कजहारसुशोभितलिंगम् । सञ्चितपापविनाशनलिंगं तत्प्र० ॥ ५ ॥ देवगणार्चितसेवितलिंगं भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम् । दिनकरकोटिप्रभाकरलिंगं तत्प्र० ॥ ६ ॥ अष्टदलोपरिवेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भवकारणलिंगम् । अष्टदरिद्रविनाशितलिंगं तत्प्र० ॥ ७ ॥ सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगं सुरवनपुष्पसदार्चितलिंगम् । परात्परं परमात्मकलिंगं तत्प्रणमामि० ॥ ८ ॥ लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ । शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ ९ ॥

॥ अथ दक्षिणामूर्तिगुरुस्तोत्रम् ॥

विश्व दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं यथा निद्रया ॥ यः साक्षीकुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणामूर्तये ॥ १ ॥ बीजस्थान्तरिवांकुरो जगदिदं प्राङ्निर्विकल्पं पुनर्मायाकल्पितदेशकालकलनावैचित्र्याचित्रीकृतम् ॥ मायावीन बिजृम्भयत्यपि महायोगीव यः स्वेच्छया तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षि० ॥ २ ॥ तस्यैव स्फुरणं सदात्मकमसत्कल्पार्थकं भासते साक्षात्तत्त्वमसीति वेदवचसयो बोधयत्याश्रितान् । सत्साक्षात्करणाद्भवेन्न पुनरावृत्तिर्भवाम्भोनिधौ तस्मै श्रीगुरुमूर्तये० ॥ ३ ॥ नानाछिद्रघटोदरस्थितमहादीपप्रभाभाम्वरं ज्ञानं यस्य तु चक्षुरादिकरणद्वारा बहिः स्पन्दते ॥ जानामीति तमेव भान्तमनुभात्येतत्समस्तं जगत्तस्मै श्रीगुरु० ॥ ४ ॥ देहं प्राणमपीन्द्रियाण्यपि चलां बुद्धिं च शून्यं विदुः स्त्रीबालान्धजडोपमास्त्वहमिति भ्रान्ताभृशं वादिनः ॥ मायाशक्तिबिलासकल्पितमहाव्यामोहसंहारिणे तस्मै श्रीगुरु० ॥ ५ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

राहुग्रस्तदिवाकरेन्दुसदृशोमायासमाच्छादनात्सन्मात्रः करणोपसंहरणतोयोऽभूत्सुषुप्तःपुमान्॥ प्रागस्वाप्समिति प्रबोधसमये यः प्रत्यभिज्ञायते तस्मै श्रीगुरु० ॥ ६ ॥ बाल्यादिष्वपि जाग्रदादिषु तथा सर्वास्ववस्थास्वपि व्यावृत्तास्वनुवर्तमानमहमित्यन्तः स्फुरन्तं सदा ॥ स्वात्मानं प्रकटीकरोति भजतां यो मुद्रया भद्रया तस्मै० ॥७॥ विश्वं पश्यतिकार्यकारणतयास्वस्वामिसम्बन्धतः शिष्याचार्यतया तथैव पितृपुत्राद्यात्मना भेदतः ॥ स्वप्ने जाग्रति वाय एष पुरुषो मायापरिभ्रामितस्तस्मै श्रीगुरु० ॥ ८ ॥ भूरम्भांस्यनलोऽनिलोम्बरमहर्नाथो हिमांशुः पुमानित्याभाति चराचरात्मकमिदं यस्यै व मूर्त्यष्टकम् ॥ नान्यत्किञ्चनं विद्यते विमृशतां यस्मात्परस्माद्विभोस्तस्मै श्रीगुरु० ॥९॥ सर्वात्मस्वमिति स्फुटीकृतमिदं यस्मादमुष्मिन्स्तवे तेनास्य श्रवणात्तथार्थमननाद्ध्यानाच्चसङ्कीर्तनात् ॥ सर्वत्मत्वमहाविभूतिसहितं स्यादीश्वरत्वं स्वतः सिद्ध्येत्ततपुनरष्टधा परिणत्तंचैश्वर्यमव्याहतम् ॥ १० ॥ वटविटपिसमीपे भूमिभागे निषण्णं सकलमुनिजनानां ज्ञानदातारमारात् ॥ त्रिभुवनगुरुमीशं दक्षिणामूर्तिदेवं जननमरणदुःखच्छेददक्षं नमामि ॥ ११ ॥ चित्रं वटतरोर्मूले वृद्धाः शिष्या गुरुर्युवा ॥ गुरोस्तु मौनं व्याख्यानं शिष्यास्तु छिन्नसंशयाः ॥१२॥ ॐ नमः प्रणवार्थाय शुद्धज्ञानैकमूर्तये ॥ निर्मलाय प्रशान्ताय दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १३ ॥ निधये सर्वविद्यानां भिषजे भवरोगिणाम् ॥ गुरवे सर्वलोकानां दक्षिणामूर्तये नमः ॥ १४ ॥ मौनव्याख्याप्रकटितपरब्रह्मतत्त्वंयुवानं वर्षिष्ठान्तेवसदृषिगणैरावृतं ब्रह्मनिष्ठैः ॥ आचार्येन्द्रंकरकलितचिमुन्द्रमानन्दरूपं स्वात्मारामं मुदितवदनं दक्षिणामूर्तिमीडे ॥ १५ ॥

॥ अथ वेदसारशिवस्तोत्रम् ॥

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम् । जटाजूटमध्ये स्फुरद्गाङ्गवारिं महादेवमेकंस्मरामिस्मरारिम् ॥ १ ॥ महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम् । विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नि त्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम् ॥२॥ गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम् । भवं भास्वरं भस्मना भूषितांग भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम् ॥ ३ ॥ शिवाकान्त शम्भोशशाङ्कार्धमोले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन् । त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप ॥४॥ परमात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम् । यतो याजते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥ ५ ॥ न भूमिर्न चापो वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा । न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे ॥ ६ ॥ अजं शाश्वतंकारणंकारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् । तुरीयं तमः पारमाद्यन्तहीनंप्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥ ७ ॥ नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते । नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥ ८ ॥ प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र । शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥ ९ ॥ शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाश-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाशिन् । काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥ १० ॥ त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ । त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन् ॥ ११ ॥

॥ अथ विश्वनाथाष्टकस्तोत्रम् ॥

गङ्गातरंगरमणीजटाकलापं गौरीनिरंतरविभूषितवामभागम् ॥ नारायण प्रियमनंगमदापहारं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥ १ ॥ वाचामगोचरमेनकगुणस्वरूपं काशीशविष्णुसुरसेवितपादपीठम् ॥ वामेन विग्रहवरेणकलत्रवन्तं वारा० ॥ २ ॥ भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् । पापांकुशाभयवरप्रदशूलपाणिर्वाराणसीपुरपतिं भज० ॥३॥ शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं भालेक्षणानलविशोषितपञ्चवाणम् ॥ नागांधिपारचितभासुरकर्णपूरं वाराणसी० ॥ ४ ॥ पञ्चाननं दुरितमत्तमतङ्गजानां नागान्तकं दनुजपुंगवपन्नगानाम् ॥ दावानलं मरणशोकजराटवीनां वाराणसीपुर० ॥ ५ ॥ तेजोमयं सगुण निर्गुणमद्वितीयमानन्दकन्दमपराजितप्रमेयम् । नागात्मकं सकलनिष्फलमात्मरूपं वाराणसी० ॥ ६ ॥ आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ ॥ आदायहृत्कमलमध्यगतं परेशं वाराणसीपुर० ॥७॥ रोगादिदोषरहितं स्वजनानुरागयवैराग्यशांतिनिलयं गिरिजासहायम् ॥ माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं वारा० ॥ ८ ॥ वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्यव्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ॥ विद्यांश्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्ति सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्ष ॥ ९ ॥ विश्वनाथष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ ॥ शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥ १० ॥

॥ अथ चन्द्रशेखराष्टकम् ॥

चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर पाहिमाम् ॥ चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर चन्द्रशेखर रक्षमाम् ॥ १ ॥ रत्नसानुशरसनं रजतादिशृंगनिकेतनं सिञ्जिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युताननसायकम् ॥ क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदिवालयैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ॥ २ ॥ पञ्चपादपपुष्पगन्धपदाम्बुजद्वयशोभितं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहपू ॥ भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशनं भवमव्ययं चन्द्रशेखर० ॥ ३ ॥ मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पङ्कजासनपद्मलोचनपूजितांघ्रिसरोरुहम् ॥ देवसिंधुतरंगसीकरसिक्तशुभ्रजटाधरंचन्द्र० ॥४॥ यक्षराजसखं भगाक्षहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम् ॥ क्ष्वेडनीलगलं परश्वधधारिणं मृगधारिणं चन्द्र० ॥ ५ ॥ कुण्डलीकृतकुण्डलेश्वरकुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ॥ अंधकांधकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखर० ॥ ६ ॥ भेषजं भवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम् भुक्तिमुक्तिफलप्रदंसकलाघसंघनिबर्हणंचन्द्रशे० ॥ ७ ॥ भक्तवत्सलमर्चितंनिधिमक्षयंहरिदम्बरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनुत्तमम् ॥ सोमवारिजभूहुताशनसोमपानिलखाकृति चन्द्रशे०

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

॥ ८ ॥ विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरन्तमपि प्रपञ्चमशेषलोकनिवासिनम् । क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमन्वितं चन्द्रशे० ॥ ९ ॥ मृत्युभीतमृकण्डसूनुकृतस्तवं शिवसन्निधौ यत्र कुत्र च यः पठेन्नहितस्यं मृत्युभयं भवेत् ॥ पूर्णमायुररोगितामखिलार्थसम्पदमादरं चन्द्रशेखर एव तस्य ददाति मुक्तिमयत्नतः ॥ १० ॥

॥ अथ शिवभुजंगप्रयातस्तोत्रम् ॥

गलद्दानगण्डं मिलद्भृङ्गखण्डं चलच्चारुशुण्डं जगत्त्राणशौण्डम् । लसद्दन्तकाण्डं विपद्भृङ्गचण्डं शिवप्रेमपिण्डं भजे वक्रतुण्डम् ॥ १ ॥ अनाद्यान्तमाद्यं परं तत्त्वमर्थं चिदाकारमेकं तुरीयं त्वमेयं । हरिब्रह्ममृग्यं परब्रह्मरूपं मनोवागतीतं महः शैवमीडे ॥ २ ॥ स्वशक्त्यादिशक्त्यन्तसिंहासनस्थं मनोहारि सर्वाङ्गरत्नादिभूषम् जटाहीन्दुगङ्गास्थिशश्यर्कमौलिं परं शक्तिमित्रं नमः पञ्चवक्त्रम् ॥ ३ ॥ शिवेशानतत्पुरुषाघोरवामादिभिर्ब्रह्मन्मुखैः षड्भिरङ्गैः । अनौपम्यषट्त्रिंशतं तत्त्वविद्यामतीतं परं त्वां कथं वेत्ति को वा ॥ ४ ॥ प्रबालप्रभाहप्रभाशोणमर्ध मरुत्वन्मणिश्रीमहःश्याममर्धम् । गुणस्यूतमेकं वपुश्चैकमन्तः स्मरामि स्मरापत्तिसम्पत्तिहेतुम् ॥ ५ ॥ स्वसेवासमायातदेवासुरेन्द्रानमन्मौलिमन्दारमालाभिषिक्तम् ॥ नमस्यामि शम्भो पदाम्भोरुहं ते भवाम्भोधिपोतं भवानीविभाव्यम् ॥ ६ ॥ जगन्नाथ मन्नाथ गौरीश नाथ प्रपन्नानुकम्पिन्विपन्नार्तिहारिन् । महःस्तोममूर्ते समस्तैकबन्धो नमस्ते नमस्ते पुनस्ते नमोऽस्तुते ॥ ७ ॥ महादेव देवेश देवाऽधिदेव स्मरारेपुरारे यमारे हरेति ब्रूवाणः । स्मरिष्यामि भक्त्या भवन्तं ततो मे दयाशील देव प्रसीद ॥ ८ ॥ विरूपाक्ष विश्वेश विद्यादिकेश त्रयीमूल शम्भो शिव त्र्यम्बक त्वम् । प्रसीद स्मर त्राहि पश्याव पुष्य क्षमस्वाप्नुहि त्र्यक्ष पाहि क्षिपामः ॥ ९ ॥ त्वदन्यः शरण्यः प्रपन्नस्थ नेति प्रसीद स्मरन्नेव हन्यास्तु दैन्यम् । न चेत्तं भवेद्भक्तवात्सल्यहानिस्ततो मे दयालो दयां सन्निधेहि ॥ १० ॥ अय दानकालस्त्वहं दानपात्रं भवान्नाथ दाता त्वदन्यं न याचे । भवद्भक्तिमेव स्थिरां देहि मह्यं कृपाशील शम्भो कृतार्थोऽस्मितस्मात् ॥ ११ ॥ पशुं वेत्सि चेन्मां त्वमेवाधिरूढः कलङ्कीति वा मूर्ध्नि धत्से त्वमेव । द्विजिह्वःपुनःसोऽपि ते कण्ठभूषा त्वदङ्गीकृताः शर्व सर्वेऽपि धन्याः ॥ १२ ॥ न शक्नोमि कर्तुं परद्रोहलेशं कथं प्रीयसे त्वं न जाने गिरीश । तदा हि प्रसन्नोऽसि कस्यापि कान्तासुतद्रोहिणो वा पितृद्रोहिणो वा ॥ १३ ॥ स्तुतिं ध्यानमर्चां यथावद्विधातुं भजन्नप्यजानन् महेशावलम्बे त्रसन्तं सुतं त्रातुमग्ने मृकण्डोर्यमप्राणनिर्वापणं त्वत्पदाब्जम् ॥ १४ ॥ अकण्ठे कलङ्कादनङ्गे भुजङ्गादपाणौ कपालदभालेऽनलाक्षात् ॥ अमौलौ शशाङ्कादवामे कलत्रादहं देवमन्यं न मन्ये ॥ १५ ॥

॥ अथ पशुपत्यष्टकम् ॥

पशुपतीन्दुपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम् ॥ प्रणतभक्तजनार्तिहरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ॥ १ ॥ न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरि-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बलं कुलम् ।। अवति कोऽपि न कालवंश गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम् ।। २ ।। मुरजडिण्डिमवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम् ।। प्रथमभूतगणैरपि सेवितं भजतरे० ।। ३ ।। शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम् ।। अभयदं करुणावरुणा लयं भजत रे० ।। ४ ।। नरशिरोरचितं मणिकुण्डल भुजगहारमुदं वृभध्वजम् ।। चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे० ।। ५ ।। मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वर भाजिफलप्रदम् ।। प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे० ।। ६ ।। मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम् ।। जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं भजत रे० ।। ७ ।। हरिविरिञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम् ।। त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे० ।। ८ ।। पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा ।। पठति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरी वसते लभते मुदम् ।। ९ ।।

।। अथ शंकराष्टकम् ।।

शीर्षजटा गणभारं गरलाहारं समस्तसंहारम् । कैलासाद्रिविहारं पारं भववारिधे रहं वन्दे ।। १ ।। चन्द्रकलोज्ज्वलभालं कण्ठव्यालं जगत्त्रयीपालम् । कृतनरमस्तकमालं कालं कालस्य कोमलं वन्दे ।। २ ।। कोपे क्षणहतकामं स्वात्मारामं नगेन्द्रजावामम् । संसृतिशोकविरामं श्याम कण्ठेन कारणं वन्दे ।। ३ ।। कटि तट विलसितनागं खण्डितयागं महाद्नुतत्यागं विगतविषयरसरांगभागं यज्ञेषु विभ्रतं वन्दे ।। ४ ।। त्रिपुरादिकदनुजान्तं गिरिजाकातं सदैव संशान्तम् । लीलाविजिकृतांतं भांतं स्वान्तेषु देहिनां वन्दे ।। ५ ।। सुरसरिताप्लुतकेशं त्रिदशकुलेशं हृदालयावेशम् । विगताशेषक्लेशं देशं सुर्वेष्टसंपदं वन्दे ।। ६ ।। करतलकलितपिनाकं विगतजराकं सुकर्मणां पाकं पदपदवीतवराकं नाकङ्गमपूगवन्दितं वन्दे ।। ७ ।। भूतिविभूषितकायं दुस्तरमायं भव विर्वजितोपायं प्रणम समूहसहायं सायं प्रातर्तिरन्तर वन्दे ।। ८ ।। यस्तु पदाष्टकमेतदब्रह्मानन्देन निर्मितं नित्यम् । पठति समाहितचेताः प्रप्नोत्यन्ते स शैवमेव पदम् ।। ९ ।।

।। अथ शिवनामावल्यष्टकम् ।।

हे चन्द्रचूड मदनान्तक शूलपाणे स्थाणो गिरीश गिरिजेश महेश शम्भो ।। भूतेश भीतभयसूदन मामनाथं संसार दुःखणहानाज्जगदीश रक्ष ।। १ ।। हे पार्वतीहृदयवल्लभ चन्द्रमौले भूताधिप प्रमथनाथ गिरीशजाप ।। हे वामदेव भव रुद्र पिनाकपाणे संसारदुःख० ।। २ ।। हे नीलकण्ठ वृषभध्वज पंचवक्त्र लौकेश शेषयलय प्रथमेश शर्व ।। हे धूर्जटे पशुपते गिरिजापते मां संसार० ।। ३ ।। हे विश्वनाथ शिव शङ्कर देवदेव गङ्गाधर प्रमथनायक नन्दिकेश ।। बाणेश्वरान्धकरिपो हर लोकनाथ संसार० ।। ४ ।। वाराणसीपुरपते मणिकर्णिकेश वीरेशं दक्षमखकालं विभो गणेश ।। सर्वज्ञ सर्वहृदयैकनिवास नाथ संसार० ।। ५ ।। श्रीमन्महेश्वर कृपामय हे दयालो हे व्योमकेश शितिकण्ठ गणाधिनाथ भस्माङ्गराग नृकपाल कलापमालं संसारदुःख० ।। ६ ।। कैलासशैल विनिवास वृषकपे हे मृत्युञ्जय त्रिनयन त्रिजगन्निवास ।।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नारायणप्रिय पदापह शक्तिनाथ संसार० ॥७॥ विश्वेश विश्व भवनाशितविश्वरूप विश्वात्मक त्रिभुवनैकगुणाभिवेश ॥ हे विश्वबन्धुकरुणामय दीनबन्धो संसार० ॥ गौरीविलासभुवनाय महेश्वराय पंचाननाय शरणागत कल्पकाय । शर्वाय सर्व जगतामधिपाय तस्मै दारिद्र्यदुःख- दहनाय नमः शिवाय ॥ ९ ॥

॥ अथ विश्वनाथाष्टकम् ॥

आदि शंभु स्वरूप मुनिवर चन्द्रशीश जटाधरं । मुण्डमाल विशाल लोचन वाहनं वृषभध्वजम् ॥ नागचर्म्म त्रिशूलडमरू भस्मअंग विहंगमम् । श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ गङ्ग सङ्ग प्रसङ्ग सरिता कामदेव सुसेवितं । नादविन्दु संयोग साधन पंचवक्त्र त्रिलोचनम् ॥ इन्दु विन्दु विराज शशिधर सेवितं सुरवंदितं ॥ श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ २ ॥ ज्योतिर्लिङ्ग सुलिंग फणिमणि दिव्यदेव सुसेवितं । मालती तनुपुष्पमाला गंधधूप निवेदितम् ॥ अनलकुंभ सुकुम्भ झलकत कलश कंचन शोभितं । श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ३ ॥ मुकुट क्रीट सुकनन कुण्डल मण्डितं मुनि रंजितं । हार मुकुता कनक रेखा रेखितं । सुविशेषितम् गंध- मादन शैलआसन आसनं परकासनं । श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथं विश्वेश्वरम् ॥४॥ मेघडंबर छत्रधारन चरनकमल विशालितं । पुष्परथपर मदनमूरति गौरिसंग सदाशिवम् ॥ क्षत्रपाल सुपाल भैरव कुसुम नवग्रह भूषितं । श्रीनीलकण्ठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वे- श्वरम् ॥ ५ ॥ त्रिपुरदैत्यसुरदैत्य दानव प्राप्तते फलदायकं । रावणा दशकमल मस्तक अङ्गजलधर सायकम् ॥ श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ६ ॥ मथित दधि जल शेष विगलित भ्रमत मेरु सुमेरुकं । स्रवत विगलित दीपप्रनवत युग्मनेत्र सुनेत्रकं महादेव सुदेव सुरपति सर्वदेव विश्वंभरं । श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ७ ॥ रुद्ररूप सुनेजनं कृत भक्षगान हलाहलं । गगन वेधित अखिलधारा आदि अन्त समाहितम् । कामकुन्जर मानकेशव कहाकाम विश्वेश्वरं । श्रीनीलकंठ हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ८ ॥ ऋतु वसंत सुवक्र चौंदिश प्राप्यते फलदायकं । पूर्वकाशी भयेवासी मनुज मंगलदायकम् ॥ अम्बकेतट वैद्यनाथं शैलशिखर महेश्वरं । श्रीनीलकंठ- हिमालजलधर विश्वनाथ विश्वेश्वरम् ॥ ९ ॥

॥ अथ विश्वनाथाष्टकम् ॥

दो०—द्वादश लिंग प्रधान, विश्वनाथ महराज ।
महिमा कहि कहि कहि जासुगण, राख्यो सकल समाज ॥
कैलासवासि नमामि हे । प्रभु आदि शंभु सदा शिवम् ॥
मणि रूप चन्द्र अनूप मस्तक जटाजूट शोभितम् ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धर मुण्डमाल विशाल राजत गरे गरल विभूषितम् ।
यह पाप मोचन् विमल लोचन वृषभवाहन मोदितम् ॥ १ ॥

हर पाप वृषभध्वज करगहे डमरू बाघचर्म कलेवरम् ।
जय भस्म अङ्ग समस्त छाये विश्वनाथ स्वभावकम् ॥
पुनि कामदेव सुताड़ि तोष्यो नाद बिंदु संयोगकम् ।
जगजननि गंगा बहित लटसों पंचमुख अघमोचनम् ॥ २ ॥

सुरगण सुपूजित भाल शशिधर लोचनं त्रयलोचनम् ।
इह नगर काशी लिंग द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग विशेषनम् ॥
मणिधर फणीन्द्र विराज माला मालती मनमोहनम् ।
हे धूपदीप निवेदितं प्रभु विश्वनाथ सुसोहनम् ॥ ३ ॥

जहँ कनककलश विराज मंदिर करणकुण्डल मण्डितम् ।
अरु मुकुट क्रीट सुहार मुक्ताकर महामुनि राजितम् ॥
हे गौर वरण सुगौर शशिधर इन्दु शीश सुशोभितम् ।
हे विश्वनाथ सनाथ दीनानाथ सुरमन मोहितम् ॥ ४ ॥

प्रभु गंधमादन शैल बैठहिं योग आसन आसनम् ।
जय मदन दाहक मदन चाहक नाथ मदन सुसोहनम् ॥
तुम अधर अंग सुअङ्ग धारो शैलजा मन भावनम् ।
प्रभु विश्वनाथ सुक्षत्र धारन चरन कमल सुवासनम् ॥ ५ ॥

करि ध्यान गावहिं नारदादि बखान चरित मनोहरम् ।
हर प्राण अखिल कुपात्र दानव अभय प्रभु विश्वेश्वरम् ॥
वह त्रिपुर दैत्य सुदैत्य आदिक लहेउ फल शशि शेखरम् ।
तुम होश करि निज लोक भेजे महादुष्ट क्षमाकरम् ॥ ६ ॥

हे नाथ अपनो बुद्धि दूषण कबहुँ नाम मनोहरम् ।
नहिं लिया पामर जाय रक्षा नाथ हे विश्वम्भरम् ॥
सब जगत कर कल्यान कीन्हों नाम पाप सुशंकरम् ।
हर मल कुबुद्धि सुविमल बुद्धि दे नाथ हर मम मतसरम् ॥ ७ ॥

धनुबान कर गहि भानु रघुकुल ध्यान जासु विराजितम् ।
शिव परम भक्ति सुभागवत कहि योगिजन जेहि सेवितम् ॥
करि कर्मपट नहिं सकत लहि वह नाथ देत प्रमाणितम् ।
प्रभु आशुतोष सुपोष कीन्ही विश्वनौमि नमामि तम् ॥ ८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

॥ अथ प्रदोषस्तोत्राष्टकम् ॥

सत्यं ब्रवीमि परलोकहितं ब्रवीमि सारं ब्रवीम्युपनिषद्धृदयं ब्रवीमि ॥ संसारमुल्वणमसारमवाप्य जन्तोः सारोऽयमीश्वरपदाम्बुरुहस्य सेवा ॥ १ ॥ ये नार्चयन्ति गिरिशं समये प्रदोषे ये नार्चितं शिवमपि प्रणमन्ति चान्ये ॥ एतत्कथां श्रुतिपुटैर्न पिबन्ति मूढास्ते जन्मजन्मसु भवन्ति नरा दरिद्राः ॥ २ ॥ ये वै प्रदोषसमये परमेश्वरस्य कुर्वन्त्यनन्यमनसोऽङ्घ्रिसरोजपूजाम् ॥ नित्यं प्रवृद्धधनधान्यकलत्रपुत्रसौभाग्यसम्पदधिकास्त इहैव लोके ॥ ३ ॥ कैलासशैलभुवने त्रिजगज्जनित्रीं गौरीं निवेश्य कनकाचितरत्नपीठे ॥ नृत्यं विधातुमभिवाञ्छति शूलपाणौ देवाः प्रदोषसमये नु भजन्ति सर्वे ॥ ४ ॥ वाग्देवीधृतवल्लकी शतमखो वेणुं दधत्पद्मजस्तालोन्निद्राकरो रमा भगवती गेयप्रयोगान्विता ॥ विष्णुःसान्द्रमृदङ्गवादनपटुर्देवाः समन्तास्थिताः सेवन्ते तमनु प्रदोषसमये देवं मृडानीपतिम् ॥ ५ ॥ गन्धर्वयक्षपतगोरगसिद्धसाध्यविद्याधरामरवाराप्सरसां गणाश्च ॥ येऽन्ये त्रिलोकनिलयाः सहभूतवर्गाः प्राप्ते प्रदोषसमये हरपार्श्वसंस्था ॥६॥ अतः प्रदोषे शिवएक एव पूज्योऽथ नान्ये हरिपद्मजाद्याः । तस्मिन्महेशे विधिनेज्यमाने सर्वे प्रसीदन्ति मुराधिनाथाः ॥ ७ ॥ एष ते तनयः पूर्वजन्मनि ब्राह्मणोत्तमाः॥ प्रतिग्रहैर्वयो निन्येन दानाद्यैः सुकर्मभिः ॥ ८ ॥ अतो दारिद्र्यमापन्नः पुत्रस्ते द्विजभामिनि ॥ तद्दोषपरिहारार्थं शरणं यातु शङ्करम् ॥ ९ ॥

॥ अथ कालभैरवाष्टकम् ॥

देवराजसेव्यमानपवनाङ्घ्रिपङ्कजं व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम् ॥ नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे ॥ १ ॥ भानुकोटिभास्करं भवाब्धितारकं परं नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम् ॥ कालकामम्वुजाक्षमशूलमक्षरं काशिका० ॥ शूलटंकपाशदण्डपाणिमादिकारणं श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ॥ भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं काशिका० ॥ ३ ॥ भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं भक्तवत्सल स्थितं समस्तलोकविग्रहम् ॥ विनक्कणन्मनोज्ञहेमकिंकिणीलसत्कटिं काशिका० ॥ ४ ॥ धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम् ॥ स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं काशिका० ॥ ५ ॥ रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मक नित्यमद्वितीयतिष्टदैवतं निरञ्जनम् ॥ मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्टमोक्षणं काशिका० ॥ ६ ॥ अट्टहासं भिन्नपद्मजाण्डकोशसन्तर्तिं दृष्टिपातनष्टपापजलमुग्रशासनम् । अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं काशिका० ॥ ७ ॥ भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासिलोकपुण्यपापशोधकं विभुम् ॥ नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं काशिका० ॥ ८ ॥ कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम् ॥ शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं ध्रुवम् ॥ ९ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

॥ अथ शिवाष्टकम् ॥

प्रभुं प्राणनाथं विभुं विश्वनाथं जगन्नाथनाथं सदानन्दभाजाम् ॥ भवद्भव्यभूतेश्वरं भूतनाथं शिवं शंकरं शम्भुमीशानमीडे ॥ १ ॥ गले रुण्डमालं तनौ सर्पजालं महाकालकालं गणेशाधिपालम् ॥ जटाजूटभङ्गोत्तरङ्गैः विशालं शिवं० ॥ २ ॥ मुदामाकरं मण्डनं मण्डयन्तं महामण्डलं भस्मभूषाधरं तम् ॥ अनादिं ह्यपारं महामोहमारं शिवं० ॥ ३ ॥ तटाधो निवासं महाट्टाट्टहासं महापापनाशं सदा सुप्रकाशम् ॥ गिरीशं गणेशं महेशं सुरेशं शिवं० ॥ ४ ॥ गिरीन्द्रात्मजासंग्रहीतार्धदेहंगिरौसंस्थितं सर्वदासन्नगेहम् ॥ परब्रह्मब्रह्मादिभिर्वन्द्यमानं शिवं० ॥ ५ ॥ कपालं त्रिशूलं कराभ्या दधानं पदाम्भोजनम्राय कामं ददानम् ॥ बलीयवर्दयानं सुराणां प्रधानं शिवं० ॥ ६ ॥ शरच्चन्द्रगात्रं गुणानन्दपात्रं त्रिनेत्रं पवित्रं धनेशस्य मित्रम् । अपर्णाकलत्रं चरित्रं विचित्रं शिवं ॥ ७ ॥ हरं सर्पहारं चिताभूविहारं भवं वेदसारं सदा निर्विकारम् ॥ श्मशाने वन्दतं मनोजं दहन्तं शिवं ॥ ८ ॥ स्तवंयः प्रभाते नरः शूलपाणेः पठेत्सर्वदा भर्गभावानुरक्तः ॥ सः पुत्र धनं धान्यमित्रं कलत्रं विचित्रं समासाद्य मोक्षं प्रयाति ॥ ९ ॥

॥ अथ तुलसिदासकृतरुद्राष्टकम् ॥

नमामीशमीशाननिर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाश वासं भजेऽहं ॥
निराकारमोङ्कार मूलं तुरीयं, गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोऽहं ॥
तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं, मनोभूत कोटिप्रभा श्रीशरीरं ।
स्फुरन्मौलिकल्लोलिनीचारुगङ्गा, लसद्भाल बालेन्दु कण्ठेभुजङ्गा ॥
चलत्कुण्डलं भ्रू त्रिनेत्रं विशालं, प्रसन्नानन नीलकण्ठं दयालं ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डं अजं भानु कोटि प्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानिपतिं भावगम्यं ॥
कलातीतकल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी ।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं, मजन्तीह लोके परे वा नराणां ।
नतावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं ॥
न जानामि योगं जपं नैव पूजां, नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यं ।
जराजन्म दुःखौघतातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीशशम्भो ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्लोक—रुद्राष्टकमिदंप्रोक्तं विप्रेण हरतुष्टये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥

॥ अथ शिवसहस्रनाम् ॥

सूतउवाच ॥ श्रूयतामृषयः श्रेष्ठाः कथयामि यथा श्रुतम् ॥ विष्णुनाप्रार्थितो येनसंतुष्टः परमेश्वरः ॥ तदहंकथयाम्यद्यपुण्यं नामसहस्रकम् ॥१॥ श्रीविष्णुरुवाच ॥ शिवोहरोमृडोरुद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः। अर्थिगम्यः सदाचारः सर्व शंभुर्महेश्वरः ॥२॥ चंद्रापीडश्चन्द्रमौलिर्विश्वं-विश्वामरेश्वरः॥ वेदांतसारसंदोहःकपालीनीललोहितः॥३॥ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्योगौरीभर्त्ता: गणेश्वरः॥ अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्तिस्त्रिवर्गस्वर्गसाधनः॥४॥ज्ञानगम्योदृढप्रज्ञोदेवदेवस्त्रिलोचनः॥ वामदेवोमहादेवः पटुः परिवृढोदृढः ॥ ५ ॥ विश्वरूपोविरूपाक्षोवागीशः शुचिसत्तमः॥ सर्व-प्रमाणसंवादीवृषाङ्कोवृषवाहनः॥६॥ ईशःपिनाकीखट्वांगीचित्रवेषश्चिरंतनः। तमोहरोमहा-योगीगोप्ताब्रह्माचधूर्जटिः॥७॥ कालकालःकृत्तिवासाःसुभगः प्रणवात्मकः। उन्नध्रःपुरुषोजुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः ॥ ८ ॥ दिव्यायुधःस्कंदगुरुः परमेष्ठीपरात्परः । अनादिमध्यनिधनोगिरी-शोगिरिजाधवः॥ ९॥ कुबेरबन्धुःश्रीकंठोलोलोकवर्णोत्तमोमृदुः। समाधिवेद्यःकोदंडीनीलकंठः परस्वधीः ॥ १० ॥ विशालाक्षो मृगव्याधःसुरेशसूर्यतापनः । धर्मधामक्षवाक्षेत्रंभगवान्भगनेत्र-भित् ॥ ११ ॥ उग्रःपशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्तःपरंतपः । दातादयाकरोदक्षःकर्मदीकामशासनः ॥ १२ ॥ श्मशाननिलयःसूक्ष्मःश्मशानस्थोमहेश्वरः । लोककर्त्तामृगपतिर्महाकर्त्तामहौषधिः ॥ १३ ॥ उत्तरोगोपतिर्गोप्तज्ञानगम्यःपुरातनः । नीतिःसुनीतिःशुद्धात्मासोमःसोमरतःसुखी ॥१४॥सोमपोऽमृतपःसौम्योमहातेजामहाद्युतिः। तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्चसुधापतिः॥१५॥ अजातशत्रुरालोकःसंभाव्योहव्यवाहनः। लोककरोवेदकरःसूत्रकारःसनातनः ॥ १६ ॥ महर्षि-कपिलाचार्योविश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः । पिनाकपाणिर्भूदेवःस्वस्तिःस्वस्तिकृत्सुधीः ॥ १७ ॥ धातृधामाकरःसर्वगःसर्वगोचरः । ब्रह्मसृग्विश्वसृक्सर्गः कर्णिकारः प्रियः कविः ॥ १८ ॥ शाखोविशाखोगोशाखःशिवोभिषगनुत्तमः। गंगाप्लवोदकोभव्यःपुष्कलःस्थपतिःस्थिरः॥१९॥ विजितात्माविषयात्माभूतवाहनसारथिः । सगणोगणकागश्चसुकीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ २०॥ कामदेवः कामपालोभस्मोद्धलितविग्रहः । सुस्मप्रियोभस्मशायीकामीकांतः कृतागमः ॥२१॥ समावर्तोनिवृत्तत्माधर्मपुञ्जःसदाशिवः॥ अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दुरावासोदुरासदः ॥२२॥दुर्लभो-दुर्गमोदुर्गःसर्वायुधविशारदः। आध्यात्मयोगनिलयः सुतंतुस्तन्तुवर्धनः ॥ २३ ॥ शुभांगोलोक-सारंगोजगदीशोजनार्दनः॥ भस्मशुद्धिकरोमेरुरोजस्वीशुद्धविग्रहः ॥२४॥ असाध्यः साधुसाध्य-श्चभृत्यमर्कटरूपधृक । हिरण्ययेताः पौराणोरिपुजीवहरोबलः ॥ २५ ॥ महाह्रदोमहागर्त्तः सिद्धवृंदापवंदितः । व्याघ्रचर्माम्बरोव्याली महाभूतोमहानिधिः ॥२६॥ अमृताशोऽमृतवपुः पांचजन्यः प्रभंजनः। पंचविंशतितत्त्वस्थःपारिजातःपरावरः॥२७॥ सुलभःसुव्रतः शूरोब्रह्मवेद निधिर्निधिः॥वर्णाश्रमगुरुर्वर्णीशत्रुजिच्छत्रुतापनः॥२८॥ आश्रमःक्षपणःक्षमोज्ञानवानचलेश्वरः।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रमाणभूतोदुर्ज्ञेयः सुपर्णोवायुवाहनः ॥ २९ ॥ धनुर्धरोधनुर्वेदोगुणराशिर्गुणाकारः । सत्यः सत्यपरोदीनोधर्मागोधर्मसाधनः ॥३०॥ अनंतदृष्टिरानंदोदंडोदमयितादमः । अभिवाद्योमदामायोविश्वकर्माविशारदः ॥३१॥ वीतरागोविनीतात्मातपस्वीभूतभावनः । उन्मत्तवेषःप्रच्छन्नोजितकामोऽजितप्रियः ॥३२॥ कल्याणप्रकृतिः कल्पःसर्वलोकप्रजापतिः । तरस्वीतारकोधीमान्प्रधानप्रभुरव्ययः ॥ ३३ ॥ लोकपालोऽर्तहितात्माकल्पादिः कमलेक्षणः । वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञोऽनियमोनियताश्रयः ॥३४॥ चन्द्रःसूर्यःशनिः केतुवरांगोविद्रु मच्छविः । भक्तिवश्यः परब्रह्ममृगवाणार्पणोऽनघः ॥३५॥ अद्रिरद्यालयःकांतःपरमात्माजगद्गुरुःसर्वकर्मालयस्तुष्टोमंगल्योमङ्गलावृतः ॥३६॥ महातपादीर्घतपाःस्थाविष्ठःस्थाविरोध्रुवः अहःसंवत्सरोव्याप्तिः प्रमाणंपरमंतपः ॥३७॥ संवत्सरकरोमंत्रप्रत्यय सर्वदर्शनः । अजः सर्वेश्वरः सिद्धोमहारेतामहाबलः ॥३८॥ योगीयोग्योमहातेजाःसिद्धिसर्वादिरग्रहः । वसुर्वसुमनाः सत्यःसर्वपापहरोहरः ॥३९॥ सुकीर्तिःशोभनःश्रीमानवाङ्मनसगोचरः । अमृतःशाश्वतःशांतोवाणहस्तः प्रतापवान् ॥ ४० ॥ कमंडलुधरोधन्वी वेदांगो वेदविन्मुनिः । भ्राजिष्णुर्योजनंभोक्तालोकनाथोदुराधरः ॥४१॥अतींद्रियोमहामायः सर्ववासश्चतुष्पथः । कालयोगीमनानादो महोत्साहो महाबलः ॥४२॥महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः । निशाचरः प्रेतचारी महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥४३॥अनिर्देश्यवपुःश्रीमान्सर्वाचार्यमनोगतिः ॥ बहुश्रुतो महामायोनियतात्माध्रुवोऽध्रुवः ॥ ४४ ॥ ओजस्तेजोद्युतिधरो नर्तकःसर्वनाशकः ॥ नृत्यप्रियोनृत्यनित्यः प्रकाशात्माप्रकाशकः ॥४५॥ स्पष्टक्षरोबुधो मंत्रःसमानः सारसंप्लवः ॥ युगादिकृद्युगावर्तो गंभीरो वृषवाहनः॥४६॥ इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टःशलभःशरभोःधनुः॥ तीर्थरूपस्तीर्थनामातीर्थदृश्यः॥ स्तुतोऽर्थदः॥४७॥अपांनिधिरधिष्ठानंविजयो जयकालिवित्॥ प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञोहिरण्यकवचोहरिः॥४८॥विमोचनःसुरगणोविद्येशोविंदुसंश्रयः बालरूपोबलोन्मत्तोविकर्तागहनोगुहः॥४९॥करणंकारणंकर्तासर्वबंधविमोचनः ॥ व्यवसायोव्यवस्थानः स्थानदोजगदादिजः॥५०॥गुरुदोललितोऽभेदोभावात्मात्मनिसंस्थितः । वीरेश्वरोवीरभद्रोवीरासनाविधिर्विराट् ॥५१॥वीरचूडामणिर्वेत्तातीव्रानंदोनदीधरः । आज्ञाधारस्त्रिशूलीचशिपिविष्टः शिवालयः॥५२॥ बालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्वधिरःखगः । अभिरामःसुशरणःसुब्रभण्यःसुधापतिः ॥ ५३॥ मघवान्कौशिकोगोमान्विराभः सर्वसाधनः । ललाटाक्षोविश्वदेहःसारःसंसारचक्रभृत् ॥ ५४ ॥ अमोघदंडोमध्यस्थोहिरण्योब्रह्मवर्चसी । परमार्थःपरोमायीशंबरोव्याघ्रलोचनः ॥ ५५ ॥ रुचिर्विरंचिः स्वर्वंधुर्वाचस्पतिरहर्पतिः । रविर्विरोचनःस्कन्दः शास्तावैवस्वतोयमः ॥ ५६ ॥ युक्तिरुन्नतकीर्तिश्चसानुरागःपरंजयः । कैलासाधिपतिःकांतःसवितारविलोचनः ॥५७॥ विद्वत्तमोवीतभयो विश्वभर्ताऽनिवारितः। नित्योनियतकल्याणः पुण्य श्रवणकीर्तनः ॥५८॥ दूर भवाविश्वसहोध्येयोदुः स्वप्ननाशनः । उत्तारणोदुष्कृतिहाविज्ञेयोदु सहोऽभवः ॥ ५९ ॥ अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः किरीटीत्रिदशाधिपः विश्वगोप्ताविश्वकर्तासुवीरोरुचिरांगदः ॥ ६० ॥ जननोजनमन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः । वशिष्ठः कश्यपोभानुर्भीमोभीमपराक्रमः ॥६१॥ प्रणवःसत्पथाचारोमहाकोशो-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

महाधनः । जन्माधिपोमहादेवः सकलागमपारगः ।। ६२ ।। तत्त्वंतत्त्वविदेकात्माविभुर्विश्व-भूषणःऋषिर्ब्राह्मणऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः ।।६३।। पंचयज्ञसमुत्पत्तिर्विश्वेशोविमोलदयः । आत्मयोनिरनाद्यं तोवत्सलोभक्तलोकधृक् ।।६४।। गालत्रोवल्लभः प्रांशुर्विश्वासः प्रभाकरः । शिशुर्गिरिरतः सम्राट्सुषेणः सुरशत्रुहा ।। ६५ ।। अमोघोऽरष्टिनेमिश्चकुमुदोविगतज्वरः । स्वयंज्योतिस्तनुज्योतिरात्मज्योतिरचंलः ।। ६६ ।। पिंगलः कपिलश्मश्रुर्भालनेत्रस्त्रयीतनुः । ज्ञानस्कंदोमहानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपपप्लवः ।। ६७ ।। भगोविवस्वानादित्योगपारोदिवस्पतिः । कल्याणगुणनामाचपापहापुण्यदर्शनः।।६८।। उदारकीर्तिरुद्योगीसद्योगीसदसंमय। नक्षत्रमाली-नाकेशःस्वाधिष्ठानपदाश्रयः।।६९।। पवित्रःपापहारीचमणिपूरोनभोगतिः। हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रशांतोवृषाकपिः ।।७०।। उष्णोगृहपतिःकृष्णःसमर्थोऽनर्थयाशनः । अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः ।।७१।। ब्रह्मगर्भो ब्रह्मद्गर्भो धर्मधेनुर्धनागमः । जगद्धितैषीसुगतः कुमार कुशलागमः ।।७२।। हिरण्यवर्णोज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः। अरागानयनाध्यक्षो विश्वामित्रोधनेश्वरः ।।७३।। ब्रह्मज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः । .मातामहोमातरिश्वा नमस्वान्ननाहारधृक् ।।७४।। पुलस्त्यः पुलदोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः। निरावरणनिर्वारोवैरंच्यो विष्टरश्रवाः ।।७५।। आत्मभूरनिरुद्धोऽत्रिर्ज्ञानमूर्तिर्महायशाः । लोकवीरराग्रणीर्वीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः ।।७६।। व्यालकल्पोमहाकल्पः .कल्पवृक्षःकलाधरः । अलंकरिष्णुरचलोरोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः ।।७७।। आयुः शब्दपतिर्वेगीप्लवनः शिखिसारथिः । असंसृष्टोऽतिथिः शक्रमाथीपादपासनः ।।७८।।वसुश्रवाहव्यवाहःप्रतप्ताविश्वभाजनः। जप्योजरादिशमनोलोहितात्मातनूनपात्।।७९।। वृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा । निदाघस्तहनोघः स्वक्षः परपुरंजय ।। ८० ।। सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः । वसंतोमाधवोग्राष्मोनभस्योवीजवाहनः ।।८१।। अंगिरागुरुरात्रेयोविमलोविश्वपावनः । पावनः सुमतिर्विद्वांस्त्रैविश्वोनरवाहनः ।। ८२ ।। मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः. क्षेत्रपालकः । जमदग्निर्बलनिधिर्विगालोविश्वगालवः ।। ८३ ।। अघोरोऽनुत्तरोयज्ञः श्रेयो निः श्रेयसांपथः । शैलोगगनकुन्दाभोदानवारिररिंदमः ।। ८४ ।। रजनीजनकश्चारुविशल्योलोककल्पधृक् । चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरप्रियः ।। ८५ ।। आम्नायो-ऽथसमाम्नायस्तीर्थदेवशिवालयः । बहुरूपोमहारूपः सर्वरूपश्चराचराः ।।८६।। न्यायनिर्मायि-कोन्यायीन्यायगन्योनिरन्तरः । सहस्रर्धामूदेवेन्द्रः सर्वशास्त्रप्रभंजनः ।।.८७।। मुण्डोविरूपोवि-क्रांतोदंडीदांतोगुणोत्तमः। पिंगलाक्षोजनाध्वक्षोनीलग्रीवो निरामयः।।८८।। सहस्राबाहुःसर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक् । पद्मासनः परंज्योतिः परंपारः परंफलम् ।। ८९ ।। पद्मगर्भोमहागर्भो-विश्वगर्भोविचक्षणः । चराचरज्ञोवरदोवरेशस्तुमहाबलः ।।९०।। देवासुरगुरुर्देवोदेवासुरमहा-श्रयः । देवादिदेवोदेवाग्निसुखदःप्रभुः ।। ९१ ।। देवासुरेश्वरोदिव्योदेवासुरमहेश्वरः । देवदेवमयोऽचित्योदेवदेवात्मसंभवः ।।९२।। सद्योनिरसुरव्याघ्रोदेवसिंहोदिवाकरः। विबुधाग्र-वरश्रेष्ठःसर्वदेवोत्तमोत्तमः ।। ९३ ।। शिवज्ञानरतःश्रीमांछिखिश्रीपर्वप्रियः । वज्रहस्तःसिद्धि-खड्गीनरसिंहनिपातनः।।९४।। ब्रह्मचारीलोकचारीधर्मचारीधनाधिपः। नन्दीनन्दीश्वरोऽनंतो-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नग्नव्रतधरशुचिः ॥ ९५ ॥ लिंगाध्यक्षःसुराध्यक्षोयोगाध्यक्षो युगावहः । स्वधर्मास्वर्गतः स्वर्गस्वरःस्वरमयस्वनः ॥९६॥बाणाध्यक्षोबीजकर्ताधर्मकृद्धर्मसंभव । दंभोलोभोऽर्थविच्छंभुः सर्वभूतमहेश्वरः॥९७॥ श्मशाननिलयस्त्र्यक्षःसेतुरप्रतिमाकृतिः। लोकोत्तरस्फुटालोकस्त्र्यम्बकोनागभूषणः ॥ ९८ ॥ अन्धकारिर्मखद्वेषी विष्णुकंधरपातनः । हीनदोषोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदंतभित् ॥ ९९ ॥ धूर्जटिःखंडपरशुःसकलोनिष्कलोऽनघः । अकालःसकलाधारःपाडुराभो मृडोनटः ॥ १०० ॥ मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः । जीवितांतकरो नित्योकीर्तिरनामयः ॥ १०१ ॥ मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः । जीवितांतकरो नित्योवसुरेता वसुप्रदः ॥ १०२ ॥ शद्गतिः सत्कृतिः सिद्धिः सज्जातिः कालकंटकः । कलाधरो महाकालो भूतसत्यपरायणः १०३ ॥ लोकलावण्यकर्ताचलोकोत्तरसुखालयः । चंद्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढ़ो महाधिपः ॥ १०४ ॥ लोकबंधुर्लोकनाथः कृतज्ञः कीर्तिभूषणः । अनपायोऽक्षरः कांतःसर्वशस्त्रभृतांवरः ॥१०५॥ तेजोमवोद्युतिधरोलोकनामग्रणीरणुः। शुचिस्मितः प्रसन्नात्मादुर्जेयोदुरतिक्रमः ॥ १०६ ॥ ज्योतिर्मयोजगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः। तुंबवीणोमहाकोपो विशोकः शोकनाशनः ॥१०७॥ त्रिलोकपस्त्रिलोकेशःसर्वशुद्धिरधीक्षजः । अव्यक्तलक्षणो देवो व्यक्ताव्यक्तो विशांपतिः ॥ १०८ ॥ वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः । ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः ॥ १०९ ॥ वेधा विधाता धाता च स्रष्टा हर्ता चतुर्मुखः । कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः ॥ ११० ॥ हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथभूपतिः । सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः ॥ १११ ॥ देवप्रियो देवताथो देवज्ञो देवचिन्तकः । विषमाक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः ॥ ११२ ॥ निर्ममो निरंहकारी निर्मोही निरुपद्रवः । दर्पहा दर्पद्रो द्रप्तः सर्वर्तुपरिवर्त्तकः ॥ ११३ ॥ सहस्त्रजित्सहस्त्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः। भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः ॥ ११४ ॥ अथोऽनर्थो महाकोशः परकार्येकपंडितः । निष्कंटकःकृतानंदोनिर्व्याजो व्याजमर्दनः ॥११५॥ सत्ववान्सात्त्विकःसत्यकीर्तिःस्नेहकृतागमः। अंकपितो गुणग्राहा नैकात्मानैककमृकृतः ॥११६॥ सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानलिः । नंदिस्कंधधरो धुर्यःप्रकटःप्रीतिवर्धनः ॥११७॥ अपराजितः सर्वसत्वो गोविन्दाःसत्त्ववाहनः। अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः ॥११८॥ वाराहश्रृंगधृक्छृङ्गीबलवानेकनायकः । श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबंधुरनेककृन् ॥ ११९ ॥ श्रीवत्सलशिवारंभः शांतभद्रःसमोयशः । भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद्भूतभावनः ॥ १२० ॥ अकधो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः। सत्यव्रतमहात्यागी नित्यशांतिपरायणः॥१२१॥ परार्थवृत्तिर्वरदो विवक्षुस्तुविशारदः। शुभदःशुभकर्ताशुभनामाशुभःस्वयम् ॥१२२॥ अनर्थितोऽगुणःसाक्षीह्यकर्ताकनकप्रभः । स्वभाव भद्रो मध्यस्थः शीघ्रगशीघ्रनाशनः ॥ १२३ ॥ शिखंडी कवची शूली जठी मुंडी च कुंडली । अमृत्युःसर्वदृक्सिहस्तेजोराशिर्महामणिः॥ १२४॥ असंख्येयोऽप्रमेयात्मावीर्यवान्वीर्यकोविदः । वेद्यश्चैववियोगात्मापरावरमुनीश्वराः ॥ १२५ ॥ अनुत्तमोदुराधर्षो मधुरप्रियदर्शनः। सुरेशःशरणं सर्वः शब्दब्रह्म सतांगतिः ॥१२६॥ कालपक्ष-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कालकारी कंकणीकृतवासुकिः। महेष्वासो महीभर्ता निष्कलंको विशृंखलः॥१२७॥ द्युमणिस्तरणिर्धन्यःसिद्धिदसिद्धिसाधनः। विश्वतसंवृतःस्तुत्योत्र्यूढोरस्को महाभुजः॥१२८॥ सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः। निर्लेपो निष्प्रयंचात्मा निर्व्यंगो व्यंगनाशनः॥१२९॥ स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोता व्यासमूर्तिर्निरंकुशः। निरवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः॥१३०॥ प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णसंग्रही नित्यसुन्दरः। वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशःशाकल्यःसर्वरोपतिः॥१३१॥ परमार्थंगुरुर्द्दृष्टिःशरीराश्रितवत्सलः।सोमोरसज्ञोरसदःसर्वसत्त्वावलंबनः॥१३२॥ एवंनाम्नासहस्रेण तुष्टाव वृषभध्वजम्। प्रार्थयामासशंभुंचपूजयामासपंकजैः॥१३३॥ परीक्षार्थंहरेस्वीशःकमलेषु महेश्वरः। गोपयामासकमलंतदैकंभुवनेश्वरः॥१३४॥ हृदिविचारितंतेनकुतोवैकमलंगतम्। यातुयातुसुखेनैवनेत्रंकिंकमलंनहि॥१३५॥ ज्ञात्वातुनेत्रमुद्धृत्यसर्वसत्वावलंबनम्। पूजयामासभावेनस्तवेनाऽनेनसर्वथा॥१३६॥ मामेतिव्याहरन्नेव प्रादुरासीज्जगद्गुरु। ततस्तु तमथोदृष्ट्वातथाभूतहरोहरिम्॥१३७॥ तस्मादवततराशुमंडलात्पार्थिवस्यसः यथोक्तरूपिणंशंभुंतेजोराशिसमुत्थितम्॥१३८॥ नमस्कृत्यपुरःस्थित्वास्तुतिंकृत्वा विशेषतः। पूजयामास देवेशः पार्वत्यासंहितंशिवम्॥१३९॥ प्रसन्नवदनोभूत्वाशंभोश्चसंमुखेस्थितः। इत्थंभूतंहरोदृष्ट्वाकोटिभास्करभूषितः॥१४०॥ प्राणिनामीश्वरः शंभुर्देवदेवोजनार्दनम। तदाप्राहमहादेवः प्रहसन्निव शंकरः। संप्रेक्षमाणंतंविष्णुकृताजलिपुटंस्थितम्॥१४१॥ शंकर उवाच। ज्ञातंमयेदंसकलंदेवकार्यजनार्दन। सुदर्शनाख्यंक्रंचददामितवशोभनम्॥१४२॥ यद्रूपंभवतादृष्टंसर्वलोकसुखावहम्। हितायतवदेवेशकृतंभावयसुव्रत॥१४३॥ रणाजिरेपिसंस्मृत्यदेवानांदुःखनाशनम्। इदंचक्रमिदंरूपमिदंनामसहस्रकम्॥१४४॥ येश्रृण्वंतिसदाभक्त्यासिद्धिःस्पादनपायिनी। एवमुक्त्वाददौचक्रसूर्यायुतसमप्रभम्॥१४५॥ विष्णुपिचसंस्नात्वाजग्राहोदङ्मुखस्तदा। नमस्कृत्यंतदादेवपुनर्वचनमब्रवीत्॥१४६॥ श्रृणुदेवमयाध्येयंपठनीयंचमेप्रभो। दुखानांनाशनार्थंहिवदत्वंलोकशंकर॥१४७॥ इतिपृष्टस्तदातेनसंतुष्टतुशिवोऽब्रवीत्। रूपंध्येयंमदीयंवैसर्वानर्थप्रशांतये॥१४८॥ अनेकदुःखनाशार्थंपाठचंनामसहस्रकम्। धार्यचक्रंसदामेऽद्यसर्वानर्थप्रशांतये॥१४९॥ अन्येचयेपठिष्यंतिपाठयिष्यंतिनित्यशः तेषांदुःखंनस्वप्नेऽपिजायतेनात्रसंशयः॥१५०॥राज्ञांचसंकटेप्राप्तेशतावर्तंचरेद्यदा।साँगंचविधियुक्तोहिकल्याणंलभतेनरः॥१५१॥रोगनाशकरंह्येतद्विद्यादावकमुत्तमम्। समुद्दिश्यफलंश्रेष्ठंपठंतिफलमुत्तमम्॥१५२॥ लभंतेनाऽत्रसंदेहःसत्यमेतद्वचं मम। प्रातःसमुत्थायसदापूजांकृत्वामदीयिकाम्॥१५३॥ पठतोमत्समक्षंवैनित्यंसिद्धिर्नदूरताः। ऐहिकींसिद्धिमासाद्यपरलोकसमुद्भवाम्॥१५४॥ प्राप्नोतिपाठकोनित्यमष्टमासान्सुरेश्वर। सायुज्यमुक्तिमापातिनाऽत्रकार्याविचारणा॥१५५॥ एवमुक्त्वातदाविष्णुंशंकरः प्रीतमानसः। उपस्पृश्यशकराभ्यांचउवाचशङ्करः पुनः॥१५६॥ वरदोऽस्मिन्सुरश्रेष्ठवरान्वरयथेप्सितान्। भक्त्यावशीकृतोनूनंस्तवेनानेनवैपुनः॥१५७॥इत्युक्तोदेवदेवेनदेवदेवंप्रणम्भतम्। यथेदानींकृपांदेवक्रियतेचाऽप्यतः परम्॥१५८॥ कार्याचैवविवेषणकृपालु त्वत्त्याप्रभो। त्वयिभक्तिमहादेवप्रयच्छवमुत्तमम्॥१५९॥ नाऽन्यभिच्छामिभग–

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बन्पूतर्णोऽर्हतेप्रसादतः। तच्छ्रुत्वावचनंतस्यदयावान्सुतरांभवः ॥१६०॥ प्राहत्वेनंमहादेवःपरमात्मानमच्युतम्। मयिभक्तिश्चवंद्यस्त्वंपूज्यश्चैवसुरैरपि॥१६१॥विश्वंभरस्त्वदीयंवैनामपापहरंपरम्। भविष्यतिनसंदेहोमत्प्रसादात्सुरोत्तम ॥१६२॥ इत्युक्त्वांऽन्तर्दधेरुद्रोभगवान्नीललोहितः। जनार्दनोऽपिभगवानन्वचनाच्छंकरस्यच ॥ १६३ ॥ प्राप्यचक्रंशुभंध्यानंस्तोत्रमेतन्निरंतरम्। पपाठाऽध्यापयामासभक्तेभ्यस्तदुपादिशत् ॥१६४॥ अन्येऽपियेपठिष्यंतितेविंदुंतुतथाफलम्। इतिपृष्टंसमाख्ययातंश्रृण्वतांपापहारकम् ॥ १६५ ॥ अतः परं च किं श्रेष्ठाः प्रष्टमिञ्छथ वै पुनः ॥ १६६ ॥

इति श्रीशिवमहापुराणे ज्ञानसंहितायां शिवसहस्रनामकथनं समाप्तम् ॥

श्रीगणेशायनमः

॥ शिवस्तुति ॥

चापेयगौरार्द्ध शरीरकायै कर्पूरगौरार्ध शरीरकाय। धम्मिल्लकायै च जटाधराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ १ ॥ रणत्क्वणत्कंकणनूपुरायै मिलत्फणा भासुरनूपुराय। हेमांगदायै भुजगांगदाय नमः शिवायै च नमः शिवाय॥२॥ कस्तूरिकाकुंकुमर्चचितायै चितारजः पुञ्जविर्चचिताय। सुकुण्डलायै फणिकुण्डलाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ३ ॥ मन्दारमालाकुलतालकायै कपालमालांकितशेखराय। दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ४ ॥ प्रोत्फुल्लनीलोत्पलोचनायै विकासपंकेरुहलोचनाय समेच्चणायै विषमेक्षणाय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ५ ॥ अम्भोरुहश्यामलकुन्तलायै तडित्प्रभाभासजटाधारय। जगञ्जनन्ये जगदेकपित्रे नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ६ ॥ सदाशिवानां प्रियभूषणायै सदाशिवानां प्रियभूषणाय। शिवान्तितायै च शिवान्विताय नमः शिवाय च नमः शि० ॥७॥ प्रपञ्चसृष्टेर्मुखवासदायै त्रैलोक्यसंहारकृतान्तकाय। कृतस्मरायै विकृतस्मराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥ ८ ॥ नमस्ते भगवद्रुद्रभास्करामिततेजसे। नमो भवाय देवाय शिवाय परमात्मने ॥ ९ ॥ शान्ताय क्षितिरूपाय सदाऽसुरमिदे नमः। ईशानाय नमस्तुभ्यं स्पर्शमात्राय ते नमः ॥ १० ॥ महादेवाय सोमाय अमृतेशाय ते नतः। उग्राय यजमानाय नमो मीढुष्टमाय ते ॥ ११ ॥ नमोऽस्तुते शंकर शांतिमूर्ते नमोस्तुते चंद्रकलावतंस। नमोऽस्तुते कारणकारणाय नमोस्तुते कारणवर्जिताय ॥ १२ ॥ स एव धन्यस्तव भक्तिभाजां तवार्चनं यः कुरुते सदैव ॥ १३ ॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर। यत्पूजितम् मया देव परिपूर्ण तदस्तु मे ॥ १४ ॥

॥ अथ शिवमानस पूजा ॥

रत्नैःकल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्। जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं च पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गृह्यताम् ॥ १ ॥ सौवर्णे मणिखण्डरत्नचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं फाणितम् । शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ॥ २ ॥ छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकलागीतं च नृत्यं तथा । साष्टाङ्ग प्रणतिः स्तुतिर्बहुविद्या ह्येतत्समस्तं मया सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजा गृहाण प्रभो ॥ ३ ॥ आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितः । सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ ४ ॥ इत्येवं हरपूजने प्रतिदिनं यो वा त्रिसन्ध्य पठेत्सेवाश्लोकचतुष्टयं प्रतिदिनं पूजा हरेर्मानसी । सोऽयं सौख्यमवाप्नुयाद्द्युतिधरं साक्षाद्धर्दर्शनं व्यासस्तेत महावसानसमये कैलासलोकं गतः ॥ ५ ॥ करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम् । विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥ ६ ॥

॥ अथ द्वादश ज्योतिर्लिंगानि कथ्यन्ते ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैल मल्लिकार्जुनम् । उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ॥ १ ॥
पर्यल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्या भीमशंकरम् । सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौमतीतटे । हिमालये तु केदारं घृष्णशं शिवालये ॥ ३ ॥
एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः । सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवपुराण भाषा की विषयानुक्रमणिका ।

अध्याय	विषय	पृष्ठ
	प्रथम खण्ड	
१	श्री सदाशिवजी की कथा ...	१
२	तप कर नारद का शीलनिधि के यहाँ स्वयम्बर में जाना ...	५
३	नारद का वानर का सा मुख होना और शिवगणों को शाप ...	६
४	ब्रह्मा का नारद से सगुणरूप कीर्तन	१२
५	श्रीशिव से विष्णु और ब्रह्मा की उत्पत्ति	१७
६	ब्रह्मा, विष्णु का शिवलिङ्ग खोजना...	२०
७	ब्रह्मा विष्णु को शिव का दर्शन ...	२३
८	शिव द्वारा ब्रह्मा, विष्णु का स्पर्श ...	२४
९	जीवों की उत्पत्ति देखकर शिव का प्रकट होना	२६
१०	शक्ति समेत शिव का भूतादि सृष्टि उपजाना	२७
११	पाँच तत्त्व, पहाड़, मूल और कलादि की उत्पत्ति	२९
१२	ब्रह्मा को अर्धाङ्गीरूप का दर्शन ...	३०
१३	स्वायंभुव राजा और शतरूपा रानी की उत्पत्ति	३१
१४	श्रीलोक, वैकुण्ठादि लोक वर्णन ...	३३
१५	यज्ञदत्तात्मज गुणनिधि का उपाख्यान ...	३५
१६	गुणनिधि के कुकर्म से पिता का कोप	३७
१७	शिवालय में चोरी कर गुणनिधि का मारा जाना व यमदूतों से शिवगणों को छुड़ाना	४०
१८	विश्रवा के यहाँ उपजकर गुणनिधि का तप करना	४४
१९	शिव में कुदृष्टि से कुबेर नाम प्राप्ति	४६
२०	अलकापुरी के निकट शिवजी का आना	४८
२१	निधिनाथ के विनय से शिव का टिकना	५१
२२	शिवजी का कैलाश में निवास ...	५३
	द्वितीय खण्ड	
१	सन्ध्या पर ब्रह्मा का मोहित हो काम को वर देना	५६
२	ब्रह्मा के पसीने से चौंसठ योगिनियों की उत्पत्ति	५९
३	शिवविवाहार्थ ब्रह्मा-दक्ष कथन ...	६१
४	शिव को न मोहित कर काम का लज्जित होना	६३
५	विष्णु का ब्रह्मा को समझाय निज धाम जाना	६५
६	सती के प्रादुर्भावार्थ दक्ष का तप ...	६६
७	तप कर ब्रह्मा को देवी से बर याचना	६६
८	दक्षपत्नी वीरनी के गर्भ में देवी ...	६७
९	सती नाम से देवी का अवतार ...	६९
१०	पुत्री जन्म सुन दक्ष को हर्ष ...	७०
११	दक्ष के घर में सती के चरित्र ...	७२
१२	ब्रह्मादिकों को शिवजी से विवाहार्थ कहना	७४
१३	शिवजी से सती की वर-प्राप्ति ...	७५
१४	सती का शिव से ब्याह ...	७७
१५	सती सहित शिव कैलास यात्रा ...	७९
१६	शिव से सती का परमतत्त्व प्रश्न ...	८१
१७	सगुण-अगुण भक्ति निरूपण ...	८२
१८	सती का भक्ति के अङ्ग पूछना ...	८७
१९	सती समेत शिव की दण्डकवन यात्रा, सतीकृत रामपरीक्षा	९०
२०	सती से निज वृत्त कह राम का आगे चलना	९२

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
२१	शिव का मन से सती को त्याग समाधि लगाना, सती का दुःखित होना	९४
२२	दक्ष का शिव के बिना कनखल में प्रजापति यज्ञ करना और दधीचि से विवाद होना	९६
२३	सती का शिवजी से आज्ञा ले बिना न्योता पिता के यहाँ जाना ...	९९
२४	शिवजी का भाग न देख सती का दक्ष को तिरस्कार कर, योगाग्नि से देहत्याग	१०१
२५	सतीरमण सुन शिवजी का वीरभद्र व काली आदि गण उपजाय दक्षयज्ञ विध्वंस कराना	१०५
२६	असंख्य सेनापतियों का निरूपण और यज्ञ में अशकुन	१०८
२७	विष्णु का शरण में दक्ष और देवगणों से शिवगणों का युद्ध ...	११०
२८	विष्णु से वीरभद्र का युद्ध ...	११२
२९	शिवगणों से दिक्पतियों का युद्ध, वीरभद्र से पराजित विष्णु का अन्तर्धान	११५
३०	हरिणरूप धर यज्ञदेव का भागना, वीरभद्र द्वारा उसका शीश काट यज्ञ-कुण्ड में डालना	११८
३१	छू राजा से दधीचि का युद्ध ...	१२०
३२	विप्र रूपधारी विष्णु का दधीचि से वर माँगना	१२२
३३	ब्रह्मादि देवताओं का कैलाश पर शिव की शरण में होना	१२५
३४	दक्ष के जीवनार्थ प्रार्थना, सब देवों समेत यज्ञ में शिवगमन ...	१२७
३५	दक्ष के धड़ में बकरे का शीश लगा जिला देना, तत्कृत शिव प्रशंसा ...	१२८
३६	श्रीसदाशिव का सबको उपदेश दे आशा पूर्ण करना	१२९
३७	सती की भस्म की ज्योति से ज्वाला-मुखी का जन्म तथा सती की मृत्यु पर शिव का विलाप	१३२
३८	सती के अङ्गों से प्रकटित सिद्धपीठों का वर्णन	१३४

तृतीय खण्ड

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	हिमाचल मैना विवाह ...	१३७
२	मैना समेत अन्य बहिनों को सनत्कुमार का शाप	१३९
३	देवताओं का हिमाचल को सती कन्या पाने के लिये युक्ति बताना और जगदम्बा की स्तुति	१४१
४	मैना समेत हिमाचल का शिवशक्ति की तपस्या कर सौ पुत्र, एक कन्या का वर पाना	१४२
५	सतीवियुक्त महादेव का तप कर दारुक वन में जा ब्राह्मणियों को भोगना, द्विजों के शाप से शिवलिङ्ग का पात	१४४
६	देवताओं समेत विष्णु का शिव से फिर लिङ्ग धारने को कहना ...	१४६
७	शिवजी के पसीने से उपजे भौम का भूमि द्वारा पालन	१४७
८	गर्भवती मैना से भवानी की उत्पत्ति	१४९
९	हिमाचल के यहाँ देवीजी की बाल-लीला	१५१
१०	पार्वती के विवाह के लिये स्वयम्बर में देवताओं का आगमन ...	१५२
११	स्वयम्बर में विष्णु आदि देवताओं, मनुष्यों और पर्वतों को बुलाना ...	१५४
१२	सखी समेत गिरिजा का स्वयम्बर में आकर शिव को जयमाला पहिनाना ...	१५५
१३	बालरूप शिव को स्वयम्बर से इन्द्रादि देवताओं का हटाना	१५६
१४	स्तुति कर विष्णु आदि देवताओं द्वारा शिव से क्षमा प्रार्थना	१५७
१५	विवाह कर महादेव का कैलास पर आना और देवताओं का अपने-अपने धाम को जाना	१५७
१६	दूसरी रीति से शिव विवाह ...	१५८

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१७	विष्णुवाक्य से हिमाचल को सभा में गिरिजा से पति के विषय में पूछना	१५६
१८	शिवजी का तिलक चढ़ा नाई, पुरोहित का झगड़ा	१६१
१९	बरात लाने के लिये महादेव को हिमाचल का संदेशा	१६२
२०	हिमाचल का बरात के वास्ते घर बनवाना और पत्र पढ़ कर शिवजी का हँसना	१६३
२१	माता-पिता को दुःखी देख गिरिजा का चिट्ठी दे विजया को शिव के पास भेजना	१६४
२२	अवधूत दूलह शिव को देख मैना समेत हिमाचल का दुःखी होना व पार्वती का समझाना	१६५
२३	हिमाचल द्वारा जातिवालों का उस योगी की परीक्षा लेना... ...	१६७
२४	सर्वान्नभोजी दोनों चेलों का जाना व भ्रान्त हिमाचल का पुरोहित से योगी का वृत्तान्त पूछना	१६८
२५	श्रीनारद का मैना समेत हिमाचल को समझाना व पार्वती को आदिशक्ति और शिव को परमपिता कहना ...	१६९
२६	जातिवालों समेत हिमाचल का शिव के पास जा बड़ाई करना। महेश का सब पर दयाकर बरात समेत दूलह बन आना	१७०
२७	भाई-बान्धव, देशवासियों समेत हिमाचल का अगवानी के लिये आगे पहुँचना	१७१
२८	हिमाचल के पण्डित का नग्न बतलाना व कन्यादान होना ...	१७२
२९	हिमाचल का गिरिजा को नारद के चरणों पर डालना	१७३
३०	औषधप्रस्थ पर तप तपते हर को हिमाचल का गिरिजा समेत स्तुति कर तिल पुष्पादि चढ़ाना। शिव की क्रोधाग्नि से कामदेव का जलना ...	१७४
३१	हिरण्यकशिपु, हिरण्याक्ष के मारे जाने पर दिति का कश्यप से पुत्र माँगना	१७७
३२	पुत्रार्थिनी पत्नी के लिये बज्राङ्गी तप, तारकासुर की उत्पत्ति ...	१७९
३३	तपस्या से तारकासुर का बर पा, देवताओं को जीतना ...	१८१
३४	तारक से दुःखी देवताओं का ब्रह्मा की शरण में जा शिव से पुत्र उपजाने को कहना	१८३
३५	इन्द्र की आज्ञा से सामग्री समेत काम का शिव को जीत कर उनके तीसरे नेत्र से भस्म होना। रति का विलाप	१८५
३६	इन्द्रादि देवताओं का शिव को शरण में जाना। रति को वरदान ...	१८८
३७	काम के जलने पर पार्वती की तपस्या और माता-पिता की चिन्ता ...	१८९
३८	तप में गिरिजा को भूतों का घेरना, नानारूप दिखलाना	१९३
३९	देवताओं द्वारा शिव की स्तुति ...	१९६
४०	स्तुति सुन शिव का सबसे आने का कारण पूछना। देवताओं द्वारा गिरिजा की तपस्या वर्णन	१९८
४१	सप्तर्षियों के जाने परवृद्ध ब्राह्मणवेषधारी शिव का गिरिजा से तपस्या का हाल पूछना और नारद की निन्दा करना	२०१
४२	गिरिजा का हठ और प्रेम देख शिवजी का प्रसन्न हो अपना मुख रूप दिखलाना	२०५
४३	पार्वती को वरदान दे शिवजी का भिक्षुकरूप हो हिमाचल के यहाँ का नाचना, गाना	२०७
४४	विधिप्रेषित देवताओं का शिव से गिरिजा के साथ व्याह करने को कहना	२०९
४५	शिवजी का विवाहार्थ सप्तर्षियों को हिमाचल के निकट भेजना ...	२११

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४६	सपत्नीक सप्तर्षियों का हिमाचल को समझाना। शिव के साथ गिरिजा का विवाह कथन	२१२
४७	सप्तर्षियों का शिवजी से हिमाचल का हाल कहना	२१५
४८	शिवजी की आज्ञा से देवताओं को बड़ी सजधज से बरात में चलना ...	२१६
४९	हिमाचल का भाई-बन्धुओं को न्योते में बुलाना, मण्डपाच्छादन कराना। शीशमहल में मैना	२१६
५०	बरात का आना जाना नारद के पास खड़ी सखों को निहराती हुई मैना का शिवागमन की वाट देखना ...	२१७
५१	गणों समेत शिवजी को देख कर मैना का मूर्च्छित होना, नारद को धिक्कारना	२१८
५२	नारद और सप्तर्षियों का मैना को समझाना। गिरिजा को शिव के बिना अन्य के साथ ब्याह न करने को कहना	२२०
५३	विष्णु का मैना को समझाना। शिव के साथ गिरिजा का ब्याह होने को कहना	२२१
५४	शिवजी का दिव्यरूप देख मैना को हर्षित होना	२२२
५५	शिवजी का द्वारचार व जनवास ...	२२३
५६	हिमाचल द्वारा विवाह रीतें ...	२२४
५७	मैना समेत हिमाचल का शिवजी को गिरिजा का हाथ पकड़ा देना ...	२२५
५८	भाँवर फिरते समय ब्रह्मा का मोहित होना व असंख्य वटुकों का पैदा होना	२२७
५९	शिव गिरिजा का अन्तःपुर में जाना व कामदेव की उत्पत्ति ...	२२७
६०	शिवजी का निवासस्थान में जाना ...	२३०
६१	हिमाचल से दायज पा सबका विदा होना	२३१
६२	शिवजी का विदा होना ...	२३२
६३	ब्राह्मणस्त्रियों द्वारा गिरिजा को पातिव्रत शिक्षा	२३३
६४	मैना समेत हिमाचल को समझाकर शिव-पार्वती का कैलास आना ...	२३७
६५	शिवविवाह की प्रशंसा करते हुए देवताओं का अपने-अपने लोक जाना...	२३८

चतुर्थ खण्ड

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	तारकवध में विलम्ब जान देवताओं का शिव के विहारस्थान में जाकर स्तुति करना और शिव का बाहर आना	२४०
२	कपोतरूपधारी अग्नि का शिववीर्य निगलना और क्रुद्ध हो गिरिजा का देवताओं को शाप देना, गंगा में छोड़ अग्नि के वीर्य से सरपत में बालक जन्म	२४२
३	विश्वामित्र द्वारा उस बालक का संस्कार होना व सांग देना ...	२४४
४	उस बालक की छःमाताओं से असंख्य-नामों का कीर्तन करना तथा स्कन्द-को विमान पर चढ़ा विष्णु आदिकों का कैलास जाना	२४८
५	बालक को देख शिव-शिवा को आनन्दित होना व देवताओं को सेनापति बनाने के लिए स्कन्द का अभिषेक करना	२५०
६	नारद ब्राह्मण का बकरा लेने को स्कन्द की स्तुति करना व उनका बकरे पर चढ़ना त्रैलोक्य घूम आकर यज्ञपूर्ति के लिए वर देना	२५१
७	स्कन्द को सेनापति बनाकर देवताओं का संग्रामभूमि से तारकासुर को युद्ध-संदेशा भेजना	२५३
८	विमान में चढ़े, सेना समेत तारकासुर का युद्ध में आना	२५६
९	गणयुक्त वीरभद्र और तारकासुर का युद्ध व देवता, दैत्यों से महायुद्ध होना	२५८
१०	देवताओं को चिन्तित देख षडानन का साँगी से तारकासुर का वध करना	२६१

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
११	क्रौंच की प्रार्थना से स्कन्द द्वारा बाणासुर वध व शिवलिङ्ग स्थापना ...	२६३
१२	शेष की प्रार्थना से स्कन्द का प्रलम्बासुर वध करना	२६४
१३	देवताओं समेत स्कन्द का कैलास जाना व शिव-शिवा द्वारा देवताओं की बिदाई	२६५
१४	शिव-शिवा के बिहार में देवताओं द्वारा विघ्न होना व कुपित गिरिजा को देवताओं को शाप देना ...	२६७
१५	गिरिजा को मनाय महादेव को सन्तानार्थ आपदाहर गणपति के व्रत को बतलाना	२६६
१६	गिरजा का गणपतिव्रत में चन्द्रमा को अर्घ्य देने का कारण शिव से पूछना	२७१
१७	गिरिजा का गणपतिव्रत करना व शिव से बिहार करते समय वृद्ध ब्राह्मणरूप गणपति का आय भिक्षा माँगना व शय्या पर बालक का उपजना	२७३
१८	बालक को गोद में ले शिव-शिवा का हर्षित होना व सप्तनीक ब्रह्मादिकों का आगमन व पुत्रोत्सव मनाना ...	२७४
१९	पुत्रोत्सव के समय शनैश्चर के देखने से गणपति का शीश उड़ जाना ...	२७७
२०	पार्वती का मूर्च्छित होना व शिवाज्ञा से विष्णुद्वारा हाथी का शीश ला लगवा देना व बालक का सजीव होना	२७६
२१	पार्वती का शनैश्चर को शाप देना व सूर्य, यमराज का कुपित होना तथा ब्रह्मा की आज्ञा से फिर उत्सव का होना	२८०
२२	गणपति की दूसरी उत्पत्ति ...	२८२
२३	गणपति का शिवगणों से युद्ध व गणों की हार होना	२८४
२४	देवताओं का गणपति से युद्ध कर परास्त होना	२८५
२५	शिव गणपति के युद्ध में विष्णु द्वारा गणपतिवध	२८६
२६	गणपतिवध सुन गिरिजा का सौ शक्तियों को उपजाना व विष्णु द्वारा पुनः गणेश का सजीव होना ...	२८७
२७	जीवित गणपति को देख गिरिजा को भाल में सिन्दूर लगा हर्षित होना व देवताओं को पूजाकर बिदा होना	२८६
२८	विवाहार्थ गणपति और स्कन्द का पृथ्वी की परिक्रमा करना व विश्वरूप की लड़कियों से गणेश का व्याह होना	२६०

पञ्चम खण्ड

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	तारकात्मज तडिन्माली-तारकक्ष व कमलाक्ष का महातप कर तीन पुर पाना	२६३
२	त्रिपुरासुर से व्याकुल देवताओं का ब्रह्मादिकों की शरण में जाना व विष्णु का उपाय करना	२६५
३	विष्णु से उत्पन्न मुण्डी का त्रिपुर को चेला बनाना	२६८
४	मुण्डी की आज्ञा से त्रिपुर का वैदिक धर्म त्याग नास्तिक होना ...	२६६
५	तीनों भाइयों का नास्तिक हो शिव-पूजादि का त्यागना	३०२
६	पुत्र को गोद में लेकर शिवजी का नृत्य गणपति से ताड़ित देव-दानव ब्रह्मा-विष्णु का वत्सरूप में अमृतपान ...	३०२
७	विश्वकर्मा के बनाये हुए रथ पर चढ़ शिवजी का त्रिपुर विनाशार्थ जाना	३०४
८	शिवका बाण चलाय त्रिपुर को भस्म करना व देवताओं द्वारा शिवस्तुति	३०५
९	शिष्यों समेत अर्हण का शिव को प्रणाम करना व विष्णुजी की आज्ञा से मरुस्थल में बसना	३०६

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१०	शिवभक्ति से मय दानव का जलने से बच जाना व दैत्यों का आचार्य होना	३०७
११	इन्द्र को शिवदर्शन की बाट देखना व अपूर्वरूप से शिव के ऊपर बज्र छोड़ने से नीलकण्ठ हो अपने तेज को समुद्र में फेंक देना	३०८
१२	उस तेज से जलन्धर का उपजना, जालन्धरी पुरी निर्माण व जलन्धर का ब्याह होना	३१०
१३	जलन्धर का शीशरहित राहु को देख शुक्र से कारण जानना ...	३१२
१४	देव-जलन्धर युद्ध, जलन्धर का द्रोणाचल को समुद्र फेंकवाना	३१४
१५	विष्णुजी का जलन्धर से युद्ध करके बरद्वारा लक्ष्मी समेत उसके घर रहना	३१६
१६	तीनों लोक जीतकर जलन्धर का देवों के बदले दैत्य नियत करना ...	३१८
१७	कुपित जलन्धर का कैलास पर चढ़ाई करना	३२१
१८	शिवगणों व दैत्यों का महायुद्ध, नन्दी से दैत्य सेना का पराजित होना	३२३
१९	सेना को दुःखित देकर जलन्धर का गणों के सामने जाना	३२५
२०	जलन्धर का शंकर से युद्ध में माया करना	३२७
२१	विष्णुद्वारा वृन्दा का पातिव्रत भंग	३२९
२२	शिवद्वारा जलन्धर बध ...	३३१
२३	देवताओं का शिव से विष्णु का हाल कहना उनका गिरिजा की शरण जाओ कहकर अन्तर्धान होना	३३४
२४	नारद को सुदर्शन चक्र का हाल पूछना, दानवपुत्रों का उपद्रव मचाना	३३६
२५	दम्भ का विष्णु की तपस्या कर शङ्खचूड़ नामी पुत्र पाना ...	३३७
२६	शुक्र की आज्ञा से शङ्खचूड़ का राजा होना व देवताओं को पराजित करना	३४०
२७	श्रीराधिकाजी के शाप से सुदामा का शङ्खचूड़ होना व सब लोकों का वर्णन	३४१
२८	शङ्खचूड़ के वधार्थ देवताओं का शिव की शरण में जाना	३४४
२९	श्रीकृष्ण-राधा का शिवदर्शनार्थ आना व शिव का शङ्खचूड़नाशार्थ देवताओं को कैलास भेजना	३४४
३०	शङ्खचूड़वधार्थ शिव का उस दैत्य को सन्देशा भेजना	३४५
३१	सगण शिव की शङ्खचूड़ पर चढ़ाई ...	३४७
३२	शङ्खचूड़ का रानी से युद्ध की सम्मति लेना	३४७
३३	शङ्खचूड़ का दूत द्वारा शिव से सम्मति लेना व शिव का देवबिरोध से निषेध करना	३४८
३४	दूत का वचन सुन शङ्खचूड़ का शिव पर चढ़ाई करना	३५०
३५	शिव की आज्ञा से वीरभद्र का शङ्खचूड़ से युद्ध	३५१
३६	काली का शङ्खचूड़ से युद्ध कर शिव के निकट जाना	३५३
३७	गणों समेत शिव और शङ्खचूड़ का महायुद्ध	३५४
३८	शङ्खचूड़ का शिव से युद्ध व शङ्खचूड़-वध	३५५
३९	शङ्खचूड़ का रूप धार विष्णु का तुलसी के घर जाना व विजय का डङ्का बजवाना	३५७
४०	दितिज अन्धकासुर का देवताओं से विजय पाना	३६०
४१	शरणागत इन्द्र को देख कश्यप का अन्धकासुर को समझाना ...	३६२
४२	अन्धकासुर की तपस्या से भयभीत देवताओं का शिव की शरण में जाना	३६३

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४३	सदेव ब्रह्मा का विष्णुजी से अन्धकासुर का अन्याय कहना	३६५
४४	डरे हुए देवताओं व ब्राह्मणों का अन्धक को शाप देना	३६७
४५	मन्दराचल पर अन्धक से डरकर शिव की शरण जाना	३६८
४६	सेनानी हो नन्दी का दैत्यों से महाघोर युद्ध व शिव का शुक्र को पेट में डाल लेना	३७०
४७	पराजित सेना को देख अन्धकासुर का संग्राम में आना व शुक्र का शिवलिङ्ग के छिद्र में बैठकर स्तुति करना	३७१
४८	अन्धक की स्तुति से प्रसन्न शिव का वर देना	३७३
४९	बाणासुर का ताण्डव नृत्य और शिव-शिवा का विहार	३७३
५०	बाणासुर का देवताओं को जीत शिव के समीप जाना व शिव का हजार भुजा छेदनेवाला पुरुष बतलाना	३७५
५१	ऊषा का चरित्र वर्णन ...	३७७
५२	चित्रलेखा का अनिरुद्ध को लाना व श्रीकृष्णादि का शोणितपुर को जाना	३८०
५३	श्रीकृष्णजी का चक्र से बाणासुर की भुजाएँ काटना	३८३
५४	सवधू अनिरुद्ध को ले श्रीकृष्णादिकों का द्वारका जाना	३८४
५५	शिव द्वारा गजासुर का वध व जगदम्बाजी का महिषासुर को मारना	३८६
५६	दुन्दुभी का काशी में जा ब्राह्मणों का वध करना व शिव का दुन्दुभी को मारना	३८९
५७	उत्पल, विदल दोनों दैत्यों का तप कर ब्रह्मा से वर पाना	३९०
	छठा खण्ड	
१	गिरिजा समेत शिव का काशी में जा विश्वनाथ का पूजन करना ...	३९३
२	गिरिजा समेत शिव का आनन्दवन देखने को जाना	३९६
३	रत्नभद्र मुनि नाम यक्षराज का शिव की भक्ति से मुक्ति पाना... ...	३९८
४	सन्तानार्थी पूर्णभद्र का शिव की स्तुति करना व वर पाना	४००
५	शिवाज्ञा से जगदम्बा का विन्ध्य-वासिनी हो दुर्गनाम दैत्य का वध करना	४०२
६	रिपुञ्जय दिवोदास राजा से व्यथित ब्रह्मादि देवताओं का विष्णु व शिव के पास जाना	४०५
७	शिवजी का दिवोदास राजा को राज्य से निकालने के लिए योगिनियों को भेजना	४०६
८	योगिनीगणों के न लौटने से चिन्तित शिवजी का सूर्य को काशी में भेजना	४११
९	सूर्य के न लौटने से शिवजी का ब्रह्मा को भेजना	४१५
१०	ब्रह्मा के आने में विलम्ब होने से चिन्तित शिव का शंकुकर्णादि गणों को भेजना	४१७
११	गणों के न लौटने से काशी की बड़ाई करते हुए शिव का गणपति को भेजना	४२१
१२	गणेश के भी न आने पर विष्णु को भेजना व विष्णु से पूजित मूर्ति का आदि केशव नाम होना ...	४२५
१३	चेला व गुरु बन गरुड़ व विष्णु का काशी में बौद्धधर्म का उपदेश देना	४२७
१४	गणपति की आज्ञा से राजा दिवोदास का विप्ररूप विष्णुजी से उपदेश सुनना	४३०
१५	विष्णुजी के उपदेश से राज्य छोड़ दिवोदास का शिवपुर में जाना ...	४३३
१६	गरुड़ द्वारा विष्णुजी का संदेशा सुन शिव-शिवा का हर्षित होना ...	४३५

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय विषय	पृष्ठ
१७ गरुड़ का आकार विष्णुजी से शिवागमन कहना	४३६
१८ आठ बैलवाले रथ को ला नन्दीश्वर का शिवजी से सवार होने को कहना व देवताओं का जय शब्द करना	४३८
१९ काशी में आये हुए शिव को देखकर जैगीषव्य मुनि का आय चरणों में शीश नवाना	४४०
२० शिवागमन सुन ब्राह्मणों का दर्शनार्थ जाना	४४२
२१ शिवजी का विश्वकर्मा को शिवनगरी रचने के लिए आज्ञा देना ...	४४५
२२ ढुण्ढन-मुण्डन गणों को प्रभात उठकर नए दो शिवालयों का देखना ...	४४८
२३ शिवजी का काशी में भ्रमण करना व उनका अभिषेक होना ...	४५०
२४ देवताओं को वरदान दे काशी की बड़ाई कर शिवजी के मुक्तिमण्डप की गाथा कहना	४५१
२५ शृंगारमण्डप में गिरिजा समेत शिव का विराजमान होना ...	४५२

उत्तरार्द्ध

सातवां खण्ड

अध्याय विषय	पृष्ठ
१ निर्गुणरूप सदाशिव के सगुणरूप का कीर्तन व रुद्रादि अवतारों का वर्णन	४५५
२ कैलासवासी शिवजी का निरूपण करना	४६०
३ सदाशिव के पाँच अवतारों का वर्णन	४६३
४ शर्व आदि आठ अववारों का वर्णन	४६५
५ व्यासावतार का वर्णन ...	४६७
६-७ नारद से ब्रह्मा का काल पड़ना व राजा दिवोदास का वर पाना आदि कथा को कहना	४७०
८ शिवजी के अट्ठाइस अवतारों का वर्णन	४७१
९ ऋतञ्जय व्यास का वेदों के विभाग कर पुराणों को प्रकट करना ...	४७३
१० अट्ठाईसवें द्वापर में विष्णुजी को व्यासजी का अवतार लेना ...	४७५
११ शिलादिमुनिसूनु नन्दिकेश्वर अवतार का निरूपण	४७८
१२ शिलादिमुनि का उस बालक का नन्दी नाम रखना	४७९
१३ भैरव का अवतार	४८०
१४ वेदों के कहे हुए परब्रह्म पर ब्रह्मा व विष्णु का विवाद होना ...	४८३
१५ झगड़ा करते हुए ब्रह्मा व विष्णु के मध्य में शिवजी का ज्योतिःस्वरूप से प्रकट होना	४८५
१६ भैरव को ब्रह्महत्या लगना ...	४८८
१७ भैरव के पीछे जाती हुई ब्रह्महत्या को देखकर विष्णु का उसे भैरव विमुक्तार्थ वर देने को कहना ...	४८९
१८ वीरभद्रावतार का निरूपण ...	४९१
१९ वीरभद्र का यज्ञस्थान को जला देना	४९३
२० विष्णुजी के हाथ से चक्र का न चलना पर्वत के समान खड़े होना ...	४९५
२१ शरभ अवतार का वर्णन ...	४९६
२२ महादेव की आज्ञा से वीरभद्र का नरसिंहावतार के क्रोध को शान्त करना	४९९
२३ यक्षावतार का वर्णन	५०३
२४ ग्यारह रुद्रावतार का निरूपण ...	५०५
२५ अत्रिमुनि के यहाँ दुर्वासावतार का होना	५०६
२६ दुर्वासा का रामकृष्ण की परीक्षा लेकर वर देना	५०९
२७ ग्रहपति के अवतार का वर्णन ...	५११
२८ शिव के वरदान से अच्छे समय सचक्षुमती के गर्भ रहना ...	५१३
२९ वृषेश्वर शिवजी के अवतार का वर्णन	५१६
३० पिप्पलाद अवतार का वर्णन ...	५१८
३१ महेश अवतार का वर्णन ...	५२१
३२ अवधूतपति अवतार का वर्णन ...	५२१

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
३३	श्रीहनुमानजी के अवतार का वर्णन	५२३
३४	रामावतार का वर्णन ...	५२६
३५	रामचन्द्र अगस्त्यसंवाद ...	५२७
३६	रामचन्द्र का अगस्त्य के चरणों में गिरना	५३०
३७	रामचन्द्र का गोदावरी तट पर शिवलिङ्ग की स्थापना करना ...	५३१
३८	रामचन्द्र का शिवचरणों में वन्दना करना	५३३
३९	शिवजी का रामचन्द्र को गीता का ज्ञान देना	५३५
४०	अञ्जनी का पर्वत के शिखर से पवनपूत को ढकेल देना ...	५३७
४१	विष्णुजी का हनुमान् को वर देना ...	५३८
४२	पवन का हनुमान को गोद में लेकर अञ्जनी के पास जाना ...	५४०
४३	माता-पिता की आज्ञा से हनुमान का पम्पापुर जाना	५४१
४४	वेश्यानाथ अवतार का वर्णन ...	५४३
४५	द्विजेश अवतार का वर्णन ...	५४५
४६	जितनाथ अवतार का वर्णन ...	५४८
४७	कृष्णदास अवतार का वर्णन ...	५४९
४८	भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन ...	५५१
४९	नरजरेश्वर अवतार का वर्णन ...	५५४
५०	जटाधारी अवतार का वर्णन ...	५५७
५१	नर्तकनट अवतार व द्विजावतार का वर्णन	५५७
५२	अश्वत्थामा अवतार का वर्णन ...	५५८
५३	किरातेश्वर शिवावतार ...	५६०
५४	पाण्डवों का द्वैतवन में जाना ...	५६२
५५	व्यासजी के उपदेश से अर्जुन का तेजस्वी होना ...	५६४
५६	तप से तुष्ट शिवजी का अर्जुन के निकट जाना	५६६
५७	शिवसेना देख अर्जुन का धनुर्बाण ले जाना	५६८
५८	द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन ...	५७०

आठवाँ खण्ड

अध्याय	विषय	पृष्ठ
१	लिङ्गों की महिमा	५७३
२	मत्तगयन्द लिङ्ग का वर्णन ...	५७५
३	अत्रीश शिवलिङ्ग की महिमा	५७७
४	नर्मदा तट पर प्रसिद्ध लिङ्ग ...	५७९
५	रेवा के किनारे शिवलिङ्गों का कीर्तन	५८२
६	रेवानदी के तट पर ब्रह्मा-विष्णु से देवताओं का अविनाशी पुरुष को पूछना	५८४
७	ब्रह्मा-विष्णु के बीच लिङ्गरूप शिव का प्रकट होना	५८५
८	विष्णुजी के अहंकार का दूर होना ...	५८६
९	शिव का क्रोधित हो ब्रह्मा को शाप देना	५८७
१०	पश्चिमदेश के शिवलिङ्गों का वर्णन	५८९
११	मित्रसह व महाबल शिवलिङ्ग का चरित्र	५९१
१२	गौतमर्षि व राजा का संवाद ...	५९३
१३	राजा का गौतम से मार्ग में देखी बात पूछना	५९५
१४	उत्तर के शिवलिङ्गों का वर्णन ...	५९७
१५	पापहारी लिङ्गों का निरूपण ...	५९९
१६	शिवलिङ्ग पूजने का प्रचार ...	६०१
१७	अन्धकेश्वर शिवलिङ्ग की कथा ...	६०३
१८	देवल का वृत्तान्त	६०४
१९	बारहों ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन ...	६०६
२०	चन्द्रमा का प्रभासक्षेत्र में शिवलिङ्ग-स्थापना	६०७
२१	मल्लिकार्जुन शिवलिङ्ग का वर्णन ...	६०९
२२	तीसरे ज्योतिर्लिङ्ग की महिमा ...	६१०
२३	चन्द्रसेन का महाकाल की पूजा कर चिन्तामणि पाना	६१२
२४	हनुमान का महाकाल की महिमा कहना	६१४
२५	चौथे ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन ...	६१६
२६	शिव को विन्ध्याचल का प्रणाम करना	६१७
२७	स्वायम्भुव राजा द्वारा धर्म वर्णन ...	६१९
२८	कामरूप देश में शिव उत्पत्ति	६२१
२९	भीम का कुपित हो तप करना ...	६२२
३०	भीम का शिवभक्ति कामरूपदेशाधिप को सताना ...	६२३
३१	शिव से उपजी ज्वाला से भीम का भस्म हो जाना	६२५
३२	विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग वर्णन ...	६२६
३३	निर्गुणरूप ज्ञान में कठिनता ...	६३०
३४	विश्वनाथ व काशी का चरित्र ...	६३२
३५	काशीदर्शनार्थ स्त्री का कृपण पति से संवाद	६३२
३६	वन में कृपण व शैव का समागम ...	६३४
३७	शैव का कृपण को शिक्षा देना ...	६३५
३८	काशीपुरी के प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन	६३६
३९	त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन	६३९
४०	गौतम का बातों का प्रसिद्ध होना ...	६४०
४१	गौतम की विनय से तुष्ट शिवजी का वर देना ...	६४३
४२	गौतमी गङ्गा की प्रधानता वर्णन ...	६४५
४३	वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन ...	६४६

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अध्याय	विषय	पृष्ठ
४४	शिवजी का माया प्रकट करना ...	६४८
४५	शिवलिङ्ग व रावण का निरूपण ...	६५०
४६	कैलास में रावण का तप ...	६५१
४७	नागेश ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र ...	६५४
४८	जय-विजय को शाप देना ...	६५६
४९	श्रीरामचन्द्र का शिवाराधन ...	६५७
५०	घुस्मेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन ...	६५८
५१	घुस्मा के पुत्र होने से सुदेहा को दुःख होना ...	६६०
	नवाँ खण्ड	
१	नाममहिमा, भस्ममाहात्म्य, रुद्राक्ष प्रशंसा ...	६६२
२	सुमति नामक स्त्री का चरित्र ...	६६४
३	इन्द्रसेन राजा का चरित्र ...	६६६
४	असमचित्त ब्राह्मणइतिहास ...	६६७
५	पञ्चाक्षरी मंत्र का माहात्म्य ...	६७०
६	भस्म का माहात्म्य व महिमा ...	६७४
७	वामदेव शिवयोगी इतिहास ...	६७८
८	वामदेवभणित भस्म का प्रभाव ...	६८१
९	वेदज्ञ गुरु की शिक्षा से शिव की प्रसन्नता ...	६८३
१०	दशारण्य के राजा वज्रवाहु का चरित्र ...	६८६
११	रुद्राक्ष का माहात्म्य ...	६८८
१२	रुद्राक्ष धारणक्रम वर्णन ...	६९३
१३	काश्मीराधिमात्मज सुधर्म का इतिहास ...	६९६
१४	शिव कीर्तन का श्रवण व मनन ...	६९९
१५	शिव वीर लिङ्ग पूजन का प्रश्न ...	७०२
१६	देव स्तुति से सदा शिव का प्रसन्न होना ...	७०४
१७	विष्णु पर प्रसन्न व ब्रह्मा पर कुपित होना ...	७०५
	दसवाँ खण्ड	
१	शिवजी के द्वादश व्रतों का निरूपण ...	७०८
२	प्रातःकाल शिवालय में जाना ...	७१०
३	शिवरात्रिव्रतोद्यापन विधि ...	७१३
४	शिवरात्रिव्रत की कथा ...	७१४
५	यज्ञदत्तब्राह्मण की शिवभक्ति ...	७१६
६	सौमिणि ब्राह्मण कन्या का चरित्र ...	७२२
७	शिवरात्रिव्रत से मित्रसह का बड़ा पद पाना ...	७२३
८	राजा विमार्षण का चरित्र ...	७२५
९	प्रदोषव्रत का माहात्म्य ...	७२८
१०	शिवभक्त चन्द्रसेन राजा की शरण में शत्रुओं का आना ...	७३०
११	शिवप्रिय त्रयोदशी का व्रत ...	७३१
१२	शाण्डिल्य का ब्राह्मणी को उपदेश ...	७३३
१३	इन्द्र व वृत्रासुर युद्ध कथा ...	७३५
१४	एकादशीव्रत का माहात्म्य ...	७३९
१५	सोमव्रत तुल्य अष्टमीव्रत माहात्म्य ...	७४२
१६	ब्रह्मा के पाँचवें शीश का भङ्ग होना ...	७४५
१७	सोमप्रदोषव्रत का माहात्म्य ...	७४६
१८	नैषधदेश के राजा नल का चरित्र ...	७४९
१९	चित्राङ्गद राजा का चरित्र ...	७५०
२०	सीमन्तिनी रानी का चरित्र ...	७५२
२१	देवमित्र व सारस्वत के पुत्रों का चरित्र ...	७५४
२२	वार्षिक व्रतों का वर्णन ...	७५७
२३	अन्धमुनि व शारदा का चरित्र ...	७५९
२४	शारदा के पुत्र उपजना ...	७६१
	ग्यारहवाँ खण्ड	
१	सगुण निर्गुण शिवरूप वर्णन ...	७६४
२	अनल का वृत्तान्त ...	७६९
३	कण्व महापापी का वृत्तान्त ...	७७०
४	शची की बातें सुन इन्द्र का लज्जित होना ...	७७२
५	तलातललोक का वृत्तान्त ...	७७४
६	पूर्वोक्त सात लोकों का मान ...	७७७
७	नरकराजों का निरूपण ...	७७८
८	भूलोक, दीप, सागरों का वृत्तान्त ...	७८३
९	सर्वखण्डनिवासी शिवभक्तों का चरित्र ...	७८४
१०	जम्बूद्वीप व उपद्वीपों का वर्णन ...	७८८
११	भुवर्लोक का निरूपण ...	७९१
१२	स्वर्लोक के मन्दिरों की प्रशंसा ...	७९५
१३	चन्द्रलोक का वर्णन ...	७९७
१४	शुक्रलोक का वर्णन ...	८००
१५	ऋषिलोक का वर्णन ...	८०५
१६	महर्लोक का वर्णन ...	८०८
१७	मन्वन्तरों का वृत्तान्त ...	८१२
१८	वैवस्वत मन्वन्तर का वृत्तान्त ...	८१४
१९	श्राद्धदेव के वंश का वर्णन ...	८१७
२०	इक्ष्वाकुवंश का वर्णन ...	८१९
२१	राजा सगर की उत्पत्ति ...	८२३
२२	सगर के साठ हजार पुत्रों की उत्पत्ति	८२६
२३	राजा दिलीप के धर्मों का निरूपण ...	८२७
२४	श्राद्धदेव का सर्व वृत्तान्त ...	८२९
२५	भरद्वाज के पुत्रों का विश्वामित्र के घर में उपजना ...	८३२
२६	ब्राह्मण के पुत्रों का ब्रह्मदत्त राजा से मिलना ...	८३६

इति विषयानुक्रमणिका

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

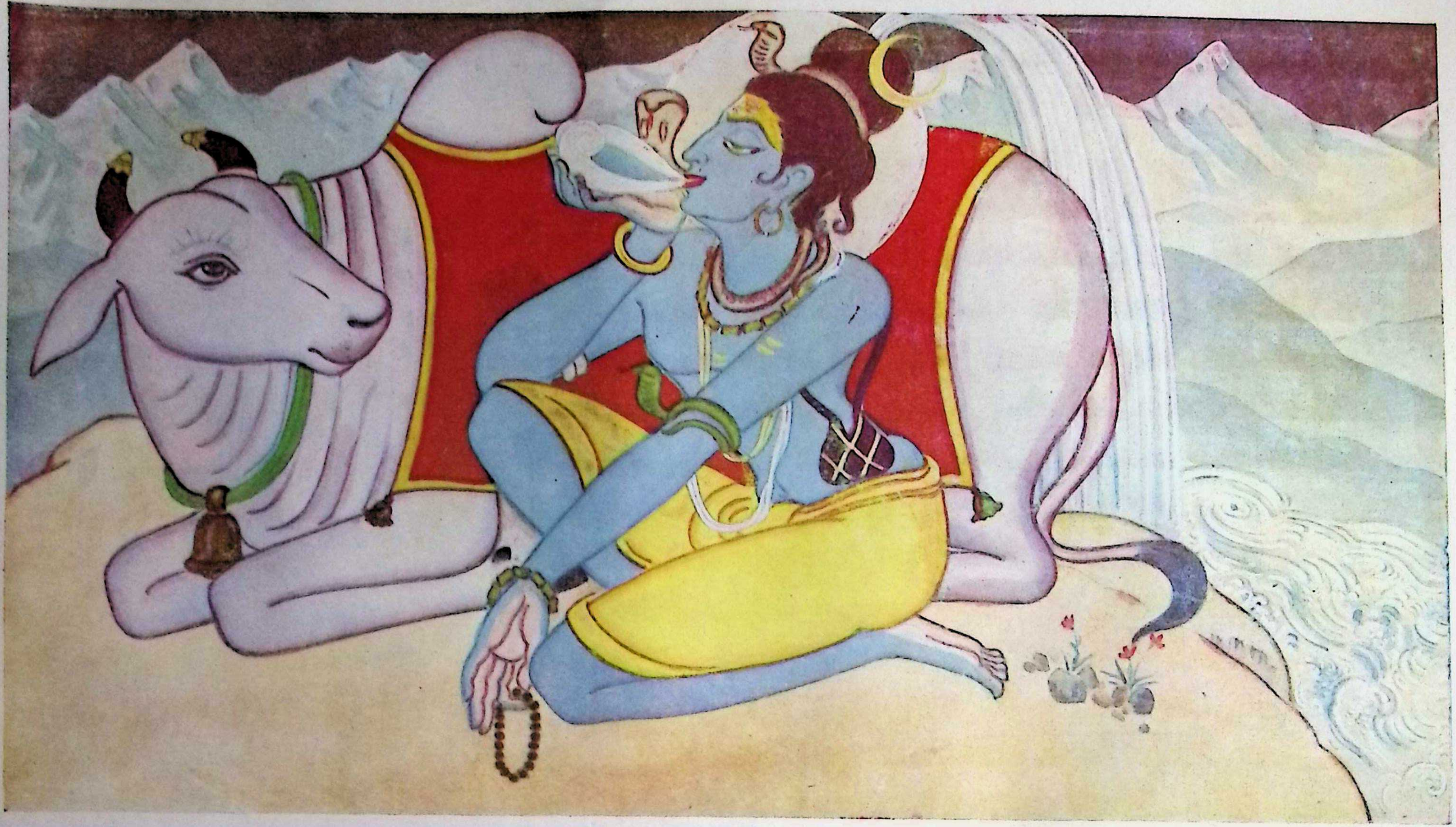

विष-पान

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिवपुराण भाषा

—:o:—

पूर्वार्द्ध

प्रथम खण्ड

पहिला अध्याय ।

एक समय श्रीसूतजी, महामुनि श्रीमद्वेदव्यासजी के सत्शिष्य, जिन्होंने अपने गुरु की सेवा से बड़ाई पाई, नैमिषारण्य के वन में श्रीसदाशिवजी महाराज की तपस्या में लगे थे। शिवजी महाराज के गुणकीतन अपने मन में प्रति समय ध्यान करके वे मग्न रहा करते थे। संयोग से शौनकादि अन्य मुनीश्वरों समेत सूतजी के सामने आये और प्रश्न किया कि आप सदाशिवजी के गुणकीर्तन बखान करें, क्योंकि हम लोग अथाह संसारसागर में डूबते हैं, हमारे बड़े भाग्य से आप मिले हैं। थोड़े समय में वह युग आनेवाला है जिसमें पाप अधिक होंगे और पुराने धर्म का नाश होकर सब लोग उसको छोड़कर कुमार्गी हो जावेंगे। मनुष्य आप निन्दित होकर दूसरों की निन्दा करनेवाले, अस्तव्यस्त, झूठे और लोभी होकर तीनों समय की संध्या से और व्रत से भी हीन होकर, केवल संसारी-कार्य में प्रवृत्त रहकर विचरेंगे। कलियुगवासी महाहंकारी होकर अपने नित्यकर्म से हीन, जप-तप, यज्ञ से विवर्जित, महामूर्ख अति वितण्डावाद

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करनेवाले महानीच, यम-संयम जो योग्य के अङ्ग हैं, उनसे अज्ञानी होकर, व्यभिचारादि दुष्टकर्मों में फँसे रहकर, दूसरों की बुराई करने में चतुर होंगे और महादुःखी निर्बुद्धि अन्यायी गर्ववान् होकर सत्यमार्ग से विमुख अप्रीतिमान् होंगे। चारों वर्णों की यह दशा हो जावेगी कि ब्राह्मण खेती करेंगे। उनको छलछिद्र के सिवाय अपने-धर्म से अज्ञानता होगी। क्षत्रिय भी अपने सत्यधर्मों को त्याग करके युद्ध से मुख मोड़कर भागेंगे, चोरी में अति चातुर्य दिखलावेंगे और शूद्रों के सदृश होकर प्रसन्न रहेंगे। गऊ की रक्षा न करके जो शत्रु बेहथियार होंगे उनसे युद्ध करेंगे और व्यभिचार में पशुओं की भाँति होकर स्त्रियों के अधीन रहकर नाना प्रकार के दुःख और क्लेश उठावेंगे। जुआ और मद्यपान से अपने धर्म को नष्ट कर डालेंगे। पशुओं के घात और दुःख देने से तृप्त न होकर ब्राह्मणों से अपने को बड़ा जानकर नरक में जावेंगे, क्योंकि जो मनुष्य अपने धर्म को नष्ट करता है, वह नरक में जाता है। इस प्रकार क्षत्रिय अति अन्यायी और दुःख देनेवाले हो जावेंगे। इसी प्रकार वैश्य अपने अच्छे धर्म को छोड़कर पापों से धन संचित कर अपने उत्तम मार्ग को खो देवेंगे। अपने देवता, गुरु और गऊ की बड़ाई का विचार न करके बड़े कृपण होकर अपने सब कुटुम्ब सहित दुःख की अग्नि में जला करेंगे। मुट्ठी बंद करके न खोलेंगे अर्थात् ब्राह्मण आदि को भोजन भी न देंगे। पर प्रकट के शील से अपने को अति चतुर और बुद्धिमान् समझकर निरर्थक वचन कहेंगे। लोभ, क्रोध और अहम्भावरूपी सर्प उनको अपने अधीन करके संसाररूपी अथाह सागर में डाला करेगा। शूद्र भी अपने धर्म को छोड़कर ब्राह्मणों की रीति अङ्गीकार करेंगे। इन्हीं शूद्रों के ऐसे कर्म से ब्राह्मणों का तेज हत हो जावेगी। सम्पूर्ण जीवधारियों की आयु कम हो जावेगी। वे शालग्राम की पूजा करके ब्राह्मणों की निन्दा करेंगे। दुष्ट मन के धनवान् और अपकर्मी होकर दूसरों की निन्दा करके अपने धर्म को भूल जावेंगे। ब्राह्मणों से विमुख होकर हर समय ब्राह्मणों की निन्दा में लगे रहेंगे। भिक्षुक चाहे उच्चस्वर से भीख माँगेंगे तो भी न देंगे। जो मनुष्य कि वर्णसंकर होंगे व अपने को उच्चजाति के समझेंगे। स्त्रियाँ भी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत ही दुष्प्रकृति होकर अपने पति की सेवा से विमुख वरन् दुश्शीलता के साथ अपने पतियों को सहस्र अवगुणों से प्रसिद्ध करेंगी। व्यभिचारी पुरुषों में मन लगाकर उनके साथ कटाक्ष और विहारादि कर आपही उनकी प्रीति में फँस जावेंगी। अपने मन को अन्य पुरुष की प्रीति में फँसाकर अपने आपको जलावेंगी। अपने प्रियतम की जाँघ पर बैठकर उसके शरीर को शीतल करेंगी। लड़के भी माता-पिता के साथ प्रीति न रक्खेंगे। वितण्डावाद से मत को झूँठाकर आप अपने गुरु से भी विवाद करेंगे। लोग विद्या न पढ़ेंगे जो दूसरे देश में भी सहायक होती है। ऐसे दुष्टमन पापी अपने माता की निन्दा से भी न हटेंगे। उनके शरीर रोगों से क्षीण और दुःखी रहेंगे। माला, जप, तप और शील मनुष्यों में न रहेगा। ऐसे समय में दिन-दिन सत्यता और शौच का अभाव हो जावेगा। स्त्री को केवल अपनी इच्छा के पूर्ण करने और प्रसंग के लिये समझकर और ब्राह्मण को जनेव के कारण बड़ा समझेंगे। तपस्वी को छल से बड़ा जानकर स्नान और शौच को मुख्य करके पुत्रकी इच्छा आदि के लिये विचार करेंगे। कलियुग में सुन्दरता केवल बाल का सँवारना होगा। अपना पेट भर लेना भी अच्छा काम समझा जावेगा। दान केवल यश कीर्ति के लिये समझा जावेगा और अपने कुटुम्ब के पालने को बुद्धिमानी जानेंगे। छल-छिद्र की वार्त्ता बुद्धिमानी और चतुरता समझी जावेगी। सब कामों से अधिक कठिन किसी तीर्थ का मार्ग चलना जाना जावेगी। ऐसे समय में हर छोटे बड़ों को आपत्ति पड़ेगी। तेज और बल की कम तथा जीविका और आयुष की अधिक चिन्ता होगी। सिवाय इसके सबसे अधिक धर्म संसार में लोभ समझा जावेगा। न तो मन में किसी पर निश्चय होगा, न कुछ अच्छे बुरे का विवेक रहेगा। तो कहिए कि ऐसे समय में कलियुगवासी क्योंकर मुक्त होंगे? अपने पाप और हजारों दुष्कर्मों को जलाकर सत्यमार्ग क्योंकर प्राप्त करेंगे? अति उत्तम इच्छा अर्थात् मुक्ति उनको क्योंकर मिलेगी? हे सूतजी! यह चिन्ता मेरे मन से दूर नहीं होती। सो आप कोई ऐसी युक्ति बतावें जिससे लोग प्रसन्न हों। क्योंकि आप केवल लोगों के उपकार के लिये जीते हैं। आप चिन्ता दूर करके प्रसन्नता उप-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जानेवाले हैं। हम इसी चिन्ता में डूबते थे कि आपको देखा। आप कृपा करके यह बात कहिए जिससे चिन्ता दूर होकर हर्ष प्राप्त हो। जो थोड़ी प्रीति करने में बड़ा फल दे। तुम अधिक प्रीति करने योग्य हो। रीति है कि गुरु दयावान् होते हैं। वे छिपी हुई बात को भी शिष्य से कह देते हैं। आपके बराबर संसार में संसारी लोगों का हित चाहनेवाला कौन है। आपने व्यासजी की सेवा बहुत की है और पापियों को पाप के समुद्र से पार उतारा है। व्यासजी ने बहुत कृपा करके सब पुराण आपको प्रदान किये हैं। शौनक के ये वचन सुनकर सूतजी अति प्रसन्न हुये और शिवजी के चरणों में अधिक ध्यान करके कुछ मुख से न कहा। फिर थोड़ी देर के पीछे प्रेम से अश्रुपात करते हुये बोले।

हे शौनक और अन्य मुनीश्वर लोगों! तुम लोग ज्ञानी और संसार के हित चाहनेवाले हो। चाहे सब लोगों की वह बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो कि जो संसारी लोगों के हित से सम्बन्धित है, पर आपने यह प्रश्न केवल सब-लोगों के उपकार के लिये किया है। यह अटन आपका संसारी लोगों के उपकार के लिये प्रकट है। अब हम तुम्हारी प्रीति से संसार की भलाई के लिये शिवजी की परम स्तुति, जिससे कलियुग के दुःख दूर हो जावें और मुक्ति प्राप्त हो, कहते हैं। यह शिवजी का वर्णन कलियुग के पापों को दूर करके प्रसन्नता देता है। तीनों लोकों में अतिपवित्र और मनोहर है। जो मनुष्य शिवजी की प्रीति में लग गया, वह सदा प्रसन्न हैं। वह मनुष्य सन्तानवान् और धनसम्पन्न होता है, वरन् उसके कोटि-कोटि पाप नष्ट हो जाते हैं। इसी कारण जो लोग बुद्धिमान् हैं, वे सदाशिव की तपस्या करके सम्पूर्ण पदार्थ पाते हैं। करोड़ों जन्म के अच्छे काम अपने आप प्रकट हुये हैं। ऐसा शिव का वर्णन करके बहुत से परम पद पा चुके हैं वरन् बहुधा पापी जहाँ शिव रहते हैं, वहाँ तक पहुँच गये हैं। जो लोग कि भाल में भस्म लगाकर शिव का नाम लेते हैं वे बेप्रयास शिवलोक में पहुँच जाते हैं। वहाँ शोक और दुःख कोई नहीं। जो शिवको नमस्कार करते हैं, वे बहुत सन्तान पाते हैं। ब्राह्मणों की पृथ्वी छीननेवाले, हिंसक, ब्राह्मणों के मारनेवाले, मद्यप, व्रतहीन और व्रतभङ्ग करनेवाले लोग

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भी शिव का नाम लेकर नरक के दुःख से छूट जाते हैं। इससे उचित है कि संसार को दुःखरूप समझकर शिव में प्रीति लगावे। जिन लोगों ने संसार का मोह त्याग दिया है, वे और अच्छे वेदपाठी उसे त्रिशूलपाणि महाराज की स्तुति से अपना काल व्यतीत करते हैं। इसलिये जो मनुष्य कलियुग के दुःख से छूटना चाहे, वह शिव का यश गावे। सिवाय इसके और कोई युक्ति नहीं है। हे शौनक! वेदों से भी शिव की स्तुति नहीं हो सकती। शिवजी को सबसे बड़ा जानकर ध्यान न छोड़ना चाहिये। जिस तरह से कमल के पत्तों पर पानी की बूँद नहीं ठहरती, उसी तरह शिव के भक्तों पर कलियुग के सब पाप प्रभाव नहीं करते। यह सुनकर शौनक दोनों हाथ जोड़कर सूतजी के सामने बैठ गये। बड़ाई और प्रशंसा करने के उपरान्त सब ऋषीश्वरों ने सम्मति करके यह प्रश्न किया कि शिव निर्गुण कहलाते हैं पर सगुण किस तरह हो गये। उनके तत्त्व का जाननेवाला कोई नहीं है। शिव ने पहले संसार को क्योंकर उपजाया, फिर आप क्यों-कर उपजे, प्रलय में संसार का नाश करके आप किस तरह से रहते हैं, वे किस बात में प्रसन्न होते हैं, प्रसन्न होकर क्या देते हैं, वे किस तरह अवतार लेकर कौन कार्य करते हैं, अपने भक्तों के अधीन होकर किस तरह उनके दुःख दूर कर देते हैं, यह सब वर्णन कीजिये। और जो कुछ कि उचित हो सब आप वर्णन कीजिये। क्योंकर आप व्यासजी की कृपा से गत, वर्तमान और भविष्य के वृत्तान्त को जानते हैं। हमारे माता, पिता, बन्धु, मित्र और विद्या सब कुछ आप हैं। संसार में आपसे अधिक विद्वान् और रीति पर चलनेवाला कौन है, जिसने सब व्यासजी के मुख से सुना। यह बात प्रकट है कि भाग्य बिना अच्छे ब्रह्मज्ञानियों से भेंट नहीं होती और न शोक व मोह दूर होता है। हम उसी को बड़ा भाग्यवान् जानते हैं जो शिवजी की कथा कीर्तन से सम्बन्ध रक्खे।

दूसरा अध्याय।

इतना सुनकर सूतजी अतिप्रसन्न हुये। उन्होंने उन सबको बड़ाई करके कहा कि हे शौनकादि मुनीश्वरो! यही प्रश्न जो तुमने किया है, एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बेर नारदजी ने ब्रह्माजी से किया था। ब्रह्माजी ने यथार्थ उत्तर देकर नारद को प्रसन्न कर दिया था। सो कहते हैं कि एक समय श्रीनारदजी तप के लिये हिमालय पर्वत पर जिसके निकट श्रीगङ्गाजी बहती हैं, पहुँचे और एक जगह बैठकर अति कठिन तप करने लगे। श्वास ब्रह्माण्ड में चढ़ाकर कुटी में बैठ रहे। ऐसी कठिन तपस्या देखकर इन्द्र अति भयभीत हुये और समझे कि नारद हमारे पद को प्राप्त करने के लिये ऐसा कठिन तप करते हैं। रीति है कि व्यभिचारी मन वाले पापी लोग कौवे की तरह डरा करते हैं। सो इन्द्र ने चाहा कि नारद के तप में अन्तर आ जावे। तुरन्त इसी इच्छा से काम को बुलाया। कामदेव तुरन्त आया। इन्द्र ने कहा कि हे मित्र! आपके द्वारा हमने बहुत गर्ववानों का अहंकार तोड़ डाला है। देखो नारद हिमालय पवत पर शिव का तप करते हैं। हमको सन्देह है कि वे हमारे पद को न छीन लेवे। इसलिये आप ऐसा उपाय करें जिससे नारद का तप भङ्ग हो जावे। यह सुनकर कामदेव ने अपनी सब सामग्री सजाई और नारद के निकट जाकर अपनी सम्पूर्ण माया प्रकट की। अर्थात् नाना प्रकार के पुष्प खिल गये और कोकिला आदि पक्षी अपनी मीठी-मीठी वाणी बोलने लगे। तीनों प्रकार की शीतल मन्द सुगन्ध पवन जो कामदेव के उपजानेवाली है, पवन चलने लगी। छहू ऋतु प्रकट हुई और रम्भादि उत्तमोत्तम अप्सरा जो नाचने और गाने में अतिप्रवीण थीं, नृत्य करने लगीं। यह विजय करनेवाली सेना देखकर काम अति प्रसन्न हुआ। वहाँ जाकर जो-जो कर सका, वह किया, पर नारद का मन कुछ चलायमान न हुआ। अब इसका मुख्य कारण वर्णन करते हैं कि उस जगह पर कामदेव का बल क्यों न चला। हेतु यह है कि जब सदाशिव ने काम को उसी जगह पर जला दिया था और फिर उसको जीने का वर देकर यह कहा था कि यद्यपि कामदेव जी जावेगा पर इस जगह पर उसकी कुछ न चलेगी। अर्थात् जहाँ तक कि ये स्थान दिखाई देते हैं, वहाँ तक काम प्रकट न होगा। इसी कारण कामदेव निराश और लज्जित होकर इन्द्र के निकट जा अपने निरर्थक लौट आने का हाल कहा और सम्पूर्ण सभासद् कामदेव का वर्णन सुनकर आश्चर्य से नारद की स्तुति करने लगे। नारद ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपने तपको पूर्ण समझकर अपने को कामदेव पर प्रबल समझाया। यह न जाना कि यह तपोभूमि ऐसी है और अपने तपोबल पर मग्न होकर अति प्रसन्नतापूर्वक शिवजी के पास गये। अपने तप का हाल विस्तार से वर्णन किया। शिवजी ने उत्तर दिया कि कामदेव का जीतनेवाला तीनों लोक में कोई नहीं है। अब हम तुमको समझाते हैं कि तुम विष्णुलोक में यह बात न कहना। इस बात को हर तरह से गुप्त रखना। यहाँ तक कि किसी से पूछने पर भी न कहना। हे नारद! तुम विष्णुजी के तप से मुझे बहुत प्रिय हो। नारद को यह शिवजी की बात कुछ अच्छी न लगी। शिवजी की माया से जो मिथ्या और नष्ट नहीं हो सकती। शिवजी से बिदा होकर नारद ब्रह्माजी के निकट गये। वहाँ भी अपनी प्रशंसा की और अपने तप पर गर्वित होकर कामदेव पर अपना विजय पाना वर्णन किया। ब्रह्माजी अपने पुत्र का ऐसा अहंकार देखकर सदाशिव की भाँति समझाने लगे। पर नारद को बहुत ही अहंकार हो गया था। इस कारण पिता का समझाना फलदायक न हुआ। विष्णुलोक में भी उसी अहंकार से गये। विष्णु ने उठकर कण्ठ में लगाया पूछा कि अब तक तुम कहाँ रहे। नारद ने अपने तप और कामदेव पर विजय पाने आदि का हाल कह सुनाया। यह सुनकर विष्णुजी हँसे और महादेवजी की इच्छा समझकर कहने लगे कि तुम धन्य हो, धन्य हो। हे शिव! आपकी माया जिसके बल से सम्पूर्ण संसार अज्ञान और भूला हुआ है। शिव के चरणों के स्मरण में नेत्र मूँद चुप हो रहे। सदाशिवकी इच्छा भली भाँति समझ मधुर वचन से कहा कि हे नारद! जो मनुष्य ब्रह्मज्ञानी संसार को छोड़े हुये ईश्वराराधन से वर्जित हैं, उनके मन में मोह उपजता है। आपने तो ब्रह्मचर्य अङ्गीकार किया है। काम तो आपका क्या कर सकता है। आपके चरणों की सेवा से भय दूर होता है। काम की कुछ नहीं चलती। ऐसी वार्ता सुनकर नारद और भी अहंकार में डूबकर कहने लगे कि यह बात केवल आपकी कृपा से प्राप्त है। यह कहकर नारदजी बिदा हुये। उसी समय सदाशिवजी की माया से नारदजी के मार्ग में एक बहुत अच्छा शहर बस गया, मानों दूसरा स्वर्ग हो। लम्बाई उसकी चारसौ कोस की और वहाँ के स्त्री

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुरुष नाना प्रकार से विहार करते थे। वहाँ के वासियों का रूप देखकर काम लज्जित होता था। एक शीलनिधि नाम राजा वहाँ का राज्य करता था, जिसके यहाँ स्वयम्वर था। उसमें उस राजा की लड़की, जिसकी सुन्दरता पर संसार भर मोहित था, शृङ्गार किये मानों सभा का अलंकार हो रही थी और चारों ओर के राजा उस महासुन्दरी, चम्पकवर्णी, गजगामिनी कन्या की इच्छा से उस सभा में वर्तमान थे। नारद सभा का यह हाल सुनकर स्वयम्वर में पहुँचे। राजा ने इनका अति आदर सम्मान करके अपनी लड़की को बुलाकर नारद के सामने किया। पहले नारदजी उस कन्या का अनुपम रूप देर तक देखा किये। उसको शीलवान् पाकर विचार किया कि जो मनुष्य इसका पति होगा, वह अमर होकर किसी से युद्ध में परास्त न होगा। यह बात अपने मनमें विचारकर फिर अपनी राह चले गये पर मार्ग में काम से अतिविह्वल होकर बुद्धि के विपरीत काम के जाल में फँस गये। विचार किया कि रीति है कि सुन्दरी स्त्री स्वरूपवान् पुरुष को चाहती है। हम सुन्दर नहीं हैं। उसको किस तरह पावेंगे। सुन्दरता सबको भाती है। हमको उचित है कि विष्णुजी का स्वरूप लाकर उस कामिनी को प्राप्त करें। यह विचारकर विष्णु का ध्यान कर कहने लगे कि इस संसार में आपके बराबर हमारा और कोई नहीं। निश्चय है कि आप प्रकट होकर हमारा मनोरथ पूर्ण करेंगे। यह बिनती नारद की सुनकर विष्णुजी उस स्थान पर प्रकट हुये और कहा कि जिस तरह वैद्य रोगी की इच्छा के प्रतिकूल भोजन देता है, उसी तरह हम आपकी सहायता करें। यह युक्ति विष्णुजी कहकर अन्तर्धान हो गये। वह युक्ति नारद ने न समझी। सो सम्पूर्ण शरीर नारद का विष्णुजी के सदृश हो गया पर मुख वानर का-सा रहा। यह भेद नारद ने न जाना। स्वयंवरस्थल में पहुँचे कि जहाँ सब राजा बैठे थे। वहाँ नारद बैठकर बार-बार उचकते थे और विचार करते थे कि यह लड़की सिवाय मेरे और किसी की इच्छा न करेगी। यह स्वरूप और किसी ने न देखा। पहिले की तरह सब लोग नारद को देखकर आदर करने लगे। उस सभा में सदाशिव के दो गण भी ब्राह्मण के रूप से वर्तमान थे। वे भी नारदजी के पास जा बैठे और नारद की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निन्दा करके परस्पर हास्य भरे शब्द करने लगे। ऐसी निन्दापूर्वक संकेत में वार्ता करते थे जिसको नारदजी कुछ नहीं समझते थे। वे कहने लगे कि हे नारद! आपने विष्णु से क्या सुन्दर स्वरूप प्राप्त किया है। अब लड़की क्यों किसी को चाहेगी। राजा की लड़की इसी अवसर में स्वयंवर के बीच आई और नारद का भयानक स्वरूप देखकर मन में अति अप्रसन्न हुई। वह मुँह फेरकर दूसरी पंक्ति में अपना-सा पति ढूँढ़ने लगी। कन्या जिस ओर नारद बैठते थे, उस ओर भूलकर भी नहीं देखती थी। नारद की यह दशा थी कि शिर ऊँचा करके उस कन्या की ओर चारों ओर से देखते थे। शिव के दोनों गण यह दशा नारद की देखकर हास्य करते थे। ऐसे समय में आप विष्णुजी उस सभा में आये। लड़की ने प्रसन्न होकर तुरन्त जयमाल विष्णुजी को पहना दी, जिससे सब राजा निराश हो गये। यह दशा देखकर नारदजी विह्वल हो गये। उस समय दोनों गणों ने नारद से कहा कि आप नाहक इतने दुःखी होते हैं। भला अपने मुखको तो देखिये।

तीसरा अध्याय।

यह सुनकर नारदजी पानी में अपना मुख देखकर आश्चर्य में हुये और क्रोधित होकर दोनों गणों को यह शाप दिया कि तुम दोनों छली और पापी राक्षस हो जाओ। तुमने हँस-हँसकर हमारी बहुत अप्रतिष्ठा की है, उसका फल पाओ कि फिर ऐसा अपकर्म तुमसे न हो सके। दोनों गण यह शाप सुनकर नारद को मोहवश जान चुप हो रहे और अति चिन्तावान् होकर अपने लोक को गये और शिवजी की स्तुति करने लगे। नारद अपनी मुख्य दशा में आकर ईश्वर के भेद को समझे। अपना वह वानर का स्वरूप विचारकर मन में कहने लगे कि यह मेरी अप्रतिष्ठा केवल विष्णुजी के छल से हुई। या तो विष्णुजी को शाप दूँगा या अपने प्राण त्याग दूँगा। यह सोच श्रीहरिमन्दिर पहुँचे। सो विष्णुजी नारद की इच्छा जान मार्ग में खड़े हुये। वह कन्या भी, जिसको स्वयंवर में लिया था, साथ थी। विष्णु ने नारद को प्रणामकर हासपूर्वयक कहा कि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हे नारद ! तुम चिन्तित होकर कहाँ जाते हो ? यह सुनकर नारद अति कोपित हुये। जैसे जलती हुई अग्नि में कोई सूखी लकड़ी डाल दे। उस क्रोध में यह शब्द मुख पर लाये कि तुम इस समय हमको अच्छे मिले। तुम दूसरे की प्रसन्नता न देख सके। तुम बड़े छली हो। तुमने कहाँ छल नहीं किया वरन् तुम छलरूप हो। मोहनीरूप धारण कर तुमने दिति के पुत्रों के साथ अमृत के बाँटने पर जो छल किया, वह प्रसिद्ध है। फिर जलन्धर की स्त्री से छल करके उसका पातिव्रत धर्म छुड़ाया। यदि सदाशिव हला-हल विष को न पीते तो तुम्हारी सब माया निकल जाती। अच्छे लोग छल का अभ्यास नहीं डालते। यह बात सदाशिव को उचित न थी। जैसा कि तुमको वरदान दिया था अर्थात् तुमको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वाधीन स्वामी बनाया। तुम इस योग्य न थे। इसी अहंकार पर कि तुमसे और कोई बड़ा और उत्तम नहीं है। तुम जो चाहते हो, वह करते हो। सदाशिव भी तुमको ऐसा स्वाधीन और सर्वसृष्टि का स्वामी करके अपने मन में चिन्ता करते हैं और यह उपाय निकाला है। अब हम सदाशिव की आज्ञा समझ-कर इसलिए कि फिर ऐसा काम तुमसे न बन पड़े, तुमको तुम्हारे कर्म का फल देते हैं। आज तक सिंह के सदृश ऐसे वन में जहाँ दूसरा न था, तीनों लोक में निर्भय होकर फिरा किये। पर अब हम तुमको ऐसी स्वाधीनता का फल देते हैं क्योंकि तुमसे भले बुरे का विवेक न हो सका और न तुम संसार के लिये नियम बाँध सके। चाहे सदाशिव ने तुमको वरदान दिया है पर तो भी हम तुमको सिखलाते हैं। यह कहकर नारद शाप को इस तरह मुख पर लाये कि तुमने जिस शरीर से हमको छला है, उसी शरीर में तुमको दुःख होगा और जिनके सदृश हमारा मुख कर दिया था, वे ही तुम्हारी सहायता करेंगे। जोकि तुमने स्त्री के लिये हमारी ऐसी अप्रतिष्ठा की इसलिये तुम भी स्त्री के वियोग से अति दुःखी होकर सम्पूर्ण वनों में घूमते रहोगे। यह सुनकर विष्णुजी ने अपना शिर नारद के चरणों पर रख दिया पर नारद ने क्षमा न की। तब सदाशिव ने नारद के मन से माया खींच ली। उस समय न कोई स्त्री दिखलाई देती थी, न वह दशा नारद की रही। नारद आश्चर्य में होकर खेद करने लगे। कहा कि जाना नहीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जाता कि यह सब वृत्तान्त सत्य है या स्वप्न में मैंने देखा है। प्रेमपूर्वक कहा कि धन्य-धन्य आपकी माया जिसमें हम ऐसे बुद्धिमान् भूल गये। फिर विष्णुजी के चरणों पर गिर पड़े और कहा कि हे सदाशिव ! हमारे शाप को खण्डन कर दीजिये और जो कठोर वचन मैंने तुमसे कहे हैं, वे महापाप के भरे हैं, वे क्योंकर क्षमा होंगे। विष्णु ने कहा कि जो तुमने सदाशिव के वचन को न माना, उसका फल यह तुमको मिला है। अब तक तुमको इस ईश्वरीगति का भेद मालूम न हुआ इसलिये ये सब बातें बताई गई। सो अब भी आपको उचित है कि चैतन्य होकर समझो कि सदाशिव सबसे बड़े हैं। तीन कार्यों के निमित्त तीन स्वरूप होकर सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी वर्तमान हैं। ब्रह्मा सृष्टि उपजाते, हम भी उन्हीं की सेवा करके संसार को पालते और वे आपही प्रलय करते हैं। हम केवल सदाशिव के तप से सबसे बड़े गिने गये हैं। हे नारद ! ऐसी सदाशिव की तपस्या करो क्योंकि सदाशिव की तपस्या बिना किसी को परमपद नहीं मिलता। आपको उचित है कि सब छोड़कर केवल सदाशिव वाक्य मुख पर रक्खो। शिव के शतनाम जपो। उनके जपते-जपते सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। अब खेद न करो क्योंकि आप ही सदाशिव ने यह माया की है और हमको आपके द्वारा यह शाप दिलाया। वे सदाशिव काल के भी काल अद्वितीय अप्रमेय हैं। हमको सदाशिव से अधिक प्रिय और कोई नहीं। हमारा सबसे अधिक बल वही है। तुमको उचित है कि हृदय में शिव का चरण रखकर देशाटन करो, जिसके प्रताप से दुःख न होगा। पृथ्वी भर में सदाशिव की माया देखते हुये काशीजी को सिधारो। उसे रुद्रक्षेत्र, वाराणसी, मुक्तिक्षेत्र और महाश्मशान भी कहते हैं। फिर ब्रह्माजी, अपने पिता के निकट जाकर सदाशिव के सौ नाम पूछो। क्योंकि ब्रह्माजी बड़े शिवके भक्त हैं। रात्रि दिन उनकी सेवा करते हैं। इतना कहकर विष्णु अन्तर्धान हुये। नारद सदाशिवजी के पास चले। मार्ग में दोनों गण नारद के चरणों पर गिर पड़े और कहने लगे कि हम ब्राह्मण नहीं हैं वरन् सदाशिव के गण हैं। आपकी बड़ी अवज्ञा हमसे हुई है, सो आप अपना किंकर समझकर कृपा करें क्योंकि हम अपने कर्म का फल पा चुके।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह सुनकर नारद खेद करके कहने लगे कि मेरी सब बुद्धि भ्रष्ट हो गई। सदाशिव की माया अति बलवान् है। जो मैंने कहा वह तो होगा ही पर हम यह वर देते हैं कि तुम दोनों भाई मुनि के वीर्य और राक्षसी से उत्पन्न होगे। तुम्हारा बड़ा प्रताप होगा। तुम बड़े विजयी महाराजा होकर सम्पूर्ण सृष्टि को विजय करोगे। नाना प्रकार के भोग भोगकर सदाशिव की भक्ति से अचेत न रहोगे। अन्त को वानर और मनुष्य तुम्हारी मुक्ति करेंगे। सदाशिव और विष्णु तुम्हारे घर जाकर मुक्ति कृपा करेंगे। इतना कह नारद सदाशिव फिर ब्रह्मा के पास गये और स्तुति करके हाथ बाँध ब्रह्मा से कहने लगे कि आपने जो विष्णु की कथा कही थी, वह तो हमने सुनी जिसमें भक्ति, वैराग्य, तप और दान की रीति और तीर्थ आदि का वर्णन है। परन्तु सदाशिवजी की भक्ति से हम हीन हैं। सो आप क्रम से कहिये कि क्योंकर सदाशिव आदि मध्य और अन्त में रहते हैं, क्योंकर प्रसन्न होते हैं और फिर वे क्योंकर निर्गुण होकर सगुण हो जाते हैं। अपनी और विष्णुजी की उत्पत्ति वर्णन कीजिये। जिस तरह सदाशिव कैलाश में आये, वह कहिए। सतीजी का विवाह, गिरिजा का वर्णन, स्वामिकार्त्तिक की उत्पत्ति और तारक, वृत्रासुर, त्रिपुर, जलन्धर, अन्धक आदि वध एवं सदाशिवजी के सम्पूर्ण गुण और अवतार विस्तार से कहिये। जितने शिव पार्वती के चरित्र हों, वे सब मुझ पर कृपा करके प्रकाश कीजिये, जिससे मुझे और आपको प्रसन्नता हो।

चौथा अध्याय।

इतना कह फिर सूतजी बोले कि हे शौनक! यह नारद का प्रश्न सुनकर ब्रह्मा प्रेम में ऐसे मग्न हुये कि आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। उनको तन, मन, स्त्री, पुत्र, घर और द्वार की कुछ सुधि न रही। बड़ी देरके पीछे चेत में आकर शिव-शिव कहते और शिवका ध्यान करते हँसकर बोले कि तुमको धन्य है, धन्य है। तुमने हमारा सारा कुल मुक्त कर दिया। क्योंकि तुमको सदाशिवजी की भक्ति उपजी। ऐसी प्रशंसा करके ब्रह्मा ने नारद के प्रश्न का यह उत्तर दिया कि हम पहले सदाशिव के निर्गुण चरित्र अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगे। फिर सदाशिव की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सगुण महिमा कहेंगे। प्रकट हो कि जब कोई सृष्टि का चिह्न भी न था, तब निर्गुण सदाशिव सर्वव्यापक ब्रह्म, सत्, चित आनन्द ही थे। वह सत्य हैं, अनन्तर परमानन्द हैं। उनका मन और वचन उनके आधीन है। उनका कोई नाम रूप नहीं, न वे सूक्ष्म हैं, न स्थूल, न बड़े, न छोटे, न उनमें न्यूनता है, न ऊँचता और न वे किसी के अधिकारी हैं। वे माया और पापसे अलग हैं, मृत्यु उनके सामने जा नहीं सकती। वे देखने में नहीं आते और अनादि हैं। किसी के वश्य नहीं और सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी तथा सबके महाराजा हैं। संसारी मनुष्यों के कर्मों के साक्षी हैं, सर्वव्यापक हैं और सबसे भिन्न हैं, उनमें एक या दो का शब्द भी नहीं कह सकते और दोनों हैं। उन सदाशिव का ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि आदि सब तप और ध्यान करते हैं। परन्तु उनकी कृपा बिना कोई उनको नहीं पाता। उनकी स्तुति करने में शेषजी भी हारे हैं। यद्यपि योगी देखते हैं, पर उनके आदि और अन्त को नहीं जानते। उस सम्पूर्ण ज्ञान और सत्यस्वरूप ईश्वर को वेद नेति नेति वर्णन करते हैं। मूर्ख मनुष्य क्या जान सकते हैं। वे निर्गुण स्वरूप बिना कान सुन सकते हैं। वे बिना आँख सब कुछ देखते हैं। बिना नाक के संसार भर की सुगन्ध लेते हैं। मुख बिना सब कुछ खाते हैं। बिना जिह्वा सब कुछ पढ़ते हैं। बिना त्वचा ठंढे और गरम का विवेक रखते हैं। बिना हाथ के सब कार्य करते हैं। बिना पाँव बेपरिश्रम सम्पूर्ण सृष्टि में घूमते हैं। लिङ्ग बिना सब सृष्टि उपजाते हैं। बिना गुदा मल दूर करते हैं। जिस स्वामी को ऐसी विचित्र बातें हैं, उसकी स्तुति किस तरह वर्णन हो सकती है। ऐसे स्वामी निर्गुण स्वरूप सदाशिव ने यह इच्छा की कि हम एक हैं अनेक हो जावें। यह विचारकर आप सगुणरूप हो गये। ऐसे निर्गुण और सगुण स्वरूप में कुछ अन्तर नहीं है। सो हम सगुण स्वरूप का वर्णन करते हैं। जिनके स्मरण से सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं, वह सब कर्मों का देखनेवाला है। उसने विष्णु और ब्रह्मा को उपजाया। वही सब कर्मों का साक्षी और प्रतिष्ठित विराट्रूप है। शिवशंकर, हरनाथ, महेश, परमदेव, जगदीश, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म, गिरीश, शंभु, सदाशिव, अनीश, विबुध, पार्वतीपति, त्रिशूलपाणि, चक्री, ईश्वर, सुखदाता आदि उसके अनन्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाम हैं। वही सदाशिव हैं और शिव, ब्रह्मा और विष्णु से मान पाते हैं। वे सम्पूर्ण सृष्टि के कर्ता, भक्तों को हर्ष देनेवाले, उमापति, भगवान्, परमानन्द, सूर्य, चन्द्रमा आदि हजारों गुणों से भरे हुये सम्पूर्ण सृष्टि और ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र के उपजानेवाले हैं। ऐसा जो कोई सबका स्वामी है, उसको वैष्णव मत रखनेवाला विष्णु कहता है और शाक्त शक्ति, सूर्योपासक रवि, गाणपत्य उसी को विनायक जानते हैं। ऐसे सदाशिव लोक में हजारों नाम से विख्यात हैं, उन त्रिशूलपाणि महाराज का सगुण स्वरूप हम वर्णन करते हैं जिनके स्मरण से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं। वे सगुण स्वरूप अर्थात् शिरपर जटा और गङ्गा, भाल में चन्द्रमा और चाप की तरह त्रिपुण्ड्र, कान में कुण्डल पहने हुए, तीनों नेत्र लाल-लाल, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, कीर सदृश नासिका, ओष्ठ लाल कुँदरू से हैं, पञ्चमुख अतिपवित्र और सुन्दर हैं—पहला मुख पूर्व की ओर, वह मानों प्रभात के सूर्यवत् है। तीन नेत्र कमलवत्, द्वितीया का चन्द्रमा मस्तक पर धारण किये हैं। दूसरा मुख जो दक्षिण की ओर है, उसमें कमान के सदृश भौंहें हैं और तीनों नेत्र लाल और भारी होंठ फड़कते हुये, जिनसे भय होता है। दाँत भी भयानक, मस्तक में चन्द्रमा विराजमान है। तीसरा मुख जो पश्चिम में है, उसमें तीन नेत्र हैं और अर्धचन्द्र शिर पर है। मुस्कान से तीनों भुवन का मन मोह रहे हैं। चौथा मुख जो उत्तर की ओर है, वह विद्रुम अर्थात् मूँगे के वर्ण का है। श्यामवर्ण केश मुखपर लटकते हैं और तीनों नेत्र ललाई लिये, भाल पर दुइज का चन्द्रमा अलंकृत है। पाँचवाँ मुख जो नीचे को है, उससे अपने भक्तों में प्रसन्नता उपजाते हैं। उसके तीनों नेत्र कमलपुष्प के सदृश खिले हुये हैं, श्वेतवर्ण हैं। अतिसुन्दर चन्द्रमा की एक लकीर भालपर, जिसकी उपमा वर्णन नहीं हो सकती है, विराजमान है। इस तरह सदाशिव पञ्चवदन प्रसिद्ध हैं। गले में तीन लकीरें और उसमें जो हलाहल की श्यामता है, वह भक्तों के मन को हरती है। शूल धारण किये, गले में मुण्डों की माला, चारभुजा और कोई पाँचभुजा भी कहते हैं। कइयों ने दश भी कहा है। ऐसे हाथों में अलग-अलग शस्त्र लिये हैं। हाथ कमलवत् लाली लिये हुये, उँगली भी लाल, नख परेवा के चन्द्रवत् प्रकाश-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मान हैं। जब आठ भुजा वर्णन की जाती हैं तो उनके शस्त्र ये हैं—शूल, फरसा, खड्ग, पवि दाहिनी ओर लिये हुये हैं और बाईं ओर अंकुश, खट्वाङ्ग, नाग धारण किये हुये हैं। जब कि सदाशिव की दश भुजा कही जाती हैं तो यह सब सामग्री सब हाथों में वर्णन होती है अर्थात् दाहिने हाथों में शूल, फरसा, पवि, चक्र और बायें हाथों में नाग, घण्टा, पाश, अंकुश, डमरू लिये हुए हैं। हृदय बहुत चौड़ा फैला हुआ, उदर में त्रिबली पड़ी हुई, नाभि गम्भीर, विचित्र कटि और ऊरु मानों मन हर लेते हैं। वे कदलीस्तम्भ—से साफ चमकते हुये गोल सुडोल हैं। तलुवा लाल नवीन चन्द्रमा के समान चमकते हैं। ऐसा विचित्र सुन्दर स्वरूप श्वेतवर्ण माथे पर भस्म रमाये पाँचकला और पञ्चब्रह्म सदाशिव के शरीर में वर्तमान हैं। तीनों शक्ति भी शरीर से जुदा नहीं और पाँच या छः अक्षर से सदाशिव का शरीर है। ऐसे पवित्र सम्पूर्ण कला समेत सदाशिव के स्वरूप को बड़े-बड़े तपस्वी और मुनि छलरहित ध्यान करते हैं। जैसे कि बहुत रूप सदाशिवके हैं, उसी तरह से उनके ध्यान भी असंख्य हैं। उसके जाननेवाले बहुत ही कम पाये जाते हैं। ऐसे सदाशिव की महिमा और रूप नाम असंख्य हैं, जिनको वेद पुराण तपस्वी भी नहीं जान सकते। मूर्ख भी सदाशिव की कृपा से वेपरिश्रम यह रूप देख लेते हैं, जैसा कि व्याध और गणिका आदि जो मुक्ति पा चुके हैं। इस बात की साक्षी वेद और पुराण देते हैं। वह महाराज विना प्रेम दिखाई नहीं देता। संसार भर में वही प्रकट है। गज और गणिका के सदृश असंख्य मूर्ख महापापी जो वेद का नाम भी जानते न थे, सदाशिवकी दयादृष्टि से मुक्ति पा चुके हैं। ऐसे सदाशिव का कौन वर्णन कर सकता है। फिर सदाशिव ने शक्ति को अपने आनन्द के लिये उपजाया अर्थात् सदाशिव की महाशक्ति ने शरीर से प्रादुर्भाव होकर अपना तेजस्वरूप प्रकट किया जो षोडश शृङ्गार किये शरीर श्यामकमल सदृश, नरम और श्याम ही केश केशरपुष्पवत्, केशरही का ललाट पर चमत्कृत अर्धचन्द्र धारण किये, श्यामकुन्तल विराजमान और कानों में रत्नों के दो कुण्डल पहिने हुये ललाई लिये तीन नेत्र भौं कमान से सदृश कोर सम नासिका, ओष्ठ कुँदुरू और मूँगे से, अतिसुन्दरी, चम्पकवर्णी,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कटिकेहरी, दन्तपंक्ति मानों मोतियों की लड़ी, ठोंढ़ी और गर्दन कैसी दिव्यस्वरूप जिसका वर्णन हो नहीं सकता। वस्त्राभूषण से अलंकृत, चार हस्तकमलों में अंकुश, पाश आदि शस्त्र लिये हुये थीं। कई अष्टभुजीरूप से उस महामाया का ध्यान करके और उनमें ये शस्त्र बतलाते हैं–धनुष १ शूल २ बाण ३ चर्म ४ कृपाण ५ शङ्ख ६ चक्र ७ गदा ८ कमल के सदृश कलाई, उँगलियाँ, नख, हृदय और उदर त्रिबली और नाभिकूप का कौन वर्णन कर सकता है। कटि महाक्षीण पाँव के नख दुइज के चन्द्रमा के सदृश, ऐसे अनुपम सुन्दर स्वरूप का ध्यान करके अति प्रसन्नता प्राप्त होती है। सदाशिव ने इस शक्ति को श्यामरूप उपजाया। कई श्वेत वर्ण और सोने के रङ्ग की अथवा विद्युत् के सदृश विचार करते हैं। यह सदाशिव की आदिशक्ति ब्रह्मा-विष्णु की माता और सृष्टि के होने का कारण हैं। सबकी स्वामिनी, सदाशिव की स्त्री जिसका आदि किसी को मालूम नहीं, जो वह संसार में है और जहाँ तक कि वचन और मनकी शक्ति है, वह सब इसी की कृपा से है। कई इन्हें सदाशिव दोनों रूप और शक्ति को प्रकृति और पुरुषरूप कहते हैं। इस बात में सन्देह न करना चाहिये। वरन विश्वास रखना उचित है कि जो कुछ सदाशिव चाहते हैं, वही होता है। अब हम श्रीसदाशिवजी महाराज के सगुण स्वरूप के गुण चरित्र वर्णन करते हैं, मन लगाकर सुनो। श्रीसदाशिव को परब्रह्म और उमा को शक्ति जानना चाहिये। पहिले सदाशिव ने उमाके साथ विहार करने के लिये एक लोक बनाया, जिसमें दुःख, चिन्ता, शोक, दरिद्र को मार्ग नहीं और वह लोक परम रमणीय चित्र-विचित्र, परम मनोहर है और उस स्थान को किसी समय पर नहीं छोड़ते। इसी कारण उस स्थान को अविमुक्त कहते हैं। वह स्थान सम्पूर्ण सृष्टि के जीवों को आनन्द देनेवाला है इसलिये आनन्दवन भी उसका नाम है। वह स्थान सिद्धरूप, तेजस्वरूप, अद्वितीय है। इसी से उसका नाम काशी रक्खा गया। वह बड़ा नगर है। ऐसे नगर में एक महल बनाया जो चित्र-विचित्र रत्नों से अलंकृत है, उसमें मोतियों की झालरैं लटकतीं, छत्र विमानादि असंख्य रक्खे हुये और वृक्ष कल्पतरु के सदृश हैं। ऐसे मन्दिर में सदाशिव ने अपने बैठने की जगह उत्तम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उत्तम रत्नों से बनाकर शक्ति समेत उस स्थान को सुशोभित किया। ऐसा सजा हुआ नगर देखकर सदाशिव ने अपनी शक्ति से कहा कि यह लोक अति उत्तम, पवित्र, प्रसन्नता उपजाने वाला मुझे अति प्रिय और उसी तरह पर तुमको भी प्रियतम है। यहाँ किसी के सामने दुःख न आवेगा। यहाँ पहुँचकर कोई मनुष्य नारकी न होगा। यद्यपि हम श्रीकाशीजी की प्रशंसा करते हैं; पर तो भी हम इसकी स्तुति वणन नहीं कर सकते। इतना कहकर सदाशिवजी ने उमा के साथ विहार किया। इच्छा हुई कि कुछ रचना करें। यह विचारकर उमा से कहा कि हमारी इच्छा जो हम दोनों को प्रसन्नता उपजावेगी, उसे सुनो।

पाँचवाँ अध्याय।

सदाशिव ने कहा कि एक मनुष्य ऐसा उत्पन्न करना चाहिए जो सब विद्याओं में पूर्ण हो। उसको सम्पूर्ण संसारी कार्य सौंपकर हम स्वयं आनन्द-पूर्वक विहार करें। यह श्रवण करके श्रीजगदम्बाजी ने अपनी बाईं ओर देखा। तुरन्त एक मनुष्य अति रूपवान्, कलावान्, शीलवान्, बुद्धिवान्, और गुणवान् प्रकट हुआ। उसका सब शरीर मानों श्यामवर्ण चन्द्रमा का-सा, भाल पर त्रिपुण्ड्र धारण किये हुये, नेत्र मानों कमल के फूल के सदृश, होठ लाल गले में कौस्तुभमणि पहिने हुये, शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म, कमल धारण किये, चारभुजा और कण्ठ में वैजयन्ती तथा वनमाला पहिने हुये, उदर में त्रिबली महासुन्दरी, नाभि और कटि की प्रशंसा नहीं हो सकती, पीतवस्त्र पहिने, प्रत्यङ्ग, अति सुडौल, सम्पूर्ण, विद्यानिधि, महाप्रतापवान्, सिद्धरूप, पवित्र, बारंबार दण्डवत् करते हुये श्रीसदाशिवजी के सन्मुख आ खड़ा हुआ। ऐसे मनुष्य को देखकर सदाशिवजी और उमा अति प्रसन्न हुये। वह भी अति हर्ष को प्राप्त हुआ और दोनों से हाथ जोड़ स्तुति महिमा और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप मेरा नाम और काम कहिये। सदाशिव ने कहा कि आपका नाम विष्णुजी होगा। आपके समान अन्य मनुष्य सृष्टि में उत्पन्न न होगा और प्रकाश आपका सब संसार में प्रकट रहेगा। तुमको हरि, चतुर्भुजी भगवान, अच्युत आदि अनेक नामों से मनुष्य पुकारेंगे। भक्तों का मनोरथ पूर्ण करने के लिये तुम उत्पन्न किये गये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हो। अब उचित है कि तप करो जिस कारण कि प्रकाश की अधिकता हो। यह कहकर सदाशिवजी ने विष्णुजी को योगविद्या पढ़ा दी। उसके पीछे विष्णुजी तप करने लगे। दिव्य द्वादश सहस्रवर्ष पर्यन्त एक ही आसन पर योग के साथ वह सदाशिवजी के ध्यान में बैठे रहे। जब कि ऐसे तप का कुछ फल न मिला तो उस समय विष्णु बहुत शोकवान् हुये। इस समय में ऐसी आकाशवाणी हुई कि जैसे वर्षा में बादल गर्जते हैं कि हे विष्णुजी ! तुम फिर मन लगाकर तप करो। इस कारण कि हम सुगमता से दिखलाई नहीं देते। यह आकाशवाणी श्रवण करके विष्णुजी ने अति कठिन तपस्या की। कठिन तप के कारण से विष्णुजी के पवित्र शरीर से इतना पसीना निकला कि नदी बह चली। विष्णुजी मूर्च्छित हो गये। इस कारण विष्णुजी का नाम हरनारायण है। वे ऐसे मूर्च्छित हो गये जैसे कोई निद्रा में होता है। इस अवस्था में सदाशिव की इच्छा से एक कमल विष्णुजी की नाभि से उत्पन्न हुआ। उसमें बहुत सी पङ्खुड़ियाँ थी। वह देखने में बहुत ऊँचा महामनोहर और लम्बाई में बहुत ऊँचा था। उसके पीछे सदाशिव ने मुझको अपनी दाहिनी भुजा से उत्पन्न करके उसी कमल में रख दिया। मेरा रङ्ग लाल, अति सामर्थ्यवान्, चार शिर धारे, मुँह चारों कोण की तरफ जिनमें त्रिपुण्ड्र लगा हुआ था और दो-दो आँख और हर एक अङ्ग मानो विष्णु के अङ्ग के सदृश था। उस समय मैंने आकाश से यह वाणी सुनी कि तुम्हारे अनेक नाम अज, ब्रह्मा, धाता, प्रजेश, विधाता, परमेष्ठी, बहुगर्भ और प्रमुख आदि होंगे। पर मैंने अपने उपजानेवाले को न जाना कि कौन है। हे नारद ! सदाशिव की माया तीनों भुवन को घेरे है। वह जो चाहते हैं, करते हैं। विष्णु, हम देवता, मुनि, ऋषीश्वर, सिद्ध, तपस्वी, दैत्य, दानवादि सब सदाशिवजी की माया के अधीन हैं। वह अनादि हैं। मैंने यह न जाना कि मैं किससे, उत्पन्न हुआ, किसका पुत्र हूँ? उस कमल के पुष्प की जड़ कहाँ से है? फिर मैंने विचार किया कि जिसके ऊपर और मूल से यह कमल उत्पन्न हुआ, वही हमारा पिता होगा। मैं यह विचार कर उस तालाब के अन्दर गया और उसी कमल की डण्डी के मार्ग बहुत दूर सैकड़ों कोसों पर्यन्त चला गया। पर जब उसके मूल को न पाया तो मैं शोकवान्

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होकर वहाँ से लौटा और सौ वर्ष के पीछे जिस जगह से चला था, वहाँ लौट आया परन्तु कमल को न देखा। मैं कमल के न देखने से चिन्तित हुआ। मैंने इस सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी से रक्षा चाही जो सबसे श्रेष्ठ है। उस समय आकाशवाणी हुई और दो अक्षर प्रकट हुये। उसके सहारे से १६ और २१ अक्षर मुझको प्रकट हुये। बहुत-सी बातें जानी गईं। उस समय सदाशिव की इच्छा से विष्णु, जो अचेत हुये नदी में पड़े हुये थे, सचेत होकर मेरे नगर में आये। वह किरीट और कुण्डल आदि रत्न पहिने हुये, नेत्र लाली लिये, हास्य उनका खिले हुये कुन्द के पुष्प के सदृश, होंठ उनके लाल, अतिरूपवान्, कौस्तुभमणि कण्ठ में, उत्तम वस्त्र धारण किये, चार भुजा में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म धारण किये, दोनों हाथ, अंगुली, नख, हृदय, उदर, नाभि और कटि बहुत ही सुडौल, पीतवस्त्र पहिने, शरीर का रङ्ग मेघ के सदृश जिसको देखकर कामदेव लज्जायमान हो और शरीर के सुन्दर वर्ण से अतसीपुष्प नम्र हो ऐसे स्वरूप को देखकर हम अचम्भे में हुये। सदाशिव उमासहित ऐसे विचित्र सुन्दर स्वरूप को देखते ही मोहित हो गये। इतना कहकर श्रीब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! इसमें कुछ चिन्ता न करो। सदाशिव जो चाहते हैं, वह करते हैं। इसके पीछे हमने कहा कि आप कौन हैं। विष्णु ने कहा कि हे ब्रह्मन्! हम ब्रह्म और अलख निरञ्जन हरि अचिन्त्य भूपति अविकार सत् चित् आनन्द हैं। किस कारण आप अचेत होकर ऐसा प्रश्न करते हैं। हम तुम्हारे पिता हैं और तुम हमारे नाभिकमलपुष्प से उत्पन्न हुये हो। अब निर्भय रहो। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। हमारे ऊपर और अन्य मनुष्य उत्तम नहीं हैं। सबके स्वामी हम हैं। यह बात विष्णुजी ने अज्ञानता की अवस्था में कही कि हम ब्रह्म हैं। हमसे उत्तम कोई नहीं है। इस कारण कि वह शिवजी की माया से अचेत थे। ऐसा संसार में कौन है जिसको सदाशिव की माया भुला नहीं देती। यह वचन विष्णुजी का श्रवण करके हमको बहुत क्रोध हुआ और कहा कि हे विष्णुजी! तुम ऐसा असत्य वचन न कहो। केवली भाव पर निश्चय रक्खो। इस कारण कि जो हम आप ही उत्पन्न होते तो वेद हमको ब्रह्मा, पितामह, विधाता, परमेष्ठी, और विधि आदि नामों से पुकारते।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हम अपने तईं तीन गुण करके सर्व सृष्टि को उत्पन्न करते हैं। हमारा उत्पन्न करनेवाला कोई नहीं है। यह श्रवण करके विष्णुजी ने कहा कि ऐसी अज्ञानता तुमको अयोग्य है। हम सर्व सृष्टि को उत्पन्न करके पालना करते हैं। फिर ठहराकर सबको नष्ट कर देते हैं। हरीश और अच्युत आदि हमारे नाम सबसे उत्तम हैं। तुममें कोई अवगुण नहीं। हमारी माया के अधीन होकर सब लोगों की यही अवस्था है। संसार सब हमारे अधीन है। हमने वेदों को बनाया और तुमको अपनी नाभि के कमल से उत्पन्न किया। हमसे उत्तम कोई मनुष्य नहीं है। अपने नाम के अहंकार पर अहंकार न करो। निष्क्रोध होकर योग्य वचन कहो। जैसा कि अन्धा आँखों की महिमा और निर्धन धनवान् की अवस्था वर्णन करे, उसी प्रकार तुम्हारे नाम वेद ने वर्णन किये हैं। भला होगा अगर हमारा पूजन करो। ऐसे अहंकार के वचन विष्णुजी के सुनकर हम बहुत हँसे। परन्तु मन में क्रोध इतना उत्पन्न हुआ कि जिससे हम विष्णुजी शत्रु हो गये। हमने कहा कि तुम बार-बार मुझको गुरु के सदृश, जैसा कि गुरु अपने चेले को झिड़क कर बुलाता है, उपदेश करते हो। हम वेद पाठक हैं और तुम नहीं जानते हो कि वेद क्या है। इस वार्ता को वेद आप ही वर्णन करता है। तुम निष्फल इतना क्रोध करते हो वेद की कठिन गति वर्णन करके तुमने इतना वाद निष्फल किया। इसी वचन पर हम और विष्णुजी परस्पर बहुत लड़े। मूर्खों के सदृश शिवमाया से बड़ा युद्ध किया। शिवजी की माया से दोनों आपको सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी समझे रहे। हे नारदजी! कुछ आश्चर्य न करना, क्योंकि सदाशिव की माया बहुत गुप्त है।

छठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सदाशिव हमारी और विष्णुजी की मूर्खता की लड़ाई देखकर अन्तकाल की जलती हुई बड़वाग्नि के सदृश प्रकट हुये, उनका दृष्टान्त क्या दूँ। ऐसा स्वरूप देखकर हम दोनों ने लड़ाई को रोक दिया। विष्णुजी भयवान् और आश्चर्यवान् होकर मुझसे कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! यह तेज कहाँ से आया। जो मनुष्य इसके आदि और अन्त को देख आवे, वही सबका मालिक है। यह आदि-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अन्त रहित है। तुम ऊपर के लोक को देख आवो और हम नीचे के लोक को जाते हैं। हम यह वचन सुनकर अहंकारी हो उस ज्योति के अन्त को ढूँढ़ने चले। परन्तु पूरा नियम है कि जो काम अहंकार की अवस्था में किया जाता है, उसका परिणाम भला नहीं मिलता। अच्छा काम अहंकार से पूर्ण नहीं होता। सुख और बुद्धि को नष्ट कर डालता है। अनेक मनुष्य जैसे रावण और बाणासुर इस अहंकार से नष्ट हुये हैं। बिना त्याग अहंकार के कोई मनुष्य कार्य सिद्ध नहीं कर सकता। निर्जन मुनि, गज और अन्धकादि ने अहंकार त्यागकर मन के मनोरथ पाये हैं; जैसा कि वेदों में लिखा है। सो विष्णुजी श्वेतशूकर का रूप धारण कर पाताल में गये। उसी दिन से संसार में श्वेतशूकर प्रसिद्ध है। यह पहिला चरित्र हमारा और विष्णुजी का जो कोई मनुष्य प्रातःकाल के समय हाथ-पाँव धोकर ध्यान करता है, उसको इस लोक में बड़ा सुख और आरोग्यता तथा परलोक में भी अच्छी अवस्था मिलती है। निदान हम और विष्णुजी दिव्य एक सहस्र वर्ष पर्यन्त उस ज्योति को ढूँढ़ते रहें। परन्तु उसका आदि-अन्त कुछ न मिला, निदान लौट आये। परन्तु पहिला स्थान जहाँ से चले थे, वह न मिला और दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्त पहिले स्थान के ढूँढ़ने में खराब रहे। उस समय यह वार्ता हृदय में निश्चय भासी कि हमारे ऊपर और कोई मनुष्य उत्तम और पुरातन है। यह विचारकर हम दोनों पवित्र स्वरूप की रक्षा में आये। परस्पर मिलकर शत्रुता का त्याग किया। उस समय आकाशवाणी हुई कि तुम दोनों योग करो। यह श्रवणकर हम दोनों योग करने लगे। महिमा और स्तुति की कि हे केवल! हे स्वामी! हे अलख निरञ्जन! हे अन्तर्यामी! हम दोनों ने अपनी बुद्धि को नष्ट करके अपने को सर्वसृष्टि का उत्पन्न करनेवाला ठहराया था। अब तुमको दण्डवत् है सो अनुग्रह करके हमको अपना सेवक विचारकर दया करो और प्रकट हो। यह कहकर देखने लगे कि उस समय हमको ऐसे गुप्त अक्षरों से प्रेरणा हुई, जिसको हम समझ न सके और दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप शरीर सहित प्रकट हूजिये। यह कहते थे कि महाराज कृपानिधान ने अपने स्वरूप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को जिसको देख संसार भर मोहित हो दिखलाया और प्रणव अर्थात् ॐकार प्रकट हुआ, जिसको कि हम दोनों सदाशिवजी की माया के कारण जानने से अचेत रहें। परन्तु जब उसके चार भाग हुये और उसके अन्दर से होकर सदाशिव आप ही प्रकट हुये तो हमने जाना कि अक्षर अकार, उकार, मकार, नाद और बिन्दु के यह अर्थ हैं कि पहिला अक्षर अर्थात् अकार लिङ्ग की ज्योति है। अक्षर उकार जो दूसरा है, वह उस लिङ्ग की ज्योति का मध्य है। आधी मात्रा जो नाव है वह उसी लिङ्ग की ज्योति का शिर है। जो बिन्दु बिन्दु अर्थात् बिन्दी भासती है, वह सर्व लिङ्ग की ज्योति है। सिवाय इसके और प्रकार पर प्रणव को वर्णन करते हैं। अर्थात् अकार से ऋग्वेद, उकार से यजुर्वेद, मकार से सामवेद, अथर्वण नाद से और ब्रह्मविद्या बिन्दु से ठहराते हैं। प्रसिद्ध रहे कि हर वेद ने दश-दश अर्थ से सदाशिव को वर्णन किया है, जिसको हमने श्रवण नहीं किया। ऋग्वेद जो रजोगुणी है, लिङ्ग का दक्षिणी भाग है। यजुर्वेद जो सतगुणी है, उत्तरीय भाग लिङ्ग का है। सामवेद जो तमगुणी है, वह मध्य भाग लिङ्ग का है। अथर्वण वेद जो निर्गुण कहलाता है, उसका वाक्य है कि सदाशिव कुछ नहीं करते जो होता है, वह शक्ति की इच्छा से होता है। ऋग्वेद को जाग्रत से उपमा करते हैं। स्वप्न की अवस्था को यजुः बताते हैं व सुषुप्ति अवस्था को सामवेद समझते हैं। अथर्वण वेद को तुरीया अवस्था कहते हैं। जोकि जानने से रहित है और यद्यपि यह प्रणव जपने बिना ही मुक्ति देता है, इस कारण इसका नाम तारक है। यही मोक्ष देने का अधिकारी है। इस कारण से कि यह मोक्ष देता है, इसलिये इसका प्रणव नाम है। तीनों अक्षर प्रणव में हैं और तुरीया को जो अति गुप्त है, उससे वेद अङ्गों सहित प्रकट होते हैं। वह इस सृष्टि में सबसे उत्तमोत्तम है, उसको वृषतन कहते हैं। उसी प्रणव में तीन लोक हैं। वह कभी नष्ट नहीं होता और ब्रह्मा से लेकर तृण तक उसमें मिल जाते हैं और ढूँढ़ने पर उस प्रणव के लिङ्ग को नहीं पाते। चारों वेद और अठारहों पुराण उसके अन्दर हैं। हे नारद! सदाशिवजी को वेद प्रणवरूप वर्णन करते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। सदाशिवजी जो दाहिना आकार है, उससे सृष्टि उपजाते हैं। बायाँ अङ्ग जो उकार है, उससे पालन करते हैं। हृदय में जो मकार है, उससे प्रलय प्रकट होता है। सम्पूर्ण वर्णमाला के अक्षरों से श्रीसदाशिवजी का शरीर अलंकृत है। शिर आकार, उकार दाहिनी आँख, दोनों ओकार दोनों कान हैं। दोनों ऋकार दोनों कपोल, नकार नाक, दोनों ई दोनों होंठ, दोनों ऊ दोनों ओर के दाँत और जो अनङ्ग है, वह जिह्वा है। अ तालू है। कवर्ग पाँच अक्षर दाहिनी भुजा, चवर्ग पाँच अक्षर बाईं भुजा, टवर्ग पाँच अक्षर दाहिना पाँव, तवर्ग पाँच अक्षर बायाँ पाँव, प पीठ, फ दोनों पाँजर, भ कन्धा, म हृदय और यवर्ग सदाशिवजी का वीर्य प्रकट करते हैं। ऐसा जो सदाशिवजी का शरीर अक्षरों से अलंकृत है, उसका ध्यान करके अति प्रसन्नता प्राप्त होती है। हमने और विष्णुने यह रूप सदाशिवजी का जो प्रणव था, देखकर अति प्रसन्नता से दोनों हाथ जोड़कर दण्डवत् की और बहुत स्तुति और प्रशंसा की।

सातवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अति प्रशंसा, महिमा और स्तुति के पीछे हमने प्रार्थना की कि आप अपना स्वरूप हम पर प्रकट कीजिए। यह हमसे और विष्णुजी से सुनकर सदाशिवजी शक्ति संयुक्त प्रकट हुए। शरीर उनका श्वेत पत्थर के सदृश, भस्म धारण किये, शिर में जटा और बायें ओर शक्ति उत्तम वस्त्र और अच्छे गहना धारण किये हुये, दर्शन दिये। ऐसा स्वरूप देखकर हम दोनों को इतना सुख हुआ कि नेत्रों में से पानी बह निकला और प्रेम के कारण बाणी बन्द हो गई। परन्तु चेतकर हम स्तुति करने लगे। स्तुति के पीछे प्रार्थना की कि हमारी लड़ाई और वार्ता शुभ हुई कि दयानिधान के दर्शन हुये। धन्य भाग्य और शुभ कर्म हमारे उदय हुये कि आपको देखकर लोक-परलोक का सुख प्राप्त हुआ। हमसे जो कुछ अपराध हुआ हो, वह क्षमा कीजिये। इस प्रकार हम और विष्णुजी बहुत प्रशंसा करके अहम्भाव और अहंकार से रहित हो सदाशिवजी को अपना स्वामी बनाया। अति नम्रता और शील से हाथ जोड़ महिमा बखान कर दण्डवत् की और शिर नीचे किये उनके चरणारविन्द को देखते रहे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आठवाँ अध्याय ।

ब्रह्मा ने कहा हे नारद ! हमारी और विष्णुजी की जिह्वा से स्तुति और प्रशंसा सदाशिवजी सुनकर हँसे और बोले कि हेब्रह्मन् ! हे विष्णो ! जो हम कहते हैं, वह सुनो । अर्थात् तुमने मोह में आकर परस्पर लड़ाई की । अन्त में हमने तुम दोनों को अपना भक्त समझकर अपने लिङ्ग प्रकट किये, जिससे तुम दोनों ने हमको पहिचाना । अब उत्तम है कि परस्पर वार्ता को जाने दो और अहंकार का त्याग करो । वह काम करो जिसकी हम आज्ञा दें । यह कहकर हमको श्वास के मार्ग से सब वेद पढ़ा दिये और पाँच मन्त्र बता दिये । जिसमें सब विद्याएँ हैं । पहिले प्रणव की शिक्षा दी जिसके अक्षर वेद हैं । पहिला वाक्य सदाशिवजी का वही है । फिर गायत्री, जो वेदों की माता है और जिसमें २४ अक्षर हैं, वर्णन की । उसके पीछे महामृत्युञ्जय मन्त्रकी शिक्षा दी । फिर चिन्तामणि सिखाया, जो भक्तों को बहुत सुख को प्राप्त करे । यह वेद और मन्त्र पढ़कर हम अति सुखको प्राप्त हुये । हम और विष्णुजी सदाशिव को देखने लगे और दर्शन में इसी तरह डूब रहे, इस प्रकार सुख और स्वाद उस दर्शन से पाया जिसको हम वर्णन नहीं कर सकते । जैसे कि दरिद्री को सरदी में धूप और कामी पुरुष को स्त्री मिलने से अत्यन्त सुख प्राप्त होता है, उसी प्रकार हम दोनों को सदाशिव की मूर्ति अतिप्रिय लगी और अचेत हो गये । यह हमारा प्रेम देखकर सदाशिवजी अति प्रसन्न हुये और बोले कि ब्रह्मा तुमको धन्य है जो सब सृष्टि के स्वामी हुये । मेरी ओर देखकर कहा कि तुम संसार उत्पन्न करो और विष्णुजी से कहा कि तुम उनकी पालना के अधिकारी हो । वेदों को देखकर मुझको पहिचानो और जैसा योग्य है; उस प्रकार अपना काम अच्छे प्रकार से करो । मुझको वेद ही जानो और जो वेद में लिखा है, वही हमारी आज्ञा मानो । यह श्रवणकर हम दोनों ने प्रार्थना की कि आप भी अवतार लीजिये और हमारी सहायता कीजिये । आप तीनों लोकों की पालना करके अपने अधिकार में अन्तकाल को रखिये हमारा यह मनोरथ है । फिर हमने प्रार्थना की कि आप हमको पहिले पूजन की रीति बताइये कि उसके अनुसार करें । यह श्रवणकर सदाशिव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जी ने वर्णन किया कि संसार में तुमसे अधिक हमको प्रिय कोई न होगा। अब सब शोक और चिन्ता आदि से रहित होकर सुख करो तथा औरों को सुख दो। पहिले जो हमने तुमको लिङ्ग का स्वरूप दिखाया था उसी का पूजन करना योग्य है। उसी के पूजन से अधिक सुख मिलेगा। लिङ्ग की उत्पत्ति यह है कि जिस क्षेत्र में सब संसार लीन हुआ है, उसका नाम लिङ्ग है। ऐसे लिङ्ग के पूजन से इस लोक और परलोक में सुख मिलेगा। जिस समय तुम पर कोई आपत्ति पड़े, हमारे लिङ्ग का पूजन करना। जो हमारे लिङ्ग का पूजन करेगा, उसके सब पाप क्षमा हो जावेंगे। लिङ्ग के पूजन की महिमा अधिक है। जो मनुष्य लिङ्ग की स्तुति हमारे पास पढ़ेगा, उसको दोनों लोक में सुख होगा और वर्णन किया कि हम आप समय पर प्रकट होंगे और तुम्हारे नगर में आवेंगे। उस अवतार का नाम रुद्र जानना और मुझमें तथा उसमें कुछ भी न्यूनाधिक्य न समझना। मुझको सब सृष्टि के जीवों में समझना। हम चारों एक ही स्वरूप हैं। जो कोई अलग विचारेगा उसको अधिक दुःख प्राप्त होगा। यह कहकर सदाशिवजी ने बड़ा गुप्त भेद हम पर प्रकट किया और कहा कि यह भेद वेद में अधिक गुप्त है। अर्थात् सगुणरूप शिव और शक्ति दो नामों से होते हैं और तीनों गुण से तीनों देवता भिन्न-भिन्न उपजते हैं। एक समय तो पहिले विष्णुजी, फिर ब्रह्मा और फिर हर उत्पन्न होते हैं। अन्य समय पहिले महादेव, किसी समय पहिले विष्णु और फिर ब्रह्मा। सो तुम दोनों शक्ति के चिह्न से रजोगुण और सतोगुण को धारण करते हो। हर महादेव हमारे अंश और हमारे स्वरूप हैं और तमोगुणी हैं। अन्त में अन्तकाल कर देते हैं और जहाँ तक कि सर्वसृष्टि का विस्तार है, वह सब शक्ति का घेरा समझ लेना। उसको भी नष्ट करनेवाला स्वामी रुद्र जानो। परन्तु जिस निमित्त हम तमोगुण धारण करके रुद्र का स्वरूप बनाकर प्रकट होंगे, सो सब हमने वर्णन कर दिया। तुम दोनों जो काला और लाल स्वरूप धारण किये हो, इस निमित्त हर श्वेत स्वरूप होंगे। सो तुम पर तमोगुण न व्यापेगा और हर की यह अवस्था होगी कि वे रात्रि-दिन पवित्र योग में प्रवृत्त रहेंगे। उनका स्वरूप हमारा ही सा होगा। ऐसा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जानकर अब तुम तीनों लोक को उत्पन्न करो, जिसमें अनेक प्रकार के अधिक जीव, देवता, मनुष्य और असुरादि हों। फिर विष्णुजी की ओर देखकर कहा कि तुम उत्तम भाँति से जीवों की पालना करना। हम हर का स्वरूप धारकर प्रेम के समय दोनों की सहायता करेंगे और वर्णन किया कि हमारे दाहिनी ओर के शरीर से ब्रह्माजी और बायें से विष्णुजी तथा हृदय से रुद्रजी प्रकट होंगे। तीन प्रकार से हम अलग हैं और उमा जो शक्ति हैं वह दो अंशों में प्रकट होंगीं जिससे तुम अलग न समझे जाओगे। पहिला भाग लक्ष्मीजी होकर विष्णुजी को मिलेगी। दूसरा भाग सुरा जो ब्रह्मा लेंगे और उमा आपही प्रकट होकर हरको अङ्गीकार करेंगी। सती नाम उनका संसार में होगा। वे तीनों लोक की उत्पन्न करनेवाली हैं। इसी प्रकार तीनों देवता शक्ति को लेकर आज्ञानुकूल वेद का पूजन करेंगे। सो तुम दोनों को उचित है कि हमारी आज्ञानुसार चलो और हर तुमको चिन्ता से रहित करते रहेंगे। सहस्र चौयुगी के व्यतीत होने पर ब्रह्मा का एक दिन समझा जावेगा। सो एक सौ वर्ष ब्रह्मा की आयुर्दाय जानो। ब्रह्माजी की आयु विष्णुजी का आधा दिन और हर का एक दिन है। ऐसा दिन व्यतीत होने पर सगुणरूप सदाशिव निर्गुण होकर अन्तकाल करते हैं। यह कहकर सदाशिवजी ने दोनों हाथ हम दोनों के शिर पर फेरा। जिस समय हमारा और विष्णुजी का शिर सदाशिवजी ने छू लिया, उस समय का सुख हम किस जिह्वा से वर्णन कर सके। ऐसी शिक्षा और उपदेश देकर सदाशिवजी अन्तर्धान हुये। हम दोनों शोकवान् होकर दोनों हाथ जोड़कर शिव-शिव कहते जिस ओर को वे गुप्त हुये थे, उसी ओर को दण्डवत् करते रहे और वही स्वरूप सदाशिव का हृदय में दृढ़कर चुप हुये।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि सदाशिव की आज्ञा पाकर विष्णुजी भी गुप्त हो गये और सब लोक को ब्रह्माण्ड से अलग कर दिया। हमने भी सदाशिव की आज्ञानुकूल जीवों को उत्पन्न करने की इच्छा की। सदाशिवजी की कृपा से शक्ति को पाकर स्वच्छ ब्रह्माण्ड अर्थात् उत्तमोत्तम सृष्टि को देखा। अब हम जीवों की उत्पत्ति का वर्णन करते है, जैसा कि वे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकृति और पुरुष से उत्पन्न होते हैं। अर्थात् जब सदाशिव और प्रकृति ने चाहा तो उनकी इच्छा करके मति अर्थात् बुद्धि उपजी। उसको सूत्र और महत्तत्त्व करके भी वर्णन किया है। फिर उससे अहंकार, अहंकार से तीनों गुण—सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण उत्पन्न हुये। इन्हीं तीनों गुणों से धरती और आकाश हुये। धरती से गन्धादि हुये और महाभूत से सर्व जीव। एक अण्डा सात दलों का प्रकट हुआ। इस प्रकार क्रम से देवता और मनुष्य आदि हुये। फिर हमने सदाशिव के चरणों का ध्यान करके सबसे पहिले सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ ऋभु ४ सनत्कुमार ५ पाँच मनुष्यों को उत्पन्न किया। ये बड़े पवित्र, योगी, त्यागी और ब्रह्मविद्या जाननेवाले, सदाशिवजी के ध्यान के अतिरिक्त और कुछ न जानते थे। हमसे कहा कि हम सृष्टि उत्पन्न न करेंगे। मैंने अवज्ञा करने के कारण क्रोध किया, परन्तु विष्णुजी के समझाने से क्रोध शान्त हुआ। फिर मैं अति परिश्रम से अधिक समय तक तप करता रहा। फल न मिलने के कारण आश्चर्यवान् हुआ और सदाशिवजी की माया से ऐसा डरा कि नेत्रों से अश्रु की बूँदें टपकीं। उस समय सदाशिव ने दयावान् होकर मुझको यह बुद्धि दी कि जिससे मेरी यह इच्छा हुई कि जो आप सदाशिवजी हमारे पुत्र होकर आवें तो हमारे सर्व कार्य सिद्ध हो जायँ। यह वार्ता मन में ठहराकर अधिक समय पर्यन्त फिर योग में लीन रहा। यह मेरा तप ऐसा अङ्गीकार किया कि सृष्टि की वृद्धि के लिये शिवजी हमारी भौं के नीचे से उत्पन्न हुए और सब चिह्न अपने उस मूर्ति में प्रकट कर दिये। अर्थात् शिर में गङ्गाजी की धारा बहती हुई, माथे में चन्द्रमा, त्रिपुण्ड्र धारण किये, पाँच मुख, चार हाथ और सर्व अङ्ग उसी प्रकार के जैसा कि ऊपर वर्णन हो चुका है, मेरी सहायता के निमित्त प्रकट हुये।

दसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि यह रूप सदाशिवजी का प्रकट हुआ और मुझसे कहा कि जो कहो हम वेद की आज्ञानुकूल करें। मैं सदाशिवजी की माया में डूबकर पिता के सदृश पुत्र को शिक्षा देने लगा। मैं ऐसा सुपुत्र पाकर फूला न समाया और कहा कि जब तुम ऐसे पुत्र उत्पन्न हुये तो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमारे सर्व मनोरथ पूर्ण हो जावेंगे। मैंने कहा कि तुम्हारे ग्यारह नाम वेद के अनुसार विस्तार से ये हैं—मन्यु १ मनु २ महिनस ३ महान् ४ शिव ५ क्रतुध्वजा ६ उग्ररेता ७ भव ८ काल ९ वामवेद १० धृतव्रत ११ और ग्यारह रुद्राणियों के ये नाम हैं—धी १ वृत्ति २ उसना ३ उमा ४ नियुत्सर्पि ५ इला ६ अंबिका ७ इरावती ८ सुधा ९ दीक्षा १० रुद्राणी ११। इसके सिवाय तुम्हारे और भी नाम जैसे रुद्र, महेश्वर, हर, जगदीश, आदि अनेक होंगे और पाँच तत्त्व अर्थात् जल १ धरती २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ और सूर्य, शशि, जीव, हृद ये योगस्थान तुम्हारे स्थान होंगे। अपनी स्त्रियों को भी उन्हीं स्थानों विषे अपने साथ लिये रहो और सन्तान उत्पन्न करो जिससे सृष्टि अधिक हो। यह वचन श्रवण कर शिवजी ने अति कुपुत्र भूत, प्रेत, पिशाच, कूष्माण्ड, बेताल, ब्रह्मराक्षस आदि सहस्र प्रकार के जीव भयंकर उत्पन्न किये जिसको देखकर हमको आश्चर्य हुआ और भयवान् होकर कहा कि ऐसी सन्तान को इसी समय नष्ट करो और सत्पुत्र उत्पन्न करो। यह सुनकर शिवजी को हँसी आई और कहा कि ऐसे जीव जिसको मरना-जीना हो, हम उत्पन्न न करेंगे, तुम उत्पन्न करो। जो पुरुष चिन्ता का मार्ग छोड़कर सुखी रहेंगे, उनको हम मुक्त करेंगे। हमको न भूलना, ऐसे कहकर सदाशिवजी ने अपनी माया को खींच लिया। उस समय में चेता और मैंने अपना शिर दण्डवत् करने के वास्ते झुकाया। थोड़े समय के पीछे मैंने चेत कर स्तुति की और चरणों पर गिर पड़ा। तब सदाशिवजी ने मुझको धरती से उठाकर मेरे सब शरीर पर हाथ फेरा। उस समय सनकादि आकर चरणारविन्दों पर गिरे और महिमा बखानी। सदाशिवजी ने दयालु होकर अति उत्तम बुद्धि कृपा की और फिर हमारे ललाट के मार्ग से गुप्त होकर अपने लोक को चले गये। हे नारद! हम तीनों देवताओं में कुछ अन्तर नहीं है। कभी विष्णुजी हमारे गृह उत्पन्न होते हैं और किसी समय हम विष्णु से उत्पन्न होते हैं। इसी प्रकार से किसी समय शिव हमारे पुत्र और किसी समय हमारे पिता हो जाते हैं। अब हम फिर सृष्टि का वर्णन करते हैं, जिस प्रकार से उत्पन्न की गई है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ग्यारहवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हमने सदाशिवजी की आज्ञा पाकर पहिले आकाश और धरती पाँच तत्त्व, पहाड़, मूल और कला आदि उत्पन्न किये। उसके पीछे अपनी इच्छा से विरञ्चि १ अङ्गिरस २ शातातप ३ भृगु ४ पुलस्त्य ५ पुलह ६ वसिष्ठ ७ ये सप्तऋषि हुये। तुम १ कर्दम २ और दक्षादि दश पुत्र मैंने अपने हर अङ्ग से उत्पन्न किये। दाहिने स्तन से मनुष्य और पीठ से पाप और इसी प्रकार प्रीति, तृष्णा आदि हर अङ्ग से प्रकट किये। और तारे, दिशा, दिक्पति, चन्द्रमा आदि क्रम से उत्पन्न किये। परन्तु यह सृष्टि अपनी उत्पन्न की हुई, तामसी देखकर मुझको चिन्ता हुई। रात्रि के कारण क्षुधातुर हुआ और राक्षस यक्षादि के खाने को दौड़ा। अपना शरीर भयंकर बनाकर काल को उपजाया। फिर ऐसा शरीर त्याग कर स्त्री का स्वरूप मैंने धारण किया। उस समय सब मुनि मेरे ऊपर दौड़े। मैंने वह शरीर बदलकर अन्य शरीर को धारण किया। अपने घुटने से असुरों को उत्पन्न किया। वीर्य से भरे हुये थे। मुझको उन्होंने न पहिचाना। निर्लज्जतापूर्वक काम की इच्छा से मेरे पास आये। उनसे अधिक डरकर मैंने सदाशिवजी से रक्षा माँगी और प्रार्थना की कि इनको आप झटपट नष्ट करें। आज्ञा हुई कि इस शरीर को बदल डालो। मैंने ज्योंही शरीर को बदला असुरादि अचेत हो गये। वही सायंकाल समय फिर आया। फिर मैंने मनुष्य उत्पन्न किये। उस समय मेरा शरीर चाँदनी रात्रि के सदृश प्रकाशवान् था। फिर दूसरा स्वरूप धारकर, राक्षस, गन्धर्व, यक्ष, गुह्य, किन्नर, कम्बरिष, विद्याधर, ईश्वर, भूत, प्रेत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस, बेताल, भुजंग, डाकिनी, शाकिनी, योगिनी, कूष्माण्ड और काम की इच्छा करनेवाली स्त्री को उत्पन्न किया। परन्तु ऐसे जीव के उत्पन्न करने से मन और हृदय को प्रसन्नता न हुई। शिवजी की इच्छा से फिर दूसरी सृष्टि जैसे हाथी, शेर, बैल, ऊँट, घोड़ा आदि जो कुछ भी ब्रह्मज्ञान नहीं जानते और जो केवल बुद्धिहीन हैं, उपजाये। सर्वसृष्टि के बनाने के पीछे मैंने विचार किया कि ये क्या काम करेंगे। ऐसा विचारकर मैंने सदाशिवजी का ध्यान किया तो झटपट चारों वेद मुझसे उपजे। धनुर्विद्या, गानविद्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और सर्वपुराण, कथाओं से संयुक्त जो पाँचों वेद कहलाते हैं, प्रकट किया। सब आश्रम अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, संन्यस्त, वानप्रस्थ व्रत संयुक्त और सब विद्या और धर्मशास्त्र, नीति, मोक्ष, धर्म, काम, अर्थ और वैद्यकादि बनाये। जब मैं सृष्टि बनाकर तय्यार कर चुका तो विष्णुजी पालना करने लगे और महेश को धरती के थाँभने के निमित्त उत्पन्न किया। यह सृष्टि का वर्णन चिन्ता से रहित करके सुख देता है।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सृष्टि जो ऊपर वर्णन हुई सब शरीर और हृदय से उपजी, अब हम उस सृष्टि का वर्णन करते हैं जो सङ्ग करने से उत्पन्न होती है। यद्यपि हमने अनेक यत्न किये, परन्तु दृढ़ शक्ति प्राप्त न हुई। तब मैंने पूरा उद्योग कर और इन्द्रियों को अधीन कर सदाशिवजी का पूजन किया। इस कारण से कि ऐसे कार्य शिव की प्रसन्नता के बिना पूरे नहीं होते। अन्त में सदाशिवजी ने मुझको अपने दर्शन दिये। वह स्वरूप अर्धाङ्गी था। तात्पर्य यह कि दाहिनी ओर तो पुरुष का रूप जो सदाशिवजी का था और बाईं ओर स्त्री का रूप अर्थात् महारानी जगदम्बा जी प्रकट हुई। एक ओर जटा और दूसरी ओर सुगन्धित केश, एक ओर ललाट पर त्रिपुण्ड्र लगा हुआ दूसरी ओर बेंदी, एक में भस्म लगी हुई दूसरी में सुरमा लगा हुआ, एक ओर केवल नाक दूसरी ओर नासिका में अलंकृत नथ थी। एक ओर कण्ठ में तीन लकीरें दूसरी ओर सोने का गहना, एक ओर भुजा में सर्पादि लपटे हुये, दूसरी में बाजू पहिने हुये। एक हाथ में सर्प दूसरे में कङ्कण, एक ओर दश उँगलियाँ हैं दूसरी ओर रत्न के गहने, एक ओर मुण्डों की माला धारण किये दूसरी ओर हीरों की हमेल, एक ओर कटि में पटका बाँधे हुये दूसरी ओर रत्नों की करधनी पहिने हुये, एक ओर स्वर समूह भक्तों के सुख देनेवाले दूसरी ओर घुँघरू। ऐसा रूप अर्धाङ्गी देखकर मैं अति प्रसन्न हुआ। मैंने विचार कर लिया कि अब शीघ्र ही कार्य सिद्ध होगा। इस निमित्त दण्डवत् करके स्तुति करने लगा और प्रशंसा के पीछे प्रार्थना की कि धन्य भाग हमारे हैं कि आप ने दर्शन दिये मेरी स्तुति सुनकर सदाशिवजी हँसे और कहने लगे कि जिस मनोरथ के निमित्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमने इतना कष्ट भोगा, वह हम जानते हैं। तुम्हारी इच्छा अधिक सन्तान की सृष्टि रचने के विषय में है। यह कहकर सदाशिवजी और शक्ति अलग-अलग हो गये। उस समय मैंने शक्ति की महिमा बखानी और कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने सृष्टि उत्पन्न की, परन्तु वह बढ़ी नहीं है। अब कामदेव से सृष्टि उत्पन्न किया चाहता हूँ। आपसे शक्ति प्राप्त होना माँगता हूँ। आप दक्ष की पुत्री हूजिये। मैं आपका लड़का हूँ। यह सुनकर शक्ति ने दया से हँसकर सदाशिवजी की ओर देखा और वर्णन किया कि अच्छा, समय पर तुम्हारी नवासी हूँगी और हमारा नाम सती होगा। जिस समय दक्ष सदाशिव का अपमान करेगा, उस समय हम जायँगी। यह कहकर सदाशिवजी के शरीर में समा गईं और सदाशिव भी गुप्त हो गये।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजो! जिस प्रकार से कि यह सृष्टि मैथुन से उत्पन्न हुई, उसको हम क्रम से वर्णन करते हैं। मैंने सदाशिवजी से शक्ति पाकर एक पुरुष और एक स्त्री आधी-आधी अपने शरीर से उत्पन्न किया। पुरुष का नाम स्वायंभुवमनु और स्त्री का नाम शतरूपा हुआ। शतरूपा ने योग करके मनु ऐसा स्वामी पाया। दोनों, पुरुष और स्त्री, ने हाथ में हाथ मिलाकर हमसे कहा कि आप कुछ आज्ञा दीजिये। मैं अति प्रसन्न हुआ और आज्ञा दी कि पहिले सदाशिवजी का पूजन करो और फिर आज्ञा पाकर सन्तान उत्पन्न करो। यह श्रवण कर दोनों ने ऐसा योग किया कि सदाशिवजी स्वयं प्रकट हुये और बोले कि जो चाहो सो माँगो। मनु ने कहा कि आप क्या नहीं जानते। हमारे कहने की क्या आवश्यकता है। परन्तु आपकी आज्ञा पाकर कहते हैं। यद्यपि अपनी इच्छा को आपके सामने कहना मूर्खता है, परन्तु मैंने यह भी सुना है कि पिता की अवज्ञा करना घोर पाप है। अब आप जैसा हमारे लिये भला समझें वैसा करें। यह श्रवणकर श्रीसदाशिवजी बहुत प्रसन्न हुये और बोले कि हे मनो! तुम्हारा नाम संसार में रहे और प्रथम स्वामी संसार के तुम हो। मनुष्य की सृष्टि को उपजाओ। तुमको कुछ कष्ट न होगा। ब्रह्मा के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एक दिन के चौदहवें अंश तक तुम राजा रहो और अपनी स्त्री संयुक्त राज्य करो। तिस पीछे हम तुमको अङ्गीकार करेंगे, परन्तु हमको न भूलना और तीन प्रकार के ऋण तुमको करने योग्य होंगे—देवऋण १ पितृऋण २ ऋषिऋण ३। सो तीनों ऋण विद्या के पढ़ने, यज्ञ के करने और सन्तान उत्पन्न करने से उऋण हो जायँगे। फिर वह मनुष्य मुक्तस्वरूप गिने जायँगे। यह कहकर सदाशिवजी गुप्त हो गये। ऐसे वर पाकर दोनों मेरे निकट आये और सब वार्ता मुझसे कही। यह वचन श्रवणकर हम मनु और शतरूपा पर अति प्रसन्न हुये और आज्ञा दी कि सन्तान उत्पन्न करो। यह आज्ञा पाकर दोनों सृष्टि उपजाने लगे। पहिले दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ उत्पन्न कीं। एक लड़के का नाम परिवीरथ हुआ, जिसने गृहस्थ होकर अच्छी रीति पकड़ी और जिसकी सन्तान महाशीलवान् हुई। उसी कुल में श्रीकृष्णजी का अवतार हुआ। दूसरे का नाम उत्तानपाद, जिसके सन्तान में ध्रुव के सदृश योगी और भक्त उपजा। पहिली पुत्री का नाम अनवती था, जिसका विवाह मेरे पुत्र रुचि मुनि के साथ हुआ। वह पुत्र मुझे अति प्रिय था। इन दोनों से दो लड़के यज्ञ और दीक्षा उत्पन्न हुये। दूसरी लड़की, जिसका नाम देवहूती था, कर्दम मुनि के साथ ब्याही गई; जिससे कपिल मुनि का अवतार हुआ। कर्दम मुनि के दश पुत्रियाँ उत्पन्न हुईं—कला १ अनुसूया २ श्रद्धा ३ निवंच ४ कर्मांगति ५ शान्ति ६ अरुन्धती ७ ख्याति ८ बर्हती ९ और बृहति १०। कन्याएँ नौ ऋषीश्वरों को ब्याही गईं, जिनके नाम यह हैं—मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ और अथर्वण ९। तीसरी पुत्री मनुकी, जिसका नाम प्रसूति था उसका दक्ष के साथ विवाह हुआ और साठि कन्याएँ उन दोनों से उत्पन्न हुईं। उनमें से दश कन्याएँ दक्ष ने धर्मराज को दीं, सत्ताईस शशि को तेरह कश्यप को, चार तार्क्षपि को और भूत अङ्गिरस और कृशाश्व को दो-दो पुत्रियाँ दीं। इनकी सन्तानें अधिक प्रकट हुईं, जो विस्तार के भय से वर्णन नहीं हो सकती। देवता, मुनि, पक्षी, और ब्राह्मणादि अनेक प्रकार की सृष्टि उनसे उत्पन्न हुई। हमने, विष्णुजी ने और महादेवजी ने उसी कुल में जन्म लिया। इस विधि से दक्ष साठों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुत्रियों का विवाहकर मेरे निकट आये और सब वर्णन किया। फिर बोले कि अब आपकी क्या आज्ञा है? मैंने यह वार्ता श्रवण करके अपने पुत्र की प्रशंसा की और कहा कि तुमने अवश्य ही हमारी आज्ञा पाली। अब हम एक और बात की इच्छा करते हैं। तुम ऐसा यत्न करो कि जिसमें तुम्हारी लड़की शिव को ब्याही जावे जिससे तुम्हारा कार्य सिद्ध हो और मेरी सृष्टि पवित्र हो। यह वचन सुनकर दक्ष कठिन योग करने लगे और फल पाकर गृह में आये। शक्ति ने आकर दक्ष के गृह में अवतार लिया, जिससे १४ लोक को सुख प्राप्त हुआ।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हमने सृष्टि का प्रारम्भ वर्णन किया, अब जो तुम्हारी इच्छा हो वह करें। यह वचन श्रवण करके नारदजी बहुत हँसे और प्रसन्न होकर मुझसे प्रश्न किया कि आप ब्रह्माजी, विष्णुजी, महेशजी के लोकों का वर्णन कीजिये। मैंने यह प्रश्न श्रवण किया और श्रीसदाशिवजी का ध्यान करके सब लोकों का इस प्रकार वर्णन किया कि हमारे लोक का नाम सत्यलोक है। उसके ऊपर विष्णुजी और महादेवजी के लोक हैं, जिसे वेद और पुराण कहते हैं। श्रीलोक के ऊपर वैकुण्ठ है जो शरीर को सुख देता है। वह सोलह कोटि योजन चौकोण घिरा हुआ है। उसमें सोने के मन्दिर, रत्नों से भरे हुये बाग, फुलवारी और कुओं आदि से संयुक्त बने हुये हैं। अनेक प्रकार के वन, उपवन सुगन्धित पुष्पों से अलंकृत और फलों के भारों से सुशोभित हैं, जिनमें नाना प्रकार के पक्षी अपनी मिष्ट और प्रियवाणी से चहचहाते हैं। वहाँ विष्णुजी रमासमेत क्रीड़ा करते हैं। अपने भक्तों के दुःख दूर करके सर्वसृष्टि का राज्य करते हैं और सदाशिव के ध्यान में मग्न रहकर षट्-अक्षरीमन्त्र हृदय में जपा करते हैं। स्तुतिकर दोनों हाथ जोड़े दण्डवत् करते बैठे रहते हैं। अब हम उस लोक का वर्णन करते हैं जो स्वर्ग के ऊपर है। जो स्थान चिन्ता से मुक्त है अर्थात् वह स्वर्ग के ऊपर स्वामि-कार्त्तिक लोक है। वह चौंसठि योजन चौकोण है और चिन्ता, शोक, मोह और माया से रहित है। वहाँ सर्वदा सुख और आनन्द प्राप्त होता है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब गृह रत्नों से भरे हुये हैं। वहाँ के स्वामी शिवजी हैं, जिन्होंने तारकासुर का वधकर संसार को सुख दिया है और सदाशिवजी के पुत्र होकर श्रीसदाशिवजी की पदवी पर हैं। आप इस लोक के लाभ के निमित्त अपनी वीरता प्रकट करके सब संकट और कष्ट को दूर करते हैं। रात्रि-दिन सदाशिवजी का ध्यान करके मन्त्र षडक्षरी को जपा करते हैं और महिमा तथा स्तुति करते रहते हैं। उस लोक के ऊपर शक्तिलोक है। उस स्थान में सृष्टि की माता शक्ति भवानी वास करती हैं, जिनकी कृपा से मैंने सर्वसृष्टि को उत्पन्न किया। सूर्य, शशि, इन्द्र और देवता ऐसी जगन्माता की सेवा और पूजन करके चरणों का ध्यान करते हैं। अन्य चराचर उमा का तप करके सुखी रहते हैं। जानना चाहिये कि सब जीव शक्ति से ठहरे हैं। बिना उसके सब अशक्त हैं। यह जगदम्बा श्रीसदाशिवजी की स्त्री हैं और इन्हीं के अंशों से ब्रह्माजी अर्थात् हमारी स्त्री, रमा विष्णुजी की स्त्री और स्वधा, सिद्धा, विश्वा और इन्द्राणी हैं। यह शक्तिलोक बहुत सजा हुआ है। उसके किवाड़ रत्नों से जड़े हुये हैं और उसके खम्भे मूँगे की लकड़ी के हैं। उसका घेरा अट्ठाइस करोड़ योजन है। ऐसे गृह में शक्ति अपनी सहेलियों के साथ वास करती हैं और योग संयुक्त तीर्थ धर्म करती हैं। वह शिवजी की सेवा, प्रशंसा और स्तुति में मग्न हैं। शक्तिलोक के ऊपर शिवलोक है, जहाँ मोह और चिन्ता किसी को किसी समय प्रवेश नहीं करता। करोड़ों सूर्य के समान प्रकाश है। सब गृह सोने और रत्नों से जड़े हैं। अनेक अप्सरा नाचती हैं। जिस स्थान पर श्रीसदाशिव का सिंहासन है, वह भी रत्नों का है। अच्छी फुलवारियाँ और नदियाँ हैं। नदी के किनारे शुद्ध लोग रहते हैं। जिस स्थान में शिवजी रहते हैं उसके आस-पास बहुत से घर शिवभक्तों के हैं। शिवजी व शक्ति के अनेक घर विहरादि के बने हुये हैं। उस स्थान पर अपने सेवकों समेत वे विहार करते हैं। ऐसे सेवक शिवजी के पचास कोटि हैं। उस शिव बृहस्थल के बाहर की सब पृथ्वी रत्नों से जड़ी हुई है। यह शिवजी का लोक दो सौ छप्पन (२५६) कोटि योजन लम्बाई में है। उसके बीच में एक सुडौल सुखदायक, पवित्र और चिन्ता से रहित करनेवाला अच्छा घर है, जिसको देखकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अति प्रीति उपजे। रत्न के सदृश उसका प्रकाश है और करोड़ों सूर्य की सी वहाँ रोशनी है। उसमें बहुत बनावट बनी हुई है। यह पहिला स्थान शिवजी का है, जिसमें सफेद हीरों और रत्नों से दीवार बनाई गई है। मूँगे के खम्भे, रत्न के किवाड़ और जवाहिर लाल और हीरों से जड़ा हुआ है। उस मन्दिर के अन्दर एक सिंहासन जिसका वर्णन करना कठिन है और जो आश्चर्य को अधिक करे, रक्खा हुआ है। उसके ऊपर शिवजी बैठे हुये हैं। उन्हीं से हम विष्णुजी और महादेव उत्पन्न हुये। वही सबका स्वामी, स्वाधीन एकरूप है, जिसको वेद भी नहीं जानते। हम और विष्णु भी नहीं पहिचानते। वह महाशुद्ध, पवित्ररूप, अलखनिरञ्जन, अविनाशी, निराकार, अचिन्त्य, अगोचर और सिद्धरूप है। उसी लोक में शिव का अच्छा सा गोशाला है, जिसको धेनुलोक कहते हैं। उस गोशाले के स्वामी श्रीकृष्णजी व राधाजी हैं। वही सदाशिवजी की पूजा करते हैं। हे नारद ! यह विस्तार लोकों का हो चुका। अब और क्या सुना चाहते हो, वह कहो।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

सूतजी ने कहा कि यह वचन ब्रह्माजी से सुनकर नारदजी अति प्रसन्नता के कारण प्रीति और सुख के सागर में डूब गये। जब चिन्ता से रहित हुये तब प्रीतिसंयुक्त दोनों हाथ जोड़कर ब्रह्मा से नारद ने पूछा कि जो आपने शिवलोक को सबके ऊपर वर्णन किया, वह श्रवण करके हम अति प्रसन्न हुये। परन्तु एक सन्देह निश्शङ्क उत्पन्न हुआ जिसे मैंने आगे से सुना था कि शिवस्थान कैलाश पर्वत पर है और जो शिवपुरी में जाता है, उसको कैलाश प्राप्त होता है। न दूसरे स्थान में जैसा आप विस्तार से कहते हैं। सो आप वर्णन कीजिये कि यह शिवजी जो कैलाश में बास करते हैं, वही शिव है जिनका आप वर्णन करते हैं, अथवा अन्य हैं। आप विस्तार से ठीक-ठीक कहिये, जिससे यह मेरा विचार जाता रहे। यह प्रश्न नारद से सुनकर ब्रह्माजी ने कहा कि तुम धन्य हो। मैंने अब जाना कि तुम मेरे सुपुत्र और परम शैव हो। यद्यपि तुम जानते हो परन्तु सृष्टि की भलाई के निमित्त ऐसा प्रश्न करते हो। सो तुमको ऐसा ही योग्य है। इस कारण कि उत्तम पुरुषों की यही रीति है और शिवजी भी ऐसी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वार्त्ता में बहुत प्रसन्न होते हैं। सो अब हम विस्तार से कहते हैं कि जो परब्रह्म सगुणरूप महेश्वर जिसकी इच्छा से शक्ति उत्पन्न होकर शिवरानी हुईं, वही शिव अपनी शक्ति से संसार को उत्पन्न करते हैं। उनके लोक काशी, ब्रह्मपुर और आनन्दवन हम वर्णन कर चुके हैं। फिर हमने सहायता के निमित्त विनय करके कहा कि आप भी सगुणरूप अङ्गीकार करके आइये। शिवजी ने यह श्रवण कर कहा कि हम समय पर आवेंगे और नाम आदि जिस प्रकार कि मुझको देखते हो और जैसा कि मैं हूँ, सब अपने अवतार में प्रकट करूँगा। यह कहकर शिवजी गुप्त हुये और समय पर प्रकट हुये। मेरा मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कैलाश पर्वत पर आये और गौरी को अलग करके आप कठिन योग करके तीनों लोक की पालना की। अब हम वह कारण विस्तार से वर्णन करते हैं, जिससे शिवजी कैलाश पर्वत में आये। यह वर्णन जो अब हम करते हैं, कल्पभेद के कारण दूसरे प्रकार पर है। अर्थात् शिवजी की आज्ञा पाकर हमने संसार को उपजाया। चौदह लोक और उपलोक, द्रुपदपुरी और कपिला आदि जिसके देखने से अति प्रसन्नता प्राप्त होती है, जहाँ काली मृत्युरूप बैठी है, जहाँ गङ्गाजी बह रही हैं, जो पापों को नष्ट करती हैं, वहाँ कपिलमुनि का गृह पापों को दूर करनेवाला है। उस स्थान में एक ब्राह्मण यज्ञदत्त उत्पन्न हुआ। वह यज्ञविद्या में बड़ा यशवन्त हुआ, जिसको वहाँ के राजा ने बहुत-सा धन दिया। वह वेद को ऋचा-समेत जानने वाला, वाचाल, शुद्ध मन, शीलवान्, वेद में निपुण, उपकार करने में प्रसिद्ध, उदार और शिवजी का बड़ा भक्त था। उसकी स्त्री अतिपवित्र, पतिव्रता, गृहकार्य में अति चतुर, स्त्रीधम की जाननेवाली और भले कार्यों को देखा करती थी। थोड़े समय में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम गुणनिधि रक्खा। कुछ दिनों के पीछे उसने अनेक विद्या सीखीं। परन्तु थोड़े दिनों के पीछे उसने अपने कुल की रीति को छोड़कर बुरी रीति पकड़ी। एक वार उसने बुरे मनुष्यों से संगति की। उसी से उसकी बुद्धि नष्ट हो गई। अच्छे और बुरे कार्य संगति के प्रवेश से होते हैं। भले मनुष्य संगति से बुरे हो जाते हैं। अज्ञान अवस्था में गुणनिधि बुरी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

संगति के मनुष्यों के निकट जाया करता था। शनैः शनैः उसके सब धर्म नष्ट होने लगे और वेद के विपरीत बुरे कार्य करने लगा। अनेक कार्यों में से उसके थोड़े से बुरे कार्य यह थे कि उसने तीनों समय की संध्या का त्यागकर स्नान को भी छोड़ दिया। वेद और धर्मशास्त्र की रीति से जो उचित-अनुचित और योग्य-अयोग्य के धर्म थे, उनको भी त्याग दिया। वह वेद नहीं पढ़ता था, जुआ बहुत खेलने लगा, पिता की सर्व माया उड़ा दी और अपनी माता से रुपया लेकर जुआरियों को दे दिया। उन लोगों से जो छली, वेद, धर्मशास्त्र, ब्राह्मण, देवता की बुराई बखाननेवाले, विष्णुजी और शिवजी की निन्दा करनेवाले थे, उनसे मिल मित्रता उपजाई। इस प्रकार वह सबसे बड़ा छली और जुआरी हुआ। यद्यपि उसकी माता उसको नित्य उपदेश करती, परन्तु वह किञ्चित भी पिता के निकट न जाता। जिस समय उसकी माता गृहकार्य करती, वह घर की द्रव्य चुराकर ले जाता। एक बेर उसके पिता ने अपनी स्त्री से पूछा कि 'गुणनिधि' कहाँ गया है? उसने उत्तर दिया कि स्नान, देवतों का पूजन और भोजनकर अपने मित्र और पाठकों के साथ पाठशाला गया है। इस प्रकार उसकी माता ने उसके अवगुणों को छिपाया। हे नारद! लड़का कैसा ही कुपुत्र हो, पर उसकी माता उसका किसी अवस्था में बुरा नहीं चाहती।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि इसी प्रकार जिस समय उसका स्वामी पुत्र का वृत्तान्त पूछता, वह उसी प्रकार उत्तर देती। इस कारण यज्ञदत्त ने अपने पुत्र के अवगुण न जाने। कुछ समय तक वह इसी प्रकार के काम करता रहा। जिस समय वह सोलह वर्ष का हुआ, उसका विवाह कर दिया गया। विवाह में बहुत धन खर्च हुआ। उसको स्त्री पतिव्रता और शीलवती मिली। परन्तु जब अपने स्वामी के अवगुण किसी से श्रवण करती तो प्रतीत न करती। यह रीति उत्तम और पवित्र पतिव्रता स्त्री की है कि अपने स्वामी के अवगुण श्रवणकर सेवा और टहल करती है। सो गुणनिधि ने यद्यपि ऐसी पवित्र पतिव्रता पाई तो भी कुसंगति को न छोड़ा। उसकी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माता सर्वदा उपदेश देती। कथाओं के उत्तमोत्तम दृष्टान्त सुनाकर समझाती कि हे गुणनिधि! तुम हमारे इकलौते पुत्र हो। इस कारण यह त्याग दो। तुम्हारे पिता अति क्रोधी हैं। उनसे तुम अभय हो। वह तुम्हारे अवगुण नहीं जानते, क्योंकि पूछने पर भी मैं नहीं कहती। जो वह किसी दिन सुन लेगा तो हमको और तुमको दण्ड देगा। इससे उत्तम है कि कुसंगति को त्यागकर अच्छी संगति करो। विद्या के सीखने में उदार हो जो ब्रह्मकार्य है, उनमें चित्त दो। तुम्हारी स्त्री, सुन्दर, बुद्धिमती, महारूपवती और बड़े कुल की है। उसी प्रकार तुम भी हो। ऐसी स्त्री के साथ सुख और विहार करो। ऐसी स्त्री को त्याग देना महापाप है। इस कारण अन्य स्त्रियों को छोड़ दो। उत्तम कार्य करो और पिता के धर्म पर चलो। वरन् सारा संसार तुमको बुरा कहेगा। तुम्हारा श्वसुर जो मान योग्य है, यह अवस्था तुम्हारी सुनकर हमको व्यंग्य कहेगा। मुझको और अपने पिता को किस कारण लज्जावान् कराते हो। तुमको उचित है कि अपने पिता के अनुसार काम करो। विचारो कि तुम दोनों ओर से उत्तम कुल के हो। और घरों के लड़कों को देखो कि वह वेदपाठी हैं। जब तुम्हारे ऐसे अवगुण समय का राजा सुनेगा तो तुम्हारे पिता से अप्रसन्न होगा और मासिक न देगा। अभी तो सब मनुष्य कहते हैं कि तुम यह अवगुण लड़कपन से करते हो, मगर फिर लोग हँसेंगे और कहेंगे कि अब तुम्हारा कुल अति पवित्र हुआ। सब तुम्हारे पिता की निन्दा करेंगे और पितृ नरकगामी होंगे। सब पुरुष मुझको अवगुणी बतावेंगे कि इसने पापकर्म से गर्भ धारण कर ऐसा कुपुत्र उत्पन्न किया, क्योंकि तुम्हारा पिता निष्पाप है। वह वेद और धर्मशास्त्र में उदार है और मैं भी अपने स्वामी के सिवाय और किसी को नहीं जानती। निष्पाप होकर गृहकार्य में चतुर हूँ। हमारे साक्षी श्रीसदाशिवजी हैं कि मैंने मासिकधर्म में भी मूर्ख की स्त्री नहीं देखी। परन्तु उसकी इच्छा है कि तू ऐसा कुपुत्र दुःखदायक उत्पन्न हुआ। अपना दुःख कहाँ तक वर्णन करूँ। यह कर्महीनता के लक्षण हैं। इस प्रकार गुणनिधि की माता उसको उपदेश देती, परन्तु गुणनिधि कब विचार करता था। हे नारद! यद्यपि मेरे सदृश गुरु मिलता तो भी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उस मूर्ख के मन में बुद्धि न उपजती, जैसा कि अमृत के बरसने से बेत के वृक्ष में फल नहीं आते और न फूलता है। अन्त में गुणनिधि की माता उपदेश करते-करते थक गई, परन्तु गुणनिधि ने कुछ न माना। वह सर्वदा, अहेर खेलता, चोरी और मद्यपान करता था। चुगुली बहुत खाता था, मांस खाकर पराई स्त्री से भोग करता और पातुरों के साथ भोग करके जुआ खेलने में समय व्यतीत करता था। वह तो सम्पूर्ण कुकर्मों की मानों खानि हो गया। पिता का धन चुराकर जुए और वेश्याओं के भोग में खर्च डाला और निर्धन हो गया। जितने बहुमूल्य रत्न और उत्तम वस्त्र उसके पिता ने विद्या से राजा के यहाँ से प्राप्त किये थे, उनमें से कुछ न रहा। तब एक दिन अपनी माता को पूर्ण निद्रा में पाकर अँगूठी, जो उसके हाथ में थी, चुपचाप उड़ा ली। उसको भी जुआरियों ने जीत लिया। अकस्मात् वही अँगूठी यज्ञदत्त, उसके बाप, ने एक जुआरी के पास देखकर पहिचान ली। उस पुरुष से अलग जाकर पूछा कि तुमने यह अँगूठी कहाँ से पाई है? जुआरी ने उत्तर दिया कि यह अँगूठी और इसी प्रकार की अनेक अँगूठियाँ हमारे पिता के घर हैं। मैंने जाना कि तुम पराया धन देखकर तृष्णा करते हो। ऐसी चतुराई किससे सीखी है? इसी प्रकार के अनेक असत्य वचन कहे। तब यज्ञदत्त क्रोधवान् होकर कहने लगा कि अब तुम हँसी छोड़ दो और छल आदि से रहित होकर सत्य-सत्य वर्णन कर दो। यह अँगूठी मुझको राजा ने दी थी। तुम इसको ले नहीं सकते। परन्तु जब उन्होंने दृढ़ता से जाँचकर पूछा तो जुआरी ने सत्य-सत्य वृत्तान्त विस्तार से कह सुनाया और कहा कि तुम मुझको भय देते हो। हमने चोरी नहीं की। यह क्या परन्तु अन्य वस्तु हमने आपके लड़के से जुए में जीता है। रत्न, सोने चाँदी के जेवर, पीतल, ताँबे और फूल आदि के बासन जो तुम्हारे घर में थे, वे सब मनुष्यों ने ले लिये। नित्य तुम्हारे लड़के को नङ्गा करके मुस्कें बाँध हाथों से ताड़ना करते हैं। तुम्हारे पुत्र के समान और दूसरा जुआरी संसार में कोई नहीं है। वह केवल जुआरी ही नहीं वरन् चोर, महापापी और वेश्यागामी भी है। ऐसे वचन जुआरी के श्रवणकर यज्ञदत्त आश्चर्यवान् हुआ और वस्त्र से अपना मुख लपेट शिर नीचे किये शोकवान् रुदन करता हुआ घर आया और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्त्री से कहा कि गुणनिधि कहाँ है और वह हमारी अँगूठी कहाँ है। यह वचन सुनकर स्त्री ने भयवती होकर चतुराई से उत्तर दिया कि इस समय मुझको अनेक कार्य हैं, तुम्हारा भी पूजन का समय है और तुमको अतिथियों से अति प्रेम है, उनके निमित्त भोजन बनाना है। मैंने किसी स्थान में अँगूठी को रख दिया है, परन्तु स्मरण नहीं है। जिस समय कि आवश्यक कार्यों से छूटूँगी, उस समय अँगूठी दे दूँगी। यह सुनकर यज्ञदत्त ने क्रोध किया कि हे सुपूत की माता, छलवार्त्ता में चतुर! मैंने जब तुझ से पूछा कि गुणनिधि कहाँ है, तब तूने यही उत्तर दिया कि अभी गुणनिधि अपने साथियों सहित पाठशाला गया है। अँगूठी नहीं मिलती तो जाने दो परन्तु और वस्तु हमको दिखाओ। यह पुत्र गुणनिधि किन पापों से हमारे गृह में उत्पन्न हुआ। सो अब तुम पुत्र की प्रीति त्याग करो। इस कारण कि कुपुत्र कुछ भी सुख नहीं देता। अब मुझको बिना पुत्र के रहने की इच्छा है। मुझे ऐसी सन्तान नहीं चाहिये। अब तुमको योग्य है कि हाथ में कुश और जल लेकर लड़के के नाम तिलाञ्जलि छोड़ो हम जब तक कि ऐसा न कर लेवेंगे, तब तक भोजन न करेंगे। यह वचन अपने स्वामी का श्रवणकर गुणनिधि की माता चरणों पर गिर पड़ी और कहने लगी इस बेर क्षमा करो। यह कहकर गुणनिधि की माता ने मौन किया और यज्ञदत्त का भी क्रोध कुछ कम हुआ।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि जब गुणनिधि ने यह वृत्तान्त श्रवण किया तब बहुत चिन्ता और शोक में डूबकर अपने को भाग्यहीन समझा और रुदन करके कहने लगा कि हाय-हाय हे मेरी सहायक माता! मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ? तुमने मुझको अनन्त बेर उपदेश किया, परन्तु मुझको आपकी शिक्षा देनी उत्तम न जँची और भाग्य की हीनता से न समझा। सो मैं कहाँ जाऊँ और क्या कार्य करूँ? मुझको इस काल में कुछ नहीं भासता। मुझे धिकार है और मेरे भाग्य को भी सहस्रों बार धिकार है। यह कहता और रुदन करता हुआ पिता के भय से गुणनिधि घर से भाग गया। कुछ समय में मार्ग के श्रम से थककर और शोक के सागर में डूबकर हाय-हाय करके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह रुदन करके कहने लगा कि हे मेरी माता ! मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ? कुछ यत्न नहीं भासता । मैं तो विद्याहीन भी हूँ; जो मुझको इस समय में फलदायक होती और न द्रव्य संग्रह की जिससे विद्वान् और बुद्धिमान् सब सुखी रहते हैं। विद्या में द्रव्य से अधिकतर बल है इस समय मुझको यह बात सूझ पड़ती है। इस कारण कि धनवाले को वन आदि में चोरों का भय है, परन्तु विद्यावान् निडर है। मैंने कोई दीर्घ पाप किया था, जिससे ऐसे कुल में उत्पन्न हुआ और ऐसे कुल में भी उत्पन्न होकर अवगुण करने लगा, यह मेरी कर्महीनता है। जो बात होनी होती है वही होती है। यद्यपि सूर्य पश्चिम में उदय हो, पर्वत चले और कमल के फूल पर्वतपर उपजें परन्तु होनी अवश्य होती हैं। मैं तो भिक्षा माँगने योग्य भी नहीं। जब मैं प्रातःकाल नींद से जागता था, तो मेरी सहायक माता भोजन देती थी। हाय! वह माता अब मैं कहाँ पाऊँ, क्या करूँ और कहाँ जाऊँ ? इसी प्रकार गुणनिधि भय से बातें कर अचेत हो गया और पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसी प्रकार गुणनिधि रोता रहा कि सूर्य अस्त हुआ। कुछ समय के पीछे सचेत होकर फिर इसी चिन्ता में डूबा कि एक पुरुष शिवभक्त शिवजी के पूजन निमित्त चला जाता था। उसके पास अनेक प्रकार की सामग्री पूजन के निमित्त थीं। भाँति-भाँति के नैवेद्य शिवजी के निमित्त थे। उसके संग अन्य भी अनंत शिव सेवक साथ थे। उस दिन शिवरात्रि थी, जिसमें मनुष्य व्रत करके मुक्त होते हैं। शिवरात्रि सब व्रतों में उत्तमोत्तम है, अधिक सुखदायक है और शिवजी को अतिप्रिय है। जिससे मूर्ख भी मनोरथ सिद्ध कर चुके हैं। जैसे कि चारों वर्णों में ब्राह्मण, ग्रहों में शशि, नदियों में गङ्गा, शिवभक्तों में श्रीकृष्णजी, वेदों में सामवेद, मन्त्रों में प्रणव और पुराणों में भारत उत्तमोत्तम है; इसी प्रकार सर्व व्रतों में यह शिवरात्रि का व्रत राजा के सदृश है। शिवजी सब देवताओं को सुखदायक हैं। यह व्रत करके मनुष्य सुख प्राप्तकर अनंत संसार के ऋणों और नियमों से मुक्त हो जाते हैं। ऐसा व्रत शिवरात्रि का रक्खे हुये वे मनुष्य शिवालय में चले गये और अनेक प्रकार के नैवेद्य और व्यञ्जन जो वह पुरुष अपने संग लाया था, उसकी सुगन्ध पाकर गुणनिधि बहुत भूखा हुआ और विचार किया कि रात्रि के समय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जब ये लोग भोग शिवार्पण करेंगे और सो जायँगे, उस समय यह सुगन्धित भोजन हम ले लेंगे। यह वार्त्ता अपने मन में ठहराकर उन्हीं के साथ चला गया और शिवालय के ऊपर ठहरा। शिवभक्त ने सच्चे मन से षोडशोपचार करके शिवपूजा की और प्रीति की प्रबलता से गाने और नाचने लगा। गुणनिधि वह सब देखता रहा और कहता ही था कि अगर उनकी दृष्टि हीन होती तो मैं अपना काम करता। अकस्मात् वे सब पुरुष अर्थात् शिवभक्त ऊँघ गये। गुणनिधि उनको निद्रा की अवस्था में देखकर झटपट शिवालय में गया और धीरे-धीरे पोले पाँवों से दब के चाहा कि नैवेद्य ले लूँ। नैवेद्य देखने के निमित्त उसने अपना वस्त्र फाड़कर बत्ती बनाकर उसको जलाया। उसके प्रकाश से उसने सर्व व्यञ्जन उठा लिये और झटपट बाहर आया। वह बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु चलते समय प्रसन्नता की अवस्था में उसका एक पैर किसी शिवभक्त के, जो वहाँ लेटा था, लग गया। वह जगकर चिल्लाया और कहने लगा कि यह कौन भागा जाता है, चोर है, पकड़ो। ऐसी चिल्लाहट में नगर के रक्षक आ गये और भागते हुये गुणनिधि को एक तीर मारा कि जिससे गुणनिधि पृथ्वी पर गिर पड़ा और शरीर छोड़ दिया। वह शिवजी की नैवेद्य खाने से बच रहा, इस कारण कि शिवजी की नैवेद्य खाने से बड़ा पाप होता है। इसी प्रकार सब देवताओं की नैवेद्य खाने योग्य नहीं है। जैसा कि वेद व धर्मशास्त्र की आज्ञा है। इस समय यमदूत आये और मुद्गर आदि जो भयंकर शस्त्र थे, वह गुणनिधि को पापी जानकर दिखलाकर बाँधने लगे। परन्तु शिवजी ने अपने गणों से कहा कि यद्यपि गुणनिधि ने असंख्य बड़े पाप किये परन्तु शिवरात्रि का व्रत रखकर रात्रि भर सोया नहीं और हमारी पूजा रात्रि भर देखता रहा और हमारी नैवेद्य जो खाने योग्य नहीं उसने नहीं खाया और नगर के रक्षकों से मारा गया। उसको यम के गण बाँधते हैं इस कारण तुमको आज्ञा दी जाती है कि गुणनिधि को यमगणों की बन्दी से मुक्त करो और हमारे लोक में लावो। क्योंकि गुणनिधि को मैंने अपना कर लिया। अब वह नरकगामी न होगा। मुझको शिवरात्रि अति प्रिय है और सब व्रतों से उत्तम है। जिसको शिवरात्रि व्रत करते हुये पाता हूँ, उससे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अधिक प्रीति रखता हूँ। जो मेरी पूजन देखता है वह मुझे बहुत प्यारा है। जो मृत्यु के समय ऐसा न हो तो भी उसके सब क्लेश नाश करता हूँ। यह गुणनिधि अब कलिङ्गदेश का राजा होगा और मेरा बड़ा भक्त व मित्र होगा। यह आज्ञा शिवजी के गण सुनकर वहाँ गये। उनके हाथों में त्रिशूल थे। उनको देखकर यमगण भगवान् होकर दुःखी हुये। शिवगणों ने कहा कि तुम कौन हो जो इस निष्पापी को विना दोष बन्द करते हो? यह श्रवणकर यमदूत आश्चर्यवान् हुये और कहने लगे कि तुम कौन हो जो यम की अवज्ञा करके ऐसे पापी को छुड़ाते हो? किसकी शक्ति पर इतने प्रवल हो? शिवगणों ने उत्तर दिया कि क्या तुम हमको नहीं जानते कि हम शिवगण हैं, जिनको ब्रह्मा-विष्णु आदि ध्यान करते हैं। इसको छोड़ दो। यमगणों ने कहा कि आपकी आज्ञा प्रबल है परन्तु ऐसे पापी को छुड़ाते हो और पाप का विचार नहीं करते। इसने अपने कुल की रीति का त्याग किया है और वेद की अवज्ञा की है। इस पापी असत्य बोलनेवाले ने अपने माता-पिता का कहना भी न माना। यह अपनी स्त्री को त्यागकर अन्य स्त्रियों से गमन करता था। धर्म-छोड़ कर उसने वेश्याओं से मैथुन किया और देवताओं की निन्दा करता रहा तथा जुये में अपने बाप की सब माया नाश की। हम इसकी मूर्खता कहाँ तक बखानें। यह सब पापियों का राजा है। सबसे बड़ा पाप यह है कि शिवनिर्माल्य चोरी करके ले भागा और खाने लगा सो तुम भी देखते हो। तुम इसको अच्छी भाँति जानते हो कि जो कोई शिवनिर्माल्य खाता है अथवा उसके ऊपर से लाँघ जाता है अथवा शिवनिर्माल्य किसी को देता है वह नरकगामी होता है। हलाहल पानी में डालकर पीना अच्छा है परन्तु शिवजी पर चढ़ाई वस्तु खाना अयोग्य है। चाहे प्राण जाते रहें परन्तु इस संसार में धर्म रखना कठिन है। यह सुनकर शिवगणों ने उत्तर दिया कि यह ब्राह्मण निष्पापी है। इसने प्रथम बड़ा धर्म किया है अर्थात् मरने के समय शिव के मन्दिर में जाकर अपने शरीर का वस्त्र फाड़ और उससे दिया बालकर ज्योति जलाई। दूसरा बड़ा धर्म इसने यह किया कि शिवरात्रि को रात्रिदिन व्रत रक्खा और रात्रि भर जागता,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी की पूजा देखता और शिवजी के नाम सुनता रहा। यद्यपि यह धर्म इससे अकस्मात् हुआ परन्तु इसको पुण्य प्राप्त हुई है। अब यह कलिङ्गदेश का राजा होगा और शिवपूजन करेगा। यह कहकर और गुणनिधि को छुड़ाकर शिवगण गुप्त हो गये।

अठारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! ऐसे वचन शिवगणों के सुनकर यमदूत लज्जावान् होकर यम के निकट गये। उन्होंने सब वार्त्ता विस्तार संयुक्त यम से कही। यह श्रवणकर हम आश्चर्यवान् हुये। शिवजी को दण्डवत् कर उसने अपने गणों को आज्ञा दी कि तुम तीनों लोक में फिरो और जो मनुष्य शरीर में भस्म लगाये हो, रुद्राक्ष पहिने हो, शिवलिङ्ग की पूजन करता हो, शिवनाम जिह्वा से लेता हो शिवजी का यश वर्णन करता हो शिवजी का यश श्रवण करता हो, शिवजी के मन्दिर में दर्शन करता हो, शिवजी के पूजन और योग में डूबा हो, छल संयुक्त भी शिवजी का बाना और वेष धारण किये हो, मृत्युकाल में उसने छल से मरने के समय शिव का नाम न लिया हो या किसी प्रकार उसका शिव से सम्बन्ध हो, उन सबको तुम छोड़ देना और कुछ दुःख न देना। दासों के समान उसकी सेवा करना। इतना कह यमराज ने शिवकी बड़ी स्तुति पढ़ी और कहा कि हमारे पाप क्षमा कीजिये। यह अपराध मुझसे अज्ञानता में हुआ है। इस प्रकार यम शिव की बहुत स्तुति करके चुप हो गये। अब गुणनिधि का हाल सुनिये। वह यमगणों से छूट विमान पर आरूढ़ हो शिवलोक को चला गया और बहुत समय तक सुख भोगकर कलिङ्गदेश का राजा हुआ। वहाँ के पूर्व राजा का नाम इन्द्रमुनि था। गुणनिधि उसी के यहाँ उपजा और कर्दम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह बड़ा शिव का भक्त था। इन्द्रमुनि ने अपने पुत्र में राज्यलक्षण, उदारता, वीरता और धीरतादि देख अपना सब राज्य उसको सौंप दिया। आप रानी समेत वन जा शिव का कठिन तपकर शिवलोक में प्राप्त हुआ। कर्दम को पूर्व जन्म की सुधि थी, इसलिये वह सब शिवालयों में दीपदान करने लगा। हर एक मण्डलेश्वर को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बुलाकर आज्ञा दी कि जितने गाँव में शिवालय हों; उनमें दीपक जलाये जावें। जो इस बात को न करेगा, उसका शिर धर से जुदा किया जावेगा। इस भय से गाँव के स्वामी दीपदान करते रहे। राजा स्वयं इस बात को बड़े हर्ष से करता रहा और प्रजा को अपनी नीति से प्रसन्न रक्खा। जन्म भर अपने दीपदान से अचेत न रहा। जब मरा तब तो दीपदान के पुण्य से शिवलोक में पहुँचा। उसको शिवलोक में बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। उसने बहुत आनन्द और सुख उठा शिवपुराणों का ध्यान किया और फिर मृत्युलोक में आया। अब अपने लड़के पुलस्त्य के पुत्र का हाल हम कहते हैं। अर्थात् हमारे बेटे पुलस्त्य के विश्रवा नाम से एक पुत्र उपजा। विश्रवा की तीन स्त्रियाँ थी जो शिव और विष्णु की बड़ी भक्ता थीं। विश्रवा की सबसे छोटी स्त्री के विभीषण नामी बेटा पैदा हुआ। विभीषण विष्णु का ऐसा भक्त हुआ कि बेखटके इस अथाह संसारसागर से पार हो गया। जो उससे बड़ी थी, उससे दो पुत्र रावण और कुम्भकर्ण तुम्हारे शाप से उत्पन्न हुये। वे दोनों शिव के बड़े भक्त हो नाना प्रकार के संसारी भोग विलासों में फँस गये। उनमें से रावण ने कठिन तप कर शिव से वरदान पाया। बड़े प्रताप और तेज से संसार भर में उसने राज्य किया। उसी के नाश करने को विष्णु भगवान् ने आप द्विभुज धार अवतार लिया, जिनका नाम राम हुआ। पर वह रावण का नाश न कर सके। शिव का तपकर और अपने तप व श्रम से शिव को प्रसन्न पाकर शिव के अवतार अर्थात् श्रीहनुमान्जी को साथ ले गये। इस प्रकार बड़े परिश्रम से वानरों की सहायता पाकर राम ने रावण का बध कर डाला। वरन् उसके कुल को मूल से उखाड़ डाला। विश्रवा मुनि की सबसे बड़ी स्त्री अर्थात् तीसरी स्त्री, जिसका नाम षट्तिला था, उसके उदर से गुणनिधि, जिसका पहले वर्णन हो चुका हैं, उपजा। विश्रवा मुनि ने पहले लङ्का में रहकर जो उचित था, वह किया। फिर काशी में जाकर अति तप किया जिससे शिवजी अति प्रसन्न हुये। शिव के वरदान से वह उल्का नगरी का राजा होकर दिक्पति के नाम से प्रसिद्ध हुआ और शिवजी की पूजा में मग्न रहा। उसे राज्य करते हुये हमारा एक कल्प बीता। जब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घनवाहन कल्प का प्रारम्भ हुआ, उस समय गुणनिधि ने तप आरम्भ किया। अर्थात् उसने दीपदान की विधि कण्ठ करके उसमें बहुत ध्यान लगाया। काशी में जो शिव की पुरी कहलाती है, आकर उसमें कठिन तप करने लगा। उसने अपने हृदय के नेत्र खोले और शिवजी का दर्शन किया। मन को ब्रह्मज्ञान से पूर्णकर सम्पूर्ण मनके मनोरथों को शान्त कर दिया। उसी जगह शिवलिङ्ग की प्रतिमा स्थापन कर उसने नाना प्रकार के फूलों और षोडशोपचार से लिङ्गपूजा की। यहाँ तक कि विश्रवा के शरीर का रुधिर और मांस सूख गया। चर्म और अस्थिमात्र शेष रह गये। ऐसी तपस्या करते हुये विश्रवा को सौ करोड़ वर्ष बीते। वह मन को जीते हुये शिव का तप किया किये। ऐसा घोर तप देख शिव पार्वती सहित विश्रवा के स्थान में सुशोभित हुये और कहा कि वर माँगो।

उन्नीसवाँ अध्याय।

शिवजी ने कहा कि अब तू तप मतकर और जो इच्छा हो वह ले। यद्यपि सदाशिव ने अति उच्चस्वर से यह बात कही पर विश्रवा अपने ध्यान में बैठे रहे। उनके कथन को कुछ भी न सुना। तब शिवजी ने अपनी मूर्ति उसके मनसे निकाल ली। उस समय दिक्पति अति आश्चर्य में हुआ। नेत्र खोलकर देखा तो शिवजी को पूर्णरूप से जैसा पहले वर्णन हो चुका है, देखकर और शिवरानी को शिव के बाईं ओर अवलोकन करके महाप्रसन्न हुआ। पर उस प्रकाशवान् तेज के देखने की शक्ति न रखकर नेत्र मूँद लिये और कहा हे नाथ! मुझे अपने चरण दिखा दो और वह उपाय करो जिसमें मैं आपको देखूँ। सिवाय इसके और कुछ मैं नहीं चाहता। क्योंकि इससे अधिक और कोई पदार्थ संसार में नहीं है। यह कहकर दिक्-पति चुप हो गया। सो शिवजी प्रसन्न हुये और उन्होंने दिक्पति को अपने तेज के देखने की शक्ति कृपा की और अपने हस्तकमल से उसका हाथ पकड़ लिया। पहिले दिक्पति ने नेत्र खोल शिव की प्यारी शिवरानी को देखा और पूछा कि यह कौन स्त्री है, जो इतनी सुन्दरी है और सबके मनों को मोहित कर लेती है। इसका बड़ा भाग्य है जो शिव के निकट रहती है। इसने मुझसे भी अधिक तप किया होगा। इसके पुण्य और प्रेम को धन्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है और इसके माता-पिता भी धन्य हैं। उन सबके बड़े भाग्य हैं, जहाँ ऐसी स्त्री हो। यह बात बार-बार कहकर प्रत्यक्ष कुदृष्टि से देखा। तुरन्त उसकी आँखें फूट गईं और देवी ने क्रोधित होकर कहा कि यह तपस्वी बहुत बुरी कुदृष्टि रखनेवाला है। इसी से अपना कष्ट चाहता है और व्यङ्ग्य वचन कहकर मुझको अपनी स्त्री के सदृश देखता है। हे शिव ! यह तुम्हारा कैसा भक्त है ? ये वाक्य शिवरानी के सुनकर शिवजी हँसकर बोले कि इसने छल छोड़ इकबारगी ऐसा तप किया है जो प्रकट है। तुमको मेरे साथ होने से और तुम्हारे भाग्य अपने से अधिक जान तुम्हारी प्रशंसा करता है, दुष्टदृष्टि से नहीं देखता। फिर दिक्पति से कहा जो इच्छा हो वह माँग। हम तुमसे कहते हैं कि तुम वस्तुओं के स्वामी होगे और सब भूमि के राजाओं के स्वामी होगे। विद्याधर और किन्नर तुम्हारे आधीन रहेंगे। जो तुम्हारी गुप्त इच्छा है वह भी हम जानते हैं। अच्छा, हम मित्र होकर तुम्हारे निकट रहेंगे अर्थात् कैलाश पर्वत में स्थित रहकर तुमसे अति प्रीति रक्खेंगे। तुम्हारी कठिनता दूर किया करेंगे। अब तुम शिवरानी के चरणों पर गिर पड़ो क्योंकि यह तुम्हारी माता हैं। इससे तुम पर प्रसन्न होकर क्रोध शान्त कर लेंगी। और शिव रानी से कहा कि यह तुम्हारा बड़ा भक्त है; इसके ऊपर कृपा करके क्रोध निवृत्त करो। इसको अपना सेवक समझो क्योंकि तुमको और हमको लोक में भक्तवत्सल कहते हैं। ऐसी बातें शिवजी की सुनकर शिवरानी ने अपना क्रोध शान्त कर लिया और दिक्पति से कहा कि तुम हमारे पुत्र हुये। तुम में शिव की भक्ति सदा बनी रहेगी। तुम हमारे पुत्र हो चुके। जो वरदान शिव ने तुमको दिया है, वह सत्य है। जो कि तुमने मेरे स्वरूप की इच्छा करके मेरा भय मन में न लाये, इस कारण तुम्हारा नाम कुबेर होगा। शिव का लिङ्ग जो तुमने स्थापन किया है, वह सिद्धि देनेवाला होकर तुम्हारे सामने प्रसिद्ध होगा। वह सम्पूर्ण पापों का नाश करके मुक्ति देगा। जो कोई कुबेरेश्वर महादेव के दर्शन करेगा, वह थोड़ी भक्ति में भी तप का फल पावेगा। यह कुबेरेश्वर महादेव विश्वेश्वर की दाहिनी ओर हैं, जिनकी पूजाकर लोग अति आनन्द पाते हैं। यह वर देकर शिव और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवरानी तो गुप्त हो गये और कह गये कि हमारे आने की बाट देखना। कुबेर भी अपने घर को चले और बड़ा धन द्रव्य पाया। वह अलकापुरी के महाराज होकर शिवमित्र के नाम से उपनाम पाकर शिवके भण्डारी हुये। वही शिवकी भक्ति में सदा लगे रहते हैं। अलकापुरी ऐसी है जिसको देख मनुष्य का मन मोह जाता है। ऐसी अलकापुरी में बड़े उत्सव हुआ और शिव सदा कुबेर की प्रशंसा किया करते हैं। हे नारद ! यह विश्रवा की कथा, जिस तरह उसने वरदान पाया, तुमसे कह सुनाई। यह कथा आनन्द देनेवाली है। जो शिवका थोड़ासा पूजन करता है, वह समय पर बड़ा फल देता है। जैसा कि गुणनिधि की कथा से प्रसिद्ध है। शिवकी बराबर तीनों लोक में कौन है ? अर्थात् कोई नहीं।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्मा ने कहा कि जब शिव निधिपति को वरदान देकर अन्तर्धान हो गये तब मन में विचारा कि हमने जो निधिपति को अपना पुत्र बनाया है तो उसके यहाँ किस विधि से जाकर मनुष्यों की भलाई के लिये क्या काम करें। आगे भी सम्मति हुई थी सो अब हम कुबेर के मित्र होकर वहाँ स्थित रहेंगे। जो हमारा मुख्य स्वरूप है, वह परब्रह्म स्वरूप है। उस स्वरूप से और इस रूप से, जो अब धारण करके अपने मित्र के यहाँ जावेंगे, कुछ भेद नहीं होगा। जो कोई उसमें अन्तर या द्वैतभाव समझेगा वह दुःख पावेगा। वही स्वरूप जो ब्रह्मा और विष्णु आदि करके पूजा जाता है तो मैं उसी रूप और नाम से वहाँ स्थित रहूँगा। कुबेर के साथ मित्रता उपजाऊँगा और जो कि उमा अर्थात् शिवरानी ने अबतक अवतार नहीं लिया, अकेले हमने अवतार लिया है सो हम योग और कठिन तप करके वहाँ स्थित रहकर अपने भक्तों को मुक्त करेंगे। दुष्ट और कुमार्गी मनुष्यों को मारेंगे। कुछ दिन इसी तरह रहकर और अपना रूप देखते हुये रहेंगे। इसी अवसर में समय पर शक्ति भी अवतार लेवेंगी। संसार की रीति के अनुसार वह हमारी स्त्री होंगी। हम उस दशा में गृहस्थ होकर नाना प्रकार के विहार करेंगे। ऐसा विचारकर वह रूप जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव का था, उसने चलने का उद्योग किया और डमरू बजा दिया, जिसका शब्द तीनों लोक में पूरित हो गया। उसी शब्द की ओर सब चले। विष्णु गरुड़ पर और हम हंस पर चढ़ चले। सनकादिक मुनि, सिद्ध, देवता, वेद, धर्म, शास्त्र, पुराण, तुम और तुम से जो और मुनि हैं तथा सर्पों के यूथप उसी शब्द की ओर चले। प्रथम जो शिव के गण हैं वह सब उस ओर को चले और परस्पर कहने लगे कि क्या कारण है जो डमरू आज बजाया गया। किसके भाग्य उदय हुये? हमारे भी बड़े भाग्य हैं कि हम भी शिवजी के शुभचरण देखेंगे। निदान सब लोग इस प्रकार की बातें करते हुए अति प्रसन्नता से शिवके पास पहुँचे। सब दण्डवत् प्रणाम के उपरान्त हाथ जोड़ खड़े हुये और स्तुति करने लगे। शिवजी अति प्रसन्न हुये। उन्होंने विष्णु को बाईं ओर हाथ पकड़ के बैठा लिया और दाहिनी ओर मुझे स्थान दिया। कुशल पूछकर हमें अति प्रतिष्ठित किया और हाथ की सैन से सूर्य का आदर किया। मुनियों को जो अमर हैं, देखकर प्रसन्न हुये। शिव के गण शिवजी की इच्छा समझकर अपने आप बैठ गये। वहाँ लोगों का बड़ा समूह इकट्ठा हो गया और बड़ा उत्सव हुआ। फिर शिव ने कैलाश जाने का उद्योग किया कि कुबेर का मनोरथ पूरा हो, उस समय मनुष्यों की सेना और गणों का समूह बहुत भारी था जो चलने की इच्छा से उठ खड़ा हुआ। विष्णुजी नन्द और सुनन्द दो गणों समेत उठ खड़े हुये। इसी तरह वेद और सनकादिक के साथ हम भी उद्यत हुये। तेंतीस कोटि देवता जो अमर हैं, उनको इन्द्र लेकर खड़े हुये। इन सबका ब्योरा संक्षेप से नीचे लिखा जाता है। उस स्थान पर ग्यारह रुद्र, अपने गणों समेत, बारह सूर्य, आठों वसु, तेरह विश्वेदेवा, सत्ताईस नक्षत्र, बारह भक्त, चौंसठ आभासुर, उनचास पवन आदि और इसके विशेष और भी देवताओं के प्रकार जिनको हम विस्तार भय से नहीं लिखते साथ हुये। दश प्रकार के देवता अर्थात् विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, ऋक्ष, सिद्ध, भूत, पिशाचादि, वह भी प्रतिष्ठित होकर चले। दिशापति अपने-अपने गणों समेत, वासुकि, तक्षक आदि कुलवान् सर्प तथा नागों के राजा और शेषजी भी साथ हुये। संसार भर की माता श्रीगायत्री, गरुड़,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पहाड़, समुद्र जो सात हैं और दोनों अयन अर्थात् उत्तरायण व दक्षिणायन, सर्व ऋतु, काल, यम, पक्ष, सब नदियाँ और बड़े नद, वनके वासी, सब यकबारगी खड़े हुये और साथ चलने का उद्योग किया। मुनियों का समूह जो अट्ठासी सहस्र का था, वह भी तत्पर हुआ। अब हम सेना के सब अधिपतियों का वर्णन करते हैं और उनकी सेना की संख्या भी कहते हैं। पहला करणगण एक करोड़ सेना का सरदार था। दूसरे कैयक राक्षस के साथ दश कोटि सेना थी। तीसरा विकृत जो आठ कोटि सेना का अधिपति था। चौथा पारयात्रिक नव कोटि सेना का स्वामी था। पाँचवाँ सुरमान्तिक छः कोटि सेना लिये हुये था। छठा विकटानन भी उतनी ही सेना का अधिपति था। सातवाँ जालक बारह करोड़ सेना पर आज्ञा चलाता था। आठवाँ दुन्दुभि चौदह कोटि का स्वामी था। नवाँ कुन्दक एक हजार व दशवाँ अभ्यसन आठ करोड़ सेना का स्वामी था। ग्यारहवाँ विष्टम्भ आठ करोड़ सेना का, बारहवाँ सन्धारक छः कोटि कटक का और तेरहवाँ कपाली पाँच कोटि सेना का स्वामी था। सिवाय इनके गणप, सन्नाद दश-दश कोटि सेना के अधिपति थे। करण्डी गण के साथ बारह कोटि सेना थी। बुद्धतान के साथ आठ कोटि, महाकेश के साथ सहस्र कोटि, पर्वत के साथ बारह कोटि, अनलमदन की अर्दली में एक कोटि, महाकाल कालक और कालके साथ सौ कोटि, आगनिक और सन्नाह के साथ और रविशतक, कोकिल, अमोघ, समन्त्रिक के साथ एक-एक कोटि सेना थी। काकपाद सन्तान के साथ साठ-साठ कोटि, मधु पुंग के साथ नव करोड़ और इसी तरह पन्नग के साथ और नील के साथ नव कोटि सेना थी। इसी प्रकार पूर्ण भद्र के साथ भी थी। चित्रवक के आधीन सात कोटि, विजयी काष्ठाके एक कोटि, परिघ के नव कोटि, सुखेश के एक करोड़ बीस हजार, विरूपाक्ष और प्रमेश आदि के साथ असंख्य सेना थी। इसी तरह पर बहुत से यूथप थे। शिव के गणों में तालकेतु, षड्वदन, पञ्चवदन, भयानक, लङ्कलेश, संवर्तिक, भृङ्गी एक हजार भूत लिये थे। दशकोटि और भी जानना चाहिये। लोकान्त और दैत्यान्त, दीप और आसन जो देवताओं को अतिप्रिय हैं, ये सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौंसठ हजार एकही स्वरूप के थे। रुद्र के असंख्य गण थे। उन सबके मस्तकों पर नवीनचन्द्रवत् एक रेखा जटा मुकुट धारण किये त्रिनेत्र और कण्ठ में हलाहल का चिह्न विराजमान कुण्डल और हार पहने कि जिनको देवता विष्णुजी और हम भी देखकर आश्चर्य में हुये। उनके शरीर का प्रकाश सहस्त्रसूर्य की दीप्ति से कम न था। यह सब रुद्रगण उद्यत हुये। ऐसा समूह देख शिव अति प्रसन्न हुये और चारों ओर से जय-जय शब्द होने लगा। उस समय शिवजी अपने स्वरूप का ध्यान कर और प्रणाम व नमस्कार कर बैल पर सवार हुए। हम और विष्णु दाहिने-बायें हंस व गरुड़ पर चढ़े हुये साथ हो लिये। ऐरावत हाथी पर इन्द्र चढ़े। इसी प्रकार समस्त देवता और मुनि आदि सब साथ चले। सबके मन में शिवकी मूर्ति स्थिर हो गई। वे हर प्रकार की सेवा करने लगे। उस समय बड़ा आनन्द था। हर मनुष्य अति हर्षपूर्वक चला जाता था। शिवजी बहुत धीरे-धीरे चलते थे कि कोई दुःख न पावे। जिस-जिस के देश में शिव आते थे, वहाँ भेंट पाते थे और स्वीकार करते थे। इसी तरह से शिव अलकापुरी के निकट पहुँचे। अलकापुरी के स्वामी शिव से बिदा हो ज्यवनार की सामग्री के तय्यार करने को आगे चले गये और अपने घर में जाकर बड़ी विधि से पूजा और ज्यवनार की सामग्री तय्यार की। फिर शिवजी की अगवानी को अपनी सेना समेत आगे पहुँचकर शिव के चरणों पर गिरे और प्रेम में मग्न हो गये। भेंट देकर पूजन किया और प्रेमानन्द में मग्न होकर जो उचित था वह सब भूल गये। शिव को प्रणाम कर विष्णु और हमारा भी आदर किया। शिव ने उनको हृदय से लगाया, मस्तक चूमा और उनको साथ लेकर आगे चले।

इकतीसवाँ अध्याय।

इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि शिवजी देवताओं समेत इस तरह की सामग्री सहित अलकापुरी में पहुँचे और निधिनाथ की विनय के अनुसार वहाँ स्थित हुये। अलकापुरी के अधीश्वर निधिनाथ ने शिवजी की पूजा करके भी अति आदर सम्मान किया। सब लोगों का बहुत ही आदर किया। यही बात हर गृहस्थ को उचित है कि जो कोई अपने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घर आवे, उसकी सेवा करे। वेद और धर्मशास्त्र को जानकर अच्छे कामों से संसार में प्रसिद्ध रहे। शिवजी ने सिंहासन पर विराजमान हो तुरन्त विश्वकर्मा को आज्ञा दी कि कैलाश पर्वत पर हमारा मन्दिर अतिसुन्दर बनाओ। केवल मेरे ही लिये नहीं वरन हमारे गणों के वास्ते और सुर मुनि लोगों के लिये भी विचित्र मन्दिर स्थापन करो। यह आज्ञा सुन विश्वकर्मा अति प्रसन्नतापूर्वक कैलाश पर्वत को गया और मन्दिरों के बनाने में प्रवृत्त हो एक अति विचित्र स्थान निर्माण किया। उसमें तरह-तरह की सामग्री रत्नों से अलंकृत बहुमूल्य पत्रों से सजाई। धरती उसकी नीलमणि से बनाई और मूंगे के लट्ठे लगाये। शुद्ध स्वर्ण से दीवार और वज्र के द्वार सजाये। उसक बीच में एक स्थान मुख्य शिवजी के लिए निर्मित किया और अन्तःपुर जुदा बनाया। तब शिवजी की सेवा में आकर विनय की कि मन्दिर तय्यार है और जो कुछ आज्ञा हो, वह पालन करूँ। शिवजी अति प्रसन्न हुये। सबकी इच्छा हुई कि जो अब शिवजी कैलाश को चलें तो अति उत्तम है। शिवजी अन्तर्यामी अपने भक्तों के मन की बात जान गये और अपने चरणसरोज से कैलाश पर्वत को तथा सबको सुशोभित किया। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसी समय में हम और विष्णु ब्राह्मणों को साथ लिये हुये शिवजी के निकट पहुँचे। निधिपति ने हम सब लोगों की ओर से प्रतिज्ञा की कि हे स्वामी! सबका बड़ा यह मनोरथ है कि आपका अभिषेक किया जावे और पूजा की जावे। आपको सिंहासन पर बैठाकर पूजन करें तो हमारा मनोरथ पूर्ण हो। शिव ने प्रसन्न होकर अङ्गीकार किया। यह आज्ञा सुन सब लोग इस आनन्द की तय्यारी में लगे। चारों ओर दूत भेजे गये। वे पवित्र और आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा करने लगे। जब ज्योतिष मुनि ने जाना कि शुभ मुहूर्त आन पहुँचा तब प्रसन्न होकर विष्णु से कहा कि शिवजी क अभिषेक का मुहूर्त नियत हो गया है, अब देर न कीजिये। हम और विष्णु ने शिव से कहा कि अब आप स्नान कीजिये और वस्त्र जैसा इस समय के योग्य हो, पहिनिये। शिवजी ने स्वीकार किया और सब विद्यमान मनुष्य हो गये। उस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समय पुष्पों की वृष्टि हुई। सब देवता और अमरगण अपनी-अपनी स्त्रियों समेत अति प्रसन्नता को प्राप्त हुये। सब तीर्थों का जल लाया गया, जिससे शिवजी ने स्नान किया। हम और विष्णु ने शिवजी के शरीर को अपने हाथों से अच्छी तरह मलकर धोया। फिर शिवजी दिव्य वस्त्र पहिनकर सिंहासन पर सुशोभित हुये। उस समय सब बाजे बजने लगे। पुष्पों की महावृष्टि हुई। ब्राह्मण स्वस्तिवाचन पढ़ने लगे। हमने वेद-ध्वनि प्रारम्भ की। शिवजी को सिंहासन पर सुशोभित कर हम अति प्रसन्न हुये। पहिले विष्णुजी ने निगम मन्त्र पढ़कर शिवपूजा की और लक्ष्मीजी समेत अति भक्ति से बार-बार आरती उतारी। भिक्षुकों को बहुत-सा दान दिया। हर तरफ से बाजे बजने लगे। आकाश की दुन्दभि ने दिशा पूरित की। उस समय अच्छा समा हो रहा था। गन्धर्व गाते और अपने प्रियस्वरों और मधुरवाणी से मन हरलेते थे। अप्सरादि नृत्य करने लगीं, जिससे चारों ओर आनन्द छा गया। फिर हमने देवताओं के साथ पूजा की। इसके उपरान्त सनकादिक, मरीचि, देवऋषि, ब्रह्मऋषि और मुनि आदि ने पूजा की। फिर विष्णु के अमर पार्षद शिव की पूजा करने लगे। फिर शिव के गणों ने और जो लोग आये थे, सबने यथाशक्ति शिवजी की पूजा। हम सबने प्रसन्नता में बड़ा द्रव्य लुटाया। गरीबों को अमीर बना दिया। उस समय चारों ओर से धन्य-धन्य का शब्द सुनाई देता था। कोई उस हर्ष में गाता, कोई दौड़ता, कोई नाचता, कोई शिव की स्तुति बखानता और कोई सुरमुनि की सेवा करता था। इसी प्रकार सबने अति आनन्द मनाया और अति हर्ष को प्राप्त होकर शोक नष्ट कर दिया। सबने अलग-अलग शिवजी की स्तुति की, जिसको हम भी अलग-अलग वर्णन करते हैं।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि पहिले विष्णुजी ने दोनों हाथ जोड़कर यह स्तुति की जिसका संक्षेप यह है कि हे ईश्वर! आपकी स्तुति वेद नहीं कर सकते। चाहे वह सब कुछ कहते हैं तो भी आपका अन्त उनको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नहीं मिलता और चुप हो रहते हैं। मैंने भी स्तुति की पर आदि-अन्त नहीं जानता। देवताओं ने एक मति हो यह स्तुति की कि आपका तेज इस निर्मल सूर्य से करोड़ों भाग अधिक है। हम क्या कहें? हम भी चाहते हैं कि आपके चरणों में हमारा मन लगा रहे। मुनीश्वरों ने भी शिर झुकाकर बहुत प्रशंसा की। इसी प्रकार देवता, उपदेवता, गणादि सबों ने अपनी-अपनी बुद्धि और मति के अनुसार अति विस्तृत स्तुति की। सबने खड़े होकर प्रसन्नता के चिह्न प्रकट किये। जिससे सबकी प्रीति देखकर शिवजी अति प्रसन्न हुये। श्रीमुख पर इस प्रकार के शुभ वचन लाये कि तुम सब लोगों की जो इच्छा हो, वह माँग लो, हम देंगे। ऐसी कोई वस्तु नहीं जिसको हम दे नहीं सकते। यह सुन सब हाथ जोड़कर बोले कि आपने जब ऐसे वचन कहे तो हम तृप्त हो गये। हमारे सब दुःख मिट गये। इससे और कौन वस्तु जिसको हम आप से माँगे। आपसे क्या छिपा है? पर तो भी एक बात चाहते हैं कि हमको सदा आपकी भक्ति बनी रहे। आपके चरणों की इच्छा किया करें। हमको कुछ भय न हो। हमारे अपराध क्षमा हुआ करें। जब असुर हमारा अपमान करें, उस समय हमारा दुःख आप दूर किया करें। जो हमारे लिये उत्तम हो, उसको आप किया कीजिये। वेद आपको जगत्पिता कहते हैं, इस कारण आपसे विनय की। इतना कह सब चुप हो गये। शिव सबको निर्भय कर आप सगुणरूप हो वहीं स्थित हुये। सबको समझाकर बिदा किया। केवल हमको और विष्णु को रोक लिया और निकट बुलाकर कहा कि तुम दोनों हमारे शरीर हो। संसार उपजाकर तुम्हीं पालते हो। जब तुमको कुछ दुःख हो तो हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। इसमें कुछ सन्देह नहीं है। अब अपने-अपने लोक को सुखपूर्वक जाओ और जो इच्छा हो, वह हमसे माँग लो। यह सुनकर हम दोनों ने भक्ति माँगी और विदा होकर चले। फिर शिवजी निधिपति का हाथ पकड़ के कहने लगे कि तुम्हारी प्रीति में फँसकर हम तुम्हारे निकट स्थित हुये हैं। हमारी तुम्हारी मित्रता तीनों लोक में प्रसिद्ध हो गई। तुम्हारा क्या उत्तम भाग्य है कि तुम मुझको अतिप्रिय हुये। तुम प्रसन्न रहो और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दुःख तुम्हारे सामने न आवें अब तुम भी अपने देश को जाओ। इतना सुन निधिपति प्रेम में मग्न हो गये और आँसुओं की नदी बहने लगी। उसने विनय की कि चाहे मेरा मनोरथ पूरा हो गया हो पर मुझे घर जाने की इच्छा नहीं है; फिर भी महाराज की आज्ञा शिरोधार्य है। यह कहकर बार-बार शिवजी को प्रणाम करने लगे और अपने घर अति प्रसन्न होकर जा पहुँचे। शिवजी भी उसी कैलाश पर्वत पर निर्भय होकर स्थित हुए। कभी-कभी इस लोक में आकर देखा करते, कभी कोई विचित्र कथा प्रीति से कहते और कभी योग्य अङ्गीकार कर अपने स्वरूप के ध्यान में मग्न रहते। कभी अपने गणों का मन विचित्र कथा कहकर बहलाते और कभी अपने भक्तों के लिये कुछ लीला रचते। इसी प्रकार एक समय तक शिवजी अकेले लीला करते रहे और उमा प्रकट न हुई। शिव अपने भक्तों के उपकार के लिये बहुत समय तक कैलाश पर्वत पर विहार करते रहे फिर उमा ने अवतार लिया। वे दक्ष के घर उपजीं। दक्ष ने शिवजी के साथ विवाह कर दिया। शिव और उमा शिव भक्तों के लिये विहार करने लगे। शिवरानी अति प्रसन्न रहा करतीं और परस्पर दिन-दिन अधिक प्रीति होती जाती थी। हे नारद ! हमने शिव अवतार और शिवजी के कैलाश में जाने का हाल तुम्हें सुनाया। इसके उपरान्त और हजारों शिवजी की लीलाएँ हैं। यह लीला मैंने अपनी बुद्धि के प्रमाण कही। यह शिव की कथा अति पवित्र है, जिसके सुनने से बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। यह कथा मोहरूपी सागर के लिये नाव है जो चढ़नेवाले को पार कर देती है। जो मनुष्य इस कथा को सुनता या सुनाता है, वह प्रसन्न रहता है, और निर्वाण पद पाता है। जो इसको स्मरण करता है, उसके सब शोक और दुःख नाश को प्राप्त होते हैं। जो मनुष्य इसे शिव प्रीति संयुक्त पढ़े, उसके धन सन्तान बहुत होगा।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे शिवविलासे प्रथमखण्डः समाप्तः।

प्रथमखण्ड पूर्ण हुआ।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

---:o:---

द्वितीय खण्ड

पहिला अध्याय।

इतना कहकर फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हम शिवजी का अनादि चरित्र वर्णन करते हैं। जिस प्रकार सती ने दक्ष के घर अवतार लिया, पुनः जिस प्रकार शिवजी से विवाह किया और जो जो चरित्र शिवजी के घर किया, वह हम विस्तार से वर्णन करते हैं। हमने पहिले दश पुत्र उपजाकर उनको आज्ञा दी कि तुम सृष्टि उपजाओ। वे ये हैं—मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरस ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ भृगु ७ वसिष्ठ ८ सुरऋषि ९ दक्ष १०। इनको हमने मानसी सृष्टि की रीति पर उत्पन्न किया। अर्थात् क्रमपूर्वक मन, शरीर, मुख, कर्ण, नाभि, त्वचा, हाथ, प्राण, अण्डकोष, अंगुष्ठ से ये सब पैदा हुये। हृदय से धर्म और पीठ से अधर्म और होठों से मोह और भौंह से क्रोध उपजाया। पर जब सरस्वती को, जो सुन्दर स्त्री रूप से उपजीं, तब उसके सुन्दर मोहन स्वरूप को, जो काम की भरी हुई अपने नयनों से तीनों लोक मोहनेवाली मालूम होती थी, देखकर हम कामजाल में फँस गये और उसके साथ मैथुन करना चाहा क्योंकि हमारे हृदय में कामदेव प्रवेश कर चुका था। यह देख मेरे सब पुत्र हा-हा करके शिवजी की स्तुति करने लगे कि मैं ऐसे महापाप से बच जाऊँ। तथाच तुरन्त सदाशिवजी प्रकटे और मुझे ऐसे महापाप से बचाया जिसका परिणाम नरक है। मैं बुद्धि के भ्रष्ट होने से अति लज्जित हो शिवजी की निन्दा करने लगा। मेरा मन बहुत पापी हो गया। रीति है कि जो कोई मनुष्य दूसरे की बुराई चाहता है तो वह आपही कष्ट पाता है। हे नारद ! मुझे केवल सदाशिव ने ऐसे पाप से बचा लिया क्योंकि वे अपने सेवकों की इसी तरह रक्षा करते हैं। इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियों ! यह सुनकर नारदजी विचारपूर्वक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहने लगे कि हे पिता! आप सम्पूर्ण सृष्टि, देवता और सबके उपजानेवाले हैं। मुझे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई है। इससे आप फिर इस कथा को विस्तार से वर्णन करें जिससे मेरे मन का कष्ट दूर हो। क्योंकि आप सब सृष्टि के महाराज हैं। सर्वसृष्टि आपकी कृपा से शरीर धारण करती है। तीनों लोक के आप सहायक हैं। फिर क्यों आपका मन ऐसा अधीर हुआ। जब आपकी सेवा से लोग ब्रह्मज्ञानी होते हैं तो आपसे ऐसे कर्म का प्रकट होना आश्चर्य की बात है। यह नारद का प्रश्न सुन ब्रह्माजी बोले कि हम अच्छी तरह से समझाकर मुख्य वृत्तान्त कहते हैं कि लोक में शिवजी की माया धन्य है। वह सबको कठपुतली की तरह नचाती है। तुमको जिस तरह उस माया ने चरित्र दिखलाया, वह प्रकट है। क्या तुम वह भूल गये जो मुझसे मूर्ख जीवों की सदृश पूछते हो। अच्छा, जिस तरह हमको शिवमाया ने नचाया, हम वर्णन करते हैं। वही सदाशिव हमारी सहायता करें। जब हमने मुख से एक लड़की उत्पन्न की कि सृष्टि बढ़े, उसको बनाकर हमारे मन में कुछ अहंकार उपजा। जो अहंकार हर गर्ववान् को दुःख देता है। उस समय शिव ने यह चरित्र ठाना। अर्थात् हमारे मुख से एक अतिसुन्दर स्त्री, जिसके देखने से सब दुःख नष्ट हो जावें, उपजी। उसका नाम संध्या रक्खा गया। ऐसी सुन्दरी इस मनुष्यलोक में तो क्या देवलोक में भी न थी। उसके सम्पूर्ण अङ्ग उचित, दोषरहित, मोहनेवाले, जिसका दृष्टान्त हमको नहीं मिलता, शीश पर श्याम सुगन्धित केश मानों सजलघन और लटें मानों काली नागिनि सी लटकती थीं। नासिका कीर के सदृश, नेत्र ललाई लिये, दोनों ओष्ठ कुन्दरूप से, अति सुन्दरी मयनहरणी रूपराशि मनको चुराये लेती थी। दाँत अनार के सदृश, ठोढ़ी अतिसुन्दर, गर्दन में तीन रेखा, दोनों हस्तकमलों में नाना प्रकार के भूषण पहिने और इसी प्रकार हर उँगली में अँगूठी आदि थी। गले में रत्नों की दुलड़ी, दोनों उरोज उठे हुए मानो कन्दुक, उदर में त्रिबली, नाभि गम्भीर कटि, क्षीण, नितम्ब बहुत ऊँचे, जङ्घा केले के स्तम्भ की तरह गोल-सुडोल, पाँव में घुँघरू आदि भूषण अलंकृत, पाँव के नख एँड़ी नवीनचन्द्र से झलकते, ऐसी कामिनी, गजगामिनी,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कटिकेहरी और चम्पकवर्णी का रूप अनूप देखकर मैं कामवासना से उठ खड़ा हुआ। उस समय दक्ष आदि पुत्रों ने मुझे निषेध किया। वह सब आप भी उसकी ओर देख इकबारगी कामियों के सदृश बुद्धि से हीन हो गये। यह विचार मैं अपने मन में कर रहा था कि अकस्मात् एक मनुष्य शुद्ध स्वरूप प्रकट हुआ। इस तरह पर कि शिर पर मुकुट, मुख ऐसा कि जिसे देख करोड़ों चन्द्रमा लज्जित हो जावें, कुण्डल कान में पहने, गले में मोतियों का हार रत्नों समेत पीतवस्त्र पहने, मगर के ऊपर चढ़े, पाँचों प्रकार के शस्त्र अर्थात् हर्षण १ रोचन २ शोषण ३ मोहन ४ मारण ५ धारण किये आ खड़ा हुआ और बोला कि हे हमारे पिता ब्रह्मा! हमारा नाम और काम बता दीजिये कि हम अपने अच्छे कार्यों के साथ जहाँ आप कहें, वहाँ स्थित रहें। मेरे ऊपर कृपा करके मेरी इच्छा पूर्ण करो। ऐसी वार्त्ता सुनकर हम आश्चर्य में हुये। अति विचार के उपरान्त हमने उत्तर दिया कि तेरे प्रकट होते ही सबके मन और गात काँप उठे। इसलिये तुम्हारा नाम मन्मथ रक्खा गया। इसके सिवाय मनसिज, मथन, काम, मदन आदि बहुत नाम तुम्हारे प्रकट होंगे। अपने पाँचों बाणों और अपने सौन्दर्य से सबको अपने आधीन किया करो। तुम्हारे आधीन सब सृष्टि रहा करेगी। अब तुम भी पुत्र उपजावो। और की क्या विष्णु तथा रुद्र भी तुम्हारे आधीन रहेंगे। अलग-अलग सबके हृदय में स्थित रहो। इस तरह से मैंने अपने पुत्र का अधिकार बढ़ाया। प्रसन्नता से अपना कार्य हुआ देखकर मेरे मन में बड़ा अहंकार उपजा। सिंहासन पर बैठ और अपने पुत्रों को देख सब दुःख दूर किया। सब लोगों ने हमारी इच्छा समझ-कर यह नाम मन्मथ बहुत उचित समझा और कहा कि कामदेव की पदवी सबसे बड़ी और ऊँची है। उसको तीनों लोकों के आधीन करनेवाला जाना। इस चरित के उपरान्त हम सब लोग प्रसन्न हो गये। कामदेव ने अपने उस कमान को सीधा किया जिससे तीनों लोक की बुद्धि नष्ट हो जाती है। ऐसे चाप को कान तक चढ़ाये हुये काम खड़ा हुआ और मन में सोचा कि जो वरदान मुझे ब्रह्मा ने दिया है, उसकी अब परीक्षा करूँ। मेरी लड़की सन्ध्या को मेरे निकट खड़े देख

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बाण को चाप में चढ़ाया और मेरे शरीर में मोहन रूप बाण मार दिया। फिर मेरे पुत्रों को भी मार मूर्च्छित कर दिया। अर्थात् वह सब कामदेव के वश हुये। जब कि उसने देखा कि सन्ध्या प्रसन्न खड़ी है और उस पर कुछ प्रभाव नहीं हुआ तो उसने सन्ध्या के हृदय में भी ऐसा बाण मारा कि जिससे वह भी काम वश हुई। काम के वेग से अधीर होकर बाँकी, तिरछी, तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगी। उस समय उसके शरीर में उञ्चास भाव और नव हाव और चौंसठ कला आदि प्रकट हुईं। पहिले हम सब अधिक बुद्धि भ्रष्ट करके मोहित हुये। उसकी अभिलाषा में हमने चाहा कि उसको पकड़ लें। मरीचि और दक्ष आदि भी मेरी भाँति स्थित हुये और आश्चर्यपूर्वक सन्ध्या को देखने लगे और कुकर्म का विचार न करके वे अधीर हो गये। हे नारद! हम सदाशिवजी की महिमा कहाँ तक कहें।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इस प्रकार हमको मोहित देख धर्मसुत सत्य बहुत घबड़ाये और चिन्ता करने लगे तथा दोनों हाथ जोड़ शिवजी के निकट गये और प्रणाम कर स्तुति करने के उपरान्त मन में ध्यान लगाये बैठे रहे। शिवजी ऐसा धर्म के विरुद्ध व्यवहार विचारकर उस स्थान पर प्रकट हुये। शिवको देख हम और हमारे पुत्र सब लज्जित हो गये और कामदेव भी अति लज्जित हुआ। तब शिव ने मेरी ओर क्रोध दृष्टि से देख कहा कि हे ब्रह्मन् ! तुम क्यों ऐसे कुकर्मी हुये। अच्छी बुद्धि को भूल तुमने आप अपनी लड़की से भोग करना चाहा। यह तुमको उचित नहीं, इसमें बड़ा पाप है। जो मनुष्य अपनी पुत्री या पुत्र की स्त्री या माता या भाई की स्त्री या भगिनी से मैथुन करता है, वह घोर नरक में पड़ता है। यह सब स्त्रियाँ बराबर हैं। इस बात को वेद और धर्मशास्त्र बखानते हैं। तुमने वेदपाठी होकर सब कुछ भुला दिया और लज्जा को छोड़कर धर्म को नष्ट कर दिया। हमने संसार में बहुत से कामी देखे पर तीनों लोक में ऐसा पाप करनेवाला एक भी नहीं है। तुमको धिक्कार है, तुम्हारी बुद्धि और वेद पढ़ने पर धिक्कार है। ऐसा पाप न किसी ने किया है, न कोई करेगा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और न इस बात के करने का कोई उद्योग करेगा। इतना कहकर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस प्रकार शिवजी ने मेरी बहुत बुराई की और मेरे पुत्रों की ओर अति भयानक स्वरूप से देखकर कहा कि हे मरीचि आदि! तुम क्यों ऐसे अधीर और कामी हो गये? तुम्हारे धर्म पर धिक्कार है। जिसको काम ने अपने आधीन कर लिया और कुछ भी धर्म व सुकर्म का विचार न किया। तुम ब्रह्मा के लड़के होकर वेद पढ़े भी हो फिर भी ऐसे अधीर हुये। धिक्कार है, धिक्कार है; तुम ऐसे कुमार्ग चलने वालों पर सहस्रों धिक्कार है तुमने अपना उत्तम धर्म छोड़ दिया। इससे क्या-क्या कुकर्म नहीं हुये? यह बातें शिवकी सुन हम अति लज्जित हुये। इसी प्रकार हमारे पुत्र भी लज्जा से दब गये। कुछ बात किसी से न बन पड़ी। उस समय सबके मन में अति लज्जा और खेद उपजा। हमने इन्द्रियों और वीर्य को शिर पर करके सन्ध्या का त्याग किया। शिवके भय से हमारा मन ऐसे पाप कर्म से बच गया। मेरे शरीर से पसीना टपक पड़ा। पहिले उससे चौंसठ योगिनी उपजीं। जो संसार छोड़े हुये हैं और तपस्या के सिवाय दूसरा काम नहीं करतीं। फिर छियासी पुत्र उपजे। दक्ष प्रजापति का पसीना पृथ्वी में गिरा उससे स्त्री उपजी। अत्रि, मरीचि, पुलह, भृगु और तुम इन सबके शरीरों से प्रस्वेद न निकला। जो पसीना वशिष्ठ, विश्रवा, अङ्गिरस, क्रतु से निकलकर धरती पर पड़ा उससे सर्वाङ्गसहित पितर उपजे जो सबकी प्रतिष्ठा के योग्य और प्रसन्नता देने वाले हैं। वे तुरन्त वेद और धर्म शास्त्र के ज्ञानी हो गये वरन् उनको सम्पूर्ण विद्याओं में पूर्ण ज्ञान प्राप्त हुआ। वे अति धर्मिष्ठ और धर्म बताने वाले और सब काम करने की शक्ति रखते थे। अब हम उनका वर्णन करते हैं कि क्रतु से सोमि, वशिष्ठ से काली, बुध पुलस्त्य से अजय, अङ्गिरस से हशमन्त हुये। इस प्रकार चार प्रकार के पितर हैं। जो छः प्रकार के प्रसिद्ध हैं सो सन्ध्या हमारी आज्ञा से पितरों से गर्भवती हुये। उस समय शिव धर्म बचाकर अन्तर्द्धान हो गये। शिवजी के चले जाने के उपरान्त मैंने काम की ओर देखा और अति क्रोध से शाप देना चाहा। मेरी इच्छा को मेरे सब पुत्र जानकर समझाने लगे पर मैंने मायावश उनके समझाने को न माना। मेरा क्रोध ज्वाल की तरह ऊँचा हुआ और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऐसे क्रोध के वश हो मन्मथ से कहने लगा कि हे मूर्ख दुष्ट ! तूने यह कैसा दुःखदायक कर्म किया। मुझसे ऐसा पाप कराना चाहा। पिता की क्या अच्छी सेवा तूने की। जैसा तूने किया तू वैसा फल पावेगा। तेरे कारण शिव ने मेरी अति निन्दा की और मुझे धिक्कार दिये। इसलिये अब तुझे शाप देते हैं कि तुम जलकर भस्म हो जावो। तुमको शिवजी को नेत्रज्वाला जला दे कि हमारा दुःख तेरी यह दशा देख दूर हो जावे। ऐसे कुपुत्र से निःसन्तान रहना उत्तम है। यह शाप सुन कामदेव थरथराने लगा। दोनों हाथ जोड़कर अहंकार छोड़ मेरी शरण आया और अति लज्जित हो यह वचन मुख पर लाया कि हे संसार उपजानेवाले, दुःख दूर करनेवाले और न्याय-अन्याय के स्थापन करनेवाले पिता ! हमने कोई आपका अपराध नहीं किया। आपने मुझे क्यों शाप दिया ? आपकी आज्ञा के विरुद्ध मुझसे कोई काम नहीं हुआ। केवल मैंने आपकी आज्ञा की परीक्षा की थी। जो कुछ आपने मेरे भाग्य से मेरे लिये आज्ञा दी, वह तो अवश्य ही होगा, पर कृपा करके ऐसा कीजिये जिसमें मैं फिर उत्पन्न हो जाऊँ। यह शाप मेरा दूर कीजिये और मेरा दुःख मिटाइये। बहुधा ऐसा होता है कि कुपुत्र पिता को दुःख देता है पर तो भी पिता सदा कृपा किया करता है। इतना कह काम हाथ पाँव जोड़ मेरी ओर देख गर्दन नीचे किये रहा। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कामदेव की यह विनती सुन हम अति प्रसन्न हुये और कहा कि जो कुछ हमने तेरे लिये कहा है, वह तो अवश्य होगा। पर तुम्हारे जलने के पीछे कुछ दिनों के उपरान्त शिवजी अपना विवाह करेंगे। तब फिर तुमको यही तनु मिलेगा और शिव तुम्हारे सहायक रहेंगे। यह कहकर हम चुप हुये और काम प्रसन्न हुआ। सुर मुनि आदि भी सब प्रसन्न हुये फिर हमारी सर्वसभा में नवीन आनन्द छा गया और चिन्ता दूर हुई।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हमने शिवजी की माया के आधीन होकर शिव के साथ गर्वपूर्वक वैर किया और काम पर कृपा कर अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मनोरथ दक्षप्रजापति से कहा कि तुम्हारी लड़की जिसका नाम स्वेदका है, उसे काम से विवाह दो। इस बात से हम अपना मनोरथ पूरा करेंगे। यह सुन दक्ष ने हमारी आज्ञा अपने शीश पर रख काम से कहा कि हमारी पुत्री जिसका नाम रति है, उसको अङ्गीकार करो और प्रसन्नता से तीनों लोक पर विजयी रहो। काम ने स्वीकार किया और बड़ी धूम-धाम से विवाह हुआ। ऐसी सिद्धता देखकर हम अति प्रसन्न हुये और दक्ष को बुलाय अति हर्ष से अपनी बाईं ओर बिठा लिया। जो वचन शिव ने पितावत् हमसे कहे थे, उनको स्मरणकर और शिव की माया से मोहित हो उनके साथ वैरभाव करके यह विचार किया कि शिव योगी रूप से तीनों लोक को जीते हुये स्त्री रहित और भोग विलास छोड़े प्रसन्न रहा करते हैं। संसार की रीति से हटकर योगियों की तरह कालक्षेप करते हैं। कामदेव को तृणवत् जानते हैं और दशों इन्द्रियों पर विजय पाकर स्वाधीन हैं। मुझको अपकर्म करने के समय धिक्कार और कटु वचन कहकर कुछ भी संकोच मन में न लाये। हे दक्ष! ऐसा उपाय करो जिसमें शिवजी संसारी रीति के अनुसार विवाह करें। जब यह बात होगी तो हम निश्चिन्त हो जावेंगे और हमारा मनोरथ पूर्ण होगा। तुमको भी शिव ने धिक्कार दिया है। आप सबसे बड़े बनकर अपने अहंकार से किसी को बड़ा न समझा। जो हमको विष्णु ऐसा कहते और हमको धिक्कार देते तो हमको कुछ बुरा न मालूम होता। शिव हमारे पुत्र होकर हमको धिक्कार देने लगे और बहुत से कटु वचन मुख पर लाये और तुमको भी भाई का विचार न करके जो चाहा सो कहा। तो जब तक शिव स्त्री से विवाह नहीं करते हमारा शोक दूर न होगा। ऐसी संसार में कौन स्त्री है जिसके ऊपर शिव मोहित होकर विवाह करें। वह शिव की चतुरता को नष्ट कर दे। पर जब काम शिव को वश नहीं कर सकता तो कौन देवता उनको आधीन कर सकता है। वह तो भय से उनकी सेवा किया करते हैं। केवल एक उपाय है अर्थात् जो कामदेव कुछ परिश्रम करे तो सब काम बन जावें। इतना कह हँसते-हँसते काम के पास गये और उनका सुन्दर स्वरूप देखकर निश्चय किया कि प्रायः हमारा कार्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कामदेव से सिद्ध होगा। काम ने आदरपूर्वक हमको बिठा लिया। उस समय हमारी श्वास से एक सुन्दर पुरुष उपजा जिसका नाम हमने वसन्त रक्खा। उस समय वसन्त के उपजने से अति आनन्द प्रकट हुआ। कामदेव की वृद्धि हुई। तीनों प्रकार की वायु चलने लगी। पक्षी मधुरवाणी से बोलने लगे। सर्व पुष्प एक ही समय खिल गये। कोकिल और भौंरा पाँचों स्वर अर्थात्, षडज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, निषाद अलापने लगे। सारस हंस नदियों के किनारे फिरने लगे। भौंरे ने हर फूल पर भ्रमण कर अपनी गुञ्जार की। कोकिला भी अतिआनन्द से बोल उठी। ऐसा काम का वातावरण देख हमने कामदेव से कहा कि अपना प्रताप दिखावो और शिव को अपने वश करो। तब तुम्हारी बड़ाई तीनों भुवन में प्रसिद्ध होगी। तुम शिव को वश करके लोक में बड़ी कीर्ति पावोगे। तुमको लोग विश्व-केतु और पृथुनाम से प्रसिद्ध करेंगे। सत्पुत्र माता-पिता की प्रसन्नता सर्वोपरि जानते हैं। मेरे इस वचन को सुन कामदेव ने अपनी सब सेना तत्पर की और मुझे प्रणामकर जीव से निराश हो शिव के पास चला।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय कामदेव ने कुछ ऐसा वातावरण उत्पन्न किया कि कामी तो विवश हो अधीर हो गये। ऐसा हाव-भाव काम ने किया कि सब लोग अपने धर्म को भूल गये। उस वन में सम्पूर्ण स्त्री पुरुष मोहित हो गये। वरन् शिव के गण भी बचे न रहे। यह कामदेव का कार्य शिव ने जाना और अपनी इन्द्रियों को जीते हुये ध्यान में बैठे रहे। जब काम की कुछ न चल सकी तब काम दुःख और चिन्ता में डूबा हुआ लौट आया। हमारी स्तुति के उपरान्त वह कायर के सदृश पृथ्वी पर गिर पड़ा उसने लज्जित हो कहा कि मैंने अपनी सेना से मुनि और देवता आदि को तो वश कर लिया और जितने जीवधारी थे, वह सब मोहित हो गये। पर शिव को कुछ भी मोह न हुआ। मैं बहुत डरता हूँ कि वे क्रोध न करें। उनका प्रज्वलित अग्नि समान रूप देखकर बड़ा भयवान् होता हूँ। मैं सच कहता हूँ कि मैं हार गया। शिवके मन में कुछ प्रभाव न होगा। मैं शिव के वश करने का कुछ बल नहीं रखता क्योंकि मैंने अच्छी तरह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

परीक्षा कर ली है। यह सुन मुझे अतिचिन्ता हुई। मेरे मुख पर उदासीनता छा गई। मैंने शोक में बैठकर जो बहुत से श्वास छोड़े उनसे बहुत प्रकार के गण उत्पन्न हुये। उनके हाथों में नाना प्रकार के शस्त्र थे। कई तो सिंह के सदृश और कइयों के मुँह हाथी से थे। कई ऋक्ष का सा मुख धारण किये थे। कई घोड़े आदि के से मुख लगाये थे। कई शेर का सा शरीर रखते थे। कोई अति रुष्ट-पुष्ट, कोई अति क्षीण मलिन, कोई मध्य वर्ण का, कोई श्वेत, कोई पीत, कोई हरित आदि वर्ण का था। जिनका स्वरूप देखते हुये भय होता था। वे बड़ा शब्द करते, गाते, नाचते और मार-मार ऐसा शब्द कहते थे जिनका शब्द चहुँ ओर फैल गया। वे बहुत उपद्रव करते थे। उनकी संख्या हम वर्णन नहीं कर सकते। ऐसे समूह को काम ने देखा और मुझसे प्रसन्न हो कहा कि ये कौन हैं। इनका क्या नाम है? हमने कहा इनका शब्द मार-मार है इसलिए इनका नाम मार होगा। यह तुम्हारे साथी होंगे और सब तपस्वियों का तप बिगाड़ेंगे। यह अच्छे बुद्धिमानों की बुद्धि नष्ट कर दिया करेंगे। इनसे बढ़कर तीनों लोक में दुःखदायी और कोई न होगा। हे काम! यह सेना लेकर इस बेर फिर जावो और वह उपाय करो कि शिव स्त्री अङ्गीकार करें। तब कामदेव बोला कि मेरी कुछ नहीं चली और न अब आशा है। पर यह बात हम आपसे कहते हैं शिव का ध्यान तो भटकेगा और मेरे प्राण जाने हैं सो वह जावेंगे। इतना कह काम नई सेना समेत वहाँ से चला और वहाँ पहुँचा, जहाँ शिवजी ध्यानवस्थित थे। काम शिवजी को शिर के बल प्रणाम करता हुआ उनकी प्रसन्नता के लिये असंख्यनामों से स्तुति करने और कहने लगा कि मैं अपने पिता की आज्ञा से यह काम करने आया हूँ सो आप मुझ पर कृपा रक्खेंगे। इतना कह वसन्त को चारों ओर फैला दिया। उस समय किसी के मन में धीर न रहा। काम, वसन्त, मन्द पवन और मार गणों ने अपना-अपना पूरा काम किया पर शिव का ध्यान न भटका। काम को अहंकार से रहित देख न जलाया सो काम लज्जित होकर फिर लौट आया। उसने कहा कि हम सब कुछ करके हार हार गये। हमारी कुछ नहीं चलती। यदि आपकी इच्छा है कि शिव विवाह करें तो इसके सिवाय कोई अन्य उपाय कीजिये। यह कह काम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो अपने घर चला गया और हम निराश होकर चिन्तित हुये। बहुत समय तक इसी शोक में मग्न रहे पर कोई युक्ति न सूझी। उसमें हमने विष्णुजी का ध्यान किया और उनकी बहुत स्तुति की।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब मैंने यह कहा कि हे विष्णु भगवान्! मुझे अपना किंकर समझ कृपा करके मेरा दुःख दूर कीजिये। हे भक्त-वत्सल! आप तो अपने सेवकों के लिये अवतार लेते हैं। इस समय आप प्रकट हों और मेरे दुःख को दूर करें। यह सुन विष्णुजी प्रकट हुये। हमने बहुत स्तुति करके प्रणाम किया तो विष्णुजी हँसकर कहने लगे कि क्यों तुमने हमारी स्तुति पढ़ी हैं। तुमको कौन कष्ट है? हमने पिछला सम्पूर्ण वृत्तान्त कामदेव का जाना और वहाँ निराश होकर लौटने का सब हाल कह सुनाया। विष्णुजी ने कहा तुम क्यों शिव को स्त्री सहित देखना चाहते हो और उनका एकान्त रहना नहीं चाहते। तुम्हारी इच्छा के सुनने के उपरान्त हम उपाय करेंगे। हमने जिस तरह कि अपनी पुत्री सन्ध्या के साथ मैथुन करना चाहा था, वह सर्व वृत्तान्त कह सुनाया और यह भी विनय की कि जब तक हम शिव को स्त्री सहित न देखेंगे तब तक वह धिक्कार जो मुझे शिवजी ने दिया है, न भूलेंगे। यह सुन विष्णुजी बोले कि हे ब्रह्मन्! यह मूर्खता जाने दो! तुम शिवको अपना पुत्र जानकर अपनी बुद्धि के विरुद्ध बातें करते हो। तुमने वेद का पढ़ना भुला दिया। तुम बुद्धि छोड़ शिव के साथ वैर करते हो, मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि शिव परब्रह्म सबके स्वामी और हम-तुम सब उनके सेवक हैं। वे आदि, अन्त और मध्य से रहित तथा सब प्रकट गुप्त के जाननेवाले हैं। स्वाधीन और भक्तों पर अनुग्रह करने वाले हैं। यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि शिव स्त्री अङ्गीकार करें तो तुमको उचित है कि उनकी शरण में जावो और कठिन तप से उनको प्रसन्न करो। उमा को भी स्मरण करो। दक्ष से भी उसी प्रकार का तप करावो। तो दक्षप्रजापति की पुत्री शिव से ब्याही जावेगी और वह कृपाकर सब दुःख निवृत्त करेंगे। इस तरह तुम्हारा कार्य पूर्ण होगा। इतना विष्णुजी कह और शिव के चरणों का ध्यान धर अपने लोक को चले गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छठवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! मैंने जो वैर, शिव से उनकी माया से मोहित होकर किया था, वह छोड़ दिया । दक्ष को बुलाया और जिस तरह विष्णुभगवान् ने मुझसे कहा था, सब कहा । फिर मैंने कहा कि अब तुम एक लड़की उपजावो जो तुम्हारी पुत्री शिवरानी हो जावे तो हम तुम संसार में धन्य होंगे । अब तुम सदाशिव का तप करो और उनको ऐसा प्रसन्न करो कि तुमको उनके दर्शन प्राप्त हों । वरदान में केवल यह माँगना कि आप हमारे पुत्र होकर अवतार लें । हम भी तप करके यही वरदान लेंगे । वह आदिशक्तिमान् हैं और सगुण-निर्गुण दोनों रूप हैं । उनकी महिमा वेद कहकर पार नहीं पाते । निश्चय है कि सदाशिव तप की फाँस में आकर दर्शन देंगे । यद्यपि शिव श्रुतिगोचर नहीं और हमको भी जब शिव ने उपजाया था, तब हमारी और विष्णुजी की विनती से कहा था कि हम भी अवतार लेंगे जिसका नाम हर होगा । वह तुम्हारे सब काम पूरे करेगा । आदिशक्ति जिसका अंश लक्ष्मी है, उसकी एक कला से हमारी शक्ति उमा के स्वरूप से अवतार लेकर हर की पत्नी होगी। जो हमारे स्वरूप की है उसी आदिशक्ति से संसार भर उपजता है । वह संसार भर की माता है । वह तुम्हारे घर में सतीनाम से उपजेगी । सो हे दक्ष ! हम और विष्णुजी को तुम स्त्री सहित देखते हो । पर हर ने अब तक स्त्री को अंगीकार न किया । न अब तक सती का अवतार हुआ सो अब मन लगाकर ऐसा उपाय करो कि सती अवतार लें । ऐसी बातें कहकर हमने दक्ष को विदा किया । हम भी तप के लिये मन्दर पर्वत पर गये और वेद के अनुसार सम्पूण इन्द्रियों को वशकर ध्यान में लगे । श्रीजगदम्बा में मन लगाया और श्वास शीश पर चढ़ाया । मन के वेग को जीतकर स्तुतिनिर्माण करके सुनाई । जगदम्बा मेरी स्तुति सुन अति प्रसन्न हुईं और अपना सेवक जान कृपाकर प्रकट हुईं ।

सातवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! कौन ऐसा सुर-मुनि है जो उस महासुन्दर रूप छवि अनूप को देखकर मन को वश कर सके । उसके अवलोकन से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अमरगण भी मोहित हो जाते हैं। अपने मुख्य चिह्न और वस्त्राभूषण से अलंकृत, आठ भुजा धारण किये, शिर से पाँव तक सुन्दरता आभरण से सजी हुई, जिसको देखकर कोटि कामदेव लज्जित हों, सजल घन की श्यामता शरीर में प्रकट किये, सिंह पर चढ़े, ऐसे रूप को देख शिर झुका स्तुति करने लगा। फिर मौन हो गया। भवानी बोली वर माँगो, वर माँगो। मैंने पिछली बात याद करके देवी से माँगा कि रुद्रनाम शिव ने व्यर्थ मुझे कटु वचन कहे और धिक्कारा। सो आप अवतार लेकर उनको वश में करें। वह भी गृहस्थ हो जावें और यही वरदान आप दक्ष प्रजापति को, जो आपका तप कर रहा है, देवें कि मेरा मनोरथ पूर्ण हो। यही मैं माँगता हूँ और तीनों लोक में कौन है जो सिवाय आपके शिव को मोहित कर सके। भवानी बोलीं हे ब्रह्मन्! तुम धोखा देकर हमसे क्या माँगते हो। इसमें तुम्हारा क्या लाभ है? जो मैं तुमको यह वरदान नहीं देती तो वेद का मार्ग नष्ट होता है। फिर देवी ने योग धारणा से उस परमेश्वर का ध्यान किया जो अपने भक्तों को प्रसन्नता देता है और अन्तःकरण का सब हाल जानता है। सो वहाँ से यह आज्ञा हुई कि हाँ, जो वरदान ब्रह्मा माँगते हैं उनको वही हो और दूसरा अवतार लो। हम तुमको बड़ी प्रीति से अङ्गीकार करेंगे। ऐसी दशा में भी ब्रह्मा को ऐसा मोहित करेंगे जिससे उनका गर्व जाता ही रहेगा। यह आज्ञा पा देवी ने अति आनन्द हो मुझसे कहा कि हर योगी हैं, मोहने लायक नहीं। पर तुम्हारी बिनती के अनुसार युक्ति से तुम्हारा मनोरथ पूर्ण किया जावेगा। जो कि हर को स्त्री के अङ्गीकार किये बिना न तो परलोक का फल मिलेगा और न संसार में आनन्द। इस कारण हम प्रकट होंगी अर्थात् हम दक्ष प्रजापति की पुत्री होंगी और शिव हम पर मोहित होकर हमसे विवाह कर लेंगे। यह कहते-कहते वह स्वरूप अन्तर्द्धान हो गया और हमको भी प्रसन्नता हुई। हमने फिर आकर प्रसन्नतापूर्वक यह हाल अपने पुत्रों से कहा।

आठवाँ अध्याय।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो! ऐसी वार्त्ता ब्रह्मा की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन नारद ने अति प्रसन्नता से विनय की कि हे प्रजापति ! जब आपको सदाशिव ने वरदान दिया तो फिर क्या हुआ ? ब्रह्मा बोले हे पुत्र ! यद्यपि तुम सब जानते हो पर जोकि भले लोगों की रीति होती है कि वे अपने को मूर्ख बनाकर औरों से पूछा करते हैं तो यह प्रश्न तुम्हारा इस कारण है। सो प्रकट हो कि देवी ने वरदान दे दिया और दक्ष प्रजापति ने हमारी आज्ञा के अनुकूल घोर तप किया। गरमी में जलती हुई अग्नि तापता, शीतकाल में कुटी से बाहर रहा और अधिक शीत में पानी में बैठ शिवरानी का तप करता रहा। तीनों प्रकार का प्राणायाम करके शिवरानी के चरणारविन्दों में मन को स्थिर किया। यह दक्ष का तप श्रीजगदम्बा ने स्वीकार किया और अपने उसी शुद्ध स्वच्छ स्वरूप से प्रकट होकर दर्शन दिये। दक्ष ने प्रणाम कर स्तुति की और कहा कि मैं आपकी शरण आया हूँ। मुझे सेवक जान कृतार्थ कीजिये। ऐसी उत्तम स्तुति सुन जगदम्बा ने कहा कि तुमको जो इच्छा हो, वह माँगो। वह कौन वस्तु है जिसको हम नहीं दे सकतीं। दक्ष बोले हे महामाया ! आप हमारे घर अवतार लीजिये और हमारी पुत्री होकर हर के मनको मोहित कीजिये। अर्थात् जिस तरह से हो सके आप शिव की स्त्री होवें। इसमें केवल मेरा ही अर्थ नहीं है, वरन् तीनों लोक का उपकार होगा। सिवाय इसके जो मैंने मोक्ष को छोड़कर यह वरदान माँगा तो यह बात अवश्य हो। जगदम्बा बोलीं अच्छा यही होगा। हम तुम्हारी स्त्री के उदर से उत्पन्न होकर शिवकी स्त्री होंगी। पर तुम कुछ अहंकार न करना वरन् तुम्हारा गर्व मिटाया जावेगा। इतना कह श्रीजगदम्बा अपने लोक को गईं और दक्ष अपने लोक में बड़ा प्रसन्न होकर आया कि जगदम्बा मेरे घर अवतार लेंगी। स्त्री बिना दशसहस्र मानसी सृष्टि उपजाई। वे सब तुम्हारी प्रेरणा से घर छोड़ बाहर चले गये और फिर लौटकर न आये और परमपद को पहुँचे। यह सुन दक्ष ने फिर दश सहस्र उत्पन्न किये। सो वह भी तुम्हारे उपदेश के अनुसार जहाँ उनके भाई गए थे, वहीं चले गये। यह बात सुनकर दक्ष ने क्रोधित हो तुमको ऐसा शाप दिया कि हे नारद ! तुम बड़े अधम हो कि तुमने हमारे सब पुत्र विरुद्ध

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर दिये। इसलिये तुम एक स्थान पर न रहकर सदा भ्रमण किया करोगे। यही तुम्हारे कर्म का फल है। ऐसा शाप तुमको देकर वह कुछ धैर्यवान् हुआ और मन में ठाना कि अब मैथुनी सृष्टि उपजानी चाहिए। विवाह की इच्छा कर वीरनी जो प्रजापति की पुत्री थी, उससे विवाह किया। बड़ी धूम विवाह में हुई। जगदम्बा का ध्यान धरा, जगदम्बा ने समझा कि अब समय है कि हम दक्ष के घर उत्पन्न हों और दक्ष का मनोरथ पूर्ण करें। तथाच दक्ष के मन में प्रवेश कर गई। उस समय दक्ष प्रजापति अति प्रसन्न हुये और भगवती के तेज प्रकाश से दक्ष का शरीर चमकने लगा। दक्ष ने अच्छा समय पा अपनी स्त्री में वह तेज स्थिर कर दिया और जगदम्बा वीरनी के मन में स्थित हुई। उसका भी तेज सूर्यवत् चमकने लगा और वीरनी ने गर्भवती स्त्रियों का रूप बनाकर अपना गर्भ सब पर प्रकट किया।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दक्ष की स्त्री गर्भवती हुई, उस समय बड़ी धूमधाम से उत्सव किया गया। दक्ष ने सब रीतें पूर्जीं। हम और विष्णु ने भी उस सभा में संयुक्त होकर वीरनी की सेवा और स्तुति करने के उपरान्त दक्ष की प्रशंसा की। फिर सभा उठगई और हम सब अपने-अपने लोक को गये। इस प्रकार नव महीने बीतें और दशवें का आरम्भ हुआ तो सर्व ओर आनन्द का वातावरण अपने आप प्रकट हुआ। साधुओं के मन में प्रसन्नता उपजी। आकाश से बाजे बजने लगे। उस उत्तम समय में श्रीमहारानी जगदम्बा ने अवतार लिया। उस समय बड़ा उत्सव और आनन्द हुआ। तीनों लोक प्रसन्नता से भरपूर हुये। तीनों भाँति की पवन चलने लगी। उस समय कोई मनुष्य खेदवान् दृष्टिगोचर न हुआ। विष्णु, हम और सम्पूर्ण ऋषि-मुनि इकट्ठे होकर दक्षप्रजापति के घर गये। अति प्रसन्नता से बाजे बजने लगे। पातुर नृत्य करने लगीं। गन्धर्व गाना गाने लगे। आकाश से पुष्पवृष्टि हुई। सब लोग स्तुति करने लगे कि हे शिवा–शिवरानी! तुम सम्पूर्ण संसार की राजरानी हो। तुम्हारी महिमा वेद भी नहीं जानते। तुम आदिशक्ति हो। तुम सबकी माता और प्रसन्नता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देनेवाली हो। अब जिस काम के लिये तुमने अवतार धारण किया है, वह कीजिये। इस प्रकार विनती कर हम सब अपने-अपने स्थान को चले गये। वीरनी ने जब अपनी लड़की का मुख देखा तो उसके हृदय के ज्ञान से विदित हुआ कि आदिशक्ति है और हमारे यहाँ अवतार लिया है। उसका अद्वितीय रूप देखकर पहिंचाना जो अष्टभुजी, महाप्रकाशमान, तेजस्वरूप, बादल के सदृश श्यामवर्ण, टखनी और पगतली रक्तनख झलकते हुये, इसी प्रकार सर्व अङ्ग अतिसुडोल, महासुन्दरी, सम्पूर्ण प्रकार के भूषण और वस्त्रों से अलंकृत, कानों में कुण्डल, हाथों में कङ्कण, गले में हार, माथे पर शिंगरफी बिन्दी से चन्द्रमुख को सजाये हुये वीरनी को दर्शन दिया।

दसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वीरनी ऐसा स्वरूप देख दोनों हाथ जोड़े हुये स्तुति करने लगी। कहा कि मैंने जाना कि तुम आदिशक्ति और सृष्टि की जननी हो। हमारे ऊपर कृपा करके हमारे घर अवतार लिया सो हम पर अनुग्रह करो। यह स्वरूप अपना मेरे मन में स्थित करो। इस समय बालस्वरूप से अपना स्वरूप दिखावो। मैं तुमको पहिंचान चुकी। तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और तुमको क्या पहिंचान सकती हूँ। तुम्हारी वेद भी स्तुति करके अन्त को हार मान चुप हो रहते हैं। उस समय दक्षप्रजापति ने आकर बड़ी स्तुति की और कहा कि तुमने अपना वचन पूरा कर मेरे घर अवतार लिया। मैं और मेरे भाई, वेद, सब जीवन्मुक्त हो चुके। आपकी महिमा अप्रमेय है। सुर, मुनि, नारद, शारद भी कहकर पार नहीं पाते। व्यास आदि जो बड़े पण्डित हैं, उनमें भी इतनी वचन-शक्ति नहीं कि कुछ कह सकें। सनकादिक भी आपकी महिमा से अज्ञान और मूर्ख हैं। शेष जिनके सहस्र जिह्वा है, वह भी तुम्हारे पवित्र नाम कहते-कहते हार जाते हैं। ब्रह्मा विष्णु तो क्या जानें और वही आपकी महिमा आपकी कृपा से एक मूर्ख मनुष्य भी जान सकता है। यही बात वेद कहते हैं कि तुम केवल पूजा और तप के वश हो। जैसा कि सुरथ का तप साक्षी है, जिसने अपने तप से परमपद पाया। शुम्भ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निशुम्भ ने भी क्रोध और वैर से आप चित्त लगाया। तो भी आपके चरणों में ध्यान लगाने से परमगति को पहुँचे। इसी प्रकार दक्ष ने महामाया की बहुत स्तुति करके अन्त में यह बिनती की कि यह रूप अपना हमारे मन में बसाकर और-और रूप जो समय के योग्य हो, धारण कीजिये। वह चरित्र कीजिये जिसमें प्रसन्नता प्रकट हो। इस प्रकार से श्रीदेवीजी भी दक्ष और वीरनी अपने माता-पिता की बातें सुन बोलीं कि हे दक्ष और वीरनी ! तुमने हमारा बड़ा तप किया और हमने वरदान देने के अनुसार तुम्हारे घर अवतार लिया। तुमको उचित है कि जिस प्रकार तुम मुझको शक्ति जानते हो, उसी प्रकार का विश्वास रखना और गर्व न करना। इतना कह कन्या का रूप धर संसार की रीति के अनुसार रो उठी। यह रोना सुन कुल की असंख्य स्त्रियाँ इकट्ठी हुईं। सब बाँदियाँ भी आईं और पुत्री को देख प्रसन्न हुईं। उस दिन नगर भर प्रसन्न हुआ और चारों ओर से जय-जय का शब्द ऊँचा हुआ। आनन्द के बाजे बजने लगे। वीरनी और दक्षने वेद तथा कुल के अनुसार सब रीतें पूरी की। बहुत कुछ कोष दान दिये। उस समय हम और विष्णु भी सुर-मुनि को साथ लेकर वहाँ पहुँचे। दक्ष की बिनती के अनुसार हमने उस कन्या का नाम सती रक्खा। इस आनन्द की तीनों लोक में चर्चा हुई। दक्षप्रजापति ने पुरुषों का और वीरनी ने स्त्रियों का अति आदर-सम्मान किया। इसके उपरान्त सब लोग अपने-अपने घरों को सिधारे। दक्ष स्त्री सहित सती के प्रेम में ऐसे मग्न हुये कि सब काम भूल गये। सती चन्द्रमा की कला की तरह दिन-दिन बढ़ने लगी। सती हर दिन शिवपद गाया करती और सदाशिव का ध्यान करती। सती के विचित्र खेल थे कि वह पार्थिव पूजन करती और माता-पिता की प्रसन्नता को सर्वोपरि समझती। यद्यपि शिव में अहर्निश ध्यान रहता पर इस बात को प्रकट न करती। इसी प्रकार खेल-तमाशे में लगी रहती। निदान खेलते-खेलते कुछ बड़ी हुई तो मुख की कान्ति दूनी हो गई। जिसको हम क्या वर्णन कर सकते हैं। उनके बराबर तीनों लोक में कोई सुन्दर नहीं। उनके सर्व अङ्ग सुडौल, वस्त्रों से अलंकृत जिनको देख कोटि-कोटि काम लज्जित हो जावें। लक्ष्मी, सरस्वती और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मोहनी भी उनकी बराबरी न करके अन्त को हार मान गईं। यह दक्ष की कन्या का संक्षेप में वृत्तान्त वर्णन किया गया। अब और कथा सुनिये।

ग्यारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समय सती ने दक्ष के पास एक विचित्र चरित्र किया था। उस समय हम और तुम दोनों वहाँ पहुँचे। सती ने हमको और तुमको सोने की चौकी बैठने को देकर दोनों की स्तुति की। हमने और तुमने सती की ऐसी सेवा और नम्रता देखकर यह वरदान दिया कि जिसकी हम और विष्णु दोनों सेवा करते हैं, जिसकी महिमा अप्रमेय है और जो दूसरी स्त्री न चाहे, ऐसा मनुष्य तुम्हारा पति हो। यह तो सती से कहा फिर दक्ष से बोले कि हे दक्ष! तुम धन्य हो कि जिसके घर में आदि शक्ति जगदम्बा ने अवतार लिया। अब तुमको उचित है कि कन्या का विवाह शिव से कर दो। मोह को दूर करो। कन्यादान बड़ी बात है। ऐसे दान करने से अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है। इतना कह हम, तुम और मुनि आदि अपने-अपने घरों को चले गये। दक्ष प्रसन्न होकर कहने लगा कि अब सती युवा भई और घर से बाहर पग नहीं रखती। अब हमें उचित है कि जिस प्रकार शिव उनको स्वीकार करें, वह उपाय करें। इस प्रकार के विचारों में समय बहुत बीता और कोई बात दक्ष के मन में स्थित न हुई। इस समय में सती ने विचारा कि मैं शिव का तप करके शिव की शक्ति हो जाऊँ पर लज्जा से माता-पिता की आज्ञा बिना इस बात को नहीं कर सकती थी। अन्त को एक दिन उसने अपनी माता से यह मनोरथ प्रकट किया। कहा कि जो आज्ञा हो तो वन में जाकर शिवजी का तप करूँ। क्योंकि वह तप बिना मुझसे विवाह न करेंगे। विवाह बिना तुम्हारा मनोरथ पूर्ण न होगा। उत्तम हो कि तुम पिता से आज्ञा दिला दो। यह सुन वीरनी ने दक्ष को बुला लिया और सती के तप का मनोरथ कह सुनाया। दक्ष अति प्रसन्न हुये और सतीजी अपने माता-पिता की आज्ञा लेकर अपनी सहेलियों समेत हाटकेशवन में पहुँचीं। वह वहाँ पर कठिन तप करने लगीं। तीनों ऋतुओं में शीत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और जल में रहकर आश्विन से व्रत का आरम्भ किया। पूरी शिवजी की पूजा की और कार्तिक में प्रभात को स्नान कर शिवपूजन करके रात्रि-दिन शिव के चरणों में ध्यान लगाये रही। अगहन में प्रभात को स्नान कर सदाशिव का शक्ति समेत पूजन किया। पौष के उजियाले पक्ष में जो नागमन्थ का व्रत प्रसिद्ध है, करके रात्रि को जागरण करके बड़ा उत्सव किया। माघ में स्नान कर शिवजी की पूजा की और भीगे हुये कपड़ों से नदी किनारे तप करती रही और रात्रि को सखियों समेत जागरण कर अति प्रसन्न हुई। फाल्गुन मास की चौदस को शिवपूजा की और नाना प्रकार के पुष्प चढ़ाये। रात्रि को जागरण कर चारों पहर पूजा की। चैत्रमास में शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को किंशुक अर्थात् टेसू के फूल अर्पण किये और पुष्प मँगाकर उन्हीं से शिव पूजन किया। वैशाखसुदी तीज को शिवपूजा की और शिव के सामने नाना प्रकार के नैवेद्य समर्पण किये। सिवाय इसके हर दिन यह नियम था कि प्रभात को तारे देख स्नान कर ध्यान में प्रवृत्त होती। जब शुभज्येष्ठ का मास आया तो उस मास के अन्त में व्रत रहकर सहस्रों भटकटैया के फूलों से शिव का पूजन किया। आषाढ़मास जो अति पवित्र है, मासभर व्रत रखकर नाना प्रकार के पुष्पों से शिवपूजन किया। श्रावण मास की अष्टमी को वस्त्रादिक दान किये। भादों के कृष्णपक्ष की काम तिथि में अच्छे-अच्छे फूल फूलों से अच्छी तरह शिवपूजा की। चतुर्दशी को भी शिवपूजन यथाशक्ति किया। इसी प्रकार सती का नन्दाव्रत पूर्ण हुआ। उसके पूर्ण होने से सती अति प्रसन्न हुई। लोगों को बहुत दान दिया। वेद के अनुसार उत्तम-उत्तम वस्तु संग्रहकर शिवपूजन यथोचित किया। ब्राह्मणों को शिव का रूप जान उनको भी पूजा और इसी प्रेम में मग्न हो गई। फिर योगधारण से तप किया और श्वास चढ़ाकर जल में बैठ रही। उस समय हम और विष्णु आये और देखा कि सती सिद्धों और अमरगणों की तरह बैठी हैं और वहाँ के सम्पूर्ण जीवों में कुछ वैरभाव नहीं है। यहाँ तक कि सिंह और गौ एक साथ रहते हैं। साँप मोरों की पीठों को अतिप्रीति से खुजला रहे हैं और परस्पर लिपट रहे हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घोड़ा और भैंसा परस्पर लीला कर रहे हैं। चूहा और बिल्ली एक ही जगह पर बैठे हैं। इसी प्रकार सब जीवधारी शत्रुता छोड़ प्रीतिपूर्वक क्रीड़ा करते हैं। ऐसी दशा देख हम और विष्णुजी सती की स्तुति करने लगे। फिर कैलाश पर्वत की ओर यह कहते हुए चले कि सती को शिवजी अङ्गीकार करें।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम, विष्णु, देवता, मुनि, नाग और सिद्ध सबने शिवजी के निकट जाकर देखा कि शिवशंकर शान्तिस्वरूप विराजमान हैं। तब हम स्तुति करने लगे और विनती की कि हे महाराज! जब हमको आपने उपजाया था, तब प्रतिज्ञा की थी कि हम तुम्हारे उपकार के लिये अवतार धारण करेंगे और रुद्र हमारा नाम होगा। सो ऐसा ही हुआ कि आपने अवतार लिया। अब हम पर आप कृपा कीजिये। यह कह विष्णु और हम सब चुप हो गये। यह सुन सदाशिव बोले कि तुम दोनों मुझे अतिप्रिय हो। तुम किस लिये मुनियों समेत आये हो, ठीक-ठीक कह दो। यह वचन सुनकर हमने समझा कि अवश्य सिद्धि होगी। विष्णु और हम दोनों ने हाथ जोड़ विनय की कि पहिले आपने कहा था कि हम विवाह करके लोक के कार्य सिद्ध करेंगे। सो अब वह समय आया है। अब अपना वचन पालन कीजिये और जिस प्रकार कि धर्म की वृद्धि हो, वही कीजिये। यह सुन हँसकर सदाशिव बोले कि हम योगी हैं। हमसे और विवाह भोग से क्या वास्ता? हमारा शरीर अवधूत और हमारी सामग्री भी अशुभ है। हमको इसी योग में बड़ा आनन्द है और इसी दशा में हम बड़े प्रसन्न हैं। देखो, लोक में विवाह से अधिक आनन्द नहीं मानते, पर वह बड़ा कारागृह है। जैसा कि वेद कहते हैं और जो बात मुझे नहीं भाती, उसी को तुम कराते हो। अच्छा हम अपना वचन पूरा करने के लिए विवाह करेंगे पर इतनी बात है कि जैसी स्त्री हम कहें, उसी प्रकार की स्त्री तुमको ढूँढ़नी होगी। अर्थात् वह ऐसी ही हो कि हमारा तेज सह सके, गर्व दूर करे तथा महासुन्दरी और कीर्तियुक्त हो। जब हम योग करें, वह योगिनी हो जावे और मैथुन के समय रति के समान हो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फिर दूसरी बात यह है कि हमारी बात को माने और सेवा करे। यह सुन हम और विष्णु ने हाथ जोड़ विनय की कि आपके योग्य दक्ष प्रजापति की पुत्री है जो आपका महाकठिन तप कर रही है। आप वहाँ चलकर उसको वरदान दे आइये और उससे विवाह कीजिये। यह कह हम चुप हो रहे और सदाशिव हँसकर कहने लगे कि 'तथास्तु'। यह सुनकर देवता और मुनि आदि जय-जय कह उठे। फिर सब विदा हुये और शिव अपने गणों को साथ लिये हुये सती को वरदान देने को, उसी स्वरूप से जिस रूपका सती ध्यान करती थीं, सती के पास जा पहुँचे। उस समय सती के मन से वह स्वरूप जिसका सती ध्यान कर रही थीं, गुप्त हो गया। सती ने चिन्तित होकर जो आँखों को खोला तो वह स्वरूप सामने दिखाई दिया। सती ने प्रणाम किया और मनमें ऐसे स्वरूप को ध्यान धर लज्जा के मारे शिर नीचे कर लिया। आनन्द में मग्न हो चुप हो रहीं और कुछ न कहा। उस समय जो आनन्द सती को हुआ, उसको हम कोटि जिह्वा से भी वर्णन नहीं कर सकते। निदान शिवजी बोले—हे दक्ष प्रजापति की पुत्री! तुम्हारे तप से हम प्रसन्न हुये। जो इच्छा हो, वह माँगो। यद्यपि शिव मनोरथ जानते थे, पर सती का वचन सुनने को आज्ञा दी। फिर भी सती ने कुछ न कहा। शिवजी को यह भाव अच्छा मालूम हुआ और कहा माँगो-माँगो, देर न करो। तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा। इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद! जब इस तरह से शिवजी ने बारम्बार कहा तब सती बोलीं कि हे महाराज! आप क्या नहीं जानते, आपका बास तो घट-घट में है। आप हमारे मुखसे अपनी प्रीति सुना चाहते हैं और संसारी जीवों के समान पूछते हैं। सो हमारा मनोरथ सुनिये कि आप हमारे पति हों। हमारे साथ विवाह करके हमको अपने घर की दासी बनाइये। यह सती का वचन सुन शिव बोले कि 'तथास्तु' और कृपा दृष्टि से सती की ओर देखा और अन्तर्द्धान हो गये।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सती ऐसा वरदान शिवसे पाकर अति प्रसन्नतापूर्वक अपने घर को सिधारी और सती की सखियों ने सम्पूर्ण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वृत्तान्त सती का कह सुनाया। जिसे सुन उनके माता-पिता और सब नगरवासी अति प्रसन्न हुये। दक्ष ने मङ्गनों को बहुत-सा दान दिया। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। इतना कहकर सूतजी बोले कि हे मुनियो! जब नारद ने ब्रह्मा से यह कथा सुनी तो बोले कि हे ब्रह्माजी! यह चरित्र सुन हमारे सर्व दुःख दूर हो गये और आनन्द प्राप्त हुआ। अब जो कुछ और इसके आगे चरित्र हो, वह सब कहिये। आपकी बराबर शिव पूजकों में संसार भर में कोई नहीं। ब्रह्मा बोले कि जब हमको यह वृत्तान्त मालूम हुआ तो मैं प्रसन्न होकर शिवजी की सेवा में गया और हाथ जोड़ बहुत स्तुति कर विनय की कि मुझे क्या आज्ञा होती है। शिव बोले कि सती ने हमारा बड़ा तप किया और हमने उसको वरदान दिया सो तुम जाकर दक्ष प्रजापति से कहो कि वह विवाह की तय्यारी करे। हम सती को अङ्गीकार करेंगे। यह कह मुझे विदा किया। मैंने दक्ष के पास आकर शिवकी आज्ञा सुनाई। दक्ष उत्तम लग्न विचारकर विवाह की सामग्री जोड़ने लगे और रत्नों समेत लग्न शिव के पास भेजा। सबको समाचार कहला भेजा। गण अति प्रसन्न होकर इधर-उधर दौड़ने लगे। चारों ओर से पुष्पों की वर्षा हुई और बाजे बजने लगे दोनों ओर से बड़ी तय्यारी हुई। शिव बरात सजा कर दक्ष प्रजापति के नगर की ओर चले। जब बरात दक्ष प्रजापति के नगर के निकट पहुँची तब शिव ने सप्तऋषि को दक्ष के पास भेजा। दक्ष बरात को नगर के निकट जानकर अगवानी के लिये चले। भेंटकर हाथ जोड़े हुये अपने मन्दिर ले चले। उस समय शिवजी, हम, विष्णु, आठो वसु, ग्यारह रुद्र, द्वादश सूर्य, सिद्ध, भूत, प्रेत, गन्धर्व, चारों गुह्य, किन्नर, विद्याधर, देवता, मुनि और असुरों समेत दक्ष के द्वार पर जा पहुँचे। तब चारों ओर से जय-जय शब्द होने लगा। वेद और कुल के अनुसार सब रीतें हुईं। गान होने लगा। दक्ष ने ब्राह्मणों को बहुत सा दान देकर बरात के ठहरने को अति उत्तम स्थान दिया, जहाँ सब स्थित हुये। दक्षने हमको बुलाकर कहा कि वेद के अनुसार विवाह करो जिससे हमारी पुत्री शुभ और पतिकी प्यारी हो और उसके बहुत सन्तान हों। फिर सब प्रकार के उत्तम भोजन बरातियों को खिलाये। उसमें चारों प्रकार से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

षडरसों के स्वाद थे। बराती सब प्रकार के व्यञ्ज सुनकर अति प्रसन्न हुये। वहाँ उस समय कोई खेदवान् न था। भला जहाँ जगन्माता हो वहाँ किस वस्तु की न्यूनता हो सकती है। भोजन के उपरान्त पान बाँटे गये और सब शिवस्तुति करने लगे। फिर लग्न ठहराकर शिव के आगमन के लिये कहला भेजा। शिव तुरन्त आये और दक्ष शिवजी को अन्दर ले गये। प्रसन्न होकर पहिले शिव के चरण आप धोये और सोने की चौकी पर शिव को बैठाया। फिर इसी प्रकार हमको और विष्णु को भी चरण धोकर सुवर्ण की बैठक दी। मुनियों के भी चरण पखारे और जो मनुष्य जिस स्थान के योग्य था, उसको शीलतापूर्वक उस मनुष्य की प्रतिष्ठा के अनुकूल स्थान दिया। हमने जो समयोचित था, वह सब किया। सती को बुलाया जिसको देख सबों ने प्रणाम किया। विष्णु ने और हमने दक्ष को कन्यादान का समय बताया तो उस समय दक्ष ने कुश, जल और लड़की का हाथ शिव को दिया। हे नारद! पहिला यही लोक में कन्यादान हुआ और यही रीति संसार में फैल गई।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब शिव ने सती का हाथ पकड़ा तब सर्वमुनि प्रसन्न हो शिव सती का जय-जय शब्द कहने लगे। फूलों की वर्षा हुई। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। दक्ष ने दहेज में बहुत उत्तम बहुमूल्य वस्तु रत्नादिक दिये जिनका विस्तार बहुत है। रीतों के पूरे होने के उपरान्त हमने हवन किया और दोनों का गठबन्धन होकर भाँवरी होने लगीं। उस समय एक महाभयानक चरित्र हुआ अर्थात् जो कि मेरी इच्छा शिव के वश करने की थी तो मैं आप ही रोग में ग्रस्त हो गया अर्थात् भाँवरी फिरते हुये सती का चरण कपड़े से बाहर निकल गया। मेरी काममयी दृष्टि उस पर पड़ी और मैं मोहित होकर बुद्धिहीन हो गया। काम के जाल में फँसकर उसके मोह में मग्न हो गया। ऐसी दशा में सती के रूप अनूप के देखने की अभिलाषा बहुत ही उपजी। मैंने यह उपाय किया कि गीली लकड़ी आग में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

डाल दी जिससे बड़ा धुवाँ उठा। शिव की आँखों में पहुँच ऐसे आँसू बहने लगे कि शिव दोनों हाथों से वह आँसू दूर करने लगे। तो जब शिव आँसू पोंछने में लगे तो मैंने सती के मुख से घूँघट उठाकर उनका स्वरूप देखा और कामदेव के तीक्ष्ण वेग से दुःखित हो सब धर्म कर्म को भुलाया। उस समय मेरा वीर्य धरती पर गिर पड़ा। हमने उसको किसी प्रकार से ऐसा छिपाया कि किसी पर यह बात प्रकट न हुई। पर शिव ने दिव्य दृष्टि से इस बात को जाना और मुझ पर अति कुपित हो धिक्कार धिक्कार कहने लगे। कहा कि तुमने यह महानिन्द्य कर्म धर्म छोड़ क्यों किया? तुम बड़े कामी हो। तुम पशुओं की भाँति वेद की रीतों को भूल गये और हम से छिपाया। हम से तीनों लोकों में कौनसी बात छिपी है या छिपी रह सकती है। यह कह बड़े क्रोध से त्रिशूल हाथ में लिया। हे नारद! मैं उस समय थर-थर काँपने लगा और बड़ा आश्चर्य किया। तब सब लोग मेरे मारे जाने का निश्चय कर शिव की स्तुति करने लगे। पर शिव का क्रोध न मिटा और दक्ष प्रजापति हाथ उठा शिव-शिव कहने लगे। अति स्तुति कर मेरे मारने की मनाही की और बोले कि आप रङ्ग में भङ्ग न करो। शिव बोले हे दक्ष! अब कुछ न कहो, मैं ब्रह्मा को अवश्य मार डालूँगा। इसने सती को पाप दृष्टि से देखा है। वेदमार्ग के धर्म अधर्म को भुला दिया। वेद में लिखा है ऐसे मनुष्यों को अवश्य मार डालना चाहिये। ऐसे क्रोध के वचन सुन शिव के कोप से सर्व सभा काँप उठी। तब विष्णु ने बहुत स्तुति करने के उपरान्त कहा कि तुम अप्रमेय हो। तुम्हारा आदि अन्त कोई नहीं जानता। हम और ब्रह्मा तुमसे उपजे। तुमहीं प्रलय करते हो। आप अपने क्रोध को शान्त करें। मुझे अपना सेवक जान मेरी विनती स्वीकार करें अर्थात् ब्रह्मा का वध न करें। क्योंकि आपने उनको सृष्टि रचने के निमित्त उपजाया। और कौन है जो सृष्टि उपजावेगा? प्रकट है कि सृष्टि बिना सब लीला निष्फल है। फिर आपही ने तो ब्रह्माजी को उत्पन्न किया उनका वध न कीजिये। शिव ने फिर बड़े क्रोध से कहा कि नहीं हम ब्रह्मा को अवश्य मार डालेंगे। हम आप सृष्टि उपजावेंगे, अथवा दूसरा ब्रह्मा उपजाकर सब लोगों पर इस बात को प्रकट कर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देंगे। हमको अब न रोको। हमारा क्रोध वृथा नहीं जाता। यह कह अपना सम्पूर्ण शरीर प्रज्वलित अग्नि समान कर लिया। देवता और मुनि आदि कोई ऐसा न था जो वह स्वरूप देख सकता। मैं तो शिव रूप ही हो गया और दक्ष को भी अति खेद से सब आनन्द विस्मरण हो गया। महादुःखी हो शिव के चरण पङ्कजों का ध्यान करते हुये शिव से बहुत कुछ कहा। विष्णु ने मुझे शिव के चरणों के नीचे डाल दिया। मुझ से बहुत स्तुति पढ़वाई और आप भी की। कहा कि हम और ब्रह्मा दोनों आपके सेवक हैं। कृपादृष्टि से अवलोकन कीजिये। ऐसे आनन्द उत्सव में खेद उपजता है। सिवाय आप के और कौन है जिसकी शरण में जावें। केवल आप ही हमारी रक्षा करनेवाले हैं। जो उचित हो वह कीजिये। हर प्रकार से आप की शरण में हैं। सो ब्रह्मा के दोनों हाथ पकड़ अभय कीजिये। यह कह हम दोनों शिव के चरणों पर गिर पड़े। दक्ष भी महा-मलिन दीन त्राहि-त्राहि कहने लगे। शिवजी ने सती को अतिदुःखी जान अति कृपा से मेरे शिर पर हाथ रख दिया और निर्भय करके अनुग्रह किया। हम और विष्णु अति प्रसन्न हुये। दक्ष और सर्व सभासद् भी अति आनन्द में हो गये। उस आनन्द में मैंने महाराज की कई प्रकार की स्तुति की। कहा कि आपने मुझको नरक की अग्नि से बचा लिया। पापरूपी समुद्र में डूबने से रक्षा की। स्तुति के उपरान्त मैंने विनय की कि आप वह उपाय बताइये जिससे मेरा यह महापाप दूर हो जावे। शिव बोले कि तुम स्त्री सहित तप करो! यही तुम्हारे पाप का बदला है। तुम्हारा नाम रूद्रशिरा होगा और जो तुम्हारा मनोरथ है, उसे पावोगे। जोकि तुमने सुर-पति होकर नर कर्म किये इसलिये तुम मनुष्य होकर लज्जा उठाओगे। तब तुम्हारा पाप दूर हो जावेगा। यह बात सुन हम और दक्ष अति प्रसन्न हुये।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद ने पूछा कि हे ब्रह्मन्! जब शिव ने क्रोध शान्त कर लिया और प्रसन्न हो गये तो इसके उपरान्त क्या हुआ? ब्रह्मा बोले कि जब मुझ से प्रसन्न हुये और मेरा वीर्य पृथ्वी पर चमकता हुआ देखा तो मुझसे कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! यह वीर्य तेज रूप से दृष्टि आता है। इसको नष्ट

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

न करना चाहिये। जब तुम्हारा वीर्य पृथ्वी पर गिरा था, तब मेरे नेत्रों से अश्रु गिरे थे। इससे चार मेघ इस वीर्य से प्रकट होंगे। इतना कहते ही उसी समय चार मेघ उत्पन्न हो गये। आकाश मार्ग में छा गये। वे मेघ गर्ज-गर्ज कर वर्षने लगे। शिव के भय से धीरे-धीरे वर्षते रहे। ऐसी वर्षा देख शिव और सब सभा के मनुष्य अति प्रसन्न हुये। सबका दुःख दूर होकर फिर आनन्द छा गया। फिर हमने शिव की आज्ञा से जो विवाह की रीतें रह गई थीं पूरी कीं। फिर वही बाजे बजने लगे। लोग हर्ष मनाने लगे। दक्ष ने बहुत धन दान किया। उस समय हम सबों ने शिव की बड़ी स्तुति की। जिस तरह कि शब्द और अर्थ में अन्तर नहीं, उसी तरह आप और शक्ति एक हैं। आपकी अप्रमेय महिमा है। उसको कोई नहीं जानता। पर हाँ, आपकी कृपा से मूर्ख मनुष्य भी जान सकता है, जैसा कि किरात्, बनिज, कुर्किट, गज, गङ्गा आदि इस बात के साक्षी हैं। आपके चरणारबिन्द के अनुग्रह से इस संसार में किसने क्या नहीं पाया। आप लोक के पिता और शक्ति जग-माता हैं। यह स्तुति सुन शिव शक्ति अर्थात् सती समेत कैलाश पर्वत को चले। उस समय शिव के शिर पर छत्र था और दोनों ओर से स्तुति होती थी। शिव ने दक्षादि सबको मार्ग से बिदा किया। आप, शक्ति और गणों सहित कैलाश पर्वत में सुशोभित हुये। चारों ओर जय-जय शब्द सुनाई देने लगा। शुभलग्न में दोनों शिव और सती ने मन्दिर में प्रवेश किया। हम और विष्णु ने शिव को सती समेत एक ही सिंहासन पर बैठाया। उस समय नाच और गाने की सभा हुई। जिसको जिसकी इच्छा थी, शिव ने सबको वही दिया। हर प्रकार के भोजन सबको खिलवाये। फिर सबको सब कुछ देकर बिदा किया। सो सब शिवजी का यश गाते अपने घरों में पहुँचे। हम और विष्णु भी शिव की आज्ञा पा अपने लोक को गये। हे नारद! हमने कौन-कौन उपाय शिव के विवाह के लिये न किये, पर कुछ न चली। जब सती ने तप किया तब शिव ने प्रसन्न हो अङ्गीकार किया। यह शङ्कर का चरित्र सुनकर लोग मुक्ति पाते हैं। शिव विवाह होने से हमारा दुःख दूर हो गया। इस प्रकार सती के साथ शिव विवाह करके कैलाश में सुशोभित हुये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वे नाना प्रकार की कथा सृष्टि के उपकार के लिये कहते थे। जो मनुष्य शिव और सती के विवाह का पाठ करेगा वह मुक्तिपदवी पावेगा और संसार में भी आनन्द उठावेगा।

सोलहवाँ अध्याय।

इतना सुनकर शौनकादि मुनियों ने पूछा कि हे सूतजी! जब नारद ने ब्रह्मा से सती का विवाह सुना तो फिर क्या पूछा? वह सुनाइये। यह सुन सूतपौराणिक बोले कि जब देव और मुनि नारद यह सर्व वृत्तान्त सुन चुके तो ब्रह्मा से पूछा कि विवाह के उपरान्त जो सती शिव ने चरित्र किये, वह कहिये। ब्रह्मा बोले कि एक दिन सती भी शिव को एकान्त में बैठे देखकर आप भी गईं। प्रणाम करने के उपरान्त बहुत स्तुति की और कहा कि आपने तीनों लोक के उपकार के लिये अवतार लिया है। मेरा क्या उज्ज्वल भाग्य है कि आपकी स्त्री हुई। मैं, आपकी शरण में हूँ। अब मुझे एक इच्छा है जिसको मैंने आज तक नहीं कहा। इस समय आपको अपने ऊपर प्रसन्न देख कहती हूँ कि वर्षों तक आनन्द उठाया और परमतत्त्व का कभी विचार न किया, विहारादि में ही प्रसन्न रही। अब मेरे मन में वैराग्य उपजा है। मैं परमतत्त्व की इच्छा रखती हूँ। सो आप मुझे वही मार्ग बतावें और प्रकार से ब्रह्म ज्ञान की युक्ति बतावें। अर्थात् क्या करने से मुक्ति प्राप्त होती और परमपद मिलता है। आपके बराबर तीनों लोक में ज्ञानी कौन है? आपही परब्रह्म अनादि हैं। आपही ने वेदों को उपजाया और सम्पूर्ण विद्यानिधान और तीनों लोक के परमात्मा विष्णु और ब्रह्मा को पदवी देनेवाले हैं। जैसे शेषादि अहर्निश इस बात का वर्णन करते हैं। सती का यह प्रश्न सुन सदाशिव ने कहा कि सबसे उत्तम वस्तु ज्ञान है। जहाँ दूसरे पदार्थ की गम्य नहीं। वह बहुत ही अलभ्य है और वही मेरा स्वरूप ब्रह्म है। उसी ज्ञान की स्त्री क्या है हमारी तपस्या जिसको करके लोग पवित्र हो जाते हैं। भक्ति और ज्ञान में कुछ अन्तर नहीं। जो मनुष्य इन दोनों में अन्तर जानते हैं, वही दुःख पाते हैं। जो भक्ति के विरुद्ध वाद-विवाद के लिये ज्ञान है, वह उलटा उसे दुःख देता है। इस पर अत्रिमुनि को निश्चय है, जो संसार भर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में अद्वितीय विद्वान् हैं। सो भक्ति को परमतत्त्व देनेवाली समझो और वह मुझे अतिप्रिय है। हे देवि ! भक्ति उत्तम वस्तु है। उसको अच्छे लोग अङ्गीकार करके अच्छे मार्ग में आते हैं। भक्ति के बराबर कोई मार्ग सीधा और निर्भय नहीं क्योंकि उससे परब्रह्म मिलता है। इस रीति को पिपीलिका कहते हैं। क्योंकि वे परिश्रम किसी वस्तु के आश्रय वृक्ष पर चढ़ फल मिलता है। जो निर्गुण का मार्ग है वह भीषम प्रसिद्ध है क्योंकि किसी वस्तु के आधार बिना अति परिश्रम और दुःख के उपरान्त फल प्राप्त होता है। भक्ति मन को प्रसन्न करती है और मैं आप भी भक्ति के अधीन हूँ। जो नीच मनुष्य भी मेरी भक्ति करे, वह मेरी समझ में सबसे बड़े और भाई के सदृश हैं। जो मनुष्य हमारी भक्ति करता है, उसको संसार में आनन्द और परलोक में मुक्ति देता हूँ। मुझे केवल भक्ति प्रिय है, कुल पाँति से कुछ प्रयोजन नहीं। चाहे चाण्डाल भी हो पर मेरी भक्ति करे तो उसके बराबर मुझे कुलीन मनुष्य प्रिय नहीं है। यद्यपि सर्वप्रकार से भक्ति मुझे चारों युगों में प्रिय है परन्तु कलियुग में तो केवल मुझको भक्ति ही अति प्रिय है। प्रेम से मैं नीचों के घरों में भी जाता हूँ। मनुष्य चाहे कितना ही शुद्ध आचरणी हो पर वह भक्ति बिना मेरी समझ में उत्तम नहीं। हम अपने भक्त के सदा सहायक हैं। हमको भक्ति के बराबर कोई प्रिय नहीं। हम भक्तों के लिये अच्छे चरित्र करते हैं। हमने अपने भक्त के लिये कामदेव को जलाया जो कि सबसे बड़ी पदवी भक्ति की है। इसलिये सब छोड़ भक्ति करो।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! ऐसी भक्ति की स्तुति सुन सती अति प्रसन्न हुई। दोनों हाथ जोड़ सदाशिव से कहा कि आपने मेरे ऊपर अनुग्रह करके भक्ति की प्रशंसा वर्णन की पर मेरी इच्छा है कि आप उसके सम्पूर्ण खण्ड शिर से पाँव तक वर्णन करें। शिव ने हँसकर कहा कि हे सती ! हम भक्ति का सम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिसको सुन प्रेम उपजता है और तीनों लोक के दुःख-शोक दूर हो जाते हैं। जिस भक्ति को परम तत्त्व वर्णन करके सबसे उत्तम वर्णन किया है, वह दो प्रकार की है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पहिली को अगुणा और दूसरी को सगुणा कहते हैं। सो उनके भी दो-दो प्रकार हैं—एक स्वाभाविक जो अपनी प्रकृति से उपजती है। दूसरी वैदेही जो प्रारब्ध से प्राप्त होती है। जिसमें तीनों गुण पाये जावें, उसको वेद सगुणा भक्ति कहते हैं। जिसमें कोई गुण न हो, वह अगुणा भक्ति है। उसके दो भाग हैं। इसमें भक्त बड़ा युक्ति से मन लगाते हैं। इन दोनों खण्डों के नौ नौ भाग हैं। जब सावधानता से उसको धारण किया जाता है, तब पूर्ण होती है। वह यह हैं—अपने स्वामी का यश सुनाना, कीर्तन अर्थात् उसको कहना, स्मरण अर्थात् याद करना, सेवन टहल करना, दासत्व अर्थात् दास्यभाव से पूजन करना, वन्दन प्रणाम करना, सख्य मित्रों के सदृश रहना, आत्मसमर्पण अर्थात् अपने को अर्पण कर देना, यही भक्ति के नव भाग मुनि भी कहते हैं। इस नवधा भक्ति के सिवाय और बहुत प्रकार हैं जिनको धारण करके अति प्रसन्नता होती है जैसे बरगद, बेल तुलसी और गङ्गा आदि की सेवा, अतिथियों की सेवा, ब्राह्मणों की अधीनता और तीर्थों की स्थिति आदि। अब हम अलग नवों प्रकारों के अर्थ वर्णन करते हैं। अर्थात् जब मन वच कर्म से मेरी बड़ाई सुन उसकी बड़ाई का विचार करे और मन को दृढ़करे, इसका नाम श्रवण है। कुल द्रव्य व्यवहार और मुख्य अपने गर्व को छोड़कर जब हमारी कथा को सुने। जिस जगह पर कथा होती है, उसको सजाकर हर दिन शुद्ध करता रहे। उस शास्त्र की अच्छी तरह से पूजाकर नाना प्रकार की वस्तु उस पर चढ़ावे। इसी तरह से उसके पढ़ने वाले की पूजा करके अच्छे वस्त्र, द्रव्य, पदार्थ, फल, रत्न आदि दे और स्तुति करे, तब फल मिलता है। यह श्रवण की प्रशंसा है। अब कीर्तन का व्याख्यान सुनिये कि अपने मन को निर्लोभ करके हमारे जन्म, कर्म और गुण को देखे। उनको ऊँचे स्वर से वर्णन करे, इसका नाम कीर्तन है। जब कर्म, काल और काम के भय को दूर करके संसार की लज्जा और इच्छा को छोड़ मन लगा कर हमारा गुण गावे; ऐसा कीर्तन करने से अच्छा फल मिलता है। स्मरण के यह अर्थ है कि सम्पूर्ण सृष्टि जड़-चैतन्य, जीवित-निर्जीव, चलने वाले और एक ही जगह पर स्थित रहने वालों और सबमें शिव को देखे और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुझे सर्वात्मा समझकर निर्भय रहा करे। ऐसे स्मरण से अति आनन्द मिलता है। सेवन के यह अर्थ हैं कि प्रातःकाल उठ कर पहिले अपने गुरु का ध्यान करे और रीति के अनुसार शौच, दँतवन और नित्यनैमित्तिक आदि से सुचित हो रेशमी कपड़े पहिन माथे पर त्रिपुण्ड्र लगावे और रुद्राक्ष की माला पहिने। धरती पवित्र कर, उत्तम बैठने की जगह बनावे। मन रूपी कमल में अपने स्वामी के स्वरूप का ध्यान प्रेम से लगावे। पूजन की अच्छी सामग्री धुलाने के पीछे अपने पास रख ले और क्रमपूर्वक षोडशोपचार से पूजा करे। फिर भोजन करावे और आरती करके दण्डवत् करे। अच्छे सुगन्धित फूल बिछाकर उसके ऊपर अपने स्वामी को सुलावे। अहर्निश अपने स्वामी का गुण कहकर बिता देवे। सन्ध्या समय फिर अपने स्वामी को जगावे और सन्ध्या आदि कर आरती करे। नाम और स्तुति वर्णन कर कुछ रात्रि के बीतने पर गाने-बजाने की सामां तैयार करे। आनन्दपूर्वक बाजे बजवाकर भोग लगावे। फिर दूसरी बेर आरती करे और उत्तम शय्या बिछवाय स्वामी को उस पर सुलावे। ऐसी सेवा करने वाला भक्त लोक परलोक का आनन्द पाता है और तीनों लोक उसके चरणों में प्रणाम करते हैं। वह कभी नरक में नहीं जाता। अब अर्चन का वर्णन करते हैं अर्थात् बेल पत्र, फूल और चन्दनादि को पवित्रता और विचार के साथ लोगों से पूछकर लगावे। धर्म की रीति से जो द्रव्य उपार्जन किया हो, उससे पूजा के बर्तन और सामग्री बनावे। अपने स्वामी को षोडशोपचार से निष्काम पूजन करे। समय और नियम में विरुद्धता न होने पावे। इसका नाम अर्चन है। जो हमारे मन्दिर में फुलवाड़ी लगावे अथवा मेरे लिङ्ग की स्थापना करे और हर दिन मेरे लिये उत्सव करे, यह सब अर्चन के अङ्ग हैं। इसी प्रकार जो हमारा अर्चन करता है, वह दोनों लोक में सिद्धि पाता है। अब वन्दन का व्याख्यान सुनिये। मन्त्र जाप करे तो बेर-बेर उसका ध्यान करे। मनको एकाग्र करके प्रणाम करे। यह वन्दन है। जो वन्दना का फल है, वह तीनों लोक में प्रसिद्ध है। इसी के प्रताप से सनकादिक निर्भय रहते हैं। इस वन्दन के करने से दोनों लोक में आनन्द मिलता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है और अन्त को हमारे लोक में उसे स्थान मिलता है। अब दास्यभाव को वर्णन करते हैं। इन्द्रियों को वश करके मुझे प्रसन्न करता रहे। हमारी प्रसन्नता से मन और शरीर का पालन करे। काम वासना को जड़से उखाड़ डाले तो दोनों लोक का सुख पावे। अब सख्य के अर्थ सुनिये। जिस मनुष्य के विचार में दुःख-सुख, बुरा-भला, राग-द्वेष अथवा जय-पराजय, लाभ-हानि बराबर हो और इस बात पर पूरा विश्वास रखता हो कि जो कुछ परब्रह्म हमारी भाग्य से करता है, वह सब हमारी भलाई के लिये है। ऐसे निश्चय वाले को सख्य कहते हैं, ऐसे मनुष्य को तीनों लोक में कोई वस्तु कठिन नहीं। अब हम आत्मसमर्पण का वर्णन करते हैं। अर्थात् जो मनुष्य अपने शरीर, कोष, सेवक, पशु और धनादि सम्पूर्ण वस्तुओं को छोड़े और उनकी प्रीति दूर कर मेरे लिये संकल्प कर दे। फिर कोई युक्ति उनके लिये न करे और उनकी प्रीति और चिन्तना न करे। इसको आत्म-समर्पण कहते हैं इससे गर्व दूर हो जाता है। पर जब तक कि इसको मन, जिह्वा और शरीर से नहीं करते, तब तक वह अपने स्वामी को नहीं पाता। ऐसे मनुष्य को सब सुगम है। उसको कुछ वस्तु अलभ्य नहीं। मैं उसकी रक्षा रात्रि-दिवस करता हूँ और उसके निकट रहा करता हूँ। भक्ति के अङ्ग केवल यही नौ हैं, जो वर्णन किये गये। अब हम भक्ति के उपअङ्ग कहते हैं। वह दश हैं। उनमें से हर एक दुःख का दूर करने वाला है। अर्थात् बड़ और पीपल की पूजा सदा करनी चाहिये। उनको जल से सींचे। उनका अनादर करना मानो मेरा मान घटाना है। उसमें दाहिनी ओर से परिक्रमा करनी चाहिये। इन दोनों वृक्षों की सेवा से निर्भय परम पद मिलता है। दूसरे बिल्व वृक्ष की सेवा करो। उसको हमारा शरीर समझो। उसके पूजन से कुछ दुःख नहीं रहता। उसको जल से सिंचन कर पूजन करना और आरती उतारना उचित है। जो ऐसा करते हैं, वह हमारी पूजा का फल पाते हैं। रेवा अर्थात् नर्मदा आदि सुरसरी अर्थात् गङ्गा का पूजन तीसरा उपाङ्ग है। उसमें पवित्रता पूर्वक स्नान करने में बड़ा पुण्य है जैसा कि व्यास आदि ने कहा है। चौथे गुरु की सेवा, जिसकी बराबर कुछ नहीं और वेद उसकी स्तुति करते हैं। पाँचवें हमारे व्रत चौदस आदि जितने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं, उनमें हमारा पूजनकर व्रत रखना और रात्रि भर जागरण करना। इनसे जो पुण्य प्राप्त होता है, वह वेद से प्रकट है। शिवरात्रि मास के दोनों प्रदोष और सब महीनों की अष्टमी यह व्रत हमारी बड़ी महिमा रखते हैं और उत्तम गति देते हैं। इनको करके व्याध व किरात आदि ने कैसा आनन्द पाया। छठवें शैवाराधन अर्थात् शैवलोगों से सत्यसंग करना। इस तरह पर कि जब किसी शिव पूजक को देखे कि आता है, उसका आदर करे। उसको देखकर अपने सब घराने समेत प्रसन्न होकर हर प्रकार उसकी सेवा पर तय्यार रहे। उसकी पूजाकर बहुत अच्छा स्वादिष्ट भोजन करावे। यह शैवाराधन अति प्रसन्नता देने वाला है। उसके प्रताप से बहुधा तीनों लोक के राजा हुये। सातवें अतिथिमान अर्थात् जो कोई द्वार पर आवे भिक्षा माँगने के लिये तो उसको यथाशक्ति कुछ देना चाहिये। इसमें लोक परलोक दोनों बनते हैं। यह अन्त काल तक भुला देने या छोड़ने के योग्य नहीं। आठवें ब्राह्मण का मान जिसको करके बहुत मनुष्यों ने परमपद पाया है। हे देवि! ब्राह्मण मेरा तन है। उसको हमारे बराबर समझ पूजन करना चाहिये। नवें तीथ और क्षेत्र आदि में अटन करना। सम्पूर्ण तीर्थों में से सात पुरियों को बहुत बड़ा वर्णन किया है। उसमें से आनन्द वन अर्थात् श्रीकाशीजी की बड़ाई को सर्वोपरि रक्खा है। तो चाहिये कि नियमित रीति के अनुसार प्रीतिपूर्वक परिक्रमा करे और जैसा कि धर्म शास्त्र ने कहा है, उसी के अनुसार सब बातें करना चाहिये। इन सब तीर्थों का फल जो काशी में मरता है, उसको प्राप्त होता है। यही बात वेद भी कहते हैं। दसवें अहिंसा बड़ा धर्म है अर्थात् किसी जीव को दुःख न पहुँचाना। जिसने हिंसा को छोड़ा मानो संसार के सर्व धर्म कर चुका। जीवधारी पर दयाभाव रखना बड़ा धर्म है। यह अहिंसा अति प्रसन्नता देने वाली है। हे देवि! जिसके मन में तुम स्थित होती हो वह मुझे अतिप्रिय है। कलियुग में लोग ज्ञान वैराग्य को कम चाहेंगे। उस युग में केवल भक्ति को मुख्य समझना चाहिये। हे पार्वति! जो तुमने पूछा, हमने उसका उत्तर दिया। जो इसको पढ़ेगा अथवा सुनेगा, उसको बड़े आनन्द का पद मिलेगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अठारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी बातें सदाशिव की सुनकर सती ने अपने को बड़ी भाग्यवती समझा। प्रीतिपूर्वक भक्ति के अङ्ग पूछे और उपासना के प्रकार, जिसमें पाँच अङ्ग हैं; सब पूछे तो शिवजी ने तन्त्रशास्त्र को स्तोत्र कवच, सहस्रनाम, पटल और पद्धति समेत और नाना प्रकार के यन्त्र-मन्त्र, चेटक आदि गुणों समेत वर्णन किये। प्रेम को बढ़ानेवाली कथायें, आनन्द उपजानेवाले वृत्तान्त और अपने भक्तों की महिमा जिनसे भक्ति में वृद्धि होती है और बहुत धर्म जैसे नृप धर्म अर्थात् राजनीति, स्त्री धर्म, वर्णाश्रम, पुत्रधर्म और संकरधर्म आदि वर्णन किये। सामुद्रिक ज्योतिषादि सब सती को सुनाया। इसी प्रकार से शिव और सती कैलाश में रहते रहे और बहुत वर्ष पर्यन्त विहार करते रहे। फिर सती ने अपने पिता के यज्ञ में शिव का निरादर देख क्रोध से शरीर को प्राण रहित कर दिया। वही सती हिमाचल के घर उपजकर शिवसेवा में पहुँची। इतना सुनकर नारद बोले हे ब्रह्मा! यह कथा सुन मुझे बड़ा संशय उपजा क्योंकि सदाशिव जो सर्व सृष्टि के स्वामी हैं और किसी के शत्रु नहीं, उनके साथ दक्ष ने इस तरह से वैर किया। यह उसकी बुद्धि क्योंकर भ्रष्ट हो गई? शिवने अपनी शक्ति को क्यों त्यागा? सती ने शिव का क्या पाप किया था? क्यों सतीने अपना तन त्यागा? उनका अनादर किन बातों से समझा गया? जिन मनुष्यों ने उनका अनादर किया था, उनको सतीजी ने क्यों न जलाया? आप ही क्यों जल गईं और आदि शक्ति हो क्योंकर अन्तर्द्धान् हुईं? अचरज यह है कि दक्ष को सती बहुत प्यारी थी फिर ऐसा अशील और अप्रिय कर्म दक्ष से क्योंकर हुआ? श्वसुर और जामात्र से क्योंकर बिगड़ी? ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जिसको हम, विष्णु, देवता और मुनि आदि ध्यान करते हैं, यह सब उनकी इच्छा है। हम किसको दोष लगावें। जिस तरह कि दक्ष ने अपनी शुद्ध बुद्धि को भ्रष्ट करके शिव के साथ वैर उपजाया, वह हम कहते हैं। एक दिन दक्षप्रजापति ने बड़ा उत्सव रचा और उस सभा में देवता, मुनि और अग्नि आदि स्त्रियों सहित आये। वह सभा विचित्र प्रकार से सजी थी। उस यज्ञ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में हम भी सेवकों सहित गये। हमें देख सब सभा के लोग प्रसन्न हुये। जब शिव सभा में पहुँचे तो उनको देख हम सब आदर से उठ खड़े हुये और स्तुति करने लगे। जय जय शिवका शब्द ऊँचे हुआ और बिनती की कि आपने हम लोगों पर अति अनुग्रह किया जो इस यज्ञशाला में सुशोभित होकर आपने दर्शन दिये । फिर शिवजी की आज्ञा से सर्व मनुष्य अपने-अपने स्थान पर बैठ गये, सबने इस यज्ञ को जिसमें शिवजी आप आये, धन्य जाना और अति प्रशंसा की। उस समय दक्षप्रजापति भी वहाँ आये। उनको देख सब देव मुनि आदि ने शिर झुकाकर प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़े हुए उनकी स्तुति की। दक्ष मेरा प्रणामकर और मेरी ओर भारी दृष्टि से देख अहंकार के साथ बैठ गया। पर दक्ष को शिवने प्रणाम नहीं किया और विष्णु के बैठने की जगह में बैठे रहे। दक्ष शिव को ऐसा ढीठ बिना स्तुति करते हुये देख महाकुपित हुआ और क्रोध दृष्टि से देखकर अहंकार के वश में हो शिवको अति कटु वचन कहे और शिवकी महिमा भूल गये। रीति है कि मृत्यु के समय हर मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है सो ऐसा ही हुआ। दक्ष ने शिवकी अति निन्दाकर कहा कि तुम सब सभा के लोग मन लगाकर सुनो। इस रुद्र अर्थात् शिवने मूर्खों के समान हमको क्यों प्रणाम न किया। बड़े-बड़े देवता आदि ने हाथ जोड़ हमको दण्डवत् की और शिव ने शुद्ध मार्ग छोड़ तीनों वेदों के विरुद्ध यह काम किया है। यह बुद्धिहीन, अहंकारी जिसके भूत आदि नौकर हैं, प्रेतों का राजा, माता-पिता रहित, पापों का पर्वत, गर्ववान्, अशुभ कर्म करनेवाला है। जोकि बुद्धिमानों की रीति है कि मूर्खों को दण्ड देकर छोड़ते हैं कि अज्ञानता का प्रचार न हो। इसलिये हम शिव को शाप देते हैं और ब्राह्मण कुल का तेज दिखाते हैं। यह कहकर शाप दिया—हे शिव ! यज्ञादि में तुमको भाग न मिले। यह सुन शिव ने कुछ उत्तर न दिया। पर नन्दी क्रोधित हो बोला—हे मूर्ख, दक्ष ! तूने बड़ा गर्व किया कि शिवको शाप दिया। ऐसे शिवको जिसे स्मरण कर सम्पूर्ण संसार भरपूर होता है। वही सृष्टि के पावन और प्रलय के कारण हैं। जिनके नाम लेने से जप, तप, दान, धर्म और व्रत आदि पवित्र हो जाते हैं। सो हे दक्ष! तूने ऐसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रधान पुरुष की निन्दा की। भला जिस मुख से तुमने शिव निन्दा की, वह मुख तुम्हारा जाता रहे और तुम्हारे सब मनोरथ पूरे न हों। तुमको धिक्कार है, धिक्कार है। तू पापियों में महाअधम वरन् निन्द्यकर्मों का मूल है। दक्ष ने ऐसा शाप नन्दी के मुख से सुन भयवान् हो नन्दी को भी शाप दिया कि तुम वेद के विरुद्ध होगे। तुम्हारा विचित्र स्वरूप होगा और संसार में तुम दुःखी रहोगे सब बोझा उठाकर, तुमसे अच्छी बुद्धि जाती रहेगी। ऐसा शाप देकर भृगु आदि जो शिव से विरुद्ध रहते थे, उनकी ओर हुए। वे यह बातें दक्ष की सुन अति प्रसन्न हुये। उस समय नन्दी महाक्रोधित हुआ और अपनी अप्रमेय बड़ाई दिखाकर जिन्होंने शिव निन्दा की थी उन सबको शाप दिया कि तुम सब व्यर्थ ही ब्रह्मा के कुल उपजे। तुमने तत्त्ववस्तु को न पाया और काम, क्रोध, लोभ आदि से भरे हुये हो। इसलिये तुमको शुभ कर्मों का फल न मिलेगा और परमपद न पावोगे। जो शिवद्वेषी हैं, वह सब वेद के विरुद्ध ब्राह्मणों के शत्रु हो शूद्रों से यज्ञ करावेंगे। घर-घर दान माँगने जावेंगे तथा दरिद्री रहेंगे। वरदानादि भी लिया करेंगे और नरक का अच्छा स्वाद पावेंगे। जब ऐसा शाप नन्दी ने ब्राह्मणों को दिया तब शिव हँसकर बोले कि अब हम तुम सबको ज्ञान सुनाते हैं। उसे सुन कोई अप्रसन्न न होवे अर्थात् वेद को अक्षर और मन्त्र कहते हैं। उसमें भी सूक्त को अति आनन्द देनेवाला कहा। इसी से सबके मन सूक्त में लगे हुये हैं। ऐसे मन को बुद्धिमान् निकट समझते हैं। सो हे नन्दी ! ऐसे मन में ऐसे क्रोध को स्थान न दो। दक्ष ने मुझे कुछ शाप नहीं दिया। पर उसने जाननेवाली बात को नहीं जाना। हम आप जगत्, जगत् के कर्म, जग के अङ्ग, जग करनेवाले और जग के भीतर-बाहर सब हम हैं। न तो संसार में किसी के भाई और न पुत्र हैं। हम शुद्ध-अशुद्ध, भूत-प्रेत, देवता-दैत्य और तीनों लोक के स्थित करनेवाले हैं। यह समझ कुछ चिन्ता मत करो। जहाँ तक और जितना तुमको दिखाई देता है, उसे माया का विकार जानो। तुमको उचित है कि हमारे इस वचन का विचार करके क्रोध को दूर करो। यह सुनकर नन्दी शान्त हुये और शिवजी कैलाश पर्वत को सिधारे। दक्षप्रजापति भी उसी प्रकार क्रोध की अग्नि में भरा हुआ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपने घर गया। उस दिन से वह शिव की निन्दा करता और शिवजी के भक्तों को देखकर महाक्रोधवान् होता।

उन्नीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव की लीला पवित्र और शुद्ध है, जिसको वेद और पुराण भी पूर्णरूप से नहीं जानते; अपनी बुद्धि के अनुसार सब कहते हैं। अब और शिव के चरित्र सुनिये कि एक समय में शिवशंकर अपनी स्त्री सती समेत तीनों लोक के अवलोकन के निमित्त चले। पृथ्वी का अटनकर दण्डकवन में पहुँचे और रामचन्द्र को लक्ष्मण समेत देखा कि सीता महारानी को ढूँढ़ रहे हैं। वे वियोग से महाखेदवान् दुःख के वचन कहते हैं और चारों ओर अटन करते हैं। रामचन्द्र को देख शिव ने प्रणाम किया क्योंकि पहिले विष्णु को ऐसा वरदान दे चुके थे। शिव फिर जय कहकर आगे चले और कुसमय जान कुछ वार्त्ता न की। यद्यपि रामचन्द्र बड़े शिवभक्त हैं और सदा शिव का नाम लेते हैं (कि उसको हम फिर वर्णन करेंगे)। सो सती ने यह हाल देखा और आश्चर्य में आकर कहा कि हे अनादि सर्वोपरि ब्रह्म! तुमने सर्वसंसार, ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और सम्पूर्ण सृष्टि को उपजाया जो सब आपकी सेवा करते हैं। सो आज के दिन दशरथ के पुत्र रामचन्द्र जो भाग्यवश आपको वन में मिले तो पहले आपने उनको प्रणाम किया। मुझे चिन्ता है कि इसका क्या कारण है। श्रीशिवशंकर ने सती को ऐसी माया में डूबी हुई देख कहा कि हे सती! रामचन्द्र रमापति विष्णु जो संसार के पालन का अधिकार रखते हैं सो यह अवतार भक्तों के निमित्त है। फिर शिव ने अवतार लेने का कारण कहा पर तो भी सती का मन न भरा। तब तो शिव ने विष्णु के अवतार के नाना चरित्र सती को सुनाये परन्तु उन्हें कोई न भाया और न निश्चय हुआ। तब तो शिव ने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो आप जाकर क्यों परीक्षा नहीं करती हो। जाओ, वह उपाय करो कि तुम्हारा सन्देह दूर हो। मैं वृक्ष की छाया में बैठा हूँ, जब तक तुम परीक्षा लेकर लौट न आवेगी। वह आज्ञा पा सती सन्देहयुक्त चलीं और मन में विचारा कि क्योंकर परीक्षा लूँ। बहुत सोचने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के उपरान्त यह बात ठहराई कि श्रीसीताजी का स्वरूप धारण कर रामचन्द्र के सम्मुख जाऊँ। यदि वह विष्णु होंगे तो अवश्य मुझे जान लेंगे। यदि केवल राजपुत्र हैं तो मुझे क्या जानेंगे। यह विचार सीता के रूप से हँसती हुई श्रीरामचन्द्रजी की ओर गईं। लक्ष्मण ने सती को ऐसे स्वरूप में देखा और आश्चर्य से धोखा खाकर जाना कि यह सती हैं पर पूर्णज्ञान होने के कारण कुछ न कहा। पर जब कि रामचन्द्र ने सतीजी को ऐसे छल के स्वरूप में देखा तो हँस पड़े और शिव-शिव कहते हुये बोले कि जिसके ध्यान करने से सम्पूर्ण खेद और भ्रम दूर हो जाते हैं और जिसके मन में सदाशिव का स्थान है; उसे आपने धोखा देना चाहा। यह सब शिव की माया है। ऐसी माया को धन्य है जो सबको नचाती है। फिर रामचन्द्र अति नम्रतापूर्वक यह मधुर वचन मुख पर लाये और अपना पिता समेत नाम कह बोले कि शिव महाराज कहाँ हैं और कहाँ गये हैं। हे माता ! तुम शिवसे जुदा वन में अकेली क्यों फिर रही हो ? तुमने अपना स्वरूप छोड़ यह रूप क्यों धारण किया ? यह सुन सती आश्चर्य में हुई और सदाशिव का ध्यान कर रामचन्द्रजी को विष्णु जाना और अपना रूप धारण कर रामचन्द्र से सर्व वृत्तान्त कहा। फिर कहा कि अब मुझे निश्चय है कि तुम विष्णु हो, तुम पूर्ण विष्णु का अवतार हो और राजा दशरथ के यहाँ उपजे हो। पर एक शोच है, वह मैं तुमसे पूछती हूँ। अर्थात् आपका चतुर्भुजी स्वरूप देख शिव किसी समय ऐसे प्रसन्न न हुये जैसा कि यह स्वरूप देखकर आज प्रसन्न हुये हैं। उनके अति प्रेम से आँसू चले और वह बार-बार तुम्हारी प्रशंसा करते रहे। आप सच-सच बतावें कि इसका मुख्य कारण क्या है ? यह सुन रामचन्द्रजी के नेत्रों से भी आँसू चले और प्रेम में मग्न होकर चाहा कि उसी समय चलकर शिवको देखें। पर ऐसा समय न जानकर और न सती की आज्ञा पाकर केवल शिव का ध्यान किया। रामचन्द्र बोले जो तीनों लोक में प्रकट और दिखाई नहीं देता, वह आज मैंने देखा। वाह री भाग्य मेरी कि वह मैंने स्वरूप देखा और मेरे धन्य भाग्य हैं कि उनकी ऐसी कृपा मुझ पर है जिसका सिद्ध मुनि देवता आदि ध्यान करते हैं और वेद उसकी स्तुति में मग्न हैं। जिसको हर समय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ब्रह्मा बखानते हैं। वे भक्त के अधीन हैं। उन्होंने कामरूपके मनोरथको पूरा किया, भौमासुर का वध किया, शौरि और शौर और श्र को कृतार्थ किया। गुणनिधि को अपना कर लिया, बधिक को मुक्ति दी, चन्द्राङ्ग को बहुत द्रव्य और धन दिया, भद्रामुख और पद्माकर को अति प्रसन्नता कृपा की, धर्म गुप्त और मञ्चव्रत दोनों ब्राह्मणों का सत्कार किया, पिङ्गालके सर्व दुःख दूर किये, महानन्दा पातुर को बड़ा लोक दिया, हर और कुक्कुट ने उनके वरों से परमपद पाया और व्याध, किरात, नन्दा और पक्षण चौर पञ्चक की स्त्री हरक्ष, इन्द्रद्युम्न को क्या-क्या पद प्राप्त नहीं हुआ। शिवने कहाँ किसके ऊपर कृपा नहीं की ? ऐसे शिव मुझपर प्रसन्न हों इतना कह श्रीरामचन्द्र सती से बोले कि हे देवि ! जो शिवने हमको प्रणाम किया, उसका यह कारण है।

बीसवाँ अध्याय।

रामचन्द्रजी बोले कि हे देवि ! किसी समय शिवने विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि हमारी धेनुशाला में उत्तमोत्तम मन्दिर और सिंहासन बनाओ। सो ऐसे मन्दिर और सिंहासन के बन जाने के उपरान्त शिव ने सम्पूर्ण सुर, मुनि और ब्रह्मा को बुलाया और बड़ा उत्सव किया। फिर शिवने वैकुण्ठ से मुझको ला बैठाला और सामग्री इकट्ठी की। पाँच घड़े तीर्थों का जल, सरसों, दूब, सब प्रकार की जड़ी-बूटी, धन-द्रव्य और वस्त्रादि संचित कर मेरे विष्णुरूप का अभिषेक करना चाहा। बड़ा ऊँचा छत्र मेरे शिर पर रखकर और सिंहासन पर बैठाकर रत्नों का जड़ा हुआ मुकुट मेरे शिर पर बँधवाया। उत्तम वस्त्र पहनाइये और लक्ष्मीजी समेत मेरा अभिषेक किया। तुमने उस शरीर से, जो उस समय तुम्हारा था, लक्ष्मी का अति आदर किया। उस समय अति आनन्द हुआ। देवतों की स्त्रियाँ गान करने लगीं, नाना प्रकार के बाजे बजे। तब शिवने अपने मुख-कमल से सकलैश्वर्य का वचन कहकर मुझे सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी बना दिया। उन्होंने मुझ पर कृपा करके तीनों शक्ति कृपा की और तीनों लोक का राज्य दिया। बहुत से आशीर्वाद देकर उन्होंने मेरी स्तुति पहिले आप कहकर फिर ब्रह्मा से कहा कि तुम भी प्रणाम करो और इनकी बड़ाई करो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आज से विष्णु तुम सब के स्वामी हुये। ये सबको आनन्द देंगे और तुम सबके मनोरथ इनसे पूरे होंगे यह तीनों लोक के स्वामी हैं। यह आज्ञा सुन सबों ने मुझको प्रणाम किया और जय-जय शब्द चारों ओर से ऊँचा हुआ। फिर शिव ने यह वरदान दिया कि हे विष्णो! तुम सबके स्वामी होकर उनके दुःख दूर करो। तीनों लोक तुम्हारी पूजा करें और तुम्हीं अर्थ, धर्म, काम देने वाले होकर बड़े विजयी वीर हो। हम आप भी तुमको न जीत सकें। तुम ब्रह्मा के भी स्वामी हो। हमने तीनों लोक तुमको दिये। तुम अवतार लेकर तीनों लोक की पालना करो। हम तुम्हारे भक्तों को आनन्द दिया करेंगे, उनको मुक्त करेंगे। तुम्हारे शत्रुओं का वध किया करेंगे और हर प्रकार से तुम्हारे सहायक रहेंगे। ब्रह्मा हमारी दाहिनी और तुम बाईं भुजा हो। तुम्हारे अवतार, जो राम व कृष्ण होंगे, उनको हम आप जाकर देखेंगे और संसार के देखने के लिये उनकी भक्ति किया करेंगे। तब से जहाँ शिव रहते हैं, वहाँ हम भी स्थित रहते हैं। शिवलोक में विष्णुलोक हैं जिसको गोलोक कहते हैं। हम शिवकी आज्ञा से अवतार लेते हैं। मत्स्यादि मेरे बहुत अवतार हो चुके हैं और संसारी कार्य पूरे किये हैं। इस समय चार प्रकार से हमारा अवतार हुआ है अर्थात् राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न। मन एक है परन्तु शरीर अलग-अलग हैं। हम अपने पिता की आज्ञा से वन में आये हैं। उस वरदान से जो कैकेयी को दशरथ ने दिया था। हमारे साथ लक्ष्मणजी और सीताजी भी आई थीं। सो रावण सीता को ले भागा है। हम उसी को ढूँढ़ते हैं। आपके दर्शन से हमारे सब कार्य सिद्ध होंगे। हमको तो सीता का हरण अति शुभ हुआ जिससे आपके चरणों के दर्शन मिले। मुझे इस बात का निश्चय हुआ है कि अब मुझे जल्दी सीता का हाल मालूम होगा और हम शत्रु पर विजय पाकर सीता को पावेंगे। संसार में उनसे अधिक कौन है जिसके ऊपर शिव तुम समेत कृपा करें। शिव की बराबर तीनों लोक में कोई कृपा करने वाला दूसरा नहीं, इस बात को वेद कहते हैं। वे अपने भक्तों को आनन्द देने वाले, पापियों का पाप छुड़ाने वाले, भक्ताधीन और बहुत अवतार लेने वाले हैं। उन्होंने पापियों को बहुत उद्धारा है। उनके चरित्र हम कहाँ तक कहें। यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कह श्रीरामचन्द्रजी ने सती से बिदा माँगी और सती से आशिष पा शिव का ध्यान धर रामचन्द्र आगे चले और उसी तरह पर अपने कार्य में प्रवृत्त हुये।

इक्कीसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे जगत्पिता! इसके उपरान्त जो शिव ने चरित्र किया, वह कहिये। ब्रह्मा बोले हे नारद! रामचन्द्र का हाल सुनकर सती को अत्यानन्द प्राप्त हुआ। पर अपने कर्म का विचार कर अति चिन्ता की और मन में अति भयभीत हो महादुःखी लौट गईं। मार्ग में विचार किया कि मैंने शिव की अवज्ञा की और रामचन्द्र पर निश्चय न किया। मैं अब शिव को क्या उत्तर दूँगी? इस प्रकार अति खेद से शिव के निकट पहुँची और हँसकर शिव को प्रणाम किया। शिव ने कुशल पूछ हँसकर कहा कि तुमने जाकर जो परीक्षा की वह सब हमसे कहो। यह सुन सती ने शिर नीचाकर कुछ उत्तर न दिया। मन में भय उपजा। शरीर में घबड़ाहट बहुत हुई। तब शिवने ध्यान धरकर देखा और जो चरित्र सती ने किया था, वह सब जाना। अपनी पहिली बात को जो विष्णु को अभिषेक के समय कहा था, स्मरण कर अतिक्रोध किया। निदान मन में यह ठाना कि जो मैं अब सती से प्रीति बढ़ाता हूँ तो मेरा प्रथम वाक्य झूठा होता है। शास्त्र के विरुद्ध करना उचित नहीं और सती ऐसी स्त्री को छोड़ भी नहीं सकता। जो छोड़ता नहीं तो जो पहिले कह चुका हूँ, वह मिथ्या होता है। पर फिर शिव ने कहा कि बस अब सती से भेंट न होगी और अपने वचन को मिथ्या करना उचित न जाना। यह विचार सती को छोड़कर अपने स्थान को चले। चलने के समय आकाश से यह शब्द हुआ कि जय-जय शिव! आपने अपने वचन का बड़ा प्रतिपाल किया। आपका सा कौन है जिसने अपने वचन को निबाहा हो। ऐसा शब्द सुन सती को अतिभय हुआ और शोचकर शिव से पूछा कि आपने क्या पूरा उद्योग किया है। आप तो बड़े सत्यवक्ता हैं; मुझसे सत्य कहिये। सती ने बार-बार पूछा पर शिव ने यह बात छिपा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रक्खी। तब तो सती को निश्चय हुआ और कहा कि जो कुछ मैंने किया वह अज्ञानता और मूर्खता से किया है। अब आप पानी और दूध अलग करके देखें क्योंकि प्रीति की रीति यही है। मैं अपने कर्म पर आपही लज्जित हूँ पर शिव ने उस बात का बताना उचित न जान नाना प्रकार की कथा आदि सुनाने में उस बात को टाल दिया, अन्त को कहना पड़ा। इस प्रकार वह कैलाश पर्वत में पहुँचे। शिव अपनी इच्छा का विचार मन में कर बरगद के नीचे आसन जमा बैठ गये और अपने स्वरूप का ध्यान किया। सती मन्दिर में पहुँच अति खेदवान् हुईं। उनको एक दिन युग समान बीतता था पर सिवाय उनके और सबको यह हाल मालूम न होने पाया। दिन-दिन दुःख बढ़ता जाता था। मन में कहती थीं कि यह हमारा दुःख कहने के योग्य नहीं। न मालूम कि इस दुःख समुद्र से कब पार हूँगी। मैंने शिव का कहना न माना जिसका फल यह है। ऐसा कौन तीनों लोक में बलवान् है जो शिव के विरुद्ध होकर किंचित् आनन्द उठावे। फिर कहती थीं हे शिव! कुछ तुम्हारा अपराध नहीं है जो मैंने किया उसका फल पाया। हे भाग्य! तुझे ऐसा न चाहिये था कि मुझे शिव के विरुद्ध किया। हे ब्रह्मा! ऐसे समय में हमारी सहायता करो और यह शरीर मेरा बदल दो। हे मृत्यु! मैं तुमसे माँगती हूँ कि तुम मुझे इस संसार से उठा लो। यदि मैं तन-मन से शिव की प्रीति करती हूँ तो हे शिव! मुझ पर दया करो कि मुझे मृत्यु प्राप्त हो। सती ऐसी दुःखी हुई कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता और शिव को ऐसे ध्यान में सत्तासी हजार वर्ष बीते। जब इतने समय के उपरान्त समाधि से जागे तो सतीजी सामने जा खड़ी हुईं। शिव ने उनको अपने सम्मुख बैठाला। उस बात को मिटा दिया और कथा वार्त्ता में टाल दिया जिससे सती को दुःख न हुआ। वह प्रसन्न रहने लगीं और शिव ने भी अपने वचन को न छोड़ा। यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है कि सती को पहिली बात का कुछ दुःख न हुआ और वह अगली बातें सब भूल गईं। शिव हर शरीर में हैं और कई मुनियों का यह वचन है कि शिवशक्ति की जुदाई उचित नहीं है। यह बाद के वचन हैं और शिव के चरित्र हर कल्प के भिन्न-भिन्न हैं। तो किसको कल्पभेद का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वृत्तान्त मालूम है। वह जो कुछ करें सब उचित है; सन्देह न करना चाहिये। शिव और शक्ति का भेद अतिगुप्त और कठिन है। उसको कोई क्या जान सकता है। शेष और विष्णु भी उनके चरित्र के वर्णन करने में अशक्त हैं। शुक सनकादि और देवता उसको अप्रमेय जानकर अन्त नहीं जान सकते। वेद भी सब कुछ कहते हैं पर तो भी अलख पुकारते हैं। यह जानकर भक्तों को उचित है कि निस्सन्देह होकर उनकी पूजा व तपादिक करें। हे नारद! इसी तरह बहुत दिन बीते तब शिव ने और चरित्र किया जिसको देख सबकी बुद्धि भ्रमित हुई। अब हम वही वर्णन करते हैं, मन लगाकर सुनो।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब हमने दक्षप्रजापति का अभिषेक कर उसको सब प्रजापतियों का अधिकार दिया तो वह अहंकार में मग्न हो गया जिससे उसकी मति भ्रष्ट हो गई। तुम आप अच्छी तरह से विचारकर देखो कि प्रतिष्ठा पाकर किसको गर्व नहीं उपजा। तो उस समय दक्ष ने सब समान इकट्ठा कर प्रजापति यज्ञ करना चाहा। इसी इच्छा से कनखलतीर्थ पर गया और सब मुनियों को बुलाया। व्यास, ककुभ, गौतम, भरद्वाज, कश्यप, संत, सुमंत, त्वरित, कम्प, च्यवन, अगस्त्य, वशिष्ठ, वामदेव, जैमिनि, पिप्पल, पराशर, क्रतु, वैशम्पायन, गर्ग, भार्गव, आसुरि, वीतहोत्र, भृगु, दधीचि, नारद आदि और सिवाय इनके सब देवता ब्राह्मण संसार भर के वर्तमान हुये। अनल भी अपने गणों समेत दक्ष के यज्ञ में पहुँचे और हम भी उसके बुलाने से प्रसन्नतापूर्वक विष्णु समेत यज्ञ में सुशोभित हुये। इन्द्र अपनी स्त्री शची समेत ऐरावत हाथी पर चढ़ पहुँचे। पावक मेघ पर, यम भैंसे पर, वायु हरिण पर और शिव के मित्र कुबेर पुष्पक विमान पर चढ़कर यज्ञशाला में आये। वरुण भी अपने वाहन पर आरूढ़ हो पहुँचे। सूर्य अपनी स्त्री समेत और चन्द्रमा अपनी स्त्री रोहिणी सहित आये। सो दक्ष ने अति आनन्द में मग्न हो सबका आदर-सम्मान किया और सबके ठहरने के लिये विश्वकर्मा के बनाये हुये मन्दिर बतला दिये जिनमें सब स्थित हुये। उस समय सतीजी गन्धमादन पर्वत पर अपनी सखियों समेत लीला कर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रही थीं। उन्होंने देखा कि चन्द्रमा अपनी स्त्री सहित चला जाता है। सती ने विजयानामी अपनी सखी को आज्ञा दी कि तुम चन्द्रमा से जाकर पूछो कि कहाँ जाता है। विजया ने चन्द्रमा के निकट जाय कहा कि सती पूछती हैं कि तुम अपनी स्त्री सहित ऐसे ठाट से कहाँ जाते हो? यह बात सुन रोहिणी बोली कि सती के पिता दक्ष प्रजापति कनखल में यज्ञ करते हैं। वहाँ बड़ा उत्सव है और उनके बुलाने से सब देवता वहाँ गये हैं। वरन् वहाँ ब्रह्मा और विष्णुजी भी शोभित हैं। वह देश सर्व सृष्टि से पूर्ण है। तुम तो ऐसा पूछती हो जैसे कोई मूर्ख हँसी से पूछे। क्या कारण है कि तुम ऐसे यज्ञ को नहीं जानतीं। क्योंकि वहाँ सब अपना-अपना भाग लेने गये हैं। तुम अपनी इच्छा से नहीं गईं या दक्ष ने तुमको नहीं बुलाया? यह सुन विजया लौट आई। जो कुछ रोहिणी से सुना, वह सती को सुनाया। सतीजी को अति दुःख हुआ कि क्यों माता-पिता ने हमको भुला दिया और हमें तथा शिव को नहीं बुलाया। यह विचार सती तुरन्त शिवके निकट गईं और उसी समय चन्द्रमा भी अपनी स्त्री रोहिणी समेत दक्ष के पास गया। उस समय की सामां और उस काल के आनन्द जो दक्ष यज्ञ में थे वर्णन नहीं हो सकते। जब मुनि देवता कनखल में जो हरद्वार में है, आ गये। तब दक्ष ने यज्ञ का प्रारम्भ किया और अपनी स्त्री सहित यज्ञ में प्रवृत्त हुआ। भृगु मुनि यज्ञ करानेवाले ठहराये गये और दक्ष ने ऐसे यज्ञ में सबको वर्तमान देख वैरभाव अङ्गीकार किया। ऐसे समय में दधीचि हमारे पुत्र ने सदाशिव को यज्ञशाला में न देख आश्चर्य से कहा कि यह बात हम सब वर्तमान मनुष्य कहते हैं कि यद्यपि इस उत्सव में सम्पूर्ण देवता, मुनि और ब्रह्मा के पुत्र आदि आये हैं पर हम सत्य कहते हैं कि यह सभा सदाशिव बिन अशोभित है। सदाशिव शुभ बातों के मूल हैं। हम उस पुरुष परमात्मा को नहीं देखते जिसको वे पुराण नेति-नेति बखानते हैं। वह सब देवतों के स्वामी हैं। वह इस जगह पर क्यों नहीं हैं। तुम क्यों ऐसे शिव को भूल गये? हे दक्ष तुम्हारी बुद्धि इस तरह पर भ्रष्ट हो गई! अब भी कुछ काज नहीं बिगड़ा। तुम जितने देवता मुनि हो और ब्रह्मा, विष्णु भी सब जाकर शिवको प्रसन्न कर ले आवो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सतीजी को प्रसन्न कर शिव सहित लावो और निश्चय जानो कि शिव के आये बिना यह यज्ञ पूर्ण न होगा। आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य को जिसके स्मरण अथवा नाम लेने से सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हो जाते हैं, उसको क्यों कर भूल गये और नहीं बुलाया। इस बात को अच्छी तरह पर समझो कि जब तक शिव न आवेंगे, यह यज्ञ पूर्ण न होगा। दधीचि के यह वचन सुन दक्ष महाक्रोधित हुआ और हँसकर बोला कि जिस जगह सब देवतों के स्वामी बैठे हैं, वहाँ सब धर्म, वेद और शुभ कर्म पूर्णरूप से वर्तमान हैं। सो ऐसे विष्णु तो हमारी यज्ञ में विराजमान हैं, अब क्या बाकी है हमको बतला दीजिये। हमारी यज्ञ में तो अपने-अपने गणों समेत ब्रह्मा, वेद, धर्मशास्त्र. सर्व पुराण, उपनिषद् भी आ चुके हैं। सो बड़े भाग्य हैं कि इन लोगों ने मुझ पर अनुग्रह किया। आज मेरे यहाँ सब देवता लिये इन्द्र, विष्णु भगवान् और तुम्हारे समान बहुत मुनि सुशोभित हुये हैं और सब आ चुके हैं। सो शिव के आने की क्या आवश्यकता है ? तुम सब मिलकर हमारी यज्ञ पूर्ण करो और मैंने अपनी भाग्य और ब्रह्मा की आज्ञा को मानकर अपनी कन्या शिव को दी। यद्यपि यह विवाह अनुचित हुआ क्योंकि वह कुलवान् न था। संसार से मुख फेरे महाअहंकारी इस पर यह कि माता-पिता हीन जो उसे किसी कर्म से निषेध करे। वह भूत, प्रेत और पिशाचों का स्वामी तथा अवधूत है। तो ऐसे शिव को ऐसी यज्ञ में बुलाने की आवश्यकता न जानकर नहीं बुलाया। इसलिये हम तुमसे कहते हैं कि ऐसा वचन फिर मुख पर न लाना। अब भी उचित है कि तुम सब मिलकर हमको हमारी यज्ञ के पूर्ण करने से आनन्द दो। ऐसे वचन दक्ष के सुनकर किसी ने कुछ उत्तर न दिया और यह चुप रहना उनका सबके लिये महापाप हुआ। क्योंकि सबने शिव निन्दा अपने कानों सुनी पर फिर भी दधीचि ने कहा कि बिना शिव के यह यज्ञ नहीं है वरन् तुम सबको छल है जो करते हो। यह दक्ष बड़ा अधर्मी और मूर्ख है जो शिव निन्दा कर रहा है। जो कि इसने शिव को नहीं बुलाया तो यह यज्ञ भी पूरा न होगा। जो इस यज्ञ में रहेगा, उस पर बड़ा दुःख पड़ेगा। यह कह दधीचि तो उस सभा से उठकर चले गये और बहुत से मुनि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लोग भी दुःखी होकर उठ गये। ऐसे मुनि लोगों को अपनी सभा से जाते हुये देख दक्ष ने अति प्रसन्नता से कहा कि क्या अच्छी बात हुई कि शिव के प्यारे और शिवभक्त जो हमको दुःख देते थे, अपने आप उठ गये। अब तुम सब मिलकर हमारे यज्ञ को पूर्ण करो। तब उसी समय यज्ञ का प्रारम्भ हो गया और जैसा चाहिये वैसा सब काम होने लगा।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सती ने अपने पिता के घर यज्ञ का हाल सुनकर चाहा कि मैं भी जाऊँ और इस इच्छा से अकेली सदाशिव के पास गईं और देखा कि सेवकगण शिवजी की सेवा में लगे हुये हैं, अर्थात् चण्ड, मुण्ड, बाण, भृङ्ग, नन्दी, महाकाल, महामुण्ड, महाशर, नन्द, उदातकामी, धूम्र, बिभ्रउदात, भीषण, सुपतकेतु, धूम्रविलोचन, सबलबाहु, धूम्रकेतु, धूमलचरणादि और बहुत से गण चरण सेवा कर रहे थे। उस समय शिवजी का रूप महाभयंकर था। नग्नरूप केवल रुद्राक्ष धारण किये हुये जटा लटक रहीं, शरीर भर भस्म से शोभित, ऐसे स्वरूप से शिव को देख सती ने प्रणाम किया। शिवजी ने अति प्रीति कर सती को बैठा लिया। यद्यपि शिव सब जानते थे परन्तु संसारी लीला के निमित्त सती से पूछा कि यहाँ आने का कारण कहो। सती अति प्रसन्न हो कहने लगीं कि क्या आपको भला मालूम नहीं हुआ जो दक्ष ने यज्ञारम्भ किया है। मित्रों और बान्धवों की भेंट बड़ा धर्म है। इसलिये अच्छे लोग भले बन्धुओं की संगति स्वीकार करते हैं और बड़ा आनन्द उठाते हैं। इसलिये उचित है कि आप चलकर यज्ञ को पवित्र करें और मुझे अपने साथ ले जाकर मेरी इच्छा पूर्ण करें। ब्रह्मा, विष्णु आदि सब हमारे पिता की यज्ञ में पहुँचे हैं और आप नहीं गये। प्रायः आपको यह यज्ञ अच्छा मालूम नहीं हुआ। आप मुझसे न जाने का हेतु विस्तार से कहिये। मैं तो आपकी दासी हूँ। मेरी बड़ी इच्छा है कि अपने पिता के घर जाऊँ। आप मुझे साथ लेकर चलिये। यह सुन शिव मुसकराकर कहने लगे कि तुम्हारे पिता दक्ष ने हमको निमन्त्रण नहीं भेजा और वैर रखकर हमारा अनादर किया है। केवल तुमको नहीं बुलाया बाकी और सब लड़कियाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वहाँ पहुँची हैं। इसका कारण केवल वैर है और बिन बुलाये जाना उचित नहीं। यद्यपि धर्मशास्त्र कहता है कि अपने पिता, मित्र, गुरु और स्वामी के घर में बिन बुलाये जाना उचित है, पर शत्रुता न होनी चाहिये और बिन बुलाये किसी के घर जाना मृत्यु से अधिक है तथा अनादर और लोकनिन्दा का कारण है। यह सुन सती बोलीं कि हे स्वामिन्! आप इस वैर का कारण बतावें। शिव ने पहिला वृत्तान्त सब कह दिया और कहा जो बिन बुलाये इन्द्र भी किसी के घर जावें तो वह भी तुच्छ मानहीन समझे जाते हैं। इसलिये उचित है कि दक्ष के यज्ञ में न जावो नहीं तो बड़ा दुःख होगा। शिव ने बहुत प्रकार से सती को मना ही किया पर यह समझना सती को अच्छा मालूम न हुआ। वे दक्ष पर अति अप्रसन्न और कोपित हो कहने लगीं कि हे शिव! आप तो तीनों लोक के आनन्द देनेवाले हैं। आपका स्मरण देवता करते हैं। आप यज्ञरूप, यज्ञ कर्म और यज्ञ के फल हैं। आपकी दृष्टिमात्र से तीनों लोक तृप्त हो जाते हैं। आपसे यज्ञ पवित्र और पूर्ण होता है। सो मूर्ख दक्ष ने आपको न बुलाया, मुझे चिन्ता है कि यह यज्ञ क्योंकर पूर्ण होगा। मेरा पिता क्यों ऐसा अन्धा हो गया। मुझे बड़ी चिन्ता है यदि आप आज्ञा दें तो दक्ष के यज्ञ में जाकर उसके शील व दुश्शीलता अथवा उसके वैरभाव को देखूँ। जो कि शिव को कुछ और लीला व चरित्र करना था तो सती को जाने की आज्ञा देकर कहा कि तुम नन्दी पर सवार होकर जावो और अपने साठहजार गण सती के साथ देकर बिदा किया। अच्छे-अच्छे वस्त्र भूषण दिये और उत्तम स्वरूप सती का कर दिया। हे नारद! शिव ने ऐसी माया की कि सती बड़ी धूमधाम से चलीं, जिनके शीशपर छत्र भारी मोलका और जिन ब्राह्मणों का शब्द तोते और पपीहे के समान था, वे आगे-आगे मधुरवाणी से शिव का यश गाते हुये चले और सती ने जैसी उस समय अपनी शोभा प्रकट की ऐसी किसी समय में प्रकट न की थी। चलने के समय एक बड़ा शब्द हुआ कि कोई कूदता, कोई उछलता और सब प्रसन्न और औरों को भी आनन्द देते हुये चलते, कोई सती का प्रताप वर्णन करता, कोई शिवमहिमा गाता और महाप्रसन्न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाना प्रकार की गति से चलते सती की सेवा करते हुये दक्ष के यज्ञ में जा पहुँचे ।

चौबीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! सती दक्ष से भयभीत यज्ञशाला में पहुँची पर किसी ने बात तक न पूछी और न जाना कि यह जगन्माता हैं । दक्ष ने न तो मान किया और न कुशल पूछी । यह देख सती की बहिनों ने जो वहाँ थीं, हँसकर सती की निन्दा की । सती ने जब देखा कि यज्ञ में सबका भाग है और शिव का भाग नहीं तो मन में महाक्रोध किया और अपना अनादर देख शिव का स्मरण किया और कहा कि अपने क्रोध से दक्ष को भस्म कर डालूँ, फिर सोचा कि यह काम अच्छा नहीं वरन् हमने पहिले वचन दिया था कि जब दक्ष ने हमको बड़ा तप करके प्रसन्न किया था । हमने उससे कहा कि हम जब तुम में कुछ गर्व अथवा अपने मान की कमी देखेंगी तो तुरन्त अपने शरीर को छोड़ देंगी और दक्ष ने मान लिया था। सो अब वही समय है और फिर सती ने इस बात को सोचकर बड़ा खेद किया और कहा बड़ा पश्चात्ताप है कि शिव अपुत्र रहे और हमारे विवाह का फल न मिला पर हमारे सिवाय और कौन स्त्री है जो हमारे पीछे शिव को प्रसन्न रक्खेगी और फिर शिव ही दूसरी स्त्री को स्वीकार न करेंगे । अब हम अपनी प्रतिज्ञा पर अपने शरीर को छोड़कर हिमाचल पर्वत में उपजेंगी । हिमाचल की स्त्री मुझे अपनी लड़की की तरह पालन करके लड़की समझेगी । मैं भी उसे माता जान आनन्द दूँगी और शिव का तप कर उनके साथ ब्याही जाऊँगी । उस समय मेरी सब लज्जा जाती रहेगी और संसार के मनोरथ पूरे होंगे । वह शिव जो सृष्टि भर के स्वामी हैं, मुझ पर कृपा करेंगे । यह विचारकर दक्ष से क्रोधित होकर कहा कि हे पिता ! तुमने शिवको निमन्त्रण क्यों नहीं भेजा ? क्या आपकी शुद्ध बुद्धि भ्रष्ट हो गई या किसी ने बुरी सम्मति दी ? जिस शिव-स्वामी से तीनों लोक पवित्र होते हैं, उनको आपने नहीं बुलाया । आपकी बुद्धि नष्ट हो गई और शिव बिन सब कर्म अशुद्ध हो जाते हैं । न तो यहाँ और न उस परलोक में कुछ बात बन पड़ेगी । जो तुमने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बिना शिव यज्ञ किया तो क्या तुमने अन्य देवताओं के समान शिव को समझ लिया। देखो ब्रह्मा, विष्णु और देवतों ने जिनके चरणों का ध्यान करके सबके स्वामी होकर बड़ा पद पाया, ऐसे शिव को तुमने न पहिचाना। फिर ब्रह्मा, विष्णु और सनकादिक से कहा कि तुम शिव बिना क्योंकर इस सभा में आये। इसी तरह से सबको ऐसी बातें और शिव का यश वर्णन कर एक-एक को अलग-अलग लज्जित किया। विष्णु से कहा कि तुम शिव को क्या नहीं जानते जिनको वेद सगुण और निर्गुण करके बखानते हैं। हमने तुमको हजारों बेर समझाया है और फिर भी तुम मार्ग को भ्रष्ट करते हो। हे ब्रह्मन्! तुम भी बुद्धि हीन हो गये। तुम शिव के अमित बल को नहीं जानते और यद्यपि शिव ने हजारों बेर कहा है पर तो भी तुम्हें बुद्धि न हुई। तुम्हारे पाँच मुख थे, शिव निन्दा की इससे चारमुख तुम्हारे बाकी रहे। और हे विष्णो! तुम क्या वह शिव महिमा भूल गये जब कि उन्होंने शम्बर को जला दिया और फिर इस यज्ञ में आये हो। हे देवताओं! तुमने अपनी शुद्ध बुद्धि क्यों खोई? हमने समझा है कि तुम सब बड़े अभागी हो चुके और शिव बिन इस यज्ञ में चले आये। और हे भृगु, अत्रि, वशिष्ठ तुमने यह बात बुद्धि के विरुद्ध क्यों की? तुमको शाप देने की बड़ी शक्ति है। क्या तुम शिवजी के बल को नहीं जानते और शिव को किसी का शाप नहीं लगता। आपही शाप देनेवालों की हानि होती है। जैसा कि एक बेर शिव ने लीला करने के लिये अपना मगररूप धरा और दार्विनपुर को गये और भक्त की परीक्षा के लिये कुछ परीक्षा की जिसको मुनि लोगों ने न जाना और शिव को शाप दिया। सो वह शाप उन्हीं के लिये बुरा हुआ। तीनों लोक जलने लगे। तब शिव ने अपने लिङ्ग को पृथ्वी पर गिरा दिया जिससे तीनों लोक फिर जी गये। इतना कह फिर सती ने अति क्रोधकर ब्रह्मा और विष्णु से कहा कि यह जो कुछ दक्ष ने किया है उसके मूल तुम दोनों हो। क्योंकि दोनों इस यज्ञ में आये और बुद्धि के विरुद्ध कार्य किया। सो जैसा तुमने किया है वैसा फल पावोगे। जिससे चारों वेद और सृष्टि उत्पन्न हुई ऐसे शिव को तुमने कुछ भी न जाना। जो तुम दोनों दक्ष के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यज्ञ में न आते तो उसको इतना अहंकार न होता। जो सब देवता मुनि आदि न आते तो दक्ष ऐसी मूर्खता न करता। सब लोगों की बुद्धि कैसी विपरीत है कि मुनि दधीचि का सभा से उठ जाना, न भाया। ऐसी बातें सती की सुनकर दक्ष अति क्रोधित हो कहने लगा कि हे अज्ञानिनी! यह बात क्योंकर और क्या बकती है? मुझसे और तुझसे कुछ पिता-पुत्री का सम्बन्ध नहीं है। जो मन चाहे तो यहाँ रह नहीं तो अपने घर जा। तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है और तेरा पति बहुत ही अशुभ है। उसका नाम तुच्छ शिव है। जो तुच्छ और उसमें केवल दो अक्षर हैं। वह भूत, प्रेत और पिशाचादि साथ लिये हुये चिता और श्मशानों में फिरा करता है। उसके माता-पिता, कुल और जाति-पाँति कुछ नहीं। चाहे उसका वर्णन वेद में हो पर उसमें शुभगुण पाये नहीं जाते। इसलिये हमने उसको अपने यहाँ नहीं बुलाया क्योंकि ऐसे मनुष्य के लिये यज्ञ में आना निषेध किया है। और हे सती! मैंने बड़ी मूर्खता और बुद्धि की हीनता की कि दूसरे के वश में हो तुम्हारी ऐसी उत्तम पुत्री को ऐसे औढर नंगे को दे दिया, मुझे बड़ा खेद है। अब तुमको उचित है कि मेरी यह बात समझ क्रोध छोड़ दो। ऐसी बातें पिता की सुन सती फिर क्रोधित हुई और अपने पिता को अति पापी समझा। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सती ने कहा कि शिव का अपमान नहीं सुना जाता। यदि कोई शिव की निन्दा करे तो उचित है कि उसकी जिह्वा काट डाले चाहे कुछ हो। जो अपना वश न चले तो दोनों कान बन्द करके वहाँ से उठ जावे या अपने को अग्नि में जलावे तब शुद्ध होवे। यह बड़ा पाप है और लोक-परलोक दोनों स्थानों में आनन्द नहीं मिलता। शिव निन्दा करनेवाला जब तक कि सूर्य चन्द्रमा स्थित रहते हैं, तब तक वह नरक में बसता है, यह बात वेद कहते हैं। यह सोच सती को इस बात का बड़ा पछतावा हुआ कि मैंने शिव निन्दा सुनी और ऐसे दुःख की दशा में इस बात से और भी अधिक खेद होता था कि मैं क्यों यहाँ आई। अब क्या लेकर शिव के यहाँ जाऊँ। अवश्य है कि शिव के शुभचरणों को देखूँ पर वहाँ जाकर शिव से क्या कहूँगी?

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुझे दोनों तरह से कठिनता है। यह विचार अतिक्रोध से शिव-शिव कहने लगीं और सबको बड़े जोर से झिड़ककर किसी की बड़ाई का विचार मन में न लाईं और कहा कि तुम यज्ञशाला के मनुष्य सुनो। मैं सच-सच कहती हूँ कि इस समय तुम नहीं समझते हो पर सब तुम पीछे से पछतावोगे। तुममें से बहुत से कालवश होंगे और बहुत से भागकर कहीं किसी घर में होंगे। इस सभा में जिस किसी ने शिवनिन्दा की है और जिसने उसे सुना है, उसे महापाप हुआ है। सो इसका फल तुम सबको तुरन्त मिलेगा। हम सच कहती हैं और हे दक्ष! पीछे से तुम बहुत पछतावोंगे क्योंकि तुमने शिवनिन्दा बहुत की है। ऐसे शिव जो सबको सुख देनेवाले हैं, उनको तुम और देवतों के समान जानते हो और नहीं जानते कि वे संसार के बड़े हितैषी हैं। इसका फल जल्दी पावोगे। जिस पुरुष का न कोई शत्रु है और न मित्र, उसको न कोई प्रिय है न अप्रिय, वही सर्व में स्थित है। ब्रह्मा विष्णु उसकी सेवा करते हैं। ऐसे मनुष्य बिना तुम क्या और तुम्हारा यज्ञ क्या है और वेद में मनुष्यों के तीन प्रकार वर्णन किये गये हैं जो किसी के गुण और शील में पाप लगावे उसको अधम कहते हैं, जो किसी के पाप पुराय का यथार्थ बखान करे उसको मध्यम जानना चाहिये और जो किसी के पाप छिपावे वरन् उसकी प्रशंसा कर देवे, वह उत्तम कहा जाता है। इनमें भी जो बहुत उत्तम हैं, वे केवल गुण वर्णन किया करते हैं और सबको प्रसन्न रखते हैं। तो इन तीनों प्रकारों से हमने जाना कि तुम अधम हो। क्योंकि शिवनिन्दा तुमने की और जितने बड़े पाप जैसे झूठ बोलना, अहङ्कार, क्रोध, लोभ आदि हैं, उन सबसे बड़ा पाप निन्दा है। शिव शब्द में जो दो अक्षर हैं जो मनुष्य उन्हें मुख पर लावे, उसके सब पाप जल जावें। ऐसे नाम की तुम निन्दा करते हो। जो शिव अनादि और अप्रमेय हैं, उनसे तुम द्वेष रखते हो। जिन्होंने शिव को जान लिया है वे शिव की प्रीति में मग्न हैं। शिव के चरणों पर ब्रह्मा अपना शिर रखते हैं। उनकी तुम निन्दा करते हो। शिव संसार के उपजानेवाले हैं और वही पालन करके फिर प्रलय कर देते हैं। यह शरीर मेरा जो तुमसे उपजा है, उसका त्याग

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करूँगी जिससे मेरा खेद दूर हो। तुमने जो कहा कि शिव कोई कर्म नहीं करता और अशुभ है सो वह तो ब्रह्म है, शरीर रहित है, अनादि है, माया धारण किये हुये हैं। उसको कर्म से क्या प्रयोजन है। जो तुमने कहा कि वह चिताभस्म लगाये रहते हैं और नग्न, निर्धन और अवधूत हैं, हमको केवल लिङ्ग प्रसन्नता देनेवाला है। अब मैं यह शरीर जलाकर अन्य तन धारण करूँगी जिससे शिव को हर्ष प्राप्त होगा इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह कह सतीजी धरती की उत्तर दिशा में बैठ गई और स्नान कर सम्पूर्ण शरीर अपना वस्त्र से लपेट योग धारण कर युक्तिपूर्वक आसन लगा प्राणायाम किया। पहले समान वायु को नाभि चक्र में लाकर उदान को ऊपर चढ़ाया फिर शिवकी मूर्ति मनमें स्थित की और दोनों भौंह के बीच दृष्टि जमाई और अपने पति के चरणों का ध्यान धर अग्नि और वायु प्रकट की। ऐसे पवित्र अग्नि और पवन से अपने निष्पाप शरीर को जला दिया। यह दशा देख चारों ओर से हाहाकार का शब्द हुआ। सब लोग दुःखी हो भयभीत हुये और वीरनी दक्ष की स्त्री ने बड़ा शोक किया। उस समय शिव के गण कुपित हो कहने लगे।

पच्चीसवाँ अध्याय।

शिवगण बोले कि दक्ष की मूर्खता देखो कि सती को जलने से मना नहीं किया। यह शिव का शत्रु संसार में निन्दा पावेगा और यह अहंकारी, मूर्ख और कामी करोड़ों नरकों में डाला जावेगा। यह कहते-कहते वह सब दक्ष के मार डालने और यज्ञ के भ्रष्ट कर देने को खड़े हुये तो भृगु ने गणों की यह इच्छा जान रक्षा के निमित्त अच्छी पवित्र आहुति यज्ञ में छोड़ी और होम करते-करते यज्ञ से दैत्य उपजे जो महावीर, धीर और बलवान् थे। उन्होंने लोक में भृ नाम पाया वे गिनती में एक हजार थे। महाभयानक रूप से शिवगणों के सामने हुये। ऐसे समय में शिव ने यह चरित्र किया कि अपने गणों का बल हर लिया और वह महानिर्बल हो गये। दूसरी यह बात हुई कि गणों में हाहाकार शब्द होने लगा। ऐसे शब्द सुन जो द्वार-पर गण स्थित थे, वे आश्चर्य में हुये और आत्मघात पर तत्पर हो सती के साथ मरना चाहा तथाच किसी ने अपने शिर को और किसी ने अपने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अन्य अङ्ग को काटकर अपने आपको वध कर डाला। इसी प्रकार शिव के बीस हजार गण उसी स्थान पर जहाँ सती ने अपने को जलाया था, मर गये। यह दशा देख सब सभा के लोग अति चिन्तित हुये। हम और विष्णु के भी ऐसे समय के देखने पर जल्दी-जल्दी श्वास चलने लगी। सर्व मनुष्य चुप हो गये। कोई तो विष्णु की तथा कोई दूसरे देवतों की स्तुति करने लगा। यज्ञशाला में दुःख फैल गया, प्रसन्नता का कोई चिह्न बाकी न रहा। दक्ष की मूर्खता से सबको यह पाप लगा। निदान जो गण शेष रह गये थे, उन्होंने जाकर शिव से यह सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि दक्ष ने सती का अति निरादर किया। दक्ष के साथ ही और भी किसी ने सती का कुछ मान न किया। अब जो उचित हो, वह कीजिये। शिव यह वृत्तान्त सुन महाक्रोधित हुये। उस समय नारद ने भी शिवजी के निकट जाकर जो कुछ हुआ था, वह सब वृत्तान्त वर्णन किया और वेद के अनुसार बदला लेने को कहा कि जो आप दक्ष को दण्ड नहीं देते तो वेद की आज्ञा और मार्ग झूठ होता है। इसी प्रकार देवतों को दण्ड न देना यह भी नीति के विरुद्ध है। दधीचि का वचन जो पहला है, मिथ्या होगा। खेद है कि ब्रह्मा, विष्णु भी माया के वश में पड़ गये। दधीचि के वचन को न माना, ऐसा उत्पात मचाया और दक्ष से यह काम कराया। यह सुन शिवजी ने विचारा यद्यपि ब्रह्मा, विष्णु, देवता और ब्राह्मण मुझे बहुत प्रिय हैं पर वेदकी आज्ञा सर्वोपरि है। सो अपने गणों को निर्भय किया और दिव्यदृष्टि से यज्ञ का सर्व वृत्तान्त अवलोकन किया तथा ऐसे कुपित हुये मानों शिव रुद्र होकर प्रलय करना चाहते हैं, अपने दोनों होंठ दाँत से काटने लगे और एक जटा अपने शिर से उखाड़कर पहाड़ पर मारी जिससे एक महाभयानक शब्द सुनाई दिया व तीनों लोक काँप उठे। उस जटा से टूटकर दो टुकड़े बराबर अलग हो गये। जड़ की ओर से वीरभद्र उपजे जिन्होंने यज्ञ को नष्ट कर डाला। उनका शरीर महाश्याम और केश कालीघटा के समान थे और वह अग्नि के समान मालूम होता था। ऊँचा इतना मानों बेपरिश्रम आकाश हुआ चाहता है। शोक दुःख दूर किये, निर्भय मुण्डों की माला पहिने और बड़े भयानक शस्त्र लिये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हुये शिर में जटा रखाये और जिनकी इच्छा सदा युद्ध करने की थी। भौंहें धन्वा ऐसी बहुत टेढ़ी, महाभयानक शब्द करते हुये सिंह के समान गर्जते, तीनों शिर घुमाते, सहस्र भुजा और शिर से प्रणाम करते वीरभद्र उपजे और अपने शरीर के रोमों से बहुत गण उपजाये जो सब बातों में उन्हीं के समान थे। वे कैलाश पर्वत पर शिवकी सैन के अनुसार शब्द कर रहे थे। उस समय के शब्द का कुछ वर्णन नहीं हो सकता। एक जटा के टुकड़े से तो यह सेना उपजी और दूसरे टुकड़े से श्री महाकाली उपजीं। उनके साथ भूत प्रेतादि करोड़ों प्रकट होकर कूदने और नानाप्रकार की लीला करने लगे। शिवके क्रोध के कारण जो उस समय श्वास निकले, उससे सौ प्रकार के और तेरह भाँति के सन्निपात प्रकट हुये जो संसार में बड़े उपद्रव कर रहे हैं। इस तरह से गणों की बड़ी सेना उपस्थित हुई जो यह जाना जाता था कि प्रलय को करेगी। ऐसे समय में वीरभद्र ने दोनों हाथ जोड़ शिव से विनय की कि हमको आज्ञा दीजिये कि जो उचित हो वह करें। जिसने आपकी अवज्ञा की हो जो काल भी हो तो उसको भी नष्ट कर देवें। यह सुन शिव बोले कि कनखल में दक्ष अहंकार से यज्ञ करता है। उसने हमसे शत्रुता कर हमें नहीं बुलाया और जोकि सती संसारी रीति के अनुसार उसके घर गईं तो भी उसने कुछ न समझकर बहुत व्यंग वचन कहे और यज्ञ में हमको भाग न दिया। दक्ष के साथ ही और किसी ने भी सती का कुछ आदर न किया। हमारा ऐसा अपमान देख सती जल भी गईं पर किसी ने निषेध न किया। इनके सिवाय हमारे भक्त दधीचि ने उस सभा को यह शाप दिया कि तुमने जो शिव का अपमान किया है तो तुमको उसका फल मिलेगा। इसलिये तुम जाकर यज्ञ को भ्रष्ट कर डालो और दक्ष का शिर काटकर किसी प्रकार का कुछ विचार न करो। जिसको जैसा दण्ड चाहिये उसको निर्भय वैसा दण्ड देना कि वेद और दधीच्यादि हमारे भक्तों का वचन सत्य हो। दुर्वासा, कौशिक, मार्कण्डेय, कम्बु, उपमुनि, इन्द्र, गौतम, पुलह, पुलस्त्य, बृहस्पति, और सनकादिक चारों भाई जो मेरे भक्त हैं, वे सब निराश होकर यज्ञशाला में से चले गये और बड़ा भारी शाप दिया है कि यज्ञ भ्रष्ट हो जावे सो ऐसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपने भक्तों के वचन को सत्य करना चाहता हूँ। इसलिये तुमको आज्ञा दी है कि तुम निर्भय होकर सब गणों को साथ ले दक्ष के यज्ञ में जावो। यह शिवजी की आज्ञा जिससे क्रोध, चिन्ता और हर्ष की वृद्धि हो वीरभद्र ने सुना और प्रसन्न हो महाभयानक रूप से गर्जा। फिर शिवजी की परिक्रमा-कर और उत्तम स्तोत्र से स्तुति कर करोड़ों सेना और काली को साथ ले चला।

छब्बीसवाँ अध्याय।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनक ! यह कथा सुन नारद ने ब्रह्मा से कहा कि जो नाना प्रकार के महाभयानक यूथप वीरभद्र के साथ गये, उनके नाम सुना दीजिये और यह भी कहिये कि यज्ञ में जाकर उन्होंने क्या काम किया और किसको क्या दण्ड दिया। मुझे यह बड़ी भारी चिन्ता है कि इस ओर तो शिवजी की ऐसी बलवान् आज्ञा और उस ओर विष्णु महाराज सहायक। यह कि विष्णु ने सहायता की या नहीं और जो कि दोनों पल्ले भारी हैं, नहीं जाना जाता कि शिव और विष्णु क्या चरित्र करेंगे। मैंने शिव और विष्णु का युद्ध कहीं नहीं सुना। पर इस समय सब सामग्री उपस्थित है। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सदाशिव परब्रह्म हैं। उनके सब सेवक हैं। वे अपनी इच्छा के अनुसार सब कुछ करते हैं। उनके भक्त और चरण सेवक सब हैं। हम, विष्णु और हर उसी के तीन स्वरूप हैं। तुम कुछ सन्देह मत करो। जो सेनाएँ वीरभद्र के साथ चलीं, उनके अधिप और जितनी सेनाएँ उस वीर के साथ थीं, उनका विस्तार यह है—शंखकरण के साथ एक करोड़, कैयक राक्षस के साथ एक करोड़, विकृत के साथ आठ करोड़, प्रियात्रिक के साथ नौ करोड़, सुरमन्तक के साथ छः करोड़, विकृतानन के साथ में भी उतनी, जालक के अधीन बारह करोड़, दुन्दुभी के नीचे आठ करोड़, उतनी ही आवेश के साथ थी। अनलवरण व घण्टाकरण, कुकट, चित्रासन, संवर्त, रटिभृङ्ग, बकुली, नन्दन, प्रियाभानु, सुरसरिनन्द, तारक, छाग, चण्ड, कालपुञ्ज, कपर्दि, शूलकरण, पिङ्गल, मान, सुकेश, अङ्गद, भारभूत, मणि, भद्र, लाङ्गमूल, विन्दु ययूराक्ष के साक्ष चौंसठ-चौंसठ कोटि सहस्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सेना अलग-अलग वीरभद्र की सहायता के लिये चली। इसके विशेष कन्दक और कन्दूक के साथ एक-एक करोड़ सेना थी। यूथप विष्टनामी के साथ आठ करोड़ सेना थी। सन्दारक के साथ छः करोड़, कपाली के साथ पाँच करोड़, पिप्पल के साथ एक हजार, सनाद के साथ भी उतनी ही और कुन्दी के साथ बारह करोड़, शुण्डी के साथ भी उतनी ही, बुद्धितीपन के साथ आठ करोड़, महाकेश के साथ एक करोड़ हजार, प्रेत के साथ बारह करोड़, अतुलवदन के साथ एक करोड़, महाकाल के साथ सौ करोड़ व कालक और काल के साथ भी उतनी ही और इतनी ही अग्नि के और सन्नाह वीर के साथ सेना चली। रविमूर्द्धा एक करोड़ दल साथ ले क्रोध का भरा चला। कोकिल और अमोध, सुमन्त्रक इन तीनों के साथ एक-एक करोड़ सेना चली। काकपाद, सन्तानिक दोनों भटों के साथ में साठ-साठ कोटि वीर थे। क्षधपिङ्गल और पिङ्गल के साथ नौ-नौ करोड़ सेना थी। नीलनाम जो भट था, उसके साथ नौ कोटि वीर थे। पूर्णभद्र भी उतना ही कटक लिये था। चतुर्वक्त्र सात करोड़, लककेश, संवर्तिक, लोकानिक, मैत्र, भालकेतु इनके साथ सहस्र कोटि भूत थे। तीन हजार दिव्यात्म के साथ एक प्रकार की-सी सेना थी। काष्ठागूढ़ के साथ चौंसठ कोटि और पञ्चवदन, वृप, षडानन, तिरूपाक्ष भी चौंसठ कोटि भटों के अधिपति थे। सुकेश भी चौंसठ कोटि सेना लिये हुये था। शिलाद मुनि के पुत्र के साथ एक कोटि और केतु के साथ उतनी ही और उसकी आधी सेना श्वेतनाह के साथ थी। क्षेत्रपाल के साथ असंख्य कटक चला और भैरव जो यूथपों का अधिप था और आप से शिवरूप है वह भी सेनापूर्वक चला। उनके चलने के समय बड़ा हाहाकार हुआ और उनके साथ असंख्य कटक चला। नौ काली अपने अपने स्वरूप से साथ थीं। उनके नाम यह हैं काली, कात्यायिनी, ईशानी, चामुण्डा, मुण्डीरमर्द्दनी, भद्रकालिका, भद्रा, त्वरिता, वैष्णवी। ये नवदुर्गा नाचती हुई भैरव के साथ चलीं। इनके साथ महाभयंकर कटक था अर्थात् शाकिनी, डाकिनी, भूत, प्रेत, लङ्गिनी, मसान्ती, कूष्माण्डी, ब्रह्मराक्षसी योगिनी के चौंसठ समूहों सहित चले। सो हम कहाँ तक हर एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकार को वर्णन करें कि जैसा कटक यज्ञ के विध्वंस करने को चला। ऐसी गर्द धरती से उठी जो आकाश तक छा गई। सूर्य छिप गये मानों अँधियारा हो गया। उस समय बड़ा भयानक अँधियारा प्रकट हुआ। यह सेना सब दक्षिण की ओर चली और हरद्वार कनखल के समीप जा पहुँची। उस समय यज्ञ में नाना प्रकार के अशकुन होने लगे।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जो कुछ उस समय यज्ञशाला में अशकुन हुये, वह सब कहता हूँ। आकाश से पिसी हुई हड्डियाँ वर्षने लगीं और बहुतसी आश्चर्य की बातें हुईं जिससे कोई कर्म और विचार शेष न रहा। तीनों प्रकार के दुःख सबको हुये। कहाँ तक वर्णन करूँ कि ऐसे अशकुन और आश्चर्य की बातें देख सब यज्ञ के लोग बड़े अचम्भे में हुये। उनके मनों में महादुःख उत्पन्न हुआ। उनके मुख से कुछ वचन न निकला और सबके सब थरथर काँपने लगे। उस समय दक्ष यज्ञ करनेवाले और भृगु यज्ञ करानेवाले ने उत्तर की ओर बहुत गर्द देखी और कहा कि यह गर्द कहाँ से गिरती है और कुछ मालूम न हुआ। वे सब आश्चर्य में हरएक प्रकार की बातें करने लगे। उस समय दक्ष की पत्नी वीरनी ने कहा कि जो तुमने सती का अनादर किया है, तुम सब मूर्ख बन गये और सती को जलने से किसी ने मनाही न की। दक्ष ने शिव का अनादर किया और उनकी बहिनों के सामने सती का ऐसा अनादर हुआ, उसका यह फल हुआ कि शिव का शत्रु कहीं आनन्द नहीं पाता। चाहे मन को प्रसन्न करे पर अन्त में नरकगामी होता है। अब इस समय तो क्या हो सकता है। शिव से सब डरते हैं जो शिव प्रलय करते हैं उनके कोप से कौन बच सकता है। वीरनी के यह वचन सुन सब देवता और मुनि थरथर काँपने लगे और दक्ष भी भयमान और आश्चर्य में होकर विष्णु की शरण में गया। उसने हाथ जोड़ विनय की कि आप यज्ञरूप, यज्ञ के रक्षक और यज्ञ के कर्म हो। भक्तों की रक्षा करना आपका काम है। इस भय से मुझे छुड़ाइये और अपनी कृपा से यज्ञ के नष्ट होने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को बचाइये। आप तो सबके स्वामी हैं। मुझे इस समय कुछ नहीं सूझता। विष्णु ने हँसकर कहा कि हम जहाँ तक हो सकता है, तुम्हारी रक्षा करेंगे। पर तुमने जो शिव से वैर करके अपने ऊपर उपद्रव उठाया और तुमने ऐसे संसार के स्वामी के साथ जो जगत् का प्रलय करता है, द्वेष किया; कौन पार लगावेगा। हम और सब अमरगण मुनि उसकी रस्सी से बँधे हुये हैं। उसका तप मन लगाया करते हैं। उनकी बराबर संसार भर में कौन बलवान् है ? कोई मनुष्य चाहे हजारों उपाय करे पर शिव बिना फल नहीं मिलता। न वह काम पूरा होगा जहाँ कहीं पूजने योग्य शिव पूजा न जावेगा। जो देव पूजने योग्य नहीं उसकी पूजा से दरिद्र, मृत्यु और भय यह तीनों उपद्रव उत्पन्न होते हैं। जो कि तुमने शिव के साथ ऐसा किया, उसी का कारण है सो तुमको अभी फल मिला चाहता है। वेद शिव को सबसे बड़ा कहते हैं इसलिये शिव पूजा के योग्य हैं। जब कि ऐसे शिव के वैर से यह बात हुई है तो अब कौन उसे दूर कर सकता है। अब कुछ उपाय नहीं है। ऐसा तीनों लोक में कौन है जो शिव से न डरता हो। यह सुन दक्ष अति चिन्तित हुआ और सब लोग महादुःखी व शोकवान् हो कहने लगे कि अब कुछ कुशल नहीं क्योंकि कोई रक्षक न रहा। यही बातें हो रही थीं कि वीरभद्र अपने कटक समेत पहुँच गये और बड़े जोर से शब्द किया। भैरव और कालिका आदि भी अपनी-अपनी सेना-समेत पहुँचे। उस समय वीरभद्र का यह स्वरूप था कि पाँच मुख, तीन नेत्र, दश हाथ, जटा रखाये हुये, भयंकररूप, मस्तक पर अर्धचन्द्र, शरीर में सर्प लपेटे हुये, रुद्राक्ष पहने, बैल पर आरूढ़, भस्म धारण किये, उनके अङ्ग प्रत्यङ्ग महाकठोर वज्र समान, अति सुन्दर हाथों में नाना प्रकार के शस्त्र लिये, क्षत्र चँवर धरे हुये, शिव-शिव कहते महा विचित्र सुन्दर स्वरूप से अलंकृत थे। जिस रथ पर आरूढ़ थे वह पच्चीस योजन ऊँचा था जिसको दश लाख सिंह खींचते थे। शार्दूल और हाथी आदि चारों ओर से रक्षा को रहा करते। यूथप धावा करने लगे और नाना प्रकार के युद्ध के बाजे बजे। अर्थात् भेरी, शङ्ख, पटह, गोमुख, शृङ्ग, उपङ्ग, मृदङ्ग आदि बजे। इन्द्र, वायु, यमराज, कुबेर, वरुण, अग्नि और दिक्पाल अपने-अपने वाहनों।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पर आरूढ़ होकर आये। दक्ष ने उन सबसे कहा कि यह हमने तुम्हीं सबके बल पर किया था अब हमारी सहायता करो। इसी तरह सबसे कहा और विष्णु के चरणों पर शिर रख दिया और कहा कि हे विष्णो! आप जगत के रक्षक और शुभ कर्मों के साक्षी हो। तुम्हारी कृपा से संसार का पालन होता है इसलिये आपको यज्ञ की रक्षा करनी उचित है। विष्णुजी बोले हाँ, जहाँ तक हमको अधिकार और बल है, हम यज्ञ की रक्षा करेंगे पर तुम्हारे कर्म स्मरण कर हमारी बुद्धि आश्चर्य को प्राप्त होती है। तुमने शिव से वैर क्यों किया, उस ब्रह्मस्वरूप शिव के हाथ से कौन बचानेवाला है, हम तुम्हारे लिये बुरा भला कुछ नहीं जानते, तुम केवल अहंकार से काम रखते हो, ईश्वर के सिवाय और अन्य फलदायक कौन है? वही फल देता है। जो मनुष्य ईश्वर के प्रकाश को नहीं जानते, वह सुख दुःख के कार्य को भी नहीं जानते और सौ करोड़ कल्प तक नरक में रहते हैं और कर्मों की फाँसी कण्ठ से नहीं निकलती। बारम्बार उत्पन्न होकर मृत्यु होते हैं। वेद धर्मशास्त्र और पुराण सब उसी का गुण गाते हैं परन्तु फिर भी वह सदाशिव को नहीं जानते। वे शिव तीनों गुणों में पवित्र हैं इससे तुमको योग्य है कि श्रीशिवजी की शरणागत में जाओ कि तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण हो जाय। यह वार्त्ता हो ही रही थी कि वीरभद्र की सेना चारों ओर इस प्रकार फैल गई जैसे सागर आकाश को जाता है। वे विष्णुजी को ब्रह्मज्ञान और ज्ञान की वार्त्ता कहते हुये देखकर हँस पड़े। गणों को लड़ाई पर तय्यार देख इन्द्र ने अपना वज्र सँभाला और इच्छा की कि गणों से युद्ध करूँ। वह सामने हुआ और भी युद्ध के निमित्त इन्द्र के सम्मुख खड़े हुये और शिवजी का ध्यान किया।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद? इन्द्र की सेना युद्ध करने लगी और बड़े-बड़े हथियारों से युद्ध होने लगा। असि, अह्निक, तोमर, बाण और पट्टिश आदि हथियारों से युद्ध होने व भाँति-भाँति के बाजे बजने लगे। भेरी, शङ्ख, मृदङ्ग, डफ और दुन्दुभि, पटह, निशान, डिमडिम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आदि जो प्रसिद्ध हैं उनकी ध्वनि चारों ओर फैल गई और युद्ध में सर्ववीर अपनी-अपनी सामर्थ्य और वीरता प्रकट करते थे। जिस समय कि गणों ने वीरता प्रकट की, उस समय भृगुजी ने उच्चाटन मन्त्र का जप करके गणों को अशक्त कर दिया। इन्द्र की सेना ने उनको महादुःखी कर दिया और गदा के प्रहार से सहस्रों मनुष्यों को मार डाला। ऐसा कष्ट न सहकर वे भाग गए। इन्द्र की जीत का कारण यह है कि श्रीशिवजी ने प्रथम ब्राह्मण की बड़ाई प्रकट की। फिर वीरभद्र ने अपनी हार देखकर बड़ा क्रोध किया और भूत-प्रेत आदि सब अपने पीछे करके आप आगे आये और जो मुख्य बड़े-बड़े भट बैल पर चढ़े थे, उनको सेना के आगे रक्खा और आप त्रिशूल हाथ में लेकर इन्द्र के साथ बड़ा युद्ध किया। देवता आदि गणों संयुक्त घायल हुये। कोई चोट से भाग गया और कोई टुकड़े-टुकड़े होकर गिर पड़ा। इस तरह देवताओं की सेना नष्ट हो गई और भाग-भाग कर अपने घरों को चले गये। केवल इन्द्र उस शिवालय में दृढ़ता से खड़े रहे और अपने गुरु से पूछा कि हम जिस प्रकार जीतें, जो कुछ हो सके वह यत्न बताइये क्योंकि तुम देवतों के सेना की रक्षक हो। बृहस्पति ने कहा कि जो विष्णुजी का वाक्य था, वही हुआ। मन्त्र, तन्त्र, ओषधि, वेद, धर्म-शास्त्र, पुराण, विचार और प्रतीत कोई शिव महिमा को नहीं जानते। केवल शान्ति धारण कर जो शिव के भक्त हैं, वही उनको जानते हैं। वे अपने भक्त के निमित्त अवतार लेते हैं और संसारी मनुष्यों की रीति के अनुकूल लीला और चरित्र करते हैं। तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसी वार्त्ता हम से कहते हो और लड़कों के सदृश शिवजी से युद्ध करते हो। यह शिवजी की आज्ञानुसार आये हैं, यज्ञ को नाश करेंगे और किसी का किया कुछ न चलेगा। ऐसे वचन देवताओं के गुरु से सुनकर सब लोकपालों को बड़ी चिन्ता हुई। उस समय वीरभद्र ने कहा कि तुम्हारी सब वार्त्ता व्यर्थ और लड़कों के सदृश है। तुम सार वस्तु को नहीं जानते। जो-जो भाग लेने यज्ञ में आये हैं। वे हमारे निकट आवें और यज्ञ के भाग लेवें। इन्द्र, अग्नि, कुबेर, वरुण, सूर्य, शशि और देवता आदि एक-एक का नाम पुकारकर कहा कि हमारे निकट आवो और अपना-अपना भाग लो। अब मैं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमको सुख देता हूँ और इस प्रकार प्रसन्न करता हूँ जिसमें तुम चेत जाओ कि शिवजी ऐसे हैं। यह कहकर क्रोध से तीर चलाये जिनके लगने से इन्द्र घायल होकर अपने शरीर में उनके सहने की सामर्थ्य न देखी तो देवतों सहित चारों ओर भाग गये। जब इन्द्र देवतों संयुक्त भाग गये तब वीरभद्र के गण गर्जने लगे। फिर वीरभद्र अपने गणों को संग लिये यज्ञ के निकट आये। उस समय सब ऋषीश्वर शोकवान् हुये और विष्णु कि रक्षा में गये और भयवान् हो प्रणामकर शिर नीचे किये प्रार्थना की कि हम सब आपकी शरणागत हैं। हम पर दयालु हूजिये और रक्षा कीजिये। ऐसे वचन ऋषीश्वरों के सुनकर विष्णुजी ने लड़ाई की इच्छा की और सब हथियार हाथ में लेकर वीरभद्र के सम्मुख खड़े हुये। यह वार्त्ता सब वेद और पुराण कहते हैं कि भक्तों के निमित्त बड़ी चिन्ता, शोक और दुःख विष्णु को प्राप्त होता है। वीरभद्र ने क्रोधित हो विष्णु से कहा कि हे विष्णो ! तुम यहाँ किस निमित्त आये ? अपने तेज और प्रकाश से क्यों रहित होते हो ? दक्ष के क्यों रक्षक हुये हो ? तुमको यह अयोग्य है। तुम और इन्द्र दोनों भाग लेने आये हो; तुम भी तृप्त होगे, जैसा कि शिवजी ने हमसे कहा है। ऐसे वचन वीरभद्र के सुनकर विष्णु ने हँसकर कहा कि हे वीरभद्र ! तुम शिव के गण और उन्हीं के तेज से उत्पन्न हुये हो और पूजने के योग्य हो। जिस कारण हम दक्ष के यहाँ शिवजी को छोड़कर आये, वह हम कहते हैं कि दक्ष हमारे भक्त ने हमारी बड़ी सेवा की और मुझको यहाँ बुलाया। उसकी भक्ति से मैं यहाँ आया क्योंकि मैं भक्ति के आधीन हूँ और इसी प्रकार शिवजी भी अपने भक्तों के आधीन हैं। अब हम तुमको अपनी शक्ति से दूर करते हैं और तुमको योग्य है कि अपनी शक्ति से हमको हटाओ और जिस काम को आये हो, वह करो। बिना जीते तुम यज्ञ के निकट न जाने पावोगे। वीरभद्र यह श्रवणकर बहुत हँसे और सहनशीलता से कहा कि आप में और शिवजी में कुछ भेद नहीं है। जो मनुष्य भेद जानते हैं, वे शोकवान् होते हैं। हम तुम्हारे दोनों के सेवक हैं, इस कारण हम आपको कष्ट नहीं देते। हमको श्रीसदाशिवजी की आज्ञा करनी है। मेरा क्या दोष है ? तुमने जान बूझकर ऐसा किया है और अपने नगर को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

न गये। अब जैसा योग्य हो वैसी आज्ञा दीजिये। तब विष्णुजी ने कहा कि तुम हमारे साथ युद्ध करो, और चिन्ता न करो, तुम जीतोगे। जब हम तुम्हारी चोट से घायल होकर अपने नगर को जायेंगे, उस समय जो योग्य हो, वह करना। यह कहकर वीरभद्र ने हथियार उठाया और बाजा बजने लगा। विष्णुजी ने भी अपना शङ्ख फूँक दिया, जिससे सर्व संसार में हाहाकार हो गया। जो मनुष्य भाग गये थे, वे भी चपल हो गये और इन्द्र भी देवतों समेत लौट आये और विष्णु के सेवक होकर फिर युद्ध स्थान में हाहाकार करने लगे। इसी प्रकार बड़ा संग्राम हुआ और सर्ववीर अपनी जीत कहकर युद्ध करने लगे।

उन्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! विष्णु के संग नन्दी ने युद्ध किया और अनल और मुनिभद्र युद्ध में सम्मुख हुये। यमराज और महाकाल बराबर खड़े हुये। निर्ऋति और मुण्ड ने लड़कर वीरता दिखाई। वर्ण के संग मुण्ड और वायु के संग भृङ्गी ने युद्ध और मारधर किया। कुबेर ने अज्ञान अवस्था में कूष्माण्डपति के साथ युद्ध करने की इच्छा की। इस प्रकार गणों के साथ सर्व दिक्पतियों ने युद्ध किया। फिर इन्द्र ने अपना वज्र हाथ में लेकर नन्दी को मारा और नन्दी ने क्रोध संयुक्त अपना त्रिशूल इन्द्र के मारा। उसकी चोट से इन्द्र अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़े परन्तु झटपट उठकर लड़ने लगे। अनल ने मुनिभद्र को शक्ति की चोट से घायल किया। मुनिभद्र ने अभय होकर अनल के त्रिशूल मारा और कालदन्त ने यमराज से युद्ध करके दुःख दिया। इसी प्रकार से बड़े सरदार बहुत लड़े और कोई युद्धस्थान से न भागा। देवता अच्छी तरह गणों से लड़े और कोई न हारा। उस समय भैरवनाथ अति क्रोधवान् होकर योगिनियों की सेना लेकर देवतों की सेना में घुस गये। उन्होंने सबको घायल करके सबका रुधिर पिया और ऐसा अपना स्वरूप भयंकर बनाया कि अनन्त देवता देखकर भाग गये। सब देवता भैरवनाथजी के तेज और प्रकाश से महादुःखी हुये और भय से भैरव-भैरव बारम्बार कहने लगे। इसी प्रकार क्षेत्रपाल ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवतों की सेना के अन्दर घुसकर कष्ट दिया। अन्त में नवकाली देवतों की सेना को खाने लगीं और देवतों के शिर तोड़कर रुधिर पीने लगीं। भैरवजी क्षेत्रपाल और काली ने देवतों तथा मुनीश्वरों को अधिक क्लेश दिया और हाहाकार मच गया। देवतों ने भागकर विष्णु की रक्षा ली और कहा कि इस समय हम बहुत दुःखी हैं। यह समय आपकी सहायता का है और तुम सर्व देवताओं के स्वामी हो। इसी प्रकार अधिक प्रशंसा की और कहा कि भैरवजी क्षेत्रपाल और कालीजी ने यह हमारी गति की, जो योग्य हो, वह कीजिये। विष्णुजी यह दुर्गति देवतों की देखकर क्रोधवान् हुये और अपना चक्र उठाकर क्षेत्रपाल को मारा जिससे दशों दिशा जलने लगी। ऐसी ज्योति जलती हुई अपने ओर आते देखकर क्षेत्रपाल ने अपने मुख में डाल ली। विष्णुजी ने अपनी गदा को क्षेत्रपाल के गाल पर मारा जिससे चक्र मुख से गिर पड़ा। यह गति देख कालीजी विष्णुजी के सम्मुख हुईं। विष्णुजी ने बाण बरसाये, कालीजी ने सबको खा लिया। विष्णुजी ने नन्दक हथियार मारा कालीजी ने उसको पकड़कर तोड़ डाला। विष्णुजी कालीजी से युद्ध त्याग भैरवजी के सम्मुख हुये और दोनों में बड़ा युद्ध हुआ। भैरवजी ने विष्णुजी के चक्र को काट डाला और अपने बाण विष्णुजी पर छोड़ दिये, जो मृत्यु के सदृश विष्णुजी के निकट चले परन्तु विष्णुजी ने उनको बीच से काट डाला। इसी प्रकार भैरवजी ने विष्णुजी के बाण निष्फल कर दिये। बहुत समय तक यह युद्ध रहा जिसको सर्व देवता आदि देखते रहे। फिर भैरवजी ने प्रलय करनेवाला त्रिशूल जो बिना मारे नहीं छोड़ता, हाथ में लिया। यह गति देखकर वीरभद्र दौड़े और भैरवजी की प्रशंसा करके मना किया कि ऐसी आज्ञा शिवजी की नहीं है। ऐसा क्रोध न करो, सेवक अपने स्वामी पर ऐसा नहीं करते। ऐसा कहकर त्रिशूल का चलाना बन्द करा दिया और आप विष्णुजी के सम्मुख आ खड़े हुये। उस समय दोनों में महायुद्ध हुआ और सर्व प्रकार के हथियार चारों ओर फेंक गये। अन्त में विष्णुजी ने क्रोध करके अपनी योगमाया से अपने सदृश गणों को उत्पन्न किया। वह गिनती में अनन्त थे। वह सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गरुड़ों पर चढ़े शङ्ख, चक्र, गदा और पद्म आदि लिये शिवगणों से लड़ने लगे और तीरों को बरसाकर शङ्ख बजाने लगे। चक्र और गदा आदि से शिवगणों को दुःखी कर दिया। वीरभद्र ने यह अवस्था देखकर शिवजी का ध्यान किया और त्रिशूल को चलाया जिससे विष्णुगण सब जलने लगे और गुप्त हो गये। विष्णु ने क्रोधकर अपनी गदा को वीरभद्र के शिरपर मारा और इच्छा की कि वीरभद्र को मार डालूँ। ऐसा विचारकर वीरभद्र ने अपना त्रिशूल विष्णुजी की छाती पर मारा। उस चोट से विष्णुजी पृथ्वी पर गिर पड़े और हाहाकार हुआ परन्तु विष्णुजी फिर क्रोधवान् होकर पृथ्वी से उठे और अपने चक्र को हाथ में लिया। उस समय विष्णुजी का स्वरूप विचित्र हो गया, नेत्र लाल और भयंकर रूप भासता था। ऐसा लगता था कि वे अपने चक्र से अन्तकाल करेंगे। इस प्रकार के तेज को वीरभद्र ने देखा और शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने वीरभद्र को अभय करके शत्रु के सँभाल लेने की सामर्थ्य कृपा की। वीरभद्र बहुत प्रसन्न हो गये। विष्णुजी पर्वत की चोटी के सदृश अचल खड़े हो गये और वीरभद्र ने अपने पवित्र बाणों से विष्णुजी के धन्वा के दो टूक कर डाला। विष्णुजी प्रबोधन मन्त्र को जपकर अचलता से मुक्त हो अपनी सामर्थ्य से खड़े हो गये। उस समय हमने शिवजी की लीला समझकर विष्णुजी से कहा कि हे नाथ! होनी किसी के मेटने से नाश नहीं होती, वह अवश्य होती है। आपने यद्यपि यज्ञ की रक्षा की परन्तु उसकी भाग्य विपरीत है कि दक्ष पर बड़ी आपदा पड़ेगी। अब तुम लड़ाई न जीतोगे परन्तु युद्ध से भागकर चिन्ता करोगे। वीरभद्र अवश्य यज्ञ को नष्ट करेगा। इस कारण केवल दधीचि मुनि का शाप है क्योंकि जो ब्राह्मण का वाक्य सत्य न माने तो सर्व सृष्टि नास्तिक होकर छली हो जाय। जिस समय शिवजी फिर दयालु होंगे, उस समय सब बिगड़ा हुआ कार्य बन जावेगा। तुम्हारी और शिवजी की लीला अपरम्पार है। उसको कोई क्या जाने। वेद कहते हैं कि तुम में और शिवजी में कुछ भेद नहीं है। यह वार्त्ता हमारी सुनकर विष्णुजी अपने लोक को चले गये और हम भी अपने लोक को चले गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमने विचारा कि जब शिवजी कृपादृष्टि करेंगे और हमको प्रतीति थी कि वह सबको प्रसन्न रक्खेंगे।

तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस समय विष्णु अपने लोक को चले गये, उस समय यज्ञ अति शोकवान् होकर और हिरण का स्वरूप धारण कर भाग गया। परन्तु वीरभद्र ने उसको स्थान पर जाते हुये पकड़ कर उसके शरीर से शिर काट डाला और यज्ञकुण्ड में डाल दिया और क्रोधवान् होकर बारम्बार गर्जते हुये यज्ञ के निकट आया। इसी प्रकार शिवगण यज्ञ के निकट आये। भैरव, क्षेत्रपाल और काली आदि ने सबको चोरों के सदृश पकड़ा और गृह गिरा दिया। कोई गण देवतों को पकड़ता था, कोई विष्णु के घण्टे को तोड़ता था, कोई मुनीश्वरों को बाँधता था, कोई क्रोध सहित यज्ञकुण्ड को ठंढा करता था और जल डालता था। उस समय शत्रुओं के संग महायुद्ध होता था और मुद्‌गर की चोट से हाथ पाँवों को काटते थे। फिर सब बासन तोड़ कर नदी में फेंक दिये और देवताओं के शरीर काट डाले और सिंह के सदृश ध्वनि कर अनन्त मनुष्यों को दुःखी किया। किसी ने यज्ञकुण्ड को खोद डाला और सभागृह अन्तःपुर विहारस्थल को जड़ खोद डाला। वीरभद्र ने दक्ष को पकड़ लिया और नन्दी ने भग अर्थात् सूर्य को बन्द किया। मणिमान् ने भृगु को पकड़ा और चण्डी ने पूषा को बाँधा। इसी प्रकार अनेक देवतों आदि को बन्द किया। यद्यपि कुछ देवता गुप्त हो गये थे परन्तु गणों ने ढूँढ़कर सबको अपनी अधीनता में रक्खा और कोई देवता और मुनीश्वर आदि नहीं बचा। सब घायल हो गये थे मणिमान् ने अधिक क्रोध से भृगु की मूँछ उखाड़ डाली। नगर में सबको ऐसा स्वरूप दिखलाते हुये घुमाया कि सब भयभीत हुये और नन्दीश्वर ने महाक्रोध से भृगु के नेत्र निकाल लिये। इस कारण कि उन्होंने दक्ष को बहकाया था और पूषा के दाँत चण्डी ने तोड़ डाले जिनको खोलकर शिवजी को हँसे थे। वीरभद्र ने झटपट बड़े क्रोधवान् होकर दक्ष प्रजापति को पृथ्वी पर दे मारा और उसकी छाती पर चरण रखकर उसके शिर को भिन्न करना चाहा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यद्यपि हथियारों से उसे काटना चाहा परन्तु न उसका शिर कटा और न उसको कोई कष्ट हुआ। उस समय वीरभद्र ने शिवजी का ध्यान किया और आज्ञा पाकर दक्ष के शिर को जोर से मरोरने के पीछे बैठकर तोड़ डाला और अग्नि में डाल कर जला दिया। फिर क्रोध करके उसके शरीर को काट डाला और कश्यप और धर्मराज के हाथ में रख दिया। धृष्ट्रनेमि को महादुःख दिया और अङ्गिरा को सन्तान समेत लात मारी। जिस तरह शान्तु को मारा उसी तरह अन्य मुनीश्वरों को मार डाला और कइयों को घायल और कइयों को अग्नि में जला दिया। अपने नख से कश्यप की स्त्री की नासिका काट डाली जिससे ऐसे देवतों की माता ऐसे अंग से हीन हो गई और जैसा जिसको योग्य था, उसी प्रकार का उसको फल मिला जिसे विस्तार के भय से नहीं कहा। ऐसे श्रीसदाशिवजी जो सबसे उत्तमोत्तम हैं, उनसे शत्रुता करके ऐसा संसार में कौन है जिसको सुख प्राप्त हो। उस समय श्रीसदाशिवजी ने सबको यथायोग्य फल दिया। सब देवता जो बिना शिवजी के अपना भाग लेना चाहते थे, भाग गये। इस प्रकार दक्ष का यज्ञ नाश हो गया। हे नारदजी! निश्चय जानो कि इसी प्रकार शिवजी के शत्रु दुःख पाते हैं और उनका कोई रक्षक नहीं होता। इस सृष्टि में ऐसा कोई नहीं, जो दुःखी न हुआ हो। यद्यपि मनुष्य सहस्र युक्ति करे तो भी बिना पूजन शिवजी के मुक्ति नहीं मिलती। वे सबके स्वामी हैं। उनकी महिमा अति कठिन है। उनको कोई नहीं जानता। जो प्रीति संयुक्त शिव पूजन करते हैं, उनको कोई क्लेश नहीं होता। क्योंकि श्रीसदाशिवजी उनकी सहायता सर्वदा करते हैं। जो शोक और दुःख अपने पाप कर्मों से होता है, उसको भी शिवजी नष्ट कर डालते हैं। जो मनुष्य संसार में शिवजी के प्रतिकूल है, उसको सर्वदा सुख नहीं होता। वह अति दण्ड से नरक में डाला जाता है। जो दुर्गति दक्ष की हुई, वही शिवजी के शत्रुओं की गति होती है। जो कार्य बिना शिवजी के किया जाता है, उसका परिणाम ऐसा ही होता है। वीरभद्र इस प्रकार यज्ञ का नाश करके श्रीसदाशिवजी के सम्मुख गये।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इकतीसवाँ अध्याय ।

सूतजी बोले हे शौनकादिक मुनियो ! ब्रह्माजी की यह कथा सुनकर नारदजी आश्चर्यवान् हुये। उन्होंने ब्रह्माजी से प्रार्थना की कि किस निमित्त देवता आदि विष्णुसहित दक्ष के यज्ञ में बिना शिवजी के गये ? और क्यों विष्णुजी ने शिवगणों के संग प्रीति और मित्रता से युद्ध किया ? विष्णुजी यज्ञ की रक्षा क्यों न कर सके ? इसका कारण प्रसिद्ध कीजिये। ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि पिछले समय में हमारा एक पुत्र छू नाम का था। वह राजा था और दधीचि उसका भ्राता था। वह आनन्द-पूर्वक रहते थे और छू मान के कारण अहंकारी हो गया था। सबसे अपने को उत्तमोत्तम विचारता था। उसने च्यवन के पुत्र के संग बड़ा विवाद किया। छू कहता था कि राजा सब से उत्तम है। और दधीचि का वाक्य था कि सब से उत्तम ब्राह्मण है। उसको सब प्रणाम करते हैं। परन्तु छू नहीं मानता था। उसके प्रमाणों को तर्कणा समेत काटकर कहता था कि देखो आठो दिक्पति जो राजा हैं, वह प्रजापति और ईश्वर कहे जाते हैं। उनका सब मान करते हैं और उन्हीं का सब पूजन करते हैं। इससे योग्य है कि तुम भी हमारी पूजा करो। ऐसा वाक्य छू का सुनकर दधीचि ने बायें हाथ से एक थप्पड़ शिर पर मारा और ब्राह्मण की बड़ाई को प्रसिद्ध कर दिखाया। छू ने वज्र को हाथ में उठाया और दधीचि को मारकर जीत लिया। दधीचि पृथ्वी पर गिर पड़ा और शुक्र को स्मरण किया। शुक्र झपटकर आये और दधीचि का शरीर जो छिन्न-भिन्न धरती पर पड़ा था, इकट्ठा किया और दधीचि का पूर्व का-सा स्वरूप बना दिया। ऐसी आरोग्यता प्राप्त करके दधीचि शुक्र से कहने लगे कि ऐसी अब युक्ति बताइये जिस से हम अटल हो जायँ। शुक्रजी ने कहा कि ऐसा वरदान केवल शिवजी दे सकते हैं जिनका ब्रह्मा, विष्णु और देवता आदि सब ध्यान करते हैं। उन्हीं के पूजन से हमने संजीवनी विद्या प्राप्त की है। उनका नाम मृत्युञ्जय है। देखो, बाणासुर अटल है। शिवजी का कोई सेवक शोकवान् नहीं रहता। वह उन्हीं की भक्ति से नृप, मुनि और सर्व ब्राह्मणों के राजा होकर अटल हैं और अपने कुलसहित शिवपुरी में हैं। दुर्वासा शिवजी की सेवा से तीनों लोक के राजा हुये और तीनों प्रकार का उत्तम चरित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करके धम को ठहराते हैं। विश्वामित्र शिव सेवा से क्षत्रिय होकर ब्राह्मणों के उपनाम से प्रसिद्ध हुये और उन्होंने नवीन सृष्टि उपजा कर भाँति-भाँति की वस्तुएँ उत्पन्न कीं। ब्रह्माजी रात्रि दिन उनके पूजन में दृढ़ रहते हैं। मार्कण्डेय ऋषीश्वर शिवजी के योग करने से कल्प सम्पूर्ण होने पर भी जीते हैं। इन्द्र शिवजी की सेवा से ऐसे हैं कि जिनका शत्रु किसी प्रकार नहीं बच सकता। विष्णुजी शिवपुरी के सेवक हैं और शिवजी भी इनसे दूर नहीं रहते। शक्ति रात-दिन की सेवा से त्रिलोक में अधिकारिणी हैं। तीनों राम अर्थात् श्रीरामचन्द्रजी व श्रीपरशुरामजी और श्रीरामबलभद्रजी उनके पूजन और योग से कैसे उदार हुये हैं। विकट, अङ्गिरस और गौतम भी शिव से अटल हैं। बृहस्पति ने इसी से बड़ी पदवी प्राप्त की है। इन्द्रदेव मुनि शिवजी का नाम बिना इच्छा लेकर शिवगणों में मिल गये हैं, जिनका नाम चण्ड प्रसिद्ध हैं। नन्दी वैश्यवर्ण ने शिवसेवा से कैसी पदवी प्राप्त की और महाकाल व्याधा वेद के विरुद्ध शिवपूजन करके मुक्त हुआ। ब्रह्मा और विष्णुजी के परस्पर वार्त्ता करके अन्त में शिवजी की भक्ति के आदि और अन्त को न पाया। देखो, एक राक्षसी ने धोखे से शिवमन्दिर को धोया और कैलाश में पहुँचकर फिर राजा की लड़की हुई और एक चोर ने शिवालय में शरीर छोड़कर परमपद पाया। इस कारण जो तुम ऐसी इच्छा करते हो तो शिवपूजन करो। दधीचि यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुये और कहा कि आप मुझको मन्त्र दे दीजिये। तब शुक्रजी ने वही संजीवनी जो श्रीसदाशिवजी से पाई थी, दे दी। ब्रह्माजी ने भी शिक्षा की। दधीचि ने मन्त्र जपकर शिवपूजन निश्चिन्त होकर किया। शिवजी प्रसन्न हुये और दधीचि के निकट आकर कहा कि वरदान माँगो। शिवजी ने दधीचि को कृपादृष्टि से देखा। दधीचि ने शिवजी के दर्शन पाकर बड़ी स्तुति की और कहा कि मुझको भक्ति दीजिये। मेरी हड्डियाँ वज्र के सदृश बना दीजिये। कोई मुझको मार न सके। मैं नम्रतापूर्वक किसी से वार्त्ता न करूँ। यह तीनों वरदान मुझको भक्ति से अलग दीजिये। शिवजी हँसे और वरदान देकर अन्तर्धान हो गये। ऐसा वरदान लेकर दधीचि राजा छू के निकट आये और आते हुये छू के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिर में एक लात मारी और कहा कि कौन पड़ा है। छू ने क्रोध में आकर अपना वज्र दधीचि के हृदय पर मारा जो निष्फल हुआ और उसे कुछ भी पीड़ा न हुई। यद्यपि छू ने बड़ा युद्ध किया परन्तु दधीचि को कुछ भी दुःख न व्यापा। तब तो छू ने जाना कि शिवजी ने दधीचि को वरदान दिया है। लज्जित होकर छू ने विष्णु पूजन मन लगाकर किया और विष्णु का जप किया। विष्णुजी अति प्रसन्न हुये और लक्ष्मी संयुक्त गरुड़ पर चढ़े हुये छू को दर्शन दिये। छू ने प्रणाम किया और दोनों हाथ बाँधकर स्तुति की और कहा कि दधीचि एक ब्राह्मण प्रथम हमारा मित्र था परन्तु अब शत्रु हो गया है। वह शिवजी के वरदान से वज्रतनु पाकर मारने के योग्य नहीं रहा। उसने हमारा अनादर करके बायें पैर से मेरे शिर पर लात मारी और अहंकार समेत कहा कि मैं त्रैलोक्य में निर्भय हूँ। उसको जीतने के निमित्त आपका मैंने पूजन किया। इस कारण कि आप अहंकार का नाश करते हैं। इससे मेरी विजय कीजिये। उस समय विष्णु भगवान् शोकवान् हुये और विचारा कि जो मैं इस समय अपने भक्त को वरदान नहीं देता तो वेद की बड़ाई में भेद होगा और जो वरदान देता हूँ तो भी वेद झूठा होता है क्योंकि प्रथम ब्राह्मण तो सनातन से निर्भय है। शिव के भक्त को योग्य है कि यथाशक्ति अपने भक्त का भला करे और दोनों वार्त्ता को रक्खूँ। हमारी कोई युक्ति न चलेगी और शिवकी सृष्टि मुझसे मोहित न होगी। यह विचारकर कहा कि ब्राह्मणों को किसी समय भय नहीं होता। हे राजन्! इस बात को श्रवण कर लीजिये और शिवभक्त को तो कभी किञ्चित भी किसी प्रकार का भय नहीं हो सकता। परन्तु हम तुम्हारे रक्षक होंगे, जिससे दधीचि अपनी हठ को त्याग देगा और उसको शाप दिलवायेंगे।

बत्तीसवाँ अध्याय।

ऐसी वार्त्ता विष्णुजी की सुनकर राजा छू ने अङ्गीकार किया। विष्णुजी ब्राह्मणों का रूप धार छल से दधीचि के निकट गये और प्रणाम करके कहा कि मुझको एक वरदान दीजिये। जब विष्णुजी ने अपने भक्त के हेतु ऐसा मनोरथ वर्णन किया तब दधीचि ने विष्णुजी के मनोरथ को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जानकर निडर उत्तर दिया कि तुम साक्षात् विष्णु भगवान् हो। मेरे संग छलरूपी ब्राह्मण का वेष धारण करके आये हो। हमारे ऊपर शिवजी प्रसन्न हैं इससे हम जान गये हैं कि राजा छू ने तुम्हारा अति पूजन किया है कि मुझको जीतलो। सो तुमको योग्य है कि सत्यस्वरूप दिखावो और अपने घर चले जावो। शिवजी की कृपा से हम त्रिकाल की सब वार्त्ता जान लेते हैं। हम त्रैलोक्य में किसी से भय नहीं करते। यह वचन श्रवण कर विष्णुजी मुसकराये और कहा कि तुम सत्य कहते हो कि शिवजी की रक्षा के कारण हम निर्भय हैं। परन्तु मैं दण्डवत् करके यह प्रार्थना करता हूँ कि मेरा मनोरथ अङ्गीकार करो और छू के वरदान को पूर्ण करो यह सुनकर दधीचि ने विष्णुजी से कहा कि मैं शिवजी की दया से किसी को नहीं डरता। मेरे संग ऐसी चतुराई न करो और अपने घर जाओ। तब विष्णुजी ने कहा कि हे मूर्ख! हमारे उपदेश को नहीं मानता। मुझसे शत्रुता करके कौन सुखी रहेगा। हमने रावण आदि महावीरों का नाश कर दिया। हमारी अवज्ञा न करो नहीं तो चक्र से तुमको मारूँगा। दधीचि ने उत्तर दिया कि हाँ, सत्य है कि आप त्रैलोक्य के जीतने के योग्य हैं और करोड़ों असुरों, दैत्यों और शत्रुओं को आपने मारा परन्तु शिवभक्तों पर आप की कुछ नहीं चलती और तुम्हारा सुदर्शन चक्र निष्फल होता है। देखिये, वही चक्र आपका तारक के कण्ठ में लगकर निष्फल हुआ और रावण के कण्ठ में कुछ भी न कर सका। जब तुमने शिवपूजन किया और उन्होंने प्रसन्न होकर तुमको बाण देकर आज्ञा दी तब तुमने रावण को जीत लिया। तुम भले प्रकार समझो कि विना शिवजी की भक्ति के कोई कार्य लाभदायक नहीं होता। सो जैसी आपकी इच्छा हो, वैसा मेरे साथ कीजिये। मैं शिवजी की कृपा से अभय हूँ। यह सुनकर विष्णुजी ने बड़े क्रोध से अपना चक्र दधीचि पर छोड़ दिया परन्तु वह दधीचि के शरीर में लगकर निष्फल हो गया। विष्णुजी अपनी ऐसी हार देखकर शोकवान् हुये। उस समय दधीचि ने मुसकरा कर कहा कि हे विष्णुजी! आप आश्चर्य न करें। मैं इसका कारण विस्तार से वर्णन करता हूँ कि आपने यह चक्र बड़े यत्नों से प्राप्त किया है। परन्तु

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह मुझको अपना मित्र समझकर नहीं मारता। चाहे कोई हथियार मुझ-पर अपनी शक्तिपूर्वक चलाओ और कुछ भी अपना बल शेष मत रक्खो। विष्णुजी ने ऐसा वचन सुनकर बड़ा भयानक नाद किया जिससे सब सेना विष्णुजी की जिसमें देवता, उपदेवता और वैकुण्ठवासी भी थे, आये और विष्णुजी दधीचि के संग युद्ध करने लगे। देवतों संयुक्त सब प्रकार के हथियार दधीचि पर मारे। अकेले दधीचि पर सबने चढ़ाई की और धर्म के प्रतिकूल एक मनुष्य के संग सबने लड़ना चाहा परन्तु दधीचि निर्भय रहा। एक मुट्ठी कुश को लेकर देवतों की ओर चलाई। वह अति पवित्र त्रिशूल होकर अन्तकाल की ज्योति के सदृश चारों ओर प्रकाशित होकर सबको जलाने चला। चाहा कि विष्णु और देवता आदि को नष्ट कर दें, परन्तु देवतों ने हथियार डाल दिये और भाग चले। उस समय विष्णुजी ने माया से अपने सदृश करोड़ों पार्षद अपने पवित्र शरीर से उत्पन्न किये परन्तु दधीचि ने शिवजी का ध्यान करके सबको जला दिया। अपने गणों का नाश हुये देखकर विष्णु ने एक आश्चर्यवान् चरित्र किया अर्थात् विराट् रूप प्रकट करके अपने शरीर में तीनों लोक और जो कुछ कि उसमें था, वह सब दधीचि को दिखा दिया। परन्तु उस समय भी दधीचि निडर रहा। उसने कहा कि यह आप माया न करें। यह केवल मनकी शक्ति है कुछ ऐश्वरीय शक्ति नहीं है। तुम हमारे शरीर में यह गति देख लो और देखने के पीछे हमसे छल न करो। यह कहकर दधीचि ने शिवजी का ध्यान किया और सर्वजीव अपने शरीर से प्रकटकर दिखाये। ऐसी गति देखकर सब देवता चले गये और विष्णुजी की इच्छा फिर युद्ध करने की हुई। उस समय हमने मना किया कि हे विष्णो! ऐसा हठ क्यों करते हो? योग्य और अयोग्य कार्य नहीं समझते। आपकी चतुराई और शक्ति कहाँ गई जो वेद के विपरीत चलते हो। क्या तुम शिवजी के तेज से अचेत हो, जो त्रैलोक्य को क्षणमात्र में नष्ट करते हैं। जो वेद और धर्मशास्त्र असत्य हो जावें तो तुम निश्शङ्क दधीचि को जीत सकते हो। यह हमारे वचन सुनकर विष्णुजी युद्ध से रहित हुये और दोनों हाथ जोड़कर छू को संग लिये दधीचि की प्रशंसा की और बोले कि हे दधीचि!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छू तुम्हारी शरण में है और उसने हठको छोड़ दिया है। छू ने प्रार्थना की कि हे हमारे मित्र! हमारा अपराध क्षमा करो। मैं मूर्ख अज्ञानी हूँ और तुम शिवजी के बड़े सेवक हो तुम्हारे वचन हर प्रकार श्रेष्ठ हैं। जो शिव-भक्त हैं और द्वैतभाव का विचार त्याग करके स्थिर मन और दृढ़ चित्त होकर उनका ध्यान करते हैं, वे दुःखी नहीं रहते वरन् उनको दुःखदायक विष्णु और देवता भी नहीं हो सकते। आप तो भक्तों के राजा हैं और धन्य भाग आपके हैं कि जिनके ऊपर शिवजी ऐसे दयालु हैं। हमको निश्चय है कि त्रिलोक में शिवसमान अन्य कोई नहीं। यह वचन छू के सुनकर दधीचि ने उस पर बड़ी दया की। शिवभक्तों की यही अवस्था है कि जो कोई उनकी शरण में आता है, उस पर कृपादृष्टि से देखते हैं। फिर दधीचि ने विष्णु और अन्य देवताओं को शाप दिया और कहा कि रुद्र के क्रोध से तुम हारोगे और विष्णु को भी गणसंयुक्त इसका फल मिलेगा। केवल ब्रह्मा बच रहेंगे जिनसे चिन्ता और शोक न रहेगा। यह कहकर फिर राजा छू की ओर प्रीतिसंयुक्त देखा और कहा कि ब्राह्मण इस संसार में पूजने योग्य हैं। इतना देवताओं व राजों और सर्प आदिकों से दधीचि कहकर अपने गृह चले गये। दधीचि को विष्णुजी ने प्रणाम किया और चिन्ता करके अपने घर लौट गये। ब्रह्माजी, विष्णुजी और सनकादिक सब हृदय में दुःखी हुये परन्तु अहंकार से रहित होकर शुद्ध बुद्धि से पहिचाना कि शिव सबसे उत्तम हैं। जिस स्थान में दधीचि से युद्ध हुआ, उस स्थान का नाम हरपुर तीर्थ है। वह थानेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है, जिनकी सेवा से कुछ शोक नहीं रहता। जो मनुष्य थानेश्वर तीर्थ में जाकर शिवपूजन करेगा, वह सुख करेगा। जो पुरुष दधीचि और छू का यह युद्ध पढ़ेगा, उसके सब शोक इस संसार में नष्ट हो जावेंगे और आवागमन से रहित रहेगा। जो पुरुष इसको पढ़कर किसी युद्ध स्थान में जावेगा, उसकी जीत होगी और अच्छी मौत से मरकर शिवलोक में स्थान प्राप्त करेगा।

तेंतीसवाँ अध्याय।

सूतजी बोले कि हे मुनियो! नारदजी ने ब्रह्माजी से कहा कि दक्ष के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यज्ञ का विध्वंसन हमने ऊपर के वर्णन से सुना। अब आप विस्तारपूर्वक कहिये यज्ञ के नष्ट होने के पीछे फिर क्या हुआ? ब्रह्माजी ने शिवजी का ध्यान करके कहा कि जिस समय गणों ने यज्ञ के मनुष्यों की ऐसी दुर्गति करके लज्जित किया, तब सभ्यजन जहाँ हम और विष्णुजी बैठे हुये थे, वहाँ आकर रुदन करने लगे और सब विस्तार वर्णन किया। हम ऐसी अवस्था और दुर्गति देवताओं और मुनियों की देखकर अति शोकवान् हुये और त्राहि-त्राहि किया। उसके पीछे कहने लगे कि त्राहि! तुमने शिवजी को क्रोधित किया। तुम सबने देवताओं के सदृश श्रीशिवजी को भी जाना और शिवजी के पापी हुये। अब तुम सब अपने पाप शिवजी से क्षमा कराओ। छल को त्याग सचेत होकर शिवजी के चरणों पर गिरकर सेवा करो। ऐसा कौन है जो शिवजी के क्रोध को सह सके। वह तुरन्त प्रसन्न हो जाते हैं। उनकी सेवा करो। शिवजी की रक्षा में जाओ तो कुशल है। तुम सब बिना शिवजी के अपना भाग यज्ञ में लेना चाहते थे सो तुमने फल पाया। जो शिवजी के शत्रु सुख चाहते हैं, उनका अन्त ऐसा ही है। जो सर्वसृष्टि को क्षणमात्र में नष्ट करना चाहते हैं, उनसे शत्रुता करने में किसको सुख प्राप्त हो सकता है। हम भी दधीचि के शाप के वश भूलकर यज्ञ में गये। इसमें देवता आदिक का कुछ दोष नहीं। शिवजी की ऐसी ही माया है। उनकी माया कोई नहीं जान सकता है। उनकी माया के अधीन संसार भर है। उनको कोई जीत नहीं सकता तुम चिन्ता न करो। शिवजी शीघ्र ही तुम्हें क्षमा करेंगे। यह भले प्रकार जानो कि जो शिवजी यज्ञ में ऐसा न करते तो मनुष्य वेद की रीति को त्याग कर नास्तिक हो जाते। यह कहकर हम, विष्णुजी और सर्व देवता कैलाश पर्वत पर पहुँचे। उसकी सुन्दरता हम कहाँ तक वर्णन करें। सबसे उत्तम यह कि उस स्थान में किसी पुरुष को चिन्ता और शोक नहीं। फुलवारी ऐसी जिसमें संसार के सुगन्धित पुष्प, फल व भाँति-भाँति के पक्षी, सिंह, चीता, आदि और चौपाये थे। उसके आगे कुबेर की अलकापुरी को हम सबने देखा। फिर हमने पवित्र बड़ का वृक्ष देखा जिसके नीचे शिवजी बैठे थे। धन्य भाग उनके जो शिवजी के दर्शन करें। उनका ऐसा विचित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन्दर स्वरूप था जिसका वर्णन करना महा कठिन है। शिर पर जटा और भस्म धारण किये श्यामघन के सदृश शरीर, माथे पर चन्द्रमा और कुश के आसन पर वीर आसन से बैठे हुये थे। ऐसा स्वरूप देखकर सबको भक्ति अधिक हुई और हमने विष्णुजी और दधिगुप्त और मुनि आदिकों ने हाथ जोड़कर अति महिमा और स्तुति की।

चौंतीसवाँ अध्याय।

सब देवता बोले कि जयनाथ शंकर दीनबन्धु सबसे उत्तम, अपने रक्षा में आये हुये मनुष्यों के रक्षक, परब्रह्म, निर्गुण, अलख तुम्हारी लीला कोई नहीं जानता। जो आपकी इच्छा होती है, वही होता है। हमारा संकट काटो। हम सब आपकी इच्छा में आये हैं। दक्षप्रजापति ने मूर्खता और अज्ञानता से आपकी बड़ाई न विचारकर ऐसा कहा और नास्तिक होकर आपको नहीं बुलाया। आपके भक्तों का मान न किया जो शाप देकर अपने घर चले गये। उसने आदिशक्ति का भी मान न किया। उनको जलने से भी मना न किया। देवताओं ने भी उन्हें न रोका। इसका फल सब पाचुके हैं सो आपको कुछ नहीं कह सकते। परन्तु देवताओं का दोष है और हम सबने आपको विस्मरण कर दिया। सो ऐसे पाप हमारे आप क्षमा करके कृपादृष्टि से एक बेर देख लीजिये। जो आप ऐसा दण्ड न देते तो धर्म नष्ट ही हो जाता, संसार भर छल करता और सब लोग आपकी अवज्ञा करते। वेद का मान कम हो जाता और दक्ष अहंकार के मद में लीन हो जाता। हम सब मानते हैं कि आप से कोई दूसरा श्रेष्ठ नहीं है। आप ही धर्मिष्ठ, धर्मदायक, धर्मरूप और धर्म के स्थिर करनेवाले हैं। तिस पीछे हमने और विष्णुजी ने कहा कि आपकी माया सर्व सृष्टि को अचेत किये हुये हैं। आप परब्रह्म निर्गुण हैं और तीनों रूप से संसार को उत्पन्न करते हैं। हम सब आपकी शरण हैं, कृपा कीजिये। इसी प्रकार बड़ी प्रशंसा करके प्रार्थना की कि दक्ष को जीवदान दीजिये और भाग को नेत्र और भृगु के क्लेश का नाश कीजिये। पूषा अपने दाँतों को पावे और सब देवतों के घायल शरीर अच्छे हो जावें। यह सब बातें आप के यज्ञशाला में चलने से पूरी होंगी। आगे बिना आपके भाग के कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यज्ञ न होगा। ऐसी स्तुति श्रवण कर श्रीसदाशिवजी अति प्रसन्न हुये। वह मुसकराकर बोले कि हम कुछ भी क्रोध नहीं करते और कल्पवृक्ष के सदृश सबके सुखदायक हैं। निश्चय जानो कि जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल पाता है। यह सब माया में फँसकर सार वस्तु पर दृष्टि नहीं रखते। दक्ष ने जैसा किया वैसा पाया। अब दक्ष बकरे का मुख पाकर जी जावे और भाग मित्र के नेत्रों से देखे। यजमान दाँतों से खावे। देवतों के सब शरीर अच्छे हो जावें। यह कहकर शिवजी ने मौन साधा। सब देवता प्रसन्न हुये और विष्णुजी उनकी सेवा करने लगे। जय-जय का शब्द ऊँची वाणी से कहकर बोले कि हे शिवजी ! आप भी यज्ञ में चलें क्योंकि बिना आपके यज्ञ पूर्ण न होगा। कृपा करके अपना भाग अङ्गीकार कीजिये। यह सुनकर हम सब चुप हुये और शिवजी ने इस वचन को अङ्गीकार किया और चले। उस समय सबको बड़ा सुख हुआ। वे इस बात से बहुत प्रसन्न थे कि हम यज्ञ की पूर्णता को देखेंगे। कोई तो चँवर डुलाता था, कोई छत्र लिये हुये शिवजी की महिमा बखानता था और कोई शिवजी के आगे और कोई पीछे जाता था।

पैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! इस प्रकार हम विष्णुजी और देवता आदि सब शिवजी के संग गये और दक्ष के यज्ञ में विराजमान हुये। दक्ष का घर भर अति प्रसन्न हुआ और शिवजी की आज्ञानुसार सब कुछ किया गया। जब दक्ष के शरीर में बकरे का शिर लगा दिया उस समय वह उठ खड़ा हुआ मानो निद्रा में था। वह शिवजी को देखकर अति प्रसन्न मुख हो गया और उसे बहुत प्रेम उपजा। बकरे की जिह्वा से उसने शिव की स्तुति की। यह स्तुति प्रेम के कारण उत्तम भासी। दक्ष ने कहा कि हे शिवजी ! आपका आदि और अन्त नहीं जाना जाता। आप को सब पूजते हैं। आपने जो मुझको दण्ड देकर ब्रह्मज्ञान दिया सो यह आपकी बड़ी कृपा है। मैंने अज्ञानता और मूर्खता से आपको जो सबके स्वामी हो नहीं पहिंचाना आपकी निन्दा की। मेरे पाप क्षमा करो। अब मेरी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इच्छा है कि दया करके मुझको भक्ति दीजिये। विष्णुजी ने कहा कि आपका यश अमृतसागर के तुल्य शुद्ध और शीतल है। ऐसे समुद्र में हमारा मन जो हाथी के तुल्य है और चिन्ता से जला हुआ है, पैठकर बड़े सुख को प्राप्त होता है, और उसके अन्दर से नहीं निकलता। इस कारण आप दया करके हमारे पापों को क्षमा कीजिये। ब्रह्माजी ने प्रार्थना की कि सर्व सृष्टि हमको बुरा कहती है परन्तु हम इस बात को आपके तप के कारण विचार नहीं करते क्योंकि आपके पूजन से सब बुरे कार्य नष्ट हो जाते हैं। ऋत्विज ने कहा हे शिव! हमने आपको न पहिचाना और अपने कर्मों से शोक और चिन्ता आदि में पड़े रहे। आप तो तीनों लोक में उदार हैं जिनको हम प्रणाम करते हैं आप वही हो, आपका प्रकाश अति-सुन्दर है। इसी प्रकार इन्द्र, वरुण, कुबेर, योगीश्वर, ब्रह्म, अग्नि, देवता आदि; गन्धर्व, अप्सरा, ब्राह्मण, भृगु, यजमान, लोकपाल और विद्याधर सबों ने अलग-अलग स्तुति कहकर प्रार्थना की कि हमारे पाप क्षमा कीजिये। आप सबके स्वामी, सृष्टि के उपजाने वाले, भर्ता, विश्वम्भर और नाश करनेवाले हैं। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, यज्ञ और भले कर्म के रूप तुम्हीं हो। अब दया करो और हमारे दोषों को न विचारकर अपनी ओर देखो।

छत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! तुम सत्य मानो कि बिना शिवजी के चरणों के पूजन से दुःख दूर नहीं होता चाहे जन्म भर भटकता फिरे। जो बुद्धि मनुष्य को पीछे होती है, वह बुद्धि मनुष्य को प्रथम हो तो वह कुछ भी कष्ट न भोगे। अब हम अन्य लीला शिवजी की कहते हैं, उसको श्रवण करो। अर्थात् श्रीसदाशिवजी सबकी जिह्वा से स्तुति और नम्रता के वचन सुनकर अति प्रसन्न हुये और मुसकराकर बोले कि जो ऐसे गलबल के उत्तम वचन दक्ष के सदृश जो हमारे सम्मुख करेगा, उसको सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होगी। हम, ब्रह्मा और विष्णु संसार के मुक्ति-भुक्ति के देने वाले परब्रह्म और ईश्वर हैं। हम सृष्टि को उत्पन्न करके पालन करते हैं और फिर अपनी इच्छा से नष्ट कर देते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं और तीनों गुणों से परे हैं। केवल ब्रह्म सच्चिदानन्दरूप हम ही हैं और ब्रह्मा, विष्णु और सर्वजीव हमारा ही स्वरूप हैं, यह वेद कहता है। परन्तु अज्ञानी इसमें भेद समझते हैं और चिन्ता पाते हैं। जिस प्रकार कि बुद्धिमान् शिर, हाथ और मुख शरीर के अङ्गों को देह से अलग नहीं गिनते, उसी प्रकार जो पुरुष हमको अलग नहीं जानते, उनको मैं मिलता हूँ और जो मनुष्य कि तीनों देवताओं को अन्य जीवों संयुक्त समान गिनता हैं और किंचिन्मात्र उसमें भेद नहीं विचारता, वह शान्तिपद प्राप्त करके बड़ी पदवी पाता है। जो कोई तीनों में भेद गिनता है, वह सहस्र युग पर्यन्त शोकवान् रहता है। इस से उचित है कि सुबुद्धि से सब देवताओं और मुनीश्वरों के सेवक रहो और विचारो कि बिना हमारे पूजन के ब्रह्मा तथा विष्णु का पूजन कुछ नहीं। जो विष्णु के विपरीत हैं, उनसे मैं प्रसन्न नहीं। इसी प्रकार ऐसे उत्तम उपदेश शिवजी ने सबको दिये और फिर भृगु की ओर दृष्टि की और कहा कि जो वरदान तुम माँगते हो, वही हो। संसार में जो कोई विष्णु का या हमारा शत्रु हम दोनों को अलग समझेगा और विष्णु का भक्त होकर हमारी निन्दा करेगा अथवा हमारा सेवक होकर विष्णुजी की बुराई बखानेगा, वह सर्वशाप का अधिकारी होगा और वह मनुष्य तत्त्वज्ञान से हीन है। इसी प्रकार जब शिवजी ने यह वार्त्ता की कि शापोद्धार हो, तब सब सभा के मनुष्य अति प्रसन्न हुये। दक्ष कुलसहित सुखी और प्रसन्न होकर अचेत हो गया। जय-जय का शब्द हर ओर से सुनाई दिया। फिर सब पुरुषों ने शिवस्तुति परस्पर पढ़ी। ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिसने जिस प्रकार की स्तुति की और अपनी इच्छा उस स्तुति में कही, वह श्रीशिवजी ने सबकी पूर्ण की। प्रसिद्ध है कि शिवजी की प्रसन्नता से सुखों के ढेर मिलते हैं। इस वचन को तुम भले प्रकार विचारो कि जो पुरुष वेद और धर्मशास्त्र को नित्य पढ़कर उसी का बोध करते हैं परन्तु शिवजी के विपरीत हैं, उनको भी इस संसार में सुख नहीं। उसको मुक्ति भी प्राप्त नहीं होती। यह वेद और पुराण का वाक्य है और समाचार सुनो कि शिवजी ने दक्ष से कहा कि तुम यज्ञ का कार्य करो, हम प्रसन्न हैं। यह श्रवणकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब प्रसन्न हुये और एक बड़ी सभा नवीन बनाई गई। सब स्त्रियाँ सुख के राग गीत गाने लगीं और शिवजी की आज्ञा से मुनीश्वरों ने युक्ति से दक्ष का यज्ञ कराया। दक्ष ने भी सर्व देवताओं को यज्ञ भाग दिया। सब यज्ञ का भाग श्रीसदाशिवजी को दे दिया। इस कारण कि उसने सबसे उत्तम और बड़ा शिवजी को जान लिया और यथायोग्य सर्वब्राह्मणों को दान दिया। दक्ष ने यज्ञ के सम्पूर्ण होने पर स्त्रियों सहित स्नान किया। शिवजी ने यज्ञ को पूर्ण करवाकर दक्ष को सुख दिया। इसी प्रकार शिवजी ने तो यज्ञ को पूर्ण करा दिया और सर्व देवता और मुनीश्वर श्रीसदाशिवजी की स्तुति करते हुये अपने-अपने घरों को सिधारे। हम और विष्णुजी अपने-अपने नगरों में चले गये, परन्तु शिवजी वहाँ ही विराजमान रहे। इस कारण कि दक्ष ने उनको छुट्टी न दी। कहा कि आप थोड़े समय के निमित्त यहाँ विराजमान रहिये कि हम कुल सहित आपकी सेवा कर लें। सो शिवजी ने दक्ष को अपना भक्त कर लिया और थोड़े समय के पीछे वहाँ से अपने गणों संयुक्त कैलाश पर्वत पर गये। यद्यपि शिवजी प्रसन्न होकर आये परन्तु सती के वियोग का बड़ा दुःख रहा और बड़े-बड़े चरित्र और कथा वर्णन करके रात्रि-दिन बिताने लगे। उन्होंने संसारी जीवों के समान अपना चरित्र दिखाया। इस कारण कि जो अनादि और अनन्त हैं उनको दुःख क्या और किस प्रकार हो सकता है? पर हे नारद! शिवजी की ऐसी माया है जो हमको और विष्णुजी को अचेत कर देती है। उसका भेद हम नहीं जानते। हजारों युक्ति करके हम उनकी महिमा को न जान सके। वे परब्रह्म हैं और माया उनकी चेली है। वे सबके स्वामी हैं और सबके बड़े हैं। वे निर्गुण, गुप्त, प्रकट और निरीह हैं। उनकी लीला को कोई जान नहीं सकता। शेष कहते दीन हो गया, वेद अपने आप कहता कि मैं नहीं जानता और सरस्वती सब कुछ वर्णन करके फिर भी हार मान कर अपनी अज्ञानता को मानती है। विष्णु प्रति दिवस सेवा करके अपने मन में भय किया करते हैं। उनके बराबर कौन दीन प्रतिपालक है। वह हर प्रकार भक्तों के मनोरथ पूरे करते हैं और अपने भक्तों के लिये नाना प्रकार के दुःख उठाया करते हैं। उन्हीं की सहायता से हम सृष्टि उप-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जाते, विष्णु भी उन्हीं की आज्ञा से सर्वसृष्टि की पालना करते, सो वही शिव निर्गुण स्वरूप हैं।

सैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हमने दक्ष यज्ञ विध्वंसन, शिवचरित्र और तत्त्वज्ञान जिससे सबका अहंकार नाश होता है, तुमको सुना दिया। अब और जो-जो इच्छा हो वह पूछिये! यह सुन नारद ने हाथ जोड़ नम्रतापूर्वक स्तुतिकर विधाता से पूछा कि हे पिता! यह बताइये कि फिर क्या हुआ? ब्रह्मा ने कहा कि सती ने अपना शरीर वहाँ जला दिया तो उससे एक प्रकाशमान ज्योति उठी और पश्चिम की ओर एक देश में गिर पड़ी। उसका नाम ज्वालाभवानी हुआ जो सबको प्रसन्न करनेवाली और धर्म की लक्षण है। उसकी कला प्रत्यक्ष है और उसकी सेवा तथा पूजा से सब कुछ मिलता है। उसको ज्वालामुखी कहते हैं। पर कल्पभेद के अनुसार सती के और भाग भी पृथ्वी पर प्रकट हुये। नारद ने कहा कि अब कल्पभेद से सती के सब चरित्र वर्णन करो। उनसे और कौन-कौन देवी प्रकट हुई? ब्रह्मा बोले जब सतीजी दक्ष के यज्ञ में गईं और शिवशंकर के भाग को न देखकर अपना अपमान समझा तो क्रोधित हुईं और अपनी माता के पास जाकर बहुत समझा कर कहा कि इन सबों से बहुत निन्द्य कर्म दुःख देनेवाला हुआ है। हम मर जावेंगी और मुनीश्वर दुःख में पड़ेंगे। हे माता! शिव के गण बड़ा उपद्रव मचावेंगे और कोई दण्ड पाये बिन न रहेगा। हमारे वियोग में शिवजी बड़े खेद से लोक में भ्रमते रहेंगे और फिर हमको पाकर विहार करेंगे। ऐसी भविष्य की बातें सती ने कहकर चाहा कि अब हम चलें, पर उनकी माता और बहिनों ने रोक लिया। सती प्रसन्न होकर योग धारणकर अन्तर्धान हुईं और तुरन्त गङ्गा किनारे जाकर स्नानकर अपने कपड़े पहिने और गन्धमादन पर्वत में शिवपूजा की। फिर श्वास ब्रह्माण्ड पर चढ़ाकर शरीर छोड़ अपने लोक को गईं। उस समय हाहाकार मचा और एक ऐसा बड़ा शब्द हुआ कि जिससे असंख्य दैत्यों के घर नष्ट हो गये। देवता आदि अति दुःखी हुये। सती के साथ जो गये थे, वह भी अति दुःखी हुये। कुछ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो आत्मघात कर मर गये और कुछ दूसरी युक्ति करने लगे। पर भृगु ने यज्ञ की रक्षाकर गणोंकी कुछ न चलने दी। तब सब गणों ने जाकर शिव जी को पुकारा। शिव ने क्रोधित हो अपनी जटा उखाड़कर उससे गण उपजाये और उन्होंने असंख्य सेना समेत दक्ष के यज्ञ में धावा किया तथा यज्ञको विध्वंस किया और भी बहुत उपद्रव किया और सबको पूरा दण्ड देकर शिवजी की सेवा में पहुँचे, तब शिव का क्रोध कुछ कम हुआ। पर सती का वियोग बहुत असह्य हुआ। इसी दुःख में शिव ने अपने गणोंको साथ लेकर गङ्गा के तट में जहाँ सती ने अपना शरीर छोड़ा था, जाकर सती के शरीर को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखा और मूर्च्छित होकर मोहित हो गये। थोड़ी देर में उनको चेत हुआ और फिर वही सती का शरीर उनको दृष्टि आया। जिस तरह कमलपुष्प उत्तम रीति से खिला हो ऐसा स्वरूप देखकर शिव फिर मूर्च्छागत हुये। वे परब्रह्म, निर्गुण, माया से परे और अविनाशीरूप हैं, पर संसार की लीला सबको दिखाकर ऐसे विह्वल हुये कि मनुष्यों को विदित हो कि स्त्री दुःख कैसा बड़ा है। उन्होंने यह बात प्रकट दिखाई कि मोह सबसे बड़ा है। इतना कहकर ब्रह्मा बोले कि हे नारद! कुछ सन्देह न करना, यह शिवकी विचित्र लीला है। थोड़ी देर पीछे जब शिव को संज्ञा हुई तो अपने को बड़ा अभागी देख बेवश चिल्लाकर रोने-पीटने लगे और सन्तोष को धारण न करके अधीरता और निर्बलता प्रकट की। वह सती को देख अन्य जीवों के समान कहने लगे कि हे प्राणप्यारी! उठो, मैं तुम्हारे बिना बहुत बेचैन हूँ। वह तुम्हारी तिरछी चितवन नहीं देखता, उठो-उठो हमसे क्यों नहीं बोलती हो? यह कह सब शरीर को अपने हाथों से छुआ, हृदयसे लगाया, बारम्बार उसको कण्ठ लगाकर चूमा और फिर-फिर उस सती के शव को लिपट-लिपट कर अतिप्रेम के सागर में मग्न हो, मूर्च्छागत हुये। कुछ दिनों के पीछे शिवजी सचेत हो सती के शरीर को अपने शरीर से लिपटाये चारों ओर दौड़ते फिरे और बड़े दुःख उठाये। उन्होंने सब देश, पर्वत, द्वीप, समुद्र, वन, लोकालोक और सब पृथ्वी भर में भ्रमण किया और सप्तशृङ्ग पर्वत भरतखण्ड में फिरकर देवनदी के तटपर आये। वहाँ बरगद का बहुत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अच्छा वृक्ष था। वहाँ पर कोई न था तो बहुत ऊँचे स्वर से धाय-धाय रोने लगे। साध्वी, सती आदि बहुत नाम ले-लेकर शिवजी पुकारने लगे। उनकी आँखों से अश्रु की धारा बह निकली। जहाँ पर कि यह शिव के अश्रु गिरे थे, वहाँ नेत्रसरोवर नाम तीर्थ हो गया, जिसमें नहाकर मनुष्य अपना मनोरथ पाते हैं। वह तपस्वियों के लिये तपोभूमि है। उसके स्नान से कोई पाप नहीं रहता। उसकी लम्बाई दो योजन भर है। फिर शिव आगे चले और जहाँ पर कि सती का कोई अङ्ग शरीर से जुदा होकर गिरा, वही स्थान सिद्ध पीठ हो गया जिसकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं। उस स्थान पर देवी सब कलाओं से रहकर अपने भक्तों को सब कुछ कृपा करती हैं। ऐसी लीला करके शिव एक स्थान पर बैठ गये। जो शेष अङ्ग रह गये थे, उसका क्रियाकर्म किया। सब हड्डियाँ इकट्ठी कर उनकी एक माला बनाई और अपने गले में धारण की। चिता की भस्म अपने शरीर में लगाकर उसी जगह बैठ रहे। सती को प्राणेश्वरी सती, और भवानी आदि नाम से कह कर स्मरण किया और रो-रोकर विह्वल हो गये। फिर सचेत हो बहुत रोये और ऐसी लीला को सब सृष्टि में कोई न देख पाया। शिव ने परब्रह्म होकर ऐसी लीला की। इस लीला के पढ़ने-सुनने से बड़ी भक्ति प्राप्त होती है।

अड़तीसवाँ अध्याय।

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे शौनकादिक मुनियो ! जब नारद ने यह सिद्धपीठ का चरित्र सुना तो ब्रह्मा से पूछा कि हे पिता ! सती के अङ्गों से जहाँ-जहाँ जो पीठ प्रकट हुये, उनको कहिये। ब्रह्मा बोले कि हे पुत्र ! अब हम ब्योरेवार कहते हैं, मन लगाकर सुनो। देवपुर जो अतिरमणीक पर्वत है, वहाँ सती के दोनों चरण गिरे, जिससे महाभागा देवी प्रकट हुई। वहाँ शिवलिङ्ग भी है और वह स्थान सिद्धपीठ है। उसके प्रकट होते ही हम, विष्णु और सागरमुनि ने उसकी पूजा की और उसे प्रसन्न कर अपना मनोरथ पाया। औटयानि देश में सती के दोनों नितम्बों से कात्यायनी नामक सिद्धपीठ स्थित हुई। वहाँ भी शिवलिङ्ग है और वह देवी अपनी महिमा प्रकट कर सर्वसृष्टि, हम और विष्णु से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पूजी गईं। कामशैल पर्वत पर योनि के गिरने से कामाक्षानाम देवी प्रकटीं जिनको कामरूपा कहते हैं। वह भी हम सबके हाथों से पूजी गईं जिससे हम सब ने सर्व-मनोरथ पाये। सती की अग्नि से पूर्ण शैलपूर्णेश्वरी भवानी शिवलिंग सहित स्थित हुईं। जालंधर पहाड़ पर सती के कुच गिर पड़े जिससे चण्डीनाम देवी सिद्धपीठ प्रकटीं। कामरूप से पूर्व ललित कान्ता नाम सिद्धपीठ प्रकट हुई और गङ्गा के तटपर महामाया का एक अङ्ग कटकर गिरा जिससे वागीश्वरी देवी सुशोभित हुईं। इसी प्रकार सती के प्रत्यङ्ग से बहुत से सिद्धपीठ प्रकट हुये। वहाँ सब जगह शिव के लिङ्ग स्थापित हुये। हम, विष्णु और सब देवतादिकों ने उनकी पूजाकर प्रणाम किया। जो कोई उनकी पूजा करता है, उसके निस्सन्देह सब मनोरथ पूरे होते हैं। उन्होंने हर प्रकार से अपने भक्तों को मुक्ति दी है। शिव ने मुख्य मनुष्यों के उपकार के लिये यह लीला की। वह दोनों, शिव और भवानी, निस्सन्देह सृष्टि के माता-पिता हैं। उनकी बराबरी लोक में कोई स्त्री-पुरुष नहीं कर सकता। वे दोनों लोक-परलोक का सुख देते हैं। वह तीनों लोक में सबसे बड़े हैं। प्रकृति का मूल जगदम्बा सती से है। विष्णु और हम सब उसके सेवक हैं। शिवब्रह्म निर्गुण सगुण और अप्रमेय है। इन दोनों की सेवा से नर भवसागर पार हो जाता है। फिर सती मैनाक के यहाँ उपजीं और वहाँ बड़ी लीला की। सुगमता से उस पर्वत के कुल को तारा और माता-पिता को चरित्र करके बड़ा आनन्द दिया। फिर माता-पिता की आज्ञा लेकर तपकर के शिवजी को ब्याही गईं। शिवजी की अर्धांगी हो देवतों के दुःख छुड़ा दिये। फिर शिवका तप कर अपने शरीर का गोर रङ्ग किया। फिर दोनों शिवशक्ति में मिलकर देवताओं के बड़े-बड़े काम निकाले। इस बात को सब जानते हैं कि प्रकृति और पुरुष ब्रह्मस्वरूप हैं। हे नारद! इस प्रकार शिवशक्ति अपने भक्तों की भक्ति देख प्रसन्नतापूर्वक दया करते हैं। सर्वलोक शिवशक्ति रूप है। इससे कोई भी बाहर नहीं है। शिव सृष्टि के पिता और शिवरानी माता हैं। उनसे उत्तम और कोई बुद्धि नहीं है। इस बात के जानने से मुक्ति पदवी प्राप्त होती है। यही बुद्धि जब भाग्य से उदय होती है तो जीव संसार-बन्धन से मुक्त होकर परमपद

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पाता है। वे मनुष्य लोक में धन्य हैं जो शिव और शिवरानी के प्रेम में मग्न हो गये हैं और बहुधा गौरीशंकर के चरणों का ध्यान करके पार लग गये हैं। उन्हीं की शक्ति से मैं सृष्टि उपजाता हूँ और उन्हीं की कृपा से विष्णु संसार को पालते हैं। जिनको हम, विष्णु और सनकादिक भी नहीं जानते। केवल अपनी बुद्धि के अनुसार उनका वर्णन करते हैं। वही शिवशक्ति प्रकट रूप धरकर अपने भक्तों की भलाई के लिये नाना प्रकार की लीला करते हैं। हमने अपनी बुद्धि के अनुसार शिव-सती का चरित्र कहा है और इसी प्रकार सब अपनी बुद्धि के अनुकूल शिव-सती का वर्णन करते हैं और अन्त को दीन होकर पार नहीं पाते। यह शिव और सती का चरित्र अति पवित्रता और आनन्द देनेवाला है। इसके सुनने से कीर्ति और आयु बढ़ने के साथ शत्रु भी अपने आधीन रहता है। बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते और शिव अतिप्रसन्न होते हैं। यह शिव-सती का जो चरित्र पढ़े अथवा औरों को सुनावे, वह अपने कुल समेत मुक्त होकर औरों को मोक्ष करे बहुत-सी आपदाओं से छूटकर सदा प्रसन्न बना रहे और इस संसार में नाना प्रकार के भोग भोगकर अन्त में शिवलोक का वास पावे। यह चरित्र तो हम कह चुके, अब जो और कुछ सुना चाहते हो, वह वर्णन करो।

इति श्रीशिवपुराणे शिवविलासे उत्तरखण्डे ब्रह्मानारदसंवादे
द्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥ २ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:o:—

तृतीय खण्ड

पहिला अध्याय।

सूतजी बोले कि हे मुनियो ! नारद ने इतना ब्रह्माजी से सुन कर कहा कि हे ब्रह्मन् ! बतलाइये कि फिर सती ने क्योंकर अवतार लिया और उनका विवाह शिव से क्योंकर हुआ ? फिर उन्होंने अर्धाङ्गी नाम क्योंकर पाया ? इसके सिवाय और सब लीला मुझसे कहिये क्योंकि मुझे शिवचरित्र सुनने से तृप्ति नहीं होती वरन् इच्छा बढ़ती जाती है। ब्रह्मा ने अति प्रसन्न होकर कहा कि सती ने अपने जलने पर शिव से यह वरदान माँगा था कि हमको सदा आपके चरणों की भक्ति बनी रहे और आपकी प्रीति कभी कम न हो, मैं केवल यही बात चाहती हूँ। यह कह कर सती ने अपना शरीर जला दिया और फिर मैना के उदर से अवतार लिया। नारदजी बोले कि मैं मैना को नहीं जानता। वह किसकी लड़की थी और किसके साथ ब्याही गई, विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्मा बोले कि उत्तर की ओर हिमालय पर्वत सब पर्वतों का राजा है। वह बड़ा रमणीक पहाड़ है और एक देश है जहाँ उसका राजा रहा करता था। उसके वृक्षों के पत्तों के सामने कस्तूरी तुच्छ है। उसकी स्तुति में जिह्वा लाल है। वहाँ बिना तैल दीपक जलाते और वन के मनुष्य दारु-लकड़ी अपने घरों में जला कर प्रकाश करते। वहाँ की बरफ शिला के समान कठोर थी जिसके ऊपर से लोग मार्ग चलते और उँगलियाँ जड़वत् हो जाती थीं। जो कोई छोटा मनुष्य भी वहाँ पहुँचे तो वहाँ के बड़े-बड़े पदवाले उसका आदर और सम्मान करते थे। उस पहाड़ पर ऐसी गायें थीं कि लोग उनकी पूँछ का मोरछल बनाते और वह असंख्य वन में फिरतीं और उस पर्वत के राजा हर एक मनोरथी का उचित रीति पर मनोरथ पूर्ण करते। वहाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की स्त्रियाँ निर्भय होकर चारों ओर भ्रमण करतीं। वहाँ सैकड़ों प्रकार के सुगन्धित पुष्प फूले हुये थे। अब हम उस पर्वत की श्रेष्ठता को वर्णन करते हैं जिस तरह उस पर्वत ने हमसे बड़ाई प्राप्त की। पहिले हमने विचारा कि सब पहाड़ों पर किसको राजा करना चाहिये। सो हिमाचल पर्वत में सर्व राजलक्षण देखकर हमने उसको राजा बनाया। वह पर्वतों का राजा विष्णु के अंश से उपजा है। उसका शरीर देवताओं के समान और उसका रूप सत्यपुरुषों के समान बहुत ऊँचा और हृदय अति दृढ़ और पुष्ट मानो धर्म ने शरीर धारण किया है। अति तेजवान् पापों से रहित महा बुद्धिमान् कि उसके समान वही है औरों को दिखाई नहीं देता। न उनके पास कोई पहुँच सकता है कि जिस तरह समुद्र में रत्न हो और किसी को न मिले। वह पर्वतों का राजा हुआ और नीतिपूर्वक पापरहित राज्य करके प्रजा की पालना करने लगा। उसकी प्रजा भी शुद्ध आचरण की नियमव्रत धारण किये हुए है। अपने-अपने मार्गों में दृढ़ और जो बल अर्थात् कर कि प्रजा से राजा ने लिया, वह उन्हीं की भलाई के लिये था। जैसा कि सूर्य पृथ्वी से रस लेता है और वर्षा करके उन्हीं को देता है। हिमाचल सम्पूर्ण राजाओं के मुख्य लक्षण धारण किये हुये था और सम्पूर्ण शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् दूरदर्शी और भेद के छिपाने में ऐसा निपुण था कि जिसकी सम्मति से जो बात करनी हो, उसको कोई न जानता था। अपने शरीर की चिकित्सा और उपाय बिना पालन करता। किसी कार्य में जल्दी न करता और द्रव्यप्राप्ति औरों के आनन्द के लिये उचित समझता। वह चुप इसलिये हो गया कि मौन से उत्तम बुद्धि प्राप्त होती है और सामर्थ्यवान् होने पर दीनता स्वीकार की और त्याग व निर्लोभ से कीर्ति का प्रकाश बढ़ा। गर्व और अहंकार से कुछ प्रयोजन न रक्खा। कामजाल से दूर रहा। विद्याग्राहक और धर्म का इच्छुक था। यद्यपि वह युवा था पर बुढ़ापा लेकर प्रजा को पिता के समान उदारतापूर्वक पालन करता। जो दण्डयोग्य थे, उनको दण्ड दिया कि धर्म स्थिर रहे। वह हर विद्या और गुण का जानने-वाला था। उसके राज्य में चोर चोरी छोड़ वेद की आज्ञा के अनु-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सार चलने लगे। उसके बराबर किसी ने लोक में यश न पाया। जो उसके समान कोई धर्म के काम करता, वह बड़ा नीतिमान था। उसके मित्र उससे प्रीति रखते थे। उसके राज्य में किसी को कष्ट न था। ऐसे राजा के लिये देवताओं ने अपने मनोरथ के पूर्ण होने के लिये पितरों से कहा कि अपनी बड़ी लड़की, जिसका मैना नाम है, उसे हिमाचल से विवाह दो। इससे देवताओं के बड़े-बड़े काम निकलेंगे। सबके दुःख दूर हो जावेंगे। पितरों ने देवताओं की विनय को इस कारण माना कि उन्होंने अपनी लड़कियों के शाप को स्मरण किया और शुभलग्न साथ कर मैना हिमाचल के साथ ब्याह दिया। जो जो रीति भाँति व आनन्दमङ्गल विवाह में होता है, वह उत्तम भाँति से हुये। हम विष्णु और सब देवता आदि इस बात के विचारने से कि जो लड़की मैना से उपजेगी, वही सदाशिव के साथ विवाही जावेगी, अति प्रसन्न हुये और उसको हिमाचल के साथ बिदा कर दिया। हिमाचल मैना को साथ लिये हुये घर गये।

दूसरा अध्याय।

सूतजी बोले हे शौनक मुनियो! इतनी कथा सुनने के उपरान्त नारद ने पूछा कि हे पिता! मुझे एक सन्देह उपजा है, इसलिये मैं आप से पूछता हूँ कि मैना की और कितनी बहिनें थीं? क्योंकि आपने ऊपर कहा है कि मैना अपनी सब बहिनों में बड़ी थी और किसने यह शाप दिया। ब्रह्मा बोले कि हमारा पुत्र दक्षप्रजापति, जिसकी सन्तान असंख्य हुई, उसने पहिले बहुत पुत्र उपजाये पर उनसे दक्ष को कुछ आनन्द न हुआ। जब वे मुक्ति पाकर परमपद को पहुँचे तब दक्ष ने साठ कन्या उपजाई और जिस प्रकार उनका विवाह चन्द्रमा आदि के साथ किया, वह वृत्तान्त हम तुम से कह चुके हैं। निदान उनमें से एक दक्ष की लड़की जिसका नाम स्वधा था, पितरों के साथ ब्याही गई। उससे तीन लड़कियाँ, अर्थात् पहिली मैना जो सबसे बड़ी थी, दूसरी धन्या जो मँझली थी, तीसरी कलावती जो सबसे छोटी थी, वह उपजी। यह तीनों बड़ी कीर्तिवाली, धर्मरूपा और अति सुन्दर थीं। जो मनुष्य प्रभात को इनके नाम लेता है, उसके सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मनोरथ पूरे होते हैं। उनके चरित्र शुद्ध हैं जिनके सुनने से आनन्द प्राप्त होता है। यह तीनों लोकों में सम्मान पाती हैं और वास्तव में इसी योग्य हैं। एक दिन यह तीनों लड़कियाँ साथ में श्वेत द्वीप पर क्षीरसमुद्र के निकट विष्णु की सेवा में पहुँचीं और विष्णुजी के दर्शन किये। उनकी स्तुति करने के उपरान्त ये उनकी आज्ञा से बैठ गईं। उस समय हमारे पुत्र सनकादिक भी वहाँ पहुँच बैठ गये और विष्णु को प्रणाम किया। सनकादिक को देख सब उठ खड़े हुये और आदर करके प्रणाम किया। पर ये तीनों कन्या भाग्यवश बैठी रहीं और प्रणाम भी न किया। हे नारद ! जैसा शिव चाहते हैं, वैसा ही होता है। मनुष्य व्यर्थ दूसरों को दोष लगाते हैं। होता वही है जो शिव की इच्छा होती है। उसी को भाग्य अथवा कर्म कहते हैं। ऐसी ढिठाई तीनों लड़कियों की देख सनत्कुमार ने बड़ा क्रोध किया। यद्यपि वह योगेश्वर, बुद्धिमान्, निरहंकार और परमहंस थे पर उस समय सब बातें भूल गये और शिवकी माया में फँसकर क्रोध किया। ऐसा तीनों लोक में कौन उपजा है जो शिवजी की इच्छा और लीला को रोक दे। सनत्कुमार ने कहा कि तुम तीनों बहिनें बड़ी मूर्ख हो। वेद का आशय तुमने नहीं पाया। तुमने न जाना कि ब्राह्मण संसार भर के मान के योग्य हैं। अहंकार के वश में पड़ तुमने मनुष्यों के सदृश अपने मार्ग को छोड़ा और हमारा बड़ा अपमान किया। इसलिये तुम देवताओं के देश व स्वर्ग को छोड़कर मनुष्यों के देश में जा रहो। यह शाप सुन तीनों ने आश्चर्य में हो विनय की कि हे मुने ! हमसे अपराध हुआ कि आपका सम्मान न किया और मनुष्यों के समान हम से यह कर्म बन पड़ा सो उसका फल भी हम पा चुकी हैं। पर विनय यह कि जब हमारा पाप नष्ट हो जावे, तब फिर हम इसी प्रकार की दशा प्राप्त करें, कृपा करके यह वर दीजिये। यह बिनती सुन सनत्कुमार अति प्रसन्न हुये और कहा कि तुमने जो विनय की तो अब हम प्रसन्न हैं। तुमको यह वर देते हैं कि तुम में से जो सबसे बड़ी है, वह विष्णु के अंश से जो हिमाचल उपजा है, उसकी स्त्री होगी और उसकी लड़की जो उत्पन्न होगी, वह शिवरानी होकर तुम्हारे कुल भरके पाप नष्ट कर देगी। जो मँझली धन्यानामा है, वह त्रेतायुग

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में जनक के साथ ब्याही जावेगी। उसकी लड़की सीतानाम होकर श्रीरामचन्द्र के साथ ब्याही जावेगी। तीसरी तुम्हारी बहिन द्वापर युग में वैश्य वर्ण वृषभान को बरैगी उनसे राधा नामी लड़की उपजकर श्रीकृष्णजी के साथ ब्याही जावेगी। उसी शरीर से तुम तीनों स्वर्ण में पहुँचोगी। और कहा कि जिसकी बुद्धि शुद्ध होती है, उसको आनन्द प्राप्त होता है। बेपरिश्रम आपदा और दुःख के उठाये बिना यश प्राप्त नहीं होता। यह कह सनकादिक चले गये और यह तीनों लड़कियाँ भी अपने पिता के घर आईं। नारद बोले कि इसके पीछे क्या हाल हुआ ? ब्रह्मा ने कहा कि हाँ, हम सब कहते हैं जिसके सुनने से शिव की भक्ति बढ़ती है।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद ! जब हिमाचल विवाह कर अपने घर आये तब बड़ी धूमधाम हुई। ब्राह्मणों को हिमाचल ने प्रसन्न किया और औरों को अपने शुद्धशील से प्रसन्न रक्खा। भाई आदि को बिदा किया। फिर देवता, मुनीश्वर आदि अपने मनोरथों को पाकर हिमाचल के निकट आये और हिमाचल ने सबका आदर सम्मान किया। कहा कि हमारा उत्तम भाग्य है कि आपने हमारा घर पवित्र किया। आपके दर्शन से हमारे दुःख दूर हो गये। अब मुझे अपना जानकर कुछ आज्ञा दो। देवताओं ने प्रसन्न होकर कहा कि हम इसलिये तुम्हारे पास आये हैं कि देवताओं का काम तुमसे निकलेगा। तुम जानते हो जिस प्रकार सती ने अपना शरीर छोड़ा। अब तुम ऐसी युक्ति करो कि वही सती तुम्हारी कन्या हो। इसमें तीनों लोक का आनन्द होगा। हे नारद ! यह युक्ति हिमाचल को बताकर श्रीजगदम्बा की सेवा में पहुँचे और सबने बड़ी स्तुति की कि देवी प्रकट हुईं और अपने पूर्णस्वरूप से दर्शन देकर सबको प्रसन्न किया। वह उत्तम रथ पर चढ़ी थीं। जब देवता उस महामाया के तेज को न सह सके तो देवी की कृपा से उनको ऐसे स्वरूप के दर्शन की शक्ति प्राप्त हुई। तब बारम्बार उन्होंने स्तुति की। देवता और मुनीश्वरों ने हाथ जोड़कर विनय की कि हे जगदम्बा ! तुम सबसे श्रेष्ठ हो तुम्हारी महिमा को वेद भी नहीं जानते हैं। जीव तुम्हारी शरण में आकर कोई खेद नहीं पाता। तुमने दक्ष के घर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अवतार लेकर हमारे नाना प्रकार के दुःख निवृत्त किये। फिर दक्ष से अप्रसन्न होकर तुमने अपना शरीर त्याग दिया और देवताओं के कार्य पूरे न हुये। इससे देवता और मुनीश्वर सब दुःखी हैं। सो हम तुम्हारी शरण में आये हैं। तुम हमारे मनोरथों को पूर्ण करो अर्थात् फिर पृथ्वी में अवतार लेकर शिवरानी हो जिससे देवताओं का दुःख मिटे। ब्रह्मा और विष्णु भी प्रसन्न होवें। इसके सिवाय सनत्कुमार ने जो पहिले भविष्यवाणी कही है, वह वचन भी पूरा हो। केवल तुम्हारे और शिव की कृपाकटाक्ष से हमारे काम ठीक होंगे। ऐसी बातें देवताओं से सुनकर देवी प्रसन्न हुईं और मधुरवाणी से बोलीं कि बहुत अच्छा, हमारी यह पहिले इच्छा थी। हम अवश्य ही अवतार लेंगी। हमारा तप आज तक मैना और हिमाचल कर रहे हैं। उनसे अधिक हमारा पूजनेवाला और भक्त कोई नहीं है। उनके घर हमारा अवतार होगा। तुम सब इस बात पर निश्चय रखकर अपने-अपने घरों को जाओ, हम तुम सबका दुःख दूर कर देंगी। एक गुप्त वार्त्ता तुमसे हम प्रकट करती हैं कि शिवने हमारे लिये बहुत से उपाय किये हैं कि हम अवतार धारण करें। जबसे हमने दक्ष प्रजापति के यज्ञ में अपने शरीर को छोड़ दिया तब से शिवने गृहस्थों का धर्म छोड़कर संसार से अलग हो हमारे वियोग में दुःखी हुये। हमारे शरीर की भस्म को अपने शरीर में मला, हमारी हड्डियों की माला गर्दन में डाली और वियोग से दुःखी हो अकेले वनों का भ्रमण कर देवताओं की सभा में भी नहीं गये। अब तुम कुछ सन्देह मत करो। तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे। तुमको उचित है कि शिवकी सेवा करते रहो। यह कह देवी तो अन्तर्धान हो गई। देवता जगदम्बा को प्रणामकर अपने-अपने घरों को चले और समय को देखते रहे। इस चरित्र को जो कोई सुनेगा या सुनावेगा, वह प्रसन्न रहकर परमपद पावेगा। उसको सदा धन-संतान की वृद्धि होती रहेगी।

चौथा अध्याय।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद! हिमाचल ने देवताओं की आज्ञा अपनी स्त्री मैना को सुनाई और मैना अति प्रसन्न हुईं। दोनों ने अति प्रसन्नता के साथ गृहस्थधर्म को उत्तम रीति से अङ्गीकार किया। मैना शिव पूजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करने लगीं। जिस-जिस बात में शिव प्रसन्न होते हैं उनमें रात-दिन लगी रहीं और दोनों शिव-शिवरानी के ध्यान में मग्न हुये। हे नारद! जो शिवभक्त हैं, वे धन्य हैं। वे लोक-परलोक दोनों में अति आनन्द और पुण्य पाते हैं। अपने कुल वरन् औरों के कुल को भी मुक्त कर देते हैं। शिवपूजा से बड़े-बड़े लाभ हैं। निदान हिमाचल ने तो देवी का तप किया और मैना से कहा तुम अपने तप से शिव को प्रसन्न करो। यह सुनकर दोनों शिव शक्ति का तप करने लगे। पूर्ण तपकर दान करते और रात-दिन सिवाय इस काम के सब भुला दिया। अष्टमी के दिन व्रत रखते और शिव पूजन करते। फिर वह मधुमास व्रत करके उसकी पूर्णता के लिये सुरसरि औषध प्रस्थ देश में गये। देवी की शिवसहित स्थापना की और तप में प्रवृत्त हुये। इस तप की अवधि बीस वर्ष है। तथाच कभी-कभी बिना अन्न-जल रहकर और कभी केवल वायु भखकर शिवशक्ति के तप पूजन में एक-दिन का भी अन्तर न किया। हर दिन नाना प्रकार की वस्तु शिव पर चढ़ाया करते। हर दिन प्रभात के समय उठकर पूजन करते और अति प्रीति के साथ स्तुति पढ़ा करते। जब यह व्रत पूर्ण हुआ तो उमा प्रकट हुई, जिनका उत्तमोत्तम सजल घनवत् श्याम स्वरूप जगत् की लीला सर्वाङ्ग पहिले के वर्णन के अनुसार आठ हाथ, तीन आँख, सम्पूर्ण वस्त्र और भूषणों से अलंकृत थीं, बोलीं कि अपना मनोरथ कहो। जो माँगो वही दिया जावे। मैना ने जो नेत्र खोल जगदम्बा के स्वरूप को देखा तो प्रीति ने बल किया और कहा धन्यभाग कि तुम्हारा दर्शन प्राप्त हुआ और विनय की यह बात अवश्य है कि कुछ तुम्हारी स्तुति करूँ। पर हे माता! मुझको इतना ज्ञान नहीं है और न कुछ किसी प्रकार की विद्या-शक्ति रखती हूँ। देवी ने अपना हाथ मैना को छुआया जिससे उनको कुछ बोध प्राप्त हुआ और प्रेम में मग्न हो आँखों से आँसू बहाये और चैतन्य होकर ऐसा कठिन पदों और शब्दों में स्तुति की कि जिसको शिवा भी नहीं समझा सकीं। ऐसी स्तुति सुन देवी बोलीं कि जो कोई इस स्तुति को सुनेगा व पढ़ेगा, वह सर्व प्रकार के आनन्द पावेगा और स्त्री-पुत्र-सन्तान पाकर और संसार भर का राज्य भोग हमारे लोक में आवेगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तब मैना बोली आप कौन ऐसी वस्तु है जिसको नहीं दे सकती हो। मेरी यह विनती है कि पहिले तो मेरे उदर से सौ पुत्र बड़े वीर धीर उत्पन्न होवें जो ब्रह्मज्ञानी, अपने कुल के नाम करनेवाले और दोनों ओर के घरानों की मुक्ति देनेवाले उत्पन्न हों। फिर एक कन्या उपजे जिसमें सब बातें तुम्हारे समान हों और तीनों लोक में उसके समान दूसरी न हो। देवता आदि के दुःख दूर करने में कुल्हारी के समान हो। देवी हँसकर बोलीं कि तुम्हारी बुद्धि को धन्य है जो ऐसा वर माँगा। अच्छा हमने दिया। तुम्हारे सौ पुत्र, जैसा कि तुमने कहा उसी तरह के उपजेंगे और जोकि मेरे समान मैं ही हूँ, इससे मैं आप तुम्हारी लड़की होकर तुम्हारे घर अवतार लूँगी। तुमने हमारी बड़ी सेवा की है। यह कहकर देवी तो अन्तर्धान हो गईं और मैना जिसओर देवी गुप्त हुई थीं, उस दिशा को प्रणाम कर जय, जय कहती हुई अपने घर की ओर चली और अति प्रसन्न होकर देवी का यश गाती हुई घर पहुँची। मैना ने दोनों हाथ जोड़ हिमाचल से सब हाल कह सुनाया जिसके सुनने से हिमाचल को बहुत ही प्रसन्नता प्राप्त हुई। मैना की बड़ी स्तुति की और बड़ा उत्सव मनाया। उस देश की सर्व प्रजा और वहाँ के निवासी अति प्रसन्न हुये।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्मा बोले कि हे नारद! जिस दिन से सती ने अपने शरीर को छोड़ा था, उस दिन से शिव अवधूत स्वरूप अङ्गीकार करके मनुष्यों के समान वियोग से दुःखी हो संसार में चारों ओर भ्रमण किया किए। योगियों के सदृश नग्न होकर सर्वाङ्ग में भस्म मली और जटाजूट शीश में धार मुण्डों की माला कण्ठ में पहिनी, साँपों के कुण्डल और उन्हीं के हार और कोपीन बाँधकर पर्वत की कन्दरा में बैठ गये। इस प्रकार वह अपना तप करने लगे। उन्होंने अकेले नाना प्रकार के दुःख सहे। एक दिन नग्न शरीर से दारुक वन में गये। इस प्रकार से नग्न देख मुनियों की स्त्रियाँ महा-कामिनी होकर शिव से लिपट गईं। सब मुनियों ने यह देख शिव को शाप दिया कि जिससे शिव का लिङ्ग पृथ्वी पर गिर पड़ा और तीनों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लोक में बड़ा हाहाकार हुआ। इतना सुन नारद ने कहा कि मैं चाहता हूँ कि आप ऐसे शिवचरित्र को विस्तृत से वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले—हे नारद! जब शिव वन में नग्न हो गये तब मुनि लोग वन में गये थे केवल वहाँ स्त्रियाँ थीं। उन्होंने शिव को देखा कि ऐसी कठिन अवस्था पर भी शिव का सा मनोहर रूप तीनों लोक में किसी का नहीं है। उन मुनिपत्नियों के मन विवश हो गये। एक ने कहा देखो उस स्त्री का बड़ा भाग्य होगा जो इनको लिपटे। दूसरी बोली यहाँ चली आवो, इनको देखो। इसी प्रकार सब स्त्रियाँ हँस-हँस कर शिवको लिपट गईं। इतने में उनके पति वन से आये और यह हाल देखकर अति क्रोध से कहने लगे कि हे मूर्ख, नारकी, अधर्मी! यह क्या पाप करता है? तूने वेद के विरुद्ध धर्म को अङ्गीकार किया और जोकि तुमने हमारा धर्म बिगाड़ा इसलिये तुम्हारा लिङ्ग पृथ्वी पर गिर पड़े। इतना कहते ही शिव का लिङ्ग धरती पर गिर पड़ा और पृथ्वी के अन्दर पाताल में चला गया। शिव बिना लिङ्ग होकर अति लज्जित हुये। उन्होंने अपने रूप को प्रलय के रूप सदृश महाभयानक बनाया और किसी पर यह भेद प्रकट न हुआ कि क्यों शिव ने यह चरित्र रचा। सो शिवलिङ्ग गिरने के उपरान्त बड़े-बड़े उपद्रव उठे जिससे तीनों लोक भयवान् व दुःखी और चिन्तित होकर काँप उठे। पर्वत जलने लगे और दिन में आकाश से तारे गिरने लगे। हाहा शब्द चारों ओर पूरित हुआ, पर किसी पर यह भेद न खुला। सबसे अधिक मुनि लोगों के आश्रमों पर यह उत्पात उठा। हे नारद! हर मनुष्य को उचित है कि जो काम वह करे अच्छी तरह समझ बूझकर करे। शीघ्रता और अज्ञान से कुछ न करे। जो मनुष्य विद्या पढ़ने से अहंकारी हैं; वे शिव को नहीं जानते और पीछे को दुःख उठाते हैं। निदान मुनीश्वर अतिदुःख पाने के उपरान्त देवलोक में गये और वहाँ भी चैन न पाकर देवताओं समेत हमारे यहाँ पहुँचे। इन्द्र आदि सब देवताओं ने हमको प्रणाम किया और कहा कि क्या कारण है कि तीनों लोक जले जाते हैं। हमने बहुत सोचा पर मूल बात को न समझे। सबको साथ ले विष्णुलोक में जाकर विष्णु को प्रणाम किया और स्तुति की। फिर इस उत्पात का कारण पूछा। हमने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहा कि पृथ्वी में भूकम्प और उल्कापात और पहाड़ों का जलना क्यों हो रहा है। आप इसे कहिये और हम सब पर से इस उपद्रव को टालकर ऐसा उपाय कीजिये जिसमें तीनों लोक ऐसे ईश्वरीय कोप से छूटें।

छठवाँ अध्याय।

विष्णुजी बोले कि हमने दिव्यदृष्टि से इसका कारण जाना है जैसा कि हम वर्णन करते हैं। हम क्या बतावें जैसे कि बुद्धिमान भी पशुओं के समान हो गये और ऐसा निन्द्यकर्म किया कि जिस बुद्धि की हीनता के कारण ऐसे उपद्रव उठ रहे हैं। इन मुनीश्वरों ने अहंकार से शिव को न पहिचाना। चाहे यह बुद्धिमान् भी है पर शिवमाया संसार को घेरे हुए है। इन्होंने अपनी स्त्रियों को कामभाव से शिव के तन में लिपटे देखकर अपना ब्रह्म तेज दिखाया और जब शिव का लिङ्ग गिर पड़ा, उस समय से यह उपद्रव उठे। इससे अवश्य है कि हमसब शिव की शरण में चलें। जब तक वह अपने लिङ्ग को फिर धारण नहीं करते, तब तक चैन नहीं मिलेगा; वरन् प्रलय हो जावेगी। यह कहकर विष्णु सबको साथ लेकर शिव के पास गये और नाना प्रकार की स्तुति करके बोले कि हे शिव ! हम पर कृपा करो और अपने लिङ्ग को फिर धारण करो। यह सुन शिव ने लज्जित हो कहा कि हे विष्णु ! तुम्हारा कुछ दोष नहीं है। हमने स्वयं यह चरित्र किया है। बिन स्त्री हमको क्या आवश्यकता है कि फिर लिङ्ग को धारण करें। हमको इसी दशा में आनन्द है। यह सुनकर सब देवता फिर शिव की स्तुति करके कहने लगे कि यद्यपि हमको आप से ढिठाई न करनी चाहिये पर विनय यह है कि सतीजी ने फिर हिमाचल के यहाँ अवतार लिया है। वह आपका तप करके फिर तुम्हारी स्त्री होंगी। उचित है कि आप लिङ्ग को फिर धारण करें। शिव बोले कि जो तुम हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो हम फिर नये सिर से लिङ्ग धारण करें और सृष्टि फिर आनन्द से रहने लगे। यह सुन विष्णु, हम और भी सबों ने कहा कि हम आपके लिङ्ग की पूजा करेंगे। इतने में शिव अन्तर्धान हो गये। हम सब पाताल के नीचे जाकर उसी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पहिले लिङ्ग की पूजा करने लगे। पहिले विष्णु ने, फिर हमने, फिर इन्द्र ने, इसी प्रकार सब देवताओं ने क्रम से पूजा की। इस पूजा में बड़े-बड़े उत्सव हुये। आकाश से पुष्प बरसे। नाना प्रकार के बाजे बजे। तब शिव अपने लिङ्ग से तुरन्त प्रकटे और हँसकर बोले कि हम तुम्हारी पूजा से अति प्रसन्न हुये। अब वरदान माँगो। हम सबों ने विनय की कि तीनों लोक को आनन्द देकर अपने लिङ्ग को धारण करो और हमको अहंकार न होवे। आपकी भक्ति करते रहें। शिव ने कहा कि यही होगा और अपने लिङ्ग को धारण कर लिया। विष्णु और हमने उत्तम और शुद्ध हीरा लेकर लिङ्ग के समान एक अच्छी मूर्ति बनाई और उस जगह पर स्थापित करके कहा कि इस मूर्ति हारकेश की जो पूजा करेगा, उसको लोक परलोक दोनों में सुख प्राप्त होगा। सिवाय इसके और शिव के लिङ्गस्थापन कर बड़ी प्रसन्नता से पूजा की। फिर हम सब उस मूर्ति का ध्यान करके अपने-अपने लोक को चले गये और शिव को सबसे उत्तम समझा। शिव भी अपने लोक में सुशोभित हुये और चारों ओर भ्रमण करते रहे कभी-कभी मुनीश्वरों के पास बैठकर अपने मन को बहलाते, कभी पहाड़ पर चढ़ जाते और युक्ति से सती के वियोग को भुला देते। जो इस कथा को मन लगाकर सुनेगा, वह सदा प्रसन्न रहेगा। शिवलिङ्ग की पूजा से कुल समेत मुक्ति मिलती है और शिवलोक-वास प्राप्त होता है। हम और विष्णु सब लिङ्ग को पूजकर आनन्द से रहते हैं और शिवलोक में पहुँचते हैं। हे नारद! अब क्या सुनोगे?

सातवाँ अध्याय।

नारदजी बोले कि हे हमारे पिता! आपने शिवचरित्र वर्णन करके मुझको अति प्रसन्न किया है। परन्तु अब यह प्रार्थना है कि अन्य कथा शिवजी की जब वह कैलाश पर्वत पर गये, विस्तारसहित वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा कि शिवजी ने कैलाश पर्वत में जाकर सतीजी को स्मरण किया। वीरभद्र आदि गणों से सतीजी की महिमा बखानने लगे। सतीजी के अलग होने में शोक प्रकट करके कामदेव की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रबलता को प्रसिद्ध किया। इस कारण कि सब मनुष्यों को यह दृढ़ हो जाय कि काम कैसा प्रबल है। फिर सर्वलोक में फिरकर कैलाश पर्वत पर बहुत दिन रहे और एक ही आसन से ध्यान में लिप्त हो गये। फिर जब ध्यान और समाधि का त्याग किया तब शिवजी के ललाट से पसीना पृथ्वी पर गिर पड़ा जिससे एक पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसके चार हाथ, लालवर्ण, अति तेजस्वरूप, माला पहिने और बलवान् था। जब वह उत्पन्न हुआ तब रुदन करने लगा जिस प्रकार कि बालक रोते हैं। उस समय पृथ्वी ने विचार किया कि हमको पालना इसकी करनी होगी क्योंकि यह बड़ा तेजस्वी भासता है। शिवजी के शरीर से प्रीति के कारण जो पसीना निकला उससे यह उत्पन्न हुआ है, इस कारण इसके सिवाय सती भी अपने शरीर को छोड़ चुकी हैं। अब इसकी पालना कौन करेगा? जो कि मेरे ऊपर उपजा है तो मैं मातासमान हूँ। अब उचित है कि मातासमान इसको पालूँ, शिवजी से मुझको कुछ भय न होगा। जो मैं स्त्री होकर इसकी पालना नहीं करती तो निश्चय है कि शिवजी मुझको दण्ड देंगे। यह विचारकर पृथ्वी ने स्त्रियों के सदृश अपना रूप बनाया जो अति पवित्र और सुन्दर मानो कामदेव की दूसरी रति ने अवतार लिया है। अथवा विष्णुजी ने फिर मोहनी रूप धारण किया। ऐसा स्वरूप बनाकर पृथ्वी ने बालक को उठा लिया और अपने कुचों में बालक का मुख लगाकर दूध पिलाने लगी तथा हँसकर उसके मुख को चूमा। शिवजी ने ऐसा देखकर उसकी ओर लज्जा से देखा और पृथ्वी की अभिलाषा जानकर मुसकाये और बोले कि हे पृथ्वी! तुम्हारे धन्य भाग्य हैं कि हमारा पुत्र तुम को दिखाई दिया। तुम रुचिपूर्वक इसकी पालना करो। यद्यपि यह पुत्र हमारे शरीर के पसीने से उपजा परन्तु तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा अर्थात् इसका नाम भौम होगा। यह तुमको अधिक सुख देगा। यह कहा और उनकी कुछ चिन्ता इस बालक के देखने से कम हुई। जो सती के वियोग का दुःख था, वह कुछ घटा। पृथ्वी भी प्रसन्न होकर अपने घर गई और अति प्रीति से पालना करने लगी। भौम भी शरत्काल की रात्रि के सदृश बढ़ने लगा। कुछ दिनों के पीछे भौम शिवपूजन के निमित्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मधुवन में गये और शिवजी की पूजा की। गर्मियों में अग्नि चारों ओर जलाकर बड़े श्रम उठाये, शरत्काल में पानी में बैठकर बड़ी पूजा की और अच्छे-अच्छे व्रत करके नियम और संयम से तीन करोड़ शिवपूजन किये। ऐसा पूजन करके एक स्थान पर बैठ गये और शिवजी प्रसन्न होकर प्रकट हुये। शिवजी के दर्शन कर अति कठिन शब्दों की एक स्तुति पढ़ी और कहा कि यही आपने मुझको वरदान के बदले कृपा किया कि आप विराजमान हुये। मैं कुछ नहीं जानता, अब जो बात उचित हो, वह कीजिये। यह कहकर वह चुप हो रहा। शिवजी ने कहा कि धन्य तुम्हारी बुद्धि, तुम मुक्त हो चुके। तुम पवित्र मङ्गलग्रह हो गये। तुम्हारा लोक सूर्यलोक से भी ऊपर होगा। तुम सुखी रहो। तुम को सब आनन्द और प्रसन्नता की वस्तु प्राप्त हो। यह कहकर शिवजी गुप्त हो गये और भौम अपने लोक को गये। वह परिवारसहित सुख करने लगे और शिवजी के भक्त रहे। हे नारद! इस चरित्र के श्रवण और वर्णन करने से सब कुछ अर्थात् धन, संतान और सुख प्राप्त होता है तथा सब रोग नाश हो जाते हैं। अब किस कथा को सुनोगे ?

आठवाँ अध्याय।

नारदजी बोले कि इस चरित्र के सुनने से अति सुख प्राप्त होता है। अब कहिये कि हिमाचल की स्त्री ने शिवजी से वरदान माँग कर क्या किया? ब्रह्माजी ने श्रीसदाशिव का ध्यान करके कहा कि जब हिमाचल की स्त्री ने शिवजी से वरदान पाया और शक्ति को प्रसन्न देखा तो सुखी होकर अपने घर सिधारी। पहिले उससे सौ पुत्र उत्पन्न हुये। उनके नाम मैनाक और क्रौंच आदि थे। वे बहुत लम्बे शरीर वाले वीर और बलवान् हुये। उसके पीछे सतीजी हिमाचल के मन में प्रवेश कर गईं कि उनके सब मनोरथ पूर्ण हों। वही तेज सतीजी का हिमाचल ने शुभ घड़ी पाकर मैना में स्थित कर दिया। जिस समय से सतीजी मैना के मन में स्थित हुई, तब से मैना का शरीर अति तेजस्वी भासता था। वह गर्भवती हो गई। इसके प्रकट होने से हिमाचल और सब बहुत प्रसन्न हुये। इससे अधिक सुख हिमाचल को किसी समय प्राप्त न हुआ था। मैना भी इस गर्भ धारण के सिवाय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऐसी सुन्दर और तेजस्विनी कभी न भासी थी। हिमाचल की यह गति थी कि वह बारम्बार मैना के निकट आता और नित्य मैना की सखी सहेलियों और मैना से पूछता कि आपको किस-किस वस्तु की इच्छा होती है। परन्तु मैना लज्जित होकर कुछ उत्तर न देती। उस समय जो मैना चाहती, वह वस्तु आप ही प्रकट हो जाती। ऐसी कोई भी वस्तु न थी, जो मिलने में कठिन होती। जितना कि गर्भ बढ़ता जाता था, उतना ही तेज अधिक होता जाता था। हिमाचल ने वह रीति और उत्सव जो कि गर्भ अवस्था में करना उचित है, बड़े धूमधाम से की। सबकी इच्छानुसार सब कुछ दिया गया। विष्णुजी, हम और देवताओं ने जाकर शिवरानी की स्तुति की और अपने-अपने स्थान पर लौट आये। जब नवमास व्यतीत हुये और दशवाँ मास पूरा होने लगा तब सब चिह्न आकाश और पृथ्वी के अच्छे भासे। अर्थात् आकाश निर्मल हुआ, अशुभग्रह गुप्त हो गये, आकाश पर प्रकाश अधिक हुआ, पृथ्वी पर किसी का शोक न रहा, नदियों में कमल फूल फूले, तीनों प्रकार की पवन चलने लगी और मुनीश्वरों को तेज प्राप्त हुआ। भक्तों के मन प्रसन्न हुये। आकाश में बाजों का शब्द बजने लगा। मुनि और देवता आदि ने फूलों की वर्षा की। गन्धर्व, सिद्ध, चारण, किन्नर, अप्सरा और विद्याधर अपनी स्त्रियों सहित नाचने और गाने लगे। सो मधुमास के शुक्लपक्ष की नवमी मृगशिरा नक्षत्र में आधी रात के समय शिवरानीजी ने जन्म लिया। ऐसा कालिकापुराण में भी लिखा है। उस समय हम और विष्णुजी सामग्री समेत उस स्थान पर गये, नाना प्रकार के बाजा बजे और पुष्पों की वर्षा हुई। सबों ने अपनी बुद्धि के अनुकूल स्तुति पढ़ी। देवताओं ने कहा कि जय-जय शिवरानी जगदम्बा, तुम त्रैलोक्य की माता हो। हमारी आपदा को नाश करो। तुम हमारे मन की अभिलाषा से अचेत नहीं हो। तुम आदिशक्ति हो और तुम्हारा तेज अधिक है। तुम्हारे सर्वजीव सेवक हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शिव सब आपके पुत्र कहे जाते हैं। तीनों गण तुम्हीं से हैं। तुम ब्रह्मस्वरूप आदिशक्ति सब में हो और सबसे भिन्न भी हो। यद्यपि वे तुम्हारी महिमा बखानते हैं, परन्तु अन्त को नहीं पहुँचते। नारद, शारद, शुक्र और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सनकादिक आदि बड़े वाचाल और बुद्धिमान् हैं परन्तु वह भी कुछ वर्णन नहीं कर सकते और आपकी कृपा से मूर्ख भी स्तुति करते हैं। इस बात को उपनिषद् वर्णन करते हैं। आप अपने भक्तों को मुक्त करती हैं और करोड़ों कला अपने वश में किये हैं। आप अहंकार को भक्षण करनेवाली हैं। आपही वेद और वेदान्त हैं। सहस्रों नाम आपके हैं। इसी प्रकार बड़ी स्तुति करके देवीजी की मूर्ति का ध्यान किया और सब अपने-अपने घर गये।

नवाँ अध्याय।

नारदजी बोले कि हमको अब यह अभिलाषा है कि जो इसके पीछे चरित्र हुआ हो, उसका आप वर्णन करें। अर्थात् वे बाल-चरित्र जो देवीजी ने हिमाचल के यहाँ किये, उनको कहें। ब्रह्माजी बोले कि जब देवीजी ने जन्म लिया और देवता आदि महिमा बखान के घर चले गये, उस समय हिमाचल ने बड़ी धूमधाम की। मैना अपनी पुत्री को देखकर अति प्रसन्न हुई। उसने पहिचाना कि यही आदि शक्ति हैं। देवीजी ने अष्टभुजी मूर्ति धारणकर मैना को दर्शन दिये। वह स्वरूप वर्णन करना अति कठिन है। आठभुजायें, तीन नेत्र, कुण्डल धारण किये, गहना और वस्त्र पहिने हुए मैना ने देखा और स्तुति करके कहने लगी कि आपने बड़ी कृपा करके हमारे गृह अवतार लिया। अब मेरी यह प्रार्थना है कि यह रूप जो आपने इस समय धारण किया है, वही मेरे हृदय में स्थित रहे और अब बालकों के सदृश अपना स्वरूप बनाकर मुझको सुख दीजिये। देवीजी ने कहा कि यह रूप मैंने इस कारण धारण किया है कि निश्शङ्क रहो। जो रूप तुमने हमारा वरदान लेने के समय देखा था, उसको स्मरण करके विश्वास करो कि मैं वही देवी हूँ। यह कहकर देवीजी ने बालकों के सदृश रूप बनाया और रुदन करने लगीं। उस समय सब स्त्रियाँ मैना के आसपास इकट्ठी हो गईं। सबको कन्या उत्पन्न होने की प्रसन्नता प्राप्त हुई। हिमाचल भी अति सुखी हुआ। पुरोहित, गुरु, ब्राह्मण और मुनीश्वर आदि घर के अन्दर गये और कन्या को देख कर कहा कि देवीजी ने अवतार लिया है। हिमाचल ने बहुत भिक्षा बाँटी। नगर की सब स्त्रियाँ शृंगार करके बन ठनकर बधावा देने आईं। फिर हिमाचल ने यथा रीति सर्व कार्य किये। ब्राह्मणों ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लड़की के नाम काली और गिरिजा आदि रक्खे। गिरिजा बहुत से खेल और चरित्र संसार की लड़कियों के अनुसार करके मैना को प्रसन्न किया करती। प्रथम तो कोरा में लिपटकर मुसकाती, फिर तुतली जिह्वा से कुछ बातें करती जिनके श्रवण करने से माता और पिता अतिप्रसन्न होते थे। फिर देवीजी का नाम उमा और शिवा भी हो गया अर्थात् उस समय जब कि गिरिजा तपस्या करने को जाती थी, तब मैना ने चिन्ता से उसको जाने न दिया था। यद्यपि हिमाचल सन्तानवान् था तो भी सबसे अधिक प्रीति गिरिजा की थी। गिरिजा चन्द्रमा के सदृश बढ़ती जाती थी। गिरिजा कौड़ियों का खेल खेलती और सुरसरी में जाकर पानी का खेल करती थी। संसारी रीति के अनुसार विद्या की शिक्षा लेती। उसको सब विद्यायें आपही स्मरण हो गईं। जब बालअवस्था व्यतीत हो गई और तरुण अवस्था आने लगी, उस समय के शरीर की सुन्दरता वर्णन नहीं हो सकती। कोकिलों ने गिरिजा की वाणी सुनकर अपने शब्द का अहंकार त्याग दिया। शशि जिसको अपनी सुन्दरता का मद था, अति लज्जित हुआ। हरिण गिरिजा की आँखें देखकर बहुत प्रसन्न हुये। इस रूप के उत्पन्न करने के पीछे ब्रह्माजी को अन्य स्वरूप बनाने में चिन्ता उपजी। अर्थात् गिरिजा अनन्यस्वरूप थीं जिसके बनाने से हमारी बुद्धिमानी, क्रियाकुशलता प्रसिद्ध हुई। मानो उमा के उत्पन्न करने से सर्व सृष्टि के उत्पन्न करने का परिश्रम सुफल हुआ। लक्ष्मीजी, जिनको विष्णुजी ने बड़ी प्रीति से समुद्र से वस्त्रसहित निकाला, हम उनको भी गिरिजा के बराबर कहते हुये लज्जित होते हैं। तब हम कोई दृष्टान्त गिरिजा के निमित्त नहीं पाते तो केवल उनको सूर्य कह देते हैं। ऐसी त्रिलोक में अन्य स्त्री नहीं। हमारी स्त्री किसी प्रकार उनके बराबर नहीं। अगर लक्ष्मी का दृष्टान्त दूँ तो उनमें चञ्चलता का अवगुण है और न रति को कह सकता हूँ कि वह गिरिजा के सदृश हैं। मोहिनीरूप भी उनके दृष्टान्त के योग्य नहीं है। गिरिजा की सुन्दरता वर्णन करना कठिन है।

दसवाँ अध्याय।

नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! जिस प्रकार आपने गिरिजा जी की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन्दरता बखानी, उसी तरह उसके विवाह का कुछ चरित्र वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिवा और शिवजी की लीला आश्चर्य देने-वाली है। तीनों लोक उनके अधीन हैं। इससे तुमको उचित है कि सन्देह-रहित होकर उनमें प्रतीति करो। कोई कहते हैं कि गिरिजा का स्वयंवर होकर विवाह हुआ। प्रायः यह केवल उन्होंने भ्रम की अवस्था में ऐसा ही देखा होगा। परन्तु अन्य मनुष्य और प्रकार से विवाह का वर्णन करते हैं कि शिवजी नंगे होकर भिक्षुक का वेष धारण करके हिमाचल के द्वारे विवाह करने आये जो बैल पर चढ़े हुये थे और शुक्र और शनैश्चर देवता को संग लिये थे और देवता आदि प्रकट नहीं थे। इस प्रकार विवाह के निमित्त आकर प्रथम उसके अहंकार का नाश किया। फिर दया करके बरात सजाकर विवाह करने आये। आचार्य यह कहते हैं कि शिवजी गिरिजा के तप से प्रसन्न हुये और बड़ी बरात लेकर गिरिजा को ब्याह लाये। वहाँ पर बड़ी लीला की और मैना को प्रथम शान्त करके सुख दिया। ऐसे-ऐसे अनेक प्रकार के विचारों के यह कारण हैं कि जिसको जैसी शिवजी की प्रीति होती है, उसको उसी प्रकार शिवजी दिखलाई देते हैं। शङ्का और विचार करना ऐसी बातों पर अयोग्य है। प्रथम हम स्वयंवर विवाह का वर्णन करते हैं, जिसमें विष्णु के गणों और देवताओं की बुद्धि कुण्ठित हो गई और उनकी बड़ाई जाती रही। एक दिन गिरिजा को हिमाचल ने तरुण पाकर अपने भाई बन्धुओं से कहा कि कोई बराबर का देवता ढूँढ़कर विवाह कर दो क्योंकि पिता का यही धर्म है। उन्हीं दिनों में मैना ने हिमाचल को इस निमित्त बुलाया कि अब गिरिजा बड़ी हुई, उसके वर ढूढ़ने की युक्ति करो। यह पुत्री मुझको अति प्रिय है, इस हेतु अच्छा-सा गुणवान् वर ढूँढ़ो। वरन् लोग तुमको कहेंगे कि हिमाचल मूर्ख, अज्ञानी और अकुल है। हिमाचल प्रसन्न होकर घर से बाहर आये और मन्त्रियों को बुलाया। सभा में मन्त्रियों ने कहा कि स्वयंवर करना उचित है कि ब्रह्मा, विष्णु और दिक्पति सब आवें। प्रथम हर पुरुष के गुण भिन्न-भिन्न उमा को सुनाओ। फिर उनका रूप दिखलाओ। जिसके शिर पर उमा माला रख देवें वही गिरिजापति होगा। हिमाचल इस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सम्मति से प्रसन्न हुआ। स्वयम्बर का उत्सव लिखकर हर एक को भेजा और इसी से हर एक को समाचार मिला। ऐसी वार्त्ता श्रवण कर सब देवता चले। विष्णुजी, हम, इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि और दिक्पति इत्यादि अपनी-अपनी बरात सजाकर बनठन कर हिमाचल के यहाँ गये। इसी प्रकार और भी राजा आये। नारद, शिवजी की माया का प्रभाव देखो कि जान बूझकर सब पुरुष कैसे अज्ञान हो गये। गिरिजा सबकी माता और शिवशक्ति प्रसिद्ध हैं। यह भी सब जानते थे कि वही हिमाचल के यहाँ उत्पन्न हुई है और उन्हीं के संग सबने विवाह करना चाहा। शिवजी की माया बड़ी प्रबल है। जब जैसी शिवजी की इच्छा होती है, उसी के अनुसार सब मनुष्य कार्य करते हैं किसी को क्या दोष है। हिमाचल विष्णु को देखते ही आगे गये और अच्छा-सा घर रहने को दिया फिर स्तुति की। इसी प्रकार हमारा और अन्य देवताओं का यथा शक्ति बड़ा मान किया और बड़ी सेवा की। सब ऐसी सभा देखकर प्रसन्न हुये और परस्पर कहने लगे कि देखिये गिरिजा किस पर प्रसन्न होती हैं। कौन उनको ब्याह कर संसार विषे बड़ाई प्राप्त करता है। बहुत से मनुष्य नाम बता-बता कर कहने लगे कि उसके साथ गिरिजा का विवाह होगा। कोई कहता था कि विष्णुजी अच्छे वर हैं जिसके सङ्ग गिरिजा का विवाह होगा, उसी को हम सबसे उत्तम प्रधान पुरुष कहेंगे। अन्य मनुष्य इस प्रकार आनन्द करते थे कि हम गिरिजा का विवाह देखेंगे।

ग्यारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हिमाचल ने स्वयम्वर में बड़ी-बड़ी सोने की चौकियाँ रखवा दीं। अनेक प्रकार से घर को सजाकर विष्णु इत्यादि सबको कहला भेजा कि स्वयम्वर में आवें। यह श्रवणकर हर एक धूमधाम से आये। इन्द्र ऐरावत हाथी पर चढ़कर चले और अग्नि, विश्वानर के पुत्र, अपने अरचक्षुगणों को सङ्ग लिये आये। इसी प्रकार विष्णुजी, दिक्पति, वरुण, कुबेर, यमराज, सूर्य और चन्द्रमा इत्यादि सभा में आये और चौकियों पर बैठ गये। हम भी हंस की सवारी पर पहुँचे। देखो कि विष्णुजी चतुर्भुजी स्वरूप धारण किये, पीले वस्त्र पहिने सभा में बैठे हैं। कोई ऐसा देवता न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

था जो उस सभा में दिखाई न देता हो। हमारी, विष्णुजी की और सब लोगों की यही अभिलाषा थी कि हमारे सङ्ग गिरिजा का विवाह हो। हर एक नगर से सब मनुष्य स्वयम्वर में आये। सब पर्वत अर्थात् कनकगिरि, देवकूट पूर्वदिशा के पर्वत, विन्ध्य, चित्रकूट, करवीर, चित्रकूट जो पर्वतों का राजा है, हिमगिरि आदि सब आये और समुद्र के जीव भी मनुष्यों का रूप धरकर सभा में आये। अर्थात् सब सुख की सामग्री वहाँ थी। बाजे बजने लगे। घण्टा ढोल आदि जो देवताओं को अतिप्रिय हैं, बाजने लगे। वेदपाठी वेद उच्चारण करने लगे।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जब ऐसी सभा स्वयम्वर की हुई तब हिमाचल ने गिरिजा को आज्ञा दी कि स्वयम्वर में जावो। उस समय सब कुल की स्त्रियों ने गिरिजा का नाना प्रकार से शृंगार किया। गिरिजा शिवजी का ध्यान करके स्वयम्वर की ओर चलीं। सबों ने प्रार्थना की कि गिरिजा को अच्छा-सा वर मिले। गिरिजा सभा के अन्दर गईं और बीच में जाकर खड़ी हुईं। वहाँ के मनुष्यों ने उन्हें सहस्र दृष्टि से देखा अपने को यथाशक्ति भले वस्त्र, गहना, मुक्ता और इतर इत्यादि से सजा कर गिरिजा को दिखाया। जो सखी गिरिजा के साथ थी, उसने सबसे पहिले गिरिजा को इन्द्र के पास ले जाकर कहा कि यह इन्द्र हैं, जिन्होंने सहस्र यज्ञ किये। जो इनकी रक्षा में जाता है, उसकी यह रक्षा करते हैं। यह चन्द्रमा से भी अधिक सुन्दर हैं। इससे उचित है कि इनके साथ विवाह करो। इन्द्राणी तुम्हारा नाम होगा और शची के समान सुख किया करोगी। यह सुनकर गिरिजा ने एक बेर इन्द्रकी ओर दृष्टि की और मौन साधकर प्रणाम कर आगे बढ़ीं। इस प्रकार सखी विष्णु आदि देवताओं की प्रशंसा करके कहती कि इनको माला पहिना दो। यद्यपि उनके नाना प्रकार के गुण बखानती परन्तु गिरिजा किसी से प्रसन्न न होती। जब सखी किसी देवता आदि की प्रशंसा करती तब गिरिजा कहती थीं कि आगे चलो। अन्त में हम और विष्णुजी से भी वे प्रसन्न न हुईं। उस समय शिवजी आकाश से प्रकट हुये और गिरिजा ने उनको माला पहिना दी।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेरहवाँ अध्याय।

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! आप इस बात को भले प्रकार वर्णन कीजिये कि शिवजी किस प्रकार प्रकट हुये और गिरिजा ने उनके गले में माला क्यों कर डाल दी। यह सब विस्तार संयुक्त वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि जो जुगनू को देखकर कमल फूल उठे तो काहे को चन्द्रमा अपनी किरणें उन पर फैलावे। गिरिजा जन्म-जन्म की शिवरानी थीं। वह इस प्रकार और किसी को माला क्योंकर पहिनातीं। जिसके निकट गिरिजा जाकर आगे को चली जातीं, वह बहुत लज्जित होता। इसी प्रकार गिरिजा ने सब सभा को देखा परन्तु किसी से प्रसन्न न हुईं। जब सबसे उत्तमोत्तम और परब्रह्मशिवजी को न देखा तो अति दुःखी हुई। चिन्ता में डूबकर सन्तोष के साथ उन्होंने शिवजी का ध्यान किया और विचारा कि क्या कारण है कि शिवजी अभी तक नहीं आये। उसने अपने मन में बहुत शिवस्तुति की और कहा कि मेरा क्या दोष है। मैं तो तुम्हारी चेरी हूँ, मुझे दर्शन दीजिये और अपराधों को क्षमा कीजिए। चाहे करोड़ों जन्म मेरे बिना पति के हो जावें परन्तु मैं बिना आपके और के सङ्ग ब्याह न करूँगी। इस कारण कि आदि से मैं ही आप की स्त्री हूँ। यह कहकर गिरिजा प्रीति में ऐसी लीन हो गईं कि अचेत हो गईं। उसी समय शिवजी प्रकट हुये। उनके तेज स्वरूप को देखकर सब आश्चर्य में हुये। किसी ने उन्हें न पहिचाना। इस हेतु से कि शिवजी सब मनुष्यों के अहंकार का नाश करते हैं। उन्होंने एक और लीला रची अर्थात् सुन्दर बालकों के सदृश प्रकट हुये जिसको देखकर सब दूर-दूर करने लगे परन्तु वह न भागे, निडर रहे। तब सबों ने क्रोध करके सभा से निकालना चाहा। पर जब वह न हटे तो सबों ने चाहा कि इसको मार डालें। अपने-अपने हथियारों को उठाया। शिवजी ने केवल एक बेर देखा और सबके हाथ और उनके शरीर जड़वत् हो गये। विष्णुजी ने ऐसा देखकर अपने चक्र को घुमाया पर उनकी भी कुछ न चली। उसी समय सबने आश्चर्य किया और शिवजी की लीला को न जाना। परन्तु गिरिजा यह शिवचरित्र देखकर मुसकाईं। सब सभा मूर्ति-सी हो गई। उस समय हमने शिवजी का ध्यान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किया तब वह लड़का हँसा। ऐसा देखकर हमने जाना कि शिवजी यही हैं। शिवजी को जानकर हमने स्तुति की और कहा कि यह सब आपकी माया है। हमारा क्या दोष है? आपने चरित्र रचकर हम सबको भुला दिया कि हम सब जगदम्बा की रक्षा की इच्छा करके आये। फिर गिरिजा स्तुति की और कहा कि अब आप वह चरित्र कीजिये जिससे हमारी चिन्ता दूर हो। यह सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और सब चेते। फिर उस लड़के को किसी ने न देखा और शिवजी दिखाई दिये। उनका ऐसा रूप था जिसको करोड़ों काम देखकर लज्जित हो जायँ। मणि आदि के गहने धारण किये और ऐसे सुन्दर कि जिसका वर्णन अति कठिन है।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसा रूप सदाशिव का देखकर सब सभा के मनुष्यों ने एक बड़ी स्तुति अपनी बुद्धि के अनुकूल कही। विष्णुजी ने प्रार्थना की कि हम आपकी माया में फँसकर गिरिजा के संग ब्याह करने की अभिलाषा रखते थे सो आप यह पाप क्षमा कीजिये। आप दोनों लोक के माता और पिता हैं। इसी प्रकार प्रजापति अर्थात् हमने और इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, ईशान, कुबेर, शेष, प्रजापति, सिद्ध और हिमाचल आदि ने स्तुति पढ़कर अपने-अपने पापों को क्षमा कराना चाहा। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसके पीछे गिरिजा ने अपने पिता की आज्ञा लेकर शिवजी को माला पहिना दी। यह कहकर सबों ने जय-जय का शब्द चिल्लाकर कहा और सबकी लज्जा दूर हो गई उस समय सबको बड़ा सुख प्राप्त हुआ।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! उस समय का सुख हम कहाँ तक वर्णन करें। हम सब गिरिजा और शिवजी के पीछे गये। विष्णु बाईं ओर, हम दाहिनी ओर और शिवजी बीच में चले। उसके पीछे सब चले। कोई छत्र शिर पर लिये हुये था। कोई जय-जय शब्द करता हुआ दौड़ता था। इसी प्रकार सब सेवा करते थे। हिमाचल अपने भाइयों और मित्रों सहित

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चला। हिमाचल के नगर में पहुँचे। नगर में बड़ी धूमधाम हुई। शिवजी के दर्शन के निमित्त नगर की सब स्त्रियाँ अपने-अपने कोठों पर चढ़ीं। जो स्त्री जिस काम में लीन थी, उसको त्यागकर शिवजी के देखने को दौड़ी। यहाँ तक कि जो एक नेत्र में काजल दिया था तो जल्दी से दूसरे नेत्र में न दिया। झरोखों के अन्दर से दर्शन करने में ऐसी लीन हुईं कि जो इजारबन्द भी छूट गया तो भी कुछ चिन्ता न की। कुछ स्त्रियों ने अपने दूध पीते-पीते बच्चों को छोड़ दिया और दशों इन्द्रियों की शक्तियों को केवल नेत्र की ज्योति में लाकर उनका दर्शन करना ही सिद्ध समझा। उन स्त्रियों की ऐसी अवस्था देखकर विष्णुजी, शिवजी और हम बहुत हँसते थे। शिवजी हिमाचल के गृह उतरे। बरात के निमित्त अच्छा-सा घर ढूँढ़ा। हिमाचल ने यथाशक्ति सबकी सेवा की। फिर शिवजी की आज्ञानुसार कैलाश से सब गण आये जिसमें नन्दी और वीरभद्र भी थे। उन्होंने हम सबको प्रणाम किया। फिर हिमाचल की आज्ञानुसार शिवजी अन्दर गये। गर्ग, जो हिमाचल के पुरोहित थे सब कार्य कराने लगे। उस समय दोनों ओर से बहुत ही दान दिया गया। हमने और विष्णुजी ने हवन कराया। जब शिवजी ने गिरिजा का हाथ पकड़ा, उस समय हम सबको बड़ा सुख हुआ जो वर्णन नहीं हो सकता। जिसने जिसकी इच्छा की वह उसको मिला। जब कि भाँवरे हो चुकीं तब दोनों को एक ही शय्या पर बिठाया। तब सबने धन्य-धन्य का शब्द ऊँचा किया। शिवजी को बड़ा दहेज दिया। हिमाचल ने नाना प्रकार के व्यञ्जन सबको खिलाये। विवाह हो चुका तो शिवजी वहाँ से आज्ञानुसार चलकर कैलाशपर्वत पर आये, फिर आज्ञा लेकर हम सब अपने-अपने स्थान पर चले गये।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम दूसरी रीति से विस्तार-संयुक्त शिवजी का विवाह वर्णन करते हैं। अर्थात् जिस प्रकार शिवजी अद्भुत रूप धारण करके गिरिजा को ब्याहने गये। जब गिरिजा तरुण हुईं तो मैना ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा-ब्याह करने के योग्य है। तुम एकलक्ष पर्वत के राजा हो। जैसे तुम हो वैसा ही पति गिरिजा के हेतु ढूँढ़ो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमारे सौ पुत्र हैं परन्तु एक ही लड़की है। हिमाचल ने कहा कि जो उत्तमोत्तम होगा उसके सङ्ग हम गिरिजा का ब्याह करेंगे। यह कह राज्य सभा में आये और अपने मंत्रियों से पूछकर पुरोहितजी को कहा कि तुम गिरिजा के निमित्त अच्छा-सा पति ढूँढ़ो। पुरोहितजी गये। प्रथम इन्द्र-लोक में जाकर उसकी सुन्दरताई देखी, प्रसन्न हुये और विवाह के वास्ते कहा। परन्तु इन्द्र ने उत्तर दिया कि गिरिजा ने शिवजी के निमित्त अवतार लिया है, तुम क्या बकते हो ? क्या तुम चाहते हो कि हम नरक-गामी हों। उसके पीछे पुरोहित अग्निलोक में गये और यही उत्तर पाया। इसी प्रकार जहाँ-जहाँ वह गया, वहाँ यही उत्तर पाया। किसी ने न माना और सबने गिरिजा को सबकी माता विचार कर पुरोहित पर क्रोध किया। अन्त में पुरोहितजी सबके बताने से विष्णु की शरण में आये। विष्णुजी ने भी न माना और कहा कि हिमाचल से यह कहना कि तुम लड़की से पूछो तुम्हारा पति कौन है। जिसको वह बतावे, वही उसका पति होगा। यह सुनकर पुरोहितजी पलट गये। सब समाचार हिमाचल से कह दिया और गिरिजा अति प्रसन्न हुई।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! हिमाचल ने एक सभा में गिरिजा को बुलाया। जैसा कि विष्णुजी ने पुरोहित से कहा था वैसा ही गिरिजा से कह सुनाया। गिरिजा ने लज्जित होकर उत्तर दिया कि जो तुम हमारे वाक्य को मानो और सौगन्द खावो निश्शङ्क मैं अपना पति पुरोहितजी को बता दूँ। उसी के अनुसार वह तिलक चढ़ा आवें। हिमाचल प्रसन्न हुआ। तब गिरिजा ने पुरोहित को अलग ले जाकर कहा कि कैलाश पर्वत जिसके बराबर तीनों लोक में कोई स्थान नहीं है, वह सबसे उत्तमोत्तम है। वहाँ शिव रहते हैं जिनका सब तप करते हैं। उनके साथ में ब्याह करना चाहती हूँ। इसलिये पुरोहितजी चले और एक नाई को साथ लिया। परन्तु उससे भी इस बात को गुप्त रक्खा। शिवजी को कैलाश पर्वत पर बड़ के वृक्ष के नीचे देखकर दूर ही से प्रणाम किया। उस समय शिवजी ध्यान में थे। दोनों बैठे रहे। परन्तु नाई ने पुरोहितजी पर बहुत क्रोध किया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह कहने लगा कि तुमने क्यों मुझको ऐसे निर्जन स्थान में लाकर डाल दिया। ऐसे दैत्यों से जो चारों ओर दिखाई देते हैं, काहे को प्राण बचेंगे। यहाँ से तुरन्त भागो कि गिरिजा के लिये और पति ढूँढ़ें। यह मनुष्य गिरिजा के पति होने के योग्य नहीं। पुरोहितजी ने कहा कि क्या बकवाद करता है, चुपकर। शिवजी ने पुरोहित की दृढ़ता देखकर और गिरिजा की प्रीति स्मरण करके ध्यान का त्याग किया। तब पुरोहितजी ने हाथ जोड़-कर प्रार्थना की कि गिरिजा आपके सङ्ग विवाह करना चाहती है। उसके सब गुण, सुन्दरता और कोमलता आदि वर्णन किये। पुरानी कथा सब सुना दी। शिवजी ने कहा कि तुमको ऐसी बात कहना उचित नहीं क्योंकि हिमाचल तो बड़ा राजा और द्रव्यवान् है। हम निर्धन हैं। यों भी कहा है कि मित्रता, शत्रुता और विवाह यह सब अपने तुल्य मनुष्यों में करने योग्य हैं। प्रथम तो मैं त्यागी, दूसरे मेरे पास न तो घर और न कोई सेवा करनेवाला है। गिरिजा मुझको अपना पति बनाकर क्या सुख उठावेगी। वरन् भाँग घोटते-घोटते दुःख पावेगी। गिरिजा राजपुत्री है। इसलिये उसे किसी राजा के सङ्ग विवाह करना उचित है। सिवाय इसके तुमको भी तो कुछ द्रव्य आदि न मिलेगा। केवल हमारी भस्म मिल सकती है। पुरोहितजी ने कहा कि धन्य भाग हमारे जो हमको आपकी भस्म मिले। यह कहकर पुरोहितजी ने शिवजी के तुरन्त ही तिलक चढ़ा दिया। शिवजी भी अति प्रसन्न हुये। परन्तु नाई को यह बातें भली न भासी। जब पुरोहितजी ने जाना चाहा तो शिवजी ने थोड़ी-सी राख देकर बिदा किया। इसी प्रकार नाई को भी भस्म दे दी। यद्यपि पुरोहितजी बहुत प्रसन्न हुये, पर नाई को बहुत क्रोध हुआ। उसने कहा कि हे पुरोहितजी! तुमने बहुत बुरा कार्य किया कि राजा हिमाचल की बेटी को एक अवधूत के सङ्ग ब्याहना चाहा। तुमको कुछ लोभ है जो किसी राजा के यहाँ गिरिजा का तिलक होता तो क्या आज की तरह हमारी राह कटती। शिवजी ने तो एक मुट्ठी राख दे दी और फिर मुँह से भी कुछ भले प्रकार न कहा। हमारे घर में ऐसी बहुत सी राख है। जो तेरे घर में ऐसी राख नहीं है तो ले जा। हमको तो राह का खर्च भी न दिया। अब हम किस प्रकार पहुँचेंगे। नहीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मालूम हमको राजा क्या दण्ड देगा। चाहे तुम ब्राह्मण अथवा पुरोहित होने से बच जावो परन्तु मैं यह सब बातें कहकर जो तुमने की हैं, तुम्हारे ही शिर धरूँगा। यह कहकर नाई ने बड़ा क्रोध किया और भस्म को खोलकर फेंक दिया। पुरोहितजी के घर में उस भस्म के प्रभाव से संसार भर के रत्न उत्पन्न हुये। एक दिन नाई की स्त्री पुरोहितजी के घर आई, देखा कि सुख की सर्व सामग्री है और जब पुरोहितजी की स्त्री से ऐसे द्रव्य का कारण सुना तो अपने पति से कहा। नाई ने बड़ा झगड़ा किया इस द्रव्य का भाग हमको दो। पुरोहित ने कहा फिर तू क्यों उसके पास नहीं जाता, जिसने पहिले भस्म दी थी। नाई गया परन्तु निराश चला आया।

अठारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब हिमाचल ने पुरोहित और नाई का झगड़ा सुना तो उन्होंने दोनों को बुलाकर कहा कि जहाँ पर तुम गिरिजा के निमित्त वर ढूँढ़ने गये थे, वहाँ की कुछ वार्ता वर्णन करो। पुरोहितजी ने कहा कि आपकी आज्ञानुसार हम गिरिजा के निकट गये और फिर गिरिजा की आज्ञा पाकर कैलाश पर्वत पर पहुँच कर शिवजी का तिलक कर आये। शिवजी का पूजन किया और उनकी बड़ी स्तुति करके कहा कि तीनों लोक तुम्हारे सेवक हैं सो सिंह आदि जीव भी उनकी सेवा कर रहे हैं। वह हर प्रकार से गिरिजा के पति होने योग्य हैं। इसी प्रकार पुरोहितजी ने शिवजी की अधिक महिमा बखानी और भस्म लेकर अपने घर सिधारे। जब नाई आया तब उसने अपने शरीर को सिकोड़ लिया और हाय करके शोकवान् हो बोला कि आपके पुरोहित ने सब काम बिगाड़ दिये। हमको एक बड़े पर्वत में ले गया जिसके चढ़ने में मैं बहुत दुःखी हो गया। वहाँ ऐसा शून्य स्थान था कि एक मनुष्य भी दिखाई न दिया। एक मनुष्य केवल दिखाई दिया जिसका स्वरूप अवधूत था। वह बिना वस्त्र, बिना घर का योगी था और ध्यान में डूबा हुआ था। पुरोहित ने बिना पूछे तिलक चढ़ा दिया। यद्यपि मैंने मना किया परन्तु उसने न माना। उसके पास सिवाय एक बैल के और कुछ द्रव्य आदि न था। अब जो उचित और अच्छा हो, वह कीजिये। यह कहकर नाई अपने स्थान को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सिधारा। यद्यपि हिमाचल को कुछ खेद हुआ पर मैना को बहुत शोक और चिन्ता उपजी। उसने हिमाचल से कहा कि हम सुनते हैं कि पुरोहितजी ने एक भिक्षुक के सङ्ग गिरिजा का विवाह करना चाहा है। वह अकेला अवधूत है। उसका नङ्गा शरीर है। वह निर्बल और भद्दा है। मेरी पुत्री जो ऐसी सुन्दर है, उसका विवाह ऐसे पति के साथ कैसे हो सकता है। हिमाचल ने अपने मित्रों से यह सब कहा। किसी ने तो कहा कि धन्य तुम्हारे भाग्य जो ऐसा पति गिरिजा को मिला। किन्तु अन्य पुरुषों ने कहा कि ऐसा विवाह करना उचित नहीं है। गिरिजा का विवाह किसी राजा के साथ होना चाहिये। हिमाचल ने कहा कि जो भगवत् की इच्छा होती है, वही होता है। फिर हिमाचल ने पहिले का वृत्तान्त, जिस प्रकार से सब देवता गिरिजा के ब्याह से निषेध करते थे और फिर विष्णुजी की आज्ञानुसार गिरिजा की अभिलाषा से पुरोहितजी को भेजा था, सब कह सुनाया। फिर कहा कि देखो शिवजी की भस्म से अब हमारे पुरोहितजी के घर में किसी वस्तु की कमी नहीं है। अब जो हमको उचित हो, वह कहो। हम उसी के अनुकूल करेंगे।

उन्नीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! ऐसी बातें हिमाचल की सुनकर सब पुरुष आश्चर्यवान् हुये। कुछ मनुष्यों ने कहा कि विवाह करना उचित है और अन्य मनुष्यों ने विवाह करना वर्जित बताया। अन्त में बुद्धिमान् और विद्यावान् पुरुषों ने कहा कि हे हिमाचल! तुम शिवजी को एक पत्र लिखो कि अच्छी-सी बरात लावें वरन् गिरिजा के सङ्ग विवाह न होगा। जो वह योगी और तपस्वी होंगे तो शीघ्र ही तुम्हारी बात को अंगीकार कर भारी बरात लावेंगे। उस समय ब्याह करना क्या अयोग्य है। इस बात को हिमाचल और मैना ने मान लिया और शिवजी को एक चिट्ठी तिथि संयुक्त और बरात लाने को लिखी। उसमें यह भी लिखा कि तुम्हारी बरात में देवता आदि मुनीश्वर, शशि, नाग और सनकादिक सब बरात के संग आवें। ब्रह्माजी और विष्णुजी भी शीघ्र आवें वरन् तुम्हारा विवाह गिरिजा के सङ्ग न होगा। फिर वही पुरोहितजी लग्न की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सामग्री लेकर शिवजी के पास गये। शिवजी ने पुरोहितजी की ऐसी अभिलाषा पाकर पहिले ही से देवताओं की सभा जमा कर रक्खी थी जिसके तुल्य और कोई न होगी। सब मनुष्य ऐसी सामग्री शिवजी की देखकर बहुत प्रसन्न हुये। लग्न चढ़ाई और अपना नेग पाया। शिवजी से आज्ञा लेकर हिमाचल के निकट आया और शिवजी की महिमा बखानी। नाई की निन्दा की और कहा कि आपकी सौगन्द है कि गिरिजा का पति अतिसुन्दर और तेजस्वी हैं। यह सुनकर हिमाचल और मैना सब बान्धवों सहित अति प्रसन्न हुये, भिक्षा बाँटी और सुख को प्राप्त हुये। गिरिजा और नगर के लोग भी अति प्रसन्न हुये।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने सर्वसामग्री इकट्ठी करके एक घर बरात के वास्ते बहुत चौड़ा और लम्बा बनाया। जहाँ एक ओर तो देवीजी और दूसरी ओर सदाशिवजी थे, वहाँ किस बात की न्यूनता हो सकती है। अब शिवजी की वार्त्ता सुनिये कि शिवजी ने हिमाचल के पत्र को पढ़ा और हँसे। हिमाचल के अहंकार को जानकर यह चरित्र किया कि आप एक वृद्ध बन गये और इसी प्रकार अपने बैल को भी बुड्ढा बना लिया। उसका भयंकर रूप बनाकर लाद लिया और डमरू व श्रृङ्गी को बजाकर अलख-अलख जिह्वा से कहने लगे। हिमाचल के नगर में जाकर एक बाग में उतरे। फिर श्रृङ्गी और डमरू का शब्द किया। हिमाचल जोकि बरात की राह देखता था इससे उसने बहुत से मनुष्य बरात देखने को भेजे। वह सब और गिरिजा की सखियाँ शिवजी के पास जो अवधूत बैठे थे, आईं और कहा कि तुमने बरात तो नहीं देखी। शिवजी ने उत्तर दिया कि हमहीं तो दूलह हैं और हमहीं बराती हैं और कोई नहीं है। यह सुनकर गिरिजा की सखियों ने बहुत सी गालियाँ दीं और कहा कि हमारे राजा की बेटी को ऐसा कहता है। फिर ऐसा न कहना नहीं तो मारा जावेगा। परन्तु सत्य कह कि तूने बरात तो नहीं देखी। हम तेरी सेवा करके तुझको भिक्षा दिलवा देंगी। अच्छे भोजन देंगी और तेरी गुदड़ी को फेंककर भले वस्त्र पहिनावेंगी। और जो तेरे साथ लड़के हैं,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उनके लिये भोजन देवेंगी। पर शिवजी ने फिर यही कहा और कहा कि तुम गिरिजा से यह कह देना कि हम वही हैं। जिनकी लग्न पुरोहित रखाकर आया था। गिरिजा हमको अच्छे प्रकार जानती है। वह तुमको सब कुछ देवेंगी। यह सुनकर सब स्त्रियों ने शिवजी के पैर पकड़कर घसीटा। बहुत लात और घूँसे मारे। अन्य स्त्रियों ने नखों और चुटकियों से पवित्र शरीर को काटा। किसी ने बैल को लकड़ी से मारकर भगा दिया। लड़के जो उनके सङ्ग थे, वह इस प्रकार मारे गये कि वर्णन नहीं हो सकता। उन्होंने यह सब कुछ इस कारण किया था कि वह सब माया में भूलकर शिवजी को न पहिचाना था। शिवजी ने कहा कि धन्य है। हे स्त्रियो! ससुराल में ऐसी मार खाना भला है। तुम्हारा संकोच करना योग्य है। जब वह स्त्रियाँ मारपीटकर चली गईं तो बैल और शनैश्चर देवता और शुक्रजी रुदन करते हुए शिवजी के निकट आये। शिवजी बहुत मुसकराये और कहा कि कुछ खेद न करो, ससुराल में इस प्रकार का सुख मिलता है। परन्तु जब वह लड़के इस बात से प्रसन्न न हुये तो उस समय शिवजी ने अपनी झोली से नाना प्रकार की भीड़ें निकाल कर स्त्रियों के पीछे छोड़ दी जिन्होंने उन स्त्रियों का कोमल शरीर काट-काट कर दुःखी कर दिया। वह सब चिल्लाती हुई घर आईं। जोकि उनके शरीर सूज गये थे पर वह कामदेव की स्त्रियों के सदृश मालूम होने लगीं और इसी अवस्था से गिरिजा के निकट आईं। जो स्त्रियाँ उनके सङ्ग नहीं गई थीं उनकी ऐसी दुर्गति देखकर बहुत प्रसन्न हुईं और पूछा कि ऐसी गति किसने की है। गिरिजा पहिले तो हँसी और फिर कृपादृष्टि से उनकी ओर देखा तो वह फिर वैसी ही हो गईं। गिरिजा ने पूछा कि यह क्या है? उन्होंने उत्तर वही दिया जिस प्रकार उनकी गति हुई थी। गिरिजा शिवजी के चरित्र को देख श्रवण कर हँस पड़ी।

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! जो मनुष्य हिमाचल की आज्ञानुसार बरात को ढूँढ़ने गये थे, वह लौट आये। उन्होंने कहा कि बरात कहीं नहीं मिलती। हिमाचल दुःखी हुये परन्तु गिरिजा की सखियों की दुर्गति सुनकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हिमाचल ने यह विचार किया कि वही गिरिजापति होगा। हाय-हाय करके कहा कि ब्राह्मण आदि तो शिवजी की बड़ाई करते थे। यह क्या बात है कि वह अकेले ऐसा स्वरूप बनाकर आये हैं। हाय-हाय क्या करते क्या हो गया। मुझको ब्राह्मण ने धोखा दिया। मेरी ऐसी पुत्री को इस प्रकार का अवधूत ब्याहने आया है। हम ऐसे राजा होकर ऐसे भिक्षुक के सङ्ग गिरिजा का विवाह न करेंगे। हिमाचल और मैना ऐसी-ऐसी बातें कहकर बहुत चिन्तावान् हुये। भाई-बान्धव जो हिमाचल के यहाँ आये थे, वह भी सब शोकवान् हुये। कहा कि हाय यह जो हमने सामग्री इकट्ठी की थी, इसको अब क्या करें। गिरिजा ने हिमाचल आदि का चित्तभ्रम देखकर विजया सखी को बुलाया कि तुम इसी समय शिवजी के निकट जावो परन्तु निर्भय रहना और हाथ जोड़कर मेरी ओर से प्रार्थना करना और मेरी चिट्ठी को दे देना। जो कुछ उत्तर देवें उसको मेरे पास लाना। वह सखी उसी समय सदाशिवजी के निकट गई और गिरिजाजी की लिखी चिट्ठी को शिवजी के हाथ में देकर कहा कि जो आज्ञा दो, वह मैं गिरिजा से कहूँ। गिरिजा ने अपनी चिट्ठी में लिखा था कि मैं आपको जानती हूँ कि आप परब्रह्म हैं। आप दया कीजिये क्योंकि सर्व मनुष्य शोक में डूबे हुये हैं और मेरे माता-पिता बहुत चिन्ता में हैं। वह आपकी बड़ाई को नहीं जानते। आप अपने रूप को जो अति सुन्दर और कोमल है, धारण कीजिये। आपकी माया को कौन जान सकता है। इस समय सब मनुष्य मुझ पर क्रोध करते हैं और कहते हैं कि यह लड़की क्या तमाशा है। यह मेरा अपमान दूर कीजिये और बरात और सामग्री के साथ आइये और मेरे पुरोहित की लाज रखिये। उससे सब ग्लानि करते हैं। शिवजी ने पत्र पढ़ और उत्तर लिख सखी को विदा किया और गिरिजा अपने मन का उत्तर पा सन्देहरहित और सुखी हुई।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने बहुत दुःखी हो गिरिजा को अपने निकट बुलाया और कहा हे बेटी! तूने यह क्या किया कि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवताओं को छोड़ ऐसा पति स्वीकार किया। हमको दुःख दिया। विवाह क्या यह तो एक तमाशा हो रहा है। मुझको लोग क्या कहेंगे। मैं प्रतिज्ञा के कारण कुछ नहीं कह सकता। तुम्हारी माता कुछ चिन्तायुक्त हैं कि प्रतिष्ठा गई। हम विष्णु का वचन सत्य समझ उठ गये। पर सबसे अधिक पुरोहित ने धोखा दिया। जब कि मैं विचार करता हूँ कि मेरी लड़की अवधूत के साथ ब्याही जावेगी तो मैं शोकसागर में डूब जाता हूँ। बड़ा खेद है कि मैंने तो ऐसी बड़ी सामग्री इकट्ठी की और तुम्हारे पति के साथ केवल दो कुरूप शिष्य बरात में आये हैं। बैल जो साथ है अति निर्बल और भङ्ग-धतूरा आदि मादक वस्तु और नाना प्रकार के विषों से लदा हुआ है। क्या अच्छी बरात आई है और क्या अच्छा उत्सव होगा। ऐसी बातें हिमाचल की सुन गिरिजा हँसकर कहने लगी कि हे हिमाचल! कुछ चिन्ता मत करो। हर प्रकार से शुभ होगा। जो इस समय लीला हो रही है, वह सब आनन्द देगी। विष्णु का वचन कुछ भी झूठा न होगा। लोग तुम्हारी स्तुति करेंगे और तुम्हारे प्रताप को सर्वोपरि जानेंगे। लोक में तुमको बड़ा यश प्राप्त होगा वरन् विष्णु, ब्रह्मा और देवता आदि तुम्हारा बड़ा सम्मान करेंगे। इसका अन्त बहुत ही शुभ होगा। अब तुमको उचित है कि उस योगी के निकट जाओ और हाथ जोड़कर बिनती करो। तुम्हारी इच्छा को वह पूरा करेंगे। वे ऐसे योगी हैं कि संसार को क्षण भर में उपजा सकते हैं और निमेष भर में ही पालन करके एक आन में प्रलय कर सकते हैं। इतना कह गिरिजा घर के भीतर चली गई और मैना को बहुत स्तुति कर समझाया। हे नारद! शिव गिरिजा की लीलाएँ असंख्य हैं। वे दोनों एक ही रूप हैं। उनमें कुछ भेद नहीं हैं। जिस तरह कि वचन और अर्थ में भिन्नता नहीं है। उसी प्रकार शिव गिरिजा में भी भेदभाव न समझना चाहिये। उनकी जो इच्छा होती है, वह लीला करते हैं, जिसको कोई नहीं समझ सकता। फिर हिमाचल ने सब बान्धवों और जाति के मनुष्यों को बुलाकर जो कुछ गिरिजा ने कहा था, सबको कह सुनाया और कहा कि यह योगी एक निर्बल बैल साथ लिये अवधूत का स्वरूप रचे हुये आया है। उसके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

साथ कोई नहीं है। जो तुम सबकी मति हो वह किया जावे। यह सुनकर सब साथ बोल उठे।

तेईसवाँ अध्याय।

सब गिरि अर्थात् पहाड़ों ने कहा कि हे हिमाचल ! उस योगी के निकट जाकर पहिले उसकी परीक्षा करो। जो कोई उसमें बुराई न हो तो गिरिजा के विवाह देने में क्या हानि है और यही अनुमति सबों ने दी। हिमाचल ने सन्देह छोड़ शिव के पास जाने का पक्का उद्योग किया। कई मनुष्य साथ लेकर के चले और निकट जाकर हाथ जोड़ खड़े हो शिव का आदर किया। तब शिव ने यह लीला की कि शनैश्चर और शुक्र जो शिष्यों की भाँति साथ थे, रोते हुये शिव के पास आये। शिव ने रोने का कारण पूछा और कहा कि जावो खेलो कूदो पर मेरे पास से दूर मत जाना क्योंकि मैं अकेला निर्धन मनुष्य हूँ। तुम मुझे बड़े परिश्रम से मिले और बैल की रक्षा भी किये जान मुझे बहुत नशे से कुछ दिखाई नहीं देता। इसी प्रकार बहुत-सी बातें उन्होंने नशा पिये हुये लोगों के सामने कीं। पर वह शिष्य न गये और बहुत रोने लगे। फिर शिव ने बहुत रोने का कारण पूछा दोनों ने बाबा-बाबा कहकर कहा कि हम भूख से मरते हैं। अब कुछ भोजन हमको दो। शिव बोले कि हमारे पास तो कुछ भी नहीं है तुमको हम क्या देवें। ठहर जाओ निश्चय है कि हिमाचल के घर बहुत खाना-पीना मिलेगा। जब मेरा विवाह गिरिजा के साथ होगा तब तुमको बहुत भोजन दिया जावेगा। दोनों चेले बोले तब तक हमको सन्तोष नहीं आता क्योंकि अभी विवाह में विलम्ब है। हमतो बहुत दिन से भूखे हैं। यह सुनकर हिमाचल ने शिव से कहा कि जो आज्ञा दो तो हम आपके दोनों शिष्यों को भोजन करावें। शिव ने कहा कि बहुत अच्छा आप ले जाइये। हिमाचल ने दोनों को किसी सेवक के साथ कर दिया कि इनको भोजन करा लावो। दोनों शिष्य बोले कि बिना तुम्हारे हम भोजन करने नहीं जावेंगे। क्योंकि हम तो ऐसे भूखे हैं और वहाँ हमको कोई अच्छी तरह से भोजन न करावेगा। जो घरका स्वामी आपही चले तो हम जावेंगे। शिव बोले हे हिमाचल ! तुम आप इनको भोजन कराओ। यह बड़े भूखे हो रहे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। अच्छी तरह से इनको भोजन देना और पानी भी पिला देना। यह सुन हिमाचल दोनों को साथ लेकर घर आये और भोजन कराने लगे। वे सब भोजन जो इकट्ठा था, एक ही ग्रास में खा गये और कहने लगे कि हम तो बड़े भूखे हैं। भोजन जल्दी दिलाओ क्योंकि तुम्हारे यहाँ सब रक्खा है। ईश्वर के लिये तुम ऐसे राजा होकर क्या लोभ करते हो। हम भूखे उठे जाते हैं। तुमको बड़ा पाप होगा। हिमाचल रसोई करनेवाले पर बड़ा क्रोधकर कहने लगा कि तुम क्यों ऐसी कृपणता करते हो। हमारे यहाँ तो ढेर के ढेर रक्खे हैं। जल्दी लाकर खिलाओ। जब बाकी भोजन आया तो उसको एक ही ग्रास में खा गये और पानी भी न छोड़ा। चिल्लाकर फिर कहा कि हमको क्यों नाज नहीं देते हो। हम तो मारे भूखों के मरे जाते हैं। हिमाचल ने अति चिन्तित हो अपने लोगों से कहा कि अन्न का जो पर्वत लगा है, इन दोनों को बतला दो। उन दोनों ने वह भी खा डाला और जब कुछ शेष न रहा तो रोते हुये अपने गुरु की सेवा में गये। शिव उन दोनों को देखकर हँसे और अपने झोले में से एक बूटी निकाल कर खिलादी तो वह तुरन्त तृप्त हो गया।

चौबीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब दोनों चेले हिमाचल के घर से गये तब सब लोग हिमाचल के द्वार पर आकर इकट्ठे हुये और बोले कि अब तो नगर में अन्न का लेश भी नहीं रहा। हम क्यों कर जीते रहेंगे। अब वह उपाय करो जिसमें सर्व प्रजा जीती रहे। हिमाचल बोले कि वास्तव में बड़ा उपद्रव मचा है। हमारे नगर के तट पर एक उद्यान में एक बूढ़ा योगी, जिसके साथ केवल एक बैल है, शिष्यों समेत उतरा है और मेरी लड़की के साथ विवाह की इच्छा रखता है और सर्व वृत्तान्त लड़कों के साथ लाने का वर्णन किया और अतिनम्रता और विनयपूर्वक सब लोगों से सम्मति की कि अब क्या करें। सबों ने कहा कि इसका भेद पुरोहित या गिरिजा से पूछना चाहिये। हम लोग एक मति हो निश्चय करते हैं कि जो इस योगी में कोई दोष होता तो गिरिजा क्यों ऐसे पति की इच्छा रखतीं। निदान जब पुरोहित वहाँ आया तो हिमाचल ने पूछा कि तुम सत्य-सत्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहो कि यह दोनों शिष्य साथ लिये हुये कौन हैं? पुरोहित ने उत्तर दिया कि मैं गिरिजा के पता बताने से इस योगी को तिलक कर आया और सब उनकी सिद्धता कह सुनाई। उसने कहा कि यह तपस्वी शिव हैं और तुम्हारी लड़की गिरिजा पूर्णकला से आदि शक्ति भवानी हैं। किसी मुख्य कारण से तुम्हारे घर उपजीं क्योंकि जहाँ-जहाँ मैं गया वहाँ-वहाँ मुझे यही उत्तर मिला कि हम सृष्टि की माता के साथ क्योंकर विवाह करें। यहाँ तक कि विष्णु ने भी निषेध करके मुझसे जो कुछ कहा वह तुम सबको प्रकट है। जो इससे अधिक कुछ सुना चाहते हो तो गिरिजा से पूछो। वह सब जानती होंगी। तब और सबों ने गिरिजा से पूछना चाहा। गिरिजा ने उस सभा में अपनी माता मैना और दो सखियों के साथ पहुँचकर सबको प्रणाम किया। हिमाचल ने आदरपूर्वक गिरिजा से पूछा।

पच्चीसवाँ अध्याय।

हिमाचल ने गिरिजा से कहा कि यह क्या दशा और चरित्र हुआ है जिससे सब लोग दुःखसागर में मग्न हैं। वह योगी कौन है कि जिसके शिष्यों ने सब भोजन खा डाला और पानी पिया। हमारे सन्देह को दूर करो और मुख्य वृत्तान्त बताओ। जोकि गिरिजा सभा में सब हाल कहते हुये लज्जित होती थी इसलिये हे नारद! तुम उसी समय सभा में जा पहुँचे और फिर तुमने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त जा सुनाया। तुमने कहा कि हे हिमाचल! कुछ सन्देह की बात नहीं है। तुमको और तुम्हारी स्त्री को धन्यवाद है कि गिरिजा आदिशक्ति उत्पन्न हुई। वह ब्रह्मा विष्णु और महेश की भी माता हैं। वह सबका प्रलय करती हैं। उनकी महिमा अपरम्पार है। उनको तुम आदिशक्ति समझो जो अब तुम्हारे घर में सखियों को साथ लिये हुये फिर रही हैं। उन्होंने प्रेम के वश में पड़कर तुम्हारे घर अवतार लिया है। और यह योगी हरनाम शिव तुम्हारी लड़की के पति हैं जो ब्रह्मा-विष्णु के पिता और सर्व सृष्टि के उपजाने के उपरान्त नष्ट करनेवाले हैं। इसके पश्चात् सब मूलवृत्तान्त वर्णन किया और कहा कि गिरिजा उनको अच्छी तरह से जानती हैं। अब उत्तम है कि सब तुम उन्हीं की शरण में चलो। वह तुम्हारे अन्न आदिक को जो गुप्त हो गया है पूर्ववत्

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घरों में भर देंगे। जो-जो तुम्हारी इच्छा होगी उसको वे पूरा कर देंगे और अपना स्वरूप ऐसा बनावेंगे जिसको देखकर तुम सब आश्चर्य करोगे। बरात भी तुरन्त तत्पर हो जावेगी जिसमें ब्रह्मा और विष्णु आदि सेवक बनकर आवेंगे। हे नारद ! इस प्रकार तुमने सबको समझाया और अपने लोक को चले गये और हिमाचल सब लोगों समेत अति प्रसन्न हुआ।

छब्बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल सबको साथ लेकर शिव-सेवा में पहुँचे। सबने हाथ बाँधकर स्तुति की। तब तो सदाशिवजी सबकी ओर एकदृष्टि से देखकर हँसे और कहा कि हे हिमाचल! क्या चाहते हो? हिमाचल ने अपनी सब इच्छा वर्णन की और कहा कि हमने आपकी लीला कुछ नहीं जानी, क्षमा कीजिये। मेरा गर्व सब जाता रहा क्योंकि आपने कृपादृष्टि से अपना तेज दिखाया कि मैं चैतन्य रहूँ। आपका वर्णन वेदों से भी नहीं हो सकता। जो नारद ने हमको आश्चर्यरूपी सागर से न निकालते तो हम सब निर्बुद्धिता से इसी आश्चर्य और चिन्ता में मग्न रहते, क्योंकि आपने अपने को ऐसा छिपाया। मैंने अहंकार छोड़ दिया। अब गिरिजा के साथ विवाह करके सबके दुःख दूर कीजिये। आपके दोनों चेलों ने नगरभर का अन्न खा डाला है इसलिए लोग बड़े दुःखी हैं। सो इस दुःख को भी दूर कीजिये। मेरी प्रतिष्ठा आपके हाथ है। मैं आपकी शरण आया हूँ। तीनों लोक तुम्हारे वश में हैं, बरात की अच्छी सामा रचिये तथा अच्छे शरीर और वस्त्रों को धारण कीजिये। अपनी माया को खींच लीजिये। इसमें गिरिजा की हँसी और अपमान होता है। अब इससे अधिक उचित नहीं। हिमाचल से यह वचन सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये। उन्होंने कहा कि तुम सब विदा हो जाओ। तुम्हारे सब मनोरथ पूरे होंगे। तुम सामग्री इकट्ठी करो। तुमको अपने राज्य और सामग्री के जोड़ने का बड़ा अहंकार हो गया था। उसके नाश करने को हमने यह लीला रची। अब तुम जाकर हमारी अगवानी के लिये बाट देखो। यह सुन हिमाचल चले गये और नगर में ज्यों की त्यों सब सामग्री तत्पर हो गई। यह देखकर नगरनिवासी और हिमाचल अति प्रसन्न हुये। मैना ने गिरिजा की ओर देखा और बहुत प्रसन्न हुई।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फिर हिमाचल सब सामग्री उपस्थित करने लगे और अगवानी के लिये चले। शिवने हिमाचल को विदा करने के उपरान्त श्रृंगीनाद करके अपने डमरू को बजाया जिसके शब्द से सम्पूर्ण देवता, मुनीश्वर और पीतवस्त्र पहिने गणों समेत विष्णु और इन्द्रादिक सर्वसृष्टि समेत पहुँचे। शिव ने सब कपड़ों से सजकर दूलह के समान अपना स्वरूप बनाया। ऐसा स्वरूप देखकर सबको प्रसन्नता प्राप्त हुई।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! हिमाचल अपने भाई बान्धव और देश की प्रजा समेत अगवानी के लिये आगे पहुँचा और ऐसी सजी-सजाई और धूमधाम से बरात देखने से आनन्दस्वरूप हो गया। अब उसे अपनी सामग्री तुच्छ मालूम होने लगी। वह दौड़कर शिवके चरणों में गिरा। शिवजी ने हाथ पकड़ा और सब हिमाचल के द्वार की ओर गये। उस समय सब रीति भाँति उत्तम रीति से पूर्ण हुई और नगर की स्त्रियाँ जिस काम में बैठी थीं, उसको तुरन्त छोड़ बरात देखने को चलीं। यहाँ तक कि जिस स्त्री का पति भोजन कर रहा था तो उस स्त्री ने इस बात की कुछ परवाह न की, परन्तु घर से बाहर निकल पड़ी और शिव को ऐसे सुन्दर स्वरूप से देख प्रेम में बँधकर टकटकी बाँधकर यकटक देखने लगीं। वे सब गिरिजा के भाग्य को बार-बार सराह कर शिवजी की बरात पर फूलों की वर्षा करने लगीं। जब इस प्रकार शिव बरात समेत द्वार पर पहुँचे तो हिमाचल और मैना ने अहंकार छोड़ बहुत धन द्रव्य शिव को दिया। फिर जो घर बरात के ठहरने को नियत हुआ था, उसमें बरात ठहरी और गिरिजा ने सिद्धि को भेज दिया, जिससे किसी वस्तु की कमी न रही और फिर रीति भाँति के करने और दानादिक के पीछे नाना प्रकार के व्यञ्जन बरात को खिलाये। हे नारद! जिन चरणों के ध्यान में विष्णु और हम रात दिन मग्न रहते हैं, वे चरण हिमाचल ने अपने हाथों धोये व चारों प्रकार के भोजन (भक्ष्य, भोज्य, चोष्य और लेह्य) खिलाये। जो प्रसन्नता कि हम सबको भोजन करने के समय हुई, वह वर्णन से बाहर है। फिर भोजन के उपरान्त पान बटे तथा हिमाचल की ओर से विनय और नम्रता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के वचन कहे गये। जब बरात अपने उतरने की जगह में पहुँची तब हिमाचल के भाई बन्धों ने भोजन पाया और शिव के स्थान में नाना प्रकार के नृत्य-गीत होने लगे, जिसको सुन व्यसनी लोग प्रसन्न होते थे। उस समय लोगों के मुखों पर शिव और गिरिजा की स्तुति थी।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय हिमाचल के पण्डित ने आकर लग्न का मुहूर्त बताया। विष्णु और हम शिवको लेकर हिमाचल के घर गये। उस समय शिव के रूप का क्या वर्णन करें कि शिव का शरीर सफेद कपूर अथवा कुन्द के फूल के समान था। उसपर सर्व वस्त्र धारण किये, शिर पर मौर रक्खे, माथे में चन्दन दिये, सर्व भूषणों से अलंकृत, शिर से पाँव तक सजे, जिसका ध्यान करने से दोनों लोक का आनन्द प्राप्त हो, करोड़ों सूर्य और चन्द्र की दीप्ति करके युक्त और प्रभा का भरा हुआ रूप था और वृषभ जिस पर महाराज आरूढ़ थे, उसकी सजावट और सौन्दर्य को हम कहाँ तक कहें। जब घर के भीतर गये तो हमने शिव की ओर से और हिमाचल के पुरोहित ने मिलकर सब रीतें पूरी की। हिमाचल ने अर्घ्य मधुपर्क सहित शिव को दिया और दो कपड़े भी शिवको भेंट दिये। हमने उसी स्थान पर गिरिजा को बुलाया। तब पुरोहित ने होम किया और उसी को साक्षी करके हिमाचल ने कन्या दान कर दिया। शिव ने जब कि गिरिजा के हाथ को पकड़ा तब सब लोग प्रसन्न हो गये और हिमाचल के सब कुटुम्बियों ने दोनों के चरणों की पूजा की। दोनों ओर के सेवक पारितोषिकों से तृप्त हो गये। भाँवरि के हो जाने के उपरान्त दोनों एक सुनहरे सिंहासन पर बैठ गये और जो कुछ बातें बाकी रह गई थीं, वह सब हमने पुरोहित समेत करा दीं। शिव ने हमारी आज्ञा से गिरिजा के मस्तक में सिन्दूर दे दिया और हम दोनों ने अपना-अपना पारितोषिक पाया और आशिष दी। इस विवाह का आनन्द तीनों लोक में छा गया। फिर स्त्रियाँ शिव को अन्तःपुर में ले गईं और वहाँ जो नियत रीतें हैं, सब शिव ने कीं। हिमाचल ने दूसरे दिन फिर बरात को ठहराया और इसी प्रकार बरात का आदर करके अन्त को शिव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिरिजा को बिदा किया और बरात कैलाश पर्वत पर पहुँची। बड़े उत्सव के उपरान्त सब देवता आदि बिदा होकर अपने-अपने घरों को गये। विष्णु और हम भी बिदा हुये। प्रतिदिन शिव और शक्ति का वर्णन करके प्रसन्न होते थे।

उन्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एक समय में तुम लोगों की भलाई के लिये हिमाचल के निकट पहुँचे। हिमाचल ने गिरिजा को बुलाकर तुम्हारे चरणों पर डाल दिया और कहा कि तुम इस कन्या के भले-बुरे लक्षण वर्णन करो, क्योंकि तुम सब कुछ जानते हो। तुमने कहा कि यह गिरिजा सब गुणों से भरी हुई; शीलवती, बुद्धिमती, शुभाचरणी और अपने पति को प्रसन्नता देनेवाली होगी और माता-पिता के यश को दुगुना करेगी। इसका पति योगी, निर्गुण, निरहंकारी, नग्न, शरीर, बुरे कपड़े पहिनने-वाला, माता-पिता रहित होगा। यह सुन हिमाचल अति चिन्तित हुआ, पर गिरिजा अति प्रसन्न हुई। क्योंकि ऐसे गुण सुनकर उसने निश्चय किया कि ऐसे तो केवल शिव हैं। अधिकतर वह इस कारण प्रसन्न हुई कि उसको विश्वास था कि नारद का वचन झूठ नहीं होता। यद्यपि गिरिजा प्रसन्न हुई पर माथे से कुछ प्रसन्नता के चिह्न प्रकट न किये और हिमाचल ने नारद से कहा कि हम क्या उपाय करें। तुमने कहा कि भाग्य से क्या वश है। हाँ, हम उपाय बताते हैं जो भाग्य भी सहायता दे अर्थात् जैसे गुण हमने वर्णन किये हैं वैसे गुण शिव में पाये जाते हैं। वही सबसे श्रेष्ठ हैं, उनसे विवाह कर दो। मुझको निश्चय है कि वह सिवाय गिरिजा के और किसी के साथ ब्याह न करेंगे। यह सुन गिरिजा को अति आनन्द प्राप्त हुआ पर चिन्तित होकर मुझसे पूछा कि शिव को तो लोग त्यागी कहते हैं और वे तो सदैव काल, ध्यान, योग में मग्न रहते हैं। सिवाय इसके यह भी प्रसिद्ध है कि शिव ने सती के साथ प्रतिज्ञा की है कि बिन तुम्हारे यह किसी अन्य स्त्री के साथ प्रीति और विवाह न करेंगे। इसलिये मुझे संशय है कि शिव गिरिजा को अङ्गीकार करें या न करें। तब तो तुमने कहा कि अब की सती ने तुम्हारे घर अवतार लिया है। सब हाल तुमने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हिमाचल से कह सुनाया। फिर गिरिजा को उत्तमोत्तम वर देकर तुम चले गये। कुछ दिनों पीछे मैना ने हिमाचल से धीरे से कहा कि गिरिजा के विवाह का यत्न करना चाहिये। जैसे कि गिरिजा सुन्दर है उसी प्रकार का अच्छा पति ढूँढ़ना चाहिये, नहीं तो सब हँसेंगे। हिमाचल बोला कि सूर्य चाहे पूर्व से पश्चिम में उदय हों, पर नारद का वचन झूठ नहीं होगा। सन्देह दूर करके शिव का ध्यान करो और गिरिजा से कह दो कि वह शिव का बड़ा तप करे तब यह मनोरथ सिद्ध हो। मैना ने यह सुनकर बड़ा आनन्द और भरोसा माना। उन्होंने गिरिजा के निकट आकर प्रीति से उसे गोद उठा लिया। उनकी आँखों से आँसू बहने लगे, मुख से कुछ बात न निकलती थी। गिरिजा ने अपनी माता के मन का मनोरथ जाना और कहा कि आज हमने एक स्वप्न देखा है कि मुझसे एक मनुष्य कहता है कि हे गिरिजा! तुम वन में जाकर तप करो जिससे तुम्हारे माता-पिता और तीनों लोकों को आनन्द प्राप्त हो। नारद का वचन झूँठ न होगा। तुम्हारा काम केवल तप से पूरा होगा। जब हिमाचल और मैना ने यह स्वप्न गिरिजा से सुना तो अति प्रसन्न होकर समय के मार्ग देखने में रात-दिन बिताने लगे।

तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक समय शिव ने चाहा कि हम बड़े श्रम के साथ तप करें और अपने नाम को स्मरण करें। यह विचार अपने गणों समेत हिमवान् की ओर चले। जब हिमवान् में पहुँचे तब अपने डमरू को बजाया। वहाँ पर सुरसरि की धारा बह रही थी। उसी स्थान का नाम औषधप्रस्थ अर्थात् औषधों का कोष है। वहाँ कोई रोग नहीं रहता और सदैव बसन्त ऋतु बनी रहती है। पक्षी मधुर ध्वनि करते हैं। वह स्थान उत्तमोत्तम पक्षियों, फलों और नाना प्रकार के रत्नों से पूरित था। ऐसी जगह देखकर शिव तप करने की इच्छा से बैठ गये और अपने स्वरूप के ध्यान में लगे। तीनों प्रकार का प्राणायाम अर्थात् कुम्भक, रेचक और पूरक किया। नन्दि, भृङ्ग आदि गण शिव को ध्यान में लाकर उसी ध्यान में प्रवृत्त हुये। इसी अवसर में हिमाचल बड़ी सजधज

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से शिव के निकट पहुँचे और बड़ी स्तुति की। कहा कि धन्य भाग्य हमारे हैं कि आप यहाँ आये। मुझे जो आज्ञा दी जावे उसकी पालना करूँ। शिव ने हँसकर कहा कि हम तपके निमित्त यहाँ आये हैं। कुछ दिन यहीं रहेंगे। हमारी केवल यही आज्ञा है कि कुछ समय तक हमारे निकट कोई न आवे। यह कह वह चुप हो गये। हिमाचल ने विनय की कि मेरे बड़े भाग्य थे कि आपने अपने शुभ चरणारविन्दों से प्रतिष्ठा दी। इस प्रकार शिव की आज्ञा लेकर वह अपने घर आया और सबसे कह दिया कि जो कोई औषधप्रस्थ पर जावेगा, वह बध किया जावेगा। फिर आप गिरिजा समेत जाकर शिव पर तिल-फूल और पुष्प चढ़ाये और आप गिरिजा समेत स्तुति की और कहा कि आज्ञा हो तो हमारी यह कन्या गिरिजा सखियों सहित आपकी सेवा में रहे। शिव ने शिर से पाँव तक देख विचारा कि संसार में स्त्री उत्तम कार्यों को पूर्ण होने नहीं देती इसलिये स्त्री का पास रखना निषेध किया गया है। कामदेव का उत्तम शस्त्र केवल स्त्री है क्योंकि स्त्री को देखकर कौन ऐसा है जो छल में न आ गया हो स्त्री विष से अधिक है क्योंकि एक क्षणभर भी स्त्री संगति से सम्पूर्ण तप नष्ट हो जाता है यह रोगों की खानि है। हिमाचल से कहा कि स्त्री और तपस्वी से क्या सम्बन्ध है। वह सर्व तप को भ्रष्ट कर डालती है। इसलिये हमको गिरिजा का यहाँ रहना अङ्गीकार नहीं। यह सुन हिमाचल आश्चर्य में हुआ। तब गिरिजा बोली कि हे तपस्वी! तुम्हारा मत यह है कि पुरुष किसी समय में प्रकृति से जुदा नहीं। प्रकृति बिन संसार कुछ नहीं। जो दृष्टि आता है वह सब प्रकृति का रूप है। प्रकृति जड़ और चैतन्य को लपेटनेवाली है। वही संसार को उपजाती, वही फिर पालकर नष्ट कर देती है। तुम अपने को नहीं देखते कि हम कौन हैं? हमको क्या करना है, कौन सुननेवाला, कौन कहनेवाला और कौन चलता है? तुम ये बातें कुछ भी नहीं समझते। फिर गिरिजा ने कहा कि तुम बड़े पुरुष हो और हम भी बड़ी माया हैं। हमारे अधीन तुम्हारा शरीर है। तुम्हारी मति से पुरुष और प्रकृति जुदा है, पर हमारी मति से प्रकृति से मिला है। कहना, सुनना और तप करना सब माया है। जो माया से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अलग है उसको तप करने में क्या भय है। फिर शिव ने कहा कि यह मति जो तुम्हारी है केवल अपने मन से उपजाई है और अनुमानिक है। केवल ब्रह्म सबसे श्रेष्ठ है और माया स्वाधीन नहीं है, वह जड़ है। जो तुमको ऐसा अहंकार है तो उसको क्यों नहीं रोकती हो ? इतना कह शिव चुप हो रहे और हिमाचल स्तुति करने लगा। फिर गिरिजा को उसकी सखियों समेत उसी जगह पर छोड़ गया। गिरिजा अपनी सखियों समेत हर दिन सेवा करती थी। वन से नाना प्रकार के पुष्प आदि तोड़कर शिव पर चढ़ाया करती और हर प्रकार से परीक्षा किया करती। पर शिव का चित्त न डोला। एक दिन गिरिजा को विचार हुआ कि देखिये शिव हमको कब ग्रहण करेंगे। शिव ने मन में जाना और विचार किया कि जो इसी समय गिरिजा को ग्रहण करता हूँ तो इसको बड़ा अहंकार हो जावेगा। इसके सिवाय तीनों लोक में मेरी बड़ी निन्दा होगी। लोग कहेंगे कि शिव ऐसे कामवेग से मूर्ख हो गये। सो जब गिरिजा हमारा बड़ा तप करेगी तब गिरिजा का मनोरथ पूरा करूँगा। यह सोच शिवशंकर ध्यान में मग्न हुए। उसी समय तारक से दुःख पाकर सब देवता हमारे पास आये। इन्द्र ने कामदेव को बुलाकर समझाय-बुझाय शिव को वश करने के लिये उसे शिव के पास भेजा। कामदेव गया पर आपही शिव की क्रोधाग्नि से जलकर भस्म हो गया जिससे तीनों लोक में हाहाकार मच गया। गिरिजा ने वन में जाकर बहुत तप किया और शिव ने प्रसन्न हो उसे ग्रहण किया।

इकतीसवाँ अध्याय।

इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनकादि मुनियो ! जब नारद ने इतना सुना तो संशययुक्त होकर विनय की कि आप तारक के दुःख देने और काम के जलने और गिरिजा के फिर ग्रहण करने का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त सुनाइये। ब्रह्माजी बोले कि जो कश्यप की स्त्री दिति नाम्नी थी, उससे अति बलवान् दो पुत्र एक हिरण्यकशिपु दूसरा कनकाक्ष उपजे। ये अति तेजवान्, बलवान् और रुष्ट-पुष्ट थे। उन्होंने तीनों लोकों को अपने वश कर लिया। देवताओं को स्वप्न में भी आनन्द न मिलता था। उनको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

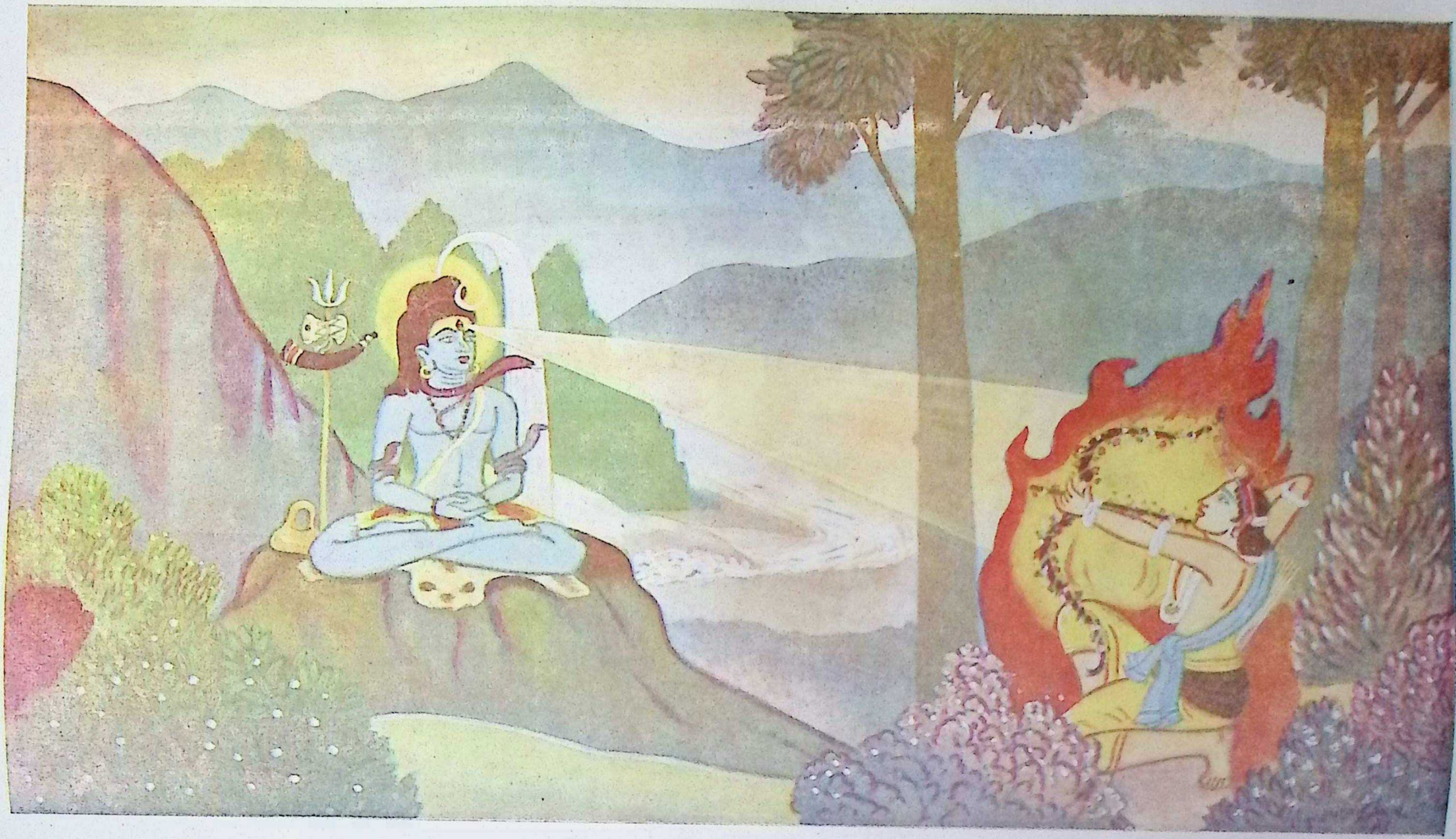

कामदेव भस्म

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विष्णु ने अवतार लेकर वध किया और अपने भक्त को बचा लिया। हिरण्यकशिपु को नरहरि अवतार लेकर मारा और कनकाक्ष को दूसरी रीति से वध किया तब देवता आदि सब प्रसन्न हुये। उन्होंने विष्णु की स्तुति की और दिति ने अति दुःखी होकर कश्यप के पास जाय रो-पीटकर सब वृत्तान्त कहा और फिर बड़ी सेवा करके प्रसन्न किया। उनसे एक लड़का आनन्द देनेवाला माँगा। कश्यप ने कहा कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त तप करो। जो यह तप तुम्हारा सिद्ध होगा तो अवश्य ही भाग्यवान् पुत्र उपजेगा। दिति ने बड़ा तप किया और व्रतादि किये। निदान इन्द्र दिति के तप को जान उसकी सेवा करने लगा। दिति ने इन्द्र से पूछा कि तुम क्या चाहते हो और किस मनोरथ से हमारी सेवा करते हो? जो तुम्हारी इच्छा हो वह तुमको दिया जावे। इन्द्र बोले कि हम यही वरदान सेवा के बदले माँगते हैं कि जिस लड़के के लिये तप करती हो, वह लड़का जब उत्पन्न हो तो वह हमारे भाई के समान होकर मेरा हितैषी हो और देवताओं के दुःख को दूर किया करे। यह सुन दिति ने दुःखी हो अति चिन्ता की और कहने लगी कि मेरे साथ बड़ा छल हुआ। मैं बहुत ठग गई। निरुपाय हो इन्द्र से कहा कि अच्छा हमने माना और फिर तप करने लगी। अकस्मात् एक दिन वह अशुद्ध हुई और इन्द्र छिद्र के मार्ग से प्रवेश करके दिति के गर्भाशय में चला गया। उस समय जो बालक दिति के गर्भ में था, उसके सात खण्ड कर डाले। वह बोल उठा और जीता रहा, मरा नहीं। तब इन्द्र ने उन टुकड़ों के भी टुकड़े किये। पर तो भी वह सजीव रहा। यह सब उञ्चास खण्ड हो गये पर प्राण उनमें वर्तमान रहे। तब दिति निद्रा से जगी और चिन्तित होकर इन्द्र से पूछा। इन्द्र ने सत्य-सत्य सब हाल कह दिया। तब दिति अति प्रसन्न हुई। वे उञ्चासों खण्ड उञ्चास मरुद्गण अर्थात् वायु हो गये और इन्द्र के भाई होकर देवताओं में गिने गये। दिति ने कश्यप की फिर बहुत सेवा की और कहा कि इस बेर मुझको एक लड़का वज्राङ्गी दीजिये कि जिस पर कोई शस्त्र लग न सके। कश्यप ने कहा कि दश सहस्र वर्ष तप करो तो निस्संदेह तुमको ऐसा पुत्र उपजेगा। दिति ने अतिश्रम से दशहजार वर्ष तप किया। जब तप की अवधि पूरी हुई तो पुत्र उपजा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसका नाम वज्राङ्गी रखा गया। वह महाप्रतापवान्, पुष्ट, वीर-धीर और तेजवान् हुआ, मानों विष्णु का चौथा अवतार हो। उसने अपनी माता दिति की आज्ञा से इन्द्र को पकड़कर सामने किया और उसको लात-घूँसे से अच्छी तरह से मारा और पृथ्वी पर भली-भाँति घसीटा। निदान इन्द्र ने वज्राङ्गी की अधीनता अङ्गीकार की। तब हम और कश्यप ने जाकर पूछा कि इन्द्र मर गये या जीते हैं। अब उचित है कि हम पर कृपा करके इन्द्र को छोड़ दीजिये। तुम अपने कुल में सूर्य हो तुम्हारी स्तुति कहाँ तक करें। वज्राङ्गी ने कहा कि हमने तुम्हारे कहने से इन्द्र को छोड़ दिया। मुझको कुछ इन्द्रलोक लेने की इच्छा नहीं है। यह दण्ड मैंने इन्द्र को अपनी माता की आज्ञा से दिया है। यह कह फिर बोला कि हे ब्रह्मा, विष्णु! तुम तीनों लोक के स्वामी हो। मैं चाहता हूँ कि आप तीनों लोक का सार मुझको दें। तब मैंने बहुत सोच विचार कर तप और योग का सार उसको बता दिया। फिर हमने एक स्त्री वरांगी नाम्नी उसको दी। यह उपाय कर हम तो अपने लोक को चले गये और वज्राङ्गी कठिन तप करने लगा। उसने समुद्र में बैठकर तप किया और उसी समुद्र के तट पर पर्वत के निकट वरांगी तप करने लगी। सो इन्द्र ने अपने गणों को उसके तप के नष्ट करने को भेज दिया। उन्होंने नाना प्रकार के स्वरूप बनाकर वरांगी को भय दिया, पर उस स्त्री पर कुछ न चली और क्रोध में आकर पर्वत को बड़ी भयानक बातें कहीं। तब वह पर्वत अतिभयवान् हो मनुष्य रूप धार शरण में आया। यह देखकर वह बैठ गया अर्थात् इन्द्र की माया गुप्त हो गई जैसे शिव के देखने से सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। उसी समय हम वरदान देने को वज्राङ्गी के समीप गये। उसने हमको प्रणाम किया और वरदान माँगा कि हम राज्य नहीं चाहते, क्योंकि न तो उसमें कुछ आनन्द है और न परलोक बनता है। मुझे अपना सेवक समझ यह वरदान दीजिये कि मुझमें आसुरी भाव न हो, मेरा मन सदा धर्म और तप में लगा रहकर कुमार्ग में न जावे। हम यह वरदान देकर अपने लोक को चले गये। वज्राङ्गी भी जल से निकलकर बाहर आया। उसने अपनी स्त्री को भी बुलाया। वह तुरन्त सामने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गई बहुत रोई-पीटी। जब वज्राङ्गी ने रोने का कारण पूछा तो स्त्री ने सम्पूर्ण दुःख का कारण बताया। वज्राङ्गी ने उसको बहुत समझाया और धर्म का मार्ग अच्छी भाँति बताया पर उसके मन में समझाने से कुछ काम न किया, क्योंकि वह बहुत क्रोधित थी। निदान अपने पति की सेवा उत्तम रीति से करती रही। एक दिन समय पाकर विनय की कि इन्द्र हमारा बड़ा शत्रु है। वह बड़ा दुःख देता है। आप बदला लेनेवाला एक लड़का मुझे दीजिये और मेरा मनोरथ पूरा कीजिये। यह कह अपने पति के चरणों पर गिर पड़ी।

बत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसी बातें वज्राङ्गी ने अपनी स्त्री से सुनकर अति दुःख में विचार किया कि मैं क्या करूँ। स्त्री की इच्छा तो है कि देवताओं से शत्रुता हो किन्तु मैं नहीं चाहता। मालूम नहीं होता कि क्या उचित है और क्या अनुचित। रीति है कि जो स्त्री का मनोरथ पूरा हो जावे तो वह बड़ा दुःख देनेवाला होता है। तीनों लोक में कोई प्रसन्न नहीं रहता और जो स्त्री का मनोरथ पूरा नहीं करता तो उसको बड़ा दुःख होता है। वह अन्त को नरक में गिरता है। इसी सोच में वज्राङ्गी बहुत दुःखी होकर तप करने लगा। और बहुत काल उसी अवस्था में रहा। निदान हम अति प्रसन्न हुये और वरदान देने के लिये उसके पास चले गये। उसने यह वर हमसे माँगा कि हमारे एक पुत्र उपजे जो अपनी माता को आनन्द दे और बड़ा बलवान् एवं तेजवान् हो। हमने मान लिया और अपने लोक को चले गये। वज्राङ्गी ने भी अपने घर आकर अपनी स्त्री से वरदान पाने का हाल कह सुनाया थोड़े दिनों में वह गर्भवती हुई और वह लड़का गर्भ में बहुत बढ़कर अन्त को बहुत भयानक उपजा। उसके उपजते ही संसार में बड़ा उपद्रव होने लगा। धरती में भूकम्प हुआ। तारे आकाश से गिरने लगे। तीनों लोक में काल पड़ गया जिस से देवता आदि सब दीन हो गये। बिन वायु वृक्ष गिरने लगे और समूह पहाड़ पर चढ़ने लगे। जब वह उपजा तो पिता ने सब रीतें पूरीं। माता उसकी अति प्रसन्न हुई और जो कि वह माता-पिता के दुःख दूर करनेवाला उपजा, इससे उसका नाम तारक रक्खा गया। उसी तारक ने माता की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आज्ञा से पारिजात पर्वत पर जाकर विजय की इच्छा से तप आरम्भ किया। पहिले सौ वर्ष पर्यन्त दोनों हाथ ऊपर को उठाये हुये दृष्टि जमाये खड़ा रहा। फिर सौ वर्ष तक अगूँठा दबाये तप किया। गरमियों में आग में रहा और शेष दिवसों में बनों में। जाड़ों में पानी के अन्दर बैठ रहा और पवनादि भक्षण कर रहा पर शिव कुछ भी प्रसन्न न हुये। तब तो तारक ने आसुरी तप का प्रारम्भ किया। अपने शरीर को काटकर अग्नि में होम करने लगा। जब वह दृढ़तापूर्वक यह तप करने लगा तो उसके इस कठिन तप से तीनों लोक जलने लगे। देवताओं ने हमारे निकट पहुँच अपना दुःख वर्णन किया और कहा कि यह क्या हुआ है कि तीनों लोक में इस तरह अग्नि ने जोर पकड़ा है जिससे सब जले जाते हैं। हे नारद! हमने शिवके चरित्र को कुछ न जाना और सबको अपने साथ लेकर विष्णु के पास गये। उन्होंने भी शिव माया न जानी। फिर शिव के पास गये। प्रणाम और स्तुति के उपरान्त सब वृत्तान्त विनय किया और कहा कि अब तो आपकी शरण में आये हैं। आप सबसे श्रेष्ठ हैं, इससे अनुग्रह करके हमारे दुःखों को दूर कीजिये। शिव ने हँसकर कहा कि तारक के कठिन तप से तीनों लोकों की यह अवस्था है। वह देवतों के दुःख देने को तप करता है। इसी कारण हम वरदान देने में संकोच करते हैं। यह सुन देवतों ने आश्चर्य में होकर कहा कि बहुत उत्तम आप तारक को वरदान दें क्योंकि आपके वरदान देने से इतनी जल्दी नष्ट न हो जावेंगे जैसा कि अब मरे जाते हैं। शिव बोले तुम में से कोई ऐसा बलवान् और पुष्ट नहीं है कि तारक के तप को माया करके भ्रष्ट कर दे। विष्णु ने गर्वपूर्वक कहा जो मुझको आज्ञा हो तो मैं निस्सन्देह कर सकता हूँ। शिव ने आज्ञा दे दी। विष्णुजी चले और उन्होंने अपना मोहनीरूप धारण किया, पर शिव की लीला से तारक पर कुछ फल न हुआ। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव माया अति बलवान् है। देखो, विष्णु मोहनीरूप से तारकासुर को जो शिव भक्त था, कुछ न कर सके तो शिवजी को जीतना कितनी कठिन बात है। निदान विष्णु ने शिव के निकट जाकर विनय की कि आप जाकर तारक को वरदान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दीजिये, आपकी माया बहुत बड़ी है। यह सुन शिव वरदान देने के लिये चले गये और ऊँचे शब्द से कहा कि वरदान माँगो। मैं तुम्हारे तप से अति-प्रसन्न हूँ। तारकने प्रसन्न हो नेत्र खोल शिव को प्रणाम किया और स्तुति करके यह वरदान माँगा कि मैं तुम्हारे हाथ के सिवाय और किसी के मारे न मरूँ। करोड़ों वर्ष तक लोक में राज्य करूँ। शिवजी ने मान लिया और विमन हो अपने गणों समेत चले गये। तब तारक अति प्रसन्न हुआ और प्रसन्नतापूर्वक अपने घर गया।

तेंतीसवाँ अध्याय।

इतनी कथा सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मा! ऐसा वरदान पाकर तारक ने क्या कार्य किया? तारक का शेष वृत्तान्त सुनाइये। ब्रह्मा बोले कि तारक वरदान पाकर अपने घर आया और अपनी स्त्री से सम्पूर्ण वृत्तान्त कहा। सब असुर इकट्ठे होकर तारक को अति प्रतिष्ठित और बड़ी पदवीवाला विचार उसकी स्तुति करने लगे। असुरों की सब सेना इकट्ठी हो गई जिसमें करोड़ों वीर थे। उनके नाम यह हैं—कुम्भक, कुञ्ज, महिष, कुञ्जर, कालनेमि, निमि, कृष्णजठर, प्रजोम्बुक, शुम्भ, कालकेतु यह दशों बड़े प्रसिद्ध वीर सेनाधिप थे। जो सब असुर और असुर सेना का सेनानी था उसका प्रसन नाम था। यह सब तीनों लोकों को तुच्छ समझते थे। यह सेना लेकर तारक ने पहिले इन्द्र पर चढ़ाई की और देवताओं के लोक और इन्द्र के देश को घेर लिया। देवता और दैत्यों का घोर युद्ध हुआ। नाना प्रकार के शस्त्र चले। तारक और इन्द्र से युद्ध हुआ। निमि और अग्नि भिड़े। कालनेमि और यमराज ने लड़-कर रुधिर बहाया। नमुचि और निर्ऋति ने लड़ाई करके अपनी-अपनी विजय चाही। महिषासुर और वरुण परस्पर भिड़े। मेघ और पवन ने युद्ध किया। कुञ्ज भिरिड से लड़े। जृम्भक और इन्द्र ने लड़ाई करके चरित्र दिखाया। शुम्भ और दाहपति ने घोर युद्ध मचाया। कुम्भज और चन्द्रमा ने अच्छी मारपीट की। सूर्य और कुञ्जर ने प्रलय किया। प्रसन सेनापति ने विष्णु से लड़ाई की। इसी तरह बड़ा युद्ध हुआ और दैत्यों ने कोपित होकर देवताओं को युद्ध स्थान में दुःखी कर दिया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तारक ने अपना प्रताप प्रकट किया कि इन्द्र को परास्त कर दिया और विष्णु के सामने जा खड़ा हुआ। विष्णु ने आश्चर्य किया। तारक का यह प्रताप शिवजी के वरदान से समझा। अतः वे गुप्त हो गये और तारक ने सबको जीत लिया। उसने सबको परास्त करके वन्दि में डाला और अपनी राजधानी में ले जाकर निर्भय होकर राज्य के सहायकों समेत राज्य करने लगा। दैत्य देवताओं की बन्दी गृह ने रक्षा करने लगे। जहाँ पर कि महीनदी समुद्र में मिल गई है उस स्थान पर तारक की राजधानी थी। वहाँ सब दैत्य और देवता इकट्ठे होकर रहते थे। तारक ने निर्भय सर्व देश अलग-अलग भागों में बाँटकर उनका राज्य असुरों को दिया जहाँ वे अपने परिवार, मित्र और स्त्रियों सहित आनन्द उठाया करते थे। तारक आप तीनों लोक का स्वामी विष्णु के स्थान पर हुआ। निमि को अग्नि की पदवी दी, कालनेमि को यमराज के बदले नियत किया, निर्ऋति की पदवी नमुचि को दी और वरुण के देश का प्रबन्ध महिषासुर को सौंपा। पवन के बदले मेघ हुआ, कुबेर के स्थान पर कच्छ हुआ, इन्द्र की जगह पर जृम्भक ने नाम पाया, अहिपति के स्थानापन्न शुम्भ किया गया, हमारी जगह पर कुम्भ राज्य करने लगा और मित्र के बदले कुञ्जर स्थित हुआ। इसी प्रकार सब देवताओं के स्थान पर दैत्य-दानव नियत हुये। सब असुर संसार भरके स्वामी होकर राज्य करने लगे। उनकी राज्य में देवताओं के विशेष कोई मनुष्य दुःखी न था। थोड़े दिनों के बीतने उपरान्त विष्णु ने गुप्त देवताओं के निकट जाकर उनको यह उपाय बताया कि तारक बड़ा बलवान् और प्रतापवान् है। क्योंकि उस पर शिवजी की बड़ी कृपा रहा करती है। इससे हम विचार करते हैं कि वे तुमसे कभी परास्त न होंगे। इसलिये अपने मनोरथ के पूर्ण करने के लिये उसकी तुम सब सेवा करो और उसको नट बनकर प्रसन्न करो। जब वह प्रसन्न होगा तब तुमको अवश्य छोड़ देगा। ऐसा उपाय बताकर विष्णु तो अपने धाम को गये और देवता भी नटरूप से तारक के पास पहुँचे और ऐसे उपाय से वार्त्ता की कि तारक अति प्रसन्न होकर कहने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लगा कि जो तुम्हारा मनोरथ हो वह मुझसे माँगो। देवताओं ने आप विनती कर कहा कि हमको बन्दि से छुड़ा दीजिये। तारक ने मान लिया और देवताओं ने बन्दि से छुट्टी पाकर चाहे अपना-अपना पद भी पाया पर तो भी दुःखी रहा करते थे। तारक राज्य करता रहा। जिसकी राज्य में सिवाय देवताओं के और किसी को कुछ भी दुःख भी न था।

चौंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब देवताओं ने असुरों के हाथ से नाना प्रकार के दुःख उठाये तब अति शोकवान् होकर कहने लगे कि कहाँ जाइये, किससे अपना दुःख कहिये, न कोई ऐसा मित्र है और न कोई ऐसा सहायक है। सूर्य-चन्द्रमा जो संसार के जीव हैं, वह तो आपही तारक की सेवा करते हैं। तो भी उनको भय बना रहता है। न जानिये यह दैत्य कब तक हमको दुःख देता रहेगा। इसी प्रकार बहुत समय तक देवता दुःख और चिन्ता में डूब कर अन्त को मेरे पास पहुँचे और इन्द्र और बृहस्पति भी उनके साथ थे। उन्होंने मेरी स्तुति की और बार-बार मेरी पूजा करके मुझे प्रणाम किया। देवताओं की उस विनय से हम प्रसन्न हुये तो मैंने हँसकर कहा कि हे देवताओं ! तुम्हारी सन्तान और बल तुम्हारे आधीन है या नहीं। हम तुमको बहुत दुःखी मुँह सुखाये हुये चिन्तित देखते हैं। इन्द्र के मुख में कुछ तेज नहीं पाते। कौन ऐसा संसार में बलवान् है जिसने तुम सबको दुःखी किया है। हे पुत्रों ! हमसे अपने यहाँ आने का कारण वर्णन करो। देवताओं ने बृहस्पति से कहा कि आप हम सबकी ओर से उत्तर दीजिये क्योंकि आप विष्णु और इन्द्र के समान हैं। तब बृहस्पति ने हाथ जोड़ मुझसे कहा कि आप हमारे दुःख को क्यों नहीं जानते हैं। देखो तारक दैत्य सकल ऐश्वर्य इकट्ठा कर सृष्टि को बड़ा दुःख देता है। उसको शिव ने वरदान दे दिया है जिससे उसने तीनों लोक को जीत लिया है। सूर्य भी उसके देश में ठंढे होकर गरमी प्रकट करते हैं और चन्द्रमा भी अपनी सब कलाओं से उसकी सेवा में विद्यमान रहकर भयभीत रहते हैं। वे केवल शिव को मानते हैं। उसके उद्यान में पवन इसलिये नहीं चल सकती कि फूल न गिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पड़ें। उसकी सेवा में सर्व ऋतु विद्यमान रहती हैं और भय से बेऋतु सब फल फलते हैं। वासुकिनाग मानो दीपक बन कर अपने शीश के मुक्ता से मन्दिर में प्रकाश करते हैं। इन्द्र आपही उसकी दिन-दिन सेवा करते हैं यद्यपि सर्व इस प्रकार उसकी सेवा टहल करते हैं वह कुछ भी कृपा नहीं करता। जिन वृक्षों की पत्तियाँ देवताओं की स्त्रियाँ बहुत समझ बूझकर तोड़ती थीं, उन तरुओं को वे मूल से उखाड़ते हैं। देव-पत्नियाँ उसके सोने के समय उसकी स्तुति करके अपने अश्रु पृथ्वी पर छोड़ती हैं। उन्होंने पर्वतों के शिखर काटकर वहाँ विहार के स्थान और अन्तःपुर बनाये हैं। देवता अपने लोक को आँखों से नहीं देख सकते। वह आप ही यज्ञ का भाग ले लेते हैं। इन्द्रादिक को कौन पूछता है। हमारा कोई उपाय उसी प्रकार नहीं चलता जैसा कि सन्निपात के हो जाने पर कोई औषधि काम नहीं करती। हम लोगों को विष्णु के चक्र पर बड़ा भरोसा था, पर वह भी व्यर्थ हो गया। इससे हे ब्रह्माजी ! आपको कोई उपाय करना उचित है। हमने कहा कि हे देवतों ! तारक ने शिवजी से वरदान पाया है। वह शिव के सिवाय और कोई नहीं जो उसको दूर कर सके। जो शिव के वीर्य से कोई पुत्र हो तो वह तारक का वध कर सकता है किन्तु यह बात बहुत कठिन है। फिर हमने कहा कि देखो शिव हिमाचल पर्वत पर तप कर रहे हैं और गिरिजा अपनी सखियों समेत उनकी सेवा करती हैं। जो उन दोनों का मिलाप हो जावे तो निस्सन्देह तुम्हारा कार्य पूर्ण हो। सिवाय गिरिजा के और कोई तुम्हारा काम नहीं कर सकता, यही उपाय है। अब तुमको उचित है कि कामदेव को भेजो। वह शिव के पास जावे और शिव के मन में प्रीति का अंकुर उपजावे। यह सुन सब देवता हमारी बहुत विनती और स्तुति कर अपने-अपने घर आये और इन्द्र ने कामदेव का ध्यान किया। तुरन्त कामदेव इन्द्र के निकट स्त्री-सहित आया और हाथ जोड़ विनय की कि आपने मुझे क्यों स्मरण किया है? इन्द्र ने दोनों को कृपादृष्टि से देखा और कहा कि तुम धन्य हो कि देवताओं के हितैषी हो और हमारे कार्य में मन लगाते हो। जिस कार्य के लिये मैंने तुमको स्मरण किया है, वह वास्तव में तुम्हारा ही काम है। यद्यपि हमारे बहुतसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मित्र हैं पर तुम्हारे बराबर और कौन हमारा सहायक है। अब हमारे काम पर तत्पर हो जाओ और जिस तरह पर ब्रह्माजी ने युक्ति कही है, उसी प्रकार पूर्ण करो। हे प्यारे मित्र! वीरों की परीक्षा युद्ध के समय की जाती है और उदार लोग काल के समय जाने जाते हैं। मित्र की परीक्षा तब होती है, जब कोई आपदा पड़ती है। दरिद्रता और आपत्ति में स्त्री की परीक्षा का समय मिलता है। इसलिये अब मुझको तुम्हारी मित्रता की परीक्षा मिल जावेगी और केवल मेरा ही प्रयोजन नहीं वरन् सबके कार्य इसमें संयुक्त हैं। कामदेव ने यह सुनकर कहा कि आप इतनी बातें घबराहट की क्यों कहते हैं? हम सब काम करने को वर्त्तमान हैं कि जो कोई तुम्हारे पद को लेने के लिये तप करता हो, उसको उसी समय पापी बना डालूँ। हमारे सहायक स्त्रियों के तीक्ष्ण कटाक्ष बाण हैं, जिसके बल से सर्व संसार को जीत सकता हूँ। देवता, दैत्य और ऋषि, सब मेरे वश हैं और मनुष्य तो सेवकों के समान मुझे पूजते हैं। यह बातें सुन इन्द्र अति प्रसन्न हुआ और कामदेव से बोला कि बैठ जावो। फिर अपना प्रयोजन यों बखानने लगा कि हे मन्मथ! जो काम मुझको तुमसे कहना था, वह तो तुम आप ही कह रहे हो। देखो, तारक दैत्य ने तप करके शिवजी से बड़ा वर पाया। उसने धर्म को नष्ट कर देवताओं के सब रत्न छीन लिये हैं और सब के शस्त्र निष्फल हो गये हैं। इससे सब देवता चिन्तायुक्त और दुःखी हो रहे हैं। इसलिये ब्रह्माजी ने मुझसे कहा है कि जो शिव के वीर्य से कोई पुत्र उपजे तो तारक का वध होगा। इस समय शिव हिमाचल पर्वत पर स्थित हैं। वहाँ गिरिजा उनकी सेवा कर रही हैं। जो तुम शिव को छलकर गिरिजा के साथ संयोग करादो तो सब मनोरथ पूरे हो जावें। तुम्हारी यह कीर्ति तीनों लोक में हो और देवताओं को अति प्रसन्नता प्राप्त हो।

पैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कामदेव ने इन्द्र से यह बात सुनकर मान ली और शिव को विजय करने की सामग्री कुछ कठिन न समझ अपनी पत्नीसहित इन्द्र से बिदा हुआ। उसके चलने के समय कई अशकुन हुये पर भाग्यवश ऐसे अशकुनों का कुछ विचार न किया और वसन्तादि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सर्वसामग्री इकट्ठी कर बड़ी धूमधाम और गर्व के साथ मार्ग में इस बात को विचारता हुआ चला कि क्यों कर शिव को वश करूँ। शिव के निकट पहुँच कर उसने देखा कि चारों ओर बसन्तऋतु फैल गई, मोर बोलने लगे, वन में कुसुम फूल उठे, टेसू के वृक्ष प्रफुल्लित हुये और सर्व प्रकार के पक्षी मधुर वाणी से बोलने लगे जिससे सब देवता भी कामवश हो गये जिनको अहंकार था, वह भी मोहित होकर काम-जाल में फँस गये। कामी लोग तो मानों उसके चेले ही हो गये। कोई चराचर ऐसा न रहा जिसके कामदेव का बाण न लगा हो। सबका तप एक ही बेर में जाता रहा। बुद्धिमान काँप उठे और सब देवता अपने शुद्धमार्ग को छोड़कर काम के बाणों से दुःखी हो गये। यद्यपि संसार में यह अवस्था केवल मुहूर्त भर रही और किसी से भी धैर्य और संतोष न रहा। पर शिव और उनके गणों के साथ कामदेव पर कुछ असर न हुआ। जब शिव के निकट कामदेव गया, तब शिव को देख अति भयभीत हुआ और तुरन्त संसार से कामदेव का बल नष्ट हो गया। जैसे पहिले सब लोग थे, उसी तरह के हो गये। जैसे नशा पिये हुये आदमियों का मद उतर जाता है, उसी तरह से सब लोगों का मद उतर गया। मन्मथ अपने मन में कहने लगा कि मुझसे बड़ा पाप हुआ है। शिव के कोप से हमारी मृत्यु होगी। फिर विचारा कि जो मैं शिव के हाथ से मारा जाऊँगा तो उत्तम है। मैं भी शिव के गणों में गिना जाऊँगा क्योंकि बहुत से लोग शिव के हाथ से वध होकर अन्त को शिव के चरणों में पहुँच गये हैं। यह विचार फिर अपने तेज से सृष्टि भर को पहिले की तरह कर डाला। फिर सब लोग कामदेव के पंजे में पड़ गये। शिव ने यह दशा देखी और दृढ़तापूर्वक मन को अपने वश से जाने न दिया और परिपूर्ण योग साधा। कामदेव ने बाण चढ़ा शिव के बाईं ओर जा खड़ा हुआ। तब शिव के सिवाय उस तपोभूमि में कोई न था जिसको कामदेव ने मोहित न किया हो। कामदेव घात लगाये हुये समय की बाट देखता था। जब शिव ध्यान को छोड़कर अपने स्थान पर बैठे तब गिरिजा सब पूजा की सामग्री लेकर शिव के पास आईं। जब गिरिजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पूजा से निश्चिन्त होकर अपने सुन्दर अङ्ग ढाँपने लगी तो कामदेव ने ऐसा समय पाकर अपना बाण कान तक तान मारा जिससे कुछ प्रीति का अंकुर शिव के मन में जमा और शिव हँसकर गिरिजा के अङ्गों की प्रशंसा करने लगे। चाहा कि गिरिजा का हाथ पकड़ूँ पर गिरिजा स्त्रियों के स्वभाव के समान लज्जित होकर पीछे हट गई। यह देख शिव मन में सब बात को जान गये और ऐसी प्रीति को स्मरण कर गये। उन्होंने विचार किया कि क्यों हम इस स्त्री से छले गये जिसने मुझे विवश कर दिया। जब चारों ओर देखा तो कामदेव को अपनी बाईं ओर छिपा हुआ देख कोपित हुये जिससे तीनों लोक काँप उठे और जाना कि प्रलय होने वाला है। सो शिव ने अपना तीसरा नेत्र खोल काम की ओर देख दिया। ज्यों ही देखा त्यों ही कामदेव भस्म हो गया और तीनों लोक में हाहाकार मच गया। देवता अप्रसन्न, और दैत्य अति प्रसन्न हुये। देवता अति भयवान् होकर महादुःखी और दीन हो गये। इतना चरित्र सुनकर नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे स्वामी! यह चरित्र सुनकर मुझे आश्चर्य होता है क्योंकि शिव तो परब्रह्म निष्पाप, तीनों लोक के स्वामी, माया रहित, तीनों देवताओं करके सेवित, योग में स्थित, उनका नाम कामंजय तथा मृत्युंजय है और जिनकी शुभदृष्टि से उनके भक्त कामदेव को वश किये रहते हैं, ऐसे शिव को काम ने क्यों ऐसा फँसाया और सुगमता से काम ने विजय पाई। ब्रह्माजी बोले कि इससे पहिले हमारे एक कन्या उपजी थी जिसका संध्या नाम था। फिर एक लड़का उत्पन्न हुआ जिसको मन्मथ और काम कहते हैं। हमने उसको वरदान दिया था कि तुम तीनों लोक पर प्रबल रहोगे। हम, विष्णु और हर तुम्हारे वश में रहेंगे। यह सुन उसने पहिले मुझे ही बाण मारा और मुझसे कुकर्म कराना चाहा। हमने उसे क्रोधित होकर शाप दिया कि तुम शिव के तीसरे नेत्र से जल जाओगे। इसी कारण काम ने पहिले तो शिवको वश में कर लिया और फिर शिवके तीसरे नेत्र से भस्म हो गया। अब फिर पिछला चरित्र सुनो कि जब काम को शिवने जला दिया तब कोई तो दुःखी और कोई सुखी हुआ। गिरिजा अति आश्चर्य में हुई और उनके शरीर से बहुत पसीना छूटा। अपनी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन्दरता का अहंकार छोड़ मूर्च्छित हो गईं और उनका मुख कमल प्रभात के चन्द्रमा के समान निस्तेज हो गया। गिरिजा की ऐसी अवस्था देख सब सखियों ने उनका हाथ पकड़ सँभाला। जब गिरिजा चैतन्य हुईं तो लज्जित होकर अपने घर लौटीं और शिव हिमाचल पर्वत को छोड़ कैलाश पर्वत पर जाकर स्थित हुये। शिव के चले जाने के उपरान्त गिरिजा की यह दशा हो गई कि वह जिस तरह शिव प्रति दिन चरित्र करते थे, उसको करके शिव का ध्यान किया करती। कामदेव की स्त्री रति रोने-पीटने लगी। अपने पति के चरित्र बखान कर हाय-हाय करती। उसको अपने शरीर की कुछ सुध न रही। जब चैतन्य हुई तो अति खेद से रोकर अपने पति के शव से कहने लगी कि मैंने तुमको बहुत शिक्षा दी पर दूसरे के वश में पड़ तुमको कुछ विचार न हुआ। शिव जो रचते हैं, वह अमिट है। हे नाथ! तुमने मुझसे कुछ न कहा और मुझसे वियोग कर शिवपुरी को चले गये। अब मैं अनाथ हूँ और तुमने जैसा किया, वैसा फल पाया। किसी के प्राण का दुःख देकर किसी ने आनन्द उठाया है। फिर सबके जीव जो शिव हैं, उनसे ऐसा करके आनन्द की क्या आशा है। जो तुमने इन्द्र लोक में अहंकार की बातें कहीं थीं, उनका यह फल मिला। क्योंकि अहंकारी को परलोक में आनन्द कहाँ है। तुम तो शिव के गणों में मिल गये और हमारा अब कौन है? इसी प्रकार की बातें कहकर रति ने अति विलाप किया। देवता रति को इस प्रकार से रोते हुये देख अति शोकवान् हुये और रति को बहुत तरह से समझाकर शिव के निकट गये।

छत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! विष्णु और हम सब देवताओं को साथ लिये हुये शिव की शरण में गये। हमने प्रणाम करके बहुत स्तुति और विनय की कि हे शिव! हम सब डूबते हैं, आप डूबने से बचावें। हम सब आपकी शरण में आये हैं। यह विनय हमारी सुनकर शिव प्रकट हुये। वे परमहंसों के समान सब सामग्री सजाये हुये थे, जिसको देख हम सब प्रसन्न हुये। एक बार पुनः हम सबों ने खड़े होकर अलग-अलग शिव की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्तुति की। शिव ने प्रसन्न होकर कहा कि हम अति प्रसन्न हैं, जो इच्छा हो वह माँगो। जो स्तुति तुम सबने पढ़ी, वह हमको अतिप्रिय है। जो कोई इसको पढ़ेगा, हम उससे अति प्रसन्न होंगे। फिर हम सबने विनय की कि आप तो जानते ही हैं, हम क्या कहें? आपसे कौन बात छिपी है? यह सुन शिव हँस पड़े और बोले कि हमने जो काम को जलाया तो केवल ब्रह्मा का शाप था। हमारा भक्त ब्रह्मा बहुत बड़ा है, जैसा कि विष्णु हमारा भक्त है। अब हमारा यह वचन है कि आज से काम निश्शरीर होकर अतन नाम से प्रसिद्ध होगा और शरीर बिना केवल मन से उपजा करेगा। फिर समय पाकर रति को उसका स्वरूप दिखला देवेंगे और वह हमारे पास कैलास में रहा करेगा। जब विष्णु का कृष्ण अवतार होगा, तब कृष्ण का कामदेव पुत्र होगा और रति को मिलेगा। अब रति को चाहिये कि उस समय तक इन्द्र के यहाँ जाकर रहे। वह बिना परिश्रम अपने पति कामदेव को पावेगी। उसको उचित है कि कुछ दुःख न माने और कहीं न जावे। जब रुक्मिणी के पुत्र उपजेगा तुरन्त उसको इन्द्र उठा ले जावेंगे और समुद्र में डाल देंगे जिसे एक मछली निगल जावेगी। वह हमारे प्रताप से नहीं मरेगा। वरन् उसको एक केवट ले जाकर एक असुर को देगा। जब मछली का पेट फाड़ा जावेगा तब वह प्रकट होकर रति के यहाँ गुप्त रहा करेगा। फिर उस असुर को कृष्ण का पुत्र वध करके यहाँ आवेगा। इतना कह सबके देखते शिव अन्तर्धान हो गये और देवताओं ने रति को समझा-बुझाकर इन्द्र के साथ कर दिया और अपने-अपने स्थान को सब चले गये। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह शिवचरित्र हमने कहा, अब गिरिजा की कथा सुनो।

सैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब गिरिजा ने काम को जलते हुये देखा तो तुरन्त वहाँ से भागकर अतिचिन्तायुक्त विह्वल होकर उठती-बैठती अपने घर पहुँची। यह दशा देख उसके माता-पिता तुरन्त गिरिजा के पास आये और नगर भर में खलभल पड़ गयी। जब गिरिजा कुछ चैतन्य हुई तो उसकी माता ने पूछा कि तुमको इस तरह किसने भय दिया कि तुम बार-बार ऊर्ध्व

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्वास लेती हो। गिरिजा ने जैसा कि देखा था, सब वृत्तान्त वर्णन किया। माता-पिता ने गिरिजा को भरोसा दिया और बहुत प्रकार से आश्वासन किया। पर गिरिजा को कुछ संसार का आनन्द न मिला। वह चलते, बैठते, जाग्रत् और स्वप्नावस्था, खाने-पीने, नहाने आदि के समय में प्रति-क्षण शिव के चरित्र को न भूलती और न किसी वस्तु में उनकी इच्छा रही। हे नारद! उसी समयान्तर में तुम गिरिजा के पास गये और गिरिजा ने तुमसे लज्जित होकर कहा कि हे नारदजी! तुम कोई ऐसी युक्ति बताओ जिससे हमको शिव मिलें। तुमने उत्तर दिया कि शिव केवल तप के आधीन हैं। जो तुम शिव को अपना पति किया चाहती हो तो तुम वन में जाकर शिव का कठिन तप करो। क्योंकि शिव केवल तप के आधीन होकर संसार को वश करके पालते और फिर उसको नाश कर दिया करते हैं। रुद्र भी केवल तप करके प्रलय करते हैं और शेष पृथ्वी को शिर पर रक्खे रहते हैं। ऐसे तप से देवता आदि क्या-क्या प्राप्त नहीं करते। गिरिजा बोलीं कि सत्य करके यही बात है, पर मुझे आप अपना शिष्य कीजिये और विधि बताइये। क्योंकि गुरु बिना गति नहीं और कोई कार्य सिद्धि नहीं होता। विष्णु, ब्रह्मा और हर भी गुरु बिन नहीं हैं। हे नारद! तब तुमने शिव का ध्यान करके गिरिजा को पञ्चाक्षरी मन्त्र का उपदेश किया। तुम तो वहाँ से चलकर हमारे पास आये और गिरिजा वह उपदेश पाकर तप की दृढ़ इच्छा से अपनी सखियों समेत हिमाचल के पास गई। सखियों ने गिरिजा की ओर से विनय की कि गिरिजा कहते हुये लज्जा करती हैं, उनकी ओर से हमारी यह विनती है कि अब गिरिजा की इच्छा है कि शिव का तप करें, आपकी आज्ञा चाहती हैं। हिमाचल ने प्रसन्न हो इस विनय को मान लिया और आज्ञा दे दी। फिर गिरिजा ने उन्हीं अपनी सखियों समेत अपनी माता के पास पहुँचकर विनती की तो मैना अति चिन्तित हुई और अँधियारी रात्रि के समान मलिन होकर गिरिजा से कहा कि अपने घर में तप करो और माता-पिता के घर को किसी स्थल वा देवालय वा तीर्थ से कम न समझो। पहिले तुमने जाकर क्या किया, अब फिर क्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करोगी? व्यर्थ ही दुःख सहती हो। अपने घर को देवताओं का घर समझो और यहाँ रहकर मुझे आनन्द देती रहो। गिरिजा ने कहा—हे माता! शिव केवल तप के वश हैं। बिना तप के क्या हो सकता है। संसार में जिसने जो पाया है, वह केवल तप का फल है। तप से बड़ा सुख मिलता है। मैना बोली कि हे गिरिजा! मेरे सौ पुत्र हैं, पर तू मुझे सबसे प्यारी है। मेरी आँखों से तुम दूर न हो। जो तू कहे, वही मैं करूँगी। तुम घर छोड़कर बाहर मत जाओ। जो-जो माँगोगी, वह मैं तुझे दूँगी। गिरिजा बोली हे माता! बिना जप-तप के शिव मेरे साथ विवाह न करेंगे। वह तप केवल वन में हो सकता है, न कि घर में। क्योंकि घर अहंकार, मूर्खता, दुःख और चिन्ता आदि की खानि है। जो घर बैठे तप हो सके तो मुनि और राजा लोग क्यों वन में जावें। यह सुनकर माता ने फिर चिन्तित हो कहा कि वन बड़े भय का स्थान है। वहाँ सिंह और हाथी आदि फिरा करते हैं और वहाँ बड़े विषैले जीव रहते हैं। उनकी पवन भी अभी तुमको नहीं लगी, तुम वनके दुःख क्योंकर उठाओगी। गिरिजा बोली कि संसार में श्रम बिना कोई अच्छा मनोरथ या वस्तु प्राप्त नहीं होती। हमारा यह वचन है कि घर और बाहर सब जगह शिव रक्षक हैं। ऐसे कुल या सन्तान को धिकार है कि जिसने शिव के चरणों का ध्यान न किया। बिना शिव के मुक्ति कहाँ है। मैना ने कहा कि देखो जो विष और मादकवस्तु भङ्ग आदि खाकर एक वृषभ पर चढ़ता है, वह नग्नशरीर और अशुभ सामां रक्खे हुये दरिद्री है। तुमको उसकी भक्ति से क्या फल प्राप्त होगा? यह बात गिरिजा ने अपनी माता से सुनकर कहा कि ब्रह्मा, विष्णु, देवता और मुनि आदि जिस पुरुष का ध्यान करते हैं, वही हमारे मन में स्थित हो गया है। वही तीनों गुणों से प्रकट होकर नाना प्रकार के चरित्र करता है। अब मुझे आज्ञा दीजिये। यह सुन मैना प्रसन्न हुई और अति हर्षपूर्वक कहा कि बहुत अच्छा, हमारे कुल को पवित्र करो। मैंने जान-बूझकर तेरे निश्चय के देखने को यह वचन कहे थे। वास्तव में शिव का तप तेरा मनोरथ पूरा करेगा। इस प्रकार गिरिजा माता-पिता की आज्ञा पाकर शिव की बहुत स्तुति कर हर-हर कहती हुई वन को चलीं। जब मैना ने गिरिजा को वन की ओर जाते हुये देखा तो महादुःखी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होकर पृथ्वी पर गिर पड़ीं। इसी प्रकार सब कुल के लोगों और नगरवासियों ने खेदसंयुक्त गिरिजा को फिर भी वन में जाने से बर्जा और वन के दुःख हर प्रकार के वर्णन करके यही अनुमति दी कि घर में तप करना उचित है। पर जिस तरह से चकवे के जोड़ को बरात भर की उजियाली अच्छी नहीं लगती, उसी प्रकार गिरिजा को यह बातें समझाने की न भाईं। उन्होंने कहा कि तुम लोग कुछ चिन्ता मत करो। हम शीघ्र ही शिव का वरदान पावेंगी। तुमको वन का रहना शुभ होगा। इसी प्रकार सबसे मधुरवाणी के साथ वार्त्ताकर ब्राह्मणों को प्रणाम किया और अपने लौट आने तक उनके कालक्षेप को सब कुछ दिया। सर्व प्रकार के मंगन और भिक्षकों को इसलिये पूर्ण कर दिया कि इससे शिव तृप्त होते हैं। इसी प्रकार अपनी सब सखियों को देखती हुई और नाना प्रकार से समझाती अपने माता-पिता को प्रणाम करती भईं और अच्छा मुहूर्त पाय चल दीं। सब लोगों ने आशीष दिया और देवताओं ने जय-जय शब्द कर फूलों की वर्षा की और दुन्दुभी बजायी। चलने के समय गिरिजा के बायें अङ्ग भुजा और नेत्र फड़क उठे जिससे विदित हुआ कि हमको शिव अवश्य मिलेंगे। यद्यपि उस समय नगर निवासी अतिचिन्तित थे, पर अशुभ समझ कोई रोता न था। गिरिजा के चले जाने के उपरान्त उनके माता-पिता और भाई सब लोकों समेत मूर्छित हो गये। हिमाचल के नगर का चमत्कार उड़ गया और नगर मानों कालरात्रि हो गया। उस नगर के निवासी कालस्वरूप भासने लगे जो अपने आपही को देख भय खाते थे। घर श्मशान के समान विदित हो रहे थे। मित्र यमदूतवत् प्रकट होते थे। नाना प्रकार के उद्यान पुष्पवाटिका सींचने पर भी चिताभूमि सदृश सूख गये। सब जीवों का तेज जाता रहा। नदी-नाले अच्छे मालूम न होते थे। सर्व मनुष्य गिरिजा के दुःख और वियोग से चित्रवत् आश्चर्य में रहा करते थे। वे अहर्निश गिरिजा की बालक्रीड़ा का स्मरण करते थे। हे नारद! तुम इस बात को अच्छी तरह से समझो कि शक्ति बिना संसार में कुछ भी आनन्द नहीं है। शक्ति ही के प्रकट होने से लोक में बल प्रकट होता है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह अपने चरित्रों से सर्व प्रकार के दुःखों को दूर करती हैं। जैसे कि जीव बिन इन्द्रियाँ, निशि बिन चन्द्रमा और जल बिन मीन प्रसन्न नहीं, उसी तरह गिरिजा बिना वह नगर हो गया था। यह दशा देखकर वेदज्ञ मुनि उस नगर में पहुँचे। जिनकी पूजा वहाँ के सब नगरवासियों ने की। मुनि बोले कि हे हिमाचल ! किस शोक में हो ? पर हिमाचल दुःख और चिन्ता की अधिकता से बोल न सके। फिर धैर्य धरकर कहा कि हमारी पुत्री शिव के तप के लिये वन में गई है। मैना ने बहुत रो-रो कहा कि जिस गिरिजा के कभी उष्ण पवन भी न लगी थीं, वह वन में गई है। जो करोड़ों प्रकार के भोजन खाती थी, वह वन में क्या खाती होगी। जिसके सोते हुये उसकी सखियाँ स्तुति किया करती थीं उसके लिये सन्देह है कि कहीं वन में उसको कोई सिंह आदि न खा डाले। अब हमारा जीना कठिन है। यह सुन मुनि ने माया को बहुत बेर धन्य कहा और कहा कि हे शिव ! जब जैसा तुम चाहते हो वैसा ही करते हो। तुम्हारी माया सबको भुलाये रहती है। किसी को दुःखी और किसी को सुखी करती है। फिर हिमाचल और मैना से कहा कि तुम कुछ खेद मत करो। तुम्हारी कन्या ने अनादि हो ब्रह्मा और विष्णु आदि देवताओं से अपनी सेवा कराया है। तुम उसको नहीं जानते हो। वह अपने तप से सबको आनन्द देगी और तुम्हारी कीर्ति होगी। इसलिये उचित है कुछ दुःख मत करो और शिव के ध्यान में बने रहो। यह कह मुनि ने गिरिजा को नमस्कार किया और बिदा हुये। तब हिमाचल, मैना और सब नगरवासी प्रसन्न होकर शिव का ध्यान करते रहे।

अड़तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले—हे नारद ! हिमाचल और मैना का दुःख दूर हो गया और शिव की प्रीति अधिक हुई। गिरिजा ने मुनीश्वरों के समान अपने को बनाया और वन में जाकर शिव के सिवाय सबको भुला दिया। फिर तप के लिये शृङ्गतीर्थ को गईं जो उस समय से गौरीशिखर के नाम से प्रसिद्ध है और सब लोग उस स्थान को प्रणाम करते हैं। वह पर्वत उत्तम तपस्थल है। वहाँ नाना प्रकार के वृक्ष, फल

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और सिद्ध पीठ हैं। गिरिजा ने एक तप का स्थान नियत किया और वहाँ बैठ अपना कार्य करने लगीं। चौंसठ वर्ष पर्यन्त नीचे शिर किये एक ही आसन से बैठी रहीं। उष्णकाल में अग्नि तापकर, वर्षा में खुले मैदान में रहकर और शीतकाल में जल के बीच बैठ महाउग्र तप किया। जब ऐसे उग्रतप से फल न पाया, तब उससे भी महाकठिन तप में मन लगाया। अर्थात् सहस्र वर्ष पर्यन्त वृक्षों के मूल और पत्र खाकर रहीं। फिर एक वर्ष तक केवल हरीघास और शाक आदि खाया। इसके बाद थोड़े समय तक पवन ही भक्षण की और कुछ समय तक जलमात्र पीकर कालक्षेप किया। जब ऐसे तप से भी सिद्धि न हुई, तो उससे भी कठिन तप किया। पर ऐसे-ऐसे कठिन तपों के करने से भी उनका मनोरथ पूरा न हुआ तब हिमाचल के घर को लौट गईं और अर्घासमेत तीनकोटि पार्थिव बनाकर पूजा की। नाना प्रकार के पुष्प हर रङ्ग के गिन कर शिव पर चढ़ाये और रात-दिन शिव के गुण-कथन और गुण-श्रवण तथा पूजा और ध्यान के सिवाय और किसी बात से प्रयोजन न रक्खा। वे शिवकी प्रीति में इतनी मोहित हुईं कि प्राणायाम करके अपने को आपमें लय कर दिया और ब्रह्मरूप में स्थित रही। ऐसे कठिन तप करने में नाना प्रकार की कठिनता सामने आई। भूतों की सेना ने गिरिजा को चारों ओर से घेर लिया। उनके अति भयानक शब्द थे। उनमें कई तो सिंह, कई हस्ती, कई भैंसा, कई बैल और कई चमगादर आदि का मुख बनाये हुये गिरिजा को भय देने लगे। कइयों की एक आँख, कई अन्धे-काने, कई हजारों नेत्र लगाये, कई हाथों बिना, कइयों के बहुत से हाथ, कई मुखरहित, कई असंख्य मुखसहित, कइयों के बहुत चरण और कई बिन पाँव के थे। उनके शरीर का वर्ण श्याम, रक्त, पीत, श्वेत आदि भिन्न-भिन्न विचित्र प्रकार से था। कोई नाचता, कोई दौड़ता, कोई उछलता और कोई गाता हुआ नाना प्रकार के भयदायक रूपों से आपस में लड़ते-झगड़ते, मरते-मारते हुये दिखाई दिये। कोई-कोई जम्हाकर अपनी दाढ़ें दिखाता और कोई गिरिजा के निकट आकर अपने को बहुत लम्बा बनाता। कोई मार-मार शब्द करता हुआ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिरिजा पर चढ़ाई करता। कोई गिरिजा की माता का स्वरूप रच रो-रो कहता था कि तुम्हारे पिता ने तुम्हारे वियोग में खाना-पीना छोड़ मर जाने की इच्छा की है इसलिये घर चलो। यद्यपि भूत प्रेतों ने इस प्रकार के बहुत से चरित्र और छल किये, पर गिरिजा का ध्यान शिव में दूना लगा। गिरिजा के तेज से सब भूत आदि भाग गये। कोई जल गया, कोई पृथ्वी पर गिर पड़ा, कोई डूब गया और गिरिजा के तप स्थल की यह दशा हुई कि कैलाश पर्वत के समान हो गया। वहाँ के वासियों ने अपने आप ऐसा ज्ञान पाया कि संसार की माया छोड़ ब्रह्मज्ञान में दृढ़ हो गये। सिंहों की यह दशा हुई कि बालकों के समान गायों के आगे खेला करते। बिल्ली चूहों को प्यार करके लाड़ करती। मोर साँपों की पीठ खुजलाते और वह भी मोरों के शरीर से लिपट जाते थे। घोड़ा और भैंसा मिलकर परस्पर प्रीति प्रकट करते। यहाँ तक कि जिनको कुछ भी किसी प्रकार का दुःख होता, वह उस जगह पर जाकर रहता। उसी स्थान पर वैर का नाम भी न था। तालाब, नदी और नाले अति उत्तमता से बहते। वृक्षों में फूल और फल खिले हुये थे। निदान वहाँ किसी वस्तु की कमी न थी। तोता-मैना आदि पक्षी मधुर शब्द से प्रति समय बोलते। निदान उसी स्थान पर सब ऋद्धि-सिद्धि इकट्ठी हुई। ऐसा तप गिरिजा का प्रसिद्ध हुआ। हम, विष्णु, इन्द्र और सब देवता आदि वहाँ पर पहुँचे और देखा कि गिरिजा सिद्धरूपा हो बैठी हैं। सबने उन्हें प्रणाम किया। इन्द्र ने देवतों से कहा कि गिरिजा का तप सबसे श्रेष्ठ है। इस प्रकार का तप किसी ने नहीं किया। गिरिजा को धन्य है। इनके माता-पिता और नगर को भी धन्य है। हमको धन्य है कि गिरिजा के तप को देखा। फिर सब लोग शिव के निकट गये। पहिले कैलाश पर्वत को देखा, जिसमें अति उत्तम सुन्दर वन मानों छहों ऋतु स्वरूप धारण किये वर्त्तमान हैं। गङ्गाजी की धारा बहती, सुगन्धित वायु मन्द-मन्द चलती थी। वहाँ किसी को भी दुःख न था। कहीं मुनि लोग ध्यान करते, कहीं सिद्ध तप में लगे. कहीं किन्नर गाना गाते, ऐसा आनन्द कैलाश में देखते हुये शिव के निकट पहुँचे और शिवजी के योग में स्थित शरीर धारण किये दर्शन किया। शिव का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वरूप देख प्रेम ने इतना बल किया जिसका वर्णन नहीं कर सकते। जिनके चन्द्रमा भाल पर विराजमान, शीश पर गङ्गाजी की धारा बह रही माथे पर त्रिपुण्ड्र लगाये हुये, साँपों को कानों में पहिने, नेत्र लाल-लाल, जिनके देखने से संसार भर के दुःख नाश को प्राप्त हों, इस प्रकार का सुन्दर स्वरूप देख हमने उनकी स्तुति की।

उन्तालीसवाँ अध्याय।

देव गण बोले कि हे शिव ! तुम्हारी बड़ाई और तेज जो अमित है, उसको कहकर हम पार नहीं पा सकते, जिसको नारद भी कहकर आश्चर्य में हो जाते हैं। तुमने कृपा करके शबरी को मुक्त कर दिया और सुमनी को भी मोक्ष दिया, जो महाव्यभिचारिणी थी। तुम्हारी सेवा करके बहुत से पापी तुम्हारे लोक में आ गये हैं जिनको कोई दुःख नहीं है। जब तक कोई तुम्हारे तप में दृढ़ नहीं होता, तब तक उसको संसार सागर से मुक्ति प्राप्त नहीं होती। तुम्हीं परब्रह्म परमेश्वर सबके ईश्वर हो। उत्पन्न करना, पालना और मारना सब तुम्हारे वश में है। तुम्हीं हमारे स्वामी हो और तुम्हीं जड़ और चैतन्य की बात जानते हो। संसार में जहाँ तुमसे भिन्न कोई पदार्थ नहीं वह एक वृक्ष के समान है, जिसका एक अंकुर, दो फल, तीन मूल और चार रस हैं। तुम्हीं आकाश, पृथ्वी, दूर और निकट हो। मनुष्य तुमको माया के कारण नहीं जानते। जो तुम्हारे भक्त हैं, वे तो सब को शिव जानते हैं। तुमसे भिन्न किसी वस्तु को नहीं मानते। तुम निर्गुण हो पर कृपा करके सगुण भी हो जाते हो और भक्तों के दुःख दूर करने को अवतार लेते हो। कोई-कोई तुम्हारे चरणों की नाव बनाकर संसार सागर से पार लग गये हैं। वह बुद्धिमान् जो अहंकार से हीन हैं, वे धीरे-धीरे आप तक पहुँच जाते हैं। आपकी भक्ति बिना आवागमन बना रहता है, पर आपके भक्तों को यह दुःख नहीं है। वे निर्भय रहा करते हैं और तुम्हारे चरणों की सेवा करके परम पद प्राप्त करते हैं। उत्पत्ति के समय ब्रह्मा, पालने के समय विष्णु और प्रलय के समय हर हो जाते हो। यह तीनों तुम्हीं अकेले हो। तुम वेदकर्म तप, जप, योग और ध्यान से मिलते हो। जो तुम सगुणरूप धारण न करते तो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमको सुगम रीति से क्योंकर मुक्ति प्राप्त होती। हम आपके नाम और गुण वर्णन करने के योग्य नहीं, न हमको ऐसी बुद्धि है। तुम्हारी महिमा अपरम्पार है। आप हमारे कार्य पूरे करें। तुम देवों के देव, सर्वसृष्टि के इन्द्र, भक्तों को शुभमार्ग में स्थित करनेवाले, सर्व सृष्टि के कारणरूप, अविनाशी, अनादि, अप्रमेय और तुम्हारा शरीरमात्र विद्या और बुद्धि से पूर्ण है। ऐसा तुम्हारा शुभ शरीर भक्तों के मनों में स्थित रहता है और भक्त लोग कुसंगति और काम को छोड़कर तुम्हारे तप में प्रसन्न रहा करते हैं। तुम पूर्ण ब्रह्म, काल के भी काल, हर्ष के समूह, दुःखरहित और संसार पर अति कृपालु हो। तुम इच्छारहित, अद्वितीय, निरीह और परब्रह्म हो। यद्यपि तुम तीनों गुणों से परे हो पर तो भी संसार की भलाई के लिये अवतार लेते हो। तुमने सबसे पहिले शरीर धारण किया सो यह शरीर और तुम्हारा अवतार केवल हमारे मनोरथ पूर्ण करने को है। इस तुम्हारे अवतार की महिमा असंख्य और अप्रमेय है। हम लोगों का मन जो केवल प्रसन्नता के विचार में लगा रहता है, वह तुमको क्या जान सकता है। तुम्हारे जानने की बुद्धि संसार को नहीं है। जो लोग आपके गुण मन लगाकर सुनते हैं, वही तुमको जीतते हैं और कोई तुमको नहीं पाता। बहुत लोग धर्ममार्ग छोड़ केवल तुमसे प्रीति रखते हैं और अपनी भक्ति तुम पर दृढ़-कर अति सुगमता से तुम्हें पाते हैं। संसार में तुम्हारे भक्त सदा तुम्हारी कथा सुनते हैं। वे सबसे अधिक तुमको प्रिय हैं। तुम उन्हीं के सामने प्रकट होते हो। तुम देवता, मनुष्य, मुनि, पशु और पक्षी आदि समस्त जीवों में अवतार लेकर अपने भक्तों के कार्य बनाते हो। यह स्तुति कह हम, विष्णु और सब देवता चुप हो गये। शिव प्रसन्न होकर बोले कि हे विष्णु, ब्रह्मा और सब देवता! यह तुम्हारी सेना कहाँ आई है? तुम बहुत चिन्तित भासते हो, सर्व वृत्तान्त वर्णन करो। विष्णु और हमने विनय की कि हमारे धन्य भाग्य हैं कि आपकी कृपादृष्टि हम पर हुई। संसार में वे लोग शुभ हैं जिन पर आपकी अनुग्रह की दृष्टि है। हे शिव! तुम्हारी महिमा विचित्र हैं। आप हर शरीर में वर्तमान हैं। आप कानों बिना सुनते हैं, बिन वाणी वेद प्रकट करते हैं, बिन त्वचा स्पर्श जानते हैं, जिह्वा बिना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वाद जानते हैं और पाँव बिना तीनों लोक की यात्रा करते हैं। आपमें असंख्य कला हैं। आप अपने भक्तों को दुःखी देखकर बहुत आनन्द देते हैं। यह कह हम और विष्णु भी चुप हो गये।

चालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! इतनी विनती और स्तुति सुन शिवजी ने कहा कि जिस मनोरथ के लिये तुम सब हमारे पास आये हो, उसको वर्णन करो। हे ब्रह्मा और विष्णु! तुम देवताओं के स्वामी हो। विष्णु और हमने विनय की कि तुम सब जानते हो। तुम तो बैठे-बैठे तीनों लोक को देखते हो। तुम्हारी माया संसारभर को वश्य किये हुये है सो तुम हमसे मूर्खों के सदृश क्या पूछते हो। पर आपने आज्ञा दी है तो हम विनय करते हैं कि नारद से उपदेश पाकर गिरिजा महाकठिन तप कर रही हैं। ऐसे परिश्रम से कठिन तप आजतक किसी ने नहीं किया। इसलिये आपको उचित है कि वहाँ चलकर गिरिजा को वरदान दीजिये क्योंकि देवताओं की बड़ी इच्छा है कि तुम्हारा विवाह गिरिजा के साथ देखें और आपकी बरात में चलें। शिव ने हँसकर कहा कि मूर्ख लोग विवाह करके संसारजाल में फँसते हैं। यह काम बुद्धिमानों का नहीं। यद्यपि वेद ने इस विषय में बहुत-सी बातें वर्णन की हैं पर बुरी स्त्रियों की संगति के समान और कोई भ्रष्ट कर्म नहीं। जो तुम्हारा कहना नहीं करते तो वेद और धर्मशास्त्र की प्रतिष्ठा कम होती है। हम तप के वश में होकर तुम्हारा कहा मानते हैं चाहे हमको बहुत दुःख मिले। जब राजा कामरूप ने इच्छा की तब हमने दैत्य को मारकर आनन्द दिया और गोतम के सर्व दुःख दूर किये। कृपा करके हलाहल विष पी लिया क्योंकि सब देवता जले जाते थे। रामचन्द्र के लिये हनुमान् का अवतार धारण कर और उनके सेवक बनकर नाना प्रकार के दुःख सहे और जहाँ-जहाँ हमारे भक्तों पर कोई कष्ट पड़ा, हमने तुरन्त उनको आनन्द दिया है। हमने ग्रहपति नाम अवतार लेकर विश्वामित्र मुनि के दुःख को दूर किया। इसी तरह तुम्हारे लिये भी हम तत्पर हैं। जो तुम्हारी इच्छा है, वह हम करेंगे। हम गिरिजा के साथ विवाह करेंगे। तुम सब बिदा होकर अपने-अपने घरों को जाओ। यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन हम सब बहुत प्रसन्न हुये और शिवसे बिदा हुये। उनके गुण कहते, सुनते और गाते हुये घरों को आये। शिवने हम सबको बिदाकर सप्तऋषि का स्मरण किया। वे आये और स्तुतिकर नीचे शिर किये खड़े हुये और बोले कि जो आज्ञा हो, वह हम पालन करें। शिवजी बोले कि गिरिजा बड़ा कठिन तप कर रही हैं। तुम वहाँ जाकर गिरिजा को छलो और उसके प्रेम की परीक्षा करो। वे उसी समय गिरिजा के पास गये और देखा कि गिरिजा तपरूप बनकर बैठी हैं। उन्होंने अति चतुरता और वाचालतापूर्वक कहा कि तुम क्यों ऐसा तप करती हो? तुम किसका किस काम के लिये ध्यान करती हो, सत्य-सत्य हमसे कहना क्योंकि संसार भर सत्यता पर स्थित है। पार्वती ने उत्तर दिया कि यद्यपि मुझे अपने मनोरथ के कहने में लज्जा आती है। निश्चय यह है कि तुम उसे सुनकर हँसोगे पर मैं कहती हूँ, मन देकर सुनो। हम देवता और मुनियों के वचनों को सत्य जान यह तप करती हैं। इसी कारण कि शिव के साथ हमारा विवाह हो और यह वही बात हैं कि जैसे किसी को पङ्खों बिना अन्तरिक्ष में उड़ने की इच्छा हो। यह बात सुन मुनि बोले कि तुम नारद के चरित्र नहीं जानती हो। उनकी बातों से तो नगर-गाँव उड़ जाते हैं। अब हम एक इतिहास कहते हैं उसको ध्यान धर सुनना। ब्रह्माजी के पुत्र दक्ष ने विवाह कर दश सहस्र पुत्र उपजाये। वे विष्णु का तप करने लगे कि नारद ने तुरन्त पहुँचकर उनको उपदेश किया तो वह दक्ष के पुत्र फिर घर नहीं आये। दक्ष ने यह सुनकर और उतने पुत्र उपजाये। वह भी नारद का उपदेश पाकर जहाँ उनके भाई पहिले जा चुके थे, चले गये। सिवाय इसके नारद ने चित्रकेतु का घर तो नष्ट ही कर दिया और कनककशिपु का बिगाड़ कर दिया। जिनको नारद ने अपने मत का उपदेश किया, वह द्वार द्वार भीख माँगते हैं। हम नारद को अच्छी तरह से जानते हैं। उनका मन तो मलिन है परन्तु प्रकट में श्वेतवस्त्र पहिने रहते हैं। वह और हम बहुत दिनों एक साथ रहे हैं। इससे उनके बहुत दोष हम जानते हैं। क्योंकि सहवासियों का हाल अच्छी तरह मालूम हो सकता है। सो तुम भी नारद के कहने पर भूल गई हो। इसके सिवाय जिन शिव के लिये तुम यह तप करती हो, वह शिव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो सदा उदास रहा करते हैं। वे निर्गुण, अशुभ, निर्लज्ज और बुरे वस्त्र पहिननेवाले हैं। उनके कुल, परिवार, नौकर और चाकर कुछ नहीं, उसी ठग ने तुमको इतना मोहित किया है कि तुम्हारी बुद्धि नष्ट हो गई है। ऐसा पति पाकर तुमको क्या आनन्द मिलेगा ? इस बात को भली-भाँति अपने मन में विचारो। पहिले शिवने दक्ष की पुत्री के साथ विवाह करके कुछ दिन भी निर्वाह न किया और दोष लगाकर उसको छोड़ दिया। आप अपने ध्यान में लगे रहकर निश्चिन्त रहने लगे। जो केवल एकान्त में रहता है, उसके यहाँ स्त्री का क्या निर्वाह होगा। इसलिये अब भी कुछ नहीं गया। अपना हठ छोड़ घर चली जाओ। हाँ, विष्णु तुम्हारे विवाह के योग्य हैं। जो स्वर्ग के सब देवताओं के स्वामी हैं, उनको लाकर तुमसे मिला देंगे। पार्वती ने उत्तर दिया कि वास्तव में यह सब सत्य है। पर हमारे हठ में कुछ न्यूनता न होगी। हम अपना वही राग गावेंगी जो आज तक गाती चली आई हैं। क्योंकि हम पहाड़ से उपजी हैं, इससे हम में जड़त्व विशेष हैं। हम नारद के वचन का त्याग न करेंगी। हे मुनि श्रेष्ठ ! जो अपने गुरु के वचन को सत्य मानते हैं, वह सदा प्रसन्न रहकर आवागमन से छुट्टी पाते हैं। जो अपने गुरु के वचन को झूठ समझते हैं, उनको ईश्वर नहीं मिलता, चाहे वे कल्पभर भटकते फिरें। हमने इस बातको माना कि विष्णु में सब गुण हैं और शिव में सब अवगुण भरे हुये हैं; पर वे निर्गुण हैं और उन्होंने केवल अपने भक्तों के लिये शरीर धारा है। उनको अपनी शक्ति और ऐश्वर्य दिखाना अङ्गीकार नहीं। वह परमहंस गति में हैं और अपने को लोक में अवधूतों के समान दिखाते हैं। वस्त्र और आभूषण पहिनना मनुष्यों का काम है। वे तीनों गुणों से भी श्रेष्ठ और बड़े हैं। धर्म और कुल की बातें सब माया के कारण प्रकट होती हैं। इनको तो शिव स्वीकार नहीं करते, क्योंकि वह ऐसे ही हैं। हमने शिवको अपने गुरु की कृपा से अच्छी तरह पहिचाना है। मैं निश्चय करके इस बात को कहती हूँ कि जो शिव हमसे विवाह न करेंगे, तो हम जन्म भर विवाहरहित रहेंगी। चाहे सूर्य पूर्व से पश्चिम में उदय हों और सुमेरु पर्वत अपने स्थान से दूसरे स्थान पर चला जावे। चन्द्रमा में उष्णता उपजे। अग्नि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शीतल हो जावे, पर मैं अपनी हठ न छोड़ूँगी। हमारे झगड़े में तुमको न पड़ना चाहिये। यह कह गिरिजा ने सप्तऋषि को प्रणाम किया और चुप हो गईं और पूर्ववत् शिवके ध्यान में मग्न हो गईं। ऐसा निश्चय गिरिजा का देखकर सप्तऋषि जय-जय कह उठे और मनमें अशीषें देकर कहने लगे कि तुमको शिव अवश्य मिलेंगे। उन्होंने धन्य-धन्य कहकर प्रणाम किया और शिवलोक को चले गये। शिव के पास पहुँचकर उन्होंने कहा कि हमने गिरिजा की अच्छी तरह पर परीक्षा करके अपनी बुद्धि और वाग्जाल से बहुत छला पर उसने कुछ भी धोखा न खाया। इसलिये हे शिव! आपको उचित है कि वहाँ चलकर पार्वती को वरदान कृपा कीजिये। यह कह सप्तऋषि चले गये।

इकतालीसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि जब सप्तऋषि बिदा होकर अपने घर चले गये तो फिर शिवजी ने क्या किया? हमको सुना दीजिये। ब्रह्माजी बोले कि सप्तऋषि के चले जाने के उपरान्त शिवजी ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और ब्रह्मचारियों के समान दण्ड लेकर माथे में त्रिपुण्ड्र लगाया तथा रुद्राक्ष की माला हृदय और हाथ में पहिनी और जहाँ पार्वती तप करती थीं वहाँ वैसा स्वरूप बनाकर गये। गिरिजा ने प्रणामकर कुशल पूछी और कहा कि तुम कौन हो, कहाँ आये हो? यह सुन ब्राह्मण ने ठंढी श्वास ले कहा कि हम ब्रह्मचारियों की रीति किये हुये, सृष्टि के उपकार के निमित्त इधर-उधर भ्रमण करते हैं। तुमने हमको धर्मवान् जानकर प्रतिष्ठा और आदर किया, इससे हमको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ है। अब हम तुमसे पूछते हैं, तुम ठीक-ठीक हमसे बतावो कि तुम कौन हो, किसकी कन्या हो और क्यों यहाँ आई हो? श्रीजगदम्बा ने विचारपूर्वक एक अपनी सखी से सैन की। उसने आदि से अन्त तक सब वृत्तान्त कि जिस प्रकार नारदजी ने आकर भविष्यवाणी कही थी कि गिरिजा का विवाह शिव से होगा, सब कह सुनाया। तब तो ब्राह्मण ने पछिताकर कहा कि हे गिरिजे! हमसे यह क्या हँसी करती हो। क्यों आप हमको उत्तर नहीं देतीं! गिरिजा बोली कि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जो कुछ हमारी सखी ने आपसे कहा है, वह सब ठीक है। मैं यह चाहती हूँ कि मेरा विवाह शिव के साथ हो। मेरा यह मनोरथ अतिकठिन किन्तु दुर्लभ है, पर मुझको निश्चय है कि शिव हमारा मनोरथ पूरा करेंगे। मुझे नारदजी के वचन पर पूरा विश्वास है। तब तो ब्राह्मण ने वाग्जालपूर्वक कहा कि हे गिरिजे! जो चाहो वह करो, हमको क्या प्रयोजन है। पर जो कि तुमने आदर से मेरा सम्मान किया इसलिये बिन कहे मुझसे रहा नहीं जाता। इसके सिवाय जान बूझकर कोई ठीक बात का छिपाना बड़ा पाप है। हे गिरिजे! तुम हिमाचल की कन्या होकर इतनी मूर्ख हो गई हो। अपने ऐसे शरीर को, जो तपरूप हो रहा है, क्यों राख किये डालती हो और अपनी सुन्दरता को मिटाती हो। तुम राजा की कन्या होकर लौंड़ी बना चाहती हो। पर भाग्य से क्या वश है। तुम विष्णु और ब्रह्मा को छोड़कर शिव के लिये तप करती हो, यह भाग्य की बात है। क्या तुम्हारे लिये शिव जैसा अशुभ और अनुचित पति चाहिये? शिव क्या विष्णु और इन्द्र की बराबरी कर सकते हैं। शिव की चाल ढाल संसार से न्यारी है। देखो, विष्णु आदि सब गुणवान् कुलवान् और प्रतिष्ठित हैं। शिव में इन बातों में से कोई बात नहीं है। उनके माता-पिता भी तो नहीं हैं। हाँ, साँप और भस्म शरीर में लगे रहते हैं। वे तीनों लोक से जुदा और उनका कोई बान्धवादि भी नहीं। वे बैल पर सवार हो नाना प्रकार के विष और भंग को खाते हैं। शृङ्गी और डमरू हाथ में लिये हुये भूतों के साथ लीला करते हैं। वे केवल अकेले वन में उदास बैठे रहते हैं। उन्होंने कामदेव को जला दिया जो स्त्रियों को प्रिय है। जो अच्छे गुण हैं, वह उनमें कोई भी नहीं। नारद ने भी उनके अवगुण न जानकर तुमको ऐसा छला है। सिवाय इसके नारद का तो यह स्वभाव है कि सर्वसृष्टि में इसी प्रकार के उत्पात करते हैं। देखो, उसने दक्षप्रजापति के सब लड़के नष्ट कर डाले। कनककशिपु के लड़के को कितना छला। फिर चित्रकेतु का तो राज्य छुड़ा दिया। वह ऊपर से तो बड़ा स्वच्छ और सच्चा रहता है पर मन उसका महा-मलिन है। प्रकट में साधु बनकर सबको दुःख दिया करता है। अब भी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुछ नहीं हुआ, तुम चैतन्य होकर अपना काम करो। सोने की जड़ाऊ अँगूठी छोड़कर काँच को क्यों ग्रहण करती हो ? हाथी छोड़कर भैंसे की सवारी की क्यों इच्छा करती हो ? चन्दन छोड़ नीम क्यों चाहती हो ? गङ्गाजल छोड़ कुवों के जल की क्यों अभिलाषा करती हो ? सूर्य छोड़ खद्योत की क्यों लालसा रखती हो। घर छोड़ वन क्यों चाहती हो ? ऐसी बातें कहकर शिव गिरिजा के स्वरूप की प्रशंसा करने लगे कि देखो, तुम्हारे मुखकमल पर असंख्य चन्द्रमा की कान्ति छा रही है। तुम्हारा मुखचन्द्र कैसा सुन्दर मानों सुन्दरता का समुद्र है। तुम्हारे नेत्रों की प्रशंसा नहीं हो सकती। तुम्हारे ओष्ठ क्या उत्तम कुँदरू फल से लाल हैं जिनसे मानों मधु टपकता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न हर एक अङ्ग की प्रशंसा की और कहा कि ऐसे सुन्दर शरीर को क्यों नष्ट करती हो। तुम्हारे ब्याह के योग्य केवल विष्णु हैं। उनसे विवाह करो। कहाँ तो मृदङ्ग का शब्द और कहाँ भृङ्गी और डमरू का अप्रिय शब्द। हम तुमसे कहते हैं कि यह बात बहुत ही अनुचित है। तुम भी चेत करो। इस प्रकार छल की बातें कहकर ब्राह्मण तो खेदयुक्त और रूखे हो अलग बैठ गये। गिरिजा ने शिवनिन्दा सुन मन में कोपित हो बार-बार मन में खेद किया और कहा कि ब्राह्मण जान मैंने यह धोखा खाया जो मैं पहिले से इस ब्राह्मण को इतना दुष्ट और शिव के विरुद्ध जानती तो मैं चुप हो रहती। इसने वेद के विरुद्ध शिव की इतनी निन्दा की जो इसको अब मैं उत्तर नहीं देती हूँ तो शिव की निन्दा के सुनने का दोष मुझपर होगा। यह विचार गिरिजा ने उत्तर दिया कि हे ब्राह्मण ! तू हमको क्या धोखा देता है। तूने तो वेद के विरुद्ध शिव की अति निन्दा की है। तुझे ऐसा उचित न था। तू ब्राह्मण है इसलिये बध दण्ड अनुचित है। अब मैं वेद, पुराण, श्रुति, स्मृति के वचनों के अनुकूल वर्णन करती हूँ कि तूने शिव को नहीं जाना। इसी से तेरा वचन वेद के विरुद्ध है। कदाचित् तू शिव को जानता तो तेरा वचन विपरीत न होता। शिव की अशुभ सामग्री, सब शुभ ही है। कोई देवता शिव से श्रेष्ठ नहीं है। वे माया से परे भगवान् हैं। शिव का कोई कुल परिवार नहीं है। वे भक्ति के वश में होकर सब बातें धारण करते हैं। वे सब विद्यानिधि पूर्ण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ब्रह्म अलख जगदीश हैं। उन्होंने अपने श्वासमार्ग से ब्रह्मा को वेद कृपा किये। वही शिव सबके आदि, मध्य और अन्त हैं। उनका तेज और प्रताप किसी ने नहीं जाना। जिससे प्रकृति ने उत्तम शरीर पाया, क्या उसको शक्ति की प्रीति से प्रयोजन नहीं है। शिव स्वाधीन हैं और उनका मार्ग तीनों लोक के विरुद्ध है। वही अपने भक्तों को तीनों देते हैं। उनकी सेवा से मनुष्य मृत्यु को जीतते हैं। ऐसे शिव की निन्दा करने से मनुष्य बड़ा दुःख पाते हैं। जो संसार में शिव की निन्दा करनेवाले हैं, उनको स्वप्न में भी आनन्द नहीं मिलता। जो दुष्ट और अनाचारी ब्राह्मण शिव के विरुद्ध हैं, वह करोड़ों जन्म पर्यन्त दरिद्री रहा करते हैं। तुमने शिव की निन्दा करके अपने लिये नरक का मार्ग खोला। तुम्हारे आदर करने से मुझे कुछ फल न मिला। वरन् मेरे सर्व पुण्य क्षीण हो गये। अब वेग अपने घर सिधारो। क्योंकि मेरा मन अब शिव में लग रहा है। यह सुन ब्राह्मण हँसा और मन में गिरिजा की बड़ी प्रशंसा करके चाहा कि और कुछ कहें। गिरिजा ने ब्राह्मण की बात समझ एक अपनी सहेली से कहा कि अब इस जगह को छोड़ और कहीं चलें। क्योंकि यहाँ रहने से बड़ा दुःख होता है। यह ब्राह्मण शिवनिन्दा करके हमको बड़ा दुःख देता है। शिव की निन्दा करनेवाले को आँख से न देखना चाहिये। वरन् सुनने से महापाप होता है। यद्यपि पापों का बदला नियत है, पर शिवनिन्दा का पाप कभी निवृत्त नहीं होता। इस ब्राह्मण को देखकर हम और अधिक अपवित्र होंगी। हमारे सब पुण्य नष्ट हो जावेंगे। जो शिवनिन्दा करनेवाले को आँख से देख ले तो तुरन्त स्नान कर डाले और जो अपना वश चले तो उसकी जिह्वा को काट डाले। नहीं तो दोनों कान बन्दकर वहाँ से उठ जाना चाहिये, इस बात को वेद कहते हैं। अब विलम्ब मत करो। उठो, वन में चलकर रहें। हमको एक क्षण भर भी वर्ष समान बीतता है। हम शिवनिन्दा नहीं सह सकती हैं। वहाँ जाकर तप करेंगी। यदि हमारा पूर्ण निश्चय है तो शिव अवश्य प्रसन्न होंगे। किसी के धोखा देने से क्या होता है। शिव तो केवल प्रेम से प्रसन्न होते हैं। मैंने गुरु से सुना है कि तप करने में इसी प्रकार के सैकड़ों विघ्न सामने आते हैं। जो धोखा खा जाते हैं, वे मूर्ख हैं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और फल नहीं पाते। जो दृढ़तापूर्वक धोखे से बचे रहते हैं, वे ही सिद्धि पाते हैं। शिव अपने भक्तों के पालनकर्ता हैं। वे अपने भक्तों को हर प्रकार आनन्द देते हैं। वे पहिले तो अपने भक्तों की परीक्षा करते हैं फिर प्रसन्न हो जाते हैं। यह कह गिरिजा अपनी सखियों समेत वहाँ से चली गईं।

बयालीसवाँ अध्याय।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! इस प्रकार गिरिजा का हठ और प्रेम देखकर शिव प्रसन्न हुये और अपना मुख्य स्वरूप जैसा नारदजी ने कहा था, धारण किया। शिर पर जटा, गङ्गा की धारा और चन्द्रमा विराजमान, भालपर त्रिपुण्ड्र लगाये हुये, कानों में कुण्डल पहिने, गोल गोल सुडौल कपोल, तीनों नेत्र सूर्य, चन्द्र, अग्नि ललाई लिये, पर एक आँख मूँदे हुये और कण्ठ में हलाहल विष की श्यामता सुशोभित नाक और ओष्ठ महासुन्दर, हाथ-पाँव की उँगलियाँ लाल और इसी प्रकार हरएक अङ्ग-प्रत्यङ्ग अति सुन्दर और सुभग जैसा कि गिरिजा ध्यान करती थीं। उसी प्रकार का स्वरूप धारण कर शिव ने दर्शन दिये और कहा कि तुमने हमारा इतना तप किया है जितना आज तक किसी ने नहीं किया। हमारे चरणों की सेवा करके देवता और मुनि आदि अति प्रसन्न हुये। सो तुम वही आदि शक्ति हो। तुमको ग्रहण करके हम भी लोक में शुभ होते हैं। हमारा तप अति दृढ़ है। वह भी तुम्हारे तप के कारण हिल गया। मैंने पहिले भूतों को फिर सप्त ऋषि को भेजा कि तुम्हारे तप की दृढ़ता की कीर्ति संसार भर में प्रसिद्ध हो। तुम कुछ क्रोध मत करो, क्योंकि यह सब बातें मैंने तुमसे प्रकट की अवस्था से की है। जैसा कि कुलाल घट के सँवारने के ऊपर से कैसा मार खिलाता है। तुम तो हमारी अनादि शक्ति हो। हमने संसारी रीति के कारण तुम्हारी भक्ति को देखा। तुम्हारे बिना संसार में कोई वस्तु नहीं है। तुम्हारी सेवा सृष्टि भर करता है। तुम संसार भर की माता और सदा की देवी हो, जिसके चरण कमलों की सेवा देवता आदि सब करते हैं। तुम उत्पत्ति पालन और प्रलय के निमित्त तीन गुण धारण करती हो तुम तो तीनों लोक की आनन्ददायी हो। तुम्हारे रूप, गुण और प्रभाव असंख्य हैं। तुम्हारे अंश से लक्ष्मी, वाणी, ब्राह्मणी और विष्णु की स्त्रियाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। तुमने मुझे सगुण अवतार लेते हुये जान कर गिरिजा का अवतार लिया है। तुम कभी जुदा नहीं हो। हम सदा संसार के निमित्त चरित्र रचते हैं। जैसा कि शब्द और अर्थ में अन्तर है, वैसा ही हमारे और तुम्हारे बीच में अन्तर है। केवल संसारी जीवों की दृष्टि में हम तुम दो शरीर रखते हैं पर वास्तव में एक हैं। यह समझकर क्रोध शान्त करो। हमारे तुम्हारे चरित्र वेद भी नहीं जानते। तुम्हारा तप पूरा हो गया है। हम सच कहते हैं कि हम तुम्हारे सेवक हैं। इस समय हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। जो इच्छा हो, वह माँगो। यह कह शिव चुप हो गये। गिरिजा ने एक बेर लज्जा से शिव का रूप देख उसको मन में रक्खा और हाथ जोड़ बिनती की कि हम आपकी शरण में संसार भरके नाते तोड़कर आई हैं। जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मुझको मेरी इच्छा के अनुसार वर दीजिये और हमारे पति हूजिये। संसार की रीति के अनुसार हमारे साथ विवाह कीजिये और हमारे पापों को क्षमा कीजिये। अब आप हमारे पिता से जाकर बिनती करें और अपने संसारी चरित्र को दिखावें। यह कह गिरिजा चुप हो गई। शिव ने कहा कि जो वरदान तुम ने माँगा, वह हमको भाया और हम उसे अङ्गीकार करते हैं। यह कह शिव अन्तर्धान हो गये। तब देवताओं ने जय-जय का शब्द किया और आकाश से फूलों की वर्षा हुई। विष्णु और हम आदि गिरिजा के चरणों पर आकर गिर पड़े और हर्ष के कारण गिरिजा की स्तुति करने लगे। जो कोई इस स्तुति को पढ़ेगा, वह सब मनोरथ पावेगा। यह स्तुति सुन गिरिजा ने सब देवताओं से कहा कि तुम सब अपने-अपने घर जाकर प्रसन्न रहो। देवताओं के सब काम पूरे होंगे क्योंकि हम ने बड़ा तप किया है। शिव ने हमको वरदान दिया है कि कोई काम तुम्हारा न रह जावेगा। देवता तो यह सब आज्ञा लेकर चले गये और गिरिजा घर पहुँची। तब जो हर्ष हिमाचल और मेना को प्राप्त हुआ, उसको नहीं कह सकते। निदान हिमाचल ने हर प्रकार से आनन्द मङ्गल मनाया और असंख्य द्रव्य दान दिया। यद्यपि गिरिजा ने वरदान का वृत्तान्त किसी से न कहा पर वह सब लोगों पर प्रसिद्ध हो गया। सखियों से सब ने सुनकर मङ्गल मनाया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेंतालीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! कोई मनुष्य चाहे करोड़ वर्ष पर्यन्त तप किया करे, पर सदाशिव का जानना महाकठिन है । वे शरीर धारण कर नाना प्रकार की लीला रचते हैं । अपने भक्तों के काम संसारी जीवों के समान प्रकट होकर पूरे करते हैं । हे नारद ! चैतन्य होकर सुनो, जब शिव गिरिजा को वरदान देकर चले गये, तो वहाँ आपने भिक्षुक का रूप धारण किया । नाचने और गाने में पूर्ण अभ्यास करके एक सहस्र गति के ज्ञाता बन गये । उन्होंने अपनी बाईं ओर शृङ्गी और दाहिनी ओर डमरू लिया और शरीर भर में श्वेत भस्म लगाकर लाल वस्त्र पहिने । वृद्धावस्था धारण करने के कारण बुड्ढों के समान उनका बदन काँपता था, पर वाणी अति मधुर थी । निदान ऐसे अनूप रूप और वस्त्राभरणों से अलंकृत होकर श्रीसदाशिवजी हिमाचल पर्वत पर गये और इस प्रकार के नृत्य, गान, नटकर्तब, मधुरस्वर, प्रियशृङ्गी और डमरूनाद से नगर-वासियों को रिझाया कि चारों ओर से ठठ्ठ के ठठ्ठ पर्वतनिवासी इकट्ठे हो गये । यहाँ तक कि कोई बूढ़ा बालक स्त्री पुरुष घरों में न रहा, जो वह मधुर शब्द सुन घर से निकला हो और कोई भी शिव के उत्तमोत्तम ताल और प्रिय स्वर समेत राग से मोहित और विह्वल होकर अधीर होने से न बचा हो । यहाँ तक कि मैना मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी । गिरिजा भी उस आनन्द स्वर में मग्न हो गईं । शिव की मूर्ति मन में पाकर प्रसन्न और मन में शिव की स्तुति की । तब तो शिव कृपाल होकर बैठ गये । तब मैना चैतन्य हुई और योगी से अति प्रसन्न होकर हीरा, पन्ना मोती, मणि आदि से थाल भरकर देने लगी, पर उस योगी ने न लेकर गिरिजा को माँगा और फिर नाचने को खड़ा हो गया । पर मैना ने अप्रसन्न होकर बहुत भय दिलाया और इच्छा की कि उस योगी को निकाल दे । इस इच्छा को दृढ़कर मैना ने उच्चस्वर से कहा कि क्या कोई यहाँ नहीं है कि जो इस योगी को मारकर बाहर निकाल दे । यह मूर्ख हमारी कन्या की इच्छा रखता है । यह कैसी ढिठाई है । इतने में हिमाचल आ पहुँचा और सब वृत्तान्त सुन क्रोधित होकर आज्ञा दी कि इस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

योगी को यहाँ से निकाल दो। हिमाचल के नौकर निकालने पर तत्पर हुये पर उस योगी के प्रताप से उसके निकट न जा सके। हिमाचल ने विचारा कि यह कौन मनुष्य है। जब विचारपूर्वक योगी को देखा तो उसको उनका चतुर्भुजी स्वरूप, शिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल लटकते हुये, पीले वस्त्र पहने और जो फूल विष्णु पर चढ़ाये जाते हैं, उनसे भूषित देखा। फिर उसी समय हिमाचल ने द्विभुजी मूर्ति इस तरह पर देखी कि अपने को गोपों के समान भूषित किये मुरली कर पङ्कज में लिये चन्द्रमा के समान उत्तम किशोर अवस्था को प्राप्त जिसको देख मन को प्रसन्नता होती थी। फिर पहिले हमारे रूप को रक्तवर्ण वेद पढ़ते, फिर सूर्य को, फिर अग्नि को, फिर गणपति को, जो तुण्ड किये लम्बोदर हैं, देखा। कुछ समय में उसने अष्टभुजी भवानी के स्वरूप को अवलोकन किया। फिर शिव ने अपना मुख्य स्वरूप इस तरह हिमाचल को दिखाया कि शीश पर जटा और गङ्गा की धारा, माथे पर चन्द्रमा और त्रिपुण्ड्र, चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख, तीनों नेत्र ललाई लिये, कीर समान नासिका, रक्त ओष्ठ, कण्ठ में तीन रेखा श्यामता लिये, गले में हार पहिने, चार भुजा, जिसमें शूल, कपाल अभयादि नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से अलंकृत, उदर बहुत नरम, जिसमें त्रिबली पड़ी हुई, उत्तमोत्तम कटि और पगतली रक्त, कमलवत् लाल, नितम्ब गोल, नख रक्त ऐसा मनोहर विचित्र स्वरूप देख हिमाचल ने अति आश्चर्य में होकर जाना कि सदाशिव हैं। जब सदाशिव ने जाना कि हिमाचल ने हमको पहिचाना तो तुरन्त उसी योगी का स्वरूप धारण किया और फिर हिमाचल से गिरिजा की इच्छा की। हिमाचल ने तुरन्त प्रणामकर मान लिया। योगी तो अन्तर्धान हो गये और मैना तथा हिमाचल चैतन्य होकर शिव को सबसे श्रेष्ठ जाना। देवताओं ने अपने मनों में इस बात को ठहराया कि शिव गिरिजा का विवाह हमको व संसार भर को और उसके माता-पिता को शुभ होगा। इस इच्छा से उनसे सबों ने मिलकर हिमाचल के गुरु के घर में जाकर प्रणाम किया और कहा कि इस समय शिव के चरित्र से मैना और हिमाचल ने शिव को सबसे बड़ा समझ लिया है। तुम जाकर ऐसी युक्ति करो जिसमें

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव गिरिजा का विवाह हो जावे। गुरु बहुत क्रोधित होकर दोनों हाथ कानों में रखकर कहने लगा कि हे देवतो! तुम बड़े मतलबी हो। तुमको अन्त का कुछ हाल मालूम नहीं है। तुम शिष्य होकर गुरु को संथा (शिक्षा) देते हो। तुम हमारी अच्छी सेवा करते हो, जिसमें हमको नरक प्राप्त हो। जो मनुष्य विष्णु, महादेव, ब्रह्मादि देवता व ब्राह्मण व अपने गुरु, पतिव्रता स्त्री, योगी, सेवक, अपने पति, गौ, तुलसी, पुराण, गङ्गा, वेद, माता गायत्री वेद और दान की निन्दा करता है, वह निस्सन्देह नरक में जाकर असंख्य कल्प तक दुःख भोगता है। जो तुमको यह कार्य आवश्यक है तो तुमको उचित है कि ब्रह्मा के पास जाकर उनसे सहायता माँगो और अपनी बुद्धि के अनुसार तुम उपाय करो, पर मनमें शिव के चरणों का ध्यान रक्खो। हमको निश्चय है कि ब्रह्मा अरुन्धती और सप्तऋषियों के समेत जाकर हिमाचल को समझावेंगे। हमको अपने तपोबल से पूरा विश्वास है कि शिव के सिवाय और कोई गिरिजा को नहीं पावेगा। यह कह गुरु चुप हो रहे।

चवालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गुरु की आज्ञा से सब देवताओं ने हमारे पास जाकर अपने मनोरथ को अक्षर प्रतिअक्षर कहा। हमने अति अप्रसन्नता से देवताओं को धिक्कार देकर धर्म की बातें वर्णन कीं अर्थात् हमने कहा कि तुम मुझको शिव की निन्दा कराना सिखाते हो। क्या अच्छे लड़कों का यही धर्म है। मुझको नरक का मार्ग बतलाते हो। यही सेवा करना लड़कों को उचित है। शिव की निन्दा सबको दुःख देनेवाली और अर्थ, धर्म, काम को नष्ट करनेवाली आपदा की मूल और सर्व प्रकार के आनन्द मङ्गल को उखाड़नेवाली है। हम इस विषय में कुछ भी सहायता न करेंगे। तुम सब मिल शिव के समीप जाकर विनय करो, क्योंकि दूसरे की निन्दा दोनों लोक में दुःख देती है और अपनी निन्दा बढ़ाती है। यह बात हमसे सुन वे सब कैलाश पर्वत में जाकर शिव की अति प्रशंसा करने लगे और बोले कि हिमाचल आपका बड़ा भक्त है। उसने तुमको परब्रह्म जानकर इच्छा की है कि अपनी कन्या आपको देकर मुक्ति प्राप्त करें। इस बात को आप स्वीकार करें। शिवजी यह बिनती देवताओं की सुनकर हँस दिये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फिर उनको अति प्रसन्न कर बिदा किया। पश्चात् अति सुन्दर शरीर धारण कर हाथ में श्वेत रत्नों की माला पहनी, माथे पर तिलक लगाकर गले में शालग्राम की मूर्ति बाँधी, उत्तमोत्तम वस्त्र पहने हुये वैष्णवी वस्त्रों से भूषित हुये और अति चतुरता से हिमाचल के घर चले। हिमाचल अपने सब परिवार समेत आदर के लिये उठ खड़ा हुआ। गिरिजा ने बड़ी भक्ति से ऐसे ब्राह्मण की पूजा की और पहचाना कि यह शिव हैं। ब्राह्मण ने अशीष देकर कुशल पूछी। हिमाचल ने कहा कि आप कौन हैं और किस कार्य के निमित्त आये हैं। ब्राह्मण ने कहा कि मैं ब्राह्मण हूँ। पृथ्वीभर का पर्यटन करता हूँ। अपने गुरु की कृपा से तीनों लोकों को पहचान कर सब बातों का ज्ञाता हूँ। जो मनुष्य तीनों लोक में कोई काम करता है, वह मैं अपने मनही में जान लेता हूँ। सो इस बात की साक्षी देता हूँ कि तुम्हारी इच्छा है कि गिरिजा का विवाह शिव के साथ करदें। ऐसी तुम्हारी मूर्खता जानकर मैं तुम्हारी भलाई के लिये तुम्हारे घर आया हूँ। मैं उससे कहता हूँ कि तुम ऐसी अच्छी कन्या को ऐसे बुरे और निर्गुण मनुष्य को क्यों देते हो। वह तुम्हारी इच्छा अशुभ है जिनकी सेवा सम्पूर्ण सृष्टि देवता, मुनि, दैत्य और सिद्धादि सब करते हैं, उनके साथ गिरिजा का विवाह करना उचित है। तुम्हारे अधीन एक लक्ष पर्वत हैं। इसी प्रकार विष्णु भी बड़े महाराजाधिराज हैं। शिव के आगे-पीछे भाई-बन्धु आदि नहीं हैं। यह बात तुम आपही भाई बन्धुओं से पूछ लो। जो तुम यह कहोगे कि गिरिजा को शिव के सिवाय दूसरा पति स्वीकार नहीं तो यह बात प्रकट है कि रोगी को कुपथ्य बिन कोई गुणकारी औषध नहीं भाती। यह कह ब्राह्मण चल दिये और हिमाचल के अतिखेद और चिन्ता से आँसू बह निकले। मैना ने हिमाचल से कहा कि हमारी बात सुनो जो अन्त को अच्छा फल देगी। तुमको उचित है कि सब पर्वतों को बुलाकर उस ब्राह्मण के वाक्यों के लिये मत पूछो क्योंकि उसकी बातें सुनकर मुझको बड़ा सन्देह हुआ है। जब तक उस बात की सफाई न होगी, मुझे बहुत ही भय बना रहेगा। तुम भी ब्राह्मण की बात को अच्छी तरह पर सोचो। नहीं तो मैं या तो घर छोड़ बन में जा रहूँगी या विष खाकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मर जाऊँगी या गिरिजा को साथ लेकर तुम्हारे घर से निकलकर किसी निर्जन स्थल में जा रहूँगी । यह कह मैना अति कोपित होय गिरिजा को साथ लेकर कोप भवन में जा बैठी और कुचैल वस्त्र पहिन सर्व प्रकार के वस्त्राभूषण उतार धरती पर लेट गई । वह अनुचित वचन कह पृथ्वी को खोदती थी । यह चरित्र देख हिमाचल बहुत दुःखी हुये और मैना के पास जाकर ठहर-ठहरकर समझाने लगे और कहा कि क्यों पृथ्वी पर पड़ी हो । फिर हिमाचल बड़ा अचरज करने लगे । यह चरित्र शिव ने कुछ उत्तम किया ।

पैंतालीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह दशा देख हिमाचल के सब परिवार के लोग और सब नगर निवासी अति दुःखी हुये । देवताओं ने परस्पर कहा कि क्या करते क्या हो गया । सब स्त्री पुरुष शिव का ध्यान करने और कहने लगे कि जो आपने किया वह सब शुभ हो । यह कहकर वे चुप हो गये । गिरिजा बहुत मुरझाकर शिव का ध्यान करने लगीं । सो शिवने यह भी चिन्ता गिरिजा की जानकर सप्तऋषियों का स्मरण किया । वे तुरन्त आये । उनकी कान्ति सूर्य के समान महा प्रकाशवान्, गङ्गाजी से भीगे हुये जटा धारण किये, हाथ में माला, शरीर में भस्म रमाये, महा उज्ज्वल स्वरूप, शिव-शिव मुख से कहते हुये उन्होंने शिवको प्रणाम किया और धन्का के समान आठों अङ्ग बनाकर दण्डवत् कर हाथ जोड़े हुये शिर झुकाया तथा बड़ी स्तुति की । शिव बोले कि हमने तारक दैत्य के लिये गिरिजा के साथ विवाह करने की देवताओं से प्रतिज्ञा की थी, वह समय निकट है । इससे तुम हिमाचल के पास जाकर उससे और उसकी स्त्री से हमारे विवाह के निमित्त कहो और जिस तरह देवताओं का काज सुधरे, वह सब तुमको करना उचित है हमारा सगुण स्वरूप केवल देवताओं के निमित्त है । यह सब सप्तऋषि अति प्रसन्न होकर परस्पर कहने लगे कि हम बड़े भाग्यवान् हैं, जिसका ब्रह्मा और विष्णु प्रेम से रात्रि-दिन सेवा किया करते हैं । यह आज हमको सृष्टि के उपकार के लिये अपने विवाह के निमित्त भेजते हैं । वे वहाँ से चलकर हिमाचल के समीप गये ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हिमाचल ने प्रणाम करके पूजन किया और आने का कारण पूछा। सप्तऋषि बोले कि शिव सृष्टि के पिता और गिरिजा सृष्टि की माता हैं। संसार की भलाई के लिये शिवने गिरिजा के साथ विवाह करने की इच्छा की है। उसी कार्य के निमित्त आपके पास हमको भेजा है। तुम गिरिजा को दो। तुम्हारी संसार में बड़ी कीर्ति होगी। ब्रह्माजी ने इस विषय में शिव की बड़ी इच्छा की और गिरिजा ने बड़ा कठिन तप किया। इसलिये शिवने विवाह की इच्छा की है। उसी समय में कुम्भज ऋषि की स्त्री और अरुन्धती ने भी मैना के पास कोपभवन में जाकर देखा कि वह महामलिन वस्त्र पहने, महाचिन्ता से युक्त धरती पर पड़ी हुई है। उन्होंने यह दशा देखकर कहा कि हे मैना! उठो। मैना मुनीश्वरों की स्त्रियों को पहचानकर उठ बैठी और कहने लगी कि धन्य भाग्य हैं कि तुमने आकर मुझे कृतार्थ किया। मैं आपकी चेली हूँ, जो आज्ञा हो, उसका पालन करूँ। अरुन्धती बोली कि हम तुमको बिना कारण अप्रसन्न होते हुये जानकर मनाने को आई हैं। देखो हिमाचल गिरिजा का शिव के साथ विवाह करता है। तुम क्यों अप्रसन्न हुई हो। क्या तुम शिव को नहीं जानती हो। अब तुरन्त हिमाचल के पास चलो। इसी प्रकार वशिष्ठ की स्त्री अरुन्धती ने शिव के बहुत गुण वर्णन किये। फिर दोनों उठकर हिमाचल की सभा में आईं। मैना ने सप्तऋषियों को प्रणाम किया और अपने पति के चरणोंका ध्यान करती हुई अरुन्धती के साथ बैठ गई तब सप्तऋषियों ने कहा।

छियालीसवाँ अध्याय।

सप्तऋषि बोले कि हे हिमाचल! तुमने शिव के चरित्र को जाना, बड़े धोखे में पड़े। तुमको कुछ धर्म का विचार नहीं। तुम केवल एक ब्राह्मण के कहने पर अपने वाक्य से बदल गये। तुमको उचित है कि दृढ़ बुद्धि रक्खो और धोखा न खाकर गिरिजा के साथ, शिव का विवाह कर दो। शिव के श्वसुर होकर संसार भर में श्रेष्ठ हो जावो। संसार में तारक नाम दैत्य बड़ा अन्याय कर रहा है। उसके वध करने के लिये यह विवाह पहले ठहराया गया है। हिमाचल ने कहा कि मैं अति नम्र होकर हाथ जोड़ विनय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करता हूँ। मुझको आप इस बात की आज्ञा दें कि आपसे इस बात को पूछूँ कि मैं तो एक लाख पहाड़ों का महाराजा हूँ और शिव के पास राज्य की एक वस्तु भी नहीं है। वह संसार से जुदा अशुभ वनवासी अवधूत है। मैं क्योंकर ऐसे मनुष्य के साथ उसका विवाह करूँ। मैं इस विषय में तुमसे नीति चाहता हूँ। प्रकट है कि वैर, मैत्री और विवाह बराबरवाले से करना चाहिये। इस प्रकार के पति तो कन्या देकर पिता नारकी होता है। इसी प्रकार काम, मोह, भय, और लोभादि के कारण जो अपनी कन्या ब्याह देता है, उसको भी बहुत दुःख मिलता है। इससे मैं गिरिजा का विवाह शिव से न करूँगा। यह सुन अरुन्धती ने हिमाचल से कहा कि वेद के अनुसार तीन प्रकार के वचन होते हैं। पहिले यह कि जिनका सुनना प्रकट में आनन्द उपजाता हो, पर भीतर झूठ और आनन्द के नाश करने-वाले हों। दूसरे जो सुनने में अमृत के समान हों, दया धर्म से खाली न हों और उनका अन्त अच्छा हो। तीसरे जो पूरे सत्य धर्म से भूषित हों। सो हम बीचवाले वचन का आश्रय लेकर कहते हैं। बाकी दोनों छोड़कर वेद के अनुसार तुमको समझाते हैं कि शिव संसार भर के राजा और सबके स्वामी हैं, जिनको अगुण-सगुणरूप दोनों कहते हैं तथा जिनके कुबेर के समान सेवक हैं। उनको दरिद्री कहना उचित नहीं। वे तीनों गुणों के वश करनेवाले और तीनों लोक के शरीर हैं। हर, ब्रह्मा और विष्णु उन्हीं के तीनों गुणों से उपजे हैं। सर्ववृत्तान्त सती के शरीर छोड़ने और फिर गिरिजा के उपजने का वर्णन करके कहा कि यह गिरिजा तो सनातन से शिव की शक्ति है। इसलिये तुमको उचित है कि इसका विवाह शिव के साथ कर दो। इसमें तुम्हारे लिये दोनों लोक में यश होकर तुम्हारा कुल पवित्र होगा। सब देवता तुम्हारे वश में हो जावेंगे, नहीं तो गिरिजा तो अवश्य करके शिव को पावेगी। तुम पश्चात्ताप के सिवाय कुछ न पावोगे। जो वरदान शिव ने गिरिजा को दिया है, वह क्या नहीं होगा? शिव की इच्छा झूठी नहीं होती। देखो, शची के पति इन्द्र ने बहुत से पर्वतों के पङ्ख काट डाले। एक पवन ने बल करके कनकशैल के शृङ्ग को फोड़ा। इसलिये उचित नहीं है कि शिव से हठ करो। तुमको सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुल की रक्षा करना उचित है, नहीं तो बड़ा उपद्रव होगा। देवता आदि सब तुम्हारे शत्रु हो जावेंगे। जैसा कि राजा अनरण्य ने अपनी कन्या ब्राह्मण को देकर अपने कुल को बचा लिया। इसी प्रकार तुमको उचित है कि गिरिजा शिव को देकर कुल की रक्षा करो। हिमाचल ने कहा कि अनरण्य राजा की कथा कहो। वशिष्ठ बोले कि वेदचन्द्र जो चौदहवाँ मनु है। उसकी सोलहवीं पीढ़ी में अनरण्य नाम राजा उपजे। वह मङ्गलारण्य राजा के सदृश प्रजा का पालन करनेवाला राजगद्दी पर बैठकर अपने न्यायपूर्वक राज्य करते रहे। उनके सात पुत्र और एक कन्या उपजी, जिसका नाम पद्मा था। वह राजा और रानी को प्राण के समान प्रिय थी। जब वह विवाहने योग्य हुई तब उसके लिये पति ढूँढ़ने लगे। इतने में पिप्पलादि मुनि अपने आश्रम को जाते थे। वन में देखा कि एक गन्धर्व अपनी स्त्री से विहार कर रहा है। यह देख मुनि भी काम के वशीभूत होकर स्त्री से भोग की इच्छा करने लगे। सो पुष्पभद्रा के तट पर पद्मा को देख सबसे पूछा कि यह किसकी पुत्री है। सबने उत्तर दिया कि अनरण्य राजा की लड़की है। मुनि स्नान और विष्णु का पूजनकर राजा के समीप गये और कामी होकर उससे लड़की को माँगा। राजा चुप हुये और मुनि ने वारम्बार उस लड़की को माँगा। पर जब उत्तर न पाया तो क्रोधित होकर कहा कि तू हमको लड़की नहीं देता, चुप मार बैठ रहा है। मेरे पास वह विद्या है कि इसी समय तुझे जलाये देता हूँ। मुनि के ऐसे कोप के वचन सुन राजा स्त्री, पुत्र और भृत्यों समेत आश्चर्य में होकर रोने लगा। तब एक बुद्धिमान् पंडित ने राजा को शिक्षा दी कि अब आपको उचित है कि मुनि को लड़की दे दो। कुल को जलने से बचाओ। राजा ने मानकर लड़की दे दी, जिससे कुल परिवार पर उष्ण पवन भी न आने दी। हे हिमाचल! इसी तरह तुमको करना उचित है। अब केवल सात दिन शेष रह गये हैं। शुभ मुहूर्त विवाह के लिये आवेगा अर्थात् मृगशिरा नक्षत्र चन्द्रवार और योग करण केन्द्र के शुभग्रह उत्तम फल देंगे और लग्न का स्वामी अपने स्थान पर आवेगा। यह अति उत्तम मुहूर्त आवेगा, उस दिन तुम गिरिजा को शिव के साथ ब्याह दो। इसी तरह पर सप्तऋषि तीन दिन तक ठहरे रहे। चौथे दिन हिमा-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चलने लग्न लिखाया जो सप्तऋषि लेकर शिव के पास गये और हिमाचल ने बड़ा मङ्गलाचार मनाया।

सैंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सप्तऋषियों ने शिव के पास जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त कह सुनाया। शिवजी बोले तुमने अच्छा काम किया है। तुम बड़े निष्पाप, ब्रह्मज्ञानी धर्मात्मा, वेदज्ञ और तीनों लोकों का हित चाहनेवाले हो। तुम हमारे विवाह में अपने शिष्यों समेत निमन्त्रण में आना। यह सुन सप्तऋषि तो बिदा हुये और हे नारद! फिर शिवजी ने तुमको स्मरण किया। तुम तुरन्त प्रसन्नतापूर्वक पहुँचे और हाथ जोड़कर शिवकी स्तुति और विनती की कि हमारे बड़े भाग्य हैं जो आपने मुझे स्मरण किया। अब मुझ सेवक को आज्ञा दीजिये। शिवजी ने संसार की रीति अनुसार कहा कि गिरिजा ने हमारा बड़ा तप किया। हमने प्रेम के वश में होकर उसको वरदान दिया है कि उसके साथ विवाह करेंगे। तुमको चाहिये कि हमारी ओर से सब देवताओं को निमन्त्रण दो। यह बात अच्छी तरह समझा देना कि जो हमारी बरात में संयुक्त न होगा, वह हमारा प्यारा न होगा। तुम तुरन्त चल दिये। पहिले विष्णुजी के पास फिर मेरे पास और इसी तरह सनकादिक भग आदि के समीप पहुँचे और सबको शिवजी का संदेशा सुनाया। फिर तुम इन्द्रलोक, ध्रुव-लोक, सप्तऋषि लोक, नन्दालोक, सूर्य और चन्द्र लोक तथा भूलोक आदि सर्वस्थानों में विवाह का संदेशा (निमन्त्रण) दे आये। सबने अति प्रसन्नता से अङ्गीकार किया। फिर हे नारद! तुम देवता और मुनीश्वरों के यहाँ गये। तीनों लोक में कोई जगह न रही, जहाँ तुमने जाकर शिव की ओर से निमन्त्रण न पहुँचाया हो। निमन्त्रण देने के उपरान्त तुम शिव के समीप पहुँच स्तुति करने लगे। तुमने यह भी कहा कि हे महाराज! आपके निमन्त्रण को ब्रह्मा, विष्णु और सर्वसृष्टि ने बड़ी प्रसन्नता से अङ्गीकार किया। फिर तुम शिवकी आज्ञा से वहीं स्थित रहे सो ब्रह्मा, विष्णु, सनकादिक, लोकपाल, इन्द्रादिक, गणपति, अग्नि, धर्मराज, वरुण, कुबेर, पवन, ईशान, दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा, हिंगुलाज, ज्वालामुखी, देवी,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवता और मुनि आदि धीरे-धीरे समय-समय पर कैलाश में अपनी सर्व-सामग्री, परिवार, स्त्री, गण, सेना तथा सभासद् लेकर आये और अपने पद के अनुकूल बैठे। बरात अच्छी तरह इकट्ठी होने लगी। नाना वर्ण के खेल, तमाशे और लीला होने लगीं। विष्णुजी और हम शुभलग्न पाकर शिवजी के समीप आये और प्रणाम के उपरान्त विनय की कि अब तो चलने का समय आ गया।

अड़तालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिवजी ने आज्ञा दे दी कि बरात तय्यार हो। यह सुनते ही तुरन्त सबने अपने-अपने को भूषित किया और सोलहों शृंगार करने लगे। विष्णु, हम और देवता आदि बरात के साजने में लगे। चारों ओर शुभसामग्री जैसे कि ध्वजा, पताका तथा चँवरादि गाड़े गये। देवपत्नियाँ शुभगीत गाने लगीं। रत्न और मोतियों से चौक ठीक किये गये। प्रतिद्वार में सोने के कलश, कदलीखम्भ और इसी प्रकार की अनेक सामग्रियाँ आनन्द देनेवाली जमाई गई। उस समय के शिव की सुन्दरता हम कह नहीं सकते, वह कहने से बाहर है। विष्णु, हम और इन्द्र आदि अपने-अपने प्रसिद्ध वस्त्रों से भूषित हुये। सवारों के रिसाले, हाथियों के समूह और घोड़ों के छलबल प्रशंसा के योग्य देखने के लायक थे। जब शुभमुहूर्त आया, शिवजी महाराज बरात समेत चले। नन्दी, वीर और भैरव आदि भी अपने गणों सहित साथ हुये। उस बरात में असंख्य सेना चली। शिवजी ने पहिले संसारी रीति के अनुकूल ब्राह्मण के चरणों का ध्यान कर डमरू बजाया और चले। आकाश से फूलों की वर्षा हुई, दुन्दुभी बजीं और बहुत से बाजे, गाजे तथा बन्दीजन आदि बरात के साथ चले।

उन्चासवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने भी अपने भाई, बान्धव नदी, नद और समुद्रों को स्त्रियों सहित निमन्त्रण देकर अपने नगर को हर प्रकार से सजाया। बहुत से मन्दिरों को रत्नादिकों से पूर्णकर भूषित किया। अच्छा मँडवा अच्छी चीजों से छाकर बन्दनवार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और मोतियों के झालर लटका दिये। सब भाई बन्धु, जिनको निमन्त्रण दिया था, उनके घर इकट्ठे हुये। वहाँ एक आश्चर्यदायक सामग्री तय्यार हुई। हिमाचल ने अपने दान से सब मंगनों को अयाचक किया। हर स्त्री पुरुष ने अपने-अपने को सजाया। नाना प्रकार के साज सजने लगे। स्त्रियों के समूह ने इकट्ठे होकर गिरिजा को नहलाया और जो-जो कुल-देवता आदि की पूजा नियत है, सब गिरिजा से कराई। शिव की ओर से तुमको देवताओं ने आगे हिमाचल के पास भेजा, जहाँ तुम्हारी बहुत ही सेवा हुई। सब रीतों के पूर्ण करने के उपरान्त हिमाचल ने पहिले अपने पुत्र को बरात की अगवानी के लिये भेजा। आप भी बरात आने की बाट देखने लगा। जब बरात निकट पहुँची, तो हिमाचल अपने सर्व बान्धवों सहित आप ही अगवानी को चले। ऐसी बरात की बहार, असंख्य सेना और विचित्र सामग्री देखकर हिमाचल साथियों समेत बहुत आश्चर्य में हुये। उन्होंने झुककर हम सबको प्रणाम किया और कुछ भी स्तुति करने में न चूके। चारों ओर बड़ी प्रसन्नता छाई हुई थी। हिमाचल ने एक बहुत अच्छा पहाड़ बरात के स्थित होने को दिया। फिर हिमाचल बिदा होकर गया और तय्यारी करने के पीछे अपने पुत्र को भेजा कि अब बरात हमारे द्वार पर आवे। सो उस समय सब बरात बड़ी सामां सहित अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर चली। उस समय की सामां का वर्णन कोटिन जिह्वा से सैकड़ों वर्ष में भी नहीं हो सकता। तब मैना के मन में आई कि पहिले मैं अपने जामाता को देखूँ तब द्वारचार की रीति पूरी की जावे। यह विचार कर हे नारद ! मैना ने तुमको बुलाया और अपना मनोरथ वर्णन करके कहा कि जिसको तुम परब्रह्म और सबसे श्रेष्ठ कहते थे, उसे देखकर सब काम किये जावेंगे। यह तुमसे कहकर मैना शीशमहल में बैठ गई।

पचासवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब मैना राज्य के अहंकार से यह अधर्म-रूपी विचार अपने मन में लाई और शिवजी के स्वरूप की परीक्षा चाही, तब शिव यह सब जानकर अप्रसन्न हुये। मन में कहा कि इस बुद्धिहीन स्त्री ने मेरी कई परीक्षा की। यह तो तर्कणा की खानि है। देखो, मैं क्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चरित्र करता हूँ, जिसमें यह मूर्खा स्त्री ऐसी बातों को भूल जावे। यह विचार कर उन्होंने विष्णु को बुलाकर कहा कि तुम और ब्रह्मा मेरे बड़े हित चाहनेवाले हो। तुमसे अधिक हमको कोई प्रिय नहीं। अब हम आज्ञा देते हैं कि तुम सब पहिले जुदा-जुदा अपनी-अपनी सेना सहित हिमाचल के द्वार पर चलो। सबके पीछे हम आवेंगे। यह सुन विष्णु ने सबको आज्ञा सुनाई जिसके अनुकूल अलग-अलग सब चले और हिमाचल के द्वार में प्रवेश करने लगे। मैना ने ऐसी धूमधाम के साथ बरात देखी बड़ी प्रसन्नता से कहने लगी कि वाह-वाह क्या अच्छी बरात है। उसकी यह दशा हुई कि जिसको देखती, तुम से पूछती कि यही गिरिजा के पति हैं। पहिले जब मैना ने गन्धर्वों के राजा वसु को देखा तो तुम से कहा कि क्या यह शिव हैं? तुमने उत्तर दिया कि नहीं यह तो शिव की सभा के गानेवाले हैं। मैना बोली कि जिसकी सभा के ऐसे गानेवाले और नाचनेवाले हैं, वह कब मुझको देख पड़ेंगे। फिर यक्षों के स्वामी मणिग्रीव को देखा और तुमसे कहा कि यह शिव हैं। तुमने उत्तर दिया कि नहीं। फिर मुंच नाम लोकपाल और चक्षुगणों सहित आ निकला। मैना ने कहा कि यह शिव हैं। तुमने कहा कि नहीं। इसी प्रकार धर्मराज, निर्ऋति, सर्प, वरुण, पवन, कुबेर, ईशान, आठों दिक्पति, रुद्र, इन्द्र चन्द्र, ग्रहपति, शुक्र, प्रजापति, सप्तऋषि, ब्रह्मा और विष्णु जो एक के पीछे एक आते थे उनको देख मैना ने तुमसे प्रसन्न होकर कहा कि यही शिव हैं। तुम उत्तर देते जाते थे कि नहीं, यह शिव नहीं हैं, यह तो शिव के भक्त हैं। मैना अति प्रसन्न हुई और अपने को धन्य समझा। वह समझी कि हमारा कुल जीवन्मुक्त हो गया, क्योंकि जिसको हमने देखा वही शिव का भक्त ठहरा और वही गिरिजा का पति है। यह कह मैना के सब दुःख दूर हो गये।

इक्यावनवां अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैना ने तुम्हारी और गिरिजा की बहुत प्रशंसा करके तुमसे कहा कि हमने शिवको न देखा। यह कहती ही थी कि शिव सम्मुख आये। तुमने तुरन्त कहा कि यह शिव हैं। गिरिजा के पति यही हैं। अच्छी तरह देखो। मैना ने देखा और शिव की माया से उसकी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आँखें ऐसी हो गईं कि उसकी दृष्टि में सन्देह उत्पन्न हुआ। उस समय शिव का दल उसको ऐसा दिखाई दिया कि सब ही भूत प्रेत हैं। कइयों के तो हाथ ही नहीं और बाजों के बहुत हाथ हैं। मैना ऐसा दल देख बहुत डरी। उस सेना में शिव को बैल पर चढ़े, त्रिनेत्र, चन्द्रमा और मुकुट विराजमान, व्याघ्रम्बर और गजचर्म धारण किये, हाथों में डमरू, कपाल, त्रिशूल और सर्वशस्त्र लिये, शीशपर जटाजूट, कानों में सर्प, पाँचमुख, मुण्डों की माला धारण किये, कण्ठ में हलाहल की श्यामता, शरीर में सर्प लिपटाये हुये देखा। सो हे नारद! उस समय तुमने मैना से कहा कि इधर-उधर क्या देखती है। अब क्यों शिव का रूप नहीं देखती। जब मैना ने ऐसा रूप और वैसी सेना देखी तो भयभीत और महादुःखी होकर धरती पर गिर मूर्च्छित हो गई। तब बड़ा हाहाकार हुआ। सबको बड़ा खेद हुआ। सब लोग ओषधि आदि उपाय कर मैना को चेत में लाये और तुमसे कहा कि तुझ पर धिक्कार है कि तू बड़ा झूठा, बुद्धिहीन, पापों की खानि, नास्तिक और छली है। तुझे लोग वृथा ही विष्णु का भक्त कहते हैं। यहाँ से तू दूर हो। अब तुझको आँखों से न देखूँगी। तू बड़ा छली है। तूने हमारी कन्या को खराब किया। वह अवधूतों और भूतों की सेना लेकर मेरी लड़की के साथ विवाह करने आया है। हमारा और हिमाचल का जन्म वृथा हुआ। मेरे साथ सबोंने छल किया। सप्तऋषियों ने क्या कुछ कोताही की है। वह अरुन्धती कहाँ गई जिसने मुझको गुड़ देकर ईंट मारी। यह कह गिरिजा को बुलाकर कहा कि तुमने वनमें जाकर यह क्या कर्म किया है। तुमने रत्न छोड़ काँच मोल लिया, चन्दन छोड़ काठ को अपने शरीर में लगाया, हंस न लेकर कौवा लिया, गङ्गाजल छोड़ कुयें का पानी पिया, सूर्य से प्रयोजन न रखकर जुगुनू से मनोरथ चाहा, घी न भाया कि रेंडी के तेल से रुचि हुई। तुमने यज्ञ की भस्म को दूरकर चिता की भस्म लगाई। अर्थात् विष्णु और अन्य देवताओं को छोड़ शिव के लिये तप किया। तुम बड़ी भाग्यहीन हो। तुझको और तेरे कर्मों पर धिक्कार है। तेरे उपचेष्टा, तेरी सखियों और तुझको भी धिक्कार है। अब मुझको आनन्द कहाँ है। ऐसा संसार में कौन है, जो मेरे इस दुःख को दूर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करे। मुझको दुःख समुद्र में डूबते हुये भुजा पकड़ कर निकाले। यह हमारे कर्मों का फल है। हमने बड़े प्रेम से पुत्री के लिये तप किया था, जो ऐसा भयवान् स्वरूप दुःख देनेवाला और उसका फल हमको मिला। वह बारम्बार पृथ्वी पर गिरकर मूर्च्छित हो गई। जब फिर चेत में आई तो गिरिजा की ओर दृष्टिबन्द करके धिक्-धिक् कहने लगी और कहा कि खेद है, तू न मर गई। वन में भी तुझे किसी ने न पूछा कि इस समय हमारे कुल में बट्टा लगाया। मैं तेरा शिर काट डालूँगी पर शिव को तुझे न दूँगी। तुझको अपने समेत कुयें में कूदकर मरूँगी। चाहे कोई अधर्म मुझसे हो, पर तुझे अवधूत के साथ नहीं ब्याहूँगी। हिमाचल ने भी बड़ी मूर्खता की जो नारद के वचन पर इतना विश्वास किया। अब मैं क्या करूँ, जिससे मेरा दुःख दूर हो ऐसे-ऐसे वचन कहती हुई–रो-रो धरती पर गिर पड़ी। यह देख सब आनन्द दुःख में बदल गया। समझाने के पीछे सब लोगों ने आनन्द मनाया।

बावनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब यह दशा मैना की हुई तब नगर भर में उदासी छा गई। देवता आदि वहाँ पहुँच कर मैना को समझाने लगे कि तुम क्या करती हो। सब शुभ सामां का अशुभ किये देती हो। मैना ने यह सुनकर जो कुछ मन में आया, देवताओं को बुरा-भला कहा और दिक्पति आदि को उठा दिया। तब हे नारद ! तुमने मैना से कहा कि तुम्हारी बुद्धि कहाँ गई है। तुम उठकर सब अपना काम करो। यह सब शिव की लीला है। शिव परब्रह्म हैं। तुम उनको अवधूत के स्वरूप देख कुछ संशय मत करो। तुम्हारे इस वचन को सुनकर मैना ने 'दूर-दूर' किया। सप्तऋषि अरुन्धती समेत आकर मैना को समझाने लगे। उनको भी मैना ने क्रोधित होकर निकाल दिया। तब तो हम स्वयं गये। जब अच्छी तरह से शिव की स्तुति की तब मैना ने महाकोप को प्राप्त होकर कहा–चुप रहो, ऐसी झूठी बातें मत कहो। अन्त को हिमाचल ने मैना को आकर बहुत समझाया कि सबके स्वामी और पिता शिव मेरे द्वारपर आये हैं। तुमको जो उचित है वह करो। शिव के बराबर दूसरा कौन है। इस बात को वेद कहते हैं। देखो, एक बेर पहिले शिव अवधूत स्वरूप बनाकर हमारे यहाँ आये थे और ऐसे नाचे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गाये कि स्त्री पुरुष सब अधीर हो गये थे। उन्होंने कैसे-कैसे रूप दिखलाये थे। जिनको देखकर हम और तुम दोनों ने गिरिजा का देना मान लिया। यद्यपि ऐसी-ऐसी बातें कहकर हिमाचल ने समझाया, पर मैना के मन में कुछ न आया। उसने कहा—चाहे तुम गिरिजा की गर्दन बाँधकर पहाड़ से डाल दो या समुद्र में डुबा दो, पर निश्चय जानो कि शिव गिरिजा को न पावेंगे। तब गिरिजा ने मैना से कहा और अच्छी तरह पर समझाया कि मैं शिव के सिवाय और किसी के साथ विवाह न करूँगी। यह बात क्योंकर हो सकती है कि सिंह का भाग सियार को मिले। यह शिव हैं, मुझे इनके सिवाय और कोई भर्ता करना अङ्गीकार नहीं। यह सुन मैना अतिक्रोध में आई और गिरिजा को पकड़कर भलीभाँति तमाचों से मारा। तब तुमने देवताओं समेत गिरिजा को मैना से छुड़ाकर भगा दिया। जब मैना का कोप शान्त न हुआ वरन् और बढ़ा तब स्वयं विष्णुजी समझाने के लिये गये।

तिरपनवाँ अध्याय।

विष्णुजी ने कहा कि हे मैना! तुम शिव को नहीं जानती। वह सबसे बड़े हैं और सबके स्वामी अनादि हैं। उन्हीं से प्रकृति पुरुष सनकादिक हम और ब्रह्मा आदि सब उत्पन्न हुये। वे हमारी विनती से सगुणरूप धारण करते हैं और सृष्टि के हित चाहनेवाले हैं। उन्होंने हमको वेद कृपा किये। हम उन्हीं की सेवा करते हैं। इसी प्रकार बहुत स्तुति की और फिर कहा कि सबको शिव और शिव को सब समझो। हम तुम सब शिव हैं। वरन् सर्वसृष्टि को शिव समझो। जिस प्रकार कि एक शरीर नाना प्रकार के वस्त्र पहिनता है, इसी प्रकार शिव को समझना चाहिये। शिव की भक्ति बड़ा आनन्द देनेवाली है। वही माता-पिता और भाई हैं शिव धर्म बड़ी प्रसन्नता प्राप्त करनेवाला और दुःख मिटानेवाला है। हम सम्पूर्ण कार्य उन्हीं की शक्ति से करते हैं। उन्हीं के तप से हमको चक्र प्राप्त हुआ है। शिव सेवा से सब देवता अमर हो गये हैं। शिव के लिये सम्पूर्ण मुनि संसार छोड़ देते हैं। हे मैना! तुमको सब धर्मरूप कहते हैं। सो आज हम तुमको समझाते हैं। तुम्हारे बड़े भाग्य हैं कि सदाशिव हम सब समेत तुम्हारे द्वार पर आये हैं। तुम इस बात को अच्छे प्रकार समझो कि शिव की भक्ति बिन संसार भर का बखेड़ा वृथा है। शिव का तप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत सीधा है। शिव की भक्ति और तप बिना अन्य तप व्रत, वेदपठन, विद्या, धन, द्रव्य, दया, दान, सत्य, मौनधारण और योगादि सब वृथा और निष्फल हैं। यह सब बातें कुछ भी आनन्द नहीं देतीं। उनके बहुत रूप और असंख्य लीला हैं। जैसे कि तुमने तब अनेक रूप देखे थे और अब भयानक स्वरूप को भी देख लिया। जो कोई मनुष्य किसी को कुछ देने को कहे और न देवे, उसकी बराबरी और कोई पापी नहीं। हमने बहुत जीव देखे हैं, पर ऐसा किसी को नहीं देखा जो देकर ले लेवे। अब उठो और अपना काम करो। शिव तुम्हारा बड़ा कल्याण करेंगे। मैं सत्यही कहता हूँ कि शिव गिरिजा का अब विवाह होगा।

चौवनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! विष्णुजी के पवित्र वचन सुनकर मैना को कुछ ढाढ़स हुआ। वह उठकर लज्जापूर्वक विष्णु से बोली कि आपने मुझको समझाने से बड़ा भरोसा दिया, पर मैं अपने मन से निरुपाय हूँ वह बात को समझ लेता है पर उसमें समझने की समाई नहीं। मेरा मन यह काम करने को नहीं चाहता। यह सुनकर श्रीविष्णुजी ने तुमसे कहा कि हे नारद! तुम शिव के पास जाकर विनती करो कि मैना के मन से अपनी माया को खींच लेवें। मैना अपनी दशा पर आ जावे, जिसमें गिरिजा का विवाह हो और सब मनुष्य प्रसन्न हो जावें। जब तुम शिवजी के चरणों में विष्णु की आज्ञा से पहुँचे तो शिव विष्णु की इच्छा समझ अति सुन्दर हो गये। एक मुख, दो नेत्र, शरीर चम्पा के फूल के समान, सर्वप्रकार से मोहिनीरूप धारण किया और उत्तमोत्तम रत्न, जड़ाऊ कपड़ों से शरीर को सजाया। खिला माथा जो अग्निसमान चमकता चन्दन, कस्तूरी, अगर, कुमकुम और इतर आदि लगाये तथा मणियों से जड़ी हुई अँगूठियाँ हाथों में पहिने हुये आँखों में काजल लगाये, रत्नों से जड़ा हुआ मुकुट रक्खे, जड़ाऊ कुण्डल कानों में विराजमान, किशोर अवस्था को प्राप्त, मानों संसार भर की सुन्दरताई इकट्ठी होकर शिव में स्थित हुई थी। हे नारद! जो परब्रह्म आदि, मध्य और अन्तरहित, सृष्टि उपजानेवाला है, उसने ऐसे रूप से प्रकट होकर कैसी-कैसी लीला की। सो हे नारद!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमने शिवजी का ऐमा स्वरूप देख अति आनन्द माना और स्तुति करने लगे। फिर मैना से कहा कि शिवजी के रूप को देखो। मैना ने शिवजी का रूप देखा तो जो आनन्द उसको प्राप्त हुआ, वह लिखने और वर्णन करने में नहीं आता। हम, विष्णु और इन्द्र आदि शिवजी सेवा करने लगे। फिर हर ओर से प्रसन्नता छा गई। देवता जय शिव शम्भु ऊँचे-ऊँचे स्वर से कहने लगे और अप्सरा नाचने लगीं। शङ्ख और मृदङ्ग आदि बाजे बजने लगे। मैना ने कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं। शिव सब बरात समेत हिमाचल के द्वार को चले।

पचपनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वे लोग संसार में बड़े भाग्यवान् हैं, जो शिवजी की भक्ति रखते हैं। वे लोग भी पूजने योग्य हैं, क्योंकि वे मुक्त होकर औरों को भी मोक्ष देते हैं। शिवजी की भक्ति तीनों लोक को भाग्य से प्राप्त होती है। चाहे करोड़ों जन्मों तक तप किया करे, पर शिव का पाना कठिन है। वही सदाशिव देवताओं को साथ लिये हुये और संसारी मनुष्यों के समान हिमाचल के द्वार पर चले। तब नगर की सब स्त्रियाँ देखने चलीं। वे अति प्रसन्नता से जो जिस दशा में बैठी थीं, उसी प्रकार से चलीं और शिवजी को देख परस्पर कहने लगीं कि गिरिजा को तप के कारण ऐसा पति मिला है। वे सब मिलकर परस्पर गाने लगीं। मैना ने अति प्रसन्नतापूर्वक शिव की आरती उतारी। गिरिजा ने अपनी माता से छिपकर शिव को देखा। जैसा स्वरूप गिरिजा को दिखाई दिया, उसकी कहाँ तक प्रशंसा हो सकती है। ऐसे रूप को गिरिजा ने मन में ध्यान किया। फिर उनको दूसरा स्वरूप दिखाई दिया। शिर में जटा और पञ्चमुखी शीश में गङ्गाजी की धारा बहती हुई जैसा कि कई स्थान पर वर्णन हो चुका है, उसी प्रकार के गिरिजा को दिखाई दिये। ऐसे स्वरूप को गिरिजा ने प्रणाम किया। हिमाचल ने कुल और संसार की रीति के समान बड़ी धूमधाम से सब रीतें पूरीं। द्वारचार पूरी हुई, तब गाना, नाचना, फूलों की वर्षा और नाना प्रकार के आनन्द मङ्गल होने लगे। इस रीति के पूर्ण होने के उपरान्त बरात अपने वासस्थान को गई।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छप्पनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हिमाचल ने सब प्रकार की सामग्री और दास-दासी सब कुछ बरात के लिये भेज दिये। गिरिजा ने ध्यान करके बरात में सिद्धि को प्रकट कर दिया, जिससे किसी बात की न्यूनता न रही। विष्णु आदि सब हिमाचल की स्तुति करने लगे। यह न जाना कि यह सब सिद्धि गिरिजा की है। पर शिव इस बात को जान गये और मन में अति प्रसन्न हुये। फिर हमने हिमाचल के पास आकर कह दिया कि अब विलम्ब मत करो, लग्न का मुहूर्त आन पहुँचा। हिमाचल ने प्रसन्न होकर अपने पुरोहित को बुलाया। पण्डित वेद पढ़ते हुये नाना प्रकार के बाजे बजवाते हुये चले। शिवजी से विनय की गई कि अब आप हमारे घर चलें। सो हम शिव सहित हिमाचल के घर को गये और उचित स्थानों पर बैठे। गिरिजा को भीतर से बुलवाया। जब सबने गिरिजा को आते हुये देखा तो प्रणाम किया। गिरिजा को उत्तम स्थान पर बैठाकर विवाह को सब रीतें होने लगीं। उन्हें सर्व प्रकार के भूषण पहिनाये और दोनों ओर से दानादि बहुत हुआ। जो जिसको इच्छा थी, वही उसको मिला। उस समय बड़ा आनन्द और मङ्गलाचार हुआ। सबकी जिह्वा से जय शिव-गिरिजा निकलता था। स्त्रियाँ मङ्गलगीत गाती थीं। फिर बरात चलकर अपने निवासस्थान में आई और हर प्रकार के भोजन परसे गये। हिमाचल ने छप्पन प्रकार के भोजन अपने घर में बनवाये और सँदेशा भेजा कि भोजन करने को बरात आवे, सो सब बरात चली। हिमाचल ने सबके पाँव धोये। जब शिव के चरण धोने लगे तो प्रसन्नता से विह्वल हो गये, क्योंकि उन्होंने यह विचारा कि ये वही चरण हैं, जिनका विष्णु और ब्रह्मा ध्यान करते हैं। एक अच्छी सोने की चौकी पर बैठाया और रसोईदार भोजन लाने लगे। हर प्रकार के स्वादिष्ट भोजन सामने रक्खे गये। वह भोजन चारों प्रकार के थे, जिनमें छवों रसों का स्वाद था। देवता और मुनि आदि पहिले पाँच ग्रास खाकर फिर भोजन करने लगे। स्त्रियों ने गालियाँ गाईं, जिनमें वह सबके नाम लेती थीं। बराती प्रसन्न होकर बहुत धीरे-धीरे भोजन करते थे। जब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब भोजन कर चुके, तब पान बाँटे गये। हिमाचल ने सबके आगे बहुत विनय की और बरात बिदा होकर अपने निवासस्थान में आई। जब हमने विवाह की शुभ लग्न पूर्व के विचार के अनुसार देखा तो हिमाचल से विवाह का विचार कह दिया। हिमाचल ने एक अपना लड़का शिवजी के लाने को भेज दिया। शिवजी देवता और मुनियों सहित तुरन्त चले। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे और नाच होने लगा। आकाश से फूलों की वर्षा हुई। ऊँचे स्वर से वेद पढ़े गये। उस समय का आनन्द करोड़ों जिह्वाओं से भी वर्णन नहीं हो सकता।

सत्तावनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय सबको प्रसन्नता थी कि शिवजी का विवाह अपने नयनों से देखेंगे। शिवजी की सुन्दरता ऐसी थी कि हम और विष्णुजी देखकर बहुत अचम्भे में हुये। मैना ने शिवजी की आरती की और शिव भीतर गये। देवता और मुनि आदि भी आकर भीतर बैठे। वे शिवजी के मुखचन्द्र को चकोर की भाँति देखने लगे। उस समय मँड़वे के चारों ओर की धरती चार प्रकार से पवित्र की गई। उसके नीचे सिंहासन के ऊपर शिवजी बैठे। गिरिजा आईं जो सोलहो शृङ्गार किये सखियों को साथ लिये थीं, जिसको देख कर कौन स्तुति करने की शक्ति रखता है। विष्णुजी और हम सब देवताओं ने हाथ जोड़ गिरिजा को प्रणाम किया। मुनि आदि ने शुभ आशीष दी। दोनों ओर के मुनियों ने पहिले गणपति और गौरी का पूजन किया तथा रीतें पूरने लगे। हे नारद! पञ्च देवता अनादि हैं और पाँचों को बराबर जानकर पाँचों की पूजा करनी चाहिये। सो जिस प्रकार वेद में विवाह की रीतें लिखी हैं, उसी प्रकार हिमाचल ने कीं। मैना ने चीर और कपड़े बहुत महीन और उत्तम शिवजी को दिये। दो उसी प्रकार के गिरिजा को दिये और दो स्वयं पहिने। गिरिजा हिमाचल की दाहिनी ओर आकर बैठीं और शिव गिरिजा के सामने बैठे। मुनीश्वरों ने वेद पढ़ा। मैना भी कन्यादान के समय आईं। गोत्र नाम पूछने लगे और अपने कुल को कहने लगे। हिमाचल ने गर्ग, विष्णु और हमसे कहा कि अब आप लोग कन्यादान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर दीजिये। पर हम लोग शिवजी का गोत्रोच्चारण न कर सके, लाचार होकर चुप हो रहे। तब हिमाचल ने शिवजी से कहा कि अपना गोत्र और कुल वर्णन करो, क्योंकि इसके बिना कन्यादान नहीं हो सकता। शिवजी ने लीला करके कुछ मुख से न कहा, चुप हो गये। तब सब लोग आश्चर्य करने लगे और सबको बड़ा दुःख हुआ, क्योंकि आशा टूट गई। हिमाचल का यह वचन और हठ किसी को न भाया। सब परस्पर एक दूसरे को देखने लगे। शिवजी की लीला किसी ने न जानी। गिरिजा सबसे अधिक अपने पति के मुख को देख चिन्तित हुई और शिव का ध्यान किया। शिवजी ने गिरिजा की ऐसी चिन्ता जानकर नारद पर अपनी इच्छा प्रकट की। सो नारद तुरन्त हँसकर अपनी बीणा बजाने लगे। यह दशा देख और भी सबको अचम्भा हुआ। हिमाचल अति अप्रसन्न हुए सब लोगों ने नारद को मना किया कि यह क्या करते हो, दुःख में बीणा बजाने का कौन समय है। सो नारद बोले कि तुमने जो शिवजी का गोत्र और कुल पूछा है सो हमने शिवजी की सैन के अनुसार उत्तर दिया। अर्थात् शिवजी का कुल और गोत्र नाद है। नाद ही से शिव स्थित हैं। शिव नादरूपी शरीर हैं और नादपूर्ण शिव हैं। शिव का कुल और गोत्र ब्रह्मा, विष्णु और हम सब कोई नहीं जानते। कौन मनुष्य है जो उसमें वार्त्ता करे। तुम तो मूर्खों के समान बातें करते हो। जिस शिव के एक दिन में असंख्य विष्णु और ब्रह्मा बीत जाते हैं वह तुम्हारे पुत्र के समान गिरिजा के तप और ध्यान से हो गये। शिव शरीर सहित, शरीर रहित, निष्कुल, सकुल, अगोत्र और सगोत्र सब कुछ हैं। ऐसे शिवजी को भक्ति बिना कोई नहीं जान सकता। अब समय जाता है। तुरन्त कन्यादान कर दो। यही बात सबने हिमाचल से कही। हिमाचल ने कुश और जल लेकर कन्यादान कर दिया। गिरिजा का हाथ शिवजी के हाथ में पकड़ा दिया, जिससे हिमाचल की तीनों लोक में कीर्ति हुई। शिव ने गिरिजा का हाथ पकड़ा, सो यही विवाह की रीति लोक में प्रसिद्ध हुई।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अट्ठावनवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उस समय सबके मनों में आनन्द उपजा । लौंड़ी, सेवक और चाकर पारितोषिक से भरपूर हुये । गिरिजा को शिव के वामभाग में बैठाकर होम करने लगे और उत्तम रीति से भाँवरी होने लगीं, जिनको देखकर कौन ऐसा था जिसको अति आनन्द न प्राप्त हुआ हो । तब शिवजी ने ऐसा चरित्र किया कि भाँवर फिरते हुये गिरिजा का एक अँगूठा कपड़े के हटाने से हमारी दृष्टि में पड़ा । हमने तो उसको काम की दृष्टि से देखा । यद्यपि हमने सँभाला पर तो भी कामदेव धरती पर गिर पड़ा । उससे असंख्य वटुक और जटाधारी तेजपूर्वक उपजे । वे हमारी स्तुति करके शिव के सामने खड़े हुये । शिवने उनको देखकर बड़े क्रोध से त्रिशूल उठा लिया । उस समय सब देवता मुनि आदि काँप उठे और हाथ जोड़कर सब शिवजी की स्तुति पढ़ने लगे । सबने मिलकर इतनी विनती की कि शिवजी प्रसन्न होकर कहने लगे कि अच्छा ब्रह्माजी तुम सुखपूर्वक अपना कार्य करो, हम अप्रसन्न नहीं हैं । हमने सब वटुकों को सूर्य को सौंप कर कहा कि तुम सब इनकी सेवा में विद्यमान रहा करो । वे सूर्य की सेवा में रहने लगे और ब्रह्मचर्य से रहकर वेद के बड़े जाननेवाले हुये । वे सब सूर्य की सेवा में बहुत सुख से रहने लगे । इसके उपरान्त जो विवाह का कार्य शेष रह गया था, वह सब करा दिया । फिर हिमाचल ने हम सबको जो उचित था, कृपा किया । शिव को रत्नादि और हर प्रकार का धन द्रव्य दहेज में दिया । उदारता का ऐसा हाथ खोला कि कोई उस समय भिक्षुक और मंगन न रहा । विनती पढ़ी गई, फूलों की वर्षा हुई, बाजे आदि बजे और नाच गान से संसार में प्रसन्नता छा गई । हम सबतो वासस्थान को चले आये और स्त्रियाँ शिव को घर के भीतर ले जाकर सब रीतें पूरने लगीं । उन स्त्रियों ने शिव के साथ नाना प्रकार के हास्य किये और फिर शिव गिरिजा को अन्तःपुर में लेगईं । चारों ओर से जय-जय का शब्द पूर्ण हुआ । सबने आयु और धन की वृद्धि के निमित्त आशीर्वाद दिये ।

उनसठवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! सब रीतों के पूरने के उपरान्त स्त्रियाँ शिव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और गिरिजा को अन्तःपुर में ले गईं। उत्तम शय्या पर अच्छे-अच्छे बिछौने बिछाकर दोनों को बैठाला और तिरछी दृष्टि और बाँकी नजर से सब स्त्रियाँ देखने लगीं। उस समय शिव और गिरिजा का स्वरूप जो कपड़ों और भूषणों से सजा था, वह वर्णन नहीं हो सकता। सब देवपत्नियाँ शिव के निकट गईं, जिनमें सावित्री, हमारी स्त्री और जाह्नवी, सती, लक्ष्मी, सरस्वती, कुम्भज की स्त्री, अहल्या गौतम की स्त्री, तुलसी, स्वाहा, रोहिणी, शतरूपा संज्ञावर्त, अदिति और सोलहों संसार की माता जो अपनी कृपा से संसार के दुःख का नाश कर देती हैं। इसी प्रकार देवताओं की पुत्रियाँ इन सबने आकर चारों ओर से शिव को घेर लिया। पहिले सरस्वती ने कहा कि हे देवताओं के देवता! तुमने प्राण के समान स्त्री पाई। अपनी प्यारी के मुख को देखो। लक्ष्मी ने कहा कि हे देवताओं के देवता! सब लज्जा दूर करके अपनी प्यारी को छाती से लगा लो, जिसके बिना तुम्हारा जीवन दुःखदायक था, अब उसके साथ भली भाँति विहार करो। सावित्री ने फिर कहा कि तुम भोजन करके अपनी प्यारी को भोजन कराकर पान खिलाओ और अपनी स्त्री को पाकर प्रसन्न रहो। तुम तो बड़े कामी हो। जाह्नवी बोली कि हे कामी महापराक्रमी! बाजार से अच्छी कंघी लाकर अपने हाथ से अपनी प्यारी के बालों को सुधार करो। इसमें बड़ा आनन्द मिलता है। अदिति ने कहा कि हे कामके मद भरे हुये, शिव! गिरिजा को आनन्द से रक्खो और बहुत प्यार करो, क्योंकि स्त्रियों को इससे अधिक आनन्द नहीं है और अति प्रीति से उनके दुःख दूर करो। शची बोली हे शिवजी! सर्व सुन्दरों के राजा कामदेव के भरे हुये जिसके लिये उसके शरीर को लिये चारों ओर संसार में फिरे हो और लज्जा दूर करके भस्म को शरीर में लगाये घूमते रहे। अब इससे अधिक तुमको कौन सिद्धि प्राप्त होगी। अब गिरिजा से भलीभाँति विहार करो। लोपामुद्रा ने कहा कि अच्छे-अच्छे भोजन खाकर उत्तमोत्तम अन्तःपुर में पान चबाकर सोने की अच्छी रीति अङ्गीकार करो। यह बात स्त्रियों को अति प्रसन्नता देनेवाली है। हमने तुमको गिरिजा से मिला दिया। यद्यपि यह बात मैना मानती न थी। अब भलीभाँति भेंट कीजिये। अहल्या बोली कि तुमने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बुढ़ापा छोड़ किशोर अवस्था को धारण किया और स्त्री के निमित्त बहुत उपाय किये। तुमने बहुत युक्तियाँ करके जाया पाई, तुमको शुभ हो। तुलसी बोली कि हाँ, तुमने तो स्त्री को छोड़कर कामदेव को भस्म कर दिया था। बड़े संसार के त्यागी और कामरहित बन गये थे, फिर तुमने क्यों अरुन्धती को सिखाकर भेजा। स्वाहा ने कहा कि वाह-वाह, स्त्री के वचन सुनकर लज्जित मत होना। जो वह कोई ढिठाई, सैन, लाड़-दुलार की बातें कहे तो उसको बुरा न जानना, क्योंकि यही रीति है। रोहिणी बोली कि तुम तो कामशास्त्र के बहुत ज्ञाता हो। अपनी स्त्री के समीप रहकर अपना काम करो। स्त्रियों के कामरूपी समुद्र में पैरकर पार हो। वसुन्धरा ने कहा कि तुम सब जानते हो। स्त्री मनोरथ को समझकर उसकी इच्छा पूरी करो कि भेंट से वियोग का दुःख दूर हो जावे। शतरूपा बोली कि भूखा खाने के बिना तृप्त नहीं होता। यह छिपी हुई बात जानकर प्यारी के साथ भोग करो। शङ्खा ने कहा कि अब गिरिजा को शिव के साथ भेज दो। जहाँ अच्छा मन्दिर पुष्पों से सजा हो और वहाँ रत्नों का दीपक जलता हो। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शिव ऐसी-ऐसी हास्य की बातें सुनकर अति लज्जित हुये। वे बोले कि हम तुम सब स्त्रियों के हाथ जोड़ते हैं और विनय करते हैं कि हमारे समीप ऐसी बातें मत कहो। तुम तो संसार की माता हो। हम तुम्हारे पुत्र तुल्य हैं। ऐसी लाघवता तुमको उचित नहीं। यह वचन सुनकर सब स्त्रियाँ लज्जित हो गईं और चित्र समान चुप होकर रह गईं। उस समय शिव को प्रसन्न पाकर रति बोली कि हे शिवजी ! तुमने तो अपनी स्त्री को पाया और प्रसन्न हुये। पर तुमने मेरे पति को वृथा ही जला दिया। अब आशा रखती हूँ कि मेरे पति को जिला दीजिये। इस समय सर्व संसार में मेरे बिना सबको आनन्द है। यह कह रति रोने लगी जिससे सबको बड़ा दुःख हुआ। रति ने जो अपने पति की जली हुई भस्म बाँधे थी, उसको खोलकर शिवजी के आगे खड़ी हो गई। रति का रोना सुनकर सब स्त्रियाँ रोने लगीं। शिव ने रति का रोना और देवपत्नियों का शब्द सुनकर एक बेर अमृतदृष्टि से देख दिया कि तुरन्त कामदेव अपनी भस्म से उत्पन्न हो गया। रति अति प्रसन्न हुई। कामदेव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी की स्तुति करने लगा। शिवजी ने कहा कि तुम कुछ शोच मत करो, बाहर बरात में जा बैठो। कामदेव ने निवासस्थान में जाकर हमको और विष्णुजी को प्रणाम किया। हमने अशीष दी कि तुम शिव और गिरिजा के प्यारे हो। अब तुमको कोई भय नहीं। कामदेव स्थित हुआ। शिवजी ने गिरिजा को अपने वामभाग में बैठाकर भोजन कराया और आप भी भोजन किया। फिर स्त्रियाँ अतिप्रसन्नता से शिवजी और गिरिजा को मुख्य अन्तःपुर में ले गई, जो नाना प्रकार के विचित्रवस्तु और रत्नादि से भूषित था। उसको अपने हाथ से विश्वकर्मा ने बनाया था। दोनों ने एकही जड़ाऊ सेज पर बैठकर पान खाया। शिवजी इधर-उधर मन्दिर को देखने लगे। उन्होंने देखा कि वहाँ स्वर्ण का दीपदान, सोने के कलश और उत्तमोत्तम सोने के शीशे ठौर-ठौर पर रक्खे थे। चारों ओर मोतियों की झालरें लगी हुई थीं। चन्दन, कस्तूरी और अगर आदि से मन्दिर सुगन्धित हो रहा था। विष्णुलोक, ब्रह्मलोक, इन्द्रलोक और गोलोक, जिसमें रास-मण्डल गोपियों का हो रहा था। उनके चित्र लिखे थे। कहीं पर कैलास पर्वत बना हुआ था, जहाँ बुढ़ापे और मौत का भय नहीं। ऐसी-ऐसी चीजें देखकर शिव अति प्रसन्न हुये। वहाँ पर शिव और गिरिजा ने नाना प्रकार के विहार किये। जब प्रभात हुआ तो चारों ओर से बाजे बजने लगे। देवता और मुनि आदि पूर्ववत् जयकार और आनन्द करने लगे। विष्णुजी ने धर्मराज से कहा कि तुम जाकर उपाय से शिवजी को निद्रा से जगाकर उठावो। धर्मराज ने जाकर कहा कि महाराज कृपा करके उठिये और वास-स्थान में चलकर सबको आनन्द दीजिये। शिवजी धर्मराज की यह बात सुनकर हँसते हुए बोले कि तुम चलो। फिर बिछौने पर से उठकर लज्जा से शिर नवाये चलने की इच्छा की। बड़ों की आज्ञा पाकर मन में हँसते हुये अपने वासस्थान को चले।

साठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब शिव निवास स्थान में गये, तब हमने सब देवता आदि को बुला लिया। सबने मिलकर शिव को प्रणाम किया। फिर विष्णु और हमने उच्चस्वर से कहा कि हे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नारद और सप्तऋषियों ! तुमने बड़ी कृपा की। केवल तुम्हारी कृपा से विवाह हुआ जिससे आज के दिन कितना आनन्द फैल रहा है। फिर विष्णु और हमने बहुत-सा दान दिया और हिमाचल से बिदा माँगी। हिमाचल बहुत लोगों समेत आकर विनय करने लगा कि हे देवतो! हमको मत छोड़ो। यद्यपि मुझसे आप लोगों की कुछ सेवा न बन पड़ी। सेवा तो क्या मैं तो आपके चरण भी न धो सका। मैं अति लज्जित हूँ और केवल झूठा नाम ज्यवनार का करके वृथा ही आपके आहार-विहार का विघ्नकर्ता हुआ। केवल छिउल के पत्ते आप लोगों के आगे रखकर आपका समय वृथा गँवाया। यहाँ तक कि पुष्प भी आप लोगों की भेंट न कर सका। मैं अति लज्जित हूँ। आशा रखता हूँ कि आप मेरी छुटाई का विचार न रखकर फिर मेरे गृह को पवित्र कीजिये। इसके उपरान्त हम और विष्णुजी और सब देवताओं ने कहा कि तुमको धन्य है। हमने ऐसा आनन्द कहीं नहीं उठाया। इस प्रकार का मनहरण ठौर और भोजन नहीं मिला। तुम कल्पवृक्ष हो, ऋद्धि-सिद्धि तुम्हारी चेरी हैं। तुम्हारे घर जगदम्बा उपजीं। तुम्हारे समान संसार में और कौन है। तुम धन्य हो, तुम्हारी सभा और नगर धन्य हैं जहाँ शिवजी आकर सुशोभित हुये। इसी प्रकार दोनों ओर से बड़े नम्रता के वचन प्रकट हुये। फिर हिमाचल बरात को अपने घर भोजन कराने को ले गये और बरात को भोजन कराने लगे। स्त्रियाँ गालियाँ गाने लगीं जिनका आशय यह था कि हे शिवजी ! यद्यपि तुम अपनी सम्पूर्ण सामग्री अशुभ रखते हो पर अपने भक्तों को सब कुछ देते हो। शिव ने यह वचन सुन वरदान दिया कि जो इसको पढ़ेगा, वह सर्वदा प्रसन्न रहेगा।

इकसठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इस प्रकार तीन दिन तक हिमाचल ने विनती करके बरात को जाने न दिया। चौथे दिन हमने पश्चिम मुख से शिव गिरिजा को बिठलाकर होम कराया और लखौर, सेंदुर, चोभी, जुवे और गोली आदि की जो रीतें शेष थीं, वह सब पूरी गईं। फिर अभिषेक किया गया और सबने आशीशें दीं। फिर सब बरात को भोजन दिया गया और निवासस्थान में आकर रातभर सब देवता आदि ने हिमाचल की स्तुति में भोर कर दिया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जब प्रभात को हिमाचल से बिदा माँगी तो हिमाचल अति विनयपूर्वक आज्ञा न देकर कई दिन तक बरात को ठहराये रहे तथा हिमाचल के शील और प्रीति की अधिकता से किसी को यह इच्छा न हुई कि ऐसी संगति छोड़ दें। सो सबने वहाँ के रहने को और संगति जो उत्तम जाना। जब कुछ दिनों पीछे बिदा होने का वचन मुख पर लाये तो हिमाचल अपने को वियोग के दुःख को उठानेवाला न समझकर चुप हो रहे। देवताओं ने बहुत समझाकर हिमाचल की बहुत स्तुति की और कहा कि शिव परब्रह्म जिनके हम सेवक हैं तुम्हारे घर आये। तुमसे अधिक संसार में कौन भाग्यवान् है? यह कह सब देवता और मुनि आदि दुःख की अधिकता से लौट आये और कुछ कोई किसी से न कह सका। निदान निरुपाय होकर हिमाचल ने लज्जा से एक सभा इकट्ठी कर सबसे कहा कि शिव विदा होनेवाले हैं, यह सुन सबके चेत जाते रहे। सब मुरझा गये पर हिमाचल ने गुरु की आज्ञा से सर्व प्रकार की सामग्री विद्यमान कर बरात को घर के अन्दर बुला लिया सो बरात के लोग आये। हमने शिव और गिरिजा को बीच में बैठा गौरी गणपति की पूजा कराकर सब काम जो करने के योग्य थे, पूरे करा दिये हिमाचल ने दहेज में पकवान्, फल, हाथी, घोड़े, रथ, लौंडी, चाकर और गौ आदि इतना दिया जिसकी संख्या नहीं हो सकती। इसके उपरान्त हिमाचल ने मैना और सब परिवार समेत खड़े होकर हाथ जोड़ विनय की कि हमारे बड़े भाग्य से गिरिजा ऐसी पुत्री हमारे घर उपजी जिससे हमारा कुल भर पवित्र हो गया। मुझको आशा है कि जो ढिठाई या अपराध मुझसे हुआ हो, वह आप लोग क्षमा करें। यह सुनकर सब देवता बोल उठे कि हे हिमाचल! तुम मुक्त हो गये क्योंकि शिवजी ने तुम पर दया की है। क्योंकि तुमने गिरिजा को शिवजी के साथ विवाह दिया, यह हम पर बड़ी कृपा हुई। इसी प्रकार देवताओं ने मैना से बड़ी स्तुति की फिर शिव और गिरिजा के गुणों का वर्णन होने लगा।

बासठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! फिर हिमाचल और मैना समेत सर्व कुल बार-बार शिवजी की स्तुति करने लगा। फिर सब बरात वासस्थान में आई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और फिर हम सब बिदा होने के लिये हिमाचल के द्वार पर गये। शिवजी हिमाचल के घर के भीतर गये जहाँ सब स्त्रियाँ इकट्ठी होकर शिव को बिदा करने लगीं। शिवजी ने कहा कि बरात सब बिदा हो गई, मुझे भी आज्ञा दो कि बिदा हो जाऊँ। यह सुन मैना ने बड़े प्रेम के साथ शिवजी को गिरिजा सौंपी और कहा कि यह गिरिजा मुझे प्राण से भी अधिक प्रिय है। अभी इसकी छोटी अवस्था है और अति कोमलाङ्गी है। इसको संसार की रीति अब तक मालूम नहीं है। यह बहुत सीधी है। आप इसको प्रीति और कृपा से रक्खें और इसके अपराध क्षमा करना। मैं तुम्हारे निछावर होती हूँ। इसको अपनी लौंड़ी के समान प्रसन्न रखना। यह कह शिवजी के चरण पकड़ मैना मोहित हो गई। शिवजी बोले कि तुम और हिमाचल धन्य हो जिनकी संसार में सब स्तुति करते हैं। तुम अपने कुल-परिवार समेत मुक्ति पावोगे। देखो, हमको भक्तजन, वैर, भय, प्रीति, भक्ति, और सम्बन्ध हर प्रकार से पाते हैं। यह कह और मैना से बिदा हो शिवजी हिमाचल के समीप आये और हाथ जोड़ खड़े हो बिदा माँगी। हिमाचल अति प्रेम और भक्ति से अश्रुपात कर कहने लगे कि हमारे अपराध क्षमा करना तथा मुझे अपना चेरा समझ सब दुःख दूर करना। यह कह शिवजी को विदा किया और बरात बड़ी धूमधाम से चली और सब प्रकार के बाजे बजने लगे।

तिरसठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिवजी तो इस तरह बिदा होकर नगर के बाहर स्थित हुये और मुनियों ने हिमाचल से कहा कि अब गिरिजा को भी बिदा कीजिये। जब यह सन्देशा भीतर मैना के पास भेजा तो मैना प्रीतिसागर में डूब गई और नगर भर की स्त्रियों को बुलाया सो वह सब सज-सजाकर गिरिजा को बिदा करने आईं। मैना ने गिरिजा को स्नान कराय विचित्र वस्त्राभूषणों से अलंकृत किया। सब स्त्रियाँ गिरिजा के भाग्य का बखान करने लगीं। फिर ब्राह्मणों की स्त्रियों ने गिरिजा को पातिव्रत धर्म की शिक्षा देकर कहा हे गिरिजे! अपने पति की सेवा लोक में अति आनन्द देनेवाली है। सो तुम रात-दिन पति-सेवा में लगी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रहना। इसके समान कोई तप स्त्री के लिये दूसरा नहीं है। यद्यपि माता-पिता अपनी सन्तान के बड़े हितैषी हैं पर वे अपनी सन्तान को मुक्ति नहीं दे सकते। संसार में चार वस्तु अति सुखदायक हैं। पहिले प्रियतम, दूसरे धर्म, तीसरे स्त्री और चौथे सन्तोष पर इन चारों की परीक्षा आपत्तिकाल में हो सकती है। वेद कहते हैं कि अपना पति चाहे मूर्ख, रोगी, दरिद्री, लँगड़ा व काना, दया न रखनेवाला, व्यभिचारी, छली, धूर्त, कठोर व नम्र अथवा उसमें किसी प्रकार का दोष हो पर तो भी स्त्री को उचित है कि उसको शिवजी और विष्णुजी के समान समझे। यह स्त्रियों के लिये मुक्ति का बड़ा द्वार है। जो स्त्रियाँ अपने पति की प्रतिष्ठा नहीं करतीं, वे निस्सन्देह साधी नरक में जाती हैं। उनको कोई भी करोड़ों कल्प तक नरक से नहीं निकाल सकता। इसलिये स्त्री को सब छोड़ केवल अपने पति की सेवा करनी उचित है। स्त्री को उचित है, कि मन, कर्म और वचन इतनी तीनों से अपने पति की सेवा करे। उसके लिये यही बड़ा धर्म, तप, व्रत योग और जपादि है। वेदों में लिखा है कि चार प्रकार की पतिव्रता स्त्रियाँ होती हैं। पहिला उत्तमा वह है जो स्वप्न में भी दूसरे पुरुष का मन में विचार न लावे। दूसरी मध्यमा जो दूसरे पुरुष को अपने पुत्र व पिता व भाई के समान समझे। तीसरी निकृष्टा जो अपने धर्म का विचार करके दूसरे पुरुष की संगति से बची रहे। चौथी अति अधमा जो अपने पति व कुल के भय से दूसरे की संगति से बच जावे। समय का भय न करना, यह भी चौथे प्रकार की स्त्री में गिना गया है। पतिव्रता स्त्रियों की बड़ी प्रतिष्ठा है। जो स्त्री अपने पति को छोड़ यारों के साथ भोग करे, वह असंख्य कल्प पर्यन्त रौरव नरक में वास पाता है। वह पुंश्चली स्त्रियाँ केवल एक क्षण भर के आनन्द के निमित्त बहुत युगों तक नरक का दुःख उठा पछिताती हैं। स्त्री से चाहे करोड़ों पाप हुये हों पर वह केवल अपने पातिव्रत धर्म से परम पद पाती हैं। शिवजी जितना स्त्रियों पर कृपा करते रहे हैं, उतना दूसरों पर नहीं। यह भी प्रकट हो कि और सब धर्म प्रयास बिना प्राप्त नहीं होते पर स्त्रियों का धर्म केवल परिश्रम रहित है क्योंकि वह अपने पति की सेवा से मोक्ष प्राप्त करती हैं। जो स्त्रियाँ पति के विरुद्ध

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होती हैं, वे निस्संदेह नारकी हैं। उनकी पहिचान यह है कि वह दूसरा जन्म धारण कर युवावस्था में ही विधवा हो जाती हैं या पति सहित भी हैं पर उसी प्रकार के पापों को भोगती हैं। यद्यपि स्त्री की जाति भ्रष्ट प्रसिद्ध है पर जो स्त्रियाँ अपने पति की सेवा करती हैं, वे पवित्र हैं। वेद भी पतिव्रता स्त्रियों की बड़ाई करते हैं। उसकी समानता संसार में किसी को प्राप्त नहीं है। स्त्री को उचित है कि पहिले अपने पति को भोजन कराकर पीछे आप खावे। पति को सुलाने के पीछे आप सोवे। उसको बिठलाकर आप बैठे। अपने पति से किसी अवस्था में क्रोधित न होवे और न अपने पति का नाम मुख पर ले। जब पति उसको बुलावे तो अपने घर के सब काम छोड़ उसके पास जावे और हाथ जोड़ विनय करे कि क्यों आपने इस दासी को स्मरण किया है। फिर जो पति आज्ञा दे, उसको हठ बिना पूरा करे। द्वार पर देर तक खड़ी न रहे और अपने पति के सब धन द्रव्य की रक्षा करे। कोई वस्तु अपने पति की आज्ञा बिना अपने आप न दे। आप पति का जूठा खावे और कोई भी व्रत पति की आज्ञा बिना न रक्खे। किसी नाच-गाने की सभा को न देखे और ऋतु के दिनों में अपना मुख तीन दिन तक पति को न दिखावे। जब तक स्नान कर पवित्र न हो जावे तब तक कोई बात अपने पति को न सुनावे। स्नान कर पवित्र हो अपने पति के कमलमुख को या जो पति न होवे तो पति का स्मरण कर सूर्य देखे। इससे पति की आयु बढ़ती है। सदा अपने को अलंकृत रक्खे और नेत्रों में काजल लगाये रहे। बुरी स्त्रियों की प्रीति और संगति न रक्खे। अपने मुख से पति के निन्दा की बात न निकाले और एकान्त में न रहे। दूसरे के घर जाकर नङ्गी न होवे और न ढिठाई करे। जहाँ-जहाँ अपने पति की प्रसन्नता और इच्छा देखे, वहाँ अधिक आप भी प्रीति बढ़ावे और अपने पति को किसी समय में न छोड़े। आपत्तिकाल में भी पति को एकसा ही देखे। जो घर में कोई वस्तु कम हो जावे तो अपने पति से न कहे पर ऐसी युक्ति करे जिससे उसका पति जान जावे। ऐसी रीति पकड़े जिससे पति को परिश्रम न पड़े। यदि किसी तीर्थयात्रा की इच्छा हो तो अपने पति के चरणों को धोकर जल पी जावे क्योंकि उसके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिये उसका पति विष्णुजी और महादेवजी से श्रेष्ठ है। जो स्त्री अपने पति की इच्छा बिना व्रतादि करती है, वह अपने पति की आयु को न्यून करती है और आप नरक में जाती है। जो स्त्री अपने पति को क्रोधित होकर उत्तर देती है, वह स्यारिन होकर वन में रहती है। स्त्री को उचित है कि ऊँची जगह न बैठे, न किसी स्त्री की बात करे, झूठे और बुरे वचन मुख से न निकाले और लड़ाई-बखेड़े को तो अपने सामने आने न दे। जो किसी समय उसका पति मारपीट करे तो स्त्री को क्रोध न करना चाहिये और न भागना चाहिये। कदाचित् स्त्री क्रोध में पति के मारे जाने का उद्योग करे तो दूसरे जन्म में शेरनी होती है। जो स्त्री अपने पति को छोड़ आप अकेले मिष्ठान्न भोजन करे, वह मेढकनी होती है। जो स्त्री अपने स्वामी की दृष्टि बचाकर दूसरे मनुष्य पर काम की दृष्टि डाले, वह कानी व कुरूपिणी आदि का जन्म धारती है। जो स्त्री अपने भर्ता को बाहर से आते देख आगे लेवे और नाना प्रकार की सेवा करे और अच्छे-अच्छे मीठे वचनों से प्रसन्न करे, उसको हर जन्म में बहुत ही आनन्द मिलता है, मानों उस स्त्री ने संसार को अपने ऊपर प्रसन्न कर लिया। देखो, कुम्भज ब्राह्मण की स्त्री अनसूया ने इस धर्म से कितना आनन्द उठाया। उसने वाराह मुनि को अपने तेज से जलाकर दूसरे एक ब्राह्मण को जिलाया। एक कथा पति-व्रताधर्म की मुनि कहते हैं कि एक तपस्वी तप करते थे। एक बगली ने उनके शिर पर विष्ठा करदी। जब तपस्वी ने ऊपर देख दिया, उसी समय बगली जलकर भस्म हो गई। तपस्वी ने जाना कि हमारा तप पूर्ण हो गया। इसी विचार से तप को छोड़ चलते-फिरते एक पतिव्रता स्त्री के द्वार पर आये। उसने तपस्वी की बड़ी सेवा की और द्वार पर तपस्वी को ठहराकर आप घर में दान के लिये वस्तु लेने गई। संयोग से उसके पति ने घर में किसी काम को कहा। वह उसी कार्य में लग गई और वह बात स्मरण से जाती रही। जब वह पति की सेवा कर चुकी तो दान लेकर द्वार पर आई। उसको देख तपस्वी ने क्रोधित होकर शाप देने की इच्छा की। स्त्री ने कहा कि मुझको भय नहीं है। क्या मैं बगली हूँ, इतना क्रोध क्यों करते हो? यह सुन तपस्वी का अहंकार टूटा और बारम्बार प्रशंसाकर इस बात को निश्चय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जाना कि पतिव्रताधर्म सब धर्मों से बड़ा है। इसलिये हे गिरिजे! तुम इस बात पर भली भाँति निश्चय करो कि संसार में पति से बड़ा स्त्री के लिये कोई देवता नहीं है।

चौंसठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मैना ने बहुत सी बातें इसी प्रकार की गिरिजा को सुनाकर फिर उसके बिदा करने की इच्छा की। गिरिजा के वियोग का दुःख स्मरणकर अतिदुःखी हुई और गिरिजा को बार-बार लिपटाकर फिर छोड़ दे और फिर लिपटा ले। इसी उकार शिवजी की सेवा के लिये बारम्बार कहती हुई धाय-धाय रोने लगी और कहा कि दूसरे के फन्दे में पड़कर कुछ आनन्द नहीं मिलता। गिरिजा भी प्रीति से चरणों पर गिर पड़ी और मूर्च्छित हो गई। मैना ने उसे अपनी छाती से लिपटा लिया। फिर गिरिजा की सखियाँ गिरिजा को मैना से छुड़ाकर ले चलीं। इसी प्रकार गिरिजा हर एक से बिदा होकर आप रोती और दूसरों को रुलाती चली। यद्यपि सब स्त्री-पुरुष प्रेम के वश में थे पर गिरिजा की सखियों को बहुत ही दुःख था। उस समय मानों वियोग रूप ही धारकर हिमाचल पर्वत पर स्थित हुआ। ऐसी-ऐसी बातें कहकर गिरिजा रोती थी कि जिसको सुनकर बड़े धैर्यवान् अधीर होते थे। यहाँ तक पशु-पक्षी भी रोने लगे और हिमाचल को भी बड़ा दुःख हुआ। यद्यपि बहुत गम्भीरता की पर सह न सके। वह भी धाय-धाय रोने लगे और कोई पण्डित ज्ञानी शेष न रहा जिसको उस समय सिवाय रोने-पीटने के कुछ ज्ञान रहा हो। तब ब्राह्मणों ने हिमाचल और उसके मित्रों से कहा कि शुभ समय जाता है, वेग ही बिदा करो। हिमाचल ने निरुपाय होकर गिरिजा को पालकी पर सवार कराकर स्त्रियों का धर्म सिखाया। मैना, सब स्त्रियाँ और पुरुष एक मति होकर गिरिजा को आशीष देने लगे। हिमाचल ने वह दासियाँ जिनको गिरिजा चाहती थी, वह सब शिवरानी को दे डालीं। जितने तोता, कोकिला और सारिका आदि मधुरवाणी के पक्षी गिरिजा के थे, सब साथ कर दिये और सब गिरिजा को देकर बिदा किया। गिरिजा के चलने के समय मार्ग में शुभ शकुन हुये। तब बाजा बजने लगे और प्रसन्नता की सब बातें दिखाई देने-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लगीं। धन-द्रव्य बहुत लुटाया गया हिमाचल और शिवजी की ओर से जिन-जिन मनुष्यों को उचित था, हाथी घोड़ा आदि धन समेत दिया गया। हिमाचल ने चलने के समय अपने पुत्र समेत बिनती की कि हम कुछ दूर तक आपके साथ चलेंगे। जब कुछ दूर तक गये तो देवताओं ने हिमाचल को बिदा किया। हिमाचल यह कहकर कि मुझे तीनों लोक में बड़ाई प्राप्त हुई और सबको प्रणामकर बिदा हुये और शिवजी से विनय की कि मुझे आप अपनी भक्ति कृपा कीजिये और बड़ी स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न होकर हिमाचल को बिदा किया और हिमाचल के यहाँ जितने कि बुलाये हुये लोग आये थे, वह भी बिदा हुये। विन्ध्यपर्वत ने हिमाचल से कहा कि तुम शिवजी से सम्बन्ध करके हम सबसे श्रेष्ठ हुये। जब शिव कैलाश में बरात समेत पहुँचे तब हर प्रकार के आनन्द की सामग्री इकट्ठी हुई। बाजा बजने लगे और शिवजी की आरती उतारी गई। शुभलग्न पाकर शिव-गिरिजा ने मन्दिर में प्रवेश किया।

पैंसठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मन्दिर में प्रवेश करने के उपरान्त सर्व स्त्रियाँ इकट्ठी होकर दोनों शिव गिरिजा की आरती उतारने लगी। नाच, गाना और फूलों की वर्षा होने लगी। विष्णु और हम सबने दोनों का पूजन किया। हम सबको ऐसा आनन्द प्राप्त हुआ जैसे गूँगे को वचन, दरिद्री को धन, अन्धे को नेत्र, योगी को योग और रोगी को अमृत प्राप्त होने से वरन् इससे कोटि गुना अधिक प्रसन्नता हुई। हम सबने अलग-अलग स्तुति पढ़ी जिससे शिव अति प्रसन्न हुये और सबको उत्तम-उत्तम भोजन दिया। इसी प्रकार कई दिन तक हम सब कैलाश पर्वत पर रहे। फिर बिदा होने की आज्ञा मानकर यह विनय की कि जो हम सबका मनोरथ है, वह आप भले प्रकार जानते हैं। सो क्रमपूर्वक सब विदा हुये और शिवजी ने विष्णु तथा हमसे कहा कि हमको तुमसे अधिक कोई प्रिय नहीं है। तुम्हारे कहने से मैंने गिरिजा के साथ विवाह किया। अब तुम अपने लोक को जाओ। तुम्हारे सब काम पूर्ण होंगे। तारक दैत्य वेग ही यमलोक में जावेगा। तुम सब देवताओं को निर्भय कर दो और हमारी सेवा में कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बात न भूलियो। यह कह शिवजी हँसे और चुप हो रहे। विष्णु और हम भी हँसकर बड़े आनन्द से जय-जय शिव शम्भु कहते हुये बड़ी स्तुति करके चले। बरात के चले जाने के उपरान्त शिवगण उनकी सेवा करने लगे। शिवजी संसार के पिता और गिरिजा संसार की माता हैं। हम उनका शृङ्गार क्या वर्णन करें। शिव समान संसार में और कौन सहायक है? उन्होंने परब्रह्म होकर संसार के दुःख दूर करने को विवाह किया कि यह लीला हमारी संसारी जीव कहकर और सुनकर मोक्ष प्राप्त करें। यह शिव-गिरिजा का विवाह अति मङ्गलदायक है जो इसको न सुने, वह पशु है। इस संसार में मुक्ति मिलने की इससे अधिक और कोई युक्ति नहीं कि शिवजी का यश गावे। यद्यपि उनका यश अनन्त है पर जितना सुने, उसके लिये उसकी भलाई को उतना ही बहुत है। जो इस कथा को प्रीति-युक्त सुनेगा, वह प्रसन्न रहकर शिवजी के समान हो जावेगा। और जो इस कथा को दूसरों को सुनावेगा वह भी आनन्द में रहेगा। जो थोड़े में भी थोड़ा पढ़ा करेगा, वह भी धन्यता के योग्य होगा। जो चारों वर्ण इस कथा को पढ़ेंगे, वे मुक्ति पावेंगे उनके सर्व रोग दूर होंगे और अन्त में मुक्ति मिलेगी।

इति श्रीशिवपुराणे शिवविलासे तीर्थखण्डे ब्रह्मानारदसंवादे साङ्गोपाङ्ग-शिवगिरिजाविवाहवर्णनन्नामतृतीखण्डस्समाप्तः ॥ ३ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव पुराण भाषा

—:o:—

चतुर्थ खण्ड

पहिला अध्याय।

इतना सुन शौनक ने कहा कि हे सूतजी ! शिवजी का विवाह सुन नारदजी ने ब्रह्मा से फिर क्या पूछा ? सूतजी बोले कि नारद ने ब्रह्माजी से यह प्रश्न किया कि मैंने बहुत कुछ वेदपुराणों में पढ़ा पर मेरे मन की तृष्णा न गई। मैं संसार भर में फिरता रहा पर शिव का तत्त्व भेद न मिला। फिर विष्णुजी के कहने के अनुसार मैंने आपकी सेवा में पहुँचकर थोड़ा-सा शिवजी का चरित्र सुना तो मन को उत्तम रीति से पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुझको इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि शिवजी का चरित्र संसार के लिये बहुत ही आनन्द मङ्गल देनेवाला है। शिव के तप बिना संसार में किसी को कुछ भी सुख नहीं मिलता न किसी के दुःख और रोग नष्ट होते हैं। सो अब मुझे यह इच्छा है कि आप मुझसे यह वर्णन करें कि जब शिवजी गिरिजा के साथ विवाह करके कैलाश पर्वत पर सुशोभित हुये तो फिर उन्होंने कौन से भक्तों के सुखदायक चरित्र किये। हिमाचल ने बिदा होकर कौन-कौन कार्य किये। तारकदैत्य का वध, कार्त्तवीर्य की उत्पत्ति और त्रिपुरासुर का प्राकट्य आदि सब सुना दीजिये क्योंकि आपसे अधिक तीनों लोक में कोई शैव नहीं है और न आपके बराबर कोई शिवजी के चरित्र का जाननेवाला है। यह प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी अति प्रसन्न हुये और शिवजी के प्रेमानन्द में डूब गये। थोड़ी देर के पीछे ब्रह्मा ने कहा कि हे पुत्र ! तुमको धन्य है और तुम्हारी बुद्धि धन्य है। मुझको इस बात का भली-भाँति विश्वास हुआ कि तुम्हारे मन में शिवजी की स्थिति

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव-पार्वती

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हो गई। अब सुनो कि जब सदाशिव गिरिजा को विवाहकर घर लाये तब देवताओं का मनोरथ समझ तारकासुर के वध की इच्छा की। अर्थात् हम, विष्णु और सब देवता बिदा होकर अपने घरों को गये और शिवजी की कृपा का भरोसा रक्खा पर कोई बात प्रकट न हुई तो एक समय सब देवता और मुनि आदि एक स्थान पर इकट्ठे हुये और सम्मति करके कहने लगे कि बड़े आश्चर्य की बात है कि इतनी देर हुई और हमारा कार्य सिद्ध न हुआ। फिर तेज अर्थात् अग्नि से कहा कि तुम चतुरता से शिवजी के समीप जाकर देखो कि वे क्या कर रहे हैं। यद्यपि इतना समय व्यतीत हो गया और हमारी सुधि शिवजी ने न ली। यह आज्ञा पाकर अग्नि देवता बिदा होकर कपोत का स्वरूप धारणकर शिवजी के निवास स्थान में पहुँचे। विष्णुजी और हम सब देवताओं को जो कि सब अति चिन्तित और दुःखी थे साथ लेकर कैलाश पर्वत पर गये। जब शिवजी को वटवृक्ष के नीचे न देखा तो हम सबों ने गणों से पूछा कि महाराज सदाशिव कहाँ हैं? गणों ने उत्तर दिया कि वे तो बहुत समय से घर के भीतर गिरिजा के पास हैं, बाहर नहीं आये। हम क्या जानें कि शिवजी घर के भीतर क्या करते हैं। यह सुन विष्णुजी, हम और देवता आदि सदाशिवजी के द्वार पर गये और बहुत ऊँचे शब्द से पुकारे। शिवजी शब्द सुन तुरन्त गिरिजा को छोड़ बाहर आये। जब हमने उनका दर्शन किया तो स्तुति करने लगे। उस समय हमको अनन्त प्रेम ने घेर लिया। यहाँ तक कि प्रसन्नता से हम सब रोने लगे और कहा कि हम सब आपकी शरण में आये हैं, आशा रखते हैं कि आप कृपा करके हमारे दुःख को दूर करेंगे। आपको वेद और ब्रह्मा सगुण और निर्गुण करके कहते हैं। आपके कृपाकटाक्ष से हमारा कार्य सुधरना है। हम आपकी महिमा कहाँ तक वर्णन करें। आपकी महिमा नारद, शारद, शेष और वेद कहकर थक जाते हैं और अन्त को अपनी मूर्खता बताते हैं। आपकी कृपा से एक मूर्ख मनुष्य भी आपके चरित्र और महिमा का वर्णन कर सकता है। जैसे कि सन्त और वेद कहते हैं, आप भक्ति और तप के अधीन हैं। दया के समुद्र व सर्वसंसार के स्वामी हैं। आप तो निर्गुण और ब्रह्मा,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विष्णु तथा हर से श्रेष्ठ हैं। गुणनिधि आदि ने आपकी सेवा से जो कुछ पाया, वह उदय अस्त तक प्रसिद्ध है। कुछ वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। हमारी ओर क्यों दयादृष्टि नहीं करते ? हम आपकी शरण में आये हैं। अब हमको बहुत सुख देना चाहिये। आप सगुण स्वरूप केवल हम भक्तों के उपकार के लिये धारण करते हैं। ऐसी स्तुति शिव की पढ़कर हम और विष्णु सब शिव के आगे शिर झुकाये खड़े रहे।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह देवताओं की बनाई हुई स्तुति शिवजी ने सुनकर प्रसन्नता और हर्ष से हँसकर कहा कि तुम सब जिस कार्य के निमित्त आये हो, वह विस्तार से वर्णन करो। यह सुन सब देवताओं ने हाथ जोड़ विनय की कि अपने सब विहारानन्द को छोड़ कर देवताओं का काम पूरा करो। शिवजी ने कहा कि अच्छा हमारा वीर्य जाता है जिसको शक्ति हो वह धारण करले। विष्णु ने अग्नि से सैन की और शिवजी ने विष्णुजी की इच्छा जानकर वह वीर्य पृथ्वी पर डाल दिया। अग्नि ने देवताओं की आज्ञा पाकर तुरन्त उसको धारण कर लिया। अग्नि कपोत का शरीर धारणकर अपनी चोंच से वीर्य को निगल गया और अपने घर की ओर उड़ गया। हे नारद ! शिवजी की माया धन्य है कि जिसके वश में संसार भर है। जब शिवजी के लौट जाने में विलम्ब हुआ तो गिरिजा चिन्तित होकर जहाँ सब देवता शिवजी के पास खड़े थे, आई और इतना क्रोध प्रकट किया कि सब देवता भयभीत हुये और गिरिजा ने होठ चाब कहा कि हे देवताओं ! तुम सब अपने मतलब के यार हो। बिन प्रयोजन तुम किसी के मित्र नहीं, तुमने अपने प्रयोजन के लिये मुझको बाँझ कर दिया और शिवजी को अपने पास बैठाल रक्खा। कदाचित् मुझे अप्रसन्न करके अपना मनोरथ पूरा हुआ जानते हो तो यह बात स्वप्न में भी न होगी। जो कि तुम हमारे विहार के विघ्नकर्ता हुये, इससे तुम्हारी सब स्त्रियाँ बाँझ होंगी। यह देवताओं को शाप देकर अग्नि से कहा कि हे भाग्यहीन वह्नि ! तू इतना दुष्ट है कि तूने भक्ष्याभक्ष्य का कुछ विचार न किया। अब तुम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब चीजें खाया करोगे। क्योंकि तुमने शिवजी का वीर्य खा लिया है, तुमको बहुत दुःख मिलेगा। तूने शिवजी को नहीं जाना। जब यह शाप गिरिजा ने अग्नि को दिया तब सब देवता आदि दुःखी हुये। शिव और पार्वती अन्तःपुर में गये और सब देवता आदि ने गर्भ धारण किया। सो सब अपने उदर को गर्भ से पूरित देख बहुत ही लज्जित और दुःखी हुये। निदान सब देवता मिलकर शिवजी की शरण में गये और शिवजी की स्तुति करने लगे कि हे देवताओं के देवता, दीनजनों के रक्षक! हमारे ऊपर कृपा करो। तुम्हीं तीनों देवता, त्रिनेत्र, तीनों भुवन के रखनेवाले और तीनों वेद हो। अब हमको मुक्त करो। तुम त्रिमूर्ति, तीनों पद, तीनों धाम, तीनों अग्नि, तीनों गुण और त्रिशूल धारण करनेवाले हो। इसी प्रकार बहुत-सी स्तुति सुनकर शिवजी प्रकट हुये जिनको देखकर देवता अति प्रसन्न हुये। वे फिर स्तुति करके बोले कि हमारी सहायता करो और हमारे दुःख मिटावो। हम आपके सेवक हैं, हमारे प्राण बचाइये। अब हमारी लोक में निन्दा होती है कि जब से हमने गर्भ धारण किया है तब से महादुःखी हैं। हमारे हृदय जले जाते हैं। यह सुन शिवजी हँस पड़े और कहा कि हे विष्णो और सब देवताओं! तुम तुरन्त वीर्य को मुख के मार्ग से बाहर निकाल दो कि हम प्रसन्न हो जावें। यह आज्ञा पाकर देवताओं ने तुरन्त वीर्य निकाल दिया जिसका वर्ण स्वर्णवत् मानों सोने का एक पर्वत आकाश तक हो गया और देवता ऐसे दुःख से छूटे। पर अनल को शिव ने यह आज्ञा न दी और उसको कुछ भी आनन्द न हुआ। तब अनल बहुत दुःखी होकर शिवजी की स्तुति करने लगा और महादुःखी होकर कहने लगा कि हे देवताओं के देवता! अब आपको हमारी सहायता करनी चाहिये। अब मैं क्या करूँ? मेरे इस कष्ट को दूर कीजिये और आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या करूँ? आपके चरण छोड़ कहाँ जाऊँ? अब वह उपाय बताइये जिससे मेरा यह दाह दूर हो। शिवजी ने कहा कि हमारे वीर्य को तुम स्त्रियों को दे दो कि तुमको आनन्द मिले। अग्नि ने धैर्य धारणकर विनय की कि आपके वीर्य की ज्योति को स्त्रियाँ क्योंकर धारण कर सकेंगी। तब हे नारद! तुमने शिवजी की आज्ञा से उत्तर दिया कि हे वह्नि! जो स्त्रियाँ माघ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मास में आग तापती हों, उनके शरीर में तेज को बाँट दो। यह सुन अग्नि प्रसन्न होकर प्रभात को उठ नदी किनारे आग जला कर बैठ गया। उस समय बहुत-सी स्त्रियाँ स्नान करने को उस स्थान पर आईं। क्योंकि सरदी ने उनको बहुत दुःख दिया और जलती हुई आग देखकर उनको आग तापने की इच्छा उपजी। पर अरुन्धती ने समझ कर औरतों को आग तापने से निषेध किया। सो अरुन्धती ने बहुत ही मना किया पर किसी ने न माना और आग के पास बैठकर तापने लगीं। तब वह वीर्य धीरे-धीरे निकलकर रोम के मार्ग से स्त्रियों के शरीर में प्रवेश करने लगा जिससे अग्नि का बोझ हलका हुआ और वह अति प्रसन्न होकर दाह को दूर हुआ देख मग्न हो गया। वह स्त्रियाँ तुरन्त गर्भवती हुईं और दुःखी होकर अपने घरों को गईं। वहाँ ऋषीश्वरों ने यह दशा देखकर इतना क्रोध बढ़ाया कि वे स्त्रियाँ पक्षियों के समान उड़ने लगीं। अपनी यह अवस्था देख अति दुःखी हो हिमगिरि की पीठ में वीर्य को छोड़ दिया। उसका तेज स्वर्णवत् झलकने लगा और फिर उठाकर गङ्गा नदी में डाल दिया। जब वह वीर्य देवनदी में पड़ा तो नदी काँप कर बहने से थम गई। शिवजी के वीर्य को न सहकर दुःखी हो बड़ा नाद करने लगी और उस वीर्य को अपनी लहर के अन्दर लाकर किनारे फेंक दिया। उस जगह पर सरपत के बोझ पड़े हुये थे, वहीं वीर्य जाकर रुक गया और लड़के के स्वरूप से प्रकट हुआ। तब आकाश से जय-जय शब्द हुआ। उस लड़के का अति सुन्दर स्वरूप मुख, नाक और हाथ बहुत ही सुडौल तथा जलती हुई अग्नि के समान वर्ण, नख, अतिरिक्त, सुन्दर चरण जिसको देखकर करोड़ों कामदेव लज्जित हो जावें। तो उसी समय गिरिजा की दोनों छातियों से दुग्ध की धारा बह निकली जिसको देख शिव और गिरिजा अति प्रसन्न हुये। गिरिजा ने शिवजी से कहा कि क्यों यह दूध हमारी छाती से निकला है। शिवजी ने मुसकराकर कुछ न कहा।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उस समय सब देवता, सिद्धि, मुनि और गण आदि इकट्ठे होकर बड़ा आनन्द मनाते हुये फूलों की वर्षा करते कैलाश पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पहुँचे। अप्सरा नाचती, किन्नर गाने बजाने में लगे और गन्धर्वों ने प्रसन्न होकर आनन्द के बाजे बजा दिये। इसी प्रकार बड़ी धूम-धाम से उत्सव हुआ और तीनों लोक में सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। सबके दुःख इकबारगी दूर हो गये। यह सब प्रकार के मङ्गल उस लड़के के उत्पन्न होते ही चारों ओर हुये। उसी समय गाधि के पुत्र विश्वामित्र जो प्रसिद्ध ब्राह्मण हैं, तुरन्त वहाँ आये। सो उन्होंने उस लड़के की स्तुतिकर आदर किया। वह बालक विश्वामित्र की बनाई हुई स्तुति सुन प्रसन्न हो कहने लगा कि हमारा संस्कार करो। आज से तुम हमारे पुरोहित हुये। तुम तीनों लोकों के मान के योग होगे। विश्वामित्र ने विनयपूर्वक कुछ शोचकर कहा कि हम ब्राह्मण के घर नहीं उपजे जो आपका संस्कार करें। मैं तो गाधि से जो क्षत्रिय हैं, उपजा हूँ। मेरा नाम विश्वामित्र है। यह संस्कारादि कार्य करना ब्राह्मण का धर्म है तथा उसी के योग्य है और को दुःख देता है। अब आप अपना वृत्तान्त कहिये कि तुम बालक रूप धारण किये हुये कौन हो? तुम्हारे माता-पिता कौन हैं? वे दोनों तुमको छोड़कर कहाँ चले गये? क्योंकि हम तुमको अकेला देखते हैं। तुम्हारा तेज अद्भुत है। आप ब्रह्मचारी, गृहस्थ या तीनों देवताओं में से कोई हैं। अथवा आपही ब्रह्मस्वरूप बाल-रूप से प्रकट हुये हैं। हमने ऐसा बालक आजतक नहीं देखा। तुम तो उपजते ही बातें करके आनन्द देते हो और अपने संस्कार के लिये मुझे आज्ञा देते हो। मुझ पर कृपा करके सच सच कह दो। यह सुन लड़के ने हँसकर कहा कि हे विश्वामित्र! हम अपना चरित्र तुमसे कहते हैं, पर उसको अभी छिपा रखना और पूछने पर भी किसी से न कहना। हम गिरिजा और शिव के पुत्र हैं और दैत्यों को मारकर तीनों लोक को आनन्द देनेवाले हैं। फिर अपना प्रताप विस्तार कह सुनाया और कहा कि हे विश्वामित्र! तुम ब्रह्मर्षि होकर सब ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा पावोगे। यहाँ तक कि ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ भी तुमको 'ब्रह्मर्षि' कहेंगे, यह हमारा वर है। अब तुम शिव और गिरिजा की लीला को अप्रमेय समझकर हमारे संस्कार में विचार और विलम्ब मत करो। विश्वामित्र ने तुरन्त आज्ञा मानकर संस्कार किया। तब शिवजी के पुत्र ने प्रसन्न होकर विश्वामित्र को वरदान देकर अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुरोहित किया। उसी समय अग्नि ने भी तुरन्त वहाँ पहुँचकर शिवजी के पुत्र को देख बड़ा आनन्द माना और लड़के को प्रणाम किया। विश्वामित्र ने जो बातें कहीं, उनका उत्तर ठीक-ठीक उस बालक से पाया। उस बालक ने अपनी सब कथा अनल से वर्णन की। अग्नि और विश्वामित्र उस लड़के में पूर्ण बल और प्रताप देखकर बहुत प्रसन्न हुये। अग्नि ने अपना लड़का समझकर उसको अपनी गोद में उठाकर छाती से लिपटा लिया। मुख चूमा और अति प्रीति से उस लड़के को अपना पुत्र माना और अति प्रसन्न होकर बहुत से अपने शस्त्र कृपा किये। फिर शिवजी का पूर्णतेज उस बालक में स्थापन करके उसे असंख्य वरदान दिये। एक सांगि अर्थात् शक्ति कृपा की और अपना हाथ उसके शिर पर फेरा। तब लड़के ने कहा कि अब आप दोनों जावें क्योंकि अभी हमको बहुत से चरित्र करने हैं। यह कह दोनों को बिदाकर आप अनल की दी हुई शक्ति हाथ में लेश्वेतगिरि पर चढ़ गये और अति भयानक शब्द से नाद किया मानों प्रलय हुआ चाहती है। फिर देवताओं के मनोरथ पूर्ण होने के लिये अपनी शक्ति पर्वत के शृङ्ग पर मारी। तीनों लोकों में हाहाकार हो गया और पर्वत फटकर गिर पड़ा। उसके दो टूक हो गये और बड़ा ही शब्द हुआ। उस समय महावीर दशपद्म राक्षस कालवश हुये जो पहिले वहाँ रहते थे। वे सब उनको मारने चले, धरती काँप उठी। तीनों लोक हिल गये। देवता और मुनि चिन्ताकर कहने लगे कि यह क्या होता है? पर कुछ भेद न समझे और इन्द्रादि देवता देखने के लिये चले देखा कि गुह अर्थात् वही लड़का पर्वत पर खड़ा है और उस पर्वत ने मनुष्यों के समान अपना रूप बनाकर इन्द्र से भेंट की और हाथ जोड़ इन्द्र से विनय किया कि हे इन्द्र! आप तीनों लोक के राजा हैं, सृष्टि की पालना आपका धर्म है। इस समय मुझको बड़ा दुःख हुआ है। इस बालक ने मुझको शक्ति मारकर ऐसा भयानक शब्द किया कि सर्वजीवों को दुःख पहुँचा। धरती काँप उठी और सब पर्वत, वन, नदी भी काँप उठे। असंख्य जीव मर गये। यह सब इस बालक ने किया है जो खड़ा है। नहीं मालूम यह कौन और किसका पुत्र है? इसने इतना दुःख मुझे शत्रुता से वृथा दिया है। हे इन्द्र!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आप इसको जल्दी से बधकर डालें। नहीं तो यह प्रलय ही कर डालेगा। यह सुन इन्द्र ने उस लड़के पर बड़ा क्रोध किया और कुछ छिपा हुआ भेद न जानकर उस बालक के मार डालने की दृढ़ इच्छा की। शिवजी की लीला से इन्द्र भी चूका और इन्द्र ने धावा करके वज्र उसकी दाहिनी काँख में मारा कि तुरन्त उस स्थान से एक मनुष्य उपजा जो बल पराक्रम में बराबर था। जिसका नाम साध्य रक्खा गया और वह सबका मनोरथ पूरा करता है। साध्य ने उपजते ही एक बड़ा भयानक शब्द किया कि इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र बाईं काँख में मार दिया कि एक दूसरा मनुष्य उपजा, जिसको विसाध्य कहते हैं। उपजते ही वह नाद करने लगा। इन्द्र ने क्रोधित होकर उस बालक के हृदय में अपना वज्र मारा पर कुछ फलदायक न हुआ और एक मनुष्य और प्रकट होकर खड़ा हो गया। उसका नाम नैगमय कहते हैं। वे तीनों पहले बालक के सहायक हो गये और चारों प्रलयकाल की अग्नि के समान प्रकट हुये। उस बालक ने अपने तीनों गणों समेत इन्द्र पर धावा किया। इन्द्र उनका प्रलय करनेवाला तेज उनमें देख निर्बल हो काँप उठा और हाथ जोड़ उनकी शरण में आया। अपने सब शस्त्र फेंक दण्डवत् की और जो इन्द्र के साथ सेना थी, उसने भी आदर और मान करने से कोई बात उठा न रक्खी। उस बालक ने इन्द्र की यह दशा देख कुछ ढाढ़स पाया और इन्द्र को अभय किया। इन्द्र निर्भय होकर प्रसन्न हुये। सब देवताओं ने हाथ जोड़ स्तुति की और कहा कि तुम बालक नहीं हो, वरन् तुम तो ब्रह्म हो। हमने तुम्हारा प्रताप नहीं जाना और अहंकार से यह दशा हुई। अब तुमको न पहिचान कर ग्लानिपूर्वक देखा। कृपा करके हमारा सब अपराध क्षमा कर दो, हम आपकी शरण में हैं; हमको अपनी शरण में लीजिये। हमको इस बात का निश्चय है कि तुम ब्रह्मरूप हो। किसी भक्त पर प्रसन्न होकर तुमने अवतार धारा है, अब सच कहिये कि आप कौन, किसके पुत्र और क्यों उपजे? तब बालक ने कहा कि हे इन्द्र! वेग ही सिधारो और प्रसन्नतापूर्वक अपना राज्य करो। यह कह बिदा किया और कुछ भी भेद न बताया। इन्द्र अपने राज्य में जा पहुँचे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौथा अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! वही स्त्रियाँ जिनका हम पहिले वर्णन कर चुके हैं, उसी समय स्नान के निमित्त उस नदी के तट पर आ पहुँचीं और सुन्दर बालक देख उस बालक के निकट चली आईं। बालक को अति सुन्दर पाकर हर स्त्री का मन चाहा कि इसको लिया चाहिये। सबने उठा लेने की इच्छा की और कहने लगीं कि यह बालक मेरा है, हम इसको लेवेंगी, हमारे गर्भ से उपजा है। वह परस्पर झगड़ने लगीं सो बालक ने उनके झगड़े को इस प्रकार दूर किया कि सबकी छातियों से दूध पिया, इससे वह माता के समान हो गईं। उसके असंख्य नाम रक्खे गये। पार्वतीनन्दन १ सेनानी २ पावकभू ३ स्कन्द ४ गङ्गासुत ५ शरजन्मा ६ षणमुख ७ गुह ८ आदि। फिर उन स्त्रियों ने बालक को अपने घर ले जाकर बड़ा उत्सव मनाया और वेद के अनुसार कर्म किये। वेद पढ़ाया, उनके जन्म का महीना कार्तिक की छठी थी, शुभ लग्न और मुहूर्त में उन्होंने जन्म लिया था। स्कन्द ने अपनी माताओं को विचित्र चरित्र दिखलाये। एक दिन ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र आदि सब इन्द्र की सभा में विराजमान थे। हे नारद ! तुमने उचित समय जानकर शिव के ध्यान के उपरान्त स्कन्द के जन्म का हाल वर्णन किया। देवता बोले कि मालूम होता है कि शिव ने हम पर कृपा की कि अपने लड़के को उपजाया। अब हमारे सब काम पूरे हो गये और हमारी प्रसन्नता का समय आया है। यह बातें हो रही थीं कि स्कन्द अपने लड़कों के साथ खेलते-खेलते उसी स्थान पर पहुँचे। सो ऐसा तेजवान् बालक देख मुनि और देवताओं ने पूछा कि यह कौन और किसका लड़का है। कहने लगे कि इसको बुलाकर पूछना चाहिये। इस सुन्दर स्वरूप से तृप्त होना उचित है। उन्होंने लड़के को बुलाकर कहा कि तुम कौन हो ? स्कन्द बोले कि हम लड़के के स्वरूप से शिवजी हैं। शिवजी वही हैं जो लोक के हित चाहनेवाले हैं और जिनका तुम ध्यान करते हो, वही शिवजी का रूप हम हैं जिनको योगीजन ध्यान करके भी नहीं पाते। हमको लोक में गुह कहते हैं विष्णुजी ने कुछ विचार कर कहा कि जो तुम शिवजी हो तो अपना स्वरूप दिखावो कि हमको इस बात का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निश्चय होवे कि तुम वास्तव में शिवजी हो। यह सुनकर स्कन्द ने अपने भयानक स्वरूप में विराट्रूप दिखाया जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्ड, इन्द्र और उपेन्द्र वर्तमान थे। सो सर्व सभा हर रोम में ब्रह्माण्ड देखकर काँप उठी और घबराकर विष्णुजी और हमने शरण-शरण पुकारी और कहा कि वास्तव में आप शिवजी का रूप हैं। अब आप अपना वही रूप धारण कर लीजिये। सो स्कन्द ने मान लिया और वही रूप धारा। फिर विष्णुजी ने हाथ जोड़ स्तुति पढ़ी और कहा कि हे षण्मुख! शिव-गिरिजा के पुत्र तुम शिवजी का रूप ही हो। अब हम पर कृपा करो कि आज हमने अपना स्वामी पाया। तुम तो अनादि, निर्गुण और सगुण स्वरूप हो। इस समय तुमने स्कन्द अवतार धारण किया। इस प्रकार विष्णु ने बड़ी स्तुतिकर स्कन्द को विमान पर चढ़ाय हम और देवताओं समेत ले चले और शिवजी के मन्दिर की ओर हुये। हर एक के मुख से जय-जय शब्द निकलता था। सब प्रकार के बाजे बजते थे। कोई दान करता, कोई गाना गाता, इस प्रकार से आनन्द मनाते हुये वे कैलाश में पहुँचे और स्कन्द को शिवजी के पास ले जाकर खड़ा किया। तब शिव-गिरिजा को बड़ा आनन्द मिला। गिरिजा के स्तनों से दूध निकल पड़ा और वही दशा हो गई जैसी कि पुत्र के उपजने में होती है। शिवजी ने पूछा कि यह किसका पुत्र है? तब हे नारदजी! तुमने यह समझकर कि शिवजी यह चरित्र लीला के निमित्त करते हैं, उत्तर देकर आरम्भ से अन्त तक सब समाचार कह सुनाया। यह सुन शिवजी और पार्वतीजी ने बहुत प्यार करके लड़के को लिया और गोद में लेकर दूध पिलाया। दोनों शिवजी और पार्वतीजी बहुत ही प्रसन्न हुये। सब शिवजी के गण लड़के को गोद में लिये हुये देखकर प्रसन्न हो गये और स्कन्द को प्रणाम किया। वीरभद्र, भैरव और नन्दी ने सेवकों के समान प्रणाम किया। विष्णु, हम और सब देवताओं ने माथा झुकाकर आदर किया। तब विष्णु, हम और मुख्य-मुख्य देवताओं ने शिव-गिरिजा की सेवा की। पहिले विष्णुजी ने स्कन्द का नीराजन किया। फिर लक्ष्मी, अपनी स्त्री सहित हमने, शची समेत इन्द्र ने और फिर सब देवता बराबर स्कन्दजी का नीराजन करते गये। तब बड़ा उत्सव हुआ। मुनीश्वर अपना मनोरथ पाते हुये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जय-जय करने लगे, बाजे बजे और सर्व प्रकार के आनन्द की सामग्री में कोई बात शेष न रही। स्कन्द शिवजी की गोद में खेलने लगे और वासुकि नाग का गला अपने दोनों हाथों से जोर से पकड़ उसके साथ खेलने लगे। वासुकि नाग स्कन्द के चरणों पर लोटता था। शिवजी ने स्कन्दजी का यह चरित्र देखकर बहुत हँसकर गिरिजा की ओर देख दिया। गिरिजा ने भी हँस दिया। तब विष्णु और सब देवताओं ने बिनती की।

पाँचवाँ अध्याय।

देवता लोग बोले कि सबके स्वामी और सबके दुःख दूर करनेवाले तुम निर्भय करनेवाली युक्ति धारण करो कि देवताओं की सब भीति दूर हो जावे। आपकी केवल कृपा कटाक्ष ही देवताओं के लिये बहुत है। हम आपकी शरण में आये हैं। हम पर कृपा कीजिये और हमको अपना सेवक जान हम पर कृपा करते रहिये। संसार में जो आपका यश गाते हैं, वह कुछ दुःख नहीं पाते। चाहे कोई मनुष्य करोड़ों युक्ति करे पर बिना आपकी भक्ति के मुक्ति प्राप्त नहीं होती। तुमने ब्रह्मरूप होकर हम सेवकों के उपकार के निमित्त अवतार धारण किया। विष्णु, ब्रह्मा और सनकादिक भी आपका बहुत ही ध्यान करते हैं और आपको नहीं पाते। सो हमारा भाग्य धन्य है कि हम आपको कैलाश पर्वत में शरीर धारे आँखों से देख रहे हैं। जो इस समय आपने अपना रूप शिशुवत् बनाया है, उसको भी देखकर हमको कितनी प्रसन्नता प्राप्त होती है। आपकी गति आप ही जानते हैं। इसी तरह देवताओं ने अति नम्रता से बहुत ही स्तुति की। फिर विष्णु ने विनय की कि हे शिवजी हमारे आनन्द देने के लिये स्कन्द को आज्ञा दीजिये कि तारक दैत्य का वध करें क्योंकि इनका अवतार इसीलिए हुआ है। शिवजी ने हँसकर कहा कि हमने तो इसीलिये विवाह किया था। तुम सब जाकर अपना काम करो। फिर शिवजी और गिरिजा ने अच्छी तरह से स्कन्द का प्यार किया और अति प्रसन्न हुये। फिर देवताओं ने स्कन्द के लिये शिव की आज्ञा लेकर पर्वत के निकट त्वष्टापुर में एक उत्तमोत्तम मन्दिर बनाया जिसकी सुन्दरता वर्णन नहीं हो सकती। उस मन्दिर में एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्थान को अच्छी चीजों से सजाया। उस मन्दिर के बहुत से खम्भे और झालर आदि रत्न और मोतियों से बनाये गये थे। जब वह मन्दिर तैयार हो गया, तब विष्णु ने हमारे समेत सब मुनियों को बुलाकर उस मन्दिर में स्कन्द का अभिषेक किया और सिंहासन पर बैठाला। विष्णु और हम सबों ने उनको संसार भर का और अपना स्वामी ठहराकर राजतिलक किया, भेंट दी और अच्छे प्रकार सेवाकर शस्त्र भी भेंट दिये। तब शिव और गिरिजा भी आ गये और ऐसी देवताओं की सभा देख प्रसन्न हुये। उन्होंने अपनी सब सेना स्कन्द को कृपा की और पार्वती ने एक वस्त्र सब अस्त्रों पर पहिननेवाला ऐसा कृपा किया जो शत्रुओं के युद्ध में सर्वप्रकार के दुःखों से बचा रक्खे। विष्णु ने वैजयन्तीमाला देकर एक फूलों की माला अपने हाथ से बनाकर स्कन्द के कण्ठ में डाल दी और हमने भी विष्णु के समान स्तुतिकर शरीर की रक्षा के निमित्त कई चीजें दीं। वरुण ने सवारी के लिये उनको कनकेता नाम बकरा दिया। मित्रावरुण ने चढ़ने को गरुड़ दिया। अरुण ने ताम्रचूड़ शस्त्र दिया। उस समय चारों ओर से आनन्द दिखाई देता था। हम, विष्णु और देवता आदि स्कन्द की स्तुति में लगे और सब स्कन्द के चरणों पर गिर पड़े।

छठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! ऐसे समय में एक ब्राह्मण जिसका नाम नारद था, यज्ञ करता था। वह अजमेध यज्ञ था। उसको एक बकरे की आवश्यकता थी कि वह यज्ञ में बलि दे। तथाच कनकेता स्कन्द का बकरा जो वरुण ने दिया था, वह स्कन्द की इच्छा जानकर नारद ब्राह्मण की ओर भाग गया। नारद ने उस बकरे को हर प्रकार से योग्य समझ पकड़ लिया और उसने यज्ञ की सामग्री इकट्ठी की। संयोग से वह ब्राह्मण किसी दूसरे ग्राम में किसी कार्य के निमित्त गया। बकरा ब्राह्मण के जाने के उपरान्त मंच उखाड़कर अपने घर भाग गया और सातों द्वीपों की पृथ्वी को जीतकर पृथ्वी के नीचे चला। शेषलोक पर्यन्त पाताल को भी जीत लिया और फिर ऊपर के लोक को चला। प्रथम गले में रस्सी बाँधे हुये स्वर्ग को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गया और आकाश को भी जीत लिया। सर्व ब्रह्माण्ड पर विजय पाकर विष्णुपुरी में पहुँचा वहाँ खलबली पड़ गई और वह बकरा बहुत ही विवश हो गया। जब नारद ब्राह्मण आया तो देखा कि रस्सी बँधी हुई है, पर वहाँ बकरा नहीं है। वह आश्चर्य में होकर पूछने लगा। सबने उत्तर दिया कि हमने उसे जाते नहीं देखा। न जानिये वह बकरा था या क्या था क्योंकि उसके शरीर में बड़ा तेज दिखाई देता था मानो वह अग्निरूप था। नारद ब्राह्मण अति चिन्तित हुआ और अच्छे बुद्धिमान् पण्डितों को बुलाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि आप लोगों की क्या मति है? क्योंकि मेरा सब परिश्रम नष्ट हो गया। मैं अब क्या करूँ? सब ब्राह्मण यह चरित्र स्कन्द का समझकर कहने लगे कि तारक दैत्य के वध के लिये स्कन्द का अवतार हुआ है। देवताओं ने अपने-अपने शस्त्र दिये हैं। तुमको उचित है कि वहाँ जाकर स्कन्द से अपना वृत्तान्त वर्णन करो। तथाच नारद चलकर स्कन्द के द्वारे पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि तुम स्कन्द से कहो कि एक ब्राह्मण नारद नामी द्वार पर खड़ा है। द्वारपाल बोला कि कहो तुम्हारा क्या मनोरथ है? तब नारद ने सब वृत्तान्त वर्णन किया। द्वारपाल ने समय पाकर स्कन्द से बिनती की कि नारद ब्राह्मण हठ से द्वार पर आपके दर्शन के लिये खड़ा हुआ है। स्कन्द हँसकर बोले कि नारद हमारा भक्त है, उसे भीतर लावो। नारद ने आकर और प्रणामकर वेद के अनुसार स्तुति की। विनय की कि जो बकरा मैं यज्ञ के निमित्त लाया था, वह भाग गया है। तुम्हारे राज्य में रहकर हमारा यज्ञ रह जावे तो आश्चर्य की बात है। मेरे इस दुःख को दूर कीजिये। नारद ब्राह्मण के ये वचन सुनकर स्कन्द ने अपने वीरबाहु गण को बुलाया और कहा कि नारद के बकरे को ढूँढ़ दो। जहाँ कहीं तुमको बकरा मिले पकड़ कर तुरन्त लावो। वीरबाहु यह आज्ञा पाकर अपनी सेना सहित वेग से चला। सो उसने उस बकरे को तीनों भुवन और नीचे के लोक में ढूँढ़ते हुये विष्णुलोक में उत्पात मचाते पाया। सो वीरबाहु ने उसकी सींगों को पकड़कर घसीटते हुये स्कन्द को सौंपा। स्कन्द हँसकर बकरे पर चढ़े और अपने वाहन के बल के दिखाने को उसको इतनी सामर्थ्य दी कि मन के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समान वे परिश्रम तीनों भुवन में फिरा। अर्थात् एक मुहूर्त भर में तीनों लोकों में घूमकर लौट आया। जब घर पहुँचे तो स्कन्द प्रसन्न होकर वाहन से उतर भीतर गये। तब नारद ब्राह्मण बोला कि महाराज! हमारे बकरे को दे दीजिये, हमारे यज्ञ का समय आ गया है। स्कन्द बोले कि यह बकरा बलि के योग्य नहीं है क्योंकि हमारे चढ़ने के लिये यही है। जो फल तुम यज्ञ करने से चाहते हो, वह फल हमने तुमको यज्ञ बिना दे दिया। यह सुनकर नारद ब्राह्मण हाथ जोड़ स्तुति करने लगा और स्कन्दजी का यश गाता अपने घर चला गया। देवता और मुनि आदि ने स्कन्द की स्तुति करने के उपरान्त यह विनय की कि हमारे ऊपर जो दुःख है, उसको दूर करो। स्कन्द ने हँसकर कहा कि हे देवताओं! तुम निश्चिन्त रहकर आनन्द करते रहो। जिसने तुमको इतना दुःख दिया है, उसको अपने गणों समेत जाकर वध करेंगे और एक निमेष में ही दैत्यों की सेना मार डालेंगे। हम तुमको हर प्रकार से आनन्द देंगे। तुमने जो शिवजी की सेवा की है, उसका फल हम देवेंगे। जो कुछ हुआ है, वह सब शिवजी की लीला जानो। वे सत्त्व, रज और तम तीनों गुण धारण करके असंख्य लीला करते हैं। जब रजोगुण उपजता है तब दैत्य अधिक हो जाते हैं। राक्षस तमोगुण से बढ़ते हैं। देवता और मुनि सतोगुण से अधिक हो जाते हैं। वे अपने-अपने समय में अपनी-अपनी शक्ति उपजाते हैं। अब सतोगुण उदय होना है। हर प्रकार से असुरों का नाश होगा। यह जानकर तुम सब प्रसन्न रहो। शिवजी अपने भक्तों को बड़ा आनन्द देनेवाले हैं और दुष्टों के लिये वे बड़े भयानक हैं। यह सुनकर सब देवता बहुत प्रसन्न होकर जय-जय कहने लगे और स्कन्द की स्तुति की।

सातवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! स्कन्द से यह वचन सुनकर विष्णु ने देवताओं सहित कहा कि हे स्कन्द! आप शिवजी के पुत्र वरन् आप शिवजी ही है और असुरों के वन के लिये बड़वाग्नि के समान हो। तुम में और तुम्हारे पिता में कुछ अन्तर नहीं है, तुम परब्रह्म हो। इसी प्रकार बहुत-सी स्तुति की। उस समय गिरिजा, गङ्गा, वह्नि और मुनिपत्नियाँ आदि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्कन्द की माता आकर और अपने पुत्र का इतना प्रभाव देखकर परस्पर झगड़ने लगीं। सब उसको अपना-अपना पुत्र वर्णन करने लगीं। तब हे नारद! तुमने जाकर सबको समझाया। तुमने शिवजी की इच्छा से स्कन्द की उत्पत्ति का ठीक-ठीक वृत्तान्त वर्णन कर दिया और कहा कि यह शिवजी व गिरिजा के पुत्र हैं। इन्होंने देवताओं के मनोरथ पूरे करने को अवतार लिया है। यह सुन गिरिजा के सिवाय और सब दुःखी हुईं। तब तो प्रसन्न होकर स्कन्द ने गङ्गा से कहा कि तुम तो संसार की माता हो और शिवजी की स्त्री। इसी प्रकार से सब को समझा दिया। फिर विष्णुजी और ब्रह्माजी से कहा कि हम दैत्यों को एक क्षण भर में नाश कर देंगे, कुछ संशय मत करो। हम इसी के लिये उपजे हैं। हमने आप दैत्यों को अपना बल देकर इतनी ऊँची पदवी पर पहुँचाया। पर अब उनको अवश्य ही मार डालेंगे क्योंकि अब वे वेद के विरुद्ध कर्म करने लगे। अब तुम तत्पर हो जावो और शिवजी की सेवा करो। जो काम या उत्सव करो, उसमें शिवजी की जय प्रसन्न होकर बोलते रहो। यह आज्ञा पाकर एकबारगी सम्पूर्ण देवता आदि शिवजी की जय बोल उठे। सब देवता आदि सेनासहित सजकर स्कन्द के साथ चले। शिवजी गिरिजा और गणों को साथ लेकर कैलाश को गये। उस समय तारक ने यह सुनकर और देवताओं के सब उपाय का परिणाम जानकर बड़े क्रोध से देवताओं पर धावा किया। चतुरङ्गिणी सेना सजाकर करोड़ों फौज साथ लिये हुये चला और युद्ध के बाजे बजने लगे। तब हे नारद! तुमने तारक के पास जाकर कहा कि अब तुम्हारे लिये बड़ी आपदा आ पहुँची है क्योंकि देवता आदि ने शिवजी की सेवा करके तुम्हारे मार डालने का उपाय किया है। तुमने सब वृत्तान्त आरम्भ से अन्त तक कहकर सुनाया कि शिवजी को कल्पवृक्षवत् समझो। वे सबको एक ही नेत्र से देखते हैं और भक्ति-सेवा के अधीन रहते हैं। इसलिये तुमको उचित है कि तुम भी उपाय करो और उसके पीछे देवताओं से युद्ध करो। हमारा वचन झूठ नहीं होता। जो तुम विजय चाहते हो तो हमारी मति मानो। जो हमारी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा इसी समय अवश्य नाश हो जावेगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह बात तारकासुर ने नारद की मृत्युवश न मानी और हँसकर नारद से कहा कि विष्णुजी के पास जाकर कह दो कि अब तुम जहाँ तक वीरता कर सकते हो, करो। कुछ किसी प्रकार की कमी न करना। इस दूध पीते बच्चे को अपना अगुवा करके लड़ाई किया चाहते हो। जान पड़ता है कि तुम इस युक्ति से मरा चाहते हो क्योंकि ऐसी युक्ति से तुम्हारा कार्य न होगा। तुम्हारी वीरता हमने कई बेर देखी है। तुम पराया भरोसा करते हो। सो और के बल से विजय नहीं मिलती क्योंकि एक मुचुकुन्द के बल से तुमने चाहा था कि हम पर प्रबल हो जावें सो हमने भी उसकी वीरता देखली है। सब देवताओं को उसके समेत बन्दि में डाल दिया। अब तुम एक छोटे लड़के को साथ लेकर बड़ा युद्ध किया चाहते हो। सो ऐसी बुद्धि की हीनता के कारण तुम सब पुत्र सहित मारे जावोगे। तुमको दिक्पति समेत वध करके त्रिभुवन का राज्य निष्कण्टक होकर करूँगा। हे नारद ! तुमने वह बात सुनकर तारक को क्रोधित होकर उत्तर दिया कि हे तारक ! अहंकार बड़ा ही दुःख देनेवाला है। जिस मुचुकुन्द का तुमने वर्णन किया, वह शिवजी का भक्त है और शिवजी उसके सहायक हैं। जिसके ऊपर शिवजी कृपा करते हैं, वह देवताओं, मुनीश्वरों और मनुष्यों से अधिक शक्ति रखता है। जिसको तुम पीनेवाला बालक कहते हो, वह तो प्रलय करनेवाला शिवरूप हैं। तारक ने क्रोधित होकर फिर कहा कि मुझको वीरों का बल क्या मालूम है ? तुम वहाँ जाओ, जहाँ से यह बातें सीखकर आये हो। हे नारद! तुम तुरन्त तारक की सभा से उठकर हमारे यहाँ आये। हम और विष्णुजी से यह सब समाचार कहा और यह भी कहा कि यह बालक तारकासुर को विजय करेगा। हमारा यह वचन सत्य है कि यह शिवजी का लड़का तीनों लोक में निर्भय है। हे नारद ! तुम्हारे इस वचन को हम सब सुनकर अति प्रसन्न हुये और युद्ध की इच्छा से शिवजी का ध्यान कर उठ खड़े हुये। स्कन्द को सेनापति बनाकर इन्द्र के हाथी पर चढ़ाया और सब लोकपाल इकट्ठे हुये। युद्ध के बाजे बजने लगे अर्थात् भेरी, दुन्दुभी, मृदङ्ग, बीणा, बीन और गाना नाच होने लगा। अति प्रसन्नता से बड़ा आनन्द छा गया। स्कन्द इन्द्र को हाथी देकर आप विमान पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आरूढ़ हुये। चारों ओर से शिवजी के सुत की जय यह शब्द ऊँचा हुआ। वरुण, इन्द्र, अनल, यमराज, कुबेर और ईशान आदि आठों दिक्पति अपनी सेना सहित युद्ध के आनन्द में तत्पर हो गये। विष्णुजी शिवजी का ध्यान करके महा आनन्द को प्राप्त हुये। उनकी सेना का हम वर्णन नहीं कर सकते, वे तो तीनों भुवन के स्वामी हैं। फिर स्कन्द को सबसे आगे करके यह सेना चली। स्कन्द पर्वत से उतरकर अन्तर्वेद में स्थित हुये और उसका मध्य भाग जो हरविनया के नाम से प्रसिद्ध है, उसको युद्धस्थल ठहराकर तारकासुर को सन्देश भेजा।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! तारकासुर अच्छे विमान में छत्र चमर होते हुये आरूढ़ हुआ और सेना सहित युद्धस्थल में पहुँचा। दोनों सेनाएँ भी अन्तर्वेद में पहुँचीं जिनको तृणवत् मृत्यु भासती थी। दोनों ओर से गढ़ी बनाई गईं। एक हाथियों की पंक्ति, दूसरी घोड़ों की, तीसरी रथों की और चौथी प्यादों की क्रम से सजाई गई। दोनों ओर के वीर सांग, शूल, फरसा, पाश, कृपाण, भिन्दिपाल, तोमर, मुद्गर, चक्र, भुशुण्डी, नाराच और हथियार सजाकर युद्धस्थल में अपनी वीरता दिखाना चाहते थे। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे और प्रशंसा करने लगे। निदान इसी समय में दोनों ओर के भटों ने युद्ध बड़े वेग से रचा। देवता और दैत्यों का घोर युद्ध हुआ। दोनों ओर की चतुरङ्गिणी सेना नष्ट हुई। यहाँ तक कि निमेष में यह युद्धस्थल भटों के सब शरीरों से भरकर भयानक हो गया। बहुत से वीर पृथ्वी पर गिरकर मार-मार का शब्द उच्चारण करते थे। कोई तलवार से घायल, कोई मुद्गर और गदा से मूर्च्छित और कइयों के हृदय में पाश ने शरीर भरके खण्ड-खण्ड कर डाले। कई कबन्धरूप बन शीशरहित युद्धस्थल में नाचते और खेलते। लहू की नदी बह चली। प्रेत और पिशाचादि ने तृप्त होकर लहू पिया। गीध कौआ और चील आदि ने रुचिपूर्वक मांस खाया तथा रक्त पिया। वेताल ने आकर हाथियों के शिर अपने शिरों पर रक्खे। इसी प्रकार पहिले धीरे-धीरे देवता और दैत्य मरे, पर कुछ समय के उपरान्त युद्धस्थल प्रलयरूप ही भासने लगा। तारक आप इन्द्र से भिड़ा और अग्नि संह्लाद

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

परस्पर लड़े। यमराज के साथ जम्भ ने युद्ध रचा। निर्ऋति के साथ सम्बल, पवन के साथ पवन, धनपति के साथ बृहत्सेन, घननाद उशना के साथ, सुना सूर्य के साथ और सुलभ चन्द्रमा के साथ लड़े। इन्होंने घोर युद्ध रचा और दोनों अपनी-अपनी विजय चाहते थे पर कोई परास्त न हुआ। युद्धस्थल उन वृक्षों के समान जो अग्नि से जल जाते हैं, देखने में भयानक भासता था। तारकासुर ने इन्द्र के हृदय में सांगी मारी जिससे इन्द्र हाथी पर से धरती पर गिर पड़ा। इसी प्रकार और दिक्पति भी दैत्यों से हारकर भाग चले। कोई भी युद्ध में दैत्यों के सम्मुख खड़ा न रह सका। यह पराजय देवताओं का देख मुचुकुन्द ने विचार किया कि मुझे देवताओं की सहायता करना उचित है। मैं शिवोपासक हूँ और मेरे सहायक शिवजी हैं। यह शोच तारक दैत्य के सम्मुख आया और दोनों युद्ध करते रहे, कोई न हारा। निदान मुचुकुन्द ने असि हाथ में लेकर तारक दैत्य के हृदय में मारी। तारक ने हँसकर कहा कि तुम मनुष्य हो, हमको तुम्हारे साथ युद्ध करने में बहुत लज्जा आती है। बड़ा खेद है कि जो शस्त्र तुमने चलाया, उसने कुछ भी हमारे शरीर पर फल न किया। मुचुकुन्द बोले कि मैं शिवजी की कृपा से अब तुझको जीता नहीं छोड़ता। सम्मुख खड़ा हुआ ऐसा कौन दैत्य है जो मेरे हथियारों को हँसे। यह कह तारक के एक असि मारी। तारक के अभी वह लगी न थी कि उसने तुरन्त सांगी मारकर मुचुकुन्द को घायल कर पृथ्वी पर लिटा दिया। मुचुकुन्द ने पृथ्वी से उठ अति क्रोधित हो तारक के वध का विचार कर अपने धनुष को उठा लिया और ब्रह्मास्त्र चढ़ाया। उस समय हे नारद! तुमने मुचुकुन्द को मना किया कि यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा। मनुष्य के हाथ से इसकी मृत्यु नहीं है, तुम्हारा क्रोध वृथा है। इसको केवल स्कन्द मारेंगे। तुम सब चुप हो रहो और स्कन्दजी का चरित्र देखो। जिस जगह कुछ अपना वश न चले वहाँ चुप रहना उत्तम है। यह कह तुम देवताओं समेत स्कन्दजी की सेवा में पहुँचे। उनकी स्तुति और पूजा करने लगे, बाजे बजने लगे और उत्सव की सब सामग्री तैयार हुई। जब देवताओं को ऐसा आनन्द करते हुये दैत्यों ने देखा तो महा कोपित हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़ा नादकर बाणोंकी वर्षा करने लगे। वीरभद्र महा क्रोध कर युद्ध स्थान में आये।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! वीरभद्र अपने गणों को साथ लिये हुये युद्ध करने लगे और दोनों ओर से बड़ी चढ़ाई हुई। दोनों ओर से नाना प्रकार के शस्त्र चलाये गये। वीरभद्र ने क्रोध में त्रिशूल को हाथ में लिया और इकबारगी झपट कर त्रिशूल को तारक के शरीर में मारकर धरती पर गिरा दिया। तारक क्षणमात्र के उपरान्त चैतन्य हुआ और वीरभद्र को सांगी से मारा। वीरभद्र ने फिर तारक पर त्रिशूल चलाया। इसी प्रकार बहुत बेर दोनों ओर से शस्त्र चलते रहे। दैत्य और देवता आदि सब पीछे खड़े रहे। जब बहुत समय तक दोनों में कोई परास्त न हुआ, तब हे नारद! तुमने जाकर वीरभद्र से कहा कि हमारी बात मानकर लड़ाई को छोड़ दो। यह तुम्हारे हाथ से नहीं मरेगा। तारक बड़ा पराक्रमी वीर है। जब आप शिव इसके साथ युद्ध करेंगे तब यह मरेगा। वीरभद्र ने तुमसे क्रोधित होकर कहा कि तुम युद्ध और वीरता की बातें क्या जानते हो। तुम तो केवल तप करना जानते हो। तुमको वीरों का वृत्तान्त सुनाते हैं। उनके चार धर्म होते हैं—पहिले जो स्वामी बिना युद्ध करते हैं और अपने प्राण का लोभ न करके भली-भाँति लड़ते हैं। वह प्रथम प्रकार से वीरभद्र हैं। दूसरे जो स्वामी के साथ युद्ध स्थान में संसार की लज्जा से मर जाते हैं, वे दूसरे प्रकार के हैं। उनको शूर कहते हैं। तीसरे जो अपने स्वामी के साथ युद्ध में से भागकर चले जाते हैं, वे क्रूर हैं। उनको नरक मिलता है। चौथे वे जो निकम्मे होकर घर में बैठे हैं और उनका स्वामी युद्ध में मारा जावे, वे कायर हैं उनको कहीं सुख नहीं मिलता। लोक में तो निन्दा और परलोक में एक कल्प पर्यन्त नरक में पड़े रहते हैं। इस समय मैं सत्य-सत्य कहता हूँ कि जो शिवजी मेरे पास आकर मुझको तारक के वध से रोकें तो लाचारी है, नहीं तो आज मैं पृथ्वी को बिना तारक के कर दूँगा। यह कह वीरभद्र ने तारक के साथ युद्ध रच त्रिशूल चलाया और दोनों लड़ने लगे। दोनों ओर की सेना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भी परस्पर लड़ने लगी। दैत्यों को देवताओं ने बड़ी वीरता से परास्त किया। दैत्य अपनी थोड़ी सेना मरी हुई देख भाग चले। तब तारक महाक्रोधित हुआ, मानों प्रलय कर देगा। वह एक करोड़ हाथ बनाकर हाथी पर सवार होकर देवताओं के पकड़ने को उनकी सेना के भीतर चला और असंख्य देवताओं को मार डाला तथा अपने हाथी को छोड़ दिया। उसके भय से सब हाथी आदि डर गये और तारक ने देवताओं को जीत लिया। उस समय तारक का तेज कोई सह न सका और सब लोग बड़े दुःखी हुये। उसके हाथी ने सब हाथी आदिकों को मार डाला। यह दशा देखकर विष्णुजी से न रहा गया तो उन्होंने तुरन्त चक्र उठाकर तारक के साथ युद्ध कर देवताओं को आनन्द दिया। देवताओं में दूना बल हो गया। विष्णुजी और तारक से घोर युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर से असंख्य देवता और दैत्य मारे गये। तारक ने बाणों की वर्षा से देवताओं को फिर भयभीत किया। विष्णुजी ने क्रोधित होकर अपने चक्र को तारक के ऊपर चलाया। तब पृथ्वी काँप उठी पर चक्र को तारक के शरीर में जमने का कोई स्थान न मिला। तारक ने अपने गुरु को प्रणाम कर सैकड़ों प्रकार की माया दिखाई। कभी तो वृक्ष, कभी बाण, फिर हाथी, घोड़े, सर्प और नाना प्रकार के शस्त्र आकाश से गिरने लगे। राक्षस जिनका शब्द हाथियों के समान था, उपजे। यह तारक की माया किसी ने न जानी वरन् देवताओं ने भी जाना कि प्रलय हुआ चाहती है। यह विचार वह युद्ध स्थान से भागकर स्कन्द के पास पहुँचे और अति भयभीत होकर स्कन्द से विनती की कि हम आपकी शरण में आये हैं। आप कृपा करके जल्दी तारक का वध कीजिये। बिना आपके और कोई तारक के वध योग्य नहीं है। आपका अवतार इसीलिये हुआ था। स्कन्द ने हँसकर देवताओं से कहा कि हमको अपना-पराया कुछ नहीं भासता। हमतो अभी लड़के हैं और मैं इस बात की परीक्षा करता रहा कि मैं किसी के साथ लड़ूँ। चाहे मैं धनुर्विद्या नहीं जानता तो हे नारद! तुमने स्कन्द से यह सुनकर उत्तर दिया कि आप तो शिव से उपजे हैं और सृष्टि के रक्षक देवताओं को तुमहीं से सुख है। तुम बालक, युवा और वृद्ध नहीं हो। तुम्हारा बल वेदों से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकट है। तारक ने देवताओं को विजय कर बड़े-बड़े दुःख दिये हैं। इसलिये आपको तारक का वध कर डालना चाहिये। यह सुन स्कन्द पहिले हँसे और फिर क्रोधित हुये और विमान छोड़ पैदल चले। वे अपनी शक्ति को लिये तारक की ओर पैदल जल्दी-जल्दी पग उठाते थे। तब तारक ने हँसकर कहा कि इस बालक की आशा पर देवताओं ने अपने बल को नष्ट कर दिया है। वे भी बड़े बुद्धिहीन हैं। मुझको निश्चय है कि मैं सब देवताओं को मार डालूँगा। यहाँ तक कि इन्द्र और विष्णु भी मुझसे जाने न पायेंगे। यह सुन शक्ति हाथ में लिये हुये वह स्कन्द से लड़ने को चला। देवताओं से कहा कि हे देवताओं ! तुमने युद्धस्थान में बालक को अगुआ बनाया है, तुम बड़े निर्लज्ज हो। इसका फल हम अब तुमको देते हैं। जिसकी आशा पर तुम सब रहते हो, वह हमारे भय से भाग जावेगा। यह दोनों भाई विष्णु और इन्द्र बड़े छली हैं। मुख्य करके छोटा भाई तो छल में अद्वितीय है और माया करने में विख्यात है। इससे बलि के साथ क्या काम किया और मधुकैटभ का शीश छल करके कटवा डाला। फिर अमृत के बाँटने के समय कैसा छल किया है। इसने वेद के विरुद्ध स्त्रियों को मार डाला और बालि के वध में धर्म का कुछ विचार न किया। रावण जो ब्राह्मण जाति का था जिसका मारना वेद में मना है, इसने मार डाला और अपनी स्त्री को बिना पाप छोड़ दिया। इसने अपनी माता का शिर काट डाला और अपने कुलगुरु पर कुछ भी दया न की। इसने परस्त्रियों के साथ भोग करके वेद की रीति को छोड़ दिया और अनुचित रीति से विवाह कर कलियुग की चाल चलकर बड़ा ही अधर्म किया। इसी प्रकार सब वेदों की निन्दा करते हुये विष्णु ने कुछ भी ध्यान न किया। आश्चर्य है कि ऐसे मनुष्य के बल और आशा पर देवताओं ने युद्ध का उद्योग किया और उनका बड़ा भाई इन्द्र तो बहुत ही बुरा और अनाचारी है। उसने अपने पिता के लड़के को दिति के गर्भ से गिरा दिया। केवल संसार के आनन्द के लिये ऐसे काम करते उसको धर्म का विचार न हुआ। गौतम की स्त्री से भोग किया। व्रत ब्राह्मण को मार डाला और विश्वरूप के सब पुत्र मार डाले। उसने संसार के आनन्द के निमित्त कैसे-कैसे अधर्म नहीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किये और वेद के धर्म त्याग दिये। इससे इनका तेज हत हो गया। इस समय भी लड़के को अगुआ बनाया है जो अभी मारा जावेगा। यह पाप भी इन्हीं पर पड़ेगा, नहीं तो लड़का भाग जावेगा। तारक यह बात देवताओं से कहकर फिर स्कन्द से बोला कि तुम कुछ अहंकार मत करो। यहाँ तुम्हारी कुछ न चलेगी। जो मनुष्य ब्राह्मण का अपमान करता है, उसके धन, प्राण, घर और बल आदि कुछ नहीं रह सकता। अब वेद का वचन सत्य करके जो चाहूँ कि सबका विनाश कर डालूँ। यह कहकर अपनी सांगी को उठाया। हे नारद ! यह कहते हुये तारक की शक्ति नष्ट हो गई क्योंकि बड़ों की निन्दा और उनके कर्म कहने में तुरन्त ही शक्ति क्षीण पड़ जाती है। पर जो सदाशिवजी की इच्छा होती है वही होता है। शिवजी की माया में फँसकर तारक ने भी यह वचन कहा कि संसार में कौन ऐसा है जिसकी बुद्धि शिवमाया से ठीक रह सकती है। निदान तारक ने अच्छे-अच्छे चुने हुये वीरों को सेनापति करके बाकी सेना को पीछे रख आपही स्कन्द और इन्द्र के सामने गया।

दसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! ऐसी शक्ति दिखाते हुये तारक को इन्द्र ने देखा और अपना वज्र मारकर उसको पृथ्वी पर गिरा दिया। तारक ने तुरन्त धरती से उठकर इन्द्र को सांगी मारकर पृथ्वी पर गिरा दिया। तब देवताओं की सेना में बड़ा हाहाकार मचा क्योंकि उनके राजा की यह दशा हुई। तारक ने इन्द्र को पृथ्वी पर पड़ा हुआ देख अपनी लात से उसके पेट को दबाया और हाथ से वज्र छीनकर उसी से इन्द्र को मारा। यह दशा देख स्कन्द ने बड़ा क्रोध किया और अपना त्रिशूल तारक के हना। तारक त्रिशूल का ताड़न न सहकर धरती से उठ खड़ा हुआ जिससे स्कन्द घायल होकर धरती पर गिरे पड़े। सब देवता आदि हाहाकार करने लगे पर क्षणमात्र के पीछे स्कन्द उठकर पूर्ववत् नाद करने लगे उन्होंने त्रिशूल उठा लिया। तब त्रिशूल बिजली के समान चमक उठा और सर्व दिशाएँ प्रकाश से पूर्ण हो गईं। सूर्य, चन्द्र और अग्नि के समान प्रकाश को देखकर स्कन्द ने त्रिशूल को मनाही की और ऊँचे शब्द

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से पुकारा। तब तारक फिर सांगी लेकर सामने आ खड़ा हुआ। देवताओं ने उत्सव के बाजे बजाये, तारक और स्कन्द लड़ने लगे। उस समय अति घोर युद्ध हुआ। दोनों शिर, गला, कटि, जाँघ, पीठ और हृदय में शस्त्र मारते थे। दोनों ओर की सेना ऐसा युद्ध देखकर अति आश्चर्य में हुई। देवताओं की आशा टूट गई कि तारक को स्कन्द मार सकेंगे। उसी समय आकाशवाणी हुई कि अभी स्कन्द तारक का वध कर डालते हैं, तुम कुछ सन्देह मत करो। फिर स्कन्द ने अपनी सांगी तारक की भुजाओं में मारी पर तारक ने भी उसका विचार न किया और अपनी सांगी से स्कन्द को घायल करके पृथ्वी पर लिटा दिया। स्कन्द ने सचेत होकर फिर तारक के सांगी मारी। इस भाँति दोनों युद्ध करने लगे। देवताओं को अति चिन्ता हुई, सूर्य का प्रकाश हत हुआ, पवन थम गई तथा नदी, पर्वत और वनों से भय देनेवाला शब्द होने लगा। धरती काँपने लगी मानो भूकम्प हुआ है। अग्निदेवता शान्त पड़ गये। ऐसा संसार में कौन था जिसको दुःख न हुआ। हिमगिरि, मेरु, श्वेतकोट, उदयाचल, अस्ताचल, मलयागिरि, कैलाश, गन्धमादन, मैनाक, विन्ध्याचल, महेन्द्र, मन्दर और हिमालय आदि पर्वत चिन्ता से दुःखी थे। ऐसे दुःख की दशा देख स्कन्द बोले हे पर्वतो ! कुछ सन्देह मत करो, तुम्हारे देखते-देखते केवल सांगी से तरकासुर दैत्य का वध कर डालता हूँ। इसी प्रकार सब देवताओं आदि से कह स्कन्द ने शिव-गिरिजा का ध्यान किया और तारक के वध करने को सांगी अपने हाथ से उठाई जिसमें श्रीगौरीशङ्कर ने असंख्य तेज और बल डाल दिया। क्रोधित होकर स्कन्द ने तारक के हृदय में उस सांगी को मारा जिससे तारक निर्जीव होकर धरती पर गिर पड़ा। फिर स्कन्द ने अपना हाथ उस पर नहीं डाला। जो शिव का तेज तारक के शरीर में था, वह स्कन्द के शरीर में प्रवेश कर गया। तारक की सब सेना भागकर पाताल को चली गई। इसी प्रकार दैत्यों का अच्छे प्रकार का वध हुआ जिससे देवताओं को अति प्रसन्नता हुई। सब देवता, मुनि और गण अति प्रसन्न होकर स्कन्द की स्तुति करने लगे। गन्धर्व, किन्नर और अप्सरा आदि गाने-बजाने लगे। नाना प्रकार के बाजे बजे और सबने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत स्तुति करने के उपरान्त विनती की कि हम सबको आपके चरणों की प्रीति दिन-दिन बढ़े, यही वरदान हम आपसे माँगते हैं। ऐसी स्तुति देवता और पहाड़ों से सुनकर स्कन्द बोले कि हमने तुम्हारी स्तुति से प्रसन्न होकर तारक का वध किया। सो आगे के लिये भी तुमसे कहते हैं कि जब कोई तुम पर दुःख पड़ेगा, तब हम तुम्हारे सहायक होंगे। यह बात देवताओं से कहकर पहाड़ों से बोले कि तुम सब प्रतिष्ठा के योग्य हो। तपस्वी और मुनि तुम्हारी सेवा करेंगे। तुम्हारे देखने से मनुष्यों के दुःख दूर होंगे। जो तीर्थ, शिवालय या तपोभूमि तुम पर होगा, वह सर्वानन्द और सुख देगा। जो पर्वत कि हमारे माता के बदले हैं, वह तपस्वियों को उत्तम फल देकर सब पर्वतों का राजा हो। दूसरे पवत भी शिवलिङ्ग के समान पापों को नष्ट किया करें। यह वरदान देकर चारों ओर से धन्य-धन्य और जय-जय का शब्द हुआ। देवताओं ने बड़ी स्तुति करके हर प्रकार से स्कन्द की पूजा की।

ग्यारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब उन देवताओं का वृत्तान्त, जो भाग कर पाताल में छिप गये थे, सुनो। उन दैत्यों में से एक बाण नाम दैत्यों का स्वामी लड़ाई से मुँह मोड़ भाग गया था। वह क्रौञ्चद्वीप में जाकर नाना प्रकार के उपद्रव करने लगा। उसने कई पर्वत फोड़ डाले, कई सघन वन उजाड़ कर दिये और क्रौञ्च के शिर में एक अपना चरण इस वेग से मारा कि क्रौञ्च पर्वत घबड़ा कर स्कन्द के पास आकर कहने लगा कि इस समय आपने तारक के वध से संसार भर के दुःख छुड़ा दिये। मैं ही अकेला सृष्टि भर में दुःखी हूँ। फिर अपना सर्व वृत्तान्त आदि से अन्त तक कह सुनाया। उसने कहा कि जिसने मुझको दुःख दिया है, उसके साथ आठ कोटि दैत्य हैं। मैं मनुष्य का स्वरूप धारणकर आपकी शरण में न आता तो न जाने वह क्या करता। अब आपकी शरण आया हूँ क्योंकि आपको छोड़ किसके पास जाऊँ। स्कन्द ने यह दैत्यराज की कथा और उसका उत्पात सुन उनके मार डालने की चिन्तना की और सांग हाथ में लेकर शिव-गिरिजा का ध्यान कर उस दैत्य की ओर क्रोध से चलाई। उसके चलने से दशों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दिशा में असंख्य प्रकाश फैल गया और क्षण भर में उन दैत्यों को उनके अधिपति समेत जला दिया। फिर वह सांग स्कन्द के पास यह कार्य करके लौट आई। स्कन्द ने पर्वत से कहा कि अब तुम अपने घर को लौट जाओ। हमने उस दैत्य को सेनासहित मार डाला। यह सुनकर क्रौञ्च ने स्कन्द की बड़ी स्तुति की और अपने घर को गया। देवताओं ने हर प्रकार से उत्सव किये। फिर स्कन्द ने उसी स्थान पर तीन शिवलिङ्ग स्थापित किये। उनके नाम यह रक्खे--पहिला प्रतिज्ञेश्वर, जो कोई इनकी पूजा करेगा, वह तुरन्त अपना मनोरथ पावेगा। दूसरे का नाम कपालेश्वर तीसरा कुमारेश्वर और इनके लिये यह वरदान दिया कि इनकी पूजा से दोनों लोक में सुख प्राप्त होगा। इन तीनों के नाम लेने से करोड़ों दुःख मिट जावेंगे। उसी जगह के निकट एक जयस्तम्भ स्थापितकर एक और शिवलिङ्ग स्तम्भेश्वर भी स्थापित किया जिनकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं। इन चारों लिङ्गों में शिवजी और देवताओं का तेज स्थित हुआ। एक और शिवलिङ्ग सब देवताओं तथा मुनीश्वरों ने स्थापितकर उनका नाम रामेश्वर रक्खा जिनसे प्रजा की सर्व कामनाएँ सिद्ध होती हैं। इन लिङ्गों के स्थापित होने के उपरान्त बड़ा उत्सव हुआ। चारों ओर जय-जय और बम्-बम् का शब्द छा गया और देवताओं का सब दुःख मिट गया।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इसी समय में जब कि देवता और दैत्य लड़ाई में लगे और दैत्य स्कन्दजी का तेज न सहकर चारों ओर भागे, उनमें से हम बाण दैत्य का वृत्तान्त तो कह चुके हैं और दूसरा प्रलम्बनाम दैत्य शेष के घर में जाकर दशकोटि सेना सहित बड़ा उपद्रव मचाने लगा। बहुत से मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया और शेष के पुत्रों ने बाहर निकल प्रलम्ब से सामना किया। निदान शेष के पुत्र हार मान गये उनका नाम कुमुद था। उसने स्कन्द की शरण में आकर स्तुति की और प्रलम्ब के उपद्रव की सब कथा कह सुनाई। कहा कि इसको मार डालो तथाच हम और इन्द्र ने भी इस बात को कहा और फिर शेष ने विनती की कि आप जल्दी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इस दैत्य को नष्ट करें। मैं आपकी शरण में आया हूँ। स्कन्द ने यह सुन अपनी शक्ति को उठा लिया और शिवजी व गिरिजा का ध्यान करके दैत्य की ओर फेंक दी, जिसके प्रकाश से संसार भर प्रकाशित हो गया। उसने सातों पाताल वेग से नाँघ कर दश करोड़ दैत्यों को प्रलम्ब समेत मारकर भस्म कर दिया और फिर उसी प्रकार से स्कन्द के हाथ में आ गई। तब स्कन्द ने कुमुद से कहा कि हमारी शक्ति ने प्रलम्ब का नाश कर दिया। अब निर्भय होकर अपने घर को जाओ। शेष आप तो स्कन्द की सेवा में तत्पर रहे और कुमुद लौट गये। हर प्रकार के उत्सव देवताओं ने किये। हम और सब देवताओं ने स्कन्द की स्तुति की और कहा कि अभी तो तुम केवल सात दिन के लड़के हो और इस प्रकार से दैत्यों का नाश करते हो तो जिस स्थान पर स्कन्द ने देवताओं सहित यह विचार किया, वह सत्तीर्थ के नाम से वड़ा तीर्थ प्रसिद्ध हुआ। जिस मार्ग से कि कुमुद-नाग धरती को तोड़ कर पाताल में गया था, वह सिद्धकूल के नाम से विख्यात हुआ। उसकी बड़ी महिमा है। जो वहाँ स्नान करते हैं, उनके सब दुःख मिट जाते हैं और अन्त को कैलाश पर्वत में स्थान मिलता है। इस प्रकार की और बहुत-सी लीलाएँ स्कन्दजी ने की जिससे सब दुःख मिट गये और बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। स्कन्दजी के चरित्र अति पवित्र हैं, उनके सुनने-सुनाने से मोक्ष प्राप्त होता है।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! स्कन्द ने इसी प्रकार के बहुत से चरित्रों से संसार को सुख दिया और देवता स्कन्द से अति प्रसन्न रहकर अति आनन्द से परस्पर मिल रहने लगे। फिर उन्होंने कहा कि आप कैलाश पर्वत पर चलकर रहिये क्योंकि सबने अपना मनोरथ पा लिया है। स्कन्दजी ने इस बात को मान लिया तथा विष्णु और हमको शुभ मुहूर्त देखने की आज्ञा दी। सो हमने मुहूर्त देखकर देवताओं समेत स्कन्द से विनय की कि शुभ मुहूर्त आ गया है तो स्कन्द प्रसन्न होकर अपने माता-पिता का ध्यान कर चले। उस समय चारों ओर से जय शिव-गिरिजा का शब्द सुनाई देता था। स्कन्द उत्तमोत्तम विमान पर आरूढ़ होकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्तुति सुनते हुये चले। पीछे इन्द्र ऐरावत हाथी पर आरूढ़ छत्र लेकर तय्यार हुये। सब दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा समेत आगे-आगे जय शब्द करते हुये और शेष सर्व देवता आदि चारों ओर से स्कन्द के साथ हुये और शिव के पास पहुँच कर सबने दूर से नम्रतापूर्वक खड़े होकर प्रणाम किया। स्कन्द ने शिव के निकट जाकर दण्डवत् की। शिव ने गोद में उठाकर उनको छाती से लगाया तथा मस्तक सूँघा और बार-बार मुख की ओर देख शरीर भर में हाथ फेरा। गिरिजा अपने पुत्र के आने का समाचार सुनकर सखियों समेत अपने मन्दिर से उतर आईं और तुरन्त लड़के को गोद में उठा लिया। फिर शिव के बाईं ओर बैठकर बड़े लाड़ प्यार से स्कन्द को हृदय से लगाया। ऐसी शिव पार्वती की लीला देखकर सब देवता आदि ने अपने-अपने हाथ बाँधकर शिर झुका शिव की बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव! आपने शिशुरूप से प्रकट होकर तारक का वध किया। तारक अपने परिवार समेत मारा गया और बाण तथा प्रलम्ब भी अपनी सर्व सेना सहित मारे गये। हमारे सुख देनेवाले तुम तीनों हो। इसी प्रकार गिरिजा और स्कन्द की भी स्तुति की। फिर प्रणाम कर चुप हो गये। शिव, गिरिजा और स्कन्द यह स्तुति सुन अति प्रसन्न हुये। शिव ने दया दृष्टि से सबको अवलोकन कर कहा कि मैंने केवल तुम्हारे लिये सगुण-अवतार धर विवाह किया। यह लड़का मुझे बहुत प्यारा है जिसने तारक का वध किया। तुम अपने-अपने घरों में जाकर प्रसन्न रहो। इसी प्रकार हम तुम्हारे आनन्द के चाहनेवाले हैं क्योंकि हम भक्त के अधीन रहते हैं। हमारे स्मरण को मत भूलना, हम गिरिजा पुत्र और गणों सहित तुम्हारे सहायक हैं। यह कह सबको बिदा किया और स्कन्द के कुशलपूर्वक पलट आने के कारण ब्राह्मणों को बहुत दान दिया और बड़ा उत्सव किया। भैरव आदि गण बहुत प्रसन्न हुये। इसी प्रकार से योगिनी और गणों ने बड़े-बड़े आनन्द किये। हिमाचल ने स्कन्द को अपनी गोद में बैठाकर बहुत ही दान किया और शिव से बिदा होकर अपने देश को गये। देवता आदि सब अपने-अपने घरों को पहुँच कर आनन्द के बाजे बजाने लगे और पूर्ववत् अपना-अपना राज्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करने लगे। हे नारद! जहाँ तक हमको स्कन्द का वृत्तान्त मालूम हैं, हमने तुमको सब कह सुनाया है। यह चरित्र सब दुःखों के दूर करनेवाला और आनन्द देनेवाला है जिसके सुनने से सब दुःख और आपदा नष्ट होकर मुक्ति मिलती है और यश बढ़ता है। इस चरित्र के सुनने और सुनानेवाले दोनों परलोक में परमगति पाते हैं। इस चरित्र के सुनने से भाग्य बढ़ता है और शिव मिलते हैं। गिरिजा अपने भक्तों की सदा सहायक हैं। हे नारद! और क्या सुना चाहते हो? नारद बोले कि तारक के बध करने के उपरान्त स्कन्द ने क्या चरित्र किये, वह वर्णन कीजिये।

चौदहवाँ अध्याय।

नारद बोले कि हे ब्रह्माजी! स्कन्द का चरित्र सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। अब शिव-गिरिजा के और चरित्र वर्णन करो। मैं आपसे एक प्रश्न करता हूँ, आशा है कि आप प्रसन्नता से उत्तर देंगे। अर्थात् आप गणपति का चरित्र सुनाइये कि वह किसके पुत्र हैं। क्योंकि पञ्चदेवता के पूजने की आज्ञा है, उसमें एक गणपति भी हैं। वे किस समय से पूजे गये, फिर तीनों लोकों को क्योंकर जीता और क्योंकर प्रसिद्ध हुये। हाँ, हमने कई बार सुना है कि गणपतिजी गिरिजा के पुत्र हैं। पर मुख्य वृत्तान्त नहीं जानता। शिव के विवाह में आपने कहा था कि गणपति की पूजा की गई और शिव ने उन्हें नमस्कार किया, मुझे इसमें बड़ा संशय है। ब्रह्माजी बोले कि शिवकी माया को कोटिशः धन्य है। तुमने क्या अच्छा प्रश्न किया जो सृष्टि का उपकारी है। हम आपसे गणपति की उत्पत्ति और उनका पद आदि से अन्त तक सुनाते हैं। गणपति प्राचीन देवता विष्णु आदि के समान हैं। शिव परब्रह्म और स्वामी हैं, वह अलग पाँचों देवताओं में बँटे हुये हैं। उन्होंने बड़ी लीला और चरित्र किये जिनको हम थोड़ा-सा कहते हैं। शिव-गिरिजा के साथ विवाह करके अन्तःपुर में विहार करने लगे और शिव-गिरिजा में ऐसा प्रेम बढ़ा कि रात-दिन बीतते कुछ भी जान न पड़े। यह दशा देख सब देवता हमारे पास आये। हम भी चिन्तित होकर उन सबको साथ लिये हुये विष्णु के पास पहुँचे और स्तुति करने के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया कि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव दिव्य एक सहस्र वर्ष से विहार कर रहे हैं। नहीं जानते कि ऐसे विहार से कैसा पुत्र उपजेगा, आप कहें। यह सुनकर विष्णु बोले कि सब अच्छा और शुभ होगा, कुछ भय मत करो। हे ब्रह्मन्! हमको यह युक्ति करना चाहिये कि किसी उपाय से शिवजी का वीर्य पृथ्वी पर गिरा लो कि गिरिजा से पुत्र उपजने न पावे नहीं तो ब्रह्माण्ड भर को जला देवेगा। इस वचन के सुनने के उपरान्त हम तो अपने घर चले गये और देवता कैलाश पर्वत को गये। देवताओं ने शिवजी के द्वार पर जाकर बड़ा नाद किया तथाच शिवजी बाहर निकल आये। देवताओं ने प्रणाम करके स्तुति किया और कहा कि संसार को पवित्र करो। शिवजी देवताओं का मुख्य वृत्तान्त समझ कहने लगे कि हमने तुम्हारे मनोरथ को समझा है। तुमने वृथा ही हमारे आनन्द में विघ्न डाला। यह बहुत बुरा काम हुआ है। हमारा वीर्य शिर से नीचे को आता है, उसको तुममें से कौन लेता है? यह कह अपना वीर्य पृथ्वी पर फेंक दिया जिसके तेज से उजियाला हो गया। सो अग्नि कपोत का रूप धारणकर वीर्य को चख गये और जब उड़कर आकाश को चले तब अपने में उस वीर्य के धारण की शक्ति न पाकर उसे पृथ्वी पर फेंक दिया। पहाड़ भी काँप उठा और इस तरह स्कन्द उपजे जिनका वृत्तान्त हम पहले वर्णन कर चुके हैं। अब हम गणपति का वृत्तान्त वर्णन करते हैं। अर्थात् उस समय शिवजी ने सब देवताओं से कहा कि तुम वेग ही हमारे पास से भाग जाओ। ऐसा न हो कि गिरिजा इस बात को जानकर तुम पर क्रोध करें। सो देवता भाग चले और शिवजी उनके भागने का चरित्र देखते रहे। गिरिजा ने आकर महाक्रोध किया जिससे कि जाना जाता था कि प्रलय होवेगी और देवताओं को शाप दिया। यद्यपि गिरिजा ने ऐसा शाप देवताओं को दे दिया पर तो भी क्रोध उनका न गया। नेत्र लाल और उनमें आँसू भरे हुये तथा शरीर बहुत नरम और दुःख की अधिकता से भूमि खोदती थीं। शिवजी ने गिरिजा को इतना दुःखी पाकर गोद में उठा लिया और बड़ी विनय की बातें कीं। कहा कि इतनी तुम मुझसे क्यों अप्रसन्न हुई हो मेरा कोई अपराध नहीं। यदि अज्ञानता में कोई अपराध हो गया हो तो क्षमा करो। जो कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुम्हारा नाम मुख से लेता है, उसके सब कार्य हम पूर्ण कर देते हैं। तुम्हारे बिना मानो हम अङ्गहीन हैं। तुम तो सबकी माता हो। अब तुम्हारे मधुर वचन सुने विना मुझे आनन्द नहीं। तीनों लोक के कार्य तो तुम्हारे अधीन हैं। तुम्हारे बिना सब निर्बल हैं; अब प्रसन्न होकर दुःख को दूर कीजिये।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह शिव का वचन सुन गिरिजा बोलीं कि क्या तुम नहीं जानते जो दुःख मुझको है। संसार में सन्तान बिन किसी स्त्री को सुख नहीं। न ही सन्तानहीन होने के बराबर कोई दुःख हैं। आप जैसा पति पाकर भी मैं पुत्रहीन रही। इसी से मुझको किसी समय आनन्द नहीं होता। पहिला हमारा जन्म सन्तान रहित होकर बीत गया, अब यह जन्म भी वैसा ही बीता चाहता है। हमारे साथ देवताओं ने यह कर्म करके इतना दुःख दिया है कि बाँझ होने को पहुँच गई। जो स्त्री संसार में सन्तानहीन है, उसको ब्रह्मा ने वृथा ही उपजाया। संसार के हजारों ऐश्वर्यों पर धिक्कार है जो पुत्र न हो। लोक में उसी समय शुभकर्मों का फल प्राप्त हुआ मालूम होता है जब शुभगणयुक्त पुत्र उत्पन्न होता है। यह कह गिरिजा बहुत रोईं। शिव ने गिरिजा को उठाकर हृदय से लगाया। कहा कि हम ऐसी युक्ति बताते हैं जिससे तीनों लोक में सब कार्य पूर्ण होंगे। हम, विष्णु और ब्रह्मा सब उसके वश में हैं। हम उसको गुरु अर्थात् गणपति कहते हैं। वह मुख्य हमारा रूप है जिनकी सेवा से दुःख दूर होकर सुख मिलता है। तुम एक वर्ष पर्यन्त उनका व्रत करो तो तुम्हारा मनोरथ पूरा हो जावेगा। उसका नाम आपदा का दूर करनेवाला और आनन्द देनेवाला है। अँधेरे पक्ष की चौथ को यह व्रत किया जाता है। गणेश चौथ व्रत के रखने की युक्ति यह है कि व्रत रख पवित्रतापूर्वक चन्द्रमा के उदय होते ही पूजा करे। यह व्रत सब व्रतों का राजा और हर कामना का देनेवाला है। जिस तरह कि सब मन्त्रों में प्रणव, हमारे भक्तों में विष्णु, नदियों में गङ्गा, देवियों में तुम, वर्णों में ब्राह्मण, इन्द्रियों में मन, बड़ों में माता, ऋतुओं में वसन्त, पुरियों में काशी, सहायकों में भाई और पुत्र, नक्षत्रों में चन्द्रमा, दैत्यों में प्रह्लाद, कवियों में शुक्र, अक्षरों में मकार,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शस्त्रों में त्रिशूल, मन्त्रगणों में पञ्चाक्षरी, बीजमन्त्रों में प्रणव, पुराणों में भारत और आश्रमों में संन्यास है वैसे ही सब सेवाओं में शिव की भक्ति बड़ी है। इसी प्रकार यह गणेश चौथ का व्रत सब व्रतों में बहुत बड़ा है। कलियुग में राजा शेषसेन ने इस व्रत को करके बड़ा आनन्द पाया। शतरूपा जो मनु की पत्नी थी, उसने यही व्रत करके दो पुत्र उपजाये। कर्दम की स्त्री ने भी यही व्रत करके कपिलनाम विष्णु अवतार को पाया। वशिष्ठजी की स्त्री ने इसी व्रत से शक्ति अपनी पुत्री को उपजाया। अदिति ने इसी व्रत के प्रताप से वामन अवतार को अपना पुत्र किया। शची ने इसी व्रत से जयन्त को पाया और अनुसूया ने चन्द्रमा को प्राप्त किया। इसी प्रकार और बहुत मनुष्यों ने इसी व्रत से लड़के प्राप्त किये हैं। हम कहाँ तक वर्णन करें, हे गिरिजे! तुम भी इसी व्रत के प्रभाव से अवश्य पुत्र पावोगी। गिरिजा ने अति प्रसन्न होकर कहा कि बहुत अच्छा, मैं अवश्य ही यह व्रत धारण करूँगी। आप इस व्रत का नियम परिपूर्ण कहें। शिवजी बोले कि हे देवि! कृष्णपक्ष की चतुर्थी को शुद्धमन से बहुत सवेरे शयन से उठकर स्नान करे और जो कुछ करना उचित है, वह सब करे। फिर व्रत की दृढ़ इच्छा कर यह संकल्प करे कि हे गणेश! हम तुम्हारा व्रत आज करते हैं, हमारा मनोरथ पूरा करना। हम तुम्हारे चरणों की शरण में आये हैं। हे गणपति! व्रत हमारा पूर्ण हो जावे। हमारे दुःख दूर होवें। तुम सब कुछ जानते हो। सब फलों के दाता हो। तुमको वेदों ने विघ्नहर्ता कहा है। इस प्रकार संकल्प करके दिन गणपति की वार्ता में व्यतीत करे। जब दिनान्त हो, स्नान कर अपने स्थान पर बैठे और सब पूजा की सामग्री इकट्ठी करके गणपति की पूजा के निमित्त अच्छा स्थान तय्यार करें। चारों ओर केले के खम्भ लगावे और बड़ी प्रसन्नता से नाना प्रकार के बाजे बजवावे। जब कि आकाश में चन्द्रमा उदय हो तुरन्त अर्घ्य दे और गणेश की मूर्ति सोने, चाँदी, ताँबे या गोबर की, जैसी सामर्थ्य हो, बनवावे। उसको रखकर कलश स्थापित करे जिसके ऊपर दीपक रक्खा हो फिर ध्यान लगाकर षोडशोपचार से पूजन करे और लाल फूल, कपड़े, चन्दन, कुशा, पुवे और दूध आदि आगे रखकर आचमन करा देवे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और अच्छी स्तुति करके प्रेम में मग्न हो प्रणाम कर बड़ा ही प्रेम उपजावे। इसी प्रकार अपनी भक्ति से गणपति को प्रसन्न कर लेवे। फिर प्रणाम करके विसर्ज्जन करे और निश्चय करे कि हमारा मनोरथ अवश्य पूर्ण होगा। वही पुवा पूजा करानेवाले ब्राह्मण को खिलाकर दक्षिणा में चाँदी दे, नहीं तो जैसी अपनी सामर्थ्य रखता हो ब्राह्मणों को दक्षिणा दे और आप भी मीठा भोजन करे। जो इस प्रकार से गणेश का व्रत करते हैं, उनका मनोरथ पूरा हो जाता है इसलिए तुम भी इसी व्रत को करो।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह वचन सुनकर गिरिजा ने पूछा कि हे शिवजी! जो आपने गणपति के व्रत में चन्द्रमा को अर्घ्य देना कहा, उसका मुख्य कारण नहीं जाना जाता। शिवजी बोले कि गणेश ने पहिले चन्द्रमा को शाप देकर फिर आप कहा कि तुमको प्रथम अर्घ्य दिया जावेगा। गिरिजा बोलीं कि इस कथा को विस्तार से कहिये। शिवजी बोले कि हमारी आज्ञा को जिससे ब्रह्मा सृष्टि रचते हैं, मानकर स्वर्ग जाने की इच्छा की और गणपति का एकाग्रचित्त हो पूजन किया। गणपति ने प्रसन्न होकर कहा कि वरदान माँगो। ब्रह्माजी बोले कि हम सृष्टि उपजाया चाहते हैं और उसकी वृद्धि निर्विघ्न चाहते हैं। गणपति ने कहा कि यही होगा। फिर गणपति धीरे-धीरे आकाश की ओर चले। जब गणपति चन्द्रमा के मन्दिर में पहुँचे तो पाँव के फिसलने से गिर पड़े। उनका उदर बहुत बड़ा और शरीर स्थूल था। यह देखकर चन्द्रमा हँस पड़े। गणपतिजी चन्द्रमा को हँसते हुये देख क्रोध में भर गये। उनके नेत्र लाल पड़ गये। उन्होंने चन्द्रमा को यह शाप दिया कि हे कलङ्की चन्द्रमा! तू अपनी सुन्दरता पर गर्व करता है, तू महा मतिहीन है। यही मनमें विचारता है कि मैं अति सुन्दर देखने के योग्य हूँ। इसी अहंकार से तू मुझे हँसा, इसका फल तुरन्त मिलेगा जिससे संसार में बड़े दुर्भागी होकर आज से कोई तुमको देखेगा, उसको अवश्य करके कुछ कलङ्क लग जावेगा। यह शाप देकर गणपति गुप्त हो गये और चन्द्रमा क्षीणाङ्ग होकर हततेज हो गया। सब देवता और इन्द्र ने दुःखी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होकर ब्रह्माजी के पास जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया। ब्रह्माजी बोले कि इसमें कुछ बुराई नहीं। चन्द्रमा ने अपना किया हुआ पाया है। गणपति का शाप झूठा नहीं हो सकता। इसलिये तुम सब गणपति की शरण में जाओ। निश्चय है कि वह अपने शाप को शान्त करेंगे। तब देवताओं ने विनय की कि आप वह उपाय बतावें जिससे गणपति प्रसन्न होकर शाप को शान्त करें। ब्रह्माजी ने कहा कि गणपति का व्रत कृष्णपक्ष की चतुर्थी को है। उसको जब करे तब गणपति प्रसन्न होते हैं। ब्रह्माजी का यह वचन सुनकर बृहस्पति को चन्द्रमा के पास भेज दिया। बृहस्पति ने जिस रीति से बताया, उस तरह से चन्द्रमा ने गणपति के व्रत का आरम्भ किया। तब गणपति खेलते हुये शिशुरूप से चन्द्रमा को दिखाई दिये। चन्द्रमा ने प्रणाम करके बहुत बड़ी स्तुति की। गणपति ने कहा कि हम प्रसन्न हैं। जो वरदान तुमको चाहिये, वह देवैं। चन्द्रमा ने विनय की कि आप के शाप से छूटकर सबके दर्शन के योग्य हो जाऊँ। गणपति बोले कि उपाय से तुम्हारा शापोद्धार होगा, जैसा हम तुमको बताते हैं कि हर मास के शुक्लपक्ष की चौथ को हमारा शाप तुम पर बना रहेगा और तिथियों में कुछ किसी को तुम्हारे देखने से कलङ्क न लगेगा। जो मनुष्य पहले दूज और तीज में तुमको देखेगा, उस पर चतुर्थी के देखने का फल कुछ न होगा। पर जिससे कि हमारा पहिला वचन झूठ न हो, इसलिये हम तुमसे कहते हैं कि जो मनुष्य भादों की शुक्लपक्ष की चौथ को तुम्हारे दर्शन करेगा, उसको बराबर वर्ष भर कलङ्क लगा करेंगे और वह वर्ष भर दुःखी रहेगा। चन्द्रमा बोले कि इसके दूर होने की युक्ति कहिये। गणपति बोले कि प्रतिमास की कृष्णपक्ष की चौथ को कोई मनुष्य चन्द्रमा के उदय होने के समय मेरा पूजन करे और रोहिणी समेत तुम्हारी पूजा करेगा तथा तुमको अर्घ्य देगा और हमारी कथा को सुनकर ब्रह्मभोज करेगा और आप सिवाय मीठे भोजन के नोन आदि न खावेगा, तब उस चौथ का फल जो वर्णन किया गया, उसपर न हो सकेगा। जब भादोंमास का आरम्भ हो तो उजियाले पक्ष की चौथ में हमारी पूजा स्त्री सहित करे। इस व्रत से सब प्रकार के क्लेश और कष्ट दूर हो जाते हैं और उस मनुष्य को चौथ का कुछ दुःख

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नहीं लग सकता। यह कह गणपति अन्तर्धान हो गये और चन्द्रमा फिर तेज धारकर प्रसन्न हुआ। इस कथा के सुनने से पाप नष्ट हो जाते हैं। हे गिरिजे! जो तुमने हमसे पूछा था, वह हमने तुमको सुनाया। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है कि इस व्रत के करने से पुत्र न उपजता हो वरन् जो मनोरथ हो वही प्राप्त होता है। शिवजी तो यह कहकर चुप हो गये और गिरिजा के मन का दुःख नष्ट हो गया।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! यह सुन गिरिजा ने ब्राह्मणों को बुला कर शोचपूर्वक व्रत का आरम्भ किया। नाना प्रकार की वस्तु चढ़ाकर पुवे भी गणपति को भेंट किये और उत्तम रीति से ब्रह्मभोज कर आप भी भोजन किया। इसी प्रकार प्रतिमास व्रत कर अच्छी तरह दान दक्षिणा देती रहीं। जब एक वर्ष पूरा हो गया तो दक्षिणा आदि देकर बड़ा उत्सव किया। बड़ा गाना बजाना हुआ। गिरिजा ने अपने पति अर्थात् शिवजी की भी पूजा की। व्रत के पूर्ण होने के अनन्तर गिरिजा अति प्रसन्न हुई और शिव की ओर बार-बार देखा। शिवने अपनी माया जानकर अपने हृदय से लगा लिया और गिरिजा का मनोरथ पाकर एक चन्दन के वन में जो पर्वत पर था और जहाँ सब सुख के पदार्थ थे, जाकर गिरिजा के साथ मैथुन किया। सो गणपति उस स्थान पर आये। उस स्वरूप से कि बहुत भूखे, प्यासे, नंगे, दरिद्री, सफेद केश किये, भाल पर श्वेत तिलक लगाये, महा दीन, कौवे का शब्द बोलते, दाँत कुचैल, डण्डा लिये, कपड़े पहिने हुये, बहुत ही दुर्बल और दुखियारों के समान शिव के द्वार पर आकर कहने लगे कि हे शिव! क्या करते हो? हम तुम्हारी शरण आये हैं। हम सात दिन के भूखे हैं, भोजन चाहते हैं। हमको भोजन करा कर जल पिलाओ। ऐसा शब्द सुनकर शिव तुरन्त उठ खड़े हुये और शिव का वीर्य उस स्थान में पात हो गया। गिरिजा भी उठकर अपने वस्त्र पहिन तुरन्त शिव के साथ द्वार पर आईं। उस दुर्बल ब्राह्मण ने उन्हें प्रणाम किया और बड़ी स्तुति की। शिव बोले कि हे ब्राह्मण! तुम कहाँ से आये हो और हमारे मन्दिर में क्यों पधारे? तुम्हारा क्या नाम है? हमारे बड़े

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भाग्य जो आप आये। तुम हमारे यहाँ अतिथि के समान आये हो और प्रकट है कि अतिथि की सेवा के बराबर कोई धर्म नहीं। गिरिजा ने भी कहा कि हे ब्राह्मण! ऐसी धूप में कहाँ से आये हो? जो गृहस्थ अतिथि के चरणों को जल से धोकर पी जावे तो सर्वतीर्थों का फल उसे प्राप्त होता है। कदाचित् वह अतिथि निराश हो लौट जावे तो उसके सब शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं। ब्राह्मण बोले कि हे गिरिजे! तुम संसार में धन्य हो। मैं बहुत ही भूखा प्यासा हूँ, कृपा करके मुझको भोजन दो। गिरिजा ने उत्तमोत्तम भोजन ब्राह्मण को कराया। ब्राह्मण ने तृप्त होकर प्रसन्नतापूर्वक कहा कि हे गिरिजे! तुम्हारी कामना पूरी हो। तुमको संसारी रीति के विरुद्ध ऐसा पुत्र मिले जो गर्भ से उपजा न हो। यह कह वह ब्राह्मण गुप्त हो गया और शिव-गिरिजा की शय्या में जहाँ वीर्य पड़ा हुआ था, मुख्य रूप से प्रकट हुआ। वह बालकों के समान करोड़ों सूर्यों की ज्योति धारण किये और कोटि कामदेव के समान शरीर सुन्दर धारण किये; अच्छे चम्पा के समान हाथ पाँव, कमलवत् कोमल अङ्ग से इधर-उधर शय्या स्थान में फिर रहे थे। जब शिव और गिरिजा ने देखा कि इकबारगी वह ब्राह्मण अन्तर्धान हो गया तो चारों ओर ढूँढ़ने लगे और मन में उन्होंने बहुत दुःख और कष्ट माना। इतने में आकाशवाणी हुई कि तुम प्रसन्न रहो। हे गिरिजे! तुम संसार की माता हो। वह ब्राह्मण आप गणपति थे, तुम्हारे व्रत से प्रसन्न हुये और शिशु के समान होकर तुम्हारे बिछौने पर पड़े हैं, जाकर देखो। जिसको योगी ध्यान करते हैं, वही तुम्हारा पुत्र हुआ है। तुम अतिथि के चले जाने का पश्चात्ताप न करके घर जाकर आनन्द करो। गिरिजा प्रसन्न होकर जब मन्दिर में गईं तो एक अति सुन्दर बालक देखा जो हँस-हँसकर शय्या पर पड़ा खेल रहा है और घर की ऊँचाई देखकर प्रसन्न होता और दूध के लिये रोता है। गिरिजा ने तुरन्त जाकर यह सब वृत्तान्त शिव को कह सुनाया और कहा कि जल्दी आवो, व्रत का फल मिल गया। शिव ने आकर बालक को देखा।

अठारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजा ने तुरन्त बालक को उठा लिया

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और चूमचाटकर अपने स्तनों से दूध पिलाया। शिव को जो आनन्द प्राप्त हुआ, उसका वर्णन हमसे नहीं हो सकता। केवल इतना वर्णन करता हूँ कि जिस तरह दरिद्री धन पाकर प्रसन्न होता है, उससे लाख गुणा अधिक गिरिजा को आनन्द हुआ। वरन् उस स्त्री के समान जो अपने पति के वियोग में बहुत समय तक दुःखी रहे और फिर अपने भर्ता को पाकर प्रसन्न हो जावे, उससे भी अधिक गिरिजा को आनन्द मिला। अथवा किसी स्त्री ने जिसने अकेला लड़का हो और अपने ऐसे दूर हुये बालक को पाकर प्रसन्नता उठाये, उससे करोड़ों गुणा अधिक गिरिजा को आनन्द मिला। या उस खेती करनेवाले के समान जो काल या वर्षा न होने के कारण चिन्तित हो और जल की वर्षा देखे, उससे भी करोड़ों गुणा अधिक गिरिजा को हर्ष हुआ। यह बहुत दिनों के अन्धे ने आँखें पाई हों या किसी ने डूबने के समय नाव पाई हो या किसी ने अग्नि लगने के समय भयभीत होकर फिर अपने बचाव का स्थान पाया हो। या बहुत दिनों के भूखे ने छत्तीस व्यञ्जन पाये या प्यासे ने ठण्डा पानी पाया या किसी कृपण मनुष्य ने व्यापार में बड़ा धन पाया या किसी योगी ने बहुत परिश्रम करने के उपरान्त अपने इष्टदेव को देखा हो। या किसी भक्त ने बहुत समय के अनन्तर भजन कर भक्ति पाई हो। इन सबसे करोड़ों गुणा अधिक गिरिजा को आनन्द प्राप्त हुआ। जब गणपति दूध पी चुके तो शिव ने फिर अपनी गोद में उठाकर शिर और हाथ चूमे तथा नाना प्रकार के आशीर्वाद दिये। सब ब्राह्मण आदिकों को बुलाकर रत्न और मोती पारितोषिक दिये तथा बहुत-सी सवत्सा गौवें दी और अन्नादि बहुत ही दान किया। विष्णु, हम, देवता और मुनि सब शिव के ऐसे पुत्र को देखने गये। हिमाचल भी अति प्रसन्नतापूर्वक रत्न साथ लिये हुये वहाँ पहुँचे। उन्होंने सब ब्राह्मण और मङ्गनों को दान-मान से परिपूर्ण कर दिया। एक लाख बहुमूल्य रत्न, पाँच लाख भार सोना, तीन लाख घोड़े, एक हजार हाथी, जिन पर सोने की अम्बारियाँ थीं, दशलाख गौ, असंख्य भूषण और वस्त्र ब्राह्मणों को दान दिये। इसी प्रकार हम और विष्णु ने भी ब्राह्मणों को बड़ा दान दिया। देवता, शेषनाग और गन्धर्वादिक ने एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हजार अच्छे बरतन, एक सहस्र मणि, एक सहस्र माणिक्य तथा रत्न, असंख्य चन्द्रकान्तमणि, एक सौ वैडूर्यमणि और इन्दनीलमणि, पाँच लाख नागरत्न और असंख्य अग्नि से शुद्ध किये वस्त्र इसी प्रकार बहुत कुछ दान किया। लक्ष्मी ने कौस्तुभमणि और सरस्वती ने हार ब्राह्मणों को दान दिया। वरुण और कुबेर ने भी हीरे, पन्ने और कपड़े बहुत ही मंगनों को दे डाले। यहाँ तक कि कोई मंगन भिक्षुक और बन्दीजन न रहा। विष्णु और हम सबने आकर लड़के को देख बहुत आशीर्वाद दिये। विष्णु ने कहा कि हे बालक! तुमने शिव को बहुत प्रसन्न किया, तुम्हारा बल पवन के समान होगा और सब सिद्ध तुम्हारे आश्रम में रहेंगे मैंने यह आशिष दी तुमको सब पूजेंगे। तुम्हारा तेज और कीर्ति किसी समय में कम न हो और तुम्हारी बुद्धि तीव्र हो। तुम बड़े विद्वान् होगे। तुम हमारे समान सबका उपकार करोगे। तुम्हारे स्मरण करने से तीनों भुवन के विघ्न दूर हो जावेंगे। लक्ष्मी ने कहा कि जहाँ तुम होगे, हम अवश्य होंगी। वहाँ, ऋद्धि-सिद्धि प्रीति पूर्वक स्थित रहेंगी। सरस्वती बोली कि तुमको कविता में बड़ी शक्ति होगी। तुम्हारे स्मरण से कविता-शक्ति शीघ्र प्राप्त होगी। तुम्हारी काव्य हमारे समान होगी, तुम सदा रहोगे। सावित्री ने कहा कि हम वेदों की माता हैं हमारी कृपा से तुम वेदों के ग्याता होगे। हिमाचल ने कहा कि तुमको शिव के चरणों में बड़ी भक्ति प्राप्त हो। तुम में विष्णु के समान बल हो। मैनाक बोले तुम कामदेव के समान सुन्दर और समुद्र के बराबर गम्भीर होकर विष्णु और शिव के समान धर्मवान् होगे। वसुन्धरा ने कहा कि तुम्हारे अधीन पृथ्वी भर के सब रत्न और मणि रहेंगे। तुम्हारी कृपा से सर्व प्रकार का विघ्न विनाश को प्राप्त होकर तुम हर प्रकार का आनन्द देनेवाले होगे। तुम में हमारे समान दया धर्म शील होगा। पार्वती ने कहा कि तुम सिद्ध के देनेवाले और सिद्धियोगी के समान होकर मृत्यु के जीतनेवाले सबसे अलग अपने पिता के समान होगे। शिव ने कहा कि तुम सर्वानन्द देनेवाले, सबके सेवने और पूजने योग्य होकर मुझे बहुत प्यारे होगे। इस तरह से सबने मिलकर गणपति को आशीषें दीं। यह गणपति

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की उत्पत्ति जो मनुष्य सुने-सुनावेगा वह अपने सब मनोरथ पावेगा।

उन्नीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! फिर शिव ने बड़ा भारी उत्सव रचा। आप उत्तमोत्तम स्थान पर जो रत्नों आदि से जटित था बैठे। उनकी दाहिनी ओर विष्णु और बाईं ओर हम बैठे। विष्णु के पार्षद, चन्द्रमा, दिक्पति और धर्मराज आदि अपने स्थान पर बैठ गये। नाच-गाने की समाज हुई। तब वेद, पुराण, आगम, निगम ने शिव की स्तुति की। बाजे बजने लगे। इसी समय में सूर्य के पुत्र शनैश्चर, गणपति को देखने आये। शिव, विष्णु, ब्रह्मा धर्मराज चन्द्रमा की स्तुति कर आज्ञा ले मन्दिर के भीतर गये और द्वार पर पहुँच जहाँ द्वारपालों ने जाने से रोक लिया। शनैश्चर ने कहा कि हम लड़के को देखने के लिये जाते हैं, हमको मत रोको। द्वारपालों ने कहा कि गिरिजा की आज्ञा बिना हम नहीं जाने देते। हमको शिव की शपथ है, तुम यहीं खड़े रहो। हम गिरिजा से आज्ञा लिये आते हैं। यह कह द्वारपाल भीतर गया और गिरिजा से शनैश्चर के आने का हाल कह सुनाया। गिरिजा की आज्ञा से शनैश्चर भीतर गये। देखा कि गिरिजा स्वर्ण की चौकी पर बैठी हुई अति प्रसन्न हैं और पाँच बाँदियाँ उनकी सेवा कर रही हैं। शनैश्चर ने स्तुति की, गिरिजा ने आशिष देकर कहा कि क्या कारण है कि तुम आधा शिर झुकाकर देखते हो? तुम क्यों अच्छी तरह लड़के को नहीं देखते? क्या तुमको हमारा यह आनन्द भला मालूम नहीं हुआ? शनैश्चर बोले कि तुमसे कुछ छिपा नहीं है। मैं तुम्हारी आज्ञा से कहता हूँ कि भाग्य बलवान् है। सर्व मनुष्य संसार के अधीन हैं और शुभाशुभ कर्म दोनों लोक में दूर नहीं किये जा सकते। स्वर्ग, नरक, जन्म, मरण, आकाश, पाताल, देवता, मनुष्य, आवागमन, धन की पूर्णता, दरिद्रता, कुल, अकुल, पुत्रहीन और सपुत्र आदि सब भाग्य के व्यवहार हैं। इसी प्रकार हम भी अपने भाग्यों से आधे देखनेवाले हो गये हैं। जिस कारण कि हम ऊपर को दृष्टि नहीं कर सकते, उनकी कथा वर्णन करता हूँ। यद्यपि यह कथा इस योग्य नहीं कि ढिठाई से विनय की जावे, पर जो कि तुम मेरी माता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और हम तुम्हारे पुत्र के समान हैं तो इस समय में लज्जा क्या है। अर्थात् हम बाल्यावस्था से शिव के भक्त होकर और उन्हीं के ध्यान और तप में प्रवृत्त रहकर उन्हीं का नाम जपते थे। जब युवा हुये तो हमारे पिता ने हमारा विवाह कर दिया और चित्ररथ की कन्या जो हमको ब्याही गई, उसने मेरी बड़ी सेवा की। संयोग से एक दिन ऋतु के दिनों से निश्चिंत होकर स्नान और शृंगार कर ऐसी सुन्दर बनी कि जो उसको मुनिलोग भी देख लें तो मोहित हो जावें। वह काम की भरी तिरछी चितवन किये हुये हँसती हमारे पास आई और कहा कि मुझको देखो और हमारे साथ भोगकर हमारी इच्छा पूरी करो। मैंने कुछ भी उसकी ओर ध्यान न किया उसी तरह शिव के ध्यान में लगा रहा। उस समय मैं बहुत ही बुद्धिहीन था। उसके महीन शब्द को न सुना। जब उसने अपने मनोरथ का पूर्ण होना कठिन जाना तो कोपित होकर मेरी ओर क्रूरदृष्टि से देख यह शाप दिया कि तुमने बुद्धिमान् होने पर यह कैसा भारी पाप किया कि अपना धर्म न जाना और हमारा समय जाता रहा। जो अपराध तुमसे हुआ है, उसका तुमने विचार न किया। इसी से तुमको शाप देती हूँ कि तुम शुभ न होगे और नरक में पड़ोगे जिसको तुम आँखों से भलीभाँति देख लोगे, वह जड़ पेड़ से जल जावे। यह कहकर वह बराबर मेरे पास खड़ी रही। तब मैंने ध्यान करना छोड़ उत्तर दिया और प्रसन्न होकर कहा कि मैं ऐसे शाप को नहीं सह सकता। यह वचन सुन हमारी स्त्री खेद से नम्रता कर अति लज्जित हुई और मेरा मन कुछ भी खेद को प्राप्त न हुआ। मैंने वह शाप धारण कर लिया। हे गिरिजे! उस रोज से मैं किसी वस्तु को आँख भरके नहीं देखता क्योंकि मुझको जीव के निर्जीव होने का भय हर समय बना रहता है। यह वचन सुन गिरिजा अपनी सखियों समेत बहुत ही हँसी और कहा कि हे शनैश्चर! तुम हमारे पुत्र को देखो। शनैश्चर ने विचार किया कि गिरिजा के पुत्र को देखूँ या न देखूँ क्यों कि जिसको मैं देखता हूँ, उसको दुःख अवश्य होता है। यह विचार वृष को साक्षी कर चाहा कि लड़के को देखूँ और बहुत धीरे चुप रहकर एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दाहिनी नेत्र के कोने से बालक की ओर देखा कि तुरन्त गिरिजा नन्दन का शिर उड़ गया। शनैश्चर तुरन्त नेत्र हटाकर चिन्तित हुये। पार्वती यह दशा देख रोने-पीटने लगी और शनैश्चर को बुरा-भला कह लड़के का सब शरीर हृदय से लगाकर महादुःख किया। यहाँ तक कि पृथ्वी में गिरकर मूर्च्छित हुई जिस तरह कि वायु के कारण केले के वृक्ष जड़ से उखड़ पड़ते हैं। यह दशा देखकर सब स्त्रियाँ रोने लगीं। ऐसे रोने पीटने का शब्द मन्दिर के भीतर सुनकर विष्णु आदि आश्चर्य कर अन्दर गये और सब कुछ देखा। शिव भी संसारी मनुष्यों के समान रोने लगे और देवता आदि सब के सब रोये। तब विष्णु और हम देवताओं समेत आकर उपाय से गिरिजा को चेत में लाये।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजा चैतन्य होकर फिर खेद और दुःख से मूर्च्छित हो गई और फिर हम सबने किसी उपाय से जगाया। तब विष्णु और हम सबने गिरिजा को हर भाँति से समझाया कि संसार का सम्बन्ध क्या है ये सब सम्बन्ध आदि केवल मोह के कारण हैं। गिरिजा ने उत्तर दिया कि हमारा जीना अब कठिन है। देवताओं की युक्ति को मैंने कुछ भी न जाना। मेरा बालक निर्जीव हो गया। हम अभी तीनों लोक को जला देंगी क्योंकि मेरे दुःखी रहने में और सब सुखी नहीं रह सकते। कदाचित् हमारा पुत्र शीश समेत जो न उठेगा तो संसार भर को आनन्द न मिलेगा। यह कहकर वह मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ीं और फिर सचेत न हुईं। उस समय सब चित्रवत् चुप हो गये और शिव के पास आकर बहुत ही लज्जा से कहने लगे कि हे शिव! यह क्या चरित्र हुआ जिससे सबको दुःख मिलता है। हम सबको इस बात का निश्चय है कि आपकी माया सब पर प्रबल है। अब वह उपाय बतलाइये जिससे बालक फिर जी उठे और तीनों लोक को आनन्द मिले। शिवजी बोले कि जो बात होने-वाली है वह रुक नहीं सकती चाहे कोई कोटि उपाय करे। जो ईश्वर ने भाल पर अक्षर लिख दिये, वे अवश्य होते हैं। फिर विष्णु से कहा कि तुम मुख्य हमारे रूप हो। हमने और तुममें कुछ अन्तर नहीं है। वेदों ने हमारी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुम्हारी बराबरी कही है। अब तुम और किसी का शीश काटकर बालक पर लगा दो। तुम्हारी कृपा से बालक जी उठेगा। विष्णुजी तुरन्त गरुड़ पर चढ़कर चले और वेग ही शिवकी आज्ञानुसार उत्तर की ओर चक्र लिये हुये पहुँचे और पुष्पभद्रा नदी के तीर पर जाकर वन में एक हस्ती को हथिनी और बच्चों समेत देखा। वह अपने सबों समेत उत्तर की ओर शिर किये सो रहा है। विष्णु ने तुरन्त ही उस हस्ती का शीश चक्र से काटकर लोहू टपकाता हुआ गरुड़ पर रख लिया और चाहा कि चलूँ, इतने में हथिनी जगी और बहुत चिल्लाकर अपने बच्चों को जगाया। फिर रोते हुए विष्णु को चारों ओर से घेर लिया और उत्तम रीति से स्तुति की। कहा कि हे विष्णो ! यह आपने कैसा कर्म किया ? आप तो धर्म-रूप हैं। जो हमारे नर को जिलाते नहीं तो हम सबके मारने का पाप आप पर होगा। विष्णुजी ने प्रसन्न होकर उसके शिर से एक और शिर लगाकर उसको जिन्दा कर दिया और कहा कि एक कल्प तक तुम जीते रहोगे। यह कहकर तुरन्त विष्णुजी चले तथा हम सबके और गिरिजा के पास जाकर शिर दे दिया। गिरिजा ने उस शीश को युक्ति से जोड़ दिया और शिवजी अपनी दयादृष्टि से जिला दिया। जिसके देखने से गिरिजा इतनी प्रसन्न हुई कि हमसे वर्णन नहीं हो सकता उन्होंने तुरन्त दूध पिला-कर लाड़ प्यार किया और विष्णु की बड़ी प्रशंसा हुई। गिरिजा ने कहा कि तुम शिवरूप और तीनों लोक को आनन्द देनेवाले हो। हमने यह शिव का चरित्र जान लिया है। विष्णुजी ने प्रसन्न होकर अपने गले की कौस्तुभमणि निकालकर लड़के को पहिना दी। विष्णु और हमने बालक को आशीर्वाद दिया। हमने अपना भूषण भी लड़के को पहिना दिया। इसी प्रकार हिमाचल, देवता और मुनि आदि सबों ने बहुत-सी आशीषें दीं और दान-मान से सब ब्राह्मण मङ्गन अयाचक हो गये। ऐसा बड़ा उत्सव हुआ कि सृष्टि भर प्रसन्न हो गई। देवताओं ने दुन्दुभी बजाई। गिरिजा लड़के को खिलाने और प्यार करने में प्रवृत्त रहकर आनन्दसागर में डूब गई।

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! शनैश्चर लज्जा के कारण एक कोने में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चिन्तायुक्त बैठा था। संयोग से गिरिजा ने देख लिया सो शनैश्चर से कहा कि तुमने अपनी दृष्टि से हमारे पुत्र का शिर उड़ा दिया, इससे मैं भी तुमको शाप देती हूँ कि तुम भी अङ्गहीन हो जावोगे। यह सुन सूर्य कश्यप और यमराज क्रोध से पूर्ण हो गये और तुरन्त उठकर चाहा कि विष्णु को शाप देवें। विष्णु ने हमसे और देवताओं से कहा कि इनकी सेवा करके उनको दूर करो। सो हम और देवताओं समेत उनको समझाने लगे। कश्यप ने कहा कि यह शनैश्चर हमारा पोता निष्पाप है। गिरिजा ने मना करने पर भी आप अपने लड़के को दिखलाया था। शनैश्चर का क्या अपराध है? हम भी अपना ब्रह्मतेज गिरिजा को दिखाते हैं जिससे गिरिजा के पुत्र का अङ्गभङ्ग होता है। यमराज बोले कि गिरिजा ने किस पाप पर शनैश्चर को शाप दिया? हम भी गिरिजा को शाप देते हैं क्योंकि शत्रु के मारने में कुछ दोष नहीं। हमने यमराज को मना किया कि आप क्या स्त्रियों की बानि को नहीं जानते। यह वचन सुन उसने क्रोध दूर किया और गिरिजा ने भी शान्त हो शनैश्चर से कहा कि तुम सब ग्रहों के राजा होकर शिव के प्यारे अमर हो जावोगे और हमारे वर से तुम शिव के बड़े भक्त होगे। हमारे शाप से कुछ खण्डित हो जाओ, पर तुमको कुछ दुःख न होगा। यह कह गिरिजा भीतर चली गई और शनैश्चर ने सभा में विष्णु और हम सबको प्रसन्नतापूर्वक प्रणाम किया। नये शिर से आनन्द-मङ्गल और नाच-गाना होने लगा। शिवजी ने पहिले सब सामग्री इकट्ठी कर गणपति की पूजा की। फिर विष्णुजी, हम, देवता और मुनि आदि सबने गणेशजी को पूजा तथा अपने भूषण सबने गणपति को दिये और तीनों देवता एक ही बेर कहने लगे कि हे पुत्र! तुम्हारी सबसे पहिले पूजा हुआ करेगी कि वह कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो। तुमको ब्रह्मज्ञान प्राप्त होगा, तुम परम सिद्धि देनेवाले होगे और अति कृपा से अपने समान कर लिया। फिर सब देवताओं की सम्मति से गणपति के यह नाम रक्खे गये लम्बोदर, एकदन्त, विघ्नेश, शूर्पकर्ण, हेरम्ब, गणेश, गजबदन और विनायक आदि अनेक जो विस्तारभय से नहीं लिखे। फिर सबने बहुत-सी चीजें गणेश को दीं। अर्थात् शिव ने योग, और ब्रह्मज्ञान विष्णुजी ने अपनी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माला और विद्या जो हर समय प्रसन्नता देती है और हमने कमण्डलु, धर्मराज ने सिंहासन, इन्द्र ने दूसरा सिंहासन रत्नों का जड़ा हुआ, सूर्य ने वस्त्र, दो मणि, कुण्डल और छत्र, चन्द्रमा ने मणि की माला, कुबेर ने मुकुट और असंख्य धन, अग्नि ने वह्निशुद्धांशुक, पवन ने जड़ी हुई अँगूठी, पार्वतीजी ने हार, सावित्री ने कण्ठ का भूषण, पृथ्वी ने चढ़ने के लिये मूषक और देवताओं ने शीतगिरि देकर पूजन किया। इस प्रकार हर एक ने अपनी-अपनी वस्तु देकर जय-जय शब्द किया। विष्णु ने देवताओं समेत एक बड़ी स्तुति गणपति की किया। जो उसको मनुष्य तीनों काल पढ़े तो कभी उस पर किसी प्रकार का संकट न पड़े और न उसको किसी समय पर भय प्राप्त हो। यदि विदेश जाने के समय पढ़े तो उसका उद्योग सुफल हो और उसके सब कष्ट नष्ट हो जावें। इसी प्रकार वह स्तोत्र बड़ा फल देनेवाला है। फिर शनैश्चर ने विष्णुजी से विनती की कि आप गणपति के तेज का बखान करें। सो विष्णुजी ने शनैश्चर की यह विनती मान गणपति का कवच कह सुनाया। हे नारद! वह कवच अति गुप्त है और सिद्ध है। फिर विष्णुजी और हम बिदा होकर अपने घर को गये। इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको! यह कथा सुन नारद ने संदेह किया कि हमने गणपति का चरित्र अन्य प्रकार से सुना है तथा तुमने और ही रीति से वर्णन किया। अर्थात् हमने सुना था कि गणेशजी को गिरिजा ने अपने शरीर के मैल से उपजाया था और शिव ने शीश काट डाला था, उसे आप विस्तार से वर्णन करें।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हाँ, कल्पभेद से दूसरी रीति से गणपति के उत्पन्न होने की जो कथा है, उसको हम वर्णन करते हैं। जब शिव ने गिरिजा से विवाह किया और उनको घर लाये तथा दैत्यों का वध करके विहार में प्रवृत्त हुये तो संयोग से एक दिन गिरिजा की सहेलियों ने कहा कि देखो, शिव के असंख्य गण हैं और तुम्हारे एक भी नहीं है। यद्यपि शिव के गण तुम्हारे अधीन हैं पर तुम भी कोई गण उपजाकर उसको अपने द्वार का द्वारपाल बनाओ। उस गण की रक्षा से किसी गण के आने जाने का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुछ भय न रहे। गिरिजा ने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा, समय पर ऐसा ही हो जावेगा। एक समय गिरिजा नन्दी को द्वार पर रक्षा के निमित्त बिठा आप स्नान करने लगीं। शिव लीला करके द्वार पर आये और चाहा कि भीतर जावें पर नन्दी ने मना किया। शिव नन्दी को डरवा कर भीतर चले गये। गिरिजा अन्य स्त्रियों के समान ऐसी दशा में शिव को देख अति लज्जित हुईं। वे लज्जा से अपने शरीर को छिपाते हुये भाग चलीं और अपनी सहेलियों के वचन को स्मरण किया। फिर कई दिनों के अनन्तर गिरिजा ने इच्छा की कि ऐसा गण उपजाना चाहिये जो हमारे अधीन हो। वह शिव के गणों से अधिक बलवान्, पराक्रमी और तेजस्वी हो। यह विचार अपने शरीर से मैल निकाल एक मूर्ति बनाई और गणपति नाम लेकर जीवदान दिया। वह अति सुन्दर मानो रूप का सागर उपजा। गिरिजा अति प्रसन्न हुईं और कहा कि तुम हमारे पुत्र और श्रेष्ठ गण हो। फिर लाड़ प्यार किया और अति प्रसन्न होकर भूषण और पट्टवस्त्र दिया। गणपति ने प्रणाम किया और कहा जो काम मुझे सौंपो, वह पूरा करूँ। गिरिजा बोलीं कि तुम हमारे द्वारपाल हो जाओ और किसी के टालने से कभी द्वार से न हटना और न कोई हमारी आज्ञा बिना भीतर आने पावे। तुमको कुछ किसी से भय न होगा। फिर गणपति को हृदय से लगाकर द्वार पर बैठाया। सो गणेशजी हाथ में डण्डा लेकर द्वार पर बैठे और गिरिजा ने स्नान की इच्छा कर सब सेवकों पर सामग्री जोड़ने को कहा और स्नान के निमित्त बैठीं कि शिव गणों समेत आ पहुँचे। गणों को बाहर छोड़ चाहा कि आप भीतर जावें पर गणपति ने रोका और कहा कि अभी भीतर जाने का समय नहीं है क्योंकि हमारी माता स्नान कर रही हैं। यह कह अपने डण्डे को आगे कर शिव को वहीं पर रोक लिया। शिव ने कहा कि तुम कौन हो जो मुझे नहीं जानते, न भीतर जाने देते हो। हम शिव गिरिजापति इस मन्दिर के स्वामी हैं। बड़े बुद्धिहीन मालूम होते हो। तुम किस के पुत्र हो, किसने तुमको उपजाया, क्या बकते हो। यह कह जब शिव भीतर चले तो गणपति ने तुरन्त ही अपना डण्डा शिव पर मारा और कहा कि कौन शिव, कहाँ रहते हो किस कार्य के निमित्त हमारी माता के पास

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जाते हो ? हम गिरिजा की आज्ञा बिन किसी को चाहे कैसा ही बड़ा हो, भीतर नहीं जाने देंगे। जब शिव फिर प्रश्नोत्तर के उपरान्त भीतर जाने लगे तो फिर गणपति ने डण्डा मारा। तब तो शिव ने क्रोधित होकर अपने गणों को बुलाया कि तुम सब जाकर इससे पूछो कि कौन है ? गणों ने आकर पूछा। गणपति ने कहा कि हम गिरिजासुत हैं। तुम कौन हो जो हमसे पूछने आये हो ? फिर बड़ी वार्ता हुई। सो गणों ने जाकर उनसे कहा कि वह नहीं उठता। शिव ने कहा कि उसको द्वार से उठा दो। गणों ने बहुतेरा चाहा कि गणाधिप को उठा लेवें। फिर परस्पर बड़ा झगड़ा होने लगा। इसी समय में शिव भी निकट गये और भीतर से गिरिजा ने यह शब्द सुनकर अपनी सहेलियों से कहा कि बाहर जाकर देखो कि क्या हो रहा है ?

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! गिरिजा की सहेलियों ने सब हाल आँख से देखकर गिरिजा से कह दिया। कहा कि न जानिये शिव की क्या बानि है कि वे बेसमय आया करते हैं। अभी केवल मुँह ही से तकरार होती है पर जाना जाता है कि तुम्हारा पुत्र विजय पाकर आवेगा। इस समय तुमको उसकी सहायता करना उचित है। गिरिजा ने कहा कि तुम गणपति से कह दो कि शिव किसी प्रकार न आने पावें। सो सहेली ने यही आज्ञा गणपति को सुना दी। तब गणपति ने शिव के गणों से कहा कि तुम्हारे मनमें जो हो वह करो, हम सब तरह से तय्यार हैं। हमारी आज्ञा बिना बलात् तुम्हारा जाना कठिन है। शिव के गण फिर दुःखी होकर शिव के पास गये और सब वृत्तान्त वर्णन किया। शिव ने कहा—वह तो अकेला है, तुम इतने इकट्ठे होकर क्यों युद्ध नहीं करते, यह कहकर चुप हो रहे। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! देखो शिव की लीला कैसी अचरज देने-वाली है। जो शिव एक बाण से सृष्टि भर को नष्ट कर सकते हैं, वह अपने पुत्र के साथ लीला करके युद्ध की इच्छा रखते हैं। निदान शिवकी आज्ञा पाय गण हथियार बन्द होकर गणपति के समीप पहुँचे और कहा कि हे बालक ! क्या तू चाहता है कि हम जलकर भस्म हो जावें। तुम यहाँ से तुरन्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भाग जाओ नहीं तो इस बेर तुमको मार ही डालेंगे। तेरी ढिठाई हमने अब तक सही है। तब गणपति ने सहनशीलतापूर्वक उत्तर दिया कि ऐसी लम्बी क्यों लेते हो, सामने आवो। तुम तो युद्ध किये हुये बड़े वीर हो। हम तो केवल अज्ञान बालक हैं और कभी युद्ध को आँख से भी नहीं देखा पर तो भी हम युद्ध से मुख न मोड़ेंगे। शिवजी गिरिजा के पुत्र के बल को देखकर धन्य-धन्य कहेंगे। यह सुनकर शिव के गणों ने गणपति के ऊपर धावा किया और दोनों ओर से युद्ध होने लगा। शिव के गणों ने शूल बाणादि सब शस्त्र गणपति के ऊपर चलाये पर गणपति ने इनके सब हथियार दण्ड से काट डाले और सबको युद्धस्थल से भगा दिया। कुछ दूर भागकर फिर वे अपने को धिक्कार देते हुये लौट आये। इस विचार से कि शिव को क्या मुँह दिखावेंगे कि एक लड़के से परास्त होकर भाग आये। न जानिये इस छोटे से बालक ने यह बल और वीरता कहाँ से पाई। फिर गणपति को पुकार कर कहा कि अब तक तो शिशु जानकर हमने तुमको छोड़ दिया है पर अब नहीं छोड़ेंगे। यह कहकर बहुत से हथियार गणपति की ओर चलाये। गणपति ने भी सबको मारा। तब बड़ा भारी युद्ध हुआ। निदान फिर भी शिव के गण परास्त होकर भागे और गणपति उसी तरह द्वार पर स्थित हुये।

चौबीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिव ने ऐसा चित्र विचित्र करके केवल अपने गणों का गर्व दूर कर दिया और अपनी शक्ति प्रकट करके दिखाई कि तीनों भुवन शक्ति के अधीन हैं। वही शक्ति शिव की स्त्री हैं। हे नारद! ऐसे समय में तुमने आकर हमसे यह सब हाल कह सुनाया। फिर तुमने विष्णुलोक में जाकर विष्णु से यह सब समाचार कहा तो विष्णुजी बड़ा आश्चर्य करने लगे। सो हम, विष्णुजी और देवता आदि ने शिवजी के समीप जाकर प्रणाम कर स्तुति और विनय करने लगे कि इस समय कौन लीला आपने कर रक्खी है, कहिये। शिव ने कहा कि हमारे द्वार पर एक विकट बालक खड़ा है। ऐसा लगता है कि वह प्रलय कर देगा। इससे तुम सब जाकर युक्ति से उसको प्रसन्न करो और ऐसा उपाय करो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि जिसमें प्रलय न हो। सबों ने कहा कि हे शिव! यह सब तुम्हारी लीला है कि एक बालक ऐसा युद्ध कर रहा है। यह कह सब गणपति के पास गये। हमको आते हुये देख गणपति ने एक बाल उखाड़ लिया। हम सबने कहा कि क्षमा करो, आपसे कोई युद्ध की कांक्षा नहीं रखता। यह हमने कहा था कि गणपति ने तुरन्त अपने परिघ को सँभाला। हम सब लौटकर शिव के पास गये। तब शिव ने क्रोध करके आदि से कहा कि तुम जाकर उस बालक का वध करो, तुम्हारा बड़ा यश होगा। सो इन्द्रादि युद्ध के निमित्त तत्पर होकर गणपति के ऊपर बाण और अन्य शस्त्र वर्षाने लगे। उसी समय में शिव और गिरिजा ने दो शक्तियाँ उपजाईं जो तुरन्त युद्धस्थल में पहुँचकर दोनों ओर के शस्त्र अपने ओष्ठ खोलकर निगल जाती थीं। जिस प्रकार कि पर्वत समुद्र के बीच में स्थित है, उसी प्रकार गणपति ने अकेले सेना को दुःखी कर दिया। वे सब बेहथियार खाली हाथ युद्धस्थल में खड़े रहे। उन्होंने कहा कि अब हम क्या करें? कोई शस्त्र बाकी नहीं रहा जिससे युद्ध करें। केवल वीरभद्र देखते थे कि दोनों शक्तियों ने प्रकट होकर सबों को दुःखी कर दिया है। निदान हे नारद! तुमने देवताओं समेत शिव के निकट जाकर कहा कि हमको जान पड़ता है कि यह सब तुम्हारी लीला है। अब जो आप शीघ्र ही सुधि नहीं लेते तो प्रलय हो जावेगी। फिर शिव की आज्ञानुसार इन्द्र, विश्वामित्र और यमराज आदि ने पहुँचकर गणपति के ऊपर अपने-अपने शस्त्र चलाये पर वृथा ही गये। गणपति ने अपने डण्डे से सबको मारा जिससे हाहाकार मच गया और सब देवताओं ने शिव की शरण में रक्षा पाई। हे नारद! उस समय तुमने शिव से कहा कि हे शिवशंङ्कर संसार के उपजानेवाले! अपनी लीला को जो फैला दी है, समेट लीजिये और संसार की रक्षा कीजिये। कदाचित् यह गिरिजा का गण जीता रहा तो प्रलय कर देगा। इसलिये इस गण का शिर काट लीजिये। आपके सिवा और कोई मारनेवाला प्रकट नहीं जाना जाता। यह कह तुम चुप हुये और शिव हँसे।

पच्चीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह वचन तुम्हारा सुनकर शिव लड़ाई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के लिये अपने उत्तम-उत्तम शस्त्रों समेत तत्पर हुये और अतिक्रोधित होकर विष्णु तथा प्रसिद्धगणों को साथ ले डमरू बजा दिया। तब सब देवता जो कई बेर युद्धस्थल से भाग चुके थे, वीरता से गरजने लगे। विष्णु ने भी आप गणेश से युद्ध किया। जो शस्त्र विष्णु ने गणपति के ऊपर प्रलय की अग्नि के समान चलाया, वह गणेशजी ने अपने दण्ड से दो खण्ड कर डाला। निदान बहुत युद्ध करने के उपरान्त विष्णु ने शिव से कहा कि हम इस गण का वध करे डालते हैं। शिव बोले कि बहुत अच्छा। गणपति ने अपनी इतनी वीरता प्रकट की कि सब देवता युद्धस्थान से पीठ दिखाकर भाग गये। तब विष्णु ने अपने मुख से गणेशजी की प्रशंसा की और कहा कि आज तक कोई इतना नहीं लड़ा। विष्णु यह कह रहे थे कि गणपति ने अपना परिघ उठाकर मारा किन्तु विष्णु ने अपने परिघ से उसको काट डाला। गणपति ने एक का प्रहार विष्णु की छाती में मारा जिसको विष्णु न सहकर धरती पर गिर पड़े। तब हाहाकार मच गया। फिर विष्णुजी शिव की कृपा से उठ खड़े हुये। इसी प्रकार बड़ी देर तक दोनों में युद्ध होता रहा, कोई परास्त न हुआ। निदान विष्णु ने एक ही बेर असंख्य बाण गणपति पर चलाये। इस विचार से कि विजय होगी, अपना शङ्ख बजा दिया। यह शङ्ख का शब्द सुनकर सब देवता लौट आये और फिर युद्ध करने लगे। एक ही बेर सब देवता गणपति पर चढ़ धाये। गणपति ने गिरिजा को स्मरण कर अपनी मुष्टिका चलाकर सब देवताओं के शस्त्र निष्फल कर डाले। वे इतने वेग से शस्त्र चलाते कि कोई नहीं देखता था कि कब बाण लिया और कब मारा। उस समय सब देवता आदि अति आश्चर्य में हुये। पृथ्वी काँप गई, पर्वत हिल गये और यह जान पड़ा कि प्रलय होती है। विष्णु ने सबको दुःखी जान और प्रलय के चिह्न देख दया की राह से तुरन्त गणपति पर कूद पड़े और वेग ही दौड़कर गणपति का शिर शूल से काट डाला। तब हम और देवता आदि निर्भय होकर अति प्रसन्न हुये और शिवजी की स्तुति करने लगे।

छब्बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! तब तुमने शिवकी आज्ञानुसार गिरिजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के पास जाकर युद्ध का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त कह सुनाया और तुमने अपने वचन की वाचालता को इस प्रकार से कहकर बताया कि हे गिरिजा ! देवताओं की दुष्टता को देखो कि आपके पुत्र का वध कर डाला। उन्होंने क्या यह अच्छा किया है ? तुम्हारे प्रताप और तेज का कुछ विचार न किया ! उचित है कि तुम अपना तेज देवताओं को दिखा दो कि वे अपने कर्मों का दण्ड पावें और तुम्हारी बड़ाई बनी रहे। यह कहकर हे नारद ! तुम तो चले गये और फिर तुम्हारी इच्छा युद्ध देखने की थी। गिरिजा अपने गण की दुर्दशा सुन इकबारगी रो उठीं और बहुत ही शोककर मूर्च्छित हो गईं। उन्होंने अपने शरीर से सौ शक्तियाँ उपजाईं और चाहा कि उनके द्वारा सेना भर को नष्ट कर डालूँ। इन शक्तियों का यह स्वरूप था कि शरीर महाविकराल, तन-बदन बहुत ही भयानक, हाथ-पाँव ताड़ के वृक्ष के समान, उदर बहुत बड़ा, उँगलियाँ नाना प्रकार की छोटी-बड़ी रङ्गीन। उन्होंने हाथ जोड़कर गिरिजा से विनती की कि जो आज्ञा हमको मिले वह हम पूर्ण करें। गिरिजा ने अति क्रोध से कहा कि जितने देवता सेना में हैं, सबको खा जाओ। उनमें से कोई बचने न पावे क्योंकि उन्होंने हमारा पुत्र मारा है। सो वे सब वहाँ पहुँचकर देवताओं को भक्षण करने लगीं। विष्णु, हम और सब देवता दुःखी होकर कहने लगे कि क्या प्रलय आ गई है या शिव ने अपनी शक्ति का बल दिखाया है। यह कहकर हम सबने शिव की ओर देखा और हे नारद ! तुमने शिव की आज्ञा से कहा कि जब तक गिरिजा प्रसन्न न होंगी, यह प्रलयरूप कष्ट नष्ट न होगा। यह सुन तुम और सब देवता गिरिजा के समीप जाकर हाथ जोड़ शिर झुका स्तुति करने लगे और विनय की कि वास्तव में हम अपराधी हैं। तुम क्षमा करो, क्षमा करो, प्रलय होती है। हम आपके सामने काला मुँह किये खड़े हैं। गिरिजा ने कहा कि जो हमारा पुत्र जी उठे और सब देवता पहिले उसकी पूजा करें तो हम प्रलय न होने देवें। सो देवताओं ने यह हाल शिव से वर्णन किया। तथाच शिव ने गणपति के शरीर को अच्छे प्रकार धोया और कहा कि उत्तर की ओर जाकर ढूँढ़ो, जो जीव पहिले मिले उसका शिर काटकर इसके शरीर में जोड़ दो तो यह जी उठेगा। सो विष्णु

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ने जाकर प्रसून भद्रा नदी के वन में एक हाथी को अपनी मादा और एक अपने बच्चे समेत सोते हुये देखा। तुरन्त हाथी का शिर काट अपने गरुड़ पर रख चाहा कि चलूँ पर हथिनी जग उठी और उसने इनकी ऐसी स्तुति की कि विष्णु ने प्रसन्न हो दूसरा शिर उपजाय धर से जोड़ दिया। वह हाथी फिर जी उठा। विष्णु ने उसको आशिष दी कि तुम एक कल्प तक फिर जीते रहोगे। शिव के पास पहुँचकर शिर गणपति के धर से जोड़ दिया। शिव ने प्रसन्न होकर जीवदान दिया। सबके दुःख दूर हो गये और सबको आनन्द हुआ।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गिरिजा ने अपने पुत्र को जीता देख आनन्द मनाया और बहुत प्रकार के वस्त्र देकर कहा कि इस समय हम तुम्हारे भाल में सिन्दूर देखती हैं। सो तुम्हारी पूजा सिन्दूर से हुआ करेगी। जो कोई तुम्हारी पूजा करेगा उसके पास सिद्धियाँ बनी रहेंगी। यह हमारी आज्ञा है और शिव ने भी अति प्रसन्नता से कहा कि हे देवताओ! यह हमारा पुत्र है और गणपति इसका नाम है। गणपति ने भी उठकर सबको प्रणाम किया और कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो। तीनों देवताओं ने कहा कि तुम्हारी पूजा हम तीनों देवताओं के समान होगी और पहले तुम्हारी पूजा हुये बिना पूजा का कुछ फल न मिलेगा। यह कह सबने पहिले गणपति की पूजा की और प्रणाम कर यह वरदान दिया कि तुम भाद्रकृष्ण चतुर्थी को उपजे हो इससे तुम्हारा चौथ को व्रत होगा। जो बहुत ही सुखदायी होगा और सबको तुम्हारी सेवा से आनन्द मिलेगा। सबको तुम्हारी पूजा आदि करनी चाहिये। फिर विष्णु और सब देवताओं ने गणपति की एक अति उत्तम और पवित्र स्तुति की। इतना कह सूतजी बोले कि हे मुनियो! जब ब्रह्माजी इतना कह चुके तो आनन्द में मग्न हो गये। उसी आनन्द में एक स्तुति गणेश की निर्माण कर नारद को सुनाई फिर कहा कि देवता शिव से बिदा होकर चले गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अट्ठाईसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गिरिजा के दोनों पुत्र अर्थात् स्कन्द और गणपति सुबह को उठकर शिव-गिरिजा को प्रणाम करते और दिन-दिन उनमें प्रेम बढ़ाते। एक दिन शिव ने गिरिजा से कहा कि अब हमारी इच्छा है कि हमारे पुत्रों के विवाह हो जावें। हमको स्कन्द और गणपति बराबर प्यारे हैं, पहिले हम किसका विवाह करें? यह बात माता-पिता से सुनकर दोनों ने परस्पर बड़ी तकरार की। स्कन्द कहते थे कि पहिले हमारा विवाह होना चाहिये और गणपति भी यही कहते थे। तथाच शिव-गिरिजा ने दोनों को बुलाकर कहा कि तुम दोनों बराबर हो। हम इस बात की प्रतिज्ञा करते हैं कि तुम में जो पृथ्वी भर की परिक्रमा करके पहिले लौट आवे, उसका विवाह पहिले कर देवेंगे। सो दोनों पृथ्वी की परिक्रमा को चले। पर गणपति ने यह विचारा कि हमको सृष्टि भर के परिक्रमा की शक्ति नहीं है, हम क्या करें? इसी चिन्ता में कुछ विचार किया और स्नानकर माता-पिता के सामने खड़े होकर विनती की कि हम आपकी पूजा करेंगे, पूजन के स्थान पर बैठिये। यह सुन शिव और गिरिजा आसन पर बैठे और गणपति ने बार-बार परिक्रमा कर दोनों की पूजा की। फिर माता-पिता ने कहा कि स्कन्द तो जा चुके, तुम भी पृथ्वी की परिक्रमा को जाओ। गणपति ने विनय की कि क्या हमने पृथ्वी की परिक्रमा नहीं की। तुम धर्म की मूर्ति होकर ऐसा कहते हो। तब शिव-गिरिजा ने कहा कि कब तुम सृष्टि की परिक्रमा कर आये? गणपति बोले कि तुमको वेद त्रिभुवन का रूप कहते हैं। सो हमने तुम्हारी परिक्रमा में तीनों लोक की परिक्रमा क्या नहीं की। इसके सिवाय वेद लिखता है कि जो मनुष्य माता या पिता की परिक्रमा करता है, उसको संसार भर की परिक्रमा का फल मिलता है। जो मनुष्य कि माता पिता को घर में छोड़कर आप तीर्थ को जाता है, उसको पितरों के मारने का पाप लगता है। लड़के को माता-पिता के चरण ही बड़े तीर्थ हैं। माता-पिता ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं, इनसे बढ़कर और कोई नहीं। इसी प्रकार स्त्रियों को अपने पति की सेवा से अधिक और कोई धर्म नहीं कहा गया। अब आप या तो वेद के मार्ग को छोड़ दें, नहीं तो हमारा विवाह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर दें। शिव-गिरिजा गणेश का यह वचन सुनकर सुखी हुये और गणपति की ऐसी चतुराई देखकर अति प्रसन्न हुये। उन्होंने कहा तुमको शुभमति उपजी है जिससे तुमने ऐसे धर्म के वाक्य कहे। हम तुमको यह कहते हैं कि तुम्हारा वचन वेद, पुराण और शास्त्र के समान विश्वास योग्य समझा जावेगा। हम तुम्हारा विवाह कर देवेंगे। इतने में शिवजी की इच्छा जान विश्वरूप ने अपनी दो कन्याओं के साथ जिनका सिद्धि और बुद्धि नाम था, गणपति के साथ विवाह कर दिया और विवाह में बड़ी धूमधाम हुई। जैसा कि शिवजी के विवाह में हिमाचल की ओर से सब बातें हुई थीं। ऐसी स्त्रियाँ पाकर गणपति अति प्रसन्न हुये और कितने समय के उपरान्त गणपति के दो पुत्र उपजे अर्थात् सिद्धि से तो क्षेम और बुद्धि से लाभ। उनके समान संसार में कोई पण्डित और कलावान् न हुआ। इतने में स्कन्द संसार भर की परिक्रमा करके लौट आये। हे नारद! तुमने पहिले स्कन्द के मन को बहुत बहकाया और स्कन्द से कहा कि देखो, माता-पिता ने तुमको बहकाकर गणपति का पहिले विवाह कर दिया। गणपति ने दो स्त्रियों से दो पुत्र उपजाये हैं। जब कि माता-पिता ऐसा छल करते हैं तो और क्यों न करें। हमारी समझ में यह काम उन्होंने अच्छा नहीं किया। जो तुम्हारे मन में आवे, अब तुम वही बात करो। जो आपही माता-पिता अपनी सन्तान को बेंचे या विष देवे अथवा उनका राज्य, धन और द्रव्य आदि लूट लेवे तो मनुष्य किसके पास जाकर अपना दुःख कहे। इसमें यही उत्तम है कि फिर उनका मुख न देखे। हे नारद! ऐसी बातों के करने से तुम्हारा तेज घट गया। स्कन्द अपने माता-पिता के घर गये और अपने माता-पिता की स्तुति करने के अनन्तर अति दुःखी होकर स्कन्द जी क्रौञ्चपर्वत पर चले गये। यद्यपि माता-पिता ने जाने से वर्जित किया पर स्कन्दजी न लौटे। हे नारद! शिवजी के चरित्र ऐसे आश्चर्य देनेवाले हैं कि कोई उनको नहीं जानता। जो चाहते हैं, वही करते हैं। जैसा कि वेद कहते हैं, वह नाना प्रकार के अवतार धारणकर और अद्भुत चरित्र रच अपने भक्तों को प्रसन्न करते हैं। हे नारद! जब से स्कन्दजी क्रौञ्चपर्वत में स्थित हुये तब से क्रौञ्चपर्वत की और ही दशा हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गई। वह पर्वत यश बढ़ानेवाला, पाप घटाने वाला और अति आनन्द देने वाला हो गया। सो तब से स्कन्दजी उसी पर्वत पर स्थित हैं जिनके दर्शन से सब पाप छूट जाते हैं। हर मास की पूर्णमासी को सब देवता और मुनि एक ही साथ जाकर स्कन्द के दर्शन करके कृतार्थ हो जाते हैं। जो कोई उस दिन मल्लिकार्जुन के दर्शन करे, उसके सब पाप जल जावें। यद्यपि शिवजी और गिरिजा ने क्रौञ्च में जाकर स्कन्द को मनाया पर फिर स्कन्दजी लौट कर न आये। वरन् शिवजी के आने का हाल जानकर इच्छा की कि कहीं और जगह जाकर स्थित होवें। सो वहाँ से तीन योजन दूर जाकर स्थित हुये। शिवजी हर पूर्णमासी को वहाँ जाया करते हैं। हे नारद! यह चरित्र हमने तुमको सुनाया जिसके सुनने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं और मल्लिकार्जुन की बड़ाई वेद गाते हैं। उनके दर्शन से अन्त में कैलाश मिलता है और इस गणपति के चरित्र को जैसा कि हमने वर्णन किया, कोई सुनेगा तो वह संसार में आनन्द और अन्त में शिव का धाम पावेगा।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे चतुर्थः खण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

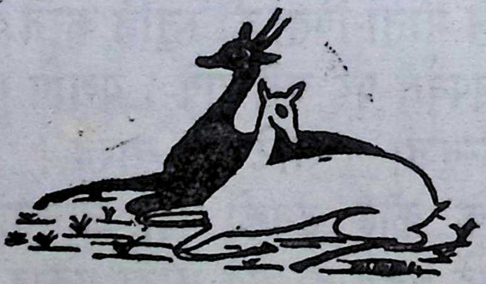

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय।

शिव पुराण भाषा

---:o:---

पञ्चम खण्ड (युद्ध खण्ड)

पहिला अध्याय।

सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको ! नारद ने फिर ब्रह्माजी से कहा कि आप वर्णन करें कि सदाशिवजी ने क्यों कर दैत्यों का वध किया ? ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब कि स्कन्द ने तारक का नाशकर देवताओं को आनन्द दिया तब तारक के तीनों पुत्र अर्थात् तडिन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष तप का उद्योग कर महाकठिन तप में प्रवृत्त हुये। पहिले केवल हमारे ध्यान में एक पाँव से खड़े रहे और सौ वष पर्यन्त केवल जल पीकर तथा सहस्र वर्ष तक केवल पवन भक्षण कर तप किये। फिर एक हजार वर्ष तक केवल अंगुष्ठ के बल खड़े रहे। दोनों हाथ ऊपर को उठाये हुये हजार वर्ष तक स्थित रहे तो उनके पास जाकर हमने कहा कि तुम्हारे तप से हम अति प्रसन्न हुये। जो वर तुमको चाहिये, वह माँगो। तीनों दैत्यों ने कहा कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमको यह वरदान दीजिये कि हम किसी के हाथ से मारे न जावें। हमने कहा कि तुम तीनों यह वरदान मत माँगो। वरन् जो जिसको इच्छा हो तुममें से वह उस वस्तु को माँगे। यह सुन तीनों दैत्यों ने विचारकर कहा कि इसी स्थान पर एक पुर बस जावे जहाँ आपकी मूर्ति स्थित हो और हम तीनों के लिये एक-एक नगर अलग-अलग जिनका अन्तर हजार-हजार कोस का हो, तय्यार हो जावें। यह तीनों पुर एक ही रीति के हों और जो मनुष्य केवल एक ही बाण से तीनों पुरों को नष्ट करे, वही मनुष्य हमारा भी वध करे। यह सुनकर हमने कह दिया कि यही होगा। सो हमने तुरन्त मयदानव को बुलाकर आज्ञा दी कि तीन नगर बनाओ और यह कहकर चले

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गये। मय ने हमारी आज्ञा से तीनों नगर तय्यार कर दिये। हर एक नगर सौ-सौ योजन बड़ा था जिसमें स्वर्ग से भी अधिक आनन्द था। हमने क्रम से तीनों को तीनों पुर बाँट दिये। उन्होंने उन नगरों में स्थित होकर अति आनन्द पाया। तीनों भुवन में कोई वस्तु ऐसी न थी जो उनके यहाँ न हो। असंख्य सेना भी थी और हर एक के घर में शिवालय बने थे जिसमें सब लोग शिवजी की पूजा करते और दिन-दिन हवन और यज्ञ करते थे। जो सामग्री कि तीनों लोक में किसी के घर न निकले वह छोटी-छोटी जातियों के यहाँ भी वर्तमान थी। स्त्रियाँ पातिव्रतधर्म में स्थित थीं। वे तीनों दैत्य शिव के भक्त थे। शिवजी की पूजा की निमित्त उन्होंने नाना प्रकार के मन्दिर बनवाये। वहाँ यह रीति थी कि शिवजी की पूजा बिना कोई भोजन न करता क्योंकि तीनों दैत्यों ने इस बात की मनाही की थी कि सब लोग शिवजी का पूजन करें। अर्थात् शिवजी को पार्थिव रूप मन में समझकर पूजा किया करें जो कोई आज्ञा न मानेगा तो दण्ड पावेगा अर्थात् उसका वध किया जावेगा। वेद पुराण के मतानुसार सब होता, कोई बात धर्म के विरुद्ध उन नगरों में नहीं होने पाती थी। ब्राह्मण रातदिन शिव-शिव कहा करते थे। यहाँ तक कि जितने पृथ्वी पर धर्म हैं, वे सब उन नगरों में होते थे। जब इनका तेज बढ़ा तो देवताओं ने घबराकर बड़े-बड़े दुःख उठाये उनके शरीर में अग्नि के सदृश जलन उपजी। वे सब मिलकर हमारे शरण हुये और मेरा स्तुति कर कहा कि अब सब देवता त्रिपुर के तेज से जले जाते हैं और अपने-अपने पदों से गिरे जाते हैं। आपके सिवाय और कौन रखनेवाला है। यह सुनकर हमने कहा कि उन्होंने हमारा बहुत तप करके इस प्रकार का वरदान प्राप्त किया है। हम उनको जाकर वेद के विरुद्ध क्योंकर मार सकते हैं। वे शिवजी के सेवक हैं और उन्हीं की कृपा से नाना प्रकार के आनन्द उठाते हैं। देखो, शिवजी के भक्त पर कोई शस्त्र नहीं चल सकता। उनकी भक्ति से हजारों-करोड़ों आपदायें नष्ट हो जाती हैं। हर एक मनुष्य उनके तप के छोड़ने से तुरन्त नष्ट हो जाते हैं। इस वर्णन के अनुसार हम एक इतिहास कहते हैं कि रावण जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी का भक्त हुआ है, उसका कोई वध न कर सका। वरन् विष्णु का चक्र भी कुण्डित होकर रावण का शिर जुदा न कर सका। तब आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो! जो किसी कारण रावण शिवजी की सेवा छोड़ देवे और शिवजी के विरुद्ध हो जावे तो निस्सन्देह शिवजी उसकी सहायता न करेंगे। इसलिये तुमको उचित है कि अवतार लेकर शिवजी का नाम जपो। जब शिवजी प्रसन्न होकर तुमको अपना बाण कृपा करेंगे तब रावण तुम्हारे हाथ से मारा जावेगा। यह सुन कर विष्णुजी ने शिवजी की बड़ी पूजा की। तब शिवजी ने रावण की उत्तम बुद्धि को नष्ट कर दिया जिससे रावण ब्राह्मणों को दुःख देने लगा। विष्णुजी ने रामचन्द्र का अवतार लेकर शिवजी का तप कर शिवजी से वह बाण प्राप्त किया जो प्रलय करनेवाला है और उसी बाण से रावण का वध करके सीता को प्राप्त किया। सो इसका तात्पर्य यह है कि अब हम तुम सब शिवजी की शरण में चलें। उनके चरण पकड़कर उनको प्रसन्न करें और उनकी महिमा बखानें। सो हम सब देवताओं समेत शिवजी के पास पहुँचे और हर एक पद में जय-जय का शब्द मिलाकर एक बड़ी भारी स्तुति की और कहा कि जब-जब देवताओं पर कोई संकट पड़ा है, तब-तब तुम्हीं ने दुःख दूर किया है। अब एक दया की दृष्टि हम पर कीजिये।

दूसरा अध्याय।

देवता लोग बोले कि हे शिवजी! हमारे दुःख को दूर कीजिये क्योंकि तुम भक्तों के बचानेवाले और भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हो। दैत्यों ने अति बल और तेज प्राप्त करके हम सबको दुःखी कर रक्खा है। अब हम से अपने शरीर का दाह भी सहा नहीं जाता। आपकी शरण में आये हैं। हम सब आपको छोड़कर कहाँ जावें? क्योंकि कोई देवता सिवाय तुम्हारे हमारी रक्षा नहीं कर सकता। शिवजी बोले कि हमको तुम्हारा सब दुःख मालूम हो गया। पर त्रिपुर बड़े धर्मवान् और दाता हैं, उन्हीं के बल से इतने आनन्द से रहते हैं। संसार में पुण्य के बराबर दूसरी वस्तु आनन्द देनेवाली नहीं जब तक उनकी पुण्य वृद्धि पर है, तब तक वे मारे नहीं जा सकते। इस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कार्य के लिये तुमको अवश्य यत्न करना चाहिये। वे अपने सब सेवकों समेत हमारे भक्त हैं। हमको उचित नहीं है कि हम अपने भक्तों को बिगाड़ दें और न हमसे तुम्हारे दुःख देखे जा सकते हैं। क्योंकि जो हमारी शरण में आता है, उसकी हम अवश्य ही रक्षा करते हैं। इससे तुमको उचित है कि विष्णु के पास जाकर अपना सब दुःख कहो। वे हमारे मुख्य स्वरूप सृष्टि के पालनेवाले हैं। यह सुन सब देवता विष्णुजी के समीप गये और स्तुति करने के उपरान्त अपना सब दुःख कहा और हर प्रकार विष्णुजी की पूजा में प्रवृत्त हुये। विष्णु ने देवताओं की विनती सुनकर वेद और शास्त्र के अनुकूल उत्तर दिया कि सनातन से शिवजी की पूजा और भक्ति पुण्य-दायक है। सो उस स्थान पर जहाँ शिवजी की पूजा हो कोई दुःख या कष्ट नहीं रह सकता। सूर्य के उदय होने से जिस प्रकार अँधेरा दूर हो जाता है उसी प्रकार शिवजी के तेज को भी समझना चाहिये। यह सुन देवताओं ने दुःखी हो लज्जा से विनय की कि हे देवताओं के स्वामी! हम सब दुःखी और अधीर हैं। हम क्या करें क्योंकि यह बात स्पष्ट है कि जब तक त्रिपुर जीते रहेंगे, हमको कुछ भी आनन्द न मिलेगा। सो आप कहिये कि हम कहाँ चले जावें या हम सबको आप बिना मृत्यु मार डालिये अथवा त्रिपुर का नाश कीजिये। दो कामों में से एक काम करके तुम प्रसन्न हो और हमारा भी कष्ट छुड़ा दीजिये। शिवजी की आज्ञा पाय प्रसन्न बदन आपके पास आये थे। अब हमारे धर्म जाने में क्या विलम्ब है। यह कह सब देवता गूँगों के समान चुप हो गये। विष्णुजी ने शिवजी की आज्ञा का विचार कर सोचा कि किसी उपाय से देवताओं का दुःख दूर करना उचित है। फिर शिव का ध्यान कर यज्ञ-गण को स्मरण किया। सो यज्ञ के अन्दर से मखपति उपजे और विष्णु की स्तुति करने लगे। विष्णु ने देवताओं से कहा कि इनकी पूजा करो। सो देवताओं ने तुरन्त प्रसन्न होकर शङ्खनाद किया और मख अर्थात् यज्ञ करके मखपति के ध्यान में लगे। उन्होंने अति पवित्र स्तुति की कि मखपति प्रकट हुये और विष्णु की स्तुति करने लगे। विष्णु ने देवताओं से कहा कि त्रिपुर तुम्हारे ऐसे उपायों से मारे नहीं जा सकते। जिनके देखने से पाप नष्ट हो जाते हैं, उनका मखपति क्या कर सकता है। वे शिवजी के वरदान से इतना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आनन्द कर रहे हैं कि संसार में कोई उनके बराबर नहीं। हे देवताओं! संसार में कौन है जो शिव के भक्त का विनाश करे। वे शिवकी आज्ञा बिन नहीं मारे जावेंगे। शिवजी की आज्ञा विन ब्रह्मा, हम, देवता, यज्ञ और मुनीश्वर आदि उनका कोई कुछ भी नहीं कर सकते। शिवजी ने केवल संसार की भलाई के लिये अवतार लिया है। एक अंश की देवताओं ने पूजा करके कैसा पद पाया है। ब्रह्मा ने भी उनकी सेवा कर यह पद पाया और हमको भी यह पालन करने की बड़ाई उन्होंने सेवा करने से कृपा की है। शिवपूजा बिना किसी को कुछ सिद्ध नहीं मिली। इससे हम कहते हैं कि त्रिपुर केवल शिव की सेवा करने से मर सकते हैं। हमको निश्चय है कि हम सब शिवजी की पूजा करके त्रिपुरविजय पावेंगे। यह कह विष्णु ने सब देवताओं समेत शिवपूजन का आरम्भ किया और एक करोड़ पार्थिवलिङ्ग मिट्टी से बनाकर पहिले आवाहन करके अक्षत, सुगन्धमयी पुष्प और बिल्वपत्र से पूजा की। फिर विष्णुजी शिवजी के ध्यान में मग्न हुये। शिवजी के प्रसन्न होने से असंख्य भूतों की सेना त्रिशूल, शक्ति और गदा आदि लिये हुये प्रकट हुई। विष्णु ने उनको देखकर कहा कि तुम तुरन्त पुर का नाश कर दो। अर्थात् तीनों पुर को जलाकर अपने मकान को लौट आवो। संसार में तुम्हारा यश फैलेगा। यह सुन वह भूतों की सेना पवन के समान चली और त्रिपुर में फैल गई। पर शिव के चरित्र से जब वह नगर के भीतर पहुँची तो तुरन्त जलकर भस्म हो गई। क्योंकि जिनको शिवकी भक्ति दृढ़ है, उनके समीप संकट आकर आपही नष्ट हो जाता है। सो देवताओं ने फिर विष्णु के समीप जाकर यह हाल सुना दिया और विचार करने लगे कि किस उपाय से त्रिपुर विनाश को प्राप्त होंगे। वरन् अभिचार अर्थात् हठधर्मी से भी शिव के भक्तों पर कुछ कष्ट नहीं पड़ सकता। वास्तव में शिव की भक्ति के कारण यह दैत्य बच गये हैं। शिवजी के कारण दैत्य पुरुष स्त्री क्या-क्या पाप नहीं करते किन्तु उनको कुछ पाप नहीं लगता। इससे जो शिव आपही हमारी सहायता करें तो हमको आनन्द मिल सकता है। हम ऐसी कोई युक्ति करें जिससे उनका धर्म नष्ट हो जावे। तब निस्सन्देह कुछ कठिन नहीं कि आप शिव उनको नाश कर देंगे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसी विचार में विष्णु ने देवताओं से कहा कि तुम सब अपने-अपने घरों में जाकर शिवजी के नाम का स्मरण रक्खो, अहर्निश शिव का पार्थिव-पूजन किया करो और उनकी स्तुति करो। यह सुनकर देवता अति प्रसन्नता से अपने-अपने घरों को चले।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! देवताओं के बिदा होने के उपरान्त विष्णु ने माया करके शिवपूजन के उपरान्त अपने शरीर से एक मनुष्य उपजाया जो सारा शिर मुड़ाये हुये, मैले और अशुद्ध वस्त्र पहिने, पंगुल वस्त्र से मुख को ढाँपे और धर्म कहते विष्णु के सामने आ खड़ा हुआ। वह हाथ जोड़ अर्हण वचन बोला कि मुझको क्या आज्ञा होती है? विष्णुजी बोले कि तुम हमारे शरीर से उपजे हो, इससे हमारा काम अच्छी तरह से पूरा करो। तुम हमारे रूप हो। यह कहकर विष्णु ने एक ग्रन्थ बहुत बड़ा जिसमें सोलह सहस्र श्लोक थे, बनाया। उसमें नीचे लिखी बातें थीं। वह पुस्तक छल और झूठ की भरी हुई थी। उसमें कोई ठीक धर्म नहीं लिखा हुआ था। वह वेदशास्त्र और पुराण से विपरीत था जिसको पढ़कर कुछ भी आनन्द न मिलता था। उसमें वेद, पुराण और शास्त्र की बहुत ही निन्दा लिखी थी। वर्णाश्रम के लिये बहुत मनाही थी जिससे नरक मिलने में कुछ भी देर न लगे। केवल नरक ही को नरक और स्वर्ग ठहराया था। प्रत्यक्ष आँखों से देखी हुई चीज के सिवाय परोक्ष आनुमानिक वस्तु का विश्वास नहीं लिखा था। उसमें सब बातें कुमति और संशय की थीं और नाना प्रकार के वितण्डावाद लिखे हुये थे। उसमें पातिव्रताधर्म और देवता वरन् शिवजी की पूजा के लिये भी मनाही थी और दशकर्म का कुछ भी विचार न था तथा सिवाय चेटक नाटक के कुछ भी बात सच न थी। उसके मानने से शोच तप सब नष्ट हो जाते। वह पुस्तक इन्द्रफल के समान थी। उस पुस्तक को देखकर कहा कि तुम त्रिपुर में जाकर सबको यह पुस्तक पढ़ा दो। वहाँ के निवासी वेद और पुराण के अनुकूल सब कार्य करते हैं। तुम वहाँ जाकर अपना धर्म उपदेश करो कि उनका धर्म नष्ट हो जावे और वह शिवजी की पूजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छोड़ देवें। जब तुम अपना कार्य पूर्ण कर लो तब अपने नौकरों और चेलों समेत तब तक मरुस्थल में स्थित हो जावो जब तक कलियुग न आवे। तुम वहाँ गुप्त रहा करना, जब कलियुग का आरम्भ हो जावे तब तुम मेरे उपदेश को भलीभाँति प्रसिद्ध करना। तुम कुछ सन्देह मत करो, तुम्हारी बड़ी पदवी हो जावेगी। यह आज्ञा मुण्डी ने सुनकर और बहुत चेले किये। विष्णु ने कहा कि तुम बिदा हो जावो और हमारा जो अर्हण एक नाम है, जिसका स्मरण करते रहना। तुमको कभी कुछ भय न होगा। सो मुण्डी चेलों समेत चलकर त्रिपुर में पहुँचे और बहुत से खेल करके उन्होंने बहुत मनुष्यों को अपना चेला किया। ऐसा कोई न था जो मुण्डी के पास जाकर चेला हुये बिना अपना धर्म लेकर घर चला आवे। हे नारदजी! शिवजी की लीला से तुम भी मुण्डी के शिष्य हुये क्योंकि उसमें देवताओं का कार्य था। फिर तुमने त्रिपुर के पास जाकर इस प्रकार मुण्डी की प्रशंसा की कि त्रिपुर भी मुण्डी के शिष्य हो गये। मुण्डी ने त्रिपुर से यह प्रण करा लिया कि हमारी आज्ञा किसी दशा में भङ्ग न की जावे। इस बात के मानने के पीछे मुण्डी ने मुख से वस्त्र उठाकर त्रिपुर को चेला बनाया और मन्त्र दिया। फिर नाना प्रकार के करने और न करने के काम सुना दिये। जब त्रिपुर चेले हो गये तो फिर कोई मनुष्य न रह गया जो मुण्डी का चेला न हुआ हो।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! त्रिपुर के चेला करने के उपरान्त मुण्डी ने कई आज्ञायें त्रिपुर को सुना दीं और कहा कि हमारा मत सब मतों से बड़ा है जिसको नारद ने भी माना है। इस मत के मार्ग ये हैं कि यह संसार अनादि है, इसका आदि-अन्त कुछ नहीं और न इसका कोई कर्ता तथा न बनानेवाला है। यह सनातन से इसी प्रकार चला आया है। समय पर आप ही प्रकट होता है और इसी तरह समय पाकर अन्तधान हो जाता है। समय पाकर अच्छा बुरा हो जाता है। ब्रह्मा से लेकर घास मिट्टी तक जितने प्राणीमात्र हैं, मरने के समय बराबर हैं और जीव ईश्वर है जो अपने शरीर में वर्तमान है। इसके सिवाय कोई संसार का स्वामी नहीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है ब्रह्मा आदि जो देवता बहुत पुराने हैं, वे भी अमर नहीं हैं। वरन् यह सब मृत्यु के वश में हैं। यह बात है कि कोई तो विलम्ब में और कोई वेग ही मरता है। मृत्यु से कोई नहीं बचता और निश्चय करके जो शरीरधारी हैं, वे नष्ट हो जावेंगे तथा दुःख-सुख भोग फिर शरीर धारण करेंगे। सब जीव एक ही से बराबरी का पद रखते हैं। इनमें कोई बड़ा-छोटा नहीं है। भोग और भोजन में सब बातों में बराबर हैं। कुछ बड़ाई-छुटाई की बात नहीं है क्योंकि एक स्त्री सुन्दर और दूसरी कुरूप मालूम होती है सो वह दोनों मैथुन में एक-ही सी हैं। सवारी चाहे किसी तरह की हो, बराबर है। बिछौना चाहे सजा हुआ हो चाहे न हो, सोने में बराबर है। जो कि हमको भी मृत्यु का भय है और इसी तरह ब्रह्माजी, विष्णुजी और महेशजी को भी मौत का डर है। कोई काल से न बचेगा तो जानो कि हममें और उनमें कुछ बड़ाई-छुटाई नहीं है। जैसे वह वैसे हम। इसी प्रकार जाति का झगड़ा है। वेद और शास्त्र आदि सब झूँठे और फलरहित हैं। केवल सब धर्मों से उत्तम धर्म हिंसा त्याग करना है। उससे बढ़कर और कोई धर्म नहीं है। कोई पाप औरों के दुःख देने से बड़ा नहीं है। चार प्रकार के दान सब दानों से बड़े हैं। पहिले रोगी के लिये औषध देना, दूसरे भयभीत को शरण में लेकर निर्भय करना, तीसरे भूखों को खिलाना और चौथे विद्यार्थी को विद्या पढ़ाना। अच्छी-अच्छी चिकित्सा और औषधों से शरीर को अरोग्य रखना चाहिये। धन-द्रव्य इकट्ठाकर अपने शरीर की पालना उत्तम है। नरक-स्वर्ग इसी संसार में है। जो आनन्द है, वह स्वर्ग है और दुःख नरक है। दूसरे के वश में रहना बन्धन है। इससे छूट जाना ही मुक्ति और मोक्ष है। दुःख से वासना समेत छूट जाना ही परममोक्ष है और वेदों ने जो दो मार्ग प्रवृत्ति और निवृत्ति कहे हैं, उनका तात्पर्य यह है कि जीवों का दुःख देना यही प्रवृत्तिधर्म है तथा दया और कृपा रखना जीवों का निवृत्तिधर्म है। देखो, जीवों का वध करके तिल, यव और घृत अग्नि में डालकर स्वर्ग की इच्छा करते हैं, इससे कोई मूर्खता अधिक नहीं है इसी प्रकार अपना बड़ा धर्म वर्णन किया जिसको त्रिपुर ने ठीक समझा और अपने गुरु की आज्ञा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से पुराने मत को छोड़ फिर नये मत में स्थित हुआ। फिर मुण्डी ने अपने मत की आज्ञा सुनाई और कहा जब तक मृत्यु न आवे सदा आनन्द और विहार करना चाहिये। जो कोई दान माँगे तो अपना शरीर भी दे देना उचित है। ऐसे मनुष्य के बराबर संसार में दूसरा नहीं। यदि कोई मनुष्य भिक्षुक या याचक कोई वस्तु माँगे और उसको वह वस्तु न दी जावे और मङ्गन अपना मनोरथ पाये बिना चला जावे तो उसका सब धन-द्रव्य नष्ट हो जाता है। अपने शरीर का जो गीदर, सियार और कुत्ते आदि के ग्रास से अधिक नहीं, उसका कुछ लोभ न करना चाहिये। उसको अन्त में मरने पर कृमि आदि खा डालेंगे। इसके लिये इतनी सामग्री इकट्ठी करनी क्या आवश्यक है। देखो, जब कि ब्रह्मा आदि ने परस्पर एक-दूसरे से विवाह कर लिया तब तो उनका धर्म बना रहा। गोत्र के छोड़ने में बड़ा पाप ठहराया और चार वर्ण को वर्णन करके चार भाइयों के जुदे-जुदे वर्ण कहते हैं, यह बहुत ही विरुद्ध है। सो तुमको उचित है कि सबका नाता बराबर समझो। कुछ किसी तरह का अन्तर और भेद मनुष्यों में बड़ाई और छुटाई का न जानना चाहिये। क्योंकि यह बातें केवल वाचालता और चतुरता की हैं। इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! इसी प्रकार की बहुत बातें सुनकर वेद के विपरीत सब मनुष्य हुये और सब स्त्रियाँ पातिव्रत-धर्म छोड़ स्वतन्त्र और कुमार्गी हुईं। जिसने जिसके साथ चाहा भोग विलास किया। सब कर्मों से अधिक चेटक ने प्रचार पाया। किसी स्त्री को बाँझ से सन्तानयुक्त कर दिया। किसी के पुरुष को जिला दिया, सिद्ध अञ्जन आँखों में दिलवा कर सब चीजें दिखलाई और सिद्धों के देश को प्रकट कर दिखाया। इसी भाँति हर प्रकार की माया और छल फैलाकर सब स्त्री-पुरुषों को अपने वश में कर लिया। यहाँ तक कि त्रिपुर से ले छोटे मनुष्य तक प्राचीन धर्म छोड़ अर्हण के धर्म पर स्थिर हो गये और देव-यजन पितृकर्म भूल ही गये। सब धर्म, तीर्थ, व्रत, यज्ञ और इसी प्रकार जो वेद के कर्म थे, सब छूट गये। केवल यह धर्म रह गया कि सबने रात को भोजन करना बन्द कर दिया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पाँचवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, स्त्रियों का धर्म तथा शिव और विष्णु की पूजा, यज्ञ, हवन, स्नान, दान, व्रत और शुभ कार्यादि सब छूट गये । वेद के विरुद्ध नास्तिक मत त्रिपुर भर में छा गया और धन ने वहाँ के वासियों से मुख छिपाया । चारों ओर से दरिद्री-ही-दरिद्र दिखाई देने लगे । हे नारद ! वह सब बातें तुम्हारे कारण हुईं । तीनों ने शिवजी की पूजा को छोड़ दिया और देश में उपद्रव होने लगा । देवताओं ने यह दशा देख आनन्द में मग्न हो इन्द्र को साथ लिये हुये मेरे पास जाकर सब हाल कहा । सो हम सबको साथ लिये हुये विष्णु के निकट गये और उनकी स्तुतिकर कहा कि आपके उपाय से बड़ा काम हुआ । अर्थात् आपके रूप अर्हण ने शिष्यों समेत त्रिपुर में जाकर नारद के चेला करने के उपरान्त सबको अपने मत में ले आये । अब निश्चय है कि आप त्रिपुर को जला देंगे । विष्णु बोले कि देवताओं के कार्य को पूर्ण करेंगे । यह कह हम सबको साथ लिये हुये शिवके समीप गये और देवताओं समेत स्तुति करने लगे । हमने विनय की कि देवताओं को आनन्द देकर दैत्यों का विनाश करो । सो शिवजी ने कहा कि हम देवताओं के कार्य को जान गये । अब तुरन्त त्रिपुर नष्ट हो जावेंगे । यह शिवजी से वचन सुन देवता अति प्रसन्न हुये और शिवजी की स्तुति की । जो इस चरित्र को सुने-सुनावेगा, वह अपने सब मनोरथ पावेगा ।

छठवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! तब गिरिजा अपने लड़के को दिखलाती हुई और जय शम्भु, जय शिवनाथ स्तुति गाती हुई शिव के पास आईं और कहा कि षडानन अपने पुत्र का खेल देखो । सो शिवने लड़के को गोद में बिठाया और प्रसन्नता के कारण लड़के को गोद में लेकर नाचने लगे । यहाँ तक कि सब विद्यमान देवता शिवजी के साथ नाचने लगे । तब बड़ा उत्सव हुआ । निदान गिरिजा षडानन को साथ लिये हुई भीतर घर में चली गईं और यह न जाना कि दैत्यों के हाथ से देवताओं को कितना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दुःख मिला है। यद्यपि देवताओं ने बहुत-सी स्तुति की और अपना कष्ट सुनाया पर शिव ने कुछ न सुना। तब विष्णु और हम सब शिव के द्वार पर बैठकर परस्पर कहने लगे कि अब कहाँ जावें, किससे कहें, क्या करें, हमारी नाव को कौन पार लगावेगा ? तो कुछ थोड़े-थोड़े शिव प्रसन्न हुये थे सो भी वह घर में चले गये। प्रायः हमसे कुछ सेवा में अपराध हुआ। देवताओं के बड़े भाग्य हैं कि इन अपकर्मों के करने पर भी शिव अब भी उन पर कृपा करते हैं। फिर देवताओं ने सम्मति की कि चलो स्त्रियों समेत शिवजी के भीतर जावें। यह अनुमति देवताओं की शिवजी जान गये और गणपति को भेजा। जिन्होंने दण्डों से मारकर सबको निकाल दिया। यहाँ तक कि इन्द्र भी दुःखी होकर गिर पड़े। तब कश्यपमुनि ने धैर्य धर कहा कि शिव ने यह क्या चरित्र किया कि दया छोड़ ऐसा दण्ड देते हैं। फिर जाकर विष्णु से यह सब हाल कहकर सुनाया कि कुछ हमारा मनोरथ पूरा नहीं हुआ, सब परिश्रम वृथा गया। विष्णुजी ने कहा कि धैर्य रक्खो, शिवजी अवश्य ही सब दुःख दूर कर देवेंगे और सबको शिवजी का एक मन्त्र जिसमें दश हजार अक्षर हैं, बताकर कहा कि इसका चौदह करोड़ जप करो तो शिवजी प्रसन्न होकर तुम्हारा मनोरथ पूर्ण करेंगे। तथाच सब देवता जपकर सिद्धि की बाट देखते थे कि शिव प्रसन्न हुये और कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा आदि ! तुम्हारी दृढ़ता धन्य है, हम प्रसन्न हैं। अपनी इच्छा के अनुसार वर माँगो। सो शिव को प्रसन्न पाकर सबने स्तुति की और कहा कि तीनों पुर का नाश करो। यह कह फिर देवता स्तुति करने लगे। शिव प्रसन्न होकर 'भविष्यति' ऐसा कहने लगे और दैत्यों पर कोपित होकर अपने बाण को छोड़ दिया जिसने सूर्य के समान प्रकाशवान् होकर सब दैत्यों को नष्ट कर डाला। पर जो शेष बचे, उन्होंने उन सबको अमृत के कुण्ड में जो वहाँ था, छोड़ दिया जिससे वह फिर लोहतन होकर बादल के समान गर्जें, बिजली के समान चमके और अग्नि के समान भड़ककर देवताओं को धमकाने लगे। शिवजी ने विष्णु और हमसे कहा कि तुम दोनों बछड़े बनकर वहाँ जाकर अमृत को पी लो, तुमको नहीं जानेंगे। सो हम और विष्णु बछड़े बन दो पहर दिन चढ़े वहाँ पहुँचे। हमको किसी ने न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देखा। विष्णु और हम लौटकर शिवजी की स्तुति करने लगे और शिवजी की लीला से वह अन्धे हो गये। शिवजी की स्तुति में हमने शिव का विराट्रूप वर्णन किया। यह सुन शिवजी ने कहा कि हे देवताओं! तुम चिन्ता मत करो, अब तुम वेग ही सिद्धि पावोगे। त्रिपुर नष्ट होंगे, इस बात का निश्चय मानना। यह कहकर शिवजी तो चुप हो गये और हम सब वहाँ स्थित रहे। इतने में नन्दीगणों के राजा बहुत गणों समेत आये। उनको देखकर देवताओं ने अति आनन्द माना और विनय की कि हे शिलादि मुनि के पुत्र, नन्दी! कोई ऐसा उपाय करो जिसमें तीनों पुर मिल जावें। नन्दी बोले कि शिवजी ने तुमको आज्ञा दी है कि तुरन्त एक रथ बनावो। सारथि और धनुष-बाण आदि सब नवीन ठीक करके रक्खो। हमको निश्चय है कि शिवजी अवश्य ही त्रिपुर का नाश करेंगे। यह कहकर नन्दी तो अपने घर चले गये और देवताओं ने अति प्रसन्नता के साथ जय-जय शिव कहा। इन्द्र ने विश्वकर्मा को बुलाकर शिवजी की आज्ञा सुनाई। विष्णु और हमने विश्वकर्मा का आदर करके कहा कि तुम शिव के सारथि होना और धनुष-बाण भी तय्यार कर देना। तुमको इन्द्र की अवश्य ही सहायता करनी चाहिये क्योंकि तुम्हारे समान देवताओं का और कोई सहायक नहीं है। तुम सब कारीगरों के राजा हो। विश्वकर्मा ने सदाशिव का ध्यान किया तो उसके मन में रथ के बनाने की युक्ति बैठ गई और उसने सब तय्यार कर दिया।

सातवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! विश्वकर्मा ने रथ तय्यार किया। वह रथ मानो सृष्टि भर के बाजार के समान था। उसमें सूर्य दाहिना चक्र अर्थात् पहिया, चन्द्रमा बायाँ पहिया और इसी प्रकार बारहों सूर्य सोलहों कला वर्तमान थीं। उस रथ को नाना भाँति के वस्त्रों से भूषित किया। मन्दरगिरि, उदयाचल, अस्ताचल और मेरु पर्वत, वर्ष, मास, तिथि, मुहूर्त, कला, पल, विपल, मेघ, आकाश दशों इन्द्रियाँ तथा इसी प्रकार और भी सब रथ के खण्ड हुये। चारों वेद उस रथ के घोड़े और व्यास आदि घोड़ों के चरानेवाले हुये। कर्म-धर्म के शास्त्र, पुराण और न्यायशास्त्र, ये सब मुख हुये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आश्रम-वर्ण आदि भी अङ्ग के अवयव हुये। गङ्गा आदि चार सागर चमर लेकर चारों ओर रथ के खड़े हुये। लोकालोक पर्वत आदि उसकी सीढ़ियाँ हुईं। प्रणव चाबुक, विष्णुजी बाण और हिमाचल धनुष हुआ। निदान जो ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त है, वह सब इस रथ में था। जब यह सामग्री तय्यार हो गई और वह रथ शिवजी के द्वार पर खड़ा किया गया तो शिवजी आये। तब सबों ने विनती की कि महाराज! आप रथ पर सवार होवें और त्रिपुर का नाश करके तीनों लोक को आनन्द देवें। शिवजी ने गणपति को बुलाकर उनकी पूजा की। फिर रथ पर चढ़कर आकाश और पृथ्वी को कँपाते हुये चले। सबने जय-जय शब्द पढ़ा। पृथ्वी इस रथ का भार न सहकर काँप उठी। जिस प्रकार रथ चलता था, उसी प्रकार वह टेढ़ी होती थी। निदान शिवजी अपनी सेना समेत देवताओं को प्रसन्न करते हुये चले। उस समय शिवजी के आश्चर्यदायक चरित्र से तीनों पुर इकट्ठे हुये। शिवजी ने उत्तम समय पाकर अपने धनुष में विष्णुपति अस्त्र को लगाया और अपने तेज को उसी अस्त्र में स्थित कर दिया। सो धनुष और बाण दोनों प्रकाशमान हुये। घास और फूस भी जो हरे-भरे थे, जलने लगे। सृष्टि भर में वह प्रकाश उदय हुआ। शिवजी ने उस समय मन में यह विचार किया कि अब तीनों पुर को जला दूँ। जब विलम्ब हुआ तब विष्णु, हम और इन्द्र ने विनती की।

आठवाँ अध्याय।

देवताओं ने कहा कि हे शिव! तुम्हीं देवताओं के रक्षक हो। इसी प्रकार बहुत स्तुति की और विनती की कि अब विलम्ब मत कीजिये, तीनों लोक जले जाते हैं; त्रिपुर को नष्ट कीजिये क्योंकि देवताओं का मन दुःखी है। शिवजी ने वही अस्त्र त्रिपुर पर छोड़ दिया जिसके छोड़ने से बड़ा शब्द हुआ कि जैसे प्रलयकाल के बादल गर्जते हैं। इतनी अग्नि उठी कि तीनों लोक जलने लगे और धरती काँप गई, पर्वत जल गये, शेष पृथ्वी को शिर पर न रख सके, नदियाँ सूख गईं, तथा दिग्गज और कूर्म जो पृथ्वी को सँभाले हुये हैं, सब बलहीन हो गये और सब मुनि तथा सिद्ध ध्यान छोड़ अचम्भे में हुये। सो तुरन्त बाण के पहुँचते ही तीनों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुर जलकर भस्म हो गये और बाण सबको जलाकर शिवजी के पास लौट आया। त्रिपुर में कोई मनुष्य जीता न बचा और सब दैत्य शिवजी के हाथ से मर कर मुक्ति पाकर शिवजी के गण हुये क्योंकि भक्ति का बीज नष्ट नहीं होता। उस समय शिवजी का स्वरूप ऐसा भयानक था और जाना था कि अब प्रलय में कुछ विलम्ब नहीं है। महातेज के कारण हम और विष्णु आदि कोई उनको आँखभर नहीं देख सकते थे। सब अपने आप काँपते थे। कोई मनुष्य शिवजी के समीप तक न जा सका। सो विष्णु और हमने दूर से स्तुति की और इसी प्रकार सब देवताओं ने दूर ही से एक-एक स्तुति शिवजी की धीरे-धीरे मधुरस्वर से गाई। सबसे पहिले विष्णु ने स्तुति की और कहा कि क्रोध को दूर करो। फिर हमने स्तुति की, फिर लोकपाल, देवता, सिद्ध, नाग, मुनि और वेदों ने अपनी-अपनी स्तुति को काव्य में युक्तिपूर्वक गाया। सो ऐसी बहुत-सी स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये। सबको दया और कृपा की दृष्टि से देख दिया। सो हम सब शिवजी को प्रसन्न पाकर उनकी सेवा करने लगे और चारों ओर से जय का शब्द हुआ।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शिवजी अति प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब हमसे अपनी इच्छा का वरदान माँग लो। देवताओं ने कहा कि आपने त्रिपुर को नष्ट करके हमको बड़ा आनन्द दिया। आपकी कृपा से हम सब कृतार्थ हो गये। जब-जब कोई हम पर कष्ट पड़े तब उसको दूर किया कीजिये और अपनी भक्ति हमको दीजिये। हमको अपना सेवक समझिये जो कोई अपराध हमसे होता रहे, उसको क्षमा करते रहिये। आप हम सबके पिता और राजा हैं। शिवजी ने ॐ कहकर हम सबको प्रसन्न किया। तब नृत्य और गान का बड़ा उत्सव हुआ। ऐसे आनन्द के समय में अर्हण ने अपने चारों शिष्यों समेत आकर शिवजी को प्रणाम किया और सब देवताओं को भी दण्डवत् की। फिर नम्र होकर शिवजी से कहा कि आपकी आज्ञा से मैंने यह मत सोचे-विचारे बिना वर्णन किया। मुझपर ऐसी कृपा हो कि मुझे ऐसे नष्ट कर्म का कोई पाप न लगे और आज्ञा दीजिये कि अब मैं क्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करूँ, कहाँ और किस स्थान पर स्थित रहूँ। अपनी पुस्तक को जो सोलह सहस्र है, क्या करूँ? मेरे शिष्यों के लिये क्या आज्ञा होती है। सो विष्णु ने शिवजी की आज्ञानुसार कहा कि हे अर्हण! तुम मरुस्थल में शिष्यों समेत जाकर स्थित रहो। शिवजी के स्मरण को मत भूलना और कलियुग के आने तक अपना मत प्रकट न करना। यह जो हुआ है, वह सब शिवजी की आज्ञानुसार हुआ है। तुमको कुछ पाप नहीं है। जब कलियुग का आरम्भ हो तो इधर-उधर अपने मत को फैलाना और सब स्त्री पुरुषों का मन अपने अधीन करना जिससे सब लोग महापापी हो जावेंगे। कलियुग पापों का बीज है, तुम्हारा मत कलियुग में भली भाँति चलेगा। सब लोग सन्मार्ग से बदल जावेंगे। यह कहकर विष्णु ने शिष्यों समेत अर्हण को बिदा किया। हे नारद! जब कलियुग आवेगा तो अर्हण मरुस्थल से निकलकर अपने मत को प्रकट करेगा। यद्यपि मयदानव त्रिपुर में था पर शिवजी की कृपा से बचा रहा और शिवजी की स्तुति कर हम सबको भी प्रणाम किया। शिवजी ने मयदानव की स्तुति सुनकर प्रसन्नता से कहा कि हे मयदानव! तुम निर्भय रहकर तलातल में स्थित हो। सो मयदानव वहाँ जाकर रहने लगा। शिवजी की यह कृपा मयदानव पर देखकर सब प्रसन्न हुये और शिवजी की बड़ी स्तुति करके हम सब अपने-अपने स्थानों को चले गये। शिव गिरिजा तथा पुत्रसहित कैलास पर्वत पर स्थित हुये और सब योगिनियों ने मङ्गल गीत गाये। जो मनुष्य इस चरित्र को सुनेगा, या सुनावेगा, उसका मनोरथ पूर्ण होगा।

दसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्माजी! मुझे त्रिपुर के दग्ध की कथा सुनने से अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई है। पर आप वर्णन करें कि मयदानव क्योंकर त्रिपुर के साथ न जला। ब्रह्माजी बोले कि मयदानव शिवजी का भक्त था, इससे वह इस अग्नि से बचा रहा। सो प्रकट हो कि कश्यप की स्त्रियों में एक स्त्री का नाम दनु था। उसके साठ लड़के वीर-धीर उपजे। वे तीनों लोक में प्रसिद्ध बुद्धिमान् थे। उनमें से यह एक मय भी था उसने भक्तिपूर्वक शिवजी का बड़ा तप किया। उसने काशी में भी बड़ा तप किया और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपनी इन्द्रियों को जीतकर ध्यानपूर्वक पञ्चाक्षरीमन्त्र भलीभाँति जपा। गर्मियों में अग्नि, वर्षा में वन में और शीतकाल में जल के भीतर बैठकर वह कठिन तप करता रहा। शिवजी की मृत्तिका की मूर्ति बनाकर उसने शिव को पूजा और उसी के प्रमाण चावल बिल्वपत्र और हर रङ्ग के सुगन्धित पुष्प चढ़ाये। वह स्थिर होकर दृढ़ आसन-ध्यान से श्वास रोक बैठ रहा। शिवजी ने बहुत प्रसन्न होकर वरम्ब्रूहि-वरम्ब्रूहि कहा पर मय ने इस वचन को न सुना। तब शिवजी ने अपनी मूर्ति को मयके ध्यान से खींच लिया। मय ने आश्चर्यकर नेत्र खोल दिये तो देखा कि शिवजी खड़े हुये हैं जिनका महागौर शरीर, भस्म लगाये हुये, भाल पर चन्द्रमा विराजमान और अपने मुख्य स्वरूप तथा मुख्य लक्षणों से सुशोभित हैं। ऐसा सुन्दर स्वरूप देख मय उठ खड़ा हुआ। उसने शिर झुकाकर प्रणाम और स्तुति करके कहा कि क्या वरदान माँगूँ? आप तो सब कुछ जानते हैं। यह कहकर वह चुप हो गया। शिवजी ने कहा—बहुत अच्छा, हम तुमको तुम्हारे हृदय की मनसा के अनुसार यह वरदान देते हैं कि तुम सब दैत्यों के आचार्य होकर सदा निर्दोष रहोगे। जिस तरह कि देवताओं में विश्वकर्मा हैं, उसी तरह तुम दैत्यों में होगे। तुमको जरा और मृत्यु प्राप्त न होगी और हमारे ध्यान में लगे रहकर नाना प्रकार की कारीगरी कर सकोगे। हम तुमको कभी नष्ट नहीं करेंगे व तुम्हारे मनमें कभी पाप न आवेगा। यह कह शिवजी ने, मयके शरीर को स्पर्श कर दिया जिससे मय को अति आनन्द प्राप्त हुआ और शिव अन्तर्धान हो गये। मय उस ओर को प्रणाम कर अपने घर गया। दैत्यों ने शिवजी के वरदान के कारण उसको अपना आचार्य बनाया। यह मयदानव का चरित्र अति पवित्र सुनने और सुनानेवाले को मयके समान कर देता है और कभी भ्रष्टबुद्धि के कारण उससे कोई पाप नहीं होता तथा अन्त में मुक्ति प्राप्त होती है।

ग्यारहवाँ अध्याय।

इतना कहकर सूत पौराणिक बोले कि हे शौनको! इस चरित्र के सुनने के उपरान्त नारद ने ब्रह्माजी से कहा कि हे पिता! अब शिवजी का और चरित्र वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! तुमको और तुम्हारी बुद्धि को धन्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है कि शिवजी की ऐसी भक्ति है! तुमने विष्णु की सेवा करके शिवजी की इतनी भक्ति पाई है। हमने वेदों को बहुत ही छाना है और कुछ जो वेदों से हमको निश्चय प्राप्त हुआ है, उसका मूल हम वर्णन करते हैं। अर्थात् पहिले हर मनुष्य असंख्य जन्म पर्यन्त हमारी पूजा करके विष्णु की भक्ति पाता है और फिर बहुत जन्म तक विष्णुजी के तप से शिवजी की प्रीति उपजती है। तुम निस्सन्देह शिवजी के बड़े भक्त हो। अब शिवजी का चरित्र वर्णन करते हैं! जिस तरह से शिवजी ने जलन्धर दानव को मारा और बहुत ही पवित्र इतिहास, जिसको सुनकर सब मनोरथ प्राप्त होते हैं, कहता हूँ। किसी समय एक बेर इन्द्र और सब देवताओं ने शिवजी के दर्शन के लिये एक सभा की जिसमें ग्यारहों रुद्र, बारहों सूर्य, आठों वसु, तेरहों विश्वेदेव, उञ्चास पवन तथा सब दिक्पाल और उपदेव आदि वर्तमान थे। सो इन्द्र ऐसी सभा को अपने साथ ले बड़े उत्सव के साथ रजोगुण धारण किये हुये शिवजी के दर्शन को चले। केवल शिवजी के दर्शन से उनको संसार में यश पाना स्वीकार था। शिवजी ने लीला करके अपना स्वरूप भयानक बनाया और अवधूतों के समान हो इन्द्र के नगर में प्रकट हुये। इन्द्र ने पूछा कि तुम कौन हो? जाना जाता है कि तुम शिवजी के सेवकों में से कोई हो। हमको बताओ कि शिवजी अपने स्थान पर रहते हैं। इस तरह से कई बेर इन्द्र ने पूछा पर कुछ उत्तर न पाया। तब इन्द्र ने बहुत क्रोध किया और भय देकर कहने लगे कि क्या तू भूत तो नहीं है जो उत्तर नहीं देता? अब वज्र से तुमको मार डालता हूँ। यह कह अपना वज्र शिवजी पर छोड़ा कि शिवजी की गर्दन में लगा और शिवजी वज्र की शक्ति के स्थित रखने के लिये नीलकण्ठ हो गये। अर्थात् श्याम चिह्न कण्ठ में धारण किया। वज्र भी जलकर भस्म हो गया और शिवजी का तेज इतना भभक उठा कि चारों ओर दाह फैल गया। सब देवता स्त्रियों समेत जलने लगे। यह दशा देखकर सब कम्पित हुये। बृहस्पति ने सदाशिव का ध्यान किया और पहिचाना कि ये ही शिवजी हैं। सो स्तुति करके इन्द्र से कहा कि यह जो खड़े हैं, सदा शिव हैं, तुरन्त दण्डवत् करके स्तुति करो। सो इन्द्र, बृहस्पति और सब देवता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्तुति करने लगे। इन्होंने कहा कि यह पाप हमारा क्षमा करो। हम आपके दर्शनों के लिए तत्पर थे पर आपने आपही कृपा करके गुप्तरीति से बेपरिश्रम हम सबको दर्शन दिये। ऐसी उत्तम और बृहत् स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये। उन्होंने कहा कि वरदान माँगो। यह तुम्हारी स्तुति सुनकर हम बहुत प्रसन्न हैं। देवगुरु ने कहा कि क्रोध दूर करके इन्द्र की रक्षा कीजिये। जो आपका नेत्र भाल पर तेजरूप है, उसकी तीक्ष्णता दूर हो जावे। यह वचन सुन शिवजी बोले कि वह अग्नि जो हमारे नेत्र से निकल गई है, उसको किसी प्रकार से अपने भाल में स्थान नहीं दे सकते। जैसा कि सर्प अपनी केंचुल को जुदा करके फिर उसको आप नहीं पहिनता पर तो भी हम कृपा करेंगे। इस तेज को हम बहुत दूर फेंक देंगे कि इन्द्र पर कष्ट न पड़े। जो तुमने इन्द्र को जीवदान दिया इसलिये तुम्हारा नाम जीव प्रसिद्ध होगा। यह सुनकर बृहस्पति और इन्द्र आदि अति प्रसन्न हुये और शिवजी ने तेज को हाथ से समुद्र में फेंक दिया शिवजी अन्तर्धान हो गये और सब देवता जय-जय कहते हुये अपने-अपने घरों को चले गये।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब कि शिवजी ने अपने नेत्र के तेज को दूर फेंक दिया तो वह सुरनदी सागर में गिर पड़ा और तुरन्त ही बालक के स्वरूप से प्रकट होकर अति भयानक रोदन करने लगा। पृथ्वी उसके शब्द से काँप उठी और वह शब्द चारों ओर पूरित हुआ। सब आश्चर्य करने लगे। पर्वत चलायमान हो उठे और समुद्र सूख गये। देवता और मुनि सब आश्चर्य में होकर हमारे पास जाकर कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! यह कैसा शब्द और कहाँ से आता है? इसको दूर करो कि देवताओं को आनन्द प्राप्त हो। हमने कहा कि यह शब्द सुनकर हम भी आश्चर्य में हैं। तुम सब अपने घरों को चले जाओ। हम जहाँ से यह शब्द आता है, वहाँ जावेंगे। फिर हमने सबको बिदा कर दिया और आप ढूँढ़ते हुये पहिले समुद्र के तट पर आये और देखा कि एक अतिसुन्दर बालक पड़ा हुआ है। हमको निश्चय हुआ कि वह शब्द इसी का था। हमको आते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देखकर समुद्र अपने पुत्र समेत हमारी ओर आया और प्रणाम के उपरान्त उस लड़के को हमारी गोद में डालकर आप खड़ा रहा। हमने पूछा कि यह किसका पुत्र है? समुद्र ने कहा कि यह बालक समुद्र में उपजा है, हमारा है। आप इसका नाम रख दीजिये और आपही संस्कार भी कीजिये। निदान यह वार्त्ता हो ही रही थी कि लड़के ने हमारी दाढ़ी पकड़ी और इतनी खींची कि हमारी आँख से आँसू निकल पड़े। हमने बहुत दुःखी होकर बड़ी युक्ति से अपनी दाढ़ी को छुड़ाया और समुद्र से कहा तेरा पुत्र अतिबलिष्ठ होकर तेरी कीर्ति को सब देशों में बढ़ावेगा। जो हमारी दाढ़ी को इसने इतना पकड़ा कि आँसू बहे, इससे इसका नाम जलन्धर होगा, यह तुरन्त ही युवा होकर वेदों को जानेगा। अब जहाँ से उपजा है, वहाँ जावे। यह कहकर हमने शुक्र को बुलाकर बड़ा उत्सव किया और राज्याभिषेक करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। जालन्धरी नगर उसकी राजधानी हुई जिससे देवताओं की सब बात बनी हुई बिगड़ गई। समुद्र ने बड़ी धूमधाम से उत्सव की रीतें पूरी कीं। हमने जलन्धर से कहा कि तुम्हारे कुल के गुरु शुक्र होंगे। यह कहकर हम तो अन्तर्धान हो गये और जलन्धर जालन्धरी को बसाकर रहने लगा। समुद्र प्रसन्नता से कपड़ों में न समाता था। उसने कालनेमि दैत्यों के राजा को बुलाकर अपने पुत्र की शक्ति का वर्णन किया। कालनेमि कुल समेत अति प्रसन्न हुआ और इच्छा की कि अपनी पुत्री जलन्धर को विवाह दूँ। फिर शुक्रजी की सम्मति लेकर बड़ी धूमधाम से विवाह हो गया। इन दोनों कुलों में सम्बन्ध के कारण अति प्रीति और मित्रता उपजी। जलन्धर पहिले वह आपही बड़ा बलवान् था। दूसरे जब शुक्र से सहायता मिली तो उसने तीनों लोक को अपने अधीन कर लिया और पुत्र समान प्रजा का पालन किया। जो दैत्य कि पाताल में भागकर स्थित हुये थे, वह भी जलन्धर की आज्ञा से निर्भय होकर जलन्धर के समीप आ पहुँचे और परस्पर मिल प्रसन्न हो रहने लगे। जलन्धर ऐसा राजा हुआ कि जिसके राज्य में कोई पाप नहीं होता था। उसकी आज्ञा से तीनों लोक में किसी ने अवज्ञा न की। वह ऐसा प्रतापवान् था कि भलों को सुख और बुरों को दुःख देता। उसने सबों से अपने-अपने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वर्ण के अनुकूल धर्म कराया और कोई कुमार्गी न होने पाया। उसका प्रताप और तेज तीनों भुवन में फैल गया।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! एक समय जलन्धर अपनी सभा में बैठा था सब वीर दैत्यों के अधिप, सब दैत्य और शुक्र आदि चारों ओर से अपने-अपने स्थान पर घेरा किये हुये थे कि इतने में राहु शीश रहित सभा में आये। उनको देख अति आश्चर्यकर जलन्धर ने शुक्र से पूछा कि हे शुक्र! इनका शिर किसने काट डाला है। शुक्र बोले हम पुरातन कथा कहते हैं, सुनो। जब देवता और दैत्य परस्पर लड़े थे और देवता परास्त हुये तब दैत्यों में राजा बलि थे और शिवजी के दृढ़भक्त थे। सब देवता दैत्यों से हार-कर बिष्णु की शरण में गये। विष्णु ने देवताओं पर दयाकर कहा कि तुम सब जाकर दैत्यों से सलाह कर लो और समुद्र को दोनों समूह भली भाँति मथो। तब समुद्र से अमृत निकलेगा। उसको तुम सबों को पिलाकर दैत्यों के साथ छल करेंगे। जब कि तुम अमृत पी लोगे तब दैत्यों पर प्रबल हो जाओगे। सो दैत्यों के राजा बलि के पास आकर इतनी मित्रता उपजाई कि दैत्य और देवता दोनों मन्दरगिरि को उखाड़कर समुद्र के तट पर गये तथा वासुकिनाग को मन्दरगिरि में लपेटकर रज्जु और मथानी बना समुद्र को मथने लगे। वे सब बल में समान थे। तब इन्द्र के हितैषी विष्णुजी ने बड़ा छल किया और पहिले देवताओं को वासुकिनाग के शिर की ओर खींचने को कहा। सो दैत्यों ने विष्णुजी के छल को न जानकर आप इच्छा की कि हम शिर की ओर खींचेंगे। हम क्यों पूँछ की ओर लगें ? सो सब दैत्य शिर की ओर तथा देवता पूँछ की ओर वासुकि-नाग को मन्दरगिरि में लपेटकर समुद्र मथने लगे। और आप विष्णुजी भी देवताओं के साथ मथने लगे। दोनों ही गणपति की पूजा को पहिले भूल गये। इसी से पहिले हलाहल विष उपजा जिसके निकलने से सब जलने लगे। देवता और दैत्य दुःखी होकर भाग चले। इन्द्र और विष्णुजी ने देवताओं समेत शिवजी की शरण में जाकर स्तुतिकर शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी उस हलाहल विष को आप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पी गये जिससे चारों ओर आनन्द फैला और फिर समुद्र मथने लगे। धीरे-धीरे सब रत्न निकाल लिये पर विष्णु जी ने छल करके उत्तम-उत्तम रत्न तो देवताओं को दिये और मद्य दैत्यों को देकर अमृत देवताओं को पिलाया। उस समय राहु देवताओं के साथ बैठा था कि विष्णुजी ने उसका शिर काट डाला। सो उस जगह पर देवताओं और दैत्यों से बड़ा युद्ध हुआ जिसमें करोड़ों दैत्यों के स्वामी मारे गये। जो शेष रहे वह पाताल में जाकर बसे। उस समय वे भयभीत थे, पर जब से आपका अवतार हुआ है और आप राजा हुये हैं तब से दैत्यों को पाताल से प्रकट होने का समय मिला है। यह दशा सुनकर जलन्धर इस कारण कि उसके पिता समुद्र को देवताओं और दैत्यों ने मथन किया था अति कुपित हुआ। अग्नि के समान प्रज्वलित होकर नेत्र लालकर दाँतों से अपने ओष्ठ चबाने लगा और घस्मरदूत को बुलाकर कहा कि तुम इन्द्र के पास निर्भय होकर जाकर कहो कि तुमने हमारे पिता समुद्र को क्यों मथा था और सब रत्न उसके निकाल लिये। आपने देवताओं समेत अमृत पीकर दैत्यों को मद्य पिलाई और ऐसे छल से दैत्यों को परास्त किया। क्या तुमने यह बात अच्छी की है। वरन् इसका फल तुमको मिल जावेगा। सो वह दूत चलकर इन्द्र की सभा में गया और अहंकार से अपना मस्तक इन्द्र के सामने न झुकाया। उसने कहा कि जलन्धर ने जो समुद्र का पुत्र है, तुमको यह संदेशा भेजा है कि जो रत्न तुमने समुद्र से निकाल लिये हैं, वह सब हमको सौंपो तो अभी सब बात बन जावेगी। क्योंकि जो दिन का भूला हुआ रात को लौट आवे तो वह भूला नहीं कहा जाता। तुम हमारी शरण में आवो नहीं तो तुमको इसका फल दिया जावेगा। इन्द्र यह सब सुनकर जलन्धर को बड़ा बलवान् और पराक्रमी समझ कुछ तो भयभीत हुआ और कुछ क्रोधित होकर कहने लगा कि तुम हमारी ओर से जलन्धर को यह उत्तर दे दो कि पहिले किसी समय में पहाड़ों ने हमारे लोक में उड़कर उसको नष्ट कर दिया था और बहुत से यहाँ के वासियों को मार डाला था। हमने पर्वतों के पंख काट डाले और जो शेष रह गये, वह डूबकर समुद्र में छिप गये। समुद्र ने उनको रक्षापूर्वक रक्खा। सिवाय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उनके और भी बहुत बेर हमारे शत्रुओं को समुद्र ने स्थान दिया है और दैत्यों को भी समुद्र ने छिपाया था। उसी वास्ते हमने समुद्र को मथा है और उसके रत्न निकाल लिये। हमारा प्रताप और भाग्य इसी प्रकार का हैं। पूर्व में एक और शत्रु देवताओं का उपजा था जिसको शंखासुर कहते हैं। हमने उसे भी तुम्हारे समान अपना प्रताप दिखाया था और हमारे भाई ने उसका वध कर डाला जिसको समुद्र ने भी न बचाया। इसलिये हे दूत! जलन्धर से कह देना कि क्यों बुद्धिहीन होकर ऐसे दुर्विचारों में पड़ता है। ऐसा संसार में कौन देवता और दैत्य है जो मुझे दुःख दे। क्या वह हमारे बल और प्रताप को किसी से नहीं सुनता। हमने बड़े-बड़े दैत्यों को अपने छोटे भाई की सहायता से मार डाला है। जो जलन्धर अपनी भलाई चाहता हो तो इतने हाथ पाँव न फैलावे। जो इस बात को न मानेगा तो सिवाय दुःख और लज्जा के और कुछ न पावेगा। यह सुनकर दूत ने कहा कि हे इन्द्र! आज के दिन तुम अहंकार मत करो क्योंकि जलन्धर ने संसार भर का राज्य पाया है। उसी के अधीन संसार भर है। तुमको उचित है कि गर्व छोड़कर सब रत्न जलन्धर को सौंपो और आप चलकर जलन्धर की छाया में रहकर सदा आनन्द में रहो, नहीं तो तुमको बहुत ही कष्ट होगा। इन्द्र ने क्रोध करके कहा कि जो हमने पहिले कहा है, वही तुम जाकर जलन्धर से कह दो। जो ईश्वर की इच्छा होगी, वह होगा। तुम इतनी वार्त्ता और तकरार क्यों करते हो। यह कह इन्द्र ने दूत को विदा किया तथा आप क्रोध और भय की दशा में चिन्तारूपी सागर में डूब गया। दूत ने जलन्धर के पास पहुँच इन्द्र के प्रश्न-उत्तर की वार्त्ता सब विस्तार से कह सुनाई। यह सुन जलन्धर क्रोधरूपी अग्नि से जल उठा और उसके ओष्ठ फड़कने लगे।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि जलन्धर ने अति क्रोधित होकर सब देवताओं के परास्त करने का उद्योग किया और एक बड़ी भारी सेना दैत्यों की इकट्ठा की। राक्षस, दैत्य और दानव करोड़ों इकट्ठे हो गये। शुम्भ-निशुम्भ के समान उस वीरसेना में यूथप थे। कालनेमि भी और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यूथपो समेत आया। सो ऐसी उत्तम सेना लेकर जलन्धर देवलोक को चला। उस समय पृथ्वी काँप उठी और दैत्य मार्ग में गर्जते हुये चले। देवलोक में पहुँचकर उसको चारों ओर से घेर लिया। जलन्धर नन्दन वन में स्थित हुआ। यह दशा देखकर इन्द्र क्रोधित हुये और अपने गुरु बृहस्पति की आज्ञा लेकर देवताओं की सेना लिये हुये अपने पुर से बाहर आये। दोनों सेना परस्पर लड़ने लगीं और नाना प्रकार के शस्त्र चलने लगे। देवता और दैत्य बड़ी प्रसन्नता से परस्पर एक दूसरे पर वार करने लगे। लहू की नदी बह निकली। दोनों ओर से बड़े-बड़े भारी भट मरे। उनके शव युद्धस्थल में ढेर के ढेर हो गये। हाथी, घोड़े, रथ और प्यादे आदि तथा देवता और दैत्य मृत्युवश हुये। पर दैत्य देवताओं से जो मारे जाते थे, उनको शुक्र मृतसंजीवन विद्या की शक्ति से जिला देते थे। अर्थात् शुक्र मन्त्र को जल पर पढ़ मरे हुये दैत्यों के भाल पर छिड़कते थे और वह जी उठते थे। इसी प्रकार द्रोणगिरि से बृहस्पति जिलानेवाली ओषधि ले जाकर देवताओं को जिलाया करते थे। जहाँ इस तरह का गुरु हो वहाँ क्या भय हो सकता है। निदान देवता और दैत्य फिर लड़ने लगे और किसी ने विजय न पाई। जब जलन्धर ने देखा कि देवता मरकर फिर जी गये तो बड़ा क्रोधित हुआ और शुक्र से बहुत विनती कर पूछा कि हमने बहुत देवताओं को मारा पर वे सब जी उठे। हम केवल यह बात जानते थे कि संजीवनी विद्या केवल आपही जानते हैं, दूसरा कोई नहीं जानता। शुक्र ने कहा कि एक पवित्र ओषधि जिलानेवाली द्रोणगिरि पर्वत पर है, उसको बृहस्पति लाकर देवताओं को जिला देता है। जो तुमको विजय की इच्छा है तो द्रोणगिरि को जड़ से उखाड़कर समुद्र में डलवा दो। जलन्धर ने प्रसन्न होकर द्रोणगिरि को मूल से उखाड़ा और समुद्र में डाल दिया और फिर युद्धस्थल में जाकर बड़ी लड़ाई की तथा हस्तलाघवता और वीरता से सामना किया। जो दैत्य कि मारे जाते थे, शुक्र उनको तुरन्त जिला देते थे। पर जब कि बृहस्पति देवताओं को मरा हुआ देखकर फिर द्रोणगिरि पर ओषधि लेने गये तो वहाँ पर्वत ही को न देखा। ओषधि कहाँ हो सकती थी। बृहस्पति ने अति चिन्तित होकर समझा कि जलन्धर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ने उसको नष्ट कर दिया है। उन्होंने अति भय से लौटकर दूर से कहा कि हे देवताओं! युद्ध करना छोड़ दो। जलन्धर बड़ा बलवान् है। यह रुद्र की अग्नि से उपजा है, परास्त न होगा। देखो, इसने तो पहाड़ को मूल से खोद डाला है। यह सृष्टि भर का राजा होगा। अब तुम समय को देखते रहो। यह गुरु का वचन सुन देवता युद्धस्थान से भाग चले और जिसको जहाँ जगह मिली, वह वहीं जा टिका। दैत्यों ने यह दशा देखकर भयानक नाद किया और विजय के बाजे बजने लगे। जलन्धर देवताओं के पुर में चला गया। इन्द्र और बड़े-बड़े देवता आदि सब सिमिट के एक कुन्तल में जा छिपे। वहाँ भी उनका भय न गया। इसी प्रकार उन्होंने बड़े-बड़े कष्ट उठाये। जलन्धर देवताओं को वश में करने के अनन्तर राज्य करने लगा। जहाँ पर कोई देवताओं की राजधानी थी, वहाँ दैत्यों ने अपनी राजधानी ठहराई। चन्द्र, अनल, यम, कुबेर, सोम, सूर्य और पवन आदि सब देवताओं के विभिन्न पदों पर दैत्यों को नियत किया। वह ऐसा प्रतापी और शक्तिमान हुआ कि जिसको हम कह नहीं सकते। उसने संसार भर का राज्य करके पुत्रों के समान प्रजा पाली। फिर शुम्भादि को राज्य दे आप सेनासमेत देवताओं के ढूँढ़ने को सुमेरु पर्वत पर चला।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! देवताओं ने जलन्धर को आते हुये देखा और बहुत घबड़ाकर विष्णु का स्मरण किया। वे हाथ जोड़ शिर झुकाते और स्तुति कहते कि जय विष्णु, जय विष्णु। ऐसा बारम्बार कहने लगे और विनती की कि आप तो सदासे देवताओं के सहायक हैं। हम पर इस समय बड़ा कष्ट है, आप प्रकट होकर दैत्यों को नष्ट करें। अब हमारे सम्मुख जलन्धर चला आता है। जो उचित हो, वह कीजिये। आपने देवताओं को दुःखी देख मत्स्य अवतार लिया और मुनि के सब दुःख दूर करके आप प्रलय में विराजमान हुये। फिर देवताओं के निमित्त कूर्मावतार लेकर पर्वत को पीठ पर रक्खा। जब हिरण्यलोचन बड़ा बलवान् होकर देवताओं को दुःख देने लगा तब तुमने युद्ध कर उसको नष्ट कर दिया। उसके भाई ने जब कि प्रह्लाद के साथ बड़ी हठ की तो तुमने नृसिंह अवतार धारण कर उसका उदर विदीर्ण कर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दिया। केवल देवताओं के कार्य सुधारने को तुमने वामन होकर बलि के साथ छल किया और सब पृथ्वी उससे निकाल कर हम सबको दे दी। परशुराम का अवतार लेकर सहस्रबाहु के गर्व को नष्ट किया और राजा बिना पृथ्वी को कर दिया। आप शिवजी की भक्ति में स्थित होकर सर्व संसार का उपकार करते रहे और जब कि रावण ने शिव के वरदान से बड़ी पदवी पर पहुँच कर सबको दुःख दिया तो तुमने रामचन्द्र होकर शिव से बाण लिया। फिर उसी बाण से रावण को मार डाला। तुमने कृष्ण अवतार ले पृथ्वी भर के भार को उतारा। जब दैत्यों ने वेदों को छीन लिया और पृथ्वी भर म्लेच्छों से पूर्ण हो गई तब तुमने बौद्धरूप हो वेदों को उनसे छीन लिया और वेदों की निन्दाकर दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट कर दी। तुम कलियुग में कल्की अवतार धारण कर सब मलेच्छों को नष्ट करोगे। इसी प्रकार तुम भक्तों के लिये असंख्य अवतार ले उनके दुःख दूर किया करते हो। आप कष्ट सह भक्तों को आनन्द देते हो। अब हमारे दुःख को दूर कीजिये। इस समय हमारा रक्षक तुम्हारे सिवाय कोई नहीं। इस समय अपने पीत-वसन की झलक क्यों नहीं दिखाते। इसी प्रकार देवताओं ने बड़ी स्तुति की। यह स्तुति जो कोई सुने-सुनावेगा, वह कभी कष्ट न पावेगा। निदान ऐसी स्तुति पढ़ते विष्णु ने जाना कि देवताओं पर कुछ दुःख पड़ा है। वे तुरन्त उठकर गरुड़ पर चढ़े। इतनी शीघ्रता विष्णु की लक्ष्मी ने देखकर कहा कि इतनी जल्दी कहाँ जाते हो? विष्णु ने कहा तुम्हारे भाई जलन्धर ने देवताओं पर चढ़ाई की है और वे हमारी स्तुति कर रहे हैं। सो हम उनकी रक्षा को और दैत्यों के साथ युद्ध करने को जाते हैं। लक्ष्मी ने जलन्धर के प्रेम के कारण कहा कि तुम हमारे भाई जलन्धर को किस तरह मारोगे? विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलिष्ठ और पराक्रमी है। हमारे मारे से नहीं मरेगा। वह रुद्र का अंश है और ब्रह्मा के वरदान से ऐसे कष्ट देवताओं को दे रहा है। पर जो मैं नहीं जाता हूँ तो हमारा नाम मिट जावेगा और वेद के मार्ग भ्रष्ट हो जावेंगे। यह कहकर विष्णु चले और शङ्ख, चक्र, गदा, असि तथा बाण लिये हुये गरुड़ को तत्ता किया और जहाँ पर जलन्धर था, जा पहुँचे। उस समय गरुड़ ने शीघ्र ही अपने परों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को डुलाया और वायु के समान जो मेघों को उड़ा देती है, दैत्यों को उड़ा दिया। जलन्धर ने पवन से दैत्यों को दुःखी देखकर बड़ा क्रोध किया और सिंह के समान विष्णु पर जा पहुँचा। विष्णु और जलन्धर से बड़ा युद्ध हुआ और दोनों ओर से बहुत ही बाण चले। बाणों के छा रहने से आकाश दिखाई नहीं देता था। विष्णु ने जलन्धर के रथवाले घोड़े, छत्र, ध्वजा और धनुष काट शङ्खध्वनि की और एक बाण जलन्धर के हृदय में क्रोध से मारा। जलन्धर ने भारी गदा गरुड़ के शिर पर मारी कि गरुड़ न सहकर धरती पर गिर पड़े। विष्णु ने निर्भय होकर असि लेकर गदा काट दी। जलन्धर ने क्रोधकर विष्णु के हृदय पर एक तमाचा मारा और फिर दोनों लिपटकर भलीभाँति मल्ल युद्ध करने लगे। नाना प्रकार के दाँव-पेंच हुये। जब दोनों में से कोई न हारा तब विष्णु ने बादल के समान गर्जकर कहा कि हे जलन्धर! तेरे समान हमने तीनों लोक में कोई वीर नहीं देखा। तुम्हारे सिवाय और कोई हमारा तेज नहीं सह सकता। हमने कुछ अपने बल को नहीं रख छोड़ा और तुम्हारे पराक्रम से हम प्रसन्न हैं हमसे वरदान माँग लो। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! राजनीति का मुख्य तात्पर्य यही है कि उपाय से अपना मनोरथ पूरा करे। जलन्धर ने यह सुनकर विष्णु से कहा कि हम आपसे यही वरदान माँगते हैं कि आप लक्ष्मी हमारी बहन समेत हमारे घर आकर स्थिर होवें। इसी प्रकार जितने देवता हैं, वह सब हमारे वश में होकर हमारे घर में रहें। विष्णुजी जलन्धर का यह वर माँगना सुनकर अति दुःखी हुये और मानकर जलन्धर के घर में स्थित हुये। जलन्धर तीनों लोक को जीतकर बड़े आनन्द से रहने लगा।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जलन्धर ने तीनों लोक जीतकर देवताओं के बदले दैत्यों को नियत कर दिया और संसार भर के राजों को जीत लिया। सब देवता, गन्धर्व और सिद्धादिकों को अपने अधीन कर लिया। संसार में जितने बहुमूल्य रत्न और विचित्र तथा अद्‌भुत वस्तुएँ हैं, उनको ले लिया। सब दिक्पालों को बुलाकर अपने नगर में प्रजा के समान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बसा दिया और उनके बदले दैत्यों को नियत कर दिया। इन्द्र से ऐरावत हस्ती छीन लिया। कल्पवृक्ष भी उसके वश में आ गया। उच्चैःश्रवा घोड़ा भी उसकी हयशाला में बँध गया और सबसे मुख्य-मुख्य वस्तुएँ जैसे वरुण का छत्र, प्रजापति का रथ और अनल के अंकुश छीनकर उसने अपने अधीन कर लिया। फिर उसने बड़े दया धर्म से आज्ञा चलाई और वह पुत्र के समान प्रजा का पालन कर दैत्यों में अद्वितीय गिना गया। उसके राज्य में किसी को कुछ दुःख न था, न देश में कहीं कुछ किसी प्रकार का कष्ट था और न चोरी होती थी। चारों वर्ण अपने-अपने धर्म और आश्रम में स्थित थे। कोई मनुष्य अधर्मी न था। तीनों प्रकार के दुःखों में किसी को एक भी न था। वेद के विरुद्ध कोई कर्म नहीं होता था। कोई मनुष्य अकालमृत्यु न पाता था। किसी मनुष्य के मन में पाप न उपजता था। सब जीव स्वाभाविक द्वेष उचित न जानकर मित्रता और प्रीति से बसेरा करते थे। छलछिद्र तो था ही नहीं। स्त्रियाँ सब अपने पातिव्रत धर्म में स्थित थीं। ब्राह्मण धर्म की कथायें कहा करते थे। कोई मनुष्य दरिद्री न था। हे नारद! यह कुछ आश्चर्य की बात नहीं है क्योंकि शिवजी की लीला ऐसी ही बलवान् है। उस समय लोक में अर्थात् जलन्धर के राज्य में सिवाय देवताओं के और किसी के मन में कुछ कष्ट न था। एक दिन सब देवता इकट्ठे होकर शिवजी का स्मरण और ध्यान कर स्तुति करने लगे और देवताओं ने कहा कि हे शिवजी! अब कोई उपाय और मति नहीं रह गई, अब तो आपही की कृपा होनी चाहिये। क्योंकि हमको विष्णुजी का बड़ा भरोसा था। सो उन्होंने अपनी स्त्री लक्ष्मी समेत जलन्धर के घर में डेरा किया। जब तक कि हमारा काम विष्णु से निकलता था, हम आपको श्रम न देते थे। यह सुन शिवजी ने आकाशवाणी से कहा कि हे देवताओं! कुछ भय मत करो, हम तुम्हारी आशा पूर्ण करेंगे। देवताओं ने यह सुनकर बड़ा आनन्द मनाया। हे नारद! शिवजी ने तुम्हारे मन में युक्ति सुझाई जिससे तुमने जलन्धर के राज्य में जाकर विष्णु आदि को देखा। जलन्धर ने तुमको देखकर अगवानी की और तुम्हारी पूर्ण पूजा की। कुशल-प्रश्न के उपरान्त आगमन का कारण पूछा और कहा कि जो कुछ आपने संसार में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आश्चर्यदायक चरित्र देखा हो तो वर्णन करो। तब तुमने उत्तर दिया कि एक दिन हम कैलास में गये जो सृष्टि भर में श्रेष्ठ है। शिवजी की स्तुति और प्रणाम के उपरान्त इतनी सामग्री देखकर मैं आश्चर्य में रहा और विचार किया कि इतनी सामां किसी के यहाँ न होगी। सो मैं तुम्हारी सामां देखने आया हूँ। यह सुनकर जलन्धर ने अपनी सामग्री तुमको दिखाई और पूछा कि हे नारद ! सच कहना दोनों जगह से कहाँ सामग्री अधिक है। नारद ने कहा कि वास्तव में तुम्हारे घर सब रत्न वर्तमान है। पर दारारत्न नहीं है। शिवजी के घर ऐसी स्त्री है जिसके समान संसार में और कोई स्त्री नहीं। जिसकी सुन्दरता पर ब्रह्मा भी मोहित हुये थे, उसकी उपमा हम किससे देवें। उसने शिवजी को जो कामदेव के शत्रु कहलाते हैं, वश कर लिया है। ब्रह्मा ने बहुत चाहा कि दूसरी स्त्री शिवरानी के समान बनावें पर न बना सके। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह कहकर तुम चले गये और जलन्धर कामज्वर से रोगियों के समान दुःखसागर में डूब गया। वह काम के वश हो शिवजी को देवताओं के समान समझ राहु को शिवजी के पास भेजा। हे नारद ! शिवजी के असंख्य चरित्र हैं। उन्होंने जलन्धर का ज्ञान खींच लिया। शिवजी की लीला बड़ी आश्चर्य देनेवाली है। सो राहु अपने स्वामी की आज्ञा मानकर शिव के पास छः डेवढ़ी तक चला गया। जब सातवें द्वार में, जहाँ नन्दी गणों के राजा द्वारपाल बनकर बैठे थे, गया तो नन्दी ने रोका और शिवजी की आज्ञा लेकर राहु को अपने साथ सदाशिव के पास ले गया। शिवजी ने भौंह की सैन से आज्ञा दी कि आने का कारण कहो। राहु ने कहा कि हे शिवजी ! जलन्धर जो सबसे श्रेष्ठ है तथा जिसके अधीन देवता और विष्णु भी हैं, उसकी आज्ञा सुनिये। उसने कहा है कि तुम तो तपस्वी, योगी, नग्न शरीर और मरघटों में पड़े रहते हो, भोगविलास से कुछ प्रयोजन नहीं रखते और हड्डियों की माला पहनकर अवधूतों के समान रहते हो। तुमको ऐसी कोमलाङ्गी स्त्री से क्या प्रयोजन है ? तुम तो वन के रहने वाले हो। ऐसी स्त्री तो हमको चाहिये। इससे तुमको उचित है कि ऐसी दारारत्न हमको दो। यह सुनकर शिवजी कुपित हुये और तुरन्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ही शिव के भवों में से एक मनुष्य उपजकर आगे आ खड़ा हुआ जिसका अति भयानक शरीर, वज्र के समान दृढ़, सिंह का-सा स्वरूप, तीक्ष्ण जिह्वा किये और जलती हुई अग्नि के समान सब बाल खड़े हुये थे। इसी प्रकार महाभयानक डील-डौल से विष्णु का चौथा अवतार जाना जाता था। शिवजी की इच्छा समझकर राहु को खा लेने के उद्योग से चला। यद्यपि राहु भागा पर उस नये उपजे हुये गण ने जाने न दिया और पकड़ लिया। राहु अति कम्पित हो शिवजी से कहने लगा कि मुझको ब्राह्मण जानकर छुड़ा दो। यह मुझको खाये डालता है। मैं तो आपका ब्राह्मण हूँ। यह विनय के वचन राहु से सुनकर शिवशंकर ने कहा कि छोड़ दे। सो गण ने राहु को छोड़ शिवजी के पास आकर विनय की कि मैं बहुत भूखा हूँ। मेरे लिये कुछ भोजन बतला दीजिये। भूख की आग से मैं जला जाता हूँ। शिवजी ने कहा कि जो तुम ऐसे भूखे हो तो अपने हाथ और पाँव को खा डालो। गण ने वही किया कि सिवाय शिर के अपने सब अङ्ग खा डाले। यह दशा देख शिव अति आश्चर्य में हुये और अति प्रसन्न होकर कहा कि हम तेरी आज्ञा के पालन से अति प्रसन्न होकर तेरा नाम कीर्तिमुख रखते हैं। तुम हमारे द्वारपाल होगे जो कोई पहिले तेरी पूजा न कर लेवेगा, उसको हम स्वप्न में दर्शन न देंगे। हे नारद ! उस दिन से कीर्तिमुखगण शिवजी के द्वार पर रहते हैं। कीर्तिमुख के पूजे बिना शिवजी की सब पूजा नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। निदान जब कीर्तिमुख के हाथ से छूटकर भागे तो कैलाश पर्वत के एक गढ़े में ऐसे गिरे कि राहु के अङ्ग भङ्ग हो गये। सो राहु ने जलन्धर के समीप आनकर सब हाल कह सुनाया।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! दूत के वचन सुनकर जलन्धर अति कुपित हुआ और सब दैत्यों को आज्ञा दी कि सब इसी दिन शिव के कैलाश पर्वत पर चढ़ाई करें। सब सरदार और सेनाधिप अपने-अपने शस्त्र लिये हुये चतुरङ्गिणी सेना से तैयार हों। एक कोटि असुर, पाँच सौ कबन्ध और कुलधूम्र सब चलें। कालक, ध्रुव और मुरज कालनेमि भी जो दैत्यों में प्रसिद्ध हैं, साथ रहें। यह आज्ञा देकर आप भी घर से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलता-भुनता हुआ निकला। उस समय जलन्धर की स्त्री ने बहुत समझाया और हाथ जोड़कर मना किया। उसने कहा कि शिव से कोई युद्ध करके न जीता, आप देवताओं के बड़े सहायक विष्णुजी वह तो तुम्हारे घर हैं। पर जलन्धर ने मृत्यु के वश होने से कुछ न माना। हे नारद ! जब मृत्यु आती है तो बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। जो मनुष्य चलने के समय स्त्री और ब्राह्मण का आदर नहीं करता, वह फिर नहीं लौटता। वरन् वह काल के मुख में पड़ जाता है। सो सब सेना के आगे शुक्र, फिर जलन्धर और फिर उनके पीछे सब सेना चली। पहिले तो जलन्धर को राहु दिखाई दिया और फिर मुकुट शिर से गिर पड़ा। यह बुरे शकुन सामने हुये। शुम्भ-निशुम्भ दोनों सेनानी नियत किये गये। कालनेमि भी आज्ञा पाकर सेना सहित चला। इसी प्रकार और बहुत दैत्यवंशी राजा कैलाश पर्वत को चले। जब जलन्धर सेना सहित कुछ दूर नगर से बाहर गया तब विष्णु ने देवताओं को बुलाकर कहा कि अब कष्ट दूर होने का समय है। तुम गुप्त शिवजी के समीप जाकर जलन्धर की चढ़ाई के समाचार कहो। सो देवता छिपे-छिपे शिवजी के पास पहुँचकर स्तुति कर जैसा विष्णुजी ने कहा था, सब विनय करने लगे और जलन्धर के वध की इच्छा विनयपूर्वक प्रकट की। शिवजी ने हँसकर कहा कि अब धैर्य रक्खो तुमको कुछ कष्ट न होगा। यह कह फिर विष्णुजी को बुलाकर कहा कि तुमने जलन्धर को क्यों नहीं मारा और वैकुण्ठ छोड़ उसके घर में क्यों जा रहे? विष्णु ने कहा कि जलन्धर बड़ा बलवान् है, कोटि-यत्न से भी वह नहीं मर सकता। तुम्हारा अंश होने के कारण उस पर कोई शस्त्र नहीं चलता। मैंने उसके साथ बहुत युद्ध किया पर वह न मरा। वह आपही के मारे मरेगा। आप कृपा करके उसको मारें। तुम तो पृथ्वी से लेकर आकाश तक के स्वामी और तीनों गुणों से परे हो। शिवजी ने कहा कि जलन्धर हमारे अंश से उपजा है, इससे उस पर हम त्रिशूल नहीं चला सकते। हथियार जो त्रिशूल के सिवाय हैं, वह जलन्धर पर काम न करेंगे। इससे हमने एक उपाय सोचा है, अर्थात् तुम सब अपना-अपना तेज देते जाओ। हम उसका एक शस्त्र बनावेंगे और उसी शस्त्र से जलन्धर को जलावेंगे। यह सुन हम,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विष्णु, इन्द्र और देवताओं ने अपना-अपना तेज दे दिया। सो हम सबका तेज इकट्ठा होकर प्रज्वलित हुआ और शिवजी ने उनमें से एक शस्त्र बनाया जिसका नाम सुदर्शनचक्र रक्खा गया। वह कोटि सूर्यवत् प्रकाश मान और अग्नि समान प्रज्वलित था। जो तेज कि सुदर्शन चक्र के बनाने से शेष रह गया था, उससे वज्र बनाया जिससे देवताओं को अति आनन्द प्राप्त हुआ। सुदर्शनचक्र को देखकर विष्णु और वज्र को देख कर इन्द्र अति प्रसन्न हुये और दैत्यों के वध का पूर्ण विश्वास हुआ। इतने में जलन्धर कैलाशपर्वत के समीप पहुँच गया। उस पर्वत की एक कन्दरा में सेना सहित डेरा किया। उसको देखकर सब देवता छिपे-छिपे अपने-अपने स्थानों को जहाँ पहिले रहते थे, चले। शिवजी के गणों ने दैत्यों की सेना के आने के पहिले शिवजी को समाचार दिया और कहा कि दैत्य सेना आने ही चाहती है, जो आप उचित जानें, वह करें। शिवजी ने नन्दी गणपति और वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम गणों समेत जाकर दैत्यों से भली-भाँति लड़ो। यह आज्ञा पाकर शिवजी के गण चले और पर्वत के नीचे उतर आये।

अठारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शिवजी के गण जय शिव, जय मृत्युञ्जय और जय ईश कहते हुये प्रसन्नतापूर्वक गाते-बजाते हुये दैत्य सेना से लड़ने लगे। ऐसी मारपीट दोनों ओर से युद्धस्थान में हुई कि पृथ्वी काँप उठी। हर प्रकार के शस्त्र दोनों ओर से चले और युद्धस्थल अस्थि, मांस और रुधिर से पूर्ण हो गया वरन् रुधिर की नदी बह निकली। वह स्थान चलने के योग्य न रहा। जो दैत्य कि गणों के हाथ से मारे गये, उनको शुक्र ने जिला दिया और जब फिर गणों ने दैत्यों की सेना का वध किया तो फिर भी शुक्रजी ने उनको जिला लिया। इसी प्रकार बारम्बार गणों ने दैत्यों का वध किया और शुक्र ने फिर-फिर उनको प्राण सहित किया। निदान गणों ने कोई उपाय न देख दुःखी हो शिव के समीप जा सब हाल कहा कि हमसे दैत्य न मरेंगे, यह सब काम आप करें। शिवजी क्रोधकर कहने लगे कि यह शुक्र मृत्युञ्जयमन्त्र पाकर ऐसे कार्य कर रहा है। तब शिवजी के मुख से एक कृत्या नामी स्त्री जिसका स्वरूप अति भयानक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

था, उपजी। उसकी दाढ़ें बड़ी भयंकर, पर्वत के समान नासिका, बड़ा भारी मुख, अति ही भय देनेवाली आँखें, अन्धे कुवें के समान स्तन और पर्वत के शिखर सदृश लाल-लाल बाल खड़े हुये, ऐसे स्वरूप से प्रकट होकर शिवजी की सेना से युद्धस्थान में आई। पहिले अति भयंकर नादकर दैत्यों को खाने लगी। दैत्य दुःखी होकर भागने लगे, उनकी कोई युक्ति न चली। फिर कृत्या शुक्र को अपनी योनि में दबाकर उड़ गई और सबके देखते-देखते दृष्टि की ओट हो गई। जब कृत्या शुक्र को उड़ा ले गई तब दैत्यों को बड़ा भय उपजा मानो बिन मारे मर गये। उनकी सेना में हाहाकार मच गया और शिवजी के गण प्रसन्न होकर दैत्यों को चारों ओर से घेरकर शेर के समान गर्जने लगे। दैत्यों ने भाग जाने के सिवाय और उपाय न देखा। वे चारों ओर भागकर फैल गये। जिस तरह से कि घास-फूस पवन के वेग से उड़ जाती है, उसी प्रकार दैत्य उड़ गये। यह दशा दैत्यों की देखकर शुम्भ, निशुम्भ और कालनेमि यह तीनों सेनप अति दृढ़ता से गणों के साथ सामना करने लगे। अन्त में शिवजी के गणों को बहुत मारकर दुःखी कर दिया। सो वह हारमान भाग चले। इतने में गणपति नन्दी और वीरभद्र आदि ने दैत्यों को रोककर सब गणों को धैर्य दे बुला लिया। तथा तब दोनों सेनाएँ फिर भिड़ गईं। कालनेमि और नन्दी, गणपति और शुम्भ तथा वीरभद्र और निशुम्भ एक साथ लड़े और युद्धस्थान में अपनी-अपनी वीरता दिखाने लगे। वीरभद्र ने निशुम्भ के हृदय में बाण मारा, निशुम्भ धरती पर गिर पड़ा। वीरभद्र ने चाहा कि सांगी से उसे मारही डालूँ, इतने में शुम्भ ने उठकर वीरभद्र को बड़े क्रोध से अपनी सांगी मार दी। सो वीरभद्र दुःख पाय धरती पर गिर पड़े। कालनेमि के शरीर में नन्दी ने सात बाण मारे जिसके लगने से रथ के घोड़े और सारथी निर्जीव हो गये। कालनेमि ने क्रोधित होकर नन्दी के धनुष को काट डाला। नन्दी ने धनुष को फेंककर त्रिशूल चलाया जिसके लगने से कालनेमि मूर्च्छित होकर धरती में गिर पड़ा और जब सचेत हुआ तो नन्दी को उठाकर पर्वत के ऊपर फेंक दिया। गणपति और शुम्भ लड़ने लगे। गणपति तो मूषक पर और शुम्भ रथ पर चढ़ा हुआ था। दोनों इतना लड़े कि कोई युद्ध से मुख नहीं मोड़ता था।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निदान गणपति ने एक बाण शुम्भ के हृदय में मारा और तीन बाण से सारथी को पृथ्वी पर गिरा दिया। शुम्भ ने क्रोधकर गणपति को साठ बाण मारे और गणपति के वाहन मूषक को तीन बाण मारकर शिर धड़ से जुदा कर दिया। मूषक धरती पर गिर पड़ा और गणपति भी मूषक के ऊपर से पृथ्वी पर गिर पड़े। वे पैदल हो गये। फिर उन्होंने अपनी सांगी से शुम्भ के ऊपर वार किया। शुम्भ सांगी के लगने से पृथ्वी पर गिर पड़ा और गणपति फिर मूषक पर सवार हुये। विजय गणेशजी की हुई। बाजे बजने लगे। सब गण अतिप्रसन्न हुये और जय-जय शब्द कर विजय के बाजे बजाने लगे। इतने में वृन्दा नामक शुम्भ का पितामह कोपित होकर गणपति के ऊपर बाणों की वर्षा करने लगा। सो गणेशजी दौड़कर वृन्दा के पास पहुँचे। उसके साथ असंख्य भूत, प्रेत, कूष्माण्ड, पिशाच, भैरव, गण, वेताल, शाकिनी, डाकिनी, योगिनी, किलकिल शब्द करते अर्थात् सिंह और हाथियों का नाद करते थे। उन्होंने सेना समेत शुम्भ को विकल कर दिया। वीरभद्र की सेना ने दैत्यों को अति दुःखी किया। उन्होंने बहुत दैत्यों को खाकर लहू तक पी लिया। इतने में नन्दी भी आ गये। उन्होंने ऐसे बाण छोड़े जो दैत्यों की ओर सर्पवत् चले और दैत्यों की सेना नष्ट कर दी। कुछ तो दैत्यगण खाये गये, कुछ दैत्य मारे गये, कुछ मूर्च्छित हुये, कुछ भाग गये और कुछ गिर पड़े। इसी प्रकार सब दैत्यों की सेना नष्ट हुई। जो शेष बचे, वह महालज्जा को प्राप्त हुये।

उन्नीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे कि नारद! जलन्धर अपनी वीर सेना की ऐसी दुर्दशा देख बड़े क्रोध से रथ पर चढ़ कटक सहित गणों की ओर चले और दैत्यों की सेना फिर सँभलकर लड़ने पर तय्यार हुई। युद्ध के बाजे बजने लगे और दोनों सेना फिर लड़ने लगीं। जलन्धर ने बाणों की वर्षा की और पाँच-पाँच बाण गणपति तथा नन्दी को बीस बाण वीरभद्र को मार बड़ा नाद किया। सो वीरभद्र ने एक सांगी जलन्धर पर ऐसी चलाई कि जलन्धर मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। फिर उठकर बड़े क्रोध से गदा वीरभद्र के ऐसी मारी कि वीरभद्र विकल होकर धरती पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिर पड़े। इसी प्रकार जलन्धर ने नन्दी को भी पृथ्वी से वार करके गिरा दिया। तब गणपति ने क्रोधित होकर तुरन्त अपनी सांगी से जलन्धर की गदा को काट डाला और तीन बाण जलन्धर के हृदय में मारे तथा सात बाण चलाकर रथ के घोड़े, पताका, ध्वजा और छत्र काट दिया। जलन्धर ने अपनी सांगी चलाकर गणपति को घायल किया और दूसरे रथ पर चढ़कर वीरभद्र के पास पहुँच लड़ने लगा। सो वीरभद्र ने धनुष काटकर जलन्धर के भाल में परिघ मारी। जलन्धर धरती पर गिर पड़ा और फिर चेतकर एक ऐसी परिघ वीरभद्र के मारी कि वीरभद्र मूर्च्छित होकर धरती पर गिर पड़े। उस समय ऐसी दशा वीरभद्र की देखकर सब गण भागने लगे और शिवजी के समीप जाकर सर्व वृत्तान्त वर्णन किया। उन्होंने कहा कि दैत्यों ने हम सबको विकल कर दिया। अब जो उचित हो, वह आप करें। शिवजी यह हाल सुन बैल पर चढ़े और त्रिशूल लेकर दैत्यों की सेना पर चढ़ाई की। युद्ध के बाजे बजने लगे। शिवजी ने अपना डमरू बजा दी। जब कि गणों ने शिवजी को आते देखा तो प्रसन्न मुख हो गये और फिर लौटकर लड़ने पर तय्यार हुये। फिर उन्होंने दैत्यों से घोर युद्ध किया। शिवजी ने अपना ऐसा भयंकर रूप धरा जिसको देखकर बहुत भय पाया और दैत्यों की सेना महाभय खा भाग चली। सो दैत्यपति ने सेना की यह दशा देख शिवजी पर बहुत से बाण छोड़े। शुम्भ, निशुम्भ, कालनेमि, हयमुख, असिलोमा, बलाहक, और प्रचण्ड एक ही साथ शिवजी पर चढ़ाई करके बाण चलाने लगे। यहाँ तक कि आकाश दिखाई न देता था। पर शिवजी ने सब बाणों का जाल काट डाला और अपने बाणों से आकाश पूरित कर दिया तथा फरसा लेकर असिलोमा का शिर काट डाला। बलाहक को भी वध करके घस्मर को पाश से बाँध लिया। हे नारद ! शिवजी की लीला देखो कि जो सृष्टि उपजाकर प्रलय करनेवाला है, वह संसारी रीति के समान कैसी-कैसी लीला करता है। फिर शिवजी ने अपना बैल दैत्यों की सेना में छोड़ दिया जिसने अपनी सींगों से असंख्य दैत्यों को मार डाला। जो शेष रहे, वह भयभीत हो भाग गये। जैसे शेर के हाथों से हाथी विकल होकर भाग जाता है, वही दशा दैत्यों की हुई।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निदान जलन्धर ने शुम्भ, निशुम्भ और कालनेमि से कहा कि देखो जो संसार में उपजते हैं, वे अवश्य ही एक दिन मरते हैं, उसका कोई उपाय नहीं। ऐसी मृत्यु कौन न चाहेगा जो दोनों लोक में यश और कीर्ति बढ़ाये। लोक में दो प्रकार की मृत्युवाले सूर्यमण्डल को भेदनकर स्वर्ग को जाते हैं। अर्थात् एक योगी दूसरा युद्ध में सम्मुख होकर निर्भय प्रसन्नतापूर्वक मर जावे। इससे अब तुम मृत्यु का भय दूरकर भलीभाँति सामने होकर युद्ध करो। यद्यपि ऐसी-ऐसी बातों से जलन्धर ने बहुत कुछ प्रबोध किया पर उनके मनों में कुछ न आया तब जलन्धर ने उनको बहुत धिक्कार दे कहा कि तुमने उपजकर वृथा ही माता को दुःख दिया। क्या तुमको युद्ध से भागना योग्य है? क्या एक दिन तुम में कोई भी मृत्यु के पंजे से बचा रहेगा। यह कहकर वह सिंह के समान गरजा और आप लड़ाई पर तय्यार हुआ।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जलन्धर के शब्द से धरती काँप उठी। समुद्र-पर्वत सब थर-थर काँपने लगे। दैत्य जो पहिले भाग गये थे, सब लौट आये। जलन्धर ने कहा कि हे शिवजी! मालूम हुआ कि तुम कुछ बल रखते हो। क्योंकि तुमने हमारे साथ युद्ध की इच्छा की। अब अपनी वीरता दिखाओ कि तुमको हम वीर समझें। यह कह शिवजी के ऊपर उसने शत्रुबाण चलाया जिसको शिवजी ने बीच ही से काट डाला। शिवजी ने सुगमतापूर्वक एक बाण चलाकर जलन्धर के रथसारथि और घोड़ों समेत रथ धनुष आदि सबको नष्टकर डाला। तब जलन्धर ने शिवजी के मारने को अपना तमाचा उठाया और छिपकर एक बाण शिवजी को मारा। शिवजी ने उसको अपने बाण से एक कोस पीछे फेंक दिया तब जलन्धर ने विचार किया कि शिवजी बड़े बली हैं, ऐसे युद्ध करने से मैं इनसे न जीतूँगा। कोई ऐसी माया करूँ जिससे शिवजी मोहित हो जावें। शिवजी नाद को बहुत प्रिय जानते हैं। यह सोच ऐसी माया फैलाई कि गन्धर्व, अप्सरा और किन्नरादि उपजकर मनुष्यों के समान नाना प्रकार का नाच-गान करने लगे। मृदङ्ग, मुरली और वीणा आदि नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। सो शिवजी के मन में सुनने की इच्छा उपजी। वे उस आनन्दरूपी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाद में मग्न हो गये। जो कि इस बात का नियम है कि राग सुनने से बुद्धि जाती रहती है जैसा कि शिवजी ने आप राग की बड़ाई को दिखाया और नाद तो आप शिवजी का रूप है। इससे शिवजी उसमें मग्न हो गये। शिवजी सिवाय नाद के और किसी से मोहे नहीं जाते। यह बात वेद कहते हैं, इसी से शिवजी ने वेद के वचनों को स्थिर रखकर नाद में अपना मन लगाया। उस समय शिवजी के हाथों से सब शस्त्र गिर पड़े। शिवजी ने उस तुरीयावस्था में कुछ न जाना और जलन्धर ने कामवश शिवजी के समान अपना स्वरूप बनाया जिसके दश भुजा, पाँच मुख, तीन नेत्र और एक बैल माया से बनाकर उसके ऊपर चढ़ा। जो मुख्य लक्षण शिवजी के हैं, वह भी सब धारणकर शुम्भ-निशुम्भ को युद्धस्थल में ठहराकर आप गिरिजा के समीप गया। गिरिजा ने लोक रीति से उसको शिवजी जाना। जबकि गिरिजा सखियों के बीच में से उठीं और जाना कि यह छल से ऐसा स्वरूप बनाकर आया है तो तुरन्त वेद की रीति के अनुसार अन्तर्धान हो गईं। जलन्धर लज्जित होकर युद्धस्थान को लौट आया। गिरिजा ने विष्णुजी का ध्यान किया तो विष्णुजी तुरन्त आये। गिरिजा ने सब वृत्तान्त जलन्धर का वर्णन किया और पतिव्रतधर्म की बहुत कुछ प्रशंसा करके कहा कि जलन्धर की स्त्री बड़ी पतिव्रता है। उसी के धर्म से जलन्धर नहीं मरता क्योंकि पतिव्रता स्त्री विधवा नहीं हो सकती। इससे तुमको उचित है कि जलन्धरपुरी में जाकर उसकी स्त्री के पतिव्रताधर्म का नाश करो। वृन्दा जो जलन्धर की स्त्री है, उसके साथ छल करो। कुछ धर्म विचार न करना क्योंकि धर्मशास्त्र लिखता है कि जो बुरे के साथ बुराई करे तो कुछ पाप नहीं होता। यह सुन विष्णुजी तुरन्त जलन्धरपुरी को गये और जब जलन्धर युद्धस्थल में आया और अपनी माया को दूर किया तो शिवजी ने चैतन्य होकर युद्ध का स्मरण किया। यह भी शिवजी की माया थी। क्योंकि संसार में जो शिवजी के भक्त हैं, उनके ऊपर तो माया कुछ अपना फल कर ही नहीं सकती तो शिवजी पर क्या फल हो सकता था। निदान शिवजी अति क्रोधित होकर जलन्धर के ऊपर दौड़े। जलन्धर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ने अपने बाणों से शिवजी को छिपा दिया। शिवजी ने अपने बाणों से उसके बाणों को काटकर उसको दुःखी किया। यद्यपि बड़ा ही युद्ध शिवजी और जलन्धर से हुआ पर कोई उनमें न हारा। जो दैत्य शिवजी के हाथ से मारे गये, वह मुक्त हो गये। उन दैत्यों की क्या अच्छी भाग्य थी जो शिवजी को सम्मुख देखते हुये अपने प्राण देते थे। हे नारद! यह लीला जिस तरह कि विष्णुजी से हमने सुनी थी, तुमसे कह दी।

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गिरिजा की आज्ञा से विष्णु जलन्धर-पुरी में पहुँचे और विचार किया कि किस प्रकार वृन्दा जलन्धर की स्त्री का पातिव्रतधर्म बिगाड़ूँ। इसी शोच में शिवजी का ध्यान किया। तथाच शिवजी के ध्यान करते हीं विष्णुजी को यह ज्ञान हुआ कि वह तपस्वी रूप से एक शिष्य को साथ लिये हुये वृन्दा के उपवन में गये। वृन्दा ने उसी रात को स्वप्न में देखा था कि मेरा पति जलन्धर मारा गया और यह भी देखा कि मेरा पति जलन्धर भैंसे पर तेल लगाये हुये सवार, नंगा, शिर के अशुभ बाल बनवाये हुये, काले फूलों की माला पहने और चारों ओर राक्षसों से घिरे यम दिशा को चला जाता है। फिर देखा कि नगर भर समुद्र में डूबा चाहता है और चारों ओर अँधेरा छा रहा है। यह दुस्स्वप्न देखकर वह उठी और सूर्य को उदय होते राहु समेत प्रकाशहीन देखा। ऐसे अशकुनों को देखने से वह एकाएक रोने-पीटने और घबराहट से इधर-उधर फिरने लगी। यद्यपि उसने अपने उद्यान की बहार और इधर-उधर घूमने से मन के दुःख को भुलाया पर मन ने कुछ भी आनन्द न पाया। निदान अपनी दो सखियों को साथ लेकर जलन्धर के उद्यान को गई पर वहाँ भी फूल-फल देखकर कुछ हर्ष न उठाया। घूमने में दो राक्षस उनके दृष्टिगोचर हुये जो अति भयानक थे। उनको देखकर रानी भाग गई और आगे जाकर एक तपस्वी को शिष्यों समेत देखा कि मौन साधे बैठा है। वृन्दा दौड़कर दोनों अपने हाथ उसकी गर्दन में डालकर लिपट गई और कहा कि हमारी रक्षा करो। सो तपस्वी ने दोनों नेत्र खोल कर बड़ा क्रोध किया और हुंकार दी कि वे दोनों राक्षस भाग गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलन्धर की स्त्री अति प्रसन्न हुई और प्रणामकर उनके तप की प्रशंसा करने लगी। उसने कहा कि आप मेरे पति का वृत्तान्त जो शिवजी से युद्ध करने के निमित्त गये हैं, कहिये। विष्णुजी ने हँसकर ऊपर की ओर देखा। तुरन्त ही दो बन्दर आ पहुँचे और प्रणाम करके बैठे। फिर तपस्वी की सैन से गुप्त हो गये और एक क्षण भी न बीता कि दोनों बन्दर फिर पहिले की तरह आकर बैठ गये। उनके हाथ में जलन्धर का शीश और धड़ था। उन्होंने योगी के आगे रख दिया और आप दुःखी होकर बैठ रहे। वृन्दा अपने पति का शिर देखकर धरती में गिर पड़ी। तब मुनि ने पानी आदि छिड़ककर वृन्दा को जगाया। वृन्दा फिर रोककर अपने पति का शिर अपने शीश से लगा रोने लगी। उसने कहा मैं तो तुमको शिव के साथ युद्ध करने से मना करती थी पर तुमने न माना। इसी प्रकार वह बातें कह-कहकर रोती थी। फिर मुनि से कहा कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति को क्यों नहीं जिलाते ? तुम इस योग्य हो कि मेरे पति को जिला दो क्योंकि मैं तुमको देख चुकी हूँ। मुनि बोले कि जो मनुष्य शिवजी की क्रोधाग्नि से मारा गया, उसको हम जिला नहीं सकते पर तुम्हारे दुःख को देखकर हम जिला देवेंगे। यह कह शिर को शरीर से जोड़ दिया और आप अन्तर्धान होकर उस शरीर में प्रवेश कर गये तथा जलन्धर के समान उठकर बैठ गये और अपनी स्त्री को गले लगाया। वृन्दा ने कुछ न जाना और बड़ी प्रसन्नता से मैथुनकर अपना धर्म खो दिया और उत्तम रीति से विहार किया। कई बेर भोग विलास किया। एक समय विष्णुजी ने अपना शरीर धारण किया जिसको देख वृन्दा ने पहिचान लिया और बहुत दुःखी हुई। ऐसा छल विष्णुजी का जानकर वृन्दा ने विष्णुजी को बहुत भय दिया और क्रोधित हो कहने लगी कि तुमने वेद के विरुद्ध परस्त्री के साथ मैथुन करके मेरे धर्म को नाश किया। तुम ऐसा स्वरूप मुनीश्वरों का बनाये हुये बड़े धर्मवान् हो। यह कहकर फिर शाप दिया कि जो दोनों राक्षस तुमने दिखाये वह दोनों बड़े बली होकर तुम्हारी स्त्री को भगा ले जावेंगे जिससे तुम बहुत दुःख पाकर वन-वन फिरा करोगे। वहाँ तुमको हर प्रकार के कष्ट

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मिलेंगे और जो बन्दर तुमने हमको दिखाये, वही तुम्हारे सहायक होंगे। यह कहकर वह बहुत रोई और चिता बनाकर अपने पति के साथ जलने की इच्छा की। यद्यपि विष्णुजी ने बहुत मनाया पर पातिव्रतधर्म को दृढ़कर उसने कुछ न माना। तुरन्त शिव-गिरिजा का ध्यान करके सती हो गई। उसका तेज सबके देखते हुये गिरिजा के शरीर में प्रवेश कर गया। यह दशा देख विष्णुजी बार-बार पछताते, उसकी सुन्दरता के स्मरण में दुःखी हुये और चिता की भस्म अपने शरीर से मल उसी स्थान पर स्थित हुये। उन्होंने अपने मुख्य स्थान और लक्ष्मी को छोड़ दिया। यह दशा देख देवता सिद्ध उसी के निकट आ गये। वे सब विष्णुजी को बड़े-बड़े इतिहास सुना-सुनाकर समझाने लगे कि तुम तो आप धर्म के पालनेवाले प्रति समय में रहे हो। तुमको परस्त्रीगमन करना उचित न था। चलो, अपने वैकुण्ठ में विहार करो। परस्त्री की प्रीति छोड़ दो। जो पाप भाग्यवश हुआ है, वह शिवजी की कृपा से नष्ट हो जावेगा। अब कुछ खेद न करके स्थान को चलो। हम आपको समझाते हैं। यह हमारी बड़ी ढिठाई है, आप क्षमा करेंगे। तुम्हारी लीला का जाननेवाला कोई नहीं है। सो इतने समझाने पर भी विष्णुजी ने किसी को उत्तर तक न दिया और उसी प्रकार शोक में बैठे रहे। हे नारद! शिवजी की बड़ी माया है, उसी के अधीन सब हैं। जैसा शिवजी के मन में आता है, वैसा ही सब कुछ होता है।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जब शिवजी सचेत हुये तो उन्होंने दैत्यों को दुःखी कर दिया। अन्त को जलन्धर ने शिवजी की वीरता और पराक्रम देख विचार किया कि अब मुझे माया करनी चाहिये कि शिवरानी को प्राप्त करूँ। यह शोच उसने माया से एक गिरिजा बनाई और उस अनुकरण गिरिजा को बिठालकर शिवजी के सम्मुख लाये। इस तरह पर कि शुम्भ-निशुम्भ दोनों भाई मारते जाते थे। वह गिरिजा रोती हुई कहती थी कि हमारी रक्षा करो। इतने में जलन्धर ने ऊँचे शब्द से कहा कि हे सदाशिवजी! अपनी स्त्री को देखो जो यह स्त्री तुमको अति प्रिय है, उसको हम पकड़ लाये हैं और उसकी ऐसी दुर्दशा कर रहे हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्या तुम नहीं देखते तुमको धिक्कार है। तुम अपने को बड़ा समझते हो। यह वचन सुन और माया की गिरिजा देख शिवजी अति दुःखी हुये और मौन साधि बुद्धि विस्मृत की। जब कि शिवजी ने लीला करके अपने को ऐसा शोकवान् दिखाया तब जलन्धर ने धनुष को कान तक खींचकर तीन बाण शिवजी के ऊपर चलाये एक शिर में, दूसरा छाती में और तीसरा उदर में। शिवजी जलन्धर की सब माया जान महा भयंकर रूप धारण कर अग्नि के प्रकाशवत् प्रकटे। ऐसा भयानक स्वरूप देख सब दैत्य भय खा युद्धस्थान छोड़ भाग चले। यहाँ तक कि शुम्भ और निशुम्भ भी पीठ दिखा कर भागे और जलन्धर की सब माया नष्ट हो गई। शिव ने अति तेजरूप से शुम्भ-निशुम्भ को यह शाप दिया कि तुमने जो छल करके गिरिजा को दुःख दिया, यह बड़ा पाप तुमसे हुआ है और हमारे युद्ध से मुख मोड़कर भागने से तुम्हारा धर्म जाता रहा इससे तुम गिरिजा के हाथों से मारे जावोगे। इतने में जलन्धर ने क्रोधित होकर बाणों से शिवजी को छिपा दिया। तब शिवजी कोपित हुये और जलन्धर के बाणों को काट डाला। इतने में जलन्धर ने एक परिग बैल पर मारा कि बैल धर्म भूलकर लड़ाई से भागा। यद्यपि शिवजी ने उसको बहुत खींचा पर वह युद्धस्थल में न ठहर सका। तब तो शिवजी अति कोपित होकर महाभयंकर हो गये और सुदर्शनचक्र को हाथ में उठा लिया जो कोटि सूर्य के समान चमकता था और जलन्धर के सामने छोड़ दिया। उस चक्र का दशों दिशाओं में तेज पूर्ण हो गया और सर्व पृथ्वी और आकाश दग्ध होने लगा। सो उससे जाकर जलन्धर का शिर शरीर से भिन्न कर दिया और बड़ा शब्द हुआ। उस समय पृथ्वी थरथर काँपने लगी और पर्वत जल गये। जलन्धर का तेज शिवजी के शरीर में प्रवेश कर गया और जय-जय शब्द हुआ। हे नारदजी ! उनके बड़े भाग्य हैं जिनकी यह दशा होवे। क्योंकि देवता मुनि बड़े-बड़े उपाय से इतना शिवजी को प्रसन्न नहीं कर सकते। उस समय हम, इन्द्र और देवता आदि बड़ी-बड़ी स्तुति करने लगे।

देवताओं की की हुई स्तुति।

हे शिवजी ! तुम हर प्रकार से भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हो। तुमको मन, वाणी और वेद आदि किसी ने नहीं पाया। वे भी नेति कह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपनी अज्ञानता जानते हैं। तुम्हारी महिमा अपार है जिसको नारद, शारद, शेष और महेश भी नहीं पाते। केवल अपनी बुद्धि के अनुसार कहते हैं, तुम्हारे एक निमेष में करोड़ों इन्द्र और विष्णु बीत जाते हैं। तुम किसी से बनाये नहीं गये, वरन् परमब्रह्म हो। तुम दीनदयालु और घट-घट व्यापक हो। तुमने यदुवंशाको मुक्ति दी और उसी की स्त्री कलावती तुम्हारी भक्ति से मुक्ति हुई। तुमने मदयन्ती स्त्री को मोक्ष दी और सोमुनि के पुत्र को क्या अच्छी गति दी। राजा तिमिरघन को तुमने अपना करके सात जन्म तक बराबर आनन्द कृपा किया और तुमने चन्द्रसेन का मान रख लिया। श्रीकर गोप को अपना भक्त बनाकर वह द्रव्य दिया जो देवताओं को भी नहीं मिलता। तुम्हीं ने सत्यरथ की आपदा दूर की और धर्मगुप्त तुम्हारे व्रत करने से दरिद्रता से छूट गये। तुमने चित्रधर्म के दुःख को दूर कर दिया और उसमें उसकी लड़की को कितना सुख नहीं दिया। अर्थात् उसका पति राजा चन्द्राङ्गद यमुना के भीतर डूब गया था और तुमने मरने न दिया। तुम्हारे बल से तक्षक को कुछ हानि और भय न होने पाई। एक स्त्री पुरुष हो गई। अमद्रदेश के ब्राह्मण को आपने मोक्ष दिया और उसकी स्त्री चञ्चला को उबार लिया। भद्रामुखगिरि के कष्ट को दूर कर दिया और पिङ्गला की इच्छा के अनुसार उसको धन, आनन्द और सुख दिया। भद्रामुख अपने भक्त की इच्छा पूरा की ऋषभ को तुमने हर प्रकार अपने में मिला लिया। आपकी सेवा वामदेव करके कैसी गति को पहुँचा। तुमने राजा दुर्जन को तार दिया जिसने असंख्य स्त्रियों के साथ व्यभिचार किया था। तुमने शबरी और शूकर को कैसी अच्छी गति देकर भस्म का माहात्म्य प्रकट किया। भद्रसेन का पुत्र सुधर्मा और तारक मित्र के पुत्र को उत्तम गति देकर रुद्राक्ष की बड़ाई दिखाई। तुमने गङ्गा को जिसका नाम महानन्दा था, तार दिया। सुश्रुमान तुम्हारी भक्ति से बहुत दिनों तक जिया। तुमने शारदा के पति को जिलाकर उसके सौभाग्य को स्थिर रक्खा और बन्दिक नाम पापी ब्राह्मण को बहुत अच्छी गति दी। उसकी स्त्री बीचुका जो पुंश्चली थी, उसे मुक्ति दे दी। तुमने दक्ष के यज्ञ का विध्वंसकर उसके गर्व का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाश कर दिया और काम को दग्धकर शिवरानी का गर्व हरा, बालक का रूप धारण कर तारक दैत्य को मार डाला। तुमने गणपति को अपना बल देकर सब गणों से प्रबल कर दिया। फिर त्रिशूल से उनका शिर काट फिर भी जिला दिया। दैत्यों को देवताओं समेत जलते हुये देखकर हलाहल विष को आप पी लिया। तुमने पहिले त्रिशूल लेकर अन्धक के शिर को काट डाला। फिर कृपाकर उसको अपने गणों में कर लिया। तुमने त्रिपुर को जलाकर भस्म कर दिया और काल को तुम्हीं ने जलाया। धर्म को पालना के साथ रक्खा। तुमने विष्णु और ब्रह्मा के मोह को दूर करके मन्त्रशास्त्र को कील डाला। तुमने नरहरि अवतार के गर्व को नाश कर दिया और शरभ का अवतार धारण किया तथा अत्रि के पुत्र होकर कामरूप का वध किया। तुमने कपि का स्वरूप धारण कर राम-लक्ष्मण के दुःख को दूर कर दिया। सूर्य और चन्द्रमा आदि सातों ग्रहों ने तुम्हारी कृपा से यह नाम पाया और राहु केतु भी तुम्हारी कृपा से उसी पद पर पहुँच कर ग्रह हो गये। तुम्हारी सेवा से ब्रह्मा-विष्णु सृष्टि का पालन-पोषण करते हैं। तुम तीनों गुणों से परे हो और सगुण हो बिना हाथों के बड़े-बड़े कार्य करते हो। हे नारद! हम तीनों ने ऐसी स्तुति शिवजी की। जो कोई इस स्तुति को सुनेगा, वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा और शिवजी का लोक पावेगा।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! देवताओं ने यह स्तुति कर फिर शिव से विनती की कि आपने जलन्धर को नष्ट करके हम लोगों को निर्भय कर दिया। अब और कोई कण्टक नहीं है पर अकस्मात् एक और दुःख हम लोगों को उपजा है। अर्थात् विष्णुजी उस स्थान पर जहाँ जलन्धर की स्त्री सती हो गई है, भस्म लगाये हुये लोट रहे हैं। वे किसी का कहना सुनना नहीं सुनते। अब कोई उपाय कीजिये कि जिसमें विष्णुजी फिर हठ को छोड़ अपना पुराना मार्ग धारण करें। शिवजी ने हँसकर कहा कि हे देवताओं! यह सब हमारी माया की लीला है। हमारी माया तीनों लोक को नचाया करती है। विष्णुजी की बुद्धि को हमने भ्रष्टकर यह लीला

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कराई है। विष्णुजी मुझको बहुत प्रिय हैं, इससे हमने यह लीलाकर उनके अहंकार को दूर कर दिया। अब जो उपाय हम बतलाते हैं, वह तुम सब करो कि विष्णुजी का मोह दूर हो जावे। अर्थात् अब तुम सब देवी की शरण में जाकर दुःख का वर्णन कर दो, वह तुम्हारे सब कार्य करेंगी। तब विष्णुजी मुख्य स्वरूप पर आ जावेंगे। यह कह शिवजी अपने गणों समेत अन्तर्धान हो गये और देवता गिरिजा की स्तुति करने लगे और कहा कि तुम्हारी शरण में आये हैं, हमको दुःख से छुड़ा दो। यह स्तुति जो पढ़ेगा, वह कभी मोह और दरिद्रता में न पड़ेगा। यह स्तुति देवता कर रहे थे कि आकाश में एक अग्नि का कुण्ड दृष्टि पड़ा। उस कुण्ड में से शब्द हुआ कि हमने तीन रूप से अलग-अलग तीनों गुण से अलंकृत होकर संसार में अवतार लिया है। एक गिरिजा, दूसरी लक्ष्मी और तीसरी सरस्वती। सो हे देवताओ! तुम उनकी शरण में जाओ। तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा। इतना सुन सब देवता स्तुति करने लगे जिसके हर श्लोक में जय जय शब्द था। सो तीनों देवियों ने तीन बीज देकर कहा कि जहाँ विष्णुजी बैठे हैं, वहाँ इनको बो दो। तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी। ऐसे वचन देवियों के सुनकर जहाँ विष्णुजी बैठे थे, देवताओं ने जाकर वह तीनों बीज बो दिये जिससे तीन प्रकार की वनस्पति उपजी। उनका नाम धात्री, मालती और तुलसी हुआ। धात्री जो हमारी स्त्री है उसी से धात्री और लक्ष्मी से मालती और गिरिजा से तुलसी उपजी। यह तीनों देवियाँ रज, सत् और तम तीनों गुणों को धारण किये हुये स्त्रियों के समान प्रकट होकर वृन्दा से भी अति सुन्दर विष्णु के आगे खड़ी हुईं। उनको देख विष्णु आश्चर्य में हुये और तुरन्त कामवश हो उठ खड़े हुये। सो धात्री और तुलसी ने तिरछी चितवन से विष्णु की ओर देखा। मालती यह दृष्टि उनकी सवतिया डाह से न सहकर दुःखी हुई और मन में क्रोध किया। इससे वह शिव पर नहीं चढ़ाई जाती। विष्णुजी धात्री और तुलसी पर मोहित होकर उनको साथ लिये हुये वैकुण्ठ में आये और उनका मोह जाता रहा। जो मनुष्य इस जलन्धर के वध को पढ़ेगा, वह शिवलोक में स्थान पावेगा।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौबीसवाँ अध्याय।

सूतजी बोले कि इस कथा के सुनने के उपरान्त नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि सुदर्शनचक्र विष्णुजी का शस्त्र प्रसिद्ध है। नहीं जानते कि वह यही सुदर्शनचक्र है जो शिवजी ने सब देवताओं से तेज लेकर जलन्धर के वध निमित्त बनाया या वह कोई दूसरा है, मुझको बता दीजिये। यह सुन कर ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सुदर्शनचक्र एक ही है, दूसरा नहीं। जब दैत्य अतिबल और द्रव्य प्राप्तकर देवताओं को दुःख देने लगे तो विष्णु ने शिवजी की बड़ी सेवा कर सुदर्शनचक्र पाया। वे उसी से सब दैत्यों का वध करते हैं। कल्पभेद से हर चरित्र, लीला, वर्ण, व्याख्यान, कथा और इतिहास में बहुत अन्तर है। पर बुद्धिमान को चाहिये कि जो उसे सन्देह उपजे तो पूछे पर सत्य मार्ग से भटक न जावे। सो जब जलन्धर के वध को बहुत समय बीता तब दैत्य दानव के लड़के बड़े बली होकर उपद्रव मचाने लगे जिससे संसार के मनुष्यों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ। तप, योग, यज्ञ, देवताओं की पूजा, ध्यान, वर्णाश्रम और सब धर्म में विघ्न बढ़ने लगा। गोवध बहुत होने लगा और सब अच्छे पहिले मार्ग जाते रहे। सो देवता और मुनि सब दुःखी होकर हमारे पास गये और शरण-शरण कहकर हमारी स्तुति कर अपने कष्ट को वर्णन किया। हम सबको साथ लेकर विष्णुजी के पास गये और बड़ी स्तुतिकर विनय की कि अब दानव और दैत्य बड़ा दुःख देते हैं, इन सबको नष्ट करो हम सब आपकी शरण में आये हैं। विष्णुजी प्रसन्न होकर कहने लगे कि तुम सब अपने-अपने घरों को चले जाओ, हम दैत्यों से युद्ध करेंगे, यह कह वे दैत्यों के साथ युद्ध करने लगे, पर दैत्यों को न जीत सके क्योंकि वे बड़े बली थे। विष्णु ने विचारा कि हम बिन सहायता विजय न पावेंगे। शिवजी की रक्षा बहुत दुर्लभ है, यह विचारकर तुरन्त ही अन्तर्धान हुये और कैलाश पर्वत के निकट योग के निमित्त बैठ गये उन्होंने एक कुण्ड खोदकर उसमें अग्नि भर दी और बहुत ही कठिन पूजन करने लगे। यद्यपि पार्थिव पूजन, मन्त्र और ध्यान आदि बहुत से योग किये परन्तु शिवजी प्रसन्न न हुये। तब विष्णुजी ने विचारा कि किस प्रकार शिवजी प्रसन्न होंगे? अन्त में विश्वास हुआ कि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी सहस्रनाम के जपने से अति प्रसन्न होंगे। इस कारण सहस्रनाम जपने लगे। वे हरएक नाम के पीछे एक कमल का फूल चढ़ाकर प्रणाम करते थे। इसी प्रकार बहुत दिन पर्यन्त पूजन करते रहे। शिवजी ने प्रसन्न होकर चाहा कि अपनी प्रसन्नता प्रकट करें परन्तु उन्होंने परीक्षा के निमित्त सहस्रपुष्प में से एक पुष्प कमल का उड़ा लिया। विष्णुजी को कुछ न भासा अन्त में पूजा करते-करते एक फूल कम होने से उनको खेद हुआ। इस कारण कि और कमलपुष्प के प्राप्त होने की उनको कुछ भी आशा न थी और पूजन में भी अन्तर पड़ता था। इस विचार से उन्होंने शिवजी का ध्यान किया जिससे उनको यह भासा कि हमारे नेत्र तो कमलपुष्प से कम नहीं, तुरन्त ही नेत्र को निकाल बहुत ही प्रसन्न होकर शिव को अर्पण कर दिया। शिवजी ने दर्शन दिया और आम्रोडिततम् मन्त्र को पढ़कर कृपादृष्टि से देखा। विष्णुजी ने शिवजी को प्रणाम किया। शिवजी ने मुसुकरा कर कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो, वह माँगो। विष्णुजी ने अति पवित्र स्तुति पढ़ी। फिर प्रार्थना की कि हम दैत्यों से हार गये हैं। उनको हम किसी प्रकार नहीं जीत सकते ऐसा यत्न कीजिये जिससे वे मारे जायँ। शिवजी ने कृपा की और सुदर्शनचक्र देकर कहा कि हमारे इस समय के रूप का ध्यान और सहस्रनाम जिसको तुमने जपा तथा सुदर्शनचक्र जो हम तुमको देते हैं, इन तीनों से तुम शत्रुओं और दैत्यों को मारकर जीत लोगे। त्रैलोक्य में कोई तुमको न जीत सकेगा। सुदर्शनचक्र को लघुकार्य पर न छोड़ना। यह सम्पूर्ण कार्य का सिद्धकरनेवाला है। सिवाय ब्राह्मणों के वह सबको जलावेगा। यह कहकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और विष्णुजी सुदर्शनचक्र को लेकर हँसी खुशी रात्रि-दिन सहस्रनाम का जप करते और अपने भक्तों को उसी की शिक्षा देते रहे। अब भी जो कोई सहस्रनाम और विष्णुस्तुति पढ़ेगा, उसके सर्वकार्य सिद्ध होंगे, उसके शत्रुओं का नाश होगा, त्रैलोक्य में सुखी रहेगा, विद्या की वृद्धि होगी, रोगों को दूर करेगा तथा वह सर्वप्रकार से लाभदायक है।

पच्चीसवाँ अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी! और भी शिवजी के चरित्र वर्णन करो जिस प्रकार दैत्यों को नष्ट किया। ब्रह्माजी बोले कि अब हम शङ्खचूड़ के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मारने का वृत्तान्त वर्णन करते हैं, सुनो कि जिस प्रकार शिवजी ने शङ्खचूड़ को मारा। इसके श्रवण करने से शिवभक्ति अधिक उत्पन्न होती है। पहिले यह विचार लो कि हमारे पुत्र मरीचि से कश्यप उत्पन्न हुआ जिसको हमारे लड़के दक्षप्रजापति ने तेरह पुत्रियाँ ब्याह दीं। उससे बहुत सन्तान उत्पन्न हुईं और देवता आदि सब उसी प्रकार से हैं। ऐसा कोई नहीं जो उस कुल का वर्णन विस्तारसंयुक्त करे। हम केवल एक मनुष्य का इतिहास वर्णन करते हैं जो भक्ति की वृद्धि करता है और इच्छा का देनेहारा है। अर्थात् कश्यप की स्त्री पतिव्रता और सुन्दर थी। उसके चार पुत्र हुये। वह दैत्य और बड़े वीर थे। उनमें से एक पुत्र विप्रचित्त बड़ा ही वीर और बलवान् था। उसका एक पुत्र दम्भानामी विष्णुजी का बड़ा सेवक और भक्त था। परन्तु कोई पुत्र न उत्पन्न होने से अपने बड़ों की इच्छा और विष्णुजी की आज्ञानुसार पुष्कर में योग करने गया। वह एक लक्ष वर्ष पर्यन्त कठिन योग करता रहा कि कोई पुत्र उपजे। विष्णुजी ने ऐसा पूजन देखकर दर्शन दिया और प्रसन्नता से कहा कि वरदान माँग। उसने उत्तर दिया कि मैं ऐसा पुत्र चाहता हूँ जो बड़ा वीर हो, मेरे अधीन सर्वसंसार को जीते और बड़ा बुद्धिमान् हो। विष्णुजी ने अङ्गीकार किया और जब विष्णुजी अन्तर्धान हो गये तब दम्भासुर घर में आये और अपनी स्त्री से सब कहा। वह बहुत प्रसन्न हुई और मङ्गनों को बहुत भिक्षा दी। थोड़े दिन के पीछे वह गर्भिणी हुई और सुदामा नाम एक कृष्णजी का भक्त जो राधाजी के शाप से वैकुण्ठ या गोलोक में था, उसके गर्भ में आया। जब नव दश महीने हुये तो शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में उसका जन्म हुआ। दम्भासुर ने जातकर्म करके बड़ी घूमधाम से भाई-बन्धुओं की अनेक प्रकार से सेवा की और अधिक प्रसन्न हुआ। लड़के का नाम शङ्खचूड़ रक्खा गया। शङ्खचूड़ सर्वविद्यानिधान हुआ और उसने अपना आचरण भी बहुत अच्छा रक्खा। माँ-बाप को सुखी रखने लगा और जैगीषव्य से उपदेश लेकर योग करने गया। हमारे पाठपूजन में ऐसा लीन रहा कि हमको बहुत प्रसन्न किया और इसी हेतु से हम वरदान तत्काल देने आये। शङ्खचूड़ ने हमसे यह वरदान माँगा कि हम देवताओं से न हारें, तीनों लोक में हमारी जीत हो और हम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़े वीर हों। हमने अङ्गीकार किया और कृष्ण-कवच उनको देकर आज्ञा दी कि तुम बदरिकाश्रम में जाकर धर्मध्वज की पुत्री तुलसी से जो योग करती है, अपना विवाह करो। यह वरदान देकर हम अन्तर्धान हुये। शङ्खचूड़ ने कृष्णकवच को सिद्ध किया और अपने कण्ठ में बाँध लिया। उस स्थान अर्थात् बदरिकाश्रम में जाकर जहाँ तुलसी योग करती थी, वहाँ पहुँचा और तुलसी को सुन्दरता देखकर मोहित हुआ और कहा कि तुम कौन हो, किसकी पुत्री हो और किस कारण ऐसा योग करती हो? मैं तुम्हारा सेवक हूँ, मुझसे सब वर्णन करो। यह सुनकर तुलसी ने कहा कि मैं धर्मध्वज की पुत्री हूँ। योग के निमित्त यहाँ बैठी हूँ। तुम कौन हो जो हमारी परीक्षा लेते हो, तुम यहाँ से चले जावो। क्योंकि स्त्री मोहनीरूप होती है, वह अपवित्र है और योगीश्वरों के पूजन आदि को नष्ट करती है। शङ्खचूड़ ने कहा कि संसार में दो प्रकार के स्त्रीपुरुष होते हैं अर्थात् बुरे, भले, कामी और तपस्वी। परन्तु मैं कामी और पापी नहीं। उसी प्रकार तुम भी इनसे रहित हो। मुझको ब्रह्मा ने भेजा है। मैं तुम्हारे साथ गन्धर्व विवाह करूँगा। मैं शङ्खचूड़ हूँ, तीनों लोक का जीतनेवाला और दम्भासुर का पुत्र हूँ। प्रथम जन्म में गोप सुदामा था और कृष्णजी की पूजा करता था। पर राधाजी ने क्रोध किया और शाप दिया जिस कारण मुझको दानव होना पड़ा। मुझको कृष्णजी की कृपा से प्रथम जन्म की स्मृति है। तुलसीजी ने कहा कि तुम बहुत भले तथा लोभ और काम आदि से रहित हो। जो मनुष्य स्त्री के अधीन नहीं है, वह बड़ा भाग्यवान् है। पर जो मनुष्य स्त्री के वश है, उससे बढ़कर संसार में कोई बुरा नहीं। स्त्री चाहे जैसी पवित्र और पतिव्रता हो परन्तु वह मरे हुये पुरुष के समान अपवित्र है। ब्राह्मण दश-दिन में, क्षत्रिय द्वादश दिन में, वैश्य पञ्चदश में और शूद्र पूर्णमास में पवित्र हो जाते हैं। परन्तु स्त्री किंचित् किसी समय में पवित्र नहीं होती। यह वार्ता वेद में लिखी है। सब देवता, मुनीश्वरों और पितर आदि स्त्री से ग्लानि करते हैं। स्त्री के दिये हुये पिण्ड पितरों को नहीं पहुँचते और न देवता आदि उसके पुष्प चढ़ाये हुये अङ्गीकार करते हैं। जिसका हृदय स्त्री के अधीन है, उसका पाठ-पूजन सब मिथ्या है, उसका जन्म मिथ्या है। पुरुष का जन्म

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फलदायक है। हे नारद ! यह वार्त्ता उन दोनों में हो रही थी कि हम उस स्थान पर गये और शङ्खचूड़ से कहा कि तुम क्यों इस प्रकार वार्त्तालाप करते हो और क्यों गन्धर्व विवाह नहीं करते, तुम दोनों एक ही वर्ण के हो। फिर हमने तुलसी से उसके कुल और जप-तप का हाल कह सुनाया और आज्ञा दी कि तुम विवाह करो। कहा कि शङ्खचूड़ विष्णुजी का बड़ा भक्त है। इसके सङ्ग विवाह करने से कृष्णजी तुमको बहुत चाहेंगे और वैकुण्ठ देंगे। यह कहकर हम चले गये और उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक गन्धर्व विवाह कर लिया। शङ्खचूड़ तुलसी को लेकर घर सिधारा और माता-पिता को प्रणाम कर सब समाचार सुनाया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये। उसके पीछे दम्भासुर ने शङ्खचूड़ को राजतिलक दे दिया और आप तप करने गया। शङ्खचूड़ अच्छे प्रकार से राज्य करने लगा।

छब्बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसा सुनकर उनके गुरु शुक्र बहुत से दैत्यों समेत शङ्खचूड़ के निकट आया। शङ्खचूड़ ने नाना प्रकार से सेवा की। शुक्रजी ने आशिष और प्रशंसा के उपरान्त देवता और दैत्यों की कथा वर्णन की। अर्थात् वह शत्रुता जो दोनों में बड़े समय से चली आती थी और देवताओं की जीत, दैत्यों की हार, बृहस्पति की सहायता और देवताओं के चरित्र कहकर शङ्खचूड़ को सब दैत्यों का राजा बनाया। सो दैत्यों ने बहुत प्रसन्न होकर भेंट दीं। शङ्खचूड़ ने बहुत प्रसन्न होकर एक बड़ी भारी सेना दैत्यों और वीरों की इकट्ठी कर इन्द्रलोक पर चढ़ाई की और नगर को घेर लिया। इन्द्र ऐसा देखकर देवताओं की सेना लेकर लड़ने को गया। दोनों सेना बहुत लड़ीं। अन्त में देवताओं ने बड़ी वीरता से दैत्यों को हरा दिया। शङ्खचूड़ ने ऐसी हार देखकर अपने बड़े वीरों को लड़ाई के निमित्त भेजा। वे देवताओं से लड़े, अन्त समय में देवता ऐसी लड़ाई देखकर बिखर गये और भाग गये। तब दशों दिक्पति दैत्यों के सम्मुख हुये और महायुद्ध हुआ। इन्द्र, वृषपर्वा, अनल, गौ, श्रुति, संहार, यम, कालिम्बका, वरुण, चञ्चल, पवन, कालिकेय, कुबेर, दम्भ, ईश, विप्रचित्ती, ऋभु, राहु, चन्द्रमा, कनकाक्ष, मङ्गल, शुक्र, ब्रह्मपति, कालासुर, काल, यम, विश्वकर्मा, शनैश्चर, रक्ताक्ष, वसुगण, प्रजेशगण, धूम्रलोचन,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नलकूबर, रत्नसार, इन्द्र का पुत्र, किविट, मन्मथ, दीप्तिमान, अश्विनीकुमार, सब दिक्पति, ग्रह, देवताओं और अच्छे-अच्छे वीरों से दो-दो मनुष्यों ने अलग-अलग लड़ना चाहा और बहुत दिनों तक लड़ाई रही परन्तु कोई न जीता। अन्त समय में दैत्यों ने शुक्रजी का ध्यान कर एक ही बेर देवताओं के सन्मुख होकर चढ़ाई की, देवता भागे। उस समय ग्यारहों रुद्र दैत्यों के सम्मुख हुये और इतना त्रिशूल से मारा कि सब दैत्य भाग गये। ऐसी दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ आया और इतने बाण चलाये कि देवता भाग गये, ग्यारह रुद्र खड़े रहे। उस समय आकाशवाणी हुई कि यह ग्यारह रुद्रों से शङ्खचूड़ न हारेगा और न मारा जायेगा, क्योंकि ब्रह्माजी के वरदान से यह पृथ्वी का राजा होगा। तुम चले जावो और समय देखो, यह आकाशवाणी सुनकर देवताओं ने लड़ाई त्यागी। दैत्य जीते और आनन्दपूर्वक घर गये। शङ्खचूड़ पृथ्वी का राजा हुआ। उसने देवताओं की द्रव्य दैत्यों को दे दी, यज्ञ का भाग भी लिया और इन्द्रपदवी को धारण करके प्रजाओं को पुत्र सदृश पालने लगा। उसके राज्य से किसी को किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ और सब मनुष्य अपने-अपने धर्म, कर्म, वर्ण और आश्रम में स्थित रहे। उसके समय में अकाल नहीं पड़ा, अन्न अनन्त उपजा। औषधि भी बहुत गुणकारक उत्पन्न हुई। पर्वतों में भाँति-भाँति के रत्न और मणि निकले। यहाँ तक कि सिवाय देवताओं के और किसी को भी किञ्चिन्मात्र खेद न हुआ। शङ्खचूड़ कृष्णजी का बड़ा भक्त था। यद्यपि राधाजी के शाप से दानवरूप से उत्पन्न हुआ पर दैत्यों के सदृश न था।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! शङ्खचूड़ को राधिकाजी ने क्यों शाप दिया ? ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जो गोलोक कहलाता है, वहाँ श्रीकृष्णजी रहते हैं। वहाँ कृष्णजी के मित्र सुदामा रहते थे। राधाजी ने उसका अनाचार देखकर उसे शाप दिया जिससे उसने दैत्य होकर शरीर धारण किया। नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी ! गोलोक कहाँ है ? जहाँ श्रीकृष्णजी विराजमान हैं। कौन सी बुरी बात देखकर राधाजी ने शाप दिया ? ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि हे पुत्र ! प्रथम हमारा लोक है, जहाँ हम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी के ध्यान में मग्न रहते हैं। उसके ऊपर वैकुण्ठ है, जहाँ विष्णु भगवान् विराजमान हैं। उसके ऊपर शिवशासन है, जहाँ शिवजी के भजने से किसी को खेद और शोक नहीं होता। उसके ऊपर वीरभद्र का लोक है, जहाँ स्कन्द अर्थात् स्वामिकार्त्तिक रहते हैं। उसके ऊपर उमालोक है, जहाँ शिवरानी विराजमान हैं। उसके ऊपर शिवलोक है, जहाँ शिवजी परब्रह्म जगत् के स्वामी अन्तर्यामी विराजमान् हैं। उसको आनन्दवन और काशी भी कहते हैं। वहाँ के राजा शिव हैं जो तीनों देवताओं के उत्पन्न करने वाले हैं। वे निर्गुण और सगुणरूप हैं। उनको आदिशक्ति ब्याही हैं। उन्हीं के बायें अङ्ग से विष्णुजी, दाहिने अङ्ग से हम और हृदय से रुद्र उत्पन्न हुये हैं। हम और विष्णुजी शक्ति की अग्नि से उत्पन्न हुये हैं। रुद्र शिव हैं जो तीनों गुणों से उत्तमोत्तम हैं। वे उमापति और सृष्टि के स्वामी हैं। इस प्रकार का जो शिवलोक हमने वर्णन किया, उसी के निकट गोलोक है। वहाँ श्रीकृष्णजी विराजमान हैं। अर्थात् जहाँ शिवजी की गौवें रहती हैं, वहाँ शिवजी ने श्रीकृष्णजी का स्थान बनाया है। कि वह उनकी पालना करें। तब से वह गोलोक और कृष्णलोक कहलाता है। प्रथम शिवजी ने विष्णु को दिया था पर विष्णुजी ने कृष्णजी का अवतार धारा और लक्ष्मीजी ने राधाजी का अवतार धारा। उनका शिवजी ने अभिषेक करके ब्रह्माण्ड का राज्य दिया और बड़ा भारी वरदान देकर सबसे उत्तम पदवी दी। कहा कि हे कृष्णजी ! जैसी तुम्हारी इच्छा हो वैसा ही करना। तुम्हारी महिमा और बड़ाई विष्णुजी से भी अधिक होगी। तुम गोपियों के संग विहार करना। इस कारण श्रीकृष्णजी श्रीराधाजी को लेकर गोपियों के नगर में आये और गौवों की पालना करने लगे। एक दिन श्रीकृष्णजी ने राधाजी को कहीं भेज दिया और आप विरजा के संग विहार करने लगे, यह किसी सखी ने राधा से कह दिया। राधाजी क्रोधवती होकर इस चरित्र को देखने आईं और विरजा के घर जाकर रथ से उतरीं। उन्होंने चाहा कि अन्दर जावें पर सुदामा जो एक लक्ष गोपों के साथ द्वार पर बैठा था, उसने राधाजी को अन्दर जाने न दिया, बहुत चिल्लाहट हुई। कृष्णजी ने जाना कि राधा आई हैं, इस हेतु से भयवान् होकर आप तो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अन्तर्धान हुये और विरजा ने अपने शरीर को नदी बना लिया जो चारों ओर मीठे जल से बह निकली। जब राधिकाजी ने अन्दर जाकर दोनों में से किसी को न पाया तब कृष्णजी पर बड़ा क्रोध किया और विरजा को नहीं देखकर बहुत रोई। पर विरजा श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार कृष्णजी के वियोग के दुःख को देख प्रकट हुई और कृष्णजी ने फिर राधाजी को विस्मरण कर दिया और विरजा के सङ्ग विहार करने लगे। जब फिर राधाजी ने सुना तो कोपभवन गईं और वस्त्र तथा गहने आदि शरीर से उतार भूमि पर लोटने लगीं। ऐसी गति सुनकर श्रीकृष्णजी कोपभवन में राधाजी के निकट आये और सुदामा उसी प्रकार एक लाख गोपों की सेना लेकर द्वारे खड़ा रहा। राधाजी ने कृष्णजी को देखकर कहा कि कहाँ आता है, पराई स्त्री से संभोग करता है और इसी में मग्न रहता है। यहाँ से चला जा। अपनी इच्छानुसार जहाँ जी में आवे, तहाँ जा। तेरे पास बहुत स्त्रियाँ हैं। हमारे निकट आने का क्या प्रयोजन है। हमारे जाने से विरजा तो नदी हो गई। तुमको भी उचित है कि नद होकर परस्पर मिलो और भोगविलास करो। तुम यहाँ से निकल जावो। तुम्हारे सर्वकार्य मनुष्यों के सदृश हैं। इससे हमारा यह शाप है कि तुम भी मनुष्य का शरीर धारो और यहाँ से जाकर भरतखण्ड में विराजमान हो। ऐसा शाप देकर राधाजी ने अपनी सखियों को आज्ञा दी कि इसको इस स्थान से निकाल दो। कृष्णजी वहाँ से निकाले गये पर गुप्त रहे। जब सुदामा ने अपने स्वामी की ऐसी गति देखी तो राधाजी से कहा कि तुमने क्यों ऐसा शाप दिया। तुम सब गोपियाँ कृष्णजी के अधीन हो। राधाजी ने कहा हे मूर्ख! तू नहीं जानता, कृष्णजी हमारे सेवक हैं। कृष्णजी और सब हमारे वश में हैं। हमारे बिना तीनों लोक के काम नहीं होते। इस हेतु से तुमको भी शाप देती हूँ कि तुम दानव का जन्म लो क्योंकि तुमने दैत्यों के समान कृष्णजी का मान किया और हमसे ग्लानि करते हो। हमारे बिना तुम्हारी कोई रक्षा न करेगा हमारे शाप से तुम यहाँ न रह सकोगे। सुदामा ने उत्तर दिया कि अब तुम्हारी बुद्धि मनुष्यों के सदृश है। इस कारण तुम भी मनुष्यों का शरीर धारो और कलङ्कित हो। कोई गोप तुम्हारे सङ्ग विवाह न करे और कृष्णजी को फिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पाकर सौ वर्ष पर्यन्त दुःख भोगो। हे नारद ! शिवजी ने ऐसे चरित्र किये और फिर अपनी माया को खींच लिया। उस समय विष्णु भगवान् वहाँ आये और देखा कि दोनों रुदन करते हैं। विष्णुजी ने कहा कि तुम कुछ भी खेद न करो और दानव होकर संसार का राज्य करो। शिवजी के सिवाय तुमको कोई न जीतेगा। उनके हाथ से मरोगे और फिर यहाँ चले आवोगे। हम और राधा भी अवतार धरकर मनुष्यों के सदृश लीला करेंगे। यह कहकर कृष्णजी राधाजी को लेकर गोलोक में रहे और सुदामा दानव हुये। समय पर राधिकाजी और कृष्णजी ने अवतार लिया और भक्तों के सुख देने को बड़े-बड़े अच्छे चरित्र किये। यह हमने पुरातन कथा कही है। अब और क्या श्रवण करने की अभिलाषा है ?

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

नारदजी बोले हे हमारे पिता ! शिवजी ने किस प्रकार शङ्खचूड़ को मारा ? वह भेद हमसे कहो। ब्रह्माजी ने कहा कि शङ्खचूड़ ने सब देवताओं को निकाल कर अच्छा राज्य किया। देवता आदि सब चिन्तावान् होकर इन्द्र के निकट गये और उनको आगे करके मुनीश्वरों सहित हमारे पास आ हाय-हाय करके शङ्खचूड़ का सारा वृत्तान्त कहा कि हम गुप्त होकर इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं। यह कहकर सब रोये। इस कारण हम सबको लेकर विष्णु भगवान् के निकट गये। स्तुति पढ़कर शङ्खचूड़ का वृत्तान्त कहा और रुदन करके विष्णुजी की सेवा करने लगे। विष्णुजी ने कहा कि शङ्खचूड़ हमारा बड़ा भक्त है। इस हेतु से वह सिवाय त्रिशूल के और किसी से न मरेगा। यह कहकर विष्णुजी हम सबको लेकर शिवलोक में गये। यह लोक विष्णुलोक से ऊपर है। उसकी महिमा बखाननी अति कठिन है। ड्योढ़ी पर पहुँचकर शिवजी की आज्ञानुसार अन्दर गये और बड़ी स्तुति पढ़कर कहा कि हमारी दुर्गति को देखिये और कृपादृष्टि कीजिये। हम दैत्यों के हाथ से मारे जाते हैं। यह कहकर हम सब रोने लगे। परन्तु शिवजी ने यह दशा देख हम पर दया की।

उन्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि हे देवताओं !

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अभय रहो। तुम्हारा कल्याण होगा। शङ्खचूड़ ने प्रथम जन्म में कृष्णजी की पूजा की थी परन्तु राधाजी से शाप पाया था। और आदि से अन्त पर्यन्त सब वृत्तान्त कहते ही थे श्रीकृष्णजी राधिकाजी सहित वहाँ आये और स्तुति करने लगे। कहने लगे कि आपकी माया में फँसकर और अपने तई भूलकर हमने ऐसा शाप पाया। आप अब क्षमा करें। शिवजी ने कहा कि हमारी ऐसी ही इच्छा थी। तुम्हारा अभिमान और अहंकार तोड़ने के निमित्त हमने यह चरित्र किया, अब अपने धाम को जावो और आनन्द से रहो। परन्तु ऐसा अपराध फिर न करना और जब क्रीड़ाकल्प में तुम दोनों मनुष्य का शरीर धारकर अवतार लोगे तो तुम्हारा शाप नष्ट हो जायगा। फिर गोलोक में आनन्द करोगे। तुम्हारा मित्र सुदामा दानव होकर शङ्खचूड़ कहलाता है। उसने देवताओं को बहुत दुःखी किया है जिससे वह चारों ओर मारे-मारे फिरते हैं। यह सब रोते पीटते हमारे निकट आये हैं। हम उनका दुःख दूर करेंगे। यह श्रीकृष्णजी से कहकर देवताओं की ओर देखा और कहा कि तुम कैलास पर्वत पर जावो। रुद्र जो हमारा अवतार है, उनसे सब वृत्तान्त कहो। वह तुम्हारे दुःख को दूर करेंगे। हम में और रुद्र में कुछ भेद न जानना। केवल देवताओं के निमित्त अलग रूप धारण किये हैं। हमारा वहाँ सगुणरूप है। जो कोई हम में और रुद्र में भेद समझता है वह कष्ट भोगता है। यह सुनकर हम प्रसन्न हुये और राधाजी तथा श्रीकृष्णजी गोपसहित चले गये। हम भी इन्द्र और देवताओं संयुक्त कैलास पर्वत पर गये। प्रणाम के पीछे प्रार्थना की कि हे गिरिजापति! हम सब तुम्हारे शरण हैं। हमारे दुःखों को नाश करो। फिर शङ्खचूड़ का सब वृत्तान्त सुनाया। रुद्र ने उत्तर दिया कि तुम अपना कार्य सिद्ध समझो और अपने-अपने घर सिधारो। हम शङ्खचूड़ को दैत्यों सहित मारेंगे और नाना प्रकार से तुम्हारे मनोरथ पूर्ण करेंगे। यह अमृत तुल्य वाणी शिवजी की सुनकर सब देवता प्रणाम करके अपने-अपने घर सिधारे।

तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिवजी ने शङ्खचूड़ के मारने की युक्ति विचार कर अपने भक्त पुष्पदन्त को बुलाया और कहा कि हे पुष्पदन्त!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुम गन्धर्वराज हो। सो शङ्खचूड़ के निकट जावो और कहो कि जो तुमने देवताओं का राज्य छीन लिया सो भला नहीं किया। तुम ऐसी माया से अभिमानी और अहङ्कारी हो गये हो। अभी कुछ नहीं गया, तुमको उचित है कि देवताओं का राज्य दे दो और कुछ भी झगड़ा न करो। अगर अपनी मृत्यु नहीं चाहते तो पाताल में जावो और राज्य करो, वरन् हमसे युद्ध करो। तुमको हम तुरन्त ही मार डालेंगे और फिर देवता अपना राज्य छीन लेंगे। यह सुनकर पुष्पदन्त शङ्खचूड़ के निकट गया। वह ऊँची अटारी पर बैठा हुआ था और तीन् करोड़ दैत्य उसके निकट सेवा करते थे। वह ऐसी सेना देखकर आश्चर्यवान् हुआ। अन्त में शङ्खचूड़ के निकट बैठ गया। शङ्खचूड़ ने पूछा तुम किसके दूत हो और क्यों ऐसे बेखटके बैठे हो। तुम्हारे कर्म सेवकों के ऐसे नहीं। जिस काम को आये हो, वह कहो। पुष्पदन्त ने सब वृत्तान्त जो शिवजी ने कहा था, कह सुनाया। अपनी ओर से यह कहा कि चाहे देवताओं को राज्य दो या युद्ध के निमित्त चलो। शङ्खचूड़ ने कहा कि हम शिवजी के भय से देवताओं को राज्य न देंगे। हम भली प्रकार जानते हैं कि यह राज्य पृथ्वी का वीरों और दैत्यों के निमित्त है। हम युद्ध करेंगे जिससे दोनों लोकों में सुख मिलता है। मुझको यह आश्चर्य है कि महादेवजी ऐसे महात्मा होकर देवताओं की रक्षा करते हैं। हम प्रातःकाल कैलास पर्वत पर आयेंगे। शिवजी को जो उचित हो, वह करें। पुष्पदन्त ने मुसकराके कहा कि शिवजी सबसे उत्तम हैं। तुम ऐसे अहंकारी न हो। उनको और देवताओं के सदृश न समझो। वह परब्रह्म भगवान् हैं। उनके अधीन ब्रह्मा और विष्णुजी हैं। उनसे युद्ध करके तुम मृत्यु को प्राप्त होगे। उनके गणों के तो सम्मुख हो लो, उनसे लड़ना तो बहुत ही कठिन है। ऐसे-ऐसे वचन कहकर पुष्पदन्त चुप हो रहा। तब शङ्खचूड़ ने कहा कि मैं बिना शिवजी के लड़े अप्रसन्न रहूँगा। सारी सृष्टि काल से उत्पन्न होती है और काल ही से नष्ट हो जाती है। हार अथवा जीत दोनों में मैं प्रसन्न हूँ। कृष्णजी हमारे बड़े काल हैं और दयालु भी हैं। हे पुष्पदन्त! यह सारा वृत्तान्त जैसा मैंने कहा, शिवजी से कह देना। पुष्पदन्त वहाँ से उठकर शिवजी के निकट आये और सारा समाचार कह सुनाया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इकतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! पुष्पदन्त से ऐसे कठिन वचन सुनकर शिवजी को क्रोध हुआ और आज्ञा दी कि सब तय्यार होवें। वीरभद्र, नन्दीगण, भृङ्गि, क्षेत्रपाल, भैरव और मुनि भद्र इन सबके नाम पुकार-पुकार कर बोले कि तुम सब शस्त्रादिक लेकर चलो। यह सब प्रसन्न होकर बाजे बजाने लगे और सेना को लेकर बाहर आये। शिवजी ने कहा कि सब सेना और सेनापति हमारे सङ्ग चलें। पर गजाननअर्थात् गणपति अपनी सेनासहित यहाँ रह जायँ। शिवजी शस्त्रादिक लेकर बैल पर चढ़े हुये चले और कैलासपर्वत के बाहर ठहरे। बड़े-बड़े सेनापति गण वीरभद्र, नन्दी, महाकाल बाण, सुभद्रक, विकृत, पिङ्गलाक्ष, मणिभद्र, विरूपाक्ष, विशालाक्ष, वाष्कल गतिहूत, बृष, दृष्टदंष्ट्र, कालङ्जर, दुर्गम, विद्रुम, बलभद्र, कपिल, कुटाम्बर, ताम्रनयन, विकर्ण, कोत्तर, बिल्वल, शतद्रन, अभिलाषी, भृङ्गी, द्रव्यबल, और आठों भैरव, ग्यारहों रुद्र और क्षेत्रपाल आदि गणों के स्वामी और राजा भी शिवजी की सेना के सङ्ग हुये। इस सब सेना के स्वामी वीरभद्र हुए। वीरभद्र की रक्षा के निमित्त भवानी सहस्र भुजा किये विमान पर चढ़कर आईं। उनके वस्त्र लाल थे और मुण्डों की माला पहिने थीं। हाथ में खप्पर था और हाथों में अनेक प्रकार के शस्त्र थे। गाती और नाचती एक योजन की लम्बी जिह्वा किये भयंकररूप धारणकर तेंतीस कोटि डाकिनी, शाकिनी, भूत, कूष्माण्ड, ब्रह्मराक्षस, वेताल और पिशाच आदि को लिये आईं। उसके पीछे देवता आदि की सेना थी जिसमें इन्द्र, वरुण, कुबेर, पवन, सूर्य, चन्द्रमा और नवग्रह, वसुकर्मा, अश्विनीकुमार बृहस्पति, धर्म और आठों वसु आदि सब देवता थे। यह सब शिवजी की सेना के सङ्ग हुये। शिवजी ने सबको अलग-अलग बिठाया और एक बेर कृपादृष्टि से देखा जिससे उनको बड़ी शक्ति प्राप्त हुई। शिवजी विन्धुभागा नदी के किनारे विराजमान हुये और बड़ के वृक्ष के नीचे बैठ गये।

बत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! जब पुष्पदन्त शङ्खचूड़ के पास से चले आये तब शङ्खचूड़ अपनी रानी के निकट आया और सब वृत्तान्त कहा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि मैं प्रातःकाल शिवजी से युद्ध करूँगा। उसकी रानी ने सुनकर शोक किया और रोने लगी। कहा कि शिवजी के सब अधीन हैं, तुम उनसे न लड़ो। वह अन्तकाल के स्वामी हैं। तुमको ऐसी बात अयोग्य है। इस प्रकार शिवजी की महिमा बखानी और कहा कि कल रात्रि को मैंने बुरा स्वप्न देखा। अर्थात् मेरा बायाँ अङ्ग फरका, ऐसा देखकर तुमको उचित है कि शिवजी से युद्ध न करो। परन्तु शङ्खचूड़ ने कुछ न सुना और कहा कि मुझको कुछ खेद नहीं क्योंकि तीनों लोक में सर्व कार्य समय पर होते हैं। समय पर अच्छी-बुरी बातें, सुख-दुख, वृक्षों का फलना-फूलना, देवताओं और सृष्टि की उत्पत्ति, संसार का जीना-मरना और अन्तकाल आदि सब ही होते हैं। इस कारण समय सबसे उत्तम है। ऐसे-ऐसे वचन अपनी स्त्री को समझाकर संभोग किया और धर्म को भूल गया परन्तु उसकी स्त्री को भोग करना अच्छा न भासा। क्योंकि वह श्रीसदाशिवजी के साथ लड़ने जाता था। पर शङ्खचूड़ बहुत समझाकर भोग विलास करता रहा। प्रातःकाल उठकर अपने पुत्र को तिलक दिया और अपनी रानी को रोदन करते देखकर अपने पुत्र को उपदेश कर और स्त्री को सौंपकर लड़ने को चला। सेनापति को बुलाकर कहा कि आज ही परीक्षा का दिवस है। इस कारण सब सेना ले चलो। क्योंकि शिवजी देवताओं को राज्य देने और मुझको अपना अधीन बनाने की इच्छा रखते हैं। इसलिये चलकर भलीभाँति युद्ध कीजिये। षडशीत, कम्बूदैत्य, पचास कुल असुर, बन्दर एक कोटि, वीर्य और सात कुल दानव धूम्र यह सब शस्त्रादिक लेकर निकल चले और कालिकेय अपनी सेना को सङ्ग लिये चलें। यह आज्ञा देकर वह घर से निकला और सोने चाँदी के विमान पर चढ़कर शिवजी के संग लड़ने चला। उस समय बाजे बजने लगे। बाजे बजानेवाले एक अक्षौहिणी और तीन लाख थे। सब सेना और सेनापति निश्शङ्क और प्रसन्नतापूर्वक चले जाते थे। शङ्खचूड़ वहाँ पर गया जहाँ शिवजी विराजमान थे और राजनीति को स्मरणकर शिवजी की सेना के निकट ठहरा।

तेंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शङ्खचूड़ ने एक दूत भेजा और सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वृत्तान्त कहकर उसको उपदेश दिया। वह शिवजी की शरण हुआ और दीक्षप नदी के निकट जहाँ शिवजी विराजमान थे, वहाँ पहुँचकर शिवजी को प्रणाम कर कहा कि शङ्खचूड़ ने यह कहा है कि तुम्हारी क्या अभिलाषा है? शिवजी ने कहा कि तुम हमारी ओर से यह कह देना कि तुम मुरज के वंश में हो और सुदामा तुम्हारा नाम था। तुम श्रीकृष्णजी के मित्र थे परन्तु राधाजी के शाप से दैत्य हुये परन्तु मूल से दैत्य नहीं हो। इस कारण तुमको उचित है कि प्रथम जन्म और धर्म का स्मरण करके देवताओं के सङ्ग शत्रुता न रक्खो। यथायोग्य राज्य करो और देवताओं को यथाशक्ति सुख दो। जो इसके विरुद्ध करोगे तो दुःख प्राप्त होगा। जो राज्य तुमने देवताओं से छीन लिया है, उसे फेर दो। तुम और सब देवता कश्यप मुनि से उत्पन्न हो। तुम में किसी प्रकार का अन्तर नहीं। तुम दोनों परस्पर मिलो और आनन्द करो इससे हम प्रसन्न हैं। जो इसके विपरीत करोगे तो तुमको दुःख प्राप्त होगा। संसार में सबसे बड़ा पाप अपने भाई-बान्धवों से शत्रुता रखना है। हम किसी की ओर नहीं, पर सेवा से प्रसन्न हैं, अपने सेवक की बड़ी रक्षा करते हैं और सुखी रखते हैं। इसी प्रकार शिवजी ने बहुत से उपदेश वेद और धर्मशास्त्र की रीति के दिये। दूत ने कहा आपने जो कहा कि परस्पर की शत्रुता बुरी होती है, वह सत्य है पर विष्णुजी ने जो राजा बलि से छल करके उनका नगर तथा राज्य छीन लिया और उनको पाताल भेज दिया, यह क्या उनको उचित था। उनके पिता को मार डाला, फिर देवताओं और दैत्यों ने सागर को मथा। देवताओं को क्यों अमृत मिला और क्यों महिषासुर को देवीजी ने बिना किसी दोष के मार डाला फिर तारक और त्रिपुर मारे गये। इसी प्रकार उन्होंने अन्धक, गज और जलन्धर आदि को मारा। तब उनके यह बुद्धि नहीं थी कि अपने भाइयों के सङ्ग शत्रुता करना पाप है। क्या इसको जातिद्रोह नहीं कहोगे? यह शत्रुता देवताओं और दैत्यों की बहुत प्राचीन है। समय पर सुख-दुःख सब होते हैं, क्योंकि सब काम समय पर होते हैं। पाना और न पाना, जीत और हार, जीना और मरना सब समय पर होता है। यह तुमको उचित नहीं कि देवताओं अथवा दैत्यों के युद्ध में तुम ईश्वर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होकर पक्षपात करते हो। क्योंकि शत्रुता और मित्रता तुल्य मनुष्यों से होती है परन्तु तुम ऐसे ईश्वर और स्वामी को यह अयोग्य है कि हमारे सङ्ग युद्ध करो। तुमको क्या लज्जा भी नहीं आती? ऐसी-ऐसी बातें दूत की सुनकर शिवजी हँसे। शिवजी ने उसकी प्रशंसा की और कहा कि प्रथम ही से हम अपने सेवक के अधीन हैं। वेद की आज्ञानुसार चलते हैं। उसी की आज्ञा से हमने दैत्यों को मारा है। हम किसी की रक्षा नहीं करते। अब हमारे आने का कारण यह है कि इन्द्र आदि देवता हमारे शरणागत हुये। जितने दैत्य हो गये हैं, उन सबसे तुम बड़े हो और कृष्णरूप विष्णुजी के भक्त हो। इससे तुम भी उनके समान हो और उत्तमोत्तम हो। इस हेतु से हम लज्जावान् नहीं। अधिक कहना निष्फल है, तुम देवताओं का राज्य दे दो और पाताल में जाकर राज्य करो। देवताओं से शत्रुता रखनी बुरी है। यद्यपि कैसा ही धर्मवान् हो तो भी देवताओं की शत्रुता से कोई नहीं बचा। जो इस वचन से अप्रसन्न हो तो युद्धस्थान में चलो और लड़ाई करो। हे दूत! तुम यह सब बातें शङ्खचूड़ से कह देना। जो उसकी इच्छा हो, वह करे। हम अवश्य देवताओं का मनोरथ पूर्ण करेंगे। यह कहकर शिवजी चुप हो रहे। दूत उठकर चला गया और शङ्खचूड़ से सब वृत्तान्त कहा।

चौंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शङ्खचूड़ ने लड़ने को अच्छा समझकर सुलह न की और सेना को तय्यार किया। बाजे जो लड़ाई में बजवाये जाते हैं, वह बजवा दिये और युद्धस्थल में खड़ा हुआ शिवजी भी आये। देवता और दैत्य लड़ने लगे। इन्द्रजी पुरुष प्रिया के सङ्ग, शुक्र और बृहस्पति, मृत्यु और पुष्पकर के साथ और इसी प्रकार दोनों ओर के बड़े-बड़े नामी सेनापति परस्पर युद्ध करने लगे। नाना प्रकार के शस्त्रादिक चलाये गये जिससे बहुत से देवता और दैत्य, हाथी और घोड़े मारे गये। इसी प्रकार बहुत दिनों तक युद्ध होता रहा परन्तु न किसी की जीत हुई, न हार। अन्तविषे दैत्यों ने चढ़ाई की और देवता भाग कर तितर-बितर हो गये। उस समय में वीरभद्र और नन्दी आदि शिवजी के गण सम्मुख हुये। वीरभद्र ने अपने त्रिशूल से सब दैत्यों को कुरूप बना दिया। इस हेतु से दैत्यों को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

युद्ध त्यागना पड़ा। यह दुर्गति देखकर शङ्खचूड़ ने भागती हुई सेना को प्रसन्न किया और आप लड़ने चला। इतने बाण बरसाये कि सब शिवगण भाग गये। केवल नन्दी और वीरभद्र जो शिवजी के अंश से उत्पन्न हुये हैं, युद्धस्थान में खड़े रहे। शङ्खचूड़ ने नन्दी के बाण मारा कि वह धरती पर गिर पड़ा और उठकर फिर लड़ने लगा। वीरभद्र ने अपना त्रिशूल शङ्खचूड़ के मारा पर शङ्खचूड़ ने उसे काट डाला और वीरभद्र को अपने शस्त्र से मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। वीरभद्र तुरन्त उठा और क्षेत्रपाल दैत्य से लड़ने लगा। भैरव ने शङ्खचूड़ को अपने त्रिशूल से मारा कि वह अचेतता को प्राप्त हुआ। उस समय बड़ा युद्ध हुआ। भैरव को आकाशबाणी हुई कि शङ्खचूड़ बिना शिवजी के और किसी से न मरेगा। तुम शिवजी के निकट जावो, वे मार डालेंगे। शिवगण उनके पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया।

पैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शिवजी ने देवताओं की हार सुनकर और अपने गणों की दुर्गति देखकर वीरभद्र को आज्ञा दी कि तुम जाकर लड़ो। यह श्रवणकर वीरभद्र सेनासहित गया और युद्धस्थान में जाकर शिवजी के समान शङ्ख बजाया और इतना क्रोध किया कि दैत्य काँप गये। उन्होंने एक अक्षौहिणी दैत्यों की सेना नाश कर दिया। महाकाली ने सबका रुधिर पिया और दैत्यों को तोड़-तोड़ कर निगलने लगीं। वे बार-बार युद्धस्थल में लड़ने लगी और एक ही हाथ में सात लाख करोड़ घोड़े और एक लाख करोड़ हाथी रखकर गईं। सहस्रों कबन्ध इधर-उधर फिरने लगे और वीरभद्र ने क्रोधवान् होकर एक करोड़ दैत्यों को मार डाला। अन्त में विप्रचित्ति १ वृषपर्वा २ जम्भासुर ३ वीरविकम्पन ४ यह चारों वीरभद्र के सम्मुख हुये और भिन्न-भिन्न होकर लड़े। महामारी ने जाकर दैत्यों को नष्ट किया, फिर भैरव ने दैत्यों को खाया। उस समय सब दैत्य हारे और वीरभद्र जीते। देवता बहुत प्रसन्न हुये और अनेक प्रकार के बाजे बजने लगे। आकाश पर से पुष्पों की वर्षा हुई। उस समय शङ्खचूड़ अपने कवच को कण्ठ में पहने विमान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पर चढ़कर बहुत सी सेना लेकर मारू बाजा बजवाते युद्धस्थान में आया और अपनी भागी हुई सेना को इकट्ठा किया। वह अपने कमठे को तान-तान कर बाण मारने लगा। उस समय अँधेरा हो गया। बहुत से देवता हार मानकर भाग गये। वीरभद्र ही खड़ा रहा। शङ्खचूड़ ने अपनी माया से पर्वत, सर्प और अग्नि आदि को उपजाकर इन्हीं की वर्षा की जिसमें वीरभद्र गुप्त हो गये मानों बद्ली में सूर्य छिप गये। उन्होंने अति आश्चर्य में होकर शिवजी का ध्यान किया और महाशक्ति को छोड़ा। दैत्यों की माया का नाश हुआ। तब शङ्खचूड़ ने क्रोध करके वीरभद्र के रथ और धनुष को अति पवित्र बाण से काट डाला। घोड़े मरकर पृथ्वी पर गिर पड़े। दूसरे बाण से वीरभद्र को मारा जिससे वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब वीरभद्र सचेत होकर उठा तो दूसरे रथ पर चढ़कर शङ्खचूड़ के रथ सन्नाह, घोड़े और शक्ति आदि को काट डाला और धरती पर गिरा दिया। उसके सारथी को मार डाला और अपनी शक्ति से शङ्खचूड़ को अचेत कर दिया। शङ्खचूड़ थोड़े समय के पीछे उठा और गर्जने लगा। फिर वीरभद्र ने उसे अपनी शक्ति से गिरा दिया। इसी प्रकार कई बेर गिराया परन्तु शङ्खचूड़ ने उठकर अन्त विषे अपनी सांगी से वीरभद्र को पृथ्वी पर गिरा दिया और मार डाला। यह शिवजी का वरदान था। महाकाली ने वीरभद्र को उठाकर शिवजी के सम्मुख रख दिया और सब वृत्तान्त कह सुनाया। शिवजी ने वीरभद्र को छुआ और वह जीता हो गया। वीरभद्र फिर उठकर चिल्लाने लगा। उसने युद्धस्थान में जा अपने त्रिशूल को चलाया कि शङ्खचूड़ पृथ्वी पर गिर पड़ा। जब चेत हुआ तब जितने बाण वीरभद्र को मारे, वह सब व्यर्थ हुये। अन्त विषे अपनी सांगी को वीरभद्र के हृदय पर मारा कि वह पृथ्वी पर गिर पड़ा। पर फिर वीरभद्र उठे और शङ्खचूड़ ने अपने त्रिशूल से चाहा कि फिर उसे मारूँ परन्तु महाकाली ने उसकी रक्षा की और सब गण भी आ गये। देवता अति प्रसन्न हुये। दैत्यों ने भी अपनी भागी और थकी सेना को इकट्ठा किया। दोनों सेना युद्धस्थान में खड़ी रहीं। दोनों ओर से बाजे बजे और परस्पर वीर लड़ने लगे।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छत्तीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! फिर बड़ा युद्ध हुआ और दिन रात के सदृश हो गया। कालीजी ने भयंकर शब्द निकाले जिससे सब दैत्य अचेत हो पृथ्वी पर गिर पड़े। कालीजी ने महामद को पिया और नाचने लगीं। कालीजी के सिवाय और बहुत सी देवियों ने कालीरूप धारण किया और मद को पीकर नाचने लगीं। उस समय दैत्यों को बड़ा दुःख और शोक उत्पन्न हुआ पर देवता प्रसन्न थे। शङ्खचूड़ सब दैत्यों को इकट्ठा कर युद्धस्थान में खड़ा होकर वीरभद्र से लड़ने लगा। दोनों वीरों के शरीर इस प्रकार घायल हुये मानों ढाक के वृक्ष खड़े थे। शङ्खचूड़ ने अग्निबाण चलाया जिससे चारों ओर आग फैल गई। वीरभद्र ने वरुणास्त्र छोड़ा जिससे सब अग्नि नाश हो गई। इसी प्रकार शङ्खचूड़ ने नाना प्रकार के बाण छोड़े पर वीरभद्र ने सबको नष्ट कर दिया। अन्त में शङ्खचूड़ ने नारायणबाण छोड़ा, उसको भी वीरभद्र ने पाशुपत अस्त्र से दूर कर दिया। फिर शङ्खचूड़ ने चक्र छोड़ा। महाकाली ने तुरन्त ही निगल लिया और शङ्खचूड़ को किसी प्रकार जीतने न दिया। कालीजी ने अपने धनुष को जिसका शब्द अन्तकाल से कम न था, खैंचकर अग्निबाण छोड़ा पर शङ्खचूड़ ने वैष्णवास्त्र से दूर कर दिया। फिर कालीजी ने नारायणास्त्र छोड़ा पर शङ्खचूड़ ने रथ से उतर दण्डवत् की जिससे वह निष्फल होकर दूर गया। इसी प्रकार कालीजी ने ब्रह्म अस्त्रादिक सब छोड़े परन्तु शङ्खचूड़ ने सबका नाश किया। शङ्खचूड़ ने भी दिव्यास्त्र व शक्ति आदि कालीजी को मारे पर सब निष्फल हुये। बहुत दिनों तक वे लड़ते रहे अन्तविषे कालीजी ने पाशुपत अस्त्र के छोड़ने की इच्छा की। पर आकाशवाणी हुई कि यह किस निमित्त छोड़ती हो, यह तुमसे न मरेगा क्योंकि कृष्णजी का भक्त है। महाकालीजी ने उसको तो न छोड़ा पर अधिक क्रोधवान् होकर सात लाख दानवों को खा लिया और अपने शरीर को भयङ्कर बनाया। शङ्खचूड़ ने रुद्रशिली को मुख में रख लिया जिससे कालीजी हट गईं। शङ्खचूड़ ने अपने खड्ग को छोड़ा। कालीजी ने उसे भी खा लिया और मुख खोलकर शङ्खचूड़ का ग्रास करने लगीं, परन्तु वह माया से गुप्त हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गया। कालीजी ने उसके रथ और सारथि को तोड़ फोड़ डाला। शङ्खचूड़ फिर प्रकट हुआ और अपना चक्र चलाया पर कालीजी ने उसे ग्रास किया और एक ऐसा घूँसा मारा कि वह अचेत होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। कालीजी ने उसे घुमाकर आकाश की ओर फेंक दिया और एक करोड़ दैत्यों को मारकर रुधिर पी लिया। वे अपने केशों को बिखराकर युद्धस्थान में नाचीं। शङ्खचूड़ ने उठकर कालीजी को प्रणाम किया और विमान पर चढ़कर निर्भय लड़ने लगा। ऐसा धैर्य शङ्खचूड़ में देखकर देवीजी ने महा-भयङ्कर शरीर बनाकर रुद्रमहाधनुष को हाथ में लिया और चाहा कि उसी समय प्रलय करें पर आकाशवाणी हुई कि इसकी मृत्यु तुम्हारे हाथ से नहीं, तुम मिथ्या युद्ध करती हो। तुम शिवजी के निकट जावो, वह तुरन्त ही मारेंगे। यह वाणी श्रवण कर महाकाली शिवके निकट गईं।

सैंतीसवाँ अध्याय।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे हमारे पुत्र! महाकालीजी शिवजी के निकट गईं और सेना को ले जाकर सब वृत्तान्त कहा जिसको सुनकर शिवजी चिन्तावान् हुये फिर हँसकर अपनी माया को विचारा और शङ्खचूड़ के पहिले जन्म का वृत्तान्त वर्णन किया। फिर श्रीसदाशिव अपने गणों को साथ ले बैल पर चढ़कर चले और क्षेत्रपाल, वीरभद्र, भैरव और नन्दीश्वर की ओर एक बेर देखा जिससे उनको महाशक्ति प्राप्त हुई। वे सर्व शस्त्रादिक लिये भयंकर रूप धारण किये युद्धस्थान में आये। दैत्यों ने उनको रुद्र कालान्तक करके देखा और सब डर गये। शङ्खचूड़ ने शिवजी को रथ से उतारकर प्रणाम किया और शिवजी की आज्ञानुसार धनुष और बाण लेकर शिवजी से लड़ने लगा। शिवजी और शङ्खचूड़ सौ वर्षपर्यन्त लड़ते रहे। देवता और दैत्य चुपचाप बैठे रहे। उस समय हम अपने कुल सहित और वैकुण्ठवासी आकाश पर युद्धकौतुक देखते रहे। जो बाण शङ्खचूड़ ने छोड़े, वह शिवजी ने काट डाले। इसी प्रकार जो-जो शस्त्र शिवजी ने मारे वह शङ्खचूड़ ने तुरन्त ही काट डाले। अन्त विषे शङ्खचूड़ ने क्रोध करके शिवजी को चक्र मारा। शिवजी ने अपने घूँसे से उसको चूर-चूर करके धरती पर फेंक दिया। शिवजी ने शङ्खचूड़ को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घायल करके पृथ्वी पर गिरा दिया। वह जब चेता तब फिर रथ पर चढ़कर शिवजी के सम्मुख हुआ। शिवजी ने शङ्खचूड़ को आते देखकर डमरू बजाया और भृङ्गीनाद करके अपना धनुष टङ्कोरा जिससे यह जाना जाता था कि अन्तकाल आ गया। चारों दिशा से शिवगण गर्जने लगे। जब शिवजी ने शङ्खचूड़ से तिष्ठ-तिष्ठ शब्द कहा तो देवता बहुत प्रसन्न हुये और जय-जय करने लगे। उस समय शङ्खचूड़ ने अपनी शक्ति चलाई जिसे क्षेत्रपाल ने तुरन्त ही ग्रास किया। शिवजी और शङ्खचूड़ परस्पर इतना लड़े कि सब डर गये। शिवजी ने पाशुपात अस्त्र चलाया जिससे वह पृथ्वी पर गिर पड़ा और फिर उठकर लड़ने लगा तथा रुद्रबाण से शिवजी को और अन्य बाणों से भैरव को मारा। उसने बहुत भुजायें अपने शरीर में माया से उत्पन्न कीं और हरएक से इतने बाण चलाये कि सब देवता दुःखी हुये। अन्त विषे शिवजी ने सब भुजा काट डाला। फिर शङ्खचूड़ अपनी गदा लेकर शिवजी की ओर झपटा। शिवजी ने उसे काट डाला और अपने त्रिशूल से शङ्खचूड़ के हृदय को फाड़ डाला। उसके उदर से एक मनुष्य तिष्ठ-तिष्ठ कहते उपजा। शिवजी ने अपने शस्त्र से उसका भी शिर काट डाला। वह शिर काँपने लगा और उसने भयंकररूप धरकर देवताओं को बहुत दुःख दिया। तब सदाशिवजी की आज्ञानुसार कालीजी दैत्यों की सेना में घुस गईं और दैत्यों को खाने लगीं। इसी प्रकार बहुत पक्षी आदि को खाया। महामारी ने भी सेना का ग्रास किया और क्षेत्रपाल भैरव, नन्दी तथा वीरभद्र ने बहुत से दैत्यों को खाया और बहुतों को नाश किया। वे सारे सेनापति दैत्यों को नष्ट करने लगे। योगिनीगण दैत्यों को खाने लगीं। ज्वर ने भी शरीर धारणकर दैत्यों को मार डाला। ऐसी दुर्गति देखकर सब दैत्य भाग गये और सन्निपात ने भी सबको दुःखी किया। नन्दी ने भी दैत्यों को मार डाला। उस समय सब देवता ऐसे प्रसन्न हुये कि वर्णन नहीं हो सकता और शिवजी भी आनन्द को प्राप्त हुये।

अड़तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शङ्खचूड़ ने इस प्रकार अपनी सेना की दुर्गति देखकर क्रोध किया और शिवगणों को डाट-डपटकर शिवजी से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहा कि तुम सम्मुख होकर लड़ो। दैत्यों के मारने से क्या फल मिलता है? वीर निर्बल मनुष्यों से नहीं लड़ते। मैं वह हूँ जो तुम्हारे मद को नष्ट करूँगा। यह कहकर शिवजी पर बड़े-बड़े बाण मारे। शिवजी ने सब काट डाले शङ्खचूड़ ने एक माया को उपजाया जिसको शिवजी ने महादिव्य बाणों से दूर कर दिया। शङ्खचूड़ पृथ्वी में गुप्त हो गया। उस समय हम और विष्णुजी ने जय-जय की शिवजी ने क्रोध करके चाहा कि शङ्खचूड़ को मार डालें और अपना त्रिशूल उठाकर चाहा कि मारें पर आकाशवाणी हुई कि हे शिवजी! जब तक यह कृष्णकवच पहिने रहेगा और तुलसी इसकी स्त्री पतिव्रता रहेगी, तब तक यह तुलसी समेत न मरेगा क्योंकि ब्रह्माजी का यही वरदान है। यह सुनकर शिवजी ने त्रिशूल न छोड़ा। विष्णुजी शिवजी की अभिलाषा जानकर आये और कहा कि जो आज्ञा हो सो करूँ। शिवजी ने कहा कि तुम किसी प्रकार से कृष्णकवच उसके कण्ठ से उतार लो और उसकी स्त्री का पातिव्रतधर्म नष्ट कर डालो। यह सुनकर विष्णुजी ब्राह्मण हो गये और शङ्खचूड़ के पास गये। ब्राह्मण को शङ्खचूड़ ने प्रणाम किया। ब्राह्मण ने आशीर्वाद देकर कहा कि पानी पिलावो। शङ्खचूड़ ने पानी पिलवाया। फिर ब्राह्मण ने कहा कि हमको कृष्णकवच दे दो। शङ्खचूड़ ने निश्शङ्क उसको दे दिया, यद्यपि वह अतिप्रिय था। हे नारद! उदारता इसी को कहते हैं। जो शत्रु भी ब्राह्मण बनकर कोई वस्तु माँगे तो निश्शङ्क दे दे। यद्यपि प्राण जावें पर ब्राह्मण विमुख न जावे। जिसके निकट विष्णुजी भिखारी ब्राह्मण बनकर जावें, उसके धन्य भाग्य हैं। जिसके यहाँ से भिखारी विमुख होकर न जावें, उसके भी धन्य भाग्य हैं। उसके समान संसार में अन्य नहीं। इसी उदारता पर राजा बलि, दधीचि, जरासंध, सांख्य आदि अति कीर्तियुक्त हो गये हैं। फिर विष्णुजी शङ्खचूड़ का वेश धारकर उसके घर गये और बड़े चरित्रों से उसकी स्त्री का जो पतिव्रता थी, धर्म नाश किया और लौटकर शिवजी से सब वृत्तान्त कहा। शिवजी ने सुनकर अपने विजय के त्रिशूल को उठा लिया जिसमें पृथ्वी और आकाश दिखाई देते थे। वह मध्याह्न के सूर्य समान था और उसके सब शस्त्र थे। शिवजी ने त्रिशूल को छोड़ा जिससे शङ्खचूड़

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलकर भस्म हो गया। त्रिशूल फिर शिवजी के हाथ में आ गया। बहुतेरे दैत्य भी जल गये। इस हेतु सब दैत्य भाग गये। जो कुछ बचे वह भागकर पाताल में छिप रहे। देवताओं ने बड़ा आनन्द किया और सभा रची जिसमें देवताओं की स्त्रियों ने नाचा। शङ्खचूड़ गोलोक में गये और शाप से छूट-कर वैसे ही हो गये। उसकी हड्डियों के शङ्ख बने। वह विष्णुजी को अति-प्रिय हैं। देवता और मुनि जो विष्णुजी के परिवार में हैं, उन सबको भी प्यारे लगते हैं पर शिवजी को प्रिय नहीं। उस समय हम और इन्द्र सब देवता शिवजी के पास गये और बहुत स्तुति की। बेर बेर प्रणाम और दण्डवत् किया फिर सब देवता शिवजी की आज्ञानुसार अपने-अपने घर सिधारे। उस समय संसार भर आनन्दपूर्वक था। सबके दुःख दूर हुये। शिवजी भी अपने गणों को लेकर कैलाश पर्वत पर गये। शिवजी जो परब्रह्म हैं, वह दीनजनों के रक्षक हैं। जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको किञ्चित भी दुःख प्राप्त न होगा। उसको शिवजी की भक्ति अधिक होती है। वह भुक्ति-मुक्ति दोनों को प्राप्त करेगा। उनके चारों वर्णों के दुःख भस्म हो जायेंगे। यह शिवचरित्र दोनों लोकों का फलदायक है।

उन्तालीसवाँ अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्माजी! विष्णुजी ने किस प्रकार तुलसी का पाति-व्रतधर्म नष्ट कर डाला? ब्रह्माजी बोले कि यह चरित्र शिवजी और विष्णुजी की भक्ति को अधिक करता है, मन लगाकर सुनो। विष्णुजी शङ्खचूड़ का वेष धारणकर तुलसी के घर गये और तुलसी के द्वार पर जाकर जीतने के बाजे बजवा दिये। यह देखकर तुलसी अति प्रसन्न हुई और बहुत धन आदि भिक्षकों और ब्राह्मणों को दिया। फिर अपने रूप को बनाकर अनेक प्रकार शृङ्गारकर बैठी। विष्णुजी उसके घर गये। तुलसी ने चरण धोये और स्तुति करके चाँदी की चौकी पर बिठलाकर ताम्बूल दिये और कहा कि धन्यभाग हैं जो आप जीतकर आये। उसने शिवजी की बहुत स्तुति करके पूछा कि किस प्रकार तुमने उनको जीता, मुझको प्रतीत नहीं। विष्णुजी ने कहा कि हमने युद्धस्थान में जाकर बहुत लड़ाई की। देवता भाग गये। फिर शिवजी और वीरभद्र लड़ते रहे। देवता और दैत्य मारे गये। उस समय ब्रह्माजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ने सुलह करवा दी। हमने ब्रह्माजी की आज्ञानुसार देवताओं को कुछ दे दिया। शिवजी अपने घर गये और देवता आदि भी अपने-अपने लोकों को सिधारे। यह कहकर विष्णुजी अपनी सेज को सजा हुआ पाय तुलसी के साथ भोगविलास करने लगे। पर तुलसी को मैथुन करते समय सन्देह उपजा कि यह कोई दूसरा मनुष्य है। सो तुलसी कहा कि तुम शङ्खचूड़ नहीं, तुमने हमसे छल किया और हमारे पातिव्रतधर्म का नाश किया है। अब सत्य-सत्य वर्णन करो कि तुम कौन हो? विष्णुजी ने डरके कहा कि हम विष्णुजी हैं। देवताओं के निमित्त यह कार्य किया। विष्णुजी ने अपने दर्शन दिये। जब तुलसी ने विष्णुजी को देखा तो क्रोध करके कहा कि तुमने हमारे पातिव्रत धर्म को नष्ट किया, तुमने यह छल करके हमारे स्वामी को मरवा डाला, इस हेतु से हमारा यह शाप है कि तुम पत्थर हो जावो। जो तुमको दयासिन्धु कहते हैं, वह मूर्ख हैं। हमारा स्वामी जो तुम्हारा भक्त था, उसको तुमने देवताओं के मनोरथ सिद्ध करने के लिये मरवा डाला। यह कहकर तुलसी रोने लगी। यह देखकर विष्णुजी डरे और शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने तुलसी को दर्शन दिया और कहा कि तुम रुदन मत करो। अपने-अपने कर्म सब भोगते हैं। दुःख और सुख कोई वस्तु नहीं। वह समुद्र के समान है जिसमें दोनों प्रकार का जल है। तृष्णा उसकी लहर है। धर्म बिना कोई पार नहीं हो सकता। तुम दोनों से हम कहते हैं कि जो तुमने प्रथम योग और तप किया था, वह निष्फल न हो। तुम दोनों हमारे मांस हो। तुम्हारा पति कृष्णजी का मित्र सुदामा नामी था, उसे राधिकाजी ने शाप दिया इससे वहाँ उत्पन्न हुआ। अब वह मारा गया और इस शरीर को त्याग कर वह फिर वैसा ही होगया। तुम भी इस शरीर को छोड़ो और विष्णुजी के साथ विहार करो। तुम्हारा पातिव्रतधर्म नष्ट नहीं हुआ। देवताओं की भलाई के लिये जो हमने तुम्हारे पति का वध किया था, उस पर क्रोध न करना। तुम नदी के समान होकर गण्डकी नदी के नाम से प्रसिद्ध होगी। विष्णुजी के अंश से जो समुद्र है, उसकी स्त्री होकर विहार किया करोगी। सिवाय इसके तुम दोनों एक और रीति से इकट्ठे रहोगी अर्थात् तुम पृथ्वी में इसी नाम अर्थात् तुलसी के नाम से प्रसिद्ध होकर उप-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जोगी और विष्णु के शरीर में चढ़ा करोगी कि विष्णु अपने कर्म का फल पावें। विष्णु तुम्हारे शाप से पत्थर बनकर गण्डकी नदी के तीर स्थित रहें और उस जगह बड़े तीक्ष्ण दंष्ट्रावाले भयदायक जीव उपजकर पत्थर को काट-काटकर बहुत टेढ़े-सीधे टुकड़े बनाया करेंगे। वे टुकड़े शालग्राम के नाम से प्रसिद्ध होंगे और टूटे फूटे टुकड़े केवल पत्थर कहलावेंगे। चक्र के भेद से वेद ने शालग्राम शिला बहुत विस्तार से वर्णन किया है। उन शालग्राम के साथ तुम्हारी भेंट सदा हुआ करेगी जो पुण्य बढ़ानेवाला और पापों का नाश करनेवाला है। जो कि तुम शङ्खचूड़ की स्त्री हो और बहुत युगों तक उससे विहार किया, इससे तुम्हारा संयोग शंख के साथ हुआ करेगा। इस बात में भेद करनेवाला दुःख पावेगा। यह बातें तुलसी से कहकर शिव अन्तर्धान हो गये और तुलसी अति प्रसन्न होकर अपना शरीर छोड़ वैकुण्ठ चली गई और उत्तम स्वरूप धारणकर विष्णुजी के साथ विमान पर चढ़ी। उसको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हुआ और उसके प्रथम शरीर से गण्डकी नदी उपजकर ऐसी तेजोवती हुई कि जो मनुष्य उसके जल को देखे या स्पर्श करे, उसके सब पाप दग्ध हो जावें। उसके तट पर विष्णुजी पर्वत के आकार से स्थित हुये जिनके दूर ही के दर्शन से पाप क्षीण हो जाते हैं। बड़े-बड़े कठोर दाँतवाले कीड़े उपजकर बड़े-बड़े छिद्र किया करते हैं। उनसे जो टुकड़े होकर गण्डकी नदी में गिरते हैं, वही शालग्राम की मूर्तियाँ हैं जो अति पवित्र और दुःख दूर करने-वाली हैं। उनमें जो चक्रसहित हो, वह पूजने के योग्य हैं। लक्ष्मीनारायण आदि उनके बहुत प्रकार हैं, परन्तु हमने विस्तार के भय से नहीं लिखा। जो नदी से बाहर मिलती हैं, वे पिङ्गलादि नाम से प्रसिद्ध हैं, और गृहस्थ के पूजने योग्य नहीं। चारवर्ण के विशेष जो मनुष्य हैं, उनके पूजने योग्य हैं। वह मूर्तियाँ दो भाँति की हैं। एक प्रकार आनन्द और दूसरी प्रकार दुःख देती हैं। शालग्राम शिला तीन वर्ण के विशेष शूद्र वर्ण के पूजने योग्य नहीं है। शालग्राम शिला की बहुत बड़ी बड़ाई है जैसे कि नर्मदा के पत्थरों की महिमा हैं। शालग्राम और नर्मदा की मूर्तियाँ स्वयं स्वरूप विष्णु और शिव हैं। शालग्राम शिला को तुलसीपत्र अति प्रिय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। कदाचित् तुलसीपत्र से अलग शालग्राम की मूर्ति रक्खी जावे तो बहुत ही दुःख प्राप्त होगा। कष्ट और दुःख के विशेष स्त्री का वियोग होगा, चाहे मर जाने या और किसी प्रकार से। इसी प्रकार शंख का वियोग भी शालग्राम को बहुत दुःखदायी है। जब तुलसी शंख शालग्राम इकट्ठा करे और एक ही स्थान पर रक्खे, तब दोनों लोक का सुख प्राप्त होता है। यह विष्णु का इतिहास मुक्ति देनेवाला, सुनने-सुनाने से आनन्द देता है। शङ्खचूड़ वध और शिव का चरित्र सब मनोरथ पूरे करनेवाला है। दुःख को दूर करता है और अति पवित्र है। जो इस इतिहास में विष्णु का भी यश कहा गया है, इससे और भी अधिक आनन्ददायक हुआ। शिव और शिव की लीला अति आश्चर्यदायक हैं। वे भक्तों के अधीन होकर कैसी-कैसी लीला करते हैं। हे नारद! अब क्या सुनना चाहते हो?

चालीसवाँ अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! जिस तरह शिव ने अन्धकासुर को वध किया, वह कथा सुनने की मुझे अभिलाषा है, कृपा करके वर्णन कीजिये। ब्रह्मा ने कहा कि जब विष्णु ने नरहरि और शूकर अवतार लेकर दिति के पुत्रों को मारा तब दिति ने बड़ा विलाप किया और कश्यप की शरण में जाकर सेवा करने लगी। हर प्रकार अपने पति कश्यप के प्रसन्न होने के उपाय में सब शृंगार आदि को छोड़ ब्रह्मचर्य स्वरूप धारणकर रहने लगी। वह केवल कश्यप की इच्छा के अनुकूल मीठे वचन कह बहुत बकने से बची रहती। कश्यप ने प्रसन्न होकर कहा कि हम तुम्हारी सेवा से अति प्रसन्न हुये, वरदान माँगो और पातिव्रत धर्म वर्णन करके कहा कि कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसको हम शिवजी की कृपा से नहीं दे सकते। दिति ने कहा कि देवताओं ने हमारे साथ शत्रुता करके विष्णु के द्वारा मेरे दोनों पुत्र और बहुत दैत्यों का वध कराया, इस बात का मुझे बड़ा दुःख है। इसी से मैं आपकी शरण में आई हूँ। मुझे ऐसा पुत्र कृपा कीजिये जो देवताओं से वध न हो सके। कश्यप बोले कि अच्छा, हमने दिया। पर मृत्युञ्जय जो रुद्र है जिसके समान कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवता और दैत्य नहीं, उसके सामने विष्णु और ब्रह्मा की कुछ नहीं चलती। उसके समान और दूसरा कोई नहीं। उसके समान वही है। जब तुम्हारे लड़का उपजे तब उसको भली भाँति समझा देना कि वह किसी प्रकार मृत्युञ्जय को क्रोधित न होने दे। क्योंकि शिव के कोपित होने पर फिर और कोई बचानेवाला नहीं, यह बात वेद कहते हैं। इतना कह कश्यप चुप हो गये और दिति कश्यप के तेज से गर्भवती हुई। दिति का इतना तेज बढ़ा कि कोई मनुष्य उतने तेज से उसकी ओर नहीं देख सकता था। दशवें मास दिति के पुत्र उपजा जिसका विचित्र स्वरूप था। अर्थात् उसके हजार शिर और दो हजार आँखें, हाथ, पाँव और भुजा थीं और बहुत ही सुन्दर तेजस्वी हृष्टपुष्ट ऐसा कि जो सब देवता और मुनि उसको उठावें तो भी न उठ सके। वह अन्धों के समान इधर-उधर झुका हुआ चलता था। इससे उसका नाम अन्धक रक्खा गया। जैसा उसका अन्धक नाम था, उसी प्रकार उसने सब कार्य भी किये। वह मतवालों के समान चलता और अपने समान दूसरों को नहीं समझता। इसी प्रकार अन्धकासुर ने संसार में बहुत उपद्रव मचाये और सब रत्न देवताओं से लात मारकर छीन लिये। उसने संसार भर को अपना सेवक जानकर अप्सरा गन्धर्व और देवताओं को अपने घर डाल लिया। परस्त्रियों, धन, द्रव्य और कोष को छीन लिया। इसी प्रकार अन्धक दैत्यों को साथ लिये हुये तीनों लोक में नाना प्रकार के उपद्रव करता रहा। वह देवता और मुनीश्वरों को महा दुःख देता था। वह इन्द्र की सभा में जा इन्द्रासन पर बैठ केवल देवताओं को ही नहीं वरन् इन्द्र को भी अपनी आज्ञा सुनाता और देवताओं को तो अपना चाकर ही जानता था। वह इन्द्र को कुछ भी बड़ा न समझता था और अंकुशरहित हस्ती के समान था जिसको दैत्य और देवता कोई रोक नहीं सकते थे। एक दिन सब दैत्यों के अधिपति ने आकर प्रणाम के उपरान्त कहा कि हे अन्धक! जितने देवता और मुनि हैं, वह सब तुम्हारे शत्रु हैं। उन्होंने बड़े छल से दैत्यों का वध किया है। इसी प्रकार इन्द्र दैत्यों का बड़ा शत्रु है। उसने पहिले दैत्य को जो सबसे प्रथम उपजा था, मारा और देवताओं ने मुनीश्वरों की सम्मति से हम दैत्यों का बड़ा भारी वन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलाया है। इससे आप पुरानी शत्रुता का विचार कर तीनों लोक की विजय कीजिये। सो अन्धक तीनों लोक की विजय करने के निमित्त तय्यार हो गया और उसने बड़ी सेना इकट्ठी की। यह दशा देख देवता और मुनि सब दुःखी हुये। इन्द्र ने आप कश्यप के पास जाकर अति विनय से वर्णन किया कि हे पिता! तुमने देवताओं को बड़े आनन्द से रक्खा। अब अन्धक सबको निकाले देता है, आप देवता और मुनीश्वरों के ऐसे दुःख को किस निमित्त नहीं देखते हो? वह क्षण-क्षण पर हमको आज्ञा दिया करता है। यद्यपि वह हम से छोटा है पर हमको बड़ा नहीं समझता। हम भाई होने के कारण सब कुछ सहते हैं। वह दैत्यों को लेकर लोक की विजय पाने की इच्छा रखता है। अब बड़ा उपद्रव होगा और तीनों लोक का कार्य बिगड़ जावेगा।

इकतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! ऐसी बातें इन्द्र से सुनकर कश्यप अति आश्चर्य में होकर कहने लगे कि हे इन्द्र! जो दुःख तुमको अन्धक ने दिया है, उससे कुछ भय मत करो। हम उसको दूर कर देंगे। यह कहकर इन्द्र को बिदा कर अन्धक को बुलाया और कहा कि जो हम कहते हैं, उसको छल छोड़ मानो। अदिति और दिति दोनों हमारी स्त्रियों से दैत्य और देवता उपजे। वह बराबर हमारी सेवा करते हैं। हमको दोनों ही प्यारे हैं। हम तुम दोनों को बराबर सिखलाते हैं। तुम तीनों लोक की विजय का विचार छोड़ दो, क्योंकि बड़ा दुःख है। तुम और इन्द्र राज्य को आधी-आधी करके शत्रुता छोड़ दो और एक ही मत से दोनों काम किया करो। मुझे तङ्ग न करो नहीं तो बड़ा दुःख पाओगे। यह कहकर अन्धक को विदा किया। अन्धक कुछ दिन तो चुपका बैठा रहा पर थोड़े ही दिनों में फिर दैत्यों की संगति से उपद्रव मचाने लगा और फिर वही बातें करने लगा जिससे देवता आदि को दुःख पहुँचे। वास्तव में संगति से बड़ा फल है। यह दशा अपने पुत्र की देखकर दिति अति प्रसन्न हुई। एक दिन उसको बुलाकर समझाने लगी। जैसा कि पहले कश्यप ने कहा था, वही बात विचार कर कहा कि हे अन्धक! तेरे कर्म देखकर मुझे दुःख

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्राप्त होता है। मैं तुमसे एक बात कहती हूँ उसको करो। फिर जैसा तुम्हारे मन में आवे वैसा ही करना। अर्थात् तुम शिवजी की सेवा करो। उनसे शत्रुता मत रक्खो क्योंकि उनसे शत्रुता करके आनन्द नहीं मिलता। उसने शिवकी बड़ी स्तुति करके कहा कि शिव का तप किया करो। अन्धक ने यह माता की आज्ञा मान सबों की संगति छोड़ी और इन्द्रियों को जीत कठिन तप करने लगा। अर्थात् पहिले तीनों ऋतुओं में वन और जल में बैठकर परिश्रम करता रहा। फिर इन्द्रियों को जीत के केवल वनफल खाने लगा। कुछ दिन तक ऊर्ध्वबाहु हो एक पाँव से सूर्य के सामने खड़ा रहा। फिर केवल अंगुष्ठ के बल पर खड़ा रहकर शिव का ध्यान करता रहा। जब इस तप से भी शिव प्रसन्न न हुये तो श्वास रोक तीनों प्रकार का प्राणायाम किया। तब अन्धक का तेज बहुत बढ़ा कि उसकी ओर देखा नहीं जाता था। ऐसा कठिन तप करते हुये देख देवता भयभीत होकर हमारी शरण में आये। हम सबको लेकर विष्णुजी के निकट गये। विष्णु सब हाल सुनकर हम सबको साथ लिये शिव के समीप पहुँचे और स्तुति की जो अति पवित्र है।

बयालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे कि नारद! ऐसी स्तुति कर सब चुप हो खड़े रहे। शिव बोले कि हे विष्णुजी, ब्रह्माजी और सब देवताओं! हम प्रसन्न हुये। जो कार्य हो वह कहो हम वरदान देने को उद्यत हैं। देवताओं ने कहा कि अन्धक के कठिन तप से हम अति भयभीत हैं। इसलिये आप जाकर अन्धक को वरदान देवें कि हमारा दुःख दूर हो जावे। यद्यपि वह वरदान पाने से देवताओं का पूरा शत्रु हो जावेगा। जिस तरह कोई मनुष्य अग्नि से जलकर पानी में कूद पड़ता है पर पानी के कूदने से भी उसे चैन नहीं पड़ता वरन् उसके फफोले पड़ जाते हैं। ऐसे मनुष्यों के लिये बुद्धिमान वैद्य दरकार होता है। इससे हम सबकी इच्छा है कि आप कृपा करके अन्धक के कठिन तप की अग्नि को बुझा देवें और फिर हमारे लिये भिषक् के समान होकर चिकित्सा करें। यह सुनकर शिव वरदान देने को चले और वाहन, गिरिजा तथा गणों समेत पहुँचकर वरम्ब्रूहि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बोले। अन्धक ने प्रणाम और स्तुति करके कहा कि मैं केवल यह वरदान माँगता हूँ कि अपने पिता के वरदान के अनुसार मैं सिवाय आपके और किसी के हाथ से न मारा जाऊँ। ऐसा कीजिये कि मेरे पिता का वचन ठीक हो। शिवजी बोले कि अच्छा हम यही वरदान देते हैं पर जो तुम तीनों लोक के राजा होकर अपना धर्म बिगाड़ कुकर्मी हो जावोगे तो हम निस्सन्देह बड़ा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा सब तेज नष्ट हो जावेगा। ऐसी दशा में भी हम बड़ी दया करेंगे जिसमें तुम्हारा श्रम निष्फल न जावेगा। यह कह शिवजी अन्तर्धान हो गये। अन्धक ने प्रसन्नतापूर्वक घर आकर अपने माता-पिता से वर पाने का हाल कह सुनाया। जब देवताओं ने सुना कि शिवजी ने अन्धक को ऐसा वरदान दिया तो वे बहुत घबड़ाये और इन्द्र से जा-जाकर सब हाल वरदान पाने का कह सुनाया। अभी सब देवता इन्द्र के पास जाकर सब हाल कह रहे थे कि चारों ओर से दैत्यों ने अन्धक के पास आकर देवता और दैत्यों की पुरानी शत्रुता की गाथा कह सुनाई। पर अन्धक ने कुछ न कहा केवल इन्द्रपुरी के देखने को रथ पर चढ़ चला और अपने घर के समान इन्द्रपुरी में पहुँच गया। अन्धक को इसी तरह करते हुये देखकर इन्द्र देवताओं समेत बहुत भयभीत हुये। सो इन्द्र ने तुरन्त उठकर अन्धक को बराबर एक ही गद्दी पर बैठा लिया। उस समय अन्धक ने तेज से देवता प्रभात के तारों के समान तेजहीन हो गये। इन्द्र ने मन में दुःखी होकर अन्धक से आने का कारण पूछा और कहा कि बड़ी कृपा कि जो यहाँ आये। जो आज्ञा हो उसे पालन करें। जो हमारे घर रत्न, धन और द्रव्य आदि हैं, उसे आप सब अपना समझकर ले लीजिये। अन्धक ने अहंकार से उत्तर दिया कि तुम केवल मुझे अपनी सब सामग्री दिखा दो और मुझे किसी वस्तु के लेने की इच्छा नहीं है। तुम्हारे पास जो ऐरावत हाथी और उच्चैःश्रवा घोड़ा आदि उत्तम-उत्तम रत्न और उर्वशी अप्सरा आदि महास्वरूपवती स्त्रियाँ हैं, वह सब मुझको दिखला दो। उनके देखने से केवल मैं प्रसन्न हूँगा। निदान निरुपाय होकर इन्द्र ने अपनी सब सामग्री दिखा दी। अन्धक ने सब सामग्री देखी और आश्चर्य कर फिर इन्द्र की जगह पर बैठ गया और बड़ा उत्सव हुआ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अन्धक ने आज्ञा दी कि नृत्य की सभा हो। इन्द्र ने भयभीत हो सब चेलियों, गन्धर्व और अप्सरादि से कहा कि भली भाँति नाच-गाकर अन्धक को प्रसन्न करो। सो ऐसा ही हुआ और सब तरह के बाजे ताल स्वर समेत बजने लगे। सातोंस्वर, इक्कीस मूर्च्छाना और तीन ग्राम के साथ गान होने लगा। ऐसे नृत्य-गान से अन्धक ने मोहित होकर चाहा कि अप्सरागणों को अपने वश में करूँ पर देवताओं ने न माना। जब अन्धक ने देवताओं की ऐसी अवज्ञा देखी तो अति क्रोधित होकर बड़ा नाद किया और देवता भी बदल गये। इन्द्र ने देवताओं से कहा उठो, ईश्वर का स्मरण करो। भली प्रकार लड़ो क्योंकि स्त्रियों के दे देने से मर जाना उत्तम है। सो देवता तुरन्त लड़ने पर तैयार हुये और अन्धक ने पाँच सौ धनुष अपने हजार हाथों से लेकर हर एक धनुष में बहुत-बहुत बाण लगाये और बड़ी लड़ाई हुई। इन्द्र ने अन्धक के सामने आकर वज्र से अन्धक को बहुत मारा। अन्धक ने क्रोधित होकर अपने त्रिशूल गदा आदि नाना प्रकार के शस्त्र छोड़े। सो इन्द्र देवताओं समेत युद्धस्थल छोड़ भाग गये और दैत्यों ने जो कुछ देवताओं की सामग्री थी, सब लूट कर इन्द्र को भी अपने वश कर लिया। अन्धक अपनी माता दिति को भी वहाँ बुला राज्य करने लगा। उसने डौंड़ी पिटाई कि सब प्रजा आनन्दपूर्वक रहे। कुछ कोई सन्देह मत करे। इन्द्र का राज्य बीत गया। मेरे राज्य करने का समय है। सब वर्ण अपने-अपने धर्म में स्थित रहकर हमारी आज्ञा पालन करें। जो आज्ञा के विरुद्ध करेगा, वह हमारे हाथ से मारा जावेगा। यह आज्ञा देकर आप इन्द्रपुरी का राज्य करने लगा।

तेंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसके राज्य में कोई मनुष्य या जीव सिवाय देवताओं के दुःखी न था और न किसी को कुछ दुःख मिलता। निदान देवता अति दुःखी हो हमारे पास पहुँचे और सब वृत्तान्त कह दिया। यह भी कहा कि देवता यज्ञभाग नहीं पाते। पवन, सूर्य, और चन्द्रमा तक उसके अधीन होकर उसकी आज्ञा पर चलते हैं। हम सब देवता छिपे रहते हैं। यह कह देवताओं ने हमारी बड़ी स्तुति की। हमने कहा कि तुम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुछ खेद मत करो। तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे और बहुत से पुरातन इतिहास कहकर सबों को साथ लिये हुये विष्णुजी के पास जा बहुत स्तुतिकर अन्धक के अन्याय का हाल वर्णन किया। विष्णुजी बोले कि तुम सब अपने-अपने घरों को जावो। हम वेग ही जहाँ दैत्य होंगे, पहुँचकर उनको नष्ट कर देंगे। यह सुनकर देवता अपने-अपने स्थानों को पलट गये। विष्णुजी ने तुरन्त गरुड़ पर आरूढ़ हो अपने शस्त्रों समेत अन्धक के पास पहुँच बड़े शब्द से तिष्ठ-तिष्ठ कहकर बाण चलाये जिनके चलने से तीनों लोक जल उठे। पर अन्धक ने वारुणास्त्र चलाकर उन्हें दूर कर दिया। इसी प्रकार विष्णुजी बड़े-बड़े शस्त्र अन्धक पर चलाते रहे और अन्धक निवारण करता रहा। जब कि अन्धक ने विष्णुजी को अपने शस्त्रों से दुःखी कर दिया तो विष्णुजी ने कोपित होकर सुदर्शनचक्र को अपने हाथ में लेकर छोड़ दिया जिससे संसार जलने लगा। जाना गया कि प्रलय हो रहा है और अन्धक भी दैत्यों समेत भयभीत हो गया और शिव का ध्यानकर अपने त्रिशूल को चला सुदर्शन को अपना काम न करने दिया। इसी प्रकार लड़ते-लड़ते विष्णुजी ने शिव का ध्यान करके मन में बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिव ! मैं देवताओं के मनोरथ क्यों कर पूर्ण करूँ ? आप आज्ञा दें। शिवजी बोले कि मुझे तुम्हारे बराबर कोई वस्तु वरन् प्राण भी प्रिय नहीं है। जो तुम्हारा शत्रु है, वह मुख्य करके हमारा भी शत्रु है। तुम्हारी सेवा बिन हमको किसी ने नहीं जाना। हर मनुष्य जो हमारी भक्ति चाहता है तो तुम्हारी भक्ति पहिले कर ले। तुम आप ही कुरीति से देवताओं के पक्ष में उद्यत हुये हो। जब तक अन्धक ब्राह्मणों से शत्रुता न करेगा तब तक हम उसके ऊपर क्रोध न करेंगे। क्योंकि ब्राह्मण हमको गौरी से भी अधिक प्रिय हैं। उससे तुम कोई युक्ति करो जिससे अन्धक हमारे तप और भक्ति को छोड़कर ब्राह्मणों से शत्रुता उपजावे। यह आज्ञा पाकर विष्णुजी ने अन्धक से कहा कि तुम्हारी वीरता और बल देखकर हम अति प्रसन्न हुये, वरदान माँगो। अन्धक ने गर्व से कहा कि वरदान लेना छोटे मनुष्यों का काम है। हमको किस बात की इच्छा है जो हम तुमसे माँगें ? तुमको जो इच्छा हो, वह माँगो, वह तुमको दे दें। विष्णु-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जी ने अति प्रसन्न होकर कहा कि हम तुमसे वर माँगते हैं कि तुम शिव की भक्ति छोड़कर आप शिव बनकर विहार किया करो। अन्धक ने विष्णुजी की माया में भूलकर कहा कि 'तथास्तु' ऐसा ही होगा। फिर विष्णुजी और अन्धक अपने-अपने घरों को चले गये। अन्धक ने अपने आप को शिव ठहराकर तीनों लोक को वश कर लिया और सबको दुःख देने लगा। ब्राह्मणों के मान को स्थिर न रक्खा। आप अपने को परब्रह्म प्रसिद्ध किया। जप, तप, यज्ञ और होम आदि सब बन्द कर दिया। दैत्यों को दिक्पति के स्थान पर नियत कर दिया। तब दैत्यों की सब रीतियों का प्रचार हो गया जिनसे धरती पर बड़े-बड़े पाप होने लगे। देवताओं का मान हीन हो गया। वर्णाश्रम कुछ शेष न रहा। स्त्रियाँ अनाचार से मैथुन कराने लगीं। पतिव्रतधर्म नष्ट हो गया। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! मृत्यु के समय इसी प्रकार बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

चवालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! उस समय देवता और मुनीश्वरों की दशा बहुत बुरी थी। वह दैत्यों के भय से इधर-उधर भागे फिरते थे जैसे कोई विक्षिप्त मारा-मारा फिरे। जब देवता और ब्राह्मण बहुत दुःख पाकर शाप देने लगे तब से अन्धक का तेज कम हो गया। एक दिन सब देवताओं ने इकट्ठे होकर कहा—अब तो अन्धक हमको कुछ धर्म-कर्म करने नहीं देता। न हम विष्णु और शिवजी की पूजा करने पावें। सब तरह से आपदा और दुःख है। कौन उपाय से यह मर सकता है? बृहस्पति बोले कि अन्धक शिवजी के सिवाय संसार भर से अबध्य है। जब शिव ने प्रसन्न होकर वर दिया था तो उसके साथ यह भी प्रण था कि जब तुम पाप करने लगोगे तब हम ऐसा क्रोध करेंगे जिससे तुम्हारा तेज घट जावेगा। सो शिवजी ने पहिले ब्राह्मणों के दुःख देने का निषेध किया था। अब वह समय आ गया है। उत्तम है कि हम सब चलकर शिवजी की शरण होवें। वे सब दुःख दूर कर देवेंगे। हे नारदजी! फिर तुमको सब देवताओं ने इस वृत्तान्त के कहने के लिये शिवजी के पास भेजा। तुम वहाँ से चलकर शिवजी को मन्दार के वन में देखकर स्तुति करने लगे। तुम्हारी स्तुति सुनकर शिवजी बहुत प्रसन्न हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहने लगे कि हे नारदजी ! किस कार्य को आये हो ? तुमने अन्धक के अन्याय का सब हाल उनसे कह सुनाया। शिवजी ने कहा तुम मन्दार के पुष्पों की माला पहनकर अन्धक के पास जाकर हर प्रकार हमारी प्रशंसा करना और ऐसी युक्ति करना जिसमें वह क्रोधित होकर हमारे पास आवे। तुम बिदा होकर मन्दारपुष्प वन से तोड़ उसकी माला कण्ठ में लटकाये हुये अन्धक के समीप गये। अन्धक सब दैत्यों समेत तुम्हारी माला को जिसमें उत्तम सुगन्ध थी, देखकर आश्चर्य में हुआ। उसने कहा कि ये पुष्प कहाँ उपजते हैं? उस उद्यान का कौन रक्षक है ? ये पुष्प मैं अपने भुजबल से लिया चाहता हूँ। तुमने उत्तर दिया कि मन्दराचल में जो वीरकानिक वन है, उसमें यह पुष्प उपजते हैं। वहाँ शिवजी के गण रक्षक हैं। वे गण बड़े बलिष्ठ हैं। शिव जिनके बराबर दूसरा नहीं है, अपनी स्त्री सहित उसी वन में विहार करते हैं। उनको जीतने वाला सृष्टि में कौन है ? पर हाँ, उनकी सेवा करने से यह पुष्प मिल सकते हैं। उसके विशेष उस वन में और भी सैकड़ों प्रकार के पुष्प हैं। कइयों से अच्छी सुगन्ध टपकती है, कई वृक्षों से रत्न, कइयों से वस्त्र और कई तरुओं से चारों प्रकार का अन्न होता है। वहाँ किसी को कुछ दुःख नहीं होता। न किसी को कुछ भूख, प्यास, चिन्ता, लज्जा और खेद व्याप्त होता है। शिवजी की सेवा से मनुष्य इन्द्र को जीत लेता है। ऐसे-ऐसे उपदेश के वचन कहकर तुम तो विदा हुये और अन्धक ने दैत्यों की सभा रच मन्दार के फूलों की प्रशंसा की। उसने कहा कि तुम सब उद्यत होकर हमारे साथ फूलों को लाने को चलो। कोई यहाँ रह न जावे। यह कह अन्धक सेना सहित चला और शिव की महिमा भूल गया।

पैंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अन्धक ने जाकर मन्दराचल को देखा कि वह नाना प्रकार की औषध और जड़ी-बूटी से सुशोभित है। सिद्ध, मुनीश्वर और देवतागण उसकी रक्षा करते हैं। चन्दन, अगर, साल, चम्पा, बेल और रुद्राक्षादि हजारों प्रकार के वृक्ष वर्तमान हैं। गन्धर्व, किन्नर और अप्सरादि नाचते गाते हैं। हंस, चकोर, अरना, सिंह तथा बघेला आदि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जीवों से भरा हुआ है। ऐसी बहार देखकर देवताओं को देखा और बड़े क्रोध से कहा कि हे मन्दराचल ! तू हमको भली विधि जानता है। मैं अपने बराबर संसार में दूसरे को नहीं समझता और किसी के हाथ से मरने के योग्य नहीं। संसार भर मेरे वश में है। देवता, मुनि और दैत्यादि सब मेरे चेले हैं। इसी प्रकार तुम भी हमारी प्रजा और अधीन हो। हमारी आज्ञा सुनो कि आज से हम तेरे निकट के वन को अपने विहार और भोग के लिये नियत करते हैं। जो तू हमारी आज्ञा न मानेगा तो तेरे लिये अच्छा न होगा। हे नारद ! इसी प्रकार अन्धक ने चारों प्रकार की राजनीति के वचन कहे पर शिवजी का पर्वत कुछ भी न डरा और अन्तर्धान हुआ। जब अन्धक ने पर्वत को अन्तर्धान होते हुये देखा तो क्रोध करके कहा कि देख मैं आज तुझे भस्म के समान किये डालता हूँ। यह कहकर पर्वत को जड़ से उखाड़कर मिट्टी के समान पीस डाला और बहुत योजन की दूरी पर फेंक दिया। तब उस वन के रहनेवाले सब थर-थर काँपने लगे। पर्वत उठते, बैठते, काँपते और भागते हुये शिवजी के समीप गया। उस समय शिवजी गौरी के साथ विहार कर रहे थे। गौरी ने पर्वत को काँपते हुये देखकर कहा कि तू आज क्यों काँप रहा है ? धरती, आकाश और पाताल काँपता है। किसने इतना क्रोध किया है ? शिवजी ने कहा कि नहीं जानते कि किसने इतना उपद्रव उठाया है। देखिये, आज कौन यमलोक को जाता है ? जिसने यह काम किया होगा, उसको अवश्य दंड दिया जावेगा, चाहे वह हमारा पुत्र भी होगा। यह कहा और पर्वत को प्रसन्न करके जो टुकड़े पहाड़ के टूट-टूटकर गिर पड़े थे, वे शिवजी की कृपा से दैत्यों की सेना में गिरने लगे और दैत्यों को बड़ा दुःख प्राप्त हुआ। तब तो अन्धक क्रोधित होकर कहने लगा कि हे पर्वत ! मुझको नहीं जानता कि मैं परब्रह्म हूँ। तू ऐसा छल क्यों करता है ? प्रकट होकर क्यों नहीं लड़ता ? यह सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया। इतने में हम, इन्द्र और देवता आदि सब शिवजी की सेवा में पहुँचकर स्तुति करने लगे। वह ऐसी स्तुति है कि जिसके सुनने-सुनाने से दोनों लोक में मुक्ति मिलती है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छियालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! जब शिवजी ने ऐसी स्तुति सुनी तो अन्धक पर अति क्रोधित होकर अपने गणों से कहा कि तुम जाकर दैत्यों को नष्ट करो। सो गण चले और नन्दी सब गणों के सेनानी होकर युद्धस्थान में पहुँच बड़ा भारी युद्ध करने लगे। गणों ने बहुत दैत्यों को नाना प्रकार के शस्त्रों से वध कर डाला। नन्दी के तेज को कोई न सह सका। नन्दी ने हुण्ड, थुण्ड, जम्भासुर, कुञ्जासुर, कार्तस्वन, पाकहारीत और मदन मर्दन आदि दैत्यों के अधिपों को मारा जिससे सब दैत्यों को बड़ा दुःख पहुँचा। अन्धक अति शोकवान् होकर भयभीत हुआ और शुक्र अपने गुरु के समीप जा स्तुति करने के उपरान्त कहने लगा कि तुमने बहुत बेर दैत्यों का दुःख मिटाया है। हम तुम्हारी शरण में आये हैं और तुम्हारी सेवा से देवताओं को ब्रह्मा, इन्द्र, विष्णु और शिव समेत तृणवत् जानते हैं। तुम्हारे बल पर दैत्यों देवताओं पर ऐसे प्रबल हैं जैसे सिंह हाथी पर और मोर सर्प पर। तुम्हारी कृपा से विष्णु दैत्यों से भयभीत रहते हैं। वज्रव्यूह जिसको देवता वज्र के समान तय्यार करते हैं, उसके भीतर दैत्य सन्देहरहित होकर प्रवेश कर जाते हैं। तुम्हारी सेवा के बल से दैत्य पर्वत के समान युद्धस्थान में स्थित रहते हैं। इस समय हे भृगो! शिलाद के पुत्र नन्दीगण ने असंख्य दैत्यों को युद्धस्थान में वध कर डाला है। हुण्ड और थुण्ड आदि अच्छे-अच्छे दैत्यों को मारकर धरती पर लिटा दिया। अब जैसा उचित हो, वैसा कीजिये, हम आपकी शरण में आये हैं। तुमने जो विद्या प्राप्त की है, उसके वर्तने का समय यही है। दैत्यों को जिलाओ कि संसार में तुम्हारा नाम हो। भृगु ने हँसकर कहा कि सहस्र वर्ष पर्यन्त जो विद्या हमने केवल धान की तुष का धुआँ पीकर प्राप्त की है, उसकी सिद्धि देखो। वह विद्या दैत्यों को आनन्द देनेवाली है। हम मरे हुये दैत्यों को मृत्यु निद्रा से जगाते हैं और जिस तरह कि सूखे धानों को पानी हराकर देता है, उसी प्रकार हम दैत्यों को जिलाये लेते हैं। यह कहकर हर एक दैत्य पर अपना मन्त्र पढ़ा, वे तुरन्त जीकर यह समझे कि निद्रा से जागे हैं। अन्धक अपने वीरों को जीता देखकर अति प्रसन्न हुआ और शिवजी के गणों ने भृगुनन्दन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की यह सिद्धि नन्दी से वर्णन की। नन्दी ने तुरन्त शिवजी के पास जा विनय की कि जो दैत्य हमारे हाथ से मारे जाते हैं, उनको शुक्र बार-बार जिला देता है। हमारी विजय क्योंकर होगी? यह सुनकर शिव का रूप अति भयंकर हो गया। नन्दी से कहा कि ब्राह्मणों में जो अति नीच शुक्र है, उसको हमारे पास पकड़ लाओ। यह सुनकर नन्दी सन्देह छोड़ दैत्यों की सेना में प्रवेश कर गये। देखा कि शुक्र की रक्षा बहुत दैत्य करते हैं। निदान नन्दी ने सबको मोहितकर शुक्र को पकड़ लिया कि जैसे बाज लवा को पकड़ता है और घसीटते हुये ले चले। तद्यपि शस्त्र चलाकर शुक्र ने अपना छुटकारा चाहा पर नन्दी ने अपने शरीर से अग्नि उपजाकर सब भटों को जला दिया और शिवजी के पास शुक्र को पकड़ ले चले। शुक्र को शिवजी के आगे खड़ा करके कहा कि जो उचित हो, वह आप करें। शिव ने कुछ न कहा और शुक्र को अपने उदर में डाल लिया कि जैसे कोई फल खा लेवे। दैत्यों को अति दुःख प्राप्त हुआ और विजय की आशा न रही। जब अन्धक ने यह दशा सुनी तो दैत्यों को धिक्कार देने लगा। उसने कहा कि आज के दिन में नन्दी का वध ही कर डालूँगा। शुक्र को छुड़ाकर इन्द्र को विष्णु और देवताओं समेत वध कर डालूँगा। जो शुक्र योगशास्त्र में निपुण हैं, इससे उनके मरने का कुछ भय नहीं। यह कह फिर गणों और दैत्यों से युद्ध होने लगा। नन्दी ने गणों समेत इतना युद्ध किया कि दैत्यों की सेना बिखरकर बहुत भागी।

सैंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अपनी सेना को भागते हुये देखकर अन्धक आप रथ पर चढ़ युद्धस्थल में पहुँचा और कई एक वीर लड़ने लगे। तब बलभद्र, साख्य, विसाख्य, गणेश, सोम, नन्दी और नन्दीश्वर आदि शिव के गणराजों ने अन्धक के ऊपर एक ही बेर चढ़ाई की। तब बड़ा भारी युद्ध हुआ और शुक्र ने शिव के उदर में ब्रह्माण्ड भर देखा। इसी प्रकार वह सौ वर्ष पर्यन्त उदर में घूमा किया पर छिद्र न पाया। तब शिव के योग को करके लिङ्ग के छिद्र के द्वारा कि जिस मार्ग से वीर्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आता है, प्रकट होकर शिवजी की स्तुति करने लगा। ऐसी सावधानता शुक्र की देख शिव प्रसन्न होकर बोले कि तुम शुक्र के मार्ग से प्रकट हुये इससे तुम्हारा शुक्र नाम होगा। तुम हमारे पुत्र हो। अब अपने घर को सुखपूर्वक चले जावो। शुक्र दैत्यों की सेना में आये जिनको देखकर दैत्यों ने बड़ा आनन्द मनाया। अन्धक शुक्र को रक्षापूर्वक किसी स्थान में बिठाकर आप लड़ाई करने लगा और गणों को दुःखी कर दिया। यहाँ तक कि गण युद्धस्थान से भाग खड़े हुये और लज्जा से शिव के पास जाकर कहा कि हमको दैत्यगणों की सेना मारे डालती है। शिवजी बोले कि हमारा रथ साजो। सो जिस प्रकार से कि त्रिपुर के वध करने के निमित्त रथ तय्यार किया गया था, उसी तरह से बनाया गया। शिव अपने गणों के दुःख को स्मरण कर क्रोध के साथ रथ पर चढ़े और युद्धस्थान में पहुँचकर अन्धक से लड़ने लगे। जो बाण और हथियार अन्धक चलाता था, उसको शिव अपने बाणों और अन्य उत्तम शस्त्रों से निवारण करते थे। जो शिव शस्त्र छोड़ते थे, उसको अन्धक दूर करता था। निदान अन्धक ने एक मुष्टिका शिव को मारी। शिव ने भी उसको मारकर पृथ्वी पर मूर्च्छित करके गिरा दिया। उस समय शिव की इच्छा से चामुण्डा देवी जो दुर्गा का रूप है, प्रकट हुई। वह नाना प्रकार के शस्त्र धारण किये, घनवत् शब्द, महाभयंकर द्रंष्ट्रा, विकराल स्वरूप, महाकठोर आँखें लाल-लाल किये, लाल ही कान और बहुत ही लम्बे केश, काली आँखें ऐसे स्वरूप से चामुण्डा देवी सेना में प्रवेशकर दैत्यों को विदीर्ण करने लगी और अपने केशों को बिखराकर नृत्य करने लगीं। अन्धक ने क्रोधित होकर अपना शूल चण्डी के सम्मुख कर दिया। ऐसी ढिठाई अन्धक की देख शिवजी ने बड़ा क्रोध किया और अपने त्रिशूल से अन्धक को छेद लिया जिससे लहू की नदी बह निकली। केवल अन्धक के अस्ति और चर्म त्रिशूल पर रह गये बाकी लहू सब निकल गया और वह कमल के समान त्रिशूल पर रक्खा रहा। शिवजी ने शत्रुता भुलाकर अन्धक को उत्तम बुद्धि दी जिससे वह सतोगुण धारण करके दैत्यभाव से छूटा और शिवजी की स्तुति करने लगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अड़तालीसवाँ अध्याय ।

अन्धक ने बहुत स्तुति करने के उपरान्त कहा कि हे शिवजी ! मैं तुम्हारी शरणागत हूँ, मेरी ओर दया की दृष्टि कीजिये। यह स्तुति सुनकर शिवजी ने दया की दृष्टि से अन्धकासुर की ओर देख दिया और उसकी बहुतसी प्रशंसा कर कहा कि धन्य-धन्य हम तुमसे अति प्रसन्न हुये। जो इच्छा हो, वरदान माँग लो। अन्धक ने कहा कि मुझको अपना गण करके अपने निकट रक्खो, वीरभद्र के समान मुझको भी समझो और मुझको सारूप्य मुक्ति दो कि तुम्हारे चरणों की सेवा किया करूँ। शिवजी ने कहा कि अच्छा। सो अपना गण बनाकर उसको मुक्त किया। उसको अपने साथ ले जाकर कैलाश पर्वत पर स्थित हुये। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि उस समय विष्णु व हम और देवताओं ने पहुँचकर शिवशंकर को प्रणाम किया और हम सबों ने अलग-अलग शिवजी की स्तुति की। इस स्तुति और चरित्र को जो कोई सुने-सुनावेगा, वह अपने कुल समेत प्रसन्न रहेगा। उसके सामने कोई दुःख न आवेगा। परलोक में उसको शिवजी की समीपता प्राप्त होगी। यह स्तुति सब देवताओं की बनाई हुई शिवजी ने सुनकर प्रसन्नतापूर्वक सबको बिदा किया और शिव सब गणों समेत कैलाश, पर्वत में विराजमान रहे।

उनचासवाँ अध्याय ।

इतना सुन नारद ने कहा कि हे ब्रह्मन् ! इस चरित्र के सुनने से मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। अब आप और सदाशिवजी का चरित्र सुनावें। आपके बराबर शिवजी का भक्त कौन है ? ब्रह्मा बोले कि विष्णु के साथ जिस तरह से शिवजी का युद्ध हुआ, वह हम व्रर्णन करते हैं, मन लगाकर सुनो। मरीच हमारा पुत्र जो शिवजी का भक्त था, उससे कश्यप उपजे जो सदा शिवजी के भक्त हैं। उनके तेरह स्त्रियाँ थीं जिनसे बड़ी सन्तानें हुई। उसकी बड़ी स्त्री दिति थी। उससे बयासी दैत्य बड़े शूर-वीर उपजे। जिसका नाम कनककशिपु और कनकाक्ष था, वे बहुत समय पर्यन्त तप करते रहे। कनककशिपु के चार पुत्र उपजे जिनमें प्रह्लाद सबसे छोटा था। प्रह्लाद से विरोचन शिव का बड़ा भक्त उपजा और विरोचन से बलि शिवजी का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भक्त, बड़ा उदार और देवताओं के साथ युद्ध करने में अति बलवान उपजा। उसके एक लड़का बाणा के नाम से प्रकट हुआ जो बड़ा शिव का भक्त था। वह सत्संगति का मित्र अपने व्रत नियम में अतिदृढ़ और निरहंकार सहस्रबाहु धारण किये था। उसने अति उदारता से सर्व ब्रह्माण्ड का राज्य किया। इन्द्र के समान उसके नौकर थे। उसने अपनी राजधानी शोणितपुर में स्थापनकर बड़ी धूमधाम से राज्य किया। उसके राज्य में किसी को भी दुःख न था। एक दिन वह शिवजी की भक्ति और प्रेम में आनन्दित होकर अपने सहस्रबाहु से बाजा बजाकर शिवजी के आगे ताण्डवगति से नृत्य करने लगा। शिवजी अति प्रसन्न हुये, कहा कि वरदान माँगो। बाणासुर ने विनती की कि आप हमारे सदा सहायक रहा करें और मेरे दुःख दूर किया करें। सो शिवजी मानकर अपने कुल समेत बाणासुर के घर में स्थित हुये और अपनी शक्ति समेत बाणासुर की रक्षा करने लगे। एक दिन सब देवताओं के राजा शिवजी देवगणों समेत नर्मदा नदी के तट पर बड़ा उत्सव रच विहार करने लगे तो सब देवता सिद्धि आदि सब शिवजी का विहार देखने आये। उस समय नाच, गाना, बजाना और नाना प्रकार की आनन्द की बातें होने लगीं तो शत्रुओं को दुःख और भक्तों को सुख प्राप्त हुआ। तीनों प्रकार की वायु बहने लगीं। नाना प्रकार के फूल खिल उठे। पक्षी मधुर बाणी से बोलने लगे मानों वे भी गायक बनकर गाते हैं। वन फूल उठा। ऐसे समय में शिवजी ने रुचिपूर्वक विहार किया और फिरते-फिरते काम के वश हो नन्दीगण को बुलाकर कहा कि तुम तुरन्त कैलाश में जाकर गिरिजा को अपने साथ ले आवो। वे अपना सब शृङ्गार किये हुये आवें, हम उनके साथ विहार करेंगे। सो नन्दी ने तुरन्त गिरिजा की सेवा में जाकर सब हाल कह सुनाया। गिरिजा ने कहा कि तुम चलो हम शृङ्गार करके तुम्हारे पीछे आती हैं। नन्दी चला और गिरिजा शृङ्गार करने लगीं। इतने में नन्दी ने शिवजी के निकट पहुँचकर कहा कि गिरिजा पीछे आती हैं। शिवजी ने कहा कि तुम शीघ्र ही जाकर अपने साथ ले आवो। नन्दी फिर गये और गिरिजा से चलने को कहा। गिरिजा ने कहा अच्छा चलती हैं, तुम बैठो। यह कहकर उन्होंने शृङ्गार करने में अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत समय लगाया और शिवजी अप्सराओं के नाच और रङ्ग को देखकर बहुत ही कामवश हुये। गिरिजा ने जब आने में बहुत विलम्ब किया तो सब सभा की स्त्रियों ने सम्मति की कि हम सब अपना-अपना रूप और ही प्रकार का पवित्र धारण करें। यह सोच सब स्त्रियाँ अपना-अपना स्वरूप धारण करने लगीं कि शिवजी को सन्देह उपजे। सो नन्दी ने उर्वशी के रूप को, केशवी ने लक्ष्मी के स्वरूप को, घृताची ने काली के स्वरूप को, विश्वाची ने चण्डी के रूप को, प्रेमगोजा ने सावित्री के रूप को, मैना ने गायत्री के रूप को, पद्मावती ने विजयस्थला के रूप को और जया ने सहजन्या के रूप को धारण किया। जितनी अप्सरा थीं, उन सबों ने इसी तरह सब देवपत्नियों के स्वरूप को धारण किया और ऊषा ने जो बाणासुर की कन्या थी, गिरिजा का स्वरूप धारण कर लिया। कहा कि इस समय शिवजी को अपने वश कर लेवें और भली भाँति शिवजी के साथ भोग-विलास करें। यह सब सम्मति और स्वरूप का धारण करना गिरिजा जान गईं। उन्होंने ऊषा को बुलाया और हँसकर कहा कि तुमने कामवश हो हमारे स्वरूप को धारण किया इसलिये हमारा वचन सुनो कि मधुमास की शुक्ल द्वादशी को सोते हुये कोई मनुष्य तुमको मिलेगा। उसके साथ मन भर के भोगविलास करना। वही तुम्हारा पति है। हमारा वचन सत्य है। यह कहकर गिरिजा अति प्रसन्नता से शिवजी के समीप गईं। यह लीला कर शिवजी अपनी सर्व सभा समेत अन्तर्धान हो गये और सब अप्सरा अति लज्जित होकर गिरिजा की स्तुति करने लगीं। हे नारद! अब और चरित्र सुनिये।

पचासवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! एक दिन बाणासुर ने अपने ताण्डवनृत्य से शिवजी को अति प्रसन्न कर विनती की कि आपकी कृपा से मैं बड़ा बलिष्ठ हुआ हूँ। आपने मुझको सहस्रभुजा कृपा की हैं, वह मेरे शरीर पर भार-रूप हैं क्योंकि उनके बल से कोई कार्य आज तक नहीं किया। न कोई युद्ध तीनों लोक में मुझसे हुआ। आपके बराबर मेरे सामने कोई बलवान् नहीं है। मैं तीनों लोक में केवल युद्धनिमित्त फिरता हूँ। मैं दिक्पालों के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

युद्ध की इच्छा से गया सो मुझे आते हुये देखकर दिग्गज भाग गये। हे शिवजी ! मेरी भुजायें बल की अधिकता से खुजलाया करती हैं। आप उनको दूर करें। मैंने इन्द्र को जीत अपने अधीन किया है। वह मुझसे सदा ही अपने मन में डरा करता है। मैंने अग्नि को आग के बदले, पितृ को पाककर्ता, वरुण को द्वारपाल, पवन को बाजा बजानेवाला, कुबेर को हाथियों का रक्षक और सूर्य-चन्द्रमा को अपना मशालची बनाकर बाकी देवताओं को अपने नगर का रक्षक कर दिया है। इसी प्रकार मैंने सब ब्रह्माण्ड को जीतकर सबको अपने अधीन कर लिया है। पर मुझको युद्ध की बहुत बड़ी इच्छा है। आप कृपा करके मेरा मनोरथ पूरा करें। या तो और कोई मेरे हजारों भुजा काट डाले या मैं उसकी भुजा छाँट दूँ। यह सुनकर शिवजी ने बड़ा क्रोध किया और प्रकट में क्रोध तथा भीतर से प्रसन्न हो बाणासुर से कहा कि तुझे धिक्कार है कि तुझे इतना गर्व है। तू दैत्यों के कुल में महाअधम है। तू बलि का पुत्र और मेरा भक्त होकर ऐसी खराब बातें बकता है। यह तेरा अहंकार वेग ही मिट जावेगा। हमारे समान कोई मनुष्य तेरे निकट आवेगा। उसके साथ तू लड़ के अपना अहंकार भूल जावेगा। वह आकर तेरी भुजा काट डालेगा। केवल हमारी इच्छा से तेरे प्राण बच जावेंगे। मैं तुझको वह समय भी बताता हूँ जब कि यह सब बातें प्रकट होंगी जब तुम्हारा केतु जिसका शिर मनुष्य के शीश के समान और मोर का स्वरूप है, पवन बन गिर पड़ेगा और नाना प्रकार के अशकुन प्रकट होंगे, तब तुम निश्चय जानना कि अब वही समय आया है और युद्ध के निमित्त तत्पर होना। यह कह शिवजी चुप हो गये और बाणासुर ने बहुत ही प्रसन्न हो शिवजी की बड़ी पूजा की। फिर घर में जाकर अपनी स्त्री से सब हाल कह सुनाया। उसकी स्त्री का नाम कन्दला था। वह भी शिवजी की बड़ी भक्ता थी। जब कि उसने सुना तो अति चिन्तित हुई और कहा कि यह क्या आनन्द का समय है? वरन् बहुत बुरी बात हुई। क्या तुम इस बात को नहीं समझे ? तुम तो सब तरह से नष्ट हो गये। क्या तुमको शिवजी से यही वर लेना उचित था ? तुम्हारी बुद्धि अधिक अहंकार से नष्ट

Jaganhath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हो गई। शिव सदा अहंकार को नष्ट करते हैं, तुम्हारी सब भुजा कट जावेंगी। तुम कभी हारे न थे पर अब अवश्य ही हारोगे। यह शिवजी ने तुमको शाप दिया है, वर नहीं दिया। इसमें उत्तम है कि अब भी शिवजी को प्रसन्न करके उनकी इतनी सेवा करो कि तुम्हारा भला हो। यह कह महा-दुःख से शिवजी को ध्यान में लाकर वह बाणासुर के चरणों पर गिर पड़ी। तब आकाशवाणी हुई कि हे कन्दला! तुम कुछ मन में खेद न करो। उस समय शिवजी तुम्हारे सहायक होंगे और बाणासुर के गर्व को नष्ट करके उस पर कृपा करेंगे। यह सुनकर कन्दला कुछ प्रसन्न हुई पर इस बात को बाणासुर ने कुछ न जाना। वह घर से निकलकर बाहर आया और फिर अपने सभ्यों को इकट्ठाकर युद्ध के निमित्त सम्मति की तथा सब मिलकर बाट देखने लगे कि देखिये कब समय आता है कि जब युद्ध होगा।

इक्यावनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारदजी! अब तुमको हम बाणासुर की कन्या अर्थात् ऊषा का चरित्र सुनाते हैं जो युद्ध का मूल है और जिसमें बाणासुर की भुजायें कट गईं। यह सब लीला शिवजी की समझो। जो शिवजी की इच्छा होती है, वही होता है। सो बाणासुर की कन्या जिसको गिरिजा ने वर दिया था कि तुमको पति मिलेगा, वह एक दिन ऊषा तिथि अर्थात् वैशाख-सुदी द्वादशी को शिवजी की पूजाकर अर्धरात्र को सोने लगी। तब गिरिजा की इच्छा से अनिरुद्ध कृष्णचन्द्र के पोते ने पहुँचकर ऊषा के साथ भोग किया। ऊषा रोने-पीटने लगी और अनिरुद्ध गिरिजा के प्रभाव से तुरन्त मतलब करके घर चला आया। ऊषा मुरदे के समान होकर बहुत रोई और अपनी सखियों से सब हाल कह सुनाया। उसके मिलने की इच्छा करके अपनी सखियों से बड़ी प्रशंसा की और गिरिजा का ध्यान किया। उस समय कुम्भाण्ड की पुत्री चित्ररेखा जो ऊषा की सखी थी, उसने ऊषा को समझाया और पहिले जन्म का सब हाल कह सुनाया। उसको सुनकर ऊषा अति प्रसन्न हुई और अति विनय कर कहा कि जिस पति को गिरिजा ने कृपापूर्वक हमको रात्रि के समय दिखाया है, उसको तुम छिपाकर मेरे पास लावो और मुझसे मिला दो। यह बात तुमको कुछ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कठिन नहीं है। जिसने हमारे मन को छीन लिया है जो तुम उससे हमको न मिलावोगी तो मैं अवश्य ही मर जाऊँगी। इसमें कुछ सन्देह न होगा। उसने कहा कि तुम सब हमारी सखी इस बात को समझ लो कि जिस मनुष्य के मिलने से रात्रि के समय मुझको बहुत दुःख और सुख प्राप्त हुआ है, जो वह मनुष्य न मिला तो मेरे मरने में कुछ संशय न जानना। यह सत्य ही कहती हूँ। चित्ररेखा ने हँसकर कहा कि हम तुम्हारे सब दुःख दूर कर देंगी जिससे तुमको बड़ा आनन्द प्राप्त होगा। जो वह तीनों भुवन में है तो तुझसे तुरन्त मिला दूँगी। यह कहकर वह चित्ररेखा कपड़े पर सबके स्वरूप लिखती गई और आदि से अन्त तक जितने देवता आदि आकाश के निवासी थे, सबका रूप देखा। जब ऊषा ने उनमें से किसी को न पहिचाना तो फिर वह मनुष्यों में रूप बना-बनाकर दिखलाने लगी। जब चित्ररेखा यदुवंश के घराने को लिखने लगी और शूरसेन, वसुदेव, राम, कृष्ण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध का चित्र लिखकर दिखाया तो ऊषा ने तुरन्त अनिरुद्ध का स्वरूप देख करके कहा कि यही है जिसने हमारा चित्त चुराया। उसको युक्ति से लावो कि हमारा दुःख दूर हो जावे। चित्ररेखा ने यह जानकर कि यह कृष्ण के पोते अनिरुद्ध पर मोहित है, शिवजी का ध्यान कर योगमाया की और ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी को कृष्ण के द्वार पर गई। योगमाया कर कृष्ण के मन्दिर में जाकर उसने देखा कि अनिरुद्ध अपनी स्त्री के साथ मद्य पी रहे हैं। उनकी किशोर अवस्था, श्यामरूप और महासुन्दर स्वरूप को देखकर अपने तामसयोग को प्रकट करके अँधेरा कर दिया और अपने शिर पर शय्या को जिस पर अनिरुद्ध बैठे थे, लेकर योग के कारण उड़ी और लाकर ऊषा के पास रख दिया। आश्चर्य कर ऊषा ने उसको अति गुप्त रीति से भीतर ले जाकर चाहा कि भोग विलास करूँ, उस समय यह वृत्तान्त द्वारपालों और रक्षकों ने जान लिया। उन्होंने अति आश्चर्य कर ऊषा के अपकर्म और छल पर पश्चात्ताप किया और ऊषा के घर के भीतर जाकर अनिरुद्ध को देखा कि वह तुरन्त भोग करना चाहता था। यह देखकर तुरन्त बाणासुर के पास जा उनकी स्तुति कर कहा कि तुम ऐसे राजा तीनों लोक के हो जिससे ब्रह्मा भी डरते हैं। हे स्वामी!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इस समय तेरी लड़की के घर में एक अकेला आदमी बैठा है। तुम चलकर आप ही उसे देख लो। जो उचित हो, उसके लिये आज्ञा दो। यह सुनकर बाणासुर अति दुःखी होकर क्रोधित हुआ और जाकर अनिरुद्ध को देख विचार किया कि यह मनुष्य कोई बड़ा वीर और हठयुद्ध करनेवाला दृढ़प्रण है और व्यभिचारी है। यह महाकामी मूर्ख पापी किस युक्ति से यहाँ पहुँचा है। इसने मेरे कुलधर्म को नष्ट कर दिया। यह विचारकर अपने वीरों को आज्ञा दी कि तुम दया छोड़ इसको प्राण से मार डालो। यह आज्ञा देकर उसने अनिरुद्ध को देखा और अनिरुद्ध का शरीर तेज से भरा हुआ देख बहुत सन्देह किया। सो दश सहस्र सेना अनिरुद्ध के मारने को खड़ी हुई और छिंधि-भिंद नाद कर अनिरुद्ध को चारों ओर से घेर लिया। अनिरुद्ध भी निर्भय होकर युद्ध के निमित्त खड़े हुये और एक परिघ हाथ में उठाकर तुरन्त द्वार की ओर जा इतना उस सेना को मारा कि एक भी न बचा। फिर और सेना जो आई, उसको मारा। फिर एक लाख वीर आकर और लड़ने लगे। उनको भी अनिरुद्ध ने भगा दिया। यह दशा बाणासुर देख अपने रथ पर आरूढ़ हो आप ही युद्ध करने को तत्पर हुआ। उसके रथ पर कुम्भाण्ड मन्त्री साथी के बदले बैठा था। अनिरुद्ध ने असि से सारथी समेत बाणासुर को दुःखी कर दिया। तब बाणासुर ने अनिरुद्ध पर सांगी चलाई, अनिरुद्ध ने सांगी को हाथ से पकड़कर उसी सांगी को बाणासुर के ऊपर चलाया। ऐसा युद्ध देखकर दैत्य और देवता आश्चर्य में हुये। निदान बाणासुर अनिरुद्ध को बड़ा बली समझ अन्तर्धान हो गया और छललक्षिणी युद्ध करके अनिरुद्ध को बड़ा दुःख दिया। फिर नागफाँस से अनिरुद्ध को बाँधकर बहुत से दुर्वचन कहे और कुम्भाण्ड को आज्ञा दी कि तुरन्त इसका शिर काट डालो क्योंकि राजनीति की यही आज्ञा है। इसने हमारे कुल में लाञ्छन लगाया जो अति पवित्र था। इसके शरीर के खण्ड-खण्ड कर राक्षसों को खाने के लिये बाँट दो। अथवा भरे हुये पानी के कुवें में डाल दो कि यह जीता न बचे। इसका मार डालना ठीक है। कुम्भाण्ड ने शिवजी का ध्यान करके बाणासुर से कहा कि यह बात ठीक नहीं है क्योंकि इसके वध करने से आत्मघात का पाप होगा। तुम भली-भाँति समझो कि यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दशा तुम्हारी शिवजी की अप्रसन्नता से हुई है। यह अनिरुद्ध कृष्ण का नाती शिवजी की कृपा से बड़ा बल रखता है। इसी प्रकार कुम्भाण्ड ने बाणासुर को बहुत प्रकार से समझाकर क्रोध दूर किया। फिर अनिरुद्ध को अच्छे उपदेश भले प्रकार समझाकर कहा कि अब तुम बाणासुर का हाथ छोड़कर गुप्त कथन करो और कहो कि हम तुमसे हार गये। हमको प्राणदान दो। अनिरुद्ध ने कहा कि हे मूर्ख! तू क्षत्रियधर्म नहीं जानता? क्षत्रियों को लड़ाई में सम्मुख होकर मरना आनन्द और मोक्ष देनेवाला है। जो धर्म ही न रहा तो जीना किस काम का है। वह मनुष्य दोनों लोक में आनन्द नहीं उठा सकता। ऐसे-ऐसे वचन सुनकर बाणासुर अति क्रोधित हुआ और चाहा कि अनिरुद्ध का वध कर डालूँ। इस इच्छा से त्रिशूल उठाया। तब आकाशवाणी हुई जिसको सबने अनिरुद्ध समेत सुना कि हे बाणासुर! तू यह क्या करता है? तू बलि का पुत्र शिवभक्त है। यह बात अच्छी नहीं करता। यह बालक मार डालने के योग्य नहीं। इसके शिवजी रक्षक हैं। शिवजी सबके स्वामी हैं। जिनके अधीन तीनों लोक हैं, वही शिवजी पालनेवाले और प्रलय करनेवाले हैं। वही तीनों गुण अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और हर हैं। तुमको चाहिये कि ऐसे शिवजी की शक्ति सहित सर्वदा पूजन किया करो। तब जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा गर्व नष्ट होगा। यह आकाशवाणी सुनकर बाणासुर उस जगह से उठकर घर में गया और भोगविलास में कालक्षेप करने लगा। अनिरुद्ध ने भी देवी का स्मरण किया और मन में बड़ी स्तुति की। सो श्रीमहाकाली जी प्रसन्न हुईं। वह गिरिजा के समान एक शक्ति हैं और अनिरुद्ध को जो नागफाँस में बँधा हुआ था, नागफाँस को जला डाला तथा पहिले के समान अनिरुद्ध को आनन्द देकर आप अन्तर्धान हो गईं। अनिरुद्ध फिर ऊषा के समीप गये और जो मन में आया, वह किया। यह हमने ऊषा-चरित्र सुनाया।

बावनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जब चित्ररेखा अनिरुद्ध को लेकर आकाश को चली तब अनिरुद्ध की स्त्री बड़े जोर से रोने लगी जिसको सब यदुवंशी और कृष्ण बलराम ने सुना और अनिरुद्ध को देखकर अति चिन्तित हुये। चार महीने तक उनको अनिरुद्ध का हाल कुछ मालूम न हुआ कि कहाँ गये और कौन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ले गया। निदान हे नारदजी! शिवजी की आज्ञा से तुम कृष्णजी के पास गये और अनिरुद्ध का वृत्तान्त आदि से अन्त तक कहा। कृष्ण और बलराम अति दुःखी हुये। निदान राम और कृष्ण असंख्य वीरों की सेना साथ लेकर शोणितपुर को गये। गरुड़ भी श्रीकृष्णजी की सहायता के निमित्त आये और शोणितपुर को चारों ओर से घेर लिया। नाना प्रकार के उपद्रव मचाने लगे। बाणासुर ऐसे उत्पात को न सहकर युद्ध की इच्छा से आया। रुद्र भी जिनकी रक्षा में शोणितपुर था, बाणासुर के संयुक्त हुये। हे नारद! उस समय बड़ा भारी प्रलय के समान युद्ध हुआ। कृष्ण और रुद्र दोनों लड़ने लगे। वीरभद्र प्रद्युम्न के साथ, कोपकर्ण और कूष्माण्ड दोनों बलराम के साथ लड़ने लगे। आप बाणासुर सांगी लिये हुये लड़ने लगा। बाणासुर के पुत्र ने साम्ब के साथ युद्ध रचा। नन्दीश्वर जो शिवजी के वाहन हैं, गरुड़ के साथ लड़ने लगे। इसी प्रकार सम्पूर्ण भट एक-एक होकर युद्ध करने लगे। ऐसा युद्ध देखने के लिये हम और सब देवता आदि आये। शिवजी के गणों के साथ यदुवंशी पूर्णता से लड़े। सब तरह से राम, कृष्ण और प्रद्युम्न दृढ़तापूर्वक युद्ध में स्थिर रहे। कोई एक भी न हटा। जहाँ एक ओर शिव और दूसरी ओर कृष्ण हैं, वहाँ भागना किस तरह हो सकता है? पर जब राम और कृष्ण ने बहुत बड़ी चढ़ाई करके शिवजी के गणों को दैत्यों समेत युद्धस्थान से मुँह फेर दिया और पीछे हटाकर गर्जने लगे तब शिवजी ने अति कोपित होकर केवल अपने नाद से परसेना को बहुत दुःख दिया। शिवगण भी लौटकर लड़ने लगे। कृष्ण अति कुपित होकर अति क्रोध से शिवजी के ऊपर अच्छे बाण छोड़ने लगे। शिवजी ने सब बाण काटे। कृष्ण ने ब्रह्मास्त्र शिवजी के ऊपर छोड़ा। शिवजी ने ब्रह्मशर छोड़कर उसको व्यर्थ कर डाला। इसी प्रकार जो बाण और शस्त्र कृष्ण ने शिवजी के ऊपर चलाये, वह कोई फलदायक न हुये। शिवजी ने काट दिये और कृष्ण की सेना को डाट दिया। किसी शस्त्र को न छोड़ा। केवल शस्त्ररहित होकर कृष्ण की सब सेना को भगा दिया। तब कृष्ण अति कोपित हुये और उन्होंने शीतज्वर को शिवजी के ऊपर छोड़ा जिससे सबके शरीर थरथराने लगे और बहुत विकल हुये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी ने पित्तज्वर छोड़ा जिसने शीतज्वर का मुख मोड़ दिया। शीतज्वर शिवजी के पास पहुँच स्तुति कर शरण में आया। शिवजी ने दोनों ज्वरों से कहा कि जो तुमको स्मरण करे, उसको न सताओ और प्रसन्न रहो। जाओ, हमने तुम दोनों को अपना सेवक बना लिया। जब कृष्ण ने शिवजी का यह चरित्र देखा तब दुःखी हुये और उनका आनन्द जाता रहा। प्रद्युम्न और वीरभद्र ने बहुत समय तक युद्ध किया। निदान वीरभद्र ने वही शक्ति प्रद्युम्न पर छोड़ दी जिससे तारक को मारा था। प्रद्युम्न अति विकल हो युद्धस्थल को छोड़ भाग गये। इसी प्रकार बलभद्र आदि सम्पूर्ण यादववंशी वीर युद्ध स्थान से भाग गये। तब गरुड़ ने अपने पंखों को फैलाकर बड़ा उपद्रव किया। नन्दीश्वर बैल ने अपने सींगों से पंखों को छेद उठा लिया। सो बड़ी कठिनता से गरुड़ नन्दी से छूट भाग गये और युद्धस्थान छोड़ दिया। कृष्ण अपनी सेना की यह दुर्दशा और उनका भागना देख चिन्तावान् हो अपने सारथी दारुक से कहा कि देखो, हम बाणासुर की भुजा काटने आये थे क्योंकि आप शिवजी ने उनको यह शाप दिया था कि कृष्ण तेरी भुजा काट डालेंगे। हमको अपनी भाग्य का बड़ा पश्चात्ताप है कि इस समय आप जिन्होंने शाप दिया था, हमसे विरुद्ध हो युद्ध करने के लिए खड़े हैं। वे अपने वचन को झूठा करते हैं। हमारी हीनता करते हैं। न जानिये इनके मन में कैसी आई। मुझे कई वचन शिवजी से कहने हैं। तुम उनके निकट हमारा रथ ले चलो। हम उनको बाणासुर के शाप की बात स्मरण करा देंगे जिससे शिवजी बाणासुर की सहायता न करें। सो दारुक ने ऐसा ही किया। कृष्ण ने पहुँचकर हाथ जोड़ शिवजी की स्तुति की, शिर झुकाया, अहंकार दूर किया और शिवजी के शरणागत हो यह वचन कहे कि हे शिवजी! तुम सबके स्वामी, सबसे श्रेष्ठ, हम सबको प्रसन्न करनेवाले और हमारे कष्ट हरनेवाले सदा से रहे। हम तुम्हारी आज्ञा से बाणासुर की भुजा काटने आये थे। क्यों कि तुमने बाणासुर को यही शाप दिया था। उस वचन का स्मरण कीजिये। मुझे प्रसन्न कीजिये। बाणासुर की रक्षा छोड़ दीजिये कि हमको हर प्रकार की सिद्धि और विजय का अवकाश मिले और तुम्हारा वचन भी न टले। शिवजी ने कहा हे कृष्ण! तुम हमारे बड़े, श्रेष्ठ और राम के भक्त हो। हमने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमको अपने बराबर का पद दिया है। तुम तो पूर्ण विष्णु के अवतार हो। तुम्हारे काम हमको बहुत प्यारे हैं। तुमने जो कुछ कहा सत्य है। हम भी भक्ति के आधीन हैं। उस भक्ति के करनेवाले भक्त के आधीन होकर यह लीला करते हैं। हमारे देखते-देखते बाणासुर की भुजा क्योंकर कट सकती हैं। अब तुम जाकर हम पर जृम्भणास्त्र छोड़ना। हम निद्रावश सो जावेंगे। तब तुम अपना कार्य कर संसार में यश पाना। यह सुन कृष्ण अपने स्थान पर आये और शिवजी पर उन्होंने जृम्भणास्त्र छोड़कर सुला दिया। फिर बाणासुर की सेना को हिला दिया।

तिरपनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जब बाणासुर ने अपनी सेना के बल की न्यूनता देखी तो क्रोधित हो महानाद करते हुये श्रीकृष्ण महाराज के समीप आकर सामने हुआ और बहुत ही युद्ध कर सब शस्त्र चलाये। कृष्ण ने उसके सब शस्त्र निष्फल कर अपने शाङ्र्गधनुष को चढ़ाया और बहुत ही बाण चलाये। सो बाणासुर भी इनकी वीरता को मान गया और सबको निवारण किया। कृष्ण को बाणों से छा लिया। दोनों सेनाएँ युद्ध करने लगीं। जब कुम्भाण्ड यदुवंशी सेना को मारने लगा और उनको अपनी वारों से दुःखी किया तब श्री बलरामजी ने अपना हल-मूशल हाथ में ले लिया और कुम्भाण्ड के भाल को हल से हिलाया। कुम्भाण्ड ने बलराम को त्रिशूल मार धरती पर गिरा दिया। फिर दोनों युद्ध करने लगे। गरुड़ ने कृष्ण की इच्छा पाकर दोनों पङ्ख फैला दिये और असंख्य दैत्यों को गिरा दिया। यहाँ तक कि दैत्यों की सेना युद्धस्थान में रुक न सकी। बाणासुर ने अपना त्रिशूल गरुड़ पर चलाया और धरती पर गिरा दिया। जब गरुड़ सचेत हुआ तो युद्ध से भाग गया। फिर बाणासुर और कृष्ण इतना लड़े कि संसार भर में हाहाकार हो गया। बाणों की वर्षा से आकाश दिखाई न देता था। देवता भयभीत और निराश हो कहने लगे कि न जानिये यह क्या होता है। शिवजी के चरित्र को न जाना, उनकी लीला न पहिचानी। कृष्ण ने बाणासुर के रथ के घोड़े मार डाले और वीरों के समान गर्जने लगे। फिर एक बाण बाणासुर के हृदय में मारकर पृथ्वी पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिरा दिया। जब बाणासुर चेत में आया तो कृष्ण पर त्रिशूल चलाया। कृष्ण ने त्रिशूल और गदा काट कर उसको अपने बाणों से पाट दिया। बाणासुर ने कृष्ण के धनुष को निष्फल कर दिया। कृष्ण ने भी बाणासुर के सब शस्त्र व्यर्थ कर डाले, सेना मार डाली और बड़ा भारी युद्ध किया। कृष्ण ने शिवजी का शाप स्मरण किया और शिवजी से बहुत बल पाकर बाणासुर को पकड़ कर आरी से उसकी सब भुजाएँ काट डालीं। केवल चार भुजा रहने दीं। बाणासुर को शिवजी की कृपा से कुछ कष्ट न पहुँचा। तुरन्त ही घाव भर गये। उस समय कृष्ण को इतना कोप हुआ कि वीर भाव से चाहा कि बाणासुर का शिर धड़ से जुदा कर डालूँ तो तुरन्त शिवजी ने जो सो रहे थे, कृष्ण की ओर देखकर कुछ तिरछी दृष्टि से अपनी भुजा ऊँची करके क्रोधपूर्वक कहा कि हे कृष्ण! जो तुमको हमने आज्ञा दी थी, वह सब तुम कर चुके। अब चक्र चलाकर बाणासुर का शीश न काटना। यह सुदर्शन चक्र हमने तुमको दिया था। हमारे भक्तों पर यह चक्र नहीं चल सकता। देखो, तारक और रावण पर यह तुम्हारा चक्र न चला। अब मत लड़ो, हमारे भक्त पर इतना क्रोध मत दिखाओ। अब इसके साथ प्रीतिकर अनिरुद्ध को ऊषा सहित अपने घर ले जाओ। कृष्ण ने स्वीकार किया। शिवजी ने बाणासुर को बुलवाकर कृष्ण से प्रीति करा दी। बाणासुर ने ऊषा और अनिरुद्ध को दान मान आदि से संतुष्टकर कृष्ण को दे दिया। सब रीतों के पूरने के उपरान्त कृष्ण विदा हुये और अपने नगर में पहुँचे। बाणासुर भी गण बनकर दैत्यों से देवता हुआ। उसने देवताओं की बड़ी सेवा की जिससे शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे ऐसी गति दी।

चौवनवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि जब श्रीकृष्णजी अपने कुल समेत अनिरुद्ध को साथ लिये हुये द्वारका चले गये तो बाणासुर ने क्या किया और शिवजी ने क्योंकर बाणासुर को अपना गण बनाया? ब्रह्माजी बोले कि श्रीकृष्णचन्द्र के चले जाने के उपरान्त बाणासुर अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया और अपने अहंकार पर धिक्कार किया। तब नन्दीश्वर ने उसको बहुत समझाया और कहा कि जो तुमने अपना अहंकार शिवजी को दिखाया,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसी का यह फल है। शिवजी तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे। वे भक्तवत्सल हैं, तुम इतनी चिन्ता मत करो। शिवजी की इच्छा से जो कार्य हो उसी में प्रसन्न हो। गर्व छोड़ शिवजी की सेवा और ध्यान में लगे रहो। ताण्डव नृत्य करके शिवजी को रिझाओ। यह वचन नन्दीश्वर के सुनकर बाणासुर अति प्रसन्न हुआ और शिवजी के समीप जा रोने लगा। वह अहंकार दूरकर स्तुति करने लगा। सैकड़ों प्रकार से प्रणामकर ताण्डवनृत्य करके उसमें पूर्ण रीति से पदगत, प्रत्यालीढ़, प्रमुखगत, मदनबाणगत और सरकम्पा आदि सब प्रकार की गतें तथा भाव दिखाये जिससे शिवजी प्रसन्न हुये। जो कि शिवजी को राग और नाग प्यारा है तो कृपाकर बाणासुर से कहा कि तेरे नाच, राग और प्रेम से हम प्रसन्न हुये, वरदान माँग। तू हमको बहुत प्रिय है। इससे हमने इस प्रकार की लीला करके तेरे गर्व को नष्ट कर दिया है। बाणासुर ने प्रसन्नतापूर्वक शिवजी का वचन सुन हाथ जोड़ विनती की कि हे शिवजी ! मेरा शरीर दैत्यभाव से छूटकर मैं निर्भय आपके गणों में गिना जाऊँ और मेरी पुत्री ऊषा से जो लड़का उपजे, उसको हमारा राज्य शोणितपुर कृपा करो। वह किसी समय देवताओं से शत्रुता न करे और मेरे कुल से दैत्यपन उठ जावे। यह भी मैं आपसे माँगता हूँ कि मुझको आपकी नवधाभक्ति प्राप्त हो। तुम्हारे भक्तों से मैं विशेष प्रीति करूँ। सब जीवों पर कृपा रखलूँ। तुम्हारी माया मुझ पर कुछ फल न करे। इसके सिवाय और जो कुछ उचित हो, मुझको वरदान दीजिये। आप हर प्रकार से मुझे अपनी शरण में लीजिये। इतना वर माँग बाणासुर शिवजी के चरणों पर गिर पड़ा और प्रेम की अधिकता से आँखों से अश्रु की धारा बह चली। मारे प्रीति के जिह्वा कुछ कह न सकी। यह दशा बाणासुर की देखकर शिवजी ने अति प्रसन्न होकर बाणासुर को धरती से उठा लिया और हँसकर कहने लगे हे बाणासुर ! तुम हमारे बड़े भक्त हो। हमने तुमको अपना कर लिया। जो वर कि तुमने माँगा, वह सब हम तुमको देते हैं और तुम हमारे गणों के राजा होकर महाकाल के नाम से प्रसिद्ध हो, किसी से परास्त न होगे। हमारी कृपा से सब देवता तुम्हारे सेवक होंगे। तुम पर माया अपना फल न करेगी। जो मुझको बहुत प्रिय हैं, वह तुमसे बहुत प्यार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रक्खेंगे। यह कह बाणासुर को दया की दृष्टि से देखा। फिर अपने दोनों हाथ बाणासुर के ऊपर फेर दिये। तब बाणासुर ने शिवजी की बड़ी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी तो अन्तर्धान हुये और बाणासुर महाकाल गणपति होकर शिवजी की सेवा में पहुँचा।

पचपनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नागासुर अर्थात् गज के वध का वर्णन करते हैं कि जिस तरह शिवजी ने उसको अपने त्रिशूल से वध कर अपना गण बनाया। जब शिवजी की आज्ञा से जगदम्बा ने विष्णु और हम पर कृपा करके देवताओं और मुनीश्वरों आदि के उपकार के निमित्त महिषासुर का नाश किया तब उसके पुत्र गजासुर नामी ने बहुत दुःखी होकर अपने पिता के वध को स्मरणकर चाहा कि देवताओं से बदला लेवैं। इसी इच्छा से वह तप के निमित्त वन में चला गया और हमारे प्रसन्न होने के लिये उसने अति परिश्रम के साथ तप किया। उसके तप करने की यह इच्छा थी कि जो स्त्री या पुरुष कामजित् नहीं, वे मुझे न मार सकें। सो वह गजासुर हिमगत द्रोणी में स्थित होकर ऊर्ध्वबाहु किये आकाश में दृष्टि लगाये अँगूठे के बल खड़ा हुआ। इसी प्रकार वह बहुत वर्षों तक खड़ा रहा जिससे उसमें तप का ऐसा तेज झलकने लगा कि सूर्य भी उसके सामने कान्तिहीन हो गया। जब गजासुर का तप पूर्ण हो गया तो उसके शरीर से अग्नि की ज्वाला उठी जो अपने तेज से संसार भर को जलाने लगी। धरती दिक्पालों समेत जलने लगी, समुद्र नदी सहित घबड़ाये, ग्रह-नक्षत्र आदि गिरने लगे, महाउल्कापात हुआ और दशों दिशाएँ जलने लगीं। देवता मुनि आदि महादुःखी हो मेरे समीप पहुँच गजासुर के तप का हाल कहने लगे कि तुम कृपा करके गजासुर के पास जाकर वरदान दो कि हम ऐसे दुःख से छूटें। हम आपकी शरण में आये हैं। हम, भृगु और दक्ष आदि अपने पुत्रों को साथ लिये हुये गजासुर के तप के स्थान पर गये और उसके ऐसे तपको देखकर सब आश्चर्य में हुये। हमने कहा कि हे गजासुर! हम प्रसन्न हैं जो इच्छा हो वह वर लो तो गजासुर ने नेत्र खोल प्रणाम किया। फिर स्तुतिकर कहा कि जो पुरुष अथवा स्त्री

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कामदेव के अधीन हैं, वह मुझको किसी दशा में न मार सकें। तीनों लोक में मुझको कोई न जीत सके, न मुझपर कोई शस्त्र चलाने के योग्य हो। मैं तीनों लोक से अधिक बलवान् हो तीनों भुवन को अपने आधीन करूँ। हमको तीनों लोक का सुख प्राप्त रहे। यह सुन हमने कहा अच्छा यह वर हमने तुमको दिया। यह कहकर हम चले गये और गजासुर ने अपने घर पहुँच बहुत सेना इकट्ठी कर तीनों भुवन को जीत लिया और निष्कण्टक राज्य करता रहा। देवता आदि को अपने अधीन कर उनके सब रत्न छीन लिये। प्रजा का पालन भली-भाँति करता था। इसी प्रकार वह बहुत दिनों तक राज्य करता रहा। निदान वह धर्म के विरुद्ध पाप करने लगा और ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दुःख देने लगा। मनुष्यों क्या देवताओं से भी सेवा कराने लगा। तपस्वियों, योगियों और धर्मवानों को बहुत सताने लगा। क्योंकि उसको अपने पिता के वध का स्मरण सदा बना रहता था। अकस्मात् एक दिन गजासुर आनन्दवन में जो शिवजी की राजधानी है, बड़े अहंकारपूर्वक पहुँचा। उसके जाने से काशी वासी अति भयवान् हो शिवलोक में जाकर शिवजी की स्तुति करने लगे। जो-जो उत्पात गजासुर ने काशी में किये थे, वह सब विस्तार से वर्णन कर कहा कि गजासुर ने तीनों लोकों को जीतकर काशी में अपना चरण रक्खा है। उसने सबको अपने अन्याय से दुःखी किया है। तुम्हारे सिवाय उसको और कोई विजय करनेवाला नहीं। वह बड़ा बलवान् हृष्ट-पुष्ट और शरीरधारी है। हाथी की गति चलता है जिसके चलने से पर्वत चलते हैं और वृक्ष टूटकर गिर पड़ते हैं, उसकी आज्ञा से बादल आकाश से उड़ जाते हैं। उसके भय से समुद्र सूख जाते हैं। उसके शरीर की लम्बाई सौ हजार योजन है और उतना ही चौड़ान है। वह चौकोण बना हुआ है और नाना प्रकार की माया करता है। वह इस समय वाराणसी क्षेत्र में सबको कष्ट दे रहा है। तुम्हारे भक्तों ने उसके हाथ से बड़ा कष्ट पाया है। इसलिये तुम उस दैत्य का वधकर सबको प्रसन्न करो, काशी सदा आपसे रक्षित रही है। यह सुन शिवजी तुरन्त त्रिशूल लेकर गजासुर के वध के लिये काशीजी में पहुँचे। शिवजी ने ऐसा भयंकर नाद किया कि दैत्य सेना में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़ा हाहाकार मचा। तब काशीवासी जय-जय शब्द कह प्रसन्न हुये। जब गजासुर ने शिवजी को त्रिशूल लिये हुये देखा तो शिवजी को धमकाकर बहुत गर्जा। शिवजी और गजासुर लड़ने लगे। उस समय विचित्र युद्ध हुआ। गजासुर ने जो-जो शस्त्र शिवजी पर चलाये, शिवजी ने सबको काट-कर ऐसा भयंकररूप धारा जिसको देखकर सब दैत्य युद्धस्थान छोड़ भाग गये। यह दशा देखकर गजासुर नङ्गी तलवार अपने हाथ में लेकर शिवजी के मारने को चला। उसने कहा कि अब तुमको जाने नहीं दूँगा। शिवजी के गण भागकर शिवजी के शरणागत हुये। शिवजी ने गणों को अभय-कर इच्छा कि की अब गजासुर का वध करना चाहिये। इस विचार से कि यह किसी और के हाथ से न मारा जावेगा। इसलिये तुरन्त अपने त्रिशूल से तृण के समान गजासुर के शिर को छेद लिया। त्रिशूल के लगने से गजासुर पवित्र हो गया और दैत्यों के मार्ग से च्युत हुआ। अपने को छत्र के समान शिव के शीश पर देख बड़ी प्रसन्नतापूर्वक उसने शिवजी से विनती की कि हे शिवजी ! तुम परब्रह्म हो, मेरे बड़े भाग्य हैं जो आपके हाथ से मेरी मृत्यु हुई। मैं सब पापों से शुद्ध हो गया। मेरी विनय है कि आप कृपा करके मुझे परमपद कृपा करें। आप सबसे श्रेष्ठ मृत्युञ्जय हैं। संसार में एक न एक दिन सब मरेंगे। ऐसी मृत्यु जो मुझको मिली है, उसको वेदों ने बहुत कठिन कहा है। मुझे अब जीने की इच्छा नहीं है इसलिये आप मुझको मार डालें। ऐसे सात्त्विकी वचन सुनकर शिवजी ने कहा कि हम तुम्हारे ऐसे वचनों से प्रसन्न हुये, वर माँगो। गजासुर ने कहा कि जो आप इतने प्रसन्न हैं तो मेरी यह इच्छा है कि आप मेरे शरीर के चर्म को प्रतिदिन धारण किया करो, तुम्हारे त्रिशूल से हरदिन मेरे शरीर का स्पर्श हुआ करे और कृत्तिवासा के नाम से प्रसिद्ध हो जिसको मनुष्य मुख पर लाते ही अपना मनोरथ पावें। यह वचन गजासुर का सुनकर शिवजी ने कहा कि 'तथास्तु' फिर शिवजी बोले कि तेरा यह शरीर हमारा लिङ्ग होकर कृत्तिवासेश्वर के नाम से विख्यात हो जिसके केवल दर्शन ही से मोक्ष प्राप्त हो और दर्शन करनेवाले के सर्व पाप तुरन्त नष्ट हो जावें। जितने हमारे लिङ्ग काशी में हैं, उन सब में यह लिङ्ग सबसे बड़ा मणि के समान हो। यह कहकर शिवजी ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गजासुर को परमगति दी और उस स्थान पर बड़ा उत्सव हुआ। फिर हम सब बिदा होकर अपने-अपने लोक को गये। यह शिवजी का चरित्र गजनाशन दोनों लोक में आवागमन से छुड़ा देता है। जो इसको सुने-सुनावे, उसको शिवजी अपना कर लेते हैं।

छप्पनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नृसिंहावतार का वर्णन सुनाते हैं कि जिस तरह पर विष्णुजी ने नृसिंहावतार धारण किया और दिति के दोनों पुत्रों को देवताओं के आनन्द देने के लिए वध किया। शिवजी का कैसा अद्भुत चरित्र है कि जब विष्णुजी ने नृसिंहरूप धारणकर दिति के दोनों पुत्रों को नष्ट किया तब दिति ने बड़ा दुःख किया और महाशोकवती हुई। तब दुन्दुभि ने जो दिति का बड़ा भाई था, उसे बहुत समझाया पर दिति के शान्त न होने से वह ऐसा कष्ट न सह सका। इससे उसने विचार किया कि किसी प्रकार देवताओं को कष्ट देना उचित है। क्योंकि उन्होंने विष्णुजी से हमारे बहनोई को मरवा डाला है। वे किसके बल पर भरोसा रखते हैं। जिसके कारण अमर हैं। मुझको कौन उपाय करना चाहिये जिससे वे दुःख पावें। निदान बहुत शोच विचार कर उसने इस बात पर निश्चय किया कि ब्राह्मण वेद से अपनी रक्षा करते हैं और देवता ब्राह्मणों से। जब ब्राह्मण नष्ट हो जावें तब वेद भी विनाश को प्राप्त होंगे। जब वेद नष्ट हों तो आपही देवता भी निर्बल होंगे। तब सबको जीतकर देवताओं का राज्य हम भोगेंगे। जिस प्रकार से ब्राह्मण संसार में बड़े हैं कि वह वेद के मार्ग पर चलते हैं। उसी प्रकार काशी में ब्राह्मणों का अच्छा घर है। इसलिये पहिले काशी में जाकर ब्राह्मण को मारना चाहिये। फिर और स्थानों पर पहुँचकर सबको खा जाऊँगा। यह विचार दुन्दुभि काशी में गया और हजारों ब्राह्मणों का वध कर डाला। जब ब्राह्मण कुश लेने के निमित्त वन में जाते थे, वह तुरन्त उसी स्थान पर पहुँचकर ब्राह्मणों को खा जाता था। यहाँ तक कि कोई हड्डी भी न छोड़ता था। वह बड़ी माया करता जाता था। वन में पशु नदी में मगर और पृथ्वी में मनुष्य बनकर ब्राह्मणों को खा डालता था।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जब दोपहर के समय मुनीश्वर योग और ध्यान में लगते थे और रात्रि को भी उन्हीं के समान अपना स्वरूप रच चख जाता। उसने अपना स्वरूप बना-बनाकर असंख्य मुनीश्वरों को खाया और किसी ने इस बात को न जाना। यहाँ तक कि वह हड्डी भी नहीं रखता था। एक दिन रात्रि के समय एक शिवभक्त शिवजी की पूजा करता था। जब वह ध्यान लगाकर शिवजी का स्वरूप देखने लगा, तब दुन्दुभि ने सिंह का स्वरूप बनाकर चाहा कि उसको खा जाऊँ पर अपने में इतना बल न देखा। पर्वत के समान बड़ा होकर उसको खाना तो क्या वरन् उसको पकड़ न सका। तब श्रीशिवजी प्रकट हुये। उसने चाहा कि शिवजी को भी ग्रास कर जाऊँ। वह शिवजी की ओर चला। शिवजी महाकोपित हुये। उसको शिवजी ने पकड़ लिया और हाथों से मार-मारकर मार डाला। उस शिवभक्त के प्राण बच गये नेत्र खोल शिवजी के दर्शन पाये। उस समय सब काशीवासी इकट्ठा हुये और दुन्दुभि को जो भयङ्कर रूप से पड़ा था, देखकर प्रसन्न हुये। क्योंकि उस समय तक ब्राह्मणों के गुप्त हो जाने से काशी के लोग आश्चर्य में थे। ब्राह्मणों ने मिलकर शिवजी की स्तुति की और विनय की कि इसी स्वरूप में आप यहीं स्थित रहकर हर व्याघ्र के नाम से प्रसिद्ध होवें और अपनी नगरी काशी की रक्षा करें। यह सबसे श्रेष्ठ स्थान हो गया क्योंकि यहाँ आप प्रकट हुये हैं। तुम्हारे दर्शन से हम अति प्रसन्न हुये। यहाँ आकर हमारी रक्षा करो और शत्रुओं का विनाश करो। यह सुनकर शिवजी 'तथास्तु' कहकर बोले कि जो निश्चयपूर्वक हमारे रूप को देखेगा, उसके सब दुःख दूर करूँगा और उसको दोनों लोक में बड़ा सुख कृपा किया जावेगा। हमारे इस चरित्र का स्मरण कर जो युद्ध के निमित्त जावेगा, उसको निस्सन्देह विजय प्राप्त होगा। तब हम और विष्णुजी सब देवताओं समेत आकर शिवजी की स्तुति करने लगे। फिर विनय की कि आपने दुन्दुभि को मारकर हम सबको तीनों भुवन समेत रख लिया। हम पर कृपा किया करो, हम आपके सेवक और आप हमारे स्वामी हैं। यह सुनकर शिवजी तुरन्त उसी लिङ्ग में प्रवेशकर अन्तर्धान हुये। विष्णु तथा हम सब देवताओं और ब्राह्मणों समेत अपने-अपने स्थान को गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सत्तावनवाँ अध्याय।

इतना कह फिर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! किसी समय में उत्पल और विदल दो दैत्य बड़े बलवान् उपजे। वे दोनों वन में जाकर बहुत वर्षों तक कठिन तप करते रहे और हमारी भक्ति में उन्होंने एक ही पाँव से खड़े होकर बड़ा कालक्षेप किया। सो हम प्रसन्न होकर उनको वर देने को गये। हमने कहा कि वर माँगो। तब दोनों भाई कहने लगे कि हम किसी मनुष्य के हाथ से न मारे जावें और सबसे अधिक बलवान् रहें। हमने शिवजी का स्मरण कर कहा कि ऐसा ही होगा। सो वह अपने-अपने स्थानों को चले गये। उन्होंने तीनों लोक को जीत लिया। वे हर प्रकार देवताओं को दुःख देने लगे। उनके अधिकार, धन और हर प्रकार की वस्तु बढ़ गई। देवता और मुनि दुःखी होकर हमारी शरण में आये और सर्व वृत्तान्त कहा। हमने कहा कि वे तो हमारे वरदान से मारे जाने के योग्य नहीं, केवल शिवजी के हाथ से मरेंगे। इस से तुम शिवजी का ध्यान करो। उनकी कृपा से तुम्हारा दुःख दूर होगा। सो देवता आदि विदा हुये। कुछ दिनों के पीछे तुम उन्हीं दैत्यों के समीप गये और तुमने उनकी बहुत प्रशंसाकर उनकी सामग्री को भी बहुत सराहा फिर तुम गिरिजा की प्रशंसा करने लगे और तुम बहुत गिरिजा की सुन्दरता की प्रशंसा कर विदा हो चले आये। दोनों दैत्यों ने गिरिजा की इतनी प्रशंसा सुनकर चाहा कि किसी ढब से गिरिजा को छीन लावें और बहुत समय तक इसी विचार में रहे कि कब गिरिजा हमारे हाथ में आवेगी। यह सब वृत्तान्त शिवजी जान गये। एक दिन शिवजी ने एक विचित्र लीला रच आप तो गणों के साथ बाजी खेलने लगे और गिरिजाजी ने अपनी सखियों के साथ इतना खेल किया कि जो सबके मन भाया। अकस्मात् मृत्यु के पञ्जे में फँसे हुये दोनों दैत्यों ने आकाश मार्ग से आकर गिरिजाजी को खेल करते देखा और तुरन्त विमान उतार गणों के स्वरूप से गिरिजाजी के सामने गये और इच्छा की कि शिवा को ले भागें यह दशा देख शिवजी ने गिरिजा से युक्तपूर्वक कहा कि यह तुम्हारे गण नहीं वरन् दैत्य हैं। यह किसी और पुरुष के हाथ से मारे नहीं जा सकते, इनको तुम्हीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वध करो। यह शिवजी की सैन समझकर गिरिजा ने चाहा कि दोनों का विनाश करूँ। सो गिरिजा ने युक्ति से अपनी गेंद को उन दोनों के ऊपर फेंक दिया। वे देर तक घूमते रहे, अन्त में पृथ्वी पर गिरकर मर गये। उस समय विष्णु, हम और सब देवताओं ने आकर उस स्थान पर जहाँ ज्येष्ठेश्वर उपलिङ्ग है, शिवजी तथा गिरिजा की स्तुति की और विनय की कि आप भक्तों के निमित्त अवतार धारण किया करते हैं। जैसा कि इस समय भी गयन्दकेशलिङ्ग आपका प्रकट हुआ। निदान शिवजी से विदा हो सब अपने-अपने स्थानों को चले गये और काशीवासी भी विदा हुये। वह शिवजी का लिङ्ग उसी स्थान पर स्थित रहा जिसकी सेवा से दोनों लोक में असंख्य आनन्द मिलता है। वह लिङ्ग कुण्डलेश के नाम से प्रसिद्ध है। हे नारद! यह चरित्र शिवजी का जो हमने तुमको सुनाया, बड़ा सुखदायक है। जो कोई उसको सुने-सुनावेगा, वह दोनों लोक में बड़ा ही आनन्द पावेगा। यह युद्धखंड जो हमने तुमको सुनाया, उसके सुनने और पढ़ने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। कभी भी तीनों व्याधि सामने न आवें और असंख्य द्रव्य-धन प्राप्त हो। शत्रु भी कभी बलवान् न हो और मोक्ष पाकर आवागमन से छूटे।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे पञ्चमः खण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:o:—

छठा खण्ड

पहिला अध्याय ।

इतनी कथा सुनाकर श्रीसूतजी शौनकादि मुनियों से बोले कि हे तापसो ! जब ब्रह्माजी कह चुके तो नारद मुनि ने सन्देह युक्त होकर फिर पूछा कि हे पिता ! आपने अन्धकासुर की कथा कही, मुझे उसमें कुछ संशय उपजा है, कृपा करके आप उसको निवृत्त करें कि शिवजी मन्दराचल को कैलाश छोड़कर कब गये ? कृपा करके आप इस कथा को विस्तार से वर्णन करें। ब्रह्माजी ने नारद की बहुत सराहना कर कहा कि पूर्व समय में एक दिन शिवजी जो कैलाश के महाराजा हैं, विश्वेश्वरपुरी को गये। उनके साथ श्रीजगदम्बा गिरिजाजी महारानी और बहुत गण भी थे। सो विष्णु, हम और देवता अपने कुल, परिवार और गणों समेत मुक्तिपुरी में शिवजी के समीप गये। इन्द्र, देवता, मुनि, सिद्ध और अहीश आदि भी सब विद्यमान हुये। उस स्थान पर शिवजी के तेज और सभा के शृङ्गार को हम कहाँ तक वर्णन करें, अकथ्य है। निदान शिवजी हम सबों को साथ लिये हुये विश्वनाथ के समीप पहुँचे। पहिले मणिकर्णिका में स्नानकर फिर विश्वनाथजी के दर्शन किये और अतिप्रेम से विश्वनाथजी की पूजाकर शिवजी अति प्रसन्न हुये। फिर गिरिजा ने भी विश्वनाथ की पूजा की। गणों ने भी विश्वनाथ के पूजन में अपना प्रेम दिखाया और बड़ी स्तुति की। फिर विष्णु, हम, सब देवता, मुनि और सिद्ध आदि विश्वनाथजी की पूजाकर स्तुति करते रहे। जब कैलाशवासी शिवजी को ऐसी लीला करते विश्वनाथजी ने देखा तो विश्वनाथ प्रसन्न होकर दोनों भुजा फैलाकर गिरिजापति से मिले और प्रेम की अधिकता से आँसू बहे। कुशल प्रश्न और अन्य संसारी रीतों के पूछने के उपरान्त विश्वनाथजी ने कहा कि हे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिरिजापति, चन्द्रभाल ! हम तुम एक ही रूप हैं। कुछ किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। संसार के उपकार निमित्त तुमने सगुण रूप धारण किया है। हम पर तुम्हारी बड़ी अनुग्रह हुई जो आप यहाँ आये। अब जो आज्ञा हो कहिये। यह सुन गिरिजापति शिवजी ने कहा हे विश्वनाथ ! हम और तुम किसी प्रकार से दो और जुदा नहीं हैं। तुम तो तीनों लोक के स्वामी हो। मुझको आज्ञा दो और आप इसी स्थान पर स्थित रहकर संसार का राज्यकर तीनों लोक का पालन कीजिये। यह सुन विश्वनाथजी हँसकर बोले कि तुम तो पूर्णरूप से शिव ब्रह्म अनादि और अन्त से रहित हो। इसी स्थान पर अपनी राजधानी नियत कर अपने गणों और गिरिजा समेत हो और कुछ दिनों तक कैलाश के समान देवताओं और मुनीश्वरों को लिये यहाँ स्थित रहकर भरतखण्ड को कृतार्थ कर दो। संसारी मनुष्यों के समान अनुग्रहकर शत्रुओं का नाश करो। जितना कि तुम कैलाश को प्रिय जानते हो, उसी प्रकार इस स्थान को भी प्रिय जानकर स्थित रहो। जो कोई इस पुरी में रहे, उसको मोक्ष दो। आपकी आज्ञा में तीनों लोक हैं। आप से विरुद्ध होकर कहीं किसी का ठिकाना नहीं। आप सबसे श्रेष्ठ और स्वामी हैं। आपके सेवक तीनों लोक हैं। विष्णु और ब्रह्मा भी तुम्हारे अधीन हैं। उन्होंने तुम्हारी सेवा से ऐसे-ऐसे अधिकार पाये हैं। विष्णु और ब्रह्मा की रक्षा तुम्हारे अधीन है। जब इनको कोई दुःख पड़े तब आपको उनकी सहायता करना उचित है। ब्रह्मा सब सृष्टि उपजाते हैं, विष्णु पालते हैं और इन्द्र इन्हीं दोनों की आज्ञा से राज्य करते हैं। इसलिए संसार के उपकार के निमित्त इनके कार्य किया करना। जो कोई काम इनसे न बन पड़े, उसके पूरे करने में अपना साहस अवश्य करना। ऐसे वचन विश्वनाथजी के सुनकर गिरिजापति बोले कि हे देवताओं के देवता, महादेव ! तुम परब्रह्म हो, काल हो। जैसी आज्ञा आपने मुझे दी है, उसका पालन करूँगा। यद्यपि कैलाश पर्वत जहाँ हमारे नौकर-चाकर हैं, हमको प्रिय है। पर हमको काशी कैलाश से भी अधिक प्यारी है, हम काशी में रहेंगे। यह सुन विश्वनाथजी अन्तर्धान हो गये और सदाशिव के पूर्णांश से गुप्त होकर विश्वनाथ उसी स्थान पर रहे। जो मनुष्य वहाँ मरता है, उसको तारकमन्त्र देकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुक्तिकृपा करते हैं। कैलाशनाथ गिरिजापति भी गिरिजा समेत उसी स्थान पर स्थित हुये। इसी से काशी बड़ी सिद्धिपीठ हुई. जहाँ जीव, जप, तप, संयम और भक्ति बिना मुक्ति पाते हैं। वह काशी तीनों लोक से श्रेष्ठ और प्रज्ञानक्षेत्र के नाम से तीनों लोक में प्रसिद्ध है। वहाँ शिवजी की सगुण-निर्गुण दोनों मूर्ति दयाभाव से अपनी सभा समेत विराजमान हैं। हम, विष्णु, देवता, मुनि, सिद्ध, नाग और देवताओं समेत उन्हीं दोनों मूर्तियों की सेवा और स्तुतिकर शीश झुकाते हैं। जिस तरह से कि काशी में गिरिजापति शिवजी ने राज्य किया, उस कथा को हम वर्णन करते हैं कि विश्वनाथ की आज्ञा पाकर गिरिजापति शिवजी काशी में स्थित हुये और हर प्रकार से मनुष्यों के कष्ट हरे। उन्होंने काशी को अपनी राजधानी बनाया जो बड़ी मुक्ति देनेवाली है। गिरिजा भी उसी काशीस्थान में रही जो अन्नपूर्णेश्वरी देवी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। इसी से काशी में कोई भूखा नहीं रहता। वे अपनी प्रजा के सब मनोरथ पूरे करती हैं। जो शिवजी ने अपनी एक मूर्ति उपजाई थी जिसका भैरव नाम है, उसने हमारा पाँचवाँ शिर काट डाला और त्रिशूल को हाथ से लेकर बड़ा नाद किया। मैंने उस मुख से शिवजी की निन्दा की थी, इसी से भैरव ने शिवजी की आज्ञा से प्रकट होकर हमारा शीश काट डाला था। सो भैरव को हमारे शिर काटने से चाण्डाली हत्या लगी थी। इससे वे संसार भर में फिरते रहे। जब वे काशीजी में आये तो तुरन्त उनकी हत्या जाती रही। जहाँ पर कि वह हमारा शीश गिराया, उस स्थान पर शिवजी ने बड़ा नृत्य किया। वह बड़ा तीर्थस्थल हो गया और कपालमोचन के नाम से ख्यात हुआ। वह तीर्थ सर्व पापों को नष्ट करता है। सो भैरव जो शिवजी ही हैं जिनका ऊपर वर्णन किया गया। तो शिवजी ने इन्हीं भैरव को कोतवाली का पद दिया और कहा कि तुम्हारा पाप नाश हो गया। यह लीला हमने इसलिये कही कि संसार में फिर ऐसा कोई कर्म न करे। तुम काशीजी की रक्षा करते रहो, पापियों को दण्ड दिया करो और सब प्रजा को कृतार्थ करो। यद्यपि भैरव का चरित्र बहुत बड़ा है पर विस्तारभय से कहा नहीं गया। जब भैरव की उत्पत्ति और अवतार का वर्णन करेंगे, वहाँ उनका वर्णन विस्तार से किया जावेगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि एक दिन गिरिजापति गणों को साथ लेकर नन्दीश्वर पर आरूढ़ और गिरिजा को भी बैल पर साथ लिये आनन्दवन के देखने को चले और आनन्दवन में पहुँचकर गिरिजा से उस क्षेत्र की लीला कह उसकी स्तुति करते विचरने लगे। उस क्षेत्र की प्रशंसा कौन जिह्वा से हो सकती है। उसमें नाना प्रकार के सुगन्धित पुष्प जैसे मन्दार, कनैर, चम्पा, केतकी, अनार, चमेली, मालती, कुन्द, मौलसिरी, जाही, जुही, कमल, जिनमें भौंरे अन्धे होकर लिपटते थे, खिले हुये थे और उत्तमोत्तम ताल, तमाल आदि वृक्षों पर पक्षी मधुर स्वर से गान करते, तीनों प्रकार की पवन चलती, मुनीश्वर नदी किनारे अपना नियम करते, सिंह आदि वैरभाव छोड़ अन्य जीवों को कुछ दुःख नहीं देते थे। ऐसा उत्तम वन देखकर गिरिजापति अति प्रसन्न हुये और माली को बुलाया और उसको पारितोषिकादि दे कृतार्थ कर दिया। फिर वन के भीतर पैठे और गिरिजा से कहा कि जिस तरह हम तुमको चाहते हैं, उसी तरह यह काशी हमको प्रिय है और उसी प्रकार यह आनन्दवन हमको प्यारा है जिसमें मरने से मोक्ष प्राप्त होती है। वरन् यह ब्रह्मज्ञान का क्षेत्र है। यहाँ मरकर तुरन्त भक्तजन आप शिवजी हो जाते हैं। यह आनन्दवन हमको प्राण के समान प्रिय है। इसके रहनेवाले सदा प्रसन्न हैं। यह गिरिजा से कह शिव आगे चले। देखा कि आनन्दवन में हरिकेश अतिप्रेम से तप कर रहे हैं और अशोकवृक्ष के नीचे बैठे हुये शिव-शिव कह रहे हैं। उनमें केवल त्वचा और नाड़ियाँ दिखाई देती हैं, मास का नाम नहीं, मानों तप आप ही रूप धार तप कर रहा है जिसके चारों ओर वन के जीव सेवा कर रहे हैं। बड़े-बड़े भयंकर जीव जैसे सिंह, सर्प आदि अपने स्वाभाविक वैरभाव को छोड़ रक्षा के लिये खड़े हैं और उन हरिकेश पर नाना प्रकार की वनस्पति उगी हुई हैं। यह हरिकेश की दशा गिरिजा ने देखकर शिवजी से कहा कि इसको वर दीजिये जो यह माँगे, यह तो आपका भक्त है। तुम्हारे भरोसे पर जीता है। इसके भाल पर हस्तकमल रक्खो। यह सुन शिवने बैल से उतर उसके शरीर को छूकर कृतार्थ कर दिया। हरिकेश ने नेत्रखोल दिये। शिव को देखा कि कोटि सूर्य की प्रभा समान, महातेजवान्, कोटि-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चन्द्र के सदृश भस्म रमाये, पञ्चमुख, त्रिनेत्र लाली लिये, दशभुजा, गौर-शरीर, गिरिजा वामभाग में और भाल में चन्द्रमा विराजमान आगे खड़े हैं। ऐसा स्वरूप देखकर यक्षपति अर्थात् हरिकेश अपने मन में फूला न समाया। शरीर के रोम खड़े हो गये, मुख से बात नहीं निकलती थी। उसने शिवजी को प्रणाम किया। फिर स्तुति करके बोला आपने जो मेरा शरीर छुआ मुझे अमृत से भी अधिक स्वाद मिला। मैं आपकी शरण हूँ, आप हमारे स्वामी हैं। यह सुन शिवजी हरिकेश के माँगे बिन वर देने लगे कि हरिकेश ! तुम बड़े भक्त हो। तुमको हर प्रकार का आनन्द प्राप्त हो। यह काशीपुरी मुझे अति प्रिय है। इसकी तुम रक्षा किया करो और शत्रुओं को क्रोधित होकर दण्ड दो। भालों का पालन करो। तुम दण्डधर और दण्डकर होकर दण्डपाणि के नाम से प्रसिद्ध होगे। हमारे गणों के भी स्वामी होकर जिसको अनाचार करते देखो, उसको शिक्षा करो। तुमको दो गण सम्भ्रम और उद्भ्रम अपनी आज्ञा के प्रतिपाल के निमित्त कृपा होते हैं। वे पापियों को भली भाँति दण्ड देंगे। तुमको हम आज्ञा देते हैं कि काशी में हमारे भक्तों के सिवाय और कोई बसने न पावे। अभक्तों को यहाँ से दुःख दे निकाल दो। तुम यहाँ अन्न देनेवाले, प्राण के दाता और ज्ञानदाता होकर हमारी आज्ञा से मुक्ति देनेवाले भी होगे। जो मनुष्य तुम्हारी सेवा करके हमारी पूजा करेगा, वह मुक्ति पावेगा। जो मनुष्य मोक्ष की कांक्षा करता है, उसको उचित है कि वह पहिले हमारी सेवा करके हमारी पूजा इस स्थान पर करे। तुम हमारे गणों के आगे चलनेवाले होकर दण्ड का देना अपने अधीन समझो। यह कहकर शिवजी अपने बैल पर चढ़ चले और पार्वती समेत अपने स्थान पर पहुँचे। उस दिन से दण्डपाणि और दण्डविनायक काशी के निवासियों को आनन्द देकर वहाँ स्थित रहते हैं। वे दुष्टों के लिये बड़े भयंकर, शिवजी के भक्तों के दुःख दूर करनेवाले रहा करते हैं। दोनों गण सम्भ्रम और उद्भ्रम शिवजी के शत्रुओं को उपदेश करते हैं और दण्डपाणि शिवजी की इच्छानुसार सर्वकार्य करते हैं। वीरभद्र ने दण्डपाणि का अनादर किया और अप्रसन्न होकर दूसरे स्थान पर जा रहे। अर्थात् जब उन्होंने दण्डपाणि की सेवा न की इससे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वीरभद्र को काशी का वास प्राप्त न हुआ और इसी से अगस्त्यमुनि भी काशी में न रह सके। उनको दण्डपाणि की सेवा न करने से काशी छोड़ देनी पड़ी। एक मनुष्य धनंजयनामी वैश्य वण बड़ा धनवान् शिवजी की भक्ति में मन न देता था। इसी प्रकार उसकी माता भी कुछ प्रेम शिवजी से न करती थी। जब धनंजय की माता मर गई तो धनंजय उनके अस्थि काशी में लाया पर उसको कुछ भी शिव का प्रेम न था। दण्डपाणि ने शिवजी की इच्छा से यह चरित्र किया कि उनके गण ने धनंजय की माता की हड्डियों को देखा। गण का देखना ही था कि वे हड्डियाँ वहीं गुप्त हो गईं। धनंजय निरुपाय हो घर लौट आया। इसी प्रकार काशी में रहकर जो दण्डपाणि को सेवा से प्रसन्न न रक्खे तो वह काशी में रहने नहीं पाता और उस पर बड़े-बड़े कष्ट पड़ते हैं। सो जिसको काशी में रहने की इच्छा हो, वह दण्डपाणि की अवश्य पूजा करे और शिव की भक्तिकर मुक्ति पावे।

तीसरा अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता! हमारी इच्छा है कि आप हरिकेश के सम्पूर्ण वृत्तान्त आदि से अन्त तक वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले कि किसी समय में रत्नभद्र मुनि यक्षपति गन्धमादन पर्वत में रहा करते थे। उनके घर में संसार की सर्ववस्तु थी और वह बड़ा कुल परिवार और सन्तानवान् था। जितने यक्ष थे, उन सबका यही राजा था। हाथी, घोड़ा और पालकी आदि सब सामग्री वस्त्र और रत्नों समेत सब कुछ थी। वे महासुन्दर शिवजी की भक्ति में दृढ़ और स्त्रियों की संगति से भिन्न रहा करते थे। उनकी स्त्री पतिव्रता थी। वह रत्नभद्र की इच्छा बिन कोई कार्य न करती। रत्नभद्र उसको बहुत चाहता था। उसके समान पति की प्रिय स्त्रियाँ लोक में कम हैं। वह रत्नभद्र को शिव जानती थी। सो यह दोनों स्त्री पुरुष संसार की भलाई के कार्य करते और इसमें शिवजी की प्रसन्नता जानते। साधु को प्रिय जानते और शिवजी के समान साधु को समझ उसकी सेवा करते। शिवजी के पूजन पाठ में लगे रहकर सदा परिश्रम और प्रयत्न करते। उनके मन शिवमन्दिर थे और वे उदारता में विख्यात थे। नित्य उठ पार्थिव पूजन करते और रुद्राक्ष हाथ में लिये भस्म तन में लगाये रहते।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उनके एक पुत्र जिस का नाम पूर्णभद्र था, उत्पन्न हुआ जिससे माता-पिता अति प्रसन्न हुये। जब उसको जरावस्था प्राप्त हुई और दोनों मरे तो शिव-पुरी में पहुँचे, उनकी मुक्ति हो गई। पूर्णभद्र ने उनका क्रिया कर्म किया। फिर आप राजा होकर चतुरङ्गिणी सेना से सदा आनन्द करता रहा। पर उसके कोई सन्तान न हुई, इससे वह अति दुःखी हुआ। उसने सोचा कि पुत्र दोनों लोक में आनन्द देता है, स्वर्ग में पहुँचाता है, गृहस्थाश्रम का अलंकार उसी से है और अपने कुल के लिये सूर्य के सदृश है। जो संसार का अग्नि में जल गये हैं, उनके लिये अमृतव्रत् है और जो दुःख-सागर में डूब गये हैं, उनके लिये नाव है। उसके बिना और किसी उपाय से गोत्र नहीं चलता। उसका संसारी सुख दुःख में बदल गया। इस दुःख से उसको सर्व पदार्थ अशुभ और व्यर्थ भासने लगे। उसकी कनककन्दला नामी स्त्री पतिव्रता, भर्ता की प्यारी, शिवभक्ता, दृढ़ बुद्धि और धर्म में अतिदृढ़ थी। उसको पूर्णभद्र ने अपने समीप बुलाया और उससे कहा कि मुझे बड़ा दुःख उपजा है। संसार की सामग्री सब मेरे घर में उपस्थित है पर मुझको कुछ भला नहीं भासता। मैं क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, मेरे दुःख का दूर करनेवाला कौन है ? सन्तान बिन प्राण जीवन धन पद पर धिक्कार है, वरन् सहस्रों धिक्कार है। यह कहकर वह रोने लगा। स्त्री ने ठंडी श्वास खींच कर कहा कि तुम ऐसे बुद्धिमान् होकर क्यों व्यर्थ दुःख करते हो। इसका उपाय मैं बताती हूँ। उपाय करनेवाले को लोक में कोई वस्तु अप्राप्त नहीं जिनका मन शिवजी के प्रेम में मग्न है, उनके सब मनोरथ पूरे होते हैं। तुम शिवजी के शरण में जाओ क्योंकि उनकी सेवा से सब कुछ मिल सकता है। वे सन्तान, धन, घर, घोड़े, हाथी, स्त्री सुख, आनन्द और कुल, भक्ति, मुक्ति सब दे सकते हैं। जो शिवजी के भक्त हैं, उनको सब कुछ मिलता है। विष्णु ने भी शिवजी की भक्ति करके पालना करने की पदवी प्राप्त की है। शिवजी की कृपा से इन्द्रादिक दिक्पति शिलाद मुनि अपने पुत्रों सहित जिनका नाम मृत्युञ्जय नन्दीश्वर प्रसिद्ध है और श्वेत-केतु उपमुनि अन्धक दैत्य जो भृङ्गी करके विख्यात हैं और दधीचि मुनि, ब्रह्मा, शुक्र, विश्वामित्र अर्थात् कौशिक, बाणासुर, गौतम, बृहस्पति आदि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब शिवजी की भक्ति करके कैसे-कैसे पद पर पहुँचे हैं। अर्थात् शिलादि मुनि के पुत्र मृत्युञ्जय भृङ्गी के नाम से प्रसिद्ध होकर शिवजी के गणों में गिने गये। श्वेतकेतु कालफाँस में पड़कर भी प्राण से बचा। उपमुनि ने शिवजी को सेवा से क्षीरसमुद्र पाया। दधीचि मुनि ने सब देवताओं को परास्त किया। ब्रह्माजी ने शिवजी की सेवा से यह पद पाया है। शुक्र ने संजीविनी मन्त्र शिवजी से पाया। विश्वामित्र ने शिवजी की सेवा से दूसरी सृष्टि बनाई। गौतम ने शिवजी की सेवाकर अपने पाप छुड़ाये। बृहस्पति ने काशी में शिवजी की पूजा की तो सब देवताओं के गुरु हो गये। शिवजी वेग ही प्रसन्न होकर वर देनेवाले हैं, यह बात वेद पुराण कहते हैं। तुम निश्चय करके शिवजी की शरण जाओ। यह सुन पूर्णभद्र आनन्द में मग्न हो काशी में गये और शिवजी के समीप पहुँच उनको भलीभाँति गाना सुनाया क्योंकि ये नादविद्या में अतिचतुर थे। उसने इक्कीस मूर्च्छना, पाँचसौ इक्यावन तीन और बारह श्रुतिभेद जिनकी बहुत-सी शाखा हैं, शिवजी को सब सुनाई। ऐसा अच्छा गाना यक्षपति का सुनकर शिवजी प्रसन्न हो बोले कि वरदान माँगो। पूर्णभद्र ने स्तुति की और चरणों पर ध्यान लगा चुप रहे।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पूर्णभद्र की स्तुति सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये फिर कहा कि वर माँगो। पूर्णभद्र ने विनय की कि मुझे सन्तान कृपा करो। शिवजी अङ्गीकार कर अन्तर्धान हो गये। पूर्णभद्र फिर प्रसन्न होकर घर आया और अपनी स्त्री से वर पाने का हाल कह सुनाया। कुछ दिनों के उपरान्त पूर्णभद्र की स्त्री गर्भवती हुई। समय पाकर पुत्र उपजा जिससे उनको अति प्रसन्नता हुई। उसका नाम हरिकेश हुआ। जब वह बालक आठ वर्ष का हुआ तो उसने शिवजी में बहुत प्रेम बढ़ाया। जब वह बालक लड़कों में खेलता तो मिट्टी का शिव लिङ्ग बनाकर उत्तमोत्तम पुष्प मँगाकर पूजन करता, लड़कों से उस शिवलिङ्ग की पूजा कराता और शिव-शिव आप कहता था तथा दूसरों से भी कहलाता। निदान शिवचरित्र के सिवाय उसके कान और बातों में ध्यान न देते, यही चर्चा रखता। उसकी आँखों ने सिवाय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी के और कुछ न देखा और सिवाय शिवजी के चरणों के जो कमलवत् हैं, किसी का ध्यान न किया। उनकी नाक ने और कोई सुगन्ध न सूँघी। उसकी जिह्वा ने शिवनाम के स्वाद के सिवाय और कोई स्वाद न चक्खा। उसकी त्वचा ने सिवाय सदाशिव को और किसी से स्पर्श न किया। न उसके वाक्य ने शिवजी के विशेष कोई वचन स्वप्न में भी वर्णन किया। हाथ शिवजी की पूजा में और पाँव कैलासपति के क्षेत्रों में प्रवृत्त रहे। निदान रात्रि-दिवस उसको हर बात में शिवजी से काम था। वह हर अवस्था में शिवजी को देखता और सदा भस्म रमाये रुद्राक्ष के सर्वाङ्ग वस्त्र बनाये शिव-शिव कहते हुये अहर्निश बिताता। पूर्णभद्र ने यह दशा अपने पुत्र की देख कहा कि हे पुत्र ! तुम हमारे बड़े शिवजी के कठिन तप से उपजे हो। तुमको उचित है कि गृहस्थधर्म धारण करो। तपस्वियों के मार्ग को छोड़ो। हमारे घर में सब प्रकार का धन द्रव्य उपस्थित है। तुम राजनीति को देखो। यह मार्ग जो तुमने अङ्गीकार किया है, दरिद्रियों का हैं। बाल्यावस्था में विद्याध्ययन और युवावस्था को भोगविलास में बिताकर तीसरी अवस्था तप में व्यय करो। हमारे कुल का यही प्रचार है। निदान हरिकेश अपने पिता से विकल्पित होकर घर से भाग गया। जब नगर के बाहर गया तो उसे दिशाभ्रम हो गया और अतिचिन्ता से पश्चात्ताप करने लगा। कहा कि मैं तो बालकपन से घर में रहा। अब कहाँ मारा-मारा फिरूँ। मुझको कुछ नहीं सूझता। यह दुःख मुझे पिछले जन्म के पापों से मिला। हाँ, एक समय मैंने अपने पिता के पास शैवलोगों से सुना था कि जिनको माता-पिता छोड़ दें, कुल के लोग त्याग दें, जिसका कोई सहायक न हो, पापी, अधर्मी, दरिद्री, चिन्तित, भयभीत, जिनको कहीं शरण न मिले, जिनके पास कुछ नहीं है, जिनको यह कुछ न सूझ पड़े और जो संसार में सब तरह से अनाथ हो, ऐसे मनुष्य के सहायक शिव और काशी हैं। इस बात को मन में विचारकर प्रसन्न हुआ और विदेशियों से काशीमार्ग पूछकर वहाँ पहुँच कर बड़ा आनन्द पाया। उसने मणिकर्णिका में जाकर स्नान किया। फिर विश्वेश्वर महादेव की पूजा कर आनन्दवन को गया और दृढ़तापूर्वक कठिन तप करने लगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निदान जो वर शिवजी ने उसको दिया, वह हम पहले कह चुके हैं। हरिकेश ने अपने कुल को तार दिया। वास्तव में शिव के भक्तों की ऐसा ही महिमा हैं। उसके माता-पिता काशीवासी हो गये। शिव के भक्त अकेले मुक्त नहीं होते, वरन् कुल भर को मुक्त करते हैं। यह चरित्र दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! इसी तरह शिव काशी में राज्य करते थे कि एक महाबलवान् दुर्गनामी दैत्य देवताओं को दुःख देने लगा जिससे धर्म नष्ट हो गया। उसका वर था कि तीनों लोक में पुरुष के हाथ से न मरेगा। इस वर के बल से उसने तीनों लोक को जीत लिया और पृथ्वी पर आकर ठहरा। उस समय विष्णु और हम सब देवता मुनियों समेत शिवजी की शरण गये। यह सम्पूर्ण वृत्तान्त सुन शिवजी ने गिरिजा से कहा कि तुम इस शत्रु को वध करो। यह आज्ञा पाकर गिरिजा ने विन्ध्यवासिनी होकर सदाशिवजी के ध्यान के उपरान्त दुर्ग दैत्य को मार डाला। तब से गिरिजा का नाम दुर्गा प्रकट हुआ और देवता आदि को बड़ा आनन्द मिला। फिर देवता दुर्गा की स्तुति करने के उपरान्त अपने-अपने लोक को चले गये। इसी प्रकार बहुत दिनों तक शिवजी ने काशी में राज्य किया। जब राजा दिवोदास ने कष्ट दिया तो शिवजी ने काशी को छोड़ा और मन्दराचल में जाकर बड़े उपाय से राजधानी पाई। इतना सुन नारदजी आश्चर्यकर ब्रह्माजी से कहने लगे कि वह दिवोदास कौन है जिसने शिवजी से काशी छुड़ाई? फिर शिवजी ने किस उपाय से काशी को पाया? ब्रह्माजी ने विस्तार से यह कथा इस प्रकार सुनाई कि इससे पहिले पद्मकल्प स्वायम्भुव मन्वन्तर में मनु के कुल में एक राजा रिपुंजय उपजा जो अपने नाम के समान क्षात्रधर्म में अति दृढ़, ब्रह्मभक्त और शिवपूजक था। उसने राज्य छोड़ काशी में बड़ा तप किया। इससे संसार में बड़ा काल उठा जिससे मनुष्यों को बड़ा दुःख मिला। कितने मर गये और कितने महादुःख में पड़े। इसी से लोग अपना घर छोड़ पर्वतों की कन्दराओं में चले गये। जब देश राजाहीन हो गया, तब चोरी होने लगीं। मांसविक्रय मानों एक व्यव-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हार हो गया। धर्मभ्रष्ट हुआ। सब बातें धर्म के विरुद्ध हुईं। यज्ञादि कर्म नष्ट हो गये। कोई प्रसन्न न रहा। देवता आदि ने जाकर हमसे रोकर कहा कि आप कुछ उपाय करें। हमने शिवजी का ध्यान करके दुःख का हाल जान लिया और काशी में जाकर जयशब्द किया। जहाँ वह तप करता था, वहाँ गये और उससे बहुत समझाकर कहा कि तुम फिर राज्य करो। तुम्हारे राज्य करने से वर्षा होगी जिससे प्रजा इस दुःख से मुक्त होगी। तुमको वासुकि अपनी कन्या देंगे। उसका नाम अनङ्गमोहिनी है। वह पातिव्रत धर्म में अतिदृढ़ है। उससे तुमको बड़ा आनन्द मिलेगा। राजा ने उत्तर दिया कि तुम्हारी आज्ञा मैं भङ्ग नहीं कर सकता। पर मैं इस बात पर राज्य करता हूँ कि देवता आकाश में स्थित हों और नागादि पाताल में रहकर फिर पृथ्वी पर न आवें। हे नारद! हमने अहंकारपूर्वक इसको मान लिया। मुझको शिवमाया ने मोह लिया जिससे तीनों देवता और इन्द्रादि सबने पृथ्वी छोड़ी। इतने में हम शिवजी के समीप गये। शिवजी ने कहा कि किस देश का राजा मन्दरगिरि पर तप कर रहा है। हम उसको वर देने जाते हैं, तुम भी साथ चलो। निदान उसके पास पहुँचकर शिवजी ने कहा कि वर माँगो। मन्दरगिरि ने कहा कि मैं काशी के बराबर हुआ चाहता हूँ। आप मेरे ऊपर स्थित हों। मेरी यही इच्छा है कि आप गिरिजा और गणों समेत कुशद्वीप को चलें। यह सुनकर शिवजी आश्चर्य में हो चिन्तित हुये। हमने कहा कि हे शिवजी! हमने आपकी माया में भूलकर रिपुंजय को वरदान दे दिया है कि देवता धरती पर न रहेंगे। आप मन्दरगिरि की विनय को मानें। मेरे वचन को सुन शिवजी अपना लिङ्ग काशी में स्थित करके गणों समेत मन्दरगिरि को गये। इस बात को किसी ने न जाना। हे नारद! उस समय भी शिवजी लिङ्गरूप होकर काशी में स्थित रहे, काशी को न छोड़ा। उस लिङ्ग का नाम अविमुक्त हुआ जो आनन्दवन अर्थात् काशी में वर्तमान है। उस लिङ्ग के नाम लेने से सर्वकार्य पूर्ण होते हैं। पहिले हमने भी उस लिङ्ग का हाल नहीं जाना। जब शिवजी अपने अविमुक्तस्थान को छोड़कर मन्दरगिरि को गये और विष्णुजी भी अपना धाम त्यागकर मन्दरगिरि पर सुशोभित हुये तो सूर्य, गिरिजा, गणपति, देवता, मुनि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आदि सब अपने-अपने तीर्थ छोड़ वहीं जा रहे। शेष पाताल लोक को चले गये। सबके मनों में बड़ा दुःख उपजा। जब हम सब चले गये तो रिपुंजय राज्य करने लगा। उसने अपनी राजधानी काशी नियत की और अपनी विद्या और बल से देवताओं की ऐसी रीतें प्रचलित कीं कि कोई मनुष्य उसके राज्य में कुकर्म नहीं करता था। देवताओं ने यथाशक्ति रिपुंजय के राज्य में कुकर्म देखने के बहुत उपाय किये पर कोई कुकर्म न देखा। तब तो देवताओं ने अपने गुरु बृहस्पति के समीप जाकर स्तुति करने के अनन्तर कहा कि आप ऐसी युक्ति बतावें जिससे रिपुंजय को कोई पाप लग जावे और वह राज्य से निराश रहकर प्रतापहीन हो जावे। हम लोग अपने-अपने पुराने घरों को पावें। पहिले तो वेद कहते हैं कि पृथ्वी पर रहना दुर्लभ है। जो वहाँ का वास भी मिला तो परमपद मिलने में क्या सन्देह है। मुख्य करके काशी में जहाँ आप सदाशिवजी विराजमान हैं कि मरने में मुक्ति प्राप्त होती है। जिसने काशी को छोड़ा वह मानो सर्वप्रकार से बिगड़ा। मुक्ति उससे निराश हो गई। काशीजी के चाण्डाल भी अन्य स्थान के राजाओं से भले हैं क्योंकि अन्य स्थान में आवागमन और मृत्यु का भय रहता है। काशीजी में यह भय कहाँ है? ऐसे वचन देवताओं के सुनकर बृहस्पति बोले कि धर्म छोड़े बिना राज्य नहीं मिलता और धर्मत्याग बिन वहाँ का पाना कठिन है। सो राजा रिपुंजय धर्मवान् है पर तुम कुछ संशय मत करो। उपाय करो जिससे रिपुंजय का धर्म नष्ट हो जावे। जाना जाता है कि राजा रिपुंजय अज्ञानी हो गया है कि तुम सबको दुःख देता है। वह अवश्य ही नाश को प्राप्त होगा क्योंकि देवताओं से शत्रुता करके कौन प्रसन्न रहा है। जब कि नल, दधीचि शंख, ययाति, रावण और बाणासुर आदि बहुत से देवता अपने धर्म को छोड़कर सुखी नहीं हुये हैं तो मनुष्य क्या वस्तु है? तुम तेज को बुलाकर कहो कि वह पृथ्वी से अपना अंश खींच ले। अग्नि बिन पृथ्वी पर कोई कार्य न होगा। रिपुंजय का राज्य अपने आप नष्ट हो जावेगा। यह उपाय बृहस्पति से सुनकर सब देवता हँस पड़े और इन्द्र ने तुरन्त अग्नि को बुलाकर सब हाल कहा। अग्नि ने तुरन्त आज्ञा पालन की, अर्थात्

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसने इन्द्र की आज्ञा से तीनों प्रकार की अग्नि अर्थात् प्रत्यक्ष, जलगत, जठरगत को पृथ्वी से अन्तर्धान कर लिया। उसके गुप्त होने से धरती के रहने वाले महादुःखी हो गये और सब इकट्ठे होकर रिपुंजय के समीप गये। जब रिपुंजय ने इस बात को सुना तो उसको निश्चय हुआ कि यह देवताओं ने मेरे साथ शत्रुता की है। वह कुछ चिन्तित न हुआ और अपनी प्रजा से कहा कि तुम कुछ शङ्का न करो। मैं अपने बल से तुम पर कोई दुःख न आने दूँगा। यह कहकर प्रजा को विदा किया। फिर अपने मन में विचारने लगा कि देवताओं ने आज अग्नि को बुला लिया है, कल के दिन और किसी को बुलावेंगे। इससे मुझको उचित है कि मैं देवताओं की सहायता न लेकर अपने ही प्रताप से राज्य करूँ। यह सोच-कर उसने सब देवताओं को जो उसके यहाँ रहा करते थे, बिदा कर दिया और फिर उसने तीनों प्रकार की अग्नि आप होकर सब प्रजा का भय दूर किया। आप ही पवन, जल और आप ही चन्द्रमा होकर प्रकाश करने लगा। निदान जिस वस्तु से प्रजा का उपकार होता था, उसने वही शरीर धारण किया। यह देखकर सब देवता लज्जा में डूब गये। उनके उपाय ने कुछ काम न किया।

छठवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद बोले कि हे पिता! पूर्व में कोई ऐसा राजा दिवोदास अर्थात् रिपुंजय के समान नहीं हुआ जिस पर देवताओं की युक्ति ने भी फल न किया हो। सो हे ब्रह्मन्! मुझे इच्छा है कि ऐसे प्रतापी राजा का वृत्तान्त विस्तार से सुनूँ कि जिसने अपनी प्रजा को दुःखी न होने दिया। फिर देवताओं ने लज्जित होकर और कोई युक्ति सोची या बैठ रहे। शिवजी काशी छोड़ मन्दराचल पर्वत पर स्थित हुये। वहाँ उन्होंने क्या क्या चरित्र किये? फिर उन्होंने क्योंकर काशी को पाया? ब्रह्माजी बोले धन्य हो। हे नारद! तुम सदैव शिव कथामृत पीने के प्यासे रहते हो। तुम सब बातें केवल शिवजी का चरित्र और लीला जानो जिसके अधीन संसार भर हैं। ऐसा संसार में कौन है जो शिवजी को कुछ दुःख दे सके। अब हम सम्पूर्ण कथा कहते हैं। दिवोदास शिवजी का बड़ा भक्त था। उसने जब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देखा कि काशी को शिवजी प्राण के समान समझते हैं। तो उसने भी काशी की बड़ाई जानकर काशी में रहना अङ्गीकार किया। उससे देवताओं की कुछ न चली क्योंकि यह काशी में अतिनम्रता से रहा करता था। उसने राज्य उत्पातरहित किया। किसी को कुछ दुःख न होता था। युद्ध में सिंहवत् था। यद्यपि उसको राज्य की सर्व सामग्री प्राप्त थी, देवता भी उसकी आज्ञापालन करते थे, गन्धर्व विद्याधरों से उसकी सभा भरी रहती थी और धन द्रव्य की कुछ गिनती न थी, पर तो भी वह धर्म के मार्ग बिन अन्य कुकर्म में न चला। सर्व प्रकार की कुचाल छोड़ अपना राज्य करता रहा। उस दिवोदास ने सूर्य होकर शत्रुओं को जलाया। चन्द्रमा होकर मित्रों को आनन्द दिया और जो धनुष को युद्धस्थान में उठा कर विजय पाता रहा, इससे उसको लोग इन्द्र कहने लगे। वह अग्निरूप था, क्योंकि उसने अपने शत्रुओं के नगर को अपने तेज से जला दिया। धर्म-अधर्म में विवेक करके दण्ड देने के कारण धर्मराज जाना गया। वह अपराधियों को दण्ड देता, धर्मात्माओं और भले मनुष्यों को आनन्द कृपा करता और उसने अपने शत्रुओं के जीतने से वरुण की, वायु के समान चलने से पवन की और दरिद्रियों को धन देने से कुबेर की समानता प्राप्त की। सबके पालन और शत्रुओं के जीतने से शिवजी का पद पाया। तप और योग के कारण विष्णु के समान था। सबको भाग्यफल देने से ग्रह-उपग्रह से अधिक था। उसके समान कौन कलावान् था जिसने सर्व कलावानों को अपनी कला सिखाने से तृप्त कर दिया। रूप में अश्विनीकुमार से भी अधिक अनूप था। गानविद्या में विद्याधरों को भी जीत लिया। गन्धर्वों को शिवजी के प्रसन्न करने के समय अपने गाने से अहंकार रहित कर दिया। इसी प्रकार उसने अपने गुणों और कलाओं से परिपूर्ण देवताओं के समान होकर राज्य किया। यक्षों को नाना प्रकार के अधिकार सौंपे। नागों को भी नाना प्रकार के पद प्राप्त हुये। गुह्यक छिप रहे और उन्होंने दिवोदास की सेवा में दृढ़ रहकर दैत्यों के स्वभाव का त्याग किया। उसके प्रताप से इन्द्र ने ऐरावत हस्ती और सूर्य ने उच्चैःश्रवा घोड़ा दे दिया। उसके वीर सबसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अजित हुये जिनके सम्मुख देवताओं का धैर्य भी जाता रहा। उसने बड़े धर्म से राज्य किया। वरन् आकाश के राज्य से पृथ्वी के राज्य की इतनी बड़ाई थी कि आकाश में केवल एक ही चन्द्रमा है, उसके यहाँ धरती पर असंख्य चन्द्रमाओं का घर था। आकाश पर केवल एक कामदेव अनङ्ग था, धरती पर सर्व मनुष्य पूर्णकाम के भरे थे। आकाश पर इन्द्र पर्वतों के पङ्ख काटनेवाले हैं, पर धरती पर एक यही गोत्र अर्थात् अपने कुल का मारने वाला हुआ। आकाश पर चन्द्रमा पन्द्रह-पन्द्रह दिन के पीछे घटता है पर धरती पर कोई ऐसा क्षीण होनेवाला न था। आकाश पर तो केवल एक प्रकार के नवग्रह प्रसिद्ध हैं, पर पृथ्वी पर सब ग्रह नवग्रहों से सुशोभित थे। आकाश पर केवल एक सुवर्णगर्भ अर्थात् ब्रह्मा हैं, धरती पर सर्वमन्दिर सुवर्ण से अलंकृत थे। आकाश पर हंसादि केवल सात घोड़े प्रसिद्ध हैं धरती पर असंख्य जाति के घोड़े थे। जिस तरह आकाश अप्सराओं से अलंकृत है, उसी तरह रिपुञ्जय का नगर अर्थात् काशी भी अप्सराओं से खाली न था। स्वर्ग में केवल पद्मा अर्थात् लक्ष्मीजी अकेली हैं, पृथ्वी में पद्माकर अर्थात् सम्पूर्ण कमल की खानि वर्तमान थी। आकाश पर धनदायक केवल एक ही कुबेर हैं धरती में घर-घर असंख्य धनद उपस्थित हैं। इसी प्रकार राजा, प्रजा और नगर कोई धर्मशास्त्र के विरुद्ध न चलता। उसके राज्य में कोई मनुष्य अपनी स्त्री के सिवाय दूसरी स्त्री से भोगविलास में प्रवृत्त न हुआ। स्त्रियाँ भी पातिव्रत धर्म में लगी थीं और कोई मनुष्य उसके नगर में धन-हीन, हिंसक, अधर्मी, निर्लज्ज, चुगुली खानेवाला, दुश्शील और असत्य-वादी न था। उसके नगर में मूर्ख ब्राह्मण, क्षत्रिय वीरता रहित, वैश्य व्यापार रहित और शूद्र सेवाहीन न था। चारों आश्रम अपने-अपने धर्म में दृढ़ थे। शेष अन्य जातें अपनी पुरानी चालों में प्रवृत्त थीं। न कोई अनाचारी, दुष्ट, शत्रु, कृपण, छली, पतिहीन स्त्री उसके राज्य में थी। चारों ओर वेदाध्ययन और शास्त्र अभ्यास होते थे। उपाय बिन मद्यपान और यज्ञ बिन मांस का प्रचार न था। बालक माता-पिता की सेवा करते, छोटे भाई अपने बड़े भाइयों की सेवा छल रहित करते, नौकर-चाकर अपने स्वामी की सेवा धर्मपूर्वक करते चाहे स्वामी पर आपदा भी पड़े। दण्ड के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शब्द को संन्यासी के सिवाय और किसी के पास न सुना। वहाँ धनवानों से तपस्वी का पद बड़ा था। उससे योगी की वरन् मुख्य करके ब्रह्मज्ञानी की पदवी श्रेष्ठ थी और उससे भी बढ़कर शिव के योगी को मानते थे। स्थान-स्थान पर ब्रह्मभोज होते। ब्राह्मणों की सेवा को राजा से लेकर प्रजा तक प्रिय जानते। चारों ओर कुवाँ, बावली, तालाब, पग-पग पर फुलवाड़ियाँ और उद्यान उपस्थित थे जिनके बनानेवाले मन का मनोरथ पाते। सब मनुष्य तीर्थ, व्रत, दान और देवाराधन में प्रवृत्त रहते। किसी को किसी से कुछ न दुःख न था। ब्रह्मभक्ति के सिवाय और कोई कार्य न था। सर्व स्त्री पुरुष केवल वेद की आज्ञा पर चलते और अपनी प्राचीन रीति को कुछ भी न छोड़ते। वे सब धनवान् और हृष्ट-पुष्ट होने पर भी कुकर्मों से बचे रहते। प्रतिदिन शिव की भक्ति में मग्न रहते। किसी को द्रव्य, पुत्र, वस्त्र और भूषण आदि का दुःख न था। वरन् सब स्त्री पुरुष मानों रत्न और भूषणों की खानि थे। सबसे अधिक द्रव्यवान् दिवोदास राजा था। क्योंकि जिसके राज्य में किसी को कुछ दुःख न हुआ, उससे अधिक कौन धनवान् है। क्योंकि उसने अपनी प्रजा को अपने पुत्र के समान पाला। उसके रक्षक शिवजी थे उसको कोई वस्तु दुर्लभ न थी। हे नारद! सत्य है जिसके सहायक शिवजी हों, उसको किस तरह दुःख पहुँचे। जिसके मन में रात-दिन सदा शिव रहते हैं, उसको आनन्द के सिवाय दुःख नहीं हो सकता। उसके राज्य में देवताओं ने ढूँढ़ने पर भी कोई दोष न पाया और देवताओं ने युक्तियों के करने पर भी सिद्धि न पाई। दिवोदास राजनीति और धर्म में बड़ा ज्ञानी और मित्र था। वह तीनों शक्ति और षट्गुणों को धारण करके चारों उपायों को अच्छी तरह से जानता जिनके कारण उसकी दुर्दशा नहीं होती थी। निदान जब देवता सब उपाय करके थक गये और राजा की हानि न हुई तब इन्द्र ने देवताओं समेत हमारी शरण में आकर स्तुति कर अपना दुःख वर्णन किया और कहा कि जिस तरह से राजा दिवोदास को कोई पाप लग जावे, वह पृथ्वी के राज्य से दीन-हीन हो जावें और हमको फिर पृथ्वी मिले, वह उपाय कीजिये। जब तक यह न होगा, हमारे दुःख दूर न होंगे स्वर्ग से अधिक पृथ्वी का, उससे अधिक तीर्थ का पद है। पृथ्वी में सर्वोपरि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काशीक्षेत्र है। हमने सोचकर उत्तर दिया कि दिवोदास बड़ा धर्मात्मा है। हमने अपने प्रयोजन से उसको राजा बनाया था। वह देवताओं को दुःख देकर तप के कारण बचा रहता है। उसको दुःख नहीं होता पर जो दुःख तुमको है, वही कष्ट मुझे भी है। क्योंकि हमको प्रयाग बहुत प्रिय था पर अब मुझको प्रयाग में रहना कठिन हो गया। प्रयाग बिन मुझे क्या आनन्द है, कुछ सुख नहीं। यह कह देवताओं को अपने साथ ले विष्णु के समीप गये और स्तुति करने के उपरान्त विनय की कि ऐसा कुछ उपाय कीजिये, जिसमें हमारे देवताओं को आनन्द प्राप्त हो। दिवोदास राज्यहीन हो जावे। विष्णु ने अति खेद से कहा कि हे ब्रह्मा! मुझको बड़ा दुःख है। मैं चाहता हूँ कि दिवोदास धरती से निकाला जावे, पर वह बड़ा धर्मवान् है। काशी के पालन करने के कारण शिवजी भी उसको चाहते हैं। मुझे वृन्दावन प्राणवत् प्रिय था। वह मुझसे छूट गया। हमारा कुछ बल नहीं है। यद्यपि हमारी इच्छा है और शिवजी भी काशी के न मिलने से बहुत दुःखी हैं। अपना दुःख सदा कहा करते हैं। बिन अपराध शिवजी भी उसके राज्य में कोई विघ्न नहीं डाल सकते। जो देवता आदि की कुछ युक्ति नहीं चलती, इसका कारण है कि काशी मुख्य शिवजी का स्वरूप है। जैसा कि परमशैव अर्थात् विश्वनाथ ने भी इस बात को कहा था। ऐसे काशी में दिवोदास धर्म के साथ रहता है। उसके राज्य के नाश होने का क्या कारण है? पर हाँ, जो सदाशिवजी कृपा करें तो सम्भव है कि हम सबके कार्य पूर्ण होवें। हम सब उनके समीप चलें और अपना दुःख वर्णन करके उनकी सेवा करें। निश्चय है कि शिवजी प्रसन्न हों क्योंकि काशी उनको अतिप्रिय है। यह सम्मति कर विष्णु और हम देवताओं समेत शिवजी के पास गये और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति की।

सातवाँ अध्याय।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने स्तुति सुनकर कहा कि तुम सब मिलकर कहाँ आये हो? हे विष्णु, ब्रह्मा और देवताओ! अपना दुःख वर्णन करो। तुमने क्या दुःख पाया? सबने शोच विचार उत्तर दिया कि हे महाराज! दिवोदास दृढ़ धर्म धारणकर पाप छोड़ पृथ्वी का राज्य कर रहा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है, जहाँ नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त है। यद्यपि वह ब्रह्मभक्त है पर हठ से उसने किसी देवता और नाग आदि को पृथ्वी में नहीं रहने दिया। यद्यपि दिवोदास देवताओं की सेवा में लगा रहता है पर तीर्थ बिन हमको आनन्द नहीं। इसके सिवाय सबको काशी अतिप्रिय है। आपको भी प्राण के समान प्यारी है। वह काशी निर्वाणपद सबको देती है। इससे उचित है कि आप कोई उपाय इसके निकालने का करें। दिवोदास के राज्य छोड़ने पर हम सब राज्य पावें। काशी को देखकर मन प्रसन्न करें। शिवजी ने कहा कि दिवोदास ने हमारी बड़ी सेवा की है। काशी जो हमारे दूसरे शरीर के समान है, उसके रक्षक को दुःख नहीं मिल सकता। यह कहकर शिवजी चुप हो गये और काशी के प्रेम में मग्न होकर अपने शरीर को न सम्हाल सके। आँखों से आँसू बहने लगे। कुछ देर के पीछे वे चेत में आये और काशी की स्तुति करने लगे कि हे आनन्द देनेवाली काशी! अपनी अप्रसन्नता दूर करके मुझको कब मिलेगी? तेरे वियोग की अग्नि मुझको जलाती रहती है। अमृत भी दुःख देता है। जो तू हमको न मिली तो निश्चय जानना कि हमारा जीना कठिन है। ऐसे-ऐसे अधीन वचन कहकर शिवजी मूर्च्छित हो गये। गिरिजा ने कहा हे शिव! तुम तो सबके स्वामी हो। संयोग-वियोग सब तुम्हारे हाथ है। तुम तो तीनों लोक के राजा हो। तुम्हारी कोप की दृष्टि से प्रलय होती है। इसी प्रकार बहुत स्तुतिकर कहा कि वेग ही काशी को सिधारो। तुमको कौन देवता, मुनि और मनुष्य रोक सकता है? तुम तो स्वाधीन हो। काशी क्यों छोड़ दी है? काशी तो सर्वोपरि है जिसके निवासी यमराज से नहीं डरते। मुझको काशी अतिप्रिय है। पापियों के लिये मोक्ष की जगह है। इससे आप वह उपाय करें कि फिर काशी मिले और मन को शीतलता प्राप्त हो। ऐसी बातें गिरिजा की सुनकर शिवजी प्रसन्न हो कहने लगे कि हे गिरिजा! तुम मुझे बहुत प्यारी हो पर काशी मुझको तुमसे दूनी प्यारी है। अब तुम्हारे अमृत के समान वचन पाकर मुझे कुछ-कुछ आनन्द मिलता है। पर तुमको मालूम है कि हम दिवोदास का आदर और मान करते रहते हैं। सिवाय इसके उसने ब्रह्मा से आज्ञा पाकर काशी का राज्य लिया है। क्योंकि उसने कहा था कि जो पृथ्वी में देवता आदि न रहें

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो हम राज्य अङ्गीकार करते हैं। इसी से हमको काशी छोड़नी पड़ी। दिवोदास मुझको बहुत प्रिय है क्योंकि वह हमारी पुरी की रक्षा करता है। वह बहुत ही धर्म में दृढ़, प्रजा के पालन में चतुर और हमारी सेवा में प्रवृत्त है। उसके राज्य को हम क्यों छीन लेवें? अपनी इच्छा को क्यों छोड़ें? क्योंकि संसार में जो धर्मवान् हैं, मैं उनका रक्षक हूँ। इसमें कुछ सन्देह नहीं। उनकी कुछ भी हानि नहीं होती। इस बात को तुम भलीभाँति जान लो, जो कोई हानि पहुँचाने की इच्छा रखता है तो उसको आपही दुःख पहुँचता है। हम निर्दोष किसी के हानि पहुँचाने में उद्योग नहीं करते। हमको कोई बात नहीं मिलती जिससे काशी को पावें। शिवजी इसी चिन्ता में थे कि काशी क्योंकर पावें कि अकस्मात् योगिनियों को अपने सम्मुख में देखा। उनको बुलवाकर बिठाया और बहुत आदर करके कहा कि तुम सब काशी को जावो। दिवोदास जो धर्मपूर्वक राज्य करता है, उसके धर्म में विघ्न करो कि वह काशी को छोड़ दे वही उपाय करो कि हम फिर काशी में सुशोभित होकर आनन्द उठावें। इसी प्रकार बहुत कुछ सिखा-पढ़ाकर भेजा और आप समय को देखते रहे। योगिनीगणों ने तुरन्त काशी में पहुँच अपना देवस्वरूप बदला और वहाँ स्थित हुईं। काशी को देखकर अतिप्रसन्न हुईं। फिर कई योगिनियाँ तपस्विनियों के समान हुईं और कई योगिनियों का स्वरूप धार बहुत रोने लगीं। कोई मालिनि, कोई नाइन, कोई दाई, कोई रोटी पकानेवाली, कोई बजानेवाली, कोई गानेवाली, कोई सामुद्रिक विद्या की जाननेवाली और पुत्र देनेवाली, कोई चित्रादि लिखनेवाली, कोई मूर्ति लिखनेवाली इसी प्रकार से बहुत रूप धारणकर घरों में आने-जाने लगीं। यद्यपि उन्होंने सर्व प्रकार की उत्तम युक्तियाँ कीं पर दिवोदास के नगर में कोई पापी न हुआ। तब सब इकट्ठी होकर परस्पर कहने लगीं कि हम मन्दराचल पर्वत में जाकर क्योंकर अपना मुख शिवजी को दिखलावें। सो चौंसठ योगिनियाँ मणिकर्णिका के आगे स्थित हुईं और शिवजी के समीप लज्जा से न जा सकीं। जो उनको प्रणाम करता है, उसको कोई दुःख नहीं पहुँचता।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! योगिनीगणों के न लौट जाने से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी को चिन्ता उपजी तो रवि से कहा कि तुम काशी में जाकर तुरन्त समाचार लावो कि योगिनीगणों के अधिक विलम्ब करने का क्या कारण है। हमको बड़ी चिन्ता है, तुम अपने उपाय से राजा दिवोदास का धर्म भ्रष्ट करो कि वह राज्य से हीन हो जावे। पर ध्यान रहे कि दिवोदास की कुछ प्रतिष्ठा जाने न पावे क्योंकि वह धर्मवान् है। अपनी बुद्धिमान से उसके धर्म को छुड़ा दो, फिर यहाँ चले आवो। तुम तीनों लोक में श्रेष्ठ हो, तुम्हारा नाम जगच्चक्षु है। तथाच सूर्य देवताओं का स्वरूप बदलकर काशी में पहुँचे और बहुत प्रकार के स्वरूप उन्होंने रचे, पर उनकी भी कोई युक्ति न चली। कहीं वह भिखारी, कहीं उदार, कहीं ज्योतिषी, कहीं पर दीन-मतिहीन, कहीं योगी-जटाधारी, कहीं नग्न, कहीं वेद के विरुद्ध धर्म करनेवाले और कहीं छली हुये। किसी स्थान पर उन्होंने इन्द्रजाल फैलाया, कहीं उन्होंने ब्रह्मज्ञान प्रकटाया, कहीं वह मीमांसक, कहीं विद्वान्, कहीं सर्वज्ञ, किसी स्थान पर ब्राह्मण, कहीं राजकुमार, कहीं नीच और कहीं उच्च इसी प्रकार उन्होंने असंख्य उपाय किये पर कुछ न चला, एक वर्ष बीत गया। निरुपाय हो उन्होंने अपनी निन्दा की और कहा कि मुझको धिक्कार है कि मैं कुछ न कर सका। मैं क्या करूँ, कुछ नहीं चलती जो शिवजी के पास जाता हूँ तो डरता हूँ कि जल न जाऊँ। तब ब्रह्मा और विष्णुजी की भी कुछ न चलेगी। इससे काशी में रहना ठीक है क्योंकि शिवजी की आज्ञा न मानने का पाप जो होगा, वह सब काशी में रहने से नष्ट हो जावेगा। काशी शिवजी का रूप है। उसका सेवन बड़ा धर्म है। बाकी सब अन्धे कुवें हैं। यद्यपि त्रिवर्ग अर्थात् अर्थ धर्म काम अङ्गीकार करना बहुत उत्तम है। पर धर्म का स्वीकार करना बहुत ही अच्छी बात है। यह तनु अवश्य ही नष्ट हो जावेगा। उचित है कि ऐसे शरीर को पाकर धर्म को प्रीति के साथ बचावे और काम बचाने के योग्य नहीं, क्योंकि विरुद्ध धर्मवालों को वैकुण्ठ नहीं मिल सकता। जो यह दोनों इस योग्य होते तो शिवजी इनको किस लिए जाकर भस्म कर डालते। कइयों का यह वचन है कि अर्थ रक्षा के योग्य है पर हम इस वचन को झूठ जानते हैं। क्योंकि हरिश्चन्द्र, कुश और ययाति ने धर्म के लिये अर्थ छोड़ दिया। दधीचि ब्राह्मण और मुख्य शिवि राजा ने अपने शरीर को नष्ट

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर धर्म पकड़ मोक्ष प्राप्त किया। इसके सिवाय राजा बलि, विरोचन और प्रह्लाद ने धर्म के लिये दुःख उठाये। सो काशी सेवन से कोई अधिक धर्म नहीं है वह हमारी रक्षा करेगी और शिवजी भी क्रोध न करेंगे। जो मनुष्य काशी पाकर फिर उसको प्रसन्नता से छोड़ते हैं, वे मानों रत्नों के बदले काँच लेते हैं। जो शिवजी को छोड़कर कोई काशी सेवन करता है तो भी शिवजी प्रसन्न होते हैं, क्रोध नहीं करते। सूर्य ने यही विचार कर अपने बारह शरीर धारे और अति प्रेम से काशी में स्थित हुये। उनके यह बारह नाम हुये जो आगे लिखे जाते हैं। वे सबकी कामना पूर्ण करते हैं। प्रथम सूर्य लोलार्कनामी अतिसंगम पर स्थित है। वह सब तीर्थों का शिरोमणि है। दूसरा उत्तरार्क जो भक्ति करने पर बहुत बड़ा फल देता है। वह उस स्थान पर है, जहाँ पहिले प्रियव्रत ने जो सबसे पहिले स्त्री हो, तप किया था। शिव और शिवरानी से वर पाकर गिरिजा की सखी हो गई। उस स्थान पर एक बकरी ने राजा की लड़की होकर मुक्ति पाई। तीसरा सूर्य आदित्यनामी शाम्बपुर में उपस्थित है, वहाँ शाम्ब का कुष्ठ दूर हुआ था। पाँचवाँ सूर्य मयूषादित्य जो शिव-गिरिजा की सेवा से शिव के दाहने नेत्र हुये। वह आठों वसुओं में भी एक वसु है। छठवाँ खखोलादित्य है, जब कद्रू विनता से विवाद हुआ, विनता हार कर कद्रू की लौंड़ी हुई, यह हाल सुनकर गरुड़ को बड़ा कष्ट हुआ। इसी से गरुड़जी अमृत लेने के निमित्त सुरपुर गये और देवताओं के जीतने के उपरान्त अमृत लेकर अपनी माता विनता के पास चले। गरुड़ कश्यप के पुत्र थे। मार्ग में विष्णु ने रोका जिससे बड़ा युद्ध हुआ। जब विष्णु गरुड़ को न जीत सके तो उन्होंने छल करके वर माँगा कि हमको भी अमृत दो और हमारे वाहन भी तुम्हीं हो जावो। गरुड़ ने मानकर अमृत दिया और विष्णु के वाहन हुये। विनता ने कनिकस्थान पर खखोलादित्य रवि नियत किया। उसी के तप से विनता की लज्जा दूर हुई। सातवाँ सूर्य अरुण आदित्यनाम है जिनको अरुण विनता के लड़के के नाम से प्रसिद्ध किया। वे महादेव के उत्तर ओर विराजमान हैं, जिनकी सेवा से सर्व कष्ट दूर होते हैं। आठवाँ सूर्य बृहदादित्य जिनकी अतिपवित्र महिमा है और जिनकी सेवा से हारीत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुनीश्वर जो अल्पायु थे, युवा हो गये। वे रोगों को दूर करके आनन्द और आरोग्यता देते हैं, वे बड़े बुद्धिमान् हैं। उनका स्थान विशालाक्षी देवी के दक्षिण ओर है। शिवजी को वृहदादित्य बहुत प्यारे हैं। नवाँ सूर्य केशवादित्य नामक है जिन्होंने विष्णु से उपदेश पाया। अर्थात् एक दिन सूर्य ने देखा कि विष्णुजी पादोदक तीर्थ पर शिवजी के लिङ्ग की पूजा कर रहे हैं। उसने तुरन्त उसी स्थान पर आकर विष्णुजी से पूछा कि तुम सबसे श्रेष्ठ हो। तुम किसकी पूजा करते हो ? विष्णुजी बोले कि शिवजी सबसे बड़े हैं। हम उन्हीं की पूजा करते हैं। तुम भी शिवजी के लिङ्ग की पूजा करो। यह सुनकर सूर्य हर दिन शिवलिङ्ग को पूजते हैं और उनको गुरु जानकर उसके ऊपर स्थित हुये। दशवाँ सूर्य विमलादित्य नामी जिनको हरिकेश ने वन में स्थापित किया था, प्रबाहु का पुत्र जो उच्चदेश में रहता था, भाग्यवश कुष्ठी हो गया। सो सब लड़के और घर छोड़कर काशी में आया और सूर्य की पूजाकर अच्छा हो गया। तब से वह मुख्य करके सुकुष्ठ के निवृत्त करने में प्रसिद्ध हैं। ग्यारहवाँ सूर्य कनकादिक नाम विश्वेश्वर के दक्षिण की ओर स्थित हैं। हर दिन गङ्गा की स्तुति करते हैं, इसीसे, उनका मुख गङ्गा की ओर है। बारहवाँ सूर्य यम आदित्य नामी उस स्थान पर है जहाँ यमराज ने कठिन तप किया था। उनके देखने से यमपुरी जाना नहीं पड़ता। वे यमराज के स्थान से पश्चिम की ओर और वीरेश्वर से पूर्व हैं। यमराज ने उनको स्थापित करके बड़ा तप किया था। उस स्थान पर आकर जो मनुष्य चतुर्दशी के दिन भरणी नक्षत्र में श्राद्ध करते हैं, उनको गया के समान फल होता है। हे नारद ! यह बारहों सूर्य जो काशी में स्थित हैं, हमने वर्णन किये। इनकी कथा के सुनने से रोग-दोष दूर हो जाते हैं। इनकी सेवा से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं। इनसे मनुष्य अखण्ड आनन्द पाता है। शिवजी अष्टमूर्ति करके संसार में प्रसिद्ध हैं। इससे बारहों सूर्य शिवजी के भक्त हैं। बारहों सूर्य के शिवजी वर देनेवाले हैं। वे मुख्य शिवजी के सेवक हैं। सिवाय इसके पाँचों देवता शिवजी के सेवक हैं। जिस तरह सब नदियाँ समुद्र में गिरती हैं, उसी प्रकार सब देवता शिवजी में लीन होते हैं। शिवजी सर्वरूप होकर काशी में अपनी पूजा कराते हैं। जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोई शिवभाव छोड़कर और की पूजा करे अर्थात् और देवता को भी शिवरूप न जानकर उस देवता के भाव से पूजन करे, वह महामूर्ख जड़ पशुवत् हैं, यह वेद कहते हैं। शिवजी सब में प्रकट हैं और वे निर्गुण ब्रह्म आनन्द देनेवाले हैं। यह सुनकर नारद अति प्रसन्न हुये। फिर ब्रह्मा से पूछा कि यह बारहों प्रकार के सूर्य काशी में अपना रूप धारण करके स्थित हुये तो उन्होंने क्या किया, वह सब वर्णन कीजिये।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जब सूर्य काशी में स्थित रहकर शिव के पास लौटकर न गये तब शिवजी अति विकल हुये और खेद से आँसू बहाने लगे। बोले कि काशी पाकर कब हमारा दाह मिटेगा। हाय, सूर्य भी लौटकर न आये। इसी प्रकार बहुत धीरे-धीरे रो-रोकर काशी को बहुत स्मरण किया और कहा जो काशी का समाचार लावे, उसको सब कुछ देने को उपस्थित हूँ, पर हाँ वेदज्ञ ब्रह्मा निस्संदेह वहाँ का वृत्तान्त ला सकते हैं। यह समझ मुझे बुलाया और अति आदर कर बैठाया। फिर यह कहा कि हमारे भाग्य फिर गये हैं, आगे जो हमने योगिनीगणों और सूर्य को भेजा था, वह लौटकर नहीं आये। नहीं जानते कि क्या कारण है। काशी का प्रेम मेरे मन में प्रिया के समान है जिसका स्मरण बना रहता है। हमको मन्दरगिरि पर प्रेम नहीं, जैसा कि मछलियों को ताल नहीं भासता, इस तरह विष भी दुःख नहीं देता। जिस तरह कि काशी का वियोग दुःख दे रहा है, यद्यपि चन्द्र भाल पर है पर काशी के वियोग का दाह नहीं मिटता। इसलिये हे ब्रह्मन्! हम तुम से एक इच्छा करते हैं कि तुम हमको प्राण के समान हो तुम काशी में जाकर हमारा कार्य पूरा करो, कुछ विलम्ब मत करो। मेरे दुःख का विचार करो। तुमको काशी की यात्रा का पुण्य प्राप्त होगा और हमारा दुःख दूर होगा। यह सुन हम हंस पर आरूढ़ हो काशी की ओर गये और अपने भाग्य की बड़ाई की। हमने दुर्बल ब्राह्मण बन काशी में प्रवेश किया और राजा दिवोदास को देखा। सो राजा तुरन्त उठ खड़ा हुआ और उसने हमको आदर सम्मानकर बैठाया। फिर आगमन का कारण पूछा। मैंने कहा कि मैं तो बहुत समय से यहाँ रहता हूँ। और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमको भलीभाँति जानता हूँ, पर तुम मुझको नहीं जानते। तुम्हारे बराबर संसार भर में कोई राजा नहीं है। तुम तो महीसुर देशपाल हो और तुम्हारी प्रजा, सन्तान, भाई, बन्धु आरोग्य और अच्छे हैं। तुम्हारे भय से देवताओं को शक्ति नहीं कि शुद्धमार्ग छोड़ अशुद्ध को स्वीकार करें, मनुष्य किस गणना में है। हम जिस कार्य को आये हैं, वह यह है कि मैं यज्ञ किया चाहता हूँ। मेरे पास शुद्ध धन और देवता आदि उपस्थित हैं। तुम्हारी राजधानी श्रीकाशी कर्मभूमि है और सर्वोपरि है। सिवाय शिवजी के और कोई संसार भर में काशी से उत्तम नहीं। जैसा कि वेद कहते हैं, धर्म छोड़ने से सब जगह बड़ा पाप होता है। पर काशी में शिवजी की कृपा से कुछ पाप का भय नहीं। काशी शिवजी का दूसरा शरीर है। वह मानों मोक्ष देने को मुक्तिरूप है। तुम जो शिव के प्रसन्न करने को काशी का पालन करते हो, यही कारण है कि किसी की युक्ति तुम पर नहीं चलती। सिवाय इसके एक और बात मैं तुमको बताता हूँ। सिवाय विश्वनाथ शिवजी के और कोई प्रणाम के योग्य नहीं जिनके प्रणाम करने से सबका मनोगत मिलता है। तुम और देवताओं के समान शिव को न जानना, वे सबसे श्रेष्ठ हैं। जैसा कि वेद कहते हैं विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, अग्नि और पवन आदि सब शिव की प्रसन्नता के निमित्त उपजे हैं। जो ब्राह्मण कुछ प्रतिफल राजाओं को दिया चाहते हैं, वे इसी प्रकार का उपदेश देते हैं। इससे हमने भी तुमको यह उपदेश दिया कि तुम्हारी इच्छा पूरी हो जावे। आप हमारे यज्ञ में सहायता दें। यह कह ब्राह्मण चुप हो गया। राजा ने उत्तर दिया कि तुम आनन्दपूर्वक यज्ञ करो। जो इच्छा हो, वह आप लेवें। मैं सर्व प्रकार से आपका सेवक हूँ। जो मेरे घर में है, वह निस्सन्देह आपका है। मेरी सब सामग्री और प्रताप सब औरों के निमित्त है क्योंकि वेद में प्रजा का पालन बड़ा धर्म कहा गया है और प्रजा के दुःखी होने से जो अग्नि उपजती है, वह बहुत ही तीक्ष्ण वज्र की अग्नि से भी अधिक फल रखती है। क्योंकि वज्र की अग्नि तो केवल थोड़े मनुष्यों को जलाती है और प्रजा के दुःख की अग्नि तो सबको भस्म कर डालती है। हे ब्राह्मण! हमारी यह रीति है कि मैं सर्व ब्राह्मण का दास हूँ जिनसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मेरे दुःख नष्ट हो जाते हैं। जब मुझको स्नान की इच्छा होती है तो मैं ब्राह्मणों का चरण धोकर उसी से अभिषेक करता हूँ। जो ब्रह्मभोज करता हूँ, उसको सौ यज्ञ से कम नहीं समझता। मेरी इच्छा अहर्निश यह रहा करती है कि मेरे घर कोई अतिथि आवे। मुझको अपने धर्म की सौगन्द है कि मेरी इच्छा पूरी हुई कि आप मेरे घर पधारे। आप यज्ञ करें, मैं सहायता दूँगा। यह बात सुनकर ब्राह्मण प्रसन्न होकर हरिसर में यज्ञ करने को गया और राजा की सहायता से दश अश्वमेध यज्ञ किये। वह स्थान दशाश्वमेध यज्ञ के नाम से प्रसिद्ध होकर तीर्थ हो गया। गङ्गा के निकट होने से वह स्थान और भी मुक्तिदायक हो गया। हम उसी स्थान पर शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित हो गये और राजा में कोई दोष न पाया। यद्यपि हमने बड़ी युक्ति की और काशी को सर्वगुणसम्पन्न पाकर हम भी शिवजी के पास लौटकर न गये। चाहे हमने शिवकी अवज्ञा की पर हमको कुछ संशय न उपजा। क्योंकि जो कोई काशी जी का सेवन करता है, उस पर शिव क्रोध नहीं करते। काशी निर्भयता और निष्कण्टकता का स्थान है। वहाँ शिवजी के भक्त निर्भय रहते हैं। बड़े-बड़े पापी काशी में रहकर अपने पापों का कुछ भी विचार नहीं करते। देखो, सूर्य ने क्या पाप करके काशी में शरण ली। शिवजी को काशी गिरिजा से अधिक प्रिय है। काशी मुख्य शिवजी की देह है। हर एक मनुष्य वहाँ जाकर दोषों से पवित्र हो जाता है। वहाँ यमराज से भी पापी नहीं डरते और वहाँ किसी देवता की आज्ञा नहीं चलती। जो आनन्द पापियों को काशीजी में है, वह वैकुंठ में भी नहीं। जो मनुष्य काशी में शिवलिङ्ग की स्थापना करे, वह अपने मन में किसी बड़े पाप को न डरे। यही जानकर हमने शिवजी का लिङ्ग अपने स्थान में स्थापित किया। उसका नाम ब्रह्मेश्वर महादेव है। वे सब मनोरथों के पूर्ण करनेवाले हैं। जो इस कथा को सुनता है, उसके सब दुःख दूर होते हैं।

दसवाँ अध्याय।

इतना सुनकर नारदजी ने पूछा कि हे ब्रह्मन्! जब आप काशीजी में स्थित हो गये तो फिर सदाशिवजी ने क्या किया? ब्रह्माजी प्रेमसागर में डूबकर और शोचकर बोले कि हे नारद! अपने भक्तों के निमित्त शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निर्गुण ब्रह्म मनुष्य के समान होकर लीला और चरित्र करते हैं। जब हमको आने में विलम्ब हुआ तो शिवजी बारम्बार चिन्तित होकर रोने लगे। उनकी जिह्वा से अक्षर नहीं निकलता था, नेत्रों से आँसू चलते थे। काशी के स्मरण में कहने लगे कि जिस तरह काशी मुक्ति देनेवाली है ऐसा कोई क्षेत्र संसार में नहीं। जिसको हम भेजते हैं, वही वहाँ रह जाता है। योगिनी जाकर वहाँ भोगिनी हो गई और ब्रह्माजी ऐसे बुद्धिमान् होकर निरुपाय हो वहीं रह गये। इसी प्रकार बहुत शोच कर जो बातें मनुष्यों की हैं, वह उन्होंने की। अर्थात् शिवजी ने अपने गणों को बुलाया। सो ३५ गण शिवजी के समीप आये। उनके यह नाम हैं शंकुकरण, महाकाल, घण्टाकरण, महोदर, सोमनन्द, नन्दसेन, कालपिङ्गल, कुकुट, कुकूट, मयूरबाण, गोकरण, तारक, तिलप्रण, सुरतदर्भ, चण्डकेश, बिन्दकछाग, कपर्दी, संगलाक्ष, वीरभद्र, किरात, चतुररत्न, निकुम्भ, तेजाक्ष, भारभूत, अक्षक्षेमक, लाङ्गल, सुखादि, दुःखादि, इत्यादि ३५ गण शिवजी को बहुत प्रिय हैं। शिवजी ने कहा कि तुम सब काशी में जाकर हमारा दुःख दूर करो। तुम सब बड़े कार्य करने में कुशल हो सो जिस तरह से कि हमको स्कन्द, गणपति, साख्य, विसाख्य, नैगमेयी, नन्दी, भृङ्गी प्रिय हैं, उसी प्रकार तुम भी मुझको प्रिय हो। तुमसे काल भी भयभीत रहता है। देखो, योगिनी, सूर्य और ब्रह्मा जो काशी में हमारी आज्ञा से गये, उनकी कुछ खबर नहीं मिली, हमको बड़ा दुःख है। हे शंकुकरण! तुम तुरन्त काशी में जाकर और वहाँ से लौटकर हमको प्रसन्न करो। सो दोनों गण तुरन्त चले जैसे कोई मनुष्य इन्द्रजाल की माया से गुप्त हो जावे। वे दोनों तुरन्त अन्तर्धान हो गये। जब कि काशी में पहुँचे तो उनके मन प्रफुल्लित हो गये जो चिन्ता मन में थी, दूर हो गई। वह भी शिवका लिङ्ग स्थापन कर स्थित हो गये और शिव के पास न लौट जाने से उनके ऊपर कुछ पाप न हुआ। हे नारद! वास्तव में काशी को जो किसी तरह से पाकर फिर छोड़ते हैं, उन्होंने वेद का अर्थ नहीं समझा। मानो मिली हुई मुक्ति उनके हाथ से जाती रही है। वे बड़े मूर्ख और शिवके विरुद्ध हैं। शिवने दोनों की ढील को समझ कर दो गण और भेजे। वह भी काशी में शिवलिङ्ग स्थापित कर स्थित हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गये। शिव के समीप लौट न गये। तब तो शिव को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने अपने शिर को हिलाया, मन में काशी की बड़ाई की और प्रशंसा करके कहा कि हे काशी! तुमको महामोहहारिणी कहते हैं परन्तु मेरे लिये मोहन विद्या हो गई। हमने बहुत गण भेजे, तुमने सबको मोह लिया। यद्यपि इस बात का निश्चय है पर हम फिर भी और गणों के भेजने में सन्देह न करेंगे। क्योंकि बुद्धिमान् उपाय से भूल नहीं करते। अपनी सिद्धि के लिये उपाय नहीं छोड़ते। क्योंकि भाग्य के लौट जाने पर कार्य करनेवाला आनन्द नहीं पाता। देखो, चन्द्रमा सूर्यग्रहण के होने पर भी अपनी गति नहीं छोड़ते। पूर्व जन्म के कार्यों का नाम संस्कार है। ऐसे संस्कार के दूर करने के लिये उपाय करना उचित है। विचार करो कि संस्कार के बल से भोजन पकाने के लिये बरतन आदि सब उपस्थित है, भोजन भी रक्खा हुआ है, पर जब तक हाथ से मुख में न डाला जावे, वह अपने आप मुख के भीतर नहीं जा सकता। निदान भाग्य पर उपाय को प्रबल करके पाँच गणों को भेजा। पर वह भी काशी में जाकर मृतक पुरुषों के समान फिर न लौट आये। उन्होंने भी शिव का लिङ्ग स्थापन कर काशी में रहना अङ्गीकार किया। शिव ने उनको भी स्थित होते हुये जानकर कहा बहुत अच्छा हुआ और गण भी जाकर इसी तरह स्थित होते जावें। क्योंकि हमारे गणों का काशी में रहना हमारे रहने के समान है। पीछे हम भी काशी में जाकर रहेंगे। यह विचार कर शिव ने कण्डूर आदि चार गण और भेजे। वह भी उपाय करके अधीर हो गये और स्वाभिद आदि चार शिव के लिङ्ग स्थापित कर काशी में ठहरे। इन चार लिङ्गों की बड़ी महिमा है जिनकी पूजा से फिर पाप सामने नहीं आते। शिव ने फिर तारकादि २२ गणों को भेजा। वे काशी में जाकर सब युक्ति करके थक गये। निदान इकट्ठे होकर कहने लगे कि हमको सहस्रों धिक्कार है कि शिव के गण होकर उनका काम पूरा न कर सके। एक मनुष्य भी हमारे जाल में न आया। हम मानो सदा शिव के शत्रु हैं, इससे हम सबको नरक प्राप्त होगा। क्योंकि जो शिवजी का कार्य नहीं करते, वे मानो इन्द्रियों से रहित आयु बिताते हैं। उनको पग-पग पर नरक है। वे करोड़ों शुभ कार्य कर आनन्द नहीं पाते। जो सदा-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव का काम न करके अपना मुख दिखाते हैं, उनको अवश्य ही नरक प्राप्त होता है। यह मानो दुःख के रूप हैं। ऐसी दशा में गणों ने शिवजी का ध्यान किया। तब उनको शुभ मति प्राप्त हुई। वे कहने लगे कि जो मनुष्य विश्वासघाती और स्वामी की आज्ञा भङ्ग करनेवाले हैं, उनका तीनों लोक में कहीं ठिकाना नहीं लगता। केवल उनके लिये संसार भर में एक ही काशीजी का स्थान है। उसी के रहने से वह पापों से शुद्ध हो जाते हैं। ऐसे वेद के वचनों को स्मरण कर निश्चयपूर्वक राजा से छिपकर काशी में स्थित हो गये और पिछली चिन्ता को भुला दिया। राजा ने भी उनको नहीं जाना। उन्होंने शिवलिङ्ग अपने-अपने नाम से स्थापित किये। उन लिङ्गों की सेवा से किसने क्या नहीं पाया। कपर्देश्वर लिङ्ग की बड़ाई कौन बखान सकता है। उसी स्थान पर विमलोदक जिसके जल के स्पर्श करने से मनुष्य शिव के समान हो जाता है। उसका इतिहास आनन्द देता है। वह इस तरह पर है कि त्रेतायुग में एक बाल्मीकि ऋषीश्वर शैव काम और इच्छाजित हुये। वह उसी कुण्डपर स्नान कर तप करते थे। एक दिन उन्होंने एक बड़े भयानक पिशाच को देखा। सो ऋषीश्वर ने उसको मलिन स्वरूप से देख दुःख का कारण पूछा और उस पर प्रसन्न हुये। उसको कुण्ड के भीतर शिवलिङ्ग दिखाकर स्नान कराया और उसके सर्वाङ्ग में भस्म लगा दी जिससे वह पिशाच मुक्ति पाकर सुन्दर स्वरूप धार शिवपुरी को चला गया। उसी समय से यह कुण्ड संसार भर में प्रसिद्ध हुआ। उसका नाम पिशाचमोचन है। एक शिव के योगी को वहाँ भोजन कराने से कोटि ब्रह्मभोज का फल मिलता है। जो इस इतिहास को सुनेगा, वह दोनों लोक में आनन्द पावेगा। इस कपर्देश्वर लिङ्ग के सिवाय और गणों के स्थापित किये हुये लिङ्ग भी वहाँ प्रतिष्ठित हैं। उनकी पूजा कर सब गण आनन्द में रहे और अन्य जीव भी जो उनकी सेवा करते हैं, वे निस्संदेह शिवरूप हैं। यह कथा अति आनन्द देनेवाली है। जो इसको पढ़कर कोई यात्रा को जावे, वह सदा आनन्द में रहेगा। कभी उसको दुःख प्राप्त न होगा और उसको भूत-पिशाच कभी दुःख न दे सकेंगे।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ग्यारहवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद ! शिवजी अपने गणों के न लौटने से अतिचिन्तित हुये उन्होंने कहा कि अब कौन जावे? राजा ने मुझको बड़ा दुःख दिया । हमारा भाग्य विपरीत है । क्योंकि हमको कोई मित्र दिखाई नहीं देता। यह विचार फिर कुछ सोचकर हँसे और काशी का स्मरण कर कहा कि जो काशी में रहते हैं, वह मानों मेरे उदर में समाये हुये हैं । उनको कुछ भय नहीं है । जैसे हव्य को यज्ञ में जलते हुये कुछ भय नहीं। जो काशी लिङ्ग के स्थित करनेवाले हैं, वह हमारे जङ्गम लिङ्गवत् हैं । जो शिव की कथा सुनकर शिव काशी मुख पर लाते हैं, वे उच्चगति पाते हैं। पाँच कोस तक काशी हमारा शरीर है। वहाँ जो रहते हैं, उनको अति आनन्द मिलता है। जो काशी सेवन करते हैं, वह हमारे शत्रु और पापी नहीं हैं। हम ऐसी काशी की बड़ाई भली भाँति जानते हैं। मुक्ति तो काशी की लौंड़ी है । जो हमारे शुद्धमन के भक्त हैं, उनको भी यह काशी की बड़ाई विदित है। इसी से हमारे गणों ने काशी की बड़ाई समझकर दृढ़तापूर्वक काशी में अपना स्थान बनाया है। नहीं तो वह और किसी तरह से मुझको छोड़ वहाँ न रह सकते। अच्छा हुआ उनके भाग्य उत्तम हैं। अब औरों को भी भेजना उत्तम है। यह दृढ़ विचारकर गणपति को बुलाकर आदर और प्यार कर गोद में बैठाल लिया और कहा कि दिवोदास जो काशी में राज्य करता है, वह हमको बड़ा दुःख दे रहा है। क्योंकि उसी के कारण काशी मुझसे छूट गई। सब देवताओं को बड़ा दुःख है । जब तक वह राज्य करता है, हम काशी में नहीं जा सकते आगे जो अच्छे लोग हम ने काशी में भेजे, वह सब वहाँ रह गये। मुझे काशी के देखे हुये बिना चैन नहीं आती। ऐसा कौन है जो वहाँ जाकर हमारा काम करे। हमारे गणों में कोई ऐसा दिखाई नहीं देता। जितने हमारे गण हैं, वह सब युद्ध के कामों में प्रवीण हैं । पर उनमें कोई ऐसा बुद्धिमान नहीं। हमको कोई ऐसा देख नहीं पड़ता। तुम्हारे भाई स्कन्द ने भी बड़ा काम किया है। केवल तुम्हीं हमको बुद्धिमान भासते हो। तुम सब काम बुद्धि के बल से करते हो । जिसको जैसा चाहो तुरन्त वैसा ही करोगे । इससे तुमको उचित है कि तुम आपही हमारा काम पूरा करो ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काशी में जाकर स्थित हो सब गणों समेत छिपे रहकर राजा को दुःख पहुँचावो, जिससे हमारा काम निकले। जो पिता-पुत्र में प्रीति होती है, उसी को प्रकट करके हमारा कार्य सिद्ध करो। यह कह शिव और गिरिजा दोनों ने आशिष और स्तुति के उपरान्त गणपति को भेज दिया। गणपति चलकर मार्ग में नाना प्रकार के उपाय शोच आनन्दपूर्वक काशी में पहुँचे और ब्राह्मण का स्वरूप धार काशी में प्रवेश किया। चलने में अच्छे शकुन हुये सो गणेशजी ज्योतिर्विद ब्राह्मण होकर काशी में घूमने लगे। सब काशीवासी बड़ी प्रीति से उनका आदर-सम्मान करने लगे। जब गणेशजी का आदर पूर्णरूप से काशीवासी करने लगे तो उन्होंने एक यह नई बात रची कि रात्रि के समय आप मनुष्यों के अन्तःकरण होकर उनको दुस्स्वप्न दिखाने लगे। फिर प्रभात को उसी स्वरूप में उनके घरों में जाकर स्वप्नफल कहते थे। उनको जहाँ तक कि दुस्स्वप्न थे कि जिनका फल भी बहुत बुरा होता है, सब दिखा दिये। जिनके सुनने से बहुतेरे मनुष्य काशी छोड़ इधर-उधर भाग गये। गणेशजी ने किसी के ग्रहों को बुरा बताया जिनके सुनने से लोगों को बड़ी चिन्ता उपजी। इसी प्रकार ऐसे बहुत उपायों से काशीवासियों को दुःखी किया और माया करके घरों के भीतर जाकर स्त्रियों के मनों में बड़ा सन्देह उपजाया जिसके सुनने से स्त्रियों को आश्चर्य हुआ। ऐसी बातों से गणेशजी से सब स्त्री-पुरुष प्यार करने लगे। यहाँ तक कि दिवोदास की स्त्री भी गणेश को प्रिय जानने लगी। स्त्रियाँ परस्पर गणेशजी की अति प्रशंसा करती थीं जैसा हमने यह ब्राह्मण देखा है, ऐसा कोई आज तक नहीं देखा, न सुना। इसकी बात असत्य नहीं होती। यह ब्राह्मण महाशीलवान् और बुद्धिमान् है। यह तो थोड़े ही जलमात्र से प्रसन्न हो जाता है। यह अति सुन्दर, निष्क्रोध, शान्त और बड़े आनन्द के साथ दूसरों के उपकार के लिये तत्पर रहता है किसी की निन्दा नहीं करता। यह बड़ा बुद्धिमान् है। अहंकारी, व्यभिचारी और कृपण नहीं। इसके सब काम अच्छे हैं। यह बुद्धिमान्, पवित्र, दृढ़ स्वभाव, बड़ा उदार, प्रतिष्ठित, शौचयुक्त और दयाभाव सहित है। किसी से दान नहीं लेता। दूसरों की पीड़ा जानता है। इसी प्रकार जो शुभ गुण हैं, वह सब इसमें पाये जाते हैं। यह उत्तम गुणों की खानि हैं और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ज्योतिष विद्या भली भाँति जानता है। इसके बराबर कोई देखा-सुना नहीं गया। निदान रानी गणेश को राज मन्दिर में ठहराकर उनका आदर करती। एक दिन दिवोदास की स्त्री लीलावती ने अवकाश पा राजा से बिनती की कि हे राजन्! एक ब्राह्मण यहाँ आया है। वह मानो सर्वविद्याओं की खानि है। जाना जाता है कि वह ब्रह्म है जो शरीर धारण किये आया है। हे राजन्! वह दर्शन करने के योग्य है। राजा प्रसन्न होकर कहने लगा कि उसको हमारी आज्ञा से बुलाओ। सो लीलावती रानी ने अपनी सखी भेजकर उसको बुला लिया। जब गणेशजी निकट पहुँचे तो राजा ने देखा कि मानो ब्रह्मतेज आप स्वरूप धारण किये चला आता है। राजा ने अगवानी कर बड़ी प्रसन्नता से प्रणाम किया। गणपति ने वेद के मन्त्र से आशीर्वाद दिया। फिर राजा ने बैठाया। दोनों ओर से कुशलप्रश्न और आदर के उपरान्त वार्त्तालाप हुआ। जोकि वह दोनों धर्मवान् और बुद्धिमान् थे इसलिये ऐसी संगति से राजा ने अति प्रसन्न होकर गणेशजी को तो बिदा कर दिया और अपनी रानी की प्रशंसा करके कहने लगा कि जो प्रशंसा तुमने ब्राह्मणकी की वास्तव में यह ब्राह्मण उसके योग्य है। यह त्रिकालज्ञ है। अब हम कल प्रभात को ब्राह्मण को बुलाकर भविष्य के लिये कई प्रश्न करेंगे। सो प्रभात होते ही राजा ने गणेशजी को बुलाया और बहुत प्रकार के बहुमूल्य रत्नादि उन्हें भेंट दिये और अलग ले जाकर ब्राह्मण से यह पूछा कि मैंने देश का राज्य किया और प्रजा को पुत्र के समान पाला। मैंने धर्मपूर्वक भोग भी बहुत किये, हर प्रकार के दान भी दिये और ब्राह्मणों के चरण पूजने के उपरान्त कोई दूसरी बात नहीं जानी, मैंने इससे बढ़कर कोई बात नहीं समझी। मैं ब्राह्मणों से श्रेष्ठ देवताओं को नहीं जानता। देवताओं ने मेरे ऊपर क्या-क्या उपद्रव नहीं किये। पर ब्राह्मणों के चरण पूजने के कारण मेरा कुछ न हो सका। मैंने अपने धर्म को किसी समय नहीं छोड़ा, न मेरी कुछ निन्दा हुई, पर ऐसी बातों के कहने से कुछ लाभ नहीं। अब मेरी इस बात को सुनिये कि मेरे मन में अब कोई अभिलाषा नहीं रही, न किसी वस्तु की इच्छा होती है। मेरे मन में त्याग बसा है। न जानूँ मुझे क्या हो गया है, आप भली भाँति विचारकर मुझे इसका उत्तर देवें। ब्राह्मण ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहा कि जो आपने मुझसे पूछा है तो मैं अवश्य ही इसका उत्तर दूँगा क्योंकि बिन पूछे राजाओं के सामने कोई उत्तर देना योग्य नहीं। यह बात राजनीति और वेद के विरुद्ध है। जिससे आपका मन नहीं लगता, उसको हम कहते हैं। निश्चय जानना कि तुम बड़े भाग्यवान् हो क्योंकि तुमको ब्राह्मणों से इतना प्रेम है। तुम्हारा शरीर यश कीर्ति से अलंकृत है। विद्या में सबसे श्रेष्ठ हो। तुम्हारे बराबर इन्द्र भी नहीं है। क्योंकि सृष्टिभर का कला सब तुम में है। तुम बड़ाई में विष्णु के समान हो। तुम्हारा तेज अग्नि के समान है। सत्यता में धर्मराज के समान हो। युद्ध में निर्ऋति के समान, धन में कुबेर के सदृश और आज्ञा देने में रुद्र की बराबरी रखते हो। भार उठाने में शेष के समान, क्रोध में सूर्य, प्रसन्नता में चन्द्रमा, बुद्धिमानी और निपुणता में बृहस्पति और गम्भीरता में समुद्र हो। नीति में तुमको भृगु के समान कहना उचित है। ऊँचाई में हिमाचल पर्वत और राज्य के कारण तुमको राजा मनु कहना उचित हैं। पवित्रता में गङ्गा नाम के समान, मुक्ति देने में काशी हो और दाह के दूर करने में मेघ, नाश करने में शिव, पालन करने में विष्णु, यश करने में ब्रह्मा, वाचालता में सरस्वती और सुन्दरता में कामदेव हो। पद्मा अर्थात् लक्ष्मी आप तुम्हारे हाथ में हैं क्रोध में हलाहल विष और वचन में अमृत, यह लक्षण मुख्य तुम्हारे मुख से प्रतीति है। जैसा कि हमने वर्णन किया अब और सुनिये कि अठारह दिन के पीछे उत्तर से एक ब्राह्मण तुम्हारे पास आवेगा। वह जो तुमको उपदेश करे, उसे सत्य समझना। उसके कहने को मानना तो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होगा। यह कह ब्राह्मण राजा से आज्ञा लेकर अपने डेरे को लौट गया। राजा यह वचन ब्राह्मण का सुन प्रसन्न हुआ और इस भेद को गुप्त रखकर समय को देखता रहा। गणपति भी अपने पिता की आज्ञा पूर्ण करने से अतिप्रसन्न हुये और अपने बहुत स्वरूप कर काशी में स्थित रहे। जब कि काशी दिवोदास के अधीन न थी, उस समय में भी गणेशजी काशी के बहुत से स्थानों में वर्तमान थे। सो वही स्थान गणेशजी ने भलीभाँति सजाये। एक सिद्धि-स्थान है, जब कि विष्णु ने आकर राजा को भगाया तब शिवजी ने फिर काशी को सिरे से बसाया। अर्थात् शिवजी ने मन्दरगिरि से आकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सबसे पहिले गणेशजी की बहुत प्रशंसा की। फिर अपने मन्दिर में जाकर बड़े आनन्द से रहे। हर प्रकार से अपनी पुरी काशी की रक्षा करने में लगे रहे। चारों योगिनीगणों को रक्षा के लिये स्थापित किया। सात और गणों को स्थापित कर आठवीं ओर ब्रह्मा और विष्णु को रक्षा के निमित्त रक्खा, जो भक्तों को बड़ा आनन्द देते हैं। यह शिवचरित्र दोनों लोकों में अति आनन्ददायक और सबकी कामना देनेवाला है।

बारहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि दिवोदासने क्योंकर राज्य छोड़ा और शिवजी क्योंकर पर्वत से उतरकर काशी में पहुँचे तथा क्या-क्या चरित्र किये? विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा कि शिवजी ने जब गणेश को भी देखा कि काशी से लौटकर न आये तो अति चिन्तित हुये और महाखेद की दृष्टि से विष्णु की ओर देखकर कहा कि तुम संसार भर को आनन्द देनेवाले विश्वम्भर हो। हमको तुम प्राण से भी अधिक प्रिय हो। तुमसे कौन अधिक आनन्द देनेवाला है? हमने बहुत मनुष्यों को काशी भेजा पर वे सब वहाँ स्थित हो गये। न तो वे लौटकर आये और न हमारा काम पूरा किया। न जानिये कि उन पर क्या दुःख पड़ा? हमको काशी को देखे बिना चैन नहीं। हमको काशी प्राण से भी अधिक प्यारा है, यह बात हम सत्य कहते हैं। जोकि तुम हमारे मन का सब सुख-दुःख जानते हो, इससे मैं इच्छापूर्वक तुमसे कहता हूँ कि तुम आप जाकर हमारा काम पूरा करो। पर तुम भी औरों के समान कि जैसा उन्होंने किया है, वैसा न करना। तुम तो सब योग्य हो, हमारी प्रेरणा से तुमने बहुत अवतार लिये हैं। जिस तरह हमारा काम हो, करना। तुमको कुछ पाप न होगा। अधिक क्या समझावें, तुम हर प्रकार से सब कार्य करने के योग्य हो। विष्णु ने कहा कि आप तो परब्रह्म हैं। जब जो इच्छा आपकी होती है, वही करते हैं। हमारा निश्चय इसी पर है। यश-अपयश के दिलवानेवाले आप ही हैं। डूबी हुई नाव के आप ही केवट हैं। जिसको आप अपनी आज्ञा दें, उसके बड़े भाग्य हैं। वेद ने इस बात को भली भाँति वर्णन किया है। अर्थात् जिसको आप अपना सेवक समझ लें, वह भाग्य से भरपूर है। अपनी बुद्धि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के अनुसार सब कोई उपाय करते हैं परन्तु सिद्धि आपके अधीन है। संसार में सब कार्य मुरदे के समान है। वह जीव भी स्वाधीन नहीं, पर आप सब कर्मों के साक्षी और जीवदान देनेवाले हैं। मन्त्र भी तुम्हारे अधीन है। तुम्हारी सेवा से शुभ मति उपजती है। उसी से सर्व कार्य पूर्ण होते हैं। आपकी सेवा किये बिना न तो शुभकार्य, न सिद्धि कर्म पूर्ण होते और न कोई कार्य पूरा होता है। इस जीव को केवल तुम्हारी ही शुभदृष्टि से आनन्द मिलता है। जो कार्य कि होने के योग्य नहीं यदि वे भी बुद्धिमानी और युक्ति के साथ तुम्हारे स्मरण पूर्वक किये जावें तो ऐसे कार्य भी सिद्ध हों। उनमें कुछ विघ्न न हो। तुम्हारी प्रदक्षिणा करके किसी मनोरथ को जावे तो सब काम निकल सकते हैं। आप कृपा करके जो मुझको भेजते हैं, मैं अवश्य माया के बल से काम पूरा करूँगा। मुझको कुछ मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मेरे लिये केवल वही मुहूर्त्त शुभ है, जब कि आपने आज्ञा दी। मैं जाता हूँ। प्राणों के जाने पर भी मैं कार्य करने से न हटूँगा। आप कृपा की दृष्टि रक्खें। यह कह विष्णु ने शिवजी को बार-बार प्रणाम किया और उनकी स्तुति व भजन कर काशी को चले। दूर ही से काशी को देखकर प्रसन्न हो गये। शिर झुका काशी को प्रणाम किया और काशी के भीतर शुभ शकुन होते हुये गये। जहाँ पर गङ्गा और वरुण परस्पर मिली हैं, विष्णु सबसे पहिले उसी स्थान पर गये और हाथ-पाँव धोकर सचैल स्नान किया। जो दुःख उनको काशी के वियोग से था, वह दूर होकर मन निर्मल हो गया। उसी दिन से वह स्थान पादोदक तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुआ और अपने स्वरूप को विष्णु ने उस स्थान पर पूजा जिसकी पूजा से पापियों को पाप से मुक्ति मिलती है। वही मूर्ति आदि केशव के नाम से प्रसिद्ध हैं। उस स्थान को श्वेतद्वीप कहते हैं। सिवाय इसके उस स्थान पर और बहुत तीर्थ जैसे क्षीरदधि है जिसके स्नान से दुःख दूर हो जाते हैं। शङ्ख-तीर्थ जो उससे दक्षिण है, उससे दक्षिण चक्रतीर्थ, गदातीर्थ, पद्मतीर्थ, रमा-तीर्थ, गरुड़तीर्थ, नारदतीर्थ और प्रह्लादतीर्थ आदि हैं। उनमें स्नान करने से सर्व पाप छूट जाते हैं। दुःख और शोक का नाम भी नहीं रहता। अन्य तीर्थ विस्तारभय से वर्णन नहीं किये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेरहवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि विष्णु अपनी केशवी नामक मूर्ति में प्रवेश कर कुछ-कुछ अंशों से निकल शिव के कार्य में प्रवृत्त हुये। इस बात को सुन नारदजी ने पूछा—क्यों विष्णुजी अंशांशी होकर निकले और कहाँ गये ? ब्रह्माजी बोले कि जिस कारण पूरा रूप विष्णु का केशवी मूर्ति से बाहर न निकला, वह यह है कि जब अगले जन्म के पुण्य प्रकट होते हैं, तब काशी मिलती है। फिर वेद ने कहा है कि कदाचित् काशी अपने भाग्य से मिल जावे तो फिर उसे छोड़ना न चाहिये। त्याग करनेवाला अतिपापी भाग्यहीन और मूर्ख है। जिस पर शिवजी की कृपा नहीं होती, वह काशी में नहीं रह सकता। जिस पर शिवजी बहुत ही प्रसन्न होते हैं, वह सदा काशी में रहता है। जो मनुष्य काशी में स्थित नहीं होते, उनका जन्म वृथा है। संसार के सर्व तीर्थ सेवकों के समान काशी की सेवा करते हैं। काशी महाश्रेष्ठ और तीनों लोक से निराली है जिसके रहने वाले पापी नहीं हो सकते। काशी के बराबर और वस्तु नहीं है। उसका सेवन तप, यज्ञ और पूजा आदि के समान है। वहाँ का चाण्डाल भी और देशों के राजा से श्रेष्ठ है। तीनों लोक में सब पर पाप का भय है पर काशी वासी जीवों को भय नहीं। देवताओं को इच्छा रहा करती है कि हम काशी में मरें क्योंकि वहाँ मरने से स्वर्ग से भी अधिक आनन्द मिलता है। हे नारद ! इसी से विष्णु अपने पूर्ण स्वरूप से केशवीरूप धर काशी में स्थित हुये और अपने एक छोटे अंश से जो उसी मूर्ति से निकाला, काशी के भीतर गये। गरुड़ और लक्ष्मी भी उस स्थान से कुछ दूर उत्तर की ओर स्थित हुये। उस स्थान को जहाँ गरुड़ और लक्ष्मी स्थित हुये, धर्म क्षेत्र बोलते हैं, जिसके दर्शन से आनन्द प्राप्त है। विष्णु ने अपना स्वरूप इस प्रकार का धारण किया जो तीनों लोक को अधीर कर देवे। उन्होंने अपने को उत्तमोत्तम वस्त्रों से भूषित किया। मधुरवाणी और ध्यान से सम्पन्न होकर आपको पुण्यकीर्ति के नाम से प्रसिद्ध किया। गरुड़ भी पुण्यकीर्ति अर्थात् विष्णु के शिष्य होकर विनयकीर्ति के नाम से विख्यात हुये जो पोथी हाथ में लिये गुरु की सेवा में लगे। लक्ष्मी भी मनुष्यों के समान उत्तम स्वरूप धारण किये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गोमोक्ष नाम से प्रसिद्ध हुई और हाथ में पुस्तक लिये हुये मानों मूर्तिकार ने चित्र खींच लिया है। जीवों का धैर्य उस रूप अनूप के देखने से जाता है। सो विष्णु अपना स्वरूप बदल यह चरित्र करने लगे कि जब उनके देखने के लिये काशीवासी समूह के समूह आये तो विष्णु और गरुड़ गुरु चेले की तरह परस्पर संवाद करने लगे। शिष्य गुरु की स्तुति कर कहता कि हे गुरो ! वह धर्म वर्ण कीजिये जिससे संसार को आनन्द मिले। तब गुरु अपने मन में मुसकरा ऊँचे शब्द से सबको सुनाकर कहने लगे कि हे शिष्य ! यह सृष्टि अनादि है, इसका कर्त्ता कोई नहीं। यह पुरानी है, इसी प्रकार से चली आती है। अपने आप उपजकर फिर आप ही नष्ट हो जाती है। यही बात अच्छे लोग और वेद कहते हैं। ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त बराबर जन्म और मृत्यु में हैं। आत्मा ही ईश्वर है। सिवाय आत्मा के और कोई स्वामी नहीं। ब्रह्मा आदि जो देवता कहे जाते हैं, काल ने उनको भी खाने से नहीं छोड़ा। हाँ, कोई शीघ्र उपजता है, कोई विलम्ब में मरता है। पर शरीर धारण करके सब मर जावेंगे। जो इस बात पर निश्चय करता है, वही चतुर है। मन में विचार करो तो प्रकट होगा कि संसार में न कोई बड़ा है न छोटा है न दुःखी है और न सुखी है। आहार-विहार में सब समान है। न कोई बुरा है, न अच्छा है न कोई पापी है और पापरहित है क्योंकि भोजन सबको तृप्ति करता है। पानी सबकी प्यास बुझाता है स्त्री चाहे किसी प्रकार की हो भोग करने में समान है। सवारी चाहे किसी प्रकार हो, उससे प्रयोजन केवल चढ़ने का है। बिछौना चाहे कैसा ही हो सोने में जो आनन्द प्राप्त है, वैसा सब में सुख है। सबको देवताओं समेत मृत्यु का भय लगा हुआ है। ब्रह्मा और विष्णु भी मृत्यु से डरते हैं। जो शरीरधारी हैं, वे बुद्धि, विद्या और मन में एक से हैं। यह सब झगड़ा मिथ्या है। केवल एक बात अवश्य ध्यान रखने के योग्य है कि किसी जीव को दुःख देना बड़ा पाप है। जीवों पर दया करने के समान कोई धर्म नहीं है। चार वेद, अठारह पुराण और छः शास्त्र इस बात पर एकमति हैं। चार दान बड़े हैं—रोगी को औषधि देना, भयभीत को निर्भय करना, भूखे को भोजन कराना, विद्यार्थी को विद्या पढ़ाना और औषधि तथा मन्त्र के प्रभाव से धन सञ्चित कर अपने शरीर को पालना।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यहाँ नरक-स्वर्ग दोनों हैं। किसी जगह विचार न करो, सुख को स्वर्ग और दुःख को नरक जानो। आनन्द से मरना ही मुक्ति है और वासना सहित क्लेश के दूर करने को प्रमोद अर्थात् मुक्ति समझना चाहिये। वेद में जो दो प्रकार की आज्ञा है—एक प्रवृत्ति और दूसरी निवृत्ति—उनका आशय यह है कि जो जीवहिंसा है, वह प्रवृत्ति है और जिस स्थान में जीवों पर दया है, उसको निवृत्ति समझना चाहिये। वेदान्तों का यह वचन है कि अगले प्रमाणों से अधिक और कोई विश्वासयोग्य प्रमाण नहीं। सो विचार करो कि यह लोग तृण काष्ठ को काटकर जीवों को मार डालते हैं। तिल, घी आदि आग में जलाते हैं कि स्वर्ग मिले। इससे और कौन आश्चर्य की बात है? इसी प्रकार के और भी बहुत धर्म कहे और सब काशी के निवासी मोहित हो गये। वे पुराने धर्म से विमन होने लगे। इसी प्रकार लक्ष्मीजी ने भी काशी की स्त्रियों को धर्म सिखाकर अपने अधीन कर लिया और बौद्ध धर्म को उन्हें सुनाकर उनकी इच्छा पूरी की। उन्हें शरीर के पालने की शिक्षा दी और पातिव्रत धर्म को दूर करा दिया। अपने उपदेश से वर्णाश्रम को मिटा दिया। उनके उपदेश का संक्षेप यह है जो स्त्रियों को सुनाया कि वेद जो आनन्दब्रह्म स्वरूप कहते हैं सो वह बहुत जन्म का नहीं है। यह बात अशुद्ध है वरन् उसका आशय यह है कि यह तन जब तक इन्द्रियों समेत परिपूर्ण है तब तक आनन्द करना चाहिये। जो कोई मनुष्य माँगे तो शरीर भी दे देना चाहिये जिससे कि केवल पृथ्वी का भार है। इसकी उत्पत्ति पर धिक्कार है जिस शरीर को कौवे, कुत्ते, स्यार, कृमि और कीट अपना भक्ष्य समझते हैं। उसका नाश अवश्य है। एक दिन वह जल जावेगा। उसके जलने से क्या लाभ है? इससे उत्तम है कि इससे और जीवों को लाभ पहुँचे। जो कि सर्व सृष्टि के उपजाने वाले अकेले ब्रह्मा हैं तो सब लोग परस्पर भाई के समान हैं। फिर उन्होंने परस्पर विवाहादि करके कुछ धर्म पर विचार न किया। इस समय के मनुष्य बड़े बुरे मन के हैं। व्यर्थ ही वेद पर चलते हैं। जो मनुष्य चार वर्ण वर्णन करते हैं सो विचार करने से चारों वर्ण का होना सूचित नहीं होता। क्योंकि शरीर पृथ्वी है जहाँ से चार पुत्र उपजे सो चारों वर्ण अलग-अलग क्योंकर हो सकते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह जाति का विचार करना मिथ्या है। और भी ऐसी बातें झूँठ हैं। जाति कुछ नहीं, यह बातें केवल वाग्जाल ही हैं। वरन् यह समझना चाहिये कि मनुष्य सब बराबर हैं। इसी तरह और बहुत बातें सिखलाकर स्त्रियों के पातिव्रत धर्म को छुड़ाया। सो स्त्री-पुरुष दोनों व्यभिचारी होकर अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार पर पुरुषों और परस्त्रियों के साथ भोग करने लगे। राजा के पुत्र अपनी दासियों के साथ बिगड़ गये। पुरुष स्त्रियों के कहे पर चलने लगे। जो स्त्री ने कहा, वही किया। इसी प्रकार सब मनुष्य धर्म के विरुद्ध कार्य करने लगे जिससे चारों ओर पाप रूपी सेना फैल गई। सिद्ध भी ऐसे अधर्म के कारण राजा समेत प्रतापहीन हुये। राजा दिवोदास ने ब्राह्मण का वचन स्मरण कर राज्य से हाथ खींच लिया। मनुष्यों की यह दशा देखकर ब्राह्मण की बात को सत्य जाना। वह मार्ग देखता था कि कब ब्राह्मण आवे और मेरा दुःख दूर हो। इसी विचार में रात-दिन डूबा रहता। किसी से कुछ मन की बात न कहता।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवाँ दिन आया जैसा कि ब्राह्मण अर्थात् गणपति ने कहा था तो राजा अति प्रसन्न हुआ। भोर की निद्रा से उठकर नित्यकर्म से छुट्टी की और ब्राह्मण के आने की बाट देखने लगा। सो दोपहर के समय विष्णुजी ब्राह्मण के स्वरूप से कई विप्रों को साथ लिये हुये अग्नि समान तेज धारे आये। राजा ने दूर से देखकर समझा कि वही उपदेश करने वाले ब्राह्मण आते हैं तो बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अगवानी कर प्रणाम किया और आशीष पाने के अनन्तर ब्राह्मण को अन्तःपुर में ले गया। पूजन, यजन और सेवन के उपरान्त उनका बहुत आदर और सम्मान कर उत्तमोत्तम भेंट दी और अपने भाग्य की सराहना करने लगा। जब देखा कि उनका परिश्रम दूर हो गया तब राजा ने विनती की कि हे महाराज! मैं सदा दुःखी रहा करता हूँ इसका कारण जाना नहीं जाता। राज्य का भार तो कुछ जाना नहीं जाता, मैं क्या करूँ और कहाँ जाऊँ जिससे मेरा कष्ट मिटे और मुझे आनन्द प्राप्त हो? इसी चिन्ता में एक मास बीत गया है पर मेरा कष्ट नष्ट नहीं होता। फिर अपने राज्य पालन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रताप, विजय और ब्राह्मण के मान करने का वर्णन करके कहा कि मुझको दुःख के उपजने का यह कारण जाना जाता है कि मैंने अपने तपोबल से गर्ववान् होकर देवताओं को तृणवत् समझा है। मेरी यह दशा है कि मैंने सब भोगों को भोगा पर अब मुझको रोगरूप भासित होते हैं। रीति है कि जो कोई मनुष्य बराबर एक कल्पपर्यन्त जीता रहे तो भी वह मरने से नहीं बचता। मुझको राज्य करना चक्की के चलाने के समान हो गया है। इससे आप ऐसा उपदेश करें जिससे हम आवागमन से छूटें। मैं आपकी शरण में आया हूँ। जो आप मुझसे कहें, उसको आधीनतापूर्वक स्वीकार करूँगा। मुझको तो आपके दर्शन से अति आनन्द मिला है। मुझको इस बात का भी विचार आता है कि देवताओं की शत्रुता से किसी ने भी आनन्द नहीं पाया। जैसा कि त्रिपुर, राजा बलि, वृत्रासुर, उपव्रत, दधीचिमुनि, सहस्रबाहु आदि की कथायें साक्षी हैं, इन सबको इन्हीं देवताओं ने नष्ट कर दिया। वरन् उन्होंने शिवको बहकाया और छल किया। यद्यपि उनमें बहुत से शिव के पूजक थे तो भी शिव के हाथों से नष्ट हो गये। देवताओं के भी बड़े-बड़े छल हैं। इसलिये बहुत से मनुष्यों का वचन है कि देवताओं की शत्रुता आनन्द नहीं देती। पर मुझको इस बात का कुछ भय नहीं है कि देवता मुझसे विरुद्ध हैं। क्योंकि मैं ब्राह्मणों का सेवक हूँ। जो बड़ाई देवताओं ने यज्ञ, जप, तप से प्राप्त की है, वह मैंने ब्राह्मणों की सेवा से पाई है। हम उनके समान हैं, कुछ भी कम नहीं। मुझे आप से यह इच्छा है कि आप मेरे उपदेश करने वाले होकर मुझे आवागमन से छुड़ा देवें। यह सुनकर विष्णुजी जो ब्राह्मण का रूप धारे थे, उन्होंने दिवोदास की बड़ी प्रशंसा की और कहा हे राजन्! जो कुछ कि हमको कहना था, वह तो तुमही कह चुके हो। तुमने जो कहा वह सत्य है। तुम्हारे प्रताप को हम जानते हैं। तुम्हारे समान न कोई राजा हुआ है, न होगा। तुमने देवताओं के साथ कुछ शत्रुता नहीं की क्योंकि तुम बुद्धिमान् हो। तुम धर्मात्मा और वेदज्ञ हो। तुम्हारे राज्य में कोई कार्य वेद के विरुद्ध नहीं होता। तुमने प्रजा अच्छी तरह पाली जिससे देवताओं को भी आनन्द प्राप्त हुआ हैं। पर हाँ, मुझे एक बड़ा पाप मालूम होता है। अर्थात् तुमने जो शिवजी को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काशी से दूर कर दिया, यह बड़ा भारी पाप हुआ। जो यह पाप किसी ढब से दूर हो जावे तो अति प्रसन्नता के साथ तुम्हारे तीनों प्रकार के रोग दूर हो जावें। अब इसके दूर करने का केवल उपाय यह है अर्थात् वेद का वाक्य यह है कि जो कोई मनुष्य शिव का लिङ्ग स्थापित करता है, उसके सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। वह हर प्रकार से निर्मल हो जाता है। मनुष्य के शरीर में जितने रोम वर्तमान हैं, शिवलिङ्ग स्थापन करने वाले के उतने पाप विनाश को प्राप्त होते हैं। मुख्य करके काशी में शिवलिङ्ग स्थापन करके किसी पाप से स्वप्न में भी डरना न चाहिये। जो काशी में एक लिङ्ग भी शिवजी का स्थापित कर दे तो मानों बहुत देशों में शिवलिङ्ग स्थापित कर चुका। समुद्र के रत्नों की संख्या है जो उसमें उपजते हैं पर शिवलिङ्ग के स्थापित करने की बड़ाई असंख्य है। इससे उचित है कि आप शिवलिङ्ग की स्थापना करें। इससे तुम बड़े यशवान् होगे और अपना मनोरथ पाओगे। विष्णु ने यह कहा और चुप होकर कुछ देर तक पढ़ाकर राजा के शरीर को अपने हाथ से स्पर्शकर कहा कि हमने ज्ञानदृष्टि से जो देखा है, वह तुमसे कहता हूँ। तुमको धन्य है, तुम बड़े ज्ञानी शुभ गुणयुक्त हो। तुम्हारे समान पृथ्वी पर दूसरा राजा नहीं। जिस मनुष्य को कुछ धन अथवा देश की इच्छा हो, वह प्रभात के समय प्रतिदिवस तुम्हारे नाम को जपे। हम तुम्हारे समीप आने से अति लाभयुक्त हुये। यह कहकर ब्राह्मण हँसते हुये बार-बार शिर को हिलाने लगे और कहा कि इस राजा के बड़े भाग्य हैं जो अब मुक्ति पावेगा। जिस किसी को हम, ब्रह्मा, इन्द्र, देवता, मुनि और शेष आदि ध्यान करते हैं, वे शिवजी उस राजा को प्रति-दिन स्मरण करते हैं। जैसे इनके भाग्य हैं, वैसे तीनों लोक में किसी के नहीं। उसको संसार के अलभ्य पदार्थ प्राप्त हैं। इस तरह बहुत बातें अपने मन में समझ फिर ध्यान छोड़ राजा से कहने लगे कि हमारी इच्छा से पूर्ण हुई। तुम इसी शरीर से परमपद चले जाओगे और सर्व प्रकार से परम आनन्द पावोगे। जब तुम शिवजी का लिङ्ग स्थापित करोगे, तब तुम शिवपुरी में जाकर मृत्यु से छूटोगे। आज से सातवें दिन शिवजी के गण तुम्हारे लेने को आवेंगे। तुम किस धर्म का फल इसको जानते हो। हम केवल काशीसेवन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से समझते हैं कि तुमने वही पद पाया। जिसने काशी की भक्ति भले प्रकार की, वह तुम्हारे समान कृतार्थ हो जाता है। क्योंकि काशी सेवन करने-वाला शिव को बहुत प्रिय है। यह कहकर ब्राह्मण अर्थात् विष्णु चुप हो गये। राजा अति प्रसन्न हुआ और शिष्य समेत राजा ने विष्णुरूपी ब्राह्मण को उनकी आज्ञानुसार सब कुछ दिया और कहा कि तुमने मुझको भव-सागर से पार उतारा। जो कुछ कि मैं आपको दूँ, वह सब तुच्छ है। सो विष्णु विदा होकर अपने स्थान को गये और काशी भर में भ्रमणकर वहीं स्थित हुये। स्नान के उपरान्त शिवपूजा की और गरुड़ को शिव के समीप भेजकर आप शिव के आगमन की बाट देखते रहे। फिर अग्निबिन्दु ब्राह्मण को देश कृपा किया और पञ्चनद के ऊपर बैठकर प्रीति से शिव का स्मरण करने लगे।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

नारद के प्रश्न करने के उपरान्त ब्रह्माजी बोले कि राजा ने ब्राह्मणरूपी विष्णु से उपदेश पाकर अपने प्रभृति जनो को बुलाया। सो सब राजा, मन्त्री मण्डलेश्वर अपने परिवार, पुरोहित, यज्ञ कराने वालों, सेना-पतियों, सेना, राजकुमारों और वेदपाठियों आदि के सहित आये। फिर राजा ने अपने बड़े पुत्र रिपुंजय और अपनी सर्व स्त्रियों को बुलाया। जब सब आ चुके तो जो ब्राह्मण ने कहा था, वह सब हाथ जोड़कर प्रसन्नता के साथ सबको सुना दिया कि अब हम सात दिन और पृथ्वी पर हैं। फिर अवश्य ही शिवपुरी को जावेंगे। यह सुनकर सब लोगों को आश्चर्य उपजा। पर किसी ने राजा के भय से कुछ न कहा। फिर राजा तुरन्त उठकर घर के भीतर गये और सामग्री इकट्ठी कर शुभ लग्न पा रिपुंजय को युवराज का अभिषेक किया। फिर काशी में आकर बड़ी सामग्री इकट्ठी कर गङ्गा के पश्चिम की ओर शिव की पूजा की और जितना धन देशों के जीतने से इकट्ठा किया था और जो द्रव्य कि शुभ रीति से संग्रह हुआ था, वह सब शिवालय के बनाने में व्यय कर दिया। काशी में वह स्थान प्रसिद्ध है। उसकी बड़ाई तीनों लोक में विख्यात है जिसके केवल स्मरण करने से कुछ दुःख नहीं उपजता। उस शिवालय में शिवलिङ्ग नरेश्वर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के नाम से स्थापित किया। फिर राजा के मन में अति प्रसन्नता उपजी और उसका मुख सूर्य के समान चमकने लगा। कारीगरों को बड़ा पारितोषिक दिया। सब बाजे बजने लगे। काशी के देवताओं अर्थात् वासियों को बहुत कुछ दिया। अन्य मनुष्यों को भी भरपूर कर दिया और सब सामग्री इकट्ठी करके षोडशोपचार से पूजा की। राजा के मन में जो दुःख था, वह दूर हो गया। राजा ने शिव को सबसे श्रेष्ठ समझा और काशी के रहनेवालों को जो मनुष्यरूप में शिव हैं, बहुत आदर किया। जितने लिङ्ग काशी में सुनने, देखने या विचार से विदित होते हैं, उन सबकी पूजा कराई। जितनी काशी में देवताओं की मूर्तियाँ थीं, उनकी भी पूजा। फिर शिव के ध्यान में डूबा और सिवाय शिवलिङ्ग के और किसी देवता की राजा ने आप पूजा न की। पूजन और प्रणाम के अनन्तर ध्यान में मग्न हुआ। जब विष्णु के बताने के अनुसार सातवाँ दिन आया, उस दिन राजा ने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजा की। वह पूजन और प्रणाम के उपरान्त स्तुति करने लगा। तब आकाश से उत्तम विमान पृथ्वी पर उतरा। उसके ऊपर शिव के गण चारों ओर बैठे थे। उन सबके चार-चार भुजा थीं जिनका तेज दूर तक फैल गया। उनकी दीप्ति सूर्यवत् थी। वे सब हाथों में त्रिशूल लिये हुये थे। उनके पाँच-पाँच मुख और तीन-तीन आँखें, उत्तम सुन्दर शरीर, जटाजूट धारे, सर्पों से अलंकृत, सब नीलकण्ठ शशि भाल पर, शरीर में भस्म रमाये, शरीर में सर्प लिपटे, निदान हर बात में शिव के समान थे। बहुत स्त्रियाँ भी विमान पर विराजमान थीं जो अपने हाथ में चँवर लिये हुये थीं। मानों संसार भर की सुन्दरता केवल विमान में आ बैठी थी। शिवगण विमान से उतरे और उनसे अपनी पूजा ली तथा गणों ने राजा की आज्ञानुसार राजा के शरीर को स्पर्श किया। सो राजा तुरन्त ही देवताओं के समान दिव्यदेह हो गया। उसके शरीर में सम्पूर्ण लक्षण शिव और गणों के समान प्रतीत हुये और तुरन्त विमान पर आरूढ़ हो अपने समाज सहित गणों के साथ शिवपुर में गया। वह गणों में गिना गया और मुक्ति प्राप्त हुई। वह स्थान जहाँ से राजा शिवपुर को गया था, भूपाल श्री के नाम से बड़ा तीर्थ हुआ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जो लिङ्ग दिवादासेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है, उसकी पूजा से फिर मनुष्य को आवागमन का भय नहीं रहता। यह बड़ा पवित्र इतिहास है जिसके पढ़ने-सुनने से मन के मनोरथ पूरे होते हैं। उसे कुछ कष्ट नहीं रहता और तीनों लोक में सिद्धि प्राप्त होती है।

सोलहवाँ अध्याय।

नारद के प्रश्न के उपरान्त ब्रह्मा बोले कि हे नारद! विष्णु की आज्ञानुकूल गरुड़ शिव के समीप आये और आदर सम्मान कर खड़े हो स्तुति की। शिव ने पूछा कि तुम कहाँ से आये। गरुड़ ने कहा कि सब वेद पुराण और सब गण इस बात पर एक मति हैं कि संसार में वह सबसे अधिक चतुर है जो आपकी सेवा और आज्ञा पालन करे। यद्यपि आप सब कुछ जानते हैं पर आप संसारी रीति से पूछते हैं। पर मुझको इन बातों से क्या प्रयोजन है? मैं हर प्रकार से सेवक हूँ। यह कहा और सब योगिनीगणों, गणेश और विष्णु के चरित्र की सब कथा वर्णन कर कहा कि विष्णु ने मुझको आपके पास भेजा है। यह सुनकर शिवजी हँसे और गिरिजा अतिप्रसन्न हुई। वीरभद्र के आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता। इसी प्रकार और सब गण भी महाप्रसन्न हुये। शिवजी ने गरुड़ से कहा कि तुम हमारे बड़े हितकारी हो। तुमसे अधिक और कोई मुझको प्रिय नहीं। जो इच्छा हो वह मुझसे वरदान ले लो। तुम हमारे उत्तम भक्त और प्राण से प्यारे हो। हमारी आज्ञा से विष्णु के वाहन हुये। गरुड़ ने प्रीतिसागर में डूबकर विनय की कि मुझको और वर क्या चाहिये। इससे अधिक और क्या है कि हमने आपके चरणों को देखा। इन्हीं चरणों के प्राप्त होने को ब्रह्मा, विष्णु देवता और मुनि आदि कैसा-कैसा तप करते हैं। जबकि आप मुझ पर प्रसन्न हुये तो मैं माया के बन्धन से मुक्ति पा चुका। मुझको यही बड़ा वरदान है। हाँ, जो आपने प्रसन्न होकर वर के लिये कहा है तो मेरी यह इच्छा है कि मुझको भक्ति प्राप्त हो। आपके चरणारविन्द की प्रीति कदापि कम न हो। आपके भक्तों की सेवा करूँ। किसी से शत्रुता न हो। शिवजी ने कहा कि यही होगा। फिर शिवजी ने सबको बुलाकर चलने की तय्यारी की। उस समय मन्दरगिरि महादुःखी हो शिवजी के चरणों पर गिर कर बोला कि महाराज मुझे मत छोड़ो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी बोले तुम खेद न मानों। तुमको मैं बहुत प्यारा जानता हूँ। हम तुम पर लिङ्गरूप होकर स्थित रहेंगे और मन से तुमको कभी न भुलावेंगे। इसी प्रकार बहुत समझाकर उसका कष्ट दूर कर दिया और लिङ्गरूप होकर मन्दरगिरि पर स्थित हुये। फिर काशी जाने लगे और शुभ लग्न पाकर चले। चलने के समय सबको बड़ा आनन्द हुआ। जिस तरह शिवजी गिरिजा और पुरी सहित चले और जो प्रसन्नता चलने के समय हुई उसको कोई कोटि मुख से भी वर्णन नहीं कर सकता। शिवजी ने गरुड़ से कहा कि तुम आगे जाकर विष्णु को हमारे आने का समाचार दो। सो गरुड़ उसी समय विष्णु के समीप आये। जब कि विष्णु अग्निबिन्दु नामी एक मनुष्य को उपदेश दे रहे थे कि गरुड़ ने पहुँचकर विष्णु को प्रणाम किया।

सत्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! प्रणाम के उपरान्त गरुड़ ने विष्णु से कहा कि महाराज! शिवजी आते हैं। यह सुनकर विष्णु अति प्रसन्न हुये और ध्वजा देखी जो असंख्य सूर्यों के समान झलकती और जिसके प्रकाश से चारों ओर उजियाला हो गया। नाना प्रकार के बाजों का शब्द सुना। जय-जय हुआ। यह समान देख विष्णु ने भी कहाकि जयशिव। फिर अग्नि बिन्दु से कहा कि हमारा चक्र छूले कि तुझको मुक्ति प्राप्त हो। सो अग्निबिन्दु ने ऐसा ही किया और मुक्त हुआ। गरुड़ को सब कुछ देकर ब्रह्मा को बुलाया और योगिनीगण और सब सूर्यों को साथ लेकर गणेश के समीप आये। ब्रह्मा को सबके आगे करके प्रसन्नतापूर्वक चले और काशी के भीतर शिव को देखकर प्रणाम किया। हमने चावल, फल, फूल हाथ में लेकर रुद्र सूक्त पढ़ आशिष दी। क्योंकि हमको शिव ने संसारी रीति से प्रणाम करने को निषेध किया। उन्होंने संसारी जीवों के समान आप मुझे प्रणाम किया और विष्णु ने शिव को प्रणाम किया। गणपति की ओर जब शिव ने देखा तो गणपति चरणों पर गिर पड़े। शिवने गणपति को उठाकर शिर सूँघने के उपरान्त अपने आसन पर बैठाया और बहुत प्रकार से गणेश की प्रशंसा की। योगिनीगण शिव की इच्छा पाकर प्रणाम के उपरान्त मङ्गल गाने लगीं और बारहों सूर्य ने भी प्रणाम किया। शिवने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विष्णु को अपने आसन पर बाईं ओर बैठा लिया। हमको दाहिनी ओर बैठाया और गणों की ओर देखकर केवल देखने ही से उनका सत्कार किया। योगिनियों का शिर हिलाकर आदर किया। बारहों सूर्य से यह कहकर कि बैठ जाओ आनन्द दिया। तब जब कि शिव काशी से बाहर बैठे थे, उत्तमोत्तम सभा अलंकृत थी। कौन ऐसा था जो उस समय आनन्द से फूला न समाता और काशी के मनुष्य तालाब के कमल के समान विराजमान थे। जोकि चन्द्रमा शिव के वियोग से मुख मूँदे थे, शिव के आने से फूल उठे। उस समय हमने शिव को प्रसन्न देखकर विनती की कि हे सदाशिव! मुझसे कुछ आपकी सेवा हो नहीं सकती। इसको क्षमा करना। फिर काशी की बड़ाई वर्णन की। शिव ने कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं। तुम कुछ भय मत करो। तुम किसी प्रकार दण्ड के योग्य नहीं क्योंकि पहिले तो ब्राह्मण हो जिसकी बड़ाई बहुत है। दूसरे अश्वमेधयज्ञ करने से कोई पाप नहीं रहता। तीसरे तुमने हमारे लिङ्ग काशी में स्थापित किये, इससे तुम्हारे सब पाप नष्ट ही गये। जो मनुष्य काशी में एक लिङ्ग भी स्थापित करे, उसके असंख्य पाप नष्ट हो जाते हैं। सिवाय इसके ब्राह्मण से चाहे हजारों पाप हों, पर वह दण्ड योग्य नहीं। जैसा कि वेद कहते हैं, जो ब्राह्मण को दण्ड देते हैं, उनका आनन्द थोड़े ही दिनों में जाता रहता है। इसी प्रकार शिव ने योगिनी, सूर्य और गणों को भरोसा देकर उनकी लज्जा दूर की। फिर शिव ने विष्णु को देखा पर जिह्वा से कुछ नहीं कहा। मन में शिव और विष्णु दोनों अति प्रसन्न हुये। उस समय सबों ने शिव की बार-बार स्तुति की सो शिव और गिरिजा बहुत प्रसन्न हो शुभ-दृष्टि से सबकी ओर देखने लगे। उस समय गोलोक में पाँच गौ आकर शिव के सम्मुख खड़ी हुईं, जो शिव को अतिप्रिय हैं। जिनकी सेवा के लिये विष्णु को गोलोक में बसाया, उनके नाम सुनने से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं। देवता और पितरों को आनन्द प्राप्त होता है। उनके नाम यह हैं—सनन्दा १ सुमना २ सिवा ३ सुरभि ४ कपिला ५। शिव ने प्रसन्नता से उनकी ओर देख दिया सो उनके थनों से दूध टपक कर कुण्डरूप हो गया। जो कपिला ह्रद के नाम से प्रसिद्ध हुआ, उसमें स्नान से कोई पाप नहीं रहता।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव की आज्ञा से सब देवताओं ने उसमें स्नान करके तर्पण किया। शिव से कहा कि यहाँ स्नान करने से हम अति प्रसन्न हुये हैं। तुम्हारे धर्म से हमने अतिप्रसन्नता प्राप्त की। हमारी इच्छा है कि इस स्थान की बड़ाई बहुत हो। शिव ने कहा कि हे विष्णु और सब देवता! हम कहते हैं कि यह सबसे बड़ा तीर्थ है। जो मनुष्य इसमें तर्पण श्राद्ध आदि करेगा, उसको गया से भी अधिक फल प्राप्त होगा। इसको शिवगयाख्य तीर्थ कहेंगे और हमारे नाम वृषभध्वजादि कहकर एक पाप भी किसी को न रहेगा। दूध, शहद, घी, जल के समान चारों युग में काशी के भीतर वर्त्तमान रहेंगे। इससे हम सब अंशस्वरूप से स्थित होंगे और सबको वर देंगे। यहाँ चाहे कोई किसी दशा में मरेगा, उसको मुक्ति दी जावेगी। शिव काशी को यह वर दे रहे थे कि नन्दीश्वरगण आये और दोनों हाथ जोड़ प्रीति से शिव की स्तुति करने लगे।

अठारहवाँ अध्याय।

नन्दीश्वर ने कहा कि हे महाराज शिवशंकर दीनबन्धु! एक कृपा की दृष्टि इधर भी कर दीजिये। मैंने आपकी आज्ञा से आठ बैल का रथ सजाया है जिनके गले में घण्टे पड़े हुये हैं। आठ घोड़े जिनकी गर्दन में भूषण पहनाया गया है, रथ में लगे हैं। सूर्य, चन्द्रमा, पवन, गंगा, सरस्वती, ब्रह्मा और व्यहृति आदि सब अपने-अपने उचित स्थानों पर अलंकृत हैं। अर्थात् यह सब रथ की सामग्री हैं। ऐसा जो रथ बना हुआ है, उस पर आप सवारी कीजिये। यह कह नन्दीश्वर चुप हो गये। विष्णु, हम और देवता आदि अति प्रसन्न हुये। शिव ने भी प्रसन्न होकर दया की दृष्टि से देख पूर्ण भक्ति कृपा की फिर शिवजी ने चलने का उद्योग किया। सब लोग इस इच्छा को जान गये। फिर सुरमाताओं ने नीराजन करके शिवजी की स्तुति की। उस समय बड़ा उत्सव हुआ। सब मनुष्यों की जिह्वा से जय-जय शब्द प्रकट हुआ। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। शिवजी को उठते हुये जानकर विष्णु ने अपना हाथ दिया। शिवजी उठ खड़े हुये। गणों ने अपने-अपने डमरू बजा दिये जिससे चारों ओर शब्द पूरित हो गया। तीनों लोक के निवासी आये, जिनका ब्योरा संक्षेप से वर्णन करते हैं। अर्थात् तेंतीस करोड़ इन्द्रादि देवता, दो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोटितुरङ्गगण, एककोटि भैरवीदल, नव कोटि चामुण्डी समाज और वीरभद्र की सेना तथा दूसरे गण अष्टकोटि जो बालक समान हैं। छियासी हजार मुनि ब्रह्मज्ञानी, सप्तकोटि गणेशजी के गण श्रीगणाधिप के साथ जिनका स्वरूप श्रीगणेश के समान था हाथों में फरसा लिये और घरों के रहनेवाले अन्य ब्राह्मण। आठ कोटि पाताल के निवासी नाग अर्थात् तक्षक आदि तीन कोटि गये और शिवजी के नौकर दनु और दिति की सन्तान अर्थात् दैत्य और दानव दो-दो कोटि आये। आठकोटि गन्धर्व, आधा करोड़ राक्षस, यक्ष और पङ्खवाले पर्वत तथा बे पर के आठ हजार। गरुड़ छः अयुत और एक अयुत विद्याधर। साठ हजार ईश्वर और तीनसौ वंशपती और वन की ओषधि आदि शरीर धारण किये, आठ लाख सात समुद्र उत्तमोत्तम रत्न भेंट लिये तथा तीन हजार और पाँच अयुत नदियाँ और आठों दिग्गज सब उस स्थान पर आये, जहाँ शिव थे। वे शिव को देखकर अति प्रसन्न हुये। सब मिलकर शिवजी की सेवा करने लगे और हर्ष से खिलखिलाते थे। कोई नाचता था, कोई गाता था, कोई जय-जय का शब्द उच्चारण करता था, कोई ध्यान में लगा था, कोई शिर से पाँव तक शिव के स्वरूप को देखता था, कोई शिवजी पर चँवर डुलाता था और कोई हाथ जोड़ स्तुति करता था। इस प्रकार सबको सेवा करते देख शिवजी ने सबकी ओर कृपा की दृष्टि से देख दिया। सबका आदर करके शिवजी रथ पर चढ़े और गिरिजा को बाईं ओर बैठाया। जब शिव को गिरिजा समेत रथ पर विराजमान देखा तो इन्द्रादिकों ने बड़ी स्तुति की। इसी प्रकार विष्णु और हम सबों ने अपनी-अपनी स्तुति पढ़कर सुनाई। सो शिवजी सबकी ओर कृपा से देखकर काशी के भीतर गये और अपने शरीर काशी को देखकर बहुत ही प्रसन्न हुये। जय काशी और जय आनन्दवन इसी प्रकार बहुत से वचन शिव मुख पर लाये, प्रेम की अधिकतासे शरीर भर गद्‌गद् हुआ और जिह्वा रुकने लगी। उस समय जैगीषव्य शिवजी के भक्त ने गुफा से निकलकर शिवजी के दर्शन किये। शिवजी ने भी उनको निकट बुलाकर दर्शन दे प्रसन्न किया। फिर काशी के निवासी सब ब्राह्मण आये। शिवजी उनका भी आदर करके वरुणा के निकट पहुँचे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और दो मन्दिर हिमाचल के बनाये हुये देखकर प्रसन्न हुये। आगे जाकर अपने भवन की तय्यारी के लिये विश्वकर्मा को आज्ञा दी। सो विश्वकर्मा ने शिवजी की आज्ञा से तुरन्त राजगृह निर्मित किया। जिसमें तीनों लोक से अधिक सामग्री लगाई। शिवजी का मन्दिर अति आश्चर्यदायक तय्यार हुआ। सो शिवजी गिरिजा, पुत्रों, गणों और देवताओं आदि समेत अति प्रसन्न हो उसमें प्रवेश कर गये। उनके सर्वदुःख नष्ट हो गये और संसारी रीति के अनुसार सबको प्रतिष्ठित करके विदा करा दिया। आप गिरिजा और परिवार समेत वहाँ जाकर प्रसन्न रहे। जो इस चरित्र को सुनेगा अथवा पढ़ेगा उसको बहुत ही आनन्द प्राप्त होगा। यह शिवजी और काशी का आख्यान किसी पाप को जलाये बिना नहीं रहता, सब पाप नष्ट हो जाते हैं और दोनों लोक के सुख प्राप्त होते हैं। शिवजी गिरिजा और गणों समेत प्रसन्न होते हैं और उसको तीनों लोक में कोई वस्तु अलभ्य नहीं।

उन्नीसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि हे पिता! जब शिवजी चले तो वह तुरन्त अपने भवन में स्थित हुये अथवा मार्ग में कहीं ठहरे। जो मनुष्य योगी, ब्राह्मण आदि दर्शनों के निमित्त आये उनका चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा कि पहिले शिवजी जब काशी में आये तो सबसे पहिले जैगीषव्य अपने भक्त के घर में गये। वह रात दिन एकान्त में रहा करते थे और शिवजी के ध्यान में डूबे रहते। उनके प्रेम से शिवजी, गिरिजा और सब गण उनके अधीन थे। जब शिव काशी को छोड़ मन्दराचल पर्वत पर जा रहे थे, तबसे जैगीषव्य मुनि ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं उसी समय अन्न और जल ग्रहण करूँगा जब फिर शिवजी के चरण कमल देखूँगा। सो यही उद्योग कर वह एकान्त में जा छिपे और शिवजी के ध्यान में रात दिन रहे। सो उन्होंने अट्ठासी हजार वर्ष तक न तो पानी पिया, न भोजन किया। यह बात या तो मुनि ने योगबल की शक्ति से की अथवा उन पर शिवजी की पूर्णकृपा थी। मुनि की बड़ाई सिवाय शिवके और कौन जान सकता है। इसी कारण शिव ने सैकड़ों उपाय अपनी काशी के लिये किये। क्योंकि शिव भक्तवत्सल हैं। धर्मात्मा राजा की हानि अपने भक्त के लिये उचित समझी।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जैगीषव्य की कुटी में शिवजी के जाने की कथा इस भाँति है कि शिवजी ने नन्दीश्वर गण को आज्ञा दी कि यहाँ एक गर्त है जिसके भीतर एक हमारा भक्त जैगीषव्य रहता है। उसके शरीर में केवल चर्म और अस्थि रह गई है। उन्होंने हमारे दर्शन के निमित्त बड़े-बड़े दुःख सहे। अर्थात् जब से हमने काशी छोड़ी, तब से वह अन्न-जल रहित रहे हैं। हमको उन्हें दर्शन दिये बिन आनन्द नहीं। इसलिये तुम हमारा कमल गुफा के भीतर ले जाकर इसी कमल से मुनि के शरीर को स्पर्श करना। वह भलेचंगे हो जावेंगे। उस समय तुम तुरन्त उन्हें साथ लेकर आना। सो नन्दी ने ऐसा ही किया। मुनि ने शिव के दर्शन किये और अति प्रेम से मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े। जब चैतन्य हुये तो तुरन्त स्तुति करने लगे जो आप उन्होंने बनाई थी। कहा कि मैं तीनों लोक में आपको सर्वोपरि समझ कर आपकी शरण में आया हूँ। ऐसी स्तुति सुन शिव अति प्रसन्न हुये। कहा कि वर माँगो। जो हमारा है, वह सब तुम्हारा है। मुनि ने विनय की कि जो आप प्रसन्न हैं तो हमारे शिर पर अपना हस्तकमल रखिये। मेरी इच्छा है कि आपके चरणों से कभी दूर न रहूँ। आपके निकट और आपके प्रेम में डूबा रहूँ। दूसरी यह इच्छा है कि जो लिङ्ग कि मैंने आपका स्थापित किया है, उसमें आप गणपति और स्कन्द सहित स्थित होवें। शिवजी बोले बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा। बिन तुम्हारे माँगे हम यह वर तुमको देते हैं कि तुमको योग प्राप्त हो जिससे निर्वाणपद मिलेगा। तुम्हीं योगशास्त्र के आचार्य होगे। तुमही सबको उपदेश करोगे और सब संदेहों को दूर करोगे। जैसे हमारे गण, भृङ्गी, सोम और नन्दीश्वर हैं वैसे ही तुम भी हमारे एक गण होगे। हमारे भक्त जरा और मृत्यु से वर्जित हैं। तुम मुझे बहुत प्यारे हो। यद्यपि संसार में बड़े-बड़े संयम नियम और भी हैं पर तुम्हारे नियम के समान एक भी नहीं है। अर्थात् तुम्हारा नियम है कि बिन हमारे देखे भोजन नहीं करते और पानी नहीं पीते। वास्तव में जो मनुष्य हमारे दर्शन बिन भोजन करता है, उसके समान दूसरा पापी नहीं है। जो हमारी पूजा बिन जल पीता है, वह तो मानो नरक में प्रवेश करता है। मानों वह बुरी वस्तु का खानेवाला है। उसके समान पापी संसार में दूसरा नहीं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हम तुम्हारे नियम से अतिप्रसन्न हैं। तुम हर समय हमारे निकट रहोगे। तुमको जीवन्मुक्ति प्राप्त रहेगी। तुम्हारी समानता किसी भक्त के साथ तीनों लोक में न की जावेगी। तुमको कभी कुछ दुःख न होगा। जो लिङ्ग तुमने हमारा स्थापित किया है, वह जैगीषव्यकेश्वर के नाम से प्रसिद्ध होगा। जो मनुष्य उसकी तीन वर्ष तक सेवा करेगा, वह पूर्णयोग पावेगा। उसके दर्शन से सिद्धि और आनन्द प्राप्त होगा तथा निन्दा और पाप नष्ट हो जावेंगे। जो मनुष्य तुम्हारी गुफा में तुमको प्रणाम, दण्डवत् और स्मरण कर जावेगा, वह छः महीने में सुगमतापूर्वक योग पाकर सिद्ध हो जावेगा। उसके सब पाप नष्ट हो जावेंगे, यह हमारी आज्ञा है। इसका नाम ज्येष्ठेश्वर क्षेत्र होगा। इस स्थान पर आने से सर्व प्रकार की प्रसन्नता प्राप्त होगी। यहाँ पर एक शिवयोगी के भोजन कराने से करोड़ योगियों के खिलाने का फल होगा। जो तुम्हारा लिङ्ग स्थापित किया हुआ है उसमें हम पूर्णरूप से सदा स्थित रहेंगे। पर कलियुग में यह लिङ्ग सबकी दृष्टि से छिपा रहेगा। जो योगी योग के साधनेवाले हैं, उनको योग दिया जावेगा। मैं उसके दर्शन से सर्व पाप नष्ट करूँगा। जो स्तुति तुमने बनाकर पढ़ी, वह सब स्तुतियों की शिरोमणि होगी। इसके पढ़ने से सब मनोरथ पूरे होंगे, बड़े-बड़े पाप जाते रहेंगे, पुण्य बढ़ेगा, भय दूर होगा, सर्वयोग साधने के लिये अति लाभदायक होगा, हमारी भक्ति बढ़ेगी और हानि न होने पावेगी। इसके पढ़ने-सुनने से लोक में कोई ऐसा कार्य नहीं जो न हो सकेगा। इससे यह तुम्हारी स्तुति युक्ति से पढ़ने के योग है और प्रतिदिन सुननी चाहिये। यह सुनकर मुनि शिवजी के चरणों पर गिर पड़े और स्तुति करने लगे। शिवजी ने उनको पृथ्वी पर से उठाकर अपने हृदय से लगा लिया। विष्णु और हमने भी मुनि को लिपटा लिया। ऐसी दयालुता शिवजी की देख सबको आनन्द प्राप्त हुआ। सबके मन में शिवजी के प्रेम ने बल किया और सबने शिवजी की स्तुति की। सब शिवजी की सेवा में प्रवृत्त हो जय-जय करने लगे। जब शिवजी ने आगे जाना चाहा तब सब ब्राह्मण अगवानी को आये।

बीसवाँ अध्याय।

नारदजी ने पूछा कि जो वार्त्ता ब्राह्मणों और शिवजी में हुई, वह वर्णन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कीजिये, वे ब्राह्मण कितने थे? ब्रह्माजी बोले कि जब सदाशिवजी काशी को छोड़ मन्दरगिरि पर चले गये थे, तब काशी के ब्राह्मणों ने अतिदुःखी हो सम्मति की और अपने घरों का प्रेम छोड़ केवल काशी की प्रीति को दृढ़कर क्षेत्रसन्यास लिया और शिवजी की प्रीति में अटल हो काशी में स्थित हुये। वे अपने दण्ड से पृथ्वी खोद वृक्षों के मूलादि निकालकर खाते थे। उस स्थान का नाम पुष्करिणी हुआ जिसके दर्शन से सब अर्थ पूरे होते हैं। उसी स्थान पर उन्होंने शिवलिङ्ग स्थापित किया और सदाशिव का तप करते रहे। उन्होंने युक्तिपूर्वक रुद्राक्ष की माला पहिनकर शरीर में भस्म लगाई और प्रतिदिन शतरुद्री का जपकर शिवलिङ्ग की पूजा किया करते थे। शिवजी के ध्यान में प्रवृत्त रहकर शिवजी के स्मरण व सिवाय और कुछ नहीं जानते थे। शिवजी के उत्तमोत्तम व्रत रखकर पापों के करने से बचते थे। उन्होंने अपने-अपने स्थानों में शिवलिङ्ग स्थापित किये थे। जब कि ऐसे ब्राह्मणों ने शिवजी का आगमन सुना तो अतिप्रसन्न हो शिवजी के दर्शन को चले। उनकी संख्या नीचे लिखे के अनुसार थी।

उस स्थान का नाम जहाँ से ब्राह्मण आये	संख्या	उस स्थान का नाम जहाँ से ब्राह्मण आये	संख्या
दण्डाघाट	५०००	पितृकुण्ड	१००
मन्दाकिनीतीर्थ	१००००	उर्वशीहद	१००
हंसक्षेत्र	३००	प्रथोदकतीर्थ	१३००
ऋणमोचनतीर्थ	१२०००	यक्षिणीहद	३१००
दुर्वासातीर्थ	१२०००	पिशाचमोचनकुण्ड	१६००
कपालमोचन	१६०००	मानसर	३००
ऐरावतहद	३००	वासुकिहद	१ अयुक्त
मैनकुण्ड	२००	सीताहद	८००
गन्धर्वाप्सरसाख्य	६००	गौतमहद	६००
वृषपतितीर्थ	३६०	दुर्गतिहर	११००
वैतरणी	१५०	गङ्गा के निकटवर्ती	
ध्रुवतीर्थ	६००	ब्राह्मण	५५५

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह सब पूर्वोक्त ब्राह्मण शुभ वस्तु हाथ में लिये हुये जय-जय कहते शिवजी के समीप आये और शिवजी का एक दृष्टि से दर्शन कर कृतार्थ हो गये। उन ब्राह्मणों ने शंकरसूक्त पढ़कर स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न होकर कुशल पूछी। ब्राह्मणों ने कहा जब आप कृपा करते हैं तो कुशल ही है, दुःख कोई नहीं। फिर कहा हे महाराज! जब आपने काशी को छोड़ दिया हमारे मनों में दुःख ने अपना स्थान किया। हम सबने सम्मति की कि सब छोड़ काशी में पड़े रहें। क्योंकि काशी को शिवरूप करके बखाना गया है। यहाँ के रहने से कुछ हानि न होगी। सो हम सब यहाँ स्थित रहे और आपके ध्यान में लग आपको देख बड़ा फल पाया। इससे अधिक और कोई फल वेद ने भी नहीं कहा। धन्य हैं आपकी काशी जो तीनों लोक से निराली है। जहाँ रहने से कोई पाप नहीं रहता। यहाँ रहकर जो आपका ध्यान करे, वह सबसे श्रेष्ठ है और वह धन्य है। फिर ब्राह्मणों ने काशी की बहुत स्तुति कर कहा कि काशी और शिवजी एक ही रूप हैं। इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! वास्तव में काशी शिव का स्वरूप और शिव काशी का अङ्ग है। यह बात निश्चय करके वेद कहते हैं जैसे कि गौरीशंकर एक ही तनु हैं, वैसे ही काशी और विश्वनाथ एक ही हैं। इनमें कुछ भी अन्तर नहीं है। जैसे शब्द और अर्थ में कुछ भिन्न भावना नहीं, वैसे ही इनमें भी भिन्नता नहीं। जो मनुष्य काशी में बसकर शिव का भजन करे, उसके समान कोई भाग्यवान् मनुष्य नहीं। निदान काशी की प्रशंसा के वचन सुन शिव-शंकर अति प्रसन्न हुये और श्रीमुख से बोले कि तुम सब धन्य हो। तुम सबने मुझको अपने अधीन कर लिया। तुम्हारी जो काशी पर इतनी भक्ति है तो तुम सब मुक्त हो। जो काशी के भक्त हैं, वे अवश्य मेरे भक्त हैं। जो दोनों के भक्त हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकता। जब तुम दोनों प्रकार से मेरे भक्त हो, तुम्हारी बराबर और कोई हमारा भक्त नहीं है। तो हर प्रकार से तुम निर्भय हो गये हो। यह काशी हमको अति प्रिय है। इसके सेवन करनेवाले पापी नहीं हो सकते। यह काशी हमारे सिवाय तीनों लोक से भिन्न है। यहाँ किसी दूसरे की आज्ञा न यमराज की कुछ चल सकती है। तुम काशीवाशियों से न हम और काशी दूर है। तुमको जो वर चाहिये,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माँग लो। हम प्रसन्नता से देवेंगे। काशी में क्षेत्रसंन्यास करनेवाले मुझे अतिप्रिय हैं। वे इस भवसागर से पार उतर जावेंगे। ऐसे अमृत वचन शिवजी के सुन वे ब्राह्मण मानो अमृत पीकर जी गये। वे सब बार-बार प्रणाम करके प्रसन्न हुये और दोनों अपने हाथ बाँध सब ब्राह्मणों ने यह वर माँगा कि आप काशी को कभी न छोड़ें। हमको केवल यही वर दीजिये और काशी में ब्राह्मणों का शाप किसी पर फल न करे। यहाँ मरने से सायुज्यमुक्ति मिले और आप के चरणों का प्रेम अधिक हो। माया की बन्धि में कोई न फँसे। जो लिङ्ग कि हम सबने यहाँ स्थापित किये, आप उनमें सदा शक्तिसहित स्थित रहें। शिवजी बोले कि यही होगा। फिर सबकी ओर दया की दृष्टि से देख सबके दुःख दूर कर दिये और श्रीमुख से काशी की बड़ाई बखान सबको बिदा कर दिया। सो सब ब्राह्मण बिदा होकर शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये। शिवजी वहाँ स्थित रहकर अपने भक्तों समेत नाना प्रकार की लीला करते रहे।

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! शिवजी काशी में स्थित होकर विश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञा दी कि पूर्वकाल के समान शिवनगरी तुरन्त रचो और सब उत्तमोत्तम शिवालय बनाओ। गणों के रहने के लिये उत्तमोत्तम मन्दिर सजाओ और देवताओं के लिये भी उसी के अनुसार भवन रचो। गिरिजा और उनके पुत्रों के लिये अतिसुन्दर मन्दिर निर्माण करो। फिर विश्वेश्वरजी महाराज का भवन बनाओ। निदान हर प्रकार से हमारा मन्दिर अति सुन्दर बना दो जैसा कि तुमको वर दिया था। यह सुन विश्वकर्मा ने अतिकृतकृत्य हो दण्डप्रणाम के अनन्तर सब मन्दिर बनाये। जहाँ जिसका स्थान था, वहाँ नये शिर से भवन बनाये। उनको मणि बहुमूल्य वस्तु और नाना प्रकार के रङ्गों से अलंकृत किया। गणपति का मन्दिर बड़ी कारीगरी से बनाया जिसे देख आश्चर्य होता है। विश्वनाथ का मन्दिर ऐसा निर्मित किया जिसकी प्रशंसा हम वर्णन नहीं कर सकते। जो असंख्य रत्नों से अलंकृत और नाना प्रकार की शिलाओं से सुशोभित जिसमें तीनों लोक की सम्पदा लगाई, वह सर्वोपरि मन्दिर बना। इतना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन नारद ने प्रश्न किया कि आप विश्वनाथजी के मन्दिर का विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! उस सुन्दर मन्दिर की भीतें सुवर्ण की रत्नों से जड़ी हुई जिनके स्पर्श से शब्द होता और वे जलती हुई अग्नि और सूर्य के समान प्रतीत होती थीं। उनमें बारह सहस्र खम्भे और इक्यासी-इक्यासी भूधर थे जिनको देख चौदह भुवन की सुन्दरता लज्जित होती थी। जो शिलायें कि खम्भों की दृढ़ता के निमित्त लगी हुई थीं, केवल चन्द्रकान्तिमणि की थीं। उनमें पद्मराग और मरकतमणि की पुतलियाँ बनी हुई थीं जिनके हाथों में रत्नों के दीपक बने हुये थे जो रात दिन जला करते थे। उत्तम सफेद पत्थर पर रत्नों की बेलें, बूँटें और सब देवताओं की मूर्तियाँ सुशोभित थीं। जितने रत्नाकर समुद्र में रत्न थे, वह सब गणों ने इकट्ठे किये थे। जितनी उत्तमोत्तम मणि नागों के कोषों में थीं, वह भी सब गणों ने तुरन्त ला दीं। रावण ने असंख्य सुवर्ण अपने पास से भेजा था। इसी प्रकार और दैत्यों में जो शिवभक्त थे, उन्होंने नाना प्रकार के रत्न प्रेषित किये। यह जो हमने वर्णन किया, इसको केवल संसार की रीति समझना, नहीं तो शिव को क्या इच्छा है। क्योंकि जो वह चाहें तो असंख्य रत्नों के वृक्ष उत्पन्न कर दें, न कि दूसरों का धन लेवें। निदान विश्वनाथ के समान दूसरा मन्दिर न था जिसकी शोभा एक मनुष्य से सुन हिमाचल मोहित हो गया। इतना सुन नारद ने आश्चर्यपूर्वक ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये। ब्रह्मा बोले जिस समय में शिव काशी में पहुँच मन्दिर की तय्यारी करने लगे थे, उन्हीं दिनों गिरिजा की माता मैना ने अति खेद से ठंढी स्वास भरकर कहा कि बहुत सा समय बीता कि गिरिजा का हाल मैं नहीं जानती। मैं निश्चयपूर्वक जानती हूँ कि जो गिरिजा को यहाँ आनन्द था, वह वहाँ क्यों होगा। क्योंकि गिरिजा के पति के पास भस्म और बुड्ढे बैल के सिवाय और क्या होगा। यह सुनकर हिमाचल अति-चिन्तित हुये। उन्होंने कहा कि जब से गिरिजा गई, मानों हमारे घर से धन चला गया। यह कहकर हिमाचल ने गिरिजा के देखने और उसको धन देने के लिये तय्यारी की। उन्होंने अपने साथ दो कोटि तुला मुक्ता, सौ तुला हीरा,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ग्यारह लाख तुला विघ्ननाद, षोडश सहस्र तुला इन्द्रनीलमणि, नव कोटि तुला पन्नरत्न और विद्रुम रत्नादि साथ लिये। उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण, छत्र और सोने की कुछ गणना नहीं, इसी प्रकार हिमाचल यह सब सामग्री गिरिजा के देने को लदाकर अति अहंकार से मन्दराचल में पहुँचे। जब सुना कि शिव काशी को पधारे तो चलकर काशी में आये। देखा कि असंख्य रत्नों से मन्दिर अलंकृत है, कलश सोने के और पताका उत्तमोत्तम मणियों की बनी हुई है। विश्वनाथजी का मन्दिर जो बहुत ऊँचा और आश्चर्यदायक है, देखकर मन में हिमाचल अति लज्जित हो अहंकार हीन हुआ। उसने कहा इससे बढ़कर कोई मन्दिर तीनों लोक में नहीं। जो धन इसमें दिखाई देता है, वह कुबेर के घर और वैकुण्ठ में भी नहीं है। इसी विचार में था कि उसको एक काशी का मनुष्य दिखाई दिया। हिमाचल ने पूछा कि वह किसका नगर है? उस शिवभक्त को शिवजी ने विदेशियों की सेवा का काम सौंपा हुआ था। बोला कि यह शिवपुरी है। अभी उनको मन्दर-गिरि से आये छः दिन बीते हैं। वे अभी ज्येष्ठेश्वर में गिरिजादि सहित रहते हैं। तुम तो कुछ मूर्ख जान पड़ते हो कि गिरिजापति को नहीं जानते जिनकी सेवा तीनों लोक करते हैं। यह कह उसने काशी का सब वृत्तान्त कह सुनाया। फिर जो मन्दिर शिव का काशी में बनता था, उसका हाल कहा। हिमाचल इस प्रकार से शिवजी को धन में पूर्ण देख अति प्रसन्न हुये। उस पुरुष को बहुत धन दे बिदा किया। फिर अपने मन में सोचने लगे कि शिवजी और गिरिजा महाधनी हैं। मैं उनके सामने तृण के समान भी नहीं। मैं आज तक सत्यमार्ग भूले हुये था कि शिवजी को दरिद्री जानता था। अब मुझे पूर्ण विश्वास हुआ कि शिवजी से बड़ा कोई नहीं है। मैं भेंट नहीं करूँगा क्योंकि मेरे पास भेंट करने योग्य सामग्री नहीं है। बहुत ही न्यून सामग्री है। फिर उसने अपने सेवकों को बुलाकर आज्ञा दी कि रातभर में एक शिवालय बनवाओ, भोर न होने पावे। क्योंकि जो काशी में शिवालय बनाता है, उसके दोनों लोक का दुःख निवृत्त हो जाता है। सो रात भर में शिवालय बन गया। हिमाचल ने चन्द्रकान्तिमणि का शिवलिङ्ग बनाकर शिवालय में स्थापित किया और उसकी स्थापना में असंख्य धन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व्यय किया। एक पाटी जिसमें अपना नाम और गोत्र आदि सब लिखा था, शिवालय में लगा दी। फिर तुरन्त पञ्चनद में स्नान कर कामराज शिवजी की पूजा में प्रवृत्त हुये। जो कुछ धन द्रव्य शेष रह गया था, वह सब इधर-उधर फेंक दिया और आप साथियों समेत घर पहुँचा। हिमाचल ने जो रत्न फेंक दिये थे, वह अपने आप इकट्ठे होकर शिवलिङ्ग बन गया। यह दोनों लिङ्ग अर्थात् एक जो हिमाचल ने स्थापित किया और दूसरा जो शेष रत्नों से बन गया, पञ्चनदहद और हरव्रता के तटपर प्रकट हुये। यह आख्यान पढ़ने और सुननेवालों के लिये आनन्ददायक और भक्ति का बढ़ानेवाला है।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब प्रभात के समय हरडन और मुरडन नामी दो गणों ने उठकर दो नये शिवालय देखे तो अति प्रसन्न हो दौड़कर शिवजी से वह सब वृत्तान्त कहा कि महाराज किसी बड़े धनवान् भक्त ने आपका शिवालय वरुणा नदी के तट पर बनाया है। कल सन्ध्या तक उस स्थान पर हमने कोई मन्दिर नहीं देखा था, इस समय हमने देखा है। शिवजी ने गिरिजा को रथ पर चढ़ा वरुणानदी के निकट पहुँच शिवालय देखा। यद्यपि वह एक रात्रि में बना था पर ऐसा उत्तम था कि उसके समान दूसरा न था। शिवजी गिरिजा सहित भीतर गये और चन्द्रकान्तिमणि का शिवलिङ्ग देख उनको यह इच्छा हुई कि इसके बनानेवाले को जानें। इतने में उनकी दृष्टि पाटी पर पड़ी। उसको पढ़ शिव ने गिरिजा से कहा कि अपने पिता के बनाये हुये शिवालय को देखो। वह तुम्हारे देखने को यहाँ आया था पर उत्तम अवकाश भेंट का न पाकर लौट गया और हमारा लिङ्ग स्थापित कर गया। तुम्हारा पिता धन्य है। अब मुझे वह बहुत प्रिय जान पड़ता है। गिरिजा ने यह बात सुनकर अति प्रसन्नता और प्रेम से कहा कि यह शिवलिङ्ग हमारे पिता ने वरुणा के तटपर स्थापित किया है। इसमें आप पूर्णांश से रातदिन स्थित रहें। यह लिङ्ग गिरीश्वर के नाम से प्रसिद्ध होकर इसके पूजनेवाले दोनों लोक में आनन्द पावें। शिव ने कहा यही होगा। फिर शिव और गिरिजा ने इस लिङ्ग को और भी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत प्रकार के वर दिये। सबसे उस लिङ्ग की पूजा कराई। फिर वहाँ से निकलकर शिव और गिरिजा बाहर आये। वे इधर-उधर भ्रमण करते थे। जब धीरे-धीरे कालराज के समीप पहुँचे तो कालराज के उत्तर एक उत्तम शिवलिङ्ग देखा। गिरिजा बोलीं कि यह लिङ्ग तो इस समय नवीन दिखाई दिया है जिसके तेज का प्रकाश आकाश तक फैला हुआ है। इसकी उत्पत्ति, स्वरूप और प्रभा वर्णन कीजिये। शिवजी ने उत्तर दिया कि तुम्हारा पिता हिमाचल बहुत रत्नादि लदवाकर लाया था। सो हमारा लिङ्ग स्थापित कर जो धन कि इसके पास शेष रह गया था, वह यहाँ फेंक गया। उसके पुण्य से सब इकट्ठा होकर यह लिङ्ग बन गया। इसका नाम रत्नेश्वर होगा। हे गिरिजा! हमारे लिये या तुम्हारे लिये जो कोई मनुष्य भक्तिपूर्वक धन संकल्प करता है, उसका फल इसी प्रकार का होता है। उसे दोनों लोक में आनन्द मिलता है। जोकि काशी के शिवभक्तों में यह लिङ्ग रत्नों का है, इससे हम इसका नाम रत्नेश्वर रखते हैं। जो सुवर्ण कि तुम्हारा पिता डाल गया है, उससे तुम इस लिङ्ग का शिवालय बनाओ। क्योंकि शिवालय बनवाने में सर्व कर्म जो अपूर्ण रह जाते हैं, वह पूर्ण होते हैं। लिङ्ग स्थापित करने से हर वस्तु प्राप्त होती है। इसी प्रकार कलश चढ़ाने से भी वही फल होता है। ध्वजा के स्थापित करने से जितने पर्व ध्वजा के हों उतने कल्पपर्यन्त वह मनुष्य कैलाश में रहता है। वायु के चलने से जितनी बेर वह वस्त्र हिले उतने समय तक वह मनुष्य शिरपुर में स्थिति पाता है। यह सुन गिरिजा ने गणों को शिवालय बनाने की आज्ञा दी। सो सोम और नन्दी आदि गणों ने हिमाचल के फेंके हुये सुवर्ण से शिवालय बना दिया जिसको देख गिरिजा ने बहुत प्रसन्न हो सब गणों को बहुत वर दिये। फिर शिव ने गिरिजा के कहने के अनुसार रत्नेश्वर शिवलिङ्ग को वह वर दिया कि जो कोई इस लिङ्ग की पूजा करेगा, वह मानों सब लिङ्गों की पूजा कर चुका। यह लिङ्ग अनादि सिद्ध होगा। सो एक नाचनेवाली स्त्री केवल रत्नेश्वर शिवलिङ्ग में नृत्यकर मुक्त हो गई। यह कथा विस्तारभय से वर्णन नहीं की। फिर शिव और गिरिजा अपने स्थान पर आये और हर प्रकार के आनन्द में लगे रहे। इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद!

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव और गिरिजा परब्रह्म हैं। केवल संसार की भलाई के लिये ऐसे-ऐसे चरित्र लीला और शरीर धारण करते हैं। इस चरित्र के पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में सुख प्राप्त होता है।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब तक भवन तय्यार नहीं हो चुका, तब तक शिव काशी में भ्रमण करते रहे और बहुत से शिवालयों में पहुँच बड़ी लीला और उत्सव किया किये। विराजेशपीठ जो प्रसिद्ध स्थल है, वहाँ पर शिवजी और स्थानों से अधिक ठहरे। त्रिलोचन शिवलिङ्ग जो वहाँ पर है, उसकी बड़ाई वर्णन की और विष्णु से काशी की महिमा तथा सब शिवलिङ्गों की स्तुति जो काशी में है और तीर्थादिकों की बड़ाई वर्णन कर रहे थे कि इतने में नन्दीश्वर ने आकर विनय की कि महाराज भवन बन चुका है। मैं रथ सजाकर लाया हूँ। आप कृपा करके चलिये क्योंकि इन्द्र और ब्रह्मा आदि सब द्वार पर स्थित हैं। अब सब की यह इच्छा है कि आप वहाँ चलकर सुशोभित होवें। शिवजी अति प्रसन्न हो गिरिजा सहित भवन में गये। उस समय बड़ी धूमधाम हुई। बाजे बजने लगे। वेदध्वनि ने चारों दिशा पूरित की। दान बहुत हुआ। उस समय सब लोक भर में आनन्द छा गया। हम सब प्रसन्न हुये। गन्धर्व गाने लगे और अप्सरा नाचने लगीं। उत्तम पवन बही। आकाश से पुष्पों की वृष्टि हुई। निदान सर्व-सामग्री आनन्द की इकट्ठी हुई। उस समय कोई ऐसा मनुष्य न था जिसके मन में कुछ दुःख रहा हो। सर्व मनुष्य आनन्दसागर में डूब गये। फिर हम, विष्णु और देवताओं ने शिवजी का अभिषेक किया और सब तीर्थों का जल छोड़ा। उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण शिवजी और गिरिजा ने पहिने। विष्णु और हम सबने भेंट दी और आरती उतारी। विष्णु ने एक बेर मुख की, चार बेर चरणों की, दो बेर नाभि की और सात बेर सर्वाङ्ग की आरती उतारी। इस तरह चौदह बेर आरती उतारी जाती हैं। फिर हम, विष्णु और सब देवतादि ने एक-एक स्तुति बनाकर पढ़ी और विनय की कि हमारी पालना प्रसन्न होकर करो। यह कहकर हम सब चुप हो गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौबीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! ऐसी स्तुति सुन शिवजी प्रसन्न हुये और जिसने जो माँगा, उसको वही वर कृपा किया। फिर विष्णु को हमारे सहित निकट बैठाकर उनसे कहा कि आपके समान हमारा कार्य करनेवाला दूसरा नहीं है। तुम्हारी बड़ाई से हमने काशी पाई। जो तुम्हारी इच्छा हो वह वर माँगो। विष्णु ने प्रणाम कर कहा कि हमको अपनी भक्ति की कृपा करो। शिवजी बोले यही होगा। फिर शिवजी ने काशी की बड़ाई वर्णन की। फिर मुक्त-मण्डप की गाथा कह सुनाई। जहाँ पर कि महानन्द ब्राह्मण ने मुक्ति पाई थी उसका दूसरा नाम कुकुटमण्डप है। यह बात सुनकर नारदजी ने पूछा कि कब से उस स्थान का नाम कुकुटमण्डप हुआ ? कृपा करके महानन्द की कथा सुनावो। ब्रह्माजी बोले कि विष्णु ने शिवजी से विनय की कि आप मुझको यह भविष्यत् कथा सुनावें। मुख्य करके कुकुटमण्डप की कथा कहें कि क्योंकर वह तीनों लोक को सुखदायक होगा। यह सुनकर शिवजी बोले कि हम भविष्यत् कथा कहते हैं कि अब जो द्वापर युग आवेगा उस युग में यहाँ एक मनुष्य महानन्दनामी ब्राह्मण उपजेगा। वह ऋग्वेद में बड़ा पण्डित होकर दानादि न लेगा। वह महाशीलवान् शुभ कार्य-कर्ता और छलादि से रहित रहकर हर प्रकार से शुभकार्य करेगा। कुछ दिन के उपरान्त उसका पिता मर जावेगा। जब वह तरुण होगा तब कामदेव के वेग से एक अन्यजाति की स्त्री को बिठाकर अपने प्राचीन मार्ग को छोड़ उसके साथ भोग-विलास करेगा और उसके अधीन होकर मद्यादि पियेगा। जो वस्तु अभक्ष्य हैं, उनको खावेगा। धनवान, विष्णु भक्तों को देख आप भी वैष्णव बनकर शिवभक्तों की निन्दा करेगा। इसी प्रकार शैव बनकर वैष्णवों की निन्दा करेगा। निदान इसी प्रकार वही छली होकर अपने सब धर्म नष्ट कर देगा और मस्तक में तिलक लगाकर श्वेतवस्त्र पहनकर बड़ी माला पहने हुये बड़ी धूर्तता करेगा। झूठ बोलने के लिये बड़े-बड़े उपाय करेगा। वह अपने छल से सबको धोखा देगा। प्रकट में निर्मल पर हृदय में महामलिन और उस पर यह कि एक पर्वत का निवासी तीर्थस्थान के निमित्त आवेगा। जो बहुत धन देने को साथ लावेगा, वह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चक्रतीर्थ में स्नान कर यह बात कहेगा कि मैं जाति का चाण्डाल हूँ पर धनवान् हूँ। दान देना चाहता हूँ, पर यहाँ कोई दान लेना अङ्गीकार न करेगा और अँगुली उठा उसकी ओर सैनकर सब कहेंगे कि यह जो बैठा है, तुम्हारा दान लेगा। यह सुनकर वह चाण्डाल उसके पास जाकर दान लेने के लिये विनती करेगा। तब महानन्द कहेगा कि जितना धन तुम लाये हो, वह सब मुझको दो और किसी को न दो तो मैं लेता हूँ। चाण्डाल कहेगा कि जो द्रव्य मैं लाया हूँ, वह सब शिवजी की प्रसन्नता के निमित्त हैं। मैं तुमको शिव के समान जान सब तुमको देकर प्रसन्न करूँगा। काशी में जो अति नीच हैं, वे भी शिव के अंश हैं, उनके समान और कोई नहीं। निदान वह चाण्डाल महानन्द को दान देकर चला जावेगा और महानन्द को उसी दिन से सब चाण्डाल मानने लगेंगे। सो महानन्द घर में गुप्त रहा करेगा। लज्जा और संकोच के कारण अपनी स्त्री सहित नगर से निकल जावेगा और काशी छोड़ कीलक देश को जावेगा। मार्ग में ठगों का समूह आकर उसको पकड़ वन में ले जावेगा और धन द्रव्य लेने के अनन्तर वे कहेंगे कि अब हम तुझे मारे डालते हैं, जिसका स्मरण करना हो करले। तब महानन्द को बुद्धि उपजेगी कि जिसके लिये हमने यह धन लेकर धर्म खो दिया, वह भी खो दिया और मरने के समय हमने काशी भी छोड़ी। इसी प्रकार वह अपने कुल का स्मरण करेगा। निदान ठग उसको मार डालेंगे। फिर चारों ठग काशीमाहात्म्य सुनकर काशी में आवेंगे और मुक्तमण्डप के समीप स्थित होकर प्रति दिन गंगा स्नान कर शिवकथा सुन निर्मल हो जावेंगे। फिर वे हमारी कृपा से मोक्ष पावेंगे। उस समय से इसका नाम मुक्तमण्डप हो जावेगा।

पच्चीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह कथा शिव से सुनकर विष्णु अति प्रसन्न हुये। इतने में बड़े शब्द से घण्टा सुनाई दिया। शिव ने नन्दी से कहा कि देखो, यह शब्द कहाँ होता है। मुझे वे मनुष्य अतिप्रिय हैं जो घण्टा कि मुझको बहुत प्रिय है, बजाते हैं। सो नन्दी ने देख आने के पीछे विनय की कि महाराज शृङ्गारमण्डप जो आपका घर है, वहाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह उत्सव हो रहा है। आपकी पूजा आपके भक्त कर रहे हैं। यह सुन शिव अति प्रसन्नता से उठ सर्वसभा सहित उस स्थान पर गये। उस स्थान का नाम रङ्गमण्डप था जो शृङ्गारमण्डप के नाम से प्रसिद्ध है। सो शिव गिरिजा सहित पूर्वमुख बैठ गये। हम दाहिनी ओर और विष्णु बाईं ओर बैठे। इन्द्र पंखा डुलाने लगे। अन्य देवता चारों ओर स्थित हुये। सर्वगण पीछे खड़े होकर सेवा में प्रवृत्त हुये। उस समय शिव ने अपना दाहिना हाथ उठाकर विष्णु के द्वारा सबसे कहा कि यह लिङ्ग हमारा जिसका नाम विश्वनाथ है, देखो, यह परम ज्योतिःस्वरूप है। यह सबको आनन्द देता है। इसका नाम अविमुक्त और मुक्तिपद भी है। इसकी सेवा से कोई पाप रह नहीं जाता। तीनों लोक में विश्वेश्वर के समान और कोई हमारा दूसरा लिङ्ग नहीं है। यह पूर्ण सदाशिव है और हमारी परमज्योति और सर्वलिङ्गों से श्रेष्ठ है। तीनों लोक के सार यह तीन हैं अर्थात् विश्वेश्वर हमारा लिङ्ग १ मणिकर्णिका २ और काशीपुरी ३। यह कहकर शिव और गिरिजा ने विश्वनाथ का पूजन किया तथा बड़े उत्सव और आनन्द के उपरान्त स्तुति की। फिर वीरभद्र और गणपति ने पूजन किया। फिर विष्णु ने लक्ष्मी सहित उनको पूजा। फिर हमने सावित्री सहित पूजा की। निदान सबने क्रमपूर्वक उनको पूजा और बड़ा उत्सव हुआ। नाना प्रकार के बाजे बजे और नाच गान सब कुछ हुआ। देवताओं की पत्नियाँ भलीविधि नृत्य करने लगीं। किन्नर और गन्धर्व उत्तम रीति से गाने लगे। आकाश से फूलों की वर्षा हुई। मुनीश्वरों ने स्तुति की। उस समय वेद और पुराण सब शरीर धारकर आये। उन्होंने शिव और गिरिजा की स्तुति की जो अति पवित्र और रोचक है। फिर विष्णु और हम देवताओं ने स्तुति की। उस समय शिव ने गिरिजा सहित अति प्रसन्न हो कृपा की दृष्टि से सबकी ओर देख दिया जिससे हम सबके मनोरथ पूरे हो गये। फिर शिव सबके देखते-देखते गिरिजा और पुत्रों सहित अन्तर्धान हो गये और विश्वनाथ के लिङ्ग में समा गये। इस बात को कोई मनुष्य न जान सका। शिव का प्रभाव आश्चर्यदायक है। फिर अपने लोक में जाकर कैलासवासी हो गये और लिङ्गरूप करके काशी में स्थित रहे। यह देख सब अचम्भे में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रह गये और स्तुति करके मनमानी मुक्ति पाई। अपने-अपने अंशों को काशी में स्थापित करके सब चले गये और शिव का नाम जपकर उनका ध्यान करके प्रसन्न रहे। सदाशिव और गिरिजा के चरित्र वर्णन करते रहे जिनके वर्णन से मन में शिव की प्रीति उत्पन्न होती है। यह शिवचरित्र अति आनन्द का देनेवाला है। इसके पढ़ने से शिव अति प्रसन्न होते हैं।

इति श्रीशिवपुराणे षष्ठखण्डे ब्रह्मानारदसंवादे काश्युपाख्यानवर्णनं

नाम पञ्चविंशोऽध्यायः ।। २५ ।।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव पुराण भाषा

—:०:—

उत्तरार्द्ध

—:०:—

सातवाँ खण्ड

पहिला अध्याय ।

नारद ने पूछा कि हे ब्रह्माजी ! आप शिवजी के सब अवतार वर्णन कीजिये। जिस प्रकार शिवजी ने अवतार धारकर अच्छे-अच्छे चरित्र और लीलायें की। जो शिवजी के सेवक हैं, उनको धन्य है। वह मुक्ति को प्राप्त होते हैं और अन्य मनुष्यों को भी पार लगाते हैं। उनके समान तीनों लोक में कोई नहीं। श्रीब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! शिवजी परब्रह्म, निर्गुण, सगुण स्वरूप वपुधारी, सत्, चित्, आनन्द, सर्वव्यापक, निरुपाधि, अलख, निरञ्जन और ज्योतिस्वरूप हैं। उनको वेद भी नेति-नेति वर्णन करके उनका आदि और अन्त नहीं विचार सकते। सब अपनी बुद्धि से उनकी स्तुति वर्णन करते हैं और मुनीश्वर भी उसी प्रकार स्मरण करके ध्यान धरते हैं। वे बिना पाँवों के चलते, बिना नेत्रों के देखते, बिना कान सुनते, बिना मुख के खाते, बिना जिह्वा पढ़ते, बिना हाथ के सब काम करते, बिना नाक के सूँघते और बिना गुदा के मल का त्याग करते हैं। जिनके ऐसे-ऐसे कार्य हैं, उनका हम वर्णन नहीं कर सकते हैं। वेद कहते हैं कि ऐसे निर्गुणरूप जो शिवजी हैं, उन्होंने सगुणरूप धार सब चरित्र किये। परमशक्ति और शिवजी ने अवतार धारण करके अपने भक्तों के मनोरथ पूर्ण किये। जिस समय कि विष्णुजी ने ब्रह्माजी को प्रकट किया तब शिवजी वरदान देने को आये। विष्णुजी ने तब शिवजी से यह वरदान माँगा कि आप भी अवतार धारण कीजिये। शिवजी ने 'तथास्तु' कहकर कहा कि युक्तिपूर्वक हम भी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अवतार लेंगे। हमारा नाम रुद्र होगा जो देवताओं के दुःख दरिद्र दूर करेगा तथा तुम्हारेऔर तुम्हारी शक्ति के कष्ट मिटावेगा। यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये और रुद्र अवतार हमसे उत्पन्न हुये। वही कैलाश पर्वत पर स्थित हैं और अनेक प्रकार की लीला करके अपने भक्तों को सुख देते हैं। वे अपनी शक्ति के संग विहार करके सर्व उपाधियों से रहित हैं उस अवतार ने अपने सन्तों की रक्षा की और सती के संग विवाह कर सब दुःखों का नाश किया। गिरिजा को हिमाचल के यहाँ से ब्याह लाये और संसार में बहुत लीलायें कीं। स्कन्द का अवतार लेकर तारकासुर को मारडाला तथा अन्धक, त्रिपुर और जलन्धर को नष्ट किया जिससे भक्त सुखी हुये। इसी भाँति नाना प्रकार के चरित्र किये जिससे उनके भक्तों के कष्ट दूर हुये और अन्य देवताओं का अहंकार जाता रहा। उनके सेवक हम, विष्णुजी, देवता, मुनि और सिद्ध आदि सब हैं। हम सब रात्रि-दिन उन्हीं का पूजन करते हैं और अपने मनोरथ सिद्ध करा लेते हैं। यह शिवजी का पहला अवतार है। क्योंकि वेद भी कहते हैं कि इस अवतार के स्वरूप चरित्र और नाम सब परमशिव के ऐसे हैं। यही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त अवतार धारण करते हैं। अब हम शिवजी के सब अवतार वर्णन करते हैं। हे नारद ! तुम चित्त लगाकर सुनो।

अवतारों का वर्णन।

प्रथम पाँच अवतारों का वर्णन—जिस समय हमारी यह अभिलाषा हुई कि सृष्टि उत्पन्न करें तो पहिले हमने श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया तो शिवजी ने दर्शन दिये। उनका नाम सद्योजात था। उनके शरीर का रूप श्वेत और ललाई लिये था। उनके साथ चार शिष्य थे। हमने उनको पहिचाना और प्रणाम करके स्तुति की। शिवजी ने दयालु होकर हमको शक्ति दी और कहा कि सृष्टि उपजावो। फिर वामदेव का अवतार धारण करके अपने चार शिष्यों को साथ लिये दर्शन दिया। उनका शरीर लाल था। फिर तत्पुरुष का अवतार धारण कर पीतवर्ण से सुशोभित चार शिष्यों समेत प्रकट हुये। और मुझको सुलभ ज्ञान दिया। फिर श्यामरूप अवतार धारण करके मुझको दर्शन दिये। अन्त में ईशान अवतार हुआ। अवतार का श्वेतवर्ण था।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

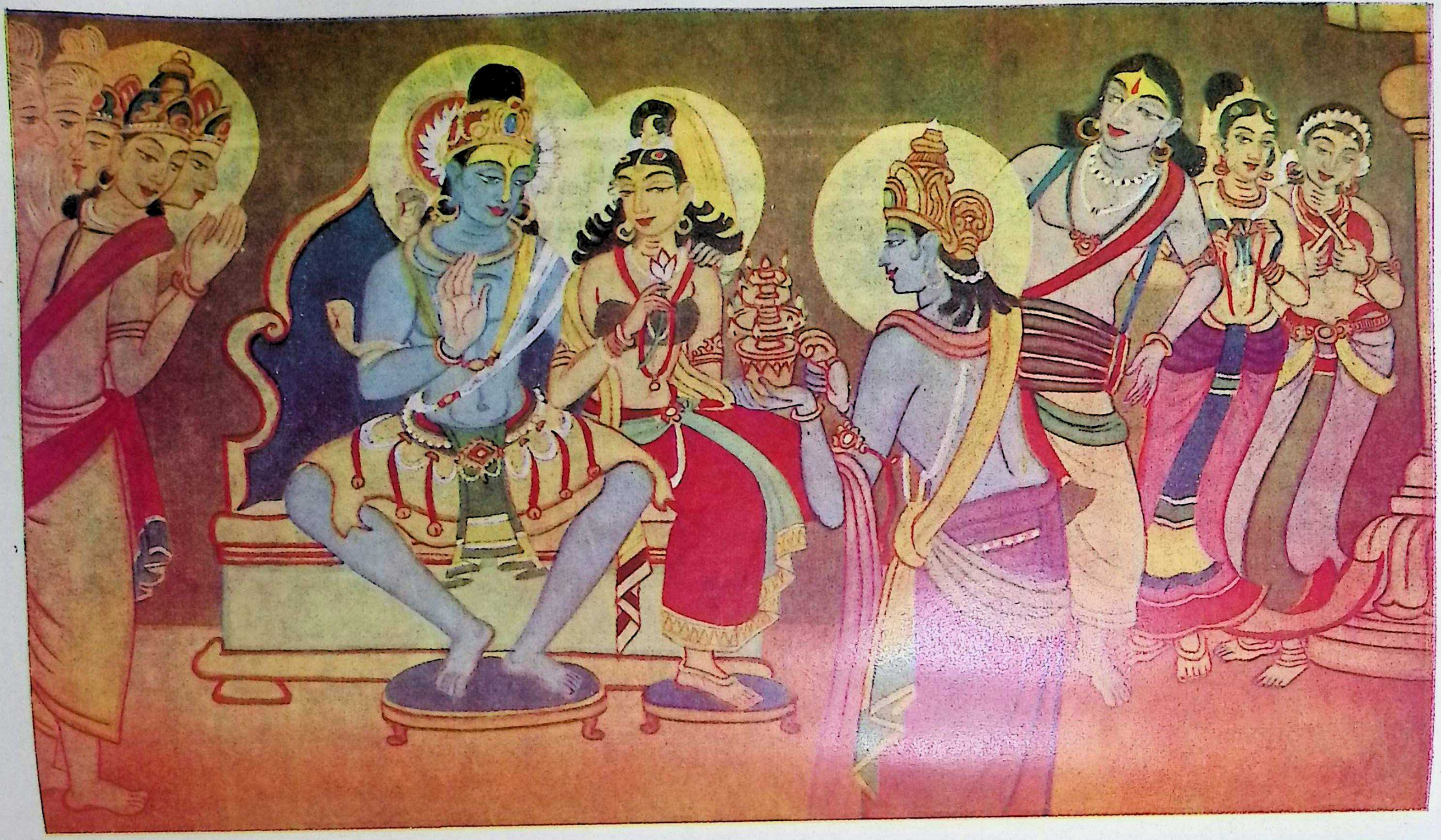

शिवजी का काशी में राज्याभिषेक

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और चार शिष्यों को संग लिये थे। उन्होंने मुझे योग और ब्रह्मज्ञान की शिक्षा दी। यह पाँचों अवतार अति पवित्र हैं। केवल हमारी ही इच्छानुसार प्रकट हुये थे। दूसरे आठ अवतारों का वर्णन—यह आठों अवतार शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम ५ पशुपति ६ ईशान ७ महादेव ८ हैं। यह जल १ पृथ्वी २ अग्नि ३ आकाश ४ यज्ञ ५ वायु ६ चन्द्रमा ७ सूर्य ८ में रहते हैं। सो यह आठों भी मुख्य श्रीसदाशिवजी के रूप हैं। तीसरे एक अवतार—वाराह कल्प में जो वैवस्वतमन्वन्तर होता है और जो सातवाँ मनु प्रसिद्ध है, वह भी शिवजी का अवतार है। पूर्ण अवतार नारीश्वर है जो हमारी रक्षा के निमित्त होता है। चौथे अट्ठाईस अवतार—जो व्यास द्वापर और कलियुग में अवतार लेते हैं, वह मुख्य हमारे अवतार हैं। वह अट्ठाईस हैं। अर्थात् वह सदाशिवजी व्यास का अवतार लेकर योगशास्त्र और पुराणों को बनाकर अपने शिष्यों को पढ़ाते हैं। वेद और पुराण के धर्म को स्थिर करते हैं। उन अवतारों के यह नाम हैं—श्वेत १ सुतार २ सुहोत्र ३ कङ्कण ४ सारुय ५ जगाक्ष ६ जैगीषव्य ७ दधिवाहन ८ ऋषभारुय ९ भृङ्ग १० तप ११ अत्रि १२ बाल १३ गौतम १४ वेदशिर १५ धेनुकर्ण १६ गुहबाल १७ शिखण्डी १८ जटामाली १९ अट्ठहास २० दाहक २१ लाङ्गली २२ श्वेतत्रिशूल २३ दण्डी २४ मुण्डेश्वर २५ सोमसुरमा २६ लङ्केश २७ सहिष्णु २८। नन्दीश्वर अवतार—जब शिलादि मुनि ने बड़ा तप किया तब शिवजी ने उनको दर्शन देकर कहा कि वरदान माँगो। शिलादि ने कहा कि मुझको ऐसा पुत्र दीजिये जो कभी मृत्यु को न प्राप्त हो। शिवजी ने 'एवमस्तु' कह नन्दी अवतार धारणकर शिलाद की अभिलाषा पूर्ण की। जब हमसे और विष्णुजी से झगड़ा हुआ तो सदाशिवजी भैरव अवतार ज्योतिस्स्वरूप होकर शरीर धारण कर के आये और हमारा झगड़ा दूर कर दिया था। उस समय हम श्रीसदाशिवजी को अपना पुत्र विचार कर निन्दा करने लगे। इसलिये मुझको अहंकारी समझ कर शिवजी ने क्रोध किया और भैरवरूप धारण कर मेरा पाँचवाँ शिर काट डाला। वीरभद्र का अवतार लेकर इस बात को प्रसिद्ध किया कि जो शिवजी के विरुद्ध हैं, उनको स्वप्न में भी सुख नहीं। सो जो-जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी के विरुद्ध थे, उनको दण्ड दिया और सहस्र भुजा से नाना प्रकार की लीला की। जब विष्णुजी ने नरसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा तब नरसिंह अवतार ने इतना क्रोध किया कि पहिले से भी अधिक उन पर दुःख पड़ा। वह सब शिवजी के शरण हुये। शिवजी ने शरभ रूप धारण करके नरसिंह के मद को नष्ट किया और देवताओं को सुख दिया। उस समय से शिवजी का नाम हर हुआ क्योंकि शिवजी ने नरसिंह के मद को हर लिया था। जब देवासुर संग्राम हुआ तो देवता जीतकर बहुत अहंकारी हुये। सो शिवजी ने यक्षरूप धारण करके अवतार लिया और उनके मद को नष्ट किया। अर्थात् शिवजी ने देवताओं को एक घास काटने को कहा। सो सब देवताओं से वह कट न सकी। इससे देवता बहुत लज्जित हुये और शिवजी ने दशरूप महाकाल के धारण किये और दशों देवियों के पति हुये। उन्होंने तन्त्रविद्या को प्रकट करके अनेक भक्तों को मुक्ति दी। फिर ग्यारह रुद्र का रूप धारणकर कश्यप के गृह उत्पन्न हुये और दिति के पुत्रों को मारकर देवताओं को मुक्ति दी और बड़ी-बड़ी लीला की। अत्रि के पुत्र होकर संसार की सीमा स्थित की और ब्रह्मतेज प्रसिद्ध किया। विश्वानर के तप को देखकर उसके यहाँ जन्म लिया और काल विहार को जीत और प्रह्लाद मुनि का अवतार धारकर विष्णुजी के मद को तोड़ा। अवधूत बनकर इन्द्र को अहंकार से रहित किया और रामचन्द्रजी के मनोरथ पूर्ण करने के निमित्त कपीस अवतार धरकर हनुमान् के नाम से विख्यात हुये। उन्होंने बहुत लीला करके रामचन्द्रजी के सब कार्य सिद्ध किये और बहुत राक्षसों को मारा और लक्ष्मणजी के प्राण की रक्षा की। जब गिरिजा ने भैरव की कुदृष्टि देख भैरव को शाप दिया और कहा हे पुत्र ! जो तुम मुझको मनुष्य की-सी दृष्टि से देखते हो, इस हेतु तुम मनुष्य बनो। तब भैरवजी ने भी शाप दिया कि तुम भी हमारे प्रकार हो जाओ और वहाँ हम तुम्हारे पुत्र हों। इस कारण शिवजी ने पृथ्वी पर अवतार लिया। गिरिजा का तो नाम शारदा हुआ और शिवजी का नाम महेश हुआ। महानन्दा वेश्या ने शिवजी की बहुत भक्ति की। शिवजी ने वैश्यरूप धारकर उसके दुःखों का नाश किया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एक राजा भद्रायुष नामी ऋषभमुनि का शिष्य और शिवजी का बड़ा भक्त था। शिवजी ब्राह्मण बनकर गये और उसको कष्टों से रहित किया। आहुक नामी भील जिसकी स्त्री को आहुकी कहते थे, शिवजी ने रूप धार उनको कृतार्थ कर दिया। वह दोनों दूसरे जन्म में नल और दमयन्ती हुये। शिवजी ने हंस बनकर दोनों को मिला दिया। राजा मुनि के छोटे लड़के नभगाक्रय ने अपने भाइयों से भाग न पाया। शिवजी ने कृष्ण दर्शन नाम अवतार लेकर उसको भाग दिलवाया। जब राजा सत्यरथ लड़ाई में मारा गया तो उसकी रानी जो गर्भवती थी, वनमें भाग गई वहाँ उसके एक लड़का उपजा। रानी तो मर गई पर लड़का रोता रह गया। सो शिवजी उस पर दयालु हुये और भिक्षुक बनकर एक स्त्री को उपदेश दिया कि इसका पालन करो। फिर शिवजी ने उसी लड़के को बाप की जगह राजा बना दिया। इन्द्र का अवतार धारकर उपमुनि ब्राह्मण की परीक्षा ली। जब उसको पापों से शुद्ध पाया तब उसे दोनों लोक का सुख दिया। जब गिरिजा ने वन में बड़ा तप किया और सब देवता शिवजी की शरण में गये तब देवताओं को बिदाकर जटिलरूप धारण करके गिरिजा की परीक्षा ली। फिर वरदान देकर उसके साथ अपना विवाह किया और नट का रूप धारकर हिमाचल के गृह बड़ी-बड़ी लीला की। ब्राह्मण बनकर मैना को बहुत भटकाया। शिवजी अश्वत्थामा द्रोणाचार्य के पुत्र हुये। फिर किरात होकर अर्जुन का दुःख दूर कर दिया और उसको वरदान देकर कौरवों को नष्ट किया गोरख होकर योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया और यथायुक्ति योगियों के धर्म को स्थित किया। उनके दो बड़े शिष्य थे जिनमें से एक गोपी चन्द्र था। जिस समय कि अधर्मियों ने अपना शौच त्याग करके भ्रष्ट होना चाहा कि भक्तों आदि को दुःख प्राप्त हो तब शिवजी ने ब्राह्मण के घर अवतार धारा और शंकरजी कहलाये। अधर्म का नाश किया और शंकरजी ने अद्वैत और संन्यास मत उपजाया। ज्योतिर्लिंग जो सूर्य देवता के स्थित किये हुये हैं, वह भी शिवजी के अवतार हैं। यह सब भक्तों के फलदायक और सुखी रखनेवाले हैं। इसी प्रकार शिवजी ने बहुत अवतार लिये जो अपने भक्तों के सम्मुख बड़े बड़े चरित्र करते हैं। यह चरित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तीनों लोक के सुखदायक हैं जिनके कहने और सुनने से बहुत सुख मिलता है। यह अवतार संक्षेप में तुम से कहे। अब जो सुना चाहते हो, सो कहो।

दूसरा अध्याय।

कैलाशवासी शिवजी का वर्णन।

नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! तुम संसार में परम शैव हो। मेरी इच्छा है कि शिवजी के अवतारों का वर्णन विस्तार से सुनूँ। यह सुनकर ब्रह्माजी प्रेम में डूब गये। जब चेते तो कहने लगे कि हम तुमको शिवजी की लीला सुनाते हैं। उन मनुष्यों के धन्य भाग्य हैं जो इस लोक में शिवजी की भक्ति रखते और उस लोक में कैलाशवासी होते हैं। शिवजी निर्गुण सबसे श्रेष्ठ और निष्पाप हैं। वही ब्रह्मा और विष्णुजी के उत्पन्न करनेवाले हैं। उन्होंने हमको और विष्णुजी को प्रकृति से उपजाकर कहा कि जाओ संसार को उत्पन्न करके उसका पालन करो। तब हमने और विष्णुजी ने प्रार्थना की कि तुम भी अवतार लेकर प्रलय किया करो। तो उन्होंने समय पाकर हमारे भवों के बीच से अपने अंश से अवतार लिया और महेश कहलाये। वह कैलाश पर्वत पर वास करने लगे। शिवजी और महेश में कोई भेद नहीं। जो उनको भिन्न-भिन्न समझते हैं, वे कष्ट भोगते हैं। महेशजी दुःख-दरिद्र हरते और पापों से रहित हैं। वह बड़े दयावान् हैं और शरीर धारकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हैं। उन्होंने शबरी, शबर और मद्र को मुक्त किया और भद्रास राजा के कष्ट दूर किये। गङ्गाजी को जलने से बचाया और काल को जलाकर भस्मासुर को उसी के हाथ से मरवा डाला। करोड़ों पापी भक्तों को मुक्ति दी और अपने भक्तों के निमित्त करोड़ों अवतार धारे। ऐसे अवतारों को शिवजी का दूसरा रूप विचारो। उन्होंने हलाहल विष को पीकर देवताओं के प्राण बचाये। एक बड़ा पापी इन्द्रद्युम्न राजा अज्ञानता में नाम लेने से मुक्ति को प्राप्त हुआ। उन्होंने नन्दवैश्य और किरात को मुक्त करके अपना द्वारपाल बनाया। शिवजी ने भिक्षुक का रूप बनाकर दारुकवन में जाकर चरित्र किये। फिर मुनीश्वरों से अपने आप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शाप लिया। उसी समय से शिवलिङ्ग पूजा लोक में प्रचलित हुई। काशी के राजा की लड़की जिसका नाम सुन्दर था, वह शिवालय में झाड़ू देती थी; इससे वह मुक्त हुई। एक बड़े भारी चोर को तार दिया। रावण को राज्य दिया। जब उसने ब्राह्मणों को दुःख दिया तो शिवजी ने अधर्म विचार कर अपने तेजको रावण से ले लिया और अपना बाण रामचन्द्रजी को देकर रावण को मार डाला। राजा श्वेत के निमित्त काल का नाश किया। राजा दाशार्ह को उसकी स्त्री सहित तार दिया। पञ्चाक्षरी मन्त्र की तीनों लोक में बड़ाई प्रसिद्ध की। मित्रशठ पर दयालु हुये जो अपने राज्य को छोड़ बैठा और फिर स्त्री सहित मुक्त हुआ। चन्द्रसेन और श्रीगर्भ दोनों ने तेरस का व्रत करके मुक्त प्राप्त की। धर्मगुप्त ने भी इसी व्रत से मुक्ति पाई। शिवजी ने राजा चन्द्राङ्गद को तक्षक के भय से रहित किया और सीमन्तिनी स्त्री सोमवार के व्रत रखने से मुक्त हुई। शिव ने इन्द्र ब्राह्मण को तार दिया और पिङ्गल को अपना-सा बना लिया। वह सीमन्तिनी की पुत्री थी और पद्मा तथा पशुपति को भी मुक्त किया। दुर्जन नामी यवनदेश का राजा भस्म लगाने से मुक्त को प्राप्त हुआ। सुधर्मा भद्रसेन का पुत्र और मन्त्री का पुत्र तारक रुद्राक्ष धारण करके शिवजी की कृपा से पार लग गया। महानन्दा और उसके कुल को भी जलने से बचाया। देवरथ ब्राह्मण की पुत्री शारदा को कृतार्थ कर दिया। विडम्ब और उसकी स्त्री वीचिका जो व्यभिचार के कारण दोनों भ्रष्ट हो गये थे, उनको अपना यश सुनाकर कृतार्थ कर दिया। इन्द्र के मद को विचित्र चरित्र करके हरा। जब बृहस्पति की बनाई हुई स्तुति सुनी तो प्राण छोड़ दिये और जब चन्द्रमा अपने गुरु की स्त्री को भगा ले गया तब शिवजी ने उसका अहंकार तोड़कर बृहस्पति को उनकी स्त्री दिला दी। इसी प्रकार शिवजी ने अनन्त चरित्र किये जो भक्तों को सुख देते हैं। यह शिवजी का पहला अवतार है जो कैलाश पर्वत पर विराजमान हैं। वे अपने गणों को सङ्ग लिये संसार की भलाई के निमित्त नाना प्रकार की कथा वर्णन करते हैं और सनकसनन्दन शिवजी की बड़ी सेवा करते हैं। कभी तो शिवजी कैलाश पर्वत में बड़े

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वृक्ष के नीचे बैठते हैं और गूढ़ ध्यान लगाकर अपने को देखते हैं। समाधि करके अहंब्रह्म को प्रकट करते और कभी महाराजा बनकर आनन्द-पूर्वक अपने भवन में बैठकर विहार करते हैं। कभी धर्म की वार्त्ता करते हैं और कभी लड़कों को खिलाते हैं। कभी तपरूप धारण करके नग्न हो जाते हैं और कभी मुण्डों की माला पहनकर साँपों की सेली बनाये भस्म धारण करते हैं कभी संसार त्यागकर भूत-प्रेत उत्पन्न करते हैं। कभी छोटे लड़के के सदृश खेलते हैं। कभी परमहंस होकर एकान्त में बैठते हैं और कभी सगुण रूप धारण कर गिरिजा के संग विहार करते हैं। कभी हम और विष्णुजी उनकी सेवा करते हैं। कभी उनके सामने अप्सरा आदि नाचती हैं और रात्रि दिन स्तुति करती हैं। कभी वे प्रदोषकाल में भस्म धारण करते हैं और गिरिजा सहित बैठकर विष्णुजी को बिठा लेते हैं। उस समय सब देवता आरती करते हैं। विष्णुजी मृदङ्ग बजाते हैं। सरस्वती वीणा अलापती हैं। लक्ष्मीजी राग छेड़ती हैं। हम ताल बजाते हैं। इन्द्र भी बाँसुरी लेते हैं। इसी प्रकार अपने-अपने भजन स्वर सहित कहकर शिवजी को प्रसन्न करते हैं। शिवजी भी अपनी शक्ति को लिये सगुण रूप धारण करके नाना प्रकार की लीला और चरित्र करके भक्तों को सुख देते हैं यह दूसरा रूप शिवजी और गिरिजा का भक्तों को प्रसन्न करनेवाला है। हे नारद! शिवजी अनन्त अवतार धारकर भक्तों की प्रसन्नता के निमित्त अनन्त लीला करते हैं। चाहे जैसा बुद्धिमान हो और पृथ्वी के कण और आकाश के तारे गिन लेवे पर शिवके चरित्रों का अन्त पाना दुर्लभ है। करोड़ों नाम, रूप, लीला और चरित्र शिवजी के हैं। करोड़ों युग मुनी-श्वरों को शिवजी के वर्णन करने में व्यतीत हुये। परन्तु उन्होंने भी आदि और अन्त न पाया। हे नारद ! तुमने, शारदा, शेष और अन्य देवताओं ने शिवजी का यश गाया पर कुछ भी अन्त न पाया। शिवजी के समान सुख देनेवाला कौन है ? जो वे अपने कठिन मार्ग को प्रसिद्ध करें तो कोई मुनि अथवा देवता न समझे। देखो, वे अपने शरीर में तो भस्म धारण करते हैं पर भक्तों को राग रङ्ग देते हैं। आप तो दिगम्बर हैं पर औरों को दुशाला देते हैं। आप हलाहल विष पीते हैं, औरों को अमृत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देते हैं। आप तो मुण्डों और साँपों की सेली पहनते हैं पर भक्तों को रत्न देते हैं। आप प्रेतों की सभा में विराजमान हैं पर औरों को अनेक प्रकार की सेना देते हैं। आप तो श्मशान भूमि में रहते हैं पर सेवकों को बड़े-बड़े घर देते हैं। आप बैल पर चढ़ते हैं पर भक्तों को हाथी-घोड़े की सवारी देते हैं। सर्वदेवता सेवा करने से प्रसन्न होते हैं पर शिवजी बिना सेवा के प्रसन्न हो जाते हैं। हे नारद! ऐसे महाराज और स्वामी को त्याग कर मूर्ख मनुष्य इधर-उधर भटकते हैं। यह प्रथम अवतार जो हमने वर्णन किया है, वह शिवजी का परिपूर्ण अवतार है। वेद में लिखा है कि इस अवतार के स्वरूप, चरित्र, लीला और नाम आदि सब शिवजी के समान हैं। वही शिवजी अपने भक्तों के निमित्त सगुण रूप धारण करके नाना प्रकार की लीला और चरित्र दिखाते हैं। अब हम इन अवतारों का वर्णन जो शिवजी ने धारण किये, करते हैं।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम अब शिवजी के पाँच अवतारों का वर्णन करते हैं जो ब्रह्मरूप होकर वेद में वर्णन किये गये हैं। उन्होंने प्रथम मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी और फिर ज्ञान दिया। हर कल्प के आदि में उपदेश देते रहे जिससे मैंने सृष्टि उत्पन्न की। पहिला अवतार—जब कि श्वेतलोहित उन्नीसवाँ कल्प आया तो मैंने विचारा कि सृष्टि उत्पन्न करनी चाहिये। यह विचार शिवजी का ध्यान किया। शिवजी बालकरूप धार शिष्यों का संग लिये श्वेतलोहित वर्ण से प्रकट हुये जो बड़ी कृपादृष्टि से देखते थे। ऐसा बालक देखकर मुझको प्रीति उपजी और मैंने यह विचार कर कि कौन है, शिवजी का ध्यान किया, तो मुझको यह भासित हुआ कि यही तो स्वामी परब्रह्म हैं। फिर मैंने स्तुति की और कहा कि आपके समान कौन है? जो मेरे लिये प्रकट हुये तो मुझको ऐसी शक्ति दीजिये कि मैं सृष्टि उपजाऊँ। आपकी भक्ति मेरे हृदय से न जावे और सृष्टि के उत्पन्न करने में दोषी न होऊँ। शिवजी ने 'तथास्तु' कहा और बोले कि तुमको हृदय से हमारी प्रीति है इससे हम प्रकट हुये। क्योंकि हम भक्तों के अधीन हैं। हमारा नाम सद्योजात है। हम योगाभ्यास को प्रसिद्ध करके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपने शिष्यों को मुक्त करेंगे। फिर शिवजी के अङ्ग से चार लड़के उपजे। उनका श्वेत वर्ण था और शिष्य के नाम से प्रसिद्ध होकर योगशास्त्र की रीतों के प्रकट करने को शास्त्रपाठी हुये। उनके यह नाम हैं—सनन्दन १ नन्दन २ विश्वनन्दन ३ उपनन्दन ४। इन चारों शिष्यों को लेकर शिवजी ने योगशास्त्र को सब संसार में प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय हो जाते हैं। वे कल्प भर हमको सुख देते रहे। कुछ हमको सृष्टिकर्म में दुःख नहीं हुआ। अपने भक्तों को मुक्ति दी और योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया। दूसरा अवतार—जब बीसवाँ रक्तकल्प आया तो उसमें हमारा रक्तवर्ण था। हमने लाल और लाल ही माला पहिनी तथा सृष्टि के उत्पन्न करने की अभिलाषा करके श्रीसदाशिवजी का ध्यान किया। वह बालक कर रूप धार लालवस्त्र और लाल नेत्र किये लाल ही गहने पहिन कर प्रकट हुये। मैंने उनका नाम वामदेव जानकर प्रणाम किया तथा स्तुति की और प्रार्थना की कि आप ऐसी कृपा करें जिससे मैं सृष्टि बनाऊँ। शिव ने 'एवमस्तु' कहा और चार लड़के उपजाये जिनका वर्ण, रूप और वस्त्र आदि सब लाल थे। उनके नाम यह हैं—विरज १ विवाह २ विशोक ३ विश्वभावन ४। शिवजी ने चारों शिष्यों समेत योग को स्थापित करके हमको शिक्षा दी और सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दी। तीसरा अवतार—जब कि पीतवास इक्कीसवाँ कल्प आया तो मैंने सृष्टि उपजाने की शक्ति प्राप्त करने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया। शिवजी का रङ्ग और रूप पीत था। भुजा सुडौल और सर्व अलंकार पीत ही धारण किये मेरे सम्मुख हुये। मैंने ध्यान करके पहिचाना तथा स्तुति की और शिवगायत्री का जप किया। उनका नाम तत्पुरुष हुआ। मैंने प्रार्थना की कि मुझको सृष्टि के उत्पन्न करने की शक्ति और अपनी प्रीति दीजिये। शिवजी ने सुनकर चार लड़के जो पीतवर्ण पीत ही वस्त्र आदि धारण किये थे, उपजाये। उन्होंने और शिवजी ने संसार भर में योगशास्त्र प्रकट किया। चौथा अवतार—जब एक दिव्यसहस्र वर्ष पीतवास कल्प का व्यतीत हुआ और पतिव्रत कल्प आया तो मैंने सृष्टि उपजाने के निमित्त शिवजी का ध्यान किया। शिवजी बालक बनकर काले वस्त्र, काला यज्ञोपवीत, मुकुट और काली भस्म धारण किये प्रकट हुये। मैंने शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

का अघोररूप पहिचाना तथा स्तुति करके शिवजी को दण्डवत् की और कहा कि मुझको सृष्टि उत्पन्न करने की शक्ति दीजिये। शिवजी ने 'तथास्तु' कहा। फिर अघोर अवतार ने कहा कि यह हमारा रूप कष्टों को दूर करेगा। हमारा मन्त्र सब कार्यों को सिद्ध करेगा। यह कहकर अपनी भुजा से चार बालक उत्पन्न किये जो शिवजी के रूप के समान थे। उन्होंने अघोर योग को प्रसिद्ध किया जिसमें सब जीव तुल्य वर्णन किये गये हैं। इसके समान कोई वस्तु संसार भर में नहीं। पाँचवाँ अवतार—ईशान इस प्रकार प्रकट हुआ जब विश्वरूप तेईसवाँ कल्प आया तब हमने पुत्र के निमित्त शिवजी का ध्यान किया कि सृष्टि अतिबुद्धिमान् और विद्यावान् हो और शिवजी सर्वदा प्रसन्न रहें। प्रथम विश्वरूपा भवानी प्रकट हुईं। उनकी सर्व-सामग्री, रूप, वस्त्र और भूषण आदि सब श्वेत थे। फिर वैसे ही वस्त्र आदि से ईशान शिवजी प्रकट हुये। मैंने ध्यान करके पहिचाना कि ईशानरूप हैं। स्तुति करके प्रणाम और दण्डवत् की। फिर प्रार्थना की कि ऐसा यत्न कीजिये जिससे सृष्टि की बुद्धि तुरन्त हो। मैं आपका प्यारा बना रहूँ। शिवजी ने 'एवमस्तु' कहा और मुझको अच्छी रीति की शिक्षा दी। मैंने सृष्टि उपजाई और ईशान शिवजी ने शक्ति विश्वरूपा सहित चार पुत्र उत्पन्न किये जिनका वस्त्र आदि श्वेत था। उनके नाम यह हैं—जटी १ मुण्डी २ शिखण्डी ३ और अर्धमुण्डी ४। ईशान शिवजी ने अपने लड़कों सहित योगशास्त्र को प्रसिद्ध किया जिससे देवता मुनीश्वर और गुरु सब प्रसन्न हुये और ऐसा धर्म प्रकट किया जिससे मनुष्य आवागमन से निर्भय हुये। हे नारदजी! इसी प्रकार पाँचों कल्पों में शिवजी ने पाँच अवतार धारण किये। ये अवतार संसार के मनुष्यों को आनन्द देते हैं और इनकी कथा के श्रवण करने से आनन्द प्राप्त होता है।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम अष्टमूर्ति अर्थात् आठ अवतारों का वर्णन करते हैं जिनके भीतर सर्व संसार भासता हैं। जैसा सूत में रत्न और मणि आदिक पिरोये हों वैसे ही उन अवतारों में संसार है। उन आठों अवतारों के यह नाम हैं—शर्व १ भव २ रुद्र ३ उग्र ४ भीम ५ पशुपति ६

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ईशान ७ महादेव ८। यह आठों अवतार पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ यज्ञभूमि ६ सूर्य ७ चन्द्रमा ८ में रहते हैं। अर्थात् सर्वरूप होकर पृथ्वी का भार अपने ऊपर लिये हैं और संसार भर को प्रसन्न रखते हैं। जब भवरूप धारण करके जल में रहते हैं, तब सब जीवों के क्लेश नष्ट करते हैं। रुद्ररूप होकर अग्नि से प्रकाश करते हैं और उग्ररूप धारकर सब जीवों को जीता रखते हैं। पशुपति रूप धारकर क्षेत्रज्ञ हैं जिससे संसार भर को सुख मिलता है। ईशानरूप धारण करके सूर्य में हैं जिससे पृथ्वी और आकाश प्रकाशित है। महादेवरूप होकर चन्द्रमा में हैं जो सब जीवों की पालना करते हैं। यह आठों रूप शिवजी के हैं। शिवजी से भिन्न कुछ नहीं। शिवजी सब में प्रकट हैं जिस प्रकार पृथ्वी पर जल डालने से वृक्ष की वृद्धि होती है। अर्थात् उसके सींचने से जड़, टहनी, फल और फूल आदि दृढ़ होते हैं। उसी प्रकार शिवपूजन से सब दृढ़ हो जाते हैं। जिस प्रकार कि लड़के की प्रीति पिता को होती है, उसी प्रकार संसार भर से प्रीति रक्खे। तब श्रीसदाशिवजी उस पर दयालु होते हैं। जो मनुष्य किसी से बुराई रखता है, वह शिवजी से वैर विसाहता है और कभी मुक्ति पाता ही नहीं। यह समझकर शिवजी का भजन करना उचित है। किसी से शत्रुता न रक्खे। यह आठों स्वरूप जीव को सुख देते हैं। जो मनुष्य अपनी भलाई चाहे, वह इनकी सेवा करें। उनके चरित्रों के श्रवण और कथन से लाभ प्राप्त होता है। यह कथा अति पवित्र है तथा शिवजी की भक्ति की वृद्धि करती है और मुक्ति देती है। इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि अब हम अर्धनारीनर के अवतार का वर्णन करते हैं। जब हम सृष्टि उपजाने लगे तो यद्यपि हमने माता के सदृश सन्तानों की वृद्धि चाही परन्तु किसी प्रकार सृष्टि की वृद्धि न हुई। इमसे हमको चिन्ता हुई। तब आकाशवाणी हुई कि तुम मैथुन सृष्टि उत्पन्न करो। यद्यपि हमारी भी अभिलाषा हुई कि ऐसी सृष्टि उपजावें पर हमारी युक्ति निष्फल हुई। यह देखकर हमने यह विचारा कि बिना शिवजी की सहायता के हमारा मनोरथ सिद्ध न होगा। इस कारण तप करने लगे। शिवजी प्रसन्न हुये और अर्धांगीरूप धारण करके आये। हमने स्तुति की। शिवजी ने कहा कि हम तुम पर अति प्रसन्न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं और तुमको वही वरदान देते हैं जिसकी तुमको इच्छा है। यह कह फिर शक्ति को अपने शरीर से अलग किया जिससे दो स्वरूप अलग-अलग दीखे। यह चरित्र देख मैं बहुत प्रसन्न हुआ। आकाशवाणी और सृष्टि की वृद्धि न होने का वृत्तान्त सब वर्णन किया। हमने शक्ति से कहा कि आप दक्ष हमारे पुत्र के घर अवतार धारें। शिवजी भी अवतार धारण करके तुम्हारे साथ विवाह करें। यह सुनकर शक्ति ने 'एवमस्तु' कहा और अपनी भवों के बीच से अन्य शक्तियाँ उत्पन्न कीं। वह शिवजी को देखने लगीं। शिवजी ने मुसकराकर कहा कि ब्रह्माजी ने बड़ा तप-जप किया है इसलिये उसके मनोरथ पूरे करो। शक्ति ने प्रसन्नतापूर्वक हमारे कार्य पूर्ण किये। फिर शिवजी के शरीर में समा गईं। शिवजी भी वरदान देकर अन्तर्धान हुये। मैंने यह वरदान पाकर मैथुनी सृष्टि उत्पन्न की। यह अवतार अभिलाषा को पूर्ण करता है तथा कहने और सुननेवाले को सुख और लाभ देता है।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जो वाराहकल्प इस समय में बीत रहा है इसमें वैवस्वत नाम मनु हैं जो हमारे प्रपौत्र हैं। इस कल्प के द्वापर युग में व्यास अवतार प्रकट होता है श्रुति शाखा का विस्तार करता है। फिर व्यासजी संसारी जीवों की कुबुद्धि देखकर पुराण बनाते हैं कि हमको लाभ प्राप्त हो। परन्तु संसारी जीव ऐसी-ऐसी युक्तियों से भी मूर्ख रहते हैं। यद्यपि व्यासजी का मत अतिसुगम है, कुछ कठिन नहीं और उनसे वेद का सार प्राप्त होता है। वे वचन अति मनोहर हैं, परन्तु तो भी उन मूर्खों को वचन समझ में नहीं आते। उस समय शिवजी संसार को ऐसी मूर्खता में देखकर कलियुग में व्यासजी के कहने से अवतार धारते हैं। व्यासजी के मत को प्रसिद्ध करते हैं। वही चरित्र शिवजी का हम विस्तार से वर्णन करते हैं। पहिला अवतार—प्रथम द्वापर के पहिले मन्वन्तर में व्यास हुये। वेद को चार भाग अर्थात् ऋक् १ यजु २ साम ३ अथर्वण ४ में बाँटकर उनकी शाखाओं को बढ़ाया। फिर पुराण बनाये क्योंकि संसारी जीवों की बुद्धि युग के प्रवेश से नष्ट हो गई थी। हमने युक्तिपूर्वक वेद की रीतियाँ पुराणों में इस प्रकार मिला दीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि लोग प्रसन्न हों। जैसे कोई किसी रोगी को तीखी कड़ुई औषध न दे पर मीठी औषध देकर करे। यद्यपि मैंने और व्यासजी ने अनेक प्रकार से यत्न किये कि व्यासमत प्रसिद्ध हो परन्तु यत्न निष्फल हुआ और किसी ने भी पुराणों को न पढ़ा। तब मैंने चिन्तित होकर शिवजी का ध्यान किया और स्तुति की कि हे महाराजाधिराज! द्वापर व्यतीत हुआ और कलियुग आगया पर किसी ने भी पुराणों को नहीं छुआ। हमारा मत प्रसिद्ध नहीं होता। इससे उचित है कि आप दयालु होकर सहायता करें। हमारे धर्म को दृढ़ कीजिये। ऐसी-ऐसी प्रार्थना मेरी सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये और शरीर धारण करके द्वापर के अन्त और कलियुग के आदि में एक ब्राह्मण के गृह छागलागिरि में जो हिमालय पर्वत का एक भाग है, जन्म लिया। उनका नाम श्वेत हुआ। उत्पन्न होने के समय जय-जय कार हुआ, नाना प्रकार के बाजे बजे। आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई। तीनों लोक में सब मनुष्य और जीव आदिक प्रसन्न होकर वहाँ आये और शिवजी की स्तुति की। शिवजी के प्रकट होकर अगमयोग प्रकट किया। शिवजी के चार बड़े शिष्य हुये। वह आश्रम जाननेवाले बड़े योगाभ्यासी निष्पाप थे उनके नाम यह थे—श्वेत १ श्वेतशिष्य २ श्वेताश्व ३ श्वेतलोहित ४। शिवजी ने उनको योग का ध्यान सिखाया और योग को संसार भर में प्रकट किया। इससे सर्वसंसारी जीवों ने योग को बड़े-बड़े यत्नों से सीखा। वेद और पुराण से अच्छे-अच्छे धर्म और मत प्रकट किये। शिवजी ने श्वेतरूप धारण करके व्यासजी को प्रसन्न किया। दूसरा अवतार—दूसरे सत्यनाम द्वापर में व्यासजी ने प्रजापति का अवतार लेकर वेद के भाग किये और संसार के लाभनिमित्त पुराण बनाये, परन्तु यह सब निष्फल हुआ। किसी ने भी वह मत अङ्गीकार न किया। व्यासजी ने दुःखी होकर शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रसन्न होकर पृथ्वी पर अवतार लिया। उनका नाम सुतार हुआ। उन्होंने व्यासजी के मत को प्रसिद्ध किया और योगशास्त्र का प्रकाश किया। उनके चार शिष्य थे—दुंदुभि १ सत्यरूप २ ऋचीक ३ और केतुमान् ४। उन्होंने शिष्यों सहित व्यासजी का धर्म प्रकट करके संसारी जीवों को बहुत प्रसन्न किया। तीसरा अवतार—तीसरे द्वापर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में शुक्रजी ने व्यासजी का जन्म लिया और वेदों के भाग करके पुराणों को बनाया। सिद्धता न होने के कारण शिवजी का ध्यान किया। तब कलियुग के आदि में शिवजी ने अवतार धारा। उनका नाम दमन था। उनके चार शिष्य थे—विशोक १ विकेश २ व्यास ३ और सुप्रकाश ४। दमन शिव अवतार ने योगाभ्यास की रीतियाँ निकालीं और अपने चेलों सहित संसार में उनका प्रकाश किया। पुराणों के मत को स्थित करके मनुष्यों को मुक्ति का मार्ग दिखा दिया। चौथा अवतार—चौथे द्वापर में बृहस्पति ने व्यासजी का अवतार लिया और वेद के भाग करके पुराणों को प्रसिद्ध किया पर कलियुग के कारण उनकी अभिलाषा पूर्ण न हुई। इसलिये उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रसन्न होकर सुहोत्र अवतार पृथ्वी पर धारण किया और व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये। उस समय भी शिवजी के चार शिष्य हुये जिन्होंने व्यासजी के मत को प्रकट करके योगाभ्यास की शिक्षा दी। उनके यह नाम हैं—सुमुख १ दुर्मुख २ दुर्मद ३ दुरतिक्रम ४। पाँचवाँ अवतार—पाँचवें द्वापर में सविता देवता ने व्यासजी का अवतार लेकर वेदों के भाग किये और पुराण बनाये। तब भी शिवजी ने सूर्यदेवता की प्रार्थना से पृथ्वी पर अवतार लिया। उनका नाम कनक था। उनके चार शिष्य थे। उन्होंने व्यासजी के मत को प्रकाश किया। उनके नाम यह हैं—सनक १ सनातन २ सनन्दन ३ और सनत्कुमार ४। उनके नाम यह हैं—प्रभु १ विभु २ निर्मम ३ तथा निरहंकृत ४। छठा अवतार—छठे द्वापर में मनुजी ने व्यास जन्म धारा और अपना नाम महत् रक्खा। उन्होंने अन्य व्यासों से जो व्यतीत हुये, अच्छे-अच्छे पुराण बनाये और उनकी वृद्धि के निमित्त शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रसन्न होकर पृथ्वी पर अवतार लिया। उनका नाम लोकाक्ष था। उन्होंने योग पुराणों को अपने चार शिष्यों सहित प्रकट किया। उनके नाम यह हैं—सुधामा १ विरज २ शङ्ख ३ अम्बुज ४। सातवाँ अवतार—सातवें द्वापर में शतक्रतु ने व्यासजी का जन्म लिया और वेद के भाग करके पुराणों को बनाया। जिससे मनुष्य नाना प्रकार के मत और धर्म देखकर आश्चर्यवान् हुये, पर उनको किसी ने अङ्गीकार न किया। तब व्यासजी ने श्रीसदाशिवजी का स्मरण किया। शिवजी ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जैगीषव्य का अवतार धारणकर चार शिष्य उपजाये। उनके यह नाम हैं–सारस्वत १ पराहन २ मेघनाद ३ और सुहावन ४ शिवजी ने चार शिष्यों संयुक्त उस मत को फैला दिया। फिर जैगीषव्य ने योग को प्रकट किया। यद्यपि वह शिवजी के अवतार थे पर उन्होंने शिवजी की ऐसी भक्ति की जिससे दासत्वभाव प्रकट हुआ। जैगीषव्य के समान और कोई व्रत करने वाला नहीं हुआ। अर्थात् जब से शिवजी काशीपुरी को त्याग करके मन्दर-गिरि पर गये तब से न तो उन्होंने जल पिया और न कुछ खाया। उन्होंने यही प्रण किया था कि जब तक शिवजी के दर्शन न होंगे, तब तक पानी पीना अयोग्य है। जैगीषव्य की कथा सुनने और पढ़ने से आनन्द प्राप्त होता है।

छठा और सातवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा हे पिता! यह बताइये कि क्या कारण था कि शिवजी ने काशी छोड़ी? तो ब्रह्माजी ने सम्पूर्ण कथा आदि से अन्त तक वर्णन की। जिस तरह काल पड़ा, राजा दिवोदास के वर पाने से काशी देवताओं से रहित हुई, शिवजी भी विन्ध्याचल पर जाकर रहे, फिर शिवजी ने काशी के वियोग से दुःखी होकर क्रमपूर्वक योगिनीगण, सूर्य, ब्रह्मा और अपने ३५ गणों को दिवोदास के धर्म छुड़ाने के निमित्त काशी में भेजा और वे फिर काशी में रहकर न लौटे। फिर गणपति वहाँ गये। फिर जो-जो चरित्र विष्णु और गणों ने वहाँ किये। फिर विष्णु ने ज्यों बौद्धमत के देवता का स्वरूप धारण करके सब का धर्म भ्रष्ट कर डाला। फिर राजा दिवोदास ने विष्णु का आदर करके उनसे अपना वृत्तान्त कहा उसने शिक्षा पाई। फिर वह वहाँ सबसे विष्णुरूपी ब्राह्मण का उपदेश कह काशी छोड़ी गोमती नदी के तट पर गया। फिर काशी में आकर उसने शिवलिङ्ग स्थापित किया और जिस तरह शिवजी के गण आकर उसको विमान पर चढ़ा काशी से ले गये। गरुण से यह वृत्तान्त सुन शिवजी काशी में आये और जिस तरह से कि शिवजी ने गणपति का आदर कर विष्णु को दूसरे सिंहासन पर बिठाया और ब्रह्माजी को दाहिनी ओर स्थान दिया। फिर नन्दी के कहने से सजे हुये रथ पर शिवजी का आरूढ़ हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

काशी में जाना और तुरन्त जैगीषव्य की गुफा में जाकर दर्शन देना, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी को वहीं पर स्थित रहकर ज्येठेश्वर लिङ्ग का स्थापित होना, ज्येष्ठा नाम देवी का प्रकट होना। फिर वहीं पर नन्दीश्वर को भेज कर जैगीषव्य को गुफा में से बुलाना और यह वर देना कि हम काशी में रहेंगे। इसी प्रकार सम्पूर्ण कथा आदि से अन्त तक कह सुनाई।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम शिवजी के अट्ठाइसों अवतार का वर्णन करते हैं, चित्त देकर सुनो। जब कि आठवें द्वापर में वशिष्ठमुनि ने व्यासजी का अवतार लेकर वेद के चार भाग किये और पुराण बनाये तो उनका प्रचार न होने से उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने दधिवाहन नाम अवतार लिया और कृपादृष्टि से व्यासजी के मत को प्रकट किया। शिवजी के चार लड़कों के यह नाम हैं–कपिल १ आसुरि २ पञ्चशिख ३ शाल्वल ४। नवाँ अवतार–नवें द्वापर में सारस्वत ने व्यासजी का जन्म लेकर वेद के भागकर पुराणों को बनाया पर सिद्धि न हुई। इस हेतु शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रसन्न होकर ऋषभ का अवतार लिया। उनके चार शिष्य यह थे–पराशर १ गर्ग २ भार्गव ३ आंगिरस ४। इन्होंने योगाभ्यास करके व्यासजी को सहायता दी और उनके मत को प्रकाशित करके निवृत्तिधर्म को प्रसिद्ध किया। हे नारद! ऋषभजी के चरित्र अति प्रसिद्ध हैं। जो मनुष्य उनको पढ़ता अथवा सुनता है, वह आपही शिवरूप हो जाता है। उन्होंने भद्रायुष को कैसा सुख दिया और उसके क्लेश सब दूर किये। केवल एक दिन की सेवा से मुद्र ब्राह्मण और कङ्काली को मुक्त किया। दशवाँ अवतार–दशवें द्वापर में चित्रधारा नाम व्यासजी ने वेद को चार भागों में किया और पुराणों को बनाया। फिर शिवजी को स्मरण करके उनकी स्तुति की। शिवजी ने भृङ्गशृङ्ग जो हिमालय पर्वत का एक भाग है, उसमें अवतार धारण किया। उनका नाम भृगु था। उनके चार लड़के थे–निरमित्र १ जगदबोधन २ गुप्तभृङ्ग ३ तपोधन ४। सो शिवजी ने इन्हीं के द्वारा व्यासजी की अभिलाषा पूर्ण की। ग्यारहवाँ अवतार–ग्यारहवें द्वापर में त्रिवृत्त ने व्यासजी का जन्म लेकर वेदों के भाग किये और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पुराणों को बनाया। फिर शिवजी का ध्यान करके वरदान माँगा। शिवजी ने कलियुग में गङ्गाजी के द्वारा अवतार लिया। उनका नाम तप था। तप के चार पुत्र उत्पन्न हुये—लम्बोदर १ लम्बाक्ष २ लम्बकेश ३ प्रलम्ब ४ जिन्होंने व्यास के मनोरथ को पूर्ण किया। बारहवाँ अवतार—बारहवें द्वापर में भरद्वाज ने व्यास का जन्म लेकर शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने पृथ्वी पर अवतार लिया और हेमकिञ्चक में विराजमान हुये। उनका नाम अत्रि था। उनके चार पुत्र सरोज १ समबुद्धि २ साधु ३ शर्व ४ थे जिन्होंने व्यासजी के मनोरथ सिद्ध किये। तेरहवाँ अवतार—तेरहवें द्वापर में धर्मनारायण ने व्यास का अवतार धारकर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट किया परन्तु सर्व यत्न निष्फल हुये। शिवजी गन्धमादन पर्वत पर बालखिल्य ऋषि के आश्रम में उत्पन्न हुये। उनका नाम बालि था। उनके चार पुत्र जिनके नाम यह हैं—सुधामा १ कश्यप २ वशिष्ठ ३ वर्जा ४ उत्पन्न हुये और व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये। चौदहवाँ अवतार—चौदहवें द्वापर में रक्ष जिनका नाम बिभ्री भी है। उन्होंने व्यासजी का अवतार धारकर वेद और पुराण के मत को प्रसिद्ध करके शिवजी का ध्यान किया। शिवजी अङ्गिरस के कुल में उत्पन्न हुये। उनका नाम गौतम था। उन्होंने व्यास के सर्वकार्य सिद्ध किये। उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये—अत्रि १ देवसत् २ अबल ३ सहिष्णु ४। पन्द्रहवाँ अवतार—पन्द्रहवें द्वापर में त्रय्यारुणि ने वेद के चार भाग किये और पुराणों को प्रकट किया। फिर शिवजी का ध्यान किया। सो शिवशंकर गङ्गातट पर हिमालय पर्वत के पीछे जन्मे, उनका नाम वेदस्वर था। उनके चार पुत्र हुये—गुण १ गुणवाह २ कुशरीर ३ कुनेत्र ४ जिन्होंने व्यासजी की सहायता की और निवृत्तमत को दृढ़ किया। सोलहवाँ अवतार—सोलहवें द्वापर में धनञ्जय ने व्यास का जन्म लिया और यथाविधि वेद के भाग किये और पुराणों को बनाया। अपने मत की वृद्धि न देखकर उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने पृथ्वी पर जन्म लिया। उनका नाम गोकरण था। गोकरण उस वन का भी नाम था, जहाँ शिवजी ने अवतार लिया। फिर वह वन अघहर क्षेत्र कहलाने लगा जिसकी सेवा करने और जिसमें रहने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। शिवजी ने अपने चार पुत्रों कश्यप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

१ उशना २ च्यवन ३ ब्रह्मपति ४ सहित व्यासजी को सिद्धि दी। सत्रहवाँ अवतार—सत्रहवें द्वापर में कृतञ्जय ने व्यासजी का जन्म लेकर वेदों के चार भाग किये और पुराणों को प्रकट किया पर निष्फलता के कारण शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने हिमालय पर्वत की चोटी पर महालय अवतार लिया। उनका नाम गुफावासी भी था। उन्होंने व्यासजी के मनोरथ पूर्ण किये। उनके चार पुत्र थे—उतथ्य १ वामदेव २ महायोग ३ महाबल ४।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि जब अठारहवें द्वापर में ऋतञ्जय ने व्यास का रूप धारण कर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट करके मनोरथ सिद्ध न देखा तो शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने हिमालय पहाड़ के एक शिखर में जिसको सिद्धक्षेत्र भी कहते हैं, उसके शिखण्डनामी पर्वत पर वन में अवतार लिया। उनका नाम शिखण्डी था। शिखण्डी के चार पुत्र थे—वाचश्रव १ ऋचीक २ शावाश्य ३ सजनीश्वर ४। इन सबने व्यास के कार्य सिद्ध किये। उन्नीसवाँ अवतार—उन्नीसवें द्वापर में भरद्वाज ने व्यास का जन्म लेकर वेदों के भाग किये और पुराणों को प्रकट किया पर सिद्धि प्राप्त न हुई। इसलिये उन्होंने शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने हिमालय पर्वत पर जटामाली का अवतार लिया और चार पुत्र उत्पन्न करके व्यास जी के मनोरथ सिद्ध किये। उनके यह नाम हैं—रण्य १ कौशल २ लोकाक्षी ३ जुध्म ४। बीसवाँ अवतार—बीसवें द्वापर में गौतम ने व्यासजी का जन्म लिया तथा वेदों के भाग किये और पुराणों को निर्मितकर शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने हिमालय पर्वत के पीछे अट्टहास का अवतार धारा, उसका नाम भी अट्टहास था। उन्होंने अपने शिष्यों सहित व्यास की कामना पूरी की। शिष्यों के नाम यह हैं—सीमन्त १ बरबरी बुद्ध २ ऋग्वन्धु ३ किष्किन्धरा ४। इक्कीसवाँ अवतार—इक्कीसवाँ द्वापर में व्यास ने अवतार धार पूर्वोक्त सर्वकार्य पर शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने दारुक अवतार लिया। इसी कारण वह वन दारुक कहलाता है। उनके चार पुत्र थे—पलक्ष १ दललायन २ केतुभानु ३ गौतम ४। बाईसवाँ अवतार—बाईसवें द्वापर में सूष्मायल मुनि ने व्यासजी का जन्म लेकर शिवजी का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ध्यान किया और शिवजी ने काशी में अवतार लिया। उनका नाम लाङ्गली था। उनके चार पुत्र उत्पन्न हुये जिनका भल्लनि १ मधुपङ्ग २ श्वेत ३ गुप्तकान्त ४ नाम था। तेईसवाँ अवतार—तेईसवें द्वापर में तृणबिन्दु ने व्यास का जन्म लेकर पुराण रच शिव का ध्यान किया। शिवजी ने कालिञ्जर पर्वत पर महाकाय सुतश्वेत नाम अवतार लिया। वहाँ भी शिवजी ने चार पुत्र उत्पन्न किये—औषधि १ ब्रहदक्ष २ देवल ३ काव्य ४। चौबीसवाँ अवतार—चौबीसवें द्वापर में कुक्षि जिनको वाल्मीकि भी कहते हैं, उन्होंने व्यासजी का जन्म धारणकर रामचन्द्रजी की लीला और चरित्रों का बखान किया। फिर वेद के चार भागकर पुराणों को प्रकट करके शिवजी का ध्यान किया। सो नैमिष वन में शिवजी ने शूलीनाम अवतार लिया और व्यासजी की कामना पूरी की। उनके चार पुत्र थे—शालिहोत्र १ सहजहोत्र २ युवनाश्व ३ अहिर्बुध्न ४। पच्चीसवाँ अवतार—पच्चीसवें द्वापर में ब्रह्मसह ने शिवजी का बड़ा तप किया। शिवजी की आज्ञानुसार वेद और पुराणों को बनाया। उनके पुत्र उपमन्यु ने बालअवस्था से शिवजी की बड़ी भक्ति की। जब उनका मत न फैला, तब व्यास ने निराश होकर शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने दण्डी मुण्डी का अवतार लिया। उनके यह चार पुत्र हुये—बहुल १ कुण्डकर्ण २ कुम्भाण्ड ३ प्रवाहक ४। छब्बीसवाँ अवतार—छब्बीसवें द्वापर में पराशर व्यास हुये जो हमारे पौत्र और शक्ति से उपजे थे तथा वैशम्पायन के पिता थे। वह संसार में सबसे उत्तमोत्तम धर्म के प्रकट करनेवाले हुये। उनके समान शिवजी का भक्त कोई नहीं हुआ। उन्होंने वेद के चार भाग किये और अठारह पुराण बनाये। शिवजी ने दयालु होकर उनके प्रकट करने को अवतार धारा। उनका नाम सहिष्णु था। वह भद्रनाट नगर में विराजमान हुये। वहाँ शिवजी के चार शिष्य हुये—उलूक १ विद्युत् २ संबल ३ अश्वलायन ४। यह सब व्यासजी के सहायक हुये। सत्ताईसवाँ अवतार—सत्ताईसवें द्वापर में ज्ञानकर्ण ने व्यासावतार ले कार्य सिद्ध करके शिवजी का ध्यान किया। शिवजी ने प्रभासक्षेत्र में अवतार लिया। उनका नाम सौम्यकर्म था। उनके चार शिष्यों के यह नाम हैं—अक्षपाद १ सुमुनिकुमार २ उलूक ३ वत्स ४। सौम्यकर्म अवतार ने योगशास्त्र को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकट किया और पुराण के मत को स्थित करके अद्वैत धर्म को दृढ़ किया तथा मुनीश्वरों को पढ़ाकर उनके द्वारा मत को प्रसिद्ध कर दिया। जो मनुष्य इस मत के विरुद्ध थे, उनको जीत लिया। फिर व्यासजी ऐसी अवस्था देख कर कि हमारे मत के कोई विरुद्ध नहीं, बहुत प्रसन्न हुये और शिवजी की बड़ी स्तुति की। वे उनके शिष्यों की प्रशंसा संसार भर में करने लगे। यह द्वापर के २७ अवतार हमने कहे। अब वह अवतार अर्थात् जो शिवजी ने कलियुग के आदि में लिया, कहते हैं, मन देकर सुनो।

दसवाँ अध्याय।

अट्ठाईसवाँ अवतार—ब्रह्माजी बोले कि अट्ठाईसवें द्वापर में विष्णुजी ने देवताओं की स्तुति सुन कर व्यासजी का अवतार लिया और वेद के भाग करके पुराणों को प्रकट किया। पर उनके प्रसिद्ध न होने से शिवजी की स्तुति करके उनका ध्यान किया। शिवजी ने व्यास की प्रार्थना सुनकर अवतार लिया और उनके सहायक हुये। यह सुनकर नारदजी ने कहा कि हे ब्रह्माजी! मेरी अभिलाषा है कि आप इस कथा को विस्तार से कहें। ब्रह्माजी ने कहा अच्छा हम इसको विस्तार से कहते हैं। तुम ध्यान धर कर सुनो जिससे अति सुख प्राप्त हो और अनेक प्रकार के कष्ट निवृत्त हो जावें। क्योंकि इस कथा में दोनों ईश्वरों अर्थात् शिवजी और विष्णुजी की लीला और चरित्र हैं। इन दोनों ने मनुष्य जन्म लेकर बड़े-बड़े चरित्र किये और बड़े दीनदयालु तथा भक्तों के सुखदायक हैं। पूर्वकाल में देवासुरसंग्राम हुआ था, उसमें बहुत दैत्य मारे गये। समय पाकर वह सब दैत्य फिर पृथ्वी पर उत्पन्न हुये और कुसंगति में रहकर कुमार्ग में चलने लगे। युग के प्रभाव से उनकी बुद्धि नष्ट हो गई। सब विपरीत बातें करने लगे और अभिमानी होकर आपको भूल गये तथा इन्द्रियों के वश हुये। सबमें शत्रुता फैल गई और पाँचों देवताओं का पूजन त्यागकर वेद के विरुद्ध विचरने लगे। इसी प्रकार देवताओं ने संसार को सत्यमाग पर न चलते देखकर विष्णुजी की सेवा में पहुँच रोते हुये अपना दुःख वर्णन किया और उनसे दुःख के निवृत्ति की इच्छा की। सो विष्णु भगवान् ने अङ्गीकार करके पराशर के पुत्र होकर जन्म लिया। उनका नाम द्वैपायन था और उनकी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माता का नाम सत्यवती था। उन्होंने वेद के चार भाग करके उनकी शाखाओं को फैलाया और पुराण बनाये। यद्यपि बड़े-बड़े यत्न किये कि वह प्रसिद्ध हों पर कुछ फल न हुआ। तब द्वैपायनजी देवताओं और मुनीश्वरों सहित विष्णुजी की शरण में गये। विष्णुजी ने कहा कि तुम जाओ, कुछ चिन्ता न करो, हम अवतार लेंगे। यह सुनकर सब आनन्दपूर्वक अपने-अपने घर आये। विष्णुजी ने वसुदेव यदुवंशी के यहाँ अवतार लिया जिनके समान दूसरा राजा न हुआ। उनकी स्त्री देवकी के समान कोई स्त्री पतिव्रता नहीं हुई। विष्णुजी का नाम कृष्णजी हुआ जिनके नाम जपने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और स्मरण करनेवाला मनुष्य तर जाता है। वसुदेव की दूसरी स्त्री रोहिणी नाम से शेषजी ने अवतार लिया। उनका नाम बलदेव था जिनके सेवक देवता और मुनि आदि हैं। कृष्णजी ने व्रज में आकर यशोमति और व्रज के पति नन्द को अपनी लीला-विलास से अति प्रसन्न किया। सब गोपियों को कुमार-लीला से मोहित किया। पूतना आदि को जिनको राजा कंस ने भेजा था, मार डाला। गोपियों के संग लीला और खेल किये। जो सुख कि बड़े-बड़े योगियों को बड़े तप से प्राप्त नहीं होता, वह व्रजवासियों ने सहज ही पाया। शत्रुओं को मारकर सेवकों को और भक्तों को सुख दिया। उन्होंने सबसे उत्तम अपना आचरण सबको दिखाया और अहंकारियों का मद नष्ट किया। ग्यारह वर्ष पर्यन्त व्रज में विराजमान रहकर बलदेव सहित मथुरा में गये। वहाँ उन्होंने बड़े-बड़े चरित्र किये और कंस का उसके कुलसंयुक्त नाश किया। यदुवंशियों को बहुत ही सुख दिया और बहुत से शत्रुओं को मारकर असंख्य भक्तों के प्राण बचाये। जरासन्ध के बल के अभिमान का नाश किया और कालयवन को नष्ट करके भक्तों को आनन्दपूर्वक रक्खा। फिर बहुत-सी राजकन्याओं के साथ अपना विवाह किया और रुक्मिणी आदि जो बड़े-बड़े महाराजों की कन्या थीं, उनसे विहार किया और बड़े-बड़े चमत्कार दिखाये जिससे श्रीकृष्णजी का वंश उत्पन्न हुआ। उसकी हम संख्या नहीं कर सकते। कृष्णजी की रानियाँ सोलह हजार एक सौ आठ थीं जिनसे दश-दश पुत्र उत्पन्न हुये जो बड़े वीर थे। यह चरित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीकृष्णजी ने करके गृहस्थधर्म को दिखलाया और उसकी बड़ाई की। गिरिवर पर्वत को अपनी कनिष्ठिका से उठाकर भक्तों को सुख दिया और पाण्डवों पर दयालु होके उनको कौरवों से बचाया। सुदामा को गुरु के घर की वार्त्ता स्मरण कराके उसको धन और मान से भरपूर किया। द्रौपदी की लाज रख ली और विदुर को अपना भक्त बना लिया। पाण्डवों से राजसूय यज्ञ पूर्ण करा दिया। महाभारत में एक पक्षी के अण्डों को बचा दिया। फिर पृथ्वी का भार नाना प्रकार से उतारा। तदनन्तर यदुवंशियों के कुल को अभिमानी देखकर ब्राह्मणों से शाप दिलवाकर उनको नष्ट कर दिया। जब अपने लोक को सिधारे तो प्रथम अपने कुल का नाश कर दिया। उद्धव अपने मित्र को अद्वैत ज्ञान सिखाया। फिर उनको बदरीवन में भेज दिया। व्याधा को निर्वाणपद दिया और जो उसने किया था, उसका बुरा न माना। फिर श्रीकृष्णजी दारुक सारथी को मुक्ति देकर अपने लोक को ले गये। यह हमने कृष्ण चरित्र संक्षेप में कहा है जिसके सुनने से मुक्ति प्राप्त होती है और पाप दूर हो जाते हैं। कृष्णजी ने धर्म को फिर स्थित किया पर व्यासजी को कुछ प्रसन्नता न हुई क्योंकि उनका निवृत्त मार्ग प्रसिद्ध न हुआ। उनको रात्रि-दिवस यह सोच था कि किसी प्रकार हमारा मत फले। तब व्यासजी ने शिव का ध्यान किया और कहा कि हे कृपासिन्धो! मैंने यद्यपि वेद के आशय पुराणों में प्रकट किये परन्तु कलियुग के प्रभाव से इनको कोई नहीं समझता। प्रवृत्ति मत की तो बढ़ती हो जाती है पर निवृत्ति की हानि होती है। इससे आप अवतार लें और हमारे मत की वृद्धि करें और निवृत्ति मार्ग को दृढ़ करें। शिवजी ने दयालु होकर ब्रह्मचारी का शरीर धारण किया तथा बड़ी-बड़ी लीलायें कीं और योगमाया से सब संसार को मोहित कर लिया। उस शरीर से एक श्मशान में पहुँचकर देखा कि एक मुरदा पड़ा हुआ है। सो योगमाया से उस शव में प्रवेश कर गये और एक पर्वत की कन्दरा में स्थित हुये। सो हम और विष्णु दोनों यह हाल जानकर उनकी सेवा में गये। उनका नाम लाकुलीश था। जहाँ शिवजी विराजमान हुये, उसे सिद्धक्षेत्र अथवा कायाचत्वार कहते हैं। शिवजी ने चार शिष्य करके व्यासजी के धर्म को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रकट किया। उनके नाम यह हैं—उशिक १ गर्ग २ मित्र ३ रुन्ध ४। इससे तीनों लोक में आनन्द हुआ और सबका दुःख नष्ट हो गया। ऐसे-ऐसे चरित्र लाकुलीश शिवजी ने किये। हे नारद! हम तुमको सबका सार सुनाते हैं जिससे तुमको पूरा विश्वास प्राप्त हो कि हर द्वापर के अन्त में विष्णुजी आप अवतार लेकर वेद के भाग करते हैं तथा हर कलियुग के आदि में शिवजी अवतार धारते हैं और विष्णुजी हर बेर चार शिष्य करके वेद, योग आश्रमों को प्रकट करते हैं। वह लिङ्ग का पूजन करके भस्म धारण करते हैं। हे नारद! हमने यह कथा विष्णुजी से सुनी है। जो इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा, वह मुक्त होगा। दधिवाहन अवतार से लाकुलीश अवतार पर्यन्त २८ अवतार हैं और सब ४२ हैं।

ग्यारहवाँ अध्याय।

नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन।

श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम नन्दिकेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं कि शिलादिमुनि शिव के बड़े भक्त हुये। वे शिव की भक्ति करने से महाधनपात्र और ऐश्वर्यवान् थे। पर उनके कोई पुत्र न होता था। इसलिये शिलादि ने इन्द्र का अति कठिन तप किया। सो इन्द्र प्रसन्न होकर वर देने को गये और कहा कि वर माँगो। शिलादिमुनि ने प्रणाम कर हाथ जोड़ विनय की कि मुझको एक पुत्र कृपा कीजिये जो माता के गर्भ से न उपज कर अमर रहे। इन्द्र ने कहा कि तुम ऐसा हठ मत करो। हम ऐसा पुत्र नहीं दे सकते। वरन् हम केवल ऐसा पुत्र दे सकते हैं जो माता के गर्भ से उपज कर मरे। तुम भलीभाँति विचारो कि संसार में कौन है जिसको मृत्यु नहीं। ऐसा पुत्र तो विष्णु और ब्रह्मा भी नहीं दे सकते। देखो, ब्रह्मा और विष्णु के लिये भी वेद कहते हैं कि वे शिव से उपजे। वह भी समय पर मरते हैं। यह बात सुनकर शिलादिमुनि ने इन्द्र से कहा कि हम तो केवल उसी भाँति का पुत्र चाहते हैं जैसा कि हमने कहा। तब इन्द्र ने शिलादिमुनि के हठ को दृढ़ समझकर कहा कि ऐसा पुत्र मृत्युंजय शिवजी दे सकते हैं क्योंकि शिवजी मृत्यु के वश में नहीं हैं वरन् वे काल को जीते हुये हैं। यह कहकर इन्द्र तो चले गये और शिलादि शिवजी का तप करने लगे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसी प्रकार दिव्य सहस्र वर्ष तप करते शिलादिमुनि को बीत गये। शिलादि का शरीर च्यूंटी, सर्प, बिच्छू आदि कृमिकीटों का घर बन गया। उनके शरीर में केवल अस्थि और चर्म शेष रह गया। रक्त और मांस का चिह्न भी न रहा। सो शिवजी ने प्रसन्न हो सुन्दर स्वरूप धार शिलादिमुनि के समीप आ उसको अपने हाथ से स्पर्श किया जिससे शिलादिमुनि हृष्ट-पुष्ट हो अरोग्य हो गये। शिव बोले कि तुम क्या चाहते हो सो शिलादिमुनि ने बहुत स्तुति के अनन्तर एक पुत्र माँगा कि जिसको काल न व्यापे और वह अमर होकर माता के गर्भ बिन उत्पन्न हो। शिवजी बोले कि संसार में कोई है जो उपजकर मृत्यु से बचे। हाँ, हम मृत्युंजय अर्थात् काल के जीतनेवाले और माता के गर्भ बिना उपजे हैं। इससे हम आप तुम्हारे पुत्र होंगे। हमारा नाम नन्दी होगा और आगे ब्रह्मा ने भी पृथ्वी में हमारे अवतार लेने के लिये तप किया था। हमने उनको वर दिया था कि समय पाकर हम पृथ्वी में अवतार लेंगे। सो ब्रह्मा को हमने आप वर दिया था, वह भी पूरा होगा। तुम्हारी इच्छा पूर्ण करने से मानों एक पन्थ दो कार्य होंगे। मैं संसार का पिता और तुम मेरे पिता हुये। यह कह शिव अन्तर्धान हो गये और शिलादिमुनि ने अति प्रसन्न हो यज्ञ करने की इच्छा की। सर्व सामग्री इकट्ठी करने के अनन्तर यज्ञ करने लगे। सो शिव उसी यज्ञ के बीच में से उपजे जो प्रलयकाल की अग्नि के समान देदीप्यमान, महा-सुन्दर त्रिनेत्र, चार भुजा धारण किये जिनमें शूल, टङ्क, गदा और असि लिये हुये तथा जटाओं का मुकुट शिर पर धारे, दोनों कानों में कुण्डल पहने, मेघवत् गम्भीर शब्द से शोभित और उनके सर्वाङ्ग बालकों के समान थे। उस समय आकाश से मेघ वर्षा करने लगे और किन्नरादि आकाशचारी गाने-बजाने लगे। देवताओं ने पुष्पवृष्टि की और सबने शिव का अवतार पहिचाना। उस समय बड़ा उत्सव हुआ और चारों ओर से जय-जय का शब्द पूरित हुआ।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिलादमुनि ने उस बालक से कहा कि तुमने उपजकर हमको अति आनन्दित किया, इससे तुम्हारा नाम नन्दी है। तुम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो शिव हो। मुझको अपनी शक्ति कृपा करो। यह कह शिलादमुनि स्तुति करने लगे। सो सब देवताओं के विदा होने के अनन्तर शिलादमुनि नन्दी को साथ ले अपने स्थान को गये। नन्दी ने मार्ग में यह लीला की कि पहला तन छोड़ मनुष्यों का शरीर धरा। इससे शिलादमुनि ने बड़ा दुःख माना, पर अन्त में निरुपाय हो संसारी रीतों को पूरा किया और नन्दी मनुष्यों के बालकों के समान खेल किया करते। जब नन्दी की दश वर्ष की अवस्था हुई तो शिव की आज्ञा से मित्र और वरुण दो मुनीश्वर शिलादमुनि के समीप आकर कहने लगे कि यह बालक सर्वविद्यानिधान होगा पर इसकी आयु अति न्यून होगी। यह कहकर दोनों मुनि तो चले गये और शिलादमुनि को महादुःख उपजा। इस महाचिन्ता से वह नन्दी को लिपट कर रोने लगा और मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ा। तब तो नन्दीश्वर मनुष्यों की तरह समझाने लगे कि आप इतना दुःख न मानें। हम कोई इसका उपाय करेंगे। हम शिव की सेवा करके काल को जीत लेवेंगे। यह समझाकर नन्दीश्वर रुद्रजप करने लगे तो शिव ने गिरिजा-सहित तुरन्त नन्दी के समीप आकर कहा कि तुमको कुछ मृत्यु का भय नहीं। तुम हमारे समान शिव हो। हमने दोनों मुनीश्वरों को केवल तुम्हारी परीक्षा के निमित्त भेजा था। तुम तो मृत्युञ्जय हो। तुमको कुछ भय नहीं। यह कह शिवने अपने शरीर को नन्दी के शरीर से लगा दिया। गिरिजा और सब गणों की ओर देखकर कहा कि यह नन्दीश्वर जरा और मृत्यु से रहित हमारे समान बलिष्ठ होकर मुझे बहुत प्रिय होगा और हमारे पास स्थित रहेगा। यह कह शिव ने अपनी माला नन्दीश्वर के गले में पहना दी कि तुरन्त ही नन्दी भी त्रिनेत्र और दशभुजाधारी होकर शिवके तुल्य हो गये। उस समय शिव ने नन्दी का हाथ पकड़ कहा कि तुमको क्या कर दूँ। यह कहा और अपनी जटा के ऊपर से पानी छोड़ा जिससे नदियाँ बहने लगीं। उनके यह नाम हैं—जटोदक १ त्रिस्रोता २ वृषध्वनि ३ स्वर्णोदक ४ जटक ५। जो शिव का लिङ्ग नन्दीश्वर ने स्थापित किया था, उसका नाम भुवनेश्वर हुआ। उसके निकट सरमद नाम बड़ा तीर्थ हो गया। जो मनुष्य उन नदियों में स्नान कर भुवनेश्वर की पूजा करे, वह तीनों लोक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में बड़ा सुख पावे और शिव की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करे। फिर शिव ने गिरिजा से कहा कि हम नन्दीश्वर का अभिषेक करेंगे। वह सब गणों का एक ही स्वामी बनाया जावेगा। गिरिजा ने इस बात को अति प्रसन्नता से मान लिया। फिर शिव ने सब गणों का स्मरण किया। सो वे सब आये और विनय की कि क्या आज्ञा है? क्या समुद्र को सुखावें वा मृत्यु को नष्ट करदें। अथवा यमराज को उनके दूतों समेत बाँध लावें। अथवा ब्रह्मा को पकड़ लावें वा इन्द्र को देवताओं सहित पकड़ें। अथवा दानव और दैत्यों को जला देवें वा अग्नि ही को पकड़ लावें। अथवा इनके सिवाय और कोई आपका बैरी हो, उसका वध करें वा आप किसी पर प्रसन्न हुये हैं। शिव बोले कि यह नन्दीश्वर हमारा पुत्र है और सबका स्वामी तथा मुझको प्यारा है। यह तुम सबका अधिपति और स्वामी है। तुम सब मिलकर इसका अभिषेक करो। सो सबने मानकर जय-जय शब्द पूरित किया। ब्रह्मा, विष्णु और सब देवतादि ने इकट्ठे होकर नन्दीश्वर का अभिषेक किया। ब्रह्मा ने शिव की इच्छा जानकर मरुत की कन्या सुयशा के साथ नन्दी का विवाह करा दिया। उस समय बड़ा उत्सव हुआ और नन्दीश्वर स्त्री सहित सिंहासन पर बैठे। लक्ष्मी ने मुकुट आदि भूषण नन्दी को दिये और गिरिजा ने गले का हार कृपा किया। विष्णु ने अपने रथ की ध्वजा कृपा की और हमने कनकहार दिया। फिर शिव नन्दी को नाना प्रकार की वस्तु दे उनको सर्व कुल परिवार सहित अपनी पुरी को ले गये। जहाँ नन्दी शिव का गिरिजा सहित ध्यान किया करते हैं। वे कैलाश में पहुँच कर शिव का नाना प्रकार की सेवा में लगे रहे। हे नारद! शिव की महिमा देखो कि उन्होंने एक भक्त के लिये आप बालक का अवतार धारा। जो इस चरित्र को पढ़ेगा व मन लगाकर सुनेगा, वह धन, स्त्री, पुत्र और आनन्द से इस लोक में भरपूर रहकर परलोक में मुक्ति पावेगा। तेंतालीसवाँ अध्याय पूर्ण हुआ।

तेरहवाँ अध्याय।

भैरव अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम भैरव अवतार का वर्णन करते हैं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि एक दिन स्कन्दजी के पास कुम्भज जाकर कहने लगे कि आप मुझे भैरव चरित्र सुनाइये। मैंने बहुत मनुष्यों से भैरवजी के अनेक चरित्र सुने हैं। यह भी श्रवण किया है कि वे काशी के कोतवाल हैं। उनसे सब संसार वरन् काल तक डरता है। एक तो भैरव भूतों में भी हैं जिनके अधीन सर्व योगिनीगण हैं और जो सर्व संसार को भयानक दृष्टि आवे, उसका नाम भी भैरव है। इन्हीं भैरव में वे भी हैं या और कोई। भैरव कब और किस कार्य के निमित्त उपजे थे। यह सब वृत्तान्त आप मुझे सुनावें। यह बात कुम्भज मुनि से सुनकर स्कन्द मुनि बोले कि भैरव सदाशिवजी के पूर्णरूप हैं। न तो वे भूतों में हैं और न भयानक। वे तो आप ही सदाशिव हैं जिनको मूर्ख लोग नहीं जानते किन्तु ब्रह्मा और विष्णु भी इनकी महिमा नहीं जान सकते। न नारद, शारद, देवता और मुनि आदि उनका पार पा सकते हैं। यह कुछ अचरज की बात नहीं है। वरन् शिवजी की माया को कोई नहीं जान सकता। पर हाँ, जिनके ऊपर शिव कृपा करें, उनके सामने माया नहीं आ सकती। एक समय सब देवता मुनि आदि इकट्ठे बैठकर विचार करने लगे कि सृष्टि में कौन प्रभु है। यद्यपि बहुत विचार किया पर कुछ न जाना। तब तो सब चिन्तित होकर कहने लगे कि चलो मेरुपर्वत पर चलकर ब्रह्मा से पूछें, वे मूल बात बतावेंगे। निदान ऐसा ही किया और मुझसे स्तुति के अनन्तर पूछा कि महाराज आप बतावें कि ब्रह्म कौन है और कौन दोषों से रहित अविनाशी सबके मनके जाननेवाला, निर्गुण, सगुण, सर्व संसार का स्वामी, विश्वम्भर, प्रलयकाल जिनकी आज्ञा से तुम भी प्रजा को रचते हो और विष्णु उन्हीं की आज्ञा से पालन करके हर प्रलय करते हैं और जिनके भय से शेष पृथ्वी को धरे हुये हैं और जिनके अनुशासन से सूर्य प्रकाश किये रहते हैं और जिनकी आज्ञा से चन्द्रमा तारागणों समेत आकाश में प्रकट होते हैं, उनको बताइये। इतना सुन हमने कहा कि हे देवताओं ! वह हम ही हैं। हमारे नामों को सुनकर तुम आपही समझ लो कि परब्रह्म हम ही हैं और कोई हमारे नाम ब्रह्मा, स्वयम्भू, धाता, अज, परमेष्ठि आदि बोलते हैं। यह कह स्कन्दजी बोले कि देखो, ब्रह्माजी शिव की माया से क्योंकर मोह कर अपने को परब्रह्म वर्णन करने लगे। शंकरजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की माया अति बलवती है। यह वार्ता हो रही थी कि विष्णुजी उत्तमोत्तम चतुर्भुजी स्वरूप धारण किये, पीताम्बर ओढ़े, क्रोध से नेत्र रक्त किये, प्रकट हुये। उन्होंने देवताओं से कहा कि ब्रह्मा की मूर्खता देखो। यह ऐसे मूर्ख वचन क्यों कहता है ? हे ब्रह्मा ! तुम वेद पुराण के विरुद्ध ऐसी बात क्यों कहते हो ? तुम हमारी नाभिकमल से उपजे हो। तुम्हारी बड़ाई हमारे अधीन हैं और तुम हमारी आज्ञा से सृष्टि रचते हो। हम तुम्हारे सब कर्मों में सहायता करते हैं। तुम सर्व सृष्टि को उपजाकर उनकी रक्षा में प्रवृत्त रहते हो। हम पृथ्वी का भार उतारते हैं। हम परम ज्योति और परब्रह्म हैं। हम परमात्मा निर्गुण और निर्दोष हैं और हर प्राणी में प्रकट हो रहे हैं। मेरे विरुद्ध जाना मानो अपने जीव से हाथ धोना है। हम यज्ञ पुरुष हैं। हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं। वेद ने आप हमको ब्रह्म करके बखाना है। तुम अपने नाम पर गर्व मत करो। सत्य-सत्य कहो। निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु ने बहुत विवाद किये और शिवजी को किसी ने कुछ न जानकर आपही आपको ब्रह्म ठहराया।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! अन्त को यह बात ठहरी कि वेद जिसको परब्रह्म कह देवें, वही परब्रह्म माना जावे और वेदों का पूरा निर्णय समझा जावे। सो इसी प्रयोजन से ब्रह्मा और विष्णु ने वेदों को बुलाकर अति नम्रता से कहा कि हे वेदों! संसार में तुम्हारे वचन पर सबका पूर्ण विश्वास है। तुम यह बतला दो कि परब्रह्म कौन है? यह सुन वेद बोले कि जो तुमने हम पर इस बात को रक्खा तो हम सत्य ही सत्य कहेंगे जिससे तुम्हारे मनों का संशय दूर हो जावेगा। पहिले ऋग्वेद ने कहा कि जहाँ सर्व जीवधारी स्थित रहते हैं और करोड़ों ब्रह्माण्ड दिखाई पड़ते हैं जिनको वेद परम तत्त्व करके वर्णन करता है और जिनको सन्तों ने सबसे श्रेष्ठ ठहराया है, वे सदाशिव ही हैं जो प्रलय में भी नष्ट नहीं होते। यह कह ऋग्वेद चुप हो रहा। यजुर्वेद बोला कि जिनको सर्व जीव यज्ञ करके सेवन करते हैं जो परमानन्द स्वरूप है और जिसका ध्यान योगी मन में करते हैं और बिन उसकी इच्छा के दर्शन प्राप्त नहीं कर सकते और जिनको हम नेति-नेति वर्णन करते हैं, वे शुद्ध सदा-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिव हैं। फिर सामवेद ने कहा कि जिससे तीन लोक प्रकट होते हैं और जिसको योगी अति विचार से समझते हैं और जिसके अंश से उत्पत्ति करनेवाला, पालन करनेवाला और प्रलय करनेवाला है, वह केवल सदाशिव है। फिर अथर्वणवेद बोले कि जिसको सन्त परब्रह्म वर्णन करते हैं, उसकी भक्ति करके उसका यश गाते रहते हैं। जो केवल आपही मुक्ति के देनेवाले हैं, वह सदाशिव हैं। यह वचन वेद के सुनकर दोनों देवता बहुत ही हँसने लगे और शिव की माया से मोहित होकर कहने लगे कि योगियों का पति कुरूप, जटा धारण करनेवाला, विष खानेवाला, नग्न शरीर, बैल पर चढ़नेवाला जिसके भूषण सर्प हैं, श्मशान की भस्म शरीर में मर्दन करे भूतों की संगति में रहता है, वह परब्रह्म क्योंकर हो सकता है? उसकी संगति से सबको ग्लानि है। यह कहकर दोनों हास्य करने लगे। तब तो प्रणव ने कहा कि हे सृष्टि के उपजानेवाले ब्रह्मा और हे पालनेवाले विष्णो ! हमारी बात मन लगाकर सुनो। तुम अपने मुखों से ऐसी विपरीत बात मत कहो। तुम तीनों लोक के उपदेष्टा और विश्वासित हो, वेद के मत को खण्डन मत करो वेदों ने सत्य ही कहा है। परम शिव का कुछ रूप रेख नहीं है। पर वे तीनों लोक में नाना प्रकार की लीला करते हैं। तुम्हारे लिये उन्होंने स्वरूप धारण किया है। वे तीनों लोक के अन्तर्यामी हैं। वे तुम्हारी विनय के अनुसार ब्रह्मा के भ्रूमध्य से उपजे और शिव के बहुत लीलाधारी रूप हैं, जिन्होंने अपने भक्तों के लिये बड़े-बड़े चरित्र किये हैं। हम शिव के चरित्रों के मूल वर्णन करते हैं जिससे तुम्हारी मति परब्रह्म के विरुद्ध न हो और तुमको अटल बुद्धि प्राप्त हो। सो कहते हैं कि जब कोई जीव न था, वरन् संसार, निर्गुण, प्रकृत, पुरुष, ब्रह्मा, विष्णुवर्ण, सृष्टि आदि कुछ भी न था तब केवल अद्वितीय, निर्गुण, माया से परे, ज्योतिमात्र सदाशिव थे जिनको वेद नेतिनेति करके बखानते और अहर्निश वर्णन करके फिर भी उनके भेद को नहीं जानते। ऐसे निर्गुण स्वरूप शिव के नाम से विराजमान हैं। वही अलख निरञ्जन स्वरूप शिव तीनों गुणों से श्रेष्ठ हैं जिनके अंश से तुम तीनों देवता उपजे हो। उसमें शिवजी के पूर्ण अंश से हर हैं। तुम दोनों को उनकी सेवा करनी उचित है और जो शिवजी शिवलोक में रहते हैं, वही हर रुद्र, और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अविनाशी हैं जो शक्ति सहित अवतार लेते हैं, वही शिव कैलाश में स्थित हैं। शक्ति रहित मृत्यु को जीते हुए दिखाई देते हैं और सर्व प्रकार की लीला करके स्वाधीन रहते हैं। उनके चरित्र कोई जानने नहीं पाया। जो उनकी इच्छा होती है, वही करते हैं। वे मायाजाल से परे हैं जिनके सब देवता और मुनि दास हैं जिनके चरित्रों को वेद, पुराण और धर्मशास्त्र नहीं जानते। तुम उनकी माया से भूलकर पशुओं के समान भटकते फिरते हो। वही शिव लीलाधारी अपनी इच्छा के अनुसार बहुत से रूप धारण करते हैं। कभी शरीर धारते, कभी शरीर रहित, कभी योगी, कभी भोगी, कभी भूतों की संगति में, कभी नग्न शरीर में भस्म लगाये, सेली के भूषण पहिने, जटा रखाये हुये, कभी परमहंसी गति को दिखलाते, कभी अपने में आपही को देखकर ध्यान करते, कभी चक्रवर्ती राजाओं के समान नाना प्रकार के भोग भोगते और शक्ति समेत सिंहासन पर बैठकर राज्य करके प्रजा का पालन करते हैं। सब देवता और दैत्य उनको प्रसन्न करके अपना-अपना मनोरथ पाते हैं। उनका यश लक्ष्मीजी गाती हैं। विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं। ब्रह्मा ताल देते हैं। सरस्वती वीणा धारण करती हैं। इन्द्र बाँसुरी बजाते हैं। वे शिव ऐसे हैं। यद्यपि यह सब बातें प्रणव ने सुनाईं पर उन दोनों के मन में कुछ न आया। कारण यह था कि शिवजी की माया से वे इस बात को नहीं जानते थे। इतने में शिवजी ने इच्छा की कि इनका मोह दूर करना चाहिये।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज! इतने में दोनों के बीच एक ज्योति प्रकट हुई जिसके प्रकाश से सब पृथ्वी और आकाश पूर्ण हो गया। उसमें से एक सुन्दर स्वरूप उपजा जिसको देख ब्रह्मा ने पाँचवें मुख से यह कहा कि हे विष्णो! हमारे और तुम्हारे बीच में यह कैसी आश्चर्यदायक ज्योति प्रकट हुई है जिसमें किसी मनुष्य का स्वरूप दिखाई देता है। वह यह कह ही रहे थे कि ब्रह्मा को इस प्रकार का स्वरूप भासित हुआ कि एक मनुष्य नीललोहितवर्ण, चन्द्रभाल, त्रिशूल हाथ में, सर्पों का भूषण बनाये खड़ा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हुआ है। सो ब्रह्माजी ने कहा कि तुम तो वही हो जो हमारी भ्रू के मध्य से उपजे थे। तुम्हारे रोने के कारण हमने तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था और भी बहुत से नाम रक्खे थे। तुमको उचित है कि हमारी शरण में आवो। हम तुम्हारी रक्षा करेंगे। जब कि ब्रह्माजी ने मोहवश ढिठाई से यह वार्त्ता की तो ऐसा गर्व ब्रह्मा का देख शिवजी ने महाकोप किया और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तों को आनन्द देनेवाला और शत्रुओं के लिये अति भयंकर है। उसके भाल में चन्द्रमा, तीनों नेत्र लाल, शरीर में सर्प लिपटे हुये निदान हर प्रकार अपने समान अपनी लीला के लिये प्रकट किया। उस उपजे हुये मनुष्य ने हाथ बाँध शिवजी से विनती की कि हमारा नाम रख दो और जो मुझे काम करना है, वह कह दो। शिवजी बोले कि तुम काल के समान भासित होते हो, इससे तुम्हारा नाम कालराज हुआ। जो कि तुम विश्व के भरण की शक्ति रखते हो, इससे तुम्हारा नाम भैरव भी है। जोकि तुमसे काल को भी भय होगा, इससे कालभैरव भी तुम्हारा नाम है और जोकि तुम गणों के दुःख मिटानेवाले हो, इससे अमरादिक भी तुम्हें कहेंगे। तुम भक्तों के पाप खा डालोगे, इससे तुम्हारा पापभक्षण भी नाम है। इसी तरह और भी तुम्हारे नाम होंगे और सब भक्तों के मनोरथ तुमसे पूर्ण होंगे अब अपना काम सुनो कि पद्मसुत जो ब्रह्मा है, यह महा शत्रु है। इसको भलीभाँति शिक्षा दो तथा इसके सिवाय और भी जो संसार में इस विधि के विरोधी हैं, उनको दण्ड दो। हमारी मुक्तिनगरी अर्थात् जो काशी हमारी है और हमको प्राण के समान प्रिय है, उसका स्वामी हमने तुमको किया। तुम सदा के लिये वह स्थान अपना समझो अर्थात् तुम काशी के कोतवाल होकर सबको शिक्षा दोगे। काशी में तुम्हारी दुहाई फिरेगी। तुम वहाँ अपना राज्य करोगे और जो मनुष्य काशी में पाप करें उनको उपदेश करो। तुम्हारा तेज तीन लोक में कोई न सह सके और जो कोई काशी में शुभ-अशुभ कर्म करते हैं, उनको चित्रगुप्त नहीं लिख सकते। वहाँ यमराज की आज्ञा नहीं चलती। यह सुन कालभैरव प्रसन्न हुये और मन में सोचने लगे कि ब्रह्मा को क्या दण्ड देना चाहिये? फिर विचार किया कि ब्रह्मा ने पाँचवें मुख से शिवजी की निन्दा कर उनको पुत्र बनाया है,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसलिये उचित है कि उसका वही पाँचवाँ शिर काट डालूँ। इस इच्छा से भैरव क्रोधित हुये। पहिले उनका स्वरूप महाभयानक हो गया। तो बाईं अंगुली के नख से ब्रह्मा का पाँचवाँ शिर काट लिया। उस समय बड़ा हाहाकार मच गया। देवता और मुनि आदि सब काँपने लगे। विष्णु भी हाथ जोड़ स्तुति करने लगे ब्रह्माजी भी काँपकर महादुःखी हुये और शतरुद्री का जप करके शिवजी की शरण में गये। सो शिवजी ने कहा कि हे विष्णो और ब्रह्मा! कुछ भय मत करो तुम दोनों सृष्टि के उपजानेवाले और पालनकर्त्ता हो। मैं प्रलय का करने वाला हूँ। तुम मुझको अपने समान प्रिय हो। हम तीनों देवताओं में कुछ भेद नहीं है। पर जिस मुख से ब्रह्मा ने निन्दा की केवल उसे हमने कृपा करके दण्ड दिया। हमने यह चरित्र करके तुम्हारा मोह दूर कर दिया। जब तुमने वेद और पुराणों की आज्ञाओं को न समझा तो मुझको तुम्हारी भलाई के लिये प्रकट होना पड़ा। इसके पीछे भैरव से शिवजी ने कहा कि हे भरणकर्ता भैरव! जो काम करना, वह समझ बूझकर करना। ब्राह्मण चाहे कैसा ही भ्रष्ट हो गया हो, पर उसका वध करना महापाप है। तुमको ब्रह्मा का पाँचवाँ शिर काट डालने के कारण दोष लग गया है, उसको दूर करने के लिए कायापालव्रत धारण करो। यद्यपि तुमको पुण्य-पाप कुछ नहीं है पर वेद के अनुसार सब करना चाहिये कि अन्य मनुष्य भी ऐसा करें। तुम शिर को हाथ में लिये हुये भिक्षाटन करते हुये सर्वलोकों की परिक्रमा करो। यह कहकर शिवजी ने एक स्त्री प्रकट की जिसका शरीर बहुत बड़ा था। उसका नाम ब्रह्महत्या रक्खा। वह महाभयंकर और महाभय देनेवाली सामग्री धारे जिसका भयदायक रक्त शरीर, रक्त ही वस्त्र पहिने, सर्वशरीर में रुधिर लगाये, बड़े भयानक दाँत जिसकी जिह्वा मुख से निकली हुई, आकाश तक शिर उठाये, हाथ में खप्पर लिये जिसमें से लहू पीती थी और प्रलयकाल के मेघ के समान महाभयंकर ब्रह्महत्या को शिवजी ने प्रकट करके उससे कहा कि काशी हमारी नगरी है। वहाँ जब तक भैरव लौट न आवें, तब तक उनको न छोड़ना। चाहे कोई करोड़ों उपाय करे। सिवाय काशी के तुम्हारी तीनों लोक में गति होगी। यह रहस्य कहकर शिवजी अन्तर्धान हो गये और भैरव ने भी शिवजी की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आज्ञा स्वीकार की और ब्रह्मा का शिर लिये हुये भिक्षा माँगते फिरे। ऊँचे शब्द से सबको अपना पाप जो लगा था, सुनाते थे, यद्यपि भैरव शुद्ध थे पर संसारी मनुष्यों की शिक्षा के निमित्त उन्होंने ऐसा किया।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! भैरव को ब्रह्महत्या ने न छोड़ा और वह पीछे-पीछे बड़ा शब्द करती हुई चली। जहाँ भैरव जाते, वहाँ वह भी जाती। भैरव संसार भर में भ्रमण करते फिरे और सातों द्वीप में जो-जो तीर्थ थे, वह सब भैरव ने अकेले किये। साथ में वही स्त्री थी और कोई नहीं था। यहाँ तक कि वह पाताल लोक तक गये पर वह स्त्री न छूटी। निदान उन्होंने ऊपर के लोक में भी भ्रमण किया परन्तु वह न हटी। इस प्रकार भैरव ब्रह्मलोक पर्यन्त फिरे। जहाँ भैरव शिर लेकर जाते थे, वहाँ के निवासी अन्न-धन से परिपूर्ण हो जाते थे। निदान महादुःखी हो भैरव नारायण लोक को इस इच्छा से चले कि वहाँ जाने से पाप छूटेंगे। विष्णु ने भैरव को देख लक्ष्मी से कहा देखो, परब्रह्म शिव आते हैं। यह धरती धन्य है और हम तुम सब शुभ हैं। यह तो पूर्ण स्वरूप से सदाशिव हैं जिनके नाम लेने और दर्शन करने से फिर मनुष्य का शरीर नहीं मिलता, वही कृपा करके यहाँ आते हैं। जब भैरव निकट आये तो विष्णु ने सर्व सभा सहित उठकर भैरव की स्तुति की और कहा कि तुम तो सब पापों के दूर करनेवाले तथा भक्तों के आनन्ददायक और अविनाशी हो। तुम यह क्या चरित्र और लीला कर रहे हो, हम से वर्णन करो। जो तुम हाथ में शिर लिये हुये भ्रमण कर रहे हो, इसका क्या कारण है? तुम तो संसार के महाराजाधिराज हो। यह तुम्हारा भीख माँगना आश्चर्य देता है। भैरव बोले कि हम ब्रह्मा का शिर काटकर पापी हुये। उस अधर्म से छूटने के कारण सर्व सृष्टि में फिरते हैं। विष्णु ने कहा कि मुझसे तीनों लोक के मोहने वाली अपनी माया को दूर रखिये। तुम सृष्टि भरके स्वामी हो। जो तुम्हारी इच्छा होती है, वही सब करते हो। वह सब तुमको शोभायमान है। तुम तो संसार से भिन्न हो। तुमको पुण्य-पाप से कुछ प्रयोजन नहीं। तुम्हारे नाम जपने से सर्व पाप भाग जाते हैं। जब तुम प्रलय में सब देवता, दैत्य, मुनीश्वर और वर्णाश्रमों को नष्ट

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करते हो तो तुमको क्यों पाप नहीं लगता ? उस समय ब्रह्मा का तो अभाव ही कर देते हो। अब केवल तुमको एकही शिर के काटने से पाप लग सकता है। अन्य कल्पों के ब्रह्माओं के शिर तुम्हारे गले में पड़े हुये हैं। उनकी ब्रह्म-हत्या तुमको क्यों नहीं लगती ? अब अपने को पापी ठहराते हो तुम्हारी विचित्र लीला है। देवता और मुनि उसको कोई नहीं जानते और जिस भाँति कि सूर्य के उदय होने से अँधियारा जाता रहता है उसी भाँति तुम्हारे भक्त के चाहे वह कैसा ही पापी हो, पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य एक बेर तुम्हारा ध्यान करता है, उसके दुःख और ब्रह्महत्या आदि पाप दूर होते हैं। तुम्हारे नाम लेने से पापों का पर्वत नष्ट हो जाता है। चाहे कोई शत्रु भी तुम्हारे नाम शिव, शंकर शशिशेखरादि ले, वह भी आवागमन से छूटे और वह सदा कैलाश में स्थिर रहेगा। तुम्हारा नाम शुभ है। तुमको यह शिर हाथ में लेकर भ्रमण करना उचित नहीं है। हमारा बड़ा भाग्य है कि जिस को योगी योग करके नहीं पाते, वह हमारे लोक में आज विराजमान हुये। हम धन्य हैं और हमारा लोक धन्य है जो आप ऐसे स्वामी को आज देखते हैं। आपकी दृष्टि अमृत का-सा गुण रखती है जिसको देखकर फिर आवागमन का भय नहीं रहता। जो अच्छे लोग तुम्हारा भजन करते हैं वे स्वर्ग और मोक्ष तृण के समान जानते हैं। विष्णु यह कह रहे थे कि भैरव ने भीख माँगी सो लक्ष्मी ने भिक्षा देकर प्रणाम किया और भैरव आगे चले और पीछे-पीछे ब्रह्महत्या साथ हुई।

सत्रहवाँ अध्याय।

स्कन्दजी बोले कि हे कुम्भज ! विष्णु ने ब्रह्महत्या को भैरव के पीछे जाते देखकर कहा कि भैरव का पीछा छोड़कर जो तुझे वर चाहिये, वह हमसे माँग ले। ब्रह्महत्या ने हँसकर कहा कि मैं शिवजी की आज्ञा से भैरव के पीछे फिरकर अपने को शुद्ध करती फिरती हूँ। भैरव को कुछ दुःख नहीं देती हूँ। जो कोई भैरव का नाम लेता है, मैं तुरन्त उसका घर छोड़ भाग जाती हूँ। हमारा अधिकार भैरव पर केवल इतना ही है कि यह बात केवल शिवजी की आज्ञा से हुई है। उस आज्ञा को कौन भङ्ग कर सकता है यह कह कर ब्रह्महत्या उसी प्रकार भैरव के पीछे चली। भैरव ने विष्णु के ऐसे विश्वास

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को देखकर कहा कि जो इच्छा हो, वह हमसे वर माँग लो। हमको यह चाण्डाली हत्या कुछ दुःख नहीं दे सकती। हम यह आपही संसार के लिये चरित्र कर रहे हैं। विष्णु बोले कि हमको यही बड़ा वर मिला कि आप हमारे लोक में आये। हम यह चाहते हैं कि हम प्रति दिन आपके चरण कमलों का ध्यान किया करें हमको हरदिन आपके दर्शन मिलें। भैरव ने कहा अच्छा यही वर हमने तुमको दिया। तुम भी देवता और मुनीश्वरों को वर दिया करो और तीनों लोक के स्वामी होकर आनन्दपूर्वक बैठे रहो। यह कह और सब देशों की परिक्रमा कर काशी की ओर चले। वह काशी जिसकी बराबर तीनों लोक में कोई क्षेत्र नहीं और जहाँ सबको परममुक्ति प्राप्त होती है। जब भैरव काशी के समीप पहुँचे तब ब्रह्महत्या अतिभयवती हो चिल्लाने लगी। जब भैरव बैठ गये तो वह हाहाकार करके पृथ्वी के नीचे चली गई और भैरव के हाथ से शिर धरती में गिर पड़ा। भैरव अति प्रसन्न हुये। सब देवता और मुनीश्वरों ने जय-जय उच्चारण किया। भैरव नाचने लगे। हे कुम्भजमुनि! काशी की महिमा देखो, वह सबसे श्रेष्ठ है। यह काशी शिवजी को कैसी प्यारी है, कि जो पाप भैरव का और किसी स्थान में नहीं छूटा था, वह काशी के भीतर जाते-जाते छूट गया। हम उसकी महिमा कहाँ तक कहें। वह तीनों लोक से निराली और मोक्ष देनेवाली पुरी है। वह सबसे श्रेष्ठ कपालमोचन तीर्थ है। जिसके दर्शन ही से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। जिसके स्मरण से बड़े-बड़े पाप छूट जाते हैं और मुक्ति मिलती है। वहाँ देवता और पितरों के तर्पण करने से ब्रह्महत्या से छूट जाते हैं। इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है जैसा कि वेद और पुराणादि कहते हैं। जो कि मार्गशीर्ष की कृष्णअष्टमी को भैरव अवतार हुआ तो उस दिन जो कोई व्रत करे, उसके जन्म भर के पाप दूर हो जावें। इसी प्रकार उस दिन जागरण का भी यही फल है। जो कदाचित् भैरव के निकट जाकर काशी में इस व्रत को करे तो जो पाप किये हो, वे सब दूर हो जावें और कोई भी दोष न रहे। जो उस दिन भैरव का पूजन करे तो एक वर्ष के बड़े-बड़े पाप सब मिट जाते हैं। जो अष्टमी, चतुर्दशी और रविवार को कोई भैरव की यात्रा करेगा, उसके सब पाप छूट जावेंगे। जो कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भैरव की आठ परिक्रमा करे तो उसको तीनों प्रकार के पाप न लगेंगे। यह भैरव का व्रत सब व्रतों का राजा है और चारों फल का देनेवाला है। जो मनुष्य दोनों लोक में सुख प्राप्त करने की इच्छा रखता हो, वह इसी व्रत को निश्चयपूर्वक करे। इस व्रत के करने से भैरव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। इस भैरवचरित्र के सुनने से मुक्ति होती है और बड़ा आनन्द मिलता है। चवालिसवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

अठारहवाँ अध्याय।

वीरभद्र अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! इससे पहले हम वीरभद्र अवतार का विस्तार से वर्णन कर चुके हैं। अब संक्षेप में कहते हैं कि दक्षप्रजापति हमारे पुत्र ने बुद्धि की हीनता से शिव के साथ वैर बढ़ाया और उनकी निन्दा की, पर शिवशङ्कर ने ऐसे वचनों का कुछ विचार न किया। इतने में वह यज्ञ करने लगा। सब देवता और हम भी अपने परिवारों सहित उस यज्ञ में आते गये। यद्यपि बड़ी धूमधाम थी, पर शिवजी के बिना कुछ शोभा न थी। दधीचि मुनि ने सबको समझाया कि तुम सब जाकर शिवजी को यहाँ लावो। पर यह बात किसी को न भाई। यहाँ तक कि विष्णु और हमने भी शिवजी को भुला दिया। अन्त को दधीचि मुनि यह बात कहकर कि यह यज्ञ पूर्ण न होगा, बाहर चले। इस बात को दक्षप्रजापति उत्तम समझकर हम सबकी सहायता से यज्ञ करने लगा। संयोग से सती अपने पिता के यज्ञ का होना सुनकर अति प्रसन्न हुईं और शिवजी से हठ करके आज्ञा पा दक्ष के यहाँ गईं। वहाँ शिवजी की अति अप्रतिष्ठा देख क्रोधित हुईं और कहा कि हे दक्ष, ब्रह्मा, विष्णु, सब देवता और मुनि आदि! तुम सबकी शुद्धबुद्धि जाती रही है। तुम सबने शिव बिना यज्ञ करना चाहा है। इसका फल तुम सबको मिलेगा। फिर योगधारण कर सती जल गईं। तब हाहाकार हो गया और सब विकल हुये। सती का मरना सुन बीस हजार गणों ने अपनी प्रसन्नता से अपने प्राण छोड़ दिये। शेष गणों को जिन्होंने उपद्रव उठाया, उन सबको भृगु ने मन्त्रों के बल से उच्चाटन कर दिया। उन सबने भागकर शिवजी के पास पहुँच

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सर्ववृत्तान्त वर्णन कर दिया। हे नारद! शिवजी ने तुमसे सब वृत्तान्त पूछा और फिर तुम्हारा वर्णन सुन शिवजी ने अति कोपित हो अपनी एक जटा उखाड़कर शिला पर मारी। उस समय पर्वत और नदियों समेत तीनों लोक काँप उठे। उस जटा के प्रथम भाग से एक मनुष्य चतुर्भुजी, स्वरूप त्रिनेत्र किये महाभयानक हाथ में त्रिशूल लिये वीरभद्रनामी उपजा और शिवजी के सामने आ खड़ा हुआ। उसने अपने रोमों से अपने समान असंख्य गण उपजाये। वे सब अट्टहास करते थे और जटा के दूसरे भाग से श्रीमहाकाली महाभयानक स्वरूप धारे अपने साथ करोड़ों योगिनियों को साथ लिये हुये बड़ा शब्द करते प्रकट हुईं। फिर वीरभद्र और काली ने हाथ जोड़कर शिवजी से अपना काम पूछा। तब शिवजी ने बड़े कोप से आज्ञा की कि तुम दक्ष के यहाँ पहुँच उसके यज्ञ को विध्वंस कर सबको दण्ड दो। यह आज्ञा पाकर वह सब सेना चली। उसके चलने से चारों ओर शब्द पूरित हुआ। वीरभद्र चले जिससे पृथ्वी काँप उठी। प्रचण्ड वायु चलने लगी। वीरभद्र के रथ में बीस अयुत सिंह लगे हुये थे। रथ बीस कोस लम्बा था जिसमें असंख्य छत्र लगे थे। वह गण जो वीरभद्र से उपजे थे सो चौंसठ करोड़ थे। वह भी वीरभद्र के साथ चले। इनके सिवाय और बहुत से शिवगण विमान पर आरूढ़ हो चले जिनमें अति प्रसिद्ध गण थे। यह सब सेना की संख्या जो गणों के साथ चली, चौंसठ करोड़ थी। सहस्र कोटि भूतों की सेना थी। क्षत्रपाल भी अपनी सेना समेत चले। भैरव भी असंख्य सेना लेकर साथ हुये। इस प्रकार इतनी सेना लेकर वीरभद्र चले जिसकी गणना नहीं हो सकती। यह वृत्तान्त दक्ष की स्त्री वीरनी ने जाना जिसने सती का आदर किया था। उसने सबसे समझाकर कहा कि अब कुशल नहीं है। शिवजी महाकोपित हुये। यह बात वीरनी सबसे कह रही थी कि सेना पहुँच गई। जहाँ हिमालय पर्वत के सुवर्ण के शिखर हैं और मायापुरी के निकट जहाँ गङ्गा बह रही हैं, उस देश का नाम कनखल है। वहीं पर दक्ष यज्ञ कर रहे थे। निदान वीरभद्र ने पहुँच कर प्रलय की अग्नि के समान होकर उच्चस्वर से कहा कि हम शिवजी की आज्ञा से आये हैं। तुममें से किसी को बिन बध किये न छोड़ेंगे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उन्नीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! वीरभद्र ने यह कह यज्ञस्थान को जला दिया और सब गणों को आज्ञा दी कि अकाल प्रलय करो। यह सुन गणों ने महाक्रोध कर यज्ञ के विद्यमान देवताओं और मनुष्यों की दाढ़ी केश आदि सब उखाड़ डाले। सबको शस्त्रों से मारा। ऐसी मार देख दिक्पालों ने कुछ सामना किया। पर वे सब वीरभद्र से परास्त हो गये। इन्द्र की भुजा उठ न सकी। वह त्रिशूल से विकल हो गये। अनल की शक्ति काटकर उसे त्रिशूल से घायल कर दिया। यमराज का कालदण्ड काटकर मूर्च्छित कर दिया और नैर्ऋति का खड्ग तोड़कर उसके हृदय में त्रिशूल मारा। वरुण की पास काट उसको अपने बाण से घायल किया और पवन की ध्वजा नष्ट कर उसे फरसे से मारा। कुबेर की गदा तोड़ उसे अपने त्रिशूल से घायल किया। चन्द्रमा को लात से मारा और आठों वसुओं का मुशल काट दुःख दिया। इनके सिवाय और जो युद्ध के लिये खड़े थे, उन सबको अपने शस्त्रों से हना। यह दशा देख सब देवता भाग खड़े हुये और उनका कोई उपाय न चला। गणों ने महाभयंकर अट्टहास किया और यज्ञ को नष्ट करने लगे। उससे अत्रि मुनि भागकर विष्णु के चरणों पर गिर पड़े और कहा कि हमारी रक्षा करो, हम आपकी शरण में हैं। आप यज्ञरूप और यज्ञ की रक्षा करनेवाले हैं। हम देवताओं और मुनि आदि के दुःख को कहाँ तक वर्णन करें। यह जो शिव के गण आये हैं, इनको निवारण करो। सो दक्षप्रजापति भी विष्णु से यह विनती करके चरणों पर गिर पड़े और बड़ी भारी स्तुति करके कहा कि ऐसी कृपा कीजिये जिससे यह गण निवृत्त हों। कदाचित् गणों ने हमारा यज्ञ नष्ट कर डाला तो हमारी बड़ाई में अन्तर पड़ जावेगा। ऐसी-ऐसी विनय कर दक्ष हाथ जोड़ विष्णु के आगे खड़ा हुआ। ऐसी देवताओं और दक्ष की विनती सुन कर विष्णु गणों पर क्रोधित हुये और लड़ाई के लिये खड़े हो गये। सब शस्त्र विष्णु के स्मरण करने से आये। विष्णु रथ पर आरूढ़ हो युद्ध के निमित्त चले और गणों के सामने खड़े होकर ज्वलित अग्नि के समान दिखाई दिये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गणों को अपने बाणों से विकल करके युद्धस्थान से भगा दिया। तब श्रीमहाकाली महाकोपित होकर बड़ा शब्द करती हुई विष्णु के सम्मुख चली। काली की सेना भी विष्णु के ऊपर चढ़ धाई और विष्णु को चारों ओर से घेर लिया। क्षेत्रपाल भी अपनी सेना लेकर विष्णु से लड़ने को चले। भैरव भी विष्णु के सामने चढ़ धाये। सो इन तीनों ने विष्णु से बड़ा युद्ध किया। विष्णु की बहुत सेना मर गई। निदान विष्णु ने सबको परास्त कर अपना तेज ऐसा बढ़ाया कि कोई उनसे भिड़ न सका। अन्त को भैरव, काली और क्षेत्रपाल विष्णु की सेना के भीतर पैठे कि जिस तरह राहु चन्द्रमा को घेर लेता है। तब तो विष्णु ने अपना धनुष हाथ में लेकर सौ बाण चलाये और साथ उसके अपना शंख बजा दिया। उस समय जो सब देवता वीरभद्र के भय से भाग गये थे, सब विष्णु के समीप आ गये। दोनों ओर से महासंग्राम हुआ। श्रीमहाकाली ने हँसकर अपना मुख पृथ्वी से आकाश तक फैला दिया। बहुत-सी सेना अपने मुख के भीतर डाली और कइयों का शिर तोड़कर खा लिया। क्षेत्रपाल ने सौ बाण चलाकर बहुत सेना मार डाली। भैरव ने भी अपने त्रिशूल से असंख्य सेना वध की। इस प्रकार काली, भैरव और क्षेत्रपाल ने देवताओं और विष्णु की सेना बहुत ही मार डाली। विष्णु ने भी सब बाणों को जो चलानेवाले थे, छोड़ दिया। योगमाया से सब बाणों को अभिमन्त्रित कर चलाया। फिर योगमाया से अपने समान बहुत से पार्षद शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुये प्रकट किये। उन्होंने गणों को मारकर बड़ा भय दिया। ऐसी योगमाया विष्णु की देखकर वीरभद्र ने अति क्रोधित हो अपना त्रिशूल चलाया जिससे विष्णु की योगमाया सब नष्ट होकर अकेले विष्णुजी रह गये। वीरभद्र ने अपनी गदा विष्णुजी के मस्तक में मारी सो विष्णुजी न सहकर पृथ्वी में गिर पड़े। दोनों सेना में हाहाकार मच गया और विष्णु ने फिर उठकर अपना चक्र हाथ में लिया जो प्रलयकाल के असंख्य सूर्यों के समान प्रकाशमान था। उसकी अग्नि चारों ओर फैल गई। आकाश और पृथ्वी जलने लगे। उसको देख सब गण आश्चर्य में हो विष्णु के सामने ठहर न सके। वीरभद्र ने शिव का ध्यान किया

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि उनको चक्र के रोक देने की शक्ति प्राप्त हुई जिसके बल से वीरभद्र ने चक्र न चलने दिया।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! विष्णुजी के हाथ से चक्र न चल सका जिसके चलने से प्रलय हो जाता है। विष्णु भी पर्वत के समान खड़े रह गये। विष्णु ने मन्त्र पढ़ा जिससे शरीर तो डोल सका पर चक्र को कुछ भी चलने की शक्ति न हुई। उस समय हमने आकर विष्णु को समझाया कि जो होना है, वही होगा आप वृथा ही हठ करते हैं। क्या दधीचि मुनि का वचन अन्यथा हो सकता है? अब आप इसको शिव की इच्छा जान इस विषय में परिश्रम न करें। आप अपने वैकुण्ठ को चलें। सो विष्णु अपने धाम को चले गये। तब वीरभद्र नाना प्रकार के उपद्रव करते हुये यज्ञ के पास पहुँचे पहिले तो यज्ञ के स्थान को फूँक दिया और किसी गण ने यज्ञ कराने वाले की दाढ़ी उखाड़ डाली। जो शिव के विरुद्ध मुनीश्वर थे, उनको मार डाला। कई गणों ने यज्ञ का स्थान, किसी ने यज्ञ का सामान भ्रष्ट कर डाला। जितने यज्ञ के पात्र थे, वह गङ्गाजी में फेंक दिये। जल डाल सब यज्ञकुण्ड बुझा दिये। उस समय मख हरिण का रूप धार भाग चला। वीरभद्र इस बात को जानकर उसे आकाश से पकड़ लाये और उसका शिर तुरन्त काट डाला। धर्मराज, दक्ष प्रजापति और कश्यप के शिर पर अपनी लात मारी। इसके सिवाय कृष्टनेमि, कृशाश्व और अङ्गिरस मुनीश्वरों के शिरों को लात से मारा। सरस्वती की नाक काट डाली जो देवताओं की माता थी और नख से भग के नेत्र निकाल लिये भृगुमुनि की मूँछे उखाड़ डालीं। मुष्टिका के प्रहार से पूषा के दाँत तोड़ डाले ऐसी बातों से भी संतोष न रखकर दक्ष को पकड़ उसका शिर काटने लगे। पर जब शिर न कटा तो वीरभद्र ने शिव का ध्यान कर शिवजी की आज्ञानुकूल उसका शिर मरोड़कर आग में डाल दिया। इसी प्रकार बहुत से उपद्रव कर यथाशक्ति सबको प्रतिफल दिया और उसी चिताभूमि में प्रलय करनेवाले रुद्र के समान विराजमान हुये। उस समय हम, ब्रह्मा और विष्णु आदि ने शिव के निकट जा विनय की कि आपके गण वीरभद्र ने यज्ञ को विध्वंस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर सबको विकल कर दिया है। दक्षप्रजापति ने वास्तव में बहुत ही निर्बुद्धिता का काम किया कि आपको अवधूत समझ यज्ञ में न बुलाया। आपने जो दण्ड सबको दिया, वे उसके सब योग्य थे पर हमारे अपराधों पर दृष्टि न करके अब दया कीजिये। अब सबको यह शुभ मति उपजी है कि आप सर्वोपरि हैं। आप कृपा करके यज्ञ पूर्ण करें और वह उपाय करें जिसमें दक्ष जी उठे। इस प्रकार सबको आनन्द दो क्योंकि सबने निश्चय करके यह बात ठहराई कि तुम्हारे भाग बिन यज्ञ न होगा। जो आप सब प्रकार दण्ड न देते तो धर्म नष्ट होकर पाप फैल जाता। आपकी बड़ाई छोड़ने से मनुष्य वेदहीन हो जाते। अब हम सब आपकी शरण में आये हैं। सो शिव जी प्रसन्न हुये और वीरभद्र की ओर दया की दृष्टि से देख दिया। वीरभद्र शिव के चरणों पर गिर पड़े। विनती की कि जो आज्ञा मुझे मिले, उसका पालन करूँ। शिवजी ने कहा कि अब तुम सब गण क्रोध दूर करो क्योंकि अपना-अपना सब दण्ड पा चुके हैं। यह कह सब गणों को बिदा किया और सबकी ओर कृपा की दृष्टि से देख दिया जिससे सबके अङ्ग पूर्व के समान हो गये। जो मर गये थे, वह सजीव मनुष्यों के समान उठ खड़े हुए। भृगु के बकरे की दाढ़ी जमाई और दक्ष के शरीर पर बकरे का शिर करके उसको जिला दिया। दक्ष ने विचित्र स्वर से शिव की स्तुति की शिवजी ने यज्ञ के पूर्ण करने के लिये आज्ञा दी। सो यज्ञ पूर्ण हुआ और सबको यज्ञ भाग देकर शिवजी को भी पूर्ण भाग दिया। इसी प्रकार श्रीशिवशङ्कर यज्ञ पूर्ण कर अपने गणों सहित कैलाश पर्वत को लौट आये। विष्णु, हम और सब देवता आदि अपने-अपने लोक को चले गये। हमने अपनी बुद्धि के अनुसार वीरभद्रावतार का चरित्र कह सुनाया। जो इस चरित्र को पढ़े वा सुनेगा, वह इस लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपद पावेगा। इस अवतार की कथा बड़ी आनन्द देने वाली है।

इक्कीसवाँ अध्याय।

शरभ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम शरभ अवतार का वर्णन करते हैं कि पूर्वकाल में दिति के दो पुत्र कनककशिपु बड़ा पुत्र और कनकाक्ष

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छोटा पुत्र उत्पन्न हुये जो देवताओं के बड़े शत्रु और जिनके अधीन सर्व संसार था। संसार भर में केवल उन्हीं की आज्ञा चलती। उन्होंने देवताओं को बड़ा दुःख दिया और दोनों ने मिलकर संसार भर का धर्म भ्रष्ट कर डाला। अधिक पापों के कारण संसार में बड़े उपद्रव उठने लगे। उनमें से जो छोटा भाई कनकाक्ष था, उसको तो विष्णु ने बारह अवतार धार कर मार डाला। जो कनककशिपु था, उसके चार पुत्र उपजे। उन चारों में से प्रह्लाद सबसे छोटा था। वह बड़ा सत्यवादी, तपस्वी, धर्मवान् और आत्मज्ञानी था। वह विष्णु का बड़ा भक्त हुआ। उसने उपजते ही विष्णु की पूजा की। सिवाय विष्णु के उसने संसार में और कुछ किसी वस्तु को न देखा। जो विष्णुजी का अष्टाक्षरी मन्त्र है, उसको प्रतिदिन आनन्द से जपता। एक दिन कनककशिपु ने प्रह्लाद को गुरु के पास विद्याध्ययन के लिये सौंपा। वह गुरु के यहाँ भी वही विष्णु का अष्टाक्षरी मन्त्र पढ़ा करता था। जो गुरु राजनीति आदि पढ़ाता, वह प्रह्लाद न पढ़ते। एक दिन कनककशिपु ने प्रह्लाद की परीक्षा लेने के लिये अपने पास बुलाकर पढ़ने का हाल कुछ पूछा और कहा कि हे पुत्र! जो गुरु से पढ़ा हो, वह सुनाये। प्रह्लाद ने उत्तर दिया कि हमने विष्णु का नाम पढ़ा है जिसकी सेवा से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है। उस वैकुण्ठवासी विष्णु के समान संसार में और कोई नहीं है। यह सुनकर कनककशिपु ने प्रह्लाद को अपनी गोद से फेंक दिया और कहा कि विष्णु कौन है जिसके चरणों की प्रीति तुमको उपजी है। तुम विष्णु, ब्रह्मा और शिव आदि देवताओं को छोड़कर हमारी सेवा किया करो। मुझसे बड़ा और संसार में कौन है ? मुझसे देवता और दैत्य सब डरते हैं। ऐसा वचन पिता का सुनकर प्रह्लाद ने कुछ भय न किया और ऊँचे शब्द से फिर विष्णु का नाम लेकर कहा कि हम पर उपकार करने वाला वही है। यह कह विष्णु के चरणों में और भी प्रीति बढ़ाकर अन्य बालकों से भी प्रीति कराने लगा। हे नारद! यह धर्म बड़ा आनन्द देनेवाला है कि अपने स्वामी के चरणों की सेवा न छोड़े। निदान कनककशिपु ने ऐसी बुद्धि अपने पुत्र प्रह्लाद की देखकर दैत्यों को बुलाकर आज्ञा दी कि इसको मार डालो। यह बालक हमारा शत्रु होकर हमारे विरोधियों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की सेवा करता है। यह आज्ञा सुनकर दैत्यों ने प्रह्लाद को कितना ही मारा पर प्रह्लाद के शरीर में एक घाव तक भी न लगा क्योंकि विष्णु ने प्रह्लाद की रक्षा की। कनककशिपु ने प्रह्लाद का न मरना सुनकर क्रोध करके प्रह्लाद को अपने पास बैठाया और कहा कि हे पुत्र! तेरा स्वामी कहाँ है मुझको बतला दे। मैं तेरा वध करता हूँ, वह तुझे बचा लेवे। यह कहकर खड्ग ले प्रह्लाद का शिर काटने को तय्यार हो गया पर प्रह्लाद को कुछ भी भय न हुआ। उसने उत्तर दिया कि वह हमारा स्वामी सब जगह वर्त्तमान है और सबमें विद्यमान है। बिन उसके कौन मारने वाला है, वही स्वामी भक्तरक्षक है। यह सुनकर कनककशिपु ने कहा कि फिर क्यों वह तेरा स्वामी उस खम्भे में दिखाई नहीं देता? यह कहकर खम्भे में तलवार चलाई तो उसमें से महाभयङ्कर शब्द निकला। फिर भक्त के पालनेवाला विष्णु नरहरिरूप होकर उसी खम्भे से निकल आये और ब्रह्मा का वर स्थित रखकर कनककशिपु का उदर विदीर्ण कर मारडाला। उन्होंने सिंह का-सा घोर शब्द कर दैत्यों को भी मारा और महाक्रोधित होकर बड़ा भयानक रूप बनाया जैसा कि प्रलय की अग्नि हो। फिर नरहरि ने बड़ा शब्द किया जो तीनों लोक में छा गया और तीनों लोक भयभीत हुये। पृथ्वी काँप उठी, पर्वत जलने लगे, दिग्गज न रह सके। तब नरहरि ने अपना स्वरूप और भी अधिक भयानक कर सहस्र चरण और सहस्र ही नेत्र धारण किये। तीनों अग्नि और सूर्य प्रकट होकर तीनों भुवनों को जलाने लगे। ऐसा स्वरूप नरहरि का देखकर देवता वहाँ ठहर न सके वरन् कुछ दूर भाग गये। विष्णु, हम और बड़े-बड़े देवता दूर ही से स्तुति करने लगे। हमने प्रह्लाद से कहा कि तुम नरहरि को शान्ति करके सब लोगों के दुःख दूर करो। प्रह्लाद इस बात को मान नरहरि के पास गये पर तो भी उनका क्रोध न गया वरन् वह और चिल्लाने लगे। तब तो इन्द्रादिक सब देवता वहाँ से भागकर शिवजी की शरण में गये। हम, इन्द्र और दिक्पति आदि देवताओं ने शिवजी की स्तुति की और विनय की कि हम सब आपकी शरण में आये हैं। ऐसा उपाय कीजिये कि जिसमें नरहरि का क्रोध शान्त हो। इसी प्रकार का क्रोध वीरभद्र ने दक्ष के यज्ञ के बिगाड़ने के पीछे किया था

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जिसको आप ही ने दूर किया था। हमको इस क्रोधाग्नि का बुझानेवाला दूसरा दिखाई नहीं देता।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारदजी ! ऐसी स्तुति सुनकर शिवजी ने प्रसन्न हो इस इच्छा से कि नरहरि का क्रोध दूर करें, वीरभद्र अपने गण का स्मरण किया। सो वीरभद्र अट्टहास करते नरहरि के समान करोड़ों गणों को साथ लिये हुये आये। वह महाभयङ्कर रूप था। उन्होंने हाथ जोड़ शिवजी से कहा कि मुझे क्या आज्ञा होती है ? शिवजी बोले तुम जाकर नरहरि का क्रोध शान्त करो। तुम उनको नम्रतापूर्वक समझाना। कदाचित् उनके क्रोध की अग्नि तुम्हारे समझाने से दूर न हो तो हमारा भाव बल करके दिखा देना और केवल वचनों ही से उनका गर्व नष्ट कर डालना। उनका संकोच मानकर उनको दण्ड न देना। अधिक तेज को अधिक ही से दूर करना और न्यून को न्यून से निवारण करना। इसी प्रकार नरहरि के शरीर को अपने में मिलाकर हमारे पास लाना। यह सुन वीरभद्र शान्तरूप बन गये और नरहरि के पास जाकर जैसे पिता अपने पुत्र से उपदेश के वचन कहे तैसे कहने लगे कि हे विष्णु ! तुमने नरहरि अवतार संसार के स्थित होने के निमित्त लिया है। तुम प्रलय होने का उपाय मत करो। तुम तीनों लोक के पालन के निमित्त हो। अब शिवजी की आज्ञा मान अन्तर्धान होकर सबको आनन्द दो और दूसरे अवतारों की चाल चलो। यही शिवजी की आज्ञा है। तुमको शिवजी ने प्रलय करने को अपना तेज नहीं दिया। तुम्हारे समान तीनों लोक में दूसरा शिवभक्त नहीं है। तुमने उत्तम रीति से वेद के धर्म स्थापित कर दैत्यों को नष्ट कर दिया। जिस कार्य के निमित्त यह तुमने अवतार धारण किया, वह कार्य सुगमता से पूर्ण हो गया। अब तुम क्यों अपना भयानक स्वरूप बनाये हुये हो ? इसलिये उचित है कि इस रूप को निवृत्त करो। यह वीरभद्र का वचन सुन नरहरि ने अग्नि के समान हो अति कोप से उत्तर दिया कि तुम अपने घर चले जावो जहाँ से आये हो। यह वचन मेरी इच्छा के विरुद्ध कहकर क्यों मेरा क्रोध बढ़ाते हो। इस समय हम यही जानते हैं कि हमको कौन निवृत्त करने वाला

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है? तीनों लोक हमारे अधीन हैं। संसार में हमारा सिखानेवाला कौन है? हम सबके स्वामी हैं। सर्व संसार हमारी कृपा से स्थित है। हमारे तेज से सर्व संसार है। हमारी नाभिकमल से ब्रह्मा उपजे। हमको वेद सत् चित् आनन्द कहना है। हम सबके स्वामी, स्वाधीन, सृष्टिकर्ता, पालनकर्ता और प्रलय के भी करनेवाले हैं। हम सर्व संसार के राजा हैं। वह कौन है जो हमको सिखाता है। किसने अपना भारी प्रभाव तुमसे प्रकट करके तुमको हमारे दूर करने के लिये भेजा है? हम काल के नष्ट करनेवाले और संसार के नष्ट करनेवाले भूत के भूत हैं। देवता हमारी कृपा से जीते हैं। वीरभद्र ने कहा कि तुम उसको चलकर क्यों नहीं देखते जो प्रलय का करने वाला है जिसके हाथ में पिनाक और त्रिशूल है। यह तुम्हारे वचन बहुत ही अयोग्य हैं। तुमको निश्चय करके दुःख प्राप्त होगा। यह रीति है कि मरने के समय सबकी बुद्धि विरुद्ध हो जाती है। तुम्हारे भेजे हुये जितने अवतार हुये जो दशा उनकी हुई है, वही तुम्हारी भी होगी। अर्थात् शिवक्रोधकर तुम्हारा शरीर नष्ट कर देवेंगे। तुम शिव की बड़ाई और प्रताप नहीं जानते। उनको देवताओं के समान जान ऐसा गर्व करते हो। तुम प्रकृति हो और शिव पुरुष हैं जिन्होंने तुम्हारे शरीर में वीर्य स्थित किया और तुम्हारी नाभि से कमल पुष्प उत्पन्न हुआ जिसमें से पञ्चमुखी ब्रह्मा उपजे। ब्रह्मा की भृकुटि से शिव उत्पन्न हुये। उन्होंने सबके ऊपर अपना रूप दिखाया। उन्हीं शिव ने हमको तुम्हारे अहंकार के दूर करने के लिये भेजा है। तुम केवल एक दैत्य का वध कर इतना अहंकार करते हो। अब वृथा मत चिल्लावो। यह बात तुम्हारे लिये बहुत बुरी है। जब हम क्रोध करेंगे तो तुम लज्जित होगे। तुम अपनी निर्बलता देकर अपना क्रोध शान्त करोगे। संसार में जो मनुष्य बुरे हैं, उनके साथ उपकार करना अपने ही को हानिकारक होता है। जैसा कि सर्प को दूध पिलाने से उसके विष की ही वृद्धि होती है। जो तुम शिवको अपना बनाया हुआ और अपना अधीन कहते हो तो हमको निश्चय हुआ कि तुम संसार के उत्पन्न और पालन करनेवाले नहीं हो, न स्वाधीन और मुक्ति देनेवाला हो। तुम शिवजी की आज्ञा से अवतार लेते हो। जब तुमने कमठ अवतार लिया

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो तुम क्या नहीं जानते कि शिव ने तुम्हारे शिर को जलाकर अपने हार में पिरो लिया। जब तुमने वाराह अवतार धारा तो शिवजी ने तुम्हारे दाँत उखाड़कर अपना त्रिशूल तुम्हारे शरीर में मार तुम्हारा अहंकार दूर किया। शिव ने भैरव अवतार लेकर तुम्हारे पुत्र ब्रह्मा का शिर काटा कि अब तक ब्रह्मा के पाँचवाँ शिर नहीं है। क्या यह बात तुम भूल गये हो? तुम दक्षप्रजापति के यज्ञ का स्मरण करो। हमने क्षणभर में तुम्हारा शिर काट डाला। जब तुमने दधीचि मुनि के साथ युद्ध किया था तब क्या शिवजी का प्रताप नहीं देखा था कि तुम देवताओं समेत मुनि की शरण में गये थे। जिस चक्र के बल पर तुम इतना अहंकार करते हो, यह तुमको किसने दिया था? क्या तुमको सहस्र कमल पुष्प की पूजा भूल गई जिससे तुमको यह चक्र मिला था। शिवजी की माया से तुम्हारी बुद्धि नष्ट होकर तुम क्षीरसमुद्र में अकेले पड़े रहते हो। तुम क्योंकर सतोगुणी और निर्दोष हो सकते हो? हम तुमसे लेकर तृणपर्यन्त सब शिवजी की शक्ति के अधीन हैं। तुम्हारा यह सब प्रताप और बल शिवजी की कृपा से है। वही शिवजी निष्पाप और तीनों लोक के उपजानेवाले हैं। तुम वृथा ही इतना गर्व करते हो। अब भी समझ जावो। तुम और ब्रह्मा शिवजी से बलवान् नहीं हो। उनका प्रताप सर्वोपरि है। तुम काल हो और शिवजी महाकाल, कालों के काल महेश हैं। वही शिवजी संसार के सिखानेवाले हैं, तुम और ब्रह्मा नहीं। जो शिव क्रोधित होंगे तो तुम्हारा बचानेवाला कोई न होगा। तुम्हारे लिये सिवाय मृत्यु के और क्या होगा? यह सुनकर नृसिंह ने कोपित हो चाहा कि वीरभद्र को पकड़ लेवें पर वीरभद्र ने अपना शरीर आकाश में छिपा लिया। शिवजी का तेज जलती हुई अग्नि के समान प्रतीत हुआ जिसकी उपमा सूर्य, वह्नि और बिजली से भी नहीं दे सकते। वह तेज चारों ओर फैल गया। उस समय सब तेज शिवजी के तेज में आकर मिल गये। आकाश दिखाई न देता था जिससे देवता और मुनि आश्चर्य में हुये पर शिवजी की लीला किसी ने न जानी। इतने में शिवजी इस स्वरूप से प्रकट हुये कि उनका आधा शरीर सिंह का, दो पंख और चोंच धारे, सहस्र भुजा से सुशोभित,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शीश में जटा, मस्तक में चन्द्रमा विराजमान, महाभयङ्कर दाँत और नख उनके वज्र के समान थे। वही मानो उनके शस्त्र थे। एक कण्ठ आठ चरण और उनके नेत्र क्रोध में भरे हुये सूर्य के समान चमकते थे। सिवाय हुंकार के और कोई शब्द सुनाई न देता था। वे दाँतों से ओठ काटते थे। ऐसा भयानक स्वरूप देखकर विष्णु का अहंकार दूर हो गया। वह अति निस्तेज हो गये कि जैसे सूर्य के उदय से खद्योत और जैसे सिंह के सामने सिंह का बच्चा हो जाता है तैसे ही शरभ अवतार के प्रादुर्भूत होने से विष्णुजी की दशा हो गई। सो शरभजी ने बल करके अपना शरीर हिलाया और अपनी दो भुजा से नरहरि की दोनों भुजा पकड़ दो भुजा से नरहरि का हृदय और पूँछ से नरहरि के चरण पकड़ तुरन्त उनको धर लिया और उनको आकाश की ओर ले उड़े। फिर आकाश से पृथ्वी पर डालकर फिर पृथ्वी में उतरकर पकड़ा। इसी प्रकार बारम्बार उड़कर नरहरि को निर्बल कर दिया। उस समय देवता और मुनीश्वर सब स्तुति करने लगे और नरहरि का सब अहंकार दूर हो गया। वह महादीन हो गये। सो उन्होंने शिवजी के एकसौ आठ नाम वर्णन कर स्तुति की और कहा कि हे शरभेश्वर! जब मुझे क्रोध उपजे तो आप इसी प्रकार मेरा अहंकार दूर किया कीजिये। यह कह और अपना शरीर छोड़कर अन्तर्धान हो गये। उस समय हमने देवताओं और मुनीश्वरों समेत शरभेश्वर महाराज की बड़ी सेवा करके स्तुति वर्णन की। तब शरभेश्वर शिवजी ने कहा कि यह बात भली-भाँति समझ लो कि हम और विष्णु कुछ भिन्न नहीं हैं वरन् एक ही रूप हैं। ऐसे चरित्र करके हम परस्पर लीला करते हैं। हम और विष्णु समान हैं, कुछ भी न्यूनता नहीं। जो विष्णु के विरुद्ध हैं, वह मेरा भी विरोधी है। मुझे छोड़ विष्णु की भक्ति नहीं हो सकती। यह कह शिवजी ने नरहरि का शिर और चर्म उठा लिया। शिर को तो अपनी माला का सुमेरु बनाकर चर्म ओढ़ लिया। सबके देखते-देखते शिव अन्तर्धान हो गये और देवता आदि भी अपने-अपने मनोरथ पा अपने-अपने धामों को गये। हे नारद! इस चरित्र के पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में बहुत आनन्द मिलता है। छियालीसवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेईसवाँ अध्याय।

यक्षावतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! अब हम यक्षावतार का वर्णन करते हैं जिसने तुरन्त ही सब देवताओं का मद हारा। जब देवता और दैत्य समुद्र के मथने के समय लड़े और दैत्य देवताओं से परास्त हो गये तो देवता मारे अहंकार के शिवजी को भूल आप अपने को पृथ्वी, आकाश और पाताल का स्वामी समझने लगे। वे इकट्ठे होकर गर्वपूर्वक वार्त्ता करने लगे। सो पहिले विष्णु ने कहा कि हमने शत्रुओं को परास्त किया, हमने कालनेमि का वध किया। तब इन्द्र बोले कि हमने बहुत दैत्यों को सहज ही मार लिया और प्लक्षादि दैत्यों को हमने मारा। इसी प्रकार सब देवता अहंकार से अपनी-अपनी वीरता वर्णन कर सराहना करने लगे। शिव ने देवताओं का ऐसा-अहंकार जान विचित्र चरित्र किया। अर्थात् यक्षरूप से देवताओं के पास जाकर सबसे कुशल पूछी। किसी ने न जाना कि यह शिव हैं। फिर कहा कि तुम सब इस स्थान पर बैठे हुये क्या करते हो? जाना जाता है कि तुम अहंकार में भरे हुये हो। क्या कारण है कि तुम सब बैठे हो? देवताओं ने कहा कि क्या तुमने नहीं सुना कि यहाँ देवासुर संग्राम हुआ था। हमने दैत्यों को नष्ट कर डाला। जो शेष बचे, वह भाग गये। यक्षरूपी शिवजी बोले कि हे विष्णु आदि देवताओं! ऐसा मत कहो। तुम्हारे ऊपर और कोई है। तुम इतनी अहंकार की बात मत कहो। कोई बड़ा पुरुष तुम पर है, वह सबसे बलिष्ठ और तेजस्वी है। जो बात वह चाहता है, उसी बात को करता है। जो तुमको इस बात का निश्चय न होवे तो तुम सब मिलकर एक तृण को काट तो डालो। इतना कह शिवजी ने एक तृण देवताओं के ऊपर फेंक दिया। सब देवताओं ने अपने-अपने शस्त्र उस पर चलाये पर वह कुछ भी न हिला। जैसे पड़ा था, पड़ा रह गया। तो इन्द्र ने अति कोपकर अपना वज्र उस तृण पर चलाया पर वह निष्फल हुआ। उस समय विष्णु ने क्रोधित होकर अपना चक्र मारा पर वह भी निरर्थक हुआ। तब सब देवता लज्जित हुये और सबको अति विकलता प्राप्त हुई। इतने में आकाश-वाणी हुई कि हे देवताओं! तुम कुछ अपने मनों में संशय मत करो। तुम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सबने अहंकारी होकर अपने स्वामी को नहीं पहिचाना । जो तुम सबसे श्रेष्ठ हैं, उसको तुमने मारे गर्व के भुला दिया । वह तुम्हारे मद को देखकर यक्षरूप से प्रकटे । उन्होंने तुम्हारा अहंकार दूर कर दिया । अब भी तुम गर्व दूर कर अपने स्वामी के चरण पकड़ो और शिव की शरण में जाकर फिर कभी ऐसा अहंकार न करना । यह जो तुम्हारे सामने खड़े हैं, यक्षरूपी सदाशिव हैं । यह सुनकर सब देवता यक्षेश्वर महादेव के चरणों पर गिर पड़े और बहुत प्रकार से प्रणामकर अहंकार से रहित हुये । निश्चय किया कि जो संसार में बल शिवजी को है, वह और किसी को नहीं है । फिर शिवजी की स्तुति देवता आदि सब करने लगे । कहा कि हम सब आपकी शरण में हैं । हमारा अहंकार दूर हो गया । अब आपसे आशा रखते हैं कि फिर हमको अहंकार न उपजे । शिव ने प्रसन्न होकर ॐकार उच्चारण किया । फिर सब अपने घरों को चले गये, सैंतालीसवाँ यक्षेश्वर अवतार पूर्ण हुआ । इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह यक्षेश्वर शिवजी का चरित्र अति पवित्र है । इसके पढ़ने-सुनने से बड़ा सुख प्राप्त होता है । अब हम दश महाकाल शिवजी के अवतारों का वर्णन करते हैं । शक्तिसहित शिव के दश अवतारों का वर्णन—पहिला शिवजी का महाकालरूप है जिनके स्मरण से अति सुख प्राप्त होता है । महाकाली नाम इस अवतार की शक्ति हैं जिनकी सखियाँ आनन्द में रहती हैं । दूसरा तारनाम अवतार जिनकी शक्ति का नाम तारा है, तीसरा बालि जिनकी शक्ति का नाम भुवनेश्वरी हैं, चौथा विघ्नेश जो सोलह क्लेश दूर करते हैं । उनकी शक्ति का नाम विद्या है, पाँचवाँ भैरव जिनकी शक्ति को भैरवी कहते हैं, छठा छिन्नमस्तक जिनकी शक्ति का नाम छिन्नमस्तका है जो अति तेजोमयी है, सातवाँ धूमावत जिनकी शक्ति को धूमावती कहते हैं, आठवाँ बगलामुख जिनकी शक्ति का नाम बगलामुखी है, नवाँ मातङ्ग अवतार शिव का है जिनकी शक्ति को मातङ्गी कहते हैं दसवाँ कमल जिनकी शक्ति को कमला कहते हैं । इन दशों अवतारों का पूजन और दशों शक्ति के सेवन से सर्व मनोरथ पूर्ण होते हैं और अपने भक्त को कृतार्थ कर देते हैं । ५७ अवतार पूर्ण हुये ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौबीसवाँ अध्याय ।

ग्यारह रुद्रावतार का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम ग्यारहों रुद्रों का जो शिवजी के अवतार हैं, वर्णन करते हैं। वे अति बलवान् और सुख के देनेवाले हैं तथा दैत्यों को नष्ट करते हैं। उनकी उत्पत्ति कि क्यों यह उपजे और जिनके चरित्रों के सुनने से वीरता और सुख बढ़ता है, हम कहते हैं। पूर्वकाल में दैत्यों ने महाबलिष्ठ हो देवताओं को बड़ा दुःख दिया। यद्यपि देवता दैत्यों से बहुत लड़े पर उनके बल से परास्त हो गये। सामना न करके इधर-उधर भाग गये। एक दिन सब देवता मिलकर कश्यप के पास पहुँचे और अपने पिता कश्यप के सामने हाथ जोड़कर अपना दुःख कहा। कश्यप ने शिव का स्मरण कर सब देवताओं से कहा शिव की इच्छा शुभ है। वह धन्य हैं कि तुम्हारा दुःख दूर करेंगे। कुछ दिन तक समय देखो। वह तुम पर अनुग्रह करेंगे। तुम अपने-अपने घरों में जाकर शिव का ध्यान किया करो। हम भी तुम्हारे लिये शिव का तप स्त्री सहित करेंगे। सो कश्यप ने देवताओं के बिदा करने के अन्तर शिव का बड़ा कठिन तप किया। ऐसा कठिन तप कश्यप का देखकर शिव प्रसन्न हुये। वे कश्यप के समीप प्रकट होकर खड़े हो गये। कश्यप स्तुति करने लगे और बारम्बार अपनी स्त्री सहित शिव के चरणों पर गिरे और कहा यद्यपि जो वर मैं माँगना चाहता हूँ, अनुचित है। पर मैं ढिठाई से वर्णन करता हूँ कि आप मेरे घर अवतार लें और मेरे पुत्र हों। देवताओं के साथ मित्रता करके दैत्यों का विनाश करें। देवताओं को उनका राज्य दिला दें और सदा देवताओं की सहायता करें। तुम सब देवताओं के राजा हो। यह कह कश्यप चुप हो गये। शिव यह कहकर कि अच्छा यही होगा, अन्तर्धान हुये। उन्होंने कश्यप के मन में वास किया। कश्यप ने शिवजी की अनुग्रह जान अपना तेज सुरभी अपनी स्त्री में स्थित कर दिया जिससे सुरभी महा प्रकाशित हुई। सो सब देवताओं ने कश्यप के स्थान में आकर शिवजी की जो गर्भ में थे, स्तुति की। फिर अपने-अपने स्थानों को लौट गये और समय पाकर सुरभी से ग्यारह रूप धारण करके शिव उपजे। सुरभी को कुछ प्रसव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की पीड़ा न हुई। उस समय देवताओं को आनन्द प्राप्त हुआ। पृथ्वी शोभायमान हो गई। देवता और मुनीश्वरों के सब दुःख दूर हो गये। विष्णु और हमने देवताओं समेत आकर एकादश रुद्र के दर्शन किये। प्रीतिपूर्वक स्तुति करके कहा कि आप दैत्यों को जीत हम सबको हर्ष दें। फिर हमने कश्यप से उनका जातकर्म कराके उनके यह नाम रक्खे- कपाली १ पिंगल २ भीम ३ विलोहित ४ शस्त्रभृत ५ अभय ६ अजपाद ७ अहिर्बुध्न्य ८ शम्भु ९ भव १० और विरूपाक्ष ११। तब बड़ा उत्सव हुआ। यह ग्यारहों रुद्र उपजते ही बड़े बलिष्ठ भासित हुये। हे नारद! यह कुछ आश्चर्य नहीं है क्योंकि वे तो शिव के रूप थे। सो माता-पिता की आज्ञा पाकर देवताओं के साथ चले। देवताओं की सेना इकट्ठी करने के उपरान्त उन्होंने दैत्यों पर धावा किया और बड़ा युद्ध हुआ। सो दैत्यों के सामने देवता न ठहर सके, वे भागकर ग्यारहों रुद्रों के सामने आये। रुद्रों ने कहा कि तुम कुछ भय मत करो। हम एक निमेष में दैत्यों को नाश कर देंगे। हमारे प्रताप के सामने वे नहीं ठहर सकेंगे। यह कहा और दैत्यों से सामना किया। दैत्य रुद्र के तेज के आगे ठहर न सके और बड़े-बड़े वीर दैत्य बहुत युद्ध करने के उपरान्त युद्धस्थान से भाग चले। वे अपने लोक में जाकर छिप गये। देवताओं को विजय पाने से बड़ा आनन्द हुआ और अपने पुराने लोक को रुद्रों की कृपा से पाकर महा प्रसन्न चित्त हुये। ग्यारहों रुद्र सदा देवताओं के साथ रहकर इसी भाँति की सहायता करते रहे। इस प्रकार हमने रुद्रचरित्र वर्णन किया जिसके सुनने से बड़ा पापी मनुष्य भी शुद्ध हो जाता है।

पच्चीसवाँ अध्याय।

दुर्वासा अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस तरह शिवजी ने अत्रिमुनि के पुत्र होकर अवतार लिया, वह कथा हम तुमको सुनाते हैं। हमारे पुत्र अत्रि हमारी आज्ञा से अपनी स्त्री सहित ऋष्यमूक गिरि पर जाकर विन्ध्या के तट पर बैठे और सौ वर्ष ऐसा कठिन तप किया कि केवल वायु भक्षण कर एक चरण से खड़े रहे। इस इच्छा से कि हमको शिव अपने समान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एक पुत्र कृपा करेंगे। ऐसे कठिन तप से एक जलती हुई अग्नि उपजकर संसार भर को जलाने लगी। तीनों देवता मुनीश्वरों सहित अत्रि से पास आये। अत्रि ने सबको अपने सामने अपने मुख्य वाहनों समेत मुसुकुराते खड़े हुये देखा और दण्डवत् कर विनय की कि तुम तीनों देवता रजोगुणी, सतोगुणी, तमोगुणी, उत्पन्नकर्ता, पालनकर्ता, संहर्ता एक साथ हमारे पास आये हो। अब मैं किसकी सेवा करूँ ? मैंने तो एक ही देवता की पूजा की थी। अर्थात् वह जो सबका स्वामी है। फिर क्यों तुम तीनों देवता एक ही साथ आये। इससे मुझे अति चिन्ता उपजी है। इसका कारण कहकर फिर वर दीजिये। यह सुन तीनों देवता बोले कि जिस तरह पर तुमने अपने मन में संकल्प किया था, वही तुम्हारे सामने आया। तुमने ईश्वर का तप किया। प्रकट है कि हम तीनों एकही रूप हैं। कुछ किसी प्रकार का भेद तीनों में नहीं। हम इससे प्रकट हैं कि तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उपजेंगे। जो तुम्हारे यश को बढ़ाकर तीनों लोक में प्रसिद्ध होंगे। यह वर अत्रि को देकर तीनों देवता अपने-अपने स्थान को चले गये। अत्रि भी इस आशा पर कि हमारे तीन पुत्र होंगे, प्रसन्नचित्त हो अपने घर सिधारे। समय पाकर अत्रि के तीन पुत्र तीनों देवताओं के अंश से उपजे। अर्थात् ब्रह्मा के अंश से विधु, विष्णु के अंश से दत्त और शिव के अंश से दुर्वासा। अब हम दुर्वासा का चरित्र वर्णन करते हैं। अर्थात् शिव ने दुर्वासा का शरीर धारणकर बहुत चरित्र किये। उन्होंने ब्रह्मतेज धारा और सबका आदर किया। बहुतों के धर्म की परीक्षा की और असंख्य मनुष्यों को धर्म कृपा किया। उनका पहिला चरित्र यह है कि सूर्यवंशी राजा अम्बरीष विष्णु का बड़ा भक्त दृढ़व्रती था। वह विष्णु आज्ञा भलीभाँति मानकर सतोगुण धारण किये राज्य करता और सदा एकादशी व्रत रखकर द्वादशी में पारण किया करता। एक दिन उसने एकादशी का व्रत करके चाहा कि द्वादशी में पारण करें, उसी समय दुर्वासा पहुँचे। उनको केवल परीक्षा लेने की इच्छा थी। अम्बरीष ने उनका अति आदर-सत्कार कर भोजन करने को निमन्त्रण दिया। सो दुर्वासा मानकर शिष्यों सहित नदी किनारे स्नान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के निमित्त गये और वहाँ इतना विलम्ब किया कि अम्बरीष की परीक्षा लें। राजा अम्बरीष दुर्वासा की बाट देखते रहे, द्वादशी समाप्त होने लगी। उस समय राजा अम्बरीष ने पारण में विघ्न देख महाखेदयुक्त हो ब्राह्मणों से पूछा। जब ब्राह्मणों ने वेद के अनुसार उनको आज्ञा दी कि आप पारण करें तो उन्होंने व्रत पारण कर लिया। दुर्वासा राजा अम्बरीष के व्रतपारण करने का हाल जानकर अति क्रोधित हुये और राजा के पास आकर चाहा कि राजा की भक्ति की परीक्षा लेवें और चक्र के भय से भागकर वर्ष भर तीनों लोक में भागते फिरे। फिर राजा की शरण में आकर चक्र को अपने पीछे लगाये हुये पहुँचे। जो राजा वास्तव में ब्रह्मभक्त होगा तो मन में लज्जित होकर मेरा दुःख दूर करेगा। कदाचित् वह विष्णु की पूरी भक्ति नहीं रखता तो अपना व्रत छोड़ देगा। यह विचार महाकोप से राजा को शाप देने लगे। सो विष्णु के चक्र ने दुर्वासा के मन की इच्छा जान ली और अपना तेज बढ़ाय दुर्वासा की ओर चला। दुर्वासा भागने लगे। सर्वदेश और सब देवताओं के लोक फिर कर राजा के पास आये और कहा कि हे राजन्! हम तुम्हारी शरण में आये हैं। जो मूर्ख हैं, वह इस चरित्र को क्या जानें? वह इस चरित्र को और ही तरह समझते हैं। यह नहीं जानते कि दुर्वासा तो आप शिव का अवतार हैं। उनको कहाँ दुःख हो सकता है? निदान दुर्वासा को राजा ने देखकर लज्जापूर्वक चक्र से कहा कि तुम दूर हो जाओ। अब ब्राह्मण को छोड़ दो। यह सुनकर चक्र हट गया और राजा ने दुर्वासा को भोजन कराकर आप भी भोजन किया। दुर्वासा ने अतितृप्त और प्रसन्न होकर राजा को आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करना। हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त यह चरित्र किया है। तुमको धन्य है। तुम शुभ हो जो हमारे ऐसे क्रोध को तुमने सहा। तुमको विष्णु की बड़ी भक्ति प्राप्त होगी। यह कह दुर्वासा अति प्रसन्न हो चले गये। जब विष्णुजी दशरथ के पुत्र रामचन्द्र हुये तब भी दुर्वासा ने ऐसा चरित्र किया। इसी प्रकार श्रीकृष्णजी की परीक्षा लेकर उनको रानी सहित अपने रथ का खींचनेवाला बनाया और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

श्रीकृष्णजी की ऐसी ब्रह्म भक्ति देख उनको वज्राङ्ग कर दिया। द्रौपदी की परीक्षा लेकर पाण्डवों को भरपूर किया। हंस और डिम्भक दो भाई जो बड़े उपद्रवी थे, उनके पास जाकर अपना अपमान कराया। फिर उनको शाप देकर नष्ट कर डाला। सो शिव ने दुर्वासा का अवतार लेकर इस प्रकार के बहुत चरित्र किये हैं। उन्होंने बहुत रीतों से संन्यास मत फैलाया और बहुतों को ज्ञान देकर मुक्त किया।

छब्बीसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता! यह कथा हमने संक्षेप में सुनी पर मेरी इच्छा है कि आप विस्तार से जिस तरह कि दुर्वासा ने रामचन्द्र और कृष्णादि की परीक्षा लेकर उनको वर दिया वह कथा सुनाइये। ब्रह्माजी बोले कि जब रामचन्द्र ने देवताओं के काम पूरे करने के लिये दशरथ के घर अवतार लिया और देवताओं के लिये असंख्य चरित्र कर बहुत समय तक राज्य किया, तब हमने मृत्यु को उनके समीप भेजकर संदेशा भेजा कि आप अपने लोक में आकर हम वियोगियों को आनन्द देवें। सो काल मुनीश्वरों के स्वरूप से रामचन्द्र के पास आकर बैठा रहा और समय पाकर विनय की कि महाराज मुझे आपसे गुप्त वृत्तान्त कहना है जिसको दूसरा मनुष्य न जाने। हमारी तुम्हारी वार्त्ता में जो कोई आ जावे तो चाहे वह कोई हो, उसका परित्याग कर दो। रामचन्द्र ने माना और लक्ष्मण से कहा कि तुम द्वार पर खड़े रहो। कोई यहाँ न आने पावे। फिर काल से कहा कि तुम कौन हो? कहाँ से आये हो? क्या आज्ञा देते हो? काल ने कहा कि हमको ब्रह्मा ने भेजकर आपको संदेशा दिया है कि अपने लोक में आओ। यह वार्त्ता हो रही थी कि दुर्वासा परीक्षा के निमित्त आये और लक्ष्मण से कहा कि रामचन्द्र को तुरन्त ही हमारे आने का समाचार दो। तब लक्ष्मणजी अति चिन्तित हुये कि जो रामचन्द्र के पास भीतर जाता हूँ तो वह मेरा त्याग कर देवेंगे और जो नहीं जाता तो दुर्वासा का कोप सहना पड़ेगा। यह तीखे ब्राह्मण अपनी क्रोधाग्नि से मुझे जलावेंगे। ऐसी दशा में उनको यह बात सूझी कि दुर्वासा की ढिठाई करना उत्तम नहीं क्योंकि यह बात वेद के विरुद्ध है कि ब्राह्मण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से ढिठाई करो। यद्यपि श्रीरामचन्द्रजी का वियोग मेरे लिये दुःखदायक है पर दुर्वासा की आज्ञा माननी बहुत उत्तम है। यह मन में कहकर अति लज्जा के साथ रामचन्द्र के समीप जाकर दुर्वासा का सन्देशा कहा। सो काल लक्ष्मण को देखते ही अन्तर्धान हो गया और रामचन्द्र ने अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण कर लक्ष्मण से कहा कि हे प्राणप्यारे लक्ष्मण! इस समय हमारे साथ बड़ा छल हो गया। अर्थात् काल मुनीश्वर के स्वरूप से आकर ऐसी युक्ति करके मुझको दुःखी कर गया। वह वचन जो उसने हमसे लिया था उसको तुम जानते हो। उसको तुम सत्य करो और बड़े शब्द से रोने लगे। लक्ष्मण भी मूर्च्छित हो गये। तब दुर्वासा ने भीतर जाकर सबको समझाया। ऐसी लीलाकर दुर्वासा अपने स्थान को बिदा हो चले गये और लक्ष्मण ने रामचन्द्र से बिदा हो सरयू के तट पर योगमार्ग से अपना शरीर छोड़ा और अपना पूर्वरूप धारण किया। कुछ दिन पीछे रामचन्द्र भी अपनी सर्व अयोध्या नगरी समेत वैकुण्ठ में विराजमान हो गये। अब हम कृष्णचन्द्रजी का चरित्र वर्णन करते हैं कि जिस तरह दुर्वासा ने उनकी परीक्षा की। श्रीकृष्णजी प्रसिद्ध बड़े ब्रह्मभक्त हुये। वह देवताओं के सब कार्य पूर्ण कर अपने नगर में स्थित हो ब्रह्मभक्ति पूर्वक रहने लगे। ब्रह्मभक्त श्रीकृष्णजी की परीक्षा के निमित्त दुर्वासा आये। कृष्ण ने अति नम्रता, आदर, मान और शील से दुर्वासा को लिया और उत्तमोत्तम भोजन कराये। तब दुर्वासा ने कहा कि हम रथ पर चढ़ा चाहते हैं पर इस बात पर कि तुम और तुम्हारी रानी रुक्मिणी उसको खींचकर चलाओ। ऐसा करने से जो तुम्हारी इच्छा होगी, मैं तुमको वर दूँगा। कृष्ण ने अति प्रसन्नता से इस बात को स्वीकार कर दुर्वासा की इच्छा पूर्ण की। सो दुर्वासा ने प्रसन्न होकर कहा कि हमारी आज्ञा से पायस लो और नग्न शरीर होकर उसको लिपटा लो कि तुम्हारा कोई अङ्ग खुला न रहे। कृष्ण ने यह भी किया। तब दुर्वासा ने प्रसन्न होकर यह वर दिया कि जहाँ-जहाँ तुम्हारे शरीर में पायस लिपट रही हैं, वहाँ-वहाँ तुम्हारे कोई शस्त्र वेध न करेगा। तुमको किसी कार्य के करने का पाप भी न होगा। कृष्ण ने यह वर पा दुर्वासा के आने को शुभ समझा और बड़ी स्तुति की। दुर्वासा तो अन्तर्धान हुये और कृष्ण अति प्रसन्न हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पापों से रहित हुये। हे नारद ! अब द्रौपदी का चरित्र सुनो। एक दिन द्रौपदी अपनी सखियों समेत गङ्गास्नान को गई और स्नान करने लगी। सो उसके पूर्व की ओर कुछ दूरी पर दुर्वासा भी स्नाने करते थे। जब सर्वाङ्ग मलकर धोने लगे तो दुर्वासा की कोपिन नदी में छूट गई। लज्जा से दुर्वासा जल से बाहर नहीं निकल सकते थे। यह वृत्तान्त द्रौपदी ने जानकर अपना अञ्चल फाड़कर दुर्वासा की ओर बहा दिया। उसको दुर्वासा पहन पानी से बाहर आये और प्रसन्न होकर द्रौपदी से कहा कि हमारी लज्जा जो तुमने रक्खी है उसका फल तुमको मिले। इस बात के सब देवता साक्षी हैं कि तुम्हारी लज्जा सदा रहेगी। तुम पर जो कष्ट पड़े, वह नष्ट हो जावे। यह बात कहकर दुर्वासा अन्तर्धान हो गये पर किसी ने न जाना कि यह कौन थे ? एक और चरित्र दुर्वासा का सुनो कि एक दिन दुर्वासा सरोवर में स्नान करने को गये और अपना स्वरूप ऐसा मैला-कुचैला बनाया जैसा कभी किसी ने न देखा था। उस समय संयोग से गन्धर्वों की तीन पुत्रियाँ भी स्नान के निमित्त गई थीं। उनके यह नाम थे—पहिली का नाम रत्नाढ्या, दूसरी का रत्नचूड़ा और तीसरी घृतपूर्णी के नाम से प्रसिद्ध थी। उन्होंने दुर्वासा को देखकर बहुत से दुर्वचन कहे। कहा कि हमारे ऊपर ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर सुन्दर उत्तम पति हमारे लिये भेजा है। यह सुनकर दुर्वासा ने उनको शाप दिया और सबको अपना ब्रह्मतेज दिखाकर कहा कि तुम चाण्डाली होकर बड़ा कष्ट पावोगी। पर जब तीनों शरण हुई तो कहा कि तुम मलमास व्रत करके फिर पहिले के समान हो जाओगी। यह कहकर दुर्वासा अन्तर्धान हो गये। इसी प्रकार के और बहुत से चरित्र दुर्वासा ने किये हैं जिनके स्मरण करने से सर्व कष्ट निवृत्त हो जाते हैं। उनहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

ग्रहपति के अवतार का वर्णन।

ब्रह्मा ने कहा कि हे नारद ! अब हम ग्रहपति अवतार के चरित्र सुनाते हैं। नर्मदा नदी के तट पर नर्मपुरनगर में विश्वामित्र मुनि ब्रह्मचारी शिवजी के भक्त थे और सदा यज्ञ करते थे। वे शार्दूल गोत्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में उपजे। वे अपने क्रियाकर्म में अतिदृढ़ और शिवजी की भक्ति में बहुत स्थिर सर्वविद्यानिधान और बड़े बुद्धिमान् थे। उन्होंने गृहस्थाश्रम को सबसे श्रेष्ठ जान सचक्षुमती के साथ अपना विवाह किया और गृहस्थाश्रम में स्थित रहकर अपनी स्त्री सहित षटकर्म करते थे। स्त्री सहित शिवपूजन नित्यप्रति करते और प्रतिदिन पाँचों यज्ञकर बलि वैश्वदेव में प्रवृत्त रहा करते थे। पर समय बीत गया, उनके कोई पुत्र न उपजा। तब एक दिन स्त्री ने हाथ जोड़ विनय की कि मैंने आपके साथ आठों प्रकार के भोगकर सदा निश्चिन्त विहार किया है, पर मुझे एक इच्छा है कि जिसकी अभिलाषा गृहस्थ करते हैं। विश्वामित्र ने कहा कि हम शिवजी की अनुग्रह से सब कुछ दे सकते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो, वह वर हमसे ले लो। स्त्री ने कहा जो आप प्रसन्न हैं तो मुझे शिवजी के समान एक पुत्र दीजिये। विश्वामित्र ने शिवजी का ध्यान करके कहा कि तेरी इच्छा पूरी होगी। शिवजी में सब तरह की शक्ति है। यह बात कुछ दूर नहीं। यह कह विश्वामित्र तप के निमित्त काशी में आये और मणिकर्णिका में स्नानकर विश्वनाथ की पूजा की। सबको यथाविधि पूजा फिर अपने मन में विचार किया कि काशी में कौन ऐसा शिवलिङ्ग है जो शीघ्र ही सिद्धि देता है। सो वीरेश्वर को शीघ्र ही सन्तानदाता जानकर चन्द्रकूप जल से स्नान किया और दृढ़तापूर्वक ध्यान करने लगे। प्रतिदिवस वीरेश्वर के ध्यान में प्रवृत्त रहे और द्वादश मास पर्यन्त इस प्रकार व्रत किया कि एक मास में केवल एक वस्तु खाकर दूसरे में केवल दूध पिया। इसी प्रकार एक मास में केवल एक तरकारी खाकर, एक मास में तिल चबाकर, एक मास में पानी पीकर एक मास में केवल पञ्चगव्य में कालक्षेप कर, एक मास में चन्द्रायण किया। फिर एक महीने में केवल कुश की जड़ें खाईं। इसी प्रकार द्वादश मास बिता दिये और त्रिकाल वीरेश्वर महादेव की पूजा करते। जब तेरहवें महीने स्नानकर प्रातःकाल वीरेश्वर के निकट गये तो वीरेश्वर के बीच में से आठ वर्ष का अति सुन्दर बालक जिसका महासुन्दर गौर शरीर सफेद भस्म रमाये सुन्दर केश जो जटा के समान लटके थे, धारण किये निकला। निदान सर्वाङ्ग अति उत्तम वेद पढ़ते हुये और विश्वामित्र की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ओर देखते खड़ा हो गया। विश्वामित्र ने दोनों हाथ जोड़ स्तुति की। तब बालक ने कहा कि वर माँगो। विश्वामित्र बोले हे शिवजी ! तुमसे कौन बात छिपी हुई है, तुम तो सब जानते हो। मैं केवल इतनी विनती करता हूँ कि मेरी जो इच्छा है, उसको पूरी करो। शिवजी सुनकर बोले अच्छा तुम्हारी इच्छा शीघ्र ही पूर्ण होगी। तुम फिर नये शिर से युवावस्था को प्राप्त होगे। यह कह वह बालक अन्तर्धान हो गया और विश्वामित्र ने प्रसन्नतापूर्वक घर में लौट आकर अपनी स्त्री से सब वृत्तान्त कह सुनाया। निदान जो उसने शिवजी से वर पाया था, वह प्रकट किया। यह सुनकर संसारी मनुष्य विश्वामित्र के स्थान पर गये और विश्वामित्र की स्तुति करने लगे। वे सचक्षुमती के भाग्य की बड़ाई करके अपने-अपने स्थान को लौटते गये और विश्वामित्र अपनी स्त्री सहित शिव का तप करते रहे।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि शिव के वरदान से अच्छे समय सचक्षुमती के गर्भ रहा और विश्वामित्र ने गर्भ की रक्षा, आरोग्यता और पालन के निमित्त पाँचवें और आठवें मास में बहुत दान किया। दशवें मास में शुभलग्न पर पुत्र उपजा। दोनों ने मिलकर बड़ा उत्सव किया। यहाँ तक कि तीनों देवता भी बहुत प्रसन्न हुये। आकाश से फूलों की वर्षा हुई। मन्दिर भर में सुगन्ध फैली। देवताओं ने दुन्दुभी बजाई। चारों ओर से मोर शोर करने लगे। गन्धर्व और देवपत्नियाँ नाना प्रकार से नृत्य करने लगीं। सर्व ओर से धन्य-धन्य का शब्द परित हुआ। हम देवताओं समेत वहाँ गये। विष्णु भी लक्ष्मी सहित सिधारे और गौरी को साथ ले बहुत गणों समेत शिवजी सुशोभित हुये। इन्द्र, सनकादि. आठों वसु, देवता और नाग आदि उस उत्सव में पहुँचे और सब रुद्र गङ्गा सहित रत्न भेंट लेकर आये। सबने विश्वामित्र और सचक्षुमती को प्रणाम किया। उस बालक को शिव का अवतार वर्णन कर सबने स्तुति की। उस समय शिवजी की आज्ञा पाकर हमने उस बालक के जातकर्म किये। मुनीश्वर वेद पढ़ने लगे और हमने वेद में विचार कर उसका ग्रहपति नाम रक्खा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसके पीछे सब अपने-अपने स्थानों को सिधारे। विश्वामित्र ने चौथे मास निष्कर्म की रीति और छठे महीने अन्नप्राशन किया। बारहवें मास चूड़ाकर्म हुआ। फिर कान छेदे गये। पाँचवें वर्ष दीक्षा हुई, फिर वह बालक वेद पढ़ने लगा। फिर गुरु से मन्त्र दिलवाकर सब विद्या सिखाई। हे नारद! तुम नवें वर्ष वहाँ गये और विश्वामित्र ने तुम्हारी बड़ी सेवा की। फिर तुम बालक का हाथ देख कहने लगे कि हे विश्वामित्र! तुम्हारे पुत्र के सर्वअङ्ग अति शुभ हैं। पर एक कुलक्षण है अर्थात् बारहवें वर्ष अरिष्ट है। उसकी रक्षा करनी तुमको उचित है। तुम तो यह कहकर चले गये और ग्रहपति के माता-पिता अतिदुखी हो रोने लगे। यह दशा माता-पिता की देखकर ग्रहपति ने कहा कि तुम इतना क्यों रोते हो। तुम्हारे प्रभाव से हमारे मारने के लिये काल भी शक्ति नहीं रखता। हमारे रक्षक सदाशिव हैं। उनको वेद काल का भी काल कहते हैं जिसने कालकूट को खा लिया। हम मृत्युंजय की सेवा करके मृत्यु को जीत लेंगे। इस बात को सत्य जानो। यह अमृत समान वचन सुन माता-पिता को कुछ आनन्द हुआ। कहने लगे कि फिर इस बात को कहो, फिर कहो जिससे मृत्यु निकट नहीं आती। हे पुत्र! तुम जाकर शिवजी की सेवा करो और हमारी सहायता करो। शिव की सेवा करके बहुत मनुष्यों ने मृत्यु को जीत लिया है। शिव भक्तों का भय हरनेवाले हैं। शिव के समान अपने भक्तों को आनन्द देनेवाला और कोई नहीं। शिव और शक्ति दोनों भक्त की बड़ी रक्षा करनेवाले हैं। इसलिये तुम जाकर शिव की शरण पकड़ो। यह आज्ञा माता-पिता की पाकर ग्रहपति ने काशी में जाकर मणिकर्णिका में स्नान किया तथा विश्वनाथ की पूजाकर अपने को धन्य समझा और शिव का लिङ्ग स्थापित कर तप में प्रवृत्त हुआ। वे गङ्गा से आठसौ घड़े पानी लाकर शिव को स्नान कराते और नित्य प्रति एकसौ आठ श्वेतकमलों की माला शिव को पहिनाते। एक पक्ष केवल वृक्षों के मूल खाकर बिताया और छः मास पर्यन्त यही नियम निबाहा, दूसरा नियम न बदला। फिर पानी, फिर केवल एक बूँद पानी पीकर दो वर्ष इस तरह से काटे। सो उसके जन्म के बारहवें वर्ष शिव ने बालक की परीक्षा की। अर्थात् वज्र बाँध ग्रहपति के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समीप आकर कहा कि हम इन्द्र हैं। तुम से बहुत प्रसन्न हुये, वर माँगो। ग्रहपति ने मधुर वाणी से कहा कि हमको आपसे माँगने की कुछ इच्छा नहीं है। मैं शिव को अपना वर देनेवाला जानता हूँ। इन्द्र ने हँसकर कहा कि शिव कुछ हमसे भिन्न नहीं हैं। हम सब देवताओं के स्वामी हैं। ग्रहपति ने कहा कि तुम यहाँ से दूर हो जाओ। हमको वर देनेवाले केवल शिव हैं तुम किस योग्य हो। हमको तुम क्या वर दे सकते हो। हमको इच्छा नहीं है कि और किसी देवता से वर माँगें। हमारे को आनन्द देनेवाले सर्व प्रकार से शिव हैं। यह सुन इन्द्र ने वज्र उठाय बड़ा भय ग्रहपति को दिया। ग्रहपति वज्र की ज्वाला देख मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े और तुरन्त शिव का स्मरण किया। सो शिव तुरन्त प्रकट हुये और उनको अपने हाथ से उठाकर बिठाया। कहा हे ग्रहपति! उठो, अब कुछ दुःख न होगा, तुम्हारा कल्याण होगा। यह सुन कर ग्रहपति ने उठकर देखा कि शिव खड़े हैं जिनके वामभाग में श्रीभवानी सकल सृष्टि की माता विराजमान हैं। शिव महागौर स्वरूप शरीर भर में भस्म लगाये हैं। ऐसे शिव के परिपूर्ण लक्षण देख प्रीतिसागर में मग्न हुआ। यह दशा देख शिव हँसकर बोले कि हे ग्रहपति! तुम इन्द्र से बहुत डरे। तुम मत डरो, हमने आप इन्द्र होकर यह चरित्र किया है। हमारे भक्त को काल भी दुःख नहीं दे सकता। वह कौन है जो ऐसी कठोरता करे। हम तुमको वर देते हैं कि तुम देवताओं में पवित्र होकर तीनों लोक में भ्रमण किया करो और सबकी मानसीगति को जानकर तीनों रूप से संसार के कार्य करो। धर्मराज और इन्द्र के मध्य अपना राज्य स्थापित करो। तुमने जो हमारे लिङ्ग की स्थापना की है, उसके सेवक को कदापि दुःख न होगा। यह कह शिव ने ग्रहपति के माता-पिता को बुलाकर उन सबको दिक्पति कर दिया। फिर सबके देखते-देखते अन्तर्धान हो गये और उसी लिङ्ग में जो ग्रहपति ने स्थापित किया था, समा गये। ग्रहपति की पुरी का नाम चक्षुमती हुआ जो तेज से पूर्ण है। वहाँ के निवासी नित्य सब बलिवैश्वदेव करते हैं और ग्रहपति दूसरे दिक्पाल हैं वह महातेजयुक्त मस्तक में चन्द्रमा धारण किये हैं। उनके गण भी बड़े वीर-धीर हैं। सो ग्रहपति अपने गणों सहित सदा अपनी पुरी में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रहा करते हैं। माता-पिता और कुल-परिवार सहित उसी देश में भ्रमण करते हैं। वहाँ सबको अप्रमेय सुख प्राप्त है। किसी को कुछ भी दुःख नहीं होता। जो जीव अग्नि में प्रवेश करते हैं और जो अग्नि की पूजा आदि करते हैं, वह उसी देश में जाकर विहारपूर्वक रहा करते हैं। जो मनुष्य आप या दूसरे के निमित्त अग्नि की पूजा करते हैं व जो काष्ठादि देकर किसी का शीत छुड़ा देते हैं, वे सब उसी लोक में जाकर बड़ा आनन्द पाते हैं। ग्रहपति सबकी सेवा के योग्य हैं। यह शिव का अवतार बड़ा तेज और शीघ्र वर देनेवाला है। अग्नि ही से सर्व पाक सिद्ध होते हैं जिनको देवता भोजन करते हैं। इससे उचित है कि अग्नि की बड़ी पूजा की जावे। वह अग्नि शिव का तेज है जो विश्वामित्र का पुत्र हुआ। इस अँधेरे संसार में अग्नि के सिवाय और कोई वस्तु चमकनेवाली और प्रकाश की नहीं है। इसके बिना तीनों लोक का निर्वाह नहीं और तीनों लोक का आनन्द इसी पर घटित है। जो इस ग्रहपति के चरित्र को पढ़े-सुनेगा, वह दोनों लोक में बड़ा आनन्द पावेगा। सत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

उन्तीसवाँ अध्याय।

वृषेश्वर अवतार का वर्णन।

ब्रह्मा ने कहा हे नारद! अब हम वृषेश्वर शिवजी के अवतार का वर्णन करते हैं। एक समय देवता और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया। विष्णु सहित बड़ी युक्ति कर सब रत्न समुद्र से निकाल लिये। सो लक्ष्मी, कौस्तुभमणि, शार्ङ्गनामी धनुष विष्णु ने लिये और सूर्य ने उच्चैश्रवा घोड़ा और मद्य दैत्यों ने ली। इन्द्र ने कल्पवृक्ष और ऐरावत हाथी लिया और कामधेनु गौ मुनीश्वरों को दी। शिव ने कालकूट विष और चन्द्रमा लिया। फिर धन्वन्तरि हाथ में अमृत लिये हुये निकले। सो अमृत दैत्यों ने छीन लिया। देवताओं ने विष्णु से पुकार की। विष्णु ने स्त्री होकर माया की और देवताओं को अमृत पिला दिया। धन्वन्तरि वैद्य आरोग्य की रक्षा करने और वैद्यक विद्या में बड़े प्रवीण हुये। जो स्त्री रत्न थी, उसको दैत्यों ने उसकी और लड़कियों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समेत जो उपजी थीं, ले जाकर पाताल में ठहराया। फिर निकलकर देवताओं से भलीभाँति लड़े और उनसे परास्त हो उनके भय से पाताल में जाकर रहने लगे। पर विष्णु पीछा करते हुये उनके लोक में गये और वहाँ की स्त्रियों को देखकर मोहित हो गये। वे उन्हीं के साथ विहार करके वहाँ रह गये। वहाँ विष्णु से बहुत लड़के उत्पन्न हुये। वे लड़के विष्णु के समान बड़े बलिष्ठ हुये। वे बालक पाताल से निकल सब देवता आदि को दुःख देने लगे। यहाँ तक कि इन्द्रादि देवताओं का संकोच छोड़ नाना प्रकार के उत्पात करने लगे। तो देवताओं के कहने से हमने देवतादि को साथ लेकर शिवजी के समीप जाकर स्तुतिपूर्वक विनय की कि विष्णु ने पाताल में जाकर बहुत स्त्रियों से विहार कर बहुत लड़के उपजाये हैं। वह अपने लोक को लौट नहीं आते। विष्णु के वह लड़के बड़े बलिष्ठ होकर बड़े उपद्रव मचाते हैं। सो शिवजी ने ऐसी दीनता सुनकर अपना स्वरूप बैल के समान धारणकर बड़ा नाद किया और तुरन्त ही जहाँ विष्णु थे, वहाँ पहुँचकर महाघोर शब्द किया जिससे वह नगर भर काँप उठा। सो विष्णु ने क्रोधित होकर अपने लड़कों को लड़ाई के लिये आज्ञा दी। जब वह लड़के शिव अवतार के सम्मुख आये तो वृषेश्वर अवतार ने अपने सींगों से सबको मार डाला। यह सुन विष्णु ने कोपित होकर वृषेश्वर का सामना किया और अच्छे-अच्छे शस्त्र चलाये। तब तो वृषेश्वर ने कोपित होकर भयानक शब्द कर अपने नख और सींगों से विष्णु को विकल कर दिया। विष्णु ने अहङ्कार छोड़ वृषरूप शिव को पहिचान स्तुति करके कहा कि हमारा अपराध क्षमा करो। शिवजी बोले कि तुम ऐसे कामी हो गये कि तुमने अपने लोक को भुला दिया। अब वेग ही इन स्त्रियों को छोड़ अपने लोक को चले जाओ, फिर ऐसा न करना। यह सुन विष्णु ने अति लज्जा से कहा कि हमारा यहाँ पर चक्र रक्खा है शिवजी ने कहा कि उस चक्र को यहीं रहने दो, हम तुम्हारे लिये दूसरा चक्र देवेंगे। सो शिवजी ने दूसरा चक्र बनाकर विष्णु को दिया और कहा इसी समय चले जाओ। सो विष्णु ने सब देवताओं से अलग जाकर कहा कि यहाँ जो स्त्रियाँ अमृत से उपजकर स्थित हैं, वे हर प्रकार आनन्द

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देनेवाली हैं। जो इनसे भोग करता है, वही इनका स्वामी है। सो देवताओं ने उन स्त्रियों के पास जाने की इच्छा की पर शिवजी ने उनकी इच्छा जान तुरन्त यह शाप दिया कि जो इस स्थान पर शान्त मुनीश्वरों और मद्यप दैत्यों के विशेष आवेगा तो वह तुरन्त मर जावेगा। यह सुनकर सब देवता भयभीत हो अपने-अपने घरों को चले गये। शिवजी, विष्णु और देवता सब अपने लोक को गये। जो इस चरित्र को सुनेगा, वह आनन्द पावेगा। बहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

तीसवाँ अध्याय।

पिप्पलाद अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! अब हम पिप्पलाद अवतार का वर्णन करते हैं। दधीचि मुनि जो तीनों लोक में प्रसिद्ध हैं, उन्होंने युद्ध स्थान में इन्द्र को परास्त करके विष्णु और सब देवताओं को शाप दिया। सुवर्चा उनकी स्त्री ने सब देवताओं को शाप देकर कुछ संकोच न किया। उन्हीं से एक पिप्पलाद बालक उपजा जिनको शिवजी का अवतार कहते हैं। इतना सुन नारद ने कहा हे पिता! पहले सुवर्चा के देवताओं के शाप देने का वृत्तान्त सुनाइये, फिर पिप्पलाद के अवतार का वर्णन कीजिये। ब्रह्मा बोले कि जब इन्द्र वृत्रासुर से हारकर देवताओं समेत हमारी शरण में आये, तब हमने देवताओं से कहा कि तुम सब दधीचि के घर में जाकर उनकी अस्थि माँगो और उससे एक वज्र बनाओ। उसी वज्र से वृत्रासुर का वध करो, तुम्हारी सहायता शिवजी करेंगे। यह सुनकर देवताओं ने दधीचि के पास जाकर उनकी हड्डियाँ माँगी। सो तुरन्त ही दधीचि ने अपनी अस्थि दे दीं और आप शिवलोक सिधारे। देवताओं ने उन्हीं हड्डियों से विश्वकर्मा के द्वारा वज्र बनवाया। इन्द्र ने उसको अपने हाथ में लेकर वृत्रासुर को मार डाला। संसार भर में आनन्द फैला। जब यह हाल दधीचि की स्त्री सुवर्चा को मालूम हुआ तो अति चिंतित हो उसने अपने पातिव्रत का तेज दिखाया। अर्थात् देवताओं को यह शाप दिया कि आज से सब देवता पुत्रहीन होवें। यह कहकर चाहा कि सती हो जावें पर आकाशवाणी ने निषेध किया। तब सुवर्चा ने पीपल के मूल में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बैठकर अपने को ढ़ाढ़स दिया। इतने में एक बालक उसी वृक्ष के नीचे से उपजा जो शिवजी का अवतार है। उसका चारों ओर यश छा गया और सुवर्चा ने अपना लड़का देख सब दुःख भुला दिये। पुत्र को शिवजी का अवतार जान स्तुति की और कहा कि हमारी मूर्खता दूर करो। पीपल के वृक्ष के नीचे अपना स्थान करो और सदा प्रसन्न बैठे रहो। मुझको आज्ञा दो कि मैं भी अपने पति के लोक को जाऊँ और वहाँ पति समेत रहकर तुम्हारा ध्यान किया करूँ। तुम शिव हो, हमको भलीभाँति विदित हुआ है। यह कह और बड़ी प्रसन्नता से सुवर्चा सती हो गई और शिवलोक में जाकर दधीचि सहित सदाशिव की सेवा में लगी रही। हम, विष्णु, सब देवता और मुनि आदि आकर उस बालक को शिव का अवतार समझ बड़ा उत्सव करने लगे। जो शिवजी पीपल के वृक्ष के नीचे उपजे, इससे हमने उनका पिप्पलाद नाम रख दिया और सब मिलकर पिप्पलाद की स्तुति करने लगे। फिर पिप्पलाद की आज्ञा पाय हम सब अपने-अपने लोकों को गये और पिप्पलाद उसी पीपल की जड़ में बैठकर तप करते रहे। एक दिन पिप्पलाद मुनि पुष्पभद्रा नदी के तट पर चले जाते थे। मार्ग में एक स्त्री को देखा। चाहा कि उसके साथ अपना विवाह कर गृहस्थाश्रम धारण करें। सो इस इच्छा से वह उस स्त्री के माता-पिता के घर संसारी रीति से गये। लड़की के पिता अनरण्य ने पिप्पलाद का बड़ा सम्मान करके पूजन किया। पिप्पलाद ने उनसे उस कन्या को माँगा। राजा पिप्पलाद को निर्बल देख चुप रहा। तब पिप्पलाद ने कहा कि जो तुम अपनी कन्या नहीं देते तो मैं तुमको इसी समय भस्म किये देता हूँ। जब राजा ने पिप्पलाद का तेज देखा तो रोते-पीटते अपनी लड़की पिप्पलाद से ब्याह दी। सो पिप्पलाद अपने साथ स्त्री लेकर अपने स्थान को लौट आये। राजा की कन्या ने पातिव्रत धर्म भलीभाँति निबाहा। शिव के अंश से तो पिप्पलाद और गिरिजा के अंश से पद्मा अर्थात् राजा की पुत्री थी। दोनों ने भलीभाँति भोग-विलास किया। एक दिन पिप्पलाद की स्त्री ने अपने को भलीभाँति सजाया और पिप्पलाद की आज्ञा लेने के उपरान्त गङ्गा स्नान के निमित्त चली। मार्ग में धर्मराज ने राजा का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वरूप धार उसकी परीक्षा लेनी चाही और पद्मा से कहा कि तुम्हारा पति तो बूढ़ा, कुरूप और अशुभ है। तुम उसको छोड़ हमारे पास आकर विहार करो। मुनि की स्त्री होकर क्या आनन्द पावोगी। यह कहकर चाहा कि पद्मा के हाथ पकड़ लें पर पद्मा ने क्रोधित होकर कहा हे दुष्ट ! दूर हो दूर हो मुझे कदाचित स्पर्श न करना। मुझे तू कुदृष्टि से देखता है, तेरा नाश हो जावे। यह शाप सुनकर धर्मराज मुरझा गये और राजा का शरीर छोड़ मुख्य रूप धार विनय की हे माता ! मैं धर्मराज हूँ। परीक्षा से मैंने यह बात कही थी। अच्छा किया जो मुझे दण्ड दिया। अब कृपा करो क्योंकि तुम जगन्माता हो। पद्मा ने धर्मराज को पहिचान कर कहा कि सत्युग में तुम पूर्णरूप रहो। तुम पर कभी कोई कष्ट न हो। पर त्रेता में एक पैर, द्वापर में दो पैर, कलियुग में तीसरा और चौथा पाँव तुम्हारे कट जावें क्योंकि मेरा वचन वृथा नहीं होता। यह पद्मा का वचन सुन धर्मराज ने प्रसन्न होकर कहा कि तुमने मुझको बड़े नरक से बचा लिया। तुम हमारी माता हो अब मैं बहुत प्रसन्न होकर तुमको वर देता हूँ कि तुम्हारा पति युवा होकर अति सुन्दर हो जावे। वह अति कलावान् विद्वान और बड़ा चरित्र करनेवाला हो। इसी प्रकार तुम भी अति सुन्दरी होकर युवावस्था में सदा स्थित रहो। तुम्हारे दश पुत्र बड़े विद्वान उपजें और तुमको किसी प्रकार का दुःख न हो। यह कह धर्मराज अपने लोक को चले गये और पद्मा भी अपने स्थान को लौट आई। पिप्पलाद अवतार ने बहुतेरों को संसारसागर में डूबते हुये निकाला। जब संसारी मनुष्यों को शनैश्चर के दुःख से दुःखी देखा तो वर दिया कि आज से शिवभक्तों को जन्म से सोलह वर्ष तक शनैश्चर कुछ दुःख न देवेगा। उसी समय से शनैश्चर सोलह वर्ष पर्यन्त बालकों का कुछ नहीं कर सकता। शनैश्चर का अशुभ फल पिप्पलाद के नाम के स्मरण से नष्ट हो जाता है। अर्थात् पिप्पलाद, कौशिक और गाधि मुनि के स्मरण से शनैश्चर का अशुभ फल नहीं होता। हे नारद ! पिप्पलाद संसार भर के आनन्द देनेवाले हैं और पद्मा भी गिरिजा का अवतार हैं। उनके स्मरण से सन्तान की वृद्धि होती है। दधीचि बड़े उदार हुये, उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता है। यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पिप्पलाद का आख्यान अति पवित्र है जो हमने वर्णन किया। इसके पढ़ने-सुनने वालों को दोनों लोक में सब कुछ मिलता है। तिहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

इकतीसवाँ अध्याय।

महेश अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि एक दिन शिव और गिरिजा दोनों ने भोग के निमित्त संसारी जीवों के समान सम्मति कर भैरव को द्वार पर बैठाया और आप अन्तःपुर को गये और बहुत समय तक मनुष्यों के समान विहार में प्रवृत्त रहे। एक दिन गिरिजा मतवालों की तरह घर से बाहर निकलीं भैरव ने गिरिजा को कुदृष्टि से देखा और बाहर जाने से रोक लिया। गिरिजा ने बड़ा क्रोध कर शिवजी की इच्छा पर भैरव को यह शाप दिया कि तूने हमारे पुत्र होकर हमको कुदृष्टि से देखा। माता-पुत्र का भाव छोड़ मनुष्यों के समान कुमार्गी होना चाहता है। इसलिये तू मृत्यु-लोक में जाकर मनुष्य शरीर धारेगा तब तू ऐसे पाप से छूटेगा। यह सुन भैरव अति दुःखी हुये। भैरव कि वह भी लीला करनी चाहते थे। उन्होंने भी श्रीगिरिजा महारानी को यह शाप दिया कि जो दशा हमारी हो, वही अवस्था तुम्हारी भी हो। यह शब्द सुन शिवजी बाहर निकल आये और हँसकर दोनों को समझाया। भैरव ने विनय की कि पृथ्वी में भी हम आपके पुत्र होकर उपजें। इसी से शिवजी के साथ सब लड़कों को अवतार धारण करना पड़ा। शिवजी का नाम महेश और गिरिजा का नाम शारदा हुआ। चौहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

बत्तीसवाँ अध्याय।

अवधूतपति अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले अब हम अवधूतपति अवतार की कथा कहते हैं जिन्होंने इन्द्र के अहंकार का नाश किया। एक दिन इन्द्र ने सदाशिवजी के दर्शन की इच्छा से तुरन्त सब देवताओं को बुलाया और हर प्रकार की सामग्री इकट्ठी की। यह कहकर कि हम सब देशों के महाराज हैं, हमको बहुत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सामग्री सहित शिवजी की भेंट करनी चाहिये। सो ग्यारहों रुद्र, बारहों सूर्य, आठों वसु, तेरहों विश्वेदेवा, सब मरुद्गण, सब दिक्पति, देवता और मुनीश्वर भलीभाँति सजसजाकर बड़ी धूमधाम से इकट्ठे हुये और बृहस्पति को साथ लेकर चले। सब प्रेम में मग्न थे। कोई गाते, कोई बजाते कोई हँसते और नाना प्रकार के बाजे बजाते थे। अप्सराएँ नाचती हुई चली जाती थीं। इन्द्र हर प्रकार के देवताओं का जुदा-जुदा समूह बनाकर सबको साथ लिये हुये चले। जब कैलास पर्वत के समीप इन्द्र पहुँचे तो शिवजी ने यह इन्द्र का गर्व जानकर लीला के निमित्त अपना भयंकर रूप धारा कि नेत्र जलते हुये भयानक साज साजे अर्थात् अवधूत रूप था। इन्द्र ने अवधूत को देख प्रणाम कर पूछा कि आप कौन हैं और कहाँ से आते हैं? जाना जाता है कि आप इसी समय शिवजी के पास से आते हैं। कृपा करके कहिए कि शिवजी कहाँ हैं और क्या करते हैं? कहीं चले तो नहीं गये? अवधूत ने कुछ उत्तर न दिया। फिर इन्द्र ने कहा कि शिवजी कहाँ हैं, बतला दो। इसी प्रकार इन्द्र ने कई बार पूछा पर कुछ उत्तर न पाया। तब तो इन्द्र ने क्रोधित होकर अपना वज्र उठाया और कहाँ हे दुष्ट, अवधूत! तू हमको उत्तर नहीं देता। क्या मद्य पिये हुये हो? मैं तुझको वज्र से मारता हूँ। तेरा कौन रक्षक है? यह कह और वज्र को अवधूत पर चलाया सो वज्र उनकी गर्दन में लगा जिससे श्याम रङ्ग का चिह्न पड़ गया और वज्र जलकर भस्म हो गया। देवताओं की सेना में हाहाकार मच गया और शिवजी में इतनी ज्वाला बढ़ी कि सब देवता जलने लगे। इन्द्र ऐसी लीला देख काँप उठे और अपने गुरु का स्मरण किया। सो बृहस्पति ने शिवजी का ध्यान किया और शिवजी को जान स्तुति कर इन्द्र ने कहा कि यह अवधूत नहीं वरन् आप सदा शिवजी हैं। इतना कह बृहस्पति ने आदर कर स्तुति की और कहा कि ये सबके स्वामी हैं। फिर इन्द्रादिक सब देवताओं ने प्रीतिपूर्वक शिव की स्तुति की। ऐसी स्तुति सुनकर शिव प्रसन्न हुए और कहा यह स्तुति सुनकर हम प्रसन्न हुये, वर माँगो। यह सुन बृहस्पति अति प्रसन्न हुये और यह वर माँगा कि इन्द्र आपका सेवक है। इसकी रक्षा अवश्य हो। इन्द्र ने आपका तेज नहीं जाना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इस पर अनुग्रह करना उचित है। आप अपनी क्रोधाग्नि को दूर करें। यह सुन शिव बोले कि सर्प अपनी केंचुली को दूर करके फिर ग्रहण नहीं करता पर तो भी हम कृपा करके इस ज्वाला को इतनी दूर फेंक देवेंगे कि इन्द्र पर उसका कुछ फल न होगा। जो तुमने इन्द्र को जीव दान दिया, इससे तुम्हारा जीव नाम हुआ। यह कह उस ज्वाला को उन्होंने गंगा में फेंक दिया जिससे जालन्धर उपजा। उसका वृत्तान्त हम वर्णन कर चुके हैं। यह चरित्र कर अवधूत शिव अन्तर्धान हो गये और देवताओं को बड़ा आनन्द मिला। वे अपने-अपने स्थानों को लौट गये। जो मनुष्य इस अवधूतेश्वर अवतार के चरित्र को पढ़ेगा; या सुनेगा वह दोनों लोक में आनन्द पावेगा। पचहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

तेंतीसवाँ अध्याय।

श्रीहनुमान्‌जी के अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम हनुमान् शिव अवतार का वर्णन करते हैं जिन्होंने रामचन्द्र की सहायता कर दैत्यों को वध कर डाला। उन्होंने कपिजाति में देह धारण कर रामचन्द्र से बड़ा प्रेम उपजाया और शिवकी आज्ञा पाकर रामचन्द्र की सेवा करते रहे। यह हनुमान, महावीर, कपिनाथ, शिव के अवतार हैं। इनकी कथा इस तरह है कि जब शिव ने मोहनीरूप को देखा तो केवल रामचन्द्र के कार्य के निमित्त इस तरह पर लीला की कि शिव मोहित होकर मोहनी रूप को लिपट गये। सो शिव का मद अर्थात् वीर्य धरती पर गिर पड़ा जिसको नगमुनि ने शिवकी सैन से रख लिया। इस इच्छा से कि उसके द्वारा रामचन्द्र के कार्य सुधारेंगे। सो अञ्जनी से हनुमान् उपजे। कपि अवतार लेने का यह कारण था कि चार मास तक रामचन्द्र ने शिव का बड़ा तप वन में किया। निदान शिवजी ने परीक्षा लेने के उपरांत अपने गणों सहित अवतार लिया और अपना धनुष रामचन्द्र को दिया जो सदाशिव प्रलय के समय हाथ में लेते हैं। शिव से आज्ञा पाकर सब देवता बन्दर और रीछ का अवतार लेते गये। जब रामचन्द्र ने रावण को अति बलिष्ठ समझ कर शिवजी की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़ी स्तुति की तो अञ्जनी के द्वारा शिवजी ने भी अवतार लिया और विष्णु अर्थात् रामचन्द्र का दुःख दूर किया। उन्होंने उपजते ही सूर्य को खा लिया। तब देवताओं ने जाना कि यह शिवजी का अवतार है। रामचन्द्र के बड़े-बड़े कार्य किये उनमें से रामचन्द्र की पत्नी को सीता के पास पहुँचाया। रावण की पुष्पवाटिका को नष्ट कर दिया। लङ्का को जला दिया। समुद्र में सेतु तय्यार किया। जब लक्ष्मण शक्ति से मूर्च्छित हुये और रामचन्द्र अति दुःखी हुये तो हनुमान ने औषधि लाकर लक्ष्मण को जिला दिया और रामचन्द्र का दुःख दूर किया। रामचन्द्र को कीर्ति देकर आप रावण का वध किया। दैत्यों को मारकर देवताओं को हर्ष दिया। जो भक्तिभाव की रीति को अङ्गीकार कर भक्ति को संसार में प्रसिद्ध किया। इससे वे रामदूत के नाम से प्रसिद्ध हुये। रामचन्द्र के कार्य के पूर्ण करने निमित्त शिव ने हनुमान का अवतार लिया। फिर उनकी भुजा उखाड़ कर राम और लक्ष्मण को बड़ा हर्ष दिया। उनकी सेवा से असंख्य पापियों ने मुक्ति पाई है। हे नारद! इस बात को निश्चय जानो कि सदाशिव अपने भक्तों के निमित्त असंख्य तन धारण कर अपनी बड़ाई का कुछ विचार नहीं करते। यही दशा विष्णु की भी है कि अर्जुन पाण्डव के रथवान् होकर उनका रथ हाँका। इतना सुन नारद के पूछने के अनुसार ब्रह्मा ने कहा कि सनकादि हमारे चार पुत्र जो परम शैव हैं, सदाशिव की मूर्ति हृदय में रख तीनों लोक में भ्रमण करते हैं। वे एक दिन विष्णु-लोक में गये और वैकुण्ठ को देख अति प्रसन्नता से चाहा कि विष्णु के दर्शन करें। सो छः डेवढ़ी तक भीतर चले गये, सातवें डेवढ़ी पर जय और विजय विष्णु के गणों ने रोका और किसी प्रकार भीतर जाने न दिया। सनकादिक ने क्रोधित हो शिव की प्रेरणा से यह शाप दिया कि तुम दोनों यहाँ न रहोगे। तुमने हमको विष्णु के मन्दिर में जाने से रोका, यह तुम्हारा राक्षसों के समान कर्म है। इससे तुम दोनों राक्षस हुये और तुरन्त यहाँ से च्युत होकर पृथ्वी पर जाओ। यह शाप सुनकर दोनों सनकादिकों के चरणों पर गिर पड़े और उनको प्रसन्न किया। इतने में विष्णु भी भीतर से निकल आये। उन्होंने उनकी बड़ी स्तुति की। सो वह विष्णुजी को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रसन्न कर आज्ञा पाय हमारे लोक को चले आये। वह दोनों गण दिति के पुत्र होके कनकक्कशिपु और कनकाक्ष के नाम से प्रसिद्ध हुये। वह ऐसे बलवान् हुये कि उन्होंने तुरन्त ही तीनों लोक को जीत लिया और स्वाधीन होकर तीनों भुवन का राज्य करते रहे। निदान देवताओं की इच्छानुसार कनकाक्ष को विष्णु ने वराहरूप धर मारा और कनकक्कशिपु को नरसिंह अवतार धर उनका उदर विदीर्ण किया। जो दोनों को तीन जन्म तक राक्षस होने का शाप था, इससे फिर उन दोनों ने कुम्भकर्ण और रावण होकर शिव की बड़ी भक्ति की। इससे रावण ने देवताओं को परास्त कर तीनों लोक का राज्य किया। फिर रावण ने तुम्हारे उपदेश से मोहित हो कैलाश को मूल से उखाड़ लिया। इससे शिवजी ने बड़ा भारी शाप देकर कहा कि हमारे समान कोई मनुष्य तुम्हारा अहंकार नष्ट करेगा। सो शाप के कारण उन्होंने कुमार्ग अङ्गीकार किया और संसार में बड़े-बड़े उपद्रव मचाये। देवतादि दुःखी हो विष्णु के समीप गये और रावण का सर्व वृत्तान्त वर्णन किया। विष्णु बोले कि रावण शिवजी का भक्त है। वह किसी से जीता नहीं जा सकता। पर हम शिवजी की अनुमति पाकर तन धारण करेंगे और शिवजी का तपकर उन्हीं से बाण लेकर रावण को मारेंगे। यह कह देवताओं के बिदा करने के उपरान्त चाहा कि मनुष्य होकर चार प्रकार का अवतार लें। सो अयोध्यापति दशरथ के यहाँ इस तरह अवतार लिया कि कौशल्या से रामचन्द्र, कैकेयी से भरत और सुमित्रा से लक्ष्मण तथा शत्रुहन उपजे। यह चारों एक ही विष्णु के स्वरूप हैं जिन्होंने अलग-अलग चार अवतार लिये और राजा जनक की लड़की सीता के साथ रामचन्द्र का विवाह हुआ। निदान रामचन्द्र दशरथ की आज्ञा से राज्य छोड़ देवताओं के कार्य करने के निमित्त वन में गये। वहाँ सीता को रावण ने हर लिया और हर तरह रामचन्द्र को दुःख दिया। निदान रामचन्द्र ने अगस्त्य से उपदेश पाकर शिव का तप किया और शिवजी ने प्रसन्न होकर रावण के वध के निमित्त आज्ञा देकर अपना धनुषवाण कृपा किया। सो रामचन्द्र ने रावण को सेना सहित वध करके सीता को पाया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चौंतीसवाँ अध्याय।

नारद ने कहा कि यह रामचन्द्र का चरित्र अतिसंक्षेप से है। हे ब्रह्माजी! इसको विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि रामचन्द्र के चरित्र अति पवित्र यश, कीर्ति, आरोग्यता और मुक्ति के देनेवाले हैं। यह अवतार विष्णु ने देवताओं के लिये पूर्णांश से धारण किया है। उन्होंने बहुत से बालचरित्र किये जिससे माता-पिता रात-दिन बड़े प्रसन्न रहे। फिर विश्वामित्र के यज्ञ में जाकर रक्षा की और सुबाहु को सेना सहित मार डाला। मारीच भी मारे गये। फिर विश्वामित्र के साथ जनकपुर में जाकर राजा जनक की इच्छा पूरी की। वहाँ चारों भाइयों का विवाह हो गया। जब राजा दशरथ अपने लड़कों और बहुओं समेत अयोध्या को लौट आये, उस समय का आनन्द कौन बखान सकता है। निदान देवताओं ने अपने कार्य के निमित्त बड़े-बड़े उपाय करके भरत की माता को निन्दा दिलाई अर्थात् रामचन्द्र को दशरथ से वनवास दिलाया। पहिले रामचन्द्र चित्रकूट को गये और कई दिन लक्ष्मण तथा सीता सहित वहीं ठहरे रहे। वहाँ मत्तगयन्द शिवजी की पूजा की जिसको हमने स्थापित किया था। वही शिवजी चित्रकूट के रक्षक हैं और यात्रा करनेवालों के पाप भक्षण कर जाते हैं। जो मनुष्य चित्रकूट में जाकर उनकी पूजा न करे उसको जाने का कुछ फल नहीं मिलता। रामचन्द्र ने भी उससे वरदान पाया। भरत अवधवासियों सहित वहाँ गये और हाथ जोड़ बड़ी भक्ति से लौटने के लिये विनती की। पर रामचन्द्र ने न माना और अपनी पादुका देकर भरत को विदा किया। फिर चित्रकूट को छोड़ दण्डक वन को जहाँ मुनीश्वर रहते हैं, गये। बुरे वन के होने के कारण सीता को बीच में करके वे आगे चले। मार्ग में विराध को, जो सीता को उठाकर आकाश में ले उड़ा था, मार डाला। फिर कुम्भज के स्थान में गये और अगस्त्य के उपदेश से पञ्चवटी को गये, जहाँ महादेव की सताई हुई शूर्पणखा ने आकर रामचन्द्र से विवाह की इच्छा की। निदान रामचन्द्र और लक्ष्मणजी ने न माना। सो शूर्पणखा यह कहकर कि अपने किये का फल पाओगे, सीता को भय देने लगी। अपने नाम के समान उसने अपना शरीर बनाया जिससे लक्ष्मण ने जाना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि यह राक्षसी है, सो तुरन्त उसकी नाक काट ली। वह रोती-पीटती अपने भाई दूषण के पास गई और सब वृत्तान्त कह सुनाया। वह शूर्पणखा को आगे कर युद्ध के निमित्त चले। रामचन्द्र ने सीता लक्ष्मण को सौंप जितने राक्षस लड़ने आये थे, उतने अपने रूप बनाकर सिवाय शूर्पणखा के सबका वध किया। वह रोती हुई रावण के समीप गई और सर्व वृत्तान्त रामचन्द्र का कहा। सो रावण ने रामचन्द्र को बड़ा बलिष्ठ जान मारीच को सीता के उठा लाने के निमित्त कहा। उसने न माना। निदान रावण भयभीत हुआ और दोनों इस कार्य के निमित्त चले। मारीच रावण का मातुल विचित्र हरिण बन रामचन्द्र के सामने फिरने लगा। रामचन्द्र छल में आकर हरिण-वध के निमित्त चले। पीछे से लक्ष्मण भी चले। सो राम-लक्ष्मण के पीछे रावण आकर सीता को उठा ले गया। मार्ग में सीता को रोते देख जटायु ने रावण से युद्ध किया जिसके पंख रावण ने जला डाले। जब रामचन्द्र और लक्ष्मण ने लौटकर सीता को न देखा तो अतिखेद कर पृथ्वी पर गिर पड़े और रोते हुये सब जंगल ढूँढ़ने लगे। सो जटायु से सब हाल सुना और जटायु ने यह हाल रामचन्द्र का सुनकर अपने शरीर का त्याग किया। रामचन्द्र ने आप उसका दाहकर्म किया और पिता के समान शोककर फिर सीता को ढूँढ़ने लगे। इतना खेद रामचन्द्र को देख अगस्त्यजी आये।

पैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अगस्त्यमुनि को देखकर लक्ष्मण ने प्रणाम किया और दोनों हाथ जोड़कर शिर झुकाया। मुनि ने उनको अति दुःखी देख रामचन्द्र से कहा कि हम वेद का मत आपको सुनाते हैं कि तुम्हारा यह अथाह दुःख दूर हो जावे। तुम स्त्री के निमित्त ऐसा दुःख क्यों करते हो? स्त्री किसकी होती है? तुम वेद मार्ग छोड़कर हाय-हाय करते हो और रोते हो। यह शरीर जो पाँच तत्त्व से बना हुआ है और जड़ है, उस पर इतनी प्रीति क्यों करते हो? केवल जीव सब इन्द्रियों से पवित्र है और सच्चिदानन्द सबसे भिन्न जन्म-मरण से रहित है। वह स्त्री पुरुष नपुंसक कुछ नहीं है। उसका कोई आकार नहीं पर सब में विद्यमान है। वह अनादि, निरञ्जन,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अलख ब्रह्म, माया से परे, निर्भय और नामरूप रहित है। स्त्री जो अति भ्रष्ट और उसका शरीर मलमूत्र से परिपूर्ण है तो बताओ कि सिवाय चर्म के उसके शरीर में क्या है? इस बात को न समझ बुद्धि के विरुद्ध सब कार्य कर रहे हो। तुमको उचित है कि ज्ञान धारण करके ऐसी चिन्ता मत करो और यह समझ लो कि केवल शरीर ही मरने के योग्य है, आत्मा नहीं मरता। ब्रह्म एक ही है, दो नहीं। कौन किसकी स्त्री और कौन किसका पुरुष है? यह समझकर सीता के वियोग का दुःख दूर करो। तुम वृथा ही मोह के वश में पड़ गये हो। शिवशंभू का स्मरण कर खेद को भूलो। यह बात सुन रामचन्द्र बोले कि आप जो कहते हैं कि तन जड़ है, उसको क्या दुःख हो सकता है और आत्मा को तन से भिन्न बताते हो फिर किसको दुःख होता है? उसको बतला दीजिये। मुझको सीता के वियोग का दाह है जो शरीर को जलाता है। जो बात कि हम शरीर में प्रतिदिन देखते हैं, उसके लिये आप क्या कहते हैं। मैं आपसे पूछता हूँ कि दुःख सुख का भोगनेवाला कोई है अथवा नहीं। यह सुन अगस्त्यजी बोले कि शिवजी की माया जानने के योग्य नहीं। तीनों लोक उसी में मोहित हैं। उसका नाम प्रकृति है। उससे सम्पूर्ण संसार को उपजा हुआ समझो। ऐसी प्रकृति का स्वामी शिवजी को समझो जो अनादि और पवित्र है। उसी से यह तीनों लोक दिखाई देते हैं क्योंकि सबका आत्मा वही है। जिस तरह कि लकड़ी अग्नि के योग से प्रज्वलित होता है, इसी तरह शिवजी से सब जीव अपने-अपने कर्मों से बँधे हुये प्रकट होते हैं। वहीं पुरानी वासना संसार की क्षेत्रज्ञ है और अन्तःकरण जो चार प्रकार का है, उससे उसी का प्रकाश है। वही जीव अपने कर्मों के फल पाता है। वही कर्मफल को भोग करता है। सब दुःख-सुख अपने कर्मों के अनुसार होता है। माया की फाँसी से दुःख सुख है। जो माया से भिन्न हैं, वे संसार पर प्रबल हैं। मूर्ख संकल्प-विकल्प से संसार में संसार देखते हैं। रामचन्द्र ने कहा कि जो तुमने कहा वह सब ठीक है पर हमारा दुःख दूर नहीं होता। जिस तरह कि मद्य बड़े-बड़े बुद्धिमानों को मतवाला कर डालता है, इसी प्रकार भाग्य के भोग्य महादुःखदायक हैं। उसी भाग्य के अधीन होकर किसी का वश नहीं चलता। उससे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सब दुःख सुख होता है। हमने भाग्य को सर्वोपरि शिवजी के समान समझ लिया है। वह मुझे दुःख देता है। अब मैं यह चाहता हूँ कि जिसने मेरी स्त्री को बहकाया है, उसको मार डालूँ। हम सूर्यवंशी दशरथ के पुत्र हैं। जो शीघ्र ही न मारूँगा तो हमारे जीने से क्या लाभ है? हमको इस समय तत्त्वबोध से कुछ प्रयोजन नहीं। हमारा मन सीता के वियोग में दुःखी है। काम क्रोध को अग्नि के समान शत्रु कहा गया है। हमारा शरीर उनसे जल रहा है। किसी प्रकार वह अग्नि नहीं बुझती। यह अहंकार का भरा हुआ वचन सुन अगस्त्य ने जाना कि हमारा उपदेश लाभदायक न हुआ। मन में कुछ क्रोध करके कहा कि हे रामजी! तुम्हारा कुछ अपराध नहीं है। यह शिवजी की माया है जिसके अधीन होकर सब देवता मुनि आदि भी बुद्धि को छोड़ दुःख-सुख प्राप्त करते हैं। जो मनुष्य कि काम और क्रोध के अधीन हैं, वे उपदेश से शुद्धमार्ग को नहीं मानते। उनको उपदेश के वचन इस तरह अच्छे मालूम नहीं होते जिस तरह कि मरनेवाले रोगी को औषधि और चिकित्सा उत्तम नहीं भासती जो अपनी स्त्री की प्राप्ति के निमित्त रावण का वध किया चाहते हो, रावण बड़े भारी दैत्यों का स्वामी है। तुम लङ्का में क्योंकर जाकर सीता को प्राप्त करोगे। उसके यहाँ देवता सब कार्य और सेवा करते हैं। देवताओं की स्त्रियाँ रावण के ऊपर पङ्खा डुलाती हैं। वह शिवजी की कृपा से संसार भर का राजा है। यद्यपि उसने कुमार्ग धारण किया है तो भी उसको दुःख नहीं मिलता। तुम अपने को और शत्रु की शक्ति को नहीं देखते। मेघनाद के समान जिसका पुत्र है, जिसको शिवजी ने वर दिया है, जिसने इन्द्र को जीतकर सब देवताओं को अपने सामने से भगा दिया, जिसका लघु भ्राता कुम्भकर्ण के समान है, जिसका दूसरा भाई विभीषण अमर है, जिसका सब गढ़ सुवर्ण से बना हुआ है, जिसको देवता और दैत्य कोई जीत नहीं सकता, जहाँ किसी को कुछ भय नहीं और जिसके पास करोड़ों चतुरङ्गिणी सेना विद्यमान है, उसको तुम जीता चाहते हो। जैसे बालक चन्द्रमा को अपने हाथ से पकड़ना चाहता है वही तुम्हारी ज्यों की त्यों अवस्था जान पड़ती है। यह कह अगस्त्य चुप हो गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छत्तीसवाँ अध्याय ।

इतना कह ब्रह्माजी बोले कि जब यह वचन अगस्त्यजी के रामचन्द्र ने सुने तो ठण्ढी साँस भरकर अगस्त्य के चरणों पर गिर पड़े और हाय हाय करके चिल्लाकर रोने लगे और कहा कि हे मुनि ! हम दुःखसागर में डूबते हैं। हमको डूबने से बचा लो। यह सहायता का समय है। उपदेश, ज्ञान और बुद्धि का समय नहीं। क्योंकि इस समय हम वियोग की अग्नि से जलते हैं। वह उपाय बताइये जिससे सीता मिलें। फिर जो आप मुझको ज्ञान सिखावें, वह हम मानेंगे। मुझे अपना सेवक जानकर क्रोध न कीजिये। हम क्षत्रिय मूर्ख और अहंकारी हैं। हम वियोगाग्नि से जले हुये हैं। आपका वचन जो अमृत के समान है, हमारे मन में नहीं ठहर सकता। आपके सामने हम दूसरा शिक्षा देनेवाला गुरु नहीं देखते। आप वह बात सिखावें जिससे सीता मिलें। यह सुन अगस्त्य ने शिव लीला की बड़ी स्तुति की और कहा कि जो तुम यही चाहते हो तो शिवजी की शरण में जाकर उनका कठिन तप करो। शिवजी के नाम वेद के अनुसार जपो और मनुष्यत्व छोड़ तेज का भरा हुआ रूप धारण कर रावण का वध करो तो तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होगा। तुम्हारे सामने कोई ठहर न सकेगा। तुम सुगमता से सीता पावोगे। शिवजी तुम्हारी ओर होकर रावण का पक्ष न करेंगे। यह सुन राम ने अति प्रसन्न हो कहा कि हे अगस्त्यजी ! तुम समुद्र के मथनेवाले और इल्वल के शत्रु संसार में प्रसिद्ध हो। आप जो मुझ पर प्रसन्न हुये तो हमारे सब मनोरथ पूरे होंगे। अब तुरन्त शिवजी के मन्त्र की दीक्षा देकर शिवजी की पूजा की युक्ति बता दो जिससे शिवजी की सेवा में प्रवृत्त हो जाऊँ और शिवजी मुझसे बहुत ही प्रसन्न होवें। अगस्त्यजी ने कहा कि पहिले हम शिव पूजा की तिथि और वार वर्णन करते हैं जिनमें शिवजी की पूजा का आरम्भ करे। अष्टमी या चतुर्दशी जो शिवजी की तिथि प्रसिद्ध है अथवा एकादशी जो विष्णु की तिथि कहलाती हैं, उनके शुक्ल पक्ष में शुभमास पर शिवजी की पूजा का आरम्भ करे। इस तरह कि पहिले मुहूर्त भर रात्रि रहे उठ स्नान और नित्यकर्म से निश्चिन्त हो जावे। फिर संकल्प करे और अपना सर्व

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शरीर श्वेत वस्त्रों से भूषित करके युक्तिपूर्वक भस्म अवश्य लगावे। सब बातों से उत्तम भस्म धारण करना अवश्य है क्योंकि भस्म लगाने से सिद्धि प्राप्त होती है। फिर रुद्राक्ष जहाँ-जहाँ जिस-जिस अङ्ग में चाहिये, युक्ति से धारण करे। हे रामचन्द्र! भस्म बिन शिव प्रसन्न नहीं होते, न सिद्धि प्राप्त होती है। फिर व्रत कर प्रसन्नता पूर्वक ध्यान करे। जो परब्रह्म सदाशिव ब्रह्मा और विष्णु के उपजाने वाले सबके स्वामी कैलासवासी हैं, उनके स्वरूप का ध्यान करे कि गौर शरीर, भस्मरमाये, जिनके वामभाग में गिरिजा विराजमान हैं। वह पाँच मुख, तीन नेत्र, चार भुजा, लालरंग की जटाजूट धारे, सब भूषणों को पहिने हुये हैं और साँपों को जनेऊ के बदले लपेटे हुये हैं। त्रिशूल, डमरू, वर और अभय धारण किये बाघम्बर ओढ़े कोटि सूर्य के समान महाप्रकाशमान और कोटि चन्द्रमा के सदृश शीतल हैं। यह ध्यान कर शिवजी की पूजा करे। फिर शिवजी के सहस्र नाम का पाठ करे यह कह अगस्त्य ने रामचन्द्र को वेद का लिखा हुआ सहस्रनाम जिसके जप से शिवजी तुरन्त प्रसन्न होते हैं और सर्व कष्ट नष्ट करते हैं, बता दिया। फिर कहा हे रामचन्द्र! तुम इस सहस्रनाम को रातदिन जपो। जो कोई भय उपजे तो तुम कुछ न डरना, शिव तुम्हारी रक्षा करेंगे और तुमको पाशुपतास्त्र कृपा करेंगे जिसको पाकर शत्रु के वध करने के अनन्तर सीता को पावोगे। वह धनुष जो तुमको सदा शिवजी कृपा करेंगे, उसके चढ़ाने से समुद्र तक सूख जावेंगे। उसी से शिव प्रलय करते हैं। वह धनुष शिव को अतिप्रिय है और दूसरी युक्ति हम नहीं जानते। शिवजी की शरण होने से हर प्रकार का आनन्द मिलता है और सर्व कार्य तुरन्त सिद्ध हो जाते हैं। फिर अगस्त्य ने उन लोगों का वृत्तान्त संक्षेप से सुनाया जो शिवजी की सेवा से अपने-अपने मनोरथ पा चुके हैं। फिर अगस्त्य अपने आश्रम को चले गये।

सैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि रामचन्द्र ने रामगिरि पर जाकर गोदावरी के तट पर शिवलिङ्ग की स्थापनाकर भस्म तथा रुद्राक्ष धारण किया और शिवलिङ्ग को गोमती नदी के जल से जो समुद्र से उपजी है, पूजन करके नाना प्रकार के वन के पुष्पों और फलों से पूजा की। फिर सिंह के चर्म पर आसन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जमाया और सदाशिवजी का ध्यान किया। इस प्रकार की मूर्ति सदाशिव की अपने हृदय कमल में स्थिति की—ध्यान जो रामचन्द्र ने किया—कोटि सूर्य के समान जिनकी सुन्दर कान्ति और जिनमें कोटि चन्द्रमा के समान शीतलता भोग और कामना के हेतु सर्व प्रकार के भूषण और वस्त्रों से अलंकृत पाँच मुख, तीन नेत्र ललाई लिये, जटा प्रकाशमान, डमरू, त्रिशूल, वर, अभय धारण किये चार भुजा से सुशोभित, भाल में चन्द्रमा, बाघम्बर ओढ़े, सर्प का जनेऊ पहिने, शिर में जटा के बीच गङ्गा की छटा, मस्तक में त्रिवेद, कण्ठ में हलाहल की श्यामता, कान में कुण्डल के बदले दो सर्प लटकते हुये, दोनों चरण कमल के समान विराजमान, गौर शरीर, भस्म रमाये, अति दयावान, अनादि, अप्रमेय, अविनाशी, अद्वितीय, विद्या, हर्ष, सत्यता और धर्म के स्वरूप इसी प्रकार का ध्यान करके रामचन्द्र शिवसहस्रनाम का जप करने लगे। वन के पुष्पों, जड़ों और वायु आदि खाने से चार मास बिताये। शिवजी ने चाहा कि रामचन्द्र की परीक्षा लेवें। सो अकस्मात् समुद्र में बड़े वेग से भयानक शब्द हुआ। जिस तरह कि प्रलय में समुद्र अपनी मर्यादा से बढ़ जाता है, उसी प्रकार बढ़ गया। सो रामचन्द्र ने चारों ओर देखा पर शब्द के सिवाय और कुछ दिखाई न दिया। इतने में अग्नि की ज्वाला चारों ओर इतनी फैली कि चारों ओर से उस ज्वाला से बचना कठिन हुआ। रामचन्द्र ने नेत्र मूँद लिये। उस समय उनको यह विचार हुआ कि यह किसी दैत्य की माया है। तुरन्त धनुर्बाण हाथ में लेकर बाणों से उस ज्वाला को मारने लगे।। जितने कि और शस्त्र थे, सब उस ज्वाला की ओर फेंक दिये पर किसी शस्त्र ने काम न दिया। इसके सिवाय रामचन्द्र के हाथ से धनुष धरती पर गिरकर भस्म हो गया। बाण, तरकस और अन्य अस्त्र शस्त्रों की भी यही दशा हुई। यह दशा देखकर रामचन्द्र मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़े। यही दशा लक्ष्मण की भी हुई। निदान रामचन्द्र ने शिवजी का ध्यान किया। तब तो रामचन्द्र के नेत्र खुल गये और उनका सब दुःख दूर हुआ। देखा कि एक महातेजवान् जिनका अति प्रकाश युत भाल अर्धचन्द्र धारण किये, नन्दी पर सवार अपने मुख्य लक्षण प्रकट किये श्रीसदाशिवजी विद्यमान हैं। कोई लक्षण बाकी न रह गया जो उनमें न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

था। वाम भाग में गिरिजा विराजमान थीं। ऐसे स्वरूप को देखकर रामचन्द्र अति प्रसन्न हुये। फिर विष्णु को लक्ष्मी सहित गरुड़ पर चढ़े आते देखा जो रुद्राध्याय जपते चले आते थे। फिर मुझे हंस पर आरूढ़ हुये रुद्रसूक्त जपते अपनी ओर आते देखा। फिर रामचन्द्र ने उसी ज्वाला से मुनीश्वरों का समूह अर्थात् ब्रह्मा अथर्व शिर से शिव की स्तुति करते निकलते देखा। फिर देखा कि दिक्पाल अपने मुख्य लक्षणों और स्त्रियों सहित हाथ जोड़े सामश्रुति पढ़ते चले आते हैं। फिर गङ्गा को प्रसिद्ध नदियों सहित और समुद्र को वेद का मन्त्र पढ़ते हुये अपनी तरफ आते देखा। इसी प्रकार शेषादि को स्त्रियों सहित तथा नन्दीगण और गणेश को मूषक पर चढ़े और षण्मुख को मोर पर आरूढ़ जिनके दायें-बायें ब्रह्मा, काल, चण्डीश भृङ्गी गणनाथ को असंख्य गणों समेत आते देखा। फिर कन्दवमुनि को त्र्यम्बक मन्त्र जपते और शिव का यश गाते तथा चित्ररथ गन्धर्वादि अप्सरों और हंस को अपने गणों सहित, उत्तमोत्तम ग्रहों को सूर्य-चन्द्रमा समेत, अच्छे-अच्छे शिवभक्तों और इसी प्रकार सबको अपनी ओर आते देखा। ऐसी देवसभा शिव की देख जो आनन्द रामचन्द्र को प्राप्त हुआ, वह कहने में नहीं आता। रामचन्द्र ने शिव को ऐसे स्वरूप और सभा के साथ प्रणाम करके बड़ी स्तुति की।

अड़तीसवाँ अध्याय।

रामचन्द्र ने असंख्य प्रणाम करने के उपरान्त कहा कि हे सदाशिव! तुम्हारे चरणों को प्रणाम है, इसी से हमारा सब काम है। यह कह फिर सदाशिव का नाम जपने लगे। तब शिव ने यह लीला की कि एक सोने का रथ प्रकट हुआ जो परिपूर्ण रत्नों और मोतियों से अलंकृत था। सो शिव वृषभ से उतर रथ पर आरूढ़ हुये। उस समय चारों ओर से जय-जय का शब्द हुआ। देवपत्नियाँ स्तुति करने लगीं। विष्णु और हम भी स्तुति में प्रवृत्त हुये। हर प्रकार का उत्सव हुआ। ऐसे समय में शिव ने रामचन्द्र की ओर देखा और रामचन्द्र को शिर झुकाये देख तुरन्त रथ से उतर रामचन्द्र को रथ पर बैठा लिया। वह धनुष जिसको हर हाथ में लेकर प्रलय करते हैं, रामचन्द्र को दिया। ब्रह्मा ने पाशुपतास्त्र और कृपा करके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपना तेज भी दिया। फिर अक्षय तूणीर देकर रामचन्द्र के सब दुःख नष्ट कर दिये। शिव ने कहा कि यह बाण प्रलय करनेवाला है। इसको किसी ऐसे ही बड़े कार्य पर छोड़ना। अथवा जब प्राणों का संदेह हो तब चलाना। कदाचित् इसके विरुद्ध और किसी समय इसको छोड़ोगे तो जानना कि प्रलय ही हो जावेगी। तुम्हारा बड़ा आदर करके हमने तुमको यह बाण कृपा किया। यह बाण सब शस्त्रों से श्रेष्ठ है। शिव ने सब देवताओं से कहा कि तुम सब अपने-अपने शस्त्र रामचन्द्र को दो क्योंकि रामचन्द्र मेरे सबसे बड़े सेवक हैं। जो कि रावण बड़ा बलवान् है इसलिये तुम हमारी आज्ञा से वानर और रीछ आदि होकर रामचन्द्र की सहायता करो। इस बात में मुख्य तुम लोगों का बड़ा लाभ है। सो यह आज्ञा शिव की सबने मानी। विष्णु ने नारायणशर, ब्रह्मा ने वधदण्ड, इन्द्र ने अग्निबाण और इसी प्रकार सबने अपने-अपने बाण रामचन्द्र को दिये। फिर रामचन्द्र ने शिव की स्तुति की और कहा कि समुद्र के पार मनुष्य का जाना कठिन है क्योंकि उसका चार सौ कोस का चौड़ान है। कदाचित् पार लाँघ भी जावे तो लङ्का का जीतना अति कठिन है। सिवाय इसके दैत्य बड़े बलवान् हैं। उनको जीतना बड़े आश्चर्य की बात है और मुख्य करके जब कि ये सब आपके सेवक हैं। फिर केवल दो मनुष्य और वे असंख्य, क्योंकर जय पावेंगे? शिव ने कहा कि हम आप तुम्हारी सहायता करेंगे। उनके मरने का समय निकट ही है। तुम कुछ संशय मत करो क्योंकि वे धर्म से विरुद्ध हो गये हैं। यही उसके शीघ्र ही मरने का हेतु है। वे तुम्हारी सीता को उठा ले गये हैं। ब्राह्मणों को नाना प्रकार के दुःख दिये। हमने उनका पक्ष छोड़ दिया है। सब देवता जो किष्किन्धा नगरी में बन्दर का स्वरूप धार उपजे हैं, उनकी सहायता से तुम समुद्र में सेतु बाँधना और वेग ही समुद्र के पार जा रावण का बधकर सीता को लाना। रामचन्द्र ने विनय की कि यह सब कार्य तो आपकी अनुग्रह से हो जावेंगे पर मेरी इच्छा है कि जो आप भी अपने अंश से किसी को उत्पन्न करके साथ भेजें तो मेरा सर्व कार्य पूर्ण होगा और मुझको अपनी सिद्धि पर पूरा विश्वास होगा। शिवजी ने मान लिया और कहा कि रुद्र के अंश से हनुमान् का अवतार हो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चुका हैं। वे हर तरह तुम्हारा काम पूरा करेंगे, तुमको कुछ श्रम न होगा। वही सर्व कार्य कर लेंगे। अधिक कहने से कुछ लाभ नहीं है। हम हर तरह तुम्हारा काम पूरा करेंगे। हमने अभी से सब राक्षसों को मार रक्खा है। तुमको केवल यश और कीर्ति दिलाना बाकी है।

उन्तालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी! फिर शिवजी ने रामचन्द्र को अपना गीता का ज्ञान दिया और आप अन्तर्धान हो गये। रामचन्द्र ने अगस्त्य के समीप जाकर यह वृत्तान्त कहा। अगस्त्यजी ने अति प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हारा सर्व कार्य सिद्ध हुआ। वास्तव में जिस पर शिवजी प्रसन्न हैं, उसका दुःख दूर होना क्या कठिन है। तुम संसार में पालन के निमित्त दूसरा शरीर हो। जो अब तुमने शिवजी से वरदान लिया तो अब तुम तुरन्त जाकर ऋष्यमूक पर्वत पर लक्ष्मी सहित स्थित हो जावो। थोड़े दिन वहाँ कालक्षेप करो। वहाँ शिवजी वानर के स्वरूप से आकर तुमसे मिलेंगे। उन्हीं के द्वारा तुम्हारे सब कार्य पूरे होंगे। रामचन्द्र ने अङ्गीकार किया और ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर हनुमान् से भेंट हुई। उन्होंने रामचन्द्र के सब कार्य किये। यहाँ तक कि रावण मारा गया और सीता को रामचन्द्र ने पाया। इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन्! मेरी इच्छा है कि हनुमान्‌जी का वृत्तान्त जन्म से बालक्रीड़ा और अन्य चरित्रों सहित सुनूँ। यह भी कि हनुमान् ने रामचन्द्र की क्योंकर सहायता की? ब्रह्माजी बोले कि अगले कल्प में शिवजी ने संसार के शुद्ध करनेवाली लीला करने को वानरों के कुल में अपना रूप धारण किया। इस तरह कि पहिला द्वीप जो जम्बू के नाम से प्रसिद्ध है और जिसके सम्बन्धी नव खण्ड हैं, उनमें से जिस खण्ड का नाम किम्पुरुष है, वहाँ केशरी नामक वानरों के राजा रहते थे। वे शिवजी के बड़े भक्त, सत्यवादी और निष्पाप थे। उनकी स्त्री महासुन्दरी पतिव्रता अञ्जनी षोडश वर्ष की आयु को प्राप्त थी। एक दिन अञ्जनी अपने सोलहों श्रृंगार किये और नाना प्रकार के उत्तम-उत्तम भूषण पहने पर्वत के एक श्रृंग पर खड़ी हुई थी। उस समय एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पवन का देवता समीर जिसका नाम प्रभञ्जन भी था, अञ्जनी को देखकर मोहित हुआ और काम की दृष्टि से अवलोकन कर अधीर हुआ। वह अपना स्वरूप छिपा अञ्जनी के शरीर में प्रवेश कर गया। अञ्जनी ने अपना शरीर कुछ भारी देखा पर इसका कारण न जान उसने केवल यह जाना कि मानो सिवाय मेरे पति के और कोई दूसरा मनुष्य मेरे शरीर को स्पर्श कर रहा है। यह जानकर कहा कि तुम कौन हो जो हमारे शरीर को स्पर्श करते हो? हे देवता! मुझको मत छुवो और पाप छोड़ प्रकट होकर अपना स्वरूप मुझे दिखावो। यद्यपि तुम काम से भरे हुये हो पर हमारा पतिव्रत धर्म मत छुड़ावो। जो तुम न मानोगे तो तुरन्त ही जलकर भस्म हो जावोगे। यह अञ्जनी का वाक्य सुन प्रभञ्जन भयभीत हो अपना मुख्यरूप धारणकर सामने आ खड़ा हुआ। उसने कहा कि हम भलीभाँति जानते हैं कि तुम पातिव्रत धर्म में दृढ़, पापरहित और अच्छे चरित्र करनेवाली हो। हम इन्द्र के भाई प्रभञ्जन नामक देवता हैं और संसार का उपकार करते हैं। हम संसार भर में भीतर और बाहर सब जगह जाकर पवित्र रहते हैं। हमारे स्पर्श से किसी को कुछ पाप नहीं होता। हमने ब्रह्म-सच्चिदानन्द के समान तुमको आकर दर्शन दिये हैं। तुम कुछ संशय मत करो और सदाशिवजी के भजने में प्रवृत्त रहो। उनकी इच्छा बड़ी बलवती है, उसको कोई वर्णन नहीं कर सकता। यद्यपि हम कामवश तुम्हारे शरीर के भीतर में प्रवेश कर गये पर तुम मन वच कर्म से मुझ पर कुछ क्रोध मत करो। मैं तुम्हारी विनती करता हूँ। तुमको कुछ पाप न होगा। यह बात प्रकट है कि देवताओं की इच्छा फल दिये बिना नहीं रहती। इससे तुम्हारे एक बड़ा बलवान् पुत्र शङ्कर के अंश से उत्पन्न होगा जो शिव के समान बड़ा तेजस्वी, हमारे समान वेग-गामी और शत्रुओं के वध में बड़ा चतुर होगा। तुम्हारे कुल का कोई कपि तुम पर व्यभिचार का दोष न रक्खेगा। वह रामचन्द्र और सीता का खिलौना होगा और तुमको अति आनन्द देगा। तुम्हारे तीनों प्रकार के ताप नष्ट हो जावेंगे। तुम उस बालक को शिव का अवतार जानना। वह रामचन्द्र के कार्य पूर्ण करेगा। यह सब शिवजी की लीला जानना।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह कह पवन देवता अन्तर्धान हुये। उसके थोड़े दिनों के पीछे अञ्जनी गर्भवती हुई और पवन के आशीर्वाद से शिवजी अपने सर्वांश से अञ्जनी के गर्भ में आकर स्थित हुये। अञ्जनी अपने गर्भ में शिव के अंश को समझकर अति प्रसन्न हुई। दश मास के उपरान्त अञ्जनी के पुत्र उपजा जो महासुन्दर और तेजस्वी था। तब सब देवताओं ने आकाश से आकर दुन्दुभी बजाई, अप्सराओं ने नाचा और गन्धर्वों ने मङ्गल गीत गाये। तीनों लोक में बालक के जन्म का आनन्द छा गया और संसार के कष्ट सब नष्ट हो गये।

चालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! उस समय एक बड़ा उपद्रव हुआ। जब अञ्जनी ने देखा कि पवन के वचन के अनुसार पवन पुत्र में कोई शिव का मुख्य लक्षण नहीं है और उसका स्वरूप वानर के समान है, तब उसने अति दुःखी होकर उसको पर्वत के एक शिखर से नीचे डाल दिया। इससे बड़ा शब्द हुआ और पर्वत खगड-खगड हो नीचे धँस गया, धरती काँपने लगी। समुद्र सूख गया और तीनों लोक विकल हुये। हनुमान् ने पृथ्वी पर गिर कर आकाश की ओर देखा। सूर्य के निकलने को देखकर जाना कि कोई पका हुआ फल है। सो उसके निगलने की इच्छा की। उसी समय उस स्थान पर राहु आकर हनुमान् के देखने से क्रोधित हुये। परन्तु हनुमान् ने सूर्य के रथ को चलने से रोक लिया और राहु को तृणवत् समझ उसकी ओर भी मुख फैला दौड़े। राहु तुरन्त भाग गये और हनुमान् ने बड़ा भयानक शब्द किया जिससे देवताओं के लोक में हाहाकार मच गया। देवता आश्चर्य में हुये। सो इन्द्र ऐरावत हस्ती पर आरूढ़ हो वज्र हाथ में लिये उसकी ओर चले। इतने में हनुमान् ने अपना स्वरूप काल के समान धारण कर सूर्य के पकड़ने को अपना मुख फैलाया, पर जब इन्द्र को भी अपनी ओर आते देखा तो मुख फैला इन्द्र के पकड़ने को चला। इन्द्र ने क्रोधित होकर अपने वज्र से हनुमान् को घायल किया और हनुमान् धरती पर गिर पड़े। हे नारद! यह चरित्र शिव ने इसलिये किया कि वज्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की सिद्धि जाती न रहे। समीर अपने पुत्र को मरा हुआ जान रोने लगा। वह शिव का स्मरण कर अति दुःख से मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ा और शिव की स्तुति करने लगा। उस समय सदाशिव ने आकाशवाणी में यह कहा कि तुम इतने दुःखी मत हो। यह बालक हमारे अंश से उपजा है। इसको मारनेवाला तीनों भुवन में कोई नहीं है। तुम भी आठ वसुओं में से हमारी देह हो। तुमको उचित है कि अपनी श्वास खींचकर सब ओर से अपने अंश अर्थात् वायु को खींच लो। सब देवता अपने आप दुःखी हो जावेंगे। तुम भलीभाँति जानते हो कि भय बिन प्रीति नहीं होती। यह आज्ञा पा पवन प्रसन्न हुआ और अपने अंशों को खींच लिया। फिर शिव के पास आनन्द से बैठ गया। वायु के इकट्ठे होने से सब देवताओं के उदर फूल गये। संसार भर विकल हुआ और देवता मुनि आदि ने आकर इस अकस्मात् दुःख का वर्णन किया। हम सबको साथ लेकर क्षीरसागर में गये और विष्णु से सर्ववृत्तान्त कहा। विष्णु ने शिव का ध्यान कर हम सबसे कहा कि इन्द्र ने बहुत बुरा कर्म किया है जिसके कारण पवन ने शिव की प्रेरणा से ऐसा उपद्रव मचाया है। देखो, इन्द्र ने शिव पर वज्र चलाया है। उचित है कि हम सब अब तुरन्त चलकर शिव की शरण में जावें। यह कहकर वह हमारे और देवताओं सहित शिव के पास गये और स्तुति तथा प्रणाम के उपरान्त कुछ लज्जा के साथ देवताओं का उपद्रव सुनाया। शिव ने हँसकर कहा कि बहुत कारणों और बहुत कार्यों के लिये हनुमान् उपजे हैं। वे हमारे अंश और पवन के पुत्र हैं। उनको इन्द्र ने मूर्खता से मारा है। उत्तम है कि पहिले पवन को प्रसन्न करो। फिर हनुमान् के पास चलकर उनको आशीर्वाद दो। सो ऐसा ही किया। हनुमान् शिव की कृपादृष्टि के पड़ते ही उठ खड़े हुये। उनको देखकर सब देवता और मुनि आदि और सबसे अधिक पवन प्रसन्न हुये। शिव की आज्ञा को स्मरण कर सब देवता आदि हनुमान् को वर देने लगे।

इकतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सबसे पहिले विष्णु ने पवन की ओर देख हनुमान् को यह वर दिया तुम्हारा बालक अत्यन्त बलिष्ठ होकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इन्द्र आदि सकल देवताओं के कार्य के निमित्त हमारे दुःखों के समूह को दूर करे। उसके ऊपर सुदर्शन चक्र भी निष्फल होवे। हमने कहा हे पवन! तुम्हारे पुत्र को कोई हमारी फाँसी से न बाँध सकेगा। वह तीनों लोक में निर्भय रहकर सबके दण्ड से बचा रहे। सूर्य ने कहा कि हमसे भी अधिक इसका तेज और बल हो। हम इसको शिव का अवतार समझ सब विद्या पढ़ा देंगे। इन्द्र ने कहा कि इसके शरीर में वज्र भी अपना फल न करेगा। जोकि यह कुलिश अर्थात् वज्र से घायल हुआ है, इससे इसका नाम हनुमान् हो। अग्नि ने कहा कि इसकी देह में अग्नि अपना प्रभाव न करे। यमराज बोले कि हमारा दण्ड भी इस पर निष्फल होगा। वरुण बोले कि यह जल में कभी न डूबेगा। निर्ऋति बोले कि इस पर हमारा शस्त्र कुछ काम न करे। पवन ने कहा कि यह हमारा पुत्र हमसे भी अधिक हो। कुबेर बोले कि इसके सर्व कार्य पूर्ण हों। ईश अर्थात् रुद्र बोले कि यह सबसे अधिक बलवान् होगा। चन्द्रमा ने कहा कि इसको तीनों लोक में अधिक आनन्द प्राप्त होगा। शेष आदि जो नागों में सब से बड़े हैं, उन्होंने कहा कि इस पर कोई विष फल न करेगा। अन्य देवता बोले कि इसको हमारे शस्त्रों से कुछ भय न होगा। मुनीश्वर बोले कि यह बालक ऊर्ध्व रेता हो और लोहे के समान इसका शरीर अति दृढ़ होकर किसी के हाथ से न मरेगा। यह शिव का अवतार है। रामचन्द्र के कार्यों को पूरा कर उनके दूत के नाम से प्रसिद्ध होगा और उनके दुःख दूर करेगा। यह सुनकर विष्णु और हम सबों ने हनुमान् को अपने शरीर से लगा लिया। सबने पवन के ऐसे बालक के पाने के कारण बड़ी प्रशंसा की। फिर सबने हनुमान्‌जी की स्तुति की। तब शिव ने कहा कि रामचन्द्र के अवतार के लिये हमने कपि का अवतार लिया है। सो रामचन्द्र के कार्य कर उनका प्रेम हम सबको दिखा देवेंगे कि रामचन्द्र हमको कितने प्यारे हैं। हमारे इस प्रकार के अवतार धारण करने से चाहे हमको कोई हँसे या कुछ कहे पर हमको अपने भक्तों के कार्य करने अवश्य हैं। फिर शिव ने पवन से कहा कि हम प्रतिदिन तुम्हारे पुत्र की रक्षा करेंगे। उस पर कुछ कष्ट न होगा और हमारे त्रिशूल से भी उसकी मृत्यु न होगी। यह लीला कर शिव और सब देवता अन्तर्धान हो गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बयालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! सब देवताओं के अन्तर्धान होने के अनन्तर पवन हनुमान् को गोद में लेकर अञ्जनी के पास गये। हनुमान् को अञ्जनी की गोद में देकर सब कथा कह अन्तर्धान हुये। अञ्जनी ने हनुमान् को अपने स्तनों से दूध पिलाया और केशरी ने भी हनुमान् को देखकर बहुत आनन्द मनाया। सो हनुमान् के खेलकूद को देखकर दोनों प्रतिदिन प्रसन्न रहा करते थे। थोड़े दिनों में हनुमान् इतने बलिष्ठ हुये कि पृथ्वी से उड़कर आकाश में जाकर फिर धरती में कूद पड़ते थे। कभी पवन और कभी सूर्य के पास जाकर खेल करते थे। सितारों को खिलौना समझ पकड़ लेते थे। तब पवन मना करता। वे चन्द्रमा को चटुवा के समान चाटते और नट के समान आकाश में नाचते। कभी गङ्गा जो आकाश में हैं, उसमें स्नान कर अपनी पूँछ फटकारते और वह धरती तक आ जाती और पर्वतों के तृण उड़ जाते थे। ऐसे चरित्र हनुमान् के देखकर देवता और मुनि अति आश्चर्य में होते थे। एक दिन हनुमान् मुनियों के यहाँ गये पर किसी ने उनको न पहिचाना। वे उनके पराक्रम के खेल देख कहने लगे कि यह कौन और किसका पुत्र है? अभी तो यह दशा है, आगे न जाने क्या करेगा। इससे उचित है कि इसको सब मिल शाप दें कि भय जाता रहे। ऐसा विपरीत विचार मन में लाकर मुनियों ने हनुमान् को यह शाप दिया कि हे वानर-बालक, मूर्ख! तू अपने बल पर इतना अहंकारी है कि उचित और अनुचित को विचार नहीं करता। तू प्रेतों और भूतों के समान कार्य करता है। हमारे स्थानों में आकर उपद्रव करता है। तेरी बुद्धि जाती रही। इससे तुम्हारा बल तुमको विस्मरण हो जावे। यह शाप हनुमान् ने सुना और कुछ विचार न किया। इतने में आकाशवाणी हुई हे मुनियों! जो शाप तुमने हनुमान् को दिया, यह बात तुमने अच्छी नहीं की। यह हनुमान् शिव का अवतार है। तुम अपने तप का अहंकार करके भूल गये। यह रामचन्द्र के निमित्त अवतार हुआ है। अब विष्णु के कार्य कौन करेगा? इससे तुम अपने शाप को खण्डन करो। यह सुन सब मुनीश्वरों ने शिव का अवतार पहिचान कर कहा कि हे शिव के अवतार, हनुमान्! हमारे अपराध क्षमा करो। अब हम अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शाप इस तरह खण्डन करते हैं कि जब तक तुमको रामचन्द्र न मिलेंगे तब तक तुम इस अपने बल को भूले रहोगे। यह कहकर फिर बोले कि अब तुम सूर्य के पास जाकर विद्या सीखो। सो हनुमान् ने माता-पिता के समीप जा यह सब चरित्र कहा और माता-पिता की आज्ञा ले सूर्य के पास जा विद्या पढ़ने लगे। सो थोड़े दिनों में सब विद्या सीख गये। फिर सूर्य से कहा कि जो जो उचित हो, वह हमसे गुरुदक्षिणा माँग लो। सूर्य ने हनुमान् को शिव का अवतार जान स्तुति के अनन्तर कहा कि हे हनुमान्! हम तुम्हारा मुख्य वृत्तान्त जानते हैं। तुम शिवका अवतार हो। तुमने रामचन्द्र के लिये अवतार धारण किया है सो तुम पम्पापुर में जाकर बालि और सुकण्ठ जो दोनों भाई हैं, उनके पास रहो। सुग्रीव जो हमारा पुत्र है, उसका पक्ष करना। वहीं तुमको रामचन्द्र आकर मिलेंगे। हमको यही गुरुदक्षिणा चाहिये। यह सुन हनुमान् ने माता-पिता के पास आकर यह सब वृत्तान्त कहा। वह सुनकर प्रसन्न हुये और बोले कि तुम शिव अवतार होकर हमारे घर उपजे, हमारे धन्य भाग्य हैं। हम पर कृपा रखना कि हम पर माया अपना बल न करे। अब तुम जाकर अपने गुरु की आज्ञा पालन करो। क्योंकि जिस कार्य के लिये उपजे हो, उसे पूर्ण करना उचित है। यह आज्ञा माता से पा हनुमान् अति प्रसन्न हुये।

तेंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हनुमान् माता-पिता की आज्ञा पर उनको प्रणाम कर पम्पापुर को गये। उन्हें चलने में कुछ दुःख न हुआ। गङ्गा को सुगमतापूर्वक उल्लंघन कर, चित्रकूट को प्रणाम कर रेवा और नर्मदा से पार हो अगस्त्य मुनि के समीप जा उनकी संगति की। उन्हीं से रामचन्द्र की भक्ति की आज्ञा पाकर पम्पापुर पहुँचे। घर के विवाद से सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर चले गये। जहाँ हनुमान् को भी जाना पड़ा। जब रामचन्द्र और लक्ष्मण सीता के वियोग में दुःखी होकर उनके निकट पहुँचे तो हनुमान् अगवानी कर उनको ऋष्यमूक में लाये और सुग्रीव के साथ मित्रता कराय हर प्रकार से रामचन्द्र को प्रसन्न किया। फिर रामचन्द्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के हाथ से बालि का वध कराया और सीता को ढूँढ़ने लगे। वह समुद्र से पार उतर लङ्का में पहुँचे और बड़ी लीला कर रामचन्द्र को सीता का हाल सुनाकर धैर्य दिया। सीता से बिदा होकर रावण की पुष्पबाटिका को उजाड़ डाला और सब दैत्यों को मार अक्षयकुमार का भी वध किया। फिर अति सुगमता से लङ्का को जलाया जिसमें विष्णु के भक्तों के घर बच गये। उन्होंने रावण के गर्व को तोड़ समुद्र से उतर वानरों के यूथों से सब वृत्तान्त वर्णन किया और मार्ग में उद्यानों को उजाड़ते रामचन्द्र के समीप पहुँचे और सीता की चूड़ामणि दी। रामचन्द्र ने यह दशा देख कहा कि हे हनुमान् शिव के अवतार! तुम हर प्रकार हमारे हितैषी हो। हमारे अधीन हो तुमने हमारे दुःख दूर किये। खेद है कि हमने अज्ञान अवस्था में तुमको अपना दूत बनाया, यह अपराध क्षमा करना। यह दशा देख सबको ज्ञान हुआ और सबने हनुमान् को प्रणाम किया। हनुमान् ने जाना कि यह सब हमको शिव का अवतार समझ लेंगे तो फिर आज्ञा देने में ढील करेंगे तो कोई कार्य न होगा। फिर रघुवीर का कार्य क्योंकर पूरा होगा। सो ऐसी माया की कि सबको यह बात भूल गई। उनको इतना स्मरण रहा कि ये बड़े बलिष्ठ हैं। फिर रामचन्द्र ने हनुमान् को अपने अङ्ग से लगा लिया और लङ्का जाने की तय्यारी हो गई। सब समुद्र के तट पर पहुँचे। समुद्र को देख सब आश्चर्य में हुये पर किसी को श्रम करना न पड़ा। महावीर ने सेतु बाँध दिया। उसी स्थान पर रामचन्द्र ने शिव का लिङ्ग स्थापित किया और उसका नाम रामेश्वर रक्खा। उसी सेतु के मार्ग से श्रीरामजी ने अपनी सेना सहित लाँघकर रावण पर चढ़ाई की। दोनों ओर बड़ा युद्ध हुआ। हनुमान् ने अकेले बहुत-सी दैत्य सेना मार रामचन्द्र की सेना को बचाया। जब लक्ष्मण शक्ति से घायल हुये तब रामचन्द्र भी शोक से दुःखी हुये। जो रात के बीतने पर लक्ष्मण के जीने में सन्देह था सो तुरन्त हनुमान् जाकर दैत्यों को जीत औषधियों का पर्वत उठा लाये और लक्ष्मण को जिला दिया। उन्होंने इतनी रामचन्द्र की सहायता की कि रावण का सब तेज नष्ट हो गया। उसके कुल, परिवार, पुत्र और कलत्रों सहित रावण का वध किया। जब युद्धस्थल से महि-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रावण राम और लक्ष्मण को पकड़ ले गया, तब रामचन्द्र ने हनुमान् का स्मरण किया। सो हनुमान् ने जाकर अहिरावण की भुजा उखाड़ी। फिर सबको जीत रामचन्द्र सीता को ले अयोध्या में आये। इसी प्रकार महावीरजी ने बहुत से चरित्र कर दैत्यों का वध किया। यह चरित्र जो कोई सुने-सुनावेगा, वह लोक-परलोक में बड़ा आनन्द पावेगा।

चवालीसवाँ अध्याय।

वेश्यानाथ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम वेश्यानाथ अवतार का बखान करते हैं। नन्दीग्राम जो संसार में प्रसिद्ध है, वहाँ नन्दानामी वेश्या जो अति सुन्दरी अप्सराओं से भी अधिक रहती थी। वह गान विद्या में अति प्रवीण और शिव की भक्ति में अति चतुर थी। वह प्रति दिन भस्म धारती और भूषणों के बदले रुद्राक्ष पहनकर शिव का यश गाती। उसके घर में एक बन्दर और एक कुत्ता था। उसने उनके शरीर में रुद्राक्ष पहनाया और दोनों को शिव के मन्दिर में नचाती तथा आप ताल देकर गाती। इसी प्रकार वह नित्य प्रति उत्सव रचती। जब कुछ समय बीता तो शिव प्रसन्न हुए और वेश्यानाथ का तनुधार उसकी परीक्षा के निमित्त त्रिपुण्ड मस्तक में धारा और रुद्राक्ष भूषणों के बदले पहिने। निदान हर प्रकार शिव के वस्त्राभूषणों से अपने को सजाया और शिव-शिव कहते हाथ में कङ्कड़ पहन कर महानन्दा के घर आये। ऐसे वस्त्र देख महानन्दा ने बड़े आदर से वेश्यानाथ को ठहराया और हाथ में जड़ाऊ कङ्कण देख लेने की इच्छा की। वह महालोभ से कहने लगी कि तुम्हारे हाथ के कङ्कण को देखकर हमारी बुद्धि जाती रही है। यह तुम्हारा कङ्कण स्त्रियों के योग्य है। वेश्यानाथ ने कहा कि तुम इसका मोल क्या दोगी। महानन्दा ने कहा कि हमारे कुल में व्यभिचार पाप नहीं है वरन् यही कुलधर्म है। जो तुम यह कङ्कण हमको दोगे तो मैं तीन रात तक तुम्हारी स्त्री होकर बिहरूँगी। यह सुन वेश्यानाथ बहुत हँसकर बोले कि जो तुमने कहा उसको हमने ठीक समझा। यह कङ्कण लो। तुम तीन दिन तक हमारी स्त्री हो चुकी। हमारा हृदय तीन बार छुवो कि तुम्हारी प्रतिज्ञा
Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पक्की समझी जावे। महानन्दा ने माना और तुरन्त वह कङ्कण दे दिया। फिर वेश्यानाथ ने बड़ा आनन्द मान अपना सुवर्ण का लिङ्ग जो रत्नों से जड़ा था, महानन्दा को अपनी स्त्री समझ सौंपा और कहा कि इसको रक्षापूर्वक रखना, मुझको यह प्राण से अधिक प्रिय है। इसके न होने से जीने की आशा नहीं है। सो महानन्दा ने वह लिङ्ग ले लिया और शिव-मन्दिर के भीतर उसको स्थापित कर दिया। फिर अपने घर में वेश्यानाथ के साथ शृङ्गारकर आधीरात तक बातें करती रही। फिर शिव ने यह चरित्र किया कि अकस्मात् अग्नि उपजकर शिवमन्दिर में लग गई। वायु वेग से चली और वह लिङ्ग की मूर्ति जो वेश्यानाथ ने सौंपी थी, जल गई। पर कुत्ता और बन्दर दोनों बचे रहे। यह दशा देख दोनों महानन्दा और वेश्यानाथ अति दुःखी हुये। महानन्दा कुछ भेद न जानकर रोने लगी। वेश्यानाथ ने भी रोकर कहा कि हे वेश्या? अब हम जीते न रहेंगे, क्योंकि मैं पहिले कह चुका हूँ कि जब यह मूर्ति न रहेगी तो मैं न जीऊँगा। हमारा स्वामी जो जल गया तो हमारे जीने पर धिक्कार है। हमारे लिए चिता बनाओ जो ब्रह्मा और विष्णु भी आकर हमको निषेध करेंगे तो भी हम न मानेंगे। ऐसी हठ को देख महानन्दा ने अति लज्जापूर्वक रोते-पीटते चिता बनाई और वेश्यानाथ सबके देखते-देखते उस चिता में आग जला उसमें बैठ गये। तब महानन्दा ने सबको बुलाकर कहा कि मैं कङ्कण लेकर तीन दिन के निमित्त इसकी स्त्री हुई थी, इस समय में हमारा यह पति जला जाता है। मैं भी अपने धर्म के स्थित रखने के लिये इसके सात सती हूँगी। यह सुन उसके बन्धुओं ने मना किया पर उसने कुछ न सुना और अपना धन ब्राह्मणों को दे शिव का ध्यानकर तीन परिक्रमा करने के अनन्तर चाहा कि चिता में प्रवेश करूँ कि दीनदयालु शिवजी अपने मुख्यरूप से प्रकट हुये। उन्होंने उसे रोका अपनी कृपादृष्टि से उसकी ओर देख उसके पाप नष्ट कर दिये। यह रूप देख महानन्दा आश्चर्य में हुई। शिव हँसे और हाथ पकड़ कहा कि तुम कुछ आश्चर्य मत करो। हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त यह लीला की है। तुम्हारा ऐसा भाव देख हम प्रसन्न हैं। जो इच्छा हो, वह वर लो। महानन्दा बोली मुझे तीनों लोक के आनन्द से कुछ काम नहीं, केवल

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपने चरणों की भक्ति कृपा कर कुल-परिवार सहित मोक्ष दे अपने लोक में स्थान दीजिये कि आवागमन से छूट जाऊँ। यह सुन शिवने गणों का स्मरण किया। वह विमान ले आये। शिव ने अपने सामने सब समेत महानन्दा को विमान पर आरूढ़ कराया और बड़े उत्सव से अपने लोक में भेज दिया। वहाँ से वे सब गिरिजा की सेवा करने लगे। यह पवित्र कथा सब पापों को दूर करनेवाली और दोनों लोक का आनन्द देनेवाली है तथा हर प्रकार की चिन्ता दूर कर अतिआनन्द कृपा करती है।

पैंतालीसवाँ अध्याय।

द्विजेश अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम द्विजेश अवतार का वर्णन करते हैं। राजा भद्रायुष जिसके लिये शिव ने ऋषभ का अवतार लेकर उसकी रक्षा और पालन किया और जिसका हम वर्णन कर चुके हैं सो भद्रायुष के धर्म की परीक्षा के निमित्त दूसरी बेर शिव ने द्विजेश अवतार धारण किया। शिव अहंकार के भङ्ग करनेवाले और भक्तों को मुक्ति देते हैं। वे नाना प्रकार के रूप धारणकर भक्तों को पालते और शत्रुओं के वध का कारण होते हैं। शिवके समान तीनों लोक में और कोई स्वामी नहीं। वेद-पुराण सब उनको सबसे श्रेष्ठ कहते हैं। उन्हीं के अधीन तीनों लोक, देवता और दैत्यादि सब हैं। हे नारद! राजा भद्रायुष अति प्रतापवान् होकर शिव की पूजा में अति विख्यात हुआ। उसने अपने आपको बन्धि से छुड़ा लिया और ऋषभ से वर पा सब शत्रुओं को जीत आप राज्य करने लगा। राजा चन्द्राङ्गद की कन्या कीर्तिमालिनी के साथ उसका विवाह हुआ। एक दिन भद्रायुष अहेर खेलने के लिये रानी सहित वन में गये। उन्होंने बसन्त ऋतुभर वहाँ रुचिपूर्वक विहार किया। ऐसे समय में शिव ने चाहा कि राजा की परीक्षा करें। फिर शिव ने स्त्री सहित ब्राह्मण का स्वरूप धार एक माया का सिंह रचा जो ब्राह्मण और ब्राह्मणी पर लपका। वे दोनों भयभीत होकर भागे और राजा भद्रायुष को सुनाय जोर से रोते हुए भद्रायुष के पास गिरते पड़ते आकर कहा कि हे राजन्! हमको बचा लो।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हम तेरी शरण में आये हैं। यह सिंह जो चला आता है, हमारे भोजन की इच्छा रखता है। इससे हमको बचाओ, यह हमको खाने न पावे। यह सुन राजा भद्रायुष ने अपना धनुष उठा लिया। अभी तीर चलाया भी न था कि सिंह ने ब्राह्मण की स्त्री को पकड़ लिया। स्त्री हाय-हाय करके बहुत रोई और सिंह ने निर्भय होकर उसको खा लिया। यद्यपि राजा ने अपने बहुत से बाण उस पर मारे पर उसे कुछ दुःख न हुआ। वहाँ से निकल वह वनको गया। ब्राह्मण ने संसारी रीति के अनुसार बड़ा खेद किया और देर तक रोता रहा। उसने राजा भद्रायुष से कहा कि हे राजन्! तेरे सब बाण और शस्त्र निष्फल हुये, तुझे धिक्कार है। द्वादश सहस्र हस्ती का बल क्या हुआ? क्या तेरा तेज जलकर भस्म हो गया? वह तेरा खड्ग, शंख और कपाल कहाँ चला गया? तेरा भीष्म प्रभाव क्या हुआ? तेरा विद्याबल कहाँ गया? क्या उनमें से कुछ भी नहीं है? न कुछ तेरे पास उपाय है। क्या कोई भी युक्ति तेरे पास सिंह के निवारण की न थी? वेदों में लिखा है कि क्षत्रिय ब्राह्मणों की रक्षा करें। जब अपना कुल धर्म न रहा तो वह मनुष्य क्या जीता है। यह सुन राजा बहुत पछिताया और बहुत शोच विचारकर दीन हो गया उसने कहा वास्तव में हमारा सब बल नष्ट हो गया। हमारे भाग्य लौट गये। मुझे बड़ा पाप हुआ। हमारा कुलधर्म भी जाता रहा। मैं जानता हूँ कि मेरा राज्य नष्ट हो गया। इससे उचित है कि इस ब्राह्मण को प्रसन्न करूँ, चाहे इस इच्छा में प्राण भी जावे। यह विचार राजा ने ब्राह्मण के चरण पकड़ कहा कि अब तुम दुःख मत करो। मुझ पर अनुग्रह कर जो इच्छा हो, मुझसे ले लो। मैं अपना सर्व राज्य और स्त्री तुमको अर्पण करता हूँ और मैं भी सेवा के निमित्त उद्यत हूँ। ब्राह्मण ने कहा कि अन्ध को दर्पण, भीख माँगनेवाले को घर, मूर्ख को पुस्तक तथा स्त्री रहित पुरुष को धन और द्रव्य से क्या प्रयोजन है? जब मेरी स्त्री नहीं है तो मैं राज्य से क्या प्रयोजन रखता हूँ? मुझको अपनी स्त्री दो और कुछ नहीं चाहता हूँ। भद्रायुष ने कहा कि यह कौन धर्म है, तुमने इसको कहाँ से सीखा? क्या तुम्हारे गुरु ने यही धर्म तुम्हें बताया? तुम नहीं जानते कि पर स्त्री की संगति दोनों लोक में तीनों ताप देती है। संसार में सब वस्तुओं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के दाता हैं, उनमें से कइयों ने अपने शरीर के देने में भी शङ्का नहीं की पर स्त्री के देनेवाले को नहीं देखा। क्योंकि परस्त्री के साथ भोग करने से जो पाप होता है, वह किसी उपाय से नहीं जाता। ब्राह्मण ने कहा कि हम ब्राह्मण के वध से जो पाप होता है, उसको भी दूर कर सकते हैं। परस्त्री के साथ भोग करना क्या ऐसा बड़ा पाप है? इससे जो तुमको नरक से बचने की इच्छा हो तो अपनी स्त्री हमको दो। यह वचन सुन राजा ने मन में अति भय से विचार किया कि रक्षा न करने के बराबर राजा के लिये दूसरा बड़ा पाप नहीं है। इसलिये स्त्री के दान से दूसरे बड़े पाप से बचना उचित है। स्त्री के दान के उपरान्त मैं भी अग्नि में जल जाऊँगा। यह शोच तुरन्त ही अपनी स्त्री ब्राह्मण को दे दी और आप शुद्ध होकर देवताओं को प्रणाम किया। शिवजी को स्मरण कर शिवजी का नाम जपा और अग्नि की प्रदक्षिणा कर चाहा कि उसके भीतर गिरूँ तो तुरन्त ही शिवजी अपने मुख्य लक्षणों से प्रकट हुये जिनको देख भद्रायुष अति प्रसन्न हुआ। आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई। विष्णु हम देवताओं सहित वहाँ पहुँचे। राजा ने स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि वर माँगो। हमने तुम्हारी परीक्षा के निमित्त ब्राह्मण का रूप धारा। वह स्त्री जिसको सिंह ने खाया, गिरिजा है। हमने माया का सिंह रचा था। अब तुम कुछ सन्देह मत करो। तुम हमारे परमभक्त हो। भद्रायुष बोले कि हमको तो यही बड़ा वर मिला है कि तुमने प्रकट हो दर्शन दिये पर यह वर माँगता हूँ कि मुझको अपने कुल सहित अपना गण बना लो कि तुम्हारी सेवा में प्रवृत्त रहूँ। इसी शरीर से हम आपके लोक को चलें। रानी ने कहा कि मेरी यह इच्छा है कि मेरे माता-पिता भी आपकी सेवा में पहुँचे। शिवजी ने माना फिर यह वर दे शिव अन्तर्धान हुये। राजा भद्रायुष बहुत दिनों तक राज्य कर उसी शरीर से अपनी स्त्री, माता-पिता और पुत्र सहित शिवलोक में पहुँचा। इसी प्रकार यही बात राजा चन्द्राङ्गद को स्त्री सहित प्राप्त हुई। जो इस चरित्र को पढ़े व सुनेगा, वह शिव के लोक में पहुँचेगा। अठहत्तरवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

छियालीसवाँ अध्याय।

जितनाथ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम जितनाथ अवतार का वर्णन करते हैं अर्बुदाचल पर्वत में एक भील अपनी स्त्री सहित रहता था। वह शिवजी का बड़ा भक्त था। एक दिन वह भील स्त्री को घर में छोड़कर जीविका के निमित्त कहीं बाहर चला गया। शिवजी ने परीक्षा के निमित्त यती का रूप धारा और संध्या को भील के घर गये। तब भील भी आया और यती को देख प्रसन्न हुआ। उसने प्रणाम के उपरान्त पूजा की। तब यती ने कहा कि हे भील! कोई अच्छा स्थान हमारे रहने को दो। हम केवल रातभर रहकर चले जावेंगे। भील ने कहा कि हमारा घर बहुत तङ्ग है। सिवाय दो मनुष्यों के तीसरा नहीं रह सकता। यह सुन यती चलने लगे। भील की स्त्री ने भील से कहा कि यती के ठहरने के लिये स्थान दो, नहीं तो बड़ा अधर्म होगा। तुम दोनों घर के भीतर जाकर रहो, मैं बाहर जा रहूँगी। तब भील ने कहा कि स्त्री का बाहर रहना और यती का फिर जाना दोनों बुरी बातें हैं। उचित यह है कि मेरी स्त्री और यती घर के भीतर रहें, मैं बाहर अपना निर्वाह कर लूँगा। सो भील ने ऐसा ही किया कि दोनों को घर में रख आप बाहर रहा और शस्त्र बाँध रातभर घर के चारों ओर पहरा देता रहा। उस रात्रि को एक महाभयानक सिंह ने अपने और सिंहों समेत आकर भील को घेर लिया। भील ने उनके साथ युद्ध कर बहुतेरों को मार डाला। निदान सिंहों ने भील को मार उसका सब मांस खा लिया, केवल हड्डियाँ पड़ी रह गईं जिनको देख यती ने बड़ा खेद किया। भीलनी ने कहा कि कुछ चिन्ता मत करो। वह बहुत धन्य है जिसने ऐसी मृत्यु पाई। शिवजी अति प्रसन्न होंगे। मैं भी चिता लगाकर सती हूँगी क्योंकि स्त्रियों का यही धर्म है। सो भीलनी चिता बना अपने पति की हड्डियों के साथ अग्नि में बैठ गई। तब सब देवता वहाँ आये और यती ने भी अपना स्वरूप मुख्य लक्षणों समेत बदलकर कहा कि तुम धन्य हो। हम प्रसन्न हैं, जो चाहो वर लो। भील की स्त्री प्रसन्नता से मूर्च्छित हुई। उसकी जिह्वा से कुछ न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निकला। तब शिवजी बोले कि हे भीलनी! वर माँग ले। फिर कहा कि हमारा यती का स्वरूप हंस होकर तुम दोनों की भेंट करा देगा। तुम दोनों दूसरा शरीर धारण कर बड़ा आनन्द पावोगे। इस तरह कि तेरा पति मगधदेश में राजा वीरसेन का पुत्र हो नल के नाम से प्रसिद्ध होगा। वह पृथ्वी भर का स्वामी होगा। तुम राजा भीम जो मद्रदेश का स्वामी है, उसकी पुत्री होकर दमयन्ती के नाम से विख्यात होगी। तुम दोनों परस्पर विवाह कर संसारी भोग भोगकर अन्त में मुक्ति पावोगे। यह कह शिवजी तुरन्त अन्तर्धान हो गये। वह भील राजा नल होकर तीनों लोक में प्रसिद्ध हुआ और भीलनी दमयन्ती हुई। उसी यतीरूप हंस ने शरीर धार नल का विवाह दमयन्ती से करा दिया। उनके समान किसी ने राज्य नहीं किया। दोनों बड़े शिवभक्त हुये। उनसे इन्द्रसेन राजा हुआ। इन्द्रसेन से चन्द्राङ्गद हुआ जो शिव का बड़ा भक्त था। उसकी स्त्री का नाम सीमन्ती था। वह अपने पति से भी अधिक शिव की भक्ति करती और सोमवार को व्रत रख शिव को पूजती। ब्राह्मणों को स्त्री सहित शिव और पार्वती जान बहुत प्रेम से सेवन करती, यह कथा प्रसिद्ध है। यह यती का अवतार अति पवित्र है। हंस अवतार का चरित्र भी बड़ा शुद्ध है। जो इन दोनों अवतारों की कथा सुनेगा अथवा पढ़ेगा, उसको दोनों लोक में आनन्द मिलकर मुक्ति होगी। उन्नासीवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

सैंतालीसवाँ अध्याय।

कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम कृष्णदर्शन अवतार का वर्णन करते हैं। सूर्य के पुत्र मनु के इक्ष्वाकु आदि दश पुत्र उपजे। मनु का नवाँ पुत्र जिसका नाम वह्निक था, वह विद्या पढ़ने को गुरु के यहाँ गया। वह बहुत समय तक गुरु के यहाँ रह विद्या पढ़ता रहा। इतने में वह्निक के न होने पर घर में इक्ष्वाकु आदि सब भाइयों ने जुदा-जुदा होकर अपने पिता के धन को बाँट लिया पर वह्निक का कुछ भाग न लगाया। जब वह्निक घर आया और सबको अपना-अपना भाग लिये देखा तो उनसे पूछा कि हमारे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भाग में क्या-क्या आया है क्योंकि हम भी भाग पाने के योग्य हैं। भाइयों ने उत्तर दिया कि बाँटने के समय तुम्हारा भाग हम सब भूल गये। तुम्हें अब भाग नहीं मिल सकता। हमने पिता को तुम्हारे भाग में दिया, उन्हीं से ले लो। यह सुनकर वह्निक ने अति आश्चर्यपूर्वक अपने पिता से कहा कि भाइयों ने हमें भाग नहीं दिया। उन्होंने कहा कि अपने पिता को अपने भाग में लो। इससे मैं आपके पास आया हूँ। यह सुन मनु अचम्भा कर चुप हो रहे और अपने पुत्र को धर्म में दृढ़ समझ शिवजी का ध्यान कर कहा कि उनके वचन दुःखदायक हैं। उनको तुम मत मानो, मैं कोई ऐसी वस्तु नहीं हूँ कि जिससे तुमको आनन्द हो या तुम्हारे खाने-पीने में आऊँ। उन्होंने तुमसे बड़ा छल किया जो मुझे तुम्हारे हिस्से में दिया पर जो उन्होंने मुझे तुम्हारे भाग में दिया तो बहुत अच्छा। हम सदाशिवजी का ध्यानकर तुमको उपाय बताते हैं कि अङ्गिरस मुनि एक बड़ा भारी यज्ञ कर रहे हैं। उनको छः दिन से यज्ञ की युक्ति भूल गई है जिससे यज्ञ पूरा नहीं होता। इसलिये तुम वहाँ जाकर उनको उपदेश करो। वे तुम्हारे उपदेश से यज्ञ पूर्ण कर जो धन कि यज्ञ से शेष रहेगा, वह सब तुमको देवेंगे। सो वह्निक ने ऐसा ही किया और अङ्गिरस मुनि का यज्ञ दो सूक्त पढ़कर पूर्ण कराया। अङ्गिरस शेष धन वह्निक को दे आप वैकुण्ठ को चले गये। पर जब वह्निक उस धन को लेने लगे तो शिवजी ने यह चरित्र किया कि अति उत्तम सुन्दरस्वरूप धारे कृष्णदर्शन के नाम से प्रसिद्ध हो परीक्षा के निमित्त वह्निक के पास आ कहा कि तुम कौन मनुष्य बुद्धिहीन हो जो हमारा धन लेते हो। तुमको किसने भेजा है सच-सच कहो। वह्निक बोले कि अपने पिता की आज्ञा से हम यहाँ आये हैं। वैकुण्ठ के जाने के समय अङ्गिरस ने शेष धन हमको दिया है। यह सुन कृष्णदर्शन ने बड़ा झगड़ा किया। कहा कि तुम्हारा पिता अति धर्मवान् है, तुम उसके पास जाकर पूछो। जो वह कहेगा, हम मानेंगे। सो वह्निक ने फिर मनु के पास जाकर कहा कि हमको ब्राह्मण धन देकर आप वैकुण्ठवासी हुआ पर एक मनुष्य उत्तर से आकर वह धन हमको लेने नहीं देता। वह कहता है कि यह धन मेरा है, तुझे किसने दिया है? जब मैंने आपका नाम बताया तो कहा कि उनके पास जाकर पूछो। जो वह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कहेंगे तो मानूँगा। तब मनु ने आश्चर्य कर शिव का ध्यान किया और शिवजी की लीला वह्निक को बताई। वह्निक से कहा कि वह सदाशिव हैं। जब यज्ञ की शेष सामग्री रह जाती है तो वह सदाशिवजी की कही जाती है। वे रूप धार तुम पर अनुग्रह करने को आये हैं। तुम जाकर तुरन्त उनकी सेवा कर उनको प्रसन्न करो। वे सबके स्वामी हैं जिनका ब्रह्मा और विष्णु भी ध्यान करते हैं। सब देवता, मुनि, सिद्ध और चरण सेवा से मनोरथ पाते हैं। यह कह मनु अपने पुत्र वह्निक सहित तुरन्त वहाँ गये। वह्निक ने हाथ जोड़ विनती की कि हमारे पिता ने तुमको जान लिया कि तुम सदाशिव हो। तीनों लोक सब तुम्हारे हैं। मैंने आपको नहीं जाना और तुमसे तकरार की। हमारे अपराध दूर करो और हम पर प्रसन्न होकर सब धन ले लो। फिर श्राद्धदेव मनु वह्निक के पिता ने हाथ जोड़ बहुत स्तुति की। इतने में विष्णु ने हम और सब देवताओं समेत आकर शिवजी की स्तुति की और ऐसे स्वरूप को देख सबने बड़ा आनन्द मान बड़ा उत्सव किया। फिर उसी कृष्णदर्शन शिव अवतार ने वह्निक से कहा कि हम तुम्हारी सत्यता देखकर बहुत प्रसन्न हुये। हमने सब धन तुमको दे दिया। तुम इसको लो और अपने पिता सहित मुक्ति पावोगे। तुमको बड़ा ज्ञान प्राप्त होगा। यह कह वह अन्तर्धान हुये और सब देवता आदि भी अपने-अपने स्थानों को चले गये। श्राद्धदेव मनु वह्निक सहित अपने स्थान में पहुँचे। सो वह्निक चक्रवर्ती राजा हुआ और उसने शिवजी का बड़ा ही तप किया। संसार में सर्व प्रकार के भोग भोगकर अन्त में शिवपुरी को पहुँचा और गणों में गिना जाकर शिवजी की सेवा में प्रवृत्त रहा। जो इस चरित्र को सुनेगा वा पढ़ेगा, वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा।

अड़तालीसवाँ अध्याय।

भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम भिक्षुनाथ अवतार का वर्णन करते हैं। पूर्व में एक राजा सत्यरथ नाम शिवजी का बड़ा भक्त हुआ। वह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विदर्भ देश का राज्य करता था। सो एक समय तक वह विदर्भ देश में न्यायके साथ राज्य करता रहा एक दिन समय पाकर राजा शाल्व ने सत्यरथ पर धावा करके उसके देश को घेर लिया और दोनों राजों में बड़ा युद्ध हुआ। सो बहुत युद्ध करने के उपरान्त सत्यरथ परास्त हुआ और मारा गया। रात्रि के समय उसकी रानी युक्ति कर घर से बाहर भाग गई और पूर्व की ओर शिव और गिरिजा का ध्यान कर चली। वह गर्भवती थी। बहुत मार्ग चलने से थक कर तालाब के पास जा एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। भाग्य से शुभ लग्न में उसी दिन उसके पुत्र उपजा। रानी बहुत प्यासी होकर उस तालाब में पानी पीने गई। अभी पानी न पिया था कि ग्राह ने उसको निगल लिया। नया उपजा हुआ बालक भूख प्यास से रोने लगा। शिवजी को उस बालक पर बड़ी दया उपजी। उन्होंने ऐसी कृपा की कि तुरन्त एक ब्राह्मण की स्त्री बालक के समीप पहुँची। उसके साथ भी एक बालक एक वर्ष की आयु का था। वह विधवा निर्धन स्त्री भिक्षाटन कर कालक्षेप करती थी। उसने आकर लड़का पड़ा हुआ देखा और बड़ा अचरजकर कहा कि यह किसका बालक है? कौन डाल गया है? कोई स्त्री पुरुष यहाँ दिखाई नहीं देता जिससे इस बालक का हाल पूछूँ। उचित है कि मैं इस बालक को उठाकर पुत्र के समान पालूँ। पर इसके कुल का हाल पूछे बिना इसका उठाना उचित नहीं है। ब्राह्मणी को ऐसी चिन्ता में देख शिवजी प्रसन्न हुये और आप भिक्षुकरूप से प्रकट हो स्त्री से कहा कि तुम कुछ संशय मत करो। इस बालक का पालन करो। इसके पालने से तुमको शीघ्र ही सब प्रकार का आनन्द और भोग प्राप्त होगा। स्त्री ने प्रसन्न होकर कहा तुम्हारी आज्ञा से मैं इसे पालती हूँ पर आशा रखती हूँ कि आप इसके जन्म और कर्म आदि का वृत्तान्त सुना दीजिये। मैं जानती हूँ कि तुम निस्सन्देह शिव हो। यह बालक पूर्वजन्म में तुम्हारा भक्त रहा है। कोई कर्म इससे करते नहीं बना। इससे इसकी यह गति हुई। यह सुन शिव स्त्री से अति प्रसन्न हुये और उसको अपना भक्त जान कहा कि यह विदर्भ देश के राजा सत्यरथ का पुत्र है। पूर्वजन्म के कर्म से इसने ऐसा दुःख पाया है। राजा शाल्व ने इसके पिता को मार डाला तब इसकी माता वन में भाग आई। सो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इस बालक के उत्पन्न होने के उपरान्त ग्राह ने पानी पीते उसे खा डाला। स्त्री ने आश्चर्य कर शिवजी से पूछा कि इस बालक के पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करो। क्यों इसको ऐसा दुःख प्राप्त हुआ? हमारा यह बालक और हम दरिद्र अवस्था में क्यों है? शिवरूपी ब्राह्मण बोले कि पूर्व जन्म में इसका पिता माण्डव्यदेश में जो दक्षिण में प्रसिद्ध है, वहाँ का राजा हुआ। वह अपनी प्रजा के पालने और नीति धर्म में प्रसिद्ध हुआ। वह शिवजी का बड़ा भक्त था। वह सदा प्रदोष व्रत करता। एक दिन राजा प्रदोष का व्रत किये हुये शिवपूजन कर रहा था कि इतने में नगर के बीच बड़ा शब्द हुआ। राजा तुरन्त सदाशिवजी की पूजन छोड़ चले। मन्त्री वहाँ से लौटा आता था। जिस शत्रु ने नगर में उपद्रव मचाया था, उसको भी पकड़े हुये साथ लाता था। सो मन्त्री ने सब वृत्तान्त कहा। राजा ने शत्रु को देखा और बहुत क्रोधकर उसका शिर काट डाला। उस अशुद्ध अवस्था में फिर भी शिवजी की पूजा छोड़ भोजन कर लिया। उसके पुत्र ने भी यही अधर्म किया और धर्म को भूल ही गया। सो राजा इस जन्म में विदर्भ देश का राजा होकर शाल्व के हाथ से मारा गया। यह उसी का पुत्र है जो तुम्हारे सम्मुख खड़ा है और रानी जिसको ग्राह ने खा लिया, उसका वृत्तान्त यह है कि वह पूर्वजन्म में भी राजा सत्यरथ की रानी थी। उसने अपनी सौत को धोखा देकर मार डाला। उसका फल उसको यह मिला कि उसको ग्राह ने खाया। तुम्हारे पुत्र का यह हाल है कि वह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था। इसने अपना जन्म दान लेने में बिताया। अब तुमको उचित है कि इन दोनों बालकों से भली भाँति शिवकी पूजा कराओ। यह कह शिव ने उस स्त्री को अपने मुख्य चिह्नों समेत दर्शन दिये, जिससे स्त्री ने अतिप्रसन्न हो गद्‌गदवाणी से स्तुति की। फिर शिव अन्तर्धान हो गये। स्त्री ने तुरन्त उस बालक को उठा लिया और अपने बालक सहित घर में आई। यह एक गाँव में जिसका नाम चक्र है, वहाँ रहने लगी। उसके दोनों बालक शाण्डिल्यमुनि से शिक्षा ले शिव की भक्ति करने लगे। वे दोनों प्रदोषव्रत रखते थे। इस तरह चार मास बीते। एक दिन दोनों मिलकर महानदी में स्नान कर शिवबाना किये हुये घर को लौटे आते थे कि शिव ने दोनों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को अपना भक्त जान कृपापूर्वक यह लीला रची कि मार्ग में उन्होंने धन का भरा एक घट पाया। घर में आकर अपनी माता से यह हाल कहा। ब्राह्मणी ने शिव का अति धन्यवाद किया। फिर दोनों शिव का व्रत करते रहे। जब एक वर्ष बीत गया तो शिव ने यह चरित्र किया कि एक दिन दोनों ने वन में गन्धर्व की कन्या देखी। ब्राह्मण के पुत्र ने उसके पास जाने से निषेध किया, पर राजा के पुत्र ने निकट जा वार्ता करने के उपरान्त उसके साथ अपना विवाह कर लिया। शिव ने ऐसी कृपा की कि उसने अपने कुल के राज्य को प्राप्त करके राजकाज किया। वही ब्राह्मणी राजा की माता होकर आनन्द से काल बिताने लगी। राजा का नाम धर्मगुप्त हुआ। ब्राह्मण के पुत्र का नाम शुचिव्रत था। दोनों ने शिव की बड़ी भक्ति की और सदा प्रसन्न रहे। यह शिव अवतार का चरित्र अति पवित्र और दोनों लोक में आनन्ददायक है। भिक्षुनाथ शिव अवतार के स्मरण से सर्व कष्ट नष्ट हो जाते हैं। बयासीवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

उन्चासवाँ अध्याय।

नरजरेश्वर अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम नरजरेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं जिसने उपमुनि ब्राह्मण का दुःख दूर किया। व्याघ्रपाद मुनि जो तप में प्रसिद्ध हैं, उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम उपमुनि रक्खा गया। वह सदा अपने मातुल के घर माता सहित रहता। भाग्यवश दरिद्रता ने आ घेरा। संयोग से एकदिन उपमुनि ने दूध पिया। उसके पीने से और अधिक दूध पीने की इच्छा हुई। उन्होंने हठ से बार-बार अपनी माता से दूध माँगा। सो दरिद्रता के कारण दूध का ठिकाना कहाँ था? उसने यव कूट पानी में घोल दूध के ओढ़र से उपमुनि को पिला दिया। उपमुनि ने उसे पीकर कहा कि यह तो दूध नहीं है। यह कहकर वह रोने और बार-बार अपनी माता से दूध माँगने लगा। निदान उसने दुःखी हो उपमुनि से कहा कि मैं तो अपने भाग्य से महाधनहीन हूँ। मैंने पूर्वजन्म में शिव के निमित्त कुछ दान नहीं

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दिया। जो देती तो इस जन्म में धनवान् होती। हम वन में रहते हैं, भोजन भली भाँति नहीं मिलता। धन्य-द्रव्य कहाँ हो ? धन बिन शिव कृपा नहीं मिलती। शिव पूजा बिन सिवाय दुःख के कभी आनन्द प्राप्त नहीं होता। यह सुन उपमुनि को पूर्व जन्म के संस्कार से बुद्धि उपजी। उन्होंने अपनी माता से कहा कि अब तुम कुछ खेद मत करो। मैं शिव का तप करता हूँ और शिव को प्रसन्न कर क्षीरसागर में वर माँग लूँगा। यह कह और माता की आज्ञा ले हिमगिरि में जा बड़ा तपकर वनफूलों से शिव का पूजन किया और पञ्चाक्षरी मन्त्र जपा। जब उपमुनि को तप करते बहुत-सा समय बीता और शिव प्रसन्न न हुये तथा वर देने के निमित्त न आये तो तीनों लोक उपमुनि के तप से जलने लगे। सो देवताओं की विनती के अनुकूल हम सबको लेकर शिव के पास गये और स्तुति के उपरान्त सब वृत्तान्त कहा। शिव हँसकर बोले कि तुम कुछ संशय मत करो। उपमुनि दुग्ध के निमित्त तप कर रहा है। सो अब हम उसको वर देंगे। तुम सब अपने-अपने स्थानों को चले जावो। देवताओं के चले जाने के उपरान्त शिवजी ने उपमुनि की परीक्षा लेने के निमित्त आप तो इन्द्ररूप और गिरिजा को शची और गणों को देवताओं का स्वरूप बना और नन्दी का ऐरावत रूप रच उपमुनि के समीप जाकर कहा कि वर माँगो। उपमुनि ने कहा कि हे इन्द्र ! तुमको हमारा प्रणाम है। हमको शिव के भजने की शक्ति कृपा करो। हम केवल शिव से वर माँगेंगे और किसी से वर माँगने की इच्छा नहीं। इन्द्र ने कहा कि हे मुनिपुत्र ! क्या तू हमको नहीं जानता और अन्य देवताओं के समान हमको विचारता है। मैं सब देवताओं का राजा हूँ। मुझको अप्रसन्न कर कभी किसी को आनन्द नहीं मिलता। मेरी पूजा कर जो मन में आवे, वह लेले। शिव निर्गुण देवताओं की गणना में नहीं। वह दीन और निर्बल हैं। वह तो दक्षप्रजापति के शाप से भूत हो गये हैं और महा अशुभ हैं। इससे उनका वचन सत्य नहीं होता वरन् उस समय से कोई शिवजी को नहीं पूजता। ऐसे मनुष्य से क्योंकर तुम्हारा काम निकलेगा। उपमुनि ने सुन कर बड़े क्रोध से उत्तर दिया कि हे इन्द्र ! तुम देवताओं के राजा होकर शिवजी की निन्दा मुख पर लाये, तुमको क्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हो गया है जो तुमने शिवजी को नहीं पहिचाना। शिवजी वह हैं जिनकी ब्रह्मा, विष्णु और सब देवता सेवा करते हैं। उनको वेद भी नेति-नेति कर वर्णन करते हैं। वेदान्ती उनको ब्रह्म के नाम से प्रसिद्ध करते हैं। सन्त विवाद छोड़ उनका भजन करते हैं। वे तीनों गुण से परे शुद्ध, पवित्र, परमात्मा, निर्गुण, सगुण और सबके स्वामी हैं। हे मूर्ख! तू उनको नहीं जानता जिनके समान दूसरा कोई नहीं है। मैंने तेरी जिह्वा से शिवजी की निन्दा सुनी, यह मुझ पर बड़ा पाप होगा। इसलिये मैं तुझे भी नष्ट करूँगा और आप भी मर जाऊँगा। यह कह और भस्म लेकर मन्त्र पढ़ इन्द्र पर चलाई और आप भी सब तरह से पवित्र हो चाहा कि अपने को मार डालूँ। यह देखकर शिवजी अति प्रसन्न हुये और नन्दी ने शिवजी की सैन समझ तुरन्त भस्मास्त्र पकड़ लिया जिससे अग्नि दूर हो गई। शिवजी ने पूर्व के समान अपना निजरूप धारा और इन्द्र के वह सब लक्षण गुप्त हो गये। जिस रूप का उपमुनि ध्यान करते थे, वही रूप सामने खड़ा हो गया। उस समय सब देवता उस स्थान पर आकर शिवजी की स्तुति करने लगे। आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और हर प्रकार से आनन्द मङ्गल हुआ। उपमुनि ने शिवजी को प्रणाम किया। शिवजी ने उपमुनि को निकट बुलाकर स्कन्द के समान अपने समीप बैठाया और अपना हाथ उपमुनि के शरीर पर फेर दिया। कृपादृष्टि से उपमुनि को अवलोकन कर कहा कि तुम हमारे दृढ़भक्त हो, हम तुमसे अति प्रसन्न हुये। गिरिजा तुम्हारी माता और हम तुम्हारे पिता हैं। तुम सदा युवा रहोगे। कोई तुमसे पाप न होगा। तुम पर मृत्यु का वश न चलेगा। तुमको दूध, दही, घी और शहद के बहुत से समुद्र मिलेंगे। तुमको सदा आनन्द रहेगा। तुम सदा बलवान् रहकर प्रसन्न रहोगे और हमारे भक्तों के शिरोमणि होगे। तुम्हारा कुल और गोत्र सब आनन्द में रहेगा। स्त्री और पुत्र सब हमारी भक्ति में लगे रहेंगे और पशुपति व्रत को पावोगे। तुम्हारा वचन अति स्पष्ट होगा। तुम बड़े वाचाल होगे। हम सदा तुम्हारे पास रहेंगे। तुमको सब कुछ मिलेगा। यह कह शिवजी अन्तर्धान हुये और उपमुनि भी अपने आश्रम को चले आये। जो यह चरित्र पढ़े और सुनेगा, वह आनन्द में रहेगा। तिरासीवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

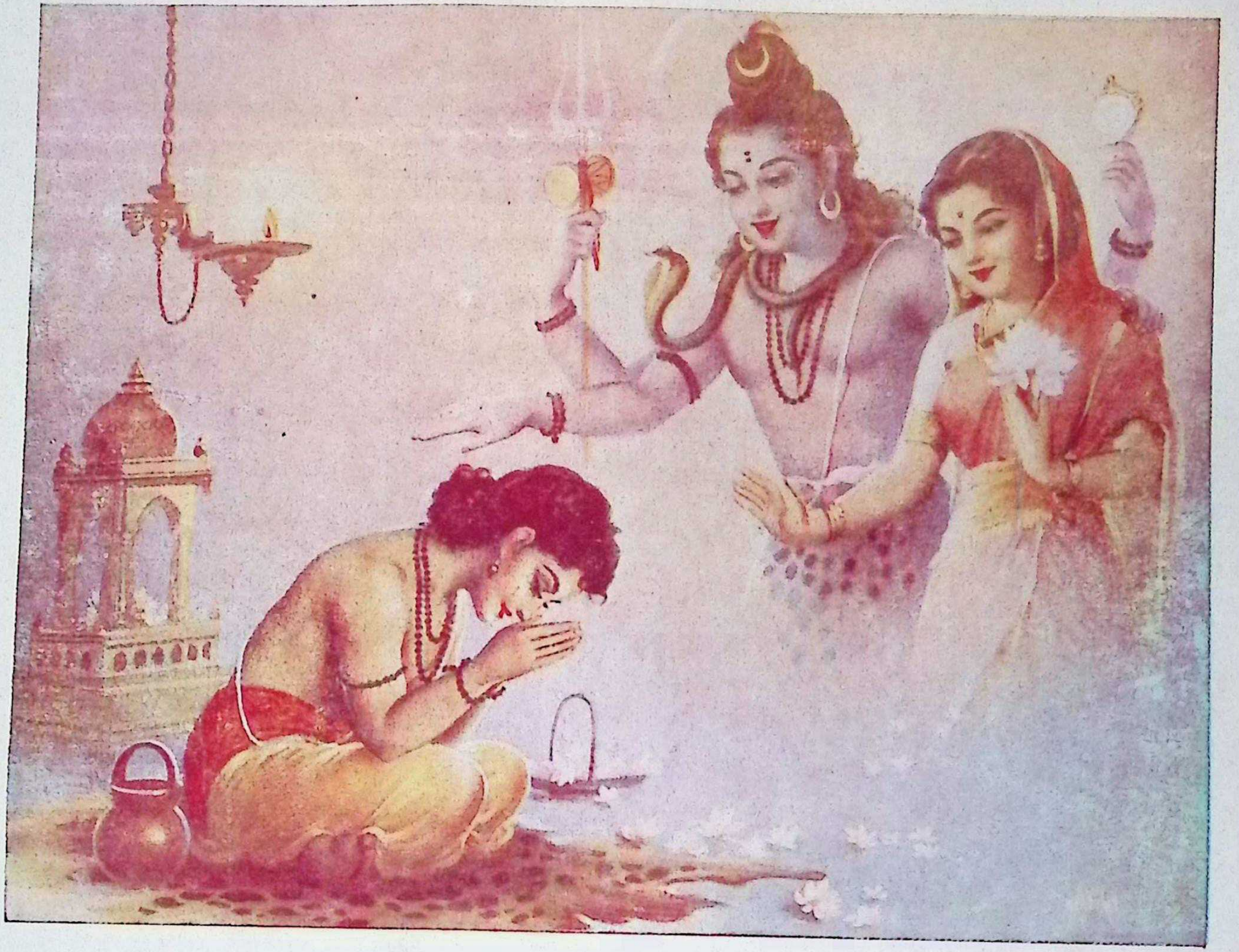

उप मुनि को शिव गिरिजा के दर्शन

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पचासवाँ अध्याय।

जटाधारी अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम जटाधारी अवतार का वर्णन करते हैं कि जिस तरह शिव ने गिरिजा को धोखा दिया। इस अवतार का वर्णन शिव के विवाह में विस्तार से हो चुका है। यहाँ केवल संक्षेप से इनका वर्णन होता है। जब गिरिजा तप के निमित्त माता-पिता की आज्ञा ले वन में गई, इस इच्छा से कि हमारे पति सदाशिव हों। सो गिरिजा के कठिन तप के कारण कई बेर शिव ने मुनीश्वरों को गिरिजा की परीक्षा के निमित्त भेजा, पर गिरिजा ने कुछ भी मुनीश्वरों से धोखा न खाया। वे अपने तप में दृढ़ रहीं। निदान शिव को भी गिरिजा के देखने की इच्छा उपजी। सो शिवजी जटाधारी ब्राह्मण का स्वरूप बना गिरिजा के पास गये। बहुत वार्ता और विवाद के उपरांत जब कुछ न चली तो शिवजी ने प्रसन्न होकर अपना मुख्य स्वरूप गिरिजा को दिखाकर कहा हे गिरिजा! तुम मुझे बहुत प्यारी और हमारी प्राचीन शक्ति हो। हमने परीक्षा के निमित्त सब काम किये हैं। हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं, वर माँगो। उत्तम है कि तुम हमारे साथ चलो और कैलास पर्वत को अपने चरणों से सुशोभित करो। गिरिजा ने लज्जा से शिर झुका और विचार कर कहा कि जो तुम प्रसन्न हो तो हमारे पति होकर हमारा विवाह अपने साथ करो। शिव ने कहा अच्छा यही होगा और अन्तर्धान हुये। चौरासीवें अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ।

इक्यावनवाँ अध्याय।

नर्तकनट अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! अब हम नर्तकनट अवतार का वर्णन करते हैं कि जैसे शिवजी ने नर्तकनट अर्थात् नाचने-गानेवाले का रूप धारण करके मैना और हिमाचल को धोखा दिया। सो वर देने के अनन्तर एक दिन शिवजी नाचने और गानेवाले का रूप धर मैना और हिमाचल के घर गये। उन्होंने उनको प्रसन्न कर भिक्षा के बदले गिरिजा को माँगा। वह पहिले तो क्रोध कर निकाले गये, पर जब हिमाचल और मैना ने जाना कि यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तो सदाशिव हैं तो गिरिजा का देना मान लिया। शिव ने बड़ी-बड़ी लीला कर गिरिजा को ब्याहा। पचासीवाँ अवतार पूर्ण हुआ।

द्विजावतार का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! जब मैना ने शिव को जाना कि यह सबसे श्रेष्ठ सर्वोपरि हैं, इनको कन्या देना उचित है। तब सब देवताओं ने परस्पर यह सम्मति की कि यह मैना और हिमाचल की बुद्धि दूर करनी चाहिये। इस विचार से पहिले वे हमारे पास, फिर हमारी आज्ञा से सदाशिव के पास गये और कहा जो हिमाचल तुमको सदाशिव समझ गिरिजा को देवेगा तो इसी शरीर से तुम्हारे लोक में चला जावेगा। फिर रत्न और अन्य अद्भुत वस्तु कहाँ से मिलेंगी? देवताओं को ऐसे जीने से मरना उत्तम है। आप कोई ऐसा उपाय कर जिससे उनकी वह दिव्य बुद्धि कि हम शिव को अपना जामाता बनाते हैं, जाती रहे। शिव ब्राह्मण बन वैष्णव स्वरूप धार हिमाचल के समीप गये और कहा कि तुम ऐसे राजा होकर अपनी कन्या साधु अवधूत को देते हो। यह बात तुमको उचित नहीं। यह साधु का वचन हिमाचल को इतना लगा कि उन्होंने विवाह का फेरना उत्तम समझा। फिर शिव ने यह चरित्र कर कैलास में पहुँचकर सप्तऋषियों का स्मरण किया। वे आये सो उनको हिमाचल के पास समझाने-बुझाने को भेजा और कहा कि वे दोनों फिर हमारे विवाह करने को नहीं मानते। तुम ऐसी युक्ति करो कि विवाह हो जावे। सो सप्तऋषि ने हिमाचल और मैना को बहुत समझा-बुझाकर शिव का विवाह करा दिया। हे नारद! ऐसी लीला शिव ने ब्राह्मण का अवतार धरकर की है। जो इस कथा को पढ़े-सुनेगा, वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा। छियासीवाँ अवतार का चरित्र पूर्ण हुआ।

बावनवाँ अध्याय।

अश्वत्थामा अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! द्रोणाचार्य जो ब्राह्मणों में बड़े विद्वान थे, उनको कौरवों ने अपना गुरु बनाया जिनसे उनको धनुर्विद्या प्राप्त हुई। फिर उन्होंने उन्हीं के लिये कठिन तप कर शिवजी को प्रसन्न किया। शिव ने द्रोणाचार्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के पास आकर कहा कि तुम्हारी बनाई हुई स्तुति सुनकर हम अति प्रसन्न हुये। जो चाहो, वर लो। द्रोणाचार्य ने कहा कि मुझको अपने अंश से एक पुत्र कृपा करो जो हमको कौरवों सहित आनन्द दे। वह सबको जीतकर बड़ा बलवान् हो। मौत उसके सामने न आवे। शिवजी ने यही वर दिया और अन्तर्धान हुये। द्रोणाचार्य ने अति प्रसन्नता से यह हाल अपनी स्त्री को सुनाया। वे दोनों शिव की भक्ति में दृढ़ रहे। निदान समय पाकर शिव ने बड़े पुत्र होकर अवतार लिया जिसका नाम अश्वत्थामा रक्खा गया। उसने द्रोणाचार्य की आज्ञा पा कौरवों का पक्ष किया। उसके भय से पाण्डव कुछ न कर सके। सो विष्णु की प्रेरणा से अर्जुन ने शिव का तप किया और शिव से पाशुपत अस्त्र पाया जिससे अर्जुन कौरवों पर प्रबल हुये। फिर भी अश्वत्थामा ने अपना इतना तेज दिखाया कि कोई कुछ न कर सका और सुगमता से पाण्डवों के पुत्रों का वध किया। निदान अर्जुन ने रथ पर चढ़ अश्वत्थामा का पीछा किया। अश्वत्थामा कुछ न डरा और मार्ग में खड़ा हो गया। उसने ब्रह्मास्त्र अर्जुन पर छोड़ा जिससे अर्जुन ने अति दुःखी हो कृष्ण से कहा कि हे विष्णो! यह क्या होता है? एक ज्वाला सबको जलाये हुये हमारे सामने चली आती है, इसको आप दूर करें। हम आपकी शरण में हैं। कृष्ण ने शिव का ध्यान कर जाना कि यह ब्रह्मास्त्र है। तो अर्जुन से कहा कि यह ब्रह्मास्त्र है, तुम्हारे नष्ट करने को अश्वत्थामा ने चलाया है। इसको कोई निवारण नहीं कर सकता। अब तुम तुरन्त शिव का ध्यान करो। जो अपना शस्त्र कि शिव ने प्रसन्न होकर तुमको दिया है, उससे इसको दूर करो और कोई युक्ति नहीं है। यह सुनकर अर्जुन ने शिव का ध्यान कर तुरन्त पशुपति अस्त्र छोड़ा। उससे ब्रह्मास्त्र दूर हो गया। अर्जुन को अत्यानन्द प्राप्त हुआ। यह देख अश्वत्थामा ने इस इच्छा से कि संसार में पाण्डवों का वंश न रहे और जो अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की स्त्री उत्तराकुँवरि के गर्भ था, उसके वध के निमित्त फिर अपना अस्त्र छोड़ा। सो उत्तरा अति विकल हो कृष्णजी की शरण में गई। कृष्ण ने ध्यान कर यह चरित्र जान सदाशिव की आज्ञापूर्वक अपना चक्र चलाया और उत्तरा के गर्भ की रक्षा की। कृष्ण सब पाण्डवों को लेकर अश्वत्थामा की शरण में गये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उन्होंने पाण्डवों और अश्वत्थामा में मित्रता और प्रीति करा दी जिससे उपद्रव शान्त हो गया। सब लोग आनन्द से रहने लगे। अश्वत्थामा ने पाण्डवों पर प्रसन्न हो बहुत वर दिये। यह शिव का अवतार अश्वत्थामा का चरित्र अति पवित्र संसार में आनन्द देता है वे सदा गङ्गा किनारे रहते हैं और सबकी दृष्टि से छिपे हैं। यह शिव अवतार कथा अति शुद्ध, निर्मल, सुनने और पढ़नेवालों को बड़ा फल देती है। इसके सुनने से सब काम पूरे होते हैं। सत्तासीवें अवतार का चरित्र समाप्त हुआ।

तिरपनवाँ अध्याय।

किरातेश्वर शिव अवतार का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! अब हम किरातेश्वर अवतार का वर्णन करते हैं। अर्थात् जिस तरह शिवजी ने किरात का अवतार धारण किया और अर्जुन को पशुपति अस्त्र बहुत वरदानों समेत कृपा किया। यह भी वर दिया कि तुमको कोई जीत न सकेगा और महाभारत के युद्ध में अर्जुन को जय दिलाई। इतना सुन नारद बोले कि हे पिता! आप कुछ विस्तार से अर्जुन का वृत्तान्त और किरातेश्वर शिवजी का वर्णन सुनावें। ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में सोमवंशी कुल में राजा ययाति हुये जिनके पाँच पुत्र उपजे। वनमें सबसे छोटा लड़का पुरु जो रानी शर्मिष्ठा से उपजा राज्य पा धर्मपूर्वक प्रजा पालन करता रहा। उसके कुल में राजा शान्तनु हुआ जिसके समान दूसरा राजा न हुआ। उसकी दो स्त्री गङ्गा और सत्यवती थीं। जो पुत्र कि गङ्गा से उपजा, उसका नाम भीष्म था। वह बड़ा तपस्वी और इन्द्रियजित् था। सत्यवती दूसरी रानी से चित्राङ्गद और विचित्रवीर्य उपजे। जो कि चित्राङ्गद को समनानी गन्धर्व ने मार डाला, इससे विचित्रवीर्य को राज्य मिला। उनकी दो रानियाँ थीं। राजा उन्हीं के साथ रातदिन भोग विलास करता जिससे राजा को राजयक्ष्मा का रोग हो गया। यद्यपि सब उपाय किये गये पर राजा मर गया। निदान राजा शान्तनु का कुल नष्ट हो गया। यह देख सत्यवती रानी ने व्यासजी का स्मरण किया और व्यासजी के द्वारा दोनों रानियों से सन्तान उपजाये। बड़ी रानी से धृतराष्ट्र उपजे जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अन्धे थे और छोटी रानी से पाराडु हुये। तीसरी बेर राजा की दासी व्यास के समीप गई। उससे विदुरनाम विष्णु के बड़े भक्त उपजे। इसी प्रकार सत्यवती तीनों पुत्रों को देख भीष्म समेत अति प्रसन्न हुई। वे तीनों पुत्र बड़े प्रतापवान् हुये जिन्होंने संसार में बहुत धर्म चलाये और राजा सुबल की कन्या गान्धारी के साथ धृतराष्ट्र का विवाह हुआ। राजा शूरसेन की लड़की कुन्ती पाराडु को ब्याही गई जो वसुदेव की बहिन थी। पाराडु की दूसरी रानी माद्री मद्रदेश के राजा की पुत्री थी। धृतराष्ट्र के दुर्योधनादि सौ पुत्र उपजे और पाराडु से पाँच पुत्र। उनके नाम हैं–युधिष्ठिर, भीम तथा अर्जुन तो कुन्ती से और नकुल तथा सहदेव माद्री से। विदुर के साथ पारशवी राजा देवक की कन्या ब्याही गई जिससे बड़े धर्मवान् पुत्र उपजे। यह सब लड़के परस्पर खेलते पर भीम अथाह बल के कारण उपद्रव मचाता। यह बात दुर्योधन को भली न लगती। वह इस उपाय में रहा करता था कि भीम को किसी प्रकार मारें। निदान दुर्योधन की कोई युक्ति न चली और कौरव पाराडव में बड़ा वैर हो गया। मन्त्री के उपदेश से धृतराष्ट्र ने पाराडवों को वाराणसी में लाक्षाभवन के भीतर जलाने को भेज दिया। सो वे शिवजी की कृपा और विदुर की सम्मति से बचे रहे। फिर दक्षिण देश में जाकर मार्ग में हिडम्ब दैत्य को भीम ने मारा और व्यास के उपदेश से चक्रपुर में स्थित हुये। वहाँ भीम ने एक दानव को वधकर कर एक ब्राह्मण का काज सँवारा। इसी स्थान पर द्रौपदी का स्वयंवर सुन कुन्ती सहित वहाँ गये और मत्स्य वेधने के उपरान्त द्रौपदी से विवाह किया जहाँ कृष्ण से भी भेंट हुई। यह चरित्र पाराडवों का सुन धृतराष्ट्र ने फिर उनको अति प्रीति प्रकट कर बुला लिया और आधा राज्य पाराडवों को दे खाराडवप्रस्थ में रहने की आज्ञा दी कि कुछ विवाद और झगड़ा न होवे। सो पाराडव खाराडवप्रस्थ में रहे। राजा युधिष्ठिर ने और बहुत देश जीते। उन्होंने धृतराष्ट्र की मति से प्रजा पालन कर राजसूय यज्ञ किया। फिर अर्जुन तीर्थाटन के लिये संसार भर में भ्रमण कर द्वारका में गये और कृष्ण की अनुमति से सुभद्रा का हरण करके अपने साथ ब्याह किया जिनसे अभिमन्यु उपजे। अब दूसरे प्रकार हम अर्जुन बखान के बल का बखान करते हैं कि पूर्व समय में श्वेतकी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाम महाराजा शिवजी का बड़ा भक्त हुआ। शिवजी ने दुर्वासा से कहा कि तुम जाकर श्वेतकी को यज्ञ करा दो। सो दुर्वासा ने यज्ञ कराया और बारह वर्ष तक बराबर घृत की धारा यज्ञ की अग्नि में पड़ती रही। इससे अग्नि अति तृप्त हो अजीर्णता से निस्तेज हो गया। उसने हमारे पास आकर कहा कि मैं अति विकल हूँ। सो अर्जुन और कृष्ण ने हमारी आज्ञा से अग्नि को शरण में ले उनको खाण्डव वन भली भाँति जलाने दिया। उस समय मयदानव को जो उसी वन में रहता था, कृष्ण की आज्ञा से अर्जुन ने भाग जाने दिया। सो मय ने एक वाटिका पाण्डवों को ऐसी बनाई कि जिसमें जल पृथ्वी आदि कुछ न भासता था। उस स्थान पर दुर्योधन की बुद्धि ने कुछ काम न किया। सब लोगों के हँसने से दुर्योधन अतिलज्जित हो गया और पुराने वैर को फिर उठा जुवे के द्वारा पाण्डवों से सब धन और राज्य ले लिया। फिर द्रौपदी को भी जुवे में जीता और दुश्शासन दुर्योधन के भाई ने द्रौपदी के पट खींचे पर दुर्वासा के आशीर्वाद से इतने वस्त्र बढ़ गये कि दुश्शासन दीन होकर खड़ा रह गया और द्रौपदी की लाज रह गई। निदान पाण्डवों को बारह वर्ष के लिये राज्य से च्युत होकर अपने राज्य से निकल जाना पड़ा। जो कि सूर्य ने एक बर्तन पाण्डवों को दिया था, उसी से वह कालक्षेप करते। इसी प्रकार पाण्डव द्रौपदी सहित देशाटन करते रहे।

चौवनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि पाण्डवों ने द्वैतवन में जाकर नाना प्रकार की आपदायें उठाई। उनके भोजन के निमित्त वही सूर्य का दिया हुआ पात्र था। उसमें गुण था कि जब तक द्रौपदी भोजन न कर ले तब तक उसके भीतर से भोजन कम न होता। इसी प्रकार समय बीत गया, दुर्योधन ने इस वृत्तान्त को न जाना। सो उसकी यह इच्छा हुई कि पाण्डवों को किसी मुनि आदि से शाप दिलाना चाहिये। सो दुर्वासा की बड़ी सेवा कर वर लेने की आज्ञा पाई। उसने कहा कि मैं पाण्डवों का नाश चाहता हूँ। दुर्वासा ने उसको बहुत धिक्कार दिये और कहा कि यह बात कभी न हो सकेगी। उनकी रक्षा करनेवाले आप शिवजी हैं। विष्णु ने जो अवतार धारा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है, वे शिवजी की आज्ञा से रात-दिन उनकी रक्षा करते हैं। पर अच्छा हम तुमसे प्रसन्न हैं, कुछ उपाय करेंगे। यह कह दुर्वासा पाण्डवों के समीप गये। उनके साथ दश हजार शिष्य थे। दुर्वासा उस समय गये जब द्रौपदी भोजन कर चुकी थी। दुर्वासा ने पूजन पाकर भोजन माँगा और अपने शिष्यों समेत स्नान करने को गये। तब पाण्डवों को अति चिन्ता उपजी। उन्होंने चाहा कि हम सब मर जावें क्योंकि जब दुर्वासा लौटकर भोजन न पावेगा तो हम सबको बड़ा भारी शाप देवेगा। यह विचार कर ही रहे थे कि आकाशवाणी हुई कि तुम कुछ शोच मत करो। कृष्णजी का स्मरण करो। यह सुन द्रौपदी सहित सबने कृष्ण का स्मरण किया। सो कृष्ण ने तुरन्त आकर सूर्य का दिया वही बर्तन माँगा और एक शाक का पत्र बर्तन में देखकर उसको खाया। उसके खाते ही दुर्वासा, सब मुनि और शिष्य तृप्त होकर अपने स्थान को ऊपर ही ऊपर चले गये। यह सुन कर पाण्डव अति प्रसन्न हो कृष्ण की स्तुति करने लगे। कृष्ण ने कहा कि हम मथुरा को छोड़ द्वारका को गये। वहाँ सबको बसाया और शत्रुओं पर विजय पाने के लिये उपमुनि के समीप गये। उनके उपदेश से बदरिकाश्रम में जाकर सात मास पर्यन्त शिवजी का तप किया। शिवजी ने प्रसन्न हो हमको वर दिया जिससे द्वारका पहुँच हमने शत्रुओं को जीता। इससे तुमको भी हम कहते हैं कि तुम शिवजी की सेवा करो। शिव बिन तुम्हारा काम न निकलेगा। यह कह अन्तर्यामी श्रीकृष्ण भगवान् अन्तर्धान हुये और पाण्डवों ने एक भील दुर्योधन के पास उनके आचरण की परीक्षा के निमित्त भेजा। उसने वहाँ का सब हाल देख कर पाण्डवों से कहा। पाण्डवों दुर्योधन का प्रताप और धन देख दुःखी हुये। इतने में व्यासजी आये जो मस्तक में त्रिपुण्ड्र लगाये भस्म, रुद्राक्ष धारण किये, जटाजूट रखाये, मुख से शिव-शिव कहते थे। ऐसा रूप व्यास का देख पाण्डवों ने उठकर प्रणाम किया और आदर सहित बैठाकर हर प्रकार उनकी पूजा की। कहा कि हमने वन में आकर बड़ा दुःख पाया। तुम हमको भूल गये। यह तुमने बड़ा अनुग्रह किया कि हमको दर्शन दिये। अब हमारे कष्ट निवृत्त हो जावेंगे। हमको आप उबार लें। हम फिर राज्य पावें, वैसा ही आप हमको उपदेश करें।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व्यासजी बोले कि तुम धन्य हो सत्य और धर्म को ऐसे समय में भी नहीं छोड़ते। यद्यपि यह बात हमको उचित है कि तुम दोनों ओर के मनुष्यों को हम एकसा समझें पर जोकि वे बहुत अधर्मी और तुम धर्मिष्ठ हो, इसलिये हम तुम्हारे पक्ष पर हैं। तुम पर शिवजी अति प्रसन्न होंगे और हर प्रकार तुम्हारा कष्ट नष्ट करेंगे। वे सबके स्वामी हैं और सब देवता तथा मुनि उन्हीं की सेवा करते हैं। वे अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सकते। वेद और पुराण का यह वचन है कि शिवजी शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। इससे हम तुमको यह उपदेश करते हैं कि शिवजी की सेवा करो। वे तुमको अवश्य जय देंगे। पाण्डवों ने कहा कि हम सब मिलकर शिवजी की पूजा करें या हममें से एक मनुष्य करे। तब व्यासजी ने शिवजी का ध्यान कर शोच के कहा कि नहीं केवल अर्जुन पूजा किया करे। फिर व्यासजी ने शिवार्चन की सब विधि उनको बता दी और कहा कि क्षत्रिय को पहिले इन्द्र की सेवा उचित है। इससे तुम पहले इन्द्र को प्रसन्न कर फिर शिवजी के मन्त्र को धारण करो। तुम इन्द्रकील जो गङ्गा के तट पर हैं, वहाँ जाकर तप करो। क्षत्रिय धर्म के अनुकूल अपने शस्त्र अपने साथ लेते जावो। जो कोई शत्रु आवे तो उसका वध करना। यह कहा और इन्द्र का मन्त्र अर्जुन को दिया। फिर पार्थिव पूजा की युक्ति सिखाई और भी शिव पूजा की रीतियाँ बताईं। दृष्टिबन्ध होने की विद्या की शिक्षा दी। फिर अपना हाथ अर्जुन के शरीर में फेर दिया और बहुत आशीर्वाद दिये। फिर अर्जुन के सर्वाङ्ग में भस्म लगा दी। ऐसी कृपा कर व्यास अन्तर्धान हो गये और पाण्डव कुन्ती माता और द्रौपदी सहित शिवजी के प्रेम में डूब गये।

पचपनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि व्यासजी के जाने के पीछे सब भाइयों ने अर्जुन को अति तेजस्वी देखा। सबको निश्चय हुआ कि हमारे संकट कट जायेंगे। फिर सब मनुष्यों ने आशिष देकर अर्जुन को तप के लिये भेजा। अर्जुन सबको प्रणाम करते शुभ नक्षत्र देखते हुये चले और इन्द्रकील के निकट जहाँ गङ्गाजी बहती हैं, पहुँचकर अशोकवन में विराजमान हुये। वहाँ वेदी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बना तेजस्वरूप धारकर पहिले गुरु की स्तुति की। उसके पीछे आसन पर विराजमान हो पञ्चसूत्र पार्थिव विधिपूर्वक बनाने लगे। फिर पार्थिव-पूजन के मन्त्र का जप किया। इसी प्रकार तीनों समय अर्थात् प्रातःकाल, मध्याह्न और सायंकाल पार्थिवपूजन करते थे। पहिले दिन उन्होंने इन्द्र की पूजा की कि शिवजी के पूजन में कुछ विघ्न न पड़े। फिर शिवजी का ऐसा ध्यान किया कि अर्जुन के शिर से अग्नि निकली जिनसे सब वन प्रकाशित हुआ। उस वन में इन्द्र के बहुत से सेवक रहते थे। उन्होंने इन्द्र से जाकर प्रार्थना की कि नहीं मालूम कौन-सा मनुष्य अर्थात् तपस्वीश्वर जप कर रहा है, जिस कारण हम सब जलने से बच गये। इन्द्र ने ध्यान करके यह विचारा कि यह हमारे पुत्र अर्जुन के कार्य हैं। यह विचार कर इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ और बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारकर हाथों में लाठी लेकर अर्जुन के निकट जा खड़े हो गये। अर्जुन ने ब्राह्मण को देखकर उसकी हर प्रकार से पूजा और सेवा की। ब्राह्मण ने पूछा कि तुम यह तप किस निमित्त करते हो। अर्जुन ने सब वृत्तान्त कह सुनाया। इन्द्र ने कहा कि तुम ऐसा तप निष्फल करते हो। तुमको ऐसा उचित नहीं क्योंकि संसार के सुख थोड़े दिन रहते हैं। केवल मुक्ति का विचार रखना चाहिये। सो मुक्ति देना इन्द्र के अधीन नहीं। इस कारण यह तुम्हारा तप वृथा है। जो मनुष्य मुक्ति देनेवाला है, उसी की सेवा करो। अर्जुन ने कहा कि हे ब्राह्मण! आप अपने घर सिधारिये। आपको इन बातों से क्या प्रयोजन है? हम व्यासजी की आज्ञानुसार सर्वकार्य करेंगे। ऐसी दृढ़ता अर्जुन की देखकर इन्द्र को पुत्र की अति प्रीति उपजी और अपने मुख्य रूप को धारण करके अर्जुन को दर्शन दिये और कहा कि हमने ब्राह्मण बनकर तुम्हारी परीक्षा ली। अब तुमको कुछ खेद न होगा। दुर्योधन जो तुम्हारा शत्रु है, वह निस्सन्देह जीतने के योग्य नहीं क्योंकि उसके सहायक भीष्म, द्रोण और कर्ण आदि हैं। जिनको हम नहीं जीत सकते, उनको तीनों लोक में कोई नहीं जीत सकता। तीनों लोक में उनके समान कोई बलवान् नहीं। इस कारण तुमको उचित है कि शिवपूजन करो। वह मुक्ति-भक्ति सब देते हैं। उन्हीं की प्रसन्नता से हम, विष्णुजी और ब्रह्माजी ऐसे-ऐसे पदों को प्राप्त हुये हैं। आज से हमारे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन्त्र का त्याग करके शिवजी के मन्त्र को जपो और पार्थिवपूजन करके शिवजी का ध्यान करो। तुम्हारी पूजा में कोई विघ्न न उत्पन्न होगा। शिवजी वरदान देकर तुमको सुख देंगे। यह कह कर और आशीर्वाद देकर उन्होंने अर्जुन के शरीर को छुवा और अपने लोक को चले गये। सो अर्जुन ने स्नान और न्याय करके शिवजी का ध्यान किया। फिर पार्थिवपूजन करके एक पाँव से सूर्य के सम्मुख होकर शिवमन्त्र जपा जिस प्रकार व्यासजी ने उपदेश किया था, उसी प्रकार किया, जिससे सर्व मुनीश्वर आश्चर्य करते थे। फिर मुनीश्वरों ने कैलास पर्वत पर जाकर श्रीसदाशिवजी से प्रार्थना की कि अर्जुन आपका जप-तप कर रहा है हमारी अभिलाषा है कि आप वहाँ जाकर अर्जुन को वर देवें। यह श्रवण कर शिवजी प्रसन्न हुये और मुसकराकर कहा कि तुम सब अपने-अपने स्थान को जावो। हम अर्जुन का कार्य सिद्ध करेंगे। यह सुनकर सब देवता अपने-अपने स्थान पर सिधारे।

छप्पनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि शिवजी ने सब देवता और मुनीश्वरों को बिदा करके इच्छा की अर्जुन के निकट जाकर वर देवें। परन्तु उस समय यह चरित्र हुआ कि दुर्योधन ने अर्जुन को तप करते सुना कि वह राज्य की वृद्धि के निमित्त तप करता है। इस हेतु मूक नाम एक दैत्य को अर्जुन के मार डालने के लिए भेजा। दैत्य भैंस का शरीर धरकर तपःस्थल में आया। अर्जुन ने दूर ही से उसको देखा कि वह अनेक प्रकार के उपद्रव करता मेरी ओर चला आता है। उसने विचारा कि यह निश्चय मेरा शत्रु है। इसे दुर्योधन ने भेजा होगा। इस कारण कि जिसको देखकर अपने हृदय में बुराई आवे, उसको वैरी जानना चाहिये और जिसके देखने से अपने मन में प्रसन्नता प्राप्त हो, उसको अपना मित्र जानना चाहिये। यह बुद्धिमानों ने शत्रु और मित्र की पहिचान रक्खी है। यह विचार कर अपना धनुष और बाण लिया उसी समय शिवजी भी भीलपति का शरीर धारण करके अपने गणों समेत अर्जुन की परीक्षा लेने और वरदान देने चले। उनके काँधे पर तरकस था जो बाणों से भरा हुआ था हाथों में धनुष बाण लिये हुये थे तथा लुञ्ज

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और बाँधे हुये थे। निदान वे सब वस्त्र वीरों के धारण किये थे। दैत्य ने यह अभिलाषा की थी कि अर्जुन के सम्मुख होवें पर भीलरूप शिव ने अपना बाण उसकी पूँछ पर मारा जो दैत्य के मुख से बाहर निकल गया और वह मर गया। अर्जुन ने भी अपना बाण चलाया पर जब दैत्य को पृथ्वी पर गिरते देखा तो विचारा कि वह हमारे ही बाण से मरा है। इसलिये अपने बाण के लेने के निमित्त अर्जुन शिव-शिव कहते आये। उधर से शिव का गण अपने स्वामी का बाण लेने आया। अर्जुन ने कहा कि हमने मारा है, हमारा वह बाण है। गण ने कहा कि नहीं, हमारे स्वामी भीलपति ने यह राक्षस मारा है। इसमें बड़ा विवाद हुआ। अर्जुन ने तुरन्त ही बाण उठा लिया। गण ने कहा कि तुम क्यों ऐसा लोभ करते हो। यह बाण तुम्हारा नहीं है। तुम क्यों तपस्वियों का रूप धारकर ऐसा छल करते हो? अर्जुन ने कहा कि हे मूर्ख! तू क्या बकता है? यह हमारा बाण मुख्य चिह्नों सहित है, देख ले तब गण ने कहा कि हे मूर्ख! तू तपस्वी नहीं, क्योंकि जो तप करता है, वह असत्य नहीं बोलता। तुम हमको अकेले न जानना। हमारे साथ बहुत से गण हैं। हमारा स्वामी महाबलवान् राजा है और उसी का यह बाण है। यह तुम्हारे पास न रहेगा। जो मनुष्य चोर, झूठा, अहंकारी, छली, और कपटी होता है, उससे तप नहीं हो सकता। इससे हमारा बाण दे दो। क्यों पराया दोष अपने शिर पर लेते हो। हमारे स्वामी ने तुम्हारे प्राण बचाने के लिये तुम्हारे शत्रु को मार डाला और तुम उनकी भलाई को भूल कर उनका बाण नहीं देते। जो तुम्हारी यही अभिलाषा है कि यह बाण मुझे मिल जावे तो चलकर हमारे स्वामी से ले लो, वह ऐसे बाण दे दिया करते हैं। अर्जुन ने ऐसे कठिन बचन सुनकर शिवजी का ध्यान कर क्रोध करके कहा कि हे मूर्ख! तू अहंकारी है जो ऐसे कठोर वचन हमें कहता। जैसी तेरी जाति और कुल है, उसी के अनुसार तू बात करता है। हम राजा हैं और तू चोर है। इसी प्रकार तेरा स्वामी भी होगा। हम क्यों तुझसे या तेरे स्वामी से बाण माँगें? उचित है कि तू या तेरा स्वामी हमसे माँगे या युद्ध कर लेवे। जो जीतेगा, उसी का बाण हो। तुम यहाँ क्यों ठहरे हो? तुरन्त ही जावो और अपने स्वामी को बुला लावो। हम शिवजी के आश्रय पर बैठे हैं, निर्भय हैं। वह गण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आश्चर्यवान् होकर शिवजी के निकट आया और कहा कि एक तपस्वी बाण लेकर ऐसी-ऐसी बातें करता है। शिवजी की इच्छा हुई कि अर्जुन के तेज और शक्ति को देखें, इसलिये अपने गणों समेत अर्जुन के निकट आये।

सत्तावनवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अर्जुन ने शिवजी की अनन्त सेना देखकर कुछ भी खेद न किया और अपना धनुर्बाण लेकर उनके सम्मुख हुआ। शिव किरातरूप ने संसारी मनुष्यों के सदृश प्रथम दूत अर्जुन के निकट भेजा। उन्होंने कहा कि तपस्वी से कहो कि हमारी सेना भरपूर अपनी आँख से देखे और हमारा बाण देकर तुरन्त ही यहाँ से चला जावे वरन् वह मारा जावेगा ओर उनकी स्त्री रोती फिरेगी। यह समाचार सुनकर अर्जुन ने कुछ भी भय न किया और कहा कि हे दूत! अपने स्वामी से जाकर कह दे कि जो हम डरकर अपना बाण तुझे दे दें तो हमारे कुल में बट्टा लग जायगा। चाहे स्त्री अथवा भाई सब दुःखी हो जावें पर हम बाण न देंगे। क्या शेर सियार को देखकर डर जाते हैं या राजा वन के मनुष्यों को देखकर भयवान् हो जाते हैं। यह सुनकर दूत ने वहाँ से चलकर किरात के पास जा उनसे सब वृत्तान्त कहा। किरात अपनी सेना सहित युद्ध करने को उद्यत हुआ। उसने अर्जुन के निकट पहुँचकर अपना शङ्ख बजाया। अर्जुन शिवजी का ध्यान कर उनके साथ लड़ाई करने लगा। गणों ने अपने स्वामी की आज्ञानुसार इतने बाणों की वर्षा की कि अर्जुन महादुःखी हो श्रीसदाशिवजी का ध्यान करने लगे और सब बाण काटकर आप इतने बाण किरात की सेना में वर्षाये कि वह सब भाग गये। केवल किरात शिव अवतार खड़े रहे। फिर दोनों ने भलीभाँति हर प्रकार का युद्ध किया और दोनों ने उत्तमोत्तम बाण चलाये। किरात तो दया करके बाण मारते थे पर अर्जुन अज्ञान अवस्था में तीर चलाता था। किरात अवतार ने अर्जुन के सब अस्त्र-शस्त्र काट डाले। अन्त में दोनों मल्लयुद्ध करने लगे जिससे सर्व सृष्टि में हाहाकर मच गया। सब देवता दुःखी हुए और पृथ्वी काँप उठी। किरात अर्जुन को पकड़ कर आकाश की ओर ले गये। अर्जुन वहाँ भी न हारे और बहुत लड़े। उन्होंने किरात के दोनों पाँव पकड़ कर उनको चारों ओर घुमाया। निदान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

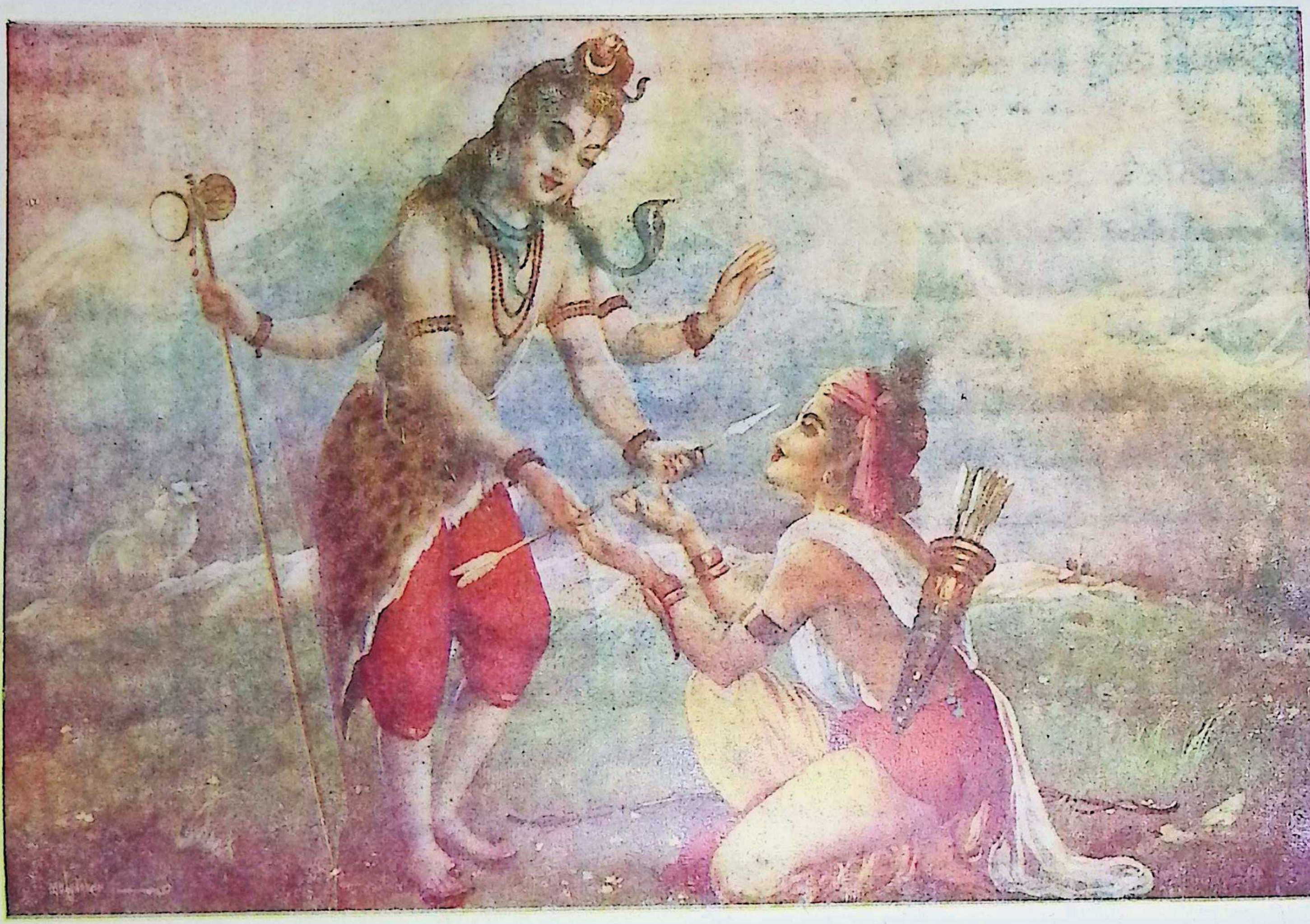

भगवान शंकर का अर्जुन को पाशुपतास्त्र देना

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किरातनाथ ने मुसकराकर अपने भक्त के वश हो अपना उत्तमोत्तम स्वरूप धार उसको दर्शन दिया जिसके देखने से अर्जुन को प्रसन्नता हुई और जिस रूप का अर्जुन नित्य ध्यान करते थे, वही रूप आगे खड़ा देखा। उन्होंने लज्जित होकर पश्चात्ताप किया। फिर प्रणाम करके स्तुति की और कहा कि हमारे सब पाप क्षमा कीजिये। वे शिवजी के चरणों पर गिर पड़े। शिवजी ने अर्जुन को पृथ्वी पर से उठाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता न करो। तुम हमारे बड़े भक्त हो हमने तुम्हारी परीक्षा करने के निमित्त ऐसा चरित्र किया और तुमसे युद्ध करके तुम्हारी शक्ति देखी। इस युद्ध से तुम्हारा बड़ा नाम होगा। अब जो कुछ चाहते हो, वह हमसे माँगो? अर्जुन ने शिवजी की बड़ी स्तुति की और कहा कि हम क्या माँगे? आप तो अन्तर्यामी हैं, सब कुछ जानते हैं। पर आपकी आज्ञानुसार यह माँगता हूँ कि मुझे दोनों लोक की ऋद्धि-सिद्धि कृपा करके दीजिये। यह कह कर अर्जुन हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। शिवजी ने अपना पशुपति अस्त्र अर्जुन को दिया और कहा अब तुमको कुछ खेद न होगा। हमने तुमको अपना भक्त जानकर यह शस्त्र दिया है। तुम किसी से न हारोगे और सब शत्रुओं को जीतोगे। हम कृष्णजी से कह देंगे। वे तुम्हारी रक्षा करेंगे। वे हमारे अंश और बड़े भक्त हैं। तुम अपने भाइयों सहित राज्य करो। यह कह कर उन्होंने अर्जुन के शरीर पर अपना हाथ फेर दिया और कहा कि जब तुमको क्लेश होगा, तब हमारा स्मरण करना। हम सब सङ्कट काट देंगे। फिर शिवजी अन्तर्धान हुये। अर्जुन भी प्रसन्नतापूर्वक पशुपति अस्त्र लेकर अपने स्थान में आये और भाइयों से सब वृत्तान्त कह कर सुख दिया। यह सुनकर श्रीकृष्णजी वहाँ आये और कहा कि जैसा हम पहले कहते हैं, वैसा ही अब भी कहते हैं कि शिवजी की सेवा किया करो। यह कह श्रीकृष्णजी द्वारका को सिधारे और पाण्डव सुखी रहे। जब बारह दिन हुये, तब पाण्डवों ने अपने नगर में जाकर शत्रुओं को जीत लिया। कौरव मारे गये और युधिष्ठिर राजा हुये। जो मनुष्य इस किरातेश्वर शिव अवतार का चरित्र पढ़े वा सुनेगा, वह अपना मनोरथ पाकर शिवलोक में जावेगा।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अट्ठावनवाँ अध्याय ।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन करते हैं। अर्थात् वह शिवजी के बारह अवतार जो लीला कर फिर ज्योतिर्लिङ्ग हो गये । वह अपने भक्तों को बड़ा सुख देनेवाले हैं जिनके दर्शन करने और पूजने से मनुष्य निष्पाप हो जाता है । प्रातःकाल उनके नाम लेने से सुख प्राप्त होता है और कोई पाप नहीं रहने पाता । यह अवतार भक्तों के निमित्त पृथ्वी पर हुये थे । फिर उन अवतारों का नाम ज्योतिर्लिङ्ग हुआ । सोमनाथ १ मल्लिकार्जुन २ महाकाल ३ ॐकारनाथ ४ केदारनाथ ५ भीमशङ्कर ६ विश्वेश्वर ७ त्र्यम्बक ८ बैजनाथ ९ नागेश्वर १० रामेश्वर ११ और घुस्मेश्वर १२ इन बारहों अवतारों की अनन्त महिमा है। हम इन बारहों अवतारों की कथा भिन्न-भिन्न वर्णन करते हैं । प्रथम सोमनाथ सोराष्ट्र नगर में रहते हैं । उनको चन्द्रमा ने दक्षप्रजापति से शाप पाकर जब उनका प्रकाश जाता रहा था, स्थापित किया था । शिवजी लिङ्गरूप धारकर उस स्थान पर स्थित हुये । उनकी सेवा के दुःख और शोक स्वप्न में भी नहीं आते । वहाँ पर चन्द्रकुण्ड है जो सर्वपापों को नष्ट कर देता है। दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीशैल पर विराजमान हैं । वहाँ शिवजी अपने पुत्र स्कन्द के लिये गये और उस स्थान पर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये। जिनके देखने पूजने और सेवने से नाना प्रकार के सुख मिलते हैं तथा मुक्ति प्राप्त होती है । तीसरे महाकाल उज्जयिनी में विराजमान हैं । उन्होंने दूषण दैत्य को जलाकर अपने भक्तों का पालन किया और उसी स्थान पर ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये । उनके दर्शन करने से दोनों लोक में मनुष्य आनन्द से रहता है । उसको कभी शोक नहीं होता । चौथे ओंकारनाथ विन्ध्याचल पर्वत पर विराजमान हैं जिन्होंने विन्धु का दुःख नाश किया और दोरूप धारणकर उसी पर्वत पर स्थित हुये । वह भुक्ति-मुक्ति दोनों देते हैं। उनके दर्शन से अत्यन्त दोष नष्ट हो जाते हैं। उन दोनों अवतारों को प्रणवस्थल, प्रणवेश, पार्थिव और परमेश्वर भी कहते हैं । ये ज्योतिर्लिङ्ग भक्त के कार्य पूर्ण करने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में प्रसिद्ध हैं। पाँचवें केदारेश्वर जो नरनारायण हैं और भक्तों के कार्य सिद्ध करते हैं। वे हिमाचल पर्वत पर केदारस्थान में स्थित हैं जिनके दर्शन से अपवित्र भी पवित्र हो जाते हैं। यह भरतखण्ड के स्वामी हैं जिनकी सेवा से संसारी मनुष्यों को सुख मिलता है। छठवें भीमशङ्कर जिन्होंने भक्त के निमित्त भीम को मार डाला और ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थित हुये। सातवें विश्वेश्वर जो काशी में विराजमान हैं और भुक्ति-मुक्ति सब कुछ देते हैं। जो उनकी भक्ति करते हैं, वे सुखी रहते हैं। उनके पूजने और देखने से परमपद प्राप्त होता है। आठवें त्र्यम्बक जिन्होंने गौतम के लिये अवतार लिया और गौतम के पाप नष्ट करने के निमित्त गौतमी नदी के किनारे ज्योतिर्लिङ्ग होकर विराजमान हैं जिनके दर्शन से सब पाप नाश हो जाते हैं तथा तीनों लोकों में सुख प्राप्त होता है। नवें वैद्यनाथ अथवा बैजनाथ चिताभूमि में विराजमान हैं। उनकी अनन्त महिमा है जिनके दर्शन करने से सब पाप भाग जाते हैं। यह अवतार रावण के लिये हुआ था। दशवें नागेश अवतार जो दारुक वन में विराजमान हैं। वे अपने भक्तों का पालन करके दुष्टों को दण्ड देते हैं। ग्यारहवें रामनाथ जो सेतुबन्ध में विराजमान हैं। उन्होंने रामचन्द्र को सुख दिया था। वह प्रीति के कारण वहीं रहे। जो कोई इनको गङ्गाजी से स्नान करावे, उसके सर्व पाप नष्ट होकर इस लोक में सुख और परलोक में कैलास मिलता है। बारहवें घुस्मेश्वर इस प्रकार हुआ कि दक्षिण दिशा में देवगिरि के निकट एक ग्राम में सुधर्मा नाम एक ब्राह्मण रहता था। उसकी दो स्त्रियाँ थीं। तो घुस्मा जो दूसरी स्त्री ब्राह्मण की थी, उसके शिवजी की सेवा करने से पुत्र उपजा। पर पहिली स्त्री ने उस नये लड़के को मार डाला। शिवजी उस स्थान पर प्रकट हुये और उस मरे हुये लड़के को जिला दिया। घुस्मा को बड़ा आनन्द हुआ। शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग होकर उस स्थान पर स्थित हुये। उसका नाम घुस्मेश्वर हुआ। जो इस ज्योतिर्लिङ्ग के दर्शन करे या पूजन करे, वह दोनों लोक में बड़ा सुख पावे। हे नारदजी ! ज्योतिर्लिङ्ग की सेवा से मनुष्य अनेक प्रकार के मनोरथ पाते हैं। इन द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों को लिङ्गराज भी कहते हैं। उनके दर्शन करने और पूजने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है। इस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चरित्र के सुनने और पढ़ने से सुख मिलता है और सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। यह हमने शतरुद्र खण्ड वर्णन किया है। इसके श्रवण करने और वर्णन करने से मनुष्य सब मनोरथ और सुख पाता है तथा दूसरे लोक में निर्वाणपद मिलता है। हे नारदजी! अब किसी कथा के सुनने की अभिलाषा है, वह कहो। शिवजी के १०० अवतारों की कथा पूर्ण हुई।

इति श्रीशिवपुराणे सप्तमखण्डे ब्रह्मानारदसंवादे-

ऽष्टपञ्चाशत्तमो ऽध्यायः ॥ ५८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:०:—

आठवाँ खण्ड

पहिला अध्याय ।

सूतजी बोले हे शौनको ! फिर नारदजी ने ब्रह्मा से कहा कि यद्यपि आपने शिव के गुण वर्णन किये हैं पर मुझे तृप्ति नहीं होती। इसलिये मैं चाहता हूँ कि अब आप लिङ्गों की महिमा का बखान करें। अर्थात् जितने पृथ्वी में शिव के लिङ्ग हैं, उनका विस्तार कि कौन लिङ्ग किस तीर्थ पर है, वर्णन करें। यह भी बतावें कि किस स्थान में कितने शिवजी के लिङ्ग हैं और उनका हाल भी कहिये। ब्रह्माजी ने कहा कि लिङ्गों की संख्या कुछ नहीं है। पृथ्वी भर में लिङ्ग ही लिङ्ग समझो। तीर्थ जितने हैं और जो कुछ कि तीर्थों से विशेष हैं, लिङ्ग से कोई वस्तु भिन्न नहीं है। जो वस्तु जिस प्रकार पर देखी-सुनी जावे, उस वस्तु को शिव का स्वरूप जानो। पर तो भी अपनी बुद्धि के अनुसार जहाँ तक कि विष्णु से हमको मालूम हुआ है, वहाँ तक हम लिङ्गों का वर्णन करते हैं। धरती, आकाश, पृथ्वी, देवता, दैत्य और मनुष्यों को जहाँ-जहाँ कि शिव ने उनके स्मरण के अनुसार उनको दर्शन दिया है, उस स्थान पर अतिप्रसन्नता से स्थित हो गये हैं जिनकी पूजा से मनुष्यों के मनोरथ मिलते हैं। धरती में असंख्य शिवजी के लिङ्ग हैं पर हम जो उनमें अति प्रसिद्ध और वर्णन के योग्य हैं, उन्हीं का बखान करते हैं। उन सबसे बड़े और श्रेष्ठ ज्योतिर्लिङ्ग हैं जो पूर्णांश से विराजमान हैं। पहिला सोमनाथ जो सौराष्ट्र में गिरिजा सहित है, दूसरा मल्लिकार्जुन जो श्रीशैल में हैं, तीसरा महाकाल जो उज्जयिनी में है, चौथा अमरेश जो हिमालय पर्वत में स्थित है, पाँचवाँ गणनाथ, छठा भीमशंकर डाकिनी तीर्थस्थल पर है, सातवाँ विश्वनाथ जो काशी में प्रसिद्ध है, आठवाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

त्र्यम्बक जो गौतमी के तट पर है, नवाँ वैद्यनाथ जो चिताभूमि में है, दशवाँ नागेश जो दारुकवन में विख्यात है, ग्यारहवाँ रामेश्वर जो सेतु के ऊपर है, द्युतिमान् जो शिवगृह में विराजमान है। जो मनुष्य प्रभात के समय पवित्र हो बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के नाम जिस मनोरथ करके पढ़े, उसका कार्य पूर्ण हो जावे, उसको संसार में आनन्द और परलोक में मुक्ति हो। इन ज्योतिर्लिङ्गों का प्रभाव अप्रमेय है। उसका वर्णन कौन कर सकता है। इन बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के विशेष जो छः मास तक बराबर एक लिङ्ग की भी पूजा करे तो उस मनुष्य के सर्व मनोरथ पूर्ण हो जावे। वह मनुष्य फिर आवागमन में न पड़े और तीनों लोक में आदर पाने के योग्य हो जावे। जो नीच जाति का मनुष्य भी इनमें से किसी एक के दर्शन करे तो वह उच्च जाति में उपजे और बड़ा धनवान् सुखी हो। क्योंकि शिव के भक्त, वेदपाठी, ध्यान करनेवाले और ज्ञानी, इन्हीं की भाग्य में मोक्ष है। जो मनुष्य कि जन्म से नपुंसक हैं और अन्य मनुष्य आदि भी उनके दर्शन से ब्राह्मण हो मुक्ति प्राप्त करते हैं। इससे ज्योतिर्लिङ्गों का दर्शन और पूजन अवश्य है। आगे हम अलग-अलग एक-एक ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन विस्तार से करते हैं। अब हम इन्हीं के बारहों ज्योतिरूपलिङ्गों का वर्णन करते हैं। उनकी अप्रमेय महिमा है। उनके दर्शन से दुःख दूर होते हैं। पहिले सोमेश्वर अन्तकेश उस स्थान पर है जहाँ महीसागर नामी समुद्र मिलता है। दूसरा रुद्रनाम जो भृगुकक्षा में है। तीसरा दुग्धेश, चौथा कर्दमेश, पाँचवाँ भूमेश, छठा भीमेश्वर, सातवाँ लोकनाथ, आठवाँ त्र्यंबक अर्थात् त्रिनयन, नवाँ बैजनाथ, दशवाँ भूतेश्वर, ग्यारहवाँ गुप्तेश्वर और बारहवाँ व्याघ्रेश, इन बारहों उपलिङ्गों के दर्शन से अति आनन्द प्राप्त होता है।

उन लिङ्गों का वर्णन जो पर्व में हैं।

प्रयाग जो तीर्थराज कहा जाता है, वहाँ ब्रह्मा के स्थापित किये हुये ब्रह्मेश्वरलिङ्ग सर्वोपरि हैं और सोमेश्वर नामी लिङ्ग दशहयमेध तीर्थ पर स्थित है जो सब उपद्रवों को दूर करके आनन्द देता है। भारद्विजेश्वर और माधवेश शिवटङ्क में है। नागेश्वर संकटेश्वर नगर में, काशी में अविमुक्तेश्वर, वृद्ध बाल, कृतबालेश्वर, तिलभाण्डेश्वर, दशहयमेधेश्वर,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मणिक्रुतेश्वर, तारेश्वर, गोधूमेश्वर, महाभूतेश्वर, किदारेश्वर, रामेश्वर, वटकेश्वर, पूरेश्वर, सिद्धनागेश्वर, तथा पत्तन में दूरेश्वर और मृगेश्वर विराजमान हैं। बैजनाथ जिनकी महिमा वेद ने बखानी है और नागेश्वर, सिद्धेश्वर, कामेश्वर, विमलेश्वर, व्यासेश्वर, भाण्डेश्वर, हुंकारेश्वर, कमारेश्वर, शुक्रेश्वर, वटेश्वर, सूर्येश्वर, भीमेश्वर, भूतेश्वर, ज्ञानेश्वर, पूरेश्वर, कोटेश्वर, स्वप्नेश्वर, कर्दमेश्वर और अचलेश्वर भी हैं। पुरुषोत्तमपुरी में भुवनेश्वर हैं जो सर्व मनोरथों को देनेवाले हैं। वहाँ गुरु जगन्नाथ के बदले स्थित होकर दर्शन करनेवाले के सर्वकष्ट नष्ट कर देते हैं। यह सब पूर्व के लिङ्ग हैं। अब हम दक्षिण के लिङ्गों का वर्णन करते हैं।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम मत्तगयन्दलिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनको हमने यज्ञ की वेदी में स्थित किया। एक समय कलियुग के प्रारम्भ में हमने इच्छा की कि एक ऐसा यज्ञ करना चाहिये जिससे धर्म अधिक होकर सर्वपाप नष्ट हो जावें। यह विचार हमने विष्णु के समीप जा अपना मनोरथ कहा और यह भी कहा कि हमारी इच्छा यज्ञ करने की है। आप कोई स्थान बता देवें जो अति शुद्ध हो। यह सुन विष्णु ने कहा कि चित्रकूट जो प्रसिद्ध पर्वत है और जिसकी ओर देखने से पापी मनुष्य पापरहित हो जाता है। वहाँ मन्दाकिनी बह रही है जिसमें स्नान करने से कोई पाप नहीं रहता। वह नदी और पर्वत के बीच धनुष के समान है वह स्थान मुझे बहुत प्रिय है। वहाँ जाकर तुम एक पुरी बसावो और शिवलिङ्ग भी वहाँ स्थापित करो। हम भी वहाँ बारह अंगुलभर की प्रतिमा मूर्ति से प्रकट होंगे और तुम्हारे यज्ञ की वेदी में स्थित होंगे। जो मनुष्य हमारी मूर्ति के दर्शन करेगा, उसके दुःखों को दूर कर देंगे और त्रेता तथा द्वापर युग में अवतार लेकर संसार को आनन्द देंगे। हम एक रूप से चार रूप होकर दशरथ के घर अवतार लेंगे। वहाँ हम चारों के नाम राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्न होंगे और दशरथ की आज्ञा से लक्ष्मण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और सीतासहित उसी स्थान में आकर रहेंगे। फिर वहाँ से दण्डकवन में जाकर रामेश्वर लिङ्ग स्थापित करेंगे और उनकी सेवाकर वर पा रावण को कुल परिवार समेत वध करेंगे। हे ब्रह्मन्! शिवजी की सेवा बिना कोई काम पूरा नहीं होता। यह बात हम तुमसे सत्य-सत्य कहते हैं। इसलिये तुमको उचित है कि पहिले शिवलिङ्ग को स्थापित कर फिर यज्ञ करके जो हमारे लिये पुरी बसाना उसके लिये राजा भी बनाना। हम राम अवतार लेकर उनकी वहाँ पूजा करेंगे। यह कह विष्णु अन्तर्धान हुये। हम तुरन्त विष्णु की आज्ञा से वहीं आये और शिवलिङ्ग की स्थापना की। फिर हमने अपने पुत्रों और देवताओं समेत उस लिङ्ग की बड़ी स्तुति की। सो शिव वहाँ प्रकट हुये और मेरी प्रीति को देख उन्होंने कहा कि हे ब्रह्मन्! वर माँगो। मैंने विनय की कि मेरे ऊपर कृपा करके अपने पूर्णांश से वहीं स्थित रहो। क्योंकि मेरी इच्छा है कि मैं यहीं यज्ञ करूँ और जो पुरी कि यहाँ बसाऊँ, उसके राजा आप होवें। तुम्हारे लिङ्ग का नाम मत्तगयन्द हो जो यात्रियों के पापों को नाश करदे। जो मनुष्य यहाँ आकर तुम्हारे लिङ्ग का दर्शन न करे, उसको यात्रा का कुछ फल न हो। यह सुन शिवजी ने मान लिया और तुरन्त उस लिङ्ग के भीतर प्रवेश कर गये। हमने उसी स्थान पर यज्ञ करके एक पुरी विष्णु के लिये बसाई जिसके देखने से पापों के समूह नष्ट होते हैं। मत्तगयन्द उसके राजा हुये और वह कैलास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शिवलिङ्ग के सामने मन्दाकिनी घाट शिवगङ्गा नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसमें स्नान से सब पाप दूर होते हैं। जो मनुष्य प्रभात को उठकर मन्दाकिनी का स्नान कर मत्तगयन्द की पूजा करे, वह सब मनोरथ पावे और मरने के उपरान्त शिवपुरी में स्थान पावे। कदाचित् वहाँ जाकर कोई मनुष्य शिवपूजा न करे तो यात्रा भरका फल जाता रहे। जब मत्तगयन्द का दर्शन कर ले तब यात्रा का फल मिलता है। रामचन्द्र ने आप वहाँ जाकर इस लिङ्ग की पूजा की है। अब हम कोटेश्वर लिङ्ग का वर्णन करते हैं कि संकर्षण पर्वत के पूर्व जहाँ कोटनामी तीर्थ जो महाशुद्ध है, वहाँ कोटेश्वर नामी शिवलिङ्ग है जिसके दर्शन, पूजन और स्नान से कोई पाप नहीं रहता। अन्त में उसको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवलोक मिलता है। जो मनुष्य कि संकर्षण पर्वत में जाकर तीर्थस्थान के उपरान्त कोटेश्वरलिङ्ग की पूजा करे तो सहस्र गोदान का फल पावे। उसके सर्वपाप भस्म हो जावें और शिवजी उस पर प्रसन्न रहें। चित्रकूट के दक्षिण ओर से आगे पश्चिम ओर को तुङ्गारण्य पर्वत है जहाँ गोदावरी नदी बह रही हैं। वहाँ पशुपति नामी शिवलिङ्ग है। जो कोई गोदावरी में स्नान करके शिवलिङ्ग की पूजा करे, वह सदा संसार में प्रसन्न रहे। रामचन्द्र ने पशुपतिलिङ्ग की पूजा के उपरान्त गोदावरी में स्नान किया। उसके दक्षिण कालिञ्जर पर्वत है जो तीनों लोक में प्रसिद्ध है। वहाँ बहुतों ने तप करके सिद्धि पाई है। उसका नाम मुक्तक्षेत्र है जो सब पापों का क्षयकर असंख्य आनन्द देता है वहाँ बहुत से अति पवित्र तीर्थ हैं। वहाँ मन्दाकिनी नदी बहती हैं जिसके केवल अवलोकन से पाप नष्ट हो जाते हैं। उस स्थान पर नीलकण्ठ शिवजी का लिङ्ग है जिसके देखने से पाप दूर हो जाते हैं। वह लिङ्ग गिरिजा सहित विराजमान है। वह लिङ्ग राजराजों के समान है। जो मनुष्य कि उस तीर्थ में स्नान करके नीलकण्ठ की पूजा करता है, वह सम्पूर्ण मनोरथ पाता है और फिर आवागमन से छूट जाता है। देवता, मुनि और सिद्ध आदि ने इस लिङ्ग की पूजा से परमपद पाया है। कालिञ्जर तीर्थराज है जहाँ शिव नीलकण्ठ हैं। उनकी महिमा पढ़ सुनकर फिर कोई मनुष्य संसार में नहीं उपजता। यह आख्यान अति पवित्र है।

तीसरा अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्मन्! हमको अत्रीश शिवलिङ्ग की महिमा विस्तार से सुनाइये। ब्रह्मा बोले कि जो हमने नीलकण्ठ शिवलिङ्ग का वर्णन किया है, उसके दक्षिण ओर अत्रीश्वर नाम शिवजी का लिङ्ग है जो मधुवन में विराजमान है। अत्रि हमारा पुत्र जो अनुसूया का पति है, उसने चित्रकूट पर्वत के निकट अतिश्रम से स्त्री सहित तप किया है और शिव के ध्यान में लगा रहा। इतने में ऐसा काल पड़ा कि एक सौ वर्ष तक संसार भर पानी न बरसने से अति विकल रहा। यहाँ तक कि मुनीश्वरों को भी अति दुःख प्राप्त हुआ। सब कुवें, तालाब, नदी और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समुद्र आदि सूख गये। वृक्षादि भी सूखे। बिन वर्षा किसी को चैन न पड़ा। शुभ कार्य दिन-दिन घटने लगे। ऐसी दशा देख अनसूया ने अत्रि से कहा कि संसार भर दुःखी है। ऐसा कोई उपाय करो जिसमें जल बरसे और धरती में आनन्द होवे। पर अत्रि उसी तरह योग धारण किये हुये बैठे रहे। उन्होंने कुछ अनसूया का वचन न सुना। जो अत्रि के शिष्य थे, वह भी वर्षा न होने के कारण दुःखी हो चले गये। तब तो अनसूया दृढ़तापूर्वक पार्थिव पूजा करने लगी। शिव प्रकट हुये जिनके देखने को देवताओं और मुनीश्वरों का समूह इकट्ठा हो गया। यहाँ तक कि गङ्गा आदि सम्पूर्ण तीर्थ भी दौड़े आये। अत्रि और अनसूया का तप देख सब आश्चर्य में हुये और विष्णु आदि सबने कहा कि तप के निमित्त कौन श्रेष्ठ है? निदान यह बात ठहरी कि तप के लिये शिव से अधिक कोई श्रेष्ठ नहीं है क्योंकि वेद की भी यही आज्ञा पाई। उसके उपरान्त देवता आदि सब अपने-अपने स्थानों को चले गये पर गङ्गा वहीं रहीं क्योंकि शिव वहाँ विराजमान थे। इसी प्रकार चौवन वर्ष अत्रि मुनि को तप करते हुए बीत गये। एक दिन अत्रि ने ध्यान छोड़कर कहा कि जल दो, सो अनसूया कमण्डलु हाथ में लेकर वन के मार्ग से जल लेने गई। गङ्गा ने अनसूया को चिन्तित देखकर कहा हे अनसूया! कुछ चिन्ता मत करो। तुम धन्य हो, कहाँ जाती हो? तुम्हारी इच्छा मैं पूरी करूँगी। यह सुन अनसूया अति प्रसन्न हुई और कहा कि तुम कौन हो क्यों यहाँ खड़ी हो? तुम्हारे देखने से मुझको तुम्हारी बड़ी प्रीति उपजी है। गङ्गा ने कहा कि इस स्थान पर शिव, ब्रह्मा और विष्णु आदि तुम्हारी तथा तुम्हारे पति की पूजा देखने के लिये आये थे। तुम दोनों की प्रशंसा करते हुये वे अपने-अपने लोक को चले गये। पर हम शिव के रहने से उनके प्रेम के कारण यहाँ रह गई हैं। मैं तुम्हारे अधीन हूँ। जो तुमको चाहिये, वह हमसे वर लो। अनसूया बोली कि यहीं स्थित रहो। गङ्गा वहीं रहीं और अनसूया ने जल कमण्डलु में भर अत्रि को दिया। अत्रि ने जल पी चिन्तित हो अनसूया से कहा कि यह जल तुमने कहाँ से पाया है? अनसूया ने सब हाल कह सुनाया। अत्रि ने तुरन्त उठ गङ्गा को देखा और स्नान कर गंगा की स्तुति की। अनसूया ने भी बड़े आनन्द से गंगाजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में स्नान किया। फिर गङ्गाजी ने कहा कि अब मैं जाती हूँ। तब दोनों ने हाथ जोड़ बिनती की कि तुम यहीं रहो। गङ्गाजी ने कहा कि जो एक वर्ष की शिव पूजा का फल हमको दो तो हम रहैं। अनसूया ने मान लिया और गङ्गा वहाँ स्थित हुईं। इतने में शिव प्रसन्न हो उसी स्थान में अपने मुख्य चिह्नों समेत प्रकट हुये। अत्रि ने शिवजी को शक्ति समेत देख स्तुति की। शिवजी बोले कि हम प्रसन्न हैं जो चाहिये वर ले लो। अत्रि और अनसूया ने यह सुन कर विनती की कि जो तुम प्रसन्न हो तो यहीं स्थित हो जावो। शिव अच्छा कह गङ्गा सहित वहाँ रहे जहाँ कि अत्रि और अनसूया ने लिङ्ग की स्थापना की थी। वे अत्रीश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये और गङ्गा का नाम मन्दाकिनी प्रसिद्ध हुआ। उसी स्थान पर बहुत से मुनि अपने परिवार सहित आकर स्थित हुये जो गङ्गा किनारे खेती और यज्ञ करने के अनन्तर शिवजी को प्रसन्न करते रहे। फिर शिव प्रसन्न हुये जिससे भलीभाँति वर्षा हुई और सबको आनन्द प्राप्त हुआ। अत्रि और अनुसूया धन्य हैं जिन्होंने शिवजी को प्रसन्न कर वर्षा कराई। जो मनुष्य अत्रीश्वर के दर्शन करेगा, उसके सब मनोरथ पूरे होंगे। जो अत्रीश्वर चरित्र को पढ़े-सुनेगा, उसको इस लोक में आनन्द और परलोक में परमपद प्राप्त होगा।

चौथा अध्याय।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि नर्मदा नदी के तट पर असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनकी गणना नहीं हो सकती। जितने पत्थर नदी में पड़े हैं, वह सब शिवरूप हैं। उनकी बड़ी महिमा है पर हम प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनके केवल दर्शन से आनन्द प्राप्त होता है। वे ये हैं—अवतारेश्वर, परमेश्वर, सुखेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमलेश्वर, मदनेश्वर, कुमारेश्वर, पुण्डरीकपति, मण्डपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुबेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्देश्वर, कण्टकेश्वर, चन्द्रेश्वर, जहाँ पर कि समुद्र मिलता है, वहाँ घृतकेश शिव का भी लिङ्ग है और सुरतेश्वर, वरचलेश्वर, सोमेश्वर, मङ्गलेश्वर, हरेश्वर, इन्द्रेश्वर और दयेश्वर भी हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं। नन्दिकेश्वर रेवा नदी के किनारे हैं। उसी स्थान पर ब्रह्महत्याहर तीर्थ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भी है। इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मा ! लिङ्ग की महिमा और ब्रह्महत्याहर तीर्थ का हाल विस्तार से कहिये। ब्रह्माजी बोले कि जब कौरव और पाण्डवों में बड़ा युद्ध हुआ था और जिसमें दोनों ओर से बहुत से जीव मारे गये, युधिष्ठिर ने शत्रुओं को जीता भी पर तो भी मन को कुछ आनन्द न हुआ। मन में हर समय लज्जा और दुःख बना रहा। सो एक दिन राजा युधिष्ठिर ने अति विकल हो श्रीकृष्ण से कहा कि हमने अपने कुल को नष्ट किया इससे प्रति समय मेरे मन में उदासी छाई रहती है क्योंकि मुझको नाना प्रकार की हत्याएँ लगी हैं। ऐसी हत्याओं के दूर करने के निमित्त जो उपाय आप जानते हों, वह कहिये। श्रीकृष्ण बोले कि नन्दिकेश्वर जो शिवजी का लिङ्ग है उसी के दर्शन से सब पाप दूर हो जाते हैं। उसकी पूजा से सिद्धि प्राप्त होती है। जो उनकी सेवा करते हैं, वह तो साक्षात् शिवरूप हैं। जो नन्दिकेश्वर में अर्थात् रेवानदी में एक हत्याहरण तीर्थ भी है जिसके देखने से पाप दूर होते हैं, उसी रेवानदी के पश्चिमी तट पर कर्णिकापुरी है। उसकी महिमा अति प्रसिद्ध है। जहाँ घर-घर शिवजी की सेवा हो रही है और असंख्य शिवालय वर्तमान हैं। रात दिन वहाँ के मनुष्य शिवजी के भजन में लगे रहा करते हैं, वहाँ दुःख का लेश भी पाया नहीं जाता। वहाँ एक ब्राह्मण भी रहा करता था जो उतथ्यवंश में उपजा था। वह काशी में मर गया। उसके सातों पुत्रों ने उसके धन को परस्पर बाँटा। कुछ दिनों के पीछे उन लड़कों की माता ने मृत्यु के समय अपने पुत्रों से कहा कि मुझको केवल काशी देखने की इच्छा रह गई है। सो अब मेरा पहुँचना कठिन है पर हमारी हड्डियाँ काशी में पहुँचा देना। सो इस बात को बड़े पुत्र ने माना और माता के मर जाने के उपरांत जब कि क्रिया कर्म से सुचित हुये तो वही बड़ा पुत्र जिसका नाम सुबाहु था, अस्थि ले अपने नौकर समेत काशी में गया पहिले दिन घर से चल बीस योजन पर गाँव में एक ब्राह्मण के घर ठहरा। जब चार घड़ी रात बीती तो घर का स्वामी अर्थात् ब्राह्मण बाहर से घर आया और गौ को घर में बाँध चाहा कि दूध दुहे तो उसके बच्चे ने कोपित हो उस ब्राह्मण को इस वेग से एक लात मारी कि वह मूर्च्छित हो पृथ्वी पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिर पड़ा। फिर ब्राह्मण ने उठकर उस बच्चे को इतना मारा कि वह मूर्च्छित हुआ और गौ दुहकर बच्चे को रस्सी से बाँध दिया, छोड़ा नहीं। यह अपने बच्चे की दशा देख गौ रोई। बच्चे ने बहुत समझाया पर कुछ न माना और कहा कि प्रभात को जब ब्राह्मण का पुत्र मुझको दुहने आवेगा, तब जब तक मैं अपने सींगों से छेद के मार न डालूँगी, मेरा क्रोध दूर न होगा। बच्चे ने कहा कि तुमको बड़ा पाप होगा। वह शाप क्योंकर दूर होगा ? यह बात उचित नहीं। गौ ने कहा कि वह स्थान हमें स्मरण है, जहाँ जाने से हत्या नष्ट हो जाती है। यह सुन बच्चा तो चुप हो गया और वह विदेशी ब्राह्मण गौ का वचन सुन आश्चर्य में हुआ। इस बात के याचने के लिये वह अपना जाना बन्द कर इस बात के तमाशा देखने को वहीं रहा। जब भोर हुआ ब्राह्मण तो बाहर चला गया, उसके पुत्र ने चाहा कि गौ दुहूँ तो गौ ने अपने सींगों से मारकर ब्राह्मण के पुत्र को वध कर दिया। यह दशा देख सब पड़ोसी बान्धव ब्राह्मण के यहाँ इकट्ठे हो गये और गौ को छोड़ दिया। वह जो श्वेतरङ्ग की थी तुरन्त काली हो गई और पूँछ उठाये कई बेर भाग चली। विदेशी ब्राह्मण जो हत्याहरणस्थल देखना चाहता था, गौ के पीछे नौकर समेत चला। गौ नर्मदा में जहाँ नन्दिकेश्वर शिवलिङ्ग हैं, गई और तिस समय स्नानकर वैसी ही श्वेत हो गई। ब्राह्मण ने देख बड़े आश्चर्य से कहा धन्य है यह तीर्थ और यह स्थान अतिशुद्ध है। आप नौकर समेत स्नानकर आगे चला। मार्ग में उसको एक सुन्दर स्त्री मिली। उसने कहा ठहर जाओ। अपनी माता की हड्डियाँ इसी तीर्थ में छोड़ दो। तेरी माता देवतों के समान होकर मुक्ति पावेगी। क्योंकि सदा वैशाख शुक्ल सप्तमी को गंगा यहाँ आया करती हैं। सो आज वही दिन है और मैं वही गंगा हूँ, उसी तीर्थ में जाती हूँ। यह कहकर वह गङ्गा अन्तर्धान हो गई। ब्राह्मण ने भी लौटकर हड्डियों को उसी स्थान पर डाल दिया। सो ब्राह्मण की माता देवीरूप हो गई। उसने अपने पुत्र को बहुत आशीषें दीं। फिर वह शिवलोक को चली गई। ब्राह्मण ने आकर यह समाचार सबको सुनाया। इतना सुन नारद ने पूछा कि किस कारण वैशाख सप्तमी को गङ्गा वहाँ आती हैं और नन्दिकेश्वर शिव-लिङ्ग उस स्थान पर क्योंकर स्थित हुआ ? ब्रह्माजी बोले कि पूर्वकाल में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऋषिका नाम एक विधवा ब्राह्मणी शिवजी की बड़ी भक्ता थी। वह लड़कपन में विधवा हुई। उसने पार्थिव पूजनकर अति तप किया। उसी तप में एक मुर नाम दानव ने चाहा कि ब्राह्मणी के साथ भोग करके उसका तप नष्ट कर दें। सो ब्राह्मणी अति विकल हो शिवजी की स्तुति करने लगी और कहा मेरी लज्जा सब आपके हाथ है क्योंकि तुम सदा अपने भक्तों की रक्षा करते हो। शिव तुरन्त प्रकट हुये और दानवों को मार डाला। उन्होंने ब्राह्मणी से कहा कि जो इच्छा हो, हमसे वरदान माँग लो। ब्राह्मणी ने प्रसन्न होकर शिवकी बड़ी स्तुति की और कहा कि अब कौन वस्तु है जो मुझको प्राप्त नहीं है? तुमने अपने दर्शन से मुझको कृतार्थ करके सब कुछ दिया है। यह स्तुति सुनकर शिव अति प्रसन्न हो बहुत वर दे अन्तर्धान हुये और अंश से लिङ्गस्वरूप होकर नन्दिकेश्वर नाम से उसी स्थान पर स्थित हो गये। वहीं अंश रूप हो वितललोक में हाटकेश्वर के नाम से प्रकट हुये। उस समय ब्राह्मणी ने गङ्गा से कहा कि तुम भी इसी स्थान पर स्थित हो जावो, मेरी यह इच्छा है। क्योंकि तुम्हारे दर्शन से मुझको बड़ा आनन्द हुआ है। गङ्गा ने कहा कि तुम-सी कोई धन्या, भाग्य की पूरी संसार में दूसरी स्त्री नहीं जिसके लिये शिव प्रकट हुये हैं। मैं तुमसे अति प्रसन्न हूँ और कहती हूँ कि मैं सदा वैशाख शुक्लपक्ष की सप्तमी को आया करूँगी। यह कह गङ्गा अन्तर्धान हुईं। उसी दिन से वह स्थल तीर्थ हो गया जहाँ सब मनोरथ पूरे होते हैं और जिसके स्नान से सम्पूर्ण प्रकार के पाप शान्त हो जाते हैं। यह चरित्र अति पवित्र और दोनों लोक में आनन्द देनेवाला है।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! रेवा के किनारे असंख्य शिवलिङ्ग हैं जिनको बुद्धिमान जान सकते हैं। यह रेवा नदी शिव को बहुत प्यारी गिरिजा के समान है और जिसके पत्थर शिवलिङ्ग के समान हैं। वे पत्थर सबके पूजने के योग्य हैं। उसके दोनों तटों पर शिव के असंख्य मन्दिर विराजमान हैं वहाँ देवता और मुनि आदि प्रति दिन पर्यटन किया करते हैं और अपनी पत्नियों सहित शिव की पूजा में लगे रहते हैं। उसके उत्तर की ओर कपीश्वर शिव-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिङ्ग हनुमान् का स्थापित किया हुआ वर्त्तमान है। वहाँ पर हनुमान् ने बड़ा तप किया था जिससे उनकी ब्रह्महत्या का पाप छूट गया। इतना सुन नारद ने पूछा कि आप इस चरित्र को विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्मा ने कहा कि शिव रामचन्द्र की कामना पूर्ण होने के निमित्त वानर का रूप धार हनुमान् के नाम से प्रकट हुये थे। वे हर प्रकार से रामजी की सहायता कर दूत के नाम से प्रसिद्ध हुये। सीता के समाचार लाने के उपरान्त वे समुद्र में कूद गये। उन्होंने लङ्का को जला दिया और रावण के लड़के को मार डाला तथा समुद्र में सेतु बाँधकर सब सेना उतार ले गये। रामचन्द्र को कुछ श्रम न करने दिया और आप रावण को कुल सहित मार डाला। उन्होंने रामचन्द्र और लक्ष्मण के सब दुःख दूर कर महिरावण की भुजा उखाड़ ली और लक्ष्मण को जिलाया। रामचन्द्र लक्ष्मण और सीता समेत आकर समय तक राज्य करते रहे। पर रामचन्द्र रावण ब्राह्मण के वध करने से समय तक पश्चात्ताप करते रहे। निदान नैमिषारण्य में जहाँ हत्याहरण तीर्थ है, उसमें अपने भाई सहित जाकर अपने पाप दूर किये। उन्होंने लक्ष्मण सहित स्नान करके शिवलिङ्ग की स्थापना की जिससे वह अति पवित्र हो गये। एक दिन हनुमान् कैलास पर्वत पर गये और अति गर्व से शिवजी के दर्शन की इच्छा कर चले। नन्दीश्वर ने आकर रोका और कहा कि तुम इतनी जल्दी शिव के दर्शन किया चाहते हो तुम शिव के दर्शन योग्य नहीं। तुमने तो रावण ब्राह्मण को वध किया है। तुम अपने गर्व में धर्म को भूल गये। अब तुमको चाहिये कि रेवा के किनारे जाकर शिवलिङ्ग की स्थापना करो तो तुम्हारा पाप दूर होगा। तब शिव के दर्शन को आना, शिव तुम पर कृपा करेंगे। यह सुन हनुमान् ने रेवा नदी के तट पर जाकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और उसकी पूजा करने लगे। बार-बार शिव को प्रणाम करके बड़ी स्तुति की तब शिव प्रसन्न हुये और हनुमान् के पास प्रकट होकर कहा कि हम बहुत प्रसन्न हैं तुम तो हमारे रूप हो, हमने तुमसे यह तप इसलिये कराया कि संसार में ब्राह्मण की बड़ाई स्थिर रहे। यह कह कर शिव अन्तर्धान हुये और हनुमान् के सब दुःख दूर हो गये। उन्होंने कैलास में जाकर शिव का दर्शन पाया। फिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोई पाप न रह गया। जो कोई मनुष्य पवनेश्वरलिङ्ग की पूजा करता है, उसका कोई पाप नहीं रहता। जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़े-सुनेगा, वह दोनों लोक में आनन्द और मोक्ष पावेगा।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! एक दिन हम और विष्णु दक्षिण की ओर जा रेवा नदी के तट पर स्नान के उपरान्त बैठ गये। उस स्थान पर सब देवता और मुनि आदि इकट्ठे हुये और एक उत्तम सभा रची गई। सो सबने और हमसे और विष्णु से पूछा कि तुममें वह कौन मनुष्य हैं जो नाश-रहित, ब्रह्म, निर्दोष, सर्वसृष्टि का स्वामी, निर्गुण, अलख, ईश्वरों का ईश्वर, सबसे श्रेष्ठ, विश्वंभर और नष्ट करनेवाला है, कृपा करके वर्णन करो। हमने पहिले शिवकी माया में पड़कर कहा कि हम परब्रह्म तीनों लोक के स्वामी सबसे श्रेष्ठ हैं। यह बात हमारे नामों से जो वेद कहते हैं, प्रकट है। यह मेरा वचन सुनकर विष्णु क्रोधित हो कहने लगे कि तुम बिन जाने ऐसी बातें वेद के विरुद्ध मत कहो। क्या तुमने वेद सब भुला दिये? तुम तो वही हो जो हमारी नाभिकमल से उपजे। तुम तो हमारे अधीन हो वरन् हम परब्रह्म हैं। हमसे बड़ा कोई संसार में नहीं। हमको वेद और पुराण सब ब्रह्म कहते हैं। तुम अपने नामों के गर्व में मत रहो क्योंकि अन्धे का नाम नयनसुख भी होता है और कृपण का नाम उदार होता है। निदान हमने विष्णु का वचन न माना और शिव की माया में हम दोनों ने भूलकर रमतत्त्व को विस्मरण किया और अपने को परब्रह्म ठहराया। निदान यह बात ठहरी कि वेद जिसको सर्वोपरि कह देवें वही बड़ा समझा जावे। हमारे स्मरण करने से वेद आये और पूछने पर उन्होंने कहा कि तीनों गुण से भिन्न जो प्रकाशवान् हैं और जिनके शरीर में करोड़ों ब्रह्माण्ड हैं, वह सदाशिव हैं जो प्रलय करनेवाले हैं। वे एकही तरह सदा रहते हैं जिनका योगी बड़े उपाय से ध्यान करते हैं। इसी प्रकार वेदों ने शिव की बड़ी प्रशंसा की। यह सुन हम दोनों ने मूर्खता से यह वचन कहा कि शिव तो निर्गुण, विष के खानेवाले, जटाधारी, वृष पर सवार होनेवाले, नग्न शरीर, योगी, सर्पों के भूषण पहनेवाले, औढर, भूत-प्रेतों के साथी और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अशुभ वस्त्रधारी हैं। वे परब्रह्म क्योंकर हो सकते हैं ? यह कह हम दोनों ने हँसकर वेदों को चुप करा दिया। यह हमारी दशा देख प्रणव ने कहा कि तुम दोनों संसार उपजानेवाले और पालनकर्ता हो, ऐसी मूर्खता न करो। तुम वेद के वचन मत छोड़ो और शिव को परब्रह्म समझो। उन्होंने तुम्हारे लिये चाहे व निर्गुण हैं पर बहुत शरीर धारण किये। उनके अगणित चरित्र और असंख्यभाव देखकर सत्यमार्ग को मत भूलो। पर यह प्रणव का वचन हम पर गुणदायक न हुआ। तब तो शिवजी ने चाहा कि हम दोनों के अहंकार का नाश करें जैसा कि आगे वर्णन होता है।

सातवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि उस समय उन झगड़ों में हम दोनों के सामने एक बड़ी ज्वाला दिव्यरूप से प्रकट हुई जो पृथ्वी से आकाश तक थी। उसका आदि अन्त नहीं जाना जा सकता था। तिस पीछे शिवजी कृपा-दृष्टि से लिङ्गरूप धारकर उस स्थान में रेवानदी के किनारे उत्पन्न हुये क्योंकि शिवजी अपने भक्तों के क्लेश दूर करने के लिये करोड़ों युक्तियाँ करते हैं। शिवजी के प्रकट होते ही सबका अहंकार जाता रहा और पृथ्वी प्रकाशवान् हो गई। सब जय-जय शब्द कहने लगे। वह लिङ्ग आठ अंगुल का था और चार अंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर था। इस लिङ्ग के प्रकट होते ही शिवजी के गण शिवलोक से आये और लिङ्ग को पूजने लगे। फिर देवताओं और मुनीश्वरों ने पूजा की। उस स्थान पर बड़ा आनन्द हुआ और सबका शोक जाता रहा। नाना प्रकार के बाजे बजने लगे। सबों ने अपने-अपने मुख से शिवजी का यश गाया। हम और विष्णुजी भी लिङ्ग के निकट आये। तब विष्णुजी ने कहा कि यह कौन तीसरा मनुष्य है ? हमने कहा कि हे विष्णुजी ? हमारा और आपका इसी बात पर निर्णय हो जायगा। अर्थात् जो यह लिङ्ग चार अंगुल नीचे और चार अंगुल ऊपर है, उसको जो छू लेगा, वही हम दोनों में परब्रह्म है। विष्णुजी ने मानकर कहा कि हम नीचे का भाग छुवेंगे और तुम ऊपर के भाग को छुवो। विष्णुजी शूकर का रूप धारकर नीचे को चले और हम हंस बनकर ऊपर को उड़े। शिवजी ने ऐसी लीला की कि वह लिङ्ग अतललोक तक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चला गया जिससे वहाँ के लोग कृतकृत्य हो गये। अतलवालों ने शिवलिङ्ग को भले प्रकार पूजा। शिवजी की स्तुति मयदानव के पुत्र ने की। उस समय विष्णुजी वहाँ आये। शिवजी ने अपने लिङ्ग को बहुत बढ़ाया यहाँ तक कि वितललोक में पहुँचा। वहाँ के मनुष्यों ने शिवलिङ्ग की बड़ी पूजा की। इतने में विष्णुजी भी वहाँ पहुँचे पर वह लिङ्ग और नीचे को चला गया और सुतललोक में पहुँचा। वहाँ राजा बलि ने उनकी बड़ी पूजा की। जब विष्णुजी वहाँ पहुँचे तो शिवजी का लिङ्ग बढ़कर तलातल में गया। वहाँ त्रिपुरासुर ने उनकी पूजा की। जब विष्णुजी वहाँ पहुँचे तो लिङ्ग बढ़कर महातल में पहुँचा, जहाँ तक्षक आदि ने उनकी पूजा की। वहाँ विष्णुजी के पहुँचने के समय वह लिङ्ग बढ़कर रसातल में गया, जहाँ दानव के पुत्र दत्त ने उनको पूजा। विष्णुजी वहाँ गये तो शिव का लिङ्ग बढ़कर तुरंत ही पाताल में गया, जहाँ वासुकि नागादि ने उनकी पूजा की। इसी प्रकार विष्णुजी चौदहों भुवन में गये पर लिङ्ग को न छू पाये। जब लिङ्ग शेषलोक में गया तब शेषजी ने उनका बड़ी धूमधाम से पूजन किया। अन्त में वह लिङ्ग विष्णुजी को पीछे-पीछे फिरते देखकर गुप्त हो गया। विष्णुजी थककर लौट आये और शिवजी को सबसे बड़ा समझने लगे और बड़े लज्जित हुये। हे नारद! शिवजी ऐसे-ऐसे चरित्र करते हैं। तुम भले प्रकार से विचार लो।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! इस तरह तो विष्णु का अहंकार दूर हुआ। अब मेरी गति सुनो कि जब हमने चाहा कि शिवलिङ्ग के ऊपर हाथ रक्खें तो वह लिङ्ग तुरन्त भुवर्लोक को गया, जहाँ गुह्यकादि ने शिवजी के लिङ्ग की पूजा की। फिर वह लिङ्ग सूर्यलोक में पहुँचा, जहाँ कि सूर्य ने उनका पूजन किया। इतने में हम वहाँ जा पहुँचे। शिवलिङ्ग स्वर्गभवन में पहुँचा जिसका प्रमाण वेद ने सूर्यलोक से ध्रुव तक वर्णन किया है। उसके भीतर और बहुत से लोक हैं। फिर शिव मुझको पीछा करते समझ चन्द्रलोक में गये, जहाँ चन्द्रमा ने उनकी बड़ी पूजा की। इसी प्रकार वह लिङ्ग उडुलोक, शक्रलोक, भूमिलोक, बृहस्पतिलोक, सप्तर्षिलोक,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

महर्लोक, जनलोक, विष्णुलोक, स्कन्दलोक, शिवलोक और गोलोक आदि में गया, जहाँ उनकी बड़ी पूजा हुई। जब हम पहुँच जाते थे तो तुरन्त शिवलिङ्ग आगे को चला जाता था। निदान मैं अति दुःखी हुआ। तब केतकी पुष्प ने मुझसे कहा कि तुम यहाँ हो, कहाँ चले और तुम इतने घबड़ाये हुये क्यों हो ? सो हमने अपना सब वृत्तान्त वर्णन कर दिया। केतकी के पुष्प ने हमसे कहा कि हम तुम्हारी सहायता करेंगे, अब तुम लौट चलो। यह बात हम सबके सामने कह देंगे कि तुमने शिवकी मूर्ति को छू लिया है। यह बात सुनकर हम उसके साथ चले। मार्ग में सुरभी हमको मिली। उसने हमसे वृत्तान्त पूछा सो हमने सब वृत्तान्त उससे भी कह सुनाया। उसने भी हमसे प्रतिज्ञा की कि हम तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर देंगे। यह कहकर वह भी हमारे साथ चली और हम अति अहंकार से दोनों को साथ लिये हुये विष्णु के समीप आये।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हमने दोनों को साथ लिये हुये, विष्णु के पास आकर उनसे पूछा कि तुमने शिवलिङ्ग को छू लिया। विष्णु ने निषेध करके हमसे पूछा तो हमने कहा कि हाँ, वास्तव में हमने लिङ्ग को स्पर्श किया है। जो तुमको निश्चय न हो तो हमारे दोनों गवाहों से पूछ लो। दोनों ने कहा हे विष्णो ! हम पक्षपातरहित कहते हैं कि शिवलिङ्ग को ब्रह्माजी ने छू लिया है। ब्रह्माजी की विनती के अनुसार शिवने हम दोनों को तुम्हारे सामने साक्षी देने को भेजा। ऐसे दोनों के झूठ वचन सुन शिव अति क्रोधित हुये और ऊँचे शब्द से आकाशवाणी हुई कि हमारा लिङ्ग कब ब्रह्माजी ने छुआ है ? तुम दोनों धर्म के विरुद्ध क्या झूठ बकते हो ? केतकी आज से हमारे शिर पर न चढ़ेगी और हे सुरभी ! जिस मुख से तुमने यह बात कही और अपने को नीच बनाया, उसी मुख से कलियुग में तुम विष्ठा भक्षण करोगी। तब हमको ज्ञान हुआ कि जिसने हमारे अहंकार को दूर कर दिया, वही सबसे श्रेष्ठ है। फिर हमने शिव का एक और लिङ्ग देखा और नाना प्रकार के शिव के रूप दिखाई दिये। कहीं वे गणपति सहित, कहीं देवी के साथ, कहीं शिव को सब देवता और मुनीश्वर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पूजते हुये और कहीं हम तथा विष्णु पूजा करते हुये देखा। जब विष्णु और हमने आँखें खोलीं तब केवल शिव का एक स्वरूप भासित हुआ और जब शिवजी ने अपनी माया खींची तब हमने उनको अपना स्वामी जाना। दोनों ने हाथ जोड़ बड़ी स्तुति की और कहा कि हे शिवजी! हमको अपना सेवक जानकर यहीं प्रकट हो जाइये। सो शिव प्रकट हुये। उस स्वरूप का हम बखान नहीं कर सकते। जिस स्वरूप से शिवजी उस स्थान पर प्रकटे हम दोनों दर्शन करते ही कृतार्थ हो गये और स्तुति करके अपने अपराधों का क्षमापन चाहा। फिर सुरभी ने विनती की कि यद्यपि मैंने वड़ा पाप किया है पर मेरी यह इच्छा है कि मेरे शिर पर हाथ रखकर आप मेरे पाप दूर कर दें। दूसरा यह मनोरथ है मैं अपने दुग्ध की धारा से आपका अभिषेक करूँ। यह कह हम, विष्णु और सुरभी ने वड़ी प्रसन्नता से अपने परिवार और गणों को बुलाया। वहाँ पर एक बड़ी सभा स्थित हुई और सबने शिवजी की पूजा की और वार-वार शिवजी की स्तुति की तथा शिवजी को सबसे श्रेष्ठ समझा। शिवजी ने हम सबकी स्तुति सुनकर कहा कि हम केवल तुम्हारे गर्व के दूर करने को लिङ्गरूप होकर प्रकटे कि तुम्हारे अहंकार का नाश कर तुमको अप्रमेय आनन्द कृपा करें। अब आगे ऐसा दुःखदायक विचार न करना। यह दूसरा लिङ्ग जो हमने प्रकट किया है, उसकी महिमा सुनो कि इसकी पूजा से सब रोग दूर हो जावेंगे। इससे अधिक और कोई लिङ्ग अहंकार के नाश करनेवाला न होगा जो हमारे इस लिङ्ग की पूजा करेगा, उसके घर सम्पूर्ण प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि बनी रहेंगी। उसको कभी अधर्म की बुद्धि न उपजेगी जैसे कि कमल के पत्ते पर जल स्पर्श नहीं करता। उसको दोनों लोक में मनोरथ प्राप्त होंगे। यह सबको वर दे शिव अन्तर्धान हो गये और सर्व मनुष्य जय-जय कह अपने-अपने स्थान को चले गये। जो मनुष्य इस चरित्र को पढ़ेगा, वह अति प्रसन्न रहेगा और मोक्ष पावेगा। दक्षिण के लिङ्ग सम्पूर्ण हुये।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम पश्चिम देश के शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा, दर्शन और ध्यान से भक्तों को धन सम्पत्ति आदि यश कीर्ति असंख्य प्राप्त होती है और सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। द्रुपदपुरी में रामेश्वर विराजमान हैं। वहाँ शिव का दूसरा लिङ्ग कालेश्वर भी है। मथुरा में गोपेश्वर लिङ्ग है जिसकी पूजा से गोपों को अति सुख प्राप्त हुआ। कृष्ण ने भी उन्हीं की पूजा से तीनों लोक का राज्य पाया। वहाँ शिव का दूसरा लिङ्ग रंगेश्वर नामी है। कान्यकुब्जपुर अर्थात् कन्नौज के निकट मदारेश्वर शिवलिङ्ग है जिसके देखने से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं। द्वारका में द्वारकेश्वर शिवलिङ्ग है जो महाआनन्द कृपा करते हैं। अब हम उन लिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनकी महिमा तीनों लोक जानते हैं। पश्चिम समुद्र के तट पर गोकर्ण तीर्थ है, जहाँ बड़ा पाप भी नहीं रह सकता। उसके केवल स्मरण से तीनों प्रकार के ताप दूर हो जाते हैं। ब्रह्महत्या आदि बड़े-बड़े पाप जिस स्थान के केवल देखने से भाग-जाते हैं जिस प्रकार के शिव के स्थान मन्दराचल आदि हैं, इसी प्रकार गोकर्ण भी उनका स्थल है जैसा कि वेद और पुराण भी इस बात को कहते हैं। जिस तरह से कि सूर्य के उदय से अँधियारा और तारे आदि नष्ट हो जाते हैं, उसी तरह गोकर्ण के देखने से सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। दूसरा कोई स्थान ऐसा पापों के क्षय करनेवाला नहीं है। वहाँ असंख्य मनुष्यों ने तपकर मोक्ष पाया है। वहाँ हम और विष्णु आदि देवताओं समेत रहकर सेवा में लगे रहते हैं और जो फल कि और स्थानों में करोड़ों वर्ष के तप से प्राप्त होता है, वह गोकर्ण में केवल एक दिवस में मिलता है। ऐसा जो गोकर्णक्षेत्र है, वहाँ महाबलनामी शिवलिङ्ग है जिसको रावण ने पकड़ न पाया। उस लिङ्ग को गणपति ने उसी स्थान पर स्थापित किया। यद्यपि उस स्थान पर और करोड़ों लिङ्ग हैं पर सबके राजा महाबल हैं। वे पूर्ण शिवके रूप हैं। उनका मन्दिर सुवर्ण और रत्नों से अलंकृत है और चारों द्वारों पर सब देवता स्थित रहते हैं। अर्थात् विष्णु, हम, इन्द्र, आठों वसु,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मरुद्गण, विश्वेदेव, सूर्य और चन्द्रमा तारों समेत पूर्व के द्वार पर रहते हैं। मृत्यु, अग्नि अपने गणों सहित और पितृगण और चित्रगुप्त और रुद्रगण दक्षिण के द्वार पर स्थित हैं। गङ्गाआदि प्रसिद्ध नदियाँ अन्य नदियों और समुद्रसहित पश्चिम के द्वार पर रहते हैं। पवन कुवेर, चण्डी और जगन्माता भद्रकालिका उत्तर के द्वार पर विराजमान हैं। यह सम्पूर्ण शिव को अपनी पूजा, सेवा और उत्सव से प्रसन्न करते हैं। चित्रसेन और विश्वावसुआदि सर्व गन्धर्व महाबल लिङ्ग का प्रतिदिन यश गाते हैं। पूर्वचित्ती, मेना, घृताची और रम्भा आदि नृत्य से शिवको प्रसन्न करती हैं। क्रतु, वशिष्ठ, कश्यप, याज्ञवल्क्य, विकम्प, अंङ्गिरस, जैमिनि, भरद्वाज, विश्वामित्र, भृगु, राजऋषि और मुनि सीमन्त आदि तथा अत्रि मरीचि, दक्ष और हे नारद! तुम तथा संन्यासी, बनचारी और सब आश्रमों के उत्तमोत्तम मनुष्य उनकी सेवा में लगे रहते हैं। महाबललिङ्ग सर्वोपरि है। जिनकी सेवा देवता करते हैं और सब मिल उनको प्रणाम करते हैं। नाच और गाने से उनको हर्ष देते हैं। वे सब देवताओं के स्वामी हैं। सिवाय इनके और करोड़ों शिवलिङ्ग तथा तीर्थ वहाँ हैं जिनकी सेवा से बड़े-बड़े दुःख और पाप नष्ट होते हैं। आप वेद उनकी महिमा, वर्णन करते हैं। महाबललिङ्ग का रङ्ग कृतयुग में श्वेत, त्रेता में लाल, द्वापर में पीला और कलियुग में श्याम होता है। सो युग के अनुसार महाबललिङ्ग का उसी रङ्ग में ध्यान करना चाहिये। ब्रह्महत्यादि पाप भी महाबल के दर्शन से दूर हो जाते हैं और दोनों लोक में सिद्धि प्राप्त होती है। जो मनुष्य परस्त्री से भोग करते हैं और अनाचारी, दुश्शील, कृपण, नपुंसक, मूर्ख, वितण्डावाद करनेवाले, चोर, कामी और जुआ खेलनेवाले आदि जो बड़े-बड़े पापी हैं, वे भी महाबल के दर्शन कर पापों से शुद्ध हो जाते हैं। वहाँ अगस्त्यमुनि ने तप किया। सनकादिक ने भी उसी स्थान पर तप किया है। नैर्ऋति के पुत्रों ने भी उसी शिवलिङ्ग की पूजा कर राज्य पाया और वह्नि भी उसी स्थान पर तप करके दिक्पति हुआ। कामदेव ने उसी स्थल पर तप करने से संसार को फँसाया। शिशुमार, भद्रकालिका, दुमुर्ख मुनि, नाग, इलावर्त,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गरुड़, रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण आदि सैकड़ों भक्तों ने उनकी सेवा कर अपना-अपना मनोरथ पाया। हम कहाँ तक उनका वर्णन करें। उस क्षेत्र में असंख्य लिङ्गस्थापन किये हुये हैं जो स्थापन करनेवालों के नामों से प्रसिद्ध हैं। उनकी पूजा से परमपद प्राप्त होता है। जिस तरह कि गोकर्णक्षेत्र अति पवित्र है, उसी प्रकार महाबल शिव की अप्रमेय महिमा है। जो कोई मनुष्य वहाँ जाकर चतुर्दशी का व्रत करे, वह अति सुगमता से अपनी कामना पाता है। वहाँ मित्रसह ने जाकर हत्या से छुट्टी पाई और वह मुक्त पा पापों से रहित हुआ।

ग्यारहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि आप मित्रसह का वृत्तान्त वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि यह महाबल शिवलिङ्ग का चरित्र मित्रसह के वृत्तान्त समेत गुप्त रखने के योग्य है जिसको गौतम ने प्रकट किया। प्रकट हो कि गतसमय में इक्ष्वाकुवंश में मित्रसह राजा बड़ा धर्मात्मा हुआ। वह बाणविद्या में अतिप्रवीण, बड़ावीर, धीर, बलवान्, वेद पुराण का ज्ञाता, धर्मरूप, शुद्ध मार्ग चलनेवाला, दयालु, सब राजाओं में शिरोमणि, इन्द्रियजित् और केवल अपनी स्त्री से प्रेम करनेवाला था। एक दिन उसको आखेट का व्यसन हुआ। उसने वन में जाकर भली भाँति शिकार किया और सिंह आदि बहुत से पशुओं को मारा जिनके शब्द चारों ओर पूरित हुये। राजा ने ऐसी निर्दयता से प्रसन्न हो शुभमार्ग भुला दिया। वहाँ वन में एक निशाचर रहता था। वह राजा की दृष्टि में आया। राजा ने उसको मार डाला। उसके भाई को बड़ा दुःख हुआ। उसने अपने मन में समझा कि यह राजा तो देवता और दैत्य दोनों का स्वामी है। मैं क्योंकर इसको जीतूँ क्योंकि यह बड़ा वीर है, युद्ध से जीता न जावेगा, इसे छल से मारना उचित है। क्योंकि इसने मेरे भाई को मार डाला है। यह शोच वह मनुष्य का रूप धार राजा के पास आया और हाथ जोड़ शिर झुका राजा से कहा कि हे महाराजा सूर्यवंश के शिरोमणि! मैं इस समय आपकी शरण में आया हूँ, मेरी रक्षा करो। मैं दीन ब्राह्मण हूँ। राजा ने उसे मित्रों के समान समझ अपना पाककर्ता बनाया और शिकार खेल उसको साथ लिये हुये अपनी राजधानी को लौट गया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उस समय राजा की रानी मदयन्ती जो दमयन्ती के समान थी, उसने सब अपने सम्बन्धियों की ज्यवनार की और पहिले अपने गुरु को खिलाने लगी। सो उसी राक्षस ने भोजन में आमिष अर्थात् नरमांस मिलाकर गुरु के सामने रख दिया जिसको राजा ने न जाना पर गुरुवशिष्ठ जान गये और राजा पर बड़ा क्रोध किया और कहा कि तुझको धिक्कार है कि हमारे सामने मनुष्य का मांस रक्खा। तुम धूर्त हो जोकि तुमने राक्षसों का भोजन हमारे सामने परसाया, इससे तुम राक्षस होकर अपने कर्म का फल पाओगे। सो राजा ने ध्यान करके देखा कि यह छल राक्षस पाककर्त्ता ने किया है तो राजा ने निर्दोष होने के कारण कोपित हो विचार किया कि पाप बिन वशिष्ठ ने वृथा ही हमको शाप दिया। हम भी वशिष्ठ को शाप देवेंगे। यह विचार शाप की इच्छा से उन्होंने हाथ में पानी लिया पर रानी ने विनय की कि गुरु चाहे अपना कितना ही क्रोध करे पर आपको क्रोध न करना चाहिये। यह बात वेद कहता है। उसने राजा के चरणों पर गिरकर बहुत समझाया कि गुरु को शाप देना उचित नहीं है। निदान राजा चुप हो रहा और गुरु के शाप से तुरन्त राक्षस हो वन में चला गया तथा कल्माषपाद के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। वह महाभयंकर भूत हो बहुत से जीवों को खाने लगा। कुछ उसको धर्म अधर्म का स्मरण न रहा। इस दशा में एक दिन कल्माषपाद ने एक मुनि को जो अपनी युवा स्त्री से भोग करता था, वैसे ही पकड़ लिया जैसे शेर शशे को पकड़ लेता है। स्त्री अपने पति को राक्षस के पंजे में देख मूर्च्छित हो गई और कहा हे राजन्! तुम क्या कर्म करते हो? तुम बड़े धर्मात्मा राजा थे। तुम्हीं राजा होकर अपनी प्रजा पर अनीति करते हो। क्या दया को तुमने भुला दिया है? तुम्हीं अन्यायियों के समान होकर ब्रह्महत्या करते हो तुम हमारे पति को छोड़ दो नहीं तो मेरा जीना कठिन है क्योंकि बिना पुरुष के स्त्री का जीना दुर्लभ है। मुझको यह पति प्राण से भी अधिक प्रिय है। बिना उसके हमारा जीना नहीं हो सकता। हे राजन्! अपनी कृपा ही से मेरे पति को छोड़ दो। यह ब्राह्मण युवा, वेदज्ञ, तपस्वी, पापरहित और दयावान् है। इसके छोड़ने से तुमको बड़ा फल प्राप्त होगा। अभी हमारा विवाह हुये थोड़े दिन बीते हैं। यद्यपि स्त्री बहुत रोई-पीटी पर राजा को कुछ भी दया न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उपजी और उसका शिर तोड़ उसको निगल गया। उसकी स्त्री ने चाहा कि सती हो जावे, इस इच्छा से उसने चिता बना राजा को शाप दिया कि हे राजन्! जब तू अपनी स्त्री से भोग करना चाहेगा तो तू उसी समय तुरंत मर जावेगा। यह कह वह तो जल गई और देवलोक में अपने पति के साथ भोग भोगने लगी। हे नारद! सती होना बड़ा धर्म है और राजा भी शाप की अवधि भोग मुख्यरूप से अपने घर आया। पर रानी ने मुनि की स्त्री के शाप देने का हाल जाना तो जब राजा ने मैथुन करना चाहा रानी ने निषेध किया क्योंकि वह विधवा होने के दुःख भली भाँति जानती थी। निदान राजा मैथुन बिना अन्य भोगों को वृथा समझ राज्यकाज छोड़ वन में चला गया और वन में फिरता रहा। संसार भर राजा बिना अति दुःखी रहा। सो राज्य के मन्त्रियों ने जाकर गुरु से सब वृत्तान्त कहा और यह भी कहा कि अब सूर्यवंश अस्त हुआ जाता है। यह आपके अनुग्रह का समय है। सो वशिष्ठ ने आकर सूर्यवंश के स्थिर रहने के निमित्त रानी से लड़का उपजाया जिसका नाम अंशुमान है और अंशुक हुआ जिससे संसार भर के मनोरथ पूरे हुये। कल्माषपाद ने वन में एक स्त्री को देखा जो राजा के पीछे-पीछे बड़े क्रोध से चलती थी और वह महाभयंकर रूप ब्रह्महत्या के नाम से प्रसिद्ध थी। वह ब्राह्मण के वध करने के कारण रूप धार राजा के पीछे रहा करती थी। राजा ने इस बात को जान बड़े-बड़े तीर्थों की परिक्रमा की कि वह दूर हो जावे और बड़े-बड़े पवित्र मन्त्रों का जप किया। यद्यपि बहुत से उपाय किये पर कुछ लाभ न हुआ। तब राजा ने मिथिलापुरी में जाकर गौतम से भेंट कर प्रणाम किया और अपना सब वृत्तान्त कहा। गौतम ने महाबल शिवलिङ्ग की पूजा के लिये आज्ञा दी। सो राजा ने तुरन्त स्नान कर गोकर्ण महाबललिङ्ग की पूजा की। राजा की ब्रह्महत्या छूट गई। उसने शिव सेवा कर परमपद पाया।

बारहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! इस कथा को विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्मा बोले कि जब राजा सब मन्दिरों और तीर्थों में घूम आये और ब्रह्महत्या ने पीछा न छोड़ा तो वह मिथिलापुर को गये और नगर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के किनारे बैठकर अति चिन्ता में मग्न हुये। उसी समय देखा कि गौतम-मुनि चले आते हैं जो शिष्य गणों में सुशोभित महातेज स्वरूप हैं। जब वे राजा के निकट पहुँचे तो राजा ने प्रणाम किया। गौतम ने भी राजा की बड़ी प्रशंसा कर पूछा कि तुम और तुम्हारी प्रजा कुशल से तो हैं? यहाँ क्यों आये हो? तुम मुझको बड़े दुःखी भासित होते हो। अपना वृत्तान्त वर्णन करो। राजा ने कहा कि सब कुशल है पर मुझको ब्रह्महत्या लगी है। अर्थात् हमने एक ब्राह्मण को मार डाला। सो वही हत्या पिशाची के रूप से मुझे हर समय दुःख देती है। वह किसी प्रकार मेरा पीछा नहीं छोड़ती। मैंने यज्ञ, हवन, तीर्थ, दान, व्रत, मन्त्र, जप, ध्यान और देवपूजनादि बहुत कुछ किया पर वह हत्या नहीं छोड़ती। अब आप कहिये कि आप इस समय कहाँ से आते हैं? क्योंकि आपके मुख से विदेश का श्रम प्रतीत होता है। आप हमारे पाप कृपा करके दूर कर दीजिये। गौतम ने कहा कि धन्य हो जो तुमने हमारे सामने अपना पाप वर्णन किया। तुम कुछ भय मत करो। सर्व प्रकार शिवजी अपने भक्तों के रक्षक हैं। शिवजी ने अपने भक्तों के पाप दूर करने को पृथ्वी में लिङ्गरूप प्रकट किया है। वे गोकर्ण में लिङ्ग विराजमान हैं जिनको महाबल कहते हैं उनकी महिमा वेद बखानते हैं। उनके समान पापों का क्षय करनेवाला और कोई नहीं। इसी प्रकार गोकर्णतीर्थ पापों के दूर करने में सबसे श्रेष्ठ है। वहाँ तुम जाकर पहले गोकर्ण में स्नान कर शिव महाबललिङ्ग की पूजा करो। हम अभी वहाँ से चले आते हैं। वहाँ बड़ा भारी मेला हुआ करता है। शिवरात्रि शिवजी को सब व्रतों से प्रिय है। उसके समान दूसरा व्रत नहीं जैसा कि वेद कहते हैं। इस व्रत को करके चाण्डाल भी मुक्ति पाता है। वह शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को होती है। व्रत करने के उपरान्त रात भर जागता रहे और शिवजी के लिङ्ग की पूजा करे। तण्डुल विल्वपत्र शिवजी पर चढ़ावे और प्रणाम करके बारम्बार दण्डवत् करे। यह शिवरात्रि का शिवव्रत शिवजी की बड़ी कृपा से मिलता है। सो देवता और सब मुनि आदि गोकर्ण में गये थे और सर्वदेशों से स्त्री, पुरुष, वृद्ध, बालक, युवा समूह के समूह आये। हमने अपने भी शिष्यों समेत जाकर महाबल की पूजा से बड़ा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आनन्द उठाया है और गोकर्ण में स्नान कर दान दिया। महाबल की पूजा और जागरण का सर्व मनुष्य अपने-अपने स्थानों को लौट गये। वहाँ राजा जनक भी गये थे। सो जनक की विनय के अनुकूल हम यहाँ आये हैं क्योंकि उनको यज्ञ करना है। हम इस समय वहाँ से आते हैं और मार्ग में बड़ी आश्चर्य की बात देखी है।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारदजी ! गौतम के इस वचन को सुनकर राजा ने पूछा कि जो बात तुमने आश्चर्य की मार्ग में देखी है, वह वर्णन करो। गौतम बोले कि लौटने के समय मार्ग में एक तालाब के ऊपर हम स्थित हुये और स्नान आदि नित्यकर्म से निश्चिन्त होकर बैठे। उसी समय एक स्त्री को जो चाण्डाली के समान थी, आई। उसके कुष्ठ भी था और शरीर भर में लहू तथा चरबी भरी हुई थी। कृमि आदि उसको खाये जाते थे। हमने जाना कि यह स्त्री मरनेवाली है। यही बात हम देख रहे थे कि एक विमान जो सूर्य के समान प्रकाशमान और जिसमें शिवजी के गण बैठे हुये जो परिपूर्ण लक्षणों से युक्त थे मानों वह शिवजी के समान ही थे, उतरा। गणों को देख हमने प्रणाम करके पूछा कि तुम कहाँ आये हो ? उन्होंने कहा कि यह स्त्री जिसको तुम देखते हो, उसके लेने को आये हैं। यह सुन बड़े अचम्भे से मैंने पूछा कि यह स्त्री तो बड़ी पापिनी भासती है। बड़े आश्चर्य की बात है कि इस स्त्री लेने को तुम आये हो। क्योंकि इसकी दशा से यह बात पाई नहीं जाती कि कोई कर्म इसने शिवपुर के जाने के योग्य किया होगा। यह सुन शिवगण बोले कि यह स्त्री पहिले जन्म में एक ब्राह्मण की स्त्री थी। उसका नाम सुमुनि था। जब इसका पति मर गया तब यह धर्म छोड़ नाना प्रकार के पाप करने लगी। यहाँ तक कि जाति-पाँति से निकाली गई और संस्कारवश एक शूद्र के यहाँ बैठ गई। एक दिन इसका पुरुष कहीं बाहर गया और इसने मद्य पानकर मांस खाने की इच्छा से एक गौ के बच्चे को बकरे के सन्देह से मार डाला। जब देखा कि यह तो बकरी का बच्चा नहीं है, बछड़ा है तो भी जान-बूझकर "शिव-शिव" रटते उस बछड़े का आधा शरीर खा गई और आधा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जो शेष रहा उसको इधर-उधर फेंककर प्रसिद्ध किया कि सिंह इसको खा-गया है। निदान नाना प्रकार के पापकर अन्त में मरकर यमराज के यहाँ गई। यमराज ने नरक के दण्ड को भी छोटा समझ उसको चाण्डाल के घर में जन्म दिया। सो वह एक डोम के घर उपजकर जन्म की अन्धी और कोढ़िन हुई। सब भाई बन्धुओं ने उसको छोड़ दिया और किसी ने विवाह उससे न किया। थोड़े दिनों में उसके माता-पिता भी मर गये। वह भूखी-प्यासी इधर-उधर फिरने लगी। ऐसी दशा में बालकपन और युवा अवस्था बीत गई। बुढ़ापे में इसने बड़ा दुःख पाया। संयोग से जब मनुष्य गोकर्ण को चलने लगे तो उनके साथ यह स्त्री भी गई कि उनके साथ कुछ खाने-पीने का ठिकाना लगे। पर उसको कौन देता था? जिस दिन कि शिवरात्रि-थी, उस दिन वह भी गोकर्ण में पहुँची और सब लोगों से माँगती थी कि मुझको भी कुछ भोजन-वस्त्र दो। यह सुन एक मनुष्य ने उसके दो हाथों में बेलपत्र फेंक दिया। उस डोमिनी स्त्री ने बेलपत्र को कुछ खाने की चीज न जानकर धरती में फेंक दिया। अकस्मात् वह बेलपत्र शिवजी पर गिरा और वह रात भर इसी तरह माँगती रही पर कुछ न मिला। वह रात भर इसी तरह जागती रही। जब सब मनुष्य प्रभात को स्नानकर महाबल शिवलिङ्ग की पूजाकर अपने-अपने घरों को गये तब वह स्त्री निराश होकर उठती, बैठती, रोती, पीटती लौटकर वहाँ पहुँची और मूर्च्छित होकर पृथ्वी में गिर पड़ी। इतने में सदाशिव ने प्रसन्न होकर एक विमान उस स्त्री के लेने को भेजा। अब वह स्त्री शिवलोक को जाती है क्योंकि पहिले जन्म में उसने शिव-शिव कहा था और इस जन्म में शिवरात्रि के दिन जागरण-कर शिवलिङ्ग को बिल्वपत्र से पूजा। श्रीसदाशिवजी का नाम अति शुभ हैं। यह नाम पापों को दग्धकर भस्म कर देता है। यह नाम लेकर बड़े-बड़े पापी परमपद पाते हैं। बहुतों ने शिवरात्रि व्रत किसी मनोरथ बिना कर शिवपूजा और जागरण करने से कैलास पाया है। शिवरात्रि की महिमा कौन वर्णन कर सकता है। निदान शिव के चारों गणों ने उस स्त्री को तेज से पूर्ण कर दिया जिससे उस स्त्री का अति सुन्दर स्वरूप हो गया और उसी विमान में चढ़ाकर कैलास में ले गये। वहाँ वह गिरिजा की सखी हो गई।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ऐसी बड़ाई गोकर्णक्षेत्र और महाबल लिङ्ग की है। यह कह गौतम चले गये और वह राजा तुरन्त गोकर्ण में आया। जिस तरह कि गौतम ने शिवलिङ्ग की पूजा बताई थी, उसी तरह मित्रसह राजा ने सब कार्य किये। गोकर्ण के सब तीर्थों में स्नान किया और नाना प्रकार का दान दिया। महाबल लिङ्ग की पूजाकर शिवरात्रि व्रत का धारण किया और रातभर जगकर बड़ा उत्सव मनाया। सो राजा की हत्या छूट गई जिससे वह अति प्रसन्न हुआ और शिवजी को परमपद मिला। यह मित्रसह राजा और महाबललिङ्ग की कथा सर्व रोगी को नष्ट करती है। इस चरित्र के पढ़ने और सुननेवाले प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद को जाते हैं।

चौदहवाँ अध्याय।

उत्तर के शिवलिङ्गों का वर्णन।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! अब हम उत्तर के शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं मन लगाकर सुनो। नैमिषक्षेत्र जो प्रसिद्ध है, वहाँ ललितेश्वर का शिवलिङ्ग बड़ा आनन्ददायक है जिसकी पूजा देवता और मुनि आदि करते हैं। यह लिङ्ग ललिताजगदम्बा ने स्थापित किया था और वहीं पर ललिता ने बड़ी कठिनता से तप किया। उन्हीं की सेवा से उन्होंने अपना मनोरथ पाया था। इस लिङ्ग की पूजा से असंख्य मनुष्यों को मुक्ति मिली है। वहाँ एक और दधीचीश्वर शिवलिङ्ग है, उसको दधीचि मुनि ने स्थापित किया था। यह दधीचि शिव के बड़े भक्त हैं जिन्होंने क्षुवथमुनि को जीता था। इनका वृत्तान्त हम आगे वर्णन कर चुके हैं। जो मनुष्य दधीचीश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करे, वह किसी समय में किसी से न हारे और सदा निर्भय रहकर हृष्ट-पुष्ट रहे। उसके शरीर में कोई शस्त्र और घाव न लगे। अब एक शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनकी पूजा से पूजनेवाला मनुष्य प्रसन्न हो जाता है। जो हमने गोकर्णक्षेत्र का वर्णन किया था, वहाँ चन्द्रभाल नामी शिव का लिङ्ग है जिसको रावण कैलास से लाया था और अपने घर लिये जाता था पर शिव वहीं रह गये, उसके साथ न गये। वैद्यनाथ जो उसी लिङ्ग के साथ आये थे, वह चिताभूमि में स्थित

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हो गये। दोनों लिङ्ग रावण के साथ न गये। यहाँ इन लिङ्गों का संक्षेप से वर्णन करते हैं पर आगे इसी खण्ड में विस्तार से वर्णन करेंगे। एक समय रावण ने हिमालय पर बड़ा तप किया और शिव का लिङ्ग स्थापित-कर बड़ा होम किया पर शिव प्रसन्न न हुये। तब रावण ने अपने नव शिर काट शिवलिङ्ग पर चढ़ा दिये और चाहा कि दशवाँ शिर भी काट कर चढ़ावें कि शिव प्रसन्न होकर प्रकट हुये और कहा कि वर ले लो। रावण ने कहा कि मुझको ऐसी शक्ति कृपा करो कि तुमको ले जाकर मैं अपने नगर में स्थापित करूँ। शिव बोले कि अच्छा हमारे लिङ्ग को ले जाकर स्थापित करो पर जो मार्ग में तुम किसी स्थान पर हमको रख दोगे तो हम वहीं रह जावेंगे। तब रावण ने चतुरता से कहा कि अच्छा पर दो रूप धारण करो। हम मञ्जूषा में रखकर ले जावेंगे। यह सुन शिवलिङ्ग के दो रूप हो गये सो रावण दोनों को मञ्जूषा में करके ले चला। मार्ग में शिव ने यह माया की कि रावण को बड़े वेग से लघुशङ्का हुई जिसे रावण रोक न सका। उसने देखा कि एक गोप पशुओं को चराता है उससे रावण ने कहा कि मञ्जूषा ले लो, मैं मूत्र करूँ। अहीर ने कहा कि मैं एक मुहूर्त भर लिये रहूँगा, फिर मैं पृथ्वी में रख दूँगा। यह कह गोप ने मञ्जूषा ले ली और रावण दो घड़ी तक मूत्र करता रहा पर उसका मूत्र न रुका। अहीर मञ्जूषा को अधिक न रोक सका और उसने उसको धरती में रख दिया। सो दोनों लिङ्ग पृथ्वी में उसी स्थान पर स्थित हो गये। रावण उनको बड़े बल से उठाने लगा जब वह बल करके थकित हुआ तो उसने अपने अँगूठे से शिवलिङ्ग को दबाया और निरुपाय हो अपने घर चला गया। दोनों लिङ्ग वहीं रह गये जो लिङ्ग पीठ की ओर था, वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध होकर बारह ज्योतिर्लिङ्गों में गिना जाता है और चिताभूमि में विराजमान हैं। अगले तरफ जो लिङ्ग था, वह चन्द्रभाल के नाम से विख्यात होकर गोकर्ण क्षेत्र में स्थित हुआ। उसकी अप्रमेय महिमा है। सब जीव चन्द्रभाल की बड़ाई तीनों लोक में जानते हैं। वहाँ शिवरात्रि को बड़ी भीड़ होती है, देवता, मुनि और सिद्ध सब आते हैं। सब देशों से चारों वर्ण वाले समूह के समूह आते हैं जिनके पाप छूट जाते हैं। सर्व रोग नष्ट

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होते हैं। वह निष्पाप होकर परमपद पाते हैं जैसा कि वेद कहता है और भी वहाँ पर असंख्य लिङ्ग हैं जो दोनों लोक में आनन्द देते हैं। उनमें यह विचित्र सिद्धता है कि माघमास की कृष्ण चतुर्दशी को सब सिंह और हाथी आदि चार कोस की दूरी तक के वहाँ से भाग जाते हैं, और भी दुःखदायी जीव बन के चले जाते हैं। दशमी के दिन से तीनों प्रकार की पवन चलने लगती है और शिव के मन्दिर के पास आकर बन्द हो जाती है तथा नाना प्रकार के बाजे सुनाई देते हैं। इसी तरह बड़े-बड़े बादल आकर उसी स्थान पर अच्छे-अच्छे शब्द करते हैं। वह आश्चर्य की बातें देख सब जय-जय शब्द कहते हैं। सब स्त्री और पुरुष बड़ा आनन्द और धन्यवाद करते हैं। सब मनुष्य भलीभाँति नाचते-गाते हैं। चतुर्दशी पर्यन्त शिव वहाँ विराजमान रहते हैं जिनकी पूजा सब लोग करते हैं। वहाँ शिवरात्रि व्रत को जागरण करके सब मनोरथ मिलते हैं। यह कथा जो कोई पढ़े और सुनेगा, वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में परमपद पावेगा।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम उत्तर के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध शिवलिङ्गों का वर्णन करते हैं जिनके दर्शन से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं और सब मनोरथ पूरे होते हैं जिनकी पूजा से कोई दुःख और पाप नहीं रहता। उनमें से एक तीर्थ पञ्चप्रयाग है जहाँ स्नान करने से तुरन्त ही सर्व प्रकार के दुःख जाते रहते हैं। वहाँ शिव के लिङ्ग हैं, उनका हम वर्णन करते हैं। अर्थात् सुरप्रयाग में ललितेश्वर और देवेश्वर दो लिङ्ग शिव के हैं जो प्रसन्न होकर अपने भक्त को कृतार्थ कर देते हैं। उसके उत्तर ओर रुद्रप्रयाग में रुद्रेश्वर शिवलिङ्ग है जिसकी पूजा से सम्पूर्ण पाप दूर हो जाते हैं। कनखलक्षेत्र में जहाँ कि शिव ने दक्षप्रजापति के यज्ञ का विध्वंस कर फिर प्रसन्न हो यज्ञ पूर्ण कराया और उसी स्थान पर लिङ्ग स्वरूप होकर स्थित हुये और दक्षेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी बहुत बड़ी महिमा है जिनकी पूजा से कोई दोष और पाप नहीं रहता। उसके निकट सतीकुण्ड प्रसिद्ध है जिसके ऊपर बिल्वेश्वर नाम शिवलिङ्ग है। उनकी पूजा से धर्म की वृद्धि होती है और बिल्वपर्वत के ऊपर जो बेल का वृक्ष है, उसके नीचे बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग स्थित हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उनके केवल दर्शन से मनुष्य शिव समान हो जाता है। दक्षेश्वर के निकट नील शैल के ऊपर नीलेश्वर शिवलिङ्ग है। वह लिङ्ग भक्ति और प्रीति का बढ़ानेवाला है जिसके देखने से पाप दूर होकर बड़ी प्रसन्नता प्राप्त होती है। यह लिङ्ग गङ्गाजी के तट पर है, वहाँ स्नान करना चाहिये। उसी जगह भीमचण्डिका का स्थान है, उसके निकट उत्तम कुण्ड है। उसमें स्नान करने से बड़ा आनन्द और भक्ति प्राप्त होती है। आज तक वहाँ शङ्खध्वनि सुनाई पड़ती है पर पापी लोग उसको नहीं सुनते। पूर्वकाल में असमचित्तनामी ब्राह्मण बड़ा पापी हुआ है। उसने किसी शिव के भक्त से उपदेश पाकर शिव के नाम का जप किया। सो शिव ने प्रसन्न होकर उसको अपना गण बनाया। उसका नाम नील रख लिया और आप भी नीलेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये। तब से नीलेश्वर शिवलिङ्ग की बड़ी महिमा हुई। वे दोनों लोक में हर्ष देते हैं। बिल्वेश्वर शिवलिङ्ग के निकट त्रिमूर्तेश्वर शिव का लिङ्ग है। वहाँ रक्तजल तीर्थ अति पवित्र है। जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करके शिव की पूजा करे, वह परमपद पावे। उसके निकट नन्दीश्वर शिव का लिङ्ग है और शिवतीर्थ भी वहीं है। जो मनुष्य शिवतीर्थ में स्नान करके नन्दीश्वर लिङ्ग को पूजता है, वह दोनों लोक में आनन्द पाता है। उसी के निकट भद्रेश्वर शिव का लिङ्ग है जिसकी पूजा से मनुष्य शिव का गण हो जाता है। उसी जगह भैरवेश्वर शिवलिङ्ग है जिसकी सेवा से बड़ा सुख होता है। फिर शालिहोत्रेश्वर शिव का लिङ्ग है जिनकी सेवा से शालिहोत्र ने सब विद्या पाई। कौमुदीतीर्थ के तट पर चन्द्रेश्वर शिवजी का लिङ्ग है जहाँ कि चन्द्रमा ने शिव की पूजा कर शिवजी के भाल में स्थान पाया। कुब्जाम्र तीर्थ और पूर्ण तीर्थ जो गङ्गाजी के बीच में हैं, उस स्थान पर गङ्गा के बीच में सोमेश्वर शिवजी का लिङ्ग है। उसकी पूजा से दोनों लोक में जीव प्रसन्न रहकर शिवजी का गण बन जाता है। अग्नितीर्थ में आग्नीश्वर शिवजी का लिङ्ग है जिसकी पूजा से कभी मुख्य शक्ति कम नहीं होती। वायुतीर्थ में पवनेश्वर शिवजी का लिङ्ग सर्व पापों के क्षीण करनेवाला है। वहाँ गङ्गा के पश्चिमी तट पर तपोवन है जहाँ कि लक्ष्मण ने बड़ा तप किया था और शिवजी की कृपा से पवित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हुये थे। इस कथा का संक्षेप यह है कि जब रामचन्द्र लङ्का जीत चुके और सीता तथा लक्ष्मण समेत घर आये तो लक्ष्मणजी को क्षयी रोग उपजा क्योंकि उन्होंने मेघनाद को मारा था। सो वशिष्ठमुनि के उपदेश के अनुसार लक्ष्मण तपोवन में गये और बारह वर्ष तक बिन भोजन किये तप करते रहे। फिर सौवर्ष पर्यन्त वनफल खाकर तप किया। फिर सौ वर्ष वायु भक्षण कर षडाक्षरी मन्त्र जपते रहे और एक चरण से धरती में खड़े होकर शिव का ध्यान किया। सो शिव ने प्रसन्न हो वहाँ पहुँच लक्ष्मण से कहा कि अब तुम शुद्ध हो गये। अब यह रोग तुमको नहीं रहेगा। यह कह शिवजी तो अन्तर्धान हो गये और लिङ्गरूप वहीं स्थित हुआ। उसका नाम लक्ष्मणनाथ विख्यात हुआ जिसके दर्शन से कोई रोग नहीं रहता और लक्ष्मण भी शेष का शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित हो गये। यह थोड़े लिङ्गों का जो मायाक्षेत्र में हैं, हमने वर्णन किया। अब और सुनिये कि जो नैपाल में पशुपतिनाथ शिव का लिङ्ग है, वे महिष भाग अर्थात् भैंसे के शरीर का एक भाग है जिनकी महिमा वेद बखानते हैं। इनका विस्तारपूर्वक वृत्तान्त हम आगे लिखेंगे। यह पशुपतिनाथ भक्तों को बड़ा आनन्द देनेवाले हैं। दूसरा शिव का लिङ्ग नैपाल में मुक्तिनाथ है जिनकी पूजा से बड़ा आनन्द मिलता है। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने चारों दिशा के लिङ्गों का वर्णन किया, अब और क्या सुनोगे?

सोलहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद बोले कि हे ब्रह्माजी! शिवलिङ्ग की पूजा किस समय में आरम्भ हुई, मैं इसको विस्तार से सुना चाहता हूँ। ब्रह्माजी बोले कि लिङ्ग की पूजा सनातन से है, हम उसका प्रारम्भ नहीं बता सकते। यह बात वेद कहते हैं पर हम कल्पभेद के अनुसार जितना कि सुना है, कहते हैं; मन लगाकर सुनो। दारुनामी वन जो प्रसिद्ध है, वहाँ शिव के बहुत से भक्त रहा करते थे। मुनि आदि भी वहाँ रहकर तीनों काल शिवपूजन करते और शिव का नाम हर समय जपते तथा हवन आदि हर समय करते। इसी प्रकार उनको बड़ा समय बीता और वह समय आया जिसमें उनके ऊपर शिव प्रसन्न हो प्रकट हों। सो एक दिन मुनि आदि वन के बाहर जीविका

Jagannáth Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के निमित्त निकल गये। सदाशिव सती के वियोग में रोते, चिल्लाते, नंगे, भस्म रमाये, सहस्रों कामदेव के समान सुन्दर गौर अङ्ग बड़ी छवि से वहाँ पहुँचे। पहिले तो मुनियों की स्त्रियाँ वहाँ से भाग गईं पर जब ध्यान से सदाशिवजी को अवलोकन किया तो शिवजी की माया से सर्व स्त्रियाँ कामवश हो घरों से बाहर निकल आईं और शिव के समीप मैथुन के निमित्त खड़ी हो गईं। फिर कामदेव के वेग से मूर्च्छित हो शिवजी के शरीर में लिपट गईं। इतने में सब मुनि आदि बाहर से आकर इस दशा के देखने पर क्रोध में पूर्ण हुये और शिवजी को मनुष्य के समान जान यह शाप दिया कि तेरा लिङ्ग इसी समय गिर जावे। यह शाप देते ही तुरन्त शिवजी का लिङ्ग कटकर धरती में गिर पड़ा और शिवजी की माया से वह लिङ्ग तीनों लोक में भ्रमण कर सबको जलाने लगा। सो तीनों लोक दुःखी हो उन मुनियों समेत मिलकर हमारे पास गये और कहा कि यह क्या चरित्र होता है कि सब सृष्टि जली जाती है। हमने ध्यान कर सब हाल जान मुनियों से कहा कि मूर्ख होकर जो काम किया है, उसका फल यह है। क्या तुम नहीं जानते कि वेद कहता है कि जो दिन में अपने घर आवे उसी का नाम अतिथि है। उसको प्रसन्न किये बिना फेर देना बड़ा पाप है। लौटानेवाले मनुष्य के सब शुभ कार्य नष्ट हो जाते हैं। शिवजी तुम्हारी परीक्षा के निमित्त तुम लोगों के घर गये थे पर तुमने उनको नहीं पहिचाना और शाप दिया। वही शिवजी का लिङ्ग तीनों लोक को जलाये देता है। शिवजी की अप्रसन्नता से कहाँ कुशल है। हम और विष्णु भी उनके सेवक हैं। जब तक कि वह शिवलिङ्ग स्थित न हो जावेगा तब तक सृष्टि में आनन्द न होगा। यह सुन सब मुनि आदि शिवजी की शरण में गये जिसमें हम और विष्णु भी थे। निदान हम सबकी स्तुति सुन शिवजी ने प्रसन्न हो कहा कि वर माँगो। हम सबने विनती की कि लिङ्ग को रोक कर शान्त करो। शिवजी बोले कि जो गिरिजा योनि रूप से लिङ्ग को धारण करे तो हम शान्त होंगे। गिरिजा के सिवाय तीनों भुवन में और कौन है जो हमारे लिङ्ग को रोक सके। यह सुन सब देवता आदि ने गिरिजा को प्रसन्न किया जिसने योनिरूप हो शिवजी का लिङ्ग धारण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किया। उससे सबको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और सबने बड़ी स्तुति की। पर संसार के माता-पिता को नग्न देख किसी ने उनकी पूजा न की। पर जब शिवजी ने आज्ञा दी कि हमारे लिङ्ग की पूजा करो तो सबने उसी दशा में पूजा की और उसी दिन से लिङ्ग पूजने की चाल हो गई।

सत्रहवाँ अध्याय।

नारद बोले अब मुझको अन्धकेश्वर शिवलिङ्ग की कथा सुनाओ कि क्योंकर वह अन्धक के नाम से जो उनका शत्रु था, प्रसिद्ध हुये। ब्रह्माजी बोले हे नारद! युद्धखण्ड में हम विस्तार से अन्धकेश्वर की कथा कह चुके हैं कि जिस तरह शिवजी ने अन्धक को अपने त्रिशूल से छेद कर फिर उसी शरीर से उसको अपना गण बना लिया और वह सदाशिवजी के निकट रहकर सेवा में रहता है। यह कथा एक कल्प की है। अब जो दूसरे कल्प में हुआ उसको हम कहते हैं कि अन्धक कच्दैत्य से उपजा था। उसने हमारा बड़ा तप कर हमसे यह वर पाया था कि तीनों लोक में कोई उसको न मार सके। यह वर पा उसने तीनों लोक को जीत अपने अधीन कर लिया और सब देवताओं को निकाल कर आप तीनों भुवन का राज्य करने लगा। नैर्ऋत्य कोण के समुद्र में एक गर्त अर्थात् गढ़ा था। उसमें वह अपनी सेना सहित रहने लगा। उसी में से वह निकलकर सेना सहित देवताओं को दुःख दिया करता था और फिर उसी गर्त में चला जाता था। देवताओं की वहाँ कुछ नहीं चलती थी। सो सब देवता दुःखी होकर शिवजी की शरण में गये। उस समय शिवजी मन्दराचल पर थे। सो उन्होंने देवताओं की स्तुति सुनकर कहा कि तुम कुछ सन्देह मत करो, हम अन्धक को मार डालेंगे। तुम जाकर उसके साथ युद्ध करो, फिर हम भी आते हैं। सो देवताओं ने सेना सजा अन्धक के साथ युद्ध किया। बड़ा युद्ध देवता और दैत्यों का हुआ। निदान दैत्य परास्त हुये और अन्धक ने युद्ध से भाग कर चाहा कि अपने उसी गर्त से घुस जावें। पर शिवजी ने तुरन्त पहुँचकर शीघ्र ही उसको पकड़ लिया और अपने त्रिशूल से उसको छेद कर ऊपर को उठा लिया उस समय अन्धक त्रिशूल के प्रभाव से भावजाल से छुट्टी पाकर स्तुति करने लगा। उसने कहा कि जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोई मनुष्य तुमको मरने के समय देखता है तो वह भी शिवरूप हो जाता है। सो वही कृपा मेरे ऊपर होनी चाहिये। शिव ने कहा कि मैं तेरे भाव को देखकर प्रसन्न हुआ, वर माँग ले। अन्धक ने कहा कि मुझको अपनी भक्ति कृपा करके अपना गण बना लो और लिङ्गरूप होकर यहीं स्थित रहो। शिव ने माना और वहीं लिङ्गरूप से स्थित हुये जिसका नाम अन्धकेश्वर संसार में प्रसिद्ध हुआ। जो कोई उस लिङ्ग की षटमास तक पूजा करे, उसका मनोरथ पूरा हो जावे जिस तरह कि देवल ने पूजन कर सब मनोरथ पाये।

अठारहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे पिता! देवल का वृत्तान्त विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी ने कहा कि जो दधीचि ब्राह्मण शिव का परमभक्त था जिसका वर्णन हम पहले कर चुके हैं, उनका पुत्र शिवदर्शन नामी था। शिवदर्शन की स्त्री का नाम दुकूला था। वह अपनी स्त्री के अधीन रहा करता और सदा भोगविलास में लगा रहता। उसके चार पुत्र उपजे पर तो भी शिवदर्शन सदा दधीचि के भय से प्रतिदिन शिव की पूजा किया करता। एक दिन दधीचि किसी दूसरे ग्राम में गये और शिवदर्शन को शिवपूजन के निमित्त कह गये। संयोग से दधीचि बहुत दिनों तक ग्राम से न लौटे, यहाँ तक कि शिवरात्रि आ गई। सबने व्रत रक्खा पर शिवदर्शन ने कामवश हो अपनी स्त्री से भोग किया और सुचित हो स्नान करने के बिना ही शिवजी की पूजा की। ऐसी बेधर्मी शिवदर्शन की देखकर शिव क्रोधित हुये और कहा कि हे मूर्ख! तूने हमारे व्रत में स्त्री के साथ अधर्म से भोग किया। सिवाय इसके स्नान बिन हमारी पूजा की और जो कि तुमने जानबूझकर यह जड़कर्म किया है इसलिये हमारे शाप से तुम जड़ हो जाओ। तुम किसी को छू नहीं सकोगे, केवल नेत्रों से देखा करोगे। सो शिवदर्शन तुरन्त जड़ हो गया। जब दधीचि मुनीश्वर ने लौटकर पुत्र की यह दशा देखी तो सर्व वृत्तान्त सुनने के उपरान्त अति चिन्तित हो रोने लगा। उसने पुत्र को बहुत धिक्कार दिये और उसकी स्त्री को तुरन्त घर से निकाल दिया। पुत्र के मुक्त होने के निमित्त गिरिजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की पूजा का आरम्भ कर दिया। दधीचि और शिवदर्शन दोनों ने गिरिजा को अपने तप से प्रसन्न किया। गिरिजा ने शिव को प्रसन्न कर शिवदर्शन को उनकी गोद में डाल दिया। सो शिव ने घृत से शिवदर्शन को स्नान कराकर एक गाँठ देकर जनेऊ पहनाया और उसका नाम बटुक रक्खा और शिवगायत्री उसको देकर सोलहों वर्ण कृपा किये तथा अपनी पूजा का अधिकार दिया। उसने शिव का नाम मुख से लिया। तब शिव और गिरिजा ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि जो धन और द्रव्य कोई हमारे ऊपर चढ़ावें, वह तुम लिया करो। हमारी पूजा में तुम प्रसन्न होगे। इसी प्रकार चण्डिका की पूजा में भी तुमको अधिकार है। यहाँ तक कि घृत और तैल आदि जो हमारे ऊपर चढ़े, वह भी तुम लिया करो। तुमको कुछ दोष नहीं है। तुम तिलक लगा कर स्नान के उपरान्त शिव का मन्त्र पढ़ प्रतिदिन शिवजी की सन्ध्या करते रहो और हमारी गायत्री का ध्यान रक्खो। पहिले हमारा भजन करके फिर और कार्य करना। हमने तुम्हारा अपराध क्षमा कर दिया। पर ऐसा काम न करना। तुम ब्राह्मण के समान हो। हमारी और शिवरानी की भक्ति में लगे रहो। हम सबकी पूजा के योग्य होगे। बिना तुम्हारी पूजा हम किसी के सहायक नहीं होंगे और युद्ध में तुम जिसकी ओर होगे, उसी की जय होगी। जोकि तुम तप से भ्रष्ट हुये इससे तुम्हारा नाम भ्रष्ट भी होगा और ब्रह्मभोज आदि में तुम्हारे खिलाने से वह काम पूरा हो जावेगा। इसी तरह शिव और गिरिजा ने बटुक को बहुत वर देकर चारों दिशा में सबको स्थापितकर उसकी पूजा के योग्य ठहराया। हे नारद! ब्रह्मभोज में जो बटुक को बड़ाई प्राप्त हुई, उसका वर्णन हम तुमको सुनाते हैं। उसी नगर में राजा भद्रक के यहाँ प्रतिदिन ब्रह्मभोज हुआ करता था। शिव ने एक ध्वजा उस राजा को देकर कहा था कि तुम इसको प्रभात के समय बाँध दिया करो। जब कि ब्रह्मभोज पूर्ण हो चुकेगा तो यह ध्वजा अपने आप गिर पड़ेगी। सो राजा प्रतिदिन ब्रह्मभोज किया करता एक दिन अपने आप वह ध्वजा ब्रह्मभोज बिना गिर पड़ी। राजा ने आश्चर्यकर सब ब्राह्मणों से इसका हेतु पूछा। ब्राह्मणों ने कहा कि पहिले बटुक शिव के पुत्र खा चुके। इससे यह ध्वजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यज्ञ के पूर्ण होने पर गिर पड़ी। अब तुम और ब्राह्मणों को खिलाओ, कुछ सन्देह की बात नहीं है। हे नारद ! यह देवल की कथा अति पुनीत है। जो इसको पढ़ेगा, उसको शिव-गिरिजा की पूजा का फल मिलेगा। चारों दिशा के शिवलिङ्ग पूर्ण हुये।

उन्नीसवाँ अध्याय।

बारहों ज्योतिर्लिङ्गों का वर्णन।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन्! अब बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा का वर्णन कीजिये कि वे क्योंकर प्रकट हुये। ब्रह्मा ने अति प्रसन्न हो कहा कि बारहों ज्योतिर्लिङ्गों की कथा वर्णन करते हैं। पहिला सोमेश्वर लिङ्ग जिनकी पूजा से सब मनोरथ प्राप्त होते हैं। उनकी अप्रमेय महिमा है। उनकी सेवा से बहुतों ने परम पद पाया हैं। उनके भजन से क्षयीरोग भी नष्ट हो जाता है और मनुष्य संसार में नाना प्रकार के भोग पाकर अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है। उसके बहुत सन्तान और सम्पदा होकर उत्तम यश और कीर्ति होती है और सर्वकष्ट नष्ट होते हैं जिनके भजन से चन्द्रमा का क्षयीरोग नष्ट हो गया। इतना सुन नारदजी ने पूछा कि इस चरित्र को विस्तार से वर्णन करो। ब्रह्माजी बोले कि हमारे अंगुष्ठ से जो दक्षप्रजापति उपजा, उसने हमारी आज्ञा से सृष्टि को बहुत बढ़ाना चाहा और वीर प्रजापति की कन्या से विवाह कर दश सहस्र पुत्र उपजाये जिनको तुम भली विधि जानते हो। वे तुम्हारे उपदेश से त्यागी हो गये। फिर भी दक्ष ने एक सहस्र पुत्र उत्पन्न किये। वह भी तुम्हारे उपदेश से भ्रष्ट हो गये। दक्षप्रजापति ने क्रोधित होकर तुमको यह शाप दिया कि तुम सदा संसार में फिरकर कहीं पर न ठहरोगे। फिर दक्ष ने साठ कन्या उपजाकर दश धर्मराज को तेरह कश्यप को, सत्ताईस चन्द्रमा को और इसी प्रकार अङ्गिरस और कृशाश्व आदि को दो-दो दे दीं। चन्द्रमा ने सबसे अधिक रोहिणी के साथ प्रेम बढ़ाया। हे नारद ! जो मनुष्य स्त्रियों को ब्याह कर सबके साथ समान प्रीति न करे, उसके सामने असंख्य आपदाएँ आती हैं, उसको कभी आनन्द नहीं मिलता। वह सदा रोगी रहकर अन्त में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नरक को जाता है। सो दक्ष की कन्याओं को चन्द्रमा के बराबर प्रेम न करने के कारण बड़ा दुःख उपजा। वे सब दुःखी होकर दक्ष के समीप गईं और रो-पीटकर दक्ष से सब वृत्तान्त वर्णन किया। दक्ष ने चन्द्रमा को बुलाकर बहुत समझाया और कहा कि वेद की रीति के अनुसार सब स्त्रियों से बराबर प्यार करो। फिर चन्द्रमा को बिदा किया। कुछ दिनों तक चन्द्रमा दक्ष के उपदेश पर चला। पर थोड़े दिनों के पीछे वह रोहिणी को पहिले के समान सबसे अधिक चाहने लगा। तब वे फिर उसी तरह दक्ष के समीप जाकर चिल्लाईं। दक्ष ने फिर चन्द्रमा को बुलाकर बड़े क्रोध से कहा कि हे मूर्ख! तूने हमारा उपदेश न माना। अब यहाँ से जा, तुझे क्षयी रोग हो जावेगा जिससे तुम भोग-विलास के काम के न रहोगे। यह कहते ही चन्द्रमा क्षयीरोग में ग्रसित हो बहुत दुःखी हुआ। उसका तेज नष्ट हो गया। तब चन्द्रमा की सर्व स्त्रियाँ अति दुःखी हुईं और देवता भी चन्द्रमा बिना चिन्ता में पकड़कर उसको हमारी शरण में लाये। हमने चन्द्रमा को बहुत धिक्कार देकर कहा कि जब से इसने राजसूय यज्ञ किया तब से इसको धर्माधर्म नहीं सूझता। इसने अपने गुरु की स्त्री तारा को भगाया। जो हम इसको न बचाते तो शिवजी ने इसको जला ही दिया था। यह बात इसके मन से भूल गई। यह सुन चन्द्रमा दुःखी हो हमारे चरणों पर गिर पड़ा और उसने बार-बार हमारी स्तुति कर कहा कि वास्तव में मैंने बारम्बार बड़े पाप किये हैं पर आपने मुझको हरबेर बचा लिया है। फिर इस तरह का अधर्म नहीं करूँगा। ऐसी विनती कर वह हमारे सामने हाथ बाँधे खड़ा रहा।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि चन्द्रमा की यह विनती और दीनता देख मुझे दया आ गई। मैंने कहा कि सौराष्ट्र देश तीनों लोक में प्रसिद्ध है। वहाँ प्रभास क्षेत्र में शिव पूर्णांश से विराजमान हैं। वह देश शिवजी को अति प्रिय है। वहाँ तप करने से सर्व दोष और पाप दूर हो जाते हैं। तुम वहाँ पहुँचकर शिवलिङ्ग को स्थापित करो और उत्तमोत्तम वस्तु चढ़ाकर शिवजी की पूजा करो। वहीं मृत्युञ्जय मन्त्र का जप करना और सर्वन्यास कर एक ही आसन से बैठकर हर प्रकार की चतुरता को छोड़ देना। फिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

योग धारणकर शिवजी का स्मरण करना और अपने मनोरथ के पूरे होने पर निश्चय रख शिवजी के प्रेम में लगे रहना, क्योंकि शिवजी प्रेम बिना प्रसन्न नहीं होते। उनके समान अपने भक्तों को पालनेवाला और कौन है? तुम हर प्रकार मृत्युञ्जय शिवजी को प्रसन्न करो। तुम्हारा यह रोग नष्ट हो जावेगा। क्योंकि असंख्य मनुष्यों ने शिवजी की भक्ति से सब कुछ पाया और बहुतों ने मृत्यु को जीता है। बहुधा बड़े-बड़े पापी भी मुक्ति पा गये हैं। सो चन्द्रमा ने हमारे वचन को सुनकर तुरन्त प्रभास क्षेत्र में शिवलिङ्ग की स्थापना की और छः मास तक कठिन तप करता रहा। उसने विधिपूर्वक एक अर्बुद मृत्युञ्जय का जप किया। शिवजी प्रसन्न हो प्रकटे और चन्द्रमा को वर लेने के लिये आज्ञा दी। चन्द्रमा ने प्रणाम और स्तुति के अनन्तर क्षयीरोग के दूर होने के लिये विनय की। कहा कि तुम्हारी भक्ति मुझको सदा बनी रहे। शिवजी बोले कि दक्ष का शाप परिपूर्ण नष्ट नहीं हो सकता। परन्तु तुम क्रम से प्रतिमास में घटा-बढ़ा करोगे। फिर चन्द्रमा ने स्तुति कर विनय की कि तुम यहाँ लिङ्गरूप से स्थित रहो। इतने में हम और विष्णु ने आकर चन्द्रमा की इच्छानुसार कहा कि तुम लिङ्गरूप होकर शक्ति सहित इस स्थान पर स्थित हो जावो। इस प्रकार सबकी विनती सुनकर शिवजी ने मान ली और पूर्णांश से गिरिजा सहित उसी स्थान पर स्थित हो गये। उस लिङ्ग की सबने पूजाकर बड़ा उत्सव किया। उस दिन से शिव वहाँ पूर्णांश से स्थित हैं। फिर देवता आदि सब अपने-अपने स्थानों को चले गये। सोमेश्वर लिङ्ग की बड़ी महिमा है जैसा कि वेद कहते हैं। चन्द्रमा का क्षयीरोग दूर होते कुछ भी विलम्ब न हुआ। उनकी सेवा से हर प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। बहुधा मुनीश्वरों ने उनकी सेवाकर परमपद पाया है। इस लिङ्ग के सामने चन्द्रमा का बनाया हुआ एक कुण्ड है। जो मनुष्य उसमें स्नान करे, उसका मनोरथ पूर्ण होता है। यह चरित्र अति आनन्द देनेवाला है जैसा कि देवता, मुनि और वेद, पुराण आदि सब इस बात में सम्मति रखते हैं। उनकी सेवा से फिर आवागमन नहीं होता। हे नारदजी! तुम, शारद, सनकादिक और शेष आदि भी उनकी महिमा वर्णन करते गूँगे हो जाते हैं। इस चरित्र के सुनने से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम मल्लिकार्जन शिवलिङ्ग का वर्णन करते हैं। यद्यपि हमने चरित्र को अति विस्तार से बखाना है पर यहाँ भी संक्षेप से कहते हैं कि जब शिवजी के पुत्र स्कन्दजी संसार भर की परिक्रमा कर कैलाश में आये तो हे नारद ! तुमने उनसे गणपति के अधिकार का सर्व वृत्तान्त वर्णन किया। उसको सुन गुह अतिदुःखी हो अपने माता-पिता शिवजी और शिवरानीजी के पास जाकर चुपचाप बैठ रहे और स्तुति करने के उपरान्त अप्रसन्न हो क्रौञ्चगिरि में गये। यद्यपि माता-पिता ने उनको बहुत मनाया समझाया पर स्कन्दजी ने कुछ न माना। तब गिरिजा ने अपने पुत्र के वियोग में बहुत रोदन किया। तब शिवजी ने गिरिजा से कहा कि तुम कुछ दुःख मत करो। तुम्हारा पुत्र तुरन्त ही तुम्हारे पास आवेगा। गिरिजा ने कहा कि तुम देवता आदि को मानने के लिये भेजो कि हमारा पुत्र यहाँ आवे। कदाचित् वह यहाँ न आवेगा तो हम तुम वहाँ चलेंगे। शिवजी ने गिरिजा को इतना दुःखी देख देवता और मुनियों को गुह के पास भेजा। उन्होंने बहुतेरा स्कन्दजी को समझाया पर उन्होंने किसी का कहना न मानकर और भी बहुत हठ की। उन्होंने लौटकर शिवजी से सब हाल कह सुनाया। सो शिव और शिवरानी पुत्र के वियोग में अति दुःखी हुए। सो वियोग का दुःख न सहकर स्कन्दजी के पास गये। गुह माता के आने का हाल जानकर तुरन्त तीन योजन और अधिक क्रौञ्च पर्वत पर चले गये कि माता-पिता से भेंट न हो। निदान माता-पिता भी पुत्र की ऐसी हठ जानकर वहाँ न गये और ज्योतिरूप होकर उसी स्थान पर स्थित हो गये। वही संसार में ज्योतिर्लिङ्ग प्रसिद्ध है। उसी को सब मल्लिकार्जुन कहते हैं। सो हर पर्व में पुत्र के प्रेम से माता-पिता उस स्थान पर जाया करते हैं कि पुत्र की भेंट से प्रसन्न होवें। पन्द्रहवें दिन तो शिवजी और पूर्णमासी को गिरिजा वहाँ जाया करती हैं। पर वहाँ नहीं ठहरते, वे अपने स्थान को लौट आया करते हैं। रात-दिन गुह का स्मरण करते हैं। यह दूसरा शिवलिङ्ग बारह ज्योतिर्लिङ्गों में से है। उनके दर्शन से हर प्रकार का आनन्द मिलता है। इसकी महिमा तीनों लोक में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रसिद्ध है। हे नारदजी ! जब कि यह ज्योतिर्लिङ्ग प्रकट हुआ तो हम, विष्णु और सब देवता आदि ने जाकर उसकी पूजा की। हम सबने बड़ी स्तुति की तब शिवजी प्रकट हुये और हम सबको वहीं वर देकर उसी स्थान में अन्तर्धान हो गये। इस दूसरे ज्योतिर्लिङ्ग चरित्र के पढ़ने-सुनने से सर्व-प्रकार का आनन्द मिलता है।

बाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! अब हम तीसरे ज्योतिर्लिङ्ग की महिमा का बखान करते हैं जिनकी सेवा से बहुतेरों ने परमपद पाया है। अवन्तीपुरी जो सातपुरियों में से है जिसको उज्जयनी कहते हैं और जिसकी ओर देखने से पाप भाग जाते हैं तथा शिवजी और शिवरानी में प्रेम बहुत बढ़ता है। वहाँ एक शुद्धाचारी शिवजी का भक्त ब्राह्मण रहता था जो भस्म धारण किये हुये, रुद्राक्ष पहने, सदा शिवशंकर कहा करता और निष्काम शिवजी की भक्ति में लगा रहता था। वह सब काम वेद की आज्ञानुसार कर दान आदि न लेता था और विधिपूर्वक पार्थिव पूजन करता था। सो शिवजी ने प्रसन्न होकर उसे अपनी अप्रमेय भक्ति कृपा की। उसके चार पुत्र थे। वह भी शिवजी की सेवा में तत्पर रहते। उनके ये नाम हैं—पहला देवप्रिय, दूसरा प्रियमेधा, तीसरा सुकृत और चौथा धर्मवादी। उसी समय में एक असुर बड़ा बलवान् तीनों लोक को दुःख देनेवाला जिसका नाम दूषण था, उपजा। वह रत्नमाल गिरिपर अपनी स्त्रीसहित रहने लगा। उसने हमारा बड़ा तप किया था। हमसे उसने बड़े बल का वर प्राप्त किया था। सो उसने अहंकार से सब देवताओं को भी जीत लिया और उसी पर्वत पर रह तीनों लोक का राज्य करने लगा। उसने तीनों लोक का धर्म मिटा भाँति-भाँति के पाप किये और सबको दुःख पहुँचाया। सो सब देवता और मुनि आदि मेरे पास आकर पुकारे। हमने कहा कि हम तो उसे वर दे चुके हैं पर उसको शिवजी मार डालेंगे, तुम धैर्य रक्खो। यह कह हमने सब देवता आदि सहित शिवजी के समीप जा प्रणाम, दण्डवत् और स्तुति के उपरान्त विनय की कि हम सबको दूषण दैत्य बड़ा दुःख देता है। तीनों लोक में कोई सुखी नहीं है तुम सदा दैत्यों का नाश किया करते हो। कृपा करके उसका भी वध करो। शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बोले कि तुम सब अपने-अपने स्थानों को चले जाओ, हम उसको नष्ट करेंगे। जब पुत्रों सहित हमारे भक्त को जो उज्जयिनी में रहता है, यह दैत्य दुःख देगा तब हम उसको मार डालेंगे। यह सुनकर हम सब अपने-अपने स्थान पर आकर समय को देखने लगे। सो शिवजी की माया से दूषण के मन में यह बात उपजी कि शिवजी के भक्तों को दुःख देना चाहिये। इसी विचार से उसने अपने वीरों को आज्ञा दी कि देवताओं का मूल ब्राह्मण हैं व उनका मूल शिवभक्त हैं। इससे तुमको उचित है कि शिवभक्त को जड़ पेड़ से नष्ट करो। यह कह आप सेना सहित शिवभक्तों के वध करने के निमित्त चला। वह पहिले उज्जयिनी में पहुँचा क्योंकि उसने सुना था कि उज्जयिनी में शिव के भक्त बहुत से रहते हैं। उसने उज्जयिनी को चारों ओर से घेर लिया और इतना अन्याय और उपद्रव किया कि सब उज्जयिनी के निवासी अति दुःखी होकर रोने लगे। वे लोग विकल हो घरबार छोड़ बाहर को भागे। उनको दैत्यों ने पकड़ लिया पर शिवजी के भक्त बराबर अपने घरों में बैठे रहे क्योंकि उनको पूर्ण विश्वास था कि शिवजी हमारे सहायक हैं। हम क्यों भागें? निदान दैत्य सेना सहित उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ शिवजी के भक्त बैठे हुये थे। दैत्य ने आज्ञा दी कि इनको बन्दी में छोड़ो और तुरन्त मार डालो। यह कह आप दैत्यों सहित उनके मारने के लिये आगे चला पर शिवभक्तों के मन में कुछ भी भय न हुआ। उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि वे उस स्थान तक नहीं पहुँचे जहाँ कि शिवभक्त ब्राह्मण पार्थिव पूजा कर रहे थे कि उनके चारों ओर की धरती फटकर वहाँ गढ़ा हो गया और ऐसा महा भयानक शब्द हुआ कि तीनों लोक काँप उठे बहुत से दैत्य मूर्च्छित होकर गिर पड़े और बहुत से भाग गये। पर दूषण दैत्य तो भी उसके भीतर पैठ गया कि उनको मार डालें। निकट था कि वह ब्राह्मणों के समीप पहुँच जावे कि शिवजी ने प्रकट हो अति क्रोध से कहा कि तुम्हीं हमारे भक्तों को मारोगे। देखो, हम इसीलिए प्रकटे हैं। तुम्हारे मारने में अब कुछ भी विलम्ब नहीं है। हम महाकाल हैं, अपने भक्तों को बचाते हैं। अब तू आगे न आना पर तो भी दूषण दैत्य ने कुछ न माना और आगे चला। शिवजी ने एक हुंकार किया जिससे दूषण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलकर भस्म हो गया और सब दैत्य जो उसके साथ थे, उसी समय जल गये। बाकी दैत्य भागकर पृथ्वी के नीचे छिप रहे। ब्राह्मण अपने चारों पुत्रों सहित शिवजी को देख अति प्रसन्नता से शिवजी की स्तुति करने लगा। इतने में सब देवता मुनि आदि उस स्थान में आ गये। हम और विष्णु भी बड़े प्रेम से सभा के साथ हुये। देवताओं ने दुन्दुभी बजाई आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई। हम सबने शिवजी की स्तुति की। तब ब्राह्मण ने शिवजी से विनती की कि हे सदाशिव! आपने आकर अपने भक्तों को कृतार्थ कर दिया और हर प्रकार सब दुःखों को दूर करके तीनों लोक को रख लिया पर मेरी विनय है कि इसी गर्त में आप भवानी और गणों समेत स्थित होवें। जो दूषण दैत्य संसार का काल था, उसको तुमने नष्ट कर डाला इससे तुम्हारा नाम महाकाल हो। तुम्हारी पूजा से संसार भर मनोरथ पावे। सो और सबने भी इसी बात की विनय की। शिवजी ने अङ्गीकार किया और ब्राह्मण की स्थापित की हुई जो शिवलिङ्ग की मूर्ति थी, उसी के भीतर शिवजी प्रवेश कर गये। उस समय ब्राह्मण ने अपने पुत्र, हम, विष्णु, सब देवता और मुनि आदि समेत उस मूर्ति की पूजा की। फिर सब अपने-अपने लोक को चले गये।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा हे नारद! महाकाली की पूजा से कोई बात दुर्लभ नहीं, वरन् परमपद मिलता है। महाकाल के समान भक्त का आनन्द देने-वाला दूसरा कोई देवता नहीं। उनकी पूजा से सब मनोरथ पूरे होते हैं और पाप दूर होते हैं तथा धन, स्त्री, पुत्र, आनन्द अधिक होकर दुःख का लेश भी नहीं रहता। आयु बढ़ती है और सर्वरोग नष्ट हो जाते हैं। राजा चन्द्रसेन की आपदा इन्हीं की पूजा से दूर हुई। इन्होंने श्रीकर को अपना सेवक बना लिया। इतना सुन नारद ने पूछा कि हे ब्रह्माजी! श्रीकर का चरित्र विस्तार से वर्णन कीजिये। ब्रह्माजी बोले कि उज्जयिनी में चन्द्रसेन राजा हुआ। वह शिव का बड़ा भक्त था। महाकाल की बड़ी सेवा किया करता और मणिभद्र जो शिव का गण था, उसकी चन्द्रसेन से बड़ी प्रीति हो गई। उसने प्रसन्न होकर राजा को एक चिन्तामणि दी जिसके देखने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुनने, स्पर्श करने और स्मरण से सर्वदुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होता है। लोहा, पीतल और पत्थर आदि जो उसमें छू जावे, वह तुरन्त सोना हो जावे। राजा चन्द्रसेन उस मणि को पहनकर सूर्य के समान प्रकाशता था। जब यह वृत्तान्त दूसरे राजाओं ने सुना तो उन सबको लोभ उपजा और हर प्रकार के उपायों से आकर राजा से वह मणि माँगी। क्योंकि यह रीति है कि मूर्ख लोग दूसरे का धन देख जला करते हैं प्रकट है कि देवता से जो वस्तु प्राप्त हो, उसे किसी को न देना चाहिये। सो पृथ्वी भर के राजाओं ने इकट्ठे हो चन्द्रसेन पर धावा किया और उज्जयिनी को चारों ओर से घेर लिया। पर उस समय भी राजा अति दृढ़ता और सन्तोष से निर्जल रह महाकाल की शरण में गया और रात्रि-दिन उनकी पूजा की महाकाल ने उस समय यह चरित्र किया कि एक गोपी अपना पाँच वर्ष का बालक लिये हुये वहाँ आई और चन्द्रसेन की पूजा देखने लगी। बालक को शिवजी की पूजा की बड़ी अभिलाषा उपजी। उसने प्रेम पूर्वक एक पत्थर उठा उसको स्थापित किया और तन-मन से उसकी पूजा कर सब विधि से पूजा में लगा। केवल अपनी बुद्धि से सब बातें की। वह बारम्बार शिवजी को प्रणाम करके नाचने लगा। जब उसकी माता ने उसको भोजन के निमित्त बुलाया तो वह अपनी माता के पास न गया। तब उसकी माता ने उस स्थान पर जाकर अपने पुत्र को भली भाँति मारा और हाथ पकड़कर खींच लिया। पर तो भी वह शिवजी के प्रेम में डूबकर न गया। तब उसकी माता ने शिवलिङ्ग को बहुत दूर फेंक दिया और अति क्रोध से बालक को मारा। उस समय वह बालक बहुत रोया और मूर्च्छित हो पृथ्वी में गिर पड़ा। जब उसने नेत्र खोले तो उसको विचित्र लीला देख पड़ी। अर्थात् उसने अच्छा बना हुआ शिवालय देखा जिसमें नाना प्रकार के रत्न और मणियाँ लगी हुई थीं। उसके खम्भे जड़ाऊ सोने के और द्वार भी सोने के थे। हजारों स्वर्ण के कलश चढ़े हुये बीच में रत्नों का एक सिंहासन रक्खा हुआ ऐसी शिवजी की बड़ाई देख वह बालक आश्चर्यपूर्वक अति प्रसन्न हुआ। उसने शिवपूजा की महिमा जानी और दण्डवत् कर पृथ्वी में गिर पड़ा। उसने शिवजी की बड़ी स्तुति की और कहा कि हमारी माता जो अति मूर्खा है, उसका

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपराध क्षमा कीजिये। जो फल मुझे आपकी पूजा में हुआ, उसके बदले में केवल यह चाहता हूँ कि मेरी माता का अपराध दूर हो जावे। जब सन्ध्या को वह लड़का अपने घर चला तो देखा कि नया नगर इन्द्रलोक के समान स्वर्ण का बसा है। उसमें रत्न, मणि और मुक्ता चारों ओर वर्तमान हैं। उसमें सबसे श्रेष्ठ इसकी माता का मन्दिर है जिसमें एक शय्या रत्न से जड़ी हुई रक्खी है जिस पर श्वेतवस्त्र पड़े हुये हैं। उसके ऊपर उसकी माता गोपी सो रही है जो उत्तमोत्तम वस्त्राभूषणों से अलंकृत है। उसका स्वरूप और ही प्रकार का प्रकाशयुक्त हो गया है। सो उसने अपनी माता को नींद से जगाया। उसकी माता ने भी उठकर जब यह चरित्र देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ और अति प्रसन्न हो बालक को अपने शरीर में लिपटा लिया और शिवजी की कृपा समझ राजा के पास यह सब हाल कहला भेजा। सो राजा शिवजी का यह चरित्र सुन अति प्रसन्न हुआ और अपने मित्रों सहित जाकर देखा। उसने अति प्रेम में डूबकर बड़ा आनन्द माना और बालक के साथ बहुत प्रेम बढ़ाया और कहा कि उस राजा की बड़ी भाग्य है कि जिसकी प्रजा शिव की भक्ति में इतनी दृढ़ हो।

चौबीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि इसी तरह रातभर शिवजी के चरित्र और महिमा कहते एक क्षण के समान बीत गई और शत्रुओं का भय कुछ भी किसी के मन में न रहा। प्रभात को जब राजाओं ने अपने दूतों से यह शिवजी का चरित्र सुना तो वे अति आश्चर्य में हुये और परस्पर कहने लगे कि जहाँ पर सदाशिवजी ऐसे प्रसन्न हैं, वहाँ किसी की क्या चल सकेगी। निदान वे सब शस्त्रों को डालकर चन्द्रसेन के समीप गये। चन्द्रसेन ने सबका आदर किया। फिर सबने महाकाल के दर्शन किये और गोपी के मन्दिर में जाकर गोपी की बड़ी प्रशंसा की। जब गोपी के स्थापित किये हुये लिङ्ग को देखा तो सब शिवजी की भक्ति में स्थिर हो गये। एक बड़ी भारी सभा सजाई गई जिसमें सब राजाओं ने गोपी के पुत्र से भेंट की। उसको बड़ी-बड़ी सौगातें दीं। जितने संसार में गोप थे, उन सबका राजा उस लड़के को बनाया। उस समय हनुमान्‌जी वहाँ पर प्रकट हुये सो सब राजा उठ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

खड़े हुये और हनुमान् को जानकर सबने स्तुति की जो बहुत बड़ी है। कहा कि मेरे बड़े भाग्य हैं जो आप यहाँ आये। यह कह सब राजा प्रसन्न हुये। हनुमान्‌जी ने उस गोपी के लड़के को उठा लिया और अपने हृदय में लगाकर उसके सब शरीर को स्पर्श कर लिया। सब राजाओं से हनुमान्-जी ने कहा कि यह महाकाल शिवजी का लिङ्ग अति शुभ है। वह बड़ा सुख देनेवाला, सब दुःखों का नाश करनेवाला भक्तों का मनोरञ्जन और शत्रुओं का नाश करनेवाला है। कल तेरसि तिथि और शनैश्चर का दिन था। सो प्रदोष के समय इस गोपी के बालक ने शिवजी की पूजा की। महाकाल ने प्रसन्न होकर उसको राजा चन्द्रसेन सहित कृतार्थ कर दिया। महाकाल के समान दूसरा स्वामी नहीं। तीन बेर महाकाल का नाम लेने से दुःख और पीड़ा नष्ट हो जाती है यद्यपि प्रदोष व्रत सब व्रतों का राजा है पर जो प्रदोष शनिवार को पड़े तो वह और भी अधिक शुभ है। जो कृष्णपक्ष में प्रदोष होता है, उसकी अप्रमेय महिमा है। ऐसा योग पाकर जो महाकाल की पूजा करे तो व्रती और महाकाल का पूजक सब अच्छे फल पावें और मोक्ष पाकर सदाशिवजी के समीप रहा करें। इस बालक ने ऐसे ही योग में कल के दिन महाकाल की पूजा की थी। इस बालक के समान दूसरा कोई गोपों के यश बढ़ानेवाला न होगा। इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्द नाम गोप उपजेगा, वह पूर्ण शिवजी का सेवक होगा। गोपेश्वर शिवलिङ्ग की पूजा करेगा सो शिवजी की आज्ञा से विष्णु आप उसके पुत्र होकर कृष्ण के नाम से प्रसिद्ध होंगे। आज से इस बालक का नाम श्रीकर होगा। यह कह हनुमान्‌जी ने उसको शिवजी के पूजन की विधि बता दी। इस प्रकार श्रीहनुमान्‌जी राजा चन्द्रसेन और श्रीकर पर अनुग्रह कर अन्तर्धान हो गये। सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपनी-अपनी राजधानियों को लौट गये। श्रीकर हनुमान्‌जी के उपदेश के अनुकूल ब्राह्मण के द्वारा शिवजी की पूजा में लगे। चन्द्रसेन दोनों लोक में प्रसन्न रहकर अन्त परमपद को पहुँचे। हे नारदजी! महाकाल की ऐसी महिमा है। यह चरित्र अतिपवित्र है जिसके पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है। तीसरा अवतार पूर्ण हुआ।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पच्चीसवाँ अध्याय।

चौथे ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! एक समय तुम गोकर्णक्षेत्र में जिसका हम वर्णन कर चुके हैं, गये। गोकर्ण में स्नान कर तुमने महाबल शिवलिङ्ग की पूजा की और वहाँ से लौटकर तुम शिवलिङ्गों के दर्शन करते रेवानदी जिसका नर्मदा भी नाम है और शिव की पुत्री प्रसिद्ध है, उसके तट पर पहुँचे। रेवानदी की महिमा तो तीनों लोक में प्रसिद्ध है। उसके दर्शन-मात्र से सब पाप और दुःख दूर हो जाते हैं। उसमें स्नान करके संसार में नाना प्रकार के आनन्द और अन्त में परमपद प्राप्त होते हैं। तीनों लोक की नदियों में गङ्गा सर्वोपरि है जिसमें स्नान करने से अप्रमेय सुख प्राप्त होता है। उससे श्रेष्ठ रेवा है जैसा कि वेद और पुराण बखानते हैं। चौदह दिन यमुना में स्नान करने से पाप नष्ट हो जाते हैं, तीन दिन सरस्वती में स्नान करने से और एक दिन गङ्गा में स्नान करने से सब पाप निवृत्त होते हैं। रेवा के केवल दूर ही से दर्शन से उतना फल होता है। उसके कङ्कर भी शिवजी के समान हैं। जहाँ शिवनिर्माल्य लेने से भी कुछ दोष नहीं। वहाँ जो तारयन्त्र तीर्थ है, वह सब पापों का दूर करने वाला है। हे नारद! तुमने वहाँ जाकर स्नान किया और प्राणवेश्वर शिव-लिङ्ग की पूजा की। वहाँ तुमने विन्ध्याचल पर्वत को देखा जहाँ संसार भर का आनन्द मालूम होता है। वहाँ नाना प्रकार के वृक्ष और जीवधारी हैं। वह पर्वत दो प्रकार के रूप रखता हैं। सो तुमको अति सुन्दरता से देवताओं के समान रूप धारण किये देख अति प्रसन्न हुआ और तुम्हारी अगवानी कर तुमको उसने प्रणाम किया। बहुत विनती के साथ उसने तुमको अच्छे स्थान पर बैठाया और शुभ वस्तुओं से तुम्हारी पूजा की तथा तुम्हारे आने से कृतार्थ हुआ। कहा कि अब मैं अपने सब कुलों में श्रेष्ठ कहलाऊँगा। मेरी अयोग्य दशा जो पर्वत होने के कारण है, जाती रहेगी। यह सुन तुमने ठंढी श्वास खींची। तब विन्ध्याचल ने कहा हे नारद! आपके ठंढी श्वास लेने का क्या कारण है? आप कृपा करके वर्णन कीजिये।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यद्यपि पृथ्वी थाँमने का बल मेरु में है और शिवजी के सम्बन्ध के कारण हिमाचल मान के योग्य है, पर मेरु केवल मेरी समझ में देवताओं के रहने से श्रेष्ठ गिना गया है। निषध, नील, मन्दराचल, रैवत, क्रौञ्च, किष्किन्धा, श्रीगिरि, सह्य आदि पर्वत पृथ्वी के थाँमने में हमारे समान नहीं हैं। विन्ध्याचल के ऐसे अहंकार के वचन सुन तुमने मन में कहा कि अहंकार से सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता। क्या श्रीगिरि से कोई पर्वत अधिक श्रेष्ठ और उत्तम है जिसके शिखर देखकर परमपद मिलता है। निदान तुमने विन्ध्याचल से कहा कि वास्तव में तुम सत्य कहते हो। तुम ऐसे ही हो पर सुमेरु तुमको कुछ भी नहीं जानता। इसी से हमने ठंढी श्वास खींची थी। यह कह हे नारद! तुम तो चले गये और विन्ध्याचल अति चिन्तित हुआ। कहा कि मुझे धिक्कार है जिसका ऐसा बलवान् शत्रु है। मैं क्या करूँ जिससे मैं सुमेरु को जीत सकूँ। निदान उसने नाना प्रकार के विचारों के उपरान्त यह बात मन में सोची कि शिवजी की शरण में जाकर उनके उपदेश के अनुसार चलूँ कि मेरी विजय हो। उनकी सेवा से किसने मनोरथ नहीं पाया। यह विचार वह नर्मदा के तट पर गया जहाँ ओंकारेश्वर-लिङ्ग विराजमान हैं। वहीं से रेवा निकली है। वहाँ पर विन्ध्याचल ने शिवलिङ्ग की स्थापना की जिसका नाम अमरेश्वर है। उसका दूसरा नाम परमेश्वर है। सो षट् मास पर्यन्त वह बराबर शिवजी के ध्यान और पूजा में लगा रहा। अन्त को शिवजी विन्ध्याचल के ध्यान के अनुसार उसके सामने खड़े हो गये। उन्होंने कहा "वरम्ब्रूहि"। विन्ध्याचल ने शिवजी की मूर्ति अपने मुख्य लक्षणों समेत अपने आगे खड़ी देखी।

छब्बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि विन्ध्याचल ने ऐसे सदाशिव का शुद्ध स्वरूप देख प्रणाम कर बड़ी स्तुति की और कहा मैं आपकी शरण हूँ। हमारा दुःख दूर कर दीजिये। हमसे वृथा ही सुमेरु शत्रुता रखता है। वह अपने को हमारा स्वामी और वीर समझता है। मैं आपसे यह बात चाहता हूँ कि मैं उसको जीत सकूँ। शिवजी बोले अच्छा यही होगा। उस समय सब देवता और मुनि वहाँ इकट्ठे हो गये। सबने शिवजी को प्रणाम किया और विन्ध्या-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चलने देवता और मुनि आदि सहित शिवजी से विनय की कि आप कृपा करके यहाँ स्थित हों। सो शिवजी स्वीकार करके जो लिङ्ग विन्ध्याचल ने स्थापित किया था, उसमें प्रवेश कर गये। दूसरा लिङ्ग पूर्णांश से जो तारेश्वर था, वह दूसरा शिवजी के अंश से हुआ। तथाच जो यन्त्र स्थल लिङ्ग हैं, वह तारेश्वर है। जो पार्थिवलिङ्ग है, वह परमेश्वर लिङ्ग है। उस समय वहाँ बड़ा उत्सव हुआ और सबने उस शिवलिङ्ग की पूजा की। फिर अपने अपने स्थानों को लौट गये। विन्ध्याचल अपने घर में आकर कहने लगा कि मुझको सुमेरु के अहंकार का कारण मालूम हो गया। वह यह है कि उसकी चन्द्रमा और सूर्य नक्षत्रों समेत परिक्रमा करते हैं। इससे उसको अपनी बड़ाई पर अहंकार है। सो मैं आज इतना बढ़ूँगा कि सूर्य को चलने से रोक दूँगा। इस उपाय से मैं सुमेरु को जीतूँगा। यह सोच वह इतना बढ़ा कि उसने सूर्य की गति को रोक लिया। सूर्य सहस्रों किरणों से प्रकाश फैलाकर आगे को चले पर घोड़े आगे न चल सके। वे वहीं ठहर गये जिससे दो दिशा अर्थात् इन्द्रलोक और कुबेरलोक में बहुत गरमी और किरणों की अधिकता से बड़ा दुःख फैला। सर्व मनुष्य जलने लगे। वरुण और यमराज की दिशा में अँधेरा छा गया जिससे वहाँ के पुरुष-स्त्री सब विकल हो गये। निदान इसी तरह तीनों लोक दुःखी हुये और देवता मुनि आदि मिलकर हमारे पास गये और सब वृत्तान्त कह सुनाया। हमने कहा कि विन्ध्याचल ने सुमेरु के जीतने को रेवानदी के तट पर प्रणवेश्वर शिवलिङ्ग के निकट बड़ा तप किया है। आप भी एक प्रणवेश्वर नामक लिङ्ग स्थापित किया है। उनके वर से उसने इतना बल पाया है। इससे तुम भी सब मिलकर वहाँ जाओ और प्रणवेश्वर की सेवा करो, तुम्हारे लिये उत्तम होगा। सो वे सब जाकर शिवजी की पूजा करने लगे। शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि तुम सब हमारी काशीपुरी में जाकर अगस्त्यमुनि से यह सब वृत्तान्त कहो। वह तुम्हारा काम कर देवेंगे। यह सुनकर सब देवतादि ने अगस्त्य के समीप जाकर प्रणाम किया और उनके पूछने पर बृहस्पति ने कहा कि विन्ध्याचल ने सूर्य को रोक लिया है। हम शिवजी की आज्ञानुकूल तुम्हारे पास आये हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अगस्त्य ने अङ्गीकार कर सबको बिदा किया और काशी को अति दुःख से छोड़कर विन्ध्याचल के पास गये। उनको देख विन्ध्याचल काँप उठा। उसने कहा कि मैं आपका सेवक हूँ। जो आज्ञा हो उसका पालन करूँ। अगस्त्यजी बोले कि जब तक हम लौट न आवें तब तक तुम इसी तरह रहना। यह कह अगस्त्य दक्षिण की ओर जाकर फिर न आये और विन्ध्याचल अगस्त्य मुनि के आने की बाट देखता रहा। न अगस्त्य लौटे न विन्ध्याचल बढ़ सका। इससे तीनों लोक को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। यह चरित्र अति पवित्र है। इसके पढ़ने-सुनने से संसार में आनन्द और अन्त में परमपद प्राप्त होता है।

सत्ताईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! हमारे पुत्र स्वायम्भुवमनु बड़े प्रतापी हुये जिन्होंने सब धर्मों का वर्णन कर सब पापों को दूर कर दिया। उन्होंने शिवजी की बड़ी भक्ति की और स्मृति बनाकर सब विवादों को दूर किया। उनके तीन कन्या और दो पुत्र उपजे जिनके बड़ी सन्तान हुई। एक लड़के का नाम उत्तानपाद और दूसरे का नाम प्रियव्रत था। इसी प्रियव्रत ने रथ पर चढ़ सूर्य के समान संसार भर में भ्रमण कर सब द्वीप और समुद्रों को बनाया। उसके सात पुत्र उपजे जिनको उसने हमारी आज्ञा से क्रमपूर्वक एक-एक द्वीप दे दिया और आप शिवजी की भक्ति में प्रवृत्त हो परमपद पाया। उनमें सबसे बड़ा लड़का आग्नीध्र था जो जम्बूदीप का स्वामी हुआ। उससे नाभि नामक पुत्र उपजा। उससे ऋषभ हुआ। उसके सौ पुत्र उपजे जिनमें सबसे बड़े पुत्र का नाम भरत था जो चक्रवर्ती राजा हुआ। उसके नव लड़के योगी हो गये जिनके साथ तुमने बड़ी वार्ता की और इक्यासी लड़के सिद्ध हुये। बाकी क्षत्रिय होकर अपने क्षात्रधर्म में दृढ़ रहे। भरत का यश तीनों लोक में फैल गया। वह शिवजी का बड़ा भक्त था। जो लड़का जिस खण्ड में राजा हुआ, वह खण्ड उसी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। निदान स्वायम्भुवमनु की बड़ी पुत्री जिसका नाम आकूती था, वह रुचिमुनि से ब्याही गई। सो रुचि पुत्र की प्राप्ति के निमित्त विष्णुजी का तप करने लगे। विष्णु ने प्रसन्न होकर कहा कि वर माँगो। रुचिमुनि बोले कि हम तुम्हारे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

समान पुत्र चाहते हैं। विष्णुजी ने कहा कि यही होगा। यह कह विष्णुजी अपने लोक को और मुनि अपने घर को लौट आये। निदान प्रसूतिकाल में विष्णुजी दो रूप हो आकूती के उदर से उपजे। उनका नाम हमने नर-नारायण रक्खा। उस समय हम सबने आकर बड़ा उत्सव किया। फिर सब अपने-अपने लोक को चले गये। सो दोनों ने अपने दोनों पुत्रों को विष्णु जानकर दीक्षा की। फिर नर-नारायण दोनों हिमाचल पर्वत में तप के निमित्त गये। जो हिमाचल की एक शाखा केदार के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ दोनों ने बड़ा तप किया और पार्थिव पूजा फिर शिवजी का अखण्ड ध्यान करते रहे। इसी प्रकार बहुत काल उनको तप करते हुये बीता। तब शिवजी अति प्रसन्न होकर प्रकट हुये जहाँ कि नर-नारायण तप करते थे। दोनों ने शिवजी को अपने सामने खड़ा देखकर बड़ी स्तुति की और कहा कि हमको अपनी भक्ति कृपा करो। यह कह नर-नारायण चुप हो गये। शिवजी ने कहा कि तुम्हारी ऐसी शुभ स्तुति है कि हम अति प्रसन्न हुये। जो मन की इच्छा हो, वह माँग लो। तुम हमारे रूप हो, भक्तों के लिये तुमने धरती में अवतार लिया है। यह सुनकर नर-नारायण बोले कि हमको अपने चरणों की भक्ति दो और इसी स्थान पर अपने पूर्ण अंश से स्थित हो जावो। यह सुनकर हँसकर केदार में जहाँ नर और नारायण तप करते थे, अपने पूर्ण अंश से स्थित हो गये और ज्योतिर्लिङ्ग होकर केदारेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये। नर-नारायण ने उनकी पूजा की। उस समय शिवजी ने कृपालु होकर सबको कृतार्थ कर दिया। फिर हम सब अपने-अपने स्थानों को चले गये और नर-नारायण अतिसुखपूर्वक वहाँ रहे। वे प्रतिदिन केदारेश्वर की पूजा करते हैं। उस स्थान को बदरीवन भी कहते हैं जहाँ देवता और मुनि आदि शिवजी की पूजा करते हैं। यह केदारेश्वर शिव अवतार सब भरतखण्ड के पापों के दूर करनेवाले हैं। नारद आदि मुनि, विष्णु, नरनारायण और इन्द्रादि सहित उनकी पूजा किया करते हैं। केदारेश्वर के केवल दर्शन से सब पाप जल जाते हैं। वहाँ जाकर जो मनुष्य कि बर्फ में गल जाते हैं, वे परमपद पाते हैं। उनको बेप्रयास मुक्ति मिल जाती है। उनके दर्शन के लिये चलकर जो मार्ग में मर जावे तो भी मुक्ति मिलती है। इनकी असंख्य महिमा वेद और पुराण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

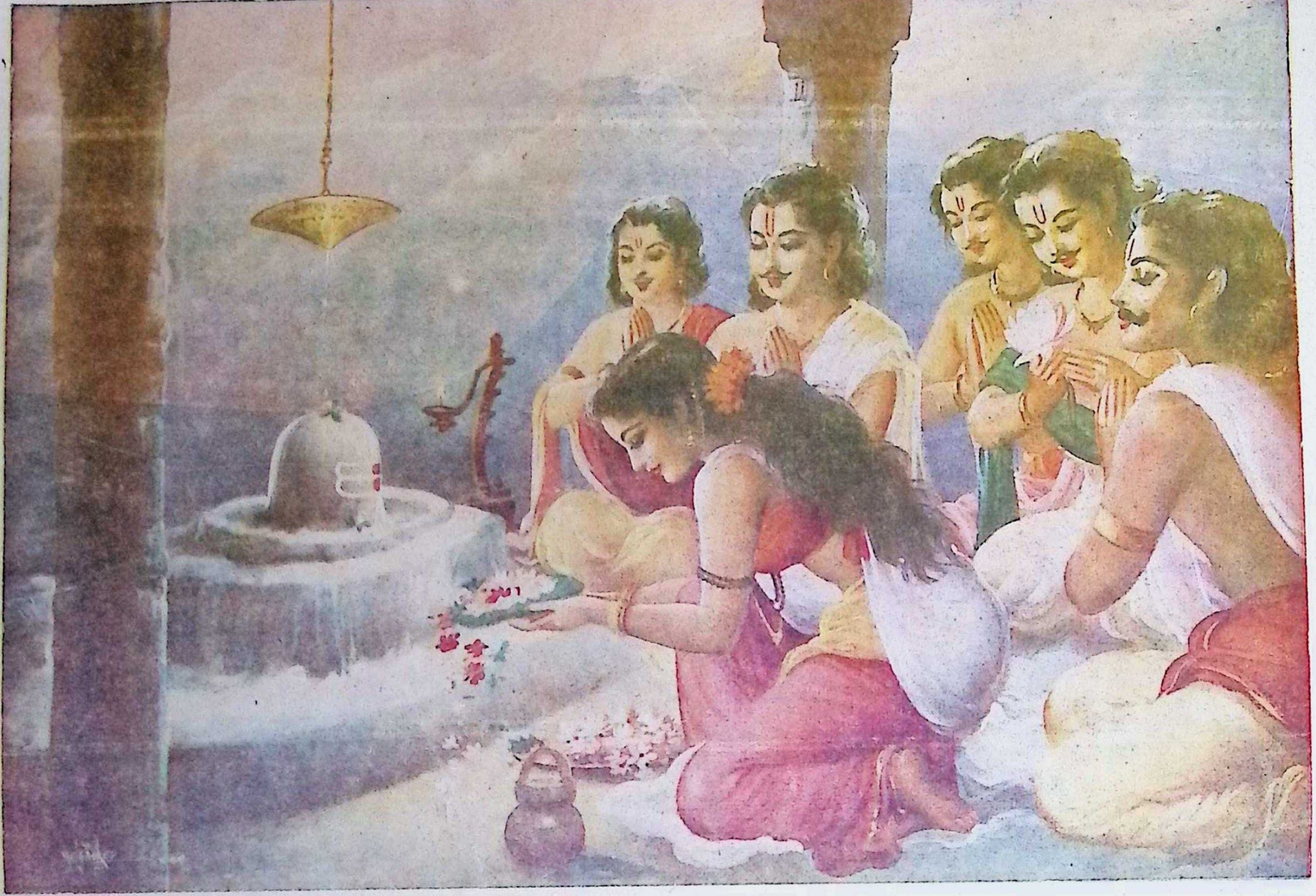

पाण्डवों को केदारनाथ दर्शन

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वर्णन करते हैं। जब कृष्णचन्द्र विष्णुजी के अवतार ने जरासिन्धु से हारकर केदारेश्वर में जाकर बड़ा तप और पूजा की तथा सात मास तक शिव का ध्यान किये हुये केवल एक चरण से योग धारण किये हुये खड़े रहे तो शिवजी ने प्रसन्न होकर वरदान माँगने की आज्ञा दी। कृष्ण ने अप्रमेय बल माँग सबको जीता। जब राजा पाण्डु के लड़के वहाँ गये कि केदारेश्वर के दर्शन करें और अपने पापों से छूटें तो शिव भैंसे का रूप धर वहाँ से भाग चले। सो उन्होंने अति प्रेम से श्वासा को इतना रोका और यह विनय की कि जो पाप हमको महाभारत के युद्ध में हुआ है, उसको कृपा करके दूर करो और यहीं स्थित हो जाओ। शिव पिछले धड़ से उसी स्थान पर स्थित हो गये जिससे पाण्डु के पुत्रों के सर्व दुःख निवृत्त हो गये और अगले धड़ से नैपाल में जाकर उस देश को कृतार्थ कर दिया। वे हरिहररूप से वहाँ सबको सुख देते हैं। उनके दर्शन से सब पाप छूट जाते हैं। यह चरित्र हमने केदारेश्वर का वर्णन किया। अब हम भीमशंकर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं।

अट्ठाईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि किस प्रकार कामरूप देश में शिवजी प्रकटे और किस कारण उनका प्रादुर्भाव हुआ, वह सब चरित्र हम वर्णन करते हैं। पूर्वकाल में भीमानामी दैत्य जो कुम्भकर्ण के वीर्य से उपजा था और जिसकी माता का नाम कर्कटी था, वह अपनी माता सहित सह्य पर्वत में स्थित हो तीनों लोक को तृणवत् समझ नाना प्रकार के उपद्रव करने लगा। एक दिन उसने अपनी माता से पूछा कि हमारे माता-पिता कौन हैं? वे कहाँ गये हैं? तुम अकेली यहाँ क्यों रहती हो? तू हमको विधवा स्त्री के समान विदित होती है। सो उसकी माता ने कहा कि तुम कुम्भकर्ण के पुत्र हो जो रावण का छोटा भाई था जिसको दशरथ के पुत्र रामचन्द्र ने मार डाला। यह सुनकर भीम ने पूछा कि तेरा पति और है, मेरा पिता अन्य मनुष्य था और कुम्भकर्ण तथा रावण कौन थे? राम कौन हैं जिन्होंने उनको मार डाला? तुम सब वृत्तान्त वर्णन करो। सो उसने आदि से अन्त तक रावण के कुल, शूर्पणखा का चरित्र, सीताहरण और फिर लङ्का में श्रीरामजी का गमन तथा सब दैत्यों का वध विस्तार से कह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुनाया। कहा कि जब मैं विधवा हो गई तो अपने माता-पिता के घर रहने लगी। मेरा दुःख देख मुनियों को जो मेरे पति के वध करने के कारण हुये, खाने लगे। दण्डकवन में मुनियों को भक्षण कर दैत्यों को बसाया। एक दिन उन्होंने अगस्त्य के एक शिष्य को जिसका नाम तीक्ष्णाह्व था, भोजन करने की इच्छा की। सो हमारे माता-पिता को उन्होंने क्रोध की दृष्टि से देखकर जला दिया और मैं माता-पिता से रहित होकर मैं तुमको लेकर यहाँ भागकर बसी, शेष वृत्तान्त रामायण में है।

उन्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! रामचन्द्र का चरित्र सुन भीम अति कोपित हो बदला लेने के विचार में हुआ। कहने लगा कि देवताओं ने हमारे साथ बड़ी बुराई की है जिनकी सहायता विष्णु ने कर हमारे कुल को नष्ट करा दिया। दैत्यों की बड़ी अप्रतिष्ठा हुई है। जो मनुष्य अपने पिता का बदला न लेवे, वह महानीच है। सो वह तप की इच्छा से वन में जाकर हमारा तप करने लगा और इतना कठिन तप किया कि सहस्र वर्ष पर्यन्त श्वास रोके हुये बैठा रहा। पर हम देवताओं का दुःख समझ उस पर प्रसन्न न हुये। सो भीम के उग्र तप से तीनों लोक जलने लगे। देवता और मुनि आदि अपने-अपने लोकों से भागकर हमारी शरण में पहुँचे। उन्होंने भीम के तप का वृत्तान्त वर्णन कर कहा कि वह दैत्य की स्त्री और कुम्भकर्ण से उपजा है तथा अपने पिता का बदला लेने की इच्छा से तप कर रहा है। उसके तेज से तीनों लोक जले जाते हैं। तुम जाकर उसको वर दो कि तीनों लोक जलने से बचे रहें। यद्यपि यह वचन कहना हमको उचित नहीं पर हम अपने प्रयोजन से कहते हैं। हमने देवताओं को बिदा कर उसके पास जाकर उसको वर माँगने की आज्ञा दी। भीम ने कहा कि मुझको अप्रमेय बल कृपा करो कि मैं अपने पिता के शत्रुओं को जीतूँ। हम यह वर देकर अन्तर्धान हो गये और भीम प्रसन्नचित्त तुरन्त अपना माता के पास गया और कहा कि मैं सब मुनि और देवताओं का बध कर डालूँगा। तुम अपने नेत्रों से ऐसा सुख देखोगी। यह कहकर एक भयानक शब्द किया कि तीनों लोक काँप उठे। देवताओं को भय और दैत्यों को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आनन्द प्राप्त हुआ। सब दैत्य अपने-अपने परिवारों सहित उसके समीप गये और भीम को अपना राजा बनाया। भीम ने दैत्यों सहित इन्द्र पर चढ़ाई की। सो सम्पूर्ण देवता भागकर विष्णु की शरण में पहुँचे। विष्णु देवताओं को साथ लिये हुये दैत्य के सामने खड़े हुये। निदान घोर युद्ध मचा। दोनों ओर के मनुष्य बहुत ही लड़े। विष्णु और भीम ने भली-भाँति युद्ध कर हर प्रकार के शस्त्र चलाये। निदान विष्णुजी ने अति कोपित हो ब्रह्मास्त्र हाथ में लिया। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे विष्णो ! तुम अपने लोक को चले जाओ। इस दैत्य को तुम नहीं जीत सकोगे। इसको शिवजी बध करेंगे। यह आकाशवाणी सुनकर विष्णु तुरन्त अन्तर्धान हो गये। भीम ने जय पा अपनी सेना सहित लौटकर देवताओं के जीतने का हाल अपनी माता से आकर कहा और तीनों लोक का राज्य करने लगा। उसने देवताओं के स्थान पर दैत्यों को दृढ़ स्वामी बनाया और सबके रत्न छीन लिये तथा वेद पुराण और स्मृति के सब धर्मों को बिगाड़ डाला।

तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हम, विष्णु और सब देवता आदि ने शिवजी की शरण में जाकर दण्ड और प्रणाम के उपरान्त स्तुति कर सब वृत्तान्त भीम का वर्णन करके उसके नष्ट होने की विनय की कि बिना तुम्हारे और किसी से वह नहीं मरेगा। शिवजी बोले कि अच्छा समय पर हम उसको मारेंगे। जब कि वह कामरूप देश के राजा प्रियधर्म को जो हमारा भक्त है, दुःख देगा तो हम उसको मार डालेंगे। तब तक तुम अपने-अपने स्थानों में जाकर दुःख सहो। सो हम सब लौटकर समय की बाट देखने लगे। एक दिन भीम के मन में आया कि जो शिवजी अपने बाण रामचन्द्र को न देते तो हमारे पिता आदि किसी प्रकार से न मारे जाते। वही शिव देवता और मुनियों की रक्षा किया करते हैं। उन्हीं के बल पर विष्णु बलवान् रहते हैं। उसको मैं मार डालूँ पर वह शिव देख नहीं पड़ता। इसलिये शिवजी के भक्तों को दुःख देना चाहिये। वे अपने भक्तों का अपमान न देख सकेंगे और निश्चय है कि वे तुरन्त आवेंगे। यह इच्छाकर वह अपनी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सेना सहित शिवभक्तों को ढूँढ़ने लगा। वह सबसे पहिले कामरूप के राजा को शिवजी का सेवक समझ वहाँ आया और नाना प्रकार के उपद्रव कर सब मन्दिर खोद डाले, घरों को नष्ट कर दिया तथा धन और सामग्री सब लूट ली। सो सब प्रजा दुःखी होकर राजा के पास जा पुकारी। इतने में भीम ने राजा के गढ़ को घेर लिया और राजा को पकड़ बाँध लिया। उसको बहुत मारा और पैरों में बेड़ियाँ डाल दीं। सब राज्य को राजा से छीन सबका स्वामी आप बना। पर राजा ने ऐसी दुःख की दशा में भी शिवजी की पूजा न छोड़ी। उसने गंगा के स्मरण मानसी स्नान कर पार्थिव पूजा की। दक्षानामक उसकी रानी जो उसी के पास बन्दि में थी, वह भी बराबर शिवजी को पूजती रही। सो शिवजी प्रसन्न होकर गुप्त रीति से वहाँ आये और पार्थिव में स्थित हुये जिसकी पूजा राजा करता था। सो एक मनुष्य ने राजा को पूजते हुये देख भीम को खबर दी कि देखो, वह इस समय तक पूजा नहीं छोड़ता। अब आप उसे अपनी आँखों से देख लेवें। सो भीम खड्ग हाथ में लेकर बड़े क्रोधपूर्वक इस इच्छा से राजा के पास आया कि उसको इसी समय मार डालूँगा। और जो मनुष्य उसकी सहायता करेगा, उसको भी नहीं छोड़ूँगा। सो जब वह राजा के समीप गया तो दूत का कहना ठीक पाया। उसने कहा हे राजन्! तू यह क्या कर रहा है? हमसे सत्य-सत्य कह। राजा ने कहा कि हम तो अपनी आपदा के दूर करनेवाले शिवजी की पूजा कर रहे हैं। वे अपने भक्तों के बड़े रक्षक हैं। जो तुम्हारे मन में आवे वह करो। शिवजी रक्षा करनेवाले हैं। यह कहकर राजा ने शिव की स्तुति की। भीम ने हँसकर कहा कि हम तेरे स्वामी को भलीभाँति जानते हैं। वे हमारा क्या कर सकेंगे? हमारे पिता आदि ने क्या शिवजी की स्थापना नहीं की थी? क्या वे शिवजी के भक्त न थे जिन्होंने एक नीच के समान मीच पाई? जब तक मैं शिवजी को नहीं देखता हूँ, तब तक तुम उनको अपना स्वामी समझते हो। तू यह कैसा अकर्म कर रहा है? इस मूर्ति को अपने सामने से फेंक दे। पर राजा को कुछ भी भय न हुआ और अति दृढ़ता से बैठा रहा क्योंकि शिवजी के भक्तों की यही रीति है कि आपत्तिकाल में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और भी अधिक शिवजी की प्रीति करते हैं। राजा ने इसी विचार से कि शिवजी अपने भक्तों के प्रति समय रक्षक हैं, वे अवश्य सहायता करेंगे। तो भीम से कहा कि तू बड़ा मूर्ख है जो शिवजी को औरों के समान जानता है। जाना जाता है कि तू मरणप्राय है। कदाचित् शिवजी क्रोध करेंगे तो तुम जलकर भस्म हो जावोगे। शिवजी वे हैं जिनके सेवक ब्रह्मा और विष्णु भी हैं औरों की क्या गणना है? जो तुम हमारे साथ कुछ बुराई करोगे तो उसी समय जलकर भस्म हो जावोगे। भीम ने कहा कि हम भली भाँति तेरे शिवजी को जानते हैं। जो तू इसी समय शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता तो निश्चय जाना कि तू प्राण से वध किया जावेगा। निदान ऐसा विवाद दोनों से हुआ। राजा ने कहा कि तेरे मन में जो आवे वह कर। मैं शिवजी की पूजा नहीं छोड़ता। भीम ने बहुत दुर्वचन सुन खड्ग हाथ में ले कहा कि तेरे शिवजी कहाँ हैं? इस समय आकर तेरी सहायता करें, मैं तेरा शीश धड़ से भिन्न करता हूँ। यह कहकर भीम ने खड्ग चलाया। उसी समय शिवजी पार्थिव के भीतर प्रकट हुये।

इकतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! जब शिवजी को गणों समेत भीम ने देखा तो शिवजी का महाभयंकर स्वरूप देखकर भयवान् हुआ। सो शिवजी ने तुरन्त उसका खड्ग जला दिया और बड़े वेग से कहा कि हमारा बल देख और अपनी शक्ति हमें दिखा दे जिस पर तुझको इतना अहंकार है। सो भीम को बल ने इतना बहँकाया कि वह युद्ध के लिये सामने हुआ और शिवजी के साथ भले प्रकार लड़ा। दैत्यों और शिवगणों से युद्ध होने लगा। वह युद्ध देखकर हम और विष्णु आश्चर्य में खड़े रहे। जो बाण भीम ने शिव के ऊपर छोड़े, वह सब शिवजी ने अपने पिनाक नामी धनुष से काट डाले। हर प्रकार के शस्त्र भीम ने शिव पर छोड़े जिनको शिवजी ने अपने शस्त्रों से दूर किया और अपने त्रिशूल से भीम को धरती पर गिरा दिया जिसको देखकर सब दैत्य रो उठे। पर भीम फिर पृथ्वी से उठकर युद्ध करने लगा। जो-जो बातें युद्ध की होती हैं, वह दोनों ओर से हुईं। इतना कहकर ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने तुमको निराश हो शिवजी के समीप भेजा और कहा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि शिवजी से कह दो कि यह क्या होता है ? भीम को मार डालें। तुमने जाकर सदाशिवजी की बहुत स्तुति करके विनती की कि भीम को मार डालिये। सो शिवजी ने मानकर तुमको हमारे पास भेजा। इतने में सब दैत्यों और भीम ने शिवजी के ऊपर इकबारगी धावा किया। उस समय हाहाकार मच गया और सब देवता रोने लगे। हम और विष्णु कहने लगे कि यह क्या होता है ? उस समय शिवजी ने क्रोधित होकर हुंकार दिया जिससे एक ज्वाला उपजी और सब दैत्यों को जला दिया। भीम को भी उसी ज्वाला ने परिवार सहित भस्म कर डाला। सो वही भस्म सदाशिवजी की नासिका की वायु से उड़ श्रीसदाशिवजी और सब देवताओं के शरीर से स्पर्श कर पृथ्वी में गिरी जिससे लाखों गुणदायक औषध प्रकट हुई। उनके गुण से सिद्ध लोग नाना प्रकार के रूप धारण करते हैं जिनके कारण बहुत से कार्य सिद्ध होते हैं और जिनके बल से भूत और प्रेत आदि भागते हैं। ऐसी लीला सदाशिवजी की देखकर देवतादिकों को अति सुख हुआ और सब ने हाथ बाँध सदाशिवजी की स्तुति की और कहा कि तुम यहीं स्थित रहो। सो शिवजी अपने पूर्णांश से उसी स्थान पर जहाँ भीम को जलाया था, स्थित हुये। यद्यपि वह देश अति अपवित्र था पर जब शिवजी वहाँ स्थित हुये तो शुद्ध हो गया। वह भीम पूर्व शंकर के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो पत्थर के रूप से वहाँ है। जो इस चरित्र को पढ़े-सुनेगा, वह दोनों लोक में प्रसन्न रहेगा। भीमशंकर नाम छठे ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र पूर्ण हुआ।

बत्तीसवाँ अध्याय।

विश्वनाथलिंग का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम काशीपति विश्वनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जो सब पापों को क्षय करनेवाले और मोक्षदाता हैं। वे ब्रह्महत्या को निवारण करते हैं। प्रलय के उपरान्त जब शिवजी ही निर्गुण रूप से रह गये और सर्वसृष्टि को अपने में लीनकर अकेले थे और कोई वस्तु सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र कुछ न था केवल वही परब्रह्म गुणातीत और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जिसके वर्णन में वेद भी गूँगा-बहिरा है और मन, वचन तथा इन्द्रियों से भी वह प्रतीत नहीं हो सकता, उस समय वह अकेला ही रह गया तब उसका कोई वर्ण और रूप न था और वह छोटे-बड़े, मोटे, पतले कुछ भी न थे। निदान हर प्रकार से निर्गुणरूप था। सो उसी निर्गुण ब्रह्म ने सगुणरूप धारने का विचार किया और तुरन्त पाञ्चभौतिक शरीर धार सगुणरूप हो शिव हरके नाम से प्रसिद्ध हुये। उनके शम्भु महेशादि और बहुत से नाम हुये। हे नारद! निर्गुण स्वरूप और सगुण ब्रह्म में कुछ भी भेद नहीं। यह श्रीमुख का वचन है। फिर सगुण ब्रह्म ने अपने शरीर से शक्ति उपजाई और एक रूप से दो स्वरूप हुये। वही शिवजी परमपुरुष, तीनों गुणों के उपजानेवाले और शक्ति प्रकृतिरूप ने अपनी लीला के निमित्त एक क्षेत्र पाँच कोस का निर्माण किया। उसको आनन्दवन, काशी, वाराणसी, अविमुक्ति, रुद्रक्षेत्र और महाश्मशान आदि नामों से मनुष्य जानते हैं। वह स्थान श्रीपरम शक्ति और परम शिवजी का हुआ। यह स्थल श्रीसदाशिवजी को बहुत ही प्रिय है। सो शिवशक्ति ने उस स्थान में बहुत विहार किया और लीला करने के निमित्त अति सुन्दर शरीर धारण किया। फिर उनको यह इच्छा हुई कि किसी बलवान् पुरुष को उपजावें। सो अपनी बाईं भुजा से उन्होंने एक मनुष्य को जो अति सुन्दर और चार भुजा धारण किये था, श्याम रङ्ग से उपजाया। उसने तुरन्त शिवजी को प्रणाम कर कहा कि मुझे क्या आज्ञा होती है और मेरा क्या नाम है? शिवजी ने कहा कि तुम तीनों लोक के स्वामी हो, इससे तुम्हारा नाम विष्णु प्रकट होगा। चार भुजा होने के कारण तुम्हारा नाम चतुर्भुज होगा। हरि, अच्युत, भगवान् आदि और भी बहुत नाम तुम्हारे होंगे। अब तुम कठिनता से तप करो कि तुममें अधिक तेज बढ़े। श्वास मार्ग से वेद पढ़ा कर आप अन्तर्धान हो गये। विष्णु ने शिवजी की आज्ञा मान तप करने के निमित्त पहिले अपने हाथों से पुष्करिणी को खोदा और अपने श्रमजल से उसे भर दिया। वे पचास हजार वर्ष पर्यन्त ध्यान में डूबे रहे। जब उनको कुछ तप का फल विदित न हुआ तो विष्णु अति चिन्तित हुये। इन्होंने घन की गरज के समान आकाशवाणी सुनी कि तुम फिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तप करो, तुमको वर मिलेगा। विष्णुजी ने फिर बड़ा तप किया और अति प्रेम से शिवजी के ध्यान में डूबे। सदाशिवजी उमाशक्ति सहित वहाँ प्रकट हुये। शिवजी ने अपना शिर हिलाया और विष्णु की स्तुति कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की। सो उसी दशा में शिवजी के कान से मणिकर्णी उसी स्थान पर गिर पड़ी जिससे वह स्थल मणिकर्णी नाम से प्रसिद्ध हुआ। शिवजी ने विष्णुजी से 'वरम्ब्रहि' कहा। विष्णु ने कहा कि हमको अपनी अप्रमेय भक्ति कृपा करो और इस तीर्थ को सबसे श्रेष्ठ और उत्तम पद कृपा करो। शिवजी ने माना और कहा कि अब तुम फिर सृष्टि के उपजाने के निमित्त तप करो और हमारे ध्यान में दृढ़ हो जावो। यह कह शिवजी अन्तर्धान हो गये और विष्णु फिर तप करने लगे। सो बहुत समय तक विष्णु ने तप किया पर शिवजी प्रसन्न न हुये। क्योंकि शिवजी की और लीला करने की इच्छा थी। जब विष्णु तप करते-करते थक गये तो उनके शरीर से इतना पसीना निकला कि धरती में भर गया। वह पसीना मानो ब्रह्मरूप ही था जिसने पृथ्वी भर को भर दिया। विष्णुजी अति चिन्तित हो आश्चर्य में हुये और शिवजी की माया कुछ भी न जानी। काशी उसी जल में डूब गई पर शिवजी ने उसको अपने त्रिशूल से स्थित कर लिया व विष्णु उसी जल के भीतर सो गये। वे बहुत समय तक अचेत सोया किये। उस समय शिवजी ने यह चरित्र किया कि विष्णु की नाभि में जो तालाब के समान थी, एक कमल उपजाया जो कोटि सूर्य के सदृश प्रकाशमान था। फिर शिवजी ने यह लीला की कि अपने दाहिने अङ्ग से मुझको उपजाया और उसी कमल के ऊपर मुझको प्रकटाया। पर शिवजी की माया से मैंने कुछ न जाना कि मैं क्योंकर उपजा हूँ। फिर मैंने विचार किया कि जहाँ इस कमल की जड़ होगी, उसी स्थान से मैं उपजा हूँगा। सो कमल की नाल के मार्ग से चला कि उसके मूल तक पहुँचूँ। मैं सौ वर्ष तक चलता रहा पर उस कमल की जड़ न मिली। तब मुझे अति चिन्ता हुई और जो मनुष्य सर्वोपरि हैं उसकी शरण में गया। आकाशवाणी हुई कि तप करो। यह सुन मैं तप करने लगा। शिवजी ने अपनी लीला से विष्णु को सचेत किया। वह चैतन्य हो मेरे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सामने खड़े हो गये और उन्होंने 'वरम्ब्रूहि' मुख से कहा। मैंने पूछा कि तुम कौन हो? सो हम और विष्णु में बड़ा वाद हुआ। इसी विवाद में शिवजी ज्वालारूप से प्रकट होकर धरती से आकाश तक दिखाई दिये। सो हम दोनों उसकी थाह के जानने के लिये चले और निराश लौटकर शिवजी की शरण में गये। तब शिवजी प्रसन्न हो प्रकटे और कहा कि तुम दोनों हमको प्राण के समान प्रिय हो। हे ब्रह्मन्! तुम सृष्टि उपजावो और हे विष्णो! तुम उसे पालो। तुमको हम कार्यों का बल कृपा करते हैं। फिर शिवजी अन्तर्धान हो गये। हम दोनों ने वही मूर्ति अपने हृदय में धारण करली। विष्णु अन्तर्धान हो वैकुण्ठलोक के निर्माण करने के उपरान्त उसी स्थान पर स्थित हुये। मैंने सब ब्रह्माण्ड को उपजाया। चौदह लोक, असंख्य उपलोक जो संख्या में पचास कोटि योजन है, चौदह भुवन और जैसे कि सात लोक पृथ्वी के ऊपर हैं वैसे ही पृथ्वी के नीचे भी हैं। शिवजी ब्रह्मरूप होकर ब्रह्माण्ड उपजाते, विष्णुरूप होकर पालते और हररूप धर सब ब्रह्माण्ड को अपने में लय करते हैं। मुख्य उनका नाम शिवजी है। इसी प्रकार उन्हीं शिवजी के तीन रूप हैं। उनकी महिमा वेद नेति-नेति कह पुकारते हैं। वे आप निर्गुण हैं पर ब्रह्मा, विष्णु और हर के द्वारा संसार भर में प्रकट और सगुण स्वरूप हैं। जैसा कि परम शिवजी के दो रूप वर्णन किये गये हैं एक क्षर दूसरा अक्षर। जो दिखाई देता है, वह तो क्षर है तथा जो निर्गुण और देखने में नहीं आता, वह अक्षर है। सो शिवजी निर्गुण और सगुण दोनों रूप से विराजमान हैं जिनकी महिमा कोई नहीं जानता। उन दोनों में कुछ भेद नहीं है। जैसे धागे और मोती में, फूल और सुगन्ध में तथा अग्नि और ज्वाला में कुछ अन्तर नहीं है वरन् वे एक ही हैं। इस बात को कोई धर्मवाले जानते हैं कि यह बात अति कठिन और गुप्त है। धर्मज्ञ मनुष्य पहिले सगुणरूप को जान निर्गुणस्वरूप देखते हैं और निर्गुण को पाकर फिर सगुण की ओर ध्यान देते हैं। उचित है कि जब तक निर्गुण का पूरा हाल जाना न जावे तब तक सगुणरूप के जानने में लगा रहे। जब भक्त निर्गुण रूप को जान लेता है तो वह फिर पापों से शुद्ध हो जाता है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! निर्गुणरूप के ज्ञान के उपरान्त जीने के सब कार्य नष्ट होकर पवित्रता प्राप्त होती है और सर्वलोक ब्रह्मरूप दिखाई देने लगते हैं। ऐसी बुद्धि और ज्ञान केवल अच्छे योगियों को प्राप्त होता है। वह सब विधिनिषेध से भिन्न होकर ब्रह्मस्वरूप हो जाता है। उसको पुण्य-पाप और दुःख-सुख से कुछ प्रयोजन नहीं रहता। यह ज्ञान महाकठिन और दुर्लभ है। इसको कोई सत्पुरुष ही जानते हैं और योगी बहुत जन्मों के अभ्यास से कुछ-कुछ जानते हैं। इसी से शिव ने ज्ञान को अति कृपा करके उपजाया है जो ज्ञान सब वस्तुओं से श्रेष्ठ है। इसका विस्तार इस तरह पर है कि एक दिन शिव ने संसार के लाभ के निमित्त यह समझा कि ब्रह्मा ने हमारी आज्ञा से सृष्टि उपजाई तो सब ब्रह्माण्ड के जीव अपने-अपने कर्मों में बँधे रहेंगे। वे हमारे रूप को क्योंकर जान सकेंगे वरन् वे संशय सागर में डूबे रहेंगे। सो शिव ने पाँच कोस तक काशी को जो अपने त्रिशूल में उठा रक्खा था, धरती में छोड़ दिया और अपने लिङ्ग अविमुक्ति अर्थात् विश्वनाथ को भी उसी काशी में स्थापित कर दिया। उन्होंने अविमुक्ति अपने लिङ्ग से कहा कि यह हमारा क्षेत्र काशी अविच्छिन्न है। यह प्रलय में भी नष्ट न होगा। यह हमारे अंश से उपजा है और तुम्हारे त्यागने के योग्य यह काशी नहीं है और न होगी। यह हमारे अंश से उपजी है। हमको यह बहुत प्यारी और हमारे दुःख दूर करनेवाली है। जो मनुष्य इसके दर्शन कर जावेगा, उसको फिर आवागमन न होगा। जो मनुष्य काशी में केवल यात्रा कर जावेगा, वह परमपद प्राप्त करेगा। जो दूर के रहनेवाले काशी को हमारे नाम के साथ स्मरण करेंगे तो वे ब्रह्मा के दिन में भी नष्ट न होंगे। इस बात को निश्चय रक्खो। जब समय पाकर हम प्रलय करेंगे तो काशी को अपने त्रिशूल पर रखकर बचा लेंगे। जब ब्रह्मा ब्रह्माण्ड उपजावेंगे तो फिर हम उसको पृथ्वी में रख देवेंगे और हम भी उसी स्थान पर स्थित होकर संसार भर को पार लगावेंगे। यह वचन सदाशिव ने अविमुक्त अर्थात् विश्वनाथ लिङ्ग से कहकर उनको काशी सहित मृत्यु लोक में छोड़ दिया। सो अविमुक्त ने काशी को लेकर इस असार-संसार को अपने चरणारविन्दों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से पवित्र किया। उस दिन से काशी पापों को दूर करनेवाली हुई जहाँ मुक्ति दासियों के समान रहा करती है और संसार भर को अति सुगमता से मुक्ति देनेवाली है जिनको हम और विष्णु सेवन करते हैं। जो मनुष्य किसी प्रकार के मोक्ष के योग्य नहीं हैं, उनको भी काशी मुक्ति देती है। वह पाँच कोस तक निष्केवल शिव का रूप है। उसमें असंख्यगुण हैं। संसार में कौन ऐसा है जो उसका एक गुण भी वर्णन कर सके। शिव विश्वनाथ और काशी के उपजने के उपरान्त संसार उत्पन्न हुआ। सदा शिव की आज्ञानुसार वह दुःखों के दूर करने को मानो कुल्हाड़ी है। सो अविमुक्त काशी को पाकर अति प्रसन्न हुये और संसार भर सनाथ हो गया। हे नारद! जब कि लिङ्गरूप विश्वनाथ काशी सहित प्रकट हुये तब विष्णु और हम अपने गणों सहित शिव-शिव कहते उस स्थान पर आये और इन्द्र, सब देवता, दिक्पति, सनकादिक और सिद्धादि सहित आ गये जो शिव उच्चारते और हम सबने मिलकर उस स्थान पर बड़ा उत्सव करके सुख माना और बड़े प्रेम से शिवलिङ्गी की पूजा की तथा अष्टाङ्ग प्रणामकर प्रेमसागर में डूब गये। हम और विष्णु इतने प्रसन्न हुये कि फिर दूसरी बार षोडशोपचार से सामग्री इकट्ठी कर उनका पूजन किया और उनसे अधिक किसी को श्रेष्ठ न समझा। फिर मनुष्यों ने भी दूसरी बार पूजा की। फिर हम सबने मिलकर स्तुति की जिसके सुनने से शिव प्रसन्न होकर तुरन्त प्रकटे जिनका चतुर्भुजी स्वरूप, पाँच शिर, चन्द्रमा भाल पर, कानों में कुण्डल के बदले सर्प, त्रिनेत्र, कण्ठ में हलाहल का चिह्न विराजमान, हृदय में उत्तमोत्तम माल और उनके सम्पूर्ण अङ्ग प्रत्यङ्ग अति सुडौल, सुन्दर गौर शरीर जिसमें श्वेत भस्म लगी हुई, बाईं ओर शक्ति विराजमान शिलादमुनि के पुत्र सहित प्रकटे। ऐसा स्वरूप सदाशिव का देख हम सब कृतार्थ हो गये। सबने प्रणाम के उपरान्त स्तुति पढ़ी और कहा कि हे अविमुक्तनाथ! आप यहीं स्थित रहें, कभी भी यहाँ से न जावें कि यह काशी नगरी सर्वोपरि के पद पावे और मोक्षक्षेत्र नाम से प्रसिद्ध होवे। यह तुम्हारा लिङ्ग सबसे श्रेष्ठ पूर्णांश से है, सदा स्थित रहे। यह सुन विश्वनाथजी ने अति कृपा से "एवमस्तु" कहा। यही वचन शक्ति और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नन्दी ने भी कहा। फिर शिव सबको वर देकर उसी लिङ्ग से अन्तर्धान हो गये। वही ज्योतिर्लिङ्ग विश्वेश्वर विश्वनाथ अविमुक्तनाथ शिव का है जिसके दर्शन पूजा से सब दुःख दूर हो जाते हैं। वही काशी क्षेत्र प्रसिद्ध है जो जीवन्मुक्ति कृपा करता है। न तो तीनों लोक में काशी के समान दूसरी पुरी है और न विश्वनाथ लिङ्ग के समान दूसरा लिङ्ग है। यह सत्य है, सत्य है, सत्य है।

चौंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! विश्वनाथ और काशी के चरित्र भक्तों को मुक्ति देनेवाले हैं। वहाँ मणिकर्णिका ऐसा तीर्थ आनन्द देनेवाला विराजमान् है, जो मनुष्य तीन बेर काशी और विश्वेश्वर को कहे, वह इस लोक में मनोरथ और परलोक में परमपद प्राप्त करे। वेद और पुराण इस बात को कहते हैं कि शिव केवल भक्ति के अधीन हैं। इससे अविमुक्त होकर प्रकट हुये। जब इस नाशवन्त संसार में काशी आई तो इस लोक में सब लोगों को अति आनन्द प्राप्त हुआ। संसार में तेज फैल गया। किसी को कुछ दुःख न रह गया। सर्व मनुष्य शिवकाशी शिवशंकर काशी कहने लगे, और उत्तम रीति से नाचने लगे। घर-घर में मनुष्यों ने आनन्द की सभायें सजाई और संसार के मनुष्य काशी विश्वनाथ के दर्शन करने के निमित्त बड़े धूमधाम से चले जिनके साथ उनके पुत्र और स्त्रियाँ थीं। वह शिवजी की समाज जो काशी में इकट्ठा हुई, उसका वर्णन नहीं हो सकता। वे सब गाते बजाते हुये पहुँचकर शिव के चरणों को स्पर्श कर अपने हृदय से लगाने लगे। कोई अपना सब धन लुटाने लगा। इतने में जो मनुष्य शैव थे पर वह दर्शन करने नहीं गये, उन्होंने परस्पर शिव की महिमा वर्णन कर सबको उपदेश दिया कि अवश्य चलना चाहिये। एक स्त्री ने उन सबके मुखों से विश्वेश्वरनाथ के गुण सुन अपने पति से जो कृपण था, कहा कि तुम भी चलो कि विश्वनाथ के दर्शन प्राप्त होवें और वह विश्वेश्वरनाथ के बड़े वचन कहकर चुप हो रहो।

पैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह वचन अपनी स्त्री का सुनकर उसके पति

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के मन में अति दुःख उपजा क्योंकि उसने जाना कि वहाँ जाने से कुछ द्रव्य खर्च होगा । कहा कि हे स्त्री ! तू बुद्धिहीन हो गई है। तूने यह विचित्र वार्ता कहाँ से सुनी ? तूने हमारे मन को क्यों जला दिया ? तुम कहाँ आज जाकर किसकी संगति में बैठी हो और तुमको यह किसने शिक्षा दी जो निष्केवल मेरे दुःख का कारण है। तुम भलीभाँति जानती हो कि मैं वृथा खर्च करने से भिन्न रहता हूँ। अर्थात् बड़े श्रम से कौड़ी-कौड़ी जोड़कर यह रुपया इकट्ठा किया है । बड़ी भाग्य से द्रव्य मिलता है जिसके न होने से कितना दुःख प्राप्त होता है। इससे बुद्धिमान् सदा धन सञ्चित करते हैं । सो ऐसे विचार और बुद्धि को अपने मन से दूर करके अपने घर के कार्य में लगी रह । स्त्री जो शिवजी के प्रेम में डूबी हुई थी, अपने पति के इस वचन को सुनकर पाँव पर गिर पड़ी और हाथ जोड़कर कहा कि वास्तव में धन का संग्रह करना बहुत अच्छा है पर शिवजी के लिये उसको व्यय करना उचित है। तुम और धनसंग्रह कर लेना । शिवजी की भक्ति से तो बहुत धन प्राप्त होता है । जिह्वा उसी का नाम है जो शिवजी का वर्णन करे, मन उसी को कहते हैं जो शिवजी के ध्यान में डूबा रहे, कान वही हैं जो शिवजी का गुण सुनें, नाक वही है जो शिवके चरणों की सुगन्ध ले, नेत्र वही हैं जो शिवजी की मूर्ति को अवलोकन करें, हाथ भी वही उत्तम हैं जो शिवजी की पूजा करें, पैर वही हैं जो शिवजी के क्षेत्र में चलें, शिर उसी को कहते हैं, जो शिवजी के प्रणाम में टेढ़ा हो और धन तथा द्रव्य वही है जो शिवजी के कार्य में खर्च हो। जो वस्तु प्रिय हो, वह सब शिवजी के लिये जाननी चाहिये और सब कर्मों को शिवजी पर वारना चाहिये । विश्वनाथ की पूजा बड़े-बड़े पापों के दूर करनेवाली है। यह समय शिवजी के दर्शन के निमित्त उत्तम है। फिर ऐसा समय न मिलेगा और न ऐसे साथी मिलेंगे, इसलिये चलने की तय्यारी करना चाहिये। संसार में धर्म से कोई काम बढ़कर नहीं है। धर्म के अधीन धन है । उसके पति कृपण ने यह सुनकर कहा कि जो भाग्य में लिखा होता है, वही होता है । हम क्यों उपाय करें और क्यों निरर्थक रुपया खर्च करें ? भाग्य में कोई न्यूनाधिक्य नहीं कर सकता । भाग्य को ब्रह्मा और विष्णु भी नहीं बदल सकते । जिन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हाथों से मुझको रुपया खर्च करना पड़े, उन हाथों को मैं जलाना उत्तम समझता हूँ। जिन हाथों से धन को छल से उपजावे, क्या उन्हीं हाथों से उसको खर्च करना उचित है ? तू हमको वृथा ही लुटाया चाहती है। स्त्री ने फिर चिन्तित हो शिवजी के गुण वर्णन कर चलने की सम्मति दी। तब तो उसका कृपण पति अति क्रोधित हो स्त्री को झिड़ककर दुर्वचन देने लगा। उसने कहा कि स्त्रियों को अपने पति की आज्ञा में चलना चाहिये न कि तेरे समान पति पर आज्ञा चलानी उचित है। जो तूने फिर इस वचन को कहा तो मैं अपने प्राण दे डालूँगा। तेरी मृत्यु तो है मैं घरबार छोड़कर जाता हूँ। तू घर में भली भाँति रहकर और जो मन में आवे, वह कर। यह कहकर वह कृपण अपने घर से चला गया और स्त्री अति दुःखी शिव के प्रेम में डूबी रही।

छत्तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ? कृपण वन में जाकर बहुत रोया। उस समय एक शैव वहाँ आन पहुँचा और उससे रोने-पिटने का हेतु पूछा। कृपण ने सब वृत्तान्त उसे कह सुनाया। शैव ने शिव का ध्यान कर कृपण से पूछा कि तुम्हारी स्त्री ने तुम्हें धर्म की अच्छी सीख दी थी पर तुमने शिव की माया में बँधकर कुछ नहीं सुना। जो मनुष्य शिव की सेवा नहीं चाहते, वे मानो अमृत छोड़ विष पीते हैं। जो धन तुमने बड़े परिश्रम से इकट्ठा किया है, वह तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं जावेगा। वे पुरुष धन्य हैं जो शिव की प्रसन्नता के निमित्त शिव के तीर्थों में जाकर शिव के प्रेम में दानादि करते हैं। तुमको उचित है कि विश्वनाथ के दर्शन के निमित्त तत्पर हो जावो। इस मनुष्य तनु की देवता भी इच्छा करते हैं। ऐसे शरीर को पाकर जो फिर भी भूला रहा तो पश्चात्ताप के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता। जब शैव ने इस प्रकार उत्तमोत्तम शिक्षा के वचन जो शिव की स्तुति के भरे हुये थे, कहे तो कृपण अति प्रसन्न हो शिव के प्रेम में परिपूर्ण हो गया। उसने शिव की भक्ति और स्तुति की। फिर कहा कि मैं मूर्ख अवस्था में था। अब मुझे अति आनन्द प्राप्त हुआ है। धन्य भाग्य मेरे कि आपके समान मुझे उपदेशक मिला। मैं तो इस समय तक शिव की माया में भूला हुआ था।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सैंतीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! शिव के भक्त ने कृपण से कहा कि संसार में उत्तम, मध्यम और निकृष्ट तीन प्रकार के मनुष्य होते हैं। उत्तम वे पुरुष हैं जो संसार को नाशवन्त समझकर अहंकार को छोड़ देते हैं और मन से सदा शिव के तप में लगे रहते हैं। वे नातेदारों जैसे भाई और लड़का आदि को छोड़ द्वैतभाव लोभादि को बारम्बार दूर करके अहंकार, लोभ, काम और क्रोध छोड़ योग में स्थित हो सदा शिव का ध्यान करते रहते हैं। फिर असंख्य ज्ञान पा संसारी माया छोड़ संतोष धारण कर वन में स्थित रहते हैं और कामदेव को जलाकर सब नित्यकर्मों को छोड़ केवल मन में शिवजी का ध्यान करते और संसार में रहकर संसार से भिन्न रहते हैं। चिता की भस्म अपने भाल में मलकर फिर आवागमन में नहीं पड़ते। वही परमहंस रूप कहे जाते हैं। उनके समान और दूसरा कोई संसार में नहीं है। मध्यम वह है जो कभी हाथी पर चढ़ते हैं और कभी शिर पर बोझ रक्खे हुये चलते हैं। कभी धनवान् और कभी निर्धन, कभी स्वादिष्ट भोजन से तृप्त और कभी भूखे, कभी सुन्दर वसनों से भूषित और कभी नग्न शरीर, कहीं लोग उनका आदर करते हैं, कहीं उनका अति अपमान होता है। कभी यशवान् और कभी आनन्दवान्, कभी चिन्तित निदान उनकी अवस्था विपर्यय रहती है। उनका जन्म एकसा नहीं कटता। अधम वे हैं जो अन्य जीवों पर दया न करके किसी के मार डालने के विचार में रहकर पाप करने में रातदिन प्रवृत्त रहते हैं। दूसरे के लिये सदा बुराई किया करते हैं और दूसरे को प्रसन्न देखकर ईर्ष्या से जला करते हैं। ऐसे मनुष्य नरक में पड़ते हैं और क्रमपूर्वक एक सौ बीस नरकों में भ्रमण कर अपने कर्मों का स्मरण करते हैं। वे ऊँचे स्वर से शरण-शरण पुकारते हैं और कहते हैं कि इस बेर ऐसे नरक से छूट जावेंगे तो फिर वह काम कि जिनसे ऐसी हमारी यह दशा हुई, नहीं करेंगे। फिर यम के दूत उनको नाना प्रकार के कष्ट देते हैं। उनको इतनी भूख लगती है जिसकी कुछ संख्या नहीं। उनको एक दाना भी नहीं मिलता। यद्यपि उनको प्यास बहुत लगती है पर उनको एक बूँद भर पानी भी नहीं दिया जाता। फिर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह नाना प्रकार के शरीर धारण कर जो किसी जन्म में उनसे शिवजी की कृपा से कुछ शुभकर्म बन न पड़ा तो फिर अपनी मुख्य अवस्था प्राप्त कर लेते हैं। उत्तम पदवी के मनुष्य भी कुसंगति से पापी होकर नरक में जाते हैं। अधर्मी भी सत्संगति पाकर परमपद पाते हैं। जैसा कि विश्वामित्र आदि रावण और कुम्भकर्णादि के वृत्तान्तों से यह बात स्पष्ट विदित होती है। सुसंगति और कुसंगति का परिणाम कितना फलदायक होता है। जो मनुष्य शिव की सेवा करता है, वही उत्तम मुक्ति के योग्य है। ऐसे उपदेश के वचन शिवभक्त से सुनकर कृपण को ज्ञान उपजा और आज्ञा ले अपने घर में आकर स्त्री से कहने लगा कि वे स्त्रियाँ धन्य हैं जो शिवजी की पूजा करनेवाली हैं। वही मोक्ष के योग्य हैं। स्त्री ने कहा कि ऐसी शुद्ध बुद्धि तुमने कहाँ से पाई ? कृपण ने सब वृत्तान्त कह सुनाया। फिर दोनों ने आनन्द से सन्तान सहित काशी में जाकर असंख्य धन शिवजी के निमित्त खर्च किया और उत्तमोत्तम सुगन्धित पुष्प तथा बेलपत्र जो खण्डित न थे, लेकर शिवजी की पूजा अति प्रेम से की और स्तुति करके अपने घर को लौट आये।

अड़तीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! विश्वनाथ और काशीपुरी से बढ़कर कोई उत्तम नहीं है। काशी में मुक्ति दासी के समान सेवा करती है। वह काशी चौकोण पाँच कोस लम्बी है जो तीनों लोक की सार और तीनों लोक के लिये धर्मरूपा है। एक तिल के समान उस पाँच कोस में कोई धरती ऐसी नहीं है, जहाँ मरकर मनुष्य मुक्ति न पावे। काशी को शिवजी कभी नहीं छोड़ते। वह करोड़ ब्रह्महत्या और करोड़ पापों को दूर करनेवाली है। वह हर प्रकार से सबके ऊपर बड़ाई रखती है। वहाँ विष्णुजी भी अपना मरना चाहते हैं। इसी प्रकार सब देवता, मुनि, सिद्धि, नाग और मुनीश्वर आदि भी यही चाहा करते हैं कि हम काशी में मरे। हमारी शक्ति नहीं है कि काशी की महिमा वर्णन कर सकें। और सुनिये कि जो हमारे भौंह के बीच में से शिवजी ने कृपा करके अवतार लिया। वह कैलास में रहने लगे और दक्ष प्रजापति की पुत्री के साथ अपना विवाह किया जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फिर हिमाचल की लड़की होकर शिवजी के साथ दूसरी बार ब्याही गई। वही शिवजी निर्गुणरूप हुये और उन्होंने नाना प्रकार की लीला की। वह अपने गणों और गौरी सहित काशी में आकर विश्वनाथ के दरबार में आये। विष्णु और हम सब देवतादि सहित वहाँ आये। कैलासवासी शिवजी ने गिरिजा सहित विश्वनाथ की बड़ी पूजा की। इसी प्रकार विष्णु ने सब देवताओं समेत विश्वनाथ की पूजा कर स्तुति की। सो विश्वनाथजी ने कैलासवासी शिवजी से भेंट की। उन्होंने कैलासवासी शिवजी से कहा कि हम और तुम एक हैं, कुछ भेद नहीं है। हमको कुछ आज्ञा दीजिये। शिवजी ने कहा कि हे विश्वनाथ! आप यहाँ काशी में स्थित रहें। तब विश्वनाथ ने कहा कि तुम भी कृपा करके गिरिजा और गणों समेत यहाँ स्थित रहो और सृष्टि भर के राजा होकर सब जीवों को मुक्ति दिया करो। जैसा कि तुमको काशी प्रिय है, उसी तरह हम इस काशी को प्रिय जानते हैं। हम लोगों को यहाँ ठहराया करेंगे और तुम उनको मुक्ति दिया करो। यह कहकर विश्वनाथ अन्तर्धान हो गये और गुप्त रीति से पूर्णांशपूर्वक वहाँ स्थित हुये। जो मनुष्य वहाँ मरता है, उसको वे मुक्ति कृपा करते हैं और कैलासपति शिवजी भी शक्ति सहित वहीं रहते हैं। धन्य है काशी जहाँ दोनों शिवजी के रूप विराजमान हैं। विष्णु और हम सब देवताओं और मुनीश्वरों आदि सहित दोनों मूर्तियों की सेवा और पूजन में रहा करते हैं। विश्वनाथ के समान दूसरा लिङ्ग नहीं है। अन्य जितने लिङ्ग हैं, वह मानों विश्वनाथ लिङ्ग की सन्तान और परिवार हैं। विश्वनाथजी महाराज सब शिवभक्तों के राजा हैं। इरेश्वर मन्त्री, ब्रह्मेश्वर वेदपुराण के सुनानेवाले, भैरव कोतवाल, तारकेश्वर धनाध्यक्ष, दण्डपाणि चोबदार, वीरेश्वर भण्डारी अर्थात् खजानची और ढुण्ढिराज अधिकारी हैं। अन्य और सब लिङ्ग विश्वनाथ के आज्ञापालक हैं। वहाँ महारानी अन्नपूर्णेश्वरी भी हैं जो काशीवासियों को पालती हैं। विष्णुसुर आदि असंख्य लिङ्ग काशी में विराजमान हैं जिनकी सेवा से दोनों लोक में आनन्द और मोक्ष प्राप्त होता है।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अब यहाँ पर प्रसिद्ध लिङ्गों का वर्णन करते हैं जो काशी में स्थित हैं।

१ विष्णुसुर २ केशवमुख ३ लोलार्क ४ मिहर ५ कृतवासुकेश्वर ६ वृद्ध कालकेश्वर ७ कालेश्वर ८ कलशेश्वर ९ प्रवृत्तेश्वर १० पशुपति ११ केदारेश्वर १२ कामेश्वर १३ शम्भुत्रिलोचन १४ चण्डेश्वर १५ गरुड़ेश्वर १६ गोकर्णेश्वर १७ नन्दिकेश्वर १८ प्रीतिकेश्वर १९ भारभूतपति २० मणिकर्णेश्वर २१ रत्नेश्वर २२ नर्मदेश्वर २३ लाङ्गलेश्वर २४ वरुणेश्वर २५ शनीश्वर २६ सोमेश्वर २७ जीवेश्वर २८ रवीश्वर २९ सङ्गमेश्वर ३० हरीश्वर ३१ हरिकेश्वर ३२ शैलपर्वतेश्वर ३३ कुण्डकेश्वर ३४ यज्ञेश्वर ३५ सुरेश्वर ३६ शक्रेश्वर ३७ मोक्षेश्वर ३८ रमेश्वर ३९ तिलभाण्डेश्वर ४० गुप्तेश्वर ४१ मध्यमेश्वर ४२ भूमिश्वर ४३ बुद्धेश्वर ४४ शुक्रेश्वर ४५ ताटकेश्वर ४६ धन्वेश्वर ४७ ऋषीश्वर ४८ ध्रुवेश्वर ४९ महादेवेश्वर ५० त्रिसन्ध्येश्वर ५१ कपर्देश्वर ५२ नीलेश्वर ५३ शरेश्वर ५४ ललितेश्वर ५५ त्रिपुरेश्वर ५६ हरेश्वर ५७ बाणेश्वर ५८ श्रीश्वर और ५९ रामेश्वर। जो मनुष्य विश्वेश्वर अर्थात् विश्वनाथ का नाम लेकर विदेशगमन करता है, वह अति आनन्द पाता है। उसको विदेश में कोई दुःख नहीं पहुँचता। विश्वनाथ की सेवा करके हरिकेश दण्डपाणि के नाम से प्रसिद्ध हो सब शिवगणों के राजा हुये। गुणनिधि ब्रह्मदत्त का पुत्र विश्वनाथ की सेवा और भक्ति से कुबेर हो गया। हम, विष्णु और देवता आदि उन्हीं की सेवा से ऐसे-ऐसे पद पर पहुँचे। यह विश्वनाथलिङ्ग सबसे श्रेष्ठ है। विश्वनाथ का देश काशी है। जो मनुष्य काशी को छोड़ देता है, वह मनुष्य नहीं वरन् पशु है और मानो उसकी हथेली से मुक्ति उड़ गई। काशी का चाण्डाल और स्थानों के राजाओं से उत्तम है। उसको यमराज का भय नहीं है। न उसको आवागमन का संशय है। जो गति कि मुनि आदि ध्यान से पाते हैं, वह गति काशी में विश्वनाथ बेपरिश्रम देते हैं। उनके पूर्ण उपासक अगस्त्य मुनि हैं। विश्वामित्र ने उन्हीं की सेवा से ब्रह्मऋषि का पद पाया। वशिष्ठ मुनि उन्हीं की पूजा से तीनों लोक में पूजे गये। यह सदाशिव विश्वनाथ का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आख्यान अतिपवित्र है। इसके पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है।

उन्तालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब हम त्र्यम्बकेश्वर शिवज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिस तरह कि हमने विष्णु से सुना है। गौतम ऋषि जो शिवजी के बड़े भक्त हुये। उनके भाल में भस्म, सब अङ्गों में रुद्राक्ष, जिह्वा पर शिव और परम शिव तथा शिवजी के गुण प्रति समय कहते रहा करते हैं। उनकी स्त्री अहल्या नामी बड़ी पतिव्रता थी। गौतम जनक के पुरोहित प्रसिद्ध हैं। जब उनके पुत्र उपजे तो वे तप के निमित्त अपने शिष्यों और अहिल्या सहित ब्रह्मशैल के दक्षिण की ओर जाकर तप में प्रवृत्त हुये। उन्हीं दिनों में वर्षा न होने से संसार में अकाल पड़ गया और एकसौ वर्ष पर्यन्त जल न गिरा। सब संसार के मनुष्य अति विकल हुये। यहाँ तक कि कुवों में भी जल न रहा। वृक्ष, नदी और नद सब सूख गये। गरमी इतनी बढ़ी कि बहुत से जीव जलकर भस्म हो गये। अन्य मुनि भी योग धारण कर अपनी स्त्रियों सहित अपना कालक्षेप करने लगे। गौतम ने संसार को इतना विकल देख वर्षा होने के निमित्त वरुण के तप का आरम्भ किया। हे नारद! दूसरे की भलाई के बराबर और कोई धर्म संसार में नहीं है। मानो सब शुभ कर्म इसी धर्म के अधीन हैं। अच्छे पुरुषों की यह दशा होती है कि दूसरे की भलाई के लिये बड़े-बड़े उपाय करते हैं और दूसरे के आनन्द के निमित्त आप दुःख सहते हैं। इस बात से शिवजी अति प्रसन्न होते हैं। निदान जब कि गौतम ने अहिल्या सहित बड़ा तप किया तो वरुण प्रसन्न होकर गौतम के सामने खड़े होकर बोले कि वरदान माँगो। गौतम ने कहा कि संसार में वर्षा हो। हमारा मनोरथ पूर्ण हो। वरुण ने उत्तर दिया कि यह बात हमारे अधीन नहीं है। यह बात केवल परमेश्वर के अधीन है। अर्थात् लाभ, हानि, मौत, जीना, वर्षाकाल, यश, निन्दा, पुण्य, पाप, जय, पराजय, उत्पत्ति, प्रलय, नरक और स्वर्ग यह सब बातें शिवजी के अधीन हैं। उन्हीं के भय से सूर्य, चन्द्रमा तथा नक्षत्र उदय होते और अग्नि, मृत्यु, शेष, दिक्पति और सर्व संसार उन्हीं की आज्ञा से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपना-अपना कार्य करते हैं। देवता, मुनि, सिद्धि, प्रजापति और सर्व-संसार शिव के भक्त हैं। वे परब्रह्म हैं। वही निर्गुण, सगुण, स्वामी स्वतन्त्र, मायापति और सबसे श्रेष्ठ हैं। हे गौतम ! हम ऐसा वर नहीं दे सकते। जो तुमको वर नहीं देते तो यह बात निष्केवल धर्म के विरुद्ध है। इसलिए हम पर कृपा करके वह वर हमसे माँगो जो हम दे सकें। गौतम ने कहा तुम सत्य कहते हो पर ऐसी बात करो जिसमें हमको और तुमको कुछ पाप न होवे। वरुण ने कहा कि फिर तुम उसी प्रकार का वर माँगो जो हम दे सकें। गौतम ने कहा आप एक अक्षय जल का कुण्ड कृपा करें। वरुण ने अति प्रसन्न होकर गौतम की अति प्रशंसा की और कहा कि पृथ्वी में एक गर्त बनाओ। हम तुमको अक्षय कमल देते हैं। गौतम ने पृथ्वी में एक गर्त किया जिसको वरुण ने जल से भर दिया और कहा हे गौतम ! यह गर्त जो एक हाथ भर का है, बड़ा तीर्थ होकर तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध हो। इसकी सेवा से सब मनोरथ पूरे होंगे। यह कहकर वरुण तो चले गये और अक्षयकुण्ड के जल को पीकर गौतम स्त्री सहित अति प्रसन्न हुए।

चालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि गौतम ने अपने शिष्यों सहित उस गर्त के तट पर जो खेती बुवाई तो यह गौतम की बात संसार भर में प्रसिद्ध हो गई। मुनि अपनी स्त्री और शिष्यों सहित समूह के समूह चारों ओर से आकर उसी स्थान पर मन्दिर बनाकर बसे। जो मनुष्य भी मरने से बच गये थे, वह भी आकर वहीं बसे। सो उस गर्त के कारण एक नगर बहुत लम्बा और उत्तम वहाँ पर बस गया और लोग अति प्रसन्न रहने लगे। जो लोग भूखों मरते थे, प्रसन्न रहे। गौतम कुण्ड का यह प्रभाव था कि चाहे उससे कितना ही जल खर्च किया जावे पर उसमें न्यूनता न होती। संयोगवश शिव की माया से एक दिन गौतम ने अहंकार के साथ तुरन्त अपने शिष्यों को जल लाने के निमित्त भेजा। गौतम के शिष्य आनन्दपूर्वक कुण्ड के तट पर पहुँचे। उसी समय संयोग से मुनियों की स्त्रियों ने भी अपने शिरों पर घट रक्खे हुये आकर कहा कि पहिले हम

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पानी भर लें तब तुम भर लेना। यह सुन गौतम के शिष्यों ने लौटकर अहल्या से कहा कि मुनियों की स्त्रियों ने हमको पानी नहीं भरने दिया। यह सुनकर अहल्या ने शिष्यों को साथ लिये हुये जहाँ मुनियों की स्त्रियाँ खड़ी थीं, जल लिया और लौट आई। यह दशा देखकर मुनियों की स्त्रियों ने वहाँ क्रोध से पानी लिये बिना लौटकर अपने-अपने पतियों से रो-रोकर सब हाल कहा और अपने वर्णन में बहुत झूठ बनावट कही। अर्थात् उन्होंने कहा कि गौतम के शिष्यों ने हमको ग्लानिपूर्वक देख गालियाँ दीं पर हमने कुछ भी नहीं कहा। इस पर भी गौतम के शिष्य चुप न रहकर अहल्या को अपने साथ लाये। उसने जो हमको दुर्वचन दिये और हमारा अपमान किया है, वह कहा नहीं जा सकता। इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद हम उन स्त्रियों के झूँठ को कहाँ तक वर्णन करें। जो स्त्रियों का स्वभाव है, वह सब उन्होंने प्रकट किया। स्त्री विषसे भी अधिक और भयानक है क्योंकि हलाहल पीकर सदाशिव जगे रहते हैं। विष्णु स्त्री पाकर मोहित हो जाते हैं। मृत्यु भी स्त्री से अधिक नहीं है। क्योंकि मृत्यु तो एक ही को मार डालती है, दुष्टा स्त्री सर्वकुल को नष्ट कर देती है। संसार में वह कौन कर्म है जिसको स्त्री नहीं कर सकती। देखो, रामचन्द्र के समान लड़कों को राजा दशरथ ने स्त्री के अधीन होकर घर से निकाल दिया। समुद्र में क्या ऐसी वस्तु है जो प्रवेश नहीं कर सकती, अग्नि किस वस्तु को जला नहीं सकती, मृत्यु किसको छोड़ देती है और स्त्री क्या कर्म नहीं कर सकती ? निदान मुनीश्वरों ने अपनी स्त्रियों से यह चरित्र सुन अति कोपित हो चाहा कि गौतम को किसी तरह का दुःख दें। इस इच्छा से उन्होंने गणेश की पूजा की। सो गणेश ने प्रसन्न होकर कहा कि हे मुनीश्वरों ! तुमको यह योग्य नहीं, अपने हाथों अपनी खराबी मत करो। अभी कुछ बुरा नहीं हुआ, अब भी समझ जावो। पर सब मुनीश्वरों ने एकमत हो कहा कि नहीं, गौतम को दुःख दो। गणेशजी ने कहा कि तुम सब मूर्ख हो। जिसने गौतम को सुख दिया था, वही फिर भी उनको चैन देगा। वह शिव को प्रसन्न कर फिर वैसा ही हो जावेगा पर तुमको अति दुःख प्राप्त होगा। क्योंकि तुम सब शिवजी की इच्छा से विरुद्ध हो। यह कह गणपति अन्तर्धान हुये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और गौ का स्वरूप धार बहुत क्षीणाङ्ग काँपते हुये गौतम के खेत को चरने लगे। भाग्य से उस समय गौतम भी गौ के पास जौ के खेत के पास आये और तिनके से गौ को खेत से बाहर निकालने लगे। गौ इतनी जोर से पृथ्वी में गिर पड़ी कि जिस तरह किसी ने वज्र से उसको मारा हो। गौतम ने अपने शिष्यों से यह हाल वर्णन किया। अन्त को धीरे-धीरे सब मुनीश्वरादि इकट्ठे होकर गौतम को धिक्कार देने लगे। कहा कि तुझ पर तथा तेरे तीन विधि के तप, होम, सब धर्म, तेरी स्त्री, चतुरता, जागरण, विद्या और कलादि सबको धिक्कार है। तूने गोहत्या की। अब तुम यहाँ से चले जावो और अपना मुख किसी को मत दिखाओ। जब तक तुम यहाँ रहोगे, देवता और पितर कोई अपना भाग नहीं लेने आवेंगे। इसी प्रकार मुनियों की स्त्रियों ने भी मिलकर अहल्या को बहुत दुष्ट वचन कहे। सब मुनियों ने इस बात को परस्पर ठहराया कि आज से कोई मनुष्य गौतम का मुख न देखे। सो वे सब मिलकर कङ्कणों से गौतम और अहल्या को उनके शिष्यों सहित मारकर निकाल दिया। गौतम ने बहुत विनती से कहा कि हम निकले जाते हैं, हमको मारो नहीं। यह कहकर गौतम और अहल्या शिष्यों समेत वहाँ से निकलकर उस स्थान से एक कोस की दूरी पर अपना स्थान बनाया। उन्होंने कहा कि जब तक हमारी हत्या न छूट जावेगी, तब तक हम किसी को न छू सकेंगे और न कुछ कर्म देवता और पितर आदि का कर सकेंगे। यह विचार सब कर्म छोड़ अन्न-जल रहित अपनी स्त्री सहित पड़े रहे। कदाचित् किसी मनुष्य ने गौतम को कभी धोखे से देख लिया तो अपने मुख को कपड़े से ढाँपकर गौतम को ढेले मारता था। उस समय गौतम अति चिन्ता से बहुत ही रोने लगते थे। जब इसी तरह पन्द्रह दिन बीते तो गौतम मुनि लोगों की शरण में आये तथा दूर खड़े होकर प्रणाम और स्तुति के उपरान्त हाथ बाँध विनय-पूर्वक कहा कि अब मुझ पर दया करके वह उपाय बतावो जिससे मेरा यह पाप दूर होवे। सो मुनियों को दया उपजी। उन्होंने कहा कि तुम्हारे शिष्यों ने बहुत बुरी बात की कि हमारी स्त्रियों को पानी लेने के समय अनादर किया। तेरी पतिव्रता स्त्री अहल्या ने भी बड़ा उपद्रव मचाया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसी से तुमको यह फल मिला। पर जो कि अब तुम अहंकार रहित हमसे पूछते हो तो हम तुमसे कहते हैं कि शिव सब पापों के दूर करनेवाले हैं। पहिले पृथ्वी की परिक्रमा में प्रवृत्त होकर तीन दिन भ्रमण करके अपना पाप ऊँचे कहते फिरो। फिर एक मास तक व्रत करो और एक सौ बेर ब्राह्मणों की परिक्रमा करो, तब ऐसे पाप से छूट जावोगे। दूसरी युक्ति यह है कि जो तुम इस स्थान में गङ्गा को प्रकट कर उसमें स्नान करो और एक करोड़ पार्थिव पूजा करो तो शुद्ध हो सकते हो। यह सुनकर गौतम ने तुरन्त मुनि लोगों की एक सौ एक बेर परिक्रमा की और एक करोड़ पार्थिवपूजा कर शिव के ध्यान में लगे तथा एक ही स्थान पर बैठे रहे। इसी प्रकार गौतम की स्त्री अहल्या ने भी यही क्रिया और सब शिष्य उनकी सेवा करते रहे। ऐसी अवस्था गौतम की देखकर शिव प्रसन्न हुये। आप, गिरिजा, अपने पुत्र और गणों सहित गौतम के पास प्रकट होकर कहा कि वर माँगो। तुम मुझको प्राण से भी अधिक प्रिय हो। गौतम ने प्रणाम और स्तुति के उपरान्त कहा कि मेरे पाप दूर कर दो। यह कह गौतम चुप हुये।

इकतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! गौतम की स्तुति और विनय के सुनने के अनन्तर शिवजी ने कहा कि यही होगा। तुमको मुनीश्वरों ने अति छल से ऐसा दुःख दिया है सो उनको ऐसी हत्या लगेगी कि जिससे वे फिर आनन्द न पावेंगे। क्योंकि उन्होंने वेद के विरुद्ध पाप किया है। वरन् उनके देखने से देखनेवाला निष्पाप मनुष्य भी पापी हो जावेगा। यह सब ब्राह्मण मिथ्या शास्त्र को धारण करेंगे और जो हमारे भक्तों को दुःख देनेवाला या उनकी निन्दा करनेवाला है, उसको आनन्द कहाँ है? यह सुन गौतम ने हाथ जोड़ विनती की कि महाराज! इन मुनीश्वरों ने मेरे लिये क्या अनभल किया? इन्होंने तो मुझको ऐसी युक्ति सिखलाई जिससे आपके दर्शन हुये। शिव ने यह गौतम का वचन सुन अति प्रसन्नता से कहा कि हे गौतम! तुम धन्य हो। जो वर चाहिये, वह हमसे ले लो। मैं तुम्हारे अधीन हूँ। गौतम बोले कि हमारा जो कार्य था, वह तो हो चुका पर आपकी आज्ञा से मैं चाहता हूँ कि आप मुझे गंगा दें। सो शिवजी ने अपने शिर से गंगा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कृपा की। वह जो पहिले विष्णु को दी थी और अपने विवाह में हमको कृपा की थी। वह गंगाजी का जल जो शिवजी के शीश में था, स्त्री के रूप से प्रकट हुआ जिसको देखकर गौतम अति प्रसन्न हुये और प्रणाम के उपरान्त गङ्गाजी की बड़ी स्तुति की। कहा कि मेरे ऊपर कृपा करके मुझको शुद्ध करो। सो शिवजी ने भी गङ्गाजी से कहा कि गौतम के पाप दूर कर इसको हर प्रकार अपना सेवक समझो। गङ्गाजी ने कहा हे शिवजी! हम आपकी आज्ञा से जो आप कहते हैं, करेंगी। पर विनय यह है कि हम गौतम को उसके कुल सहित पवित्र करके फिर अपने स्थान को लौट जावेंगी। शिवजी ने कहा जब तक वैवस्वत मनु का आरम्भ न हो, तब तक तुम यहीं स्थित रहो। किन्तु गङ्गाजी ने न माना। निदान गौतम ने बड़ी स्तुति की और शिवजी ने भी कहा कि तुम अवश्य यहाँ रहो। गङ्गाजी ने कहा जो हमारी महिमा यहाँ बहुत हो और तुम भी गिरिजा तथा गणों सहित हमारे तट पर ठहरो तो हम मानती हैं। पर जिन्होंने गौतम को दुःख दिया है, उनको हम पवित्र नहीं करेंगी। शिवजी ने मान लिया। इतने में विष्णुजी, हम और देवता आदि शिवजी को उस स्थान पर प्रकट होते हुये जानकर आये। सब तीर्थ और क्षेत्र अपने-अपने स्थानों से चल कर वहाँ आये। सबने शिव और गङ्गाजी की स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी प्रसन्न हुये। कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो माँगो। यह सुन सबने विनय की कि तुम अर्द्धांगीरूप से गंगासहित यहाँ पर विराजमान हो। गंगाजी ने कहा जो तुम सबसे अधिक हमको इस स्थान पर सर्वोपरि समझो तो हम शिवजी सहित यहीं स्थित होवें। सबने मानकर कहा कि तुम्हारी बड़ी भारी महिमा का वह समय होगा, जब सिंहराशि की बृहस्पति होगी। उस समय हम सब यहाँ आकर तुम्हारे स्थान और शिवजी के दर्शन से अपने पापों को जो बारह वर्ष में हो गये होंगे, सब दूर कर डाला करेंगे। सो गंगा और शिवजी दोनों वहाँ स्थित हुये। उस दिन से जब सिंहराशि पर बृहस्पति आती है तो उस क्षेत्र में सब देवता, मुनि, विष्णु और ब्रह्मा जाते हैं क्योंकि दूसरी जगह जाने से ऐसे समय में कुछ फल नहीं होता।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बयालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह चरित्र हमने गौतमी नदी के तट पर जो शिवजी ज्योतिर्लिङ्ग त्र्यम्बकनाम से विराजमान हैं, वर्णन किया। जानना चाहिए कि सब क्षेत्रों से गौतमी गङ्गा अति श्रेष्ठ हैं। इसी प्रकार त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग भी सब मनोरथों के देनेवाले हैं। इतना सुन नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि गङ्गा कहाँ से जल रूप हो प्रकटीं और शिवजी का लिङ्ग वहाँ पर क्योंकर प्रकट हुआ ? उनकी महिमा और जो मुनीश्वरों ने गौतम को दुःख दिया, यह सब वर्णन करो। ब्रह्माजी बोले कि हम सबकी विनय सुनकर गङ्गा जलरूप हो ब्रह्मशैल के भीतर उदुम्बर शाखा से निकल बड़े वेग से नदीरूप हो बहने लगीं गौतमी के नाम से प्रसिद्ध हुई। उस स्थान का नाम गङ्गाद्वार प्रकट हुआ जिसके देखने और छूने से पाप दूर होते हैं। शिवजी भी लिङ्गस्वरूप ही त्र्यम्बक के नाम से प्रसिद्ध हुये। सो गौतम ने तुरन्त अहल्या और शिष्यों सहित गौतमी में स्नान कर त्र्यम्बक शिवलिङ्ग की पूजा की। उन्होंने शिव और गङ्गा की बहुत स्तुति की पर जब गौतम के शत्रु मुनि उस स्थान पर आये तो गङ्गा और शिव दोनों अन्तर्धान हो गये। उस समय गौतम ने गंगाजी से अति विनयपूर्वक उन मनुष्यों के पाप क्षमा करने को कहा। तब आकाशवाणी हुई यद्यपि हिंसक, मूर्ख, कामी, परमेश्वर को न जानने वाला, छली, धूर्त और शुद्ध होने के योग्य नहीं, चाहे पवित्र हो जावें पर भक्तों का शत्रु पापों से नहीं छूट सकता। तब गौतम ने बार-बार स्तुति करके कहा कि हे माता-पिता ! वेद कहते हैं कि तुम पापियों के पाप दूर करते हो और बुरों के साथ भलाई करते हो। इससे हे माता-पिता ! तुम प्रकट होकर दर्शन दो और उन सबके पापों को दूर करो। यह सुन फिर आकाशवाणी हुई कि तुम जो हमारे बड़े पवित्र भक्त हो, इससे हम तुम्हारे अधीन हैं। जो तुमने कहा, वह हमने माना पर पहिले यह सब अपने पापों की शान्ति का उपाय करें और एक सौ बेर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा करें तो इनके पाप निवृत्त हो जावेंगे। यह सुन गौतम अति प्रसन्न हुए और सब मुनीश्वरों ने गौतम की आज्ञा से अहंकार से रहित हो गौतम की स्तुति की। फिर ब्रह्मगिरि की परिक्रमा कर प्रायश्चित्त

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किया। इसी प्रकार उनकी स्त्रियों ने गौतम की स्त्री अर्थात् अहल्या की बड़ी विनती कर अपने पाप को निवृत्त कराया। तब शिवजी और गङ्गा पूर्ववत् अपने स्थान पर प्रकट हुए जिसमें मुनियों ने स्नान कर शिव की पूजा और तुरन्त उनके पाप नष्ट हो गये। उन्होंने गौतम के चरणों पर लज्जित हो अपने शिरों को रक्खा। गौतम ने उनको उठाकर अपनी छाती से लगा लिया। फिर इतना अनुग्रहकर समझाया कि उनकी लज्जा दूर हो गई। उस समय विष्णु और हमने देवतादि सहित उस स्थान पर पहुँच गङ्गा में स्नान कर शिव की पूजा की और एक स्तुति हम सबने की। तब शिवजी और गङ्गाजी ने कहा कि वर माँगो। हम सबने कहा कि हमको अपनी भक्ति दो जिससे हम कभी तुमको न भूलें। शिवजी और गङ्गाजी ने कहा कि अच्छा, यह कह अपनी मूर्ति में प्रवेश कर गये और देवतादि सब अपने-अपने स्थानों को लौट गये। उस स्थान पर कुशावर्त, गङ्गाद्वार और कोटितीर्थ बड़ा आनन्द देनेवाले तीर्थ हैं। सो रामचन्द्र भी पञ्चवटी में गङ्गा को देख फिर उस स्थान पर स्थित हुए थे। तीनों लोक में गङ्गा बड़ा क्षेत्र है जिसके देखने और छूने से हर मनुष्य शुद्ध हो जाता है। जिसने गङ्गा में नहाया, वह सब धर्म कर चुका और जिसने त्र्यम्बक ज्योतिर्लिङ्ग की पूजा की, उसको दोनों लोक में बड़ा आनन्द है यह त्र्यम्बक लिङ्ग पापों के दूर करने वाले हैं। इस चरित्र के पढ़ने-सुनने वालों को संसार में आनन्द प्राप्त होता है।

तैंतालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम वैद्यनाथ नवें शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जिनके दर्शन, स्पर्शन, पूजा और भक्ति से अति आनन्द मिलता है। धन, द्रव्य, स्त्री, पुत्र और कुल से प्रसन्न रहकर अन्त को शिवलोक मिलता है। हमारा पुत्र पुलस्त्य जो सप्तऋषियों में प्रसिद्ध है उसके एक लड़का विश्रवा नामी उपजा। उसके तीन स्त्रियाँ थीं। पहिली से धनपति शङ्करमित्र अर्थात् कुबेर उपजे तथा दूसरी से रावण और कुम्भकरण दो लड़के पैदा हुये और तीसरी से विभीषण उपजा। उन सब लड़कों से रावण अति बलवान् और स्वतन्त्र हुआ। उसके बल और यश को तीनों लोक जानते हैं। रावण तप के निमित्त कैलाश पर्वत पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जाकर शिवजी का भजन करने लगा। बहुत दिन उसको तप करते बीते पर कोई शिवजी की प्रसन्नता का लक्षण प्रकट न हुआ। उस समय रावण धैर्य और दृढ़ता से वहाँ उठकर हिमालय पर्वत में तप के निमित्त गया और पर्वत के दाहिनी ओर शिवजी का ध्यान करने लगा। गर्मियों में पञ्चाग्नि और वर्षा में वन के बीच और शीतकाल में पानी के बीच बैठ तप किया। यद्यपि ऐसा कठिन तप रावण ने किया पर शिव प्रसन्न न हुये। तब रावण क्रोधित हो पृथ्वी में एक गढ़ा बनाकर अग्नि स्थापित कर उस स्थान पर पार्थिव पूजा करने लगा। उसने चन्दनादि षोडशोपचार से शिव-पूजा की और अति प्रीति से सिवाय शिवजी के और किसी को उसने न देखा। वह शिवजी की स्तुति कर शिव के सामने नाचा और मुख से शिवजी के सामने गाकर शिवजी की प्रसन्नता चाहने लगा। पर तो भी शिवजी प्रसन्न न हुये। उस समय रावण अति चिन्तित हुआ। उसने कहा कि मुझे धिक्कार है। मेरे बल और ऐसे मोटे शरीर पर सहस्रों धिक्कार है कि शिवजी प्रसन्न न हुये। यह विचार उसने हवन किया तो भी शिवजी प्रसन्न न हुये। तब रावण ने विचार किया कि अपने शरीर को आग में जला देना चाहिए। इसी इच्छा से अपने शरीर में चन्दनादि सुगन्ध लगाकर वह अपने शिरों को शरीर से भिन्न कर अग्नि में डालने लगा। जब नवों शिर होम-कर दशवाँ शिर भी काटना चाहा, तब शिव तुरन्त रावण के सम्मुख खड़े हो गये और वरम्ब्रूहि कहा। सर्व शिर उसके शरीर में लगाकर कहा कि वर माँगो। रावण शिवजी के देखते ही अतीव ही प्रसन्न हुआ और प्रणाम कर हाथ जोड़ स्तुति करने लगा। कहा कि मैं बहुत ही पराक्रम चाहता हूँ। यह भी मेरी इच्छा है कि आप मेरे नगर को चलें कि मैं कृतार्थ हो जाऊँ। शिवजी बोले बहुत अच्छा, तुम हमारे लिङ्ग को उठा ले जावो और सदा उसकी पूजा करते रहो। पर जो मार्ग में तुमने हमको कहीं रख दिया तो हम वहीं रहेंगे, तुम्हारे साथ नहीं जावेंगे। तब रावण ने कहा कि अच्छा पर आप अपने दो रूप धारण करें कि मैं आपको काँवरि में उठाकर अपने नगर में ले जाकर स्थित कर दूँ। यह वचन सुनकर शिव ने दो लिङ्गरूप किये। रावण दोनों लिङ्ग काँवरि में रखकर ले चला। शिव ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मार्ग में यह चरित्र किया कि रावण को लघुशङ्का की इच्छा हुई। सो रावण प्रतिज्ञा करने पर भी पृथ्वी में उनको रखकर अति विकल हो गया। जब वह इधर-उधर देखने लगा तो एक पशु चरानेवाले अहीर को देखा जो गौ चराता था। उससे कहा कि एक क्षणभर काँवरि को ले लो कि मैं पेशाब कर लूँ। चरवाहे ने कहा कि दो घड़ी तक मैं काँवरि लिये रहूँगा। इतने में जो तुमने काँवरि न ली तो पृथ्वी में रख दूँगा यह कह काँवरि को अपने कन्धे पर ले लिया और रावण मूत्र करने लगा।

चवालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि इतने में शिव ने अहंकार दूर करनेवाली अपनी माया प्रकट कर रावण का मूत्र इतना बढ़ाया कि छोटा तालाब भर गया तथा काँवरि इतनी भारी हुई कि चरवाहा भार न उठा सका और उसको पृथ्वी में रख दिया। तुरन्त दोनों लिङ्ग पृथ्वी में इतने दृढ़ हो गये कि रावण ने मूत्र करके बहुत बलकर उनको उठाया पर वह कुछ भी अपनी जगह से उठे। रावण ने अति विकल हो अपने अँगूठे से दोनों लिङ्गों को दबाया और फिर अपने घर चला गया। वे दोनों लिङ्ग उसी स्थान पर स्थित हो गये। जो लिङ्ग काँवरि के अगले तरफ था, वह गोकर्णक्षेत्र में स्थित हुआ और चन्द्रभाल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसकी महिमा हम पहिले वर्णन कर चुके हैं और जो लिङ्ग पीठि के पिछली ओर था, वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह वैद्यनाथ नवाँ ज्योतिर्लिङ्ग जिनकी महिमा वेद पुराण गाते हैं, उनकी पूजा से अमित आनन्द प्राप्त होता है। हे नारद! जब कि रावण लिङ्गों को छोड़कर चला गया, तब विष्णु और हम सबने देवतादि सहित शिवलिङ्ग की पूजा की और स्तुति करके विनय की कि हे चिताभूमि में स्थित होनेवाले वैद्यनाथ! हम सब पर प्रसन्न होकर दयादृष्टि से देख दीजिये। सो उसी लिङ्ग से शिवजी ने गिरिजा सहित प्रकट होकर कहा कि हमसे वर माँग लो हम सबने कहा कि अपनी भक्ति और कृपा करके यहीं स्थित रहो कि यह देश शुद्ध हो जावे। यहाँ तुमने प्रकट होकर हम सब पर अति कृपा की है। जो कि तुम वैद्य के समान मनुष्यों को आनन्द देनेवाले हो, इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ है। जो यहाँ तुम्हारे ऊपर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गङ्गाजल लाकर चढ़ावे, वह संसार में प्रसन्न रहकर परमपद पावे। गङ्गा-द्वार अर्थात् हरद्वार का जल आपको बहुत प्रिय हो। यह सुनकर शिव बोले कि यही होगा और हँसकर उसी लिङ्ग में प्रवेश किया सो हम सबने जय-जय कह शिवजी की पूजा की। फिर सब देवता आदि अपने-अपने स्थानों को लौट गये। अब और कथा सुनिये कि जब उस चरवाहे ने जिसको रावण ने काँवरि लेने को दिया था, यह चरित्र देखा तो आश्चर्य के सागर में डूब गया। उसका नाम बैजू था। उसने तुरन्त शिवलिङ्ग की पुजा की और अपने कपोलों से शब्द निकाला। प्रतिदिन उसकी यही प्रकृति थी कि उस लिङ्ग की बिना पूजा किये भोजन न करता। जब इसी प्रकार कुछ समय बैजू को बीता और शिवजी की प्रसन्नता का समय निकट पहुँचा तो शिवजी ने कहा कि इसकी परीक्षा की जावे। सो एक दिन बैजू के घर कोई बड़ा भारी उत्सव था जिसमें उसके बहुत से भाई-बान्धव उपस्थित थे। वह भाई बान्धवों की सेवा में लगा रहा जिससे उसको वैद्यनाथ शिवलिङ्ग की पूजा का अवकाश न मिला। जब सब भोजन करने लगे तो बैजू को भी अपने साथ भोजन को बैठाया। जब सब ग्रास उठा भोजन करने लगे तो इससे पहिले कि बैजू ग्रास कण्ठ में उतारे उसको स्मरण हुआ कि मैंने तो अभी वैद्यनाथ की पूजा नहीं की। मुझसे बड़ा अपराध हुआ है। मुझ पर धिक्कार है क्योंकि मैंने अपने स्वामी को भुला दिया। सो वह तुरन्त उठकर सिधारा। यद्यपि उसके भाई बान्धव अप्रसन्न हुये पर उसने किसी की कुछ न सुनी। हे नारद! वेद साधु का यही स्वभाव कहता है कि साधु अपने नियम को न छोड़े चाहे संसार भर उससे अप्रसन्न होवें। वह मनुष्य वही बात करे जिससे धर्म बना रहे। निदान बैजू ने वैद्यनाथ के पास जाकर शिवलिङ्ग की पूजा की और दण्डवत् करके पृथ्वी में गिरकर ध्यान किया। शिवजी बैजू की ऐसी भक्ति और नियम देख तुरन्त प्रकट हुये। उनके वामाङ्ग में श्रीजगन्माता गिरिजा विराजमान थीं। सो बैजू ने उठकर प्रणाम किया फिर स्तुति की और प्रेम की अधिकता से नाचने लगा। ऐसा प्रेम बैजू का देख शिवजी अति प्रसन्न हुये। उन्होंने कहा कि वर माँगो। बैजूने विनती की कि आपके चरणों का प्रेम दिन-दिन बढ़े। मैं तुम्हारे भक्तों की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सेवा किया करूँ और सब जीवों को तुम्हारा अंश जानकर तुम्हारी सेवा में लगा रहूँ। जो मेरा नाम है, वही तुम्हारी नाम हो। यह सुनकर शिवजी ने कहा कि यही होगा। फिर उस लिङ्ग में प्रवेश कर गये और बैजनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुये।

पैंतालीसवाँ अध्याय।

नारद के पूछने के अनन्तर ब्रह्माजी बोले कि जब रावण ने शिवलिङ्ग के उठाने से निरुपाय हो अपना अहंकार दूर किया और अति प्रेम से शिवजी की शरणागति हुआ तो उस समय आकाशवाणी हुई कि हे रावण! तुम अपने नगर में जाकर निष्कण्टक राज्य करो। जब तुमको गर्व उपजेगा तो तुम दुःखी हो जावोगे। यह वर पाकर रावण अपने घर प्रसन्न होकर गया। उसको सब दैत्यों ने मिलकर अपना राजा बनाया। मन्दोदरी ने उसकी रानी होकर शिव की भक्ति में बड़ा प्रेम बढ़ाया। यह मन्दोदरी पञ्च कन्याओं में से अति सुन्दरी और रूपवती थी। उससे मेघनाद के समान लड़के उपजे। मेघनाद ने तीनों लोकों को जीत लिया। दिक्पालों को जीत उनको अपनी प्रजा बनाया। शेषादि उसे कर देने लगे। चन्द्र, सूर्य, ग्रह और नक्षत्र उसके अधीन हुये। एक दिन सब देवता विकल हो अपने-अपने निवास स्थान से भाग वैकुण्ठ से विष्णु की शरण में गये और स्तुति कर विष्णु के सामने झुककर खड़े हुये। विष्णु बोले कि हे देवताओं! तुम कहाँ से आते हो? तुम सबों के मुख से दुःख प्रकट है, इसका कारण कहो। सो सब देवताओं ने रावण का अन्याय प्रकट कर कहा कि उसने देवपत्नियों को अपने घर डाल लिया है। वह तीनों लोक को जीत हर प्रकार सबको दुःख देता है। सो कृपा करके आप ऐसे अन्यायी का वध करें। यह सुन विष्णु क्रोधित हो देवताओं सहित युद्ध करने लगे। रावण शिव के बल से विष्णु के साथ लड़ा। हर प्रकार के बाण दोनों ओर से चले। जो-जो बाण, अग्नि, वायु, सर्प और पर्वतादि रावण पर छोड़े, उन सबको रावण ने दूर कर दिया। तब विष्णु ने अपनी गदा रावण की भुजा में मारी। रावण ने क्रोधित हो विष्णु के हृदय में गदा मारकर बड़ा नाद किया। विष्णु ने अपनी नन्दक रावण पर चलाई पर वह कुण्ठित होकर उलट गई। उस समय विष्णु ने अति कोप से अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलता हुआ चक्र हाथ में लिया और रावण के कण्ठ में मारा जिससे तीनों लोक में हाहाकार हुआ पर रावण शिव का ध्यान कर ऐसी अकस्मात् आपदा से बचा रहा। विष्णु ने हर प्रकार से रावण के ऊपर बराबर धावा किया पर शिव की कृपा से उस पर कुछ न चला। यह दशा देखकर विष्णु को अति दुःख प्राप्त हुआ। तब आकाशवाणी हुई कि हे रमापति! कुछ चिन्ता मत करो, शिव सर्वोपरि हैं। रावण को कम मत समझो। इसके ऊपर शिव प्रसन्न हैं। उसने शिव का बड़ा तप किया है। यही कारण है कि इसके ऊपर कोई दुःख न पड़ा। जो कि रावण देवताओं से मर नहीं सकता, इससे तुमको उचित है कि मनुष्य शरीर धार शिव का तप कर और उनसे वर ले युक्तिपूर्वक रावण को शाप दे उसको मारो, तब देवताओं का काम पूर्ण होगा। यह सुनकर विष्णु अन्तर्धान हुये और रावण सर्व देवताओं को पकड़कर अपने नगर को लौट गया। वह निर्भय होकर तीनों लोक का राज्य करने लगा। देवता भी आसक्त होकर विष्णुजी की सेवा में पहुँचे। हे नारद! विष्णुजी ने आकाशवाणी सुनकर तुमको बुलाया और कहा कि तुम जाकर ऐसी युक्ति करो जिससे शिवजी क्रोधित होकर रावण से अप्रसन्न हो जावें और शाप देवें। हम पृथ्वी पर जाकर मनुष्य का अवतार लेंगे और शिवजी के प्रसन्न करने के पीछे उनके धनुर्बाण को लेकर फिर शिवजी की आज्ञानुसार रावण का वध करेंगे। यह कह विष्णुजी ने सब देवताओं को बिदा कर दिया और सर्व देवता अपने-अपने गृह सिधारे। हे नारद! तुम रावण के निकट गये और जब उसने तुम्हारा बड़ा आदर किया, तब तुमने कहा कि तुम धन्य हो। तुम्हारे देखने से हमको बड़ा सुख प्राप्त हुआ। हम तुम्हारे राज्य, न्याय और तेज आदि को देखने आये हैं। यह सब तुमको शिवजी की कृपा से मिला है। शिव ऐसी कृपा किसी पर नहीं करते जैसी तुम पर है। शिवजी तुम्हारे अधीन हैं। तुमने कौन-सा ऐसा यत्न किया है जिससे शिवजी ऐसे प्रसन्न हैं। यह सुनकर रावण ने कहा हम सब वृत्तान्त कहते हैं।

सैंतालीसवाँ अध्याय।

रावण ने कहा कि प्रथम हम कैलास पर्वत पर तप करने गये, पर जब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बहुत दिनों तक श्रीसदाशिव प्रसन्न न हुये तो फिर कुरुक्षेत्र में जाकर तप करते रहे। मैंने अति क्रोध करके पृथ्वी में गढ़ा बनाकर शिवलिङ्ग को स्थापित किया। यद्यपि षोडशोपचार से शिव का तप किया पर वह प्रसन्न न हुये। फिर मैं अग्नि जलाकर अपने शिरों को काटकर उसमें डालने लगा। जब नवाँ शिर काटने लगा तो शिवजी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये। मैंने यह वर माँगा कि मुझको कोई देवता न जीत सके। शिवजी ने प्रसन्न होकर मेरे शिरों को मेरे शरीर में लगाकर और भी अनेक वर दिये। जब से शिवजी अन्तर्धान हुये, तब से हम तीनों लोकों को जीतकर राज्य करते हैं। यह सुनकर नारद ने कहा कि तुम्हारे ऊपर शिवजी ने कुछ कृपा न की क्योंकि वह तुम्हारे साथ तुम्हारे घर न आये वरन् उन्होंने केवल अपना लिंग स्वरूप दिखाया। वह भी तुम तक न आया और मार्ग में ही रह गया। हम तुमसे कहते हैं कि तुम वहाँ जाकर कैलास पर्वत को उखाड़ कर यहाँ ले आओ। उनकी सहायता से सर्वदा अभय और प्रसन्न रहोगे क्योंकि कुबेर के निकट रहते उनको बहुत दिन हो गये, अब तुम्हारे निकट आकर रहें। तुमसे अधिक कुबेर को कौन बड़ाई प्राप्त है। उचित नहीं कि तुमको त्यागकर शिवजी उसके पास रहें क्योंकि तुम बुद्धिमान हो जो कुछ कि उचित हो, वह करो। यह कहकर तुम चले और देवताओं से यह सब समाचार कहकर उनको सुखी किया। रावण तुम्हारी माया से छलित हो अति अहंकारी बनकर कैलास पर्वत पर गया और उसको जड़ से उखाड़ लिया जिससे सब वस्तु उस पर्वत की हिलकर नष्ट हुईं। सब देवता और मनुष्यादि अति दुःखी हुये। सब पक्षी क्लेशित होकर भयवान् हुये और वृक्षादि अपने मूल से उखड़ गये। शिवजी और सब आश्चर्यवान् होकर कहने लगे कि यह क्या है? यह सुनकर उमा अर्थात् पार्वती ने शिव से कहा किसी तुम्हारे भक्त ने तुमको यह फल दिया। वाह-वाह ऐसा ही सेवक चाहिए! ऐसे वचन सुनकर शिवजी ने विचारकर कहा कि यह रावण का काम है। उन्होंने कहा कि अब फिर किसी को ऐसा वर न दूँगा क्योंकि दूध पिलाने से मानों सर्पों का विष अधिक करना है। सर्प को प्रीति नहीं होती, वह तुरन्त ही काट खाता है। सो शिवजी ने क्रोधित होकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रावण को शाप दिया कि तुमने जिन हाथों से हमारे कैलास पर्वत को उखाड़ा है, उन हाथों को काटनेवाला उत्पन्न हुआ। उन्होंने यह शाप इस कारण दिया है कि स्वामी अपने सेवक को नहीं मार सकता। यद्यपि विष का वृक्ष अपने हाथ का लगाया हुआ हो तो भी लगानेवाला मनुष्य नहीं काट सकता। सो रावण ने यह शाप सुनकर कैलास पर्वत को अपने मुख्य स्थान पर स्थित कर दिया। फिर अहंकार में भर कर निर्भय अपने घर चला गया और दृढ़ता से अपना राज्य करके अनेक प्रकार के अन्याय करने लगा तथा अपने शुद्ध आचरण के विरुद्ध होकर शिवजी की भक्ति भी त्याग दी। हे नारदजी ! तुमने देवताओं से यह सब वृत्तान्त कहा। विष्णुजी ने अति प्रसन्न होकर समय पर राजा दशरथ के यहाँ अवतार लिया। उनका नाम राम हुआ। उन्होंने अपने भाइयों भरत, शत्रुघ्न और लक्ष्मण सहित नाना प्रकार के बाल चरित्र किये। फिर रामचन्द्र और लक्ष्मण-जी ने विश्वामित्र के साथ जाकर बहुत लीला करने के पीछे ताड़का नाम राक्षसी को वध किया जिससे विश्वामित्र के यज्ञ में कुछ विघ्न न हुआ। फिर जनकपुर में जाकर धनुष तोड़ डालने के पीछे रामचन्द्र का विवाह सीता के साथ हुआ। जब रामचन्द्रजी लौट आये तो अयोध्यावासियों को बड़ा सुख प्राप्त हुआ पर जब राजा दशरथ ने श्रीरामचन्द्रजी को राज्यतिलक देना चाहा तो देवताओं ने नाना प्रकार के चरित्रों से भरतजी की माता ने रङ्ग में भङ्ग कर दिया। रामचन्द्रजी लक्ष्मण और सीता सहित बनवासी हुये। चित्रकूट और दण्डकवन में घूमते हुये उन्होंने बहुत दैत्यों को मारा। जब रावण सीताजी को उठा ले गया तो श्रीरामचन्द्रजी बहुत समय तक दुःखी रहे। फिर अगस्त्य ऋषि की आज्ञानुसार श्रीरामचन्द्रजी शिवजी की सेवा कर उनसे धनुष ले लिया। हनुमान् ने उनके रक्षक होकर समुद्र में पुल बाँधकर रावण से युद्ध किया और रावण का वध करके सीताजी को लेकर अवधपुरी में फिर आये। यह हमने संक्षेप में वैद्यनाथ ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र तुमको सुनाया। यह नवें ज्योतिर्लिङ्ग हैं। यह चरित्र वैद्यनाथ शिवलिङ्ग का दोनों लोक में सुख देता है और इसके सुनने और कहने से परमपद प्राप्त होता है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सैंतालीसवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम नागेश ज्योतिर्लिङ्ग का चरित्र वर्णन करते हैं। प्राचीन समय में एक दारुका नाम राक्षसी ने गिरिजा की बड़ी पूजा की थी जिससे गिरिजा अति प्रसन्न हो दारुका के ध्यान के अनुसार प्रकट हुईं। उन्होंने कहा कि वर माँगो। दारुका ने कहा कि मुझे एक नगर दीजिये जिसमें मैं अपने पति सहित रहूँ। तुम हमारी रक्षा किया करो और जहाँ मैं जाऊँ, वहाँ वह वन भी मेरे साथ जावे। गिरिजा 'एवमस्तु' कहकर अन्तर्धान हुईं और पश्चिम समुद्र के निकट एक नगरी बसी जो सोलह योजन लम्बी थी। वहाँ नाना प्रकार के सुख की वस्तु प्रकट हुई थी। उसमें दारुका अपने राक्षसों सहित रहने लगी। उसका ब्याह दारुक नाम राक्षस के साथ हुआ जो बड़ा वीर और तेजस्वी था। वह राक्षस अपनी सेना समेत तीनों लोक को दुःखी करने लगा। तप, पूजन, यज्ञ, दान और धर्म आदि से रहित हो कुकर्मों में प्रवृत्त हुआ। जहाँ-जहाँ दारुका जाती, वहाँ वह वन भी वृक्षों सहित उसी के साथ जाता और वहाँ हर प्रकार से दारुक उपद्रव करता था। इसलिये तीन लोक के देवता और मनुष्य चिन्तित हो सब मिलकर उर्वमुनि के निकट गये। प्रणाम और स्तुति के पीछे सबने सारा वृत्तान्त कह सुनाया फिर कहा कि अब हम आपकी शरण में आये हैं, तुम हमारी रक्षा करो। तुम्हारे सिवाय हमारा रक्षक कोई नहीं क्योंकि तुम्हारे तेज को देखकर वह सब राक्षस भाग जावेंगे। तुमतो शिवजी के भक्त हो। यह वृत्तान्त सुनकर उर्वमुनि ने क्रोधित होकर राक्षसों को यह शाप दिया कि जो राक्षस पृथ्वी पर जीवों को मारेंगे अथवा यज्ञ, दान और धर्म आदि में विघ्न करेंगे तो वे नष्ट होवेंगे। यह कहकर उर्वमुनि अपने ध्यान और तप में प्रवृत्त हो गये। देवताओं ने आनन्दपूर्वक राक्षसों के साथ युद्ध का उद्योग किया। सो राक्षस उर्वमुनि के शाप का हाल सुनकर अधिक चिन्तित हुये। इस समय दारुका राक्षसी ने कहा कि मुझको गिरिजा ने यह वर दिया है कि मैं जहाँ जाऊँगी, वहाँ यह वन भी जावेगा। इस निमित्त उचित है कि जहाँ शाप प्रवेश न करे, वहाँ चलो। इस वचन को सब उत्तम समझकर सागर में रहने लगे। जो मनुष्य नाव आदि पर चढ़कर जाते थे, उनको वे खींचकर कारागृह में बन्द करते और थल में आकर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनेक प्रकार के कष्ट देते थे। एक दिन वे बहुत-सी नावें पकड़कर ले गये। उनमें एक पुरुष शिवजी का बड़ा भक्त था। वह शिवजी की पूजा बिना जल तक नहीं पीता था। उसने सब बन्दियों को शिवभक्त बनाकर पार्थिव पूजन कराया और सबको मानसी पूजन की विधि बताकर पञ्चाक्षरी मन्त्र की शिक्षा दी। वे सब हर समय शिव-शिव कहकर सदाशिवजी का ध्यान करते थे। शिवजी उन पर बहुत दयालु हुये। जब उनको छः मास इसी प्रकार शिव पूजन करते हुये व्यतीत हुए, तब शिवजी ने यह चरित्र किया कि एक राक्षस ने शिवलिङ्ग को उनके सम्मुख देखकर अपने राजा अर्थात् दारुक से यह वृत्तान्त कहा। उसने शिव भक्त को डर दिखाकर कहा कि तू सत्य-सत्य कह कि यह क्या करता है? वरन् तुझे लातों से मारूँगा। उसने कहा कि मुझको कुछ मालूम नहीं। यह सुनकर राजा ने सब राक्षसों को आज्ञा दी कि इसे वध करो। यह सुनकर वह सब राक्षस अति क्रोधित हो शिवभक्त के निकट आये। शिवभक्त ने बहुत चिन्तित होकर शिवजी का ध्यान किया। सो शिवजी गिरिजा सहित अपने लिङ्ग को प्रकट कर आप भी प्रकट हुये जिसको देखकर वैश्यपति शिवभक्त ने प्रणाम और स्तुति की। शिवजी ने हुंकार करके सब राक्षसों को दूर कर दिया और अपने पशुपति शस्त्र को देकर कहा कि इससे सबको मारो और इस वन में ब्राह्मणों सहित बसो। यहाँ अब कोई राक्षस न रहने पावेगा। हम यहाँ ज्योतिर्लिङ्ग होकर स्थापित किये जायँगे। उस समय दारुका राक्षसी ने गिरिजा की ऐसी स्तुति और ध्यान किया कि गिरिजा ने प्रकट होकर वरदान देने के निमित्त दया की। दारुका ने कहा कि हम न मारी जावें और न हमारे ऊपर शिवजी क्रोध करें। तुम आदिशक्ति हो। तुम्हारे ब्रह्माजी, विष्णुजी और शिवजी सेवक हैं। यह सुनकर गिरिजा ने हँसकर कहा कि यही होगा और शिवजी से कहा कि दारुका हमारी भक्ता है। इसका और इसके स्वामी का नाश न होवे और यह दारुकवन भी नष्ट न होवे। यह सुनकर शिवजी मुस्कराये। उन्होंने कहा कि हे गिरिजा! सोच-विचार कर जो उचित हो, वह करो। तब गिरिजा ने कहा कि युग के अन्त पर्यन्त यहाँ यह राक्षस रहें तथा यह वन नगरी सहित बसा रहे और दारुका हमारी शक्ति गिनी जावे। वह अपने पति सहित

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यहाँ राज्य करे। शिवजी ने कहा कि जो कोई मनुष्य अपने वर्ण और धर्म में दृढ़ रहेगा और यहाँ आकर हमारे दर्शन करेगा, वह पृथ्वी का राजा होकर इन्द्रदेवता के समान सुखी रहेगा। फिर शिवजी ने गिरिजा से कहा कि अब हम भविष्य का वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि विभ्रसेन राजा के गृह एक पुत्र उत्पन्न होगा। वह यहाँ आकर हमारे दर्शन करेगा और वह राजा होकर इनको मारेगा। इसी प्रकार बहुत से परस्पर वचन कहके शिवजी नागेश नाम लिङ्गस्वरूप धारकर वहाँ स्थित हुये। यह सुनकर नारद ने ब्रह्माजी से पूछा कि राजा विभ्रसेन उस वन में क्योंकर गया ? ब्रह्माजी ने कहा कि नैषध में विभ्रसेन राजा हुआ। उसने द्वादस वर्ष शिवजी का तप किया। सो शिवजी ने प्रसन्न होकर आज्ञा दी कि हे विभ्रसेन! तुम पश्चिम के समुद्र में जाकर दारुक वन में राक्षसों को मारो और एक काठ की नाव बनाकर राजा को दी जिसके ऊपर राजा विभ्रसेन चढ़कर दारुक वन में गया। जब शिवलिङ्ग और गिरिजा के दर्शन पा चुका तब पशुपति शस्त्र जो वहाँ रक्खा था, उससे सब राक्षसों को मारा। श्रीसदाशिवजी और श्रीगिरिजा देवी का पूजन करके फिर अपने नगर को लौट आया। वह यही समय था जिसमें गिरिजा ने यह आज्ञा दी थी कि दारुक राज्य करेगा। हे नारद! जो नागेश्वर महादेवजी के चरित्र वर्णन अथवा श्रवण करेगा, वह आनन्द पावेगा। अब हम रामेश्वर ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करेंगे।

अड़तालीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि एक समय चारों मुनि सनकादिक हमारे पुत्र विष्णुलोक में गये। जब वह विष्णुजी के मन्दिर के अन्दर जाने लगे तो जय और विजय दोनों गणों ने न जाने दिया। सनकादिकों के शाप देने से वह कनकाक्ष और हिरण्यकशिपु का जन्म लेकर विष्णुजी के हाथ से मारे गये। उनको तीन जन्म तक दैत्य होने का शाप था। इसलिये वह दोनों रावण और कुम्भकर्ण हुये। रावण शिवजी का पूजन करके बड़ा वीर होकर तीनों लोकों को जीतकर राज्य करने लगा। जब तुमने उसे छला तब उसने कैलास पर्वत को मूल से उखाड़कर शिवजी से शाप पाया कि हमारे सदृश अन्य मनुष्य तुम्हारे मद का नाश करेगा। शाप के कारण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रावण धर्म के विपरीत चलने लगा। देवताओं और मुनीश्वरों की प्रार्थना के अनुसार विष्णुजी ने रामचन्द्र का अवतार लिया जिनका वर्णन हम कई बेर कर चुके हैं। जब रामचन्द्रजी देवताओं के मनोरथ पूर्ण करने को वन में गये तब रावण सीता को छलकर हर ले गया और लङ्का में रक्खा। श्रीरामचन्द्रजी ने कुम्भज तथा अगस्त्यमुनि की शिक्षा और उपदेश से शिवजी की पूजा की।

उनचासवाँ अध्याय।

नारदजी के प्रश्न के पीछे ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि अगस्त्यमुनि की शिक्षा से श्रीरामचन्द्र ने सब शरीर में भस्म धारण की और शिवजी का ध्यान करके रुद्राक्ष को पहना कर लक्ष्मणजी को रक्षा के निमित्त द्वार पर बिठाया तथा सहस्र नाम जो वेद में हैं, उनका वह जप करते रहे। ऐसा तप रामचन्द्रजी का देखकर शिवजी प्रकट हुये और रामचन्द्रजी को अपनी गोद में बिठाकर कहा कि जो चाहते हो, वह हमसे माँगो। रामचन्द्रजी ने कहा कि हम यह चाहते हैं कि रावण का वध करें और सीताजी को ले आवें। शिवजी ने प्रसन्न होकर अपना तेज धनुर्बाण सहित उनको दिया। रामचन्द्रजी ऋष्यमूक पर्वत पर जाकर सुग्रीव और हनुमन्त से मिले फिर रामचन्द्रजी ने बालि को जो सुग्रीव का भाई था, मारकर उसको बड़ा सुख दिया। फिर हनुमान् सीता का पता लगाने गये और पता लगाने के पीछे रामचन्द्र से फिर वृत्तान्त कहा। रामचन्द्रजी ने समुद्र के तट पर पहुँचकर देखा कि किसी प्रकार समुद्र में जाने की राह नहीं है। निदान उन्होंने चिन्तित होकर शिवलिङ्ग स्थापित किया और पूजन आदि के पीछे प्रार्थना की कि हे महाराज! हम किस प्रकार सागर से पार जावें? आप हमारी रक्षा कीजिये कि हम समुद्र पार होके रावण को मारें। यह कहकर स्तुति करके गलनाद अर्थात् गलमुदरी बजाया। उसी लिङ्ग से शिवजी प्रकट हुये। जैसा श्रीसदाशिवजी का स्वरूप है वैसा ही विराट् रूप धारकर रामचन्द्रजी के सम्मुख खड़े हुये। रामचन्द्रजी ने ऐसा स्वरूप देखकर शिवजी की बड़ी स्तुति की जिसको सुनकर शिवजी ने अति प्रसन्नता से कहा कि वरदान माँगो। रामचन्द्रजी ने ऐसा ज्योतिस्वरूप देखकर कहा कि मैं चाहता हूँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि समुद्रपार उतरूँ और रावण को जीत लूँ कि रावण को उसके कुल सहित बध करूँ और तुम हमारे स्थित किये लिङ्ग में रहकर संसार को सुख दो। शिवजी ने कहा कि ऐसा ही होगा और उसी लिङ्ग में जो राजा रामचन्द्र ने स्थापित किया था, समा गये। उस लिङ्ग का नाम रामेश्वर है। रामचन्द्रजी और लक्ष्मणजी ने फिर उसी लिङ्ग की पूजा करके बड़ा आनन्द किया। फिर सुग्रीव, जाम्बवान्, अङ्गद और हनुमान् ने उनकी पूजा की। रामचन्द्रजी समुद्र में पुल बाँधकर, रावण को कुलसहित मारकर, विभीषण को राज्यतिलक देकर और श्रीसीताजी को साथ लेकर अवधपुरी को लौट आये। हे नारदजी ! जो मनुष्य रामेश्वर लिङ्ग में गङ्गाजल चढ़ावे, वह दोनों लोक में सुख पावे। जो रामेश्वर के दर्शन करे, वह सर्वपापों और दोषों से रहित होकर नाना प्रकार के सुख प्राप्त करे। बहुत-से मनुष्य कहते हैं कि जब उन्होंने पुल बाँध लिया तब रामेश्वर महादेव को स्थापित किया। यह वचन केवल कल्पभेद के कारण है पर उनकी सेवा से अनेक प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं।

पचासवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! अब हम घुस्मेश्वर शिव ज्योतिर्लिङ्ग का वर्णन करते हैं जो बारहवाँ शिवज्योतिर्लिङ्ग है। दक्षिण दिशा में जो त्रिवेद नामी शिवजी का धाम है, उसमें एक बड़ा नगर है। उस नगर में एक बिबुध सुधर्मानामी ब्राह्मण रहता था। वह रात्रिदिन शिवपूजा करता और सर्वदा भस्म और रुद्राक्ष धारणकर शिव-शिव रटा करता था। उसकी स्त्री सुदेहा महापतिव्रता और शिवजी की बड़ी भक्ता थी। वह दोनों विदेशियों की सहायता और कार्यपूर्ण करने में सदा उद्यत रहते और सर्वदा शिवजी का व्रत रखते थे। वे शिवजी और गिरिजा की पूजा नित्य करते थे। जब बहुत दिन व्यतीत हुये और ब्राह्मण की स्त्री के कोई पुत्र उत्पन्न न हुआ तो वह अति चिन्तित हुई। अन्त में ब्राह्मण ने उसे बहुत समझाया और कहा कि शिवजी की भक्ति करो। इससे उत्तम कोई वस्तु नहीं है। यद्यपि पुत्र से दोनों लोक में सुख मिलता है पर वेद का यह वाक्य है कि कर्म सर्वोपरि है। जो मनुष्य भक्ति करते हैं, उनको संसार का सुख भला नहीं भासता। देखो,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कौन किसका पुत्र, पिता, माता और भ्राता है ? यह सब झूठे बान्धव हैं। सब अपने-अपने लाभ को देखते हैं। ऐसे-ऐसे उपदेश से ब्राह्मण की स्त्री प्रसन्न होकर सुखी हुई। एक दिन अचानक वह स्त्री अपनी पड़ोसिन के यहाँ गई। वहाँ कुछ स्त्रियों से झगड़ा हुआ। उन्होंने कहा कि यद्यपि तुझे कोई पुत्र नहीं पर तो भी तू इतना अहंकार करती है। तेरा यह गर्व निष्फल है। क्या तूने नहीं सुना कि सन्तान बिना मुक्ति नहीं मिलती और न ज्ञान फलदायक होता है। विष सींचने से कोई बीज पृथ्वी से नहीं उगता। सर्व शुभकार्य बिना सन्तान के लाभदायक नहीं होते। बिना सन्तान के जप, तप, धर्म, कर्म निष्फल है। जो सन्तानवाला पुरुष है, वह पापी भी हो तो भी मुक्ति प्राप्त करता है। तुम किसी प्रकार हमारे समान नहीं हो क्योंकि हम सबके पास सन्तान हैं और तुम पुत्रहीन हो ब्राह्मणी अतिलज्जित हो घर की ओर आई और अपने पति के चरण पर गिरकर बहुत रोई। फिर सब वृत्तान्त कह सुनाया। उसने कहा कि मुझको पुत्र दीजिये वरन् मैं न जीऊँगी। ब्राह्मण ने बहुत समझाया कि तुम क्यों संसारी सुख ढूँढ़ती हो? तुम शिवजी की भक्ति करो और पुत्र के लिये ऐसी चिन्ता न करो पर उसने एक न मानी और सन्तान माँगा। सो ब्राह्मण ने दुःखी होकर शिवजी का ध्यान किया और दो फूल एक उनमें से लड़का उत्पन्न होने का और दूसरा उसके विरुद्ध देकर कहा कि इनमें से एक फूल उठा लो। यह परीक्षा मैं लेता हूँ। देखूँ, पुत्र तेरी भाग्य में है या नहीं। स्त्री ने वह फूल उठाया जो लड़का न होने का था। इससे ब्राह्मण को अति दुःख हुआ और स्त्री से कहा कि तेरी प्रारब्ध में पुत्र नहीं है। स्त्री ने कहा कि तुम दूसरा ब्याह करो। मैं उसकी लौंड़ी होकर रहूँगी। इस निमित्त उसने ब्राह्मण का विवाह और किया। उसका नाम घुस्मा था। वह अपने स्वामी की आज्ञानुसार पार्थिव पूजन करने लगी। वह नित्य हजार पार्थिव बनाकर विधि से पूजन करती थीं, जब थोड़े दिन व्यतीत हुये तो शिवजी प्रसन्न हुये और घुस्मा के एक पुत्र उपजा जिससे ब्राह्मण और उसकी स्त्री बहुत प्रसन्न हुई। उसने उसके सब जातकर्म किये और एक सभा बड़े धूम-धाम से करके भाई-बान्धवों को प्रसन्न किया।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इक्यावनवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! जब घुस्मा के पुत्र उत्पन्न हुआ तब सब मनुष्य उसकी प्रशंसा करने लगे और सुदेहा प्रथम स्त्री की निन्दा होने लगी। ऐसे कठोर वचनों से सुदेहा की छाती जलने लगी और अपने सौत के लड़के को देखकर अति चिन्तित हुई। जब उसका लड़का खेलता तो उसे बुरा मालूम होता। वह नित्य उसे मारा करती और उसने पहली प्रीति को विस्मरण कर दिया। यद्यपि उसका पति दोनों को समान जानता था पर वह प्रसन्न न होती और नित्य लड़ाई करती। घुस्मा कहती थी कि यह पुत्र मेरा नहीं तुम्हारा है। मैं तुम्हारी लौंड़ी हूँ। यह घर और धन सब तुम्हारा ही है। इस वचन के सुनने पर भी सुदेहा की ईर्ष्या न गई। उसके पति और पड़ो-सियों ने उसे बहुत शिक्षा की पर उसने कुछ न माना और प्रीति आदि को त्याग उसके विपरीत पति को जलाने लगी। हे नारद ! सवतिया डाह बहुत बुरा है। इससे पुरुष को उचित है कि दूसरा विवाह न करे। विशेष करके जब पहिली स्त्री जीती हो या उसकी सन्तान हो क्योंकि ऐसे ब्याह करने में खेद होता है। चाहे सूर्य देवता पश्चिम से उदय हों या अग्नि ठंढी पड़ जावे पर सौतों का मिलाप से रहना बहुत कठिन है। या यों कहो कि किसी प्रकार मेल नहीं हो सकता। जब उस लड़के का ब्याह हुआ तब सबको सुख प्राप्त हुआ पर सुदेहा की अग्नि और भी अधिक हुई। यद्यपि घुस्मा से सुदेहा की सेवा उस पुत्र की स्त्री अधिक करती थी पर सुदेहा कुछ भी प्यार न करके कठोर वचन कहती। निदान सुदेहा ने यह विचारा कि बिना पुत्र के वध के मुझको सुख प्राप्त न होगा और इसी प्रकार जला करूँगी। हे नारद ! स्त्री के विचार में कौन ऐसा काम है जिसको वह नहीं कर सकती। उसको योग्य और अयोग्य कर्म कुछ जान नहीं पड़ता। एक दिन उसने लड़के को सोता पाकर मार डाला और उसका शिर वहाँ डाल दिया जहाँ घुस्मा शिवजी के लिङ्ग को पूजा करके डाल देती थी। जब प्रभात को इस प्रकार लड़के के अङ्ग भिन्न-भिन्न देखे गये तो नगर भर में इस बात की चर्चा फैल गई। ब्राह्मण और घुस्मा जो शिवजी का पूजन कर रहे थे पूजन को न त्यागकर अपनी जगह से न उठे। पूजा के पीछे लड़के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को ऐसी अवस्था में देखकर कहा कि शिवजी रक्षक हैं और घुस्मा ने पूर्ववत् अपने पार्थियों को उसी स्थान पर जहाँ शिर पड़ा हुआ था, डाल दिया और कुछ भी खेद न किया। ऐसा सन्तोष और दृढ़ता अपने भक्तों की देखकर शिवजी प्रसन्न हुये और ज्योतिस्वरूप होकर दर्शन दिये। फिर सम्मुख आकर खड़े हुये जिनको घुस्मा ने देखकर प्रणाम करके स्तुति पढ़ी। शिवजी ने कहा कि वर माँगो। हम बहुत प्रसन्न हुये। हम तेरे लड़के के मारनेवाले को अपने त्रिशूल से मारेंगे। घुस्मा ने कहा कि वह अपने पापों से आपही मर जावेगी, आप उसको बध न करें। मेरी यह अभिलाषा है कि आप इसी स्थान पर गिरिजा सहित स्थित होवें। शिवजी ने मुस्कराकर कहा कि अच्छा, हमारा नाम घुस्मेश्वर शिवलिङ्ग होगा और तुम्हारे नाम के साथ हमारा नाम होगा। इस तालाब का नाम शिवालय होगा। तुम्हारे बहुत सन्तान होगी अर्थात् सौ पुत्र होंगे। यह कहकर शिवजी लिङ्गरूप हो गये। ब्राह्मण ने अपनी दोनों स्त्रियों सहित उनकी परिक्रमा की और शत्रुता त्याग सबने अच्छे प्रकार शिवजी की पूजा की। जो इस चरित्र को सुनेगा या पढ़ेगा, वह संसारी सुख भोगकर शिवपद प्राप्त करेगा। उसके सर्वपाप जल जायेंगे और कोई रोग न रहेगा। हे नारद! हमने द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग कह सुनाये जिनका वर्णन विस्तार सहित हुआ है। यह बारहों ज्योतिर्लिङ्गों के चरित्र मुक्ति देनेवाले हैं। शिवलिङ्गों की बड़ी महिमा है। जब शिवभक्त को खेद होता है, तब शिवजी प्रकट होकर उसके दुःख को दूर करते हैं। जो मनुष्य शिवजी की स्तुति करता है, उसको शोक तथा दुःख नहीं होता और वह मुक्ति पाता है।

इति श्रीशिवपुराणेऽष्टमखण्डे ब्रह्मनारदसंवादे लिङ्गखण्डस्समाप्तः ॥ ८ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:०:—

नवाँ खण्ड

पहिला अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! यह नवाँ खण्ड प्रयाग के समान है। जो मनुष्य इसको प्रयाग से कम समझेगा, वह बड़ा पापी होगा। वह शिवजी के विरुद्ध होकर संसार में लज्जित होकर परलोक में नरक की अग्नि में डाला जावेगा। प्रयाग को त्रिवेणी इस निमित्त कहते हैं कि वहाँ गंगा, यमुना और सरस्वती का सङ्गम है और इस खण्ड में नाम की महिमा, भस्म का माहात्म्य और रुद्राक्ष की बड़ाई वर्णन की गई है। सो शिव जी गङ्गाजी के समान, भस्म यमुनाजी के सदृश और रुद्राक्ष सरस्वती के स्थान पर हैं। जिस प्रकार कि काशीपुरी सब नगरियों से उत्तम है, उसी प्रकार यह खण्ड सबसे उत्तमोत्तम है। जिनके ललाट पर भस्म नहीं है, जो रुद्राक्ष नहीं पहिनते और जिनकी जिह्वा से शिव-शिव नाम नहीं निकलता, वह अधर्मी और पापी हैं। जो यह तीनों आभूषण पहिने हैं, वह श्रीसदाशिवजी के सदृश हैं। शिवजी की महिमा अनन्त है जिसके सुनने से अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। सन्त और भक्त लोग नाम को प्राण से अधिक प्यारा रखते हैं। हम, विष्णुजी और हर सब सदाशिवजी के नाम का जप करते हैं। इन्द्र आदि देवता शिवजी का स्मरण कर सर्वदा आनन्द में रहते हैं। मुनि और सिद्ध आदि नाम ही का जप करके सर्व पापों से रहित हो आनन्दपूर्वक रहते हैं। श्रीरामचन्द्रजी सीता सहित और श्रीकृष्ण राधा प्यारी सहित शिव-शिव रटकर सुखी हैं। उन्हीं मनुष्यों को धन्यवाद है जो शिवजी का नाम जपा करते हैं। उनके समान संसार में कोई जीव नहीं जिसके मुख से एक बेर भी शिवजी का नाम निकलता है। उसके सर्व कार्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

परिपूर्ण हो जाते हैं। शिव-शिव कहने से सर्व पाप और दोष नष्ट होते हैं और जिसके देखने से सुख मिले, उसका मुख तीर्थ के सदृश है। शिवजी का नाम पापों के वन के जलाने को आग के समान है। ब्रह्महत्यादि बड़े-बड़े पाप शिवजी के नाम लेने से दूर हो जाते हैं। शिवजी के नाम की नाव इस संसारी समुद्र के पार करने को सुगम युक्ति है। शिवजी का नाम अमृत के समान है जिसके रटने से शोक और दुःख नहीं रहते। जो मनुष्य कि मनसा, वाचा, कर्मणा से शिवजी का जप करे, वह पुरुष धन्य है। क्योंकि जो मनुष्य प्रीति से शिवजी का नाम जिह्वा से निकालता है, उसके सब पाप नाश हो जाते हैं। किसी देवता को सिवाय शिवजी के इतनी शक्ति नहीं कि पाप नष्ट करे। शिवजी का नाम अमृततुल्य पीने के योग्य है और दूसरी युक्ति पवित्र करने के निमित्त नहीं देखी जाती है। जिन मनुष्यों को राज्य का गर्व है अथवा जो संसार की सम्पति से अहंकारी हैं उनको शिवजी के नाम लेने की इच्छा नहीं होती, वह कभी किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। हे नारद! पूर्व जन्म के पुण्य बिना किसी मनुष्य को शिवनाम लेने की प्रीति नहीं उपजती। शिवजी का नाम बड़ा उत्तम है। उसके जपने से श्रीसदाशिवजी अपने भक्तों के अधीन हो जाते हैं। जिसने बहुत जन्मपर्यन्त कठिन तप किया हो, वह निस्संदेह शिवजी के नाम के माहात्म्य को जानता है। शिवजी-शिवजी कहने से चारों ओर से सुख और आनन्द प्राप्त होता है। जिस प्रकार कि अग्नि वन के वृक्षों को जला देती है, इसी प्रकार शिवजी का नाम सब दोषों को जला देता है। जैसे कि पुरियों में काशी और वर्णों में ब्राह्मण उत्तम हैं, वैसे ही सब नामों में शिवजी का नाम उत्तमोत्तम और बड़ा है। जितनी कि भक्तों में विष्णुजी की महिमा है, उतना ही नामों में शिवजी का नाम है। यद्यपि शिवजी के अनन्त नाम हैं, और सर्व कार्यों की सिद्धि में सब एक-से हैं और पापों का नाश करते हैं पर जो कोई मनुष्य शिवजी के नाम को किसी देवता के नाम के सदृश विचारे तो वह बड़ा पापी है। क्योंकि शिवजी सब देवताओं से बड़े हैं। यद्यपि कोई मनुष्य किसी प्रकार से शिवजी का नाम लेवे, वह निश्शङ्क मुक्ति प्राप्त करता है। यद्यपि इस संसार समुद्र के पार होने के सहस्रों यत्न हैं पर शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के नाम के समान कोई भी नहीं है। वह ऐसा नाम है जिसको कहकर सुमति नामक स्त्री जो अतिपापिनी थी, नरक से बच गई। दूसरे जन्म में शिवपुरी उसके रहने को मिली। देखो, राजा इन्द्रद्युम्न जो बड़ा पापी था, उसको एक सिंह ने मार डाला। जो कि राजा बड़ा पापी था, इस निमित्त उसके लेने को यमराज के गण आये। उस समय श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार शिवगण भी पहुँचे क्योंकि उसकी जिह्वा से शिवनाम निकला था। यद्यपि इसने यों ही नाम ले लिया था पर तो भी वह सदाशिव का रूप धारकर शिवपुरी में विराजमान हुआ। सिवाय इसके बहुत मनुष्य शिवनाम कहने से मुक्त हुये हैं जैसा कि इस बात को वेद और पुराण कहते हैं। पर तो भी वेद, पुराण, शेष और शारदा नाम के माहात्म्य को अच्छे प्रकार वर्णन नहीं कर सकते जो प्रथम नमः पद को कहकर शिवाय कहे तो यह पञ्चाक्षरी मन्त्र हो जाता है। यह सब मन्त्रों का राजा है। उसकी महिमा सबसे उत्तम है। इसके सुनने और कथा कहने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। यह मंत्र वेद में लिखा है कि गुप्त रखना चाहिए क्योंकि सब मंत्रों का राजा है जिसके अधीन सात करोड़ मंत्र हैं। इसी पञ्चाक्षरी मन्त्र को जपकर हम, विष्णुजी, अन्य देवता और मुनि निर्भय होकर नाना प्रकार के सुख भोगते हैं। पार्वतीजी को इसी मन्त्र के जप करने से अर्द्धाङ्गीरूप मिला है। उसी के जप करने से गङ्गा सब तीर्थों से पवित्र हैं। उसी के जपने से कोई पाप और दोष नहीं रहता। श्रीसदाशिवजी इस मन्त्र के जपनेवाले के ऊपर किसी अवस्था में भी अप्रसन्न नहीं होते।

दूसरा अध्याय।

नारदजी बोले कि हे संसार के उपजानेवाले ब्रह्मा! मेरी यह इच्छा है कि आप फिर अपने मुखकमल से शिवनाम का माहात्म्य विस्तार से वर्णन करें और मुझसे सुमति नामक स्त्री तथा इन्द्रद्युम्न राजा की कथा विस्तार से वर्णन करिये। ब्रह्माजी ने उत्तर दिया कि सुमति एक ब्राह्मणी थी जिसका नाम कैकेयी था। उसके पिता ने उसको एक अच्छे ब्राह्मण के साथ ब्याह दिया। वहाँ उसने अपने पति के साथ नाना प्रकार के विहार किये। थोड़े समय के पीछे उसका पति मर गया। उसने संसारी जीवों की रीति के सदृश

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

थोड़े दिन तो शोक माना परन्तु जब कामदेव ने उसको सताया तो वह इसके वेग को न सहकर व्यभिचारिणी हो गई। यद्यपि उसने गुप्त करके यह अशुभ कर्म किया पर वह प्रसिद्ध हो गया। उसके भाई-बान्धव सुनकर आये और सुमति को नगर से निकाल दिया। अचानक वन में उसे एक शूद्र मिला और उसे अपने घर ले आया। उसने अपनी स्त्री के समान उसे रक्खा। सुमति ने मद्यपी और मांसाहारी होकर अपने पुराने धर्म को विस्मरण कर दिया। एक दिन शूद्र घर से किसी ओर चला गया तो सुमति स्वाधीन हो नाना प्रकार के दुष्कर्म करने लगी। एक दिन सुमति ने मद्यपान करके चाहा कि मांस खाऊँ। इसलिये वह गोशाला में गई और अँधेरी रात देखकर एक बछड़े को तलवार से मार डाला। जब वह घर आई तो चिन्तित होकर शिव-शिव कहने लगी। पर तो भी उसके मांस को खाकर यह बात प्रसिद्ध की कि सिंह ने बछड़ा मार डाला है। जब उस स्त्री की मृत्यु का समय आया और मृत्यु के भँवर में फँसी तो यमराज के गण उसे बाँधकर महादण्ड देते हुए यमराज के निकट आये। यमराज ने उसे नरक में न भेजकर एक चाण्डाल के घर उत्पन्न किया, जहाँ वह अन्धी होकर बिन माता-पिता के कुष्ठ के रोग से दुःखी रही। इसी से उसका विवाह भी न हुआ और भूखों मरने से चाण्डालों की जूठन खाकर पेट भरती थी। यह दशा उसकी तरुणावस्था में हुई पर वृद्ध होने पर भी उसने सुख न पाया। तब वह बहुत रोई और इतना रुदन किया कि मानो आँसू की एक नदी बह निकली। उस समय श्रीसदाशिवजी ने यह चरित्र किया कि वह चाण्डाली गोकर्णक्षेत्र में जहाँ शिवरात्रि का मेला था, माँगती-खाती हुई मेले के संग गई। वह मेला माघ कृष्ण चतुर्दशी को था। उस दिन सब लोग व्रत रखते थे। यद्यपि उस चाण्डाली ने उस दिन बहुत कुछ माँगा पर उसको कुछ भी भिक्षा न मिली। एक मनुष्य ने केवल बेलपत्र थोड़े से उसे दे दिये पर जब उसने देखा कि यह पत्र कोई खाने-पीने की चीज नहीं हैं, तब उसने उसको धरती पर फेंक दिया। अचानक वह बेलपत्र शिवलिङ्ग के ऊपर चढ़ गये। सो उस चाण्डाली के सर्व पाप और दोष जल गये क्योंकि उसको उस दिन कुछ न मिला था। इसलिये

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसे निर्जल व्रत हो गया और दुःख से उसे रात्रि भर नींद भी न आई। इससे उसने अचानक में जागरण किया और प्रातःकाल भी कोई वस्तु उसे न मिली। इस निमित्त वह तड़पकर अपने घर गई। मार्ग में वह मारे भूख के मर गई। इससे शिवजी अति प्रसन्न हुये और अपने गणों को भेजकर यह आज्ञा दी कि इसे विमान पर चढ़ाकर शिवलोक में ले आवो। शिव के गणों ने ऐसा ही किया। शिवजी और शिवरानीजी ने दयालु होकर उसे अच्छा स्थान बैठने को दिया। फिर शिवरानी ने उसे अपनी दासी करके रक्खा। हे नारद! ऐसा पद सुमति को दो बार शिव-शिव कहने से मिला। इसी प्रकार अनन्त मनुष्यों ने केवल शिवनाम कहकर मुक्ति पाई है।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! गत कलियुग में एक इन्द्रसेन नामक सर्वसंसार का राजा बड़ा वीर उपजा। पर वह बुद्धिहीन मित्रों का शत्रु और बुरे स्वभाव का था। वह ब्राह्मणों के विरुद्ध चलता, जीवहिंसा करके सर्वदा पाप करता और केवल अपने शरीर की रक्षा कर आप सुखी रहकर अन्य जीवों को मार डालता था। पर स्त्री और पराये धन को अपना विचार कर ब्राह्मणों को वध करता था तथा मद्यपान करके अपने गुरु की निन्दा और उससे ग्लानि करता। वरन् वह बड़े-बड़े पाप करके भी संतोष न करके ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ सम्भोग करता था और वेद के विपरीत रहकर देवताओं का पूजन, तप, जप आदि कुछ नहीं करता। वह प्रजा का भी पालन न करता था। नित्य कुसंगति में बैठकर शिकार खेला करता और किसी कार्य में चित्त न लगाता। राजा को बहुत दिन ऐसे निन्द्य कर्मों में बीत गये। एक दिन राजा अपने मन्त्री सहित वन में शिकार खेलने को गया और चारों ओर से उसके अधिकारियों ने मुनीश्वरों को वन से बाहर निकालना चाहा। इस समय में शिवजी की माया से एक बड़े बली सिंह ने राजा को एक ही झपेट में मार डाला और किसी ने इस महापापी राजा की रक्षा न की। यमदूत राजा के लेने को आये और शिवगण भी शिवजी की आज्ञानुसार वहाँ आये और राजा को शिवपुरी में लाये। वहाँ राजा श्रीसदाशिव का रूप हो गया। शिवजी ने उसको अपना गण विचार-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कर आनन्दपूर्वक उसे बुलाया और अपने आसन पर उसको आधा स्थान देकर कहा कि हे राजा इन्द्रसेन! तुम हमारे बड़े भक्त हो। उचित है कि जो तुम्हारी अभिलाषा हो, वह हमसे माँगो, हम वरदान देंगे। यह सुनकर राजा के प्रेम से आँसू गिरे और सुख के कारण वह कुछ न बोल सका। अन्त में शिवजी ने आप ही वरदान देकर उसको अपना गण बनाया। उसका नाम चण्ड हुआ और मुण्डगण से उसकी बहुत मित्रता हुई। इस निमित्त शिवभक्त को उचित है कि जब शिवजी का जप अथवा किसी प्रकार की पूजा करे तो आग्नेय दिशा में चण्ड-मुण्ड की भी पूजा कर दिया करे। क्योंकि इनकी पूजा से शिवजी बहुत प्रसन्न होकर कष्टों को नष्ट कर मनोरथ पूर्ण कर देते हैं। यह पद राजा इन्द्रसेन को केवल एक बार शिवजी के नाम लेने से मिला। यद्यपि उसने जानबूझकर नहीं कहा पर वह केवल किसी वार्ता में उसकी जिह्वा से निकल गया। अर्थात् उसके मुख से यह पद (आहरपरहर) निकला था। उसी समय उसको सिंह ने मारा। जब यमराज के दूतों के द्वारा यह हाल मालूम हुआ तो उसने आश्चर्यवान् होकर चित्रगुप्त से इसका मुख्य वृत्तान्त पूछा। जब चित्रगुप्त ने उनसे (आहरपरहर) पद के मुख से निकलने का हाल कहा तब यमराज और उसकी सब सभा आश्चर्यवान् होकर प्रसन्न हुई। उसने शिवजी की महिमा को बारम्बार प्रणाम किया। जो कोई इस पवित्र कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा, वह दोनों लोक में सुख पावेगा।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! करोड़ों जन्मों के पाप शिवनाम कहने से नष्ट हो जाते हैं। धन और सर्वसुख की सामग्री मिलती है और कोई ऐसा दोष नहीं जो शिवनाम कहने से नष्ट न हो। इस माहात्म्य पर हम एक इतिहास कहते हैं कि उज्जयिनी नगरी में एक ब्राह्मण बड़ा पापी रहता था। उसका नाम असमचित्त था। जब वह उत्पन्न हुआ तो उसका पिता मर गया और जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो उसकी माता भी मर गई। इससे वह बड़ा दुःखी हुआ और निर्धन होकर बहुत रोया। वह बिन माता-पिता के होकर अपने धर्म के विपरीत सन्ध्या आदि जो ब्राह्मणों के उत्तम धर्म हैं,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उनसे भी रहित हुआ। उसने कोई विद्या भी न सीखी। जब तरुण हुआ तो चोरी सीखकर परदेश गया और चोर बनकर नाना प्रकार के पाप किये। उसने ब्राह्मणों की स्त्रियों को वध किया और परदेशियों तथा यात्रियों को मार्ग में मारा। वह उनको दुःखी कर लूटता रहा। उसने ब्राह्मणों का स्वरूप त्यागकर दैत्यों का रूप धारण किया। उसका शरीर टेढ़ा हो गया। उसका वर्ण काला, भयंकर और छोटा हो गया। उसने बहुत सी हत्यायें कीं और जीवों को मार डाला। एक समय यह असमचित्त चोरों के साथ मायाक्षेत्र में गया और चाहा कि चोरी करें। इससे वह अपने साथियों के साथ इधर-उधर फिरने लगा। सो एक स्थान पर ब्राह्मण बैठे थे। असमचित्त आधी रात को चोरी करने गया। वहाँ ब्राह्मण लोग शिवजी की पूजा करते, कथा सुनते थे और बड़ी स्तुति करके श्रीसदाशिवजी के मुख्य लक्षण धारण किये जप करते थे। असमचित्त ने अपने समूह से कहा कि तुम सब लोग अच्छे प्रकार जो यह सब वार्तालाप करते हैं, सुनो। क्योंकि यह सब धीरे-धीरे बातें कर रहे हैं। यह धन आदि के विषय की बातें मालूम होती हैं। यह सब धनवान् मालूम होते हैं। हमको उचित है कि इनका धन सब लूटकर इनको मार डालें। अब अपना वेष बदलकर शिवभक्त बनकर इनके निकट चलें। वे हमें न जानेंगे कि चोर हैं और भक्त जानकर कुछ न कहेंगे। यह कह असमचित्त ने अपने साथियों सहित यही किया और वस्त्रादि बदलकर शिवपूजकों के निकट गये। प्रणाम किया और शिवजी का माहात्म्य अच्छे प्रकार श्रवण किया। निदान उनकी संगति और शिवजी के नाम के प्रभाव से असमचित्त के पाप नष्ट हुये। वह हाथ जोड़कर ब्राह्मणों से कहने लगा कि हे मुनीश्वरो! मैं बड़ा पापी हूँ। मुझको अपना सेवक जानकर पार लगा दो। मैं केवल कहने ही का ब्राह्मण हूँ। मैं अपना धर्म नहीं जानता। मेरा जन्म मिथ्या है। मैंने करोड़ों पाप किये हैं और ब्राह्मणों को हजारों दण्ड दिये हैं। इसलिये मेरी यह प्रार्थना है कि ऐसी युक्ति बताइये जिससे मेरे सब दोष नष्ट हो जावें। यह कहकर वह अति प्रेम से ब्राह्मणों के चरणों पर गिर पड़ा और रुदन करने लगा। ब्राह्मणों ने कहा धन्य है, धन्य है, जो तुम ऐसे धर्म के स्थान पर आये। अब तुम अपने पहिले के पापों का विचार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

न करो तुमको उचित है कि गङ्गाजी के तट पर जो महागिरि है और जहाँ पवित्र शिवजी का मन्दिर है, वहाँ जाकर शिवजी की सेवा करो और शिवजी के नाम महादेव आदि का जप करो। तुम उस नाम के जप करने से कृतार्थ हो जावोगे। इस निमित्त असमचित्त उसी स्थान पर जाकर ब्राह्मणों की आज्ञानुसार रात्रि-दिन महादेव का नाम रटता रहा। यहाँ तक कि यह नाम रात्रि-दिन जपते-जपते उसे सात दिन और सात रातें व्यतीत हुईं। सो श्रीसदाशिवजी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और कहा कि तुमको धन्य है, तुम्हारा कल्याण होवे। तुम उठकर हमसे वरदान माँगो। तुम अपने पहिले के पापों से निर्भय रहो। यह सुनकर असमचित्त ने दण्डवत् करके स्तुति की। श्रीसदाशिवजी ने असमचित्त की अभिलाषा के अनुसार उसको सर्वविद्या दे दी। सो असमचित्त अतिविद्वान् हो और शिवजी के तत्त्व और स्वरूप को जानकर शिवजी की स्तुति करने लगा जिसके सुनने से श्रीसदाशिवजी ने अति प्रसन्न होकर कृपादृष्टि से देख दिया और कहा कि हम तुमसे प्रसन्न हैं। तुम हमारे गण होकर विमान पर चढ़कर हमारे कैलास में विराजमान हो जाओ। तुम्हारा नाम नील होगा और हम नीलेश्वर होकर इस स्थान पर विराजमान होंगे। इस पर्वत का नाम भी नील ही होगा जिसके स्मरण करने से सुख मिलेगा और अंशरूप होकर हम सर्वदा इस स्थान पर तुम्हारे साथ रहेंगे। गङ्गाजी के तट पर जो हमारा कुण्ड है, उसमें नहाने से मनुष्य हमारा रूप धारण कर लेगा तथा नील १ और नीलेश्वर २ यह दोनों रूप बहुत सुख देनेवाले हैं और करोड़ों दुःखों के दूर करनेवाले हैं। यह कहकर श्रीसदाशिवजी ने अपना डमरू बजाया जिसके शब्द से ब्रह्मा, विष्णु, देवता, मुनि और सिद्ध आदि उस स्थान पर आकर शिवजी की स्तुति करने लगे और नील की भी महिमा बखानी। सब देवता भी अंशरूप होकर वहाँ स्थित रहे। इसलिये वह स्थान अति पवित्र है जिसके देखने से पापी पापों से रहित हो पवित्र हो जाता है। नील दिव्य रूप होकर कैलास पर्वत पर गये। इसी प्रकार बहुत से मनुष्यों ने शिवजी का नाम कहकर बड़ा पद पाया है।

—:o:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पञ्चाक्षरी मन्त्र बहुत अच्छा है और उसकी महिमा अनन्त है जिसके जप करने से सब सिद्धि उत्पन्न होकर हजारों पाप नष्ट होते हैं। इस मन्त्र के अक्षरों की महिमा बखानने की किसी को शक्ति नहीं। इसी के द्वारा वेदों ने सिद्धि पाई है और आप सत् चित् आनन्दस्वरूप सदाशिव इस मन्त्र में सर्वदा स्थित रहते हैं। यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है जिसके जपने से मनुष्य आवागमन से रहित होकर ब्रह्मपद प्राप्त करता है। जो मनुष्य संसारी सुखों में लिप्त होकर इस लोक में फँस जाते हैं उन्हीं के निमित्त श्रीसदाशिवजी ने इस मन्त्र को प्रकट किया। यद्यपि जप, तप, यज्ञ और तीर्थ आदि संसारी मनुष्यों के लिये सुगम कर्म हैं। जो इस मन्त्र को अपने हृदय में धारण किये हैं, उनको कर्मों से क्या प्रयोजन है? जब तक मनुष्य इस मन्त्र को नहीं जपता, तब तक वह सत्यमार्ग से भटकता फिरता है। यह मन्त्र सब मन्त्रों का महाराजाधिराज और सर्व वेदान्त का शिरताज है। कैवल्य मुक्ति के निमित्त यह मन्त्र दीपक के सदृश हैं। इसके जप करने से शिवजी सर्वदा निकट ही रहते हैं और यही मन्त्र पापों के सागर के लिये बड़वानल और दोषों के समूह के लिये अग्नि के समान है। यह मन्त्र सबसे उत्तम है क्योंकि इस मन्त्र के स्वामी सबके मालिक हैं। सब मनुष्य इसका जप कर सकते हैं, किसी को मनाही नहीं। जो दूसरे मन्त्रों में अवगुण हैं, वह कभी इस मन्त्र में नहीं हो सकते। जो संस्कार दीक्षा आदिक हैं, वह इस मन्त्र को किसी अवस्था में अयोग्य नहीं कर सकते। जो कोई मनुष्य गुरु के उपदेश बिना इस मन्त्र को जपे तो भी यह मन्त्र फलदायक होता है। प्रकट हो कि शिवजी में दो अक्षर हैं। वह दोनों सर्वपापों का नाश कर देते हैं। जब नमः अथवा नमस्कार के साथ यह कहे जावें तो मोक्ष में कोई शङ्का नहीं। जो कोई सद्गुरु से इस मन्त्र को लेकर पवित्र स्थान अथवा नगरी में प्रेम से इसका जप करे तो जापक के सम्पूर्ण कार्य सिद्ध हों। इसमें कुछ भी आश्चर्य न जानो। इससे उचित है कि यत्न और युक्ति से इस मन्त्र को सद्गुरु से लेवे और पुण्यक्षेत्र में शुभ घड़ी पर अति पवित्र हो इसका जप करे। सद्गुरु यहाँ पर ब्राह्मण के आशय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में लिखा गया और अन्य सब वर्ण शिष्य कहलाते हैं। वेद का यही वाक्य है। पर गृहस्थ को उचित है कि अपने से नीचे को अपना गुरु न करे। इससे उसे बड़ा पाप होता है। इसका मुख्य तात्पर्य यह कि जो मनुष्य इस मन्त्र को गुरु से लेकर जप करे तो तुरन्त ही उसके सर्वपाप नष्ट हों। इस पर हम एक इतिहास कहते हैं जो अति पवित्र और पापमोचन है। इससे दुःख भी दूर हो जाते हैं तथा नित्य अधिक आनन्द मिलता है पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा समझी जाती है। जापक को कोई मनुष्य दुःख नहीं दे सकता। उसके ऊपर शिवजी दयालु होकर प्रसन्न रहते हैं। यदुवंशियों के कुल में एक राजा दाशार्ह नामक बड़ा विद्वान् और सर्वशास्त्रों में दक्ष उपजा। एक बड़ा वीर, संतोषी, युद्ध में चतुर, स्वभाव का दृढ़, धर्म में तत्पर, शत्रुओं को जीतनेवाला, तरुण अतिसुन्दर और शीलवान् था। उसने काशी के राजा की लड़की के साथ अपना विवाह किया। उसका नाम कलावती था जो महासुन्दर और पतिव्रता थी। सो राजा ने अपना अन्तःपुर नाना प्रकार से अलंकृत कर अपनी स्त्री से मैथुन करना चाहा पर वह कलावती उसके निकट न गई। तब उसने दुःखी होकर विवश हो अभिलाषा की कि बलात्कारपूर्वक उससे भोग करें। इससे वह उठा। कलावती ने ऐसा देखकर हाथ जोड़ विनती करके राजा से कहा कि महाराज मुझे न छूना और न मेरे हाथ को पकड़ना। क्योंकि आप धर्म और अधर्म को जानते हैं। जो धर्म वेद कहते हैं, उनको सब मानते हैं। आप जल्दी न करें क्योंकि कोई जल्दी काम किया जाता है, उसका परिणाम बुरा होता है। मैं व्रत धारण किये हुई हूँ। जो आप मुझको लिपट जायँगे तो अच्छा न होगा। सिवाय इसके दोनों ओर की प्रीति बिना सुख प्राप्त नहीं होता पर दुःख ही मिलता है। यदि कोई मनुष्य बिना स्त्री की इच्छा उससे भोग करता है तो कुछ लाभ नहीं पाता। वेद का वाक्य है कि नीचे लिखी हुई स्त्रियों से भोग करना उचित नहीं। पहिली वह स्त्री जो पुरुष से प्रीति न करे। दूसरी वह जो रोगिणी हो तीसरी जो गर्भवती हो। चौथी जो किसी व्रत, नियम या संयम में हो। पाँचवीं वह जो कामदेव से रहित हो। छठी वह जो मासिक धर्म में हो। यद्यपि कलावती ने राजा को बहुत-सा उपदेश किया, पर राजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को कुछ भी समझ में न आया। संतोष से रहित हो काम में भर कर रानी का हाथ पकड़कर अपने हृदय से उसे लगा लिया और जो कुछ मन में आया सो किया। हे नारदजी ! संसार में ऐसा कौन जीव है जो कामदेव से रहित हो ? क्योंकि जब काम उदय होता है, तब मनुष्य निर्बुद्धि हो जाता है। सो राजा का हृदय जलने लगा और घबराकर समझा कि मैं अग्नि से भस्म हुआ जाता हूँ। ऐसी अपनी अवस्था देखकर राजा ने रानी को छोड़ दिया और दूर खड़ा हुआ। यद्यपि उसको भोग करने की अधिक इच्छा थी पर रानी से कहा कि मुझको आश्चर्य होता है कि तुम्हारा ऐसा कोमल शरीर है पर हमारे लिये यह अग्नि समान हो गया। यह सुनकर रानी ने हँसते हुये हाथ जोड़कर कहा कि इस बात में कुछ सन्देह और विचार न करो। इसका यह कारण है कि एक बेर दुर्वासा मुनि हमारे पिता के यहाँ पधारे और बाल अवस्था में प्रसन्न होकर मुझे उपदेश दिया। फिर शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र देकर शुभ घड़ी में यथारीति तन्त्रशास्त्र के यन्त्र भी दिये। इससे मेरा शरीर पवित्र और पापों से रहित है। इसलिये जो उस मन्त्र से रहित और पापी है, वह हमारे शरीर को नहीं छू सकते। तुमने अपने राज्य के मद में व्यभिचारिणियों और मद्यपान करनेवाली वेश्याओं से भोग किया है। तुम नित्य स्नान भी नहीं करते, न किसी दिन शिवबाना पहनकर उनके पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हो और न उनका कभी पूजन किया। इन कारणों से तुम मुझे नहीं छू सकते। राजा ने आश्चर्य कर रानी से भोग करने की तृष्णा से युक्त हो कहा कि तुम मुझे वही मन्त्र बता दो कि जिसके श्रवण करने से मेरे सब दोष जाते रहें और तुमसे मुझे सुख प्राप्त हो क्योंकि तुमसे भेंट किये बिना मुझे प्रसन्नता न होगी। रानी ने कहा कि मुझे उचित नहीं है कि मैं तुमको मन्त्र बता दूँ और आप अधर्मी होकर अपने शरीर पर पाप लूँ। पर तुमको चाहिये कि गर्ग मुनि जो आपके पुरोहित हैं, उनसे मन्त्र लेने को उनकी शरण में जावो। यह सुनकर राजा रानी को साथ ले गर्ग मुनि की सेवा के निमित्त गये। उनको दण्डवत् कर राजा ने कहा कि हे महाराज ! मुझे कृतार्थ कीजिये अर्थात शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र हमें दीजिये। गर्ग मुनि दोनों को साथ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लेकर यमुनाजी के तट पर गये। सब उचित कार्यों के पूर्ण कराने के पीछे राजा को बिठलाकर शिवजी का पञ्चाक्षरी मन्त्र सुना दिया। उस मन्त्र के सुनते ही राजा के सब पाप मुख से निकलने लगे मानो जले हुये कङ्कड़ निकलते थे। राजा के सब पाप जलकर राख हो गये जिसके देखने से राजा और रानी आश्चर्यवान् हुए। उन्होंने गुरुजी से विनती की कि आप इस चरित्र का कारण बताइये कि क्यों हमारे मुख से अग्नि निकली? यह सुनकर पुरोहितजी ने उत्तर दिया कि हजारवर्ष तुमको बड़े-बड़े पाप करते व्यतीत हुये हैं। जब पाप-पुण्य बराबर हुये तो तुम्हें मनुष्य का जन्म फिर मिला। जब तुमने शिवजी का मन्त्र धारण किया, तब तुम्हारे पापी हृदय से सब छोटे और बड़े पाप जलते हुये पत्थरों के सदृश तुम्हारे मुख से निकले। अब तुम पापरहित हो। फिर गर्गमुनि ने मन्त्र की महिमा बखानकर कहा कि करोड़ों जन्मों की ब्रह्महत्या आदि पाप तुरन्त ही इस मन्त्र के प्रभाव से नाश हो जाते हैं। यह मन्त्र सब मन्त्रों का राजा है। यह मन्त्र शिवजी को अति प्रिय सब मनोरथों को सिद्ध करता और दोनों लोकों में पापों को हरता है। श्रीसदाशिवजी इस मन्त्र के वश में हैं। विष्णुजी और ब्रह्माजी इस मन्त्र की सेवा करते हैं। इस पञ्चाक्षरी मन्त्र की बड़ी महिमा है। इसको मूर्ख लोग नहीं जान सकते। वरन् इसकी महिमा ब्रह्मा और विष्णु भी नहीं समझते। केवल अपनी बुद्धि से रात्रि-दिन वर्णन करते हैं। देवताओं और मुनीश्वरों को इतनी शक्ति नहीं कि इसको जान सकें। केवल सुबुद्धि से उसका वर्णन करके अपने मनोरथ पूर्ण पाते हैं। जितने वेद और मन्त्र शास्त्र के मन्त्र हैं और अन्य जो श्रीसदाशिवजी के सात करोड़ मन्त्र हैं, उन सब मन्त्रों का यह पञ्चा-क्षरी मन्त्र राजा है। शिवजी अक्षररूप हैं और यह मन्त्र मानो उनका मुख्य वचन है। इसलिये इसके जप करने से शिवजी अवश्य मिलते हैं। यह निस्संदेह है। वेद इस मन्त्र को स्थूल प्रणव तथा दीर्घॐकार कहते हैं। इसी से भक्तजन दोनों में भिन्नता नहीं समझते क्योंकि ॐकार और पञ्चाक्षरी में पाँच अक्षर हैं। केवल स्वर और व्यञ्जन का भेद है। जब कोई मनुष्य काशीजी में मरता है तो श्रीसदाशिवजी यही पञ्चाक्षरी मन्त्र उस मृतक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के कान में फूँक देते हैं जिससे वह मुक्त हो जाता है। कलियुग में भी इसी मन्त्र का जप करनेवाला श्रीसदाशिवजी का रूप हो जाता है। इतना कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पञ्चाक्षरी मन्त्र की महिमा बखान कर गर्गमुनि राजा और रानी सहित प्रेमसागर में डूब गये। जब चैतन्य हुये तो फिर कहा कि हे राजन् ! तुम पापों से रहित हुये। तुमको अब उचित है कि अपनी रानी के साथ प्रसङ्ग करो और अपनी राजधानी में रहो। राजा गर्गमुनि की आज्ञा से अपने घर आया और जब रानी से मैथुन किया तो रानी का शरीर उसको चन्दन का-सा ठंढा मालूम हुआ। जो कोई इस कथा को सुनेगा अथवा पढ़ेगा, उसके सर्व मनोरथ पूर्ण होंगे और उसका बड़ा कल्याण होगा।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद ! अब हम भस्म का माहात्म्य और महिमा वर्णन करते हैं। भस्म दो प्रकार की है महाभस्म १ स्वल्पभस्म २। सो महाभस्म शिवजी का मुख्य रूप है और स्वल्पभस्म की अनेक शाखा हैं श्रौत १ स्मार्त २ लौकिक ३। जो वेद की रीति से धारण की जाती है, उसे श्रौत कहते हैं। स्मृति अथवा पुराण की रीति से जो भस्म लगाई जाती है, उसे स्मार्त कहते हैं और जो संसारी अग्नि से उत्पन्न हुई है, उसे लौकिक कहते हैं। पहिले और दूसरे प्रकार के भस्म केवल ब्राह्मण धारण करें और तीसरी को सब वर्ण तनुपर अलंकृत करें। ब्राह्मण वेद के मन्त्र से भस्म लगावें पर अन्य मनुष्य केवल नाम से भस्म धारण करें। ब्राह्मणों को यज्ञ की भस्म अवश्य लगानी चाहिये और औरों को जली हुई सामग्री की जिसमें गोमूत्र पड़ा हो, भस्म बनाकर धारण करना उचित है। वह सब पानी मिलाकर भस्म लगावें और भस्म त्रिपुण्ड्र के अनुसार धारण करें। हम, विष्णुजी, इन्द्र और सब देवता भस्म धारण करते हैं। पार्वती, लक्ष्मीजी और उपदेवता आदि भी भस्म लगाते हैं। योगी, सिद्ध और नागादि भी भस्म से खाली नहीं रहते। जो मनुष्य भस्म नहीं धारण करते, वह मुक्ति को नहीं प्राप्त होते। वेद का वाक्य है कि बिना भस्म धारण किये सब आचार और पूजन निष्फल है चाहे सौ करोड़ कल्प बीत जायँ पर जो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मनुष्य बिना भस्म और त्रिपुण्ड्र के रहते हैं, वह नित्य पाप ही किया करते हैं और दोनों लोक में दुःख पाते हैं। भस्म पापियों को प्रिय नहीं होती और वे नरकगामी होते हैं। जो मनुष्य भस्म को अतिप्रेम और परिश्रम से धारण करते हैं, उन पर कुछ भी दुःख नहीं पड़ता। उनके पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। यह अयोग्य है कि बिना भस्म लगाये वेद के मन्त्र का जप करे क्योंकि न शिवजी उस पर कृपालु होते हैं और न कोई कार्य बनता है। भस्म का माहात्म्य अनन्त और अनादि है। उसको कोई वर्णन नहीं कर सकता। सब अपनी-अपनी बुद्धि से बखान करते हैं। सब प्रकार के मनुष्य भस्म धारण कर सकते हैं। कुछ कुल और वर्ण का विचार नहीं और उत्तम, अधर्म, मूर्ख, नीच, बुद्धिमान, निर्बुद्धि जो भस्म धारण किये हैं, वह तीर्थों के समान हैं। जहाँ मनुष्य भस्म धारण करनेवाले रहते हों, वहाँ यज्ञ और अन्य शुभ कर्म बहुत होते हैं। ऐसे पुरुष जप, तप और व्रतों का शुभ फल प्राप्त करते हैं। इन लोगों की सेवा करनी चाहिये। यद्यपि कोई मनुष्य बड़ा पापी भी हो और वर्ण आश्रम तथा आचार से रहित जो वह भी भस्म लगावे तो अति शुभ और पवित्र है। वह मानो सर्वविद्या निधान है और उसने सब सुकर्म कर लिये। जो मनुष्य ऐसे भस्मधारी की निन्दा करता अथवा उसको धमकाता है अथवा उसको मारता है वह अपने जन्म का नाश करता है। उसको चाण्डाल जानकर उससे ग्लानि करनी चाहिये क्योंकि शिवजी की आज्ञा है कि सब भस्म धारण करें। जितनी भस्म की कणिका किसी के शरीर में होंगी, वह शिवलिङ्ग हैं। पुरुष, स्त्री, बालक, तरुण और वृद्धसब भस्म धारण कर सकते हैं। किसी को मनाही नहीं और कुछ अधिक पवित्रता की भी आवश्यकता नहीं। कुंकुम आदि के तिलक के ऊपर भस्म लगानी चाहिये। जो नित्य शिवरानी और गिरिजापति का ध्यान करके प्रीति से भस्म और त्रिपुण्ड्र लगाते हैं, उनके जीवहत्या ऐसे बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य त्रिपुण्ड्र अथवा भस्म की निन्दा करता है, वह शिवजी का बैरी है। उसे चाहिये कि जब तक भस्म को धारण न कर ले तब तक पानी न पीवे और न भोजन करे। क्योंकि भस्म को त्याग करनेवाला नरक में पड़ता है। वहाँ उसे रुधिर आदि पीने का कष्ट मिलता है। उस ललाट को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धिक्कार है जिस पर भस्म न लगी हो। उस गाँव को भी धिक्कार है, जहाँ कोई शिवमन्दिर न हो। उस जन्म जो धिक्कार है जिसको पाकर शिवपूजन न करे। उस विद्या पर धिक्कार है जिससे किसी को लाभ न मिले। बिना भस्म के तन्त्रशास्त्र और पञ्चाक्षरी मन्त्र के उपदेश का कोई अधिकारी नहीं। केवल वेद के अधिकारियों को शक्ति है कि चाहे जिस प्रकार भस्म लगावें पर और मनुष्य इसके अधिकारी नहीं। सब मनुष्य भस्म और त्रिपुण्ड्र के उपासक हैं। जो मनुष्य वेद की रीतियों की शिक्षा दे अथवा यज्ञ कराये, उसे उचित है कि नित्य भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे। विष्णु आदि देवताओं के पूजनेवालों को उचित है कि भस्म और त्रिपुण्ड्र लगावें। जो मनुष्य वेद की रीति पर चलनेवाला दशों प्रकार के त्रिपुण्ड्र को लगावे, वह वेद के विरुद्ध है। इसको वेद और पुराण स्पष्ट वर्णन कर सकते हैं कि जो भस्म धारण किये हैं, वह सबसे उत्तम हैं। कदाचित् वह मनुष्य चाण्डाल भी हो पर शुद्ध हो जाता है। जो मनुष्य नित्य भस्म लगाता है, वह अति पवित्र है। गङ्गाजी आदि तीर्थ सब उसके शरीर में रात्रि-दिन स्थित रहते हैं। सर्व तीर्थ और क्षेत्र भी उसमें रहते हैं। पञ्चाक्षरी आदि सब उत्तमोत्तम मन्त्र उसके शरीर में वर्तमान रहते हैं। उसके दोनों ओर के असंख्य कुल तर जाते हैं और भी संसारी सुखों को पाकर मुक्ति प्राप्त करता है। फिर क्रम से पहिले सब लोकों में घूमकर हमारे लोक में जाता है और हमारे सहस्र वर्ष पर्यन्त हमारे लोक में रहकर अति सुन्दर स्त्रियों के साथ विहार करके फिर वह विष्णुलोक में जाता है। फिर विष्णुजी के सहस्र वर्ष पर्यन्त वहाँ रहकर शिवलोक में विराजमान होता है जहाँ जरा, मृत्यु और किसी प्रकार का खेद नहीं है। वह जब तक चाहता है तब तक वहाँ रहता है और अन्य गणों के समान उसे शिवगण का पद मिलता है और श्रीसदाशिवजी के समान हो जाता है। यह हम सत्य-सत्य वर्णन करते हैं और वेदों को साक्षी देते हैं तथा जो कुछ उपनिषद कहते हैं, उनका सार भी यही है कि जो हमने कहा और सब देवता तथा सृष्टि भर के समस्त जीवधारी और मुनि सिद्ध आदि यही वर्णन करते हैं। श्राद्ध, हवन, जप, तप, यज्ञ और देवताओं के पूजने में भी भस्म त्रिपुण्ड्र धारण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करना आवश्यक है। जो मनुष्य भस्म की निन्दा करते हैं, वह करोड़ों पापों में फँसकर बहुत समय पर्यन्त नरकगामी रहते हैं। यद्यपि स्नान पवित्र है पर सब स्नानों से भस्मस्नान अति पवित्र कहा गया है। यह मनुष्य सब तीर्थ, यज्ञ, जप, तप और व्रत आदि के फल को केवल भस्म धारण करने से पाता है। गङ्गा आदि जो देवताओं की नदी है, वह भस्म से उत्तम नहीं। भस्म तीनों लोकों को पवित्र करनेवाली है। परम शिवजी भस्म के स्वरूप हैं। जो मनुष्य बिना भस्म धारण किये कोई अच्छा काम करता है, वह मूर्ख और निर्बुद्धि है क्योंकि उसको वैसा फल नहीं मिलता और इसके आगे जप, तप, यज्ञ, व्रत, तीर्थ और ध्यान सब निष्फल हैं। जिसने भस्म न धारण की वह व्यर्थ ही इस संसार में उत्पन्न हुआ। जो विधि से भस्म और त्रिपुण्ड्र धारण करे तो अधिक फल होता है। स्त्री जो मासिक धर्म में हो, वह पुरुष जिसने गुरू के मुख से मन्त्र न लिया हो और वनचारी पुरुष मध्याह्न तक पानी मिलाकर भस्म लगावें पर दोपहर के पीछे बिना जल के भस्म लगानी चाहिये। सन्यासी को सर्वदा बिना जल के भस्म धारण करनी उचित है। वह तारस्वरूप शिवजी का ध्यान करे। वह तार-स्वरूप दो प्रकार का है—एक सूक्ष्म, दूसरा स्थूल जिसका तात्पर्य एक अक्षर और पाँच अक्षर से है। भस्म जो तीन प्रकार की है, उसको किसी ने तीन प्रकार पर भी वर्णन किया अर्थात् वेद १, शिवानल २ और भव ३। उसमें अघोरमन्त्र मुख्य है। उचित है कि अघोरमन्त्र से लकड़ी को शुद्ध करके जलावे। बेल, पलाश, शमी, बड़ और पीपल की लकड़ी भस्म के निमित्त उत्तम है। जो पवित्र सामग्री से बनाई गई अर्थात् दारु, लोहा, मिट्टी, काँसा, चाँदी आदि के बर्तनों से बनाई गई हो और वह अन्न जो होम में बर्ता जाता है, वह भी पवित्र है। अब हम भस्म धारण करने की विधि बताते हैं। त्रिपुण्ड्र शब्द से तीन रेखा मानी जाती है जिनमें एक-एक देवता विराजमान हैं। भृकुटी से दोनों भवों के अन्त तक त्रिपुण्ड्र लगाना चाहिये, इससे अधिक नहीं। पहिली रेखा मध्यमा से खींचे, तीसरी अनामिका से बीच में अंगुष्ठ से भस्म लगाना उचित है। सत्ताईस स्थानों पर रेखा लगावे जिनमें एक-एक देवता विराजमान रहते हैं। प्रणवाक्षर १, शुचि २,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आत्म ३, लोक ४, श्रुतिगण ५, शुक्ति ६, सवन ७, दिवौक ८। यह तीन प्रकार के सब देवता हैं जिनको हर एक रेखा के निमित्त हम भिन्न-भिन्न वर्णन करते हैं। उचित है कि हर एक रेखा जिससे वह सम्बन्धित है, दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे, उससे मुक्ति मिलती है। अब हम सत्ताईस रेखाओं का विस्तार सहित वर्णन करते हैं और उनके देवता बताते हैं। उनमें ३२, १६, ८ और ५ भेद हैं। वे सब स्थान भिन्न-भिन्न हैं जैसा कि वेद कहते हैं। अर्थात् शिर, ललाट, कर्ण, नेत्र, नासिका, मुख, कण्ठ, भुजा, उदर, हाथ, छाती, पाँजर, नाभि, मुष्क, त्रिबली दोनों जाँघों का मध्य भाग और चरण, यह सब ३२ हैं। सो अष्टवसु, सप्तदिग्धेश, आठों दिक्पति और आठों इन्द्र का नाम लेकर ऊपर लिखे हुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र लगावें। शिर, ललाट, कण्ठ, अंस, भुजा, उदर, हाथ, स्तन, नाभि, पाँजर, पीठ, यह १६ स्थान हैं, जिनके यह देवता हैं, शिव, शिवभक्त, नाद, ईशान, देवसूक्त और नवदस्र अर्थात् नव इन्द्र। इनका नाम लेकर ऊपर लिखे हुये स्थानों में त्रिपुण्ड्र धारण करे। सिवाय इनके ब्रह्मरन्ध्र, शिर, भुजा, ललाट, कण्ठ, स्तन, नाभि, त्रिबली, हाथ, पीठ और उदर यह सब १६ स्थान हैं। इनमें परम शिव, शिव, दिश, ब्रह्मा, विष्णु, अग्नि, गुरु, रुद्र, सूर्य, द्विजेश, वाम, मरुत, वसु, हर और हरदेव की दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे। शिर, ललाट, दोनों कान, दोनों कन्धे, हृदय, नाभि यह ८ स्थान हैं। इनमें ब्रह्मा और सप्तर्षियों को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र धारण करे। शिर, भुजा, नाभि और हृदय यह पाँच स्थान हैं। इनमें पाँच देवताओं को दण्डवत् करके त्रिपुण्ड्र लगावे।

सातवाँ अध्याय।

नारदजी ने प्रश्न किया कि हे महाराज! आपने भस्म धारण करने की विधि बताई। पर कृपा करके कोई ऐसा इतिहास कहिये जिससे किसी पापी ने भस्म के प्रभाव से मुक्ति प्राप्त की हो। इतना कह सूतजी बोले कि हे शौनको! ब्रह्माजी अपने पुत्र की ऐसी प्रीति देखकर बोले कि वामदेव नाम शिवजी के एक योगी हैं। वे निर्भय होकर सदा एकान्त में रहते हैं और सबको एक दृष्टि से देखते हैं। उनका कोई स्थान नहीं। वह क्रोध, काम, मोह और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लोभ से रहित हैं। किसी से कोई वस्तु नहीं लेते और मौन साधे रहते हैं। केवल भस्म धारकर संसार में फिरकर शिवजी को स्मरण किया करते हैं। वह सब पर प्रसन्न और दुःख तथा सुख से रहित परमहंस अद्‌भुत निष्क्रोधी हैं। एक दिन वह क्रौञ्चारण्य में गये। उसमें भूतादिकों के सिवाय कोई न रहता था। उस वन में एक ब्रह्मराक्षस अतिनिर्दयी भयानक रहता था और पापों के कारण बहुत भूखा प्यासा रहता था। कोई मनुष्य भय के कारण वहाँ न जाता था। जब उसने मुनि को देखा तो उनके खाने को चला पर वामदेव निर्भय होकर खड़े हो गये। ब्रह्मराक्षस उनके शरीर में लिपट गया और इच्छा की कि दोनों भुजाओं से दबाकर एक ग्रास करूँ। पर उनके छूने से उसके सर्वपाप निवृत्त हो गये जिस प्रकार कि चिन्तामणि के मलने से लोहा स्वर्ण हो जाता है अथवा जिस प्रकार काक हंस की संगति से मानसरोवर पाता है अथवा मनुष्यादिक देवताओं की कृपा से अमृत प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार वह सत्संग पाकर शुद्ध हुआ। हे नारद! सदा-शिवजी की महिमा देखो जो कि राक्षस भूख प्यास से विकल होकर वाम-देव को वध करने को था, वही उनको छूने से आनन्दपूर्वक कृतार्थ हो गया क्योंकि जो भस्म वामदेव के शरीर में लगी थी, वह राक्षस के भी लग गई और वह हाथ जोड़कर उनके चरणों पर गिरा। उसने प्रार्थना की कि हे महाराज! कृपा करके मुझे तार दीजिये। आपने हम पर बड़ी दया की जो आपके छूने से मुझे सुख मिला। यह प्रकट है उसका वर्णन नहीं हो सकता। मैं दुःख के समुद्र में डूबा हुआ हूँ। आप हमारी रक्षा करके उबारिये। मुझको छूने ही से सुख प्राप्त हुआ है। मेरे सब पाप और ताप नाश हो गये। वामदेव ने कहा कि हे राक्षस! तुम ऐसे कुरूप और भयानक कौन हो? क्योंकि तुमको यहाँ खाना-पीना कुछ नहीं मिलता। तुम किस कारण ब्रह्मराक्षस हुये? हमसे सब वृत्तान्त कहो। ब्रह्मराक्षस ने दण्डवत् करके हाथ जोड़कर कहा कि हे महाराज! इस जन्म से पच्चीसवाँ जन्म मेरा राजा का था। मेरा नाम दुर्जन था। मैं यवन देश में राज्य करता था। मेरे स्वभाव में निर्बुद्धिता, पाप, अहंकार और क्रोध बहुत था। सारी प्रजा मुझको शत्रु समझती थी। मेरे सर्वकार्य निष्फल होते थे। मैं प्रजा को लूटता था। इससे नगरी उजड़

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गई। मैंने वेद आदि का वाक्य असत्य मानकर गर्भवती स्त्रियों से प्रसंग किया। यद्यपि मैंने भोग करने के योग्य स्त्रियों को बन्दीगृह में रक्खा पर मैंने उनके साथ भोग न किया और न उनको अवसर ही दिया कि वे अन्य पुरुष से भोग करें। मैंने सब वर्णों की स्त्रियों के साथ भोग किया। अर्थात् मैंने पतिव्रता स्त्रियों और जो मासिक धर्म में थीं और जिनका विवाह नहीं हुआ था और तरुण और जिनकी आयु कम थी, सबके साथ भोग किया। तीन सौ ब्राह्मणों की स्त्रियों के साथ प्रसंग किया, चार सौ क्षत्रियों की स्त्रियों को मैंने रक्खा, छः सौ वैश्यवर्ण की स्त्रियों, एक हजार शूद्र की स्त्रियों से कुकर्म किया और सौ चाण्डालों की स्त्रियाँ, हजार पुलिन्दों की स्त्रियाँ, पाँच सौ शैलूषी, चार सौ रजकों की स्त्रियाँ और अनन्त वेश्याओं के संग प्रसंग किया। रात्रि-दिन सिवाय व्यभिचार के और कोई कर्म न करता था। पर तो भी सुखी न रहता। नित्य नवीन स्त्री से भोग करता, इससे तरुण अवस्था ही में अनेक प्रकार के रोगों से ग्रसित हो गया। नाना प्रकार के दुःख भोगे और अपनी स्त्री से कभी मैथुन न किया। फिर मुझे शत्रुओं ने चारों ओर से धावा करके जीतकर दुःखी कर दिया। बुद्धिमान् मन्त्रियों ने भी ग्लानि करके मुझे त्याग दिया। अन्त में मैं मर गया। यमगण मुझे पकड़कर यमराज के सम्मुख ले गये और रुधिर के कूप में मुझे डाल दिया। सो मैंने तीन सौ वर्ष पर्यन्त उसमें रहकर बहुत कठिन दुःख उठाये। फिर मेरा पिशाच का जन्म हुआ और एक वन में जहाँ एक भी मनुष्य न था, मुझे, स्थित किया। सो वहाँ भूख और प्यास से तलफता सौ वर्ष तक रहा। फिर दूसरे जन्म में सिंह, तीसरे में अजगर, चौथे में बिच्छू, पाँचवें में सुअर, छठे में गर्ग, सातवें में श्वान, आठवें में फेरू, नवें में बैल, दशवें में हरिण, ग्यारहवें में बन्दर, बारहवें में भैंसा, तेरहवें में न्यवला, चौदहवें में काक, पन्द्रहवें में खच्चर। इसी प्रकार अन्य जन्मों में गधा, बिल्ली, बकरी, मछली, चूहा, मेढक, घुग्घू और हाथी होता रहा। अब यह पच्चीसवाँ जन्म मेरा ब्रह्मराक्षस का है जो आप देख रहे हैं। मुझको इस जन्म में यह बड़ा क्लेश है कि कुछ खाने को नहीं मिलता। अब अपने पापों का स्मरण करके रोता हूँ। पर यह मुझे मालूम नहीं होता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कि किस शुभ कर्म से आज आपके दर्शन पाये। वह कौन जप, तप, योग या तीर्थ मैंने किया जिससे ऐसे पद को प्राप्त हुआ। आप कहिये कि आप क्योंकर यहाँ आये और हम ऐसे पापी को दर्शन दिया? मुझको आप कृतार्थ कीजिये क्योंकि मैं जानता हूँ कि अब हमारे अच्छे दिन आये हैं। यह कहा और वामदेव के सम्मुख हाथ जोड़ खड़ा रहा।

आठवाँ अध्याय।

नारदजी का प्रश्न सुनकर ब्रह्माजी बोले कि राक्षस के वर्णन के पीछे वामदेव ने कहा कि यह सब भस्म का प्रभाव है। अर्थात् जो हमारे शरीर में भस्म लगी है, वह तुमने भी धारण कर ली। उसके प्रभाव से तुम्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और प्रथम जन्मों के पाप सब निवृत्त हो गये। भस्म की महिमा केवल श्रीसदाशिव जानते हैं और कोई नहीं बूझ सकता। जैसे शिवजी के चरित्र वर्णन नहीं हो सकते, इसी प्रकार भस्म की अनन्त महिमा है। पहिले समय में एक ब्राह्मण द्राविड़ देश में उत्पन्न हुआ जो बड़ा अधर्मी, पापी और चोर था। वह व्यभिचार में फँसा रहता और शूद्रों के समान होकर सर्वदा परस्त्रीगमन करता रहता था। वह वेश्याओं से भी मैथुन करता था। अकस्मात् वह ब्राह्मण एक शूद्र के घर कुकर्म के निमित्त गया। शूद्र ने उसे कुकर्म करते पाकर मार डाला और अपने घर के बाहर फेंक दिया। पर प्रातःकाल उसके शरीर में चारों ओर भस्म उड़कर लग गई। शिर, भुजा, हृदय और मुख में उसके रेखायें बन गई। उस समय यमराज के गण आये और इच्छा की कि उसको यमराज की सभा में लावें पर शिवगणों ने आकर और झिड़ककर यमगणों से कहा कि यहाँ से चले जावो। वे उस पापी ब्राह्मण को विमान पर चढ़ा लाये। उस अवस्था में यमराज आप ही शिवगणों के निकट आये और पापी ब्राह्मण के छुड़ाने का कारण पूछा। कहा कि हमको बड़ा आश्चर्य और संदेह है कि ऐसा मनुष्य जो चोरी और व्यभिचार ऐसे कुकर्म करे और अन्त में एक शूद्र के हाथ से मारा जाय, वह शिवपुरी को सीधा चला जाय। यह सुनकर शिवगणों ने कहा कि हे यमराज! यह अब पापरहित है। इसके सब दोष भस्म हो गये। क्योंकि इसके शिर, हृदय, भुजा और मुख में भस्म विराजमान है। इससे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हम श्रीसदाशिवजी की आज्ञानुसार इसको शिवपुरी लिये जाते हैं। यह कहा और विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी में ले गये। वामदेव ने कहा कि हे ब्रह्मराक्षस! भस्म शिवजी का वस्त्र और आभूषण है। इसके लगाने से पापी को भी मुक्ति मिलती है। इसका धारण करनेवाले श्रीसदाशिवजी को अति प्रिय है। भस्म सर्व पापों को नष्ट करती है और शिवजी को प्रसन्न रखती है। सब देवता मुनीश्वर आदि सर्वदा भस्म धारण किये रहते हैं। ब्रह्मा और विष्णु नित्य भस्म लगाकर सर्व कर्म पर मनोरथ पूर्ण करते हैं। इतनी कथा कह ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! यह भस्म का माहात्म्य सुनकर ब्रह्मराक्षस के सब पाप नष्ट हुये। उसने वामदेव के चरण पकड़कर हाथ जोड़ प्रणामकर प्रार्थना की कि हे महाराज! आप धन्य हैं और मेरे भी धन्य भाग्य हैं कि आपकी संगति मिली। अब मुझको इस जन्म से कृपा करके मुक्ति दिलाइये और एक बात मुझे स्मरण हुई है, उसे सुनो। वह यह कि जिस जन्म में मैं राजा था, तब मैंने थोड़ी-सी धरती एक ब्राह्मण को दान दी थी। जब मैं यमलोक में गया तो यमराज ने मुझसे पूछा कि यद्यपि तुमने बड़े-बड़े पाप किये हैं पर एक पुण्य भी किया है कि तुमने थोड़ी-सी धरती एक ब्राह्मण को दान दी थी। उसी कारण तुमको पच्चीसवें जन्म में एक योगीश्वर मिलेंगे जिनकी दया से तुम्हारे पाप नाश हो जायँगे और मुक्ति पावोगे। मुझको भासता है कि यह वही अवस्था है जो यमराज ने कही थी। मैं बहुत जन्म तक नाना प्रकार के दुःख उठा चुका हूँ क्योंकि मैं बड़ा पापी था। अब मुझको अपना सेवक समझकर भस्म मन्त्र सहित दीजिये क्योंकि तुम भस्म धारण किये हुये शिवजी का रूप हो। तुम संसार के मनोरथ पूर्ण करने के लिये फिरा करते हो। जो मनुष्य सब लोगों का उपकार करते हैं, वह निष्पापी कल्पवृक्ष के समान हैं। यह कहकर ब्रह्मराक्षस चुप होकर वामदेव के सम्मुख खड़ा हो गया। ऐसी ब्रह्मराक्षस की विनती सुनकर वामदेव प्रसन्न हुये। शिवजी और शिवरानीजी को स्मरण करके अपनी झोरी से भस्म निकाल त्रिपुण्ड्र धारा और अन्य अङ्गों में भी भस्म लगाई। भस्म के धारण करते ही ब्रह्मराक्षस पवित्र हो गया और उसका पहिले जन्म के समान शरीर बदलकर वह बड़ा तेजस्वरूप हुआ। उस समय तुरन्त ही आकाश से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विमान आया। वह उस पर चढ़कर शिवपुरी गया और शिवगणों में मिल गया। हे नारद! भस्म की ऐसी ही महिमा है। हमने अपनी बुद्धि के अनुसार कह सुनाया। जो मनुष्य इस भस्म माहात्म्य को सुनेगा या पढ़ेगा, वह दोनों लोकों में सुख प्राप्त कर मुक्ति पावेगा।

नवाँ अध्याय।

नारदजी ने कहा कि हे महाराज! आपने मुझे बहुत अच्छी कथा सुनाई। मैं भस्म की महिमा सुनकर अति प्रसन्न हुआ। पर मैं आपसे एक वार्ता पूछता हूँ। जो मनुष्य वेद के जाननेवाले और परमज्ञानी हैं, उन्हीं के गुरु करने से और उन्हीं के उपदेश से सर्व कार्य सिद्ध होते हैं और श्रीसदाशिवजी प्रसन्न होते हैं। या सब लोगों का उपदेश लेकर सिद्धि प्राप्त हो सकती है। मनुष्य को किस प्रकार का गुरु करना उचित है। सूतजी बोले हे मुनियों! ब्रह्माजी ने नारद का प्रश्न सुनकर उनकी अति प्रशंसा कर अति प्रेम से उत्तर दिया कि श्रद्धा ही सब मनुष्यों के मनोरथ पूर्ण करती है और श्रद्धा से पूजन का फल मिलता है। श्रद्धा सब पापों को नाश करती है। श्रद्धा ही से धर्म मिलता है। श्रद्धा ही से शिला दोनों लोक में अतिफल देती है। श्रद्धा ही से नीचों पर देवता प्रसन्न रहते हैं। बिना श्रद्धा के सर्व कार्य निष्फल होते हैं। बिना श्रद्धा के जप, तप, मन्त्र, तन्त्र, पूजन और भिक्षा सब अकारथ हो जाते हैं। सब मन्त्र, देवता और गुरु भाव से फल देते हैं। संसार में भाव उत्तम है। भाव से सुख-दुःख और पुण्य-पाप प्राप्त होते हैं। बिना भाव के धर्म और दोष नष्ट होते हैं। इस वचन को श्रीसदाशिवजी ने अपने मुख से कहा है। इससे यद्यपि इस विषय में असंख्य कथा हैं पर हम उनमें से एक इतिहास कहते हैं। प्राचीन समय में एक राजा जिसका नाम सिंहकेतु था, वह पाञ्चाल देश में राज्य करता था। वह सर्वविद्यानिधान और शिवजी का बड़ा भक्त था। एक दिन वह अच्छे-अच्छे वीरों को संग लिये शिकार खेलने गया। उसके संग एक शङ्कर नामी मनुष्य जो जाति का शबर था, गया। उसने इधर-उधर फिरते टूटी-फूटी शिला शिवालयों में देखीं जो अर्घे से बाहर पड़ी थीं। सो इसने तुरन्त ही एक शिवलिङ्ग को बड़े प्रेम से उठा लिया और राजा के निकट दौड़कर उसे दिखाया। कहा कि हे राजन्! इस

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवलिङ्ग को देखिये, मैं इसे पूजूँगा। आप मुझे पूजा की विधि बता दीजिये। यद्यपि मैं नीच हूँ पर मैंने सुना है कि नीच लोगों को भी प्रेम से श्रीसदाशिवजी का ध्यान करना चाहिये। शिवजी जाति को न विचारकर उनको भी वरदान देते हैं। राजा ने निषाद से कहा कि हम तुम्हें ऐसी रीति बताते हैं जिससे शिवजी तुरन्त ही प्रसन्न हो जावें। पूजनेवाला मनुष्य पहिले स्नान करे। फिर पवित्र वस्त्र पहिन अच्छे स्थान पर बैठे। फिर भस्म धारण करके शिवजी को स्नान करावे और चन्दन, अक्षत, अर्घ्य, पुष्प, बेलपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य से शिवजी का पूजन करे। फिर शिवजी के आगे नाचे-गावे। तदनन्तर शिवजी को प्रणाम और स्तुति करके अपने गाल बजावे और विधिसंयुक्त प्रदक्षिणा करे। यह शिवपूजन सुगम और सरल रीति से वर्णन किया। तुम भली भाँति विचारो कि चिता की भस्म शिवजी की अति प्रिय है। उसको शरीर में धारण करने से सुख प्राप्त होता है। इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! यद्यपि राजा ने हँसी से यह कहा पर शबर बहुत प्रसन्न हुआ और राजा के वाक्य को उसने श्रद्धा से सुना। उसी समय वह अपने गृह आया और शिवलिङ्ग की पूजा करने लगा। वह नित्य प्रथम अपने शरीर में भस्म धारण करता और दिन-दिन शिवजी के चरणारविन्दों में प्रीति बढ़ाकर ध्यान धरता था। जो वस्तु उसे अच्छी लगती थी, उसे शिवजी को प्रथम भोग लगाकर फिर आप खाता था। इसी प्रकार वह अपनी स्त्री सहित शिवजी की पूजा करके भजन गाता था। इस प्रकार उसे बहुत समय बीता तो शिवजी बहुत प्रसन्न हुये और चाहा कि उसकी परीक्षा लें। जब शबर पूजन करने लगा तो चिता भस्म को जहाँ पर रखता था, वहाँ पर न देखी। क्योंकि शिवजी ने चिता भस्म उसकी दृष्टि से दूर कर दी। यद्यपि वहाँ चिताभस्म बहुत रक्खी हुई थी पर उसको दिखाई न दी। उसने उठकर चारों ओर ढूँढ़ा पर न पाने से आश्चर्य कर विकल हो अपनी स्त्री से कहा कि मैंने भस्म को बहुत ही ढूँढ़ा पर वह नहीं मिलती। इस समय मुझे बहुत ही खेद है जो कि हमारी पूजा में विघ्न पहुँचा है। इससे हमारा जीना वृथा है। यह कह वह बहुत रोया। यह दशा उसकी स्त्री ने देखकर बहुत दुःखी होकर कहा कि हे प्राणप्यारे! तुम क्यों इतना घबड़ाते हो? मैं इसी समय सती

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होती हूँ। जो चिताभस्म मेरे जल जाने से मिले, उससे तुम अपना काम करो। शबर ने उत्तर दिया कि चारों पदार्थों के प्राप्त करने के लिये तो तुम्हारा शरीर है और हमारे विहार के निमित्त है। इसका तुम त्याग मत करो। क्यों कि अभी तुम्हारे कोई पुत्र भी नहीं उपजा और संसार का आनन्द भी तुमने नहीं उठाया। फिर तुम क्यों इस पवित्र शरीर के जलाने को उद्यत होती हो? स्त्री ने कहा कि मैंने सत्पुरुषों से सुना है कि जो दूसरे के उपकार के लिए अपना शरीर छोड़े तो उसका जन्म सफल हो जाता है। मुख्य करके जब शिव के काम में शरीर का त्याग हो तो इससे उत्तम संसार में और क्या है? ऐसे मनुष्य का भाग्य संसार में सर्वोपरि है। मेरे हजारों जन्म के शुभ कार्य उदय हुये हैं जो मैंने शिवजी के लिये यह उद्योग ठहराया है। यह सुन शबर ने मान लिया। सो स्त्री ने अति शुद्ध हो स्नान कर चिता बनाई और उसमें अग्नि लगाय शिव को बारबार प्रणाम करती हुई अग्नि में प्रवेश कर गई और वह तुरन्त ही भस्म हो गई। उसी भस्म को शबर ने अपने शरीर में मलकर शिवजी की पूजा की और शिवपूजन के उपरान्त प्रतिदिन के नियम के अनुसार शबर ने हाथ में प्रसाद लेकर पीठ की ओर को हाथ बढ़ाया कि उसकी स्त्री प्रसाद ले ले क्योंकि वह प्रतिदिन पूजा करके अपनी स्त्री को प्रसाद दिया करता था। देखा कि उसकी स्त्री जो जल गई थी, नये शिर से सजीव होकर हाथ जोड़ उसके सामने से पहिले के समान वस्त्रों से भूषित हो शिव-शिव मुख से कहती हुई चली आती है। शबर ने पूछा कि यह क्या आश्चर्यदायक चरित्र है? तू जलकर क्योंकर जी गई? शबरी ने कहा कि तुम्हारे देखते हुये जब मैं अग्नि में प्रवेश कर गई तो मुझे अग्नि में प्रवेश करने का कुछ भी दुःख न हुआ। मानों मैं अमृत के कुण्ड में चली जाती थी और जिस तरह कोई मनुष्य निद्रा से जागकर उठ बैठे, उसी तरह मैंने उठकर घर को देखा और तुम्हारे पास प्रसाद लेने को पूर्व के समान आई हूँ। इतना कह ब्रह्मा बोले हे नारद! यह दोनों यही बातें कर रहे थे कि उस स्थान पर विमान उतरा। शिवजी ने प्रसन्न होकर चार गणों सहित विमान भेजा था। उन्होंने हाथ पकड़कर शबर और शबरी को उसके भीतर बैठा लिया। दोनों शिवलोक में पहुँचकर शिवस्वरूप हो सदा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रसन्न रहे। हे नारदजी ! भस्म धारण करना बड़ी बात है। भस्म लगाने से शिवजी इतने प्रसन्न होते हैं। उसमें चिता भस्म की बड़ी महिमा है। उसके समान कोई वस्तु श्रेष्ठ नहीं जिसके कारण शबर और शबरी ने जो नीच थे, परमपद पाया। जो मनुष्य पवित्र होकर भस्म और रुद्राक्ष धारण करके शिवजी के गुण वर्णन करे, वह दोनों लोक में सुख पावे।

दसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे ब्रह्माजी ! भस्म का माहात्म्य और वर्णन करो क्योंकि भस्म शिवजी को अति प्रिय है। शिवजी का वस्त्र और आभूषण इससे बढ़कर और कुछ नहीं है। जो भस्म बिना शैव होना चाहता है, वह शैव नहीं है। वरन् वह शिवजी के विरुद्ध है। उसके समान दूसरा संसार में दुष्ट और नास्तिक नहीं। ब्रह्मा बोले वास्तव में चारों पदार्थों की देनेवाली भस्म है। उसको शरीर में लगाने से सर्वशोक और दुःख दूर हो जाते हैं। यह भस्म तन-मन का बल बढ़ाकर मृत्यु के समय में भी मन को आनन्द रखती है। इस पर हम एक पवित्र इतिहास कहते हैं, मन लगाकर सुनो। दशारण्य देश का राजा वज्रबाहु हुआ जिसके असंख्य स्त्रियाँ थीं। उनमें से भाग्यवश बड़ी रानी के गर्भ रह गया तो अन्य स्त्रियों ने ईर्षा से उसको विष पिला दिया। यद्यपि उसने अपनी उन सौतों का छल न जाना पर बहुत कष्ट उठाने के अनन्तर वह अच्छी हो गई। विष ने अपना कुछ फल न किया और न उससे गर्भ में कुछ विघ्न हुआ। निदान नियमित समय पर उसके उदर से एक पुत्र उपजा जिससे उसकी सौतों को और भी अधिक डाह उपजा और लड़के को भी उपजने के समय से अति विकलता रही जिससे वह बराबर रात-दिन रोता रहा। रानी ने भी विष के प्रभाव से बड़े-बड़े दुःख उठाये। राजा की आज्ञा से बड़े-बड़े बुद्धिमान् वैद्यों ने बहुत से उपाय किये पर कुछ भी फल न हुआ। पहिले तो रानी विष के प्रभाव से आप ही विकल थी। दूसरे अपने पुत्र के रोने के कारण और भी अधिक दुःखी हुई। रात और दिन भर उसको निद्रा न आई। इससे वे दोनों क्षीण हो गये। इसी तरह थोड़े दिनों तक राजा ने दोनों को ऐसे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दुःख में पाकर विचार किया कि यह दोनों माता और पुत्र पूर्व जन्म के अति पापी हैं जो दुःख भोग रहे हैं। इनका किसी शुभ कर्म से हमारे यहाँ आगमन हुआ पर इनको सुख न मिलेगा। इन्होंने मेरे आहार-विहार में अपने रोने-पीटने से विघ्न डाला है। यह विचार कर राजा ने अपने भीलों को आज्ञा दी कि रानी को उसके पुत्र सहित रथ में चढ़ाकर वन में छोड़ आवो। भील ने राजा की आज्ञानुकूल दोनों को अति निर्दयता से वनमें ले जाकर छोड़ दिया। और आप लौट आया। सो रानी लड़का लिये भूखी प्यासी दुःखी हो कुछ आगे को चली पर कुछ दूर जाकर थक गई। फिर थोड़ी देर वन में उसने एक पगदण्डी पाकर उसी के सहारे से चली। निदान उसने बहुत दूर जाकर नगर देखा जिसमें बहुत स्त्री और पुरुष बसते थे। वहाँ का राजा पद्माकर नामी वैश्यवर्ण था। उसकी दासी रानी को देखकर उसके समीप आई और उस पर दया करके उससे वृत्तान्त पूछा। सब वृत्तान्त सुनने के अनन्तर अति प्रेम से उसे राजा पद्माकर के पास ले गई। पद्माकर उसको रोगिणी और दुःखी जान अतिचिन्तित हुआ। जब रानी के मुख से उसने सर्व वृत्तान्त सुना तो उसपर अति अनुग्रह कर उसे अपने मुख्य मन्दिर में ठहराया और उसको अपनी माता समान जान उसकी बड़ी सेवा करने लगा। उसको अच्छे-अच्छे भोजन और वस्त्रों से सदा प्रसन्न रखता। फिर उसने सर्वैद्यों को रानी के रोग दूर होने के लिये नियत किया पर तो भी लड़के को कुछ आराम न हुआ। घावों के कारण जो विष के प्रभाव से उसके शरीर में हो गये थे, महादुःखी हो और फिर कुछ दिन जीकर मर गया। रानी इतना रोई-पीटी कि कई बेर मूर्च्छित हो गई। यद्यपि स्त्रियों ने उसे बहुत समझाया पर उसे किसी का उपदेश न लगा और बराबर रोती रही। निदान एक दिन भाग्यवश ऋष्यनाम शिवजी के योगी उस स्थान पर आये। उन्होंने रानी के पास आकर उसको बहुत समझाया तो रानी ने रोकर हाथ जोड़ उनसे विनय की कि मेरा कोई पति-भ्राता आदि नहीं है। मैं पुत्रहीन रोग में ग्रसित निर्बल हूँ। पुत्र बिना मेरा जीना कठिन है। मैं धन्य हूँ कि मैंने मरने के समय आपका दर्शन पाया। यह सुनकर ऋष्य ने मरे हुये लड़के के शिरहाने पर जाकर शिवजी के मन्त्र से भस्म

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फूँककर मरे हुये लड़के के मुख में डाल दी जिससे वह बालक तुरन्त जी उठा और उसकी सब इन्द्रियाँ बलवान् हो गईं। वह तुरन्त ही दूध के लिये रोने लगा। सब तमाशा देखनेवाले आश्चर्य में हुये और सब लोगों को इतना आश्चर्य और आनन्द हुआ जो कहने से बाहर है। रानी भी अतिप्रसन्नता से लड़के को गोद में लेकर अतिसुखी हुई और तुरन्त उसने अपना शिर योगी के चरणों पर रख दिया। ऋष्य ने अतिदया से लड़के के सर्व शरीर में भस्म लगाई जिससे उसके रोग और निर्बलता न रह गई। रानी फिर लड़के समेत योगी के पाँव पड़ी। योगी ने उसको धरती पर से उठाया और प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया। कहा कि हे रानी! तुम जरामरणरहित समय तक जीती रहो। तुम्हारे पुत्र का नाम भद्रायुष है। यह अपने पिता का राज्य पा अपनी रानियों समेत बड़ा आनन्द पावेगा। जब तक यह बालक विद्या न पढ़ चुके, तब तक तुम इसी स्थान पर स्थित रहो। ऋष्य ऐसा उपदेश देकर चले गये और रानी अपने पुत्र भद्रायुषसहित वहीं स्थित रहीं। भद्रायुष ने सर्व विद्या पढ़ ली। जब सोलह वर्ष का भद्रायुष हुआ तो शिवयोगी ने शिवपूजा की विधि उसको बता दी। उसको सहस्राक्षरी मन्त्र बताया और मन्त्र से भद्रायुष के सर्व शरीर में भस्म लगा दी जिससे भद्रायुष को बारहसहस्र हाथी का बल हो गया। फिर एक खङ्ग और एक शंख भद्रायुष को देकर बहुत से आशीर्वाद दिये। फिर आप विदा हो गये जिससे भद्रायुष को अतिप्रसन्नता प्राप्त हुई। वह अपने पिता की राजधानी में पहुँचकर आप राजा हो विवाह करने के अनन्तर विहार करने लगा। राजा अर्थात् पद्माकर के भाई को अपना भाई समझ उसको बड़ा आनन्द देता रहा। भद्रायुष ऐसा शिवभक्त हुआ कि उसको तीनों लोकों ने बहुत अच्छा शिवभक्त समझा। हे नारद! भस्म का माहात्म्य और प्रभाव ऐसा है जिसकी महिमा सदाशिव ही जानते हैं और कोई क्या जाने? भस्ममाहात्म्य पूर्ण हुआ।

ग्यारहवाँ अध्याय।

रुद्राक्ष का माहात्म्य।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम रुद्राक्ष माहात्म्य वर्णन करते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसकी महिमा वर्णन करने में सर्व देवता और मुनियों की जिह्वा थकित है। रुद्राक्ष शिवजी को अतिप्रिय और पवित्र है। उसके दर्शन करने, जपने और पूजने से सर्व पापभस्म हो जाते हैं। यद्यपि सदाशिव स्वाधीन हैं और उन पर कोई स्वामी नहीं पर एक समय में सदाशिव ने संसार के उपकार के लिये दिव्य सहस्र वर्ष तप किया। जब उन्होंने दोनों नेत्र खोले तब दो जल के बिन्दु उनके नेत्रों से पृथ्वी पर गिर पड़े। वह दोनों आँसू पृथ्वी में गिरकर वृक्ष हो गये और शिवजी की कृपा से वह सब भक्तों को प्राप्त हुये और धीरे-धीरे हर देश में रुद्राक्ष वृक्ष उपजने लगा। अर्थात् अयोध्या, मथुरा, काशी, गौड़देश और सह्यगिरि में बहुत ही रुद्राक्ष पैदा होने लगे जो सर्व पापों के नष्ट करनेवाले हैं। उनके केवल दर्शन से अप्रमेय सुख प्राप्त होता है। इसी प्रकार रुद्राक्ष चार रङ्ग के उपजे—श्वेत, रक्त, पीत और श्याम। सो वह चारों वर्ण के लिये शुभ और पवित्र हैं जिनको चारों वर्ण क्रमपूर्वक धारण कर सकते हैं। उनको सर्वोपरि समझना चाहिये। उनको सब देवता मुनि और मनुष्य मांस और मद्य छोड़ने के अनन्तर शिवजी के प्रेम से धारण करें। जो मनुष्य भक्ति और मुक्ति का चाहनेवाला है, उसको उचित है कि वह पवित्र हो रुद्राक्ष पहने, सब शिवभक्त देवता रुद्राक्ष धारण करके बड़ा सुख पाते हैं। मुख्य करके रुद्राक्ष धारण करना शिव भक्तों को उचित है और उनको रुद्राक्ष बहुत प्रिय होना चाहिये क्योंकि रुद्राक्ष उनके असंख्य दुःखों को दूर करनेवाला है। रुद्राक्ष से सर्वमनोरथ पूर्ण हो सकते हैं। रुद्राक्ष के समान पवित्र तीनों लोक में दूसरी वस्तु नहीं। जो कोई मनुष्य रुद्राक्ष माला की तरह पर धारण करे, उसके समान तीनों लोक में कोई देवता और मुनि आदि नहीं है। रुद्राक्ष की माला सब मालाओं से उत्तम है। इसके धारण करने से मनुष्य काल से भी भय नहीं मानता। रुद्राक्ष धारण करनेवाला मांस, पलाण्डु, लहसुन और मद्य आदि धारण न करे। रुद्राक्ष सब देवताओं को प्रिय है। मुख्य करके पाँचों देवताओं को बहुत ही प्यारा है। सबसे अधिक इसको शिव प्रिय जानते हैं। जो सब देवताओं के मन्त्र रुद्राक्ष से जपे जाते हैं इसलिये रुद्राक्ष की माला सब मालाओं से श्रेष्ठ है। विष्णु, हम और इन्द्रादि सब देवता रुद्राक्ष की माला धारण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करते हैं। यह शिव का उत्तम भूषण है। जो रुद्राक्ष आमले के फल के समान है, वह उत्तम है। जो बदरी के समान है, वह मध्यम रुद्राक्ष है और जो मध्यम रुद्राक्ष से छोटा हो तो उसे अधम समझना चाहिये। जो रुद्राक्ष आमलक के समान है, वह बहुत ही शुभ और मनोरथ देनेवाला है। यद्यपि सर्व प्रकार के रुद्राक्ष शुभ और पापों के दूर करनेवाले हैं, कोई रुद्राक्ष दुःख-दायक नहीं पर जो रुद्राक्ष गुञ्जा के समान है, उसको सर्व मनोरथों के देने-वाला समझना चाहिये। इसी प्रकार जितना रुद्राक्ष बहुत छोटा हो उतनी ही उसकी बड़ाई और उसके धारण करने में अधिक फल जानना चाहिये। जो रुद्राक्ष कि दृढ़ और चिकना काँटों समेत मोटा हो, वह सर्व मनोरथों का देनेवाला है और भक्त के सब पापों को नष्ट कर देता है। नीचे लिखे हुये रुद्राक्ष किसी अवस्था में धारण करना उचित नहीं है क्योंकि उनके धारण करने से कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होता। जो कीड़ों से खाये हुये हों १ जो काँटों बिना हों २ जो कटे हुये हों ३ जो छिद्र करने के समय फट गये हों ४ जो रुद्राक्ष का स्वरूप न रखते हों ५ और जो कृतिम अर्थात् मुख्य रुद्राक्ष न हों किसी वस्तु से बनाये गये हों ६। जो रुद्राक्ष आप किसी शिवभक्त ने वृक्ष से लाकर बनाया हो, वह उत्तम रुद्राक्ष है। जो रुद्राक्ष अन्य मनुष्य के द्वारा आया हो, वह मध्यम है। जिस रुद्राक्ष को हमने सर्वोपरि वर्णन किया हैं, उसके धारण करनेवाले मनुष्य को मुख्य सदा-शिव का रूप समझना चाहिये। उचित है कि भक्त निश्चयपूर्वक आलस्य छोड़ मन्त्र के साथ रुद्राक्ष धारण करे कि कोई पाप उसके सामने न आवे। जो मनुष्य जान बूझकर मन्त्र बिना रुद्राक्ष धारण करता है, वह नरक में जाकर किसी स्थान में सुख नहीं पाता। पर जो अज्ञानी मनुष्य मन्त्र बिना रुद्राक्ष धारण करे तो उसको कुछ पाप नहीं है क्योंकि आप सदा-शिवजी ने इस बात को कहा। भूत आदि जो दुःखदायक है, वे रुद्राक्ष धारण करनेवाले को कुछ दुःख नहीं दे सकते। वरन् रुद्राक्षधारी मनुष्य को देखकर भाग जाते हैं। वे उससे सदा डरते रहते हैं। अभिचार आदि जो पाप हैं, वे रुद्राक्ष के देखने ही से भाग जाते हैं। उसके देखने से देवता आदि सब अति प्रसन्न होते हैं। परम शिवजी उसके देखने से प्रतिदिन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन में प्रसन्न होकर हँसते हैं। यद्यपि कोई मनुष्य ज्ञान और ध्यान से हीन अनाचारी और कुकर्मी हो, वह भी रुद्राक्ष प्रेम से धारण करे तो सर्व पापों से छूटकर परमपद पाता है। जो मनुष्य कि रुद्राक्ष की माला से केवल मन्त्र जपता है, उसको हाथ के जप करने से करोड़ों भाग अधिक पुण्य मिलता है और धारण करने से जप करनेवाले को दश भाग अधिक फल होता है। जब तक कि रुद्राक्ष शरीर में धारण किये हुये कोई मनुष्य रहता है, तब तक उसको अकालमृत्यु का भय नहीं होता। उसकी अवस्था के पूर्ण होने बिना मृत्यु नहीं होती और उसको मरने के समय शिव का ज्ञान प्राप्त होता है। उसके धारण करने से मनुष्य मुक्ति पाता है। जिस मनुष्य के शरीर में रुद्राक्ष और भस्म का त्रिपुण्ड्र हो और वह मनुष्य मृत्युञ्जय मन्त्र का जप कर रहा हो तो ऐसे मनुष्य के देखने से शिवजी के दर्शन करने के समान फल होता है। ऐसे मनुष्य की बड़ाई वर्णन नहीं हो सकती। रुद्राक्ष सब वर्णाश्रम धारण करें, वरन् शूद्र को भी रुद्राक्ष धारण करने का अधिकार है पर शुद्धता और निश्चय अवश्य चाहिये। जब दिन के समय मनुष्य रुद्राक्ष धारण करता है तो उसके रात्रि के सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं और रात्रि के समय धारण करने से दिन के सर्व पाप दूर होते हैं। इससे उचित है कि हर समय रुद्राक्ष धारण किये रहे। जो मनुष्य त्रिपुण्ड्र और रुद्राक्ष धारण करके शिर में जटा रखाते हैं, वे नरक में नहीं जाते और न संसार में उनको कोई पाप लगता है। जिनके भाल में त्रिपुण्ड्र और शिर में एक दाना रुद्राक्ष का है और मुख पर पञ्चाक्षरी मन्त्र है, वे अपने सब लोगों में सेवा के योग्य है। जो मनुष्य ऐसा बाना नहीं रखते, वे निस्संदेह नरक में जाते हैं। उनकी सहायता कोई नहीं कर सकता। जो मनुष्य कि ऐसा बाना रखते हैं, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष, शिवजी के बहुत प्यारे हैं। चाहे वे बड़े पापी, अनाचारी, भ्रष्ट हों पर वे अतिपवित्र हैं। उनको दोनों लोक में बहुत आनन्द मिलता है। वे सब लोगों से मारे जाने के योग्य नहीं और सर्व मनुष्यों की बड़ाई के योग्य हैं। हे नारद! रुद्राक्ष बहुत प्रकार के हैं जिनका विस्तार से हम वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब पाप दूर होते हैं। जो एक मुखी रुद्राक्ष है, वह तो सदाशिवजी का रूप है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उससे मुक्ति और भक्ति दोनों मिलती हैं। उसके दर्शनमात्र से ब्रह्महत्यादिक पाप दूर होते हैं। उसके धारण करनेवाले के सर्व उपद्रव नष्ट होकर उसके सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं। जिसने ऐसा रुद्राक्ष पाया, उसके बड़े भाग्य हैं। वह प्रतिदिन पवित्र और पापों से शुद्ध हैं। द्विमुखी रुद्राक्ष के धारण करने से तुरन्त गोवध का पाप दूर हो जाता है और धारक के सर्वमनोरथ पूर्ण होते हैं। उसके घर में सर्व सुख की सामग्री उपस्थित रहती हैं। त्रिमुखी रुद्राक्ष से धन और विद्या की वृद्धि और उसके धारण करने से स्त्री के मार डालने का पाप दूर हो जाता है। मुख्य करके वह ज्वर जो तीन दिन के पीछे आता है, उसके धारण करने से नहीं रहता है। चतुर्मुखी रुद्राक्ष हमारा रूप है। उसके धारण करने से बड़ा आनन्द प्राप्त होता है। उससे मनुष्य के मार डालने का जो पाप है, वह जाता रहता है। उसके स्पर्श और अवलोकन से चारों पदार्थ मिल जाते हैं। पञ्चमुखी रुद्राक्ष शिवजी का रूप है। उसके धारण करने से भक्ति और मुक्ति मिलती है तथा कोई दुःख नहीं रहता। सर्व प्रकार के पाप और भक्ष्याभक्ष्य के जो दोष हों और जो परस्त्री भोग आदि के पाप होवें, सब दूर कर धारण करनेवालों को मुक्ति मिलती है। षएमुखी रुद्राक्ष स्कन्ध के समान है। उसको दाहिनी भुजा में धारण करना चाहिये। वह ब्रह्महत्या आदि सब पापों को दूर करके सर्व सुख देने वाली है। सप्तमुखी रुद्राक्ष जिसको महासेन और अनन्तादि कहते हैं उसके धारण करने से निर्बल दरिद्री भी राजा होता है। उसके सर्व पाप दूर हो जाते हैं। जो अष्टमुखी रुद्राक्ष है, वह बटुकभैरव का रूप है। उसके धारण करने से आयु बढ़कर अन्त में शिवजी मुक्ति कृपा करते हैं। जो रुद्राक्ष नवमुखी है, वह दुर्गा का स्वरूप है। उसको दाहिने हाथ में धारण करना चाहिये। इसके धारण करनेवाला हमारे समान सबका राजा होकर सब पापों से शुद्ध रहता है। दशमुखी रुद्राक्ष को जनार्दन समझकर जो मनुष्य उसे धारण करता है, उसके सर्वकार्य सिद्ध होते हैं और वह किसी के मारे नहीं मरता। एकादशमुखी रुद्राक्ष को जो कोई रुद्र जानकर धारण करता है, वह सबको जीतता है। जो द्वादशमुखी रुद्राक्ष है, वह सूर्यरूप है। उसे शिखा में धारण करने से सर्वरोग दूर हो जाते हैं। उसको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दोनों लोक में सुख मिलता है। जो रुद्राक्ष तेरह मुख का है, वह विश्वेदेव का स्वरूप है। उसके धारण करने से सर्वकार्य सिद्ध होते हैं। चतुर्दशमुखी रुद्राक्ष को ललाट पर बाँधने से कोई कष्ट नहीं होता और धारक के सर्व पाप तुरन्त दूर हो जाते हैं। हे नारद! हमने इतना रुद्राक्ष का वर्णन किया। सब प्रकार के रुद्राक्ष की महिमा अनन्त है। उचित है कि इन सबकी माला बनाकर प्रेम से धारे। जो सौ दाने की माला है, वह मोक्ष देती है। एकसौ चालीस दाने की माला आरोग्यता और बल देती है। बत्तीस दाने की माला धन और पन्द्रह दाने की माला अभिचार कराती है। एकसौ आठ दाने की माला सर्व कार्यों को सिद्ध करनेवाली है। यद्यपि मालायें अनेक प्रकार की हैं। पर यह माला सबसे उत्तम है। पुत्रजीवा की माला लड़का देती है और मणिजा धन की वृद्धि करती है। मोतियों की माला भाग्य को बढ़ाती है। कुशमाला पापों को हरती है। सोने और रूपे की माला सर्वमनोरथ पूर्ण करती है। श्वेतशिला की माला सुगति देती है। कमल माला आरोग्यता और धनदायक है पर अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष चारों फलों की देनेवाली रुद्राक्ष की माला है। उसके समान अन्य माला नहीं। वह सब मालाओं से अधिक फल देनेवाली है। रुद्राक्ष के एक दाने का जप अन्य मालाओं के करोड़ बेर जप करने के समान है। हम केवल इतना कहते हैं कि रुद्राक्ष की बड़ाई शारदा भी नहीं वर्णन कर सकतीं। हमने रुद्राक्ष का माहात्म्य तुम्हें संक्षेप से सुनाया। अब और क्या श्रवण करोगे?

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने नारद के पूछने पर कहा कि जिन-जिन अङ्गों में रुद्राक्ष धारण करनी चाहिये, उनको हम वर्णन करते हैं। ग्यारहसौ रुद्राक्ष एक ही विधि से धारण करने की आज्ञा है। फिर हजार तक के लिये दूसरा वचन है। फिर कोई चारसौ भी कहते हैं। हम प्रथम प्रकार का वर्णन करते हैं जिसके सुनने से सब कष्ट नष्ट होते हैं और उसके पहनने से बड़े-बड़े पाप भी दूर हो जाते हैं। ग्यारहसौ रुद्राक्ष धारण करना अति सुख देता है। उसके धारण करने की महिमा सौ वर्ष पर्यन्त कोई नहीं बखान सकता। अब हम जितने रुद्राक्ष अङ्गों में धारण करने चाहिये, वर्णन करते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अर्थात् ५५० रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और तीनसौ रुद्राक्ष का यज्ञोपवीत बनाकर उसकी तीन लड़ियाँ कर पहने। एक सौ एक रुद्राक्ष गर्दन में और तीन रुद्राक्ष शिखा में धारण करे। जनेऊ में तीन रुद्राक्ष धारण करने चाहिये। दाहिने कान में पाँच और बायें कान में छः पहनने चाहिये। इसी प्रकार भुजाओं और हाथों में बाँधे और ग्यारहसौ में जो बचें वह कटि में बाँधें। इस प्रकार रुद्राक्ष का धारण करनेवाला दोनों लोक में पवित्र और पापरहित होता है। वह श्रीसदाशिवजी के समान नमस्कार करने के योग्य है। उसके दर्शन करने से रोग दूर हो जाते हैं। जो इतने रुद्राक्ष धारण करके सदाशिवजी का ध्यान करे और जिह्वा से शिव-शिव रटे तो ऐसे मनुष्य के देखने से कोई पाप नहीं रहता। यह ग्यारहसौ रुद्राक्ष धारण करने की विधि है। अब एक सहस्र रुद्राक्ष धारण करने की रीति बताते हैं। शिखा में तीनसौ रुद्राक्ष का मुकुट बनावे और गले में पैंतीस की कण्ठी पहने। पाँचसौ रुद्राक्ष कन्धे में और एक सौ आठ रुद्राक्ष का उपवीत बनावे। दोनों भुजों में बत्तीस और दोनों हाथों में सोलह धारण कर ले। पाँच सौ कन्धे में व एक सौ का यज्ञोपवीत बनावे। बत्तीस भुजाओं में पहने, सोलह हाथों में धारण कर ले। जो मनुष्य इस रीति से सहस्र रुद्राक्ष धारण करता है, उसके सब पाप दूर हो जाते हैं। वह दोनों लोक में आनन्द पूर्वक रहता है और कुल सहित परमपद को पाता है। देवता भी उसको प्रणाम और दण्डवत् करते हैं। जो ऐसे रुद्राक्ष पहनता है जैसे कि रुद्र अर्थात् शिवजी सबके स्वामी हैं, वैसे ही वह मनुष्य भी उत्तम है। अन्य प्रकार से भी रुद्राक्ष धारण करने की आज्ञा है। शिर में एक, ललाट में चालीस, छाती में एक सौ आठ, बत्तीस गले में, दोनों कानों में छः-छः दोनों भुजाओं में बत्तीस और दोनों हाथों में चौबीस। इस तरह से दो सौ उन्चास रुद्राक्ष धारण करनेवाला मनुष्य शिव के समान है। उसके ऊपर शिव नित्य प्रसन्न रहते हैं। इतने रुद्राक्ष धारण करके यदि शिवपूजन करे तो कोई कष्ट न भोगे। हे नारद! जो मनुष्य शिर में एक रुद्राक्ष धारण करके शिर से स्नान करता है, उसको गङ्गा के स्नान का फल होता है। जो बिना जल के उसका पूजन करता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है, वह गिरिजा और शिवजी के पूजन के फल को प्राप्त करता है। जो मनुष्य रुद्राक्ष को धारण किये हुये मरता है, वह शिवगति पाता है। जो मनुष्य नित्य रुद्राक्ष पूजता है, उसे राजा के समान धन मिलता है। इस पर हम एक रुद्राक्षमाहात्म्य का इतिहास कहते हैं जिसके सुनने से रुद्राक्ष के धारण करने का प्रेम अधिक होता है। एक क्षत्रिय जाति का राजा गङ्गा के पश्चिम दिशा में राज्य करता था जिसका नाम देवीदत्त था। उसने किसी से शिव पूजन का उपदेश न लिया था पर झाड़ी के वृक्ष के नीचे नित्य कूप के तट पर देवता का पूजन करता था। उसी नगरी में एक तेली मरकर वेताल हो गया था। एक दिन उसी वेताल ने झाड़ी के निकट आकर राजा को अपना शरीर दिखाया। राजा उसको अपनी प्रजा का मनुष्य समझ और भलीभाँति पहिचान मरे हुये को जीता देख अति आश्चर्यवान् हुआ कि यह मरा हुआ किस प्रकार जी उठा? उसने वेताल से पूछा कि तुम कहाँ आये हो? क्योंकि तुम मर गये थे। उसने उत्तर दिया कि हे राजन्! मैं वेताल होकर यमदूत का गण हूँ। जिस काम को आया हूँ, वह यह है कि इस समय एक वैश्य यहाँ आवेगा और बैल के मारने से मर जायेगा। जोकि वह बड़ा पापी है, इससे हम उसे बाँधकर यमराज के निकट ले जावेंगे। राजा ने कहा कि तुम हमारे निकट आओ, हम कुछ पूछेंगे। वेताल ने मान लिया। अभी कोई वार्त्ता उनमें न हुई थी कि तुरन्त ही एक वैश्य कूप के निकट आया। उसके साथ एक बैल था। वैश्य ने स्नान करने के निमित्त बैल को उसी कूप के निकट बाँध दिया और आप स्नान करने गया। जब वह पगड़ी बाँधे हुये बैल के निकट पहुँचा तो उसने अपनी सींगों से वैश्य को घायल करके मार डाला। वेताल ने बाँधकर इच्छा की कि यमराज के निकट ले जाऊँ पर शिवगणों ने कहा कि हे वेताल! इसे छोड़ दो! वेताल ने कहा कि यह तो बड़ा पापी, धर्म के विरुद्ध, कुमार्ग में चलनेवाला और देवताओं के मन्त्र आदि से ग्लानि करनेवाला है। इसको हम नरक में डालेंगे। तुम मुझे क्यों रोकते हो? तुम यमराज की आज्ञा को नहीं मानते। जब किसी भाँति से भी वेताल ने उसे न छोड़ा तो शिवगणों ने त्रिशूल मारकर उसे घायल कर दिया और वैश्य को उसके हाथ से छुड़ा कर विमान पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चढ़ाकर शिवपुरी में ले गये और ऊँचे शब्दों से कहा कि यह पापी नहीं है। देखो, इसके शिर में रुद्राक्ष है। इसके सर्व दोष भस्म हो गये। यह कहकर शिवगणों ने उसे शिवलोक में पहुँचा दिया, जहाँ शिवजी की आज्ञा से वह शिवका गण हो गया। वेताल रुदन करते हुये राजा से यह वृत्तान्त कहकर यमराज के पास गया। यह चरित्र देख राजा अति आश्चर्य कर आप रुद्राक्ष मोल लेने बाजार में गया। उसने बहुत धन देकर उसे लिया और अति प्रेम से धारण कर दोनों लोक में जीता रहा। अन्तकाल में शिवलोक में पहुँचकर आनन्दपूर्वक रहा। अब दूसरी कथा सुनिये।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम एक और इतिहास कहते हैं जिससे रुद्राक्ष की बड़ाई और शिवजी की प्रसन्नता प्रकट है। इससे शिव-भक्ति अधिक होती है। प्राचीन काल में कश्मीर नगर का राजा भद्रसेन नामक था। उसका पुत्र सुधर्म नामी बड़ा वीर, बुद्धिमान् और शिवजी का भक्त था। राजा के मन्त्री का पुत्र भी जिसका नाम तारक था, अति शीलवान् और विद्वान् था। सो दोनों राजपुत्र और मन्त्री के पुत्र में परस्पर बड़ी मित्रता थी। वे दोनों बड़े सुन्दर थे। उनके समान संसार में कोई विद्वान् न था। सो दोनों ने बाल अवस्था से विद्या सीखने में मन लगाया। उन दोनों ने बिना उपदेश रुद्राक्ष की बड़ाई जाना। वे दोनों लड़कपन से शिवपूजन करते थे। उन्होंने मणि की अभिलाषा न करके सब शरीर में रुद्राक्ष पहना। उनको सब मनुष्य स्वर्ण और आभूषण पहनने को कहते थे पर उन्होंने किसी के वचन को न सुना और रुद्राक्ष धारण करने को न त्यागा। यहाँ तक कि राजा ने भी उनको बहुत कुछ कहा-सुना पर उन्होंने एक न माना। संयोगवश एक दिन राजा के यहाँ पराशर मुनि आये। राजा ने उनकी बहुत-सी सेवा की जिससे वह बहुत प्रसन्न हुये। राजा को मालूम था कि पराशर मुनि सर्वज्ञ हैं। इसलिये उन्होंने हाथ जोड़ दण्डवत्कर स्तुति पढ़कर प्रार्थना की कि हे महाराज! मेरा पुत्र और मेरे मन्त्री का पुत्र दोनों रुद्राक्ष के धारण करने में ऐसे लीन हैं कि वह एक निमेष भर भी उसको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नहीं त्याग करते। यद्यपि हमने अपनी प्रजा सहित उनको उपदेश किया पर वह कुछ भी नहीं सुनते। वह रुद्राक्ष के आभूषण पहनते हैं और उन्होंने किसी से विधि भी नहीं पूछी। केवल अपनी ही बुद्धि से पहने रहते हैं। हे महाराज! इसका क्या कारण है? वह किसी संगति में भी नहीं बैठते। यह सुनकर पराशर मुनि ने कहा कि तुम अपने पुत्र और मन्त्रीसुवन के पहिले जन्म का वृत्तान्त सुनो। पूर्वकाल में एक वेश्या महानन्दानामी नन्दिग्राम में रहती थी। वह बड़ी धनवती थी। उसका बड़ा कुल था। उसने एक बन्दर और कुत्ते को पालकर उन्हें नाचना सिखाया था। आप भी बहुत स्त्रियों समेत शिव के करताल का गीत बनाती थी और बन्दर तथा कुत्ते को रुद्राक्ष पहनाकर नचाती थी। वह दोनों ऐसा नाचते थे कि देखनेवालों को अतिप्रिय भासता था। वह वेश्या इसी प्रकार उनको नचाकर प्रसन्न रहती और रात्रिदिन शिवभक्ति में डूबी रहती। एक दिन उसके घर में आग लग गई। उस वेश्या ने झटपट दोनों को बाहर निकाला। जब वह मन्दिर जलकर भस्म हो गया और अग्नि बुझ गई तब वह बन्दर और कुत्ता उस गृह में न आये पर वन ही में दुःखी फिरते रहे और रुद्राक्ष धारण किये वह मर गये तथा शिवपुरी में जाकर सुखी रहे। वही बन्दर तुम्हारे घर उत्पन्न हुआ और वही कुत्ता मन्त्री के घर उपजा जो तुम्हारे पुत्र का मित्र है। दोनों ने प्रथम जन्म का स्मरण करके रुद्राक्ष धारण किया। यह शिवपूजन और रुद्राक्ष धारण करके फिर शिवलोक में जावेंगे। यह सुनकर राजा ने पराशरजी से विनती की कि आप दया करके हमारे पुत्र का भविष्यत् वृत्तान्त वर्णन कीजिये कि आगे क्या होगा? पराशरजी ने राजपुत्र को बुलाकर शिर से पाँव तक देखा। उन्होंने कहा कि इस समय इस पुत्र की अवस्था द्वादश वर्ष की है और शिवजी की भक्ति में लीन है। यह लड़का सातवें दिन अवश्य मरेगा। मृत्यु अतिबलवान् है पर काल के भी काल श्रीसदाशिवजी हैं। मृत्यु शिवजी से भयवान रहती है। जो शिवजी कृपा करेंगे तो तुम्हारा पुत्र मौत से बच जावेगा। तुमको उचित है कि इससे शिवपूजन करावो और अनेक प्रकार से शिवजी को प्रसन्न करो। बहुत-सी युक्तियाँ आयु के बढ़ाने की हैं पर सबसे सुलभ शिव का पूजन है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रुद्राध्याय सबसे अधिक मृत्यु से बचानेवाला है। यह उसका फल हैं। उसको पढ़-पढ़कर शिवजी को स्नान करावे। फिर उसी निर्माल्य से आप स्नान करे और नाना प्रकार से मन लगाकर शिवजी का पूजन करे तथा निश्चय करके शिवबाना धारण करे। उससे सर्व पाप नाश होते हैं तथा बहुत समय पर्यन्त जीता रहता है। हम इस बात को शिवकी सौगन्ध खाकर कहते हैं। उसको मृत्यु का भय नहीं होता। वह सदा प्रसन्न रहकर शिवजी का प्यारा हो जाता है। जिस तरह शतरुद्री का अभिषेक करावोगे, उतना ही उतने वर्षों तक तुम्हारा पुत्र जीता रहेगा। तुमको उचित है कि दशहजार पाठ शतरुद्री का कराकर अपने लड़के को स्नान करावो कि दशहजार वर्षतक तुम्हारा पुत्र जीता रहे और उत्पात रहित शत्रुओं पर प्रबल और पापों से पवित्र अभय बल के साथ उतने समय तक वह राज्य करेगा। राजा ने यह मुनि का वचन सुन मान लिया। पराशर ने बहुत से ब्राह्मणों को बुलाकर आप ब्राह्मणों सहित सात दिन में दश हजार शतरुद्री का जप कराया और उसी जल से राजा के लड़के को स्नान कराया। यद्यपि वह सातवें दिन मूर्च्छित हो गया परन्तु अन्त में चेत आया क्योंकि पराशर ने उसकी भली विधि रक्षा की। पराशर ने पूछा कि मूर्च्छा की अवस्था में क्या दशा हुई ? राजा के लड़के ने कहा कि एक मनुष्य दण्डा हाथ में लेकर भयानक रूप से मेरे बध करने को आया। उसी समय तुरन्त महाबीर ने पहुँचकर उस मनुष्य को भलीविधि मार-पीट वरुणपाश से बाँध लिया। फिर और कुछ मैंने नहीं देखा। फिर आपने हमारी रक्षा की। यह सुन पराशर अति प्रसन्न हुये और बहुत अशीषें दीं। राजा को पूर्ण धैर्य प्राप्त हुआ और मुनियों ने बड़ी सेवा की। इतने में हे नारद ! तुम वहाँ पहुँचे। राजा ने तुम्हारा सम्मान कर तुमसे पूछा कि जो तुमने कोई बात आश्चर्य की देखी है तो कहो। तुमने कहा कि हमने तो इस समय बड़ा आश्चर्य देखा है कि अभी मृत्यु तुम्हारे पुत्र के मारने को आई थी। सदाशिवजी इस बात को जान गये और वीरभद्र को गणों समेत भेजा कि मृत्यु का कुछ बल चलने न दें। सो वीरभद्र मृत्यु को दूरकर कैलास पर्वत पर चले गये और तुम्हारे पुत्र को अमृत के पीने का स्वाद प्राप्त हुआ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

था । तुम्हारा पुत्र दश सहस्र वर्ष पर्यन्त जीता रहेगा और निष्कण्टक राज्य करेगा । मन्त्री का पुत्र भी तुम्हारे पुत्र का सेवक रह फिर दोनों शिवजी के बड़े सेवक होंगे । फिर दोनों शिवलोक में जाकर शिवजी के गणों में गिने जावेंगे । हे नारदजी ! यह कहकर तुम अपने स्थान को चले गये और सर्व सभा को अति प्रसन्नता प्राप्त हुई । इस कथा के कहने सुनने से दोनों लोक में बड़ा आनन्द प्राप्त होता है ।

चौदहवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी ! यह युक्ति हमने मुक्ति के प्राप्त होने के लिये बताई और बहुत-सी कथायें भी कहीं । अब दूसरा उपाय कहते हैं जिसके धारण करने से शिवजी की भक्ति बढ़ती है । जिस उपाय के करने से व्यासजी पराशर के पुत्र सिद्ध हुये, उसको हम विस्तारपूर्वक कहते हैं । जानना चाहिये कि शिवकीर्तन का श्रवण और शिवकीर्तन का मनन शिवजी के पाने के लिये बहुत उत्तम है । उचित है कि अपने कानों से शिवजी के नाम सुने और उसका मन से मनन करे । इसके करने से भुक्ति-मुक्ति दोनों पदार्थ प्राप्त होते हैं । सब साधनों से यह उपाय सर्वोपरि है । सो पहले गुरु के मुख से शिव का यश सुने और आप उसका कीर्तन और मनन करे । इस बात के करने से शिवजी का योग प्रकट होता है और शिवजी का पद पाकर संसार की सर्व व्याधियाँ निवृत्त हो जाती हैं । श्रवण इस तरह करे कि जैसे मैथुन और स्त्री की प्रीति के समान दृढ़तापूर्वक नियम रख शिवजी का यश सुने । इन्द्रियों को जीत लेवे और ऊँचे शब्द और अनुराग के साथ शिवजी के गुणों और नामों को वर्णन करे । वही गीत या तो वेद के पद हों वा देवताओं के बनाये हुये अथवा मनुष्यकृत ही हों । उनके कीर्तन से सब दुःख दूर होकर आनन्द प्राप्त होता है । सुनने और गाने के उपरान्त युक्तिपूर्वक मन से उनको शुद्ध करना चाहिये । उनके साधन के लिये मनन अवश्य है और उसका फल केवल सदाशिवजी का प्राप्त करना समझना उचित है । श्रवण सत्संगति से प्राप्त होता है । फिर कीर्तन को जानना चाहिये । फिर मनन को समझो । यह मनन सबसे बड़ा पद रखता है । जो कि शिवजी की कृपा से सब कुछ होता है, इसलिये उचित है कि शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को हर प्रकार प्रसन्न करे। यह उपाय अति सुगम है। इसी युक्ति से शिवजी का पद पाना सुगम है। बड़ी भाग्य से यह बात होती है। इसकी महिमा वेद और पुराण गाते हैं। जब सदाशिवजी प्रसन्न होते हैं, तब यह उपाय मनुष्य को भासित होता है। इसके सिवाय और कोई उपाय सदाशिवजी के प्राप्त होने के लिये नहीं है। क्योंकि बड़े-बड़े सिद्धों ने मुख्य इसी को धारण किया है। सनकादिक जो सिद्ध के नाम से प्रसिद्ध हैं, इसी युक्ति को सर्वोपरि बताते हैं। विष्णु और हम सदा इसकी प्रशंसा करते हैं। व्यास भी इसी युक्ति को जानकर जीवन्मुक्त और बड़े ज्ञानी हुये। सो हम व्यासजी की कथा कहते हैं कि जब व्यासजी ने वेद को चार भाग में बाँट रात्रि-दिन के परिश्रम से सब पुराणों को बनाया। पर मन में उनके सन्तोष न हुआ। तब उन्होंने अति चिन्तित हो तप के निमित्त पूर्ण उद्योग किया और ब्रह्म नदी के तट पर बैठ तप में प्रवृत्त हुये कि मन शुद्ध होवे। शिव का ध्यान कर इन्द्रियों को जीत समय तक तप करते रहे। शिवजी ने ऐसा तप व्यास का देख अति प्रसन्नता से सनत्कुमार को व्यासजी के पास जाने की आज्ञा दी। सो जब सनत्कुमार ने व्यास को अपना दर्शन दे उनको विमान पर आरूढ़ किया तब तो व्यास ने शिवजी को प्रसन्न जान सनत्कुमार की पूजा की। उस समय हमारे पुत्र सनत्कुमार ने प्रसन्न होकर कहा कि हे व्यास! शुक्राचार्य के पिता और मुनीश्वरों के राजा तुम धन्य हो। तुमने सब जीवों पर दया कर वेद के भाग किये और तुमने सब पुराणों को सर्वो-पकारार्थ बनाया। तुम्हारा तो पुत्रादि सहित बड़ा परिवार है। तुम उनके बिना क्यों तप करते हो? इस समय तुम बड़े उच्चाट मालूम होते हो। तुम्हारे पास तो कोई दासादि भी नहीं। हम चाहते हैं कि तुम इसका कारण वर्णन करो यह सुन व्यास ने प्रणाम के उपरान्त विनती की कि वास्तव में आप सत्य कहते हैं कि मैंने वेदों को क्रमपूर्वक कर सब पुराणों को बनाया और दूसरों के लाभ के लिये बड़ा श्रम किया। मैंने चारों पदार्थ स्थापन कर अपनी बुद्धिमानी का फल सबको दिखाया और संसार में सबका गुरु प्रसिद्ध हुआ हूँ। पर तो भी मुक्ति का धर्म मुझको प्राप्त नहीं हुआ। उसी के लिये मैं तप कर रहा हूँ। पर हमारी कामना पूरी नहीं होती।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हाँ, अब तुम हमारे तप के प्रभाव से यहाँ आये हो तो आश्चर्य नहीं है कि तुमने हमको अपना सेवक समझा हो। तुम सर्वज्ञ हो और दूसरों की भलाई करना तुम्हारा काम है। मुझको आशा है कि आप अनुग्रह करके वह उपाय बतावेंगे जिससे मुक्ति प्राप्त होगी और मन शुद्ध होगा। यह सुन सनत्कुमार बोले कि शिवजी की माया और किसी के जानने के योग्य नहीं। वह माया सर्व संसार को मोहित करनेवाली है। वह बिन शिव-भक्ति के नाना प्रकार के दुःख देती हैं। यद्यपि तुमने वेदों के भाग किये और पुराणों को बनाया पर धर्म नहीं जाना और न शिवजी का तत्त्व जाना। मैं तुमसे कहता हूँ कि शिवजी सबसे श्रेष्ठ और शरणागतवत्सल हैं जिनके गुण वेद गाते हैं और उनको मुमुक्षु के नाम से प्रकट करते हैं। ऐसे शिव का श्रवण, कीर्तन और मनन परम मुक्ति के पाने का उपाय है। इन तीनों उपायों के साथ शिव का प्रेम हर प्रकार की मुक्ति देता है। हमने बड़े भाग्य से यह बात पाई है और मुझको नन्दीश्वर ने बड़ी कृपा से इस बात को सुनाया था। हम अपनी कथा कहते हैं जिसके श्रवण से तुम्हारे संशय दूर हो जावेंगे। पूर्वकाल में हम भी ज्ञानहीन होकर संशय के समुद्र में वृथा भ्रमण करते रहे और परममुक्ति के पाने का उपाय न जाना। इसीलिये हम तीनों लोक में समय तक पर्यटन करते रहे, पर मेरे मन में निश्चय न हुआ। शिव की माया से मोहित हो घूमते-घूमते मन्दराचल पर्वत में गये और एक स्थान पर अचल बैठकर एकाग्र मनकर समय तक तप में लगे रहे। फिर इन्द्रियजित् हो शिव का स्मरण किया। सो शिव ने मुझ पर प्रसन्न हो नन्दीश्वर को आज्ञा दी। नन्दीश्वर मेरे संदेह दूर करने के निमित्त आये। उनको देखकर मैंने प्रणाम किया और आगमन का हेतु पूछा। तब नन्दीश्वर जो शिव के अंश और सब गणों के राजा हैं, उन्होंने मुझ पर अनुग्रह कर शिव की आज्ञानुसार मुझसे कहा कि हे सनत्कुमार! शिव के यश का कीर्तन, श्रवण और मनन मुक्ति का देनेवाला है। इसके सिवाय दूसरा उपाय नहीं है। शिव ने हम को बड़े उपाय से बताया है। इसके करने से बहुतों को मुक्ति मिल चुकी है। इसलिये तुमको उचित है कि श्रवणादि तीनों कर्म दृढ़तापर्वक करो। हे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नारद ! यह उपदेश देकर नन्दीश्वर शिव के समीप चले गये और हमको बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ। तुमको उचित है कि तुम भी यही तीनों उपाय कर धर्म और मुक्ति पावो। इससे उत्तम और कोई युक्ति नहीं। यह शिक्षा दे सनत्कुमार अपने विमान पर आरूढ़ हो चले गये। यह कथा सुन नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि मैंने श्रवणादि साधन मुक्ति की युक्ति सुनी। कदाचित् कोई मनुष्य यह उपाय न कर सके तो इससे कोई और उपाय सुगम है या नहीं। ब्रह्मा ने कहा कि जो कोई मनुष्य यह तीनों साधन न कर सके तो उसको उचित है कि शिववीरलिङ्ग की पूजा भक्ति के साथ करे। शिववीर-लिङ्ग की पूजा से उसका मनोरथ पूरा हो सकता है। षोडशोपचार की सामग्री इकट्ठी कर उसी शिवलिङ्ग की पूजा करे और अति प्रेम से पूजन करके शिवजी को रिझावे। ऐसा मनुष्य भी परममुक्ति पाता है। सो ऐसी पूजा करने से बहुत मनुष्य अपने मनोरथ और परममुक्ति पा चुके हैं पर भक्ति अवश्य चाहिये। श्रवणादि तीनों उपायों बिना शिवजी की पूजा से भी मुक्ति मिलती है। हे नारद ! अब और क्या सुनने की इच्छा है ?

पन्द्रहवाँ अध्याय।

नारदजी बोले हे ब्रह्मन्, हम यह पूछते हैं कि सब देवता वीररूप में पूजे जाते हैं या शिवजी का वीरलिङ्ग पूजा जाता है। क्या कारण है कि शिवजी का केवल वीरलिङ्ग पूजा जावे और दूसरे देवताओं का नहीं ? ब्रह्माजी बोले कि इस तुम्हारे प्रश्न का उत्तर देनेवाला सिवाय शिवजी महाराज के दूसरा नहीं है। उन्होंने यह बात मुझसे कही थी। वही चरित्र हम तुमको सुनाते हैं जिसके सुनने से दोनों लोक में अप्रमेय आनन्द मिलता है। शिवजी निष्केवल ब्रह्मस्वरूप, निर्गुण, सगुण, शिवलिङ्ग स्वरूप और निराकार हैं। वीरस्वरूप ही शिवजी को समझो जिनका वर्णन साकार किया जाता है। सकलाकल भी शिवजी को केवलीभाव करके कहते हैं। वेद भी शिवजी को ब्रह्म के नाम से बखानते हैं। इसलिये लिङ्ग और वीर दोनों में सदाशिवजी सब लोगों की पूजा के योग्य हैं। किसी दूसरे के लिये ब्रह्म का नाम नहीं हो सकता। तीनों लोक सदाशिवजी के सेवक हैं क्योंकि सिवाय शिवजी के और किसी में निष्कलङ्कत्व नहीं है। इसी से और किसी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ने अपने लिङ्ग की पूजा कराना नहीं चाहा। सब देवता और जीव बड़े वर्णन किये गये हैं। उनमें ब्रह्मतत्त्व अधिक नहीं है। वीरलिङ्ग सब देवताओं के पूजने के योग्य है। ऐसी बात के समझ लेने से बहुत ही आनन्द प्राप्त होता है। यह बात वेद में प्राचीन से है और सिद्ध देने वाली है। उसको पढ़ने वाला सर्व-सिद्ध करता है। इसी बात को नन्दीश्वर ने सनत्कुमार से कहा था। सनत्कुमार बोले कि हे नन्दीश्वर! तुमने शिवजी के चरित्र अतिपवित्र वर्णन किये पर जो तुमने और देवताओं की वीरपूजा वर्णन की पर शिवजी के लिङ्ग की पूजा को धारण किया, इस बात के सुनने से मुझे संदेह उपजा हैं। इससे मैं चाहता हूँ कि शिवजी के लिङ्ग का वर्णन मुझे सुनाइये। नन्दीश्वर ने कहा कि व्यतीत कल्प में जब प्रलय हो गया तब ब्रह्मा और विष्णु में बड़ा युद्ध मचा। उस समय शिवजी दोनों के अहङ्कार दूर करने को खम्भे के समान जो आदि-अन्त से रहित था, प्रकट हुये। उनको लिङ्ग के समान लक्षण प्रतीत हुये। और दोनों के अहंकार को नष्ट कर परम धर्म की शिक्षा की। उसी समय से शिवजी का लिङ्ग प्रचलित हो लिङ्गवीर की पूजा तीनों लोक में प्रारम्भ हुई। इस पर हम पूर्वकाल की और कथा सुनाते हैं। पूर्वकाल में विष्णु सब देवताओं के राजा अपने बिछौने में आनन्द करते थे। उसी समय ब्रह्मा सुगमता से स्वाभाविक विष्णु के आनन्दस्थान में पहुँच कर विष्णु को लेटे हुये देख कोपित होकर कहा कि हे अहंकार के भरे हुये! तुम कौन हो? तुम हमारे आने पर भी लेटे रहे। तुरन्त उठो और सब अहंकार को दूरकर हमको देखो। हम तुम्हारे स्वामी कृपा करके तुम्हारे पास आये हैं। हम तीनों लोकों में श्रेष्ठ और प्रजा के उपजाने वाले हैं। विष्णु बोले कि हे ब्रह्मन्! हमारे पुत्र! हमने जान लिया है कि तुम आये हो। आनन्द से स्थित होवो। ऐसे कटुवचन क्यों कहते हो? ब्रह्मा ने कहा कि हे विष्णु! तुम किस-किस के पुत्र नहीं हुये हो। तुमने दुर्बुद्धि संचित कर धर्म अपने हृदय से दूर किया। क्या तुम नहीं जानते हो कि हमारे नाम स्वयम्भू, अज, परमेष्ठी, ब्रह्मा, विधाता आदि बहुत हैं। मैं तुम्हारा पिता और तीनों लोक का धारण करनेवाला हूँ। तुमने क्योंकर हमको अपना पुत्र कहा? तुम संशय से अपने को स्वामी जानते हो। हमारा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उपजानेवाला तीनों लोक में कोई नहीं। तुम्हारी बुद्धि जाती रही। यह सुन विष्णु बोले कि हे पुत्र ! हम जगदीश हैं। तुम हमारी नाभि से उपजे हो और माया से भूले हो जो अपने को सबका स्वामी समझते हो। निदान इसी प्रकार ब्रह्मा और विष्णु बहुत समय तक बड़ा विवाद करते रहे जिसका मुख्य आशय अपनी-अपनी बड़ाई बताने का था। सो दोनों में बड़ा युद्ध हुआ। दोनों ओर से हर प्रकार के शस्त्र और बाण चले। दोनों ओर के सम्बन्धी और सहायक सहायता के लिये दोनों ओर खड़े रहे। दोनों ओर के गणों ने अपना बल युद्धस्थान में दिखाया और अपने-अपने विमानों में सब देवता आरूढ़ होकर उस स्थान में आये और ऐसा युद्ध देख आश्चर्य करने लगे पर शिवजी की माया से किसी ने मुख्य भेद न जाना। विष्णु ने माहेश्वर बाण छोड़ा जिससे ब्रह्मा ने क्रोधित हो पाशुपत्यास्त्र त्यागा जिससे बहुत ही प्रकाश फैल गया। दोनों बाण परस्पर ठहर कर प्रलय करने लगे। यह दशा देख सब देवता भय खा कहने लगे कि यह कैसा प्रलय असमय होता है ? उचित है कि हम सब शिवजी की शरण में जाकर बचें। ऐसी सम्मति के उपरान्त सब देवताओं ने शिवजी के समीप जा प्रणवरूप शिवजी को देख प्रणाम किया और शिवजी तथा शिवरानी को अपने मुख्य चिह्नों से देख स्तुति करने लगे।

सोलहवाँ अध्याय।

नन्दीश्वर ने कहा कि देवताओं की स्तुति सुनकर सदाशिवजी ने प्रसन्न हो अपने गणों को बुलाया। वह सब आये। फिर देवताओं से शिवजी ने कहा कि हे पुत्रो ! तुम कहाँ चले हो ? हम तुम्हारे मुखों को चिन्ता से मुरझाया हुआ देखते हैं। यह सुन सब देवताओं ने विनय की कि ब्रह्मा और विष्णु में बड़ा युद्ध हो रहा है। उनके सहायक और परिवार के मनुष्य बहुत ही लड़ रहे हैं। जाना जाता है कि अभी प्रलय होनेवाला है। तीनों-लोक जले जाते हैं। हम भी ऐसी अग्नि से जलकर आपकी शरण में आये। जो उचित हो, वह कीजिये। शिवजी ने कहा हम वहाँ चलेंगे। सो अपने गणों को तय्यारी के लिये आज्ञा दी तो गण शस्त्र सहित उद्यत हो गये। बाजे बजने लगे और भद्रनाम रथ बाणों से भरा हुआ आया। उसमें

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी और शिवरानी अपने पुत्रों सहित आरूढ़ हो चले और देवताओं सहित युद्धस्थल में पहुँचे। दोनों को अपनी माया में मोहित लड़ते हुये देख अनुग्रह किया और उन दोनों के मध्य में ज्योतिरूप होकर प्रकट हुये। उस अग्नि के खम्भ की गति किसी ने न जानी। दोनों के जलते हुये बाण दूर हुये जिससे ब्रह्मा और विष्णु ने आश्चर्य में हो परस्पर मिल-कर युद्ध का त्याग किया। उन्होंने प्रतिज्ञा की कि जो इस ज्वाला के खम्भे की आदि-अन्त का पता ले आवे, वही बड़ा है। सो विष्णु शूकर रूप धर पृथ्वी के नीचे और ब्रह्मा हंस का रूप धर आकाश को चले। जब दोनों ने आदि-अन्त न पाया तो युद्धस्थल में लौट आये। पर ब्रह्मा केतकी फूल को साक्षी कर गवाही के लिये अपने साथ लाये कि वह झूँठ कह देवे कि ब्रह्मा ने उस ज्वाला के खम्भ के अन्त को देखा है और विष्णु ने अन्त न पाने का हाल आकर कहा।

सत्रहवाँ अध्याय।

नन्दीश्वर बोले कि शिवजी विष्णु की सत्यता पर अति प्रसन्न हुये तथा ब्रह्मा के मिथ्या वचन बनावट और दुर्बुद्धि को देख कोपित हो उनको शाप देने के निमित्त अपने मुख्यरूप से प्रकट हुये। उनको देख विष्णु ने स्तुति की। उसको सुन शिव ने प्रसन्न हो कहा कि हम तुम्हारी सत्यता से प्रसन्न हुये। हम तुमको वर देते हैं कि तुम हमारे समान होगे। अब से बराबर तुम्हारी भी पूजा और गुण वर्णन हमारे समान होगा। कोई मनुष्य हम तुम में भेद न समझे। हमने तुमको हर प्रकार अपना कर लिया। फिर ब्रह्मा से क्रोधित होकर कहा कि हे ब्रह्मन्! तुमने दुष्टता से संसार के आनन्द के निमित्त बड़ाई के लिये अपने धर्म को छोड़ा। तुमने इच्छा की कि ऐसा झूँठ बोल तीनों लोक में हम अपनी पूजा करावें और छल मे साक्षी भी लाये। इसलिये हम तुम मे कहते हैं कि तीनों लोक में तुम्हारी पूजा न होगी। कोई देवता और मुनि आदि तुमको नहीं मानेगा। वह सुन ब्रह्माने लज्जित हो विनय की कि वास्तव में हमने शुद्धमार्ग को छोड़ा पर आप मेरा अपराध क्षमा करें। मैंने मूर्खता से आपको नहीं जाना। शिवजी ने यह सुन प्रसन्न हो कहा कि तुम्हारी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

विनती से मैं प्रसन्न हूँ। तुमको युक्ति से वर दिया जावेगा। वैतानिक मख कर्मादि में तुम गुरु हुआ करोगे और पूरा भाग पाओगे। फिर शिवने केतकी के पुष्प से कहा कि तुमने जो धर्म के विरुद्ध झूठ साक्षी दी है सो तुम आज से हमारी पूजा के काम न आवेगी। सो केतकी ने दुःखी हो शिव से विनय की कि मेरा अपराध क्षमा हो क्योंकि सब पाप तुम्हारे स्मरण से नष्ट हो जाते हैं। मैं तुमको शरीर सहित देखती हूँ। फिर मुझको क्योंकर दुःख हो सकता है ? तुमको वेद और पुराण सब शरणागत पालक कहते हैं। हमारे सर्व पाप नष्ट करो। शिव प्रसन्न हो बोले कि तुम हम पर वितानके द्वारा चढ़ोगी। इसी प्रकार सब पर शिव ने कृपापूर्वक देखा। उस समय ब्रह्मा और विष्णु ने दायें-बायें खड़े हो अपने परिवार सहित शिव की पूजा की। शिव ने प्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों मुझे प्राण के समान प्यारे हो। यहआज का दिन अति पवित्र है। यह दिन बड़ा ही मुक्ति देनेवाला है। इसका नाम शिवरात्रि है। यह प्रतिदिन व्रत करने से व्रतियों को बड़ा आनन्द देता है। इस दिन व्रत करो और हमारी लिङ्गपूजा करो। तुम्हारे दोष और पाप नष्ट हो जावेंगे। जो हम लिङ्गस्वरूप होकर प्रकटे, इससे इस स्थान का नाम लिङ्गालय होगा। यह लिङ्ग हमारा जो बहुत बड़ा है, यह आप सूक्ष्मरूप होकर रहेगा। सबकी पूजा के निमित्त हम इस लिङ्ग में प्रवेश करेंगे। इस स्थान का नाम अरुणाचल होगा। इस स्थान पर हमारी पूजा करके परमपद प्राप्त होगा। इन तीनों स्थान की बड़ी महिमा है। यह कह शिव ने सब मरी हुई सेना को जिला दिया और चाहा कि ब्रह्मा और विष्णु आदिक के मन से संशय दूर हो जावे। फिर इनको गर्व न हो। इसलिये शिव ने कहा कि तुम सब इस बात को सुनो। हम सब वेदों का सार वर्णन करते हैं कि हमारे दो स्वरूप हैं—एक निष्कल और दूसरा सकल। हम ब्रह्म, अलख, सर्वसृष्टि के प्राण हैं। पहिले हम खम्भरूप से उपजकर फिर सर्वअङ्गों समेत प्रकट हुये। यह हमारा निष्कल ब्रह्म स्वरूप है और सगुण रूप धारण करने से सकल के नाम से प्रसिद्ध होता हूँ। ये दोनों हमारे रूप प्रसिद्ध हैं तब तुम्हारे ये दोनों रूप सिवाय हमारे और किसके हैं ? तुम दोनों ने अपने-अपने को परस्पर स्वामी समझ इतना युद्ध

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किया। हम इस स्थान पर निराकाररूप से आये। तुमको उचित है कि फिर ऐसा काम मत करो। भ्रम में न पड़ो, हम परब्रह्म परमात्मा हैं। तुम इस बात का निश्चय रक्खो और हमारे लिङ्ग की पूजा करो। तुम्हारे मनोरथ इसी से पूरे होंगे। हमारा लिङ्ग और वीर दोनों पूजने योग्य हैं। दोनों में कुछ भेद नहीं है। जगत्कृति पाँच प्रकार की है। उसे हमारी लीला जानो। अर्थात् संसार की उत्पत्ति, पालन और प्रलय तथा अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष इन पाँचों कर्मों में पाँच देवता हैं। अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तथा महेश और हम इनमें से चारों देवता तो शरीर सहित दिखाई देते हैं पर पाँचवाँ दिखाई नहीं देता। तुम दोनों ब्रह्मा और विष्णु शक्ति से उपजे हो। रुद्र और महेश यह दोनों हमारी ही देह हैं। यह दोनों अविकृत हैं और तुम विकृत हो। यह कह शिव अन्तर्धान हुये और ब्रह्मा-विष्णु आदि को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। वे शिवजी की स्तुति कर अतिप्रसन्नता से अपने-अपने लोक को चले गये। नन्दीश्वर से यह पवित्र कथा सुन सनत्कुमार भी अपने स्थान को गये। हे नारद! हमने यह शिवचरित्र वर्णन किया। तुम भली भाँति निश्चय से समझो कि शिव अपनी भक्ति अतिप्रसन्नता से देते हैं। जो मनुष्य शिव के चरित्र पढ़ता-सुनता है, वह लोक में आनन्द उठा अन्त में शिवपुरी को जाता है और शिव का गण हो फिर आवागमन में नहीं पड़ता।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मानारदसंवादे नवमखण्डः समाप्तः॥ ९॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:०:—

दसवाँ खण्ड

पहिला अध्याय ।

सूतजी बोले हे शौनक ! नारद ने शिवरात्रिव्रत के सुनने के उपरान्त कहा कि हे पिता ! जितने शिवके व्रत हों, वह आप सब वर्णन करें । ब्रह्मा बोले कि शिवजी के असंख्य व्रत हैं जो भुक्ति और मुक्ति देते हैं पर नीचे लिखे हुये बारह व्रत अति आवश्यक और प्रसिद्ध हैं जिनको याज्ञवल्क्य ने अपनी स्मृति में वर्णन किया है । उन व्रतों को अवश्य करना चाहिये क्योंकि उनके किये बिना सिद्ध नहीं होता । यह बारह व्रत शिव को अतिप्रिय हैं । इसी से जो मनुष्य परम शैव हैं, वह इन व्रतों को अवश्य करते हैं । इनकी महिमा आप सदाशिव ने पार्वती और विष्णु से वर्णन की है । जिनके द्वारा यह बारहों व्रत संसार भर में प्रसिद्ध हुये, वह यह हैं–दोनों अष्टमी, दोनों हर तिथि अर्थात् एकादशी, दोनों त्रयोदशी, दोनों चतुर्दशी और जितने महीने में चन्द्रवार पड़ें, यह सब मिलकर बारह व्रत हर महीने में हुये । शिवजी की आज्ञा है कि अष्टमी के व्रत में फलाहार करना चाहिये और शुक्लपक्ष की एकादशी को निर्जल व्रत करना उचित है पर कृष्णपक्ष की एकादशी को भोजन कर लेना उचित है । इसी प्रकार दोनों त्रयोदशी में भोजन करना उचित है और शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में भोजन करने की आज्ञा है, पर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में नहीं । वह निर्जल ही रहनी चाहिये । सब प्रहरों में शिवजी की पूजा करनी चाहिये । सब सोमवार के व्रत को भोजन करने की आज्ञा है । इस व्रत में शिव की पूजा शक्तिसहित करनी उचित है । प्रतिमास में यह सब बारहों व्रत धारण करे और अति प्रेम से शिव की पूजा करके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अपनी सामर्थ्य भर शिवभक्तों को भोजन करावे और यथाशक्ति दान दे। इन बारहों व्रतों में से जो मनुष्य एक व्रत भी नहीं करता, उसको पतित कहते हैं। उस पर शिव किसी दशा में भी प्रसन्न नहीं होते। वह मनुष्य दोनों लोक में दुःखी रहता है। जो शिव का भक्त सब व्रतों को करता है, वह परम पावन है। कदाचित् कोई मनुष्य इन बारहों व्रतों में से मास भर के बीच एक भी करता है, वह शुभ है। दोनों प्रकार के व्रत रखनेवाले से शिव प्रसन्न होते हैं। हे नारद! चार चीजें भुक्ति और मुक्ति देनेवाली हैं। वह यह हैं—पहिला शिव का पूजन, दूसरा रुद्र जप, तीसरा शिव का व्रत और चौथा काशी में मरना। यह चारों बातें शिव को प्रिय और मुक्ति पाने की हैं यह संसार में बड़ा सुख देनेवाली हैं। जितने व्रत हमने ऊपर वर्णन किये, उन सब में शिव का व्रत अर्थात् शिवरात्रि बड़ा पद रखती हैं। उसको सब वर्णाश्रम, बालक, युवा और स्त्री भी रख सकती हैं। यह व्रत अकाम और सकाम दोनों रीतों से रक्खा जाता है। इस व्रत के करने से शिवपुरी प्राप्त होती है। यह व्रत चारों फल का देनेवाला, सब व्रतों में सर्वोपरि, असंख्य हत्याओं का मिटानेवाला और असंख्य धर्मों का कृपा करनेवाला है। इस व्रत की महिमा शेष, शारदा, हम और विष्णु पूरे तौर से वर्णन नहीं कर सकते जिस तरह कि शिव की महिमा असंख्य है। इस व्रत के करने से बहुतों ने मुक्ति पाई है और दोनों लोक में प्रसन्न रहे हैं। कोई मनुष्य चाहे कैसा ही पापी हो, इस व्रत के करने से वह पवित्र हो जाता है। इस व्रत को व्रतराज कहते हैं और सब व्रत इस व्रत के सामने शिर झुकाये रहते हैं। संसार में जितना धर्म जैसे कि तप योगादि हैं, उनमें कोई व्रत इसके समान नहीं है। यह व्रत शिव को प्राण के समान प्रिय हैं। वेद की आज्ञा है कि शिव को यह व्रत पार्वती के समान प्रिय है! शिव उसको षण्मुख के समान जानते हैं। यज्ञदत्त ब्राह्मण के पुत्र गुणनिधि, सुमति स्त्री और व्याधादि ने अज्ञानता की अवस्था में इस व्रत को करके कैसी गति पाई है। देवता और मुनि आदि ने इस व्रत के रखने से क्या-क्या पदार्थ नहीं पाये। हे नारद! हम कहाँ तक वर्णन करें, तुम इस व्रत को सर्वोपरि जानो। यद्यपि प्रतिमास की कृष्णपक्ष की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चतुर्दशी को उक्त शिवव्रत होता है, पर माघ मास में इस व्रत को आवश्यक वर्णन किया है। इसी वचन के अनुकूल फाल्गुन मास की चतुर्दशी को भी यह शिवरात्रि उत्तमोत्तम समझा गया है जो आधीरात तक वही शिवतिथि शिवव्रत कहा जाता है। यह शिवव्रत करके जो उसी दिन पारण करे तो क्या बात है। बड़ी भाग्य से शिवरात्रि व्रत का पारण उसी तिथि के भीतर मिलता है पर चन्द्रमा के अस्त पर नहीं। हे नारद! शिवरात्रिव्रत करके पारण बहुत शोच-विचारकर करना चाहिये। रात्रि के चारों प्रहरों में शिवजी की चार पूजा करनी चाहिये। रात्रि के समय पारण नहीं करना चाहिये और चंद्रास्त के संगम को छोड़ना चाहिये। चन्द्रमा के संगम विन दिन में पारण करना पड़े तो बड़ी भाग्य से मिलता है पर जो चौदस तिथि न मिले तो अमावस्या के योग में पारण करना उचित है। यह शिवरात्रिव्रत जो हर वर्ष में एक बेर होता है, सर्व प्रकार की मुक्ति का दाता है। इसके धारण करने से सर्व प्रकार के दुःख दूर होते हैं। यहाँ तक कि ब्रह्महत्या को भी दूर करनेवाला है। इसके सिवाय और कोई व्रत संसार में नहीं है। जो कोई मनुष्य इस व्रत को नहीं करता, वह असंख्य नरकों में नाना प्रकार के क्लेश उठाता है। उसका कोई कार्य पूर्ण नहीं होता और वह मनुष्य चाण्डाल के समान है। वह मुक्ति नहीं पाता और संसार में रोगों से ग्रसित रहता है। उसका सब परिवार नष्ट हो जाता है। कदाचित् अज्ञान अवस्था में भी यह व्रत हो जावे तो व्रती मनुष्य निश्चय करके अच्छी गति पाता है। चाहे कोई पापी भी इस व्रत को करे तो निश्चय करके दोनों लोक में प्रसन्न हो। जो मनुष्य निश्चय करके इस व्रत को धारण करेगा, उसको देखकर यमराज भी भयभीत रहेंगे तथा शिवजी प्रसन्न रहकर उसको हर प्रकार अपना गण बना लेवेंगे और सर्व पदार्थ उसको कृपा करेंगे। उसका सर्वकुल मुक्ति पावेगा और उसकी देवता तथा मुनि सब प्रतिष्ठा करेंगे। हम और विष्णु भी उसको बहुत मानेंगे। चारों पदार्थ उससे दूर न होंगे। हे नारद! अब हम चारों प्रहर की पूजाविधि वर्णन करते हैं।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म करे और अति प्रसन्नता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से शिवालय में जाकर शिवजी की स्तुति करे। पहिले अतिपवित्रता के साथ हाथ में पानी लेकर इस प्रकार संकल्प करे कि हे सदाशिवजी! मैं तुम्हारा व्रत करता हूँ, वह पूर्ण हो और कोई उसमें विघ्न न हो। ऐसी इच्छा करने के अनन्तर सर्व सामग्री पूजन की संग्रह कर उस स्थान पर जहाँ कोई प्रसिद्ध शिवलिङ्ग हो, वहाँ जावे और शिवजी के दक्षिण तथा पश्चिम की ओर आसन लगाकर पूजन की सामग्री रक्खे और यथाशक्ति स्नान करके अच्छे वस्त्र पहिनकर बैठे। फिर तीन बेर आचमन करके पूजन करे और जैसा चाहिये वैसा मन्त्रों सहित पूजन करे। नाचे और गान समेत स्तुति प्रवृत्ति होकर शिवजी का मन्त्र जप करे। फिर यथाविधि प्रणाम करे और मन्त्रों सहित पार्थिव पूजा भी करे। पर जो मनुष्य जिसकी पूजा करता हो, प्रथम उसकी पूजा करके फिर पार्थिवपूजन करे। फिर शिवलिङ्ग जो उस स्थान पर स्थापित हो, उसका पूजन करे और शिवरात्रि का माहात्म्य आप पढ़े। या जो आप अनपढ़ हो तो और से श्रवण करे। कथा कहनेवाले की नानाविधि से सेवा करे और अच्छे-अच्छे भोग शिवजी को लगाकर चारों प्रहर में संकल्प करके एक-एक लिङ्ग की पूजा करे। रात्रि को जागरण करके बड़ा उत्सव करे। फिर प्रातःकाल दूसरी बेर स्नान करके शिवपूजन करे और गाल बजाकर गावे नाचे तथा बारम्बार दण्डवत् और स्तुति कर दोनों हाथ जोड़ शिर झुकावे और आठों प्रकार दण्डवत् कर विनती करे कि मैंने यथाशक्ति शिवरात्रिव्रत किया है। श्रद्धा और उद्योग पूर्वक आपके प्रेम में मन लगाया है, मुझको सेवक जान प्रसन्न होकर मेरा मनोरथ पूर्ण करो। यह कह पुष्पाञ्जलि भी शिवजी पर छोड़ दे और ब्राह्मणों को प्रसन्नता से दान दे। शिव के भक्तों, द्विजों और यतियों को उत्तमोत्तम भोजन करावे और अपनी शक्ति के अनुसार उनको भी दान देकर शिवजी का ध्यान कर आप भी भोजन करे। अब हम चारों प्रहर के चारों पूजनों की विधि विस्तार से वर्णन करते हैं। संध्या के समय पहिले संध्यादि सर्व नित्यकर्म से निश्चिन्त हो प्रथम प्रहर में इस प्रकार पूजा करे कि सब सामग्री इकट्ठी कर शिवजी के दोनों लिङ्ग अर्थात् पार्थिव और शिव-लिङ्ग जो उस स्थान पर हो पञ्चामृत से जुदा-जुदा मन्त्र पढ़कर पूजा करे और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जलधारा को हरबेर करके शिवजी का लिङ्ग धोवे। जलधारा करने में एक-सौ आठ मन्त्र पढ़े और शिव की पूजाकर सब पूजा की सामग्री मन्त्रों के साथ चढ़ावे। या तो अपने गुरु के दिये हुये मन्त्र से या शिवजी के पञ्चाक्षरी मन्त्र से या केवल शिव के नाम से शिवपूजा करे। चन्दनादि सर्व-सामग्री, अक्षत, काले तिल, कमलपुष्प और उत्तमोत्तम करबीर अर्थात् कनेर यह सब आठ-आठ शिवजी का नाम लेकर चढ़ावे। उत्तम सुगन्धित धूप देकर बैठ आरती उतारनी चहिये और उत्तम पकवान नैवेद्य के लिये लाकर श्रीफल अर्थात् बेल का अर्घ्य दे। फिर दण्डवत् करके जैसा चाहिये, ध्यान करे और शिवजी का बाना धारणकर गुरु का दिया हुआ मन्त्र जपे। पर जो कोई दूसरे का भक्त है तो वह पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करे और गोमुद्रा शिवजी के आगे दिखाकर शिवजी का तर्पण जल में बैठ-कर करे। पाँच ब्राह्मणों को भोजन करावें। जो सामर्थ्य न हो तो केवल एक ब्राह्मण के भोजन का संकल्प करे। जब तक कि पहला प्रहर बीत न जावे, तब तक हर प्रकार का उत्सव करे। पहिले प्रहर के पूर्ण होने पर पूजा फल देकर विसर्जन कर देवे। जब दूसरे प्रहर का आरम्भ हो तो इसमें भी वही पूजा का विधान है पर कुछ अधिक है। वह यह है कि जौ का लखोहर और कमलपुष्प पहिले प्रहर से दूने चाहिये। घृत शहद सहित दूध की नैवेद्य लगा बीजपूरका अर्घ्य दे। पहिले से दूना शिवजी का जप करना चाहिये। तृतीय प्रहर की पूजा में इतना और विशेष चाहिये कि गेहूँ का लखोहर, मदार के फूल, नाना प्रकार के धूप, दीप, नैवेद्य के लिये पुवा, बहुत प्रकार के शाक तथा तरकारियाँ, अर्घ्य के लिये पक्का अनार और कपूर की आरती प्रथम प्रहर से दूनी करे और शिवजी के मन्त्र का जप करे। चौथे प्रहर में इतना अधिक है कि मूँग, उड़द और प्रियंगु अर्थात् काकुन का लखोहर सातों नाजों समेत और शंख का फूल अर्थात् शंखाहूली या कौड़ियाला और मिष्ट भोजन जो अन्न से बनाये गये हों, उनकी नैवेद्य अथवा उड़द की नैवेद्य अच्छे प्रकार से बनवाकर लगाना चाहिये। नाना प्रकार के फलों अथवा केले के फल का अर्घ्य देना चाहिये। पहिले से दूना शिवजी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

के मन्त्र का जपकर बड़ा उत्सव मनाना चाहिये और चारों प्रहर में असंख्य ही बिल्वपत्र शिवजी के ऊपर चढ़ावे क्योंकि यह शिवजी को अतिप्रिय हैं। नाना प्रकार के उत्तम-उत्तम वस्तु बनवाकर अति प्रेम से शिवजी के ऊपर चढ़ावे और बहुत मनुष्यों को इकट्ठा करके चारों प्रहर नाच-गान आदि उत्सव करे और जागरण भी करे। दूसरे प्रकार का संकल्प मन में न लावे। शिवरात्रिमाहात्म्य को सुने और अति प्रसन्नता से रात भर बिता दे। एक ही आसन से चारों प्रहर में बैठे और लोभ न करके बहुत ही रुपया खर्च करे। जब सूर्य उदय हो तब ब्राह्मण को दण्डवत् कर उठे और स्नान कर फिर शिवजी की पूजा करे। मन में अति प्रसन्न होवे और नाना प्रकार के उपहार संग्रहकर शिवजी का अभिषेक शुद्ध जल से करे और संकल्प किये हुये ब्राह्मणों के सिवाय और ब्राह्मणों को भी भोजन करावे तथा प्रेम से अपने जाति के मनुष्य को भी भोजन करावे। सिवाय इनके और मनुष्यों को भी जितने कि आजावें भोजन करावे। ब्राह्मणों को भली प्रकार दान दे। कुछ रुपये और कोष का लोभ न करे वरन् सबका पूर्ण आदर करे। यह ऊपर लिखे हुये सब कार्य धनवान् मनुष्यों के लिये वर्णन किये गये, पर दरिद्रता और कुछ धन पास न होने पर जो ऊपर की रीतें न हो सके तो कुछ दोष नहीं है। फिर शिवजी की बहुत ही स्तुति और दण्डवत् करके प्रीति के साथ पुष्पाञ्जलि शिवजी पर छोड़ दे और दोनों हाथ जोड़ शिवजी को नम्रता से बार-बार दण्डवत् करे। ब्राह्मणों से आशीर्वाद ले। शिवजी को और देवताओं सहित विसर्जन करे। फिर आप ब्राह्मणों की आज्ञा ले अपने परिवार सहित भोजन करे। हे नारद ! इस तरह सब महीनों में शिवरात्रि व्रत कर उसका उद्यापन किया करे तब पूर्णफल पावे और इस लोक में आनन्द से रह परलोक में शिवजी के समीप जावे। हमने विष्णु सहित जिस तरह यह शिवरात्रिव्रत शिवजी से सुना है, उसी तरह से तुमको सुना दिया। अब और क्या सुनने की इच्छा है?

तीसरा अध्याय।

इतना सुन नारदजी ने पूछा कि आपने शिवरात्रिव्रत तो वर्णन किया, उसका उद्यापन सुनने की इच्छा है जिसके करने से शिवजी का व्रत पूर्ण और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन का मनोरथ पूरा होता है तथा शिवजी अपने भक्त पर प्रसन्न होते हैं और दोनों लोक की कामना पूरी होती है। ब्रह्माजी बोले कि हम शिवरात्रि व्रत का उद्यापन वर्णन करते हैं जिसके करने से यह व्रत परिपूर्ण हो जाता है, मन लगाकर सुनो। जब शिवरात्रि व्रत चौदह वर्ष तक बराबर कर लेवे तब उसका उद्यापन इस प्रकार करे कि त्रयोदशी के दिन को संयमपूर्वक रह चतुर्दशी को अन्न-जल रहित व्रत करे जैसा हम पिछले अध्याय में वर्णन कर चुके हैं और दिव्य मण्डल शिव का धाम जिसको गौरीतिलक कहते हैं, रचकर वहाँ पर लिङ्गतोभद्र और सर्वतोभद्र बनावे। वहाँ आठ कलश स्थापितकर, फल, फूलों और वस्त्रों से पूर्ण करे। उसके मध्य में एक हाटकमयी कलश रक्खे जिसके ऊपर शिव, गिरिजा और नन्दीश्वर की प्रतिमा सुवर्ण से बनवाकर स्थापित करे और अपनी सामर्थ्य भर यह तीनों मूर्ति सोने की बनवावे तथा दीपक जलाकर दहिनी ओर रक्खे और बड़ी प्रसन्नता से रात भर जागरण करे। फिर चारों प्रहर में चार बार पूजा करे और ब्राह्मणों को वरण देकर अच्छी तरह प्रसन्न करे। अपने आचार्य को भी वरण देकर सबके साथ मिल बड़ा उत्सव करे। फिर दूसरी बार नहा सब मिलकर शिवजी की पूजा करें। तदनन्तर पूरा होम कर यथाशक्ति आप ब्राह्मणों को भोजन करावे और दान देकर वस्त्र और आभूषण उनको दे। सबसे अधिक अपने आचार्य की सेवा करके विधिपूर्वक गौ दे। तीनों सुवर्ण के शिव के रूप सामग्री समेत उसको देकर फिर प्रणाम के उपरान्त दण्डवत् करे। पुष्पाञ्जलि शिव को देकर फिर दण्डवत् और स्तुति करे। फिर ब्राह्मणों की आज्ञानुकूल आप भी अपने परिवारसहित भोजन करे। यह उद्यापन धनवानों के लिये है। उद्यापन से व्रत पूरा हो जाता है। अब किस बात के सुनने की इच्छा है ?

चौथा अध्याय।

नारद बोले कि हे पिता! मुझको शिवरात्रि के माहात्म्य सुनने से अभी तृप्ति नहीं हुई। बिना जाने जिन्होंने शिवरात्रि व्रत किया, उन्होंने क्या फल पाया है, यह कहिये। ब्रह्मा बोले कि शिवरात्रि व्रत की एक कथा हम तुमको सुनाते हैं जो हर प्रकार आनन्द देती है। पूर्वकाल में एक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व्याध था जिसको निषाद कहते थे। वह जीवों को दुःख देता और वह बड़ा हिंसक था। उसका मन अतिकठोर था और वह बड़े परिवार सहित रहा करता था। वन में जाकर बहुत से जीवों को मारता और चोरी करके बहुत धन लाया करता था। उसने लड़कपन से कोई पुण्य न की। उसमें सब ही कुकर्म थे। वह सदा वन में रहकर किसी समय किसी को चैन नहीं देता था। सो ऐसे काम करते हुये उसको कुछ समय बीत गया। एक दिन भोजन न होने से उस के माता-पिता और स्त्री आदि ने क्षुधा में कहा कि हम भूखों मरते हैं, हमारे लिये भोजन लावो। यह सुन निषाद अपना धनुर्बाण ले वन में गया। उसी दिन शिवरात्रि थी। निषाद ने नहीं जाना कि आज शिवरात्रि है। वह शिकार के लिये दिन भर वन में फिरता रहा पर भाग्यवश कुछ न मिला। जब रात्रि हुई तो निषाद दुःखी हो कहने लगा कि अब मैं कहाँ जाऊँ और क्या करूँ ? मुझको तो शिकार आदि नहीं मिला इससे घर जाना ठीक नहीं। इसी विचार में वह नदी किनारे गया। उसने सोचा कि इसके किनारे वन के पशु पानी पीने को अवश्य आवेंगे, उनको हम छिपकर मारेंगे और घर में लेजाकर सबको भोजन करावेंगे। सो ऐसा ही किया कि नदी के किनारे एक जगह छिपकर बैठ रहा। उस नदी के तट पर बेल का वृक्ष था। उसके ऊपर वह छिप गया और देखने लगा कि कोई जीव आवे जिसको मैं वध करूँ। सो रात्रि के पहिले प्रहर वहाँ एक हरिणी प्यास की मारी उछलते-कूदते आ पहुँची। निषाद ने तुरन्त उसको देखकर मारने की इच्छा से तीर धनुष पर चढ़ाया कि जल और बेलपत्र दोनों पृथ्वी पर गिरे। अकस्मात् उसके नीचे शिव का लिङ्ग था जिसके ऊपर पानी और बेलपत्र दोनों गिरे थे। यह भाग्यवश पहिले प्रहर की पूजा हो गई और इस बात के प्रभाव से निषाद के सब पाप नष्ट हो गये और हरिणी ने निषाद को बिल्व के वृक्ष पर देख कहा कि तुमने क्यों धनुष ताना है ? निषाद ने कहा कि हमारे परिवार के मनुष्य भूखे हैं, इससे तेरे मारने की इच्छा है। तेरे मांस से वे सब जो दिन भर के भूखे हैं, तृप्त हो जावें। यह सुन हरिणी ने चिन्तित हो सोचा कि इसको किसी प्रकार निवारण करना चाहिये तो निषाद से कहा कि निषाद जो हमारे मांस से तुम्हारा मनोरथ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पूरा होता है तो हमारे धन्य भाग्य हैं। दूसरों के प्राण बचाने के बराबर कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है। निश्चय है कि मेरे मांस से तुम्हारा परिवार पूर्ण तृप्त होगा। पर एक कारण है कि मेरे घर छोटे-छोटे बच्चे बहुत हैं। मैं चाहती हूँ कि उन सबको अपनी बहिन को सौंप आऊँ तब लौटकर तुम्हारे पास आऊँ। यह मैं तुमसे प्रतिज्ञा करती हूँ क्योंकि संसार में सत्यता के बराबर दूसरी वस्तु नहीं है। देखो, आकाश और पृथ्वी सत्यता से थँभे हुये हैं। यद्यपि उसने इस प्रकार विनय के बहुत वचन कहे पर निषाद ने न माना तब हरिणी अति भय खा बोली कि जो मैं अपने बच्चे सौंपकर तुरन्त तेरे पास न आऊँ तो मुझे वही पाप हो जो वेद के विरुद्ध कर्म करनेवाले को और उस ब्राह्मण को जो तीनों समय की सन्ध्या नहीं करता तथा उस स्त्री को जो अपने पति के विपरीत कार्य करती है और द्वेष, ईर्षा, विरुद्ध कर्म, धर्म का छोड़ना, शिवपूजा का त्यागना, विश्वासघात और छलादि जो प्रसिद्ध पाप हैं, वे सब प्रतिज्ञा छोड़ने पर मुझको हों। इसी प्रकार की और बहुत-सी सौगन्धें खाईं और निषाद के सामने नम्र हो खड़ी रही। सो निषाद ने हरिणी का वचन सत्य जाना व जाने की आज्ञा दी हरिणी जल पीकर अपने घर चली और निषाद प्रहर भर रात तक उसके आने की बाट में जागता हुआ बैठा रहा। संयोग से हरिणी की बहिन अपनी बहिन को ढूँढ़ने तट पर आ पहुँची जिसको देख फिर निषाद ने धनुष खींचा। तब बहुत से बेलपत्र गिरने से दूसरे प्रहर का शिवपूजन हो गया और निषाद के असंख्य पाप छूट गये। हरिणी ने कहा कि हे वन के पशु! इस समय क्या कर रहे हो? तो निषाद ने जैसा कि पहले कहा था, वर्णन किया। हरिणी ने भय खा कहा कि हमारे बड़े भाग्य हैं क्योंकि यह शरीर नाशवन्त है। यदि इससे औरों को आनन्द मिले तो इससे अधिक और क्या है? पर विनय यह है कि मैं अपनी छोटी लड़की को अपने पति को सौंप कर लौटी आती हूँ। इस तरह बहुत विनती कर हरिणी ने बहुत-सी सौगन्दें खाईं। कहा कि जो पाप प्रतिज्ञा भङ्ग करनेवालों और अपनी स्त्री छोड़ अन्य स्त्रियों के साथ रमण करनेवालों तथा वेदमार्ग छोड़ अपने मन के अनुसार चलनेवालों और विष्णु के भक्त होकर शिवनिन्दा करने वालों तथा माता-पिता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की छाया देखनेवालों को होते हैं, जिनका फल नरक है, वह सब पाप मुझे लगें जो मैं प्रतिज्ञा के अनुसार लौट न आऊँ। निषाद ने कहा अच्छा। सो हरिणी प्रसन्न हो पानी पी अपने घर गई और निषाद ने जागरण कर दो प्रहर रात के बिता दिये। जब हरिणी देर तक न गई तो हरिण चिन्तित हो प्यास से व्याकुल आप भी चला। जब वह नदी किनारे पहुँचा तो निषाद ने फिर अपना धनुष सीधा किया जिससे जल और बिल्वपत्र के लिङ्ग पर गिर पड़े। इससे उसका तीसरा पूजन भी हो गया और हरिण ने निषाद को देखकर कहा कि तुम यह क्या करते हो? निषाद ने वही पूर्व के समान वचन कहे जिसको सुन हरिण बोला कि मेरे धन्यभाग्य हैं कि तुम्हारे कुटुम्ब को तृप्त करनेवाला हूँ। देखो, जो मनुष्य दूसरों का लाभ नहीं करते, उन्होंने संसार में वृथा ही जन्म लिया। पर मेरे घर में एक छोटी उमर का बच्चा है। सो उसे मैं अपनी स्त्री को सौंपकर तुम्हारे पास आऊँगा। निषाद ने कहा कि तुम्हारे समान और भी आये और प्रतिज्ञा कर इस समय तक न लौटे। मुझको उन्होंने बड़ा धोखा दिया है। अब मैं तुझको नहीं छोड़ता क्योंकि मुझे निश्चय नहीं। हरिण बोला कि मैं झूठ नहीं बोलता क्योंकि संसार में सत्यता का बड़ा पद है। मैं शपथ करता हूँ कि मैं अवश्य ही तुम्हारे पास लौट आऊँगा। जो लौट न आऊँ तो जो पाप कि सन्ध्या के समय और दिन में स्त्री से भोग करने, शिवरात्रि व्रत रखकर भोजन करने, ब्राह्मण होकर सन्ध्या न करने, वृक्ष से बिल्वफल तोड़ने, सामर्थ्य होने पर दूसरे की भलाई न करने तथा शिवपूजा बिन भोजनादि करने से होता है, वे सब पाप मुझे लगें। यह सुनकर निषाद ने कहा कि अच्छा, घर में होकर शीघ्र हमारे पास आ जाना। हरिण पानी पीकर घर गया। वहाँ हरिणी आदि इकट्ठे होकर अपना-अपना वृत्तान्त कह दुःखी और सत्त्वधर्म में पड़कर पहिले वह हरिणी जो सबसे पहिले आई थी, उसने अपने पति हरिण से कहा कि हमने पहिले प्रतिज्ञा की थी इसलिये मैं बधिक के पास जाऊँगी। तुम दोनों मे रहकर पुत्र को पालन करते रहना। तब दूसरी हरिणी ने कहा कि नहीं मैं जाऊँगी क्योंकि पहिले स्त्री घर की स्वामिनी कहलाती है। यह सुनकर हरिण बोला कि नहीं हम जावेंगे और अपने मांस से उसको प्रसन्न और तृप्त करेंगे क्योंकि बालक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

केवल माता से पल सकते हैं। तुम दोनों घर रहो। पर दोनों ने हरिण का कहना न माना और कहा धिक्कार है हम पर जो विधवा होकर घर में रहें। निदान लड़ते-झगड़ते हुये वे सब जहाँ पर कि बधिक था, चले। पीछे उनके बच्चे भी चले क्योंकि रक्षक बिन उन्होंने रहना उचित न जाना। उन्होंने कहा कि जो माता-पिता की अवस्था होगी, वही हमारी भी होगी। बधिक उन सबको आते देख अति प्रसन्नता से पहले की तरह तत्पर हुआ। उससे फिर पहिले की तरह जल और बेलपत्र शिवजी के लिङ्ग पर गिरे और चौथा पूजन हो गया जिससे बधिक के सर्व पाप नष्ट हो गये। हरिण अपनी दोनों हरिणियों समेत बोला कि अब हमारे शरीर को शुद्ध करो और तुरन्त हमको मारो पर बधिक जिसके सर्व पाप जल गये थे और शिवपूजन के बल से उसे शुद्ध बुद्धि उपजी थी, अतिदया से कहने लगा कि हे पशो! यद्यपि पशुओं को बुद्धि नहीं होती पर वे धन्य हैं कि अपने शरीर के भी नष्ट होने से दूसरों की भलाई पर तय्यार हैं और मैंने मनुष्य होने पर अपना जन्म जीवों के वध करने में बिताया और ऐसे-ऐसे पाप कर कुल की पालना की। न जानिये मैं किस अवस्था को प्राप्त हूँगा? मैंने कोई धर्म का काम नहीं किया। मेरे जीने पर हजारों धिक्कार हैं। निदान बधिक ने इसी चिन्ता से आँसू बहा अति दया कर ऊँचे शब्द से कहा कि हे शुद्ध हरिणो! अपने घर जाओ। तुम धन्य हो और तुम्हारा धर्म धन्य है। तुम अति शुभ हो। यह वार्त्ता हो ही रही थी कि शिवजी अति प्रसन्न होकर वहीं आ प्रगटे और अपने हस्त कमल से बधिक का हाथ पकड़कर कहा कि हम तुमसे अति प्रसन्न हुये हैं। जो चाहिये वह हम से वर माँग लो। तुमने शिवरात्रि व्रत रख अपने पापों को नष्ट कर डाला। हमने तुमको अपने भक्तों में गिना। ऐसी वार्त्ता और ऐसा स्वरूप श्रीजगत्पिता सदाशिवजी का देख-सुनकर निषाद जीवन्मुक्त हुआ और शिव के चरणों के आगे गिर पड़ा। उसकी जिह्वा से केवल इतना वचन निकला कि सब पाया। शिवजी अतिप्रसन्न हुये। उन्होंने दया से उसकी ओर देख उसके सब दुःख दूर कर दिये और उसका नाम स्कन्द रख उसको बहुत वर दिये। कहा कि हे निषाद! तुम अपने कुल के राजा होगे और तुम्हारे मनोरथ पूरे होते रहेंगे। अब तुमको कोई

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दुःख नहीं देगा। तुम जाकर शृङ्गवेरपुर को अपनी राजधानी बना अतिसुख-पूर्वक राज्य करते रहो। तुम्हारे बहुत सन्तान होंगी जिसकी प्रशंसा देवता भी करेंगे। हमारे भक्त रामचन्द्र तुमको अपना सेवक जान तुम्हारे घर आवेंगे और तुम्हारे साथ प्रीति दृढ़कर तुमको बड़ा यश देंगे पर तुम हमारा भजन मत भूलना। तुमको दुर्लभ मुक्ति प्राप्त होगी। सो तुमको सर्व संसारी भोग भोगने के उपरान्त शिवपुरी मिलेगी। इतने में शिव के दर्शन पाकर सब हरिणों ने मृगयोनि त्याग देवस्वरूप पाया और विमानों में आरूढ़ हो शाप से छूट देवलोक को चले गये। आज तक वे आकाश पर प्रकट होते हैं। इस चरित्र के उपरान्त शिवजी अन्तर्धान हो गये और लिङ्गस्वरूप से वहाँ स्थित हो व्याधेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हुये। अर्बुद्ध गिरि जो प्रसिद्ध है, उसी में यह शिवलिङ्ग स्थित है। इस लिङ्ग के दर्शन-पूजन से भुक्ति-मुक्ति मिलती हैं। व्याध भी स्कन्द के नाम से जैसा कि शिव ने उसका नाम रक्खा था, प्रसिद्ध होकर शिवजी की कृपा से शृङ्गवेरपुर में गया। वहाँ रहकर वह सब भीलों का राजा हुआ शिवजी की कृपा से देवताओं के समान आनन्द करता रहा। जब कि रामचन्द्र ने त्रेतायुग में अवतार लेकर उसको शिवभक्त जाना तो उसके घर में जाकर उसको प्रतिष्ठित किया और अति अनुग्रह कर उसको शिव की भक्ति कृपा की जिससे निषाद को शिवजी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त हुई। वह तीनों लोक के दुःख-सुख से छूट गया। हे नारद! शिवरात्रिव्रत ऐसा है जिसको व्याध ने अज्ञानता में कर इस लोक में राज्य और परलोक में मुक्ति पाई। यद्यपि शिवजी की सायुज्य मुक्ति ज्ञान बिना नहीं मिलती पर शिवरात्रिव्रत ने व्याध को बेपरिश्रम दे दी। जो मनुष्य भक्ति से शिवरात्रिव्रत करेगा, उसकी यही दशा होगी। सब वेद और पुराणों ने विचार करके शिवरात्रिव्रत को सब व्रतों का राजा बताया है। इसके समान कोई जप, तप, यज्ञ और व्रतादि शुभ कर्म नहीं। जो इसको पढ़े सुनेगा, वह दोनों लोक में आनन्द-पूर्वक रहेगा हे नारद! अब और कथा सुनो।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! जिस तरह से गुणनिधि ब्राह्मण ने शिव-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रात्रिव्रत कर आनन्द पाया है, वह हम वर्णन करते हैं। द्रुपदपुरी जो गङ्गा के तट पर है और जिसको कम्पिला भी कहते हैं, वह पुरी अतिपवित्र है। वहाँ शिव रामेश्वर के नाम से और शक्ति कालीश के नाम से विराजमान हैं। वहाँ एक ब्राह्मण यज्ञ करनेवाला यज्ञदत्त नामी रहता था। वह दीक्षित नाम से प्रसिद्ध हो शिव का बड़ा भक्त हुआ और राजा के द्वारा उसको बहुतसा धन और सम्पत्ति प्राप्त थी। उसकी स्त्री भी बड़ी धर्मवती और गृहस्थी के कार्य में चतुर थी। उनके एक पुत्र उपजा जिसका नाम गुणनिधि रक्खा। उसको बड़ा धर्म और विद्या सिखाई और उसका विवाह कर दिया। थोड़े समय के अनन्तर गुणनिधि अयोग्य संगति से दुष्ट हो गया और उसने वेद और पुराणों के सब कर्म छोड़ जुयें में अपने पिता का धन नष्ट कर दिया। पर उसकी माता उसके दोष छिपा रखती थी और यज्ञदत्त इस बात को नहीं जानता था यद्यपि माता ने अति नम्रता और प्यार से गुण-निधि को उपदेश कर शुभमार्ग सिखाये पर उसने कुछ न माना। धीरे-धीरे गुणनिधि बड़ा व्यभिचारी, चोर, मद्यपी, चुगुल और मांसभक्षी होकर अपनी स्त्री को छोड़ परनारियों से विहार करने लगा। यहाँ तक कि जितना राजा ने यज्ञदत्त को धन दिया था, वह सब गुणनिधि ने उड़ा दिया। संयोग से एक दिन यज्ञदत्त ने अपनी-अँगूठी किसी जुवारी के हाथ में देखकर उससे पूछा कि तुमने यह कहाँ से पाई है? जुवारी ने क्रोध से कहा कि मैंने चोरी नहीं की, तुम्हारे पुत्र से जुये में पाई है। तुम्हारा पुत्र जुआ खेलनेवालों में अद्वितीय है। यह सुन यज्ञदत्त लज्जा से घर आये और अपनी स्त्री से पूछा कि गुणनिधि की क्या दशा है? पर उसने प्रेम के कारण पुत्र का मुख्य वृत्तान्त छिपा रक्खा। तब यज्ञदत्त ने कुश और पानी माँगा और गुणनिधि के नाम से सोदक छोड़ दिया। अर्थात् उसको त्याग दिया। पर गुणनिधि की माता ने हाथ जोड़कर नम्रता से अपने पति को इतना समझाया कि वह गुण-निधि को घर रखने में कुछ राजी हुआ। पर जब गुणनिधि ने अपने पिता के क्रोध का यह हाल सुना तो रोते-पीटते पिता के भय से भाग गया। जब चलते-चलते थक गया तो बैठकर सूर्य के अस्त होने तक बराबर रोता रहा। संयोग से वह शिवरात्रि का दिन था। जैसे कि चारों वर्ण में ब्राह्मण,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तारों में चन्द्रमा, नदियों में गङ्गा, शिवभक्तों में कृष्ण, वेदों में सामवेद, मन्त्रों में प्रणव, देवियों में शिवरानी और पुराणों में भारत है तैसे ही व्रतों में शिवरात्रि है। निदान उस दिन एक शिव का परम भक्त शिवरात्रि व्रत धारण किये हुये असंख्य भक्तों को साथ लिये पूजा की बहुत-सी सामग्री सहित उस मार्ग से आ निकला, जहाँ गुणनिधि थककर बैठा था। जोकि गुणनिधि बहुत ही भूखा था, उसने उत्तम-उत्तम व्यञ्जनों की सुगन्ध पाकर मन में यह बात ठहराई कि जब यह लोग खाने की चीजें शिव को चढ़ाकर अचेत होंगे, तब मुझको उठाने का अवसर मिलेगा। सो उन भक्तों के पीछे गुणनिधि भी चला। शिवभक्तों ने शिवालय में पहुँच कर षोडशोपचार से शिवकी पूजा की। गुणनिधि अपने मनोरथ के लिये उन सबकी पूजा देखता रहा। शिवभक्त पूजा के उपरांत कुछ-कुछ ऊँघ गये। गुणनिधि सबको सोता हुआ जान शिवालय के भीतर गया और धीरे-धीरे पग रखते हुये चाहा कि शिव की नैवेद्य उड़ालें। इस बात के लिये कि जिसमें भोजन देख कर चुरावे, उसने अपने शरीर के वस्त्र से एक टुकड़ा फाड़कर एक बत्ती बनाई और उसको जला कर शिव के ऊपर से भोजनादि ले लिया। अतिहर्ष के कारण शीघ्र ही शिवालय से बाहर को चला पर गुणनिधि के शीघ्र चलने के कारण उसका पाँव किसी शिवभक्त के चरण में लग गया जिसने बड़ा शब्द किया। कहा कि चोर जाता है, पकड़ो। यह सुन नगर के रक्षक तुरन्त पहुँच गये और अपने बाणों से गुणनिधि को मार डाला। गुणनिधि और जन्म के पुण्य के कारण शिव की नैवेद्य खाने से बच रहा। जो मनुष्य प्रसाद छोड़ शिवकी नैवेद्य खाते हैं, उनको बड़ा दुःख होता है जैसा कि सब वेद और पुराण इस बात को लिखते हैं। निदान यमराज के गणों ने आकर गुणनिधि को बाँधकर चाहा कि यमराज के सामने ले जावें। उसी समय शिव ने अपने गणों को बुला सब वृत्तान्त के बताने के अनन्तर आज्ञा दी कि गुणनिधि को यमराज के प्यादों के हाथ से छुड़ा दो। उसे हमारे पास लाओ क्योंकि उसने शिवरात्रि व्रत करके हमारी पूजा अपनी आँखों देखी और हमारी नैवेद्य खाने से बचा रहा। हमने उसको अपना सेवक कर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिया। अब वह नरक में नहीं जा सकता। यह व्रत सब व्रतों से मुझे प्यारा है। मुख्य करके जो शिवरात्रि के दिन हमारा पूजन देखता है, वह सबसे मुझे प्रिय है। उसने दीपक जला हमारे ऊपर अपने हाथ से आरती उतारी। इस समय वह कलिङ्गदेश का राजा होकर फिर हमारे यहाँ आवेगा और निधिनाथ होकर हमारे मुख्य मित्र के नाम से विख्यात हो आनन्द-पूर्वक रहा करेगा। सो शिव के गणों ने जाकर गुणनिधि को यम के दूतों से वार्त्तालाप कर छीन लिया और शिव के समीप ले गये। गुणनिधि कलिङ्ग का राजा होकर दम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। फिर शिव की कृपा से निधिपति हो शिव का निजमित्र हो गया। इतना कहकर श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! कदाचित् यह व्रत भूल से भी होवे तो भी इतना फल मिलता है, जितना कि ऊपर कहा गया।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब और भी शिवरात्रिव्रत का माहात्म्य सुनिये। पूर्वकाल में सौमणि नाम एक ब्राह्मण की कन्या अतिसुन्दरी हुई। उसके पिता ने एक ब्राह्मण के साथ उसका विवाह कर दिया। सो दोनों स्त्री-पुरुष नाना प्रकार के विहार करने लगे। संयोग से उसका पति युवा-वस्था में मर गया। पति के मरने के पीछे सौमणि थोड़े समय तक उत्तम रीति से कालक्षेप करती रही। निदान फिर उसको कामदेव ने सताया। सो वह कामदेव की ज्वाला न सहकर पुंश्चली हो गई। जाति के मनुष्यों ने उसको अपनी पंक्ति से उठाकर घर से निकाल दिया। फिर तो वह स्त्री स्वा-धीन होकर भ्रमण करती वरन् जो मन में आता वह करती थी। एक दिन वह वन में पर्यटन कर रही थी कि एक शूद्र उसको अपनी स्त्री बनाकर अपने घर ले गया। सौमणि मांस खाने और मद्य पीने लगी। उसके बहुत संतान उपजीं। एक दिन उसका पति कहीं चला गया तो सौमणि ने मद्य पी और मद्य में मांस खाने की इच्छा से गोशाला में, जहाँ बहुत से बकरे भी रहा करते थे, गई। रात्रि होने के कारण उसने एक बछरे को बकरा समझा और जब कि उसको मारकर घर लाई तब उसने जाना कि यह बकरा नहीं है वरन् बछरा है। उसने मुखसे शिव-शिव कहा पर क्षणमात्र में उसको पकाकर खा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लिया। निदान मरने के पीछे थोड़े समय तक नरक में रहकर एक चाण्डाल के घर उपजी। वह जन्म की अन्धी उपजी और उसके माता-पिता मर गये। अन्धी होने और किसी बान्धव के न होने से वह मारी-मारी फिरने लगी। उसके कुष्ठ का रोग उत्पन्न हो गया। वह रात-दिन अतिकष्ट से शरण-शरण पुकारने लगी। जो कुछ चाण्डालों का झूठा भोजनादि पात, उससे अपने दिन काटती। जब कि फाल्गुन कृष्ण की चतुर्दशी को गोकर्णक्षेत्र में लोग मेले के लिये गये तो उस समय वह अन्धी कोढ़िन भी भोजनादि पाने की आशा से यात्रियों के पीछे-पीछे हो माँगती-खाती हुई गोकर्णक्षेत्र में पहुँची। वह सब मेलेवालों से दोनों हाथ बढ़ा भिक्षा माँगने लगी। एक शिवभक्त ने एक मुट्ठी बिल्वपत्र की उसके हाथ में फेंक दी। जब अन्धी ने जाना कि यह भोजन की वस्तु नहीं है तो उसने उसे क्रोध कर फेंक दिया। संयोग से वह बिल्वपत्र शिवजी के लिङ्ग पर गिरे। वह शिवरात्रि का दिन था। शिवजी ने जाना कि हमारी पूजा अन्धी ने की है। वह इसी तरह रात भर माँगती रही पर भाग्यवश किसी ने उसको कुछ न दिया जिससे शिव ने जाना कि इसने हमारा व्रत निर्जल रख रात जागरण में बिताई है। जब प्रभात को सब मेलेवाले चले गये तो वह अन्धी चाण्डालिनी भूखी-प्यासी धीरे-धीरे चलकर बहुत दिनों में अपने देश पहुँची और पृथ्वी में गिरकर मर गई। शिवजी ने अपने गणों को विमान समेत उस स्त्री के लेने को भेजा। जब शिवजी के गण आये तो गौतममुनि जो संयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने भेद पूछा। सो गणों ने सर्ववृत्तान्त बतलाया। वह गण उस चाण्डालिन को विमान पर चढ़ाकर शिवपुरी को ले गये, जहाँ वह मुक्ति पा जगदम्बा की सखी हुई। हे नारद! शिवरात्रिव्रत इसी प्रकार का फल देनेवाला है। सब शास्त्रों का वचन है कि शिवरात्रि सर्व-कार्य सिद्ध करती है। इसी व्रत को राजा मित्रसह कर ब्रह्महत्या के पाप से छूटा। इस चरित्र को पढ़ने और सुननेवाला दोनों लोक में प्रसन्न रहता है और इस व्रत के प्रताप से उसके सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं।

सातवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि राजा मित्रसह ने जिस प्रकार शिवरात्रि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

व्रत करने से बड़ा पद पाकर मुक्ति पाई, वह शिव चरित्र कहिये। ब्रह्मा बोले हे नारद! शिवरात्रिव्रत की महिमा सबसे अधिक मुक्ति देनेवाली है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को व्रत और जागरण करना तथा शिवस्वरूप का दर्शन, पूजन और बेलपत्र का चढ़ाना बहुत बड़ाई रखता है। दूसरा कोई पदार्थ इसके समान जल्दी मोक्षदाता नहीं है। दशहजार वर्ष गङ्गाजी का स्नान भी शिवव्रत के बराबर नहीं है। जितने संसार में शुद्ध दिवस हैं, वह सब शिवरात्रि के दिन शिवरात्रि में स्थित होते हैं। विष्णु, हम, सनकादिक और देवता वेद आदि पुराण सब शिवरात्रि की महिमा के वर्णन करने में सम्मति रखते हैं। शिवरात्रि व्रत सौ यज्ञ करने के समान है। शिवरात्रिव्रत से और जागरण से बड़ा फल होता है। इसमें बड़ी श्रेष्ठता है क्योंकि करोड़वर्ष के तप से भी उसका पद बड़ा है। जो एक बेलपत्र से भी शिवजी की पूजा करे तो उसके समान और कोई बात मुक्ति देनेवाली नहीं है। इसी पर हम एक इतिहास कहते हैं जैसा कि बेलपत्र के चढ़ाने से सर्वपाप दूर हो गये। राजा मित्रसह वैवस्वतकुल में बड़ा धर्मवान्, सर्व शास्त्र, वेद और पुराणों का जाननेवाला, वीर, नीतिवान्, दयावान्, महाशक्तिवान्, महातेजमान्, सब पृथ्वी का स्वामी, ब्राह्मणों का सेवक, सुन्दर और शुभकर्मकर्ता राजा हुआ। उसकी स्त्री मदयन्ती राजा नल की स्त्री दमयन्ती के समान पतिव्रता थी। एक दिन राजा सेना सहित वन में आखेट को गया। उसने बहुत से जीव मारे और उसको शिकार में इतना प्रेम बढ़ा कि उसने समय तक अपनी राजधानी को लौटकर अपनी प्रजा का हाल भी न लिया। संयोग से उसी वन में राजा ने एक कमठनामी निशिचर को मारा जिसके भाई को अपने भाई के मरने से बड़ा दुःख हुआ। वह इस इच्छा से कि राजा से बदला लेना चाहिए, मनुष्य स्वरूप धार राजा का सेवक हो गया। जब राजा शिकार खेल लौटकर घर आया और अपने गुरु को बड़े धूमधाम से निमन्त्रण दिया तो कमठ ने रसोईदार होकर छल से मनुष्य का मांस तरकारी में मिलाकर गुरु के आगे परसा। सो गुरु ने इस बात को जानकर राजा को शाप दिया कि तुम बारह वर्ष तक राक्षस रहोगे। राजा ने अपनी निर्दोषता स्मरण कर चाहा कि वह भी गुरु को शाप दे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पर रानी ने बर्जा। राजा राक्षस होकर कल्माषपाद के नाम से प्रसिद्ध हुये और बहुत से जीवों को भक्षण करने लगे। एक दिन उसने एक युवा ब्राह्मण को जो अपनी स्त्री के साथ भोग करता था, पकड़ा। यद्यपि ब्राह्मणी ने बहुत विनती कर समझाया पर राजा ने कुछ न सुनकर तुरन्त उसका शिर तोड़ कर खा लिया। स्त्री ने सती होने के समय राजा को शाप दिया कि जब तू अपनी स्त्री से भोग करेगा, उसी समय तुरन्त मर जावेगा। स्त्री तो सती होकर दूसरा शरीर धर अपने पति से जा मिली। राजा ने भी बारह वर्ष बीतने पर पूर्ववत् मनुष्य हो चाहा कि अपनी स्त्री से मैथुन करें पर रानी ने न माना। तब राजा ने मैथुन बिना अन्य संसारी भोगों को वृथा समझ वन में चला गया। वहाँ एक मुनि के उपदेश से तीर्थयात्रा करने लगा और जनकपुर में गौतममुनि से भेंटकर कहा कि मुझको ब्रह्महत्या लगी है जिससे मैं दुःखी हो भ्रमण करता हूँ। मैंने सब उपाय किये पर वह दूर नहीं होती। गौतम ने राजा की विनय और नम्रता देख कहा कि कुछ संशय मत करो। तुम सदाशिव की पूजा करो, कोई पाप न रहेगा। पश्चिमी समुद्र के तीर गोकर्णक्षेत्र में जाकर महाबलनाम शिवलिङ्ग की पूजा करो और वहाँ शिवरात्रि व्रत करो। हम इस समय वहाँ से आते हैं। सो मित्रसह चलकर गोकर्ण में पहुँचा और महाबल शिवलिङ्ग के पूजने और गोकर्णक्षेत्र में नहाने तथा शिवरात्रि व्रत के करने से सब पापों से शुद्ध हो गया। वह अपनी राजधानी में पहुँचकर रानी सहित भोग भोगने लगा और मरने के उपरान्त शिवजी का गण हुआ। हे नारद ! शिवरात्रि व्रत इतना मुक्ति देने वाला है। जो इस चरित्र को प्रति-दिन सुने व पढ़े, उसकी इक्कीस पीढ़ी पर्यन्त मुक्ति होती है। यह इतिहास बहुत ही पवित्र है।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम चौदशव्रत का माहात्म्य वर्णन करते हैं। इससे प्रकट होगा कि जो यह व्रत अज्ञानता में भी हो जावे तो उत्तम फल मिलता है। पूर्वकाल में किरातदेश का राजा त्रिमार्षण हुआ। वह बड़ा वीर, धीर, बलवान्, जीवों का हिंसक, कठोरचित्त, दुष्ट, अन्यायी, नीच, सब जीवों के मांस का खानेवाला, कामी, क्रोधी और सब वर्णों की स्त्रियों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से भोग करनेवाला था। उसको व्यभिचार के सिवाय और कोई कर्म उत्तम न भासता था। यद्यपि वह राजा इतना कुमार्ग चलनेवाला था पर तो भी वह चौदश के व्रत को बहुत प्रिय जानता था। वह दोनों पक्षों की चतुर्दशी में शिवजी की पूजा करता था। यद्यपि वह प्रति दिन शिवजी की पूजा करता पर चतुर्दशी के दिन बड़े उत्सव से शिवजी को पूजता था। उस दिन वह आप शिवजी के सामने नाच-गान कर सबको दान देता और उसकी रानी जिसका नाम कुमुद्वती था, बड़ी शीलवती और कलावान् थी। उसने अपने पति को इतने अधर्मों में लगे हुये देखकर कहा कि कहाँ तुम्हारे यह काम और कहाँ शिवजी की पूजा? यह दोनों कर्म एक ही शरीर से सम्बन्ध नहीं रखते। तुम प्रति दिवस मांस खाते हो, सब प्रकार की स्त्रियों से भोग करते हो और सब जीवों को बधकर अन्याय से काल बिताते हो। मुझको बड़ा संशय है कि ऐसी दशा पर तुमने शिवजी की प्रीति कहाँ से सीखी? मैं चाहती हूँ कि तुमसे इस बात का मुख्य हेतु सुनूँ। राजा रानी का यह वचन सुन हँसकर कहा कि मैं पूर्वजन्म में कुत्ता था और प्रति दिन पम्पापुर में फिरा करता था। मेरा जन्म भूखे, प्यासे और दौड़ते हुए कट गया। संयोग से एक दिन शिवजी के भक्तों का समूह शिवालय में जाकर बड़े प्रेम से पूजा करता था। मैं भूखा दूर से खड़ा हुआ यह चरित्र देखने लगा। मुझको शिवजी के भक्तों ने देखकर मारा। मैं तुरन्त वहाँ से भाग गया। मैं बहुत भूँकता था। फिर मैं छिपे-छिपे पिण्ड आदि भोजन की वस्तुओं के लोभ से उसी शिवालय के किनारे आया। बहुत बेर शिवालय के चहुँ-ओर फिरता रहा और छिपे-छिपे भोजन पाने के लोभ से शिवजी की पूजा देखता रहा। एक मनुष्य ने अति कोप से एक बाण मुझ पर चलाया सो शिवकी पूजा देखते-देखते बाण लगकर मर गया। जो कि शिव को देखते हुये मैं मरा था, इससे राजा हुआ मैंने चतुर्दशी का पूजन और दीपों की माला देखी थी। उसी दिन से मैं गत, वर्तमान और भविष्य के सब हाल जान गया। जो कि मैं सब भक्ष्याभक्ष्य वस्तु खाता हूँ तो यह बात पूर्वजन्म के संस्कार से कि मैं कुत्ता था, क्योंकि प्रकृति का मिटना कठिन है। इससे सब चतुर्दशी के दिन मैं पूजा करता हूँ जिससे मेरे सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कार्य शुभ होते हैं। हे रानी ? तुम भी शिव की पूजा किया करो स्त्री ने फिर पूछा कि राजन् ! तुम तीनों काल को जानते हो। मैं चाहती हूँ कि आप मेरे पूर्वजन्म का वृत्तान्त वर्णन करें। राजा बोले कि पूर्वजन्म में तुम कबूतरी थीं। एक दिन तुमको एक मांस का टुकड़ा मिला जिसको लेकर तुम आकाश की ओर उड़ीं। सो एक गृध्र ने तुमको देखकर तुम्हारा पीछा किया और तुम प्राणों के भय से भागती-भागती श्रीगिरि शिवालय के ऊपर बैठ गईं। गृध्र ने पहुँच कर मांस का टुकड़ा छीन तुमको इतना घायल किया कि तुम गृध्र के उड़ जाने के अनन्तर शिवालय से गिरकर मर गईं। तुमने मरने के समय शिव का लिङ्ग देखा, इससे तुम इस जन्म में हमारी रानी हुईं। जब रानी ने अपने पहिले जन्म का वृत्तान्त राजा से सुना तो उसको शिव की भक्ति बहुत बढ़ी। उसने कहा हे राजन् ! अब अपना और हमारा भविष्य कहो कि मुझे भरोसा हो। यह सुन राजा बोले कि हम दूसरे जन्म में सिन्धु के राजा होंगे और तुम राजा संजय की पुत्री होकर हमारे साथ ब्याही जावोगी। तीसरे जन्म में हम राजा सौराष्ट्र के पुत्र होकर तुम्हारे साथ जो कलिङ्ग देश के राजा की कन्या होगी, विवाह करेंगे। चौथे जन्म में हम राजा गान्धार होकर तुमको जो मगधदेश के राजा की लड़की होगी, ब्याह लावेंगे। पाँचवें जन्म में हम उज्जयिनी के राजा और तुम राजा दशारण्य की पुत्री होकर हमारी रानी होगी। छठे जन्म में हम अनर्त के राजा और तुम ययाति के कुल में उपजकर हमारी जाया होगी। सातवें जन्म में पाण्डव देश के राजा होकर पद्मपर्ण के नाम से प्रसिद्ध होंगे और तुम राजा वैदर्भ के घर जन्म लेकर वसुमती के नाम से प्रसिद्ध होगी। जब तुम्हारा पिता स्वयंवर रचेगा, उसमें हम तुमको सब राजाओं से जीत-कर ले आवेंगे तथा शिव की पूजा में हम दोनों लगे रहकर भोग-विलास कर सन्तानवान् होंगे। फिर पुत्र को राज्य दे हम दोनों वन में जाकर अगस्त्य मुनि से ज्ञान पाकर तुम्हारे समेत शिवपुरी में पहुँचेंगे। वहाँ हम शंकर सदाशिवजी के गणों में गिने जावेंगे। हे रानी ! यह चतुर्दशी व्रत करके हम सात जन्म तक राजा होते रहेंगे। सो इसी प्रकार की वार्ता बहुत देर तक करके अपनी शेष आयु शिवपूजन और चतुर्दशी व्रत में बिताई और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सातवें जन्म में शिवपुरी पाकर मुक्ति हुई। ऐसी शिवव्रत की महिमा है। इस चरित्र के पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में अति सुख प्राप्त होता है।

नवाँ अध्याय।

त्रयोदशीव्रत का माहात्म्य।

ब्रह्माजी बोले कि अब हम प्रदोषव्रत का वर्णन करते हैं कि प्रदोषव्रत शिवजी को बहुत प्रिय और सब बड़े मनोरथों का देनेवाला है। वह स्त्री-पुरुष धन्य हैं जो इस व्रत को करते हैं। उचित है कि सब महीनों के दोनों पक्षों में त्रयोदशीव्रत करके निर्जल रहे। सो इस व्रत का विधान ऐसा है कि प्रभात को स्नान कर नित्य क्रिया और सदाशिवजी की पूजा करे। उस समय कोई संसारी कार्य न करना चाहिये। जब तीन घड़ी दिन शेष रहे तो सामर्थ्य के अनुसार आप फिर स्नान करे और मौन साध श्वेत अम्बर पहिने। संध्या का जप करके शिवजी का ध्यान करे और सदाशिवजी की प्रेम के साथ परिपूर्ण पूजा करे। पूजा की सब चीजें इकट्ठी कर शिवजी को प्रसन्न करे। यथाशक्ति शिवजी की पूजाकर मन में अति प्रसन्न होवे और अपने सर्व परिवार सहित सदाशिवजी की पूजाकर स्तुतिपूर्वक दण्डवत् करे। प्रदोषकाल में शिवजी की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करावे। फिर उनको दान-दक्षिणा दे और उनसे आज्ञा लेकर आप भी हविष्य अर्थात् लवण बिना खावे। इसके समान दूसरा व्रत और दूसरी शिवजी की पूजा नहीं है। ऐसी शिव पूजा सर्वपापों की क्षय करनेवाली, सब मनोरथ की देनेवाली और छोटे-बड़े पापों को दूर करनेवाली है। जो शिवपूजा प्रदोष-काल में करे तो सौ ब्रह्महत्या का पाप दूर हो जाता है। जो तेरसि व्रत में भोजन कराते हैं, वे दोनों लोक में सुखी रहते हैं। जो मनुष्य तेरसि का व्रत करता है, उसको कोई आपदा नहीं सताती। प्रदोषकाल में शिवजी की पूजा अति आनन्द देनेवाली है, यह बात वेद और पुराण कहते हैं। यह बात लोक में अति प्रसिद्ध है और मुनि भी इस बात को मानते हैं। प्रदोषव्रत से दरिद्रता और पाप दोनों दूर हो जाते हैं। इस पर हम एक विचित्र कथा वर्णन करते हैं जिसके सुनने से शिवजी की भक्ति बढ़ती है। पूर्वकाल

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में राजा चन्द्रसेन नाम उज्जयिनी का राजा शिवजी का बड़ा भक्त हुआ। वह बड़ी प्रीति से सदा त्र्योदशीव्रत कर उस दिन बड़ा उत्सव करता और प्रदोषकाल में तेरसि के दिन शिवजी की पूजा करता जिससे वह सदा सुखी रहा करता था। वह महाकाल लिङ्ग की पूरी पूजा करता था। सो एक दिन मणिभद्र नाम शिवजी के गण ने राजा से प्रसन्न होकर और उसके साथ प्रेम बढ़ा अति प्रसन्नता से उसे चिन्तामणि कृपा की। उस रत्न में यह गुण था कि जिसके पास वह हो या जो मनुष्य उसे देखे अथवा उसको स्पर्श करे या उसका स्मरण करे तो वह मनुष्य सर्व आपदाओं से छूट अप्रमेय आनन्द उठावे। उसके स्पर्श से सर्व प्रकार की धातु सुवर्ण हो जाती थी। उसके धारण करने से राजा सूर्य के समान तेजस्वी हुआ। जब पृथ्वी भर के राजाओं ने यह बात जानी तो उन सबने बहुत हठ ने उसको माँगा पर राजा ऐसे बहुमूल्य रत्न को कब किसी को देता था क्योंकि जो वस्तु किसी देवता से प्राप्त हो, वह देने के योग्य नहीं होती। सो सब राजाओं ने इकट्ठे होकर राजा उज्जयिनी पर चढ़ाई की और चारों ओर से दौड़कर उज्जयिनी को घेर लिया, वे रातभर नगर भर को दुःख देते रहे। प्रभात को तेरसि थी। राजा अति प्रेम से महाकाल शिव की पूजा को गया। जब तीन घड़ी दिन शेष रहा तो प्रदोषकाल पाकर राजा महाकाल की शरण में जाकर उसी समय पूजा की। संयोग से एक स्त्री पाँच वर्ष का लड़का गोद में लिये हुये वहाँ आई और राजा की पूजा देखते ही जब वह स्त्री घर आई तो बालक को इतना प्रेम हुआ कि उसने एक शिला स्थापित कर जिस तरह कि राजा को पूजन करते देखा था, उसी तरह आप भी पूजा करने लगा। माता ने उसे भोजन के निमित्त दो तीन बेर बुलाया पर वह पूजा छोड़ न गया। तब उसकी माता क्रोध में लड़के को मारपीट हाथ पकड़कर घर में खींच लाई और शिवलिङ्ग को दूर फेंक दिया। लड़का हाय-हाय कह और रो पीटकर मूर्च्छित हो गया। सो बालक ने उस मूर्च्छावस्था में एक रत्नों का भरा हुआ शिवालय और उसके मध्य में रत्नों के सिंहासन पर रत्नों का शिवलिङ्ग देखा। उसके शिव की महिमा जानकर बहुत स्तुति की और कहा कि मेरी माता मूर्ख है, उसका अपराध क्षमा करो। जब संध्या को वह अपने घर गया तो

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देखा कि इन्द्रलोक के समान वह नगर हो गया जिसके मन्दिर सुनहरे और सब रत्नों से जड़े हैं। उन सर्व मन्दिर में से उसकी माता का मन्दिर सबसे अधिक प्रकाशमान है जिसके भीतर रत्नों की शय्या पर उसकी माता सो रही है। उसने अपनी माता को जगाया। जब माता ने यह विचित्र चरित्र देखा तो अति प्रसन्न हुई। पुत्र ने कहा कि यह सब शिव की कृपा कटाक्ष से है, कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। राजा ने इस विचित्र वृत्तान्त को सुन पूजा को पूरी कर उस स्त्री के मन्दिर को देखने गया और बालक के साथ प्रेम बढ़ा गोपी स्त्री की बहुत प्रशंसा की। सब राजा लोग शिव की इतनी कृपा देख राजा से मित्रता कर अपने-अपने नगरों को सिधारे।

दसवाँ अध्याय।

नारदजी के प्रश्न करने के उपरान्त ब्रह्मा बोले कि चन्द्रसेन की शेष कथा यह है कि यद्यपि सब राजाओं ने उज्जयिनी को चारों ओर से घेर रक्खा था पर ऐसे चरित्र के होने पर सबके मन में कुछ भी भय न हुआ। रात्रि दण्डवत् बीती और सब राजाओं ने अपने दूतों से इस विचित्र चरित्र को सुन अचम्भे में चित्रवत् चुप हो गये। जहाँ पर सदाशिवजी ऐसे प्रसन्न हैं, वहाँ हमारी क्या चल सकती है। यह विचारकर राजाओं ने हथियार पृथ्वी पर डाल दिये और राजा चन्द्रसेन के समीप जाकर उनके महाकाल के दर्शन किये। फिर गोपी के घर में जाकर गोपी की अति प्रशंसा की और उसके पुत्र के स्थापित किये हुये लिङ्ग को देखा और सभा करके सब राजाओं ने बालक से भेंट किया। इसको असंख्य धन दे गोपों का राजा बनाया। उस समय श्रीहनुमान्‌जी ने वहाँ प्रकट होकर सब को दर्शन दिया। सब राजाओं ने उठकर दण्डवत् कर स्तुति की। हनुमान्‌जी ने बालक को गोद में उठा लिया और उसके शरीर भर में हाथ फेरकर कहा कि हे सब राजाओं! चन्द्रसेन के ऊपर शिवजी प्रसन्न हैं। तुम कोई इनसे वैर न करना और महाकाल उसके ऊपर अति प्रसन्न हैं। शिव ने तेरसिव्रत का माहात्म्य प्रकट होने को यह सब चरित्र किया है। तुम सबको उचित है कि आज से तुम भी शिव के भक्त हो जावो। तेरसि व्रत सब व्रतों का राजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है। उसके समान और कोई व्रत नहीं है। मुख्य करके जब शनैश्चर के दिन तेरसि हो तो अतिश्रेष्ठ है। कृष्णपक्ष की त्रयोदशी अति पवित्र है। जो ऐसा योग पाकर कोई मनुष्य महाकाल की पूजा करे तो लोक में प्रसन्न रहकर अन्त में मुक्ति पावे। देखो, इस बालक ने इस कारण कि कृष्णपक्ष की चतुर्दशी शनैश्चर को शिवजी की पूजा की और ऐसे पद पर पहुँचा। इसकी आठवीं पीढ़ी में नन्दनाम अहीरों के राजा होकर उनके घर विष्णु अवतार लेंगे। आज से इस बालक का नाम श्रीकर होगा। तुम सब अपने-अपने घरों में जाकर तेरसि का व्रत रक्खो। शिव की पूजा में मन लगाओ और भस्मादि धारणकर प्रदोषव्रत में प्रदोषकाल के भीतर शिवजी की पूजा किया करो। फिर हनुमान्‌जी ने श्रीकर को शिवपूजा की विधि सुनाई और पहले नाम माहात्म्य सुनाकर भस्म धारण की रीति बताई। फिर रुद्राक्ष की महिमा सुनाकर अन्तर्धान हुये। सब राजा चन्द्रसेन से आज्ञा लेकर अपने-अपने घरों को चले गये। श्रीकर ब्राह्मण के साथ पूजा करता रहा और सदा तेरसि का व्रत करने लगा। चन्द्रसेन और श्रीकर शिव के भक्तों में प्रसिद्ध और तेरसि का व्रत करनेवालों में बड़े विख्यात हुये। उन्होंने तेरसि व्रत का माहात्म्य संसार में चारों ओर प्रसिद्ध कर दिया और दोनों लोक में प्रसन्न रहकर अन्तकाल में मुक्ति पाई। हे नारद! तेरसिव्रत की ऐसी बड़ाई है। जो इस कथा को पढ़े-सुनेगा, उसको अवश्य ही मुक्ति मिलेगी। यह त्रयोदशी का चरित्र सब बड़े मनोरथ देनेवाला है।

ग्यारहवाँ अध्याय।

नारद के पूछने पर भी ब्रह्मा त्रयोदशीव्रत को कहने लगे कि हे नारद! धन्य वही पुरुष है जो शिव का ध्यान करता है क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में प्रसन्न रहकर मरने के पीछे मोक्ष पाता है। शिव सबके गुरु, प्राण, मित्र, बान्धव और पिता हैं। जो मनुष्य सब धर्म छोड़ शिवजी को भजता है, उसके सब संसारी कर्म छूट जाते हैं। वही जिह्वा, कान, हाथ, आँख, शिर, पाँव हैं जो शिव के गुण कहें व सुनें वा उसको देखें अथवा पूजन दण्डवत् करें अथवा शिव के तीर्थों की यात्रा करें, वही शिव के भक्त हैं। शिव को भक्ति सबसे प्रिय है। मुख्य करके जो मनुष्य त्रयोदशी का व्रत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करता है, वह तो सब भक्तों से शिवजी को प्यारा है। इस व्रत के करने से शिव का प्रेम बढ़ता है। ऐसे मनुष्य को सदाशिव सर्व प्रकार की सिद्धि कृपा करते हैं। इस व्रत में केवल सदाशिवजी की पूजा प्रदोषकाल में अवश्य है। सिवाय शिवजी के और कोई उस समय उस व्रत में पूजा के योग्य नहीं क्योंकि केवल शिवपूजा से और सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं। जो मनुष्य प्रदोष व्रत करता है, वह किसी दशा और समय में दरिद्री नहीं हो सकता। वह मनुष्य सर्व सम्पदा पाकर उत्तम कुल और श्रेष्ठ सन्तान पाता है। जो मनुष्य प्रदोषकाल में शिव की पूजा नहीं करते, वे सदा दरिद्री रहा करते हैं। शिव की पूजा प्रदोषकाल में सबसे श्रेष्ठ है। उसके करने से अति आनन्द प्राप्त होता है। प्रदोषकाल में सब देवता शिवजी की सेवा में पहुँचते हैं। शिव शिवरानी सहित उत्तम आसन में स्थित होते हैं। सब देवता, विष्णु और हम शिव के आगे भजन करते हैं। इस तरह पर कि विष्णु मृदङ्ग बजाते हैं, हम करताल बजाते हैं, श्रीसरस्वती देवी वीणा बजाती हैं, लक्ष्मी गाना गाती हैं और तुम भी वीणा बजाते हो। इसी प्रकार नाना प्रकार की लीलाओं से शिव और शिवरानी को रिझाते हैं। बाकी और जितने देवता उपदेवता है, वह सब सेवा में खड़े रहते हैं। उस समय कोई देवता अपने लोक में नहीं रहता। सब शिवलोक में जाकर शिव की सेवा में लगे रहते हैं। इससे उचित है कि ऐसे समय में सिवाय शिवजी के और कोई देवता पूजा के योग्य न समझे। उस समय केवल सदाशिवजी की पूजा से और सब देवता प्रसन्न होते हैं। कोई देवता क्रोध नहीं करता। कदाचित् कोई मनुष्य उस समय किसी अन्य देवता की पूजा करता है तो वह देवता पूजनेवाले पर अति कोपित होता है। उचित है कि प्रदोषकाल में सब कार्यों को छोड़ शिवकी सेवा में जावे। कोई मनुष्य चाहे कैसा ही रोग और दुःख में पड़ा हो जो प्रदोषकाल में सदाशिव की पूजा करे तो वह अवश्य ही आनन्द पावेगा। इस पर हम एक विचित्र व्याख्यान कहते हैं। दक्षिण के देश में जो देश वैदर्भ के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ का राजा सत्यरथ नामी बड़ा धर्मात्मा हुआ। वह सत्यवक्ता, शीलवान्, क्रियावान्, दयावान्, और शिव का बड़ा भक्त था। उसने अति दया, कृपा,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धर्म और न्याय के साथ राज्य किया। उसके राज्य में कोई दुःखी न था। बहुत समय बीतने पर राजा शाल्व ने जो सत्यरथ का शत्रु था, सत्यरथ के नगर को घेर लिया। दोनों में बड़ा युद्ध हुआ जिसमें सत्यरथ मारा गया। उसकी सेना और रानी सब भाग गये। रानी रातभर भागती हुई प्रभात को पूर्व की ओर एक तालाब पर बैठ गई जहाँ उसके एक पुत्र शुभलग्न में उपजा। वह प्यास के वेग से नदी के तट पर गई। उसने चाहा कि पानी पी प्यास बुझाऊँ कि एक मगर ने उसको पकड़ निगला और वह बालक उस दशा में रोता हुआ क्षुधा-तृषा से विकल हुआ। उसके रोने-पीटने पर शिव को दया आई। सो जहाँ वह बालक पड़ा था, वहाँ एक ब्राह्मणी स्त्री जो विधवा थी, आई और बालक को अकेले देख आश्चर्य में हुई। कहा कि मैं नहीं जानती कि यह किस जाति का बालक है। उस समय सदाशिव ने भिक्षुक ब्राह्मण का रूप धर ब्राह्मणी के पास आकर कहा कि तुम संशय छोड़ इसको पालो। इस बालक से तुमको बड़ा सुख प्राप्त होगा। यह पहिले जन्म में राजा का पुत्र था। यह त्र्योदशी व्रत में नगर में उत्पात होने के कारण हमारी पूजा छोड़ नगर के समाचार लेने को चला गया। इसने अपने शत्रु को बाँध अपने हाथ से उसका शिर काट डाला और उसी अशुद्ध दशा में हमारी पूजा छोड़ भोजन किया। इससे यह वैदर्भ राजा के यहाँ उपज कर इस कुदशा को प्राप्त हुआ। हे ब्राह्मणी त्र्योदशीव्रत के त्यागने से किसी मनुष्य को सुख नहीं मिलता। इसकी माता ने पहिले जन्म में अपनी सवति को बड़े छल से मार डाला, इसी से उसको मगर ने नदी में खा डाला और तेरा पुत्र जो तेरे साथ है, इसने पूर्व जन्म में कुधान्य दान लिये, इससे ऐसी अवस्था हुई। तुमको उचित है कि दोनों बालकों से शिवकी पूजा कराकर संसारी सर्व प्रकार की धन सम्पत्ति पा अंत में मुक्त हो जावो। यह कह शिव ने अपने मुख्य रूप और लक्षणों से ब्राह्मणी को दर्शन दिया। ऐसा अनूप रूप सदाशिव का देख ब्राह्मणी ने दण्डवत् और स्तुति की। फिर शिव अन्तर्धान हो गये।

बारहवाँ अध्याय।

नारद के पूछने पर ब्रह्मा बोले कि सदाशिवजी के अन्तर्धान होने पर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ब्राह्मणी उस बालक को उठाकर अपने पुत्र सहित अपने घर आई और चक्र नाम नगरी में रहने लगी। वह दोनों बालकों को ले भिक्षाटन कर उनको पालती। जब दोनों कुछ युवा हुये तो उन्होंने दीक्षा पाकर सब विद्याओं को सुगमता से पढ़ा। एक दिन दोनों बालकों ने शाण्डिल्य मुनि को शिष्यों सहित शिव के गुण वर्णन करते हुये देखा और शाण्डिल्य मुनि से मन्त्र पा शिव की पूजा करने लगे। वे शाण्डिल मुनि के उपदेश के अनुसार प्रदोष व्रत करने लगे। जब चार मास बीते एक दिन दोनों स्नान के निमित्त नदी के तट पर गये और स्नान कर शिव बाना किये हुये अपने घर लौटे आते थे कि शिव प्रसन्न हुये और उनको मार्ग में धन का भरा हुआ घट मिला। उसको लेकर उन्होंने माता के सम्मुख रख दिया। माता ने कहा कि तुम दोनों बराबर बाँट लो। तब राजा के पुत्र ने कहा कि यह घट तुम्हारे पुत्र ने पाया है, मैं नहीं लूँगा। जब हम पर गिरिजानाथ कृपा करेंगे, तब हम भी असंख्य धन प्राप्त कर लेंगे। यह कह वह पूर्ववत् शिव-पूजा और त्र्योदशी व्रत करता रहा। यहाँ तक कि पूरा एक वर्ष बीता। संयोग से वे दोनों एक दिन बन में गये और एक गन्धर्व की लड़की को जो बहुत सुन्दरी थी, देखा। ब्राह्मण के बालक ने कहा कि हम इस कन्या के निकट नहीं जावेंगे क्योंकि व्रतधारी को स्त्रियों की संगति और उनके पास जाना निषेध है पर राजा का पुत्र उसके पास गया। दोनों प्रीतिसागर में डूब परस्पर प्रेम की वार्त्ता करने के उपरान्त अपना-अपना कुलाचार कहने लगे। गन्धर्व की कन्या ने कहा कि मैं कोद्रविक गन्धर्व की लड़की हूँ जो सब गन्धर्वों का राजा है। मैं गानविद्या भली भाँति जानती हूँ। मैंने शिव की कृपा से तुमको पाया है। यह कह मुक्ता की माला राजा के पुत्र को दी। राजपुत्र बोला कि मैं जाति पाँति से विहत और राज्य से हीन हूँ। मुझे क्यों अपना पति किया चाहती हो? तुमने अपने पिता से भी इस बात की आज्ञा नहीं पाई। गन्धर्व की लड़की ने कहा कि मैं अपने माता-पिता की आज्ञा पा तुम्हारी रानी हूँगी। तुम तीसरे दिन उसी स्थान पर आकर हम सबको देखोगे। यह कह पूर्ण प्रतिज्ञा कर दोनों अपने-अपने घर को लौट गये। दोनों अपने-अपने बड़ों को समाचार देकर प्रतिज्ञानुसार नियत स्थान पर जा पहुँचे। गन्धर्व ने दोनों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से कहा कि हम सदाशिव के यहाँ नाचने-गाने को गये थे। वहाँ सदाशिव ने हमसे कहा कि पृथ्वी में एक धर्मगुप्त नामी राजपुत्र माता-पिता हीन राज्यभ्रष्ट हो गुरु के उपदेश से त्रयोदशी का व्रत करता है। उसके सब पितर पापों से छूट हमारे लोक में आ गये हैं। तुमको आज्ञा दी जाती है कि तुम जाकर उसकी सहायता करो कि वह अपने शत्रु को जीत अपना राज्य पावे। इसलिये पहिले मैं यह लड़की तुम्हारे साथ ब्याहे देता हूँ। फिर तुम्हारे शत्रुओं का नाशकर तुमको तुम्हारा राज्य दिलाऊँगा कि तुमको शिव की सेवा का फल प्राप्त हो कि कितना शिव की पूजा अप्रमेय फल देती है। तुम अपनी रानी सहित संसारी भोग भोगकर फिर शिवपुरी को जाओगे। यह कहा और अपनी पुत्री राजपुत्र से ब्याह दी और शत्रुओं का नाश कर उसका राज्य उसे दिलाया। फिर गन्धर्व अपने देश को लौट गया और राजा ब्राह्मणी सहित जो माता के समान थी और उसका लड़का जो भ्राता के सदृश था और रानी और सब कुल परिवार सहित जन्म भर भोग भोगता रहा। हे नारद! यह त्रयोदशीव्रत चारों पदार्थों का दाता है। इसकी महिमा के पढ़ने-सुनने से दोनों लोक में आनन्द मिलता है।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्मा बोले कि अब हम एक और कथा त्रयोदशी के माहात्म्य की कहते हैं कि पूर्वकाल में देवताओं और दैत्यों में इन्द्र और वृत्रासुर ने परस्पर बड़ा युद्ध किया था। वृत्रासुर ने युद्ध में अपने शरीर को इतना बड़ा करके दिखाया कि सब देवताओं को सामना करने की शक्ति न रही। सब युद्धस्थान को छोड़ भाग गये और बृहस्पति की शरण में जाकर कहा कि महाराज! हमको वृत्रासुर के युद्धस्थान से भगा दिया। हमारा कोई उपाय उस पर नहीं चलता। अब वह उपाय बताइये जिसमें हमको विजय प्राप्त हो। बृहस्पति ने सदाशिव का ध्यान कर देवताओं से कहा कि यह वृत्रासुर पूर्वजन्म में चित्ररथ नामी एक राजा था जिसने विधिपूर्वक तेरसि-व्रत किया और शिव को अति प्रसन्न कर उसने धन-द्रव्य सब कुछ पाया पर शिवरानी के शाप से वृत्रासुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। वह शिव की कृपा से बड़ा बलिष्ठ और प्रतापवान् हुआ और गिरिजा के शाप के कारण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

देवताओं को दैत्य होने से दुःख देता है। जो तुम वृत्रासुर को जीता चाहते हो तो सदाशिव की पूजा करो और शिव का प्रदोषव्रत धारो। तुमको अवश्य ही जय मिलेगी क्योंकि प्रदोषव्रत करने से हर मनुष्य अपने मन का मनोरथ पा सकता है। प्रदोष व्रत के रखने की विधि यह है कि कार्त्तिक के प्रारम्भ से वर्ष के अन्त तक सब मासों में प्रदोषव्रत धारण करके और शुक्लपक्ष में जो शनैश्चर को प्रदोष पड़े, वह बड़ा ही फल का देनेवाला है। उसकी विधि हम वर्णन करते हैं। उचित है कि मध्याह्न को शिव का ध्यान करे। तिल और आमलों के पानी से नहावे और शिव की पूजा बहुत वस्तु चढ़ाकर करे। फिर सन्ध्या के समय प्रदोषकाल में शिवलिङ्ग की पूजा किसी स्थान पर स्थापित हो स्नान कर मौन धारण करे और गोघृत के बहुत से दीपक जलावे। ये दीपक हजार से लेकर एकसौ तक भी उचित् हैं, यदि न हो सके तो बीस दीपक अवश्य जलाने चाहिये। सर्व प्रकार की सामग्री से और उत्तमोत्तम नैवेद्य आदि प्रेम के साथ शिव को भेंट दे और शिव की शतरुद्री सुने। दो सौ बेर सदाशिव की परिक्रमा करे। हे इन्द्र! इस उपाय से तुम सब तीर्थ व्रत करो और सदाशिव को प्रसन्न करने के उपरान्त दैत्यों से सामना करो, तुमको अवश्य जय मिलेगी। यह सुन इन्द्र देवताओं सहित अति प्रसन्न हुये और गुरु की आज्ञानुकूल प्रदोष व्रत करने लगे और शिव को प्रसन्न समझ वृत्रासुर के साथ युद्ध कर वृत्रासुर को वज्र से मारा और सब देवताओं को अति आनन्द प्राप्त हुआ। हे नारद! तुमको एक और तेरसि व्रत की कथा सुनाते हैं जिसके करने से बड़ा आनन्द मिलता है, अर्थात् त्रयोदशी व्रत धारण कर विधि से शिव की पूजा करे और चाँदी का बैल बनवा कर शिव और पार्वती की प्रतिमा सोने की बराबर इस तरह पर तय्यार करावे कि दश भुजा, पाँच मुख और तीन नेत्र होंवे। ताँबे के कलश में उन मूर्तियों को स्थापित करे और पञ्चरत्न के फल और फूल लगावे। चाँदी या वंशपत्र अथवा मिट्टी का घड़ा रखकर दूसरा कलश स्थापित करे जिसको वस्त्र माला और भूषणों से सुशोभित करे और विधिपूर्वक षोडशोपचार कर तन-मन से शिव पूजा करे। इसी तरह चारों प्रहर रात्रि में जागरण कर उत्सव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करे और शिवकी बहुत प्रकार से दण्डवत् और स्तुति करे। जब भोर हो जावे तो फिर स्नान करके शिव के पूजने के उपरान्त होम करे और गुरु की पूजा करे। फिर विसर्जन कर ब्राह्मणों को स्वादिष्ट भोजन करावे और फिर उनकी आज्ञा पा आप भी भोजन करे। इसी प्रकार जो मनुष्य प्रदोषव्रत करे तो वह मनोरथ पा सकता है। उसको कोई संसारी दुःख नहीं व्यापता और अन्त में शिवलोक को चला जायेगा। दूसरी प्रदोषव्रत की यह विधि है कि जब त्रयोदशी को शनैश्चर पड़े और शुक्लपक्ष हो तो सन्तान की प्राप्ति के निमित्त त्रयोदशी व्रत का आरम्भ करे। मङ्गल के दिन तेरसि व्रत भी अति शुभदायक है; कदाचित् तेरसि शुक्र को हो उसके रहने से स्त्री और भाग्य की वृद्धि होती है। कदाचित् रविवार को त्रयोदशी पड़े तो उसके रहने से आयु वृद्धि और रोग की शान्ति होती है। उचित तो यह है कि एक वर्ष तक बराबर हर मास में दो बेर प्रीतिपूर्वक त्रयोदशीव्रत करे और सङ्कल्प करके निश्चयपूर्वक सन्ध्या के समय सदाशिव का पूजन करे। चारों ओर दीपक जला अपना मनोरथ शिव के समीप कहे। नन्दी के अण्ड-कोश को देख फिर उसके दोनों सींगों के मध्य अवलोकन करे और पुच्छ को देख अपने सब पापों से शुद्ध हो जावे; क्योंकि संसार में जितने सब तीर्थ हैं वह सब बैल के अण्डकोश में स्थित हैं। फिर उस बैल को दाना चुगा देवे और हर प्रकार उसकी सेवा करे। फिर ब्राह्मणों को यथाशक्ति आप दक्षिणा दे और मौन हो ब्राह्मणों को भोजन करावें और आप लवणरहित भोजन करे अथवा खीर खावे। निदान एक वर्षपर्यन्त इसी प्रकार तेरसिव्रत करे अथवा वर्षभर तक शनैश्चरवार त्रयोदशी को प्रदोषव्रत कर सब व्रतों का फल पावे तो उसको कोई दुःख नहीं दे सकेगा। हे नारद ! यह प्रदोषव्रत कई प्रकार का है जो नाना प्रकार से भक्त को अतिआनन्द देता है। अब और त्रयोदशीव्रत की युक्ति सुनिये अर्थात् जिस तरह स्त्रियों को यह व्रत करना उचित है—मार्गमास की शुक्लपक्ष में त्रयोदशी व्रत जो अतिपवित्र है प्रारम्भ करे। उसमें चँबेली की दँतवन कर शिवपूजा करे और मरुवा के पुष्प अति प्रेम से शिवजी के ऊपर चढ़ाकर नारङ्गी का अर्घ्य दे। फेनी चिरौंजी की नैवेद्य लगा और अन्य

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

फल आदि और स्वादिष्ट भोग सामने रक्खे और जैसा चाहिये पूरा पूजन करे। इस मास की पूजा में शिव का अनङ्ग नाम है। रात्रि को मधु भोजन करे दूसरे मास में उदुम्बर अर्थात् गूलर की दँतवन कर जाती सुगन्धित पुष्प शिव के ऊपर चढ़ावे और दाडिम अर्थात् अनार का अर्घ्य दे और अशोकवर्ती की नैवेद्य लगावे। आप श्वेत चन्दन खावे। इस मास में शिवजी का नाम नाटेश्वर जानना चाहिये। तीसरे मास अर्थात् तपमास में विष्णुक्रांता की दँतवन करके कुन्द के पुष्प शिव पर चढ़ावे और बीजपूर का अर्घ्य देकर पौंडे की नैवेद्य लगावे। इस मास में शिवका नाम योगेश समझना चाहिये। आप मूली खावे और शिवजी का ध्यान करे। चतुर्थ मास में अनार की दँतवन कर धतूरे के पुष्प शिव पर चढ़ावे और श्रीफल अर्थात् बेल का अर्घ्य दे। इस मास में शिव का नाम वारेश है। रात्रि को कङ्कोल भोजन करना चाहिये। पाँचवें मधु मास में मल्लिका अर्थात् बेले की दँतवन कर मदन पुष्प अर्थात् धतूरा शिव पर चढ़ावे और उसी का अर्घ्य देकर खर्जुक अथात् खजूर की नैवेद्य लगावे। शिव का नाम इस मास में भव जानकर आप रात्रि के समय कर्पूर खावे। छठे राधमास में लटजीरे की दँतवन करके उत्पल का अर्घ्य दे और शिव का महारूप जानकर चँबेली के पुष्प चढ़ावे। पट्टक नाम अन्न की नैवेद्य लगावे तथा व्रती स्त्री आप रात्रि को जातीफल अर्थात् जायफल खावे। सातवें में सहदेई की दँतवन कर बकुल पुष्प शिव पर चढ़ावे और श्रीफल का अर्घ्य और मधु की नैवेद्य लगावे। शिव का प्रद्युम्न नाम जानकर आप रात्रि को लवङ्ग भोजन करे। आठवें शुचि अर्थात् आषाढ़मास में नारङ्गी की दँतवन करके कदम्ब के पुष्पों से शिवपूजा करे और नारियल का अर्घ्य दे दधि की नैवेद्य लगावे। शिव का नाम उमापति जान रात्रि को तिल खावे। नवें श्रावणमास में जाती की दँतवन कर कमल पुष्प शिव पर चढ़ावे और जामुन के फलों का अर्घ्य देकर दूध की नैवेद्य लगावे। शिव का नाम शूलपाणि जानकर रात्रि को गन्ध पूप खावे। दशवें भाद्रपदमास में कङ्कोल की दँतवन कर चम्पक के फूलों से शिवजी की पूजा करे और सुपारी का अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे। शिव का सदैव नाम जानकर अगुरु आप भोजन करे। ग्यारहवें

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुवारमास में कंकेत की दँतवन कर कनेर के पुष्प शिवजी के ऊपर चढ़ावे। कर्कोटीफल का अर्घ्य देकर सितमुण्डक की नैवेद्य लगावे और आप व्रती स्त्री कननतोय अर्थात् कुम्हड़ा खावे। बारहवें कातिक मास में ऊर्ज्जकदम्ब की दँतवन कर रक्त उत्पल शिवजी पर चढ़ावे और कमठाफल का अर्घ्य देकर सोहारी की नैवेद्य लगावे। शिवजी का नाम जगदीश्वर जानकर व्रती स्त्री रात्रि को मदनफल अर्थात् मैना फल खावे। इस प्रकार स्त्री त्रयोदशी व्रत कर सिद्धि पावे, इस बात में कुछ संशय नहीं। जब एक वर्ष इस प्रकार व्रत करके पूर्ण हो जावे तो फिर व्रत का उद्यापन करे। शिवजी की पूजा कर होम करे और अपने आचार्य को दान दे और जागरण करे। इस कथन के सुनने पढ़ने से दोनों लोक में आनन्द मिलता है। प्रदोषव्रत-माहात्म्य पूर्ण हुआ।

चौदहवाँ अध्याय।

एकादशीव्रत के माहात्म्य का आरम्भ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम एकादशी व्रत का माहात्म्य वर्णन करते हैं जो व्रतराज सर्वपापों का नष्ट करनेवाला है। यह एकादशी तिथि सब तिथियों में श्रेष्ठ और उत्तम है। हे नारद! शिवजी को दोनों पक्षों की एकादशी प्रिय है। इनमें जो मनुष्य व्रत रखता है उसपर शिवजी अति प्रसन्न होते हैं। कृष्णपक्ष की एकादशी में भोजन करने की इस तरह आज्ञा है कि जब प्रदोषकाल आवे तब शिवजी की पूजा कर प्रसन्न होवे। निदान त्रयोदशी व्रत के समान इस व्रत को समय संध्या को शिवजी की पूजा करके भोजन करे पर शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्न जल रहित व्रत रक्खे। विधि यह है कि प्रभात को उठ नियम से स्नान कर शिवजी की पूजा करे। दिन भर शिवजी के काम और सामग्री के इकट्ठा करने में बिता दे। संध्या के समय फिर स्नानकर शिवजी की पूजा करें। हर प्रकार शिवजी को रिझावे और अति प्रसन्नता से उत्सव करके अपने गालों को बजावे। कृष्णपक्ष में भोजन करके शुक्लपक्ष में इस व्रत को निर्जल रहना उचित है। निर्जल रहने ही से पूर्णफल मिलता है और आधा फल

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

दूध पीने से प्राप्त होता है। निदान किसी प्रकार व्रत करे क्योंकि व्रत के छोड़ने से मनुष्य की भलाई नहीं है। यह व्रत शिवजी को अति प्रिय है इसके त्याग करने से बुराई है। इस व्रत के करने से सर्व मनोरथ पूरे होते हैं। इस व्रत का करनेवाला मनुष्य संसार में भोग भोगकर अन्तकाल में शिवपुरी पाता है। जो इच्छा हो वही पूरी होती है। इस पर हम एक कथा कहते हैं कि सूर्यवंशी राजा मान्धाता ने यह व्रत किया था। संयोग से अयोध्या में काल पड़ा और अन्न न उपजने से प्रजा अति दुःखी हुई, सो सब प्रजा इकट्ठी होकर राजा की डेवढ़ी पर आई और विनती की कि हे महाराज, पृथ्वी-पाल, धर्मात्मा ! क्यों अकाल पड़ा, कौन ऐसा पाप हुआ है जिससे यह दुःख मिलता है ? अयोध्या के सब मनुष्य भूख के मारे मरते हैं, कोई उपाय नहीं सूझता; आप महाराज हो कोई उत्तम उपाय बताओ। हम तुम्हारी शरण में आये हैं, हम सबको बचाओ। मान्धाता राजा अपनी प्रजा के दीन वचन सुनि अति विकल हुआ और ब्राह्मण और सतपुरुषों को बुला लज्जा से शिर झुकाये बोला कि आप इस बात को बतावें कि क्यों हमारे अवध देश में वर्षा नहीं होती। ऐसा उपाय बतावो जिससे वर्षा होवे। ब्राह्मणों ने सोच विचार कर कहा कि हमको कोई कारण वर्षा न होने का मालूम नहीं होता पर हम वर्षा होने की युक्ति बताते हैं। यह कह उन्होंने बहुत ही उपाय बताये जिनको राजा ने किया पर तो भी वर्षा न हुई। तब राजा आश्चर्य में हो चिन्तित हुआ और निराश हो एक वन को चला गया। वहाँ एक तपस्वी था जिसका नाम लोमश था जो बड़ा विज्ञानी और शिवजी का भक्त था। राजा उनको सिद्ध जान उनके आगे खड़े रहे और दण्डवत् कर हाथ जोड़ विनय की कि हे मुनीश्वर, सर्वज्ञ ! अयोध्या में वर्षा नहीं होती, प्रजा महादुःखी है यद्यपि मैं असंख्य उपाय कर चुका हूँ पर पानी न बरसा। अतः विकल होकर वन में आया हूँ और भाग्य से आपके चरणों के दर्शन हुये। आप कृपा करके पानी बरसने की युक्ति मुझे बतावें। यह सुन लोमश ने राजा से कहा कि शिवजी की कृपा से मैं वर्षा की युक्ति बताता हूँ। तुमको उचित है कि अपनी प्रजा समेत शिवजी को स्मरण कर व्रत करो। इस व्रत में शिवजी की पूजा करके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

भोजन करना चाहिये। राजा ने बिदा होकर अपने राज्य में आ एकादशी व्रत धारण किया और अपनी प्रजा से यही व्रत रखाया। तब इतनी वर्षा हुई जिससे सबको आनन्द हुआ और अन्न बहुत उपजा। हे नारद ! इस व्रत के करने से इसी प्रकार के मनोरथ तुरन्त प्राप्त होते हैं और इस व्रत के करने से कोई दुःख नहीं रहता। इसी प्रकार राजा मुचुकुन्द, राजा जनक और चक्रवर्ती राजा सगर ने यही व्रत कर क्या-क्या पदार्थ नहीं पाये। अब श्रीरामचन्द्र की कथा सुनो—दशरथकुमार श्रीरामचन्द्र बड़े प्रतापी हुये, उन्होंने भाग्यवश वनवास अङ्गीकार कर विचित्र चरित्र किये। जिनको सुनकर रावण सीता महारानी को उठाकर लङ्का में ले गया। निदान रामचन्द्र उठते बैठते सीता की खोज में विकल हो पम्पापुर में पहुँच हनुमान्जी की सहायता से बड़ी वीर सेना के साथ समुद्र के तटपर आये; पर जब समुद्र का पार उतरना कठिन जाना तो सेना को समुद्र तट पर खड़ी कर इधर-उधर फिरने लगे और लोमश ऋषि को तप करते हुये पाकर उनके समीप गये। दण्डवत् और प्रणाम के उपरान्त सब वृत्तान्त कह सुनाया और कहा कि समुद्र पार जाना अति कठिन है। आप कोई उपाय बतावें कि हम सेना सहित समुद्र से उतर रावण को नष्ट करें। यह रामचन्द्र का वचन सुन लोमश ने शिव माया को जान हँस दिया और रामचन्द्र से कहा कि पहिले तो तुम विष्णु के अवतार दूसरे शिव के भक्त तुम्हारे मनोरथ पूरे होने में क्या सन्देह है ? तुम सदा शिव का ध्यान करो वे बिगड़े हुये सब काम ठीक करेंगे। तुम्हारे समान और कोई शैव नहीं, तुमको यह दुःख हुआ है, क्योंकि जब तुमने मनुष्य तनु धारा तो मनुष्य को अवश्य कष्ट होता है। इसी कारण आपको मनुष्य होने से यह दुःख हुआ है। तुमको चाहिये कि तुम एकादशी व्रत धारण करो और शिव की पूजा कर उस दिन फलाहार करो शिव का शिवरानी समेत ध्यान करो और शुक्लपक्ष की एकादशी में अन्न जल रहित व्रत करो इससे तुमको सिद्धि प्राप्त होगी। एकादशी के समान दूसरा व्रत नहीं है जैसा कि वेद और पुराण गाते हैं। यह सुन रामचन्द्र लोमश से बिदा होकर अपनी सेना में गये। लोमश की शिक्षा के अनुसार एकादशी व्रत को आरम्भ किया और दृढ़सेतु बाँध

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवलिङ्ग स्थापित कर समुद्र पार उतर रावण को मार सीता को पाया। हे नारद! यह एकादशी व्रत ऐसा फल देनेवाला हैं और यह व्रत विष्णु और शिव दोनों का है। इसके करने से विष्णु और शिवजी दोनों प्रसन्न होते हैं। यह व्रत सब देवताओं और मुनीश्वरों को बहुत प्रिय है। इसके माहात्म्य के सुनने से दोनों लोक में आनन्द प्राप्त होता है। एकादशी माहात्म्य वर्णन हुआ।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

अष्टमी का माहात्म्य व व्रत।

ब्रह्माजी बोले, हे नारद! अब अष्टमी व्रत का माहात्म्य सुनो। सब महीनों की अष्टमी तिथि को यह व्रत करना उचित है। सोमवार व्रत के समान इस व्रत को विधि से करे। केवल भादों मास में कुछ थोड़ा अन्तर है और शेष दोनों व्रतों के लिये एक ही विधि है। भादों मास के शुक्लपक्ष में शिवपूजा की विधि इस तरह पर है कि प्रदोषकाल में दूब लाकर शिवजी की पूजा करे तो पूजन करनेवाले का एक भी पाप नहीं रह जावेगा। उसके तन मन दोनों तेजवान् हो जावेंगे। फूल, फल, दूब और बिल्वपत्र शिव के ऊपर चढ़ावे और अर्घ्य, नैवेद्य, दधि, अक्षत और लावा देवे। शिव को प्रसन्न होकर दण्डवत् करे और प्रेम से शिव को रिझावे, फिर ब्राह्मणों को उत्तम भोजन करावे, पर क्षार और नोन का भोजन न तो आप खावे और न ब्राह्मणों को भोजन करावे। ब्राह्मणों को भोजन कराने के अनन्तर उनको दान देकर बिदा करे। हे नारद! जो इस प्रकार भादों की अष्टमी का व्रत करे तो उसके सम्पूर्ण दुःख दूर हो जावें; यहाँ तक कि ब्रह्महत्या भी इससे नष्ट हो जावे। सर्व मनोरथ पूरे होवें और संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में शिवपुरी प्राप्त हो, असंख्य जन्मों के पाप नष्ट हो जावें। यह दूर्वाष्टमी व्रत शिव को अति प्रिय है जिसके करने से कोई पाप नहीं रह जाता। चारों वर्ण इस व्रत के करने का अधिकार रखते हैं। सब वर्णों की स्त्रियों को भी यह व्रत करना आवश्यक है। यह ऊपर की लिखी हुई युक्ति हमने भाद्रपदमास की अष्टमी के लिये वर्णन की, अब और महीनों की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अष्टमी व्रत का हम वर्णन करते हैं–अगहन मास के कृष्णपक्ष में निर्जल रहकर इस व्रत को करे। इसका नाम कालाष्टमी व्रत है। इसके करने से भक्त को मुक्ति मिलती है। इस दिन दोपहर के समय भैरव ने जन्म लिया था। इससे यह व्रत भैरव व्रत के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसके करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं। यह भैरव का व्रत अति आनन्ददायक है, इसको कर असंख्य भक्तों ने मुक्ति पाई है। यह व्रत शिव को बहुत प्रिय और सब व्रतों का राजा है। सबको चारों फल का देनेवाला है और जो मनुष्य लोक परलोक में अप्रमेय आनन्द की इच्छा रक्खे उसको यह व्रत करना आवश्यक है क्योंकि इस व्रत के करने से भैरव अति प्रसन्न होते हैं। प्रकट है कि जब भैरव अति प्रसन्न हैं तो संसार में वह कौन वस्तु है जो व्रत करनेवाले को अलभ्य हो। सो अवश्य यह व्रत करे, मध्याह्न को बड़ा उत्सव करे और चारों प्रहर रात को शिव की पूजा करके जागरण कर रात बिता दे जब प्रभात हो जावे तब स्नान कर शिव की पूजा करे और ब्राह्मणों के बालवटुक अर्थात् बहुत छोटे बच्चों का पूजन करके आठ बालकों को भोजन करावे। दूसरे ब्राह्मणों को भी भोजन करावे और सामर्थ्य भर आप उनको दक्षिणा देकर दण्डवत् करे। उन सबके बिदा हो जाने के अनन्तर आप कुल और मित्रों सहित शिव का स्मरण कर भोजन करे। यह भैरवव्रत एक वर्ष तक करना चाहिये। इसके करने से चारों पदार्थ मिलते हैं और भैरव सदा शिव के पूर्णस्वरूप हैं। हम भैरव की महिमा का एक इतिहास वर्णन करते हैं कि एक दिन सब देवता और मुनीश्वर इकट्ठे बैठकर कहने लगे कि परब्रह्म कौन है? इस बात में तकरारकर इस बात के पूछने को इकट्ठे हो हमारे पास आये और कहाकि सबमें कौन परब्रह्म, अनादि, अनन्त, अविनाशी, सर्वसृष्टि का राजा, निर्गुण, सगुण स्वरूप है जिसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता, जिसको वेदान्ती सच्चिदानन्द कहकर मानते हैं तथा जिसके भय से शेष धरती को अपने शिर पर रक्खे हुये हैं, जिसकी आज्ञा से सूर्य प्रति दिवस संसार में उजियाला करते और चन्द्रमा तथा नक्षत्र आकाश पर स्थित हैं। यह प्रश्न सुन हमने कहा कि ऐसा मनुष्य जो तुम पूछते हो, हम हैं दूसरा कोई नहीं, क्योंकि ब्रह्म और स्वायम्भुव आदि हमारे नामों से यह बात सूचित है। हे नारद ! शिव की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

माया से मैंने ऐसे वचन कहे। वह माया बड़ी बलवान् है यह सुन विष्णु हमसे अप्रसन्न हुये और उन्होंने अपने को ब्रह्म ठहराया और कहा क्या कोई मनुष्य अन्धा होकर नयनसुख के नाम से प्रसिद्ध नहीं होता व कुबेर का नाम पाकर क्या भीख नहीं माँगता है। तुमने वेद के अर्थ नहीं समझे। इस तरह हम दोनों ने बड़ा झगड़ा किया और वेदों पर भी झगड़ा पड़ा। वेदों ने हमारे पूछने के अनुसार कहा कि परब्रह्म केवल सदाशिव हैं, क्योंकि वे तीनों गुणों से भिन्न कहाते हैं, उन्हीं के अङ्गों से तुम भी दोनों उपजे हो। यह सुनकर हम दोनों वेदों के ऊपर अति कुपित हुये। फिर प्रणव ने देवताओं के रूप से आकर कहा कि हे विष्णु और ब्रह्मा ! तुम वेद के वचन को असत्य जानते हो, वेद सत्य हैं। उनमें झूठ का कुछ भी लेश नहीं। तुम भली भाँति इस बात को जानो कि परम शिव का कुछ रूप नहीं हैं, परन्तु परम शिव की लीला, रूप बहुत हैं जो अपने किसी भक्त के निमित्त प्रकट होकर असंख्य चरित्र करते हैं। उसी परम शिव ने हर होकर कैलाश में वास किया और शक्ति सहित नाना विधि की लीलाएँ कीं उनके चरित्र कौन जानता है; जो उनके मन में आता है वह करते हैं। तुम संसारी जीवों के समान सत्य मार्ग छोड़ संशय में पड़े हो। यह कैलाशवासी शिव अपनी इच्छा के अनुसार कभी शरीर धारते और कभी निश्शरीर होकर एक समय योगी और दूसरे समय में भोगी हो जाते हैं। कभी नग्न हो तन में भस्म धारण करके ध्यान में बैठ जाते हैं, कभी चक्रवर्ती राजाओं के समान सभा साज उन पर आज्ञा चलाते हैं। और सब देवता उस सभा में आकर दोनों शिव और शिवरानी को रिझाते हैं। लक्ष्मी शिव के गुण गाती हैं हे विष्णो ! तुम मृदङ्ग बजाते हो, तुम–ब्रह्मा ! ताल देते हो, सरस्वती वीणा अलापती हैं, इन्द्र भी बहुत सोच समझ वीणा बजाते हैं और अन्य सब शिव का भजन प्रसन्न होकर करते हैं। यद्यपि ऐसे-ऐसे वचन प्रणव ने दोनो को समझाये पर ब्रह्मा और विष्णु कब मानते थे क्योंकि शिवजी की माया ऐसी न थी जो उनको यह बात समझने देती। ऐसे समय में शिव ने अनुग्रह कर यह चरित्र किया।

—:०:—

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सोलहवाँ अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! एक ज्वाला हमारे और विष्णु के सामने प्रकट हुई जिसके प्रकाश से सर्व पृथ्वी और आकाश पूरित हुये। उस ज्वाला के मध्य में से एक मनुष्य प्रकट हुआ जिसको देख हमने अपने पञ्चम मुख से कहा कि यह कौन है जो हमारे तुम्हारे बीच में उपजा है। वह मनुष्य नील-लोहित अङ्ग भाल में चन्द्रमा, हाथ में त्रिशूल और भूषणों की जगह सर्प पहिने था। हमने कहा कि तुम तो वही हो जो हमारे दोनों भवों के बीच से उपजे थे। तुमको हमने रोते देखकर तुम्हारा नाम रुद्र रक्खा था। यह सुनकर रुद्र अर्थात् सदाशिव अति कोपित हुये और एक मनुष्य को उपजाया जो भक्तों को प्रसन्न करनेवाला और शत्रुओं को दुःख देनेवाला था। वह काल के समान प्रकट हो कालराज के नाम से प्रसिद्ध हुआ है। जो कि विश्व के भरण की शक्ति रखता था, इससे भैरव उनका नाम पड़ा और जो कि उनसे काल ने भी भय खाया, इससे कालभैरव के नाम से प्रसिद्ध हुआ और दुःखों के समूह दूर करने से आमर्दक और भक्तों के पाप दूर करने और भक्तों के मुक्त करने से उनका पापभक्षक नाम हुआ। इसी प्रकार और नामों से भी प्रसिद्ध हुये। शिव ने उनसे कहा कि इस प्रजा के उपजानेवाले ब्रह्मा ने हमारी निन्दा की है। इसको दण्ड दो कि संसारी जीवों को इसकी शिक्षा हो। तुमको हमने अपनी काशीपुरी का कोतवाल नियत किया। यह सुनकर भैरव ने हमारे पाँचवें शिर को जिससे शिव की निन्दा की थी, काट डाला। तब शिवजी ने भैरव की ब्रह्महत्या दूर करने को यह युक्ति बताई जैसा कि और खण्डों में वर्णन हो चुकी है। यह कहकर शिव तो अन्तर्धान हो गये और भैरव ने भी हमारा शिर हाथ में लिये हुये तीन लोक की परिक्रमा की। पर उस स्त्री ने जो ब्रह्महत्या होकर भैरव के पीछे लगी थी, पीछा न छोड़ा। निदान भैरव सर्व स्थान घूमकर सब देवताओं के लोक में गये। जब वे विष्णु लोक में गये तब विष्णु ने बहुत बहुत समझाया कि महाराज! तुमको हत्या नहीं लग सकती। तुम तो शिव स्वरूप के सदृश वरन् शिव स्वरूप ही हो। तुम्हारे कण्ठ में ब्रह्मा के शिरों की माला विराजमान है जो अगले कल्पों के ब्रह्मा थे। क्या उस समय तुमको ब्रह्महत्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नहीं लग सकती थी। तुम आप लीला करके अपने को पापी दिखलाते हो। तुम्हारे स्मरण से औरों की ब्रह्महत्या दूर हो जाती है। तुमको ब्रह्महत्या क्योंकर लग सकती है। जब तुम प्रलय कर सर्व सृष्टि का नाश कर देते हो तब तो तुमको कोई पाप नहीं लगता। अब केवल ब्रह्मा के शिर काटने से अपना ऐसा स्वरूप बनाये हुये फिरते हो। फिर विष्णु ने ब्रह्महत्या को जो स्त्री के रूप में थी, बुलाकर बहुत समझाया कि तू भैरव का पीछा छोड़ दे। उसने कहा कि मेरा क्या अपराध है। यह सदाशिव की आज्ञा है। फिर भैरव अपनी भक्ति विष्णु को दे आगे चले। जब मुक्तिपुरी काशी में भैरवजी आये तब वह ब्रह्महत्या आपही गुप्त हो गई। हे नारद! काशी की महिमा कोई वर्णन नहीं कर सकता। देखो, ब्रह्महत्या तीनों लोक की परिक्रमा करने पर भी दूर न हुई और काशी में पहुँचते ही भाग गई। काशी में कपाल-मोचन तीर्थ सबसे अधिक फल देनेवाला है जिसके केवल स्मरण से बड़े-बड़े पाप नष्ट हो जाते हैं। वहाँ तर्पण करने से ब्रह्महत्या तुरन्त नष्ट हो जाती है। सब वेद और पुराण कहते हैं कि इसके समान दूसरा तीर्थ नहीं है। वहाँ भैरव सदाशिव विराजमान हैं जिनकी सेवा से सब दुःख दूर हो जाते हैं। जो कोई मनुष्य वह भैरव का व्रत काशी में भैरव के पास जाकर करे, उसके सब पाप दूर हो जावें। उस दिन जो कोई भैरव की पूजा करे तो एक वर्ष के विघ्न नष्ट हो जावें। सप्तमी, चतुर्दशी, रविवार और भौमवार को जो भैरव के स्थान में जावे, उसके सब पाप दूर हो जावें। जो मनुष्य भैरव की आठ परिक्रमा करे, उसके तीनों प्रकार के पाप दूर हो जावें। सिवाय इसके जो बिना काशी के और दूसरे स्थान में भी यह भैरव का व्रत कोई मनुष्य करेगा तो भी उसको बड़ा फल होगा। सब शिव के भक्तों को उचित है कि अगहन कृष्णपक्ष की अष्टमी को यह व्रत करें और भैरव के व्रत की कथा सुनें तथा दूसरों को सुनावें तो बड़ी पुण्य पाकर मुक्ति पावेंगे। भैरवअष्टमी का व्रत पूर्ण हुआ।

सत्रहवाँ अध्याय।

सोमप्रदोषव्रत का माहात्म्य।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! अब हम सोमप्रदोषव्रत की महिमा वर्णन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करते हैं जिसके सुनने से इस व्रत के करने का निश्चय बढ़ता है। इस व्रत के करने से दोनों लोक के मनोरथ पूर्ण होते हैं। इस व्रत को सब स्त्री पुरुष कर सकते हैं। यह सोमवार का व्रत शिव को अति प्रिय और अन्य व्रतों का राजा है जिसके करने से दोनों लोक के मनोरथ मिलते हैं। करोड़ों जन्म के पाप दूर हो जाते हैं। उचित है कि सोमवार का व्रत दिनभर करके सन्ध्या के समय शिव की पूजा करे। यह व्रत सोमप्रदोष कहलाता है। इस व्रत में फलाहार करना चाहिये। दिन भर अन्नजल रहित रह सन्ध्या को शिव की पूजा करे इसमें त्रयोदशीव्रत के समान सब बातें करनी चाहिये और प्रत्येक प्रकार वही त्रयोदशीव्रत के उपचार करने चाहिये। उचित है कि अति पवित्रता से इन्द्रियों को जीत विधिपूर्वक बड़े प्रेम से शिव की पूजा करे और वेद के अनुसार और लौकिक अर्थात् पुराण और तन्त्रादि के मार्ग से भी शिव की पूजा उचित है और इतना ध्यान लगावे कि दूसरे को न देखे। सोमशिव का भजन करे और एक ही भक्ति का नियम इस व्रत में करना चाहिये। यह व्रत चाहे किसी तरह से करे सदाशिवजी की दया का कारण है। सो भाग्यहीन और सन्तानहीन निर्धन सब अपना मनोरथ पाते हैं। सिवाय इसके जिस मनोरथ के लिये यह व्रत करे, निस्सन्देह वह इच्छा पूरी हो जावे। वाजपेय और अश्वमेधादि यज्ञ मानो कर चुका और संसार में प्रसन्न रह अन्त में जब शिवपुरी को जाता है, तब वहाँ से फिर कभी वह च्युत नहीं होता। वरन् वह सदा वहाँ स्थित रहता है। यह व्रत चारों वर्णाश्रम, चाहे वह पुरुष हो व स्त्री, सब कोई कर सकता है। विधवा स्त्री अथवा बिन ब्याहा पुरुष भी इस व्रत के करने का अधिकार रखते हैं। अब हम एक इतिहास वर्णन करते हैं जिससे जानोगे कि इसी व्रत में चित्राङ्गद मृत्यु से बचा रहा। उसकी स्त्री ने यही व्रत कर अपने पति सहित शिवपुरी में स्थान पाया कि आर्यावर्त्त देश में एक चित्र-वर्मनाम राजा बड़ा धर्मात्मा, यज्ञ करनेवाला, संसार के सब भोगों से भर-पूर शत्रुओं पर प्रबल और शिवजी का बड़ा भक्त हुआ। उसने प्रेमपूर्वक शिवजी का भजन किया। उसके बहुत से सुन्दर पुत्र उपजे। बहुत काल के उपरान्त उसके कन्या उपजी जो बहुत सुन्दरी थी। उसके उपजने से राजा ने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अति प्रसन्न हो दान मान से ब्राह्मणों को धनी कर दिया। जैसे हिमाचल को गिरिजा के उपजने से आनन्द हुआ था, उसी प्रकार राजा चित्रवर्म को उस कन्या के उत्पन्न होने से आनन्द प्राप्त हुआ। राजा ने ज्योतिषी को बुलाकर कन्या का हाल पूछा। ज्योतिषी ने कहा कि इस तुम्हारी कन्या का नाम सीमन्तिनी है। यह उमा के समान शुभ, दमयन्ती के समान सुन्दरी, वाचालता और बुद्धि में वाणी के सदृश, कला के जानने में लक्ष्मी के समान, देवताओं की माता अदिति के बराबर सन्तानवती, तेज में सूर्य के समान और सुन्दरता में चन्द्रमा के सदृश होकर दश हजार वर्ष पर्यन्त अपने पति के साथ भोग भोगेगी। इसके आठ पुत्र उपजेंगे। यह सुन राजा ने ज्योतिषी को बहुत धन दे विदा किया। राजा और रानी दोनों महा प्रसन्न हुये। इतने में एक बुद्धिमान् ब्राह्मण निर्भय हो कहने लगा कि हे राजन्! यह तुम्हारी लड़की चौदह वर्ष में विधवा हो जावेगी, हम सत्य कहते हैं। पर शिवजी इस दुःख के दूर करनेवाले हैं। यह सुनकर राजा रानी समेत शोकसागर में डूबकर मूर्च्छित हुये। फिर धैर्य धर सदाशिवजी को स्मरण किया और चिन्ता और मन से दुःख दूर कर प्रत्येक मनुष्य की प्रतिष्ठा के अनुसार आदर से सबको विदा किया। वह सदैव काल सदाशिव का स्मरण कर अपनी स्त्री और कन्या सहित दुःखी रहा करता था। जब वह कन्या युवावस्था को प्राप्त हुई और उसने अपनी सहेलियों से सुना कि ब्राह्मण ने बताया है कि मैं विधवा हो जाऊँगी तो यद्यपि वह मन में चिन्तित और दुःखी हुई पर मुख से कुछ न कहकर मैत्रेयी के पास जो याज्ञवल्क्य मुनि की स्त्री थी, गई और दण्डवत् करके सब वृत्तान्त वर्णन किया। उसने कहा मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ। जो मेरे पति की आयु की वृद्धि का उपाय हो, वह कहिये। यह कहकर बार-बार रोई और मैत्रेयी के चरणों में गिर पड़ी। मैत्रेयी ने उसको चरणों पर से उठाकर कहा कि तुम शिव और गिरिजा की शरण में जाओ। तुम्हारे सब दुःख दूर हो जावेंगे और सोमवारव्रत करके सोमशिव की पूजा करो। सन्ध्या के समय सोमवार को पूजाकर ब्रह्मभोज करो। सोमशिव को प्रसन्न कर तुम निस्सन्देह अपना मनोरथ पाओगी। इससे अधिक और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कोई उपाय पति की आयु के बढ़ने का नहीं। इस व्रत के करने से किसी प्रकार का दुःख नहीं रहता और सदाशिव सब दुःख निवृत्त करते हैं। सो सीमन्तिनी यह शिक्षा पा अपने घर लौट आई और विधि से सोमवार व्रत धारण कर सोमशिव की यथाविधि पूजा की। फिर उसका विवाह करके चित्रवर्म राजा बहुत प्रसन्न हुआ।

अठारहवाँ अध्याय।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी ने कहा कि नैषधदेश का राजा नल और उसकी रानी दमयन्ती जिसका हम पहिले वर्णन कर चुके हैं, यह दोनों राजा-रानी शिव के बड़े-भक्त हुये। उनके एक बालक उपजा जिसका नाम इन्द्रसेन रक्खा गया। वह भी शिव की भक्ति में अति प्रसिद्ध था। उसके एक लड़का चित्राङ्गद के नाम से उपजकर चन्द्रमा के समान सुन्दर हुआ। वह परम शैव होकर सर्व विद्या और कलाओं में प्रवीण हुआ। वह मधुरवाणी बोलता था। राजा चित्रवर्म ने चित्राङ्गद के उत्तम आचरण को जान अपनी लड़की का विवाह बड़ी धूमधाम से उसके साथ कर दिया। राजा चित्राङ्गद विवाह के उपरान्त थोड़े समय तक अपने श्वसुर के घर में रहा और अपनी सीमन्तिनी नाम स्त्री सहित सोमवार व्रत करता रहा। एक दिन औरों समेत राजा चित्राङ्गद नाव पर चढ़ यमुना नदी में जलविहार करता था कि एकाएक नाव डूब गई। कोई मनुष्य भी जीता न बचा। यहाँ तक कि केवट भी न बचा। सो दोनों किनारों पर हाहाकार मचा और किनारे की सेना रोने-पीटने लगी। राजा चित्रवर्म इस वृत्तान्त को सुन बहुत घबड़ाकर नदी किनारे पहुँच कर रोने लगा और रानी भी इतनी मूर्च्छित हो धरती पर गिरी कि फिर उसको चेत न हुआ। इसी प्रकार सीमन्तिनी अपने पति का डूबना सुन विकल हुई। उसके भाई, मन्त्री, सर्व राज्य सभा और प्रजा आदिक कोई ऐसा न था जो शोकसागर में डूबा न हो। राजा इन्द्रसेन रानी सहित अपने पुत्र के डूबने का हाल सुन शोकसागर में डूबा। उसकी प्रजा की भी यही दशा हुई। निदान दोनों पति और स्त्री माता-पिता को बुद्धिमानों ने समझाया। सो राजा चित्रवर्म ने अपने घर लौटकर अपनी सीमन्तिनी कन्या को समझाया और डूबे हुये राजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

का सब क्रियाकर्म किया। फिर सीमन्तिनी ने चाहा कि सती हो जाऊँ पर अपने पिता के मना करने से सती न होने पाई और वैधव्य धर्म में स्थित रही। यद्यपि वह विधवा हो गई पर उसने सोमवार का व्रत न छोड़ा जैसा कि मैत्रेयी ने उसको बताया था। जब सोमवार का दिवस आया तो दिन भर अन्न-जल रहित रह प्रदोषकाल में शिवजी की शिवरानी सहित पूजा की और अतिप्रेम से उत्सव किया। इसी प्रकार वैधव्य अवस्था से सोमवार-व्रत करते उसको तीन वर्ष का समय माता-पिता के घर में बीता। राजा चित्राङ्गद के पिता राजा इन्द्रसेन पर शत्रुओं ने धावा करके राज्य छीन उसको रानी सहित बन्दी में डाल दिया तब वे राजा बलि के समान नाना प्रकार की आपदाओं को प्राप्त हुये और सीमन्तिनी के व्रत के कारण डूबे हुये चित्राङ्गद ने बहुत आनन्द उठाया। वह यमुना से निकलकर जीता रहा। ऐसी कृपा सदाशिवजी ने की और श्वसुर आदि सब अति-प्रसन्न हुये।

उन्नीसवाँ अध्याय।

नारदजी के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि राजा चित्राङ्गद यमुना के बीच में डूबकर मरने से बच रहा और सब मर गये। इसकी कथा यह है कि उसने वहाँ असंख्यसर्पों की स्त्रियों को जब क्रीड़ा करते देखा और वे सब राजा को सुन्दर देख उसको अपने साथ पाताल में ले गईं। वहाँ बहुत से नगर साँपों से बसे हुये थे। सो राजा उनके द्वारा तक्षक के नगर में गया जो परिपूर्ण हीरा, मोती, पन्ना नीलम और अन्य नाना प्रकार के रत्नों से जटित था। चित्राङ्गद ने राजा तक्षक को रत्नों से जड़े हुये सिंहासन पर सुशोभित देखा। ऐसी विचित्र सामग्री और दास दासियों को देख वह भौचक रह गया। उसने तक्षक को अति प्रकाशवान् तेजरूप देखकर प्रणाम किया तक्षक ने भी राजा को ऐसे तेज और सुन्दरता से देख अपनी स्त्रियों से शुभ दृष्टिपूर्वक पूछा कि यह कहाँ से आया। तुमने इसको क्योंकर देखा? सो तक्षक की स्त्रियों ने उत्तर दिया कि हम इसके कुलादि को कुछ नहीं जानतीं। इसको यमुना नदी में पाकर यहाँ लाई हैं। निदान तक्षक ने राजा से पूछा कि तुम कौन किसके पुत्र और कहाँ के वासी हो सब कहो। यह सुन राजा ने हाथ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जोड़ शिवजी को स्मरण कर तक्षक को दण्ड-प्रणामकर अपना सब वृत्तान्त कह दिया। उसने कहा कि बहुत जन्मों के पुण्य से महाराज आपके दर्शन हुये। यह दर्शन हमारे बड़ों और पितरों को भी न हुआ था। यह सुनकर तक्षक अति प्रसन्न हुआ और कहा कि हे राजपुत्र! तुम कुछ सन्देह मत करो। एक बात मैं तुमसे पूछता हूँ, उसे कहो। तुम सब देवताओं में किस देवता की पूजा करते हो, यह हमको बता दो। फिर और वार्त्ता होगी। राजपुत्र ने विनती की कि जिसको सब वेदों ने महादेव नाम करके वर्णन किया है, वही शिवजी सबके पूजने के योग्य हैं। हम उन्हीं की पूजा करते हैं। ब्रह्मा और विष्णु भी जिसके अङ्ग हैं और उन्हीं के अंश के उपजे हैं। तीनों रूप जिसका ध्यान करते हैं और जिसकी आज्ञा से सृष्टि उपजती, पलती और विनशती है। जो कारण का भी कारण, धाता का भी धाता, तेजों का तेज है। इसी प्रकार शिवजी के बहुत गुण कथन कर कहा कि वही एकाकी, अविनाशी और अनादि हमारे स्वामी हैं। हम उन्हीं की पूजा करते हैं। ऐसी महिमा सदाशिवजी की सुनकर तक्षक ने अति हर्ष और अनुग्रह से कहा कि हे राजपुत्र! हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुये। जो तुम ऐसा जानते हो तो तुम्हारे समान कोई शुद्ध दूसरा और सत्पुरुष नहीं है। तुम यहाँ रहकर सबके राजाधिराज हो। हमारे इस देश में सदा आनन्द है। दुःख का नाम भी कोई नहीं जानता। यहाँ न कोई बूढ़ा होता, न कोई मरता और न कोई रोग किसी को होता है। ऐसे मधुर वचन सुन राजपुत्र ने हाथ जोड़कर तक्षक से विनती की कि हमारी स्त्री, माता-पिता और प्रजा हमको डूबा हुआ जान बड़े दुःख को प्राप्त हुये हैं। न जानिये वह मर गये हों या जीते हो। इसलिये मैं समय तक यहाँ नहीं रह सकता। कृपा करके आप मुझे वहाँ भेज दीजिये। यह सुनकर तक्षक ने अति प्रसन्नता से नाना प्रकार के भूषण, रत्न, वस्त्र और सामग्री देकर शिवजी की भक्ति का वर दिया और कामक नाम घोड़ा, अर्थात् वह जो अपनी इच्छा-नुसार स्थान में पहुँच जावे और एक राक्षस सामग्री पहुँचा देने को अपने लड़के समेत विदा किया। कहा कि जब हमारा स्मरण करोगे तब हम तुरन्त तुम्हारे पास आवेंगे। राजपुत्र तक्षक से विदा हो घोड़े पर चढ़ तक्षक

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की दी हुई सर्व सामग्री सहित यमुना के तट पर खड़ा हो गया। दोनों राजकुमार घोड़ों पर सवार इधर-उधर नदी के किनारे भ्रमण करने लगे।

बीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने नारद के पूछने पर कहा कि उस दिन सोमवार था और सीमन्तिनी व्रत रखे हुये अपना सखियों सहित स्नान के लिये यमुना के किनारे गई थी। दोनों को घोड़े पर आरूढ़ देख जाना कि यह मेरा पति है क्योंकि शरीर के मुख्य लक्षणों से ऐसा जाना जाता है। राजपुत्र ने भी सीमन्तिनी को देख कर जाना कि यह हमारी स्त्री है कि वह बहुत ही विधवा के लक्षण धार क्षीणाङ्ग हो गई थी। सो वह अपने घोड़े से उतर कर यमुना के तट पर बैठ गया और सीमन्तिनी को बुलाकर अपने समीप बैठाया और हर बेर उसकी ओर देख आश्चर्यपूर्वक कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी कन्या हो और क्यों तुम्हारी यह दशा हुई ? तुम लड़कपन में विधवा हो गई हो। पर सीमन्तिनी लज्जापूर्वक आँखें आँसुओं से भरकर कुछ उत्तर न दे सकी। पर उसकी सखी ने सैन की आज्ञा पाकर कहा कि यह सीमन्तिनी राजा नल के पोते की रानी है और राजा चित्रवर्म की बेटी है। यह सोमवारव्रत करती हैं। इसका पति यमुना में डूब गया था। यह विधवा हो अपने माता-पिता के घर रहती है और शिव की पूजा किया करती है। यद्यपि तीन वर्ष बीते पर इसको पति नहीं भूलता। आज सोमवार होने के कारण स्नान के निमित्त यहाँ आई है। इसका श्वसुर इन्द्रसेन शत्रुओं से हारकर राज्यहीन हो गया है और अपनी रानी सहित शत्रुओं की बन्धि में अपने पुत्र के वियोग से मरने के किनारे हो रहा है और शिवपूजा और सोमवारव्रत नहीं छोड़ता। फिर सीमन्तिनी ने मधुरवाणी से कहा कि तुम कौन हो, किन्नर, गन्धर्व या शरीर धारे कामदेव का रूप अथवा कोई सिद्ध हो, अपना मुख्य वृत्तान्त कहो। तुम्हारे देखने से जाना जाता है कि तुम हमारे पति का स्वरूप रखते हो। यह कह और मूर्च्छित हो धरती पर गिर पड़ी। चित्राङ्गद ने ऐसी दशा अपनी स्त्री की देख धैर्य धर दृढ़तापूर्वक सीमन्तिनी को बहुत समझाया कि हमने तुम्हारे पति को कहीं देखा है। वह तुम्हारे सोमवारव्रत और सुकर्मों से जीता है और तुरन्त ही तुम्हारे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निकट आता है। केवल दो-तीन दिन में तुम्हारे दुःख दूर हो जाते हैं। हम यह सन्देशा कहने आये हैं क्योंकि हम तुम्हारे पति के मित्र हैं। तुम इस बात को प्रसिद्ध न करना और मन में प्रसन्न रहना। परन्तु सीमन्तिनी ने बारम्बार उसकी ओर देखकर विचार किया कि हमारा स्वामी यही है क्योंकि याज्ञवल्क्य की स्त्री के वचन और शिवजी कृपा से कुछ दूर नहीं कि वह जीता रहा हो। फिर राजा ने तुरन्त ही सीमन्तिनी के कान में कुछ चुपके से कह दिया जिससे वह बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि तुम अपने माता-पिता से जाकर इस बात को कहो। तुम थोड़ी ही देर में अपना पति पाओगी। यह कहकर उसने अपनी राजधानी में जाकर तक्षक के पुत्र को शत्रु के निकट भेजा। उसने जाकर सब वृत्तान्त चित्राङ्गद और शिवजी की दया का वर्णन किया। कहा कि चित्राङ्गद के माता-पिता को छोड़ दो वरन् तुमसे युद्ध होगा और तुम मारे जाओगे। यह सुनकर शत्रु ने मित्रता कर ली। चित्राङ्गद को उनका राज्य और माता-पिता दे दिये। उस समय सारी प्रजा ने इकट्ठे होकर राजा के पुत्र को देखा। जैसा सुख उसके माता-पिता को उस समय प्राप्त हुआ, उसे हम वर्णन नहीं कर सकते। उसके पिता राजा इन्द्रसेन ने प्रेम और प्रीति से उसको अपने हृदय मे लगाया और उसकी माता ने लिपट कर बहुत आशीर्वाद दिये। उसने सभा में बैठकर अपना वृत्तान्त कह सुनाया। जब कि दूतों ने राजा चित्रवर्म को यह कहा तो वह अपनी रानी और सीमन्तिनी सहित अति प्रसन्न हुआ। उसने बहुत दान और पुण्य किया। सबने सीमन्तिनी की प्रशंसा की फिर चित्रवर्म ने चित्राङ्गद को बुलाकर नये शिर से विवाह कर दिया और बड़ा दहेज दिया। सब बरातियों को उत्तम-उत्तम नाना भाँति के भोजन खिलाये। फिर सीमन्तिनी को चित्राङ्गद के साथ भेज दिया जो वस्त्रादिक और आभूषण चित्राङ्गद ने तक्षक से पाये थे, वह सीमन्तिनी को पहिनाकर बहुत-सी और उत्तम वस्तुएँ उसको दीं। राजा इन्द्रसेन चित्राङ्गद को राज्य सौंपकर अपनी रानी सहित वन में गया और वहाँ तप तथा योगाभ्यास करने लगा और मरने के पीछे मुक्त हो शिवपुरी में गया। राजा चित्राङ्गद ने मगधदेश का राज्य दशहजार वर्ष पर्यन्त किया। उस समय

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में सीमन्तिनी से आठ पुत्र और एक पुत्री उपजी। वह जन्मभर सुखी रहे और सीमन्तिनी ने सोमवारव्रत को न त्यागा। वह सर्वदा अपने पति राजा चित्राङ्गद समेत शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करती थी और सदाशिवजी उन पर प्रसन्न थे।

इक्कीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि अब हम दूसरी कथा कहते हैं जिसमें सोमवारव्रत की महिमा है कि प्राचीन समय में एक ब्राह्मण देवमित्र नामी विदर्भदेश में बड़ा विद्वान और वेद जाननेवाला हुआ। उसका मित्र सारस्वत नामी ब्राह्मण था। फिर वेदमित्र और सारस्वत के एक-एक पुत्र हुआ जिनका नाम सामवान् और सुमेधा था। वह दोनों बालक सर्वकार्य और स्वभाव में समान थे। उन्होंने एक ही गुरु से विद्या पढ़ी। दोनों ने माता-पिता की सेवा करके उनको प्रसन्न किया। एक दिन दोनों के माता-पिता ने अपने लड़कों से कहा कि अब तुम सोलह वर्ष के हो चुके। यह अवश्य है कि तुम्हारा विवाह हो जाय पर बिना धन के विवाह नहीं हो सकता। इसलिये तुमको उचित है कि तुम दोनों राजा के पास जाओ और अपनी विद्या प्रसिद्ध करके राजा को प्रसन्न करो कि धन मिले और तुम्हारा ब्याह भी हो जावे। ऐसा सुनकर वे दोनों राजा विदर्भ के निकट गये और अपनी चतुराई और चपलता से विद्या प्रकट कर बहुत सा धन पाया। फिर राजा ने हँसकर उनसे कहा कि मगधदेश का राजा जिसको चित्राङ्गद और जिसकी रानी को सीमन्तिनी कहते हैं, वह दोनों सोमवारव्रत को रखकर शिवजी और शिवरानीजी का पूजन करके ब्राह्मणों की सेवा करते हैं और ब्राह्मणों को उनकी स्त्रियों सहित भोजन कराके बहुत धन देते हैं। इस कारण तुमसे कहते हैं कि तुम दोनों एक पुरुष और दूसरा स्त्री बनकर वहाँ जाओ और वहाँ से धन लेकर फिर हमारे निकट आना। ऐसी राजा की आज्ञा सुनकर वह दोनों डरे और कहने लगे कि हमको ऐसा धन नहीं चाहिये क्योंकि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा अपने कुल में छल करने से नष्ट हो जाते हैं। इसी कारण कहा गया है कि राजा के यहाँ छल से न जावे क्योंकि छली के सर्वकार्य नष्ट हो जाते हैं और उसका

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हृदय स्थिर नहीं रहता। ऐसे-ऐसे वचन धूर्त को सुखी रखते हैं, सज्जन पुरुष ऐसी बात नहीं मानते। हमने अच्छे कुल में जन्म लिया है। हमसे ऐसी बुरी बात न होगी। तुम हमसे ऐसी अधर्म की बात न कहो। राजा ने वेद का प्रमाण देकर कहा कि वेद की आज्ञानुसार हम यह कहते हैं कि देवता, गुरु, माता, पिता और राजा की आज्ञा को न टालना चाहिये। यद्यपि वह अच्छी हो या बुरी पर इसमें विचार नहीं करना चाहिये। उस आज्ञा का शीघ्र पालन करना चाहिये। सो तुम हमारी प्रजा और हम तुम्हारे राजा हैं। इस आज्ञा को अङ्गीकार करो। सो दोनों ने राजा की आज्ञा से इस बात को माना और सामवान् स्त्री का वेष करके सीमन्तिनी रानी के पास गया पर सुमेधा पुरुष के वेष में ही रहा। सोमवार के दिन सीमन्तिनी के घर में ब्राह्मणों की भीड़ देखी। सीमन्तिनी ने हर स्त्री को गौरी और पुरुष को शङ्कर का रूप जानकर पूजा किया। पर जब उनकी बारी आई तो सीमन्तिनी आदि सामवान् को कृत्रिम स्त्री जानकर बहुत हँसे पर उनको गौरीशङ्कर ही समझ कर उनकी भी पूजा की। उनके मन में दूसरा भाव न आया। पूजन के पीछे भोजन कराये। भोजन के पीछे दाहिने हाथ से पान दिया। फिर दण्डवत् कर दक्षिणा और बहुत-सा दान देकर बिदा किया। सबको भारी-भारी वस्तु देकर प्रसन्न किया। वह दोनों बहुत-सा धन लेकर घर सिधारे। मार्ग में सामवान् जो स्त्री बन गया था और उसने गिरिजा महारानी का स्वरूप धारा था वास्तव में स्त्री बन कामवश हो सुमेधा की ओर देखकर कहने लगा कि देखो, यह कैसा वन काम के लिये योग्य है। सुमेधा ने यह सुनकर समझा कि यह हँसता है और कुछ न विचारकर आगे चला पर फिर वह कामवश होकर कहने लगी कि मैं तुम्हारी स्त्री हूँ। तुम क्यों मुझसे भोग नहीं करते? मैं नहीं चल सकती, इस समय कामदेव के बाण से महादुःखी हूँ। तुम मुझसे भोगकर मेरे प्राण बचाओ। यह सुनकर सुमेधा ने पीछे फिरकर देखा कि वास्तव में एक स्त्री महासुन्दरी चली आती है। तो उससे कहा कि तुम पुरुष होकर ऐसी वार्त्ता क्यों कहते हो? तुम वेदपाठी, ब्रह्मचारी और निष्पाप हो। क्यों ऐसे निरर्थक वचन कहते हो। उस स्त्री ने कहा कि जो तुमको निश्चय न हो तो मेरी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

योनि को देखो। मैं पुरुष नहीं हूँ, तुम्हारी स्त्री हूँ। यह कहकर उसने अपना शरीर खोला जिसको देखकर उसके मित्र सुमेधा ने चुप होकर आश्चर्य कर शिवजी का ध्यान किया। इतने में स्त्री ने फिर प्रार्थना की अब तुम्हारी शङ्का भी दूर हो गई, अब क्यों भोग करने में विलम्ब करते हो। देखो, यह वन कैसा विहार करने के योग्य है। इस समय हमारा मनोरथ पूरा करो। सुमेधा ने कहा कि हम और तुम दोनों वेदपाठी हैं। ऐसी बातें मत कहो तुम पुरुष हो पर स्त्री बन गये। इस लिये शिवजी और शिवरानीजी का ध्यान करो। यद्यपि हमने अधर्मी धूर्त बनकर राजा की आज्ञानुसार अपने माता-पिता के उपदेश के विरुद्ध ऐसे कार्य किये, उसी का यह परिणाम है। पर उचित है कि अब चुप रहकर अपने घर चलें और देवता तथा गुरु से उपदेश लेकर इस पाप से छूटें। कदाचित् तुम पुरुष न बनोगे और इसी प्रकार स्त्री रूप धारण किये रहोगे तो मैं अपने पिता की आज्ञा लेकर अपनी स्त्री तुम्हें बना लूँगा। यह कहकर उसने शिवजी की माया और सीमन्तिनी रानी के प्रभाव की बड़ी प्रशंसा की। पर उस स्त्री ने कामदेव के वेग से कुछ न सुनकर उसे कण्ठ से लगा लिया। सो सुमेधा अति परिश्रम से अपने को छुड़ाकर उस स्त्री सहित घर में पहुँचा और अपने पिता से सब समाचार कह सुनाया। दोनों के पिता दुःखी होकर राजा विदर्भ के निकट गये और क्रोधित होकर राजा से कहा कि तुमने क्यों ऐसा बुरा काम हमारे पुत्रों से कराया जिससे हमारा पुत्र स्त्रीरूप बन गया। यह मेरा इकलौता बेटा था। हमारे पिता निराश हो गये क्योंकि और कोई सन्तान इस कुल में नहीं। यह कहकर सारस्वत ब्राह्मण बहुत रोया और अचेत हो भूमि पर गिर पड़ा। राजा ने सामवान् को स्त्रीरूप देखकर आश्चर्य किया और हाथ जोड़ विनती कर दोनों ब्राह्मणों से प्रार्थना की कि इसका स्त्रीभाव किसी प्रकार निवृत्त करो। यह सुनकर दोनों ब्राह्मणों ने कहा कि शिवजी की भक्ति हृदय में दृढ़ करो। निदान स्त्री समेत वह सब गिरिजा की शरण में गये और नाना विधि से गिरिजा को प्रसन्न किया। गिरिजा ने प्रकट हो दर्शन दिया और कहा कि वरदान माँगो। राजा ने विनय की कि हमको यही वरदान चाहिये कि यह लड़का पुरुष हो जाय। गिरिजा ने कहा कि हम अपने भक्त की अवज्ञा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करना नहीं चाहतीं पर हम तुमसे यही कहती हैं कि सारस्वत ब्राह्मण के दूसरा पुत्र होगा और हमारी शक्ति से इसके दुःख दूर हो जावेंगे। यह अब पुरुष नहीं हो सकता। इसका विवाह सुमेधा के साथ कर दो। यह कहकर गिरिजा अन्तर्धान हुई और सब अपने-अपने घर सिधारे। सारस्वत ने अपने लड़के को जो स्त्री बन गया था, सुमेधा ब्राह्मण के साथ ब्याह दिया। वे दोनों स्त्री-पुरुष प्रसन्न रहकर विहार करने लगे। सारस्वत के दूसरा पुत्र उपजा जिससे उसे बड़ा सुख प्राप्त हुआ। हे नारदजी ! ऐसी शिवजी की भक्ति सीमन्तिनी रानी को हुई। सोमवार व्रत की महिमा तुमको विदित हुई होगी कि कैसी अनन्त है और शिवजी किस प्रकार इस व्रत के करने वाले से प्रसन्न होते हैं। इस चरित्र का सुननेवाला और कहनेवाला कुछ दुःख नहीं पाता। मासिक व्रत माहात्म्य पूर्ण हुआ।

बाईसवाँ अध्याय।

वार्षिक व्रतों का वर्णन।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हमने मासिकव्रत वर्णन किये। अब हम वार्षिक व्रतों का वर्णन करते हैं जिनके करने से सुख मिलकर मुक्ति प्राप्त होती है जिन के सुनने से सर्व पाप नष्ट होकर सर्व सिद्धि मिलती है। एक व्रत उनमें से उमामहेश्वर नामक है। वह सर्वमनोरथ पूर्ण करता है। यह व्रत शिवजी और गिरिजा को अति प्रिय है। अर्थात् चैत्र और मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णमासी और अमावस को यह व्रत करना उचित है। इस प्रकार से कि अपने गुरु की आज्ञानुसार इस व्रत को करे। यथाविधि सब व्रत की रीतें करे। प्रातःकाल उठ संकल्प कर नदी में स्नान करे और नित्यकर्म करके अपने घर में आवे। उत्तम मण्डप बनाकर पाँच कलश स्थापित करे और उनको अच्छे कपड़ों से ढाँप दे। उसके ऊपर शिवजी और गिरिजा की सोने की प्रतिमा बनाकर स्थापित कर दे। शिवजी का स्वरूप शंख, चक्र, गदा, पद्म सहित और गिरिजा का स्वरूप आभूषण संयुक्त बनाना चाहिये और प्रीति से उसका विधिपूर्वक पूजन करे। सामग्री इकट्ठी करके शिवजी का जप करे और हवन करके पञ्चाक्षरी मन्त्र पढ़े? फिर विसर्जन कर देवे। ब्राह्मणों को स्त्रियों सहित भोजन कराकर दक्षिणा दे बहुत प्रसन्न करे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसी प्रकार प्रदोष काल में शिवजी का पूजन करके आप मधुर भोजन दूध समेत खावे और एक वर्ष पर्यन्त दोनों पक्षों में इस व्रत को करके शिवजी का पूजन और ब्राह्मणों की सेवा करे। जब वर्ष समाप्त हो जावे तब व्रत का उद्यापन करे कि शतरुद्री को पढ़कर शिवजी को स्नान कराये। प्रथम रीति से शिवजी का ध्यान और पूजन करे। पूजन के पीछे ब्राह्मणों को दान देकर अपने गुरु की सेवा करे और उनकी आज्ञानुसार अपने बान्धवों के साथ शिवजी को स्मरण करके भोजन करे। इस यत्न से जो मनुष्य इस व्रत को करता है, उसके ऊपर शिवजी प्रसन्न होते हैं और उसकी इक्कीस पीढ़ियाँ तर जाती हैं। उसे संसार में सुख प्राप्त होकर अन्त-काल में शिवपुरी प्राप्त होती है। यह व्रत दुःखों का जलानेवाला और मनोरथ सिद्ध करनेवाला है। पर इस व्रत को सामग्री इकट्ठी करके करना चाहिये। हम एक वृत्तान्त वर्णन करते हैं जिससे तुमको इस व्रत की महिमा विदित होगी जो वेद पुराणों में लिखी हुई है। प्राचीन-समय में वैदर्भनामी एक ब्राह्मण आनर्त देश में बड़ा सन्तानवाला बड़ा धनी और वीर था। उसके एक लड़की थी जिसको शारदा कहते थे। वह बड़ी पण्डिता थी। जब वह द्वादश वर्ष की हुई तो उसको एक बूढ़े ब्राह्मण ने जिसकी स्त्री मर गई थी जो वहाँ के राजा के मित्रों में था और उसके घर बहुत धन था, विवाह के निमित्त उसके पिता से कहा। वैदर्भ ने उसे बूढ़ा विचारकर बड़ी चिन्ता की पर अति भयभीत होकर अपनी लड़की को उसके साथ ब्याह दिया। सो मध्याह्न के समय विवाह हुआ। उसी सन्ध्या को बूढ़ा ब्राह्मण नदी के तट पर से सन्ध्या करके आता था कि उसको मार्ग में सर्प ने काट खाया और वह मर गया। ऐसा उपद्रव देखकर सबको बड़ा दुःख हुआ। उसके भाई बान्धव क्रियाकर्म के पीछे अपने घरों को लौट आये। शारदा विधवा होकर अपने माता पिता के घर रही। इस प्रकार कुछ समय व्यतीत हुआ। एक दिन उसके भाई किसी स्थान पर ब्याह में गये। उनके पीछे वैध्रुव मुनि जो अन्धे थे, अपने शिष्यों का हाथ पकड़े, उसके घर आये। उसने मुनि की सेवा करके भोजन कराये। वैध्रुव मुनि बहुत प्रसन्न हुये और उसको यह वरदान दिया कि तुम्हारे पति से तुम्हें एक पुत्र होगा जो देवताओं की कृपा से बड़ा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

धर्मवान् होगा। शारदा ने आश्चर्य करके हाथ जोड़कर मुनि से प्रार्थना की कि हे महाराज! वास्तव में आपका वाक्य सत्य होता है परन्तु मैं विधवा हूँ। मुझको ऐसा फल कहाँ से मिलेगा? हमारा पति विवाह के दिन ही मर गया था। हमारी यह अवस्था पहिले जन्म के पाप से हुई। यह सुनकर मुनि ने शिवजी का ध्यान कर कहा कि मैं अन्धा हूँ, बिना देखे भाले मैंने तुम्हें ऐसा वरदान दिया परन्तु मैं श्रीसदाशिवजी को प्रसन्न करके अपने दिये हुये वरदान को सत्य कर दूँगा। जो तुम हमारी आज्ञा मानो तो सब सत्य हो सकता है। अर्थात् तुम उमामहेश्वर व्रत जो शिवजी का है, धारण करो। निश्चय है कि हमारा वाक्य असत्य न होगा। यह सुनकर शारदा बहुत प्रसन्न हुई। उसने कहा कि मैं अवश्य ही यह व्रत करूँगी। सो मुनि ने उसको सब विधि बता दी। इतने में उसके भ्राता आदि ने जब आकर यह वृत्तान्त सुना तो प्रसन्न होकर मुनि से कहने लगे कि हे महाराज! आप धन्य हैं जो आप यहाँ आये। हमारा कुल शुद्ध हो गया। यह हमारी पुत्री आपकी शरण में है। तुम यहाँ इस शिवालय में रहो। यह पतिहीन लड़की आपकी सेवा करेगी और व्रत धारण करके आपकी दया से अपना मनोरथ पावेगी। पर जबतक यह व्रत समाप्त न हो तबतक आपका चला जाना उत्तम नहीं। निदान मुनि ने उसके माता-पिता और भाइयों की ऐसी विनती सुनकर वहाँ रहना अङ्गीकार किया। वह सब मुनि की सेवा करने लगे और शारदा से उमामहेश्वर का व्रत रखवाया। शारदा ने अति प्रेम और प्रीति से उमामहेश्वर का पूजन हृदय से किया।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि इस प्रकार शारदा को व्रत करते हुये एक वर्ष बीता। तिस पीछे उसने उस व्रत का उद्यापन किया जैसा आगे वर्णन किया। उसने प्रदोषकाल में शिवपूजन करके जागरण किया और रात्रि भर शिवजी का मन्त्र जप करती रही। मुनि भी रातभर योग तप और जप आदि से गिरिजा को प्रसन्न किया। सो दोनों की ऐसी भक्ति देखकर गिरिजा ने दर्शन दिये जिससे वे सुखी हुये। मुनि ने जो अन्धे थे नेत्रवान् हो गये और दोनों गिरिजा के चरणों पर गिर पड़े और हाथ जोड़कर बड़ी स्तुति की।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

गिरिजा ने अति प्रसन्न हो दोनों को हाथ से पकड़कर उठा लिया और कहा कि हे मुनिजी! और हे शारदा! मैं तुम्हारी कामना पूरी करूँगी। यह सुनकर मुनि ने प्रार्थना की कि यह शारदा विधवा होकर अपने माता-पिता के यहाँ बैठी है। मैंने जो इसे आशीर्वाद दिया तो बेजाने-बूझे अन्धेपन में दिया, उसको आप पूर्ण करें। यह सुनकर देवी ने कहा कि तुम अगले जन्म का वृत्तान्त शारदा का सुनो। यह शारदा एक द्रविण ब्राह्मण की पुत्री थी जो एक ब्राह्मण की दूसरी छोटी स्त्री हुई। उसने अपनी सवति को जो बड़ी थी, अनेक प्रकार के कष्ट दिये। उसका स्वामी भी उसकी सुन्दरता और स्वरूप को देखकर ऐसा मोहित था कि उसने अपनी पहली स्त्री को किंचिन्मात्र भी सुख न दिया। इसी प्रकार पहली स्त्री की सारी अवस्था व्यतीत हुई। जब पहिली स्त्री मर गई तब छोटी स्त्री अर्थात् शारदा बहुत सुखी होकर अपने पति से विहार करने लगी। उसके पड़ोस में एक ब्राह्मण तरुण रहता था जिसने शारदा की सुन्दरता पर मोहित होकर उसका हाथ पकड़ लिया। शारदा ने क्रोधित होकर उसे बहुत दुर्वचन कहे पर वह शारदा के मोहसागर में अति विकल हो मर गया। जो कि इसने अपनी सवति को बहुत क्लेश दिया इसी कारण वह इस जन्म में विधवा हुई और बराबर २१ जन्म तक विधवा ही होगी और उसी ब्राह्मण की स्त्री होकर फिर विधवा हो गई जो उसका पहिले वर्ष में पति था। अब वह पाण्डव देश में एक ब्राह्मण के यहाँ उत्पन्न हुआ है। वह बड़ा धनी, बोधवान्, सुन्दर और शिवपूजन में लीन रहता है। सो उसके साथ नित्य स्वप्न में इससे भेंट हुआ करेगी। वह स्थान यहाँ से ३६० योजन है। उसके साथ स्वप्न में शारदा भेंट कर शुभ घड़ी में एक पुत्र पावेगी जिसको उसका पिता देखकर बहुत प्रसन्न होगा। इसने पहिले जन्म में हमारी सेवा की थी इसलिए हमने इसे दर्शन दिया। तिस पीछे गिरिजा ने शारदा से कहा कि तुम्हारा पति तुम्हें स्वप्न में नित्य मिलेगा। तुम उसको और वह तुमको देखकर परस्पर प्रसन्न होगे। तुम अपने पुत्र को उसे देखकर अपने व्रत का फल आधा दे देना और उसके साथ जाकर उसकी सेवा करना। बिना स्वप्न के और किसी प्रकार तुम उससे न मिलोगी परन्तु व्रत को कभी न छोड़ना और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जब वह तुम्हारा स्वामी मर जावे तब तुम उसके साथ सती हो जाना। फिर तुम विमान पर चढ़कर शिवजी की भक्ति पावोगी। तुम्हारा पुत्र बड़ा वीर और धनवान् होगा। यह कहकर देवी अन्तर्धान हुई और शारदा ने यह वर पाकर बड़ा आनन्द किया। प्रभात को यह सर्व वृत्तान्त मुनीश्वर ने शारदा के माता-पिता से कह सुनाया। उनको भी सुनने से बड़ा सुख प्राप्त हुआ। फिर मुनि जाकर अपने स्थान को चले गये और शारदा नित्य अपने स्वामी को पाकर सुखी रहने लगी। वह थोड़े ही दिनों के पीछे गर्भवती हुई। सब बान्धव और मनुष्य उस नगर के उससे ग्लानि करने लगे और दया न करके उसको घर से निकालना चाहा। कहा कि इसके शिर से बाल दूर कर दो। जब वह उसके माता-पिता सहित इस बात के करने को तय्यार हुये तब आकाशवाणी हुई कि इसने कोई कुकर्म नहीं किया, तुम क्यों इसे कष्ट देते हो? इसका ब्रह्मचर्यव्रत नाश नहीं हुआ। इस पर कामदेव ने बल कुछ न किया। इस पर जो मनुष्य दोष लगावेगा, उसकी जिह्वा फट जावेगी। यह सुनकर उसके माता-पिता, भ्राता और बान्धव बहुत प्रसन्न हुये। शेष अन्य मनुष्य बहुत आश्चर्य में होकर कहने लगे कि किसी ने यह बात झूठ आकाशवाणी के ओढर से कही है। यह बात समझ में नहीं आती। सो तुरन्त उनकी जिह्वा फट गई और उन्होंने बड़ा कष्ट भोगा। तब सब लोग उसकी प्रशंसा करने लगे। फिर एक वृद्ध मनुष्य ने कहा कि स्त्रियों को शारदा के पास भेजो कि वह सर्व वृत्तान्त जानकर हमको समझावें। सो स्त्रियों ने उससे पूछकर सब पर वह वृत्तान्त प्रकट किया। सबने यह सुनकर उसकी महिमा वर्णन की। फिर सर्व मनुष्य प्रशंसा करते हुये अपने-अपने घर सिधारे।

चौबीसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी ने कहा कि हे नारद! शुभ घड़ी में शारदा के एक सुन्दर पुत्र उपजा। उसने बाल्यावस्था में विद्या पढ़ी। वह सूर्य के समान प्रकाशवान् था। उसका नाम शारदेव हुआ। उसने तीन वर्ष में तीनों वेद पढ़े और शिव-पूजन करने लगा। उसने विवाह करके अपनी सन्तान को सुखी रक्खा। कुछ समय के पीछे अपने माता-पिता सहित गोकर्णतीर्थ में गया। जब शिव-

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रात्रि थी, सबने गोकर्णनाथ के स्नान के पीछे शिवजी की पूजा की और वहीं ठहरे। शारदा भी अपने पति को वहाँ देख बहुत प्रसन्न हुई। उसके स्वामी को भी अपनी स्त्री और पुत्र को देखकर आश्चर्य हुआ कि यह तो वही स्त्री और वही पुत्र है, जिसको हम स्वप्न में देखते हैं। यह विचार कर वह शारदा के निकट गया और कहा कि तुम किसकी स्त्री और किसकी पुत्री हो ? तुम्हारा क्या नाम है ? तुम किस लिये हमारी ओर बेर-बेर देखती हो ? तुम्हारी प्रीति हम में कुछ कम नहीं है। शारदा ने रो करके अपना वृत्तान्त कह सुनाया। यह सुनकर ब्राह्मण ने हँसकर पूछा कि यह किसका पुत्र है जिसके देखने से जो प्रीति पिता की होती है, वह मुझे प्राप्त हुई है। फिर पूछा कि जब तुम विधवा हो गई तब यह किस प्रकार पुत्र उपजा। तब शारदा ने अति लज्जित हो उत्तर दिया कि हे स्वामिन् ! यह लड़का शारदेव सब विद्यानिधान है। यह सुनकर उसने मुसकराकर कहा कि बड़ा आश्चर्य है कि तुम्हारे पति ने तुम्हारा हाथ भी न पकड़ा था कि मर गया, फिर यह पुत्र किस प्रकार उत्पन्न हुआ ? जाना जाता है कि तुमने धर्म के विरुद्ध कर्म कर इसको उत्पन्न किया। इसी से तुम गोल-मोल कहती हो। उचित है कि सत्य-सत्य वृत्तान्त कहो। यह सुनकर शारदा ने सब मुख्य वृत्तान्त कहा। फिर निर्लज्जित होकर कहा कि हे स्वामिन् ! तुम भले प्रकार जानते हो और मैं भी तुम्हें जानती हूँ। तुम हमारे सुख देनेवाले हो। यह कहकर सब वृत्तान्त कहा तो ब्राह्मण को निश्चय हुआ। फिर उसने अपना वृत्तान्त सबको कह सुनाया और बताया कि तुम हमारी स्त्री हो। शारदा ने तुरन्त ही अपने व्रतों का आधा फल उसे दे दिया और पुत्र को उसे देकर उसके अधीन हुई। ब्राह्मण को अपने पहिले जन्म का वृत्तान्त मालूम हुआ। उसने अपनी स्त्री और पुत्र को पहिचान लिया और अपने माता-पिता की आज्ञानुसार शारदा को अपने घर ले गया। शारदा ने उसकी बड़ी सेवा की और दोनों सुखी रहे। निदान ब्राह्मण मर गया और शारदा उसके साथ सती हुई। उस समय विमान आया और दोनों शुद्ध होकर उस पर चढ़ शिवपुरी में गये। ब्राह्मण गणों का राजा हुआ और शारदा गिरिजा की सखी हुई। हे नारद ! यह कथा अति पवित्र है। इसके सुनने और कहने से बड़ा सुख दोनों लोक में मिलता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है। संसार में भक्ति तथा परलोक में मुक्ति मिलती है और नाना प्रकार के पाप तथा दोष दूर हो जाते हैं। इस चरित्र के श्रवण करने से भक्ति अधिक होती है और कोई रोग नहीं रहता। कहने और सुननेवाले को सुख और धनसम्पत्ति मिलती है। यह कथा पवित्र और स्त्रियों के पति की अवस्था बढ़ानेवाली है। इस उमामहेश्वर व्रत को राजव्रत कहते हैं। इससे सब प्रकार का सुख मिलता है। शिवजी और गिरिजा को यह व्रत अतिरोचक है। इस व्रत के करने से शिवजी और गिरिजा की प्रीति अधिक होती है।

इति श्रीशिवपुराणे दशमखण्ड सर्वव्रतमाहात्म्यवर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः ॥ २४ ॥

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

ॐ नमः शिवाय ।

शिव पुराण भाषा

—:०:—

ग्यारहवाँ खण्ड

पहिला अध्याय ।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! हमने शिवजी का निर्गुण और सगुण रूप वर्णन करके दोनों स्वरूपों के चरित्र तुमको सुनाये। फिर शिव के अवतारों का विस्तार से वर्णन करके शिवजी को कैलास में जाना, सती चरित्र और गिरिजा चरित्र सब प्रकट किये तथा शिवजी के पुत्रों की कथायें वर्णन कर उनके सौ अवतारों का भी वृत्तान्त कह सुनाया। शिव के लिङ्गों की कथा विस्तार से कहकर सब तुमको बताया। अब कोई कथा शेष नहीं है जिसका पुनवर्णन करें। पर जिस कथा के सुनने की अभिलाषा हो, वह हमसे पूछो कि हम तुमसे कहें। इतना कहकर सूतजी बोले कि हे शौनको ! जब नारद ने ब्रह्मा से यह वचन सुना तो विनती की कि हे पिता ! तुमने बड़ी कृपा करके मुझे यह सब शिवचरित्र कह सुनाया। हमको इसके सुनने से परमधर्म प्राप्त हुआ है। अब मेरी इच्छा है कि आप मुझको सर्व ब्रह्माण्ड की स्थिति की रीति बतावें जिसके जानने से हमारे मन में कुछ संशय न रहे। मैं यह भी जानूँ कि कौन कहाँ है और क्या काम करता है। किस प्रकार से कौन कहाँ का राज्य करता है। यह भी कि चौदहों लोक के लोग जिसको पूजते हैं। हे शौनको ! यह वचन नारद का सुनकर ब्रह्माजी बोले कि शिव सबकी पूजा के योग्य हैं। यद्यपि वह तीनों गुण से परे हैं पर तो भी ब्रह्माण्ड की भलाई के लिये सगुण स्वरूप धारण करते हैं। वही सबके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्वामी हैं। यह कहते हुये ब्रह्मा को अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और उनके सब रोम खड़े होकर नेत्रों से आँसू की धारा बह निकली। वे बारम्बार शिव के चरणों का ध्यान करके नारद से कहने लगे कि हे नारद ! तुम धन्य हो कि तुमने बार-बार शिव के चरित्रों का वर्णन कर मेरे मन में शिवजी की प्रीति दूनी की। हे नारद ! जो मनुष्य शिव के चरित्र सुनते हैं, उनसे श्रेष्ठ तीनों लोक में और कोई मनुष्य नहीं है जो कोई मनुष्य शिवजी के चरित्रों के सुनने के लिये किसी से कुछ प्रश्न करते हैं, वे बेपरिश्रम भवसागर से पार उतर जाते हैं। हे नारद ! शिव के दो स्वरूप हैं—एक क्षर और दूसरा अक्षर। उनमें से क्षर अर्थात् सगुणस्वरूप और अक्षर निर्गुणस्वरूप है और सर्व ब्रह्माण्ड में वह गुप्त और प्रकट है। इसी प्रकार दो भाँति की माया भी है। पहिले विद्या और दूसरी अविद्या जिनमें सदाशिवजी ब्रह्म होकर विराजमान हैं। शिव सगुणस्वरूप माया से परे शरीररहित और बड़े ईश्वर हैं। उन्हीं सगुणस्वरूप शिव की लीला से तीनोंलोक की अस्ति भासती है। यह उन्हीं का कार्य है और चौदहों लोक और ब्रह्माण्ड सब प्रकृति की कृत्य से उपस्थित हुआ है। सदाशिव का विराट्रूप पहिले सब मनुष्यों के ध्यान करने के योग्य है जिसके ऊपर के भागों में सात लोक और सात ही नीचे के लोक हैं। नीचे के लोकों का यह विस्तार है—अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ और पाताल ७। यह नीचे के लोक विराट्रूप के चरणों की भाँति हैं। ऊपर लोक यह हैं—भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ जो ऊपर के अङ्ग शीश आदि की भाँति हैं और उपलोक भी इन्हीं भागों में गिने गये हैं। अब और विस्तार सुनिये कि विराट्रूप का पग तली पाताल, टखना रसातल, पिंडली महातल, गाँठें तलातल; रानें सुतल और शरीर का एक भाग वितल, दूसरा भाग अतल और जाँघें महातल है। नाभि भूर्लोक और भुवर्लोक छाती स्वर्लोक, मुख जन लोक, मस्तक तपलोक, शिर सत्यलोक और मर्दन महर्लोक है। निदान शिर से पाँव तक के ऊपर के क्रम के अनुसार चौदहों लोक को विराट्रूप के अङ्ग समझकर ध्यान करना चाहिये। इसी प्रकार और सब उपलोक और चौदहों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लोकों के मध्य में प्रकट हैं। ब्रह्मा से लेकर चीटीं तक जो कुछ है, वह सब विराट्रूप शिव का शरीर और उनके अङ्ग जानकर कोई वस्तु शिवजी से भिन्न न जाननी चाहिये। उस विराट्रूप शिव की भुजा इन्द्र, अग्नि मुख, दिग्वेद कान, आकाश शब्द, अश्विनीकुमार नाक, सूर्य नेत्र, रात-दिन भवें, यमराज दाढ़ें, ब्रह्मा लिङ्गेन्द्रिय, सरस्वती जिह्वा, माया दाँत, वेद ब्रह्मरन्ध्र और कवियों का काव्य उस रूप की हँसी है तथा संसार का आनन्द उस विराट्पुरुष की दृष्टि है। ऊपर का ओष्ठ प्रीति, नीचे का ओष्ठ लोभ, पाँजर समुद्र, पर्वत हड्डियाँ, वृक्ष केश और लक्ष्मी चाल है। बाल्यवस्था, युवावस्था और बुढ़ापा माया है। प्रभात और सन्ध्या वस्त्र हैं। पवन जो ७२ हैं, श्वास है। वर्षनेवाले बादल शरीर के रोम, प्रकृति हृदय और मन चन्द्रमा है। सर्व मुनीश्वर पाँचों इन्द्रिय, दैत्य बल और देवता दशों प्रकार के धर्म शास्त्र और पुराण और जो ब्राह्मण वेदपाठी हैं, वह मुख्य सदाशिव स्वरूप हैं। धर्मवान् क्षत्रिय भुजा, वैश्य, ऊरु, शूद्र, चरण हैं। चारों वर्णाश्रम चारों वेद और सन्यस्त सहित उस विराट्रूप परमेश्वर के पाँचों मुख हैं। जो कोई मनुष्य ऐसे विराट्रूप का ध्यान करता है, वह सर्व पापों से छूट जाता है। हे नारद! हम तुमको चौदहों लोकों का वृत्तान्त विस्तार से सुनाते हैं कि जिस प्रकार ब्रह्माण्ड चौदहों लोक में बाँटा गया है—भूतल कि जिसमें सात खण्ड हैं, वह एक अयुतयोजन लम्बा है। वहाँ स्वर्गलोक से भी अधिक आनन्द है। वहाँ खण्ड अति प्रकाशवान् और सुन्दर हैं। वहाँ सर्व प्रकार के आनन्द की सामग्री सबको प्राप्त है। भोगविलास के लिये महासुन्दर स्त्रियाँ और असंख्य धन उपस्थित है। स्थान-स्थान पर विचित्र प्रकार से अति सुन्दर मन्दिर विद्यमान हैं वहाँ किसी वस्तु की न्यूनता नहीं है। वहाँ के स्त्री-पुरुष रात्रि-दिन क्रीड़ा और विहार में लगे रहकर सोने और रूपे के आभूषणों से सदा अलंकृत रहते हैं। वहाँ तोता और मैना आदि पक्षी मधुरवाणी से बोलते हैं जिनकी प्रियवाणी से कामदेव प्रबल होता है। देवताओं के स्थान रत्नों से जड़े हुये हैं जिनके देखने से विश्वकर्मा भी लज्जित होते हैं। वहाँ किसी को जरा, मृत्यु, दुःख और चिन्ता नहीं होती। सबके शरीर प्रकाश से देदीप्यमान हैं, क्योंकि वे सब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रसायन खाते हैं। वहाँ बहुधा दिति की सन्तान अर्थात् दैत्य और दानव और कद्रू के पुत्र काली आदि सर्प रहते हैं, जो प्रतिदिन प्रसन्न रहकर आनन्द में अपना समय बिताते हैं। वहाँ महाशिरोमणि के प्रकाश से रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता और न वहाँ अँधेरा होता है। एक ही तरह पर सब रात-दिन दिखाई देता है। उनके सम्पूर्ण मन्दिर रत्नों से बनाये गये हैं। वहाँ के स्त्री-पुरुष क्या-क्या आनन्द नहीं उठाते। कोकिला और पपीहा आदि अन्य पक्षी अपनी मधुर वाणी से कामदेव को बढ़ाते हैं। वहाँ की पुष्पवाटिकाओं में हजारों छायावाले तरह-तरह के वृक्ष फल-फूलों समेत मन को बड़ा आनन्द देते हैं जिनके ऊपर पक्षियों के बालक चहक-चहक कर धीरे-धीरे बोलते हैं। नदी में कमल के फूलों की पंक्ति, मछलियों का इधर-उधर फिरना, जलजन्तुओं का भ्रमण और चक-चकवी तथा हंसों के समूहों का पंक्ति बाँधकर बैठना मन को खींच लेता है। वहाँ की उज्ज्वल जल की भरी हुई नदियाँ जिनके दोनों तटों पर नाना वर्ण के पक्षी बैठे रहते हैं और उनके दोनों तटों पर सघन वृक्ष जल के भीतर झुके खड़े हुये हैं। फिर कमल पुष्प की पंक्ति भीतर से दूर तक चली गई है। यह सब वस्तु चित्त के मोहनेवाली हैं। उस लोक के राजा शेषजी हैं जो नीचे के सातों खण्डों के राजा हैं। उनके सम्मुख अप्सरा सदा नृत्य करती हैं और नागों की कन्या सेवा करती हैं। यह हमने संक्षेप से सातों खण्डों का वृत्तान्त वर्णन किया। अब हम जुदा-जुदा हर एक लोक का वृत्तान्त वर्णन करते हैं।

दूसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! पहिले हम अतल का वृत्तान्त वर्णन करते हैं, जहाँ मनुष्य पुण्य करने से पहुँचकर सब दुःखों को भूल जाता है। जिसका राजा मय दानव का पुत्र है जिसने छियानवे माया मन के हरण करनेवाली बनाई हैं। यह लोक किसी को सदाशिव की सेवा बिना प्राप्त नहीं होता और उसका विस्तार दश सहस्र योजन है। यहाँ का राजा मय दानव का पुत्र माया में ऐसा प्रवीण है कि उसकी माया कोई मनुष्य नहीं जान सकता। वह रात-दिन सदाशिव के ध्यान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

में रहा करता है और बेपरिश्रम तीनों लोक में भ्रमण किया करता है। उसके स्मरणमात्र ही से तीन प्रकार की महासुन्दर स्त्रियाँ आकर उसके सामने उपस्थित हो जाती हैं, जिनको कामिनी, स्वैरिणी और पुंश्चली कहते हैं। वह तीनों लोक को कामजाल में बन्धवान् करनेवाली हैं। जो मनुष्य पहिले जन्म में अच्छे काम करता है, वही मनुष्य दूसरे जन्म में अतललोक में प्रवेश कर सर्व प्रकार के विहार करता है। वे स्त्रियाँ हाटक अर्थात् स्वर्ण के रस को खाकर विहार करती हैं। उन स्त्रियों के केवल हँसने और स्पर्श से मनुष्य प्रीति में डूब जाता है। वहाँ का-सा आनन्द देवताओं को भी नहीं मिलता जैसा मनुष्य वहाँ जाकर पाता है। जो मनुष्य हाटकरस खानेवाली स्त्रियों से सम्भोग करते हैं, वह अपने आपको ही ईश्वर मानते हैं। उसके दश सहस्र हाथी का बल हो जाता है। वह सदा मदान्ध हो जाता है। यह हाटकरस जिसका गुण ऊपर वर्णन किया गया है, शिव की सेवा करके मय दानव के पुत्र ने पाया। उसने हाटकरस के मिलने के लिये हाटकपति शिव की पूजा की थी। जब उसने बहुत ही हाटकपति शिव की सेवा की तब हाटकपति शिव ने उसको यह हाटकरस कृपा किया। जो उस समय मय दानव के पुत्र ने सदाशिव की स्तुति की थी, वह अब भी किया करता है। वह यह है कि हे सदाशिव! तुम सबके नाथ और अनाथों के पालनकर्ता हो। तुम तीनों लोक के दुःख दूर करनेवाले और सुख देनेवाले हो। तुम्हारी महिमा अति गुप्त है जिसके वर्णन से वेद और पुराण भी थक गये हैं। हे महाराज! तुम्हारी सेवा से असंख्य मनुष्यों ने मुक्ति पाई है और संसार में बहुत ही सुख पाया है। ब्रह्मा, विष्णु और सनकादिक सब देवता तुम्हारी सेवा किया करते हैं। तुम सबके अर्थ पूर्ण कर देते हो। यह बात सब वेद और पुराण तुमको प्रणाम कर कहते हैं। यही मुझे इच्छा है कि आपका भजन निश्शङ्क किया करूँ। आपका नाम तो अधम उद्धारण है, इस बात को सुनकर हमने आपकी शरण पकड़ी है। हे नारद! इस तरह प्रतिदिन मय दानव का पुत्र शिव की स्तुति किया करता है और अतललोक में उसे अप्रमेय आनन्द रहता है। यह वृत्तान्त तो अतललोक का है। वितललोक का यह वृत्तान्त है कि वह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अतललोक के नीचे ऊँचाई में दश हजार योजन अण्डे के समान गोल है। वह तालाब नहरों और नदियों से जिनमें कमल फूले हुये हैं, अति शोभायमान है। उसमें नाना प्रकार की जड़ी-बूटी और फले हुये छाया-वाले सघन वृक्ष जिन पर पक्षी मधुर वाणी से राग गाकर मन को हर लेते हैं, सुशोभित हो रहा है। कहीं पर भँवर फूलों पर बैठकर गुंजार करते, कहीं सरोवरों पर हंस बैठे हुए हैं। वहाँ पर हाटकेश नाम शिवलिङ्ग विराजमान है। वे अपने गणों सहित लिङ्गस्वरूप से रहकर तीनों लोक का पालन करके, वहाँ के राजा को बूढ़ा नहीं होने देते तथा सदा शिवरानी को साथ लेकर विहार किया करते हैं। जिनके शीश से जल की धारा बहकर हाटक के नाम से प्रसिद्ध है। उसको पीकर अनल अति बलवान् हो वायु से संगम कर, जो थूक कि उसके मुख से बाहर गिरता है, उसी को हाटक नामी कञ्चन कहते हैं। उसको दैत्य भूषण बनाकर पहनते हैं और उसी का भूषण वहाँ की स्त्रियाँ भी पहनकर पतियों की सेवा में प्रवृत्त रहा करती हैं। राजा बलि हर प्रकार शिव की पूजा करते हैं। वह स्तुति जो राजा बलि शिव की करते हैं, यह है कि देवताओं के देवता, शरणागत के पालने वाले, सर्व संसार के दुःखहर्ता! तुम अपने भक्तों के अधीन होकर निर्गुण होने पर भी शरीर धारण करते हो और सबकी आत्मा हो। ब्रह्मा, विष्णु और देवतादि तुम्हारा ध्यान करके सब कुछ पाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र तुम्हारे रूप हैं। तुम्हारी आज्ञा से संसार उपजाकर और पालकर अन्त में नष्ट कर देते हैं। वेद तुमको कहते हैं कि तुम सबमें और सबसे भिन्न हो। तुम्हारा आदि और अन्त नहीं, तुम अविनाशी पुरुष हो। वेद, नारद, शारद और शेष तुम्हारे गुण वर्णन करते हुए थक जाते हैं पर अन्त नहीं पाते। इसी प्रकार वहाँ के रहनेवाले शिवजी की स्तुति करके प्रसन्न रहते हैं। हे नारद! अब सुतललोक का वृतान्त सुनिये। वह दश सहस्र योजन चौकोन हैं। वहाँ का राजा विरोचन का पुत्र बलि है, जिसने विष्णु को दान देकर पूर्ण कर दिया। हे नारद! राजा बलि अतिधन्य हैं जिसके मन में सदाशिव का प्रेम स्थिर रहता है। उसको शिव की भक्ति के कारण विष्णु मार न सके। राजा बलि के समान और कौन ब्राह्मण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

का माननेवाला है ? उसने संशय छोड़ विष्णु की इच्छा पूरी की और ब्राह्मणरूप विष्णु को देखकर सर्व प्रकार का विरोध दूर किया और अपनी खराबी देखकर धर्म न छोड़ा। वह मनुष्य संसार में शिव कहने के योग्य है, जिसके मन में ब्राह्मण के चरणों की प्रीति दृढ़ हो। उन्हीं राजा बलि से बाणासुर उपजा, जिसके मन में सिवाय शिवजी के और किसी की जगह न थी। उसने एक पर्वत को मलकर मट्टी कर डाला। उसके बल को दिक्पति और नाग सम्हार न सके। हे नारद ! यह भी शिव की कृपा समझो जो राजा बलि ने बाणासुर के समान पुत्र पाया। उसके नगर की रक्षा विष्णु को सौंपी गई। यह बात राजा बलि को सदाशिव की अति कृपा से प्राप्त हुई। इतना सुनकर नारद ने पूछा कि महाराज ! मुझे बताइए कि राजा बलि ने किस प्रभाव से ऐसा आनन्दपद और सत्पुत्र पाया ? ब्रह्माजी बोले कि जिससे राजा बलि ने एक मुनि की आज्ञानुसार सदाशिव का प्रेम बढ़ाकर और तीनों लोकों को अपने अधीन करके देवताओं को अपना कर देनेवाला बनाया तथा जिस कारण वह ब्रह्मभक्त हो विष्णु से न हारा और उनके पूर्वजन्म का वृत्तान्त भी हम वर्णन करते हैं। उसके सुनने से सदाशिव का प्रेम अधिक होकर भक्ति और मुक्ति मिलती है।

तीसरा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! पूर्व काल में कण्वनामी बड़ा पापी मनुष्य ब्राह्मणों की निन्दा करनेवाला हुआ। वह परस्त्रियों से भोग करता और हर प्रकार के कुकर्म करनेवाला था। वह बहुत से जीवों को बध कर इतना दरिद्रता में घिर गया कि उसके शरीर में कोपीन तक भी न थी। वह चोरी और छल से अपना समय बिताता। इस तरह वेश्याओं के साथ मैथुन कर उसने अपना धर्म नष्ट कर डाला। एक दिन वह कण्व एक वेश्या के लिए पान, फूल और चन्दन लिए हुए दौड़ा जाता था कि भाग्यवश उसका भार जल्दी चलने से पृथ्वी में गिर पड़ा। वह मूर्च्छित हो गया। जब कुछ देर के पीछे उसे चेत हुआ तो जो पान व फूल आदि पृथ्वी पर गिर पड़े थे, वह शिव के नाम संकल्प कर दिये और मुख

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से "नमश्शिवाय" भी कहा इतने में वह मर गया। सो उसे पापी जान यमराज के दूत लेने को आये। वे उसे तुरन्त पकड़कर यमराज के पास ले गये, जहाँ अपराधियों को दण्ड दिया जाता है। सो एक दिन यमराज ने उससे कहा कि हे पापी। तूने संसार में बड़े-बड़े पाप किये और अपने धर्म को छोड़ दिया। तेरे पाप हम मुख से वर्णन नहीं कर सकते पर तुझे हम बड़े नरक में डालेंगे। यह सुनकर कण्व ने उत्तर दिया कि हे महाराज, यमराज, एक ही दृष्टि से देखनेवाले! हमारी बात मन से सुनो मैं कुछ पापी नहीं हूँ, मेरे पाप सब नष्ट हो गये हैं। यह सुन धर्मराज ने चित्रगुप्त को बुलाकर कहा कि हे चित्रगुप्त! इस मनुष्य की बात मन लगाकर सुनो कि यह मनुष्य इतना पापी होने पर भी कैसी ढिठाई से वचन कहता है। इसको मैं अवश्य ही नरक में डालूँगा। यह सुन चित्रगुप्त ने तुरन्त शिव का ध्यान किया। उस पापी पर शिव की कृपा जान, यमराज से कहा कि इस मनुष्य ने जन्म भर बड़े-बड़े पाप किये पर मरने के समय इसने एक पुण्य का काम किया है। वह यह है कि एक वेश्या के निमित्त यह पानादि लिये जाता था, संयोग से पृथ्वी में गिरकर इसने सर्व सामग्री शिव को अर्पण कर दी और मरने के समय शिवजी के चरणों का ध्यान किया। हमारे विचार से यह नरक में डालने योग्य नहीं इसको स्वर्गलोक देना चाहिये और तीन घड़ी तक इन्द्रासन मिलना चाहिये। वहाँ जो कुछ इसके मन में आवे, वह करे। यह सुनकर यमराज ने मान लिया और उत्तमरूप से कण्व को दर्शन दिया और शिव की महिमा बखानी। इतने में बृहस्पति देवताओं समेत आये और कण्व को ऐरावत हाथी पर चढ़ाय इन्द्र के घर में ले गये। बृहस्पति ने इन्द्र से कहा कि तीन घड़ी के लिये कण्व को अपनी गद्दी पर बैठाओ। यह हमारी आज्ञा मानो। इसने उत्तम-उत्तम वस्तु शिव के अर्पण किया इससे तुम्हारी गद्दी इसको मिली है। यह सुनकर इन्द्र अपने गुरु की आज्ञा मानकर चिन्तापूर्वक वहाँ से किसी स्थान पर जा बैठे। कण्व इन्द्र के बदले गद्दी पर बैठकर बहुत ही प्रसन्न हुआ। हे नारद! कण्व ताम्बूलादि शिव के अर्पण करने से इस गति को पहुँचा। जो मनुष्य शिव और गिरिजा की पूजा करते हैं, वे मुक्ति पाकर आनन्द

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से रहते हैं। शिवपूजक को संसार में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं। इसी प्रकार असंख्य मनुष्यों ने कण्व और गुणनिधि के समान शिवजी की कृपा से शिवलोक पाया है, निदान उस समय हे नारद! तुमने कण्व के समीप जाकर कहा है कि अब तुम शची अर्थात् इन्द्राणी को अपने पास बुलावो। जिससे तुम्हारा राज्य सुशोभित होवे क्योंकि तुमको उससे मुख्य आनन्द प्राप्त होगा। कण्व ने हँसकर तुमसे कहा कि हमको शची से कुछ प्रयोजन नहीं, फिर तुम ऐसी बात मत कहना। फिर कण्व ने दान देना आरम्भ किया और अगस्त्य को हाथी, विश्वामित्र को घोड़ा, गालव्य को गौ और कल्पवृक्ष देकर बहुत अच्छी चीजें सबको दे दीं। शिवक्षेत्रों में जाकर बड़ी पूजा की और उसने तीन घड़ी पर्यन्त बहुत ही दानादि दे ब्राह्मणों को प्रसन्न किया। फिर इन्द्र पूर्व के समान अपनी गद्दी पर आ बैठा और बड़े क्रोध से शची को बुलाकर आँखें लाल करके कहा कि तुम्हारे साथ कण्व ने अवश्य ही कुकर्म किया है। तुम हमसे सत्य-सत्य कहो। यह सुन शची ने हँसकर कहा कि तुम अपने ऐसा सबको देखते हो, तुम्हारा मन शुद्ध नहीं है। कण्व बहुत शुद्ध मनुष्य है। यह कण्व बहुत ही निर्मल और शिव इस पर दयालु हैं। यह मोह आदि के जाल से छूट कर बड़ा भक्त हो गया है और परमपद पाकर तीनों लोक का आनन्द उठावेगा। यह कह शची चुप हो गई।

चौथा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शची की ऐसी बातें सुनकर इन्द्र अति लज्जित हुये। जब उसने देखा कि ऐरावत हाथी, उच्चैश्श्रवा घोड़ा और कामधेनु गौ आदि कुछ नहीं है तो बृहस्पति से कहा कि यह सब वस्तु कौन चुरा ले गया? बृहस्पति ने कहा कि यह सब वस्तु कण्व ने दान कर दिया। उसने स्वाधीनता में चाहा सो किया। उसने अपना राज्य तीन घड़ी के लिये जानकर अच्छे-अच्छे काम कर लिये। यह सुनकर इन्द्र ने कहा कि हमको वह उपाय बतलाओ जिससे हम अपनी वस्तु पावें। बृहस्पति ने उत्तर दिया कि इस बात की सम्मति यमराज के पास जाकर करो। सो इन्द्र यमराज के पास जाकर उनसे आदर पाय कहा कि तुमने कण्व की दुष्टता को नहीं जाना।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुमने क्यों हमारा स्थान उसको दिया ? उसकी दुष्टता से मुझे बड़ा दुःख हुआ है। देखो, उसने हमारी सब वस्तु दे दी, हमारी सब सामग्री ला दो। यह सुनकर यमराज ने कण्व को बुलाकर अतिक्रोध से कहा कि तूने यह कौन कर्म किया है। तुझको पराये धन के नष्ट करने से बड़ा नरक मिलेगा तुम अपने कुकर्मों का बुरा फल पाओगे। यह सुनकर कण्व ने अति-क्रोधकर निर्भय हो यमराज से कहा कि मैं बड़ा पापी हूँ पर मुझे संशय नहीं है। हमने इन्द्रासन पाय क्या ऐसा पाप किया, तुम क्यों हमको ऐसा शाप देते हो। जब तक हमारा वहाँ अधिकार रहा हमने जो मन में आया और जो उचित कार्य था, किया। तुम किस कारण उसको पाप गिनते हो ? यमराज ने कहा कि दान देना पृथ्वी में उचित है जहाँ दान देने से फल मिलता है। देवताओं के लोक में दान देना उचित नहीं। यह बात वेद और पुराण कहते हैं। इससे तुमको दण्ड दिया जाता है। तुमको बहुत ही दण्ड देवेंगे क्योंकि तुमने वेद के विरुद्ध कर्म किया है। इसी तरह यमराज और चित्रगुप्त ने कण्व को बहुत डरवाकर और धोखा देकर कहा कि इसको नरक में डाल दो और नाना प्रकार के दुःख दो। पर चित्रगुप्त ने हँसकर कहा हे धर्मराज ! आप वेद और पुराणों के विरुद्ध ऐसा वचन कहते हैं। कण्व क्यों नरक में जा सकता है। उसने वेदानुसार उत्तम धर्म किये। जो दान शिव के नाम से दिया जाता है, वह निष्फल नहीं होता। इसलिये तुम वेद का आशय समझकर कण्व को नरक में मत डालो। कण्व के सर्व पाप ऐसे धर्म के कामों से जल गये हैं। इसके समान तीनों लोक में कोई देवता और मनुष्य नहीं है। धर्मराज ने ऐसे वचन चित्रगुप्त से सुनकर इन्द्र से कहा कि तुम देवताओं के राजा व्यभिचार करने में प्रसिद्ध हो। तुमने सौ अश्वमेध यज्ञ करके इन्द्रलोक को पाया है। कण्व ने अपने शुभ कर्मों से सब पापों को भस्म कर डाला है। तुम अगस्त्यादि मुनीश्वरों के समीप जाकर विनयपूर्वक उनसे अपनी सब चीजें मांगो और उनको धन द्रव्य असंख्य देकर अपनी वस्तु ले लो। सो इन्द्र ने अपने लोक में जाकर मुनियों को बहुत धन दे अपनी वस्तु लौटा ली और अपने राज्य को फिर पाकर अतिप्रसन्न हुये। कण्व भी विरोचन का पुत्र हो सुरुचि के उदर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से उपजा जो वृषपर्वा की पुत्री थी। विरोचन ने अपना शिर इन्द्र को देकर तीनों लोक में यश प्राप्त किया। विरोचन से बलि उपजे। यह बलि बड़े पराक्रमी होकर शिव की कृपा से सदा प्रसन्न रहे। उनके तेज को इन्द्र ने सहकर कश्यप के समीप गये और बलि इन्द्र होकर सब देवताओं के राजा हुये। उन्होंने आपही दिक्पति, सूर्य, चन्द्रमा और शेष आदि के सब कार्य किये। शिव की कृपा से तीनों लोक के राजा होकर सब ब्रह्माण्ड को जीत लिया। विष्णुजी उनके द्वार पर ब्राह्मण का स्वरूप धार कर गये। इन्द्र के मनोरथ पूर्ण करने को बलि से सर्वभूमि दान लेकर इन्द्र को दे दी। यद्यपि विष्णु ने राजा बलि से बड़ा छल किया, तो भी बलि को कुछ दुःख न हुआ और अपने दान के कारण सुतललोक में जाकर विष्णु के प्रतिदिन दर्शन पाने से आनन्द से रहते हैं। यह राजा बलि का पूर्ण वृत्तान्त है।

पाँचवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! अब तलातललोक का वृत्तान्त सुनिये, जो सुतललोक के नीचे हैं। वह लम्बाई-चौड़ाई में सुतललोक ही के समान है। उसमें उत्तमोत्तम मन्दिर रत्नों और मुक्ताओं से जड़े हुये हैं। वहाँ की नदियाँ और झीलें कमलपुष्पों से सुशोभित हैं। वहाँ मय दानव रहता है। उसकी माया अतिबलवान् है। उसने त्रिपुर को इस प्रकार बनाया था कि कोई देवता उसको देख नहीं सकता था। वश शिव की कृपा से हर प्रकार की माया रच सकता था वह मानो माया का स्वरूप ही था क्योंकि बहुधा उसने नवीन रचनायें कीं। वह दैत्यों में इतना प्रतिष्ठित था कि जितनी विश्वकर्मा की देवताओं में प्रतिष्ठा है यह मय दानव शिव की कृपा से निर्भय होकर आनन्द में रहता है। वह त्रिपुर के जलने के समय शिव की शरण में जाकर बच रहा। तलातललोक नाना प्रकार की उत्तमोत्तम वस्तुओं और वन उपवनों से जिनमें पक्षी मधुर वाणी से बोलते सुशोभित हैं जहाँ नाना प्रकार के नदी-नाले और विचित्र उद्यान फूलों और फलों से भरे हुये हैं, स्वर्ग के समान हो रहा है। वहाँ किसी को कुछ भी दुःख और क्लेश नहीं। मय दानव वहाँ के निवासियों सहित शिव की बड़ी स्तुति करता

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है कि हे सदाशिव ! तुम शरण में आये हुए के पालनेवाले और दुःखों के नाशकर्ता हो। जो तुम्हारी शरण में आते हैं उन पर तुम तुरन्त ही दयालु हो जाते हो। मैंने इस बात को स्पष्ट ही देखा है कि जब तक मैं तुमको जानता न था, तब तक मैंने सुख नहीं देखा। जब मैं आपकी शरण में आया तो तुमने मुझे अपना सेवक जानकर बड़ी दया की। तुम्हारी यह सदा से रीति है कि अपने भक्तों को आनन्द देते हो। तुमने मुझे अपनी सेवा में रखकर तलातल लोक का राजा बनाया। इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले हे नारद ! इस तरह से मय दानव शिवजी की स्तुति करके प्रसन्न रहा करता है। अब महातल पाँचवें लोक का वृत्तान्त सुनो जहाँ कद्रू का पुत्र तक्षक राजा है। उसके फण में इतने रत्न हैं कि उस लोक में कभी अँधेरा नहीं होता। उस लोक के चारों कोणों में नदियाँ, तालाब, कूप, बावली आदि सुशोभित हैं। वह लोक सुन्दर वनों, उपवनों, विचित्र फुलवारियों और सघन वृक्षों से महारमणीक हो रहा है। स्थान-स्थान पर छायावाले वृक्ष अतिशोभायमान हैं, जिन पर पक्षी मधुर स्वर से आलाप रहे हैं। वहाँ पर तक्षक, सुषेण, कुहुक आदि सर्प महाविषधर विराजमान हैं। जो अतिभयंकर हैं और मणियों से, जो उनके शीश में लगी हुई हैं प्रकाशवान् हो रहे हैं और सदा गरुण से डरते रहते हैं। उनके विहार के निमित्त सर्व प्रकार की सामग्री वस्त्र, आभूषण, रत्न और मन्दिर वर्तमान हैं। उनके तेज और बल को हम कहाँ तक वर्णन करें, वह अकथनीय है। वहाँ का राजा तक्षक शिवजी का बड़ा भक्त है। उसने चित्राङ्गद से मित्रता कर और उसको शिवभक्त जान उसके सब कार्य पूर्ण कर दिये। हे नारद ! नीचे लिखी हुई स्तुति जिसका तक्षक प्रतिदिन पाठ करता है हम तुमको सुनाते हैं, मन देकर सुनो ! हे शंकर, सदाशिव, भक्तों के पालनेवाले ! तुम्हारी महिमा अलख है जिसको ब्रह्मा, विष्णु, सब देवता, मुनि, शेष, शारदा, सनकादिक और व्यास भी पार नहीं पा सकते। वे नाना प्रकार से तुम्हारी स्तुति करते हैं पर तो भी थककर मौन हो जाते हैं। यह महातल लोक का वृत्तान्त है। अब हे नारद ! रसातललोक का वृत्तान्त सुनो। वह महातल के नीचे है उसकी लम्बाई-चौड़ाई ऊपर लिखे हुये लोकों के समान

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है वहाँ दानव और दैत्य जिनको कालकेय और कवच कहते हैं, रहा करते हैं, जो बड़े बलिष्ठ और प्रतापवान् हैं। सो एक समय देवताओं ने उनको बड़े तेजस्वी जानकर सुरमा को पाणिनाम दानवों के राजा के समीप भेजा। उसने वहाँ पहुँचकर कहा कि तुम नहीं जानते कि विष्णुजी तीनों लोक के स्वामी और सबके पालनकर्त्ता हैं। वह चाहते हैं कि दैत्यों को मारकर तीनों लोक को अपने अधीन कर लेवें। तुम क्यों अचेत हो? तुम्हारा अब जीना कठिन है। ऐसे वचन सुनकर वहाँ के निवासी बहुत डरे। तब से वे सदा भयभीत रहकर अहर्निश शिवजी की सेवा किया करते हैं कि देवताओं से बचे रहें। हे नारद! यही रीति है कि जो सदाशिवजी की शरण में आता है, वह सदा निर्भय रहता है और उसको कुछ दुःख नहीं होता। अब आगे हम पाताललोक का वर्णन करते हैं जो रसातल के नीचे है। उसकी लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई भी ऊपर लिखे हुये लोकों के समान है। वहाँ वासुकि, शंख, कुलिक, धृतराष्ट्र, धनञ्जय, कमल, अश्वतर, देवदत्त, कर्कोट आदि नाग रहते हैं। जिनके सिरों में पाँच, सात, दश, सौ और हजार तक मणियाँ लगी हुई हैं। वे मणियाँ ऐसी प्रकाशवान् हैं जिनसे रात और दिन कुछ जाना नहीं जाता। वहाँ पर जरा, मरण और निर्बलता आदि का कुछ भय नहीं। उनके मन्दिर अति सुन्दर और वस्त्र, रत्नों से जड़ित हैं जिनकी शोभा चारों ओर फैली हुई है। वे नाग सब शिवजी की भक्ति में तत्पर रहते हैं जिनसे उनको शिवजी की कृपा से कुछ भय और संशय नहीं है। उनके वासुकिनाग राजा हैं, जो सदाशिवजी की यह स्तुति करते हैं कि हे शिवजी! तुम आदि-अन्त रहित सबके स्वामी हो। तुम तीनों लोक के उत्पत्तिकर्ता, पालनकर्ता और संहर्ता परब्रह्म हो। हम तुमको पहिचानकर तुम्हारी शरण में आये हैं। तुमको सब भक्तवत्सल कहते हैं क्योंकि तुम प्रसन्न होकर भक्तों के मनोरथ पूर्ण करते हो। तुम सबमें व्याप्त हो जैसे जल में शीतलता, अग्नि में उष्णता, सूर्य में प्रकाश, दूध में घृत वर्तमान है, इसी प्रकार कोई वस्तु संसार में तुमसे भिन्न नहीं। ब्रह्मा से तृण तक सब तुम्हारे अधीन हैं। तुम कानों बिना सुनते, बिना आँखों के देखते, बिना नाकसूँघते, बिना मुख वेद पढ़ते, बिना भुजा सर्व कार्य करते,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चरण बिना चलते और बिना लिङ्ग के सृष्टि को उत्पन्न करते हो। यद्यपि तुममें कोई इन्द्रिय नहीं पर तुम्हीं सर्व कार्य करते हो। इस बात को कोई नहीं जानता। वेद भी तुमको नेति-नेति वर्णन करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु और देवता आदि भी तुम्हारी महिमा वर्णन नहीं कर सकते। तुम केवल भक्ति के अधीन हो। हे नारद! यह सात लोक जो वर्णन किये सात लाख योजन हैं जो सप्ताम्बर कहे जाते हैं।

छठा अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! यह सातलोक जो हमने ऊपर वर्णन किये दश-दश हजार योजन हैं जो अण्डे के समान गोल और सुडौल हैं। उनकी लम्बाई सात लाख योजन है। उन सातों लोकों के नीचे एक और लोक है जो सब लोकों का मूल है। उसका विस्तार बीस हजार योजन है जिसमें शेषजी विराजमान हैं। उनके हजार शिर और हर शिर में मणि आदि रत्न अति सुशोभित हैं। शेषजी पृथ्वी को अपने शिर पर धरे हैं और शिवजी के तामसीस्वरूप हैं। वे शिवजी का नित्यप्रति ध्यान किया करते हैं। उनके नाम संकर्षण, अनन्त आदि हैं। उनका संकर्षण नाम इसलिये है कि जितनी वस्तु संसार में वर्तमान हैं, उन सबको यह खींचनेवाले हैं। अनन्त उनका नाम इसलिये पड़ा कि वे अथाह हैं जब प्रलयकाल आता है तो वे रुद्र के दोनों भवों के बीच से निकलकर ग्यारह शरीर धार अपने प्रकाश से प्रलय करके सब का नाश कर देते हैं। उस समय उनके हाथ में त्रिशूल होता है और प्रलय करते हुये उनका स्वरूप महासुशोभित होता है। जब प्रलय कर चुकते हैं तो सुन्दर स्वरूप धार आभूषण पहन लेते हैं और नाग-कन्या उनकी नाना भाँति से सेवा करती हैं। हे नारद! उनके पूजन-स्मरण से सबको सुख प्राप्त होता है और उनका पूजन देवता मनुष्यादि सब करते हैं। उनकी पूजा से शिवजी की भक्ति प्राप्त होती है। इसी प्रकार और सब देवताओं की पूजा इसलिये की जाती है कि शिवजी के चरणों की प्रीति बढ़े। इसी से उचित है कि शिवजी के चरणों की सेवा नित्य दिन करे और शेषजी भी यही विचारकर शिवजी की भक्ति किया करते हैं। नित्य पूजा की सामग्री इकट्ठी कर दण्डवत् और पूजन के अनन्तर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे शिवशङ्कर, त्रिलोकीनाथ ! तुम आदि निराकार ज्योतिस्वरूप हो पर भक्तों के आनन्द के लिये सदा भूतल में अवतार धरते हो। फिर दुष्टों को दण्ड दे अपने भक्तों को प्रसन्न कर लोक में सुख और परलोक में मुक्ति देते हो। आपने कहाँ और किसके कार्य को पूर्ण नहीं किया। जब आपने हलाहल विष से जलते हुये देखा तो आप ही ने उसको पीकर देवताओं को जलने से बचाया। देखो, व्याध ने कोई ऐसी पूजा न की कि उसके चरणों से बिल्वपत्र वृक्ष से टूटकर आप के लिङ्ग पर गिरे। उससे आपने उसको अपना पूजनेवाला जानकर मुक्ति दी। इसी प्रकार आपने एक हरिण को उसकी हरिणियों समेत परमपद दिया। तुम सदा अपने भक्तों के निमित्त नाना प्रकार के स्वरूप धारकर अवतार लिया करते हो। आपने विष्णुजी पर प्रसन्न हो जालन्धर, त्रिपुर और तारक दैत्यों का नाश कर दिया। पहिले कामदेव को भस्म कर फिर उसकी स्त्री का दुःख देख उसे जिला दिया और जब आप अपने चरणकमल भूमि-लोक पर मार कर नाचते हैं तो उससे सर्वलोक काँप उठते हैं। जब तुम अपनी पवित्र भुजा उठाते हो तो उस समय आकाश घूम जाता है। आपने ब्रह्मा का पाँचवाँ शिर काटकर सबका सन्देह दूर कर दिया। हम आपकी महिमा वर्णन नहीं कर सकते। आपसे काल भी डरता है। ब्रह्मा और विष्णु आदि देवता आपकी भवों को देखते रहते हैं कि क्या आज्ञा होगी। हे सदाशिव ! आपने गज, गङ्गा, व्याध, शबरी, शबर, श्रीकर, कण्व और गुणनिधि जो महापातकी थे, उनको उत्तम गति दी और की क्या कथा है।

सातवाँ अध्याय।

इन सब लोकों की कथा सुनकर नारद ने पूछा हे ब्रह्मन् ! आप बताइये कि नरकलोक कहाँ है? वह सब तीनों लोक में गिने जाते हैं अथवा भिन्न हैं ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र ! जो नीचे के सातों लोक हमने वर्णन किये जहाँ शिवजी के बड़े-बड़े मन्दिर हैं। उन सबमें पाताल के नीचे जल के ऊपर नरकलोक हैं जो संख्या में पचपन करोड़ हैं और वे पापियों के दण्ड देने के स्थान हैं। पर उनमें जो नरकराज हैं, उनका हम वर्णन करते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। तामिस्र १ लोहदण्ड २ महाभैरव ३ शालूक रौरव ४ कुमुदल ५ भीष्म ६ भयंकर ७ पूतरज ८ कालसूत्र ६ संघात १० तापन ११ कङ्गाल १२ सञ्जीवन १३ महापथ १४ विचर्चित १५ अन्ध १६ कुम्भीपाक १७ असिपत्र १८ पतन १६ अग्निमन्थन २० संदग्ध २१ पर अन्य मुनियों ने उन नरकों की संख्या २८ बताई है। सो इक्कीस तो वही हैं जो ऊपर वर्णन किये गये। शेष यह हैं क्षारकर्दम २२ राक्षसभोजन २३ शूलप्रोत २४ दण्डशूल २५ घोर २६ अवटनिरोधन २७ सूचीमुख २८ और यमराज इन नरकों में अतिभयंकर रूप धार पापियों को दण्ड देते हैं। वे अपराधियों को टेढ़ी भौंह, भयंकर दाँत और तीनों आँखें लाल किये भैंसे पर सवार प्रबल के समान शब्द करते हुये पापी को दिखाई देते हैं जिनको देखकर पापी थरथरा जाते हैं और वही धर्मराज धर्म करनेवाले लोगों को अति शोभायमान स्वरूप से दर्शन देकर उनको कृतार्थ कर देते हैं। उनका नाम ऐसे सुन्दर स्वरूप के साथ धर्मराज प्रसिद्ध है। उनका लोक दक्षिण में है जहाँ पितर रहते हैं जो धर्म-अधर्म के लिये परस्पर वार्त्ता करते हैं। उन्हीं की सम्मति से पापियों को दण्ड दिया जाता है। चित्रगुप्त भी लोगों के कर्मों के लिखनेवाले हैं। वे रात-दिन मनुष्यों के बुरे भले कर्म लिखा करते हैं हमारे बारह पुत्र जो श्रवण के नाम से प्रसिद्ध हैं, वे हर मनुष्य के शुभाशुभ कर्म से चित्रगुप्त को खबर देते हैं। उस सभा में अच्छे-अच्छे धर्मात्मा पृथ्वी के राजा जिन्होंने जन्म भर नीति के साथ राज्य किया, सभापति हैं। वहाँ के यह रीति है कि जब कोई मरकर वहाँ जाता है तो पहिले पितरलोक विचार करते हैं कि यह मनुष्य पापी है या धर्मात्मा। जो धर्मात्मा हुआ तो उसको अच्छी जगह देते हैं और पापी जाना गया तो उसको नरकों में डाल देते हैं। जो मनुष्य पापी व शिवजी के विरोधी होते हैं, उनको यमदूत सब नरकों में भ्रमण कराते हैं। सर्वपापों का विस्तार कि किससे कौन नरक प्राप्त होता है, वर्णन करते हैं जिससे मनुष्यों को लज्जा और भय से रहित करके शिवजी के चरणों में प्रेम बढ़ाता है। जो मनुष्य दूसरे की स्त्री या धन ले लेते हैं, वे यमदूतों से पकड़े जाकर तामिस्र नरक में डाले जाते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं, जहाँ उनको लोहू और चरबी पीनी पड़ती हैं। वे बहुत मार खा कर अपने किये हुये कर्मों का पश्चात्ताप करते हैं। जो मनुष्य छल से किसी स्त्री का पतिव्रत धर्म ले लेते हैं, वे अन्धतामिश्र नरक में पड़कर बड़ा दुःख सहते हैं। जो मनुष्य मान और ममता में पड़कर जीवों के साथ शत्रुता करते हैं और केवल परिवारवालों के पालन में प्रवृत्त रहते हैं और जीवों का वध करते हैं, ऐसे मनुष्य रौरव नरक में डाले जाकर नाना भाँति के दुःखों में पड़ते हैं। वहाँ कोई मनुष्य उनकी सहायता नहीं करता। जिसके लिये उन्होंने अपना धर्म नष्ट किया था, वही अपना पूरा बदला लेते हैं। जो मनुष्य केवल अपना शरीर पालन करके दूसरों की भलाई में मन नहीं लाता, वह भी इसी रौरव नरक में पड़कर अपना मांस जो यमदूत उन्हीं के शरीर से काट-काटकर उन्हें देते हैं, खाते हैं। यह रौरव नरक महा-कठोर है। जो मनुष्य चित्त के कठोर और निर्दयी होकर पक्षियों की हिंसा करते हैं, वे कुम्भीपाक नरक में पड़कर जलते हुये तेल में डाले जाते हैं। जो मनुष्य कि ब्राह्मण और पितर आदि के जन्म भर विरुद्ध रहे, वे कालसूत्र नरक में जाकर बड़ा ही दुःख उठाते हैं। यह कालसूत्र नरक दशसहस्र योजन विस्तार में हैं और पृथ्वी उसकी सम्पूर्ण ताँबे की है। वह सूर्य और अग्नि की गरमी से जल रही है। जब पापी उसमें छोड़ा जाता है तो उस गरमी को सँभार नहीं सकता और चारों ओर दौड़ता फिरता है। कहीं उसको ठहरने की जगह नहीं मिलती। जो मनुष्य अपना मुख्य धर्म छोड़ पाखण्डी हो कालक्षेप करते हैं, वे असिपत्र नरक में पड़कर अग्नि समान उष्ण पृथ्वी में दौड़ाये जाते हैं और खड्गों से मारे जाते हैं। वे ऐसे दुःखों को न सहकर पग-पग पर गिर पड़ते हैं और किसी प्रकार से आनन्द नहीं पाते। जो मनुष्य अदण्ड्य मनुष्यों पर दण्ड लगाते हैं, उनको यमदूत ऊपर लिखे हुये नरक में डालकर भलीभाँति मारते हैं और ऊख के खण्डों के समान कोल्हू में डालकर पेर डालते हैं। जो मनुष्य प्रति दिन पञ्च मख किये बिना भोजन कर लेते हैं। वे कौवे के समान होकर कृमि भक्षण करते हैं और मरने के समय वे भी कीड़े होकर आप भी कीड़े खाते हैं। जो मनुष्य रत्नादिकों की चोरी करते हैं, वे संदग्ध

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नरक में डाले जाकर अग्नि से दागे जाते हैं। जो मनुष्य शास्त्र विवर्जित स्त्रियों से भोग करते हैं, उनके लिये खम्भ नामी नरक बना हुआ है। जो रात-दिन अग्नि के समान जलता है और लोग उसी खम्भे में लिपटाये जाते हैं। जो मनुष्य पशुओं के समान सिवाय मैथुन के और कुछ कार्य नहीं करता, वह कण्टक और शाल्मलि नरक में डाला जाता है। यमदूत उसका लक्ष्य बनाकर अपने तीरों से छेदते हैं। जो मनुष्य राजा व अधिकारी होकर धर्म की रीतियों पर नहीं चलते और पुराने धर्मों को तोड़ सर्व धर्मों का खण्डन कर एक नवीन मत प्रकट करते हैं, वे सब वैतरणी नदी में डाले जाते हैं। यह नदी महाअशुद्ध जिसमें समूह के समूह पापी गोते खाते हैं मल, मूत्र, रक्त, केश, अस्थि, नख, मांस आदि से भरी हुई और जो मनुष्य शौच, धर्म, नियम और लज्जादि का कुछ विचार न करके वेश्याओं के साथ सम्भोग कर पशुओं के समान हो जाते हैं, वे पूयोदक नरक में पड़कर मेद, मज्जा, मल, मूत्र, फल आदि भोजन के बदले खाते हैं। जो मनुष्य ब्राह्मण होकर वन के पशुओं का शिकार किया करते हैं, वे मरने के अनन्तर विकराल नरक में पड़ते हैं और यमदूत उनका शरीर शिर से पाँव तक छेद डालते हैं। जो मनुष्य झूठ ही पाखण्ड कर के यज्ञ के ओढर से निर्दयता के साथ जीवों के वध का कारण होते हैं, वे विशेष करके नरक में डाले जाकर बड़ी आपत्ति में पड़ते हैं। जो अपनी स्त्री छोड़ दूसरे वर्ण की स्त्री से मैथुन करते हैं, वे लालाभक्ष नरक में पड़कर वीर्य पीते हैं। जो मनुष्य चोरी और लूटमार करके औरों का धन हरते हैं और गाँव उजाड़ देते हैं, वे सारमेयादन नरक में प्रवेश करते हैं, जहाँ दोसौ सत्तरि महाभयंकर पक्षी ऐसे पापियों का मांस भक्षण करते हैं। जो मनुष्य लोभ से अथवा दान लेने की इच्छा से झूठी गवाही देते हैं अथवा धन और दान के सम्बन्धी व्यवहारों में झूठ वर्णन करते हैं, वे अनन्त नरक में डाले जाते हैं, जहाँ सौ योजन ऊँचा पर्वत बहुत अँधेरे में है। सौ यमदूत ऐसे मनुष्य को उस पहाड़ पर चढ़ाकर शिर के बल नीचे डाल देते हैं और पापी मनुष्य के शरीर के टुकड़े टुकड़े हो जाते। जो ब्राह्मणा या स्त्री मद्य पीते हैं, वे कूप नरक में पड़ते हैं, जहाँ वे बड़ा दुःख

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पाते हैं। हे नारद! यह ऐसे यहाँ भयंकर इक्कीस नरक हैं। अब हम नरक के सात खण्डों का वर्णन करते हैं, मन देकर सुनो। जो कोई मनुष्य ऐसे मनुष्यों के साथ जो वर्णाश्रम, तप, जप, नियम और आचार में परिपूर्ण हो कठोरता, अन्याय और अशीलता करे तो वह क्षार नरक में शिर के बल डाला जाता है। जो पुरुष किसी मनुष्य को बलिदान की तरह उसको बलि देते हैं अथवा जो स्त्री मांस खाती है, ऐसे पापी ऋत्तभोजनी नरक में पड़कर दण्ड पाते हैं और यमदूत आप ऐसे मनुष्यों को यमराज के सम्मुख पछाड़ कर उनका मांस शरीर से काट-काट कर खा लेते हैं। जो मनुष्य पाप रहित मनुष्यों को विश्वास देकर फिर उनको मार डालते हैं और जीवों के मार डालने से प्रसन्न होकर जाल से जीवों को पकड़ते हैं और दयाभाव छोड़ देते हैं, ऐसे मनुष्य शूलप्रोत नरक में पड़कर बहुत भूख और प्यास से दुःखी रहते हैं। उनके मांस कौवे, चील्ह और गृध्र अपनी चोंच से नोच-नोच कर खा डालते हैं। जो मनुष्य जीवों के साथ अपकार करते हैं, वे दण्डशूक नरक में पड़कर सप्तमुखी अथवा पंचमुखी सिंहों से दुःख उठाते हैं। जो अन्धे आदमियों को सीधी राह से भटकाकर नाले या गढ़े में जाने को भटकाते हैं, वे निरोधन नरक में पड़कर बड़ा दुःख पाते हैं। जो अतिथि और अभ्यागातों को क्रोध की दृष्टि से देखते हैं, उनके नेत्र कौवे और चील्ह मरने के उपरान्त निकाल लेते हैं। जो मनुष्य धन सम्पत्ति से अहंकारी होकर उसकी संग्रह में लगे रह कर सब लोगों को ग्लानि की दृष्टि से देखते हैं और धन के बटोरने तथा रक्षा करने के सिवाय दूसरा कार्य नहीं करते, वे शूचीमुख नरक में डाले जाते हैं। यमदूत उनको सुइयों से घायल कर देते हैं। हे नारद! वहाँ ऐसे-ऐसे नरक हजारों हैं जो विस्तार भय से वर्णन नहीं किये। समझना चाहिये कि हर मनुष्य न्यूनाधिक्य पापों के अनुसार नाना प्रकार के दुःख झेलते हैं। इसी प्रकार धर्मात्माओं को स्वर्ग के लोकों में नाना प्रकार का आनन्द प्राप्त होता है और जब तक कोई पुण्य-पाप शेष रहता है, तब तक मनुष्य को इस मर्त्यलोक में आकर शरीर धारण करना पड़ता है। जिसकी जैसी वासना होती हैं, उसी के अनुसार उसके लक्षण प्रतीत होते हैं। अर्थात् पुण्य-पाप के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अनुसार पुण्य-पाप भोगना पड़ता है, जो मनुष्य यह कथा चित्त देकर पढ़े या सुनेगा, दोनों लोक में आनन्द उठावेगा।

आठवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! हम नीचे के लोकों की कथा वर्णन कर चुके, अब ऊपर के लोकों की कथा विस्तार से वर्णन करते हैं। ऊपर के लोकों में आठ लोक नीचे के लिखे अनुसार गिने जाते हैं। उनमें क्षिति-लोक है जिसमें मनुष्य रहते हैं। यह लोक पचास कोटि योजन विस्तार में है। उनके सम्बन्धी सात द्वीप यह हैं जिनको चारों ओर से दिग्गज घेरे हुये हैं। पहिला जम्बूद्वीप, दूसरा प्लक्ष, तीसरा शाल्मलि, चौथा कुश, पाँचवाँ क्रौंच, छठा शाकद्वीप और सातवाँ पुष्कर, यह सातों द्वीप पहिला पहिले से और दूसरा दूसरे से लम्बाई में दूना है। सातों समुद्र जो सातों द्वीप के गिर्द खाई की तरह पर हैं, उनके नाम यह हैं पहिला क्षारोदधि, दूसरा इक्षुरसोदधि, तीसरा सुरोदधि, चौथा घृतोदधि, छठा मण्डोदधि, सातवाँ शुद्धोदकोदधि। राजा प्रियव्रत मनु के पुत्र सातों द्वीप के राजा हुये थे। प्रियव्रत ने अपने सातों पुत्रों को एक-एक द्वीप दे दिया था जहाँ उन्होंने राज्य किया। उन सातों लड़कों के यह नाम हैं–अग्नीध्र १ जिह्व २ मुखबाहु ३ कनकरेत ४ घृतपृष्ठ ५ मेधातिथि ६ और बीतिहोत्र ७। इतनी कथा सुनकर नारद ने विनय किया–हे महाराज! आपने यह सृष्टि का वृत्तान्त बहुत संक्षेप से वर्णन किया। मेरी यह इच्छा है कि सर्वसृष्टि का वृत्तान्त विस्तार से सुनूँ। ब्रह्माजी बोले कि हे पुत्र! शिवजी की माया और पृथ्वी भर का वृत्तान्त वर्णन से बाहर हैं। उनका कोई मनुष्य पूर्णरूप से नहीं जानता। पर तो भी हम अपनी विद्या और निश्चय से वर्णन करते हैं।

जम्बूद्वीप का वृत्तान्त।

यह जम्बूद्वीप नियुत योजन विस्तार से है और कमल फूल के समान गोल और बराबर है। उसके भीतर नव खण्ड और आठ पर्वत हैं। उन खण्डों के यह नाम हैं–पहिला भद्राश्व, दूसरा हरिवर्ष, तीसरा किम्पुरुष, चौथा भारत, पाँचवाँ केतुमाल, छठा रम्यक, सातवाँ हिरण्यमय, आठवाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कुरु और नवाँ इलावर्त जो आठ खण्डों के बीच में है। आठों पर्वतों के यह नाम हैं–पहिला गन्धमादन, दूसरा निषध, तीसरा हेमकूट, चौथा हिमालय, पाँचवाँ माल्यवान्, छठा नीलगिरि, सातवाँ श्वेत, आठवाँ शृङ्गवान् और इलावर्त जो आठों खण्डों के बीच में हमने वर्णन किया है। उसकी नाभि में सुमेरु नामी एक पर्वत सब पर्वतों का राजा है जो सब स्वर्ण ही का है, द्वीप के बीचोबीच में सुशोभित है। इलावर्त के चारों ओर बहुत से पर्वत हैं। अर्थात् पूर्व की ओर एक, दक्षिण की ओर तीन, पश्चिम की ओर एक और उत्तर में तीन पर्वत स्थित हैं। सुमेरु के चारों ओर चार पर्वत घिरे हुये हैं। अर्थात् पहिला मन्दर, दूसरा मेरु, तीसरा शुपार्शु और चौथा कुमुदाख्य। वहाँ चार वृक्ष हैं–पहिला आम्र, दूसरा जामुन, तीसरा कदम्ब और चौथा बरगद वहाँ चार ही चार समुद्र हैं–पहिला दधि का, दूसरा शहद का, तीसरा शर्बत का और चौथा शुद्ध जल का। वहाँ चार वन देवतों के विहार के निमित्त हैं–पहिला नन्दन वन, दूसरा क्षेत्ररथ, तीसरा वैभ्राजक और चौथा सर्वतोभद्र। मेरु के पूर्व की ओर दो पर्वत देयकूट नामक हैं। दक्षिण की ओर कैलास और कबीर आदि हैं। त्रिशृङ्ग और मकर उत्तर की ओर हैं। सुमेरु के ऊपर विचित्र नगर बसे हुये हैं। ईशान की ओर सदाशिवजी विराजमान रहते हैं। बीच में हम अर्थात् ब्रह्मा और नैर्ऋत्य दिशा में विष्णु भगवान् का लोक है अर्थात् तीनों देवता अपने गणों सहित अपनी-अपनी पुरी में रहते हैं। उसकी आठों ओर दिक्पति भी हैं। हे नारद! यह नव खण्ड जम्बूद्वीप के हैं जो ऊपर वर्णन किये गये। उन नव खण्डों में भरतखण्ड कर्मक्षेत्र अर्थात् शुभ कार्य करने के योग्य हैं क्योंकि इस खण्ड में शुभकार्य करने से उत्तम फल प्राप्त होता है। इस कर्मभूमि में मनुष्य पुण्य-पाप करके उत्तम फल भोग करता है। इसमें युग भी बदलते रहते हैं और शेष सब खण्डों में त्रेतायुग बना रहता है और सर्व मनुष्य वहाँ सदा प्रसन्न रहते हैं तथा देवताओं के समान दशसहस्त्र हस्ती का बल रखते हैं।

नवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सब खण्डों के रहनेवाले शिव की पूजा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तथा सेवा में लगे रहते हैं और सदाशिव सबसे सेवा किये जाते हैं जैसा कि आगे वर्णन किया जाता है। मधुखण्ड में शेषनाग जो सब नागों के राजा हैं, बड़े प्रेम से सदाशिव की पूजा और स्तुति करके दण्डवत् करते हुये यह विनती करते हैं कि हे सदाशिव ! हम तुम्हारे शुभचरणों को जो लाल और कमल के समान हैं, ध्यान करते हैं। तुम मृत्यु को जीते हुये हो। जो तुम्हारी इच्छा होती है, उसी प्रकार का रूप धारण करते हो। तुम्हारी माया सर्वसंसार को मोहे हुये है। वही सर्वकार्य करने की शक्ति रखती है। तुम्हारे तीनों गुणों से ब्रह्मा, विष्णु और हर अवतार लेते हैं। तुम्हीं संसार के उत्पन्न, पालन और नष्ट करनेवाले हो। तुम्हीं से संसार उपजता है। तुम सबसे भिन्न हो। देवता, मुनि और मनुष्य सब तुम्हारे अधीन हैं। वे तुम्हारे माया रूपी तागे में बँधे हुये हैं जिनके अधीन होकर सर्व मनुष्य अपना-अपना कार्य करते हैं। वह शुद्ध स्वरूप आपही हैं क्योंकि सर्व जीव तीनों गुणों में भूले हुये हैं। इससे आप उनकी दृष्टि में नहीं समाते। जो कि शेषजी ऐसी स्तुति शिवजी के सामने पढ़ा करते हैं, इसी से वे नीरोग रहते हैं। इसी प्रकार भद्राश्वखंड में हयग्रीव नाम सदाशिव की पूजा वहाँ के राजा करते हैं और शिव का मन्त्र जपकर यह स्तुति करते हैं कि हे महेश ! आपके चरित्र अतिविचित्र हैं। तुम्हारी माया के अधीन सर्वमनुष्य और देवता आदि हैं। हर जीव को अपनी मुक्ति बनाने के लिये केवल आपकी ही कृपा चाहिये। आपकी दया बिन मनुष्य भवसागर से पार नहीं हो सकता। हरिवर्षखंड में विष्णु का नृसिंह अवतार शिवजी की पूजा और ध्यान करके मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेम से शिवजी की स्तुति करते हैं कि हे देवताओं के देवता, शिवशङ्कर, जगदीश ! हम पर कृपा करो। तुम्हारे समान और कोई देवता नहीं। तुम्हारी सेवा सब देवता और मुनि करते हैं। हे ईश, गिरिजापति, सबके स्वामी, सर्वसंसार में श्रेष्ठ और सबके उपजानेवाले ! आप किसी से नहीं उपजे। यद्यपि वेद, पुराण और सर्वशास्त्र तथा शुक्र और शेष आपका यश गाते हैं पर अन्त नहीं पाते। ऐसी आपकी असंख्य महिमा है। हम उनका कहाँ तक वर्णन करें। तुम्हारा नाम अतिपवित्र तीनों लोक को आनन्द देनेवाला है।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमको अपना सेवक जान कर कृपा करते रहो। निदान नृसिंहजी वहाँ के रहनेवालों समेत शरभनाथ शिवजी की सेवा में अहंकार छोड़ ध्यान लगाये रहते हैं। किम्पुरुष खंड में वहाँ के राजा समेत श्रीरामचन्द्रजी शिवजी की पूजा करके उनका मन्त्र जपते हैं और अतिप्रेम के साथ शिव का यश गाकर यह स्तुति करते हैं कि हे शिवशङ्कर, रुद्र, दीनबन्धु, दुःख के दूर करनेवाले, सबके स्वामी! आपने राजा काम का उद्योग पूर्ण किया। शबर की इच्छा पूरी की और चन्द्रशेखर तथा श्रीकर को मुक्ति दी। धर्मगुप्त, शुचिव्रत और सत्यसिन्धु को कृतार्थ कर दिया। शरभ अवतार धार नृसिंह का गर्व दूर कर दिया। तुम अतिदयालु और अपने भक्तों को मोक्ष देते हो और हर प्रकार अपनी शरण में आये हुये को तारनेवाले हो। आप अपने भक्तों का दुःख देख नहीं सकते, इसी से अति भयंकर स्वरूप धारते हो। आपको हमारा दुःख अच्छा न लगा। इसी से हमारे दुःख को दूर करने को आपने हनुमान् अवतार धारण किया और श्रीसीताजी के वियोगसागर में, जिसमें हम डूबते थे, आपने पार लगाया। हमने आपकी कृपा से रावण और महिरावण को वध किया। सर्वलोकों का राज्य जो हमको प्राप्त हुआ है, वह केवल आप ही की चरणसेवा का परिणाम है। भरतखंड में नरनारायण सदाशिव की पूजा करके शिव के मन्त्र का जप करते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे ईश, शङ्करनाथ! आप सब जगह प्रकट और मन, वचन, इन्द्रिय, विचार और गति से बाहर हो। तुम्हारे वर्णन से वेदों को भी आश्चर्य है। तुम परमेश्वर, परम पुनीत, प्रलय करनेवाले और अप्रमेय दया की खानि हो। ब्रह्मा, विष्णु और सनकादिक आपकी सेवा में लगे रहते हैं। तुम्हारी माया संसार को इतना वश किये हुये है और इतना इस संसार को अधीन किये हुये है कि सबको नट की तरह पर नचाती है। कोई स्थान ऐसा नहीं है, जहाँ तुम्हारी माया प्रवेश नहीं कर सकती, पर जो मनुष्य आपकी शरण में आये हैं, वे निस्सन्देह उस मायाजाल से छूट कर आनन्द उठाते हैं। हे नारद! नरनारायण के तपोबल से शिव के भक्त नरनारायण के निकट ही स्थित रहते हैं। उस स्थान का नाम संसार में केदार प्रसिद्ध है,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जहाँ उनकी सेवा करने से तुरन्त पाप दूर हो जाते हैं। जो मनुष्य कि केदार में अपना शरीर डुबा देते हैं, वे तुरन्त मुक्ति प्राप्त करके आनन्द उठाते हैं। केतुमालखण्ड में कामदेव अपनी सेना और उस खण्ड के राजा सहित शिवजी की पूजा में प्रवृत्त रहकर शिव का नाम लिया करते हैं और स्तुति करते हैं कि हे ईश, मायापति, शंकर! हम पर कृपा करो। आप दुष्टों को अति भय देनेवाले हो। मैंने सत्यमार्ग को ग्रहण कर आपको पहिचाना। हे शिव! तुम सदा स्वाधीनता से शुद्धबुद्धि रक्खे रहते हो, जो वर्णन से बाहर है। जो कि आपने मुझे क्रोधाग्नि से जला दिया इस बात को मैं आपकी बड़ी कृपा समझता हूँ। यद्यपि मैं तीनों लोक को फँसा सकता हूँ पर आपके सामने होते हुये मुझे बड़ा भय उपजता है। मैं आपकी शरण में हूँ। आप मेरे सब पापों को नष्ट कर दें क्योंकि आप शरण में आये हुये मनुष्यों का पक्षपात करते हैं। रम्यक खण्ड में मनुष्य स्वरूप विष्णु शिवजी के पूजक हैं। वह शिवजी की सदा स्तुति करते हैं कि हे जगदीश! आप ब्रह्माण्ड के महाराजाधिराज हैं। आपकी चरण सेवा लक्ष्मी करती हैं। ब्रह्मा, विष्णु और हर तीनों देवता केवल आपके दर्शन से पवित्र हो जाते हैं। आप परब्रह्म परमात्मा हैं। आपकी महिमा शेष आदि भी वर्णन नहीं कर सकते। हिरण्यखण्ड में लक्ष्मीपति पितृगणों समेत शिव की पूजा में रहकर शिव का मन्त्र जपा करते हैं। यह अच्छी स्तुति करते है कि हे देवताओं के ईश! शरण में आये हुये मनुष्यों के पालनेवाले और भक्तों को आनन्द देनेवाले, दीनानाथ, त्रिभुवनपति, सर्व प्रकार से शुद्ध! आपका यश वेद वर्णन करते हैं। आपकी महिमा अनन्त हैं। आपमें चन्द्रसेन को कृतार्थ कर दिया और गुणनिधि को मुक्ति दी। मुझ पर आप कृपा कीजिये और मेरे दुःख को निवारिये। कुरुखण्ड में वाराह विष्णु का अवतार शिव की पूजा करके षडक्षरी मन्त्र जपते हैं और यह स्तुति करते हैं कि हे कामदेव के जलानेवाले, गिरिजापति! आप सर्व संसार के स्वामी हैं। आपने गज, गङ्गा, हर और श्रीकर, नन्दी, किरात आदि को मुक्ति दी। इतना कह ब्रह्माजी बोले हे नारद! इसी प्रकार सब खण्डों में शिवजी की पूजा की जाती है। इस जम्बूद्वीप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की कथा सुनने से अप्रमेय आनन्द मिलता है और भय दूर होता है।

दसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद ! यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जम्बूद्वीप का है। इस जम्बूद्वीप के आधीन और आठ उपद्वीप है जिनके यह नाम हैं-पहिला स्वर्णप्रस्थ, दूसरा चन्द्र, तीसरा शुक्ल परिवर्तन, चौथा रमणक, पाँचवाँ मन्दिरहरण, छठा जन्य, सातवाँ सिंहल और आठवाँ लम्ब। जम्बूद्वीप को चारों ओर से क्षार समुद्र घेरे हुये है। जम्बूद्वीप के पीछे प्लक्षद्वीप है जिसका राजा अधमछवि नाम बड़ा राजा हुआ। उसके सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं-पहिला शिव, दूसरा यवस, तीसरा सुभद्र, चौथा वेशान्त, पाँचवाँ क्षेम, छठा अमृत और सातवाँ अभय। सो राजा ने अपने द्वीप के खण्ड करके अपने सातों लड़कों को परस्पर बाँट दिया। वे सातों खण्ड उन्हीं सातों लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस द्वीप में सात पर्वत भी हैं और इस द्वीप में नीचे लिखे हुये चार वर्ण बसते हैं जिनके दर्शन देवताओं के दर्शन के समान मनुष्यों को कठिनता से मिलते हैं। वहाँ के चार वर्णों के यह नाम हैं ऊर्ध्वायन १ परमहंस २ पतङ्ग ३ सत्यङ्ग ४। यह सब सूर्य की पूजा करते हैं और सूर्य ही का मन्त्र जप करते हैं। वह कहते हैं कि हे सूर्य देवता ! तुम रोगों के नष्ट करनेवाले हो, तुम्हारा शरीर तीनों गुणों से भरा हुआ है और तुम सदाशिव का स्वरूप हो। आपके उदय होने से पृथ्वी में प्रकाश होता है और तुम शिव की अष्टमूर्ति में से एक मूर्ति हो। तुम्हारी बड़ी महिमा है, तुम्हारी सेवा सब करते हैं, कृपा करके हमारे दुःख भी दूर करो। यह संक्षेप में प्लक्षद्वीप का वर्णन है। अब शाल्मलिद्वीप का हाल सुनो कि उसके समान किसी द्वीप में आनन्द नहीं है। वह प्लक्षद्वीप से दूना बड़ा है और उसको सुरोद समुद्र चारों ओर से घेरे है। वहाँ यज्ञबाहु नामी राजा, प्रियव्रत का पुत्र, उस द्वीप का राजा हुआ। उससे सात पुत्र उपजे जिनके यह नाम हैं सुरोचन १ सोमस्व २ रमणक ३ देवभद्र ४ भद्र ५ आप्यापन ६ अविज्ञात ७। सो राजा यज्ञबाहु ने शाल्मलि द्वीप के सात भागकर सब लड़कों को बाँट दिये। उन्हीं के नाम से वहाँ सात खण्ड प्रसिद्ध हुये। इस द्वीप में सात नदी और सात पर्वत हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वहाँ के निवासी शिवजी को चन्द्रमा जानकर उनको पूजते हैं, क्योंकि वेद ने चन्द्रमा को भी शिवरूप बताया है। जो स्तुति वह करते हैं वह यह है कि हे चन्द्रमा ! शीतलस्वभाव से सबको प्रसन्न करनेवाले, आप मानों अमृत का कुण्ड हैं, आपही से सब जड़ी-बूटी तय्यार होती हैं, आपकी महिमा वेद और पुराण वर्णन करते हैं और संसार की आरोग्यता आपही से है। इसके उपरान्त कुशद्वीप है जिसको घृतादि चारों ओर से घेरे है। उसका राजा हिरण्य हुआ जो प्रियव्रत का पुत्र था। उसके सात पुत्र उपजे जिन्होंने अपने पिता के द्वारा सातों द्वीप पाये। वे द्वीप उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुये और राजा हिरण्य द्वीपों को बाँटकर तप में प्रवृत्त हुआ। उन लड़कों के यह नाम हैं—वसु १ वसुदान २ दृढ़रुचि ३ नामगुप्त ४ सत्यव्रत ५ विवक्त ६ वामदेव ७। इसमें भी पर्वत और नदियाँ सात-सात हैं। यहाँ के निवासी अग्नि को शिवरूप जान उनकी पूजा और पाठ करते हैं। फिर क्रौञ्चद्वीप है जिसको पयोदधि समुद्र घेरे हुये है यह कुशद्वीप से दूना है। वहाँ क्रौञ्च नामी एक पर्वत है जहाँ स्कन्द शिव विराजमान रहते हैं। राजा घृतपृष्ठ जो राजा प्रियव्रत का पुत्र है उस द्वीप में राज्य करते हैं। उनके सात पुत्र उपजे। राजा घृतपृष्ठ ने अपने द्वीप के सात खण्ड कर सातों लड़कों को बाँट दिये और आप तप के लिये वन में गया। वह सातों खण्ड उन लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हुये। पहिला अनन्त, दूसरा बुद्ध, तीसरा नेख, चौथा मेघपृष्ठ, पाँचवाँ भ्राजिष्ठ, छठा लोहित और सातवाँ वनस्पति। वहाँ भी सात पर्वत और नदियाँ हैं। वहाँ के निवासी शिव को जलरूप समझ जल मन्त्र करके जप करते हैं और शिव की यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, आनन्द के देनेवाले! तुम्हारी स्तुति सनकादिक करके थक गये हैं और अन्त को नहीं पहुँचे। तुम परमपावन रूप हो और तुमने प्राणों की स्थिति के निमित्त अवतार धारण किया। तुम्हारे आदि अन्त को कोई नहीं जानता। तुम परब्रह्म सर्वोपरि हो, तुमसे तृप्ति प्राप्त होती है। उक्त द्वीप के उपरान्त शाकद्वीप है जिसकी लम्बाई तेंतीस लाख योजन है। इसको दधिसागर चारों ओर से घेरे है और इस समुद्र की लम्बाई द्वीप के बराबर है। एक शाक नामी वृक्ष उस द्वीप में है जो अपनी उत्तम सुगन्ध से सर्व द्वीप को सुगन्धित कर

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रहा है। राजा मेधातिथि प्रियव्रत का पुत्र उस द्वीप का राजा था और जब राजा मेधातिथि के सात पुत्र उत्पन्न हुये तो उसने सब द्वीप को सात खण्ड करके एक एक खण्ड सब लड़कों को बाँट दिया। वे सातों खण्ड उन्हीं लड़कों के नाम से प्रसिद्ध हैं, जिनके यह नाम हैं—पहिला पुरोज, दूसरा मनोज, तीसरा पवमान, चौथा धूम्रानीक, पाँचवाँ चित्ररूप, छठा बहुरूप और सातवाँ विश्वाधार। इस द्वीप में भी सात समुद्र और सात पर्वत हैं। वहाँ के निवासी पवनरूप सदाशिव को जानकर उन्हीं के मन्त्र का जप करते हैं। यह स्तुति पवन की करते हैं कि हे शिव, परमात्मा, ईश! दश प्रकार के शरीर हैं, पर वे बिना जीव जो मुख्य तुम्हीं हो जड़ हैं। तुम तीनों लोक के भीतर बाहर रहकर निष्पाप और निर्मल बने रहते हो। सर्व संसार में प्रकट और गुप्त तुम्हीं दिखाई देते हो। तुम्हीं ब्रह्म हो जिसका आदि अन्त कुछ नहीं और तुम किसी तत्व से नहीं और शुद्ध स्वरूप हो। तुम्हारा आधार कुछ रूप नहीं है और तुम शिव की अष्टमूर्ति में से एक मूर्ति हो। पाँच तत्वों में जो चौथा तत्व है वह तुम्हीं हो। तुम निष्पाप और निर्मल हो; तुम्हारे वश में तीनों लोक के जीव हैं और ब्रह्म धर्म के मूल तुम्हीं हो। तुम्हारी सहायता और बल से योगी ब्रह्मपद प्राप्त करते हैं। हम तुम्हारी शरण में हैं हमको बचाओ। इस द्वीप के उपरान्त पुष्कर द्वीप है जो लम्बाई में शाकद्वीप से दूनी है। पुष्कर द्वीप को चारों ओर से शुद्धोदक समुद्र घेरे हुये है। यह समुद्र भी अपने द्वीप के बराबर लम्बा है और इस द्वीप में पुष्कर नामी कमलपुष्प तीन पत्ती के आकार का अति सुन्दर है। इस द्वीप में केवल एक पर्वत है जिसको मान-सोत्तर कहते हैं। इस द्वीप के राजा महाराजा वीतिहोत्र प्रियव्रत का लड़का था जिसके दो पुत्र अर्थात् पहिला रमणक और दूसरा धातिक उपजे। राजा वीतिहोत्र ने अपने द्वीप के दो खण्ड कर दोनों पुत्रों को बाँट दिये और आप सदाशिवजी की पूजा में लगे रहे। वहाँ के सब निवासी केवल कर्म को सदाशिवजी का स्वरूप समझकर उनकी सेवा पूजन करते हैं, अर्थात् वह कर्म को प्रधान जानते हैं। वे यह स्तुति करते हैं कि जो लिङ्ग सदाशिव का ब्रह्म कर्मरूप है, उसको हम प्रणाम करते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वह कर्म ऐसा है कि जिसके अधीन देवता मुनि आदि और तीनों लोक हैं, जिससे तीनों लोक को दुःख-सुख प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा सदा सृष्टि उपजाते और विष्णुजी अवतार लेकर उसकी पालना में लगे रहते इसी प्रकार शंकर शिव तीनों लोक नष्ट कर प्रलय करते हैं। उसी कर्म के वश में पड़कर शेष पृथ्वी को धारते हैं, लोकपाल अपने लोकों में नाना प्रकार के दुःख-सुखों को भोगते हैं। सूर्य, चन्द्रमा और सर्व ग्रह ध्रुव कर्म के अधीन होकर उदय होते और कभी अस्त हो जाते हैं। इसलिये कर्मरूप जो शिव हैं हम उन्हीं की दण्डवत् और सेवा करते हैं। इतना कह श्रीब्रह्माजी बोले कि हे नारद! उसके ऊपर लोकालोक है जो बहुत ऊँचा और बड़ा है। उसको ग्रह नक्षत्र, सूर्य और ध्रुव भी नहीं लाँघ सकते। यह लोकालोक पृथ्वी की संख्या में पचास कोटि योजन है और वहाँ एक पर्वत तुर्यभागनामी है, जिसके चारों ओर ब्रह्मा के स्थापित किये हुये दिग्गज स्थित हैं। उनके नाम यह हैं—पहिला अपराजित, दूसरा वामन, तीसरा गतपर्व, चौथा पुष्कर, पाँचवाँ चूड़ और छठा ऋषभ। उसी स्थान में विष्णु भगवान अपने भक्तों समेत विराजमान रहकर संसार की पालना करते हैं। उसके आगे फिरसिवाय योगीजनों के और कोई नहीं पहुँच सकता। वहाँ कोई मनुष्य किसी प्रकार नहीं पहुँच सकता क्योंकि मनुष्यों की दृष्टि में वह स्थान दिखाई नहीं देता। यह वह स्थान है जहाँ अपने पङ्खों से सैन सुमन हंस आदि और ब्राह्मण या पक्षी उड़ सकते हैं जैसा कि वेद कहते हैं यह पृथ्वी सौ योजन पर्यन्त है। हे नारद! यह क्षितिलोक का वर्णन है जिसको खण्डों और द्वीपों समेत बखान किया, जिसके सुनने से मनुष्य को अति आनन्द मिलता है।

ग्यारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! क्षितिलोक के ऊपर भुवर्लोक है जिसकी लम्बाई सूर्य तक एक लाख योजन से अधिक है। वहाँ अपनी पुण्य की संख्या के अनुसार हर जीव पहुँचकर नाना प्रकार के आनन्द और अप्रमेय प्रसन्नता प्राप्त करता है। वहाँ किसी प्रकार का दुःख मनुष्य को नहीं होता। इस भुवर्लोक में और भी बहुत उपलोक हैं, जैसा कि हम उनके नाम और संक्षेप से वृत्तान्त वर्णन करते हैं। पहिला पिशाचपुर है जहाँ भूत

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

प्रेतादि रहते हैं। यह भूत और प्रेत देवयोनि अर्थात् तेजरूप हैं, पृथ्वी के अंश नहीं हैं। उनको कुछ दुःख नहीं है और वे तीनों लोक में जा सकते हैं और दूसरों पर प्रसन्न होकर उन्हें वर भी दे सकते हैं। जो कि यह शुभकार्य कर्म करते हैं इससे उनको थोड़े से द्रव्य और पद पर अधिकार है। जो मनुष्य कार्य करने से उस लोक में जाकर भूत प्रेत होते हैं उसका विस्तार हम कहते हैं, अर्थात् जो मनुष्य दूसरे की संगति में वा दूसरे मनुष्य के अधीन होने के कारण कुछ सामग्री इकट्ठी कर विधिरहित किसी मनोरथ के पूर्ण होने की इच्छा से किसी देवता की पूजा करते हैं तो ऐसे मनुष्य मरने के अनन्तर दूसरे जन्म में भूत प्रेत होकर पिशाचपुर में वास पाते हैं। वे शिवजी का मन्त्र जप भूतनाथ महादेव की स्तुति करते हैं। दूसरा गुह्यक लोक है जो पिशाचपुर के ऊपर है। वहाँ जीव को दुःख नहीं, उसके निवासी सदाशिवजी के आज्ञाकारी हैं और धनद्रव्य दान करते हैं और केवल अपने कुलदेवताओं को मानते हैं तथा उन्हीं के वचन को सत्य समझते हैं। उत्तम मार्ग से धन सञ्चित करते और सब मनुष्यों के साथ शील तथा स्नेह रखकर किसी से सम्बन्ध व प्रीति नहीं तोड़ते। ऐसे उत्तम कामों के कारण वहाँ के स्त्री पुरुष निश्शोक धनवान् रहकर प्रसन्न रहा करते हैं। वहाँ किसी को कुछ दुःख नहीं है। मणिग्रीव गुह्यपति अपने गणों सहित शिवजी की स्तुति किया करते हैं। तीसरा गन्धर्वलोक है जो गुह्यलोक के ऊपर और जिसमें चारण और गन्धर्व बसे हुये हैं। यह गानविद्या में अति प्रवीण हैं और अहर्निश ईश्वर के गुण गाया करते हैं और बड़ा विहार करते हैं। जो दुःख मनुष्य को होता है, उनको वह नहीं होता। जो मनुष्य कि इस असार संसार में गानविद्या से उनको प्रसन्न करते हैं वह मनुष्य वह लोक पाते हैं। वसु जो गन्धर्वों के राजा हैं सर्व गन्धर्वों सहित शिवजी की सेवाकर और शिवजी की मन्त्र जप शिवजी की स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, शंकर, सर्व मनुष्यों के राजा! आपकी सेवा ब्रह्मा और विष्णु भी कहते हैं वेद पुराण शेष और शारदा आपका यश बखान अति आनन्द पाते हैं। तुम्हारी महिमा अप्रमेय है जिसका अन्त देवता मुनि आदि कुछ भी नहीं पाते, आपकी कृपा से

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

एक मूर्ख और नीच मनुष्य भी उसको जान लेता है। चौथा विद्याधरलोक है जो गन्धर्वलोक से ऊपर है। वहाँ हर प्रकार का धन भरपूर है। वहाँ के विद्याधर सर्व प्रकार की विद्याओं को जानते हैं। अतिनिर्दोष और महापवित्र हैं। जो मनुष्य कि ऐसे मनुष्यों को जो शास्त्र की आज्ञानुसार ऐसे हैं कि उनको विद्या की शिक्षा देना उचित है और उनको उत्तम द्रव्य देकर विद्या पढ़ाते हैं, वही मनुष्य इस विद्याधरलोक में स्थित होते हैं। उनको कोई मनुष्य कुछ भय नहीं दे सकता। चित्रगुप्त जो सब विद्याधरों के राजा हैं, सब विद्याधरों सहित शिव की पूजा करके शिव का पञ्चाक्षरी मन्त्र जपते हैं। यह शिव की उत्तम स्तुति पढ़ते हैं कि हे गिरीश, सदाशिव, परब्रह्म, जगदीश, संसार के उपजानेवाले, पापों से शुद्ध, अविनाशी, गिरिजापति, अपने भक्तों के पार करनेवाले! तुम अपने तीन गुण से संसार को उपजाते, पालते और मारते हो तुम सतीपति हो। आपकी महिमा सूक्ष्मतर है। तुम मन, वचन और कर्म से तीनों लोकों में विचरते हो। पाँचवाँ सिद्धलोक विद्याधर लोक से ऊपर है। जो मनुष्य दृढ़तापूर्वक धर्म करते हैं, वही लोग वहाँ जाकर रहते हैं। वे वहाँ सदाशिवजी की पूजाकर शिव का मन्त्र जपते हैं और शिव की विनयपूर्वक स्तुति करते हैं कि हे महाराज! आप परमहंस रूप धारकर अपना वेष भूतों का सा रखते हो पर जो मनुष्य जिस वस्तु की इच्छा करता है, उसको आप वही कृपा करते हैं। आप अपने शरीर को केवल भस्म से सुशोभित करते हो, अपने भक्तों को रत्न और मणि आदि देते हो, अपने कण्ठ में केवल हलाहल और सर्पों की सेली रखते हो और अपने भक्तों को रत्नों की पहिनाते हो। हे शंकर! आपका वेष बहुत बाँका है। आप हर प्रकार अपने भक्तों से प्रीति करते हो। छठा अप्सरालोक सिद्ध-लोक से ऊपर है। यह लोक अतिभोग विलास का स्थान है। वहाँ रम्भादि साठि हजार अप्सरा रहती हैं। वे नाचने और गाने में अति चतुर हैं। वह बड़ी बुद्धिमती, धर्म से सुशोभित देवताओं के समान हैं और मानों काम-शास्त्र की खानि हैं। यह अप्सरा क्षीरसागर के मथने के समय अति सुन्दरता से प्रकट हुई थीं उन्हें देखते हुये सब देवता और मुनि बुद्धि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

से रहित हो मोहित हो गये थे। ये अप्सरा इन्द्र की सदा सहायता किया करती हैं। क्योंकि योगी, यती और तपस्वियों के लिये यही अप्सरा भेजी जाती हैं कि उनके तप में विघ्न डालें। क्योंकि कामदेव रस का बढ़ानेवाला और ज्ञान मार्ग को भ्रष्ट तथा न्यून करने वाला, है। यह सब अप्सरा रति के समान भोग विलास करती हैं। सो जो स्त्रियाँ धर्मपूर्वक पातिव्रत धर्म को बचाती हैं, वह स्त्रियाँ इस लोक में पहुँचकर भोग विलास करती हैं। सातवाँ राहुलोक है जो अप्सरालोक के ऊपर है। वहाँ सिंहिका का पुत्र राहु रहता है। राहुलोक के नीचे दशसहस्र योजन सूर्य हैं। जब देवताओं को अमृत बाँटा जाता था, तब विष्णु भगवान् ने राहु का शिर काट डाला था। जब कि राहु ने कठिन तप किया तो शिव ने उसको ग्रह बना दिया। सो राहु ग्रह का नाम निर्भय हो देवताओं के समान आकाश पर विराजमान हुआ और शिर कट जाने का स्मरण कर सूर्य चन्द्रमा के साथ शत्रुता की। उसने बदला लेने को बड़े-बड़े उपाय किये। सूर्य का मण्डल लम्बाई में दशसहस्र योजन है। चन्द्रमण्डल बारहसहस्र और राहुमण्डल तेरह हजार योजन लम्बा है। सो समय पाकर राहु सूर्य और चन्द्रमा को घेर लेता है और तेजपूर्वक सब देवताओं को डाट-डपट बताता है। निदान विष्णु भगवान् अपना चक्र भेजते हैं जिसके देखने से राहु को आश्चर्य होता है संसार में ऐसे समय को ग्रहण कहते हैं और मनुष्य ऐसे समय में थोड़ा दान-धर्म करके बड़ा पुण्य पाते हैं। यह हमने आठवें राहु ग्रह का संक्षेप वृत्तान्त वर्णन किया। अब हम राहु का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त वर्णन करते हैं कि क्योंकर आठवें ग्रह के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जब विष्णु भगवान् ने राहु का शिर काट डाला तब राहु वहाँ से भाग कर हर प्रकार शिव का तप करने लगा। उसने बड़ा कठिन तप किया और हर प्रकार शिव के चरणों में प्रेम बढ़ाया। सो ऐसे कठिन तप से सदाशिवजी प्रकट हुये और फिर दर्शन देने के उपरान्त उसको ग्रह बनाया। उसी दिन से राहु अपने लोक में स्थित रहकर शिव की सेवा किया करता है और अत्यन्त प्रेम से शिव की स्तुति करता है। हे ईश, अविनाशी महेश! आप अपने भक्तों को अति प्रसन्नता देनेवाले और दुःख दूर करनेवाले

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं। मेरा केवल यह मनोरथ है कि मुझको अपने चरणों की भक्ति कृपा करो। यह भुवर्लोक का वर्णन उपलोक सहित है जो हमने वर्णन किया।

बारहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारद! भुवर्लोक के ऊपर स्वर्लोक है जिसके मन्दिरों की प्रशंसा वर्णन नहीं कर सकते। स्वर्लोक में उपलोक भी बहुत हैं जो मानों आनन्द की खानि हैं। स्वर्लोक की सीमा सूर्यमण्डल से ध्रुव-लोक तक गिनी जाती है। ब्रह्माण्ड के बीच सूर्य जाकर प्रकाश करते हैं और अति प्रसन्नता से तीनों लोकों को प्रकाशमान करते हैं। सूर्य की गति तीन प्रकार की हैं। अर्थात् शीघ्र, मध्य और सम जिनके यह नाम हैं—पहिली उत्तरायण, दूसरी दक्षिणायन और तीसरा विषवत् जिससे छः ऋतु और द्वादश मास प्रकट होते हैं। लोक प्रकाशक सूर्य का रथ केवल एक पहिये का है। उनका एक नेत्र मेरु के मस्तक पर पड़ता है और दूसरा मानसोत्तर के मस्तक पर। कोल्हू के समान, जिसके द्वारा तेल बनाया जाता है, वैसा चारों ओर रथ घूमता है। सूर्य के घोड़ों का नाम छन्द है; सूत का नाम अरुण है और साठि हजार बालखिल्य ऋषि जिनका डील अंगुष्ठ के प्रमाण है जो सूर्य के रथ के आगे-आगे वेद उच्चस्वर से पढ़ते हुये और सूर्य का यश गाते हुये चलते हैं। सिवाय इसके और भी ऋषि, नागादि और सप्तऋषि सूर्य की सेवा में तत्पर रहते हैं। सप्तऋषि हर मास में सूर्य की सेवा से बदलते हैं। और दूसरे नाम के सप्त-ऋषि उनके बदले तत्पर होते हैं। रथ की लम्बाई जिसमें सूर्य चढ़ते हैं, नव हजार योजन है। सूर्य का लोक एक लक्ष योजन ऊँचा है, जहाँ सूर्य स्थिर होकर शिव की पूजा से तीनों लोक को अतिआनन्द कृपा करते हैं जिस तरह कि सूर्य ने तप करके ऐसी पदवी पाई है, संक्षेप से उसकी कथा यह है कि हमारे पुत्र मरीचि जो बड़े ज्ञानी हैं, उनके कश्यप उपजे। कश्यप ने गृहस्थधर्म अङ्गीकार कर तेरह कन्या दक्ष प्रजापति की विवाहीं। उन तेरह स्त्रियों में से जिनका अदिति नाम था, उनके उदर से बारह लड़के उपजे। तिनमें एक लड़का जिनका नाम सूर्य है, वे काशी में तप करने के उद्योग से गये। उन्होंने बहुत वर्षों तक अतिकठिन तप

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

किया। सो सदाशिव अतिप्रसन्न होकर वर देने को सूर्य के पास आये। उन्होंने कहा "वरम्ब्रूहि"। यह सदाशिवजी का वचन सुन सूर्य ने अपने नेत्र खोले और देखा कि शीश में गङ्गा की धारा बह रही है, चन्द्रमा भाल में साठि हजार कला से प्रकाशित है, कण्ठ में हलाहल विराजमान है, चार भुजा के साथ छाती अति सुन्दरता से शोभायमान है और मुखकमल महाप्रकाशमान है। उदर में त्रिवली, कटि अतिसुन्दर और दोनों जङ्घा केले के खम्भा के सदृश हैं। पिंडलियाँ सब दुःख दूर किये देती हैं। सबसे अधिक चरणकमल की झलक मन को लोभाती है जिनके नख नवीन चन्द्रवत् विराजमान हैं। सूर्य ने ऐसा स्वरूप सदाशिव का देखा और अति-प्रेम से प्रणाम के उपरान्त अपनी सामर्थ्य के अनुकूल यह स्तुति की कि हे देव, सदाशिव! हमारे स्वामी आप घट-घट व्यापक और अन्तर्यामी हैं। आपकी अप्रमेय महिमा देवता और मुनि आदि वर्णन करके थक जाते हैं पर उनका अन्त नहीं पाते। आप परब्रह्म, शरीर रहित और माया से परे हैं पर तो भी चरित्र करने के लिये शरीर धार अवतार लेते हैं। आपके असंख्य नाम जैसे शिव, परम पुरुष, पुरातन और ईशादि हैं। ब्रह्मा, विष्णु और हर जो तीनों गुण हैं, ऐसे-ऐसे आपके असंख्य स्वरूप हैं, जो दुःखों को दूर करते हैं। आपका राज्य तीनों लोक में प्रकट है और वेद व पुराणों में उसका वर्णन है। इस स्तुति करने के अनन्तर अतिप्रेम से सूर्य ने दोनों हाथ बाँध विनती की कि महाराज! में अपनी भाग्य को सराहना करता हूँ। मैं धन्य हूँ क्योंकि आपने शरीर धार अपने दर्शन से मुझे प्रतिष्ठित किया। वेद ने सर्वश्रेष्ठ मनोरथों पर आपके दर्शन को सर्वोपरि वर्णन किया है। मुझे इच्छा है कि मैं प्रतिदिन आपकी सेवा किया करूँ क्योंकि मुझको संसार में इससे अधिक और कौन वरदान लेना चाहिये कि आप हमारे सामने खड़े हैं, यह कह सूर्य चुप हो रहे और सदाशिव ने अति प्रसन्न हो विना सूर्य के माँगे यह वर दिया कि हे सूर्य! तुम बड़े तेज और प्रकाश की खानि होकर जीवों के कर्म साक्षी होंगे और हर प्रकार अपने भक्तों को आनन्द देते रहोगे। अपने सेवक के सर्व रोग नष्ट करके उसको मुक्त करोगे और भुवर्लोक के ऊपर हमने तुम्हारा लोक नियत किया। वहाँ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तुम स्थिर रहकर तीनों लोक में भ्रमण करो। इस प्रकार का वर सदाशिव सूर्य को दे आप अन्तर्धान हो गये और सूर्य अतिप्रसन्न हो प्रणाम के उपरान्त अपने घर आये। वे अपने लोक में स्थित होकर शिव की सेवा किया करते हैं। जो मनुष्य सूर्य का व्रत करते हैं व सूर्य का तप और यज्ञादि करते हैं, सूर्यलोक में जाकर परम सुख पाते हैं। यह सूर्यलोक का संक्षेप में वृत्तान्त है, जहाँ मनुष्य उनके ध्यान से पहुँच सकता है।

तेरहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! सूर्यलोक का वृत्तान्त ऊपर हो चुका अब हम चन्द्रलोक का वर्णन करते हैं। यह चन्द्रलोक सूर्यलोक से एक लाख योजन ऊपर है, जहाँ बड़े धर्मात्मा और पुण्यवान् और शुभ मनुष्य जाकर बड़ा सुख उठाते हैं। वहाँ पर दुःख और चिन्ता नहीं है। वहाँ मनुष्य यह अमृत जो चन्द्रमा की किरणों से टपकता है पीकर अति आनन्द पाता है। फिर किसी प्रकार का दुःख उस मनुष्य के निकट नहीं आता। यह चन्द्रलोक आनन्द की खानि असंख्य दुःखों का दूर करनेवाला और सर्व मनोरथों के पूरने का स्थान है। वहाँ स्त्रियों के साथ मैथुन करने के लिये सब कुछ सामग्री है। वहाँ चन्द्रमा राजा हैं और जिस प्रकार कि चन्द्रमा ने इतना बड़ा लोक पाया वह कथा हम तुमको सुनाते हैं। अत्रि जो हमारे मन से उपजे और जो बड़े बुद्धिमान् शीलवान् तेजस्वी प्रसिद्ध हैं, उन्होंने अनसूया के साथ जो कर्दममुनि की कन्या है अपना विवाह किया। हमारी आज्ञा पा अत्रि अनसूया सहित ऋक्षकुल गिरि पर जाकर नर्मदा-नदी के तट पर स्थित हुये। उन्होंने श्वास रोक कठिन तप किया। यद्यपि इस प्रकार सौ वर्ष बीत गये पर तो भी अत्रि का मन तप के ऊपर और अधिक लगा रहा। एक पाँव से खड़े हो खाना पीना सब छोड़ दिया। यह मनोरथ मन में ठाना कि जो कोई मनुष्य जगदीश है हम उसकी शरणागत हैं और इच्छा करते हैं कि ऐसा मनुष्य हमको एक पुत्र कृपा करे जो उस मनुष्य के समान हो। जब कि ऐसा कठिन तप करते हुये अत्रि को एक समय बीत गया तो अत्रि मुनि के शीश से एक अग्नि की ज्वाला बाहर निकली और सर्व मनुष्य जलने लगे। तब देवता, मुनि

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और मनुष्य सब विकल हो हमारे शरण में गये और विनय की कि महाराज ! सब मनुष्य जले जाते हैं इसका कारण क्या है ? आप कृपा करें कि यह तप्त दूर हो जावे। यह बात सुनकर हम देवताओं सहित विष्णु भगवान् के समीप गये और प्रणाम के उपरान्त विष्णु की स्तुति कर सर्व वृत्तान्त कहा। ऐसे वृत्तान्त के सुनने से विष्णु आश्चर्य कर सब देवताओं समेत शिव के समीप गये और सब हाल वर्णन किया। शिव बोले कि तुम कुछ संदेह मत करो। अत्रि मुनि तप कर रहे हैं और योग करके पवन जीत प्राणायाम किये हुये ध्यान में बैठे हुए हैं। यह कहकर शिव, हम और विष्णु सब देवताओं को साथ लिये हुए अत्रि मुनि के तपस्थल में गये और बैल, हंस तथा गरुड़ अपने-अपने मुख्य वाहन पर आरूढ़ शस्त्र बाँधे हम तीनों देवता पहिचाने जाते थे। हम तीनों ने अत्रि मुनि से मुसुकराते हुये एक ही साथ "वरम्ब्रूहि" कहा कि तुम्हारा यह तप पूर्ण हो गया, तुम्हारे समान तीनों लोक में और किसी ने ऐसा कठिन तप नहीं किया। यह तीनों देवताओं का वचन सुन अत्रि मुनि ने अपना शीश झुका हाथ जोड़ विनय की कि मुझे एक बड़ा यह संदेह उपजा है कि तुम तीनों देवता एक ही साथ प्रकट हुये। हमने तो केवल एक ही देव का तप किया था फिर क्या कारण है कि तुम तीनों देवता आये हो। प्रथम कारण कहकर फिर वर देवें। यह बात सुन तीनों देवता अति प्रसन्नता से बोले कि हम तीनों ने यह बात तुम्हारी इच्छा से विरुद्ध नहीं की वरन् जैसी तुमने इच्छा की वही तुमको दिया गया, क्योंकि हम तीनों जगदीश कहलाते हैं और हम तीनों में कुछ भेद नहीं है। यही कारण है कि हम तीनों देवता तुम्हारे पास आये हैं और हम तुम्हारे तप से अति प्रसन्न हैं। तुमने सन्तान की प्राप्ति के निमित्त यह तप किया था सो तुम्हारे तीन पुत्र हम तीनों के अंश से उपजेंगे, जो तीनों लोक में प्रसिद्ध होकर अपने माता-पिता के यश को बढ़ावेंगे। यह वर देकर तीनों देवता अपने-अपने लोक को चले गये। अत्रि मुनि भी अपने घर में जाकर अति प्रसन्न हो रहने लगे, क्योंकि जब उनको यह बात स्मरण होती थी तो वे फूले नहीं समाते थे। समय पाकर जब तीनों देवता अत्रि के घर उपजे तब

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आकाश से पुष्पों की वर्षा हुई और बाजे बजाये गये। सर्वसंसार और सृष्टि ने उस समय क्या-क्या आनन्द नहीं पाया। हमारे अंश से चन्द्रमा उपजे और विष्णु के अंश से दत्त और शिव के अंश से दुर्वासा उपजे। इस जगह हम केवल चन्द्रमा का चरित्र वर्णन करते हैं कि चन्द्रमा तप की इच्छा से काशी में गये और वहाँ सदाशिव के चरणों में ध्यानकर कठिन तप करने लगे। शिवजी प्रसन्न हो चन्द्रमा के सामने खड़े हुये। चन्द्रमा ने शिव को देख कर दण्डवत् के उपरान्त स्तुति की और शिव ने स्तुति सुन, चन्द्रमा को वर देकर सूर्यलोक के ऊपर उनको एक लोक कृपा किया। पहिले सब ब्राह्मणों का राजा बनाया, सो चन्द्रमा ऐसा लोक पाकर सदाशिव की स्तुति किया करते हैं कि हे शंकर ! आप तीनों लोक के स्वामी और अन्तर्यामी हैं। आपके समान दूसरा कोई देवता नहीं है, आपकी सेवा ब्रह्मा विष्णु आदि करते हैं। आपने भक्तों के लिये बहुत अवतार धारण किये हैं। देखो रामचन्द्र के लिये तुमने हनुमान् का अवतार लिया और कामरूप की कामना पूरी की। गुणनिधि और चन्द्रसेन को अपना कर लिया। आपने असंख्य अधमों को तार दिया है। बहुत भक्तों की रक्षा की और बहुत भक्तों की इच्छा पूर्ण की और बहुत भक्तों को आवागमन से छुड़ाया। यह चन्द्रलोक एक लाख योजन सूर्यलोक से ऊपर है, जहाँ मनुष्य जाकर दुःखों से बचा रहता है। अब हम उडुगणों का वृत्तान्त वर्णन करते हैं जो अति प्रकाशमान विदित होते हैं। जहाँ अश्विनी आदि नक्षत्र हैं वे सब शिव की सेवा तन मन से करते हैं। यह उडुगण लोक तीन लाख योजन चन्द्रलोक से ऊपर है। जिस तरह कि लोक नक्षत्रों ने पाया उसकी कथा इस तरह पर है कि दक्षप्रजापति से साठि कन्या उत्पन्न हुई, उनमें से अश्विनी और रेवती आदि सत्ताईस कन्या काशीपुरी में जाकर अति कठिन तप, इस इच्छा से करने लगीं कि हम सब शिव को अपना पति बनावेंगी। शिवजी ऐसा प्रेम अश्विनी आदि का देख वर देने को गये और "वरम्ब्रूहि" कहा। ऐसे वचन जो अमृत से कम न थे अश्विनी आदि ने सुनकर अति प्रेम से हाथ बाँधकर प्रणाम के अनन्तर यह स्तुति की कि हे देव, शंकर आपदाओं के निवारण करनेवाले, सबके

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

निर्दोष पति, तीनों लोक से भिन्न, तीनों लोक में मिले हुये हैं और आप अपने भक्तों को आनन्द देते हैं। हमारी इच्छा है कि आप हमारे ऊपर कृपा करके हमारे पति होवें। यह वचन सुन सदाशिव ने कहा कि हमने तुमको चन्द्रलोक के ऊपर एक लोक रहने को दिया। हमारे आठ स्वरूप हैं जो तीनों लोक के कारण और सबके उपकारी प्रसिद्ध हैं। उनमें से चन्द्रमा कि वह भी हमारा रूप है, वही तुम्हारा पति होगा और तुम अपने लोक में स्थित होकर चन्द्रमा के साथ भली-भाँति विहार करो। तुम सबने हमारा तप पुरुषों के समान किया है इससे तुम्हारा नाम पुरुषों के समान प्रसिद्ध होगा। यह कह शिव अन्तर्धान हो गये और वे भी दक्ष प्रजापति के घर में पहुँचीं। दक्ष प्रजापति ने शिव का वर जान उन सबको चन्द्रमा के साथ विवाह दिया। उन सबको ऐसे पति के मिलने से अति प्रसन्नता प्राप्त हुई और बारह राशि होकर चन्द्रमा को बड़ा आनन्द दिया। शिव की सेवा कर शिव का नाम जपने के उपरान्त वे शिव के सामने स्तुति किया करते हैं कि हे ईश, गिरीश, महेश! आप सब जीवों में प्रकट हैं और सबसे श्रेष्ठ हैं। आप देवताओं के देवता हैं और अन्यायियों के लिये बड़े भयंकर हैं। आप भूतनाथ और संसार के प्रलय करनेवाले हैं। यह सब नाम सदाशिव के हैं, हे चन्द्रचूड़ ! हे मृड ! हे धूर्जटे ! हे तारक ! हे शूलपाणि ! हे त्रिपुरनाशक ! हे शम्भु ! हे गिरिजापति ! हे भक्तमनोरथ-पूरक ! हे वामदेव ! हे असितकण्ठ ! हे सनातन ! हे कामनाशक ! हे त्र्यम्बक ! हे परब्रह्म ! हे परमात्मा ! हे नाथ ! आपके गुणों के गीत वेद गाते हैं। हम पर ऐसी कृपा करो कि किसी समय में हम पाप न करें और रात्रि-दिन आपकी भक्ति अधिक होती रहै। सदा आपकी सेवा हर प्रकार करते रहैं क्योंकि हमने इस बात को भली भाँति समझ लिया है कि आपके विरुद्ध होकर फिर कुछ आनन्द नहीं हो सकता। हे नारद यह संक्षेप वृत्तान्त उड्डगणलोक का है।

चौदहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद ! उड्डगणलोक के ऊपर शुक्र का लोक है जो उड्डगणलोक से दो लक्ष योजन ऊँचा है। शुक्र सूर्य के आगे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और पीछे एक ही साथ चलते हैं। उनका आगे और पीछे हो जाना सूर्य की गति पर घटित है। जो मनुष्य कि संसार में काव्य करते हैं, वही लोक शुक्रलोक में प्रवेश कर नाना प्रकार के आनन्द प्राप्त करते हैं जहाँ दुःख का लेश भी नहीं है। यह शुक्र हमारे पुत्र भृगु से उपजे और काशी में जाकर शिव का तप करने लगे और बहुत प्रकार के पुष्प शिवजी के लिङ्ग पर चढ़ाये। यद्यपि बहुत समय तक शुक्र ने तप किया पर वर न पाया। तब शुक्र केवल एक चरण से खड़े होकर शिवजी के ध्यान में स्थित रहे। पूरक के उपाय से अपना श्वास ऊपर खींच ध्यान और योग किया और एक समय तक शुक्रजी इसी तरह खड़े रहे। शुक्रजी के ऐसे तप से फिर शिव अपने स्थान पर स्थित न रह सके। वे तुरन्त वर देने के लिये शुक्र के समीप गये और मुख से "वरम्ब्रूहि" कहा, पर शुक्र ने ध्यान के कारण यह वचन न सुना। तब सदाशिव ने अपनी मूर्ति शुक्र के मन से खींच ली जिससे शुक्र ने अति विकल होकर अपनी आँखें खोल दीं। सदाशिवजी को अपने आगे खड़ा देखकर अति प्रेम से प्रणाम के उपरान्त यह स्तुति की, कि हे गिरीश, महाप्रभु! हमारे ऊपर कृपा करो। आप सब पर निर्दोष मृत्यु से परे और मृत्यु के भी मृत्यु, संसार के नष्ट करनेवाले और तीनों लोक के भेद जाननेवाले हैं। संसार के प्यारे, शुद्ध और तीनों लोक के पालन करनेवाले हैं। अपने भक्तों के कृतार्थ करनेवाले और हर प्रकार दुःखों के दूर करनेवाले हैं। इस स्तुति के करने के अनन्तर शुक्र चुप हो गये। शिवजी ने "वरम्ब्रूहि" कहा तब शुक्र ने विनय की कि हम आपकी शरण में हैं। हमको मृत्युंजय मन्त्र दीजिये, शिवाय इसके और जो उचित है, वह कृपा कीजिये। यह सुन शिवजी बोले कि यही होगा; तुम उडुगणलोक के ऊपर जो लोक है, वहाँ जाकर स्थित रहो। दैत्यों के पुरोहित मृत्युंजय मन्त्र की सहायता से प्रसन्न बने रहो। यह वर देकर शिव अन्तर्धान हो गये। शुक्र भी सदाशिव की आज्ञानुकूल उसी लोक में जो शिवजी ने दिया था, जाकर रात्रि-दिवस शिवजी की सेवा में लगे रहे। अब हम बुधलोक का वर्णन करते हैं कि बुधलोक शुक्रलोक से दो लक्ष योजन ऊपर है। वह लोक आनन्द की खानि और सुन्दर विचित्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन्दिरों से सुशोभित, जिनमें अद्वितीय रत्नजटित हैं, वर्तमान है। वहाँ बुध विराजमान हैं, जिनकी कथा इस भाँति की है कि चन्द्रमा तीनों लोक में बड़ाई पाकर कामदेव की अहंकार की बुधि से भ्रष्ट हुये, क्योंकि ऐसा मनुष्य संसार में कौन है जो प्रभुत्व पाकर अहंकार से बचा हुआ रहे? सो चन्द्रमा ने बृहस्पति अपने गुरु स्त्री को भगाकर अपने घर में रक्खा। यद्यपि बृहस्पति ने अपनी स्त्री को उनसे माँगा पर चन्द्रमा ने न माना। निदान बृहस्पति सदाशिवजी की शरण में गये और सब दैत्य चन्द्रमा के पत्त पर खड़े हुये और तारकासुर के समान बड़ा युद्ध हुआ जिससे तीनों लोक में हाहाकार हो गया। निदान सदाशिवजी ने अति क्रोध से अपना त्रिशूल उठा लिया, तब हम और विष्णु ने चन्द्रमा के पास जाकर उसको समझा बुझा तारा को शिवजी की शरण में ले गये और बृहस्पति को तारा देकर शिवजी का क्रोध दूर कर दिया। जब बृहस्पति ने तारा को गर्भवती देखा तब अतिक्रोध से कहा कि हे तारा! अपना गर्भ तुरन्त गिरा दो नहीं तो हम तुमको जलाकर भस्म कर डालेंगे। तारा ने गर्भ गिरा दिया और जब कि उससे अति सुन्दर पुत्र उपजा, तो बृहस्पति और चन्द्रमा दोनों ने उसको लेना चाहा। इस बात पर दोनों में बड़ा झगड़ा हुआ। बृहस्पति कहते थे कि यह हमारा पुत्र है और चन्द्रमा का वचन था कि हम इसके पिता हैं। निदान इस बात का निर्णय तारा पर घटित किया गया पर तारा ने लज्जा-वश कुछ न कहा। निदान हमने तारा से पूछा तो तारा ने कहा कि यह चन्द्रमा का पुत्र है। इस बात के सुनते ही चन्द्रमा ने तुरन्त बहुत सा दान देकर लड़के को उठा लिया और हमने उस लड़के को बुधिमान् पा उसका नाम बुध रक्खा। बुध काशीजी में जाकर बड़ा तप करने लगे तब शिवरानी ने शिवजी से कहा कि इस लड़के को वरदान दो। सदाशिव ने बुध के पास जाकर कहा कि जो तुझे चाहिये वरदान माँग ले। यह वचन सुनकर बुध ने विनती की कि हे अनाथों के अनाथ! हम धन्य हैं कि आपने हम पर कृपा करके हमको अपने दर्शन से कृतार्थ किया। इससे अधिक और कौन वर है जिसको हम माँगे? जो आप प्रसन्न हैं, तो जो आपकी इच्छा हो वह दीजिये। यह बुध का वचन सुनकर शिव को बहुत भाया और

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

अति प्रसन्न होकर बुध को ग्रह का पद दे दिया और अपना डमरू भी बजा दिया, जिसको सुनकर सब देवतादिक आये और बुध की प्रशंसा करने लगे। सूर्य और चन्द्रमा ने दो राशि बुध को दीं और सदाशिव ने उसको एक लोक दिया। इसके उपरान्त शिव अन्तर्धान हो गये और बुध भी अपने लोक में पहुँचकर सुशोभित हुये। वे सदाशिव की सेवा बहुत प्रेम से किया करते हैं। इस लोक में वे मनुष्य जाते हैं जो बड़े बुद्धिमान् होते हैं। अब हम भौमलोक का वृत्तान्त वर्णन करते हैं, कि बुधलोक के ऊपर भौमलोक दो लाख योजन ऊँचा है। वहाँ मङ्गल ग्रह स्थित रहते हैं जो तीन पक्ष पर्यन्त एक ही राशि में रहते हैं। उनकी कथा इस तरह पर है कि जब सती यज्ञ में गई और अपनी अप्रतिष्ठा देख उसने अपने प्राण छोड़ दिये, तब शिवजी भी दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने के अनन्तर सर्वस्व त्याग सती के वियोग में मौन होकर बैठ रहे और अपनी श्वास चढ़ाय कठिन तप करने लगे। जब बहुत समय के उपरान्त शिवजी ने अपना श्वास उतारा, तब शिवजी के भाल से एक बिन्दु पसीने का पृथ्वी में गिरा, जिससे तुरन्त एक पुत्र उपजा, जिसका रङ्ग कुन्दरू के फल के समान रक्त था। उस समय पृथ्वी स्त्री का रूप धार वहाँ आई और लड़के को अपनी छातियों से दूध पिलाने लगी। यह चरित्र देख शिव अति प्रसन्नता से हँसे और कहा कि हे पृथ्वी ! यह लड़का हमारा है पर जो कि तुमने इनको दूध पिलाया, इससे यह लड़का अब तुमको दिया जाता है। यह सुनकर और ऐसा बालक पाकर पृथ्वी ने अति प्रसन्न हो लड़के को ले लिया और शिवजी की बड़ी स्तुति की सो अवसर पाकर भौम काशी में गये और अपने कठिन तप से शिवजी को प्रसन्न किया। सदाशिवजी ने भौम के समीप जाकर उनको दर्शन दिया। भौम ने शिव को देख कर स्तुति की कि हे जगदीश ! हम पर कृपा करके हमारा हाथ पकड़ो। आपके चरित्र अति सूक्ष्म हैं, जिनको वेद भी वर्णन नहीं कर सकते हैं। ब्रह्मा और शेष भी वर्णन करके पार नहीं पाते। यह सुनकर शिवजी बोले हे भौम ! तुम हमको बहुत प्यारे हो। हम तुमको तीसरा ग्रह नियत करते हैं और बुधलोक के ऊपर तुम्हारा लोक रहेगा। तुम वहाँ जाकर निर्दोष हो स्थित हो जाओ। यह कह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

शिवजी अन्तर्धान हो गये। भौम अपने लोक में जाकर आनन्द से शिव की सेवा करने लगे। वह उनका यश रात्रि-दिन गाया करते हैं। वहाँ के निवासी रात्रि दिन आनन्द उठाते हैं। इस लोक के मन्दिर अति सुन्दर हैं जिनमें विचित्र रत्नजटित अत्यन्त शोभा दे रहे हैं। जिस तरह कि बृहस्पति ने अपना लोक पाया, वह कथा इस तरह पर है कि बृहस्पति आङ्गिरस से उपजे और आङ्गिरस हमसे उत्पन्न हुये। बृहस्पति ने काशी में जाकर कठिन तप किया। उनका घोर तप देख सदाशिव प्रसन्न होकर वरदान देने को बृहस्पति के पास आये और मुख से "वरम्ब्रूहि" वचन कहा। बृहस्पति ने गूढ़ ध्यान के कारण इस वाक्य को न सुना, पर जब कि सदाशिव ने अपना रूप बृहस्पति के मन से निकाल लिया, तो बृहस्पति ने चिन्तित होकर अपने नेत्र खोल दिये और देखा कि वही स्वरूप जिसका मैं ध्यान करता था, आगे खड़ा है। बृहस्पति ने प्रणाम के उपरान्त स्तुति की। शिव ने कहा तुम सब देवताओं के गुरु होगे और देवपुरोहित होकर आचार्य के नाम से प्रसिद्ध होगे। भौमलोक से जो ऊपर का लोक है उसमें रहोगे। यह वर देकर शिवजी अन्तर्धान हो गये। बृहस्पति भी अपने लोक में जाकर देवताओं के गुरु हुये। अब हम शनैश्चर के लोक का वर्णन करते हैं, जहाँ मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द उठाता है। वहाँ सूर्य के पुत्र शनैश्चर स्थिर रहकर शिव की यह स्तुति करते हैं कि हे नाथ! आप परमगति के देनेवाले हैं और आप दीनदयालु हैं। जो मन, वचन और कर्म से आपकी सेवा करते हैं, आप उनके अधीन हैं और आपके समान आप ही हैं। इस प्रकार शनैश्चर शिव की बहुत स्तुति कर रात्रि-दिन आनन्द में रहा करते हैं। यह एक राशि में ढाई वर्ष तक रहते हैं क्योंकि इनकी चाल बहुत ही धीमी है, हर जगह पर अटकते और ठहरते हुये चलते हैं। इसी तरह वे बारहों राशि में भ्रमण करते हैं और जिसकी ओर देख देते हैं, उसको बड़ा दुःख मिलता है। जिस कारण शनैश्चर ने यह लोक पाया, वह यह है कि सूर्य जो कश्यप के पुत्र हैं, उनकी स्त्री छाया से शनैश्चर उपजे। यदि शनैश्चर ऊपर को दृष्टि करें तो सम्पूर्ण सृष्टि नष्ट हो जावें, इससे शनैश्चर सदा सिर झुकाये अपना

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मुख देखा करते हैं कि किसी पर उनकी दृष्टि न पड़े। निदान शनैश्चर ने काशी में जाकर बड़ा कठिन तप किया। जब इस प्रकार उनका बहुत समय बीता तो सदाशिवजी ने प्रसन्न हो दर्शन दे उन्हें यह वर दिया कि बृहस्पति के लोक से ऊपर जो लोक हैं, वहाँ तुम जाकर रहो। यह वरदान देकर शिवजी अन्तर्धान हुये और शनैश्चर भी सदाशिवजी के कृपा किये हुये लोक में जाकर शिवजी की सेवा और स्तुति में प्रवृत्ति रहे। वह सदा यह स्तुति करते हैं कि हे परब्रह्म, परमेश्वर, अनादि, तीन लोक के पालनेवाले! आप माया से परे व सबसे श्रेष्ठ अविनाशी पुरुष हैं और सदा अवतार धारण कर अपने भक्तों को मुक्ति देते हैं।

पन्द्रहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि हे नारद! शनैश्चर लोक के ऊपर ऋषिलोक है, जहाँ हमारे सात पुत्र सप्तऋषि के नाम से प्रसिद्ध हैं। वे सदा शिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि, हे परब्रह्म, परमेश्वर, दीनानाथ, महेश! हमको अपना सेवक जानकर हम पर कृपा करो। आप मखपति हैं, मख ही का रूप होकर मख के रक्षक हैं, मख के श्रेष्ठ करनेवाले हैं, और आपकी सामग्री अति आश्चर्यजनक है। आपकी लीला जो आप सगुणरूप धारण करके करते हो बड़ी आश्चर्य देनेवाली है। सिवाय सप्तऋषि के और जितने ऋषिलोग धर्मवान् होते हैं, वे सब इसी लोक में स्थित होते हैं। अब हम ध्रुवलोक का वर्णन करते हैं कि, ध्रुवलोक तेरह लाख योजन ऊँचा है। वहाँ बहुत सुन्दर और विचित्र मन्दिर दोषों से रहित शोभा देते हैं। वहाँ मनुष्य जाकर बड़ा आनन्द उठाते हैं और वहाँ के भवन आठ प्रकार के रत्नों आदि से सुशोभित हो रहे हैं जिनमें धर्मात्मा विराजमान् रहते हैं। उनकी परिक्रमा सब ग्रह, नक्षत्र, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि, इन्द्र, धर्मराज ब्रह्मा और कश्यपि आदि करते हैं। जिस प्रकार कोई पशु किसी खम्भे से बँधा हुआ हो और खम्भे के चारों ओर फिरै, उसी प्रकार सब ज्योतिर्गण ध्रुव के चारों ओर घूमते हैं। जिस तरह कि बादल आकाश में वायु के सहारे से लटके रहते हैं और पृथ्वी में नहीं गिरते, उसी तरह ग्रह भी पृथ्वी में नहीं गिरते वे शिवजी की आज्ञा से लटके हैं। कोई मुनिपुराण

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

की रीति से कहते हैं कि जहाँ तक तारे दिखाई देते हैं वह शिशुमार चक्र में गुँधे हुये हैं और उन सबके ऊपर ध्रुव स्थित हैं। हे नारद! ध्रुव बड़े भाग्यवान् हैं, जिन्होंने विष्णु की कृपा से यह पद प्राप्त किया और शिवजी की सेवा कर अपने रहने के स्थान को अचल कर लिया। उनकी कथा इस तरह पर है कि हमारे पुत्र स्वायंभुवमनु हुये, जिन्होंने शतरूपा से अपना विवाह किया। उनके पुत्र उत्तानपाद प्रजा के अति प्रसन्न करनेवाले राजा हुये। उत्तानपाद के दो स्त्रियाँ थीं एक सुरुचि दूसरी सुनीति, ध्रुव सुनीति से उपजे। एक दिन ध्रुव ने अति प्रेम से अपने पिता की गोद में बैठने की इच्छा की, पर राजा ने सुरुचि अपनी दूसरी स्त्री के संकोच से ध्रुव को अपनी गोद में न लिया। सुरुचि ने अति अहंकार से ध्रुव को कठोर वचन कहे, जो तीर के समान ध्रुव के हृदय को फाड़कर पार हो गये। ध्रुव रोते हुये अपनी माता के पास आये। सुनीति ने पूछा कि तुमसे सुरुचि ने क्या कहा? जब ध्रुव ने उससे सर्व वृत्तान्त कहा तो सुनीति अति दुःखकर कहने लगी, कि सत्पुरुषों ने कहा है कि बिना ईश्वर की सेवा के किसी को आनन्द नहीं मिलता। इसलिये तुमको उचित है कि ईश्वर के चरणों का ध्यान करके तप करो। हमारे वही परमेश्वर सहायता करेंगे। फिर उसने अपने पुत्र को हृदय से लगा लिया। ध्रुव ने कहा कि तुम को कुछ चिन्ता न करनी चाहिये। मैं वह पद पाऊँगा जहाँ कोई मनुष्य नहीं पहुँचेगा। यह कहकर और अपनी माता से आज्ञा ले तप करने को चले। मार्ग में नारद से भेंट कर आशीर्वाद पा मधुवन में गये। वहाँ उन्होंने दश सहस्र वर्ष पर्यन्त तप करके सब इन्द्रियों को जीता। एक ही चरण से पृथ्वी में खड़े होकर श्वास ऊपर चढ़ाई, जिससे तीनों लोक में पवन का चलना बन्द हो गया। सब जगह प्रलय के लक्षण प्रतीत होने लगे सो सब देवता विष्णु की शरण में गये और विनय की कि यह दुःख तीनों लोक में है। विष्णु बोले कि तुम कुछ चिन्ता मत करो, ध्रुव तप करते हैं। यह कह तुरन्त वरदान देने को चले और ध्रुव के पास जाकर "वरम्ब्रूहि" शब्द कहा। ध्रुव ने अपना मनोरथ कहा और उनकी स्तुति की। विष्णु तथास्तु कह ध्रुव से बोले कि, तुम काशी में जाकर इतना तप करो कि जिसमें सदाशिव प्रसन्न

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

होवें। शिवजी से यह वर माँगना कि जो हमको विष्णु ने दिया है वह अचल हो। जब छत्तीस हजार वर्ष राज्य कर लेना तब अपने लोक में जो ऋषिलोक से भी ऊपर है, चले जाना। हम प्रतिदिन काशी में सदाशिवजी की पूजा को जाते हैं, आज तुम भी हमारे साथ चलो, हम तुमसे अति प्रसन्न हैं। यह कह और ध्रुव को साथ लेकर गरुड़ पर चढ़ विष्णुजी काशी में पहुँचे। ऊपर का लिखा हुआ वर ध्रुव को फिर देकर आप मणिकर्णिका के किनारे उतरे और तीर्थ में स्नान तथा विश्वनाथ की पूजा प्रेम के साथ कर फिर विष्णु अपने धाम को चले गये। ध्रुव ने काशी में स्थित होकर अपनी इन्द्रियाँ जीत, शिवलिङ्ग स्थापित किया और महा कठिन तप में लगे, जिससे विश्वेश्वर महादेव अति प्रसन्न हो ध्रुव के सामने प्रकट हुये और कहा "वरम्ब्रूहि" ध्रुव ने प्रणाम कर यह स्तुति की कि हे ईश, नाशरहित, सबसे श्रेष्ठ, परब्रह्म, पाप रहित! हमको अपना सेवक जान हमारे ऊपर कृपा करो कि विष्णु का वर हमारे लिये अचल हो जावे। यही वर हम चाहते हैं, हम आपकी शरण में आये हैं। यह सुनकर शिवजी बोले कि यही होगा। यह कहकर शिवजी अन्तर्धान हुये और ध्रुव भी यह वर पा पहिले अपने पिता के पास गये। उत्तानपाद ने ध्रुव को अति आदर से लिया और उनकी माता भी अति प्रसन्न हुई। फिर राजा ध्रुव को राज्य सौंप आप वन में तप करने को चले गये। ध्रुव ने छत्तीस हजार वर्ष पर्यन्त पृथ्वी का राज्य किया, फिर राज्य का कार्य अपने पुत्र युवराज को सौंप आप तप में लगे। जहाँ विष्णु के गण विष्णु की आज्ञानुसार विमान लेकर विद्यमान हुये। ध्रुव दिव्य तनु हो विष्णुलोक को चले गये और जो लोक कि ऋषिलोक से भी ऊपर है वहाँ स्थित हुये। वह प्रसन्नता में मग्न हो दुःख-रहित अचल स्थित हैं और सर्व नक्षत्रगणों के मध्य में नक्षत्रों के आधार हैं। सदाशिवजी की यह स्तुति किया करते हैं कि हे ईश! सबके स्वामी और सबके नाथ! वेद आपके गुणों के पात्र है आप सर्वोपरि हैं, क्योंकि यह बात हमने विष्णु की सेवा करके जानी है। सो ध्रुव विष्णु के भक्त शिवजी का यश गाया करते है और निर्भय रहते हैं। यह ध्रुव

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

लोक की कथा पूरी हो गई और सुरलोक केवल उसी स्थान तक है।

सोलहवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले हे नारदजी! ध्रुवलोक के ऊपर महर्लोक हैं जो क्षितिलोक अर्थात् पृथ्वी से एक करोड़ योजन ऊँचा हैं। वहाँ किसी प्रकार का दुःख नहीं है, वहाँ के सब भवन सुवर्ण के रत्नों से जड़े हुये हैं जिनको देखकर बुद्धिमान् मनुष्य भी आश्चर्य करते हैं। वहाँ अट्ठाईस करोड़ देवता रहते हैं, जो बड़े तपस्वी और दोषों से पवित्र हैं और संसारी व्यवहार छोड़ ब्रह्मचर्य धार संसारी मनुष्यों के समान कोई कर्म नहीं करते। वह शिवजी के सगुण और निर्गुण दोनों रूप की उपासना करते हैं। कुकर्मों की उनको इच्छा नहीं और उनके मनों में सदाशिवजी स्थित रहते हैं। पञ्चाक्षरी मन्त्र जो तारकमन्त्र कहा जाता है जपकर सोऽहंभाव में डूबे हुये हैं। सदाशिवजी के दोनों रूप के चरित्रों की लीला गाया करते हैं कि, हे ब्रह्म सनातन, ईस परमसच्चिदानन्द! आप सबके बीच और सबके बाहर हैं। आपका यश शेष वर्णन करके थक जाते हैं। आप प्रकृति और पुरुष, अलख-अनादि, परमात्मा और शरीर रहित हैं। आप कानों बिन सुनते, बिन आँखों देखते, जिह्वा बिन सब स्वाद लेते, नाक बिना सूँघते, बिन त्वचा स्पर्श करते और हाथों बिना तीनों लोक के सर्वकार्य करते, मुख बिना सब वेदों को पढ़ते, लिङ्ग बिना सृष्टि उपजाते और अन्य अङ्गों बिना सर्वकार्य करते हैं। ऐसे जो आप और जिनके ऐसे कार्य हैं, उनको हमारा प्रणाम है। ऐसे निर्गुण स्वरूप में आप अगुण, अकर्म और अनाम हैं। आप ही सगुणरूप होकर, शक्तिसहित विराजमान हैं तथा भक्तों के मनोरथ पूरे होने के लिये आप शरीर धारण करते हैं और तुम दोनों रूपों में बड़े विहार करते रहते हो। हमारे ऊपर अनुग्रहकर हमको संशयों से दूर रक्खो और रात्रि दिवस हमारे मन में अपनी छाया रक्खो। हे नारदजी! यह पहिले पुत्र हमारे इस प्रकार की स्तुति पढ़ा करते हैं। सिवाय इनके और जो कोई लोक में बड़े तपस्वी होते हैं वह भी इस लोक में जाकर प्रसन्न रहते हैं। अब हम जनलोक का वर्णन करते हैं, जो महर्लोक के ऊपर पृथ्वी से दो करोड़ योजन ऊँचा है और जहाँ सुवर्ण के

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

मन्दिर बहुमूल्य उत्तम मुक्ता और रत्नों से जटित है। वहाँ भृगु आदि मुनि जो हर प्रकार से शुद्ध है, स्थित होकर शिवजी की सेवा करते हैं। पञ्चाक्षरी मन्त्र शिवजी का जपकर हाथ जोड़ अति प्रेम से शिवजी की स्तुति पढ़ते हैं कि हे ईश, परब्रह्म, शङ्कर ! आप सब देवताओं के स्वामी हैं। आप दोषहीन, वेद और पुराण से अलख और बुद्धि से भी परे हैं, पर तो भी आप भक्ति के वश में हैं। आप जैसा चाहते हैं वैसा ही सर्वकार्य करते हैं, ब्रह्मा और विष्णु आपकी सेवा करते हैं। अब हम तपलोक का वर्णन करते हैं जिसके भवन और मन्दिर रत्नों से बने हैं जो सर्व प्रकार भी रत्नों और बहुमूल्य मुक्ताओं से बनाये गये हैं। वहाँ सब मन्दिरों के और खण्ड हैं जहाँ केवल वही मुनि लोग पहुँच सकते हैं जिन्होंने छलछन्द छोड़ कठिन तप किया। यह लोक धरती से चार करोड़ योजन ऊँचा है। वहाँ हमारे पुत्रसिद्ध निर्दोष हैं, वे सब शिवजी के पूजन में लगकर पञ्चाक्षरी मन्त्र का जप करते हैं। सनकादिक और वहाँ दक्षादिक शिवजी की स्तुति गाया करते हैं कि हे गिरिजापति, स्कन्द के पिता ! आप बड़ा आनन्द कृपा करनेवाले और गिरिजा के आनन्द देनेवाले हैं। हम पर अनुग्रह कर हमारे सब दुःख दूर करो। आपकी माया जो तीनों लोक की माता और आप से उपजी है, उसकी चाल-ढाल निराली है। तुम्हारी सेवा से विष्णु ने संसार के पालने की सेवा का पद पाया और हमने भी ब्रह्मपदवी पाई। आपकी कृपा से शेषजी भी धरती का भार अपने शिर पर रक्खे हुये हैं। सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्रगण आप ही के प्रताप से उदय होते हैं और आप ही की आज्ञा से अग्नि जलती और पवन चलती है। पानी अपनी मर्यादा से नहीं बढ़ता क्योंकि जो पानी अपनी मर्यादा त्याग दे तो धरती सब डूब जावे। आकाश भी सबको अवकाश देता है। यह सब आपकी कारीगरी है, क्योंकि तीनों लोक आपके अधीन हैं। अब सत्यलोक का वर्णन करते हैं जो तपलोक के ऊपर है और पृथ्वी से आठ कोटि योजन ऊँचा है। वहाँ रोग, चिन्ता और पाप तीनों प्रकार के दुःख और आधि-व्याधि आदि अपना स्पर्श नहीं कर सकते हैं। ऐसा सत्यलोक हमने सदाशिवजी की सेवा से पाया है; उसकी प्रशंसा और मन्दिरों की सुन्दरता हम कहाँ तक वर्णन

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

करें। जो मनुष्य कि संसार में वेद पढ़ते हैं, वे लोग हमारे इस सत्यलोक में प्रवेश करते हैं और जो मनुष्य कि माघमास में प्रयागजी जाकर स्नान करते हैं वे हमारे देश में आकर नाना प्रकार के भोग भोगते हैं। अब हम वह कथा वर्णन करते हैं जैसे यह लोक हमने पाया। गौरीशंकर की आज्ञानुसार उनकी कृपा से हम विष्णु की नाभिकमल से उपजे और एक समय तक इन्द्रियों को जीते हुये शिवजी का शक्ति सहित ध्यान करते रहे। ऐसा तप देख शिवजी प्रसन्न हुये और हमारे सामने प्रकट हो शक्तिसहित हमको दर्शन दिया। वह सुन्दरता हम कहाँ तक वर्णन करें; शिवजी के शीश में जटा और गङ्गा की धारा, मस्तक में चन्द्रमा विराजमान, माथे में त्रिपुण्ड्र लगाये, कानों में सर्प लटकाये, तीनों नेत्र ललाई लिये, ओष्ठ कुँदरू के समान लाल, चन्द्रमा के समान सफेद उज्जवल मुख, सुन्दर केश, कण्ठ में तीनों रेखा, सुन्दर कन्धे, चार भुजाएँ जिनमें शूल, कपाल और वर अभय धारण किये, हृदय में रुद्राक्ष की उत्तमोत्तम माला पहिने, नाभि गम्भीर, कटि अति सुन्दर, जाँघें केला के खम्भे के समान, पिंडलियाँ अति सुडौल और चरण कमल के सदृश जो हर प्रकार अपने भक्तों के दुःख दूर करनेवाले हैं। कोटि चन्द्र और सूर्य के समान प्रकाशमान शीश से चरण पर्यन्त सफेद भस्म लगाये हुये जिनको देखकर शतकोटि काम लज्जित हो जावें और बाईं ओर गिरिजा विराजमान जिनकी अतुलित सुन्दरता का वर्णन करना महाकठिन है। ऐसे सदाशिवजी का शक्ति सहित अनूपरूप देख हमारे मन में अति प्रसन्नता हुई और अति प्रेम से हमको कुछ तन-बदन की सुधि न रही, पर जब कि हमको चेत हुआ तो हमने प्रणाम किया और अतिप्रेम से स्तुति की हे जगदीश! बड़े सुख के देनेवाले! वेद और पुराण सब आपका यश गाते हैं। वेद मन और वचन से आपही की प्रशंसा करते हैं पर फिर भी अलख पुकारते हैं। यद्यपि शुक, सनकादिक तथा मुनि और शेषादि आपका गुण बखानते हैं पर अन्त नहीं पाते। आप अपने भक्तों के अधीन रहते हैं क्योंकि यह बात वेद कहते हैं। आप अपने भक्तों के निमित्त बहुत प्रकार के अवतार लेकर उनको

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

वर देते हैं। देखो, तुमने हरिकेश, गुणनिधि, चन्द्रसेन, हर तथा पिङ्गला, बृषकेतु, सेनव्रत और श्रीकरादि को उनके प्रेम के कारण अपने लोक में स्थान दिया। हम आपको ब्रह्म, निर्गुण और सबसे श्रेष्ठ वर्णन करके कर्मरूप से भिन्न जानते हैं। न्यायशास्त्र आपको प्रमाण के नाम से प्रकट करता है, इसी प्रकार वैशेषिक शास्त्र भी यही बात कहता है, सांख्यशास्त्र प्रकृति और पुरुष तथा पातञ्जलि शास्त्र आपको योग करके प्रसिद्ध करते हैं। मन्त्र, यन्त्र, यामलि, डामर, पञ्चरात्रि, सोम, साबर, वाम, पाशुपति, नाकुल और कपाल आदि जो मार्ग हैं, वे सब आपको ईश्वर जानते हैं। निदान जिस प्रकार सर्व-जल का समूह सागर है, उसी प्रकार जितने संसार में मार्ग हैं, वे सब देखने में धारण करने पर, अपने-अपने मनोरथ के अनुसार जाने जाते हैं और वे सब अन्त में आप ही की प्रेरणा करते हैं। यद्यपि सर्वमत आपको हर प्रकार से वर्णन करते हैं, पर आपका मुख्यरूप नहीं जानते। वेद आपको मन और वचन से न मिलनेवाला और आश्चर्य-रूप वर्णन करते हैं, पर वह भी कहते-कहते थकित हो जाते हैं और अन्त नहीं पाते। पर जिसके ऊपर आप कृपा करते हैं, वह आपको सुगमता से जानता है। बहुत से मनुष्य जो शास्त्र को न जानते और केवल मूर्ख थे, केवल प्रेम और नियम से आपको पा गये हैं। श्रीकर, बैजू और गुणनिधि आदि ने आपकी सेवा कर मुक्ति पाई। इससे विदित है कि आपकी अप्रमेय महिमा है, हमको अपना सेवक जान हम पर कृपा करो। यह वाक्य सुनकर शिव बोले कि हे ब्रह्मा! तुम धन्य हो और हमारे बड़े भक्त हो, क्योंकि धर्म में अपना प्रकाश तुम में किया। हम तुमको वही वर देते हैं जो तुम्हारी इच्छा हो। मैंने विनय की कि हमारे मन का मनोरथ पूरा होवे। तब शिव हमारी इच्छा जानकर बोले कि तुमको संसार के उपजाने की शक्ति प्राप्त होगी। सब ब्रह्माण्ड पर तुम्हारा लोक होगा और सर्व जीव जड़, चैतन्य तुम्हारे अधीन रहेंगे और हमारे समान तुमको ज्ञान होगा। यह कह शिव अन्तर्धान हो गये। हमने भी सृष्टि उपजाई और अपने लोक में स्थित रहे।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सत्रहवाँ अध्याय ।

यह वृत्तान्त ब्रह्माण्ड का सुन नारद ने ब्रह्मा से कहा कि तीनों लोक का न्यूनाधिक्य वृत्तान्त मैंने सुना । अब हमको यह इच्छा है कि मन्वन्तरों का हाल सुनूँ । ब्रह्माजी बोले कि चौदह मन्वन्तर हैं, जो सर्व संसार के जगदीश प्रसिद्ध हैं—पहिला स्वायम्भुव, दूसरा स्वारोचिष, तीसरा उत्तम, चौथा तामस, पाँचवाँ रैवत, छठा चाक्षुस, सातवाँ वैवस्वत जिनका समय बीत रहा है, आठवाँ सावर्णि, नवाँ रुचि, दशवाँ ब्रह्मसावर्णि, ग्यारहवाँ वृषसावर्णि, बारहवाँ रुद्रसावर्णि, तेरहवाँ देवसावर्णि और चौदहवाँ ऐन्द्रसावर्णि । यह चौदहों मन्वन्तर हमारे एक दिन में बीत जाते हैं । हरएक मन्वन्तर के सप्तर्षि, देवता और इन्द्र भिन्न-भिन्न हैं, अर्थात् पहिले मन्वन्तर के सप्तर्षि आदि अन्य हैं, दूसरे मन्वन्तरों के दूसरे और हर एक मन्वन्तर के दश-दश पुत्र हैं । यह मन्वन्तर वर्तमान, भविष्य और गत समय के हैं । जब कि यह चौदह मन्वन्तर बीत जाते हैं और अपना-अपना समय पूरा कर लेते हैं, तो उसको कल्प कहते हैं । इसी का नाम हमारा एक दिन है । जब एक चौयुगी बीत जाती है तो उसके पीछे प्रलय हो जाती है और हम भी आनन्दपूर्वक सो जाते हैं । अब हम हर मन्वन्तर के लड़कों के नाम, सप्तर्षियों, देवता और इन्द्र जो जिस मन्वन्तर के समय में स्थित होते हैं, वर्णन करते हैं । पहिले स्वायंभुवमनु हुये, जिनके पुत्रों के यह नाम हैं—अग्नीध्र १ अग्निवाह २ मेधा ३ मेधातिथि ४ वसु ५ ज्योतिष्मत् ६ द्युतिमत् ७ हव्य ८ सवन ९ शुभ्र १० । जो उनके समय में सप्तर्षि थे, उनके यह नाम हैं—मरीचि १ अत्रि २ अङ्गिरा ३ पुलह ४ क्रतु ५ पुलस्य ६ वशिष्ठ ७ । उस मन्वन्तर के देवताओं का नाम याम और इन्द्र का नाम यज्ञ हुआ । दूसरे स्वारोचिष मनु हुये जिनके पुत्रों के नाम हैं—हवि १ ध्रुव २ सुकृत ३ ज्योति ४ मूर्ति ५ तप ६ पृथु ७ मनुष्य ८ नभ ९ सूर्य १० । उनके समय के सप्तऋषियों के यह नाम हैं—ऊर्जस्तम्भ १ परस्तम्भ २ ऋषभ ३ वसुमत् ४ ज्योतिष्मत् ५ द्युतिमत् ६ रोचिषमत् ७ तथा देवताओं का नाम लेषतषित और इन्द्र का रोचन नाम हुआ । तीसरे मनु की संज्ञा उत्तम हुई जिनके पुत्र

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह है-यक्ष १ उर्जति २ उर्ज ३ मधु ४ माधव ५ शुचि ६ शुक्रवह ७ नभस ८ नभ ६ ऋषभ १०। इस मन्वन्तर में वशिष्ठ के पुत्र जिनको उर्ज कहते हैं, सप्तर्षि हैं और देवताओं को सत्यवेदश्रुत तथा इन्द्र को सत्य-जित् बोलते हैं। चौथे मनु का नाम, तामस जिनके पुत्रों का नाम नीचे लिखा है-श्रुतिपात् १ सोतपस्य २ तप ३ तापन ४ तपरति ५ शूल ६ अकल्माष ७ धन्वी ८ खड्ग ६ और महर्षि १०। उस मन्वन्तर के सप्तर्षियों के नाम हैं-गर्ग १ पृथु २ वाग्मि ३ जन्य ४ धाता ५ कपीनु ६ कपिवास ७ और देवताओं का नाम सत्य और इन्द्र को विशिष कहते हैं। पाँचवें मन्वन्तर का नाम रैवत है, जिनके पुत्रों का नाम चौथे मनु के अन्त के चार पुत्रों के समान है। शेष पुत्रों के यह नाम हैं-निरुत्सव ५ आरण्यप्रकाश ६ निदेह ७ सत्य ८ चित्त ६ कृतु १०। उस मन्वन्तर में सप्तर्षियों को देववाह १ जयश्रुत २ शिर ३ कनकोरम ४ पर्जन्य ५ ऊर्ध्ववाह ६ सोमप ७ कहते हैं, देवताओं का नाम भूत और इन्द्र का नाम विभु है। छठे चाक्षुषमनु हैं और जो अङ्गिरस के लड़कों के नाम हैं वही नाम इस मनु के पुत्रों के भी हैं और गिनती में दश हैं। सप्तर्षियों के यह नाम हैं-भृगु १ सुन्दर २ अम्बर ३ बिवस्वत ४ सुधर्म ५ विरजा ६ सुहेतु ७। इस मन्वन्तर में पाँच प्रकार के देवता हैं आप १ प्रसूर २ कृतु ३ प्रथूग्र ४ खेल ५ और इन्द्र का नाम मन्त्रद्रुम हैं। सातवें वैवस्वत मनु हैं जो अब बीतते हैं। उनके पुत्रों के यह नाम हैं-इक्ष्वाकु १ भ्रगु २ गरुड़धृष्ट ३ शर्याति ४ नरिष्यन्त ५ नाभाग ६ दिष्टक ७ रोष ८ प्रषध्र ६ बसुमान १०। सप्तर्षियों के यह नाम हैं-अत्रि १ वशिष्ठ २ कश्यप ३ गौतम ४ भरद्वाज ५ विश्वामित्र ६ जमदग्नि ७। इस मन्वन्तर में बारह आदित्य, बहत्तर मरुद्गण, ग्यारह रुद्र और विश्वामित्र देवता हैं, इन्द्र को पुरन्दर कहते हैं। आठवें सावर्णिमनु हैं जिनके पुत्र-वीरवान् १ अवन्तिवन २ सुमन्त ३ घृत ४ मान ५ वसु ६ वरिष्णु ७ आख्य ८ विष्णुराज ६ सुमति १० और सप्तर्षियों के यह नाम हैं-पराशर १ व्यास २ अत्रिज ३ कृपाचार्य ४ द्रोणाचार्य ५ अश्वत्थामा ६ गालव्य ७। इस मन्वन्तर के तीन प्रकार के देवताओं के नाम-अज १ मरीचि २ कश्यप ३ और बलि इन्द्र का

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

नाम है। नवें मनु का नाम रुचि है जिनके पुत्र–धृष्टकेतु १ दीप्तकेतु २ पञ्चहस्त ३ निरकृत ४ वृषकेतु ५ पृथुश्रव ६ द्युम्न ७ श्रव ८ ऋचीक ६ गयबृहत् १० हैं। सप्तर्षियों के यह नाम हैं–मेधातिथि १ वसु २ ज्योतिष्मान् ३ घृतमत ४ सावर्णि ५ हव्य ६ पुलह ७। प्रियमुख देवताओं और प्रभु इन्द्र का नाम है। दशवें ब्रह्मसावर्णि हैं जिनके पुत्रों का–अक्षय १ उत्तमोत्तम २ भूरिसेन ३ वृषसेन ४ शतानीक ५ निरामित्र ६ जयद्रथ ७ भूरिद्युम्न ८ दर्श ६ सुवर्चि १०। द्विष्मत देवताओं और शम्भु इन्द्र को कहते हैं। ग्यारहवें मनु वृषसावर्णि कहे जाते हैं जिनके पुत्रों के यह नाम हैं–सर्वगत १ सुरनीक २ त्वामक ३ दर्शकुहु ४ बाहु ५ नामखण्ड ६ मनु ७ दृढ़ेषु ८ सुशर्म ६ अदाह १०। सप्तर्षि इन नामों से प्रसिद्ध होते हैं–हविष्मत् १ अनघ २ निस्स्वर ३ अष्टवर्ग ४ चारुधृष्ट ५ वशिष्ठ ६ दत्त ७। तीन प्रकार के देवता हैं–भंगम १ कामगम २ निर्वाण-प्रकाम ३ और इन्द्र वैधृत कहे जाते हैं। बारहवें मनु रुद्रसावर्णि नाम से विख्यात हैं जिनके पुत्र–देववान् १ उपदेव २ देवश्रेष्ठ ३ सुरनाथ ४ देवक ५ देवप्रवर ६ वरदेव ७ देवप्रिय ८ सुरप्रिय ६ प्रियरेवा १० और यह सप्तर्षि हैं–वशिष्ठसुत १ अत्रिसुत २ अङ्गिरासुत ३ कश्यपसुत ४ पुलहसुत ५ पुलस्त्य ६ भृगुसुत ७। इस मन्वन्तर में ब्रह्मा के पुत्र पञ्चहरित के नाम से देवता विख्यात हैं और इन्द्र का नाम ऋतुधाम है। तेरहवें देवसावर्णि के पुत्रों के यह नाम हैं–चित्र १ विचित्र २ तप ३ वृषधृत ४ अघ्न ५ सुनेत्र ६ क्षेत्रवृद्ध ७ निर्भय ८ द्रोणा ६ सुतप १०। सप्तर्षियों को धृतमति १ हव्यपान २ तत्त्वदर्शी ३ सुतपाणि ४ परापक ५ निरुत्सव ६ निर्दह ७ बोलते हैं। देवताओं को सतराम और इन्द्र को दिवसपति कहते हैं। चौदहवें मनुपुत्रों के नाम–बुघ्न १ तरङ्ग २ मेरु ३ विष्णु ४ प्रवीण ५ सुनन्दन ६ तेजस्वी ७ सम्बल ८ तनुग्र ६ अनूप १०, सप्तर्षियों को अग्नीध्र १ मागध २ अतिवाह्य ३ शुचि ४ युक्त ५ शुक्र ६ अजित ७, देवताओं का नाम चाक्षुष और इन्द्र का नाम शचि है।

अठारहवाँ अध्याय।

इतना सुन नारद बोले, हे पिता! मन्वन्तरों का वृत्तान्त सुनकर मुझे

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। अब मुझको यह इच्छा है कि सातवें मन्वन्तर अर्थात् वैवस्वत का जो अब बीत रहा है, उसका सब वृत्तान्त जानूँ। राजाओं की कथा जो इस मन्वन्तर में हो चुकी है, सूनूँ। ब्रह्मा बोले कि अब हम वैवस्वतमनु की संतान का वर्णन करते हैं। उक्त मनु की संतान में बड़े धर्मवान् राजा बीते हैं इसलिये उनकी कथायें पुण्य और वृद्धि का कारण हैं। सूर्य जो कश्यप से उपजे उनकी स्त्री संज्ञा नाम से श्राद्धदेव और यम दो पुत्र और यमुना नाम कन्या उपजी। फिर संज्ञा सूर्य के तेज की अधिकता से मैथुन और उनका बल न सह सकी। उसको यह शक्ति न रही कि फिर सूर्य के साथ भोग करे। संज्ञा ने अपने समान एक दूसरी स्त्री बनाई और उसका नाम छाया रक्खा। छाया ने अपने उपजने का कारण संज्ञा से पूछा और कहा कि जिस प्रकार तुम्हारा दुःख दूर हो जावे वह बात मैं करूँ। संज्ञा ने छाया को अपने ऊपर प्रसन्न पा उत्तर दिया कि मैं अपने पिता के घर जाती हूँ। तुम मेरे, बदले यहाँ रहकर हमारे दो लड़कों और एक लड़की को अपनी सन्तान के समान जानना और उनका पालन पोषण भली विधि करना। जो मुझको चाहती हो तो यही करना और कोई मनुष्य यह भेद न जाने। यह सुन छाया ने उत्तर दिया कि अच्छा तुम जाओ जो हम पर बीतेगी, हम सह लेंगी। यह सुन संज्ञा मौन हो अतिलज्जा से अपने पिता के घर गई। जब उसके पिता ने मुख्य वृत्तान्त सुना तो संज्ञा से अतिअप्रसन्न हो, उसको बहुत भय दिया और निन्दा का विचार कर उसका त्याग कर दिया। विचारी संज्ञा अपना स्वरूप बदल घोड़ी का स्वरूप धार उत्तर की ओर वन में चली गई और इधर-उधर वन में विकल फिरती रही और अपने घर जाना न चाहा। यह हाल सूर्य ने कुछ न जाना और बराबर छाया के साथ रहते रहे। जिस तरह कि संज्ञा से भोग विलास करते थे, उसी प्रकार छाया से भी करते रहे। यहाँ तक कि दो बालक और एक कन्या छाया के उदर से उपजे। पहिला सावर्णि जो आठवाँ मनु होगा पहिले उपजा, दूसरा शनैश्चर जो सातवाँ ग्रह है, दूसरी बेर उत्पन्न हुआ। तीसरी बेर तापती नाम की कन्या, जो सावर्णिमनु के साथ ब्याही गई।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यद्यपि छाया बहुत समय तक इस तरह पर रहती-सहती रही कि उसको किसी ने न जाना कि यह संज्ञा नहीं है। उसको पूर्व की बुद्धि में विरोध उपजा कि वह अपनी मुख्य सन्तान पर अधिक प्रेम करने लगी और संज्ञा के पुत्रों को अतिग्लानि से देखने लगी। ऐसी कुदृष्टि सावर्णिमनु ने सह ली, पर यम को इस दुःख के सहने की शक्ति न रही और चाहा कि छाया को मारूँ। इस इच्छा से यम ने अपना पैर छाया के ऊपर मारने की इच्छा से उठाया। यह दशा यम की देख छाया ने अतिकोपित हो यम को यह शाप दिया कि जो पैर तुमने हमारे मारने को उठाया है, यह पैर तुम्हारा शरीर से भिन्न होकर गिर जावे। यह शाप सुनकर यम क्रोध करते ओंठ कँपाते सूर्य के समीप गये और सब हाल कह सुनाया और विनती की कि हे संसार के प्रकाश करनेवाले, महाराज! हम पर ऐसा अनुग्रह करो कि हमारा पैर गिरने से बच जावे। यह सुन सूर्य को अति आश्चर्य हुआ कि यह क्या हाल है और यम से कहा कि यह बात कुछ भेद की भरी हुई है, क्योंकि जब माता ने अपनी सन्तान पर न्यून व अधिक प्रीति की तो इसमें कोई बात अवश्य छिपी हुई है। हमको बड़ा खेद है कि तुम बड़े धर्मवान् सत्यवादी थे, सो तुम्हारी माता के क्रोध ने तुमको दोष लगा दिया। अब हम मुख्य कारण जान लेवेंगे, पर हम वह शाप जो तुम्हारी माता ने तुमको दिया है, मिटा नहीं सकते। क्योंकि संसार में कोई पिता यह बल नहीं रखता कि माता के शाप को निवृत्त कर सके, पर हम तुमसे कहते हैं कि तुम पृथ्वी में नहीं जावोगे, न तुमको कुछ पीड़ा होगी। तुम कुछ संदेह मत करो, तुम तीनों लोक के स्वामी और न्यायाधीश होगे। इस तरह यमको समझाकर सूर्य क्रोधपूर्वक छाया से कहने लगे कि हे बुद्धिहीन स्त्री! यह तूने कैसा अकर्म किया है। माता के निकट सब पुत्र समान होते हैं, उनमें थोड़ी और बहुत प्रीति रखनी अच्छी नहीं होती। इसका क्या कारण है? छाया ने उत्तर दिया कि तुम्हारी स्त्री संज्ञा के यह दो लड़के और एक लड़की है। फिर आरम्भ से अन्त तक सब समाचार कह सुनाया। सूर्य यह सुनकर तुरन्त अपने श्वसुर के घर गये और अपने श्वशुर के मुख से संज्ञा का सर्व वृत्तान्त सुन लिया। उन्होंने अपना तेज

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

कम कर दिया और उत्तम रूप धार चले कि ऐसे स्वरूप के देखने से संज्ञा को प्रसन्नता हो। अपने श्वसुर की आज्ञा ले सूर्य उस वन में जहाँ संज्ञा रहती थी जा पहुँचे और देखा कि संज्ञा घोड़ी बनकर फिर रही है। सूर्य ने अपने को घोड़ा बना, चाहा कि सम्भोग करें, पर संज्ञा न मानकर भागने लगी। निदान सूर्य ने अति कामवश हो अपना वीर्य मुख के मार्ग से संज्ञा के मुख पर छोड़ दिया, सो संज्ञा की नासिका से तुरन्त दो पुत्र उपजे, जो अश्विनीकुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं। जो देवताओं के वैद्य हैं। फिर जब सूर्य ने अपना स्वरूप अपनी स्त्री को अतिसुन्दर कर दिखाया तो संज्ञा भी प्रसन्न होकर अपने मुख्यस्वरूप में प्रकट हो सूर्य के साथ अपने घर जाकर वे आगे से भी अधिक आनन्दपूर्वक रहने लगे। छाया भी बहुत मेल मिलाप से सूर्य के घर रहने लगी। सन्तान की यह दशा हुई कि श्राद्धदेव सातवें मनु हुये, यम ने दिक्पति हो बड़ा पद पाया और यमुना, नदी होकर कृष्णचन्द्र की बहुत प्यारी हुई। यह संज्ञा की सन्तान है जिसका ऊपर वर्णन हुआ है। छाया के सन्तान की यह कथा है कि सावर्णि आठवें मनु हुये और शनैश्चर ग्रह बड़ी पदवी पर स्थित हुये। हे नारद! यह चरित्र अति आनन्ददायक है और यह अतिसन्तानप्रद और भुक्ति मुक्तिदाता है।

उन्नीसवाँ अध्याय।

नारद के पूछने पर ब्रह्माजी बोले कि अब जो मन्वन्तर बीत रहा है अर्थात् श्राद्धदेव का वंश वर्णन करते हैं जिनमें भारी-भारी राजा बड़े-बड़े तेजवान् यशस्वी हुये हैं। श्राद्धदेव ने पुत्र की कामना के निमित्त वशिष्ठ मुनि की सहायता से वरुणयज्ञ आरम्भ किया, कि कोई तेजवान् भाग्यवान् पुत्र उपजे। इतने में श्राद्धदेव की रानी ने वशिष्ठ से विनय की कि महाराज! ऐसा उपाय कीजिये जिससे कन्या उपजे, क्योंकि कन्या बड़ा पुण्य बढ़ानेवाली है। पुत्री के उपजने से जन्म शुभ हो जाता है और कन्या-दान करने से मुक्ति मिलती है। यह बिनती रानी की वशिष्ठ ने मान ली और पुत्र के उपजने के मन्त्र के बदले कन्या के उत्पन्न होने का मन्त्र पढ़ा जिससे लड़का पैदा होने के बदले कन्या उपजी, जिसका नाम इला

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

रक्खा गया। श्राद्धदेव मनु ने वशिष्ठ से पूछा कि यह बात हमारी इच्छा बिना क्योंकर हुई ? वशिष्ठजी ने मुख्य वृत्तान्त राजा से कह सुनाया और कहा कि तुम कुछ चिन्ता मत करो हम तुम्हारा मनोरथ पूरा करेंगे। श्राद्धदेव ने इला को अतितेजवान् देख इला नाम से उसको अपने पास बुलाया और जो दुःख मन में था उसको दूर करके कहा कि हमारे पास खेलो। इला बोली कि महाराज ! आपको पुत्र की कांक्षा है और जो कि मैं मित्रावरुण के अंश से उपजी हूँ, इसलिये मैं उनके पास जाकर तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगी। यह कहकर मित्रावरुण के समीप जा, दोनों हाथ जोड़े हुये विनती की कि मैं आपके अंश से उपजी हूँ, जो कुछ आप आज्ञा दें सो करूँ। यह सुनकर मित्रावरुण बोले कि हे इला ! हम तुम्हारी विनती और सत्यता से प्रसन्न हैं, तुम संसार में हमारे नाम से प्रसिद्ध होगी। तुम श्राद्धदेव का लड़का होकर सुद्युम्न का नाम पाओगी। यह सुनकर इला तुरन्त निर्भय हो मनु के पास आई और वशिष्ठ ने सदाशिव को प्रसन्न कर यह वर माँगा कि इला, श्राद्धदेव की लड़की, लड़का हो जावे। शिवजी यह वर दे अन्तर्धान हो गये और इला भी लड़का हो सुद्युम्न के नाम से प्रसिद्ध हुये और अपने शुद्ध आचरण से श्राद्धदेव को अतिप्रसन्न रक्खा। संयोग से एक दिन सुद्युम्न विदेशियों का वेष धर शिकार खेलने को उत्तर की ओर गया और सुरगिरि के नीचे जहाँ शिव गिरिजा सहित विहार कर रहे थे जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही सुद्युम्न अपने साथियों समेत स्त्री हो गया। ऐसी दशा के देखने से उसके साथी आश्चर्य में हो चुप हो गये। इसका कारण यह है एक समय में सब देवतादि सदाशिव के देखने को उसी स्थान पर गये थे, उस समय श्रीगिरिजा महाराणी शिव के साथ विहार कर रही थीं। देवतादि भेंट करने का उचित समय न जान, अपना मनोरथ पाये बिना, लज्जापूर्वक बदरीवन में जाकर ठहरे, पर गिरिजा इस बात को जान अतिलज्जित हुई। इससे शिव ने कहा कि आज से जो मनुष्य यहाँ आवेगा वह स्त्री हो जावेगा। इस भय से कोई मनुष्य वहाँ नहीं जाता, निदान सुद्युम्न अपने साथियों समेत वन में अतिदुःखी हो पर्यटन करता रहा

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

और कहीं पर न ठहरा। संयोग से चन्द्रपुत्र बुध ने वहाँ पर सुद्युम्न को जो स्त्री हो गया था देखा और मोहित हो चाहा कि उसके साथ भोग करें। उस स्त्री ने भी चन्द्रगुप्त से रमना चाहा। सो दोनों के संयोग से एक प्रतापवान् पुत्र उपजा जिसका नाम पुरुरवा हुआ और जिसका वंश बहुत बढ़ा। उसके कुल में बड़े-बड़े प्रसिद्ध राजा उपजे। उसी समय से सोमवंश प्रसिद्ध हुआ जिसमें श्रीकृष्णचन्द्र ने अवतार लिया। यद्यपि सोमवंश संसार में बहुत फैला, पर हम विस्तारभय से इस वंश के राजाओं का वर्णन छोड़ देते हैं। सुद्युम्न ने वशिष्ठ अपने गुरु का बहुत स्मरण किया और गुरु अति कृपा कर उस स्त्री के पास गये। उसको ऐसा दशा में पाकर सदाशिव का बड़ा तप करने लगे। इसलिये कि फिर वह पुरुष हो जावे, निदान शिव ने अतिप्रसन्न हो वशिष्ठ से कहा कि जो चाहते हो वही वर हम तुमको देंगे। वशिष्ठ बोले कि सुद्युम्न पूर्व के समान फिर पुरुष हो जावे, मेरा केवल यही मनोरथ है। शिव ने पूर्व का वचन स्मरण कर कहा कि सुद्युम्न एक महीने स्त्री होकर दूसरे महीने पुरुष हो जाया करेगा और अपना राज्य विधिपूर्वक करता रहेगा। यद्यपि सुद्युम्न ने यह वर पा राज्य अपने शिर पर लिया, पर उसके राज्य में प्रजा उससे प्रसन्न न रही। सुद्युम्न से तीन पुत्र उपजे जिनके नाम—उत्कल १ गय २ विमल ३ हुये। उत्कल के नाम से उत्कल देश प्रसिद्ध हुआ और विमल पश्चिम के देश में स्थित रहे। इन तीनों के रहने से वे तीनों देश इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध हुये। निदान राजा सुद्युम्न अपना राज्य पुत्रों को दे तपोवन में चला गया और उनके सर्व पुत्र बड़े धर्मवान् राजा हुये।

बीसवाँ अध्याय।

इतना सुनकर नारद ने पूछा कि हे पिता! राजा सुद्युम्न के राज्य छोड़ने और उनके वन में चले जाने के उपरान्त मनु ने क्या कार्य किया? ब्रह्माजी बोले कि मनु के दश पुत्र उपजे जिनके नाम हम अभी वर्णन कर चुके हैं। उनमें से इक्ष्वाकु जो सबसे बड़े थे उनका वंश हम वर्णन करते हैं। इक्ष्वाकु के सौ पुत्र उपजे जो सबके सब धर्मवान् और प्रजा की पालना में अद्वितीय थे। उन सौ पुत्रों में से सबसे बड़े पुत्र का नाम मलकक्ष था।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

उसी ने अयोध्या का राजा हो परिपूर्ण राज्य किया। श्राद्ध में मांस की आवश्यकता थी, इसलिये इक्ष्वाकु ने मलकक्ष से कहा कि मांस लाओ। अपने पिता की आज्ञा सुनकर मलकक्ष तुरन्त वन में गये और एक शशा को मारकर ले चले। मार्ग में श्रम और भूख से कुछ थोड़ा सा उसका मांस भक्षण कर गये, बाकी लाकर इक्ष्वाकु को दे दिया। वशिष्ठ गुरु ने जाना कि यह मांस जूठा है सो राजा से कहा। राजा इक्ष्वाकु अपने पुत्र से अप्रसन्न हो, सब राज्य काज तज वन में चले गये। वहाँ वह सदाशिव का तप करने लगे, फिर उत्तम ज्ञान पा, जो उनको वशिष्ठमुनि से प्राप्त हुआ था परम पद को सिधारे। तब वशिष्ठ ने मलकक्ष को राजा बनाया, जिनका नाम संसार में शशाद विख्यात हुआ। सूर्यवंशीय राजा नीचे लिखे अनुसार क्रमपूर्वक राज्य करते रहे।

सूर्यवंशीय राजाओं के नाम।

१ वैवस्वतमनु २ इक्ष्वाकु ३ मलकक्ष अर्थात् शशाद ४ रिपुंजया ५ कौस्तुभ ६ हरिवाह ७ अर्णाभ ८ वशिष्ठराश्व ९ पृथु १० चन्द्र ११ युत्रनाश्व १२ सारस्वत १३ बृहदश्व १४ कपिल १५ दृढ़ाश्व धुन्धमार के तीन लड़कों में से बड़ा था इसी से अवध का राजा हुआ १६ हर्यश्व १७ निमिकुम्भ १८ संहताश्व १९ कुशाश्व २० प्रसेनजित २१ युवनाश्व। जब युवनाश्व के कोई पुत्र न उपजा तो यह राजा अति-अप्रसन्न हो अपनी एक सौ रानियों समेत वन में चला गया। वहाँ मुनियों ने इकट्ठे होकर राजा से पुत्र प्राप्ति के निमित्त इन्द्रयज्ञ कराया। भाग्यवश राजा एक दिन रात्रि को प्यासे हो पानी पीने को उस घर के भीतर गये जहाँ यज्ञ की सामग्री रक्खी हुई थी और सब मुनीश्वर सो रहे थे। राजा ने उस कलश का जल पी लिया जिसको मुनीश्वरों ने मन्त्र पढ़ बन्द कर दिया था। निदान जब मुनीश्वरों ने प्रभात के समय कलश जल से खाली पाया तो सब मनुष्यों से पूछा और कहा यह वही कलश था जिससे राजा के घर पुत्र उपजता। निदान राजा ने सर्ववृत्तान्त जान ईश्वर को दण्डवत् की। नियमित समय के उपरान्त राजा की कुक्षि फाड़कर एक सुन्दर पुत्र उपजा जो दूध के लिये रोने लगा। मुनीश्वरों

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

को अति चिन्ता उपजी कि उसको दूध क्योंकर मिलेगा और यह बालक कैसे बढ़ेगा। सो इन्द्र ने प्रकट हो कहा कि हे मान्धाता! तुम मत रोवो और उसको दूध देकर जीता रक्खा। इसी से इनका नाम मान्धाता हुआ। ईश्वर ने राजा युवनाश्व की ऐसी पालना की कि कुक्षि के फटने पर भी वह जीता रहा। राजा युवनाश्व राज्य काज मान्धाता को सौंप आप तप में प्रवृत्त हुआ। राजा मान्धाता सर्वभूमि के चक्रवर्ती राजा हुये और त्रसद्दस्यु के नाम से प्रसिद्ध हुये। मान्धाता के दो बालक उपजे एक पुरुकुत्स दूसरा मुचुकुन्द। इनमें से राजा मुचुकुन्द ऐसे हुये कि जिनकी शरण में इन्द्र आये और राजा मुचुकुन्द ने इन्द्र की सहायता की, ऐसा कोई राजा नहीं हुआ। पुरुकुत्स से जो राजा मुचुकुन्द के भाई थे त्रय्यारुणि उपजकर राजा हुआ। उनसे सत्यव्रत नामी एक बालक उपजा जिसने तेज मन्त्रों को भ्रष्ट कर डाला और अपनी स्त्री को मार नाना प्रकार के पाप करने लगा। निदान राजा त्रय्यारुणि ने सत्यव्रत को आज्ञा दी कि वह घर से निकल जावे। सत्यव्रत राजा की आज्ञानुकूल घर से निकल रसोईघर के पास रहने लगे। राजा सत्यव्रत अपने पुत्र के कुकर्म देख राज्य छोड़ वन में चला गया और सदाशिव का तप करने लगा। विश्वामित्र भी घर बार छोड़ राजा के निकट तप करने लगे। इतने में विश्वामित्र की स्त्री अपने एक पुत्र को जो मँझला था कण्ठ में रस्सी बाँध बेंचने लगी और उसका मूल्य सौ गऊ चाहती थी। सत्यव्रत ने लड़के को गला बँधा हुआ देख अति अनुग्रह कर उसको छुड़ा दिया और उसका पालन आप करने लगा। वह विश्वामित्र का पुत्र उस समय से गालव्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसने विश्वामित्र की कीर्ति को बढ़ाया और एक गोत्र गालव्य के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। सत्यव्रत ने हर प्रकार विश्वामित्र का प्रतिपाल किया और नाना प्रकार के वनपशु मारने लगा और वशिष्ठमुनि राज्य, कुटुम्ब की पालना करते रहे पर सत्यव्रत को घर में न बुलाया। यहाँ तक कि सत्यव्रत को बाहर रहते बारह वर्ष बीत गये जब सत्यव्रत को मांस न मिला तो उन्होंने अतिविकल और क्षुधा से क्रोधित हो वशिष्ठ की एक गो मार

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

डाली। उसका मांस अपने घर लाकर आप मुनि के पुत्र सहित भोजन किया। यह समाचार वशिष्ठ ने सुना और उसको बड़ा पापी ठहराया। सत्यव्रत ने जो कि गौ को पहिले तो पितृकर्म और उनकी प्रसन्नता के निमित्त वध किया था, दूसरे वह गौ गुरु की थी, तीसरे गुरु से आज्ञा भी न ली थी, इससे तीन प्रकार के पापों से महापाप समझ उसका नाम त्रिशंकु रख दिया। इतने में विश्वामित्र वन से अपने घर आये और सत्यव्रत के ऊपर अति प्रसन्न हो उसको त्र्य्यारुणि के बदले चक्रवर्ती राजा बनाया और शरीर सहित उसको स्वर्ग में बैठा दिया। देवताओं ने उसको स्वर्ग से नीचे डाल दिया, पर विश्वामित्र ने उसको गिरने न दिया वरन रोक लिया। सो त्रिशंकु आज तक आकाश में दिखाई देते हैं। राजा सत्यव्रत से हरिश्चन्द्र उपजे, जिन्होंने राजसूययज्ञ पूर्ण किया और संसार में सम्राट के नाम से प्रसिद्ध हुये। जब राजा हरिश्चन्द्र के कोई पुत्र न उपजा तो वह अति चिन्तित हो वन में चले गये। वहाँ नारद से उपदेश पाकर वरुण के मंत्र का जप किया और यह संकल्प किया कि हे वरुण! जो हमारे पुत्र उपजेगा तो उसको हम बलि देकर तुम्हारा यज्ञ करेंगे। वरुण ने प्रसन्न हो कहा कि अच्छा तुम्हारा मनोरथ पूरा होगा। निदान राजा के पुत्र उपजा जिसका नाम रोहित रक्खा गया। वरुण ने तुरन्त पहुँचकर राजा से कहा कि हमारा यज्ञ करो। राजा ने उत्तर दिया कि पशु बलि तब दिया जाता है जब दाँतों से रहित हो। बलि के योग्य ऐसा ही पशु होता है। अभी इस बालक के दाँत हैं ऐसा पशु अभी यज्ञ के योग्य नहीं, क्योंकि जब पशु के दाँत नहीं होते तो राजा को जो यज्ञ करता है और पशु के लिये भी उत्तम होता हैं। निदान तुरन्त बालक के दाँत गिर पड़े। राजा ने कहा कि दाँत फिर हो जावें सो दाँत तुरन्त पहिले के समान प्रकट हो गये। वरुण ने कहा-कि दाँतों करके हीन हो, तब बालक दन्त रहित हो गया। तब राजा ने यह ओढ़र किया कि जब पशु तरुण होता है तब यज्ञ के लिये शुभ है। यह कह राजा ने अपने पुत्र के बचाने के लिये वाचालतापूर्वक वरुण को निरुत्तर कर दिया। जब रोहित तरुण हुआ तो उसको वन में भेज दिया कि वह बच जावे। जब वरुण ने रोहित को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

घर में न देखा तो राजा का छल जान बड़ा क्रोध किया। राजा महोदर रोग में व्याप्त हो गया और रोहित ने चाहा कि घर में जाकर राजा को देखे, पर इन्द्र ने ब्राह्मण का स्वरूप धार, रोहित के पास जाकर उसको निषेध किया और कहा कि तीर्थ में भ्रमण करना अति पुण्यदायक है, घर जाना कुछ अवश्य नहीं। रोहित ने ऐसा ही किया और बराबर वन में रहे। इन्द्र प्रति वर्ष आकर रोहित को यही समझाते रहे कि घर जाना अच्छी बात नहीं रोहित छः वर्ष तक वन-वन पर्यटन करते रहे फिर अजोगर्त के मँझले लड़के को मोल ले अपने पिता राजा हरिश्चन्द्र को दिया। उस बालक का नाम सत्यपुहुप था, जिसको राजा ने बलि दे यज्ञ किया और वरुणादि सब देवताओं को प्रसन्न कर दिया। राजा उस कठिन रोग से छूटे। फिर रोहित से हरित, हरित से चम्प, चम्प से विजय, विजय से मृग, मृग से वृक, और वृक से बाहु उपज कर इसी क्रम से राज्य करते रहे। जब बाहु पर शत्रुओं ने चढ़ाई कर उनको राज्य से भ्रष्ट कर दिया, तो राजा बाहु अपनी स्त्री पुत्र सहित भागकर ऊर्व्व मुनि की शरण में गये। वहाँ राजा बाहु से सगर उपजे और सगर विष सहित उत्पन्न हुये थे इसी से उनका नाम सगर अर्थात् विष सहित रक्खा गया। सगर ने मुनि से एक महातेजस्वी बाण पाकर शत्रुओं को जीता और अपने पिता का राज्य पा, धर्मराज का प्रचार किया। २२ मान्धाता व त्रसद्दस्यु २३ मुचुकुन्द २४ प्रकृतिशक २५ त्रय्यारुणि २६ सयव्रत अर्थात् त्रिशंकु २७ हरिश्चन्द्र २८ रोहित २९ हरित ३० चम्पक ३१ विजय ३२ मृग ३३ वृक ३४ बाहु ३५ सगर।

इक्कीसवाँ अध्याय।

इतना कह सूत पौराणिक बोले कि हे मुनियो! जब यह सगर का वृत्तान्त नारद श्रवण कर चुके तो जगत्पिता श्रीब्रह्माजी से पूछा कि महाराज! बाहु के पुत्र क्योंकर विषसहित उपजे जिससे उनका नाम सगर हुआ। ब्रह्मा बोले कि जब राजा बाहु रात दिन स्त्रियों से भोग विलास में फँसा और राज्यकाज सब त्याग दिया तो उस समय हैहय, तालजंघ और शक यह तीनों राजा जो उसके बड़े शत्रु थे, राक्षस के पास व समूहसहित

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

जो उनके सहायक थे, राजा बाहु पर चढ़ धाये। राजा को परास्त कर आप राज्य करने लगे और उन्होंने अपने मित्रों को बहुत से देश दे दिये। राजा बाहु राज्यभ्रष्ट हो ऊर्जमुनि की शरण में जाकर वहाँ रहे। उनकी बड़ी रानी गर्भवती हुई और उसकी सवति ने ईर्षा और वैरभाव से उस रानी को विष दे दिया कि वह या उसका गर्भ जीता न रहे। निदान राजा बाहु वहाँ ऊर्जमुनि के स्थान पर मर गये और उसकी बड़ी रानी ने सती होना चाहा, पर ऊर्जमुनि ने सती न होने दिया। उसी से राजा का क्रियाकर्म कराकर उसको अपने यहाँ ठहराया, जहाँ शुभलग्न में रानी से एक अति तेजस्वी बालक उपजा। ऊर्जमुनि ने बालक को विषसहित देख उसका नाम सगर रख दिया। जातकर्म करने के अनन्तर उक्त मुनि ने सगर को पहिले सब विद्या सिखाई, फिर ऐसा बाण दिया जो हर एक को मिलना कठिन हैं। शिवजी की पूजा सिखाकर उससे शिवजी का पूजन कराया। शिव सगर से अति प्रसन्न हुये और सगर शिवजी की प्रसन्नता और ऊर्जमुनि की सहायता से शत्रुओं पर चढ़, उसी बाण से जो उक्त मुनि ने दिया था, सब शत्रुओं का विनाश कर उन पर प्रबल हुये। राक्षसादि जो यवन की जाति में से थे, भाग गये और जाकर उन्होंने वशिष्ठ की शरण ली। सगर ने वशिष्ठजी के निषेध करने और उनका पक्ष करने से उनको वध करना छोड़ा, पर उन सबके मुख्यधर्म को नष्ट कर दिया। कइयों के शिर भर के सब बाल मुड़ा डाले और कइयों के आधे बाल कटवाकर आधे रहने दिये। इसी प्रकार हर एक का अनादर कर निकाल दिया और वेद के अनुसार सबको स्थित किया। फिर सगर ऊर्जमुनि को गुरु बनाकर अश्वमेध यज्ञ करने लगे और संस्कार का घोड़ा सेना के साथ भेजा। राजा के साठ हजार पुत्र भी साथ गये। वह घोड़ा समुद्र के अग्निकोण में गया, जहाँ इन्द्र ने छल करके घोड़ा चुरा लिया और कपिल मुनि के समीप बाँधकर आप चले गये। राजा के सब पुत्रों ने ढूँढ़ने पर भी जब कहीं पृथ्वी भर में घोड़ा न पाया तो पृथ्वी खोदने लगे। जब घोड़े को कपिल मुनि के पास बँधा हुआ देखा तो वे सब एक ही बेर कहने लगे कि यही मनुष्य है कि जिसने

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमारा घोड़ा चुराया है। देखो, यह मनुष्य कैसा धूर्त हैं कि आँखें बन्द किये बैठा हुआ है, इसने हमारा घोड़ा चुराया इसको मारो और मार डालो, क्योंकि यह बड़ा पापी हैं। यह कहा और अपने शस्त्र लेकर कपिल की ओर चढ़ दौड़े। कपिल ने जब अपनी आँखें खोलीं तो वे सब श्रीकपिल-देव महाराज की क्रोधाग्नि से जलकर तुरन्त ही भस्म हो गये। केवल चार बालक जीते बचे और पञ्चजन्यनामी एक और बालक जो दूसरी रानी से था, जीता रहा। उसी पञ्चजन्य का दूसरा नाम असमञ्जस है, जिससे अंशुमान् नामी एक बालक उपजा। उसी अंशुमान् ने कपिल के पास से घोड़ा लाकर यज्ञ पूर्ण कराया। यह सुनकर नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि आप इस कथा को विस्तार से वर्णन करें। ब्रह्माजी बोले कि यह पञ्चजन्य अर्थात् असमञ्जस केशिनीनामी रानी से उपजा था। वह पहिले जन्म में योगी था और योग के भ्रष्ट हो जाने से राजा के घर उपजा। अयोध्या के बालकों को इकट्ठा कर सरयूनदी में जहाँ वह खेला करता था, उन सब बालकों को डुबाकर मार डाला। सो उन लड़कों के माता-पिता ने असमञ्जस के ऐसे कुकर्म देख राजा से जाकर पुकारा। राजा ने असमञ्जस को घर से निकाल दिया। असमञ्जस अपने पिता से अलग हो प्रसन्नतापूर्वक सरयू नदी के तट पर गया और सब बालकों को जीता ही सरयू से बाहर निकाल दिया। यह देखकर सब अयोध्यावासी अति आनन्द और आश्चर्य को प्राप्त हुये। राजा ने भी आश्चर्य कर अपने पुत्र को सिद्ध योगी समझा। निदान अंशुमान् जो असमञ्जस का पुत्र था, अपने दादा राजा सगर की सेवा करता रहा। वह घोड़ा लाने को समुद्र के तट पर जाकर उस मार्ग से, जिसको उसके बड़ों ने खोदा था, पृथ्वी के नीचे गया। वहाँ देखा कि एक ढेर भस्म का इकट्ठा है और विष्णु के अवतार कपिलमुनि बैठे हैं। अंशुमान् ने दण्डवत् के उपरान्त प्रणाम किया और कपिल ने अंशुमान् से बहुत प्रसन्न हो कहा कि यह घोड़ा जो बँधा हुआ है, राजा सगर की यज्ञ का है। तुम इसको ले जाकर यज्ञ पूरा करो और ये तुम्हारे साठ हजार चचा जलकर भस्म हो गये हैं, इसमें हमारा कुछ अपराध नहीं है। यह सब गङ्गा जल से मुक्ति पावेंगे, तुम गङ्गाजी के लाने के लिये युक्ति करो। यह

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सुन अंशुमान् ने अतिप्रसन्नता से घोड़े को लाकर यज्ञ पूर्ण किया। उन्होंने बहुत सा धन और द्रव्य यथायोग्य बाँटा। राजा सगर ने एक सौ अश्वमेध यज्ञ किये और संसार भर का राज्य किया। फिर अंशुमान् को अयोध्या का राज काज दे, आप महावन में तप करने गये और ऊर्जमुनि के उपदेश से सदाशिव की पूजा कर परमपद पाया।

बाईसवाँ अध्याय।

इतना सुनकर नारद ने पूछा कि राजा सगर के साठ हजार पुत्र क्योंकर उपजे और असमञ्जस क्योंकर उत्पन्न हुये। ब्रह्मा बोले कि राजा सगर के दो रानियाँ थीं। एक का नाम सुमति था और दूसरी को केशनी कहते थे। इन दोनों रानियों ने अपनी सेवा से ऊर्जमुनि को अति प्रसन्न किया। एक दिन मुनि ने अति प्रसन्न हो कहा कि तुम दोनों की जो इच्छा हो वह हमसे माँगो। यह सुन सुमति बोली कि मुझको साठ हजार पुत्र दीजिये और केशनी ने कहा कि मैं केवल एक पुत्र चाहती हूँ। मुनि ने कहा कि यही होगा सो सुमति से एक तोंबी जो छोटे-छोटे बीजों से भरी थी प्रकट हुई। बस तोंबी को घृत के कुण्ड में डाल दिया जिससे निर्दोष, उत्तम साठ हजार बालक उत्पन्न हुये जो कपिल मुनि के क्रोध से जल गये। केशनी से एक बालक उपजा, जो पञ्चजन्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है। पञ्चजन्य से अंशुमान् उपजे और अंशुमान् से राजा दिलीप पैदा हुये। राजा अंशुमान् ने दिलीप को राज्य दे गङ्गाजी के लाने के लिये बड़ा तप किया। निदान मनोरथ पाये बिना उसी अपने तपस्थल में मर गये। राजा दिलीप भी राज्य त्याग करके गङ्गाजी के लाने को गये और अपने पुत्र को राज्य दे आप भी मनोरथ पाये बिना स्वर्गवासी हुये। उनके पुत्र भगीरथ गङ्गाजी के लाने को गये और उन्होंने अपने तप से आदिशक्ति महारानी गङ्गा को प्रसन्न किया। गङ्गाजी ने प्रसन्न होकर भगीरथ को अपने दर्शन से कृतार्थ किया। जब राजा भगीरथ ने अपना मनोरथ कहा तो गङ्गाजी ने कहा कि हे राजा भगीरथ! हम चलने को उद्यत हैं पर संसार में ऐसा कौन है जो हमारे वेग को रोके, क्योंकि रोके बिना हम लोकों को छेद भूतल को

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

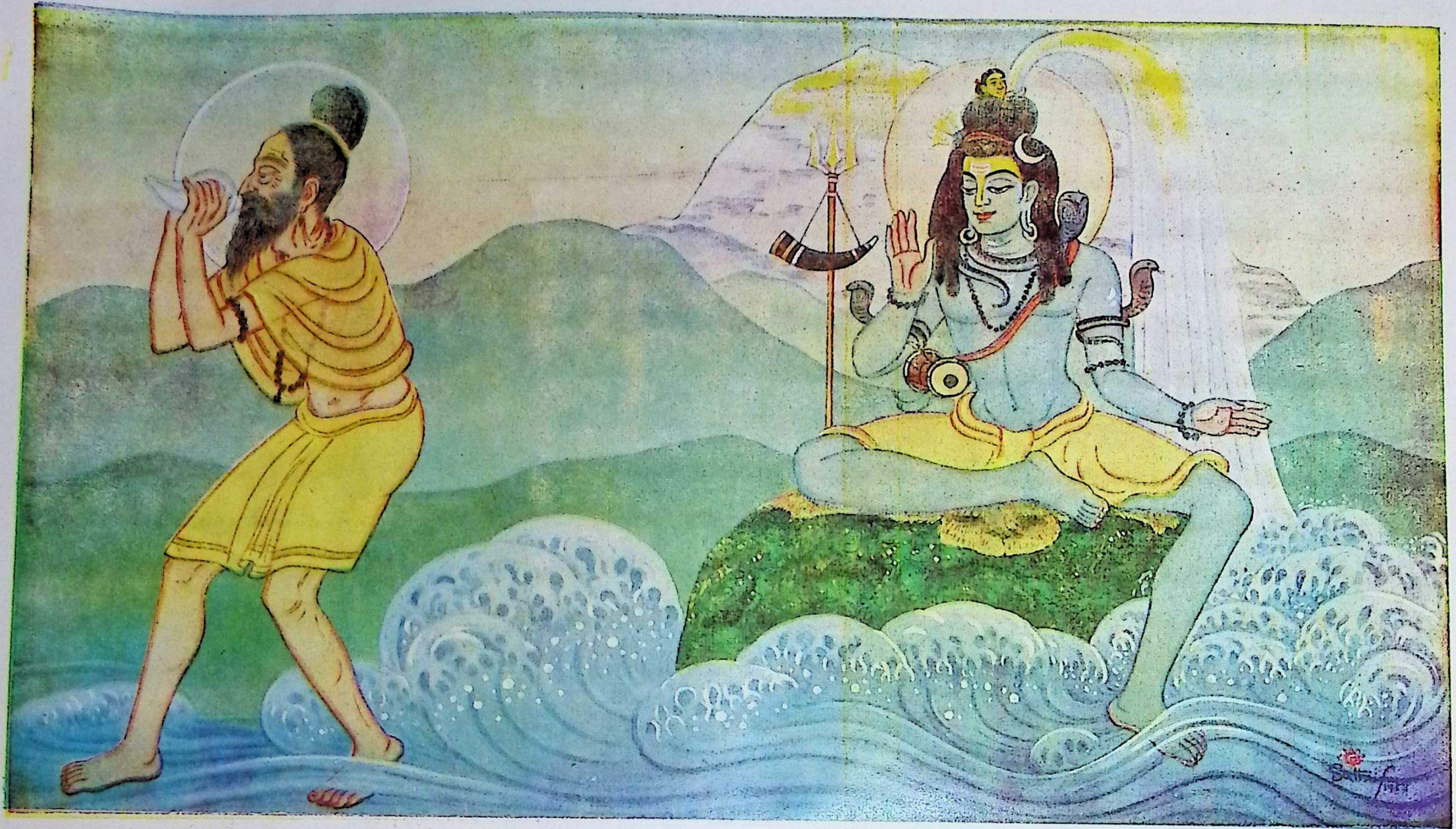

श्री गङ्गा की उत्पत्ति

[कापीराइट सुरक्षित]

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

चली जावेंगी। यह सुनकर भगीरथ ने सदाशिवजी का बहुत दिनों तक तप किया। सदाशिवजी प्रसन्न होकर राजा भगीरथ के सम्मुख प्रकट हुये। राजा भगीरथ ने प्रणाम कर बड़ी स्तुति की, सदाशिवजी बोले कि वर माँगो। राजा ने अपना मनोरथ कह सुनाया। सदाशिवजी ने अङ्गीकार किया, क्योंकि वे सदा गर्व के दूर करनेवाले हैं। जब कि भगीरथ ने गङ्गा जी से विनय की कि सदाशिव तुम्हारा वेग सहेंगे तब गङ्गा ने अपनी धारा छोड़ी, जिससे तीनों लोक में हाहाकार मच गया। उस समय सर्वजीव अति विकल हुये और सदाशिव ने केवल अपनी जटा में गङ्गाजी को रोका कि फिर उनकी धारा दिखाई न देती थी कि कहाँ चली गई। राजा भगीरथ ने अपना मनोरथ सिद्ध होते न देख, शिव की बड़ी स्तुति की। शिवजी ने प्रसन्न होकर अपनी जटा को निचोड़ा जिससे तीन बूँदे निकलकर तीन धारा हो गईं। पहिली धारा पाताल को चली गई जिसका नाम भोगवती है, दूसरी धारा आकाश में विराजमान हुई जिसको मन्दाकिनी कहते हैं और तीसरी धारा भगीरथ के साथ हुई जिसका नाम भगीरथी हैं। निदान राजा भगीरथ गङ्गा को लेकर चले सो गङ्गा सब देशों को पवित्र करती हुई वहाँ पहुँची, जहाँ कि राजा सगर के पुत्र भस्म का ढेर हुये पड़े थे। केवल गङ्गाजल के स्पर्श से वे सब स्वर्ग को चले गये। जो मनुष्य गङ्गा को निश्चयपूर्वक पूजते हैं, वे निस्संदेह मुक्त होकर आवागमन से छूट जाते हैं। राजा सगर का कुल इस प्रकार है जो क्रमपूर्वक राज्य करते रहे।

३६ असमञ्जस ३७ अंशुमान् ३८ दिलीप ३९ भगीरथ ४० श्रुत ४१ नाभि ४२ सिन्धूद्वीप ४३ आयुतायु ४४ ऋतुपर्ण राजा बलि के मित्र जिनको सुदास भी कहते हैं। ४५ अनुपर्ण ४६ मित्रसह जिसको कल्माषपाद भी कहते हैं ४७ स्वविशर्भ ४८ अनरराय ४९ मणिद्रुम ५० निषध जिसको खट्वाङ्ग भी कहते हैं यह चक्रवर्ती राजा हुआ इनका नाम भी चक्रवर्ती था।

तेईसवाँ अध्याय।

ब्रह्माजी बोले कि खट्वाङ्ग से दिलीप उपजे जिनको दीर्घबाहु भी कहते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

है। उन्होंने उत्तम धर्म से राज्य किया और गुरु की गौ को जिसका नाम नन्दिनी था। उसकी बहुत सेवा की। उसी की सेवा से राजा के एक पुत्र उपजा, जिनका नाम रघु हुआ। उन्होंने पृथ्वी भर को जीत लिया और उनके नाम से सूर्यवंश रघुवंश के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। रघु से राजा अज उपजे जिन्होंने धर्मयुद्ध कर अपने शत्रुओं को जीता। उनकी रानी का नाम इन्दुमती था और अज से राजा दशरथ उपजे, जिन पर शनैश्चर ग्रह का कुछ बल न चला। राजा दशरथ से चार बालक उपजे राम १ लक्ष्मण २ भरत ३ शत्रुघ्न ४, जिनकी उपमा वर्णन नहीं हो सकती। रामचन्द्र मुख्य विष्णु के अवतार हैं, उनका चरित्र वर्णन करना आवश्यक नहीं, क्योंकि उनके शुभ चरित्र सब कोई जानते हैं। उनके नाम लेने और सुनने से सर्वपाप नष्ट हो जाते हैं। राजा दिलीप की वंशावली नीचे लिखी है।

५१ दिलीप ५२ रघु ५३ अज ५४ दशरथ ५५ रामचन्द्र ५६ कुश ५७ अनित्य ५८ निषध ५९ पुण्डरीक ६० क्षेमध्वज ६१ दिवा ६२ आविक ६३ परिपत्र ६४ बलि ६५ अस्थिल ६६ वज्रनाभ ६७ खगन ६८ कङ्कनाभ। इनके समान जैमिनि के शिष्यों में कोई दूसरा नहीं हुआ और याज्ञवल्क्य ने इनसे योगशास्त्र में पूर्णता प्राप्त की। ६९ पुष्प ७० ध्रुवसिन्ध ७१ सुदित ७२ अग्निपर्ण ७३ शीघ्र ७४ मरुत।

मरुत सदा अमर हैं, जो यज्ञ मरुत ने किया है उसके समान दूसरा यज्ञ नहीं हुआ। उन्हीं की शेष सामग्री से राजा युधिष्ठिर ने भी यज्ञ किया था। मरुत के बराबर और कोई राजा नहीं हुआ है। वे महाशव थे और चक्रवर्ती राजा थे। उन्होंने कलियुग का आगमन जान भरतखण्ड को छोड़ दिया और कलापग्राम में जहाँ सप्तमुनीश्वर चले गये थे, वहाँ आप भी जाकर ठहरे। जब कलियुग बीत जावेगा तब मरुत फिर भरतखण्ड में आवेंगे और सूर्यवंश को फिर बढ़ावेंगे। मरुत के उपरान्त राजा बाण मरुत की सन्तान से राजा हुये।

७५ प्रश्नकृतसिन्धु ७६ उषण सहस्रबाहु ७८ पशुशाङ्किक ७९ प्रसेनजित् ८० तक्ष ८१ बृहद्बल जिनको अर्जुन ने मार डाला।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

सो इक्ष्वाकु से बृहद्बल तक सब राजा इक्ष्वाकुवंशी हैं। अब आगे जो राजा कहे जाते हैं वह भविष्य काल के राजा हैं। उनको हम भविष्यवाणी करके वर्णन करते हैं। यह राजा आगे श्रीअयोध्या नगरी में होंगे।

८२ बृहदारण्य राजा बृहद्बल से उपजेगा और उनकी सन्तान में नीचे लिखे राजा राज्य करेंगे—८३ उरुकऋषि ८४ वत्सनवृद्ध ८५ प्रतिव्योम ८६ द्वारक ८७ सहदेव ८८ बृहदश्व ८९ भानुमान् ९० प्रतीकाश ९१ सुप्रतीक ९२ मुरदेव ९३ सुनकच्छत्र ९४ पुष्कर ९५ अन्तवृक्ष ९६ सुप्ता ९७ अमित्रजित् ९८ बृहद्राज ९९ विरही १०० कृतञ्जय १०१ रत्नजय १०२ शाक्प्रेश १०३ सिद्धोद १०४ लाङ्गल १०५ प्रसेनजित् १०६ क्षुद्रक १०७ रङ्गयाम १०८ सुरथ १०९ सुमन्त।

यह इक्ष्वाकुवंश केवल सुमन्त्र तक होगा और सुमन्त्र पर पूर्ण हो जावेगा। फिर दूसरा वंश चलेगा, यह सूर्यवंशी की कथा अति पवित्र है जिसके पढ़ने-सुनने से आनन्द प्राप्त होता है सर्व कामना सिद्ध होती है।

चौबीसवाँ अध्याय।

इतना सुन नारदजी बोले कि हे महाराज! आपने सूर्य को श्राद्धदेव के नाम से वर्णन किया। इससे हम चाहते हैं कि श्राद्धदेव का सर्व वृत्तान्त और श्राद्ध का विस्तारपूर्वक विधान आपसे सुनें, क्योंकि श्राद्ध करने से अपने पितर बहुत प्रसन्न होते हैं, पर हम नहीं जानते कि पितर कौन हैं। यह प्रश्न नारद का सुनकर ब्रह्मा बोले कि यही प्रश्न भीष्मपितामह ने मार्कण्डेय मुनि से किया था। मार्कण्डेय मुनि ने जो उत्तर दिया था, वही प्रश्नोत्तर हम वर्णन करते हैं। मार्कण्डेय मुनि ने सनत्कुमार के द्वारा पितरों का हाल जाना था, उन्होंने भीष्म से कहा और भीष्म के द्वारा राजा युधिष्ठिर ने सुना था।

राजा युधिष्ठिर से भीष्म ने उस समय में, जबकि भीष्म में कुरुक्षेत्र में घायल हो बाणों की शय्या पर लेटे हुये थे, विनय की कि महाराज! जो मनुष्य संसार में पुष्टि की इच्छा रखते हैं उनको क्या करना चाहिये, वंश के बढ़ने का कौन उपाय है, संसारी खेद और चिन्ता से छूटने के लिये शास्त्र की क्या

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

आज्ञा है? यह प्रश्न युधिष्ठिर से सुनकर भीष्म बोले कि जो मनुष्य तन-मन से श्राद्ध करते हैं, वे सब मनोरथ पाते हैं। जब पितर प्रसन्न होते हैं तब निस्संदेह वंश की वृद्धि होती है। पितरों की प्रसन्नता से दोनों लोक में अप्रमेय आनन्द मिलता है। पितर देवताओं के भी देवता हैं उनकी सेवा से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है। संसार में पितरों की सेवा से सब कुछ मिला है। यह पितरों की महिमा युधिष्ठिर ने सुनी और अति आश्चर्य से विनय की कि महाराज ! आपने जो यह महिमा पितरों की वर्णन की ठीक-ठीक है। आप मुझे इस बात की आज्ञा दें कि मैं आपसे पूछूँ कि कई मनुष्यों के पितर नरकों में पड़े हुये हैं, कइयों के स्वर्ग में और कइयों के मनुष्य होकर संसार में हैं। यह सब बराबर क्योंकर अपनी सन्तान के विषय में इतनी भलाई कर सकते हैं? मुझको समझाइये, मैं इस बात के मानने में कुछ संकोच करता हूँ। भीष्मजी बोले कि एक दिन हम श्राद्ध करने लगे और हमारे पिता राजा शान्तनु देवस्वरूप धारण करके हमारे पास आये। हमने चाहा कि उनके हाथ में पिण्डा रख देवें, पर शान्तनु बोले कि इस तरह से पिण्डा देना उचित नहीं। तुमको चाहिये कि पिण्डा कुशा में रखकर पृथ्वी में रख दो। हमने इसी तरह पर किया तब हमारे पिता शान्तनु ने अति प्रसन्न हो कहा कि जब तक तुम्हारी जीने की इच्छा हो तब तक तुम जीते रहोगे और ऐसे बलिष्ठ होगे कि तुम्हारे समान संसार में दूसरा वीर न होगा। सिवाय इससे और जिस पदार्थ की तुमको इच्छा हो वह हमसे माँगो, क्योंकि कोई वस्तु ऐसी नहीं है कि जिसको हम नहीं दे सकते। हमने विनय की कि जो आप मुझसे प्रसन्न हैं तो जो बात मैं पूछता हूँ वह मुझे बता दीजिये, आप पितर और श्राद्ध का हाल मुझे सुना दीजिये। शान्तनु बोले कि हमने एक बेर मार्कण्डेय मुनि से पितृकल्प पूछा था। जो कुछ कि उन्होंने हमको उत्तर दिया था वह यह है—मार्कण्डेयजी ने कहा कि एक बेर हम तप करते थे कि अकस्मात् हमारी दृष्टि आकाश की ओर चली गई। हमने देखा कि एक विमान, जिसमें एक बालक अंगुष्ठ के प्रमाण बैठा हुआ है, अन्तरिक्ष में उड़ता हुआ चला जाता है। हमने दण्डवत् कर प्रणाम किया और कहा कि आप कौन हैं? हम चाहते

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं कि आप अपना वृत्तान्त हमको सुनावें। तब उस लड़के ने कहा कि हम सनत्कुमार हैं और हमारे चार भाई और हैं। तब हमने कहा कि कृपा करके हमको पितरकल्प सुनाइये। सनत्कुमार बोले कि पूर्वकाल में जब ब्रह्मा ने देवताओं को उपजाया और उनसे कहा कि हमारा यज्ञ करना, क्योंकि तुम हमारी सन्तान हो। देवता यह ब्रह्मा की आज्ञा न मानकर अपने प्रयोजन में लगे रहे। तब ब्रह्मा ने अपना तेज बढ़ाकर अति क्रोध से देवताओं को यह शाप दिया कि तुम सब सत्यज्ञान और ब्रह्मज्ञान से विहीन हो जाओगे और माया में भटकते फिरोगे। सो ऐसा ही हुआ कि देवताओं का सब ज्ञान जाता रहा और वे सब दुःखी और विकल हो ब्रह्माजी की शरण में आये। जब ब्रह्माजी को अपनी सेवा से अति प्रसन्न किया तब ब्रह्माजी ने कहा कि, जब तुम सब अपने विमानों को छोड़ अपने लड़कों से विनयपूर्वक पूछोगे, तब तुमको पूर्ववत् ज्ञान प्राप्त होगा। देवताओं ने ऐसा ही किया और बालकों ने अपने-अपने पिताओं से कहा कि हे पुत्रों! तुम पूर्व के समान ज्ञान पाओ। जब देवताओं ने अपने पुत्रों के मुख से यह वचन सुना, कि यह सब जो वास्तव में हमारे पुत्र हैं, धर्म के विरुद्ध वे सब हमको अपना पुत्र कहते हैं, तो वे सब आश्चर्य और लज्जा से ब्रह्माजी की सेवा में पहुँचे और विनय की कि महाराज! बड़ा अन्धेर है कि हमारे पुत्र हमीं को अपना लड़का कहते हैं। यह भेद हम लोगों के समझ में नहीं आता। हम चाहते हैं कि यह भेद हम पर खुल जावे। ब्रह्माजी बोले कि तुम सब बुद्धिहीन और मूर्ख हो तथा तुम्हारे पुत्र ज्ञानवान् हैं, क्योंकि जो तुम्हारे लड़कों ने तुमसे कहा वह बहुत ठीक है। तुमने उनको उपजाया और उनके शरीर धारण के कारण हुये, वे सब धर्म के बढ़ानेवाले हैं, इससे वे सब और तुम जितने कि देवता परस्पर पुत्र हो। तुमको चाहिये कि तुम सब जाकर यज्ञ करो कि हम तुम सबको आनन्द कृपा करें। यह सुनकर देवता पितरों के मुख्य वृत्तान्त जानकर अति प्रसन्न हुये और उसी समय से देवता और पितर मिलकर संसार के सब कार्य करते हैं। जो मनुष्य पितरों का श्राद्ध करता है, वह सब मनोरथ पाता है। पितर सब परस्पर पुत्र हैं और सब मनोरथों के पूरे करने की शक्ति रखते हैं।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इनमें से तीन शरीर रहित और चार शरीर सहित हैं। यह पितर देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं इस बात को निश्चय करके तुम केवल पितरों की भक्ति के कारण जरा मृत्यु से छूट जाओ, क्योंकि तुम्हारे समान दूसरा पितरों की सेवा करनेवाला नहीं है। वेद कहते हैं कि देवताओं की पूजा से पितरों की सेवा श्रेष्ठ है। पितृभक्ति से वंश की वृद्धि, दोनों लोक में आनन्द, रोग और निर्बलता से छुट्टी मिलती, मनोरथ पूरे होते, धन और द्रव्य सब कुछ प्राप्त होता है। जो परमपद कि जप और योगादि उपायों के करने से नहीं मिलता, यह प्रेमपूर्वक पितरों की भक्ति करने से प्राप्त होता है। जो मनुष्य अपने गोत्र का नाम लेकर वाक्य शुद्ध पढ़कर पिण्डा देते हैं, वह मनुष्य हर प्रकार प्रसन्न रहते हैं। पितर, पितामह, प्रपितामह आदि श्राद्ध के समय सब आते हैं और अपने नाम का पिण्डा सब लेते हैं। पवित्रता और शुद्धता अवश्य होनी चाहिये। जो मनुष्य पितरों का तर्पण करते हैं, वह लोक परलोक में बड़ा आनन्द उठाते हैं। इसलिये उचित है कि पितरों की भक्ति सबसे अधिक करे। वे मनुष्य संसार में शुभ हैं जिनको पितरों का प्रेम अधिक है। जो मनुष्य पितरों की सेवा करनेवाले हैं, वे शिव को बहुत प्रिय हैं। जो मनुष्य सदाशिव को प्रसन्न करना चाहे उसको पितरों की भक्ति अवश्य करनी चाहिये। हे शान्तनव ! यह पितृ-महिमा सनत्कुमार ने मुझको सुनाकर दिव्य दृष्टि कृपा की और अति कृपा से हमको ज्ञान दिया; फिर वह तुरन्त अन्तर्धान हो गये। इसलिये तुमको उचित है कि पितरों की भक्ति करो। पितरों के समान किसी को नहीं जानना चाहिये। पहिले पितरों की पूजा करे फिर और सबकी पूजा करे। मनुष्य चाहे कैसा ही भ्रष्ट और पापी होवे, पर पितरों की प्रसन्नता से उसके निकट कोई दुःख नहीं आता। जो मनुष्य पितरों की महिमा पढ़ता सुनता है, वह दोनों लोक में आनन्दित रहता है।

पच्चीसवाँ अध्याय।

मार्कण्डेयजी बोले कि हे भीष्म! पूर्वकाल में भरद्वाज मुनि के सात पुत्र उपजे जिन्होंने योग कर बड़ा यश पाया। अपने किसी कुकर्म से योग की

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

पदवी से च्युत हो दूसरे जन्म में वे सातों विश्वामित्र के पुत्र हुये और गर्ग मुनि को अपना गुरु बनाया। उनके नाम यह थे—पहिला पाकदृष्टि, दूसरा क्रोधन, तीसरा उदित, चौथा हनसर्प, पाँचवाँ सुनक, छठा विषसर्प, सातवाँ पितृवर्ती। विश्वामित्र ने अपने सातों लड़कों से अप्रसन्न हो उनको शाप दे दिया और अपने आश्रम से निकाल दिया। तब वे सब गर्ग मुनि के पास जा शिष्य हो फिर वहीं रहे। गर्ग मुनि के पास एक कपिला गौ थी जो वर्ष भर में एक बच्चा देती थी। अकस्मात् एक दिन वह किसी चरवाहे बिना वन में चरने गई। गर्ग ने उन शिष्यों को गौ लाने को भेजा। लौटने के समय वह बड़े भूखे हुये और बालकपन की बुद्धि से ऐसा अधर्म किया कि उन्होंने गौ मारकर भूख मिटाने का उद्योग किया। पर फिर कुछ उनमें से कहने लगे कि गुरु की गौ को मारना अच्छा नहीं और कइयों ने इस बात को नहीं माना। तब सातवें बालक ने जो पितरों का भक्त था कहा कि तुम नाहक ही गौ के वध करने पर तय्यार हो। तुमको उचित है कि पहिले पितरों का आवाहन करके श्राद्ध करो और फिर पूजा कर अपना कार्य करो तो इस युक्ति से अवश्य है कि तुम पर कुछ पाप न होगा। निदान सब भाइयों ने इस बहाने से मिलकर गौ के मांस से पेट भरा और गर्ग से आकर कहा कि, महाराज गौ जो दूध की खानि थी उसको सिंह खा गया, पर उसका बच्चा बच गया है। गुरु जो बड़े कृपावान् और सीधे थे, उन्होंने इस बात को सत्य जान गौ के बच्चे को ले लिया। वे सातों भाई फिर मरकर भाई ही हुये और व्याध के घर उपजे। भले ही उन्होंने व्याध के घर में जन्म लिया पर जीवों का वध न करते और सारनदेश में स्थित होकर धर्म में दृढ़ रहे। केवल इस कारण कि उन्होंने पितरों के कार्य के निमित्त गो-वध किया था, अपने पहिले जन्मों और ज्ञान को न भूले। उनके नाम यह हुए—पहिला नरवीर, दूसरा निवृत्त, तीसरा शान्त, चौथा निर्मन, पाँचवाँ क्रतु, शशि और सातवाँ मातृव्रती। जब माता-पिता मर गये, तो सातों ने धनुष और बाण फेंक दिया और वन में रहकर अन्त को मर गये और तुरन्त हरिण हो कालिञ्जर पर्वत में रहने लगे। उनको पूर्व जन्मों का स्मरण बना रहा,

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

इसी से वह धर्म के मार्ग में स्थित रहे। उनके नाम यह हुये–पहिला नित्य, दूसरा त्रासित, तीसरा उन्मुख, चौथा बधिर पाँचवाँ भद्र, छठा अनेत्र और सातवाँ नारदप्रिय। इन सातों ने पहिले जन्मों के स्मरण रहने से पशुओं के धर्म त्याग दिये और बिन स्थान और भोग विलास रहित रहने लगे। उन्होंने योग कर भारी तप किया और समय के उपरान्त उसी कालिञ्जर पर्वत में मर गये; सो आज तक उनके चरण चिह्न उक्त पर्वत में दिखाई देते हैं। मरने के उपरान्त सुरद्वीप में चकवा चकवी होकर पशु के समान कुछ काम न किया, वरन वेद के अनुसार उन्होंने सब काम किये। उनको पूर्वजन्म की सुधि बनी रही और उनके यह नाम हुये–पहिला निस्पृह, दूसरा निर्मम तीसरा शान्त, चौथा अद्वन्द्व, पाँचवाँ अपरग्र, छठा निवृत्त और सातवाँ निवृत्त। यह सातों नदी के तीर तप करते मर गये और फिर मानसरोवर में हंस होकर पूर्वजन्म के चरित्रों को जानते रहे। कोई पहिला धर्म उन्होंने न भुलाया और ब्रह्मज्ञान में भरपूर रहे। उनके नाम यह हुए–पहिला सुमन दूसरा सुवाक्, तीसर सिद्ध, चौथा पञ्चम, पाँचवाँ क्षुद्रदर्शन, छठा सुनेत्र और सातवाँ स्वतन्त्र। यह मानसरोवर वह स्थल है जहाँ से सरयू नदी निकली है और जहाँ सब प्रकार के हंस रहा करते हैं, यह तपी और योगी सिद्धों के रहने की जगह है और सदाशिव अहर्निश वहाँ विराजमान रहा करते हैं। यह सदाशिव के रहने का मुख्य स्थान है। वहाँ जाने से मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है निदान यह चरित्र हुआ कि पृथ्वी में एक देश है जिसको नीय अर्थात् कम्पिला कहते हैं और जो तीनों लोक में प्रसिद्ध है, वहाँ एक राजा हुआ जिसको विभ्राज कहते थे, वह बड़ा धर्मवान् राजा था। एक दिन राजा अपनी रानियों समेत शिकार के लिये वन में जा शिकार आदि खेलने में प्रवृत्त हुआ। वह वन ऐसा सुशोभित हुआ जैसे कि इन्द्र से नन्दनवन में शोभा होती है राजा की ऐसी शोभा और सामग्री को देख स्वतन्त्रनाम हंस जो सबसे छोटा था लोभवश हुआ और चाहा कि मैं भी जो इस राजा के समान हो जाऊँ तो मेरा धन्य भाग्य है और कहा कि जो मैंने नियम तपादि शुभ कर्म किये हैं, उनका फल मुझे यह प्राप्त हो कि मैं भी इसके सदृश राजा हो जाऊँ। यह सुनकर क्षुद्रदर्शन और सुनेत्र दोनों हंस बोले कि हमारी

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

यह इच्छा है कि हम तुम्हारे मन्त्री होवें। स्वतन्त्र ने इस बात को न माना, यह वार्त्ता अपने भाइयों की सुनकर सुवाक् ने कहा कि तुम कम्पिलानगर में राजा होकर राज्य करोगे और यह दोनों तुम्हारे मन्त्री होंगे। यह वार्ता सुन सुमन बोले कि तुम सब कुछ दिन राज्य सुख भोग फिर राज्य छोड़ योग में प्रवृत्त होगे। पितरों की प्रसन्नता से तुम्हारे सब काम बिगड़े हुये बन जावेंगे; यह कहा और सुमन चुप होकर बैठ रहा। निदान विभ्राज राजा कुछ दिनों तक शिकार खेलता रहा फिर अपनी राजधानी में लौटकर राजकाज करने लगा। इसके उपरान्त अपने पुत्र को जिसका अनुज नाम था राज्य का भार सौंप दिया और आप फिर उसी मानसरोवर में गया जहाँ वे सातों हंस रहते थे उसने बड़ा कठिन तप किया जिससे परमपद पाया। उसी समय से वह स्थान विभ्राजित वन के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वह स्थल योग और सिद्धि के देने में अद्वितीय है। वे तीनों हंस जिनको राजा और मन्त्री बनने का विचार उपजा था मरने के उपरान्त द्रुपदपुरी अर्थात् कम्पिला में उपजे। उनमें से स्वतन्त्रनामी हंस राजा होकर ब्रह्मदत्त के नाम से प्रसिद्ध हुआ। क्षुद्रदर्शन और सुनेत्र दोनों हंस एक श्रोती नाम ब्राह्मण से उपज कर, पाँचक और कुण्डरीक के नाम से प्रसिद्ध हुये। निदान कम्पिला देश का राजा अपनी लड़की देकर आप महावन को सिधारा कि वहाँ तप करें। उनके साथ श्रोत्री ब्राह्मण भी चला गया और लड़कों को घर में छोड़ दिया। ब्रह्मदत्त राजा होकर पुत्रों के समान प्रजा को पालने लगा और दोनों ब्राह्मण के पुत्र बड़े मन्त्री हो गये। शिव की कृपा से तीनों ने अपने-अपने मनोरथ पाये और ब्रह्मदत्त की रानी जिसका नाम सुनत था राजा के साथ बड़ा विहार किया। शेष चार हंस जिन्होंने संसारी सुख का कुछ लोभ न किया था यह भी श्रोती ब्राह्मण के कुल में उपजे। उनका पिता बड़ा ही दरिद्री पर शिवधर्म में अति प्रौढ़ था। उन चारों के यह नाम हुए—पहिला धृष्ट, दूसरा महात्मा, तीसरा नित्यदर्श, चौथा निरतशुक। यह चारों बड़े ज्ञानी हुये और वह तीनों भाई अर्थात् जो राजा और मन्त्री थे योग पदवी से च्युत हो भ्रष्ट हो गये पर वह चारों पूर्व के समान योग में

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

स्थित रहे। एक समय के अनन्तर उन्होंने चाहा कि महापन्थ की यात्रा करें।

छब्बीसवाँ अध्याय।

श्रीब्रह्माजी बोले कि जब ब्राह्मण ने जाना कि उनके चारों पुत्र यात्रा करने पर उद्यत हैं, तो वह अति दुःखी हो बोला कि हे प्रिय पुत्रों! तुम सब महापन्थ को जाते हो, हम अकेले घर में रहकर क्या करेंगे। या तो मुझको अपने साथ लेते चलो या मेरे क्रियाकर्म का उपाय करते जाओ कि इस जरावस्था में मुझे कष्ट न होवे। क्योंकि जब घर में ऐसी दरिद्रता है तो हमारा निर्वाह क्योंकर हो सकता है। तुम भलीविधि जानते हो कि हमारा धन तुम्हीं थे। यह सुनकर लड़कों ने उत्तर दिया कि तुम कम्पिला नगरी में जाकर राजा ब्रह्मदत्त और दोनों राज्यमन्त्रियों को हमारा सन्देशा देना, वह तुमको असंख्य धन देवेंगे। यह कह और एक पत्र उनको इस विषय का लिखा दिया कि हे भाइयो! हम तुम एक माता पिता के सात भाई हैं पहिले जन्म में कुकर्म करने से व्याध हुये, फिर मृग फिर चक्रवाक और फिर हंस हुये थे। तुमने राजा को देखा और लोभी हो गये, सो योग और ज्ञान को छोड़ राज्य पाया। हम चारों ब्राह्मण के घर उपज महापन्थ को जाते हैं। इसलिये तुमको उचित है कि तुम भी हमारा साथ दो वृथा ही घर में पड़े हो। हम अपने पिता को तुम्हारे समीप भेजकर तुमको लिखते हैं कि उनको बहुत-सा धन देना और राज्यकाज अपने पुत्रों को दे हमारे पास पहुँचना। यह चिट्ठी ले ब्राह्मण प्रसन्न हो कम्पिलापुरी में गया पर उसको पत्र देने का अवकाश न मिला। संयोग-वश राजा के एक पुत्र उपजा जिसका नाम विष्वक्सेन था। वह योग और शील में अद्वितीय था। राजा ब्रह्मदत्त अपनी रानी समेत मन्त्रियों को साथ लिये वन में गया और बहुत समय तक आनन्द उठाता रहा। एक दिन राजा ने किसी पशु को मैथुन करते देख आप भी चाहा कि रानी से संभोग करें। रानी के मना करने और क्रोध करने पर भी राजा अपने हठ से न हटा, पर तो भी रानी ने न माना और नम्रता विनती

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

क्रोध, धमकी, लज्जा और संकोच से राजा को रोका और थोड़े दिनों तक रानी ने खाना-पीना भी छोड़ दिया। राजा ने रानी से हठ और निषेध का कारण पूछा। रानी बोली कि जो हम इसका कारण कह दें तो हम तुरन्त मर जावें। जो हमारी बात पर निश्चय नहीं करोगे तो तुम्हारा जीना कठिन हो जावेगा। निदान राजा आश्चर्य में हो, परमेश्वर की शरण में गये और छः रातदिन निर्जल पड़े रहे। तब परमेश्वर ने प्रकट हो राजा को दर्शन दिया और कहा कि हे राजा ब्रह्मदत्त ! तुमको प्रभात के समय सब वृत्तान्त विदित हो जावेगा। यह कह ईश्वर अन्तर्धान हो गये। राजा अपने को धन्य मान अपनी राजधानी की ओर चला, ऐसा समय पा ब्राह्मण ने पत्र राजा को दिया। राजा ने तुरन्त चिट्ठी पढ़ संसारी माया मोह छोड़ ब्राह्मण को बड़ा धन दे बिदा किया। ब्राह्मण ने अपने घर में आकर सब हाल कह सुनाया। वे प्रसन्न हो महापथ को चले गये और ब्राह्मण ने अपनी स्त्री सहित परमपद प्राप्त किया। राजा अपने पुत्र को राज्य का भार सौंप दिया और अपनी रानी सहित मानसरोवर को चला गया। वहाँ सुनत रानी ने जो देवल की कन्या थी राजा से कहा कि हमने जो तुम्हारे साथ भोग न किया, उसका कारण यह था कि हमने तुमको संसारी भोगविलास में लगा हुआ जानकर चाहा कि हम तुमको इस मार्ग से लौटाकर मुख्य रूप में लावें। यह अपराध हमारा क्षमा करना, क्योंकि तुमको तुम्हारा गुप्त योग भूल गया था, मैंने तुमको स्मरण कराया। यह सुन राजा अपनी रानी से अति प्रसन्न हुआ और रानी सहित शिव का तपकर परमपद पाया। कुराडायक जो मन्त्री था वह भी अपने पूर्व जन्मों के वृत्तान्त को जान संसारी माया छोड़, सांख्यशास्त्र की रीति से, योग धारण कर मुक्त हो गया। पाञ्चक जो दूसरा मन्त्री था, उसने वेद की रीति के अनुसार, योग धारण कर शिव का यश संसार भर में प्रसिद्ध किया; निदान राजा दोनों मन्त्रियों समेत मुक्त हो गया। हे शान्तनव ! इस तरह विश्वामित्र के सातों पुत्र ! नाना प्रकार के शरीर धारण करने के उपरान्त मुक्त हुये। इसमें केवल मुख्य कारण मोक्ष पाने का पितरों को समझना चाहिए और पितरों की महिमा वास्तव में ऐसी ही

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हैं, कि महापापी को भी कुछ दुःख नहीं होता और पितरों की भक्ति करने से मोक्ष अवश्य मिलता है। जो मनुष्य यह पितरों का चरित्र पढ़ेगा या सुनेगा वह संसार में प्रसन्न रहकर अन्त में सुखी होगा।

इति श्रीशिवपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे एकादशखण्डे
षड्विंशतितमोऽध्यायः ॥ २६ ॥
शिवपुराणभाषा समाप्त हुआ।

—:०:—

आरती

ॐ नमः शिवाय !

श्री शंकर वन्दना

जय शिव ओंकारा प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदा शिव अर्द्धांगी धारा ॥
ॐ हर हर हर महादेव !
एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसानन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ॥ ॐ हर……
दो भुज चारु चतुर्भुज दशमुख अति सोहे।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन जन मोहे ॥ ॐ हर……
अक्षमाला बनमाला मुण्डमाला धारी।
चंदन मृग मद सोहे भाले शुभकारी ॥ ॐ हर……
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगें।
ब्रह्मादिक सनकादिक प्रेतादिक संगें ॥ ॐ हर……
कर मध्य कमण्डलु औ त्रिशूल धारी।
सुखकारी दुखहारी जग पालनकारी ॥ ॐ हर……
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ॐ हर……
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ॥ ॐ हर……
बोलो भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश की जय !

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा—तेजकुमार प्रेस (प्रा०) लिमिटेड, लखनऊ में मुद्रित।

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य
सुखसागर	२१०)
योगवाशिष्ठ संपूर्ण २ भागों में	४३०)
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम लेखक-श्रीप्रतापसिंह	९०)
भगवद्गीता भाषा सजिल्द	२५)
महाभारत भाषा सचित्र सजिल्द	१५०)
रामायण तु०कृ० टीका पं० लक्ष्मणप्रसाद भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१४६)
रामायण तु० कृ० टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल सचित्र सजिल्द	छप रही है।
नवीन संग्रह	९)
सत्यनारायण व्रत कथा रेवाखंडी	९)
हरितालिका व्रत कथा	३)
हनुमन्त बावनी	) ७५ पै०
विवाह पद्धति भाषा टीका	३०)
सुन्दर विलास	१५)
सुन्दर कांड गुटका	३)
नूतन स्त्री सुबोधिनी	९०)
अष्टावक्र गीता सटीक	५५)
पार्वण श्राद्ध	५)
दुर्गासप्तशती भाषा टीका सजिल्द	४५)
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	८०)
शतपंच चौपाई	३)
चित्रकूट माहात्म्य	७)
चाणक्य नीतिदर्पण	१५)
शिव सिंह सरोज	५६)
महाभारत सबलसिंह चौहान दोहा-चौपाई	१२५)
नरसिंह पुराण	५०)
व्रज विलास	७५)
विष्णु सहस्रनाम	७)
विश्राम सागर	छप रही है।
भक्तिसागर चरणदास सजिल्द	छप रही है।

पुस्तक का नाम	मूल्य
आल्हखण्ड सजिल्द ललिताप्रसाद कृत	९०)
अमृत सागर नागरी सजिल्द	१२०)
शार्ङ्गधर संहिता	९०)
माधव निदान भाषा टीका	६०)
चाय के गुण-दोष	७)
डाक्टर तुलसी	७)
डाक्टर दूध	७)
डाक्टर शहद	७)
डाक्टर गन्ना	५)
डाक्टर आम	५)
डाक्टर जल	५)
डाक्टर त्रिफला	७)
डाक्टर गेहूँ और डाक्टर चना	७)
दूध और दूध से बनी चीजें	५)
नमक के गुण-दोष	७)
नींबू के सौ उपयोग	५)
नीम के सौ उपयोग	६)
प्याज के उपयोग	५)
लहसुन के उपयोग	७)
मिट्टी चिकित्सा	५)
सोयाबीन	७)
वृहत्पाकावली	३)
कर्म विपाक संहिता	३५)
प्रश्न प्रकाश	५)
फल प्रकाश	५)
चमत्कार चिन्तामणि	७)
बृहज्जातक सटीक	३५)
मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	४५)
वैराग्य संदीपिनी	१)
लग्नचन्द्रिका	३५)
सर्वतोभद्र चक्रम	२५)
हंसराज निदान सटीक	१५)

मिलने का पता—

तेजकुमार बुकडिपो (प्राइवेट) लिमिटेड,

पोस्ट बाक्स ८५,

१, त्रिलोकनाथ रोड, लखनऊ—१

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

210

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal

CC-0. Digitized by eGangotri and MIDF- Delhi

तेजकुमार बुकडिपो
लखनऊ

Jagannath Bhattarai Collection. Nagarjun-7, Kathmandu, Nepal